



বর্ষ ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পান্ধিক পত্রিকা।

A A MAIL TO

১৬ गांच मान्यात. ১৮১० गक, खान्न मञ्चर ७० ।

चारमहिक अखिम मुना २०० मनकान भेडि क्रिकेन मुना

উन्यक्ठिंज्य गादारम्य।

मधानम् निर्माणका हुना निर्माणक सामग्री महत्वार कार्याः देश जाद्य तिन्ति हुन्। निर्माणक सामग्री महत्वानक विक्रिक्ति । भरतन सानगिज्य निर्माण जाका समानामा विद्राप्त कविर्वाहि । महत्वा सन्दर्भ क नक्ष्मा भरतकी अना कश्चार कार्या विक्रु हर्ने ना। के सकल नहा का भा संस्थिति के कहा प्रहित्य ।

रहा ७ कहा माच ताररकादन सामाहन आधाननातमा छेना-त्रमा ग्राह मस्त्री हम इत्ताहिन ।

8ठा गांच, तुमकातः।

उल्लोकिकारम कलिकाकां क्रीक लिक्यां व काजायांन जेक्ट्रेंक शास्त्रियां ते के देशन के नाम ने भागक कागायां क्रीविमा क्रियांत क्या क्रिया क्रियां के क्रियांक व्यास्त्रिक क्रियां क्यासम्बद्धिक क्रायांमध्यो स्वास्त्रिक क्रियां क्रियांन, क्रियां क्रियांक क्रियांक क्रियांक क्रियांक क्रियांक क्रियांन क्रियांच्या क्रियांक क्रियांक क्रियांक क्रियांक

क्षेत्रक तरबादनन अस घडा एक। क बाध्य नियम कहा तक कुष्ट किन्नण त्थांक निवश्विक कडेना शास्त्रत ? स्वमुद्धित स्वयंत्र बहु बहुक्त देशका श्रीक स्वयंत्र महत्त्वामात्रा १ किन-

enternet des unimellienes cant unale i.

THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

क्रिकारक खमक विवेदा शास्त्रिय समृत्र खर्भाद खिनि हैं हैं हैं अधीन महन्। एष्ट्रा अन् ७ कामुह माख्य करिया नगरक। देगरम अवंश कारणराष्ट्रहे भरिवर्षकु बुक्किया शास्य-रिनि (मर्म अ কালের অতীয়ন তাহাকে শরিক্সিশর্শ করিছে পালে নালন্ विचारतक विहे अगुंठ छात्र अवीर एक्स काइनाव अजीक कार विकारमञ्जीनरम लाक् हिन छात्रानी अभूरकक प्रकास नकारमय मूर्व निवाय मृद्यंत मक्त्र (मक्त्र थारक, अभूरण्ड क्रि शक्त जाहारमञ्ज सीवटन अस्मिट्य । नटका यामाना विभागी শ্বাধন ক্ষিয়াক্তন –প্ৰতোৱ ভূমিকে বাহারা আত্রর ক্ষিত্র दंबन-मुद्रम्हरू वाहाता स्नीतन धावन कविराउद्यम-नरस्त्राव क्ष्म् शहरता की रम पापच कितिएक एक की बाजा अस्टिक शिक्स कार्तम, कार्याटमम ठिविष्ठ के कोचन दक्षाम निद्रमन कार्म के विदेशी क्रात्मव मन्त्रीक महरू-काशाजा मध्य दगरमंत्र कर्य छ। पर्वत कृतिक संख् । ीक, नृष, महत्त्रक टाएकित विनय वर्षम कामका किया कांत्र अथन कि दासिए शाहे ? की शास्त्र मिताक की श् CRESTRONE CHOME के विरामत कारणत कार्का, कारणक आहे भारत खाडिकानि छ। छाशरेक मत्मर आहे, किन्द्र, त्य हुन् महेन्री जाराद्वत महत्व क निर्माण्य, व्य हुँकूद लोबास संस्र मुद्र---द्य हुक्त अस कामारम्य नीय विदः अवनीय--- एन हुक् दमने अमारमेत्। অন্ত্ৰীত পথাৰ্। ভাই আহাদের সমকালিক লৈতের কয়। (बक्रम किस ट्रामार्व कामात क्छा । मन्त्र विवास । उहे सर्थ की होता वागु जिंद भूछ।

ইন্টামর স্থায় সাথের ক্রেণানাকে অভিক্রম করিয়া সভোর ভূমিকে যে কেন আল্লয় করে সেই অন্তের পুত্র।

जात तक कार्य शृश्योत मानुनिगरक सम्राहत मृत वका याता।
केरावत चड्ड छाउ कियर भतिमारण छात्रात्म मरमा हिंग ।
केरावत छाउ र्शियर स्मान्त रमियर गारे द्विम सर्गाद्धत भरमा चार्य स्मान स्मान । छिन हेश्रि स्मार्ट्ड स्थान स्मान । छिन हेश्रि स्मार्ट्ड स्मान स्मान । छिन हेश्रि स्मार्ट्ड स्मान स्मान । छिन हेश्रि स्मान स्मान स्मान स्मान । छिन द्वाराट्ड स्मान स्म

উপৰ প্ৰাকৃত কৰিবে লাও সাধুপত আইগাল ভাৰত কৰিব কৰিব কুম্মৰ হুইবাভিগেন, স্থাপত্যাং উপৰাধা কিন্তুতিক কৰি কাৰ্ট্ৰেই ক্ষম্মনাৰ সাধ্যিকেই জনব কে কেন্দ্ৰ ক্ষমেন্ত্ৰী নামৰ ক্ষমিত পাৰেন ভিনিত অসুভেৱ পুৱা বাহেনহ ক্ষমিনাৰী।

न्त्रेणीक क्रिक्न नाम मशामनान चात जन कार्यन्त सेवरमन शूझ नीरमा छेलयुक । Bieiten . con कियर अतिथात किमेद्द्रद्वे द्वारम् कार कार्य क्ष्माहिन। क्षेत्रद्वय द्वारम्ब कार्य ्रक्षांत्रमहाः कि सिनि १. केरिक एशीयं व्यायानस्य टक्सरेमत काव सव । कासारम्य (श्रेम कामास्त्रामारकहे कामिस्स करहा याहात संधिक क्षम गायमा या भासमिक महस्त्र प्रभावतः द्वामदकः भाकर्ष कार--वासारमञ क्षामश्राता सारात मित्कर वार्षक हेन्। (क क्शन्य) (य कनागीयी, तम त्मावंश्व, त्व दक्षावत्क शिक्षे (नव, व्यामामित ८ शम छादा ६६८७ नामा आधि इनेमा िलिष्टिश चारम। किन्न नेयांबद्ध रहाम (मन्नण नरब—काहा मकल ুষ্ণাকে সাভিক্রম করিয়া আহিত হয়, তাহা পালীকেও আলি-भन करता ध विषय गांधूगन अमृत्वित পूछ हित्यन, कांद्रन উদ্ধাদেরও ক্রেম সকল যাধাকে কাত্তম করিয়া জগতের विदेश राहिक इरेग्रांहम । भागीत मान फालादक भूतिलाम कता दूरत माकू क छारात छकात मानरन है छानाता खडी रहेगा-क्टिनन है ताबूदमद छात्र या वाल्यिक दुब्दम याना फेक्क व्यक्त किन ক্ষাও ধারতের দিকে মাৰিত হইতেইছু—তিনিও সেই পরিমাণে अभूट इसे श्रेष्टा ।

पण दे कार्य कार्य मार्थ महास्मारिश कार्य कार्य देशा पाय दे कार्य कार्य कार्य मिलात व्यानस्त्र व्यानी हहेशाकरण विकास मुख्य कार्य मिलात व्यानस्त्र व्यानी हहेशाकरण विकास कार्य कार्यास्त्र व्यानस्त्र व्यानिक कार्य क

বিশ্বদী ও প্রেমক লোক মাজেই যে কেবল অমুভের প্রস্ত হাইন নং, ভালাইন ক্লাকেরও প্রস্তা কারণ সভ্য, বালুভা ও গ্রামেন নে রাজা ভাষা আলোকেবই রাজ্য। নভ্যের ভূমিকে বিনি আলোহন ক্রিয়াছেন, ভিনি আলোক রাজ্যেরই প্রধান

पार्च कियुक्त स प्रश्ताहित शृज्यगेटवर सकते प्रदेश मही प्रश्निक स्वास्त्र करता प्रदेश प्रश्निक प्रश्निक स्वास्त्र करता प्रदेश प्रश्निक प्रश्निक स्वास्त्र करता प्रदेश प्रश्निक स्वास्त्र करता प्रश्निक स्वास्त्र करता स्वास्त्र करता क्रिक्त कर्मा करता क्रिक्त कर्मा स्वास्त्र क्रिक्त कर्मा स्वास्त्र क्रिक्त कर्मा क्रिक्त करा क्रिक्त कर्मा क्रिक्त करा क्रिक्त

And the state of t

वर गण उरुणाँखात।

প্রাক্তে ভটা হইতে সাধারণ প্রাক্ষণনাম ইনিকে সংকীতন তৎপবে উপাসনা ও উপদেশ। প্রচারক প্রাক্ত নাব শলীভূষণ বস্ত বেদীর কার্বা করেন। জাধার ক্ষপাধারের নাব কর এই -

শ্বীমাদের প্রিম্ন মাঘোৎসর আসিদার পূর্বে আম্বা করেছ জন বন্ধ মিলিড ছইরা জনেকের বাড়ী বাড়ী দিলা ক্রীউন ক্রিয়াছি। প্রতাবেই জানকের হার উল্লাটিড ছইড এবং জনেকে আমাদের সহিত মিলিড ছইডেন। নিম্নলিখিড গাণ্টি আমরা প্রতাহই গাহিতাম

ण्यात वर्णा मेगाइ मिया खुक्क गांडि (क्या । इजानि शास्त्र खार्छा क एखि क्या इ वर्षण इंटेक्छ । यञ्चात की दिन कवि-काम करुवात खारण कार्मण इंटेक्छ । य शास्त्र मस्या याडे क्रुकी "स्वराष्ट्र ना बाहा स्विधिय याता इटेस्य विस्तार" विस्ताय खारेब मिल-कार्मा कार्य साहा स्विधिय याता इटेस्य विस्तार विस्ताय खारेब मिल-कार्मा कार्य माहि, को बेर्बाय (माहे कृष्ण (मिया विस्ताय इटेक्स याहित । यह कथा कार्मारम्य मिन्नामान मस्या कार्मान महानि वेर्क्षण अस्तारिक क्रुपा केंग्न बेरेस्य स्वताय कार्मान क्रिका वेर्क्षण अस्तारिक क्रुपा केंग्न बेरेस्य स्वताय कार्मान क्रिका

कि होति शृश्से अव राजि कामात्र विश्वित एवं "अज्ञान व्याहित्य पाकि कामारक निर्माणात्र कथा वामनाहित्य । किन्न कामात्र कामात्र कामा कामात्र कामा कामात्र करा।

বৰন লগতে কোনও নৃতন ধৰ্ম আবিভ ও হইনাছে জন্মন আতি শব সামান্ত পোলেনাই কেই গত্ম প্ৰচাৰ কৰিবলৈন কৰিবলৈন কৰিবলৈ কৰিবলৈ

कारिक कामाविष्या नवजीवन गाँव कविषय । स्थान करी के कामी, बाबा वर्षे टाठात एवं मा। बीन कृश्वी वाहाय काराय नाम वहिमाविक क्षेटक गारत।

আননা অনেক সময় তুলিয়া বাই বে আমরা অধিপর। বাহা
কুটা বুলিয়া বুলিয়াহি তাহা অপরকে বনিতে চাই না। পরক্রেপ্রের নাবে কত দান্তি পাইলাম, প্রার্থনাতে কত প্রভাজ
কল পাইলাম, আভিভেদ প্রভৃতি কুপ্রথা কত অনিষ্টকর তাহা
ক্রেপিয়ায়, অধিও লে সকল সভা অপগ্রের কাছে বলিতেছি না।
ভগবাদের সভা লাভ ক্রিয়া তাহা সকলকে বুরাইরা লিবার
ক্রেটা ক্রেপ্র উচিত।

আন্তর্যা উৎসবের প্রতিষ্টিতে উপ্তেশ্ব শক্তিতে বিখাস শ্লিরা বাহা সত্য বলিয়া ব্রিয়াছি তাহা সকলের নিকট প্রচার করিতে চেটা করিব ি জগবানের নামে সকলে দঞারমান বঙ, পার্থণরভা পরিভ্যাপ করিয়া তাহার নাম প্রচার কর! বাহা পর্গন্থ পিতার নাম মহিমায়িত করিতে চাও, তাহা হইলে যাহা সভ্য বলিয়া ব্রিয়াছ, সকলের নিকট তাহা প্রচার কর। বাহার বেরূপ শক্তি, সে সেইরূপে কার্য্য কর। নিজেদের কথা বলিও না, কিছ যাহা ব্রাইয়াছেন তাহা বল। এই কর দিন উৎসবে মগ্ন থাকিয়া, "ব্রহ্মকুণাহিকেবলং" এই কথা প্রস্ব

সায়ংকালে সাধারণ ব্রাহ্মনমান্তের উপাসনালরে স্থীতি ও প্রার্থনার পর প্রীবৃক্ত বাবু নগেজনাথ চটোপাধ্যায় "প্রকৃত ধর্মজীবন" সহছে একটা বক্তা করেন। বক্তা শুনিবার জন্ত এত লোকের সমাগম হইয়াছিল যে অনেকেই বসিবার ছান পান নাই। বক্তা শেষ হইতে হুই মন্টার্মণ্ড অধিক সময় গাগিয়াছিল। ছানাভাব বশতঃ আমরা উহার আলোপান্ত প্রকাশ করিতে পারিশাম না। বক্তার সার মর্ম্ম এই ;—

বিশাস, ভক্তি ও কর্ম প্রেরত ধর্ম জীবনের অবপ্র প্রান্থান জনীয় উপাদান। (১) অনেকে কর্মাকে বিশাস বিশিল্ল মনে করেন। কিন্তু প্রকৃত বিশাস অর্থে প্রভ্রেক দর্শন। আমানের চতুর্দিকস্থিত প্রভ্রেক পদার্থে পরমেশ্বরকে ব্যক্তিরপে কর্তমাস বালয়া উচ্চেল ভাবে উপদন্ধি করিতে না পারিলে, প্রকৃত বিশাস হইকেই পারে না। (২) ভক্তি ও ভাবোচ্ছাস এক পদার্থ নহে। প্রকৃত প্রেম অভি গভীর ও হারী পদার্থ; ইহা প্রকৃত বিশাসরপ ভিত্তির উপর সংহালিত। (৩) প্রেম শইতেই কর্মের উৎপত্তি। প্রকৃত ভক্ত বিনি ভিনি ঈশ্বরক্রেক্রের অন্ত্রেরণেই কর্ম করেন, স্বার্থের দিকে ভাহার দৃষ্টি
বাক্তিন স্পার্থ ভিত্তি করা। তিনি স্পার্থ ভাবে সকল কর্ম স্পাদন
করেন। ভাহার সকল ক্যুর্ব্যের এক্যান্তে উক্তেল—পৃথিবীতে স্কর্মনান্তা প্রভিত্তি করা।

কৰিবাতে বক্তাটা বিভারিত ভাবে প্রকাশিত করিবার ইক্ষাবার্ত্তিক

७३ गाप, चळवात।

काषाबादन अञ्चलका बेनानमा ७ ऐनामन । अकासक

त्रीवृक्त नायु व्यत्यांत्रमान वृत्यामायात्रः त्यवीतः कार्याः व्यत्नः। वेद्यात केनत्वत्मत्र काव मित्र क्षत्रक व्येगः ;---

"এই উৎসব এক ভাতি প্রকাশু ঘটিকা-বন্ত-সংস্কার কার্য্যালয়। সম্বংলরের পদ্ম হোট বস্তু কন্ত বিকল ঘড়ি সংস্কৃত হইবার
ভন্ত এই স্থানে আসিয়াছে। ভাতি আন দিনেই এই উৎসব
শেব হইবে; কিন্তু সংস্কার কর্ত্তা যিনি, তিনি ইচ্ছা করিলে
ভাতি আন সময়েই সকল ঘড়িকে ঠিক করিয়া দিতে পারেন।
দুরে দুরে ভত্ত ভাবে থাকিলে যে সকল ঘটিকা সংশোধিত
করা বাইতে পারে না, এই উৎসবের মধ্যে ভাতি সহজেই
ভাহা ঠিক হইরা বার। সকল মলিনতা চলিয়া য়ায়—সকল
বিকল ঘটিকা কার্যোপবোদী হয়। এখান হইতে কেই বা
আপনার আচল ঘড়িকে চালাইয়া ঠিক করিয়া লইয়া যায়,
আবার কেহ বা আপনার পরিত্যক প্রাতন ঘটকার পরিবর্তে নৃত্ন ঘটিকা পাইয়া—নব জীবন লাভ করিয়া আনন্দে
গুছে ফ্রিয়া যায়।

পামর। আপনার দোবে ঘটকাযন্ত বিগড়াইরা কেলি।
ব্যবহার করিতে জানি না বালরা আমরা কত কল বিকল
করিয়াছ, কতন্থান ভালিয়া কেলিয়াছি। সেই সংস্কার-কর্তা
আমাদিগকে এখানে আনিয়া সকলের বন্ধ ঠিক করির। দিয়াছেন। প্রস্কৃতিত্ব করিরাছেন। ভগকে যুড়িয়া নৃতন করিতেছৈন। ভক্তি-রূপ উত্তম তৈল দিয়া সকল মলিনতা পরিকার
করিয়াদিতেছেন।

এখন সকলে দেখিরা লও, তোমাদের বন্ধ বিকল হইরাছে

কি না। কেবল বাহিরে দেখিলে হইবে কা, আপনার ভিউরে
প্রবেশ করিরা কোথার কি বিকল হইরাছে, মন্ত্রিন হইরাছে,
ভালিরা গিরাছে, সে সব ভাল করিরা দেখিরা লও। সম্মু
থাকিতে এখন ও আপন আপন ঘটকা ভাহার হত্তে সমর্পণ
কর। মুহুর্ত্ত মধ্যে তিনি সকল ঠিক করিরা দিবেন। প্রাতন
ন্তন হইবে, বিকল প্রকৃতিত্ব হইবে এবং মলিন পরিকৃত হইরা
ঘাইবে। এস সকলে, এইরূপে নিল নিল্ল যন্ত্রকে ঠিক করিরা
লইরা—নবজীবন লাভ করিরা সমন্ত বৎসরের কল্প ভাঁচার
কার্য্য করিতে প্রস্তেত হই।

সায়ংকালে এক্ষমন্ধিরে আহুক্ত বাব্ কৃষ্ণক্ষার নিঅ
"বিখাসের বল" সহক্ষে বক্তা করিবেন বলিয়া কথা ছিল।
কিন্তু তাঁহার শরীর অপুন্থ হওয়াড়ে তিনি উপন্থিত হইতে
গারেন নাই। বক্তার পরিবর্ত্তে আযুক্ত বাব্ নগেক্তনাশ
চট্টোপাধ্যার উপাসনা করেন ও'উপাসনাকালে মনঃসংযোগের
আবক্তা" সহক্ষে উপদেশ দেন। তিনি বলেন বে, চিত্তবিক্ষেপ উপাসনার একটা প্রধান শক্তা। মনঃসংযোগের শক্তি
আভ্যাসের উপর নির্ভর করে। ক্রমে ক্রমে বিবর বিশেষে চিত্ত
সমাধান করিতে অভ্যাস করিতে হয়। প্রথম প্রথম আমাক্ষের
চেটা বিঞ্চল চইতে পারে, কিন্তু ক্রমাগত চেটা করিতে করিতে
আবশেষে আমারা নিশ্চরই ক্রক্যাগ্য হইতে সমর্থ হইব।

१ष्टे याच, मनिवात।

প্রাতঃহালে, শ্রীবৃক্ত পশুত শিবনাথ শারী সাধারণ জাত্ব সমাজ মনিবে উপাসনার কাব্য করেন। এই দিনের উপাসন্তর প্রমল জাত্বয় ভাবোজ্বাস উথিত হইরাহিব বে জাতার্ব্য আর উপবেশ প্রবামের অবসর প্রাপ্ত হন নাই : সে নিন উৎ-প্রবেদ মধ্যে একটা মধুময় দিন বলিরা সকলেই অস্কৃত্তৰ ক্রিয়া-ছিলেন

সারংকালে শাস্ত্রী মহাশর "জীবনের অর" স্থান্ধ একটা সুমীর্থ বজ্জা করেল। সঙ্গীত ও প্রার্থনার পর বজ্জা আরম্ভ হর। উপাসনালরে এত লোকের স্বাগ্য হইরাছিল বে স্থানাভাবে অনেককে কিরিয়া বাইতে হইরাছিল এবং ইাড়াইরা থাকিতে হইরাছিল। বজ্জাকে পুনরার প্রার্থনা ও সজীত হয়। বজ্জার সারাংশ পরে প্রকাশ করিবার ইচ্ছা বহিল।

৮ है गांच, इतिवात ।

প্রাতঃকাবে ব্রহ্ম মন্দিরে উপাসনা ও উপদেশ। প্রচারক , প্রীযুক্ত বাবু নবধীপচক্ত দাস উপাসনার কার্যা করেন ও "সম-ধ্রুসীভূত ধর্ম সাধন" সম্বন্ধ নিয়লিখিত মধ্যে উপদেশ দেন ;—

স্থানের অবস্থায় ধর্মের সামঞ্জ যাভাতে রক্ষা হয় ভাছা করা কর্ত্তব্য, এক দিক দেখিলে হউবে না, সকল দিক দেখা চাট, সকল দিক রক্ষা করা চাই। যথার্থ ধর্ম পিপাত্ম যাভারা ভাঁহারা সভা যে পথে থাকে ভাভাই অবলম্বন করেন, এক দিক লটরা চলা ভাঁহাদের পক্ষে সম্ভবপর নম্ন, বিশেষ আদ্ধর্ম সামঞ্জ পূর্ব ধর্মা, আমাদিগের এই আদ্ধর্ম সাধনের সময় সমশ্রসীভূত সাধন চাই।

 क्षाठीन कालब्र नांधकलब्र कीवान छ । मामक्रक (मथा यात्र। এथान माधम मचरक क्रकि केळ केळ যে সকল কথা শুনিবেন সেই সকলের সামঞ্জ রক্ষা করিতে আপনারা সর্বাল শুনিয়া থাকেন "ধর্ম লাভ कतिराज हरेरण पूर विमन्नी ऋहेराज हरेराय" हेहां व्यक्ति मजा, যদি অন্তঃকরণ বিনরীনা হয়, তবে প্রাণ কিয়পে ধার্মিক চ্টবে। কিন্তু যেগন বিনয় সাধন প্রয়োজন ভেমনি সং সালস, সভাের প্রতি আদর, কর্তুব্যেতে নিষ্ঠা থাকাও श्राजन, विनव कतिए यारेवा अमरका शक्ति ना, वा कर्खवा ক্রিতে যাট্রা বা সভা ক্লা ক্রিতে গিয়া গর্বিত হট্র मा। नायरन अहे विनय ७ नश्नाहन वा कर्खवा-निर्हात जाय-अष्ठ तका कतिएक इवेटन। (यमन माधात्र काटन निरस्त कान्छ। চিন্তা করিয়া বিমন্ত্র হইবে তেমনি যে সভ্য প্রাণে অভুতব ক্রিয়াছ অকুভোভরে ভাগে প্রচার করিবে,সাহদের সহিত ব্লিবে বে জীখরের জন্ম লড্যের জন্ম হটবেই হইবে। অনেক সাধক আমি किছ गरे आधात किहु है इस गाहे, अहे विनय तिथाहें एक दारेसा क्रांक्यात्व व्यमह्का भरक्म, क्षत्रभ विमन क्षत्रभीत वर्ष मात्र मा হটয়া বয়ং ক্তিই হয়। বাহা সভা বলিয়া প্রাণে অভ্তব कविश्राक् कार्य करकारवर कक नव वा निरक्त (काम बाहाधवाद वक नव, काश् नुरकात वकरे-क्वेरतत महिमात वकरे आहात করিবে। ক্রিল্প লভ্য বলিতে বিরা অপনার মন্তব্যক্ত ইরতে করিতে व) शर्वित कहिएक एक्टी कहिए मा। वथन दकान कार्या कह তৃপৰ হয় ত মহেলুপ্ৰয় ।আধিই সৰ ক্রিয়াছি,কি করিতেছি। ক্ষুপ্রন णानि कि नामाक्षः स्त्रामाद्यांना क्षेत्र कि वरेटक शादा खावा

স্বৰৰ বাশিৰে। আজীন কানেছ একজন সাধকের জীবনের স্বাহ-क्क द्वर । - अक विम महाका देवका क्यतात्वक मुर्कि दाविकात ক্ষ প্ৰাৰ্থান আছেন। আনেক নূৰ্বক তথ্য উপস্থিত । বেই गरुन मर्ने स्टान ब्रांसा अरू कम दूषा ब्रीटनाक टिल्डाके ब्राह्म गानियां अहमन छार्य जानबाद कार्या कविएक्ट । छाड्ना धर्म्य করিরা হৈডভের শিবা নেই দ্রীলোককে বণিডেছিল সংহ লীলোক ভূমি কি করিতেছ। কাহার ক্বমে পা দিরাছ^ক, এমন ममम टेड्ड डाशास्य निरदेश कतिया विनासन "बामि देवि क्रे ন্ত্ৰীলোকের ভার ব্যাকুণ হইতাম তালা চইলে ধলা ইইডাম" कि विनवः! छाहे , स्थामादमक स्थव सदमक अमन विनव कारक ? किन्त रायम विमय कावान रमथ राज्यमि मध्याहम, विचारमञ्ज भन्नाक्तरम, टेडल्क मश्कीर्खन कतिया नगनहक्क माভाইভেছেন এই সংবাদে নবাব वर्ष विव्रक्त। তিনি ভর रम्थां हेर् काशिरनन देहरु द्वन व मिरक मा चारमन । किन्द বিখাসী বাহা সভা বাহা জীবের পরিত্রাণের উপার বলিয়া जानिताह्म, जारा कि लादक करन ताथन ताथिए भारतन १ তিনি অকুতোভয়ে নগর-কীর্ত্তন করিতে করিতে নবাবের গুঠা-ভিমুখে চলিলেন,কেমন সৎসাহস, সভ্য প্রচারে কেমন দৃঢ়ভা। जिनि निष्णत वाहाइती जानाहेवात जन्न अन्न करतन नाहे, সভ্যের অভই সভা প্রচার করিয়াছেন। আনেকে সভা প্রচার क्रिंटिज गारेना गर्किज हरेना निर्माण लाश क्रेनाइन, जानिक আবার বিনর করিতে যাইয়া অস্তোতে মারা পডিয়াছেন। আমি বত সাধনই করি না কেন, যত উচ্চ সাধকট হই না কেন আমার জানিবার বাকী অনেক আছে, ইচা শ্বরণ রাধিয়া স্কলা বেমন নত পাকিবে, আবার বাহা জানিয়াছি তাহা মিধ্যা দর স্থতরাং ভাচা প্রচার করিতে ভেমনি সাহসী ছইবে। জীবনে এই সামঞ্জ রক্ষা করিতে না পারিলে নরম হইতে হটতে একেবারে মাটি হটরা ঘাইবে, নতুবা শক্ত हरेटल बरेटल अटकवाटन कार्व हरेना वार्टेटन।

এখানে উৎসবের যে গব অফুঠান হইতেছে,ভাহাতেও সাম-ঞ্জ রক্ষা করা আবশুক। এথানে যে সকল কার্য্য হইতেছে তাহার সকলের মধ্যেই ভগবানের হস্ত রহিয়াছে। বেখানে অনেক পিণাসিত আত্মা উপস্থিত হয়, সে হানে আনেক লাভ হয়, স্তরাং এখানে সামঞ্জ রকা কর। উপাসনা, কীর্তন, বক্তা প্রভৃতি সকল বিষয়ে বোগদান কর,ইহার কোনচীই উপেক্ষনীয় नरह। आहाधनात नमर् वानास आत्य (वान मान कर, कीर्स-নের সময় উৎসাহে মন্ত চইর। কীর্তন কর, কিছু এস্কলের মধ্যে निमध ভাবে আত্মাञ्चलकान ७ करा। ज्यानर्टक खर्रेश खर्रा की छन इरेटि पूर्व बारकन, कानात कामरक कीर्करम मुख हम कि पुर्विट रहिरे करवस मा। वानक सुबक मकरनहे बहेन्नन कार्य যোগদান করিবেন। কেবল উপাসনা করিব ভাষা নর বাহারা विराम एकेटक केरमान केलिक करेबारकम केलारबंद रमेवा করিতে হইবে,ডাঁহার উপাসনা,কীর্ত্তন, সেবা সকলই এই ভাষে कत्रिष्ठ रहेर्य, दर व्यक्ता व नकन काँकी बालाहे जानारांक्रे **्रामारक नारेमात्र स्वरिया सरेटन**ा **स्वरिया** द्वारामित्रारक निक कतिरक ।

শ্রম্থিক লগনাফে প্রাপ্ত হার্মান সক্ষা সভার উৎসব হার্মান সভাত হার্মান পর প্রাক্তির প্রাক্তির প্রাক্তির ভারতার হার্মান চক্রমার চার্মান ব্যালাপালার, আনিচাক্রার করেলালার, কেলার নার্মানাপালার, আনিচাক্রার করেলালার, কেলার নার্মানাপালার, আনিচাক্রার করেলাপালার, কেলার নার্মানাপালার, আনিচাক্রার করিলাথ চলাও প্রাক্তি আনিনাপালার নারা বিবরত প্রাক্তি লগার তারেন। তৎপরে প্রাক্তির উন্দোল্ চল্লাল্ডর, কুটিরার প্রাক্ত লগনীখন ওপ্ত ও প্রাক্তির হরগোবিন্দ চল্লাল্ডর, কুটিরার প্রাক্ত লগনীখন ওপ্ত ও প্রাক্তির হরগোবিন্দ চল্লাল্ডর, কুটিরার প্রাক্ত লগনীখন ওপ্ত ও প্রাক্তির হরগোবিন্দ চল্লাল্ডর, কুটিরার প্রাক্ত লগনীখন ওপ্ত ও প্রাক্তির হাজিন কর্মান স্থান প্রকল্প লাল্ডর আলা স্থানির আলাল করিলাে পর সভাপতি প্রাক্তির আলাল্ডর ক্রার নার সভতের উপকাা-রিতা সহক্ষে নিজের অভিজ্ঞতার কথা বলিরা কার্যা শেব করেন। পরিত প্রবন্ধগুলি পরে প্রকাশ ক্রিবার ইচ্ছা আচে।

সায়ংকালে মন্দিরে উপাসনা ও উপদেশ হয়। শ্রীযুক্ত বার্ ক্ষেত্রমোহন মুখোপাধ্যায় উপাসনা করেন ও "শক্তি ব্রহ্ম" সম্বন্ধে নিয়নিথিত ভাবে উপদেশ দেন। ॥

> ⁶নাবিঃতোত্বভারিভারাশাস্তোনগ্রাচিত:। নাশান্তবানগোরাপি প্রজাবেনিন্যাপুরার ॥"

"যে ব্যক্তি অসৎ কাৰ্য্য হইতে বিরত হর নাই, যে আশাস্ত ও অসমাহিতঃ বাহার মন শাস্ত হর নাই, সে কেবল জ্ঞান হারা ইইাকে (পরমান্যাকে) প্রাপ্ত হর না "

কঠোপনিবৎ

"ছর্ক্ডেরা আন্দোলিত সমুদ্রের ছার। উহা থেমন ছির থাকিতে পারে না, এবং উহার জলরাশি হইতে থেমন পদ্ধ ও কর্মম উৎক্ষিপ্ত হইয়া থাকে। ছর্ক্তদিগের চিত্তও সেই-রূপ।

"আমার ঈশ্বর বলেন বে, ত্র্কৃত্দিগের শান্তি নাই।" Isaiah.

ব্ৰন্মের এক একটা স্বরণ, এক একটা অমৃতের ধনি। विमि अभ प्रज्ञा नाधन केंद्रियाहिन, डिनि এই कथाय नाय शिद्यतः। तकन प्राप्त शांधकरम्ब छीतन এই कथात्र शाका দিন দিন ব্রন্ধের কুণার তাঁচার শ্বরণতত্ত সকল चामात्मन मिक्छे खेळाल हहेटल खेळानलत हहेना छेतिनात्छ। क् मानिक, माजाधनात किकत अमन पूर्व चाहि, मठाः खानः এর ভিতরে এত অমৃত প্রচন্ন আছে। / এক একটা স্বরণ এক এক ন্ময়ে পাশকে এত ব্যাকুল করিয়া ভূলে যে, স্বন্ধ-नांत्रदंत वाहेवात नहिक्कुण शांदक मा। क्य विन धतिता শার্মারা অফের ক্থামুভণার ক্রিভেছেন। ভক্তি ভারন बहुत्रव कालमानिशटक नवीछः कीखम, बाताधमा, छन्तम छ वक्कानि विविध मालाएत विवधनमीत चमुछ निक्किमी नाम क्रिक्ष महावेदक्ष्मन जनस्कान वनि भागता अवे छुवा नीन कवि, क्यानि स्थान काश्वान मूछ हरेटव ना, बागारवन े देश नारमक नाममाच इक्ष क्रहरव मा । जनः मानामूक मक्रहे ছাৰীয়া, শাক্ষা করিবলৈ করেবলৈ প্রাথানের পিশালা বাঞ্চিতে

থাকিবে। এক বরণ সাগরে বভই ভূবিতে থাকিব, ভতই ভূবিবার ইছা প্রবণ হটয়া উঠিবে। এক বরণের কীর্ডন করিয়া কে ক্রাইতে পারিবে? কেই বা উপবৃক্তরূপে সে সকল বরণের কীর্ডন করিবে। জলা মুদা মহমদ নানক কবীর চৈতন্ত বে বরণ কীর্ডন করিয়া জগতকে প্রমন্ত করিয়া' গিয়াছেন। আমাদের জীণ কঠে উহা আমরা কির্পে কীর্ডন করিব ? সাধ্য কি আমরা প্রক্রের কথা কি, তাঁচার শক্তিতে আমরা তাঁহারই শক্তির মহিমা কীর্ডন করিয়া থাকি।

ত্রন্মের স্ত্যু প্রেম ও পূণ্যু স্বন্ধপ আমরা সচরাচর কীর্তন করিয়া থাকি। ত্রন্ধ প্রাণের প্রাণ, ত্রন্মরূপাহিকেবলম্ उम्र एकम्पापविद्यः चामत्रा नर्सत्ति एकात्रम् ७ उपनिद्य করিবার চেটা করি। কিন্তু ত্রন্ধের শান্তভাব স্বরূপ আমর। ভালুৰ আলোচনা করি না। আহ্ন উপীদক বুনদ, আজ वका नाम उक्तारेण शृक्षक अकवार भाख वःकात आलाहनार প্রবৃত্ত হই। ব্রহ্মের শাস্তভাব ভাবিতে গিয়া দেখি যে कृष्टे क्षकारत अहे भारतकार कराउ विकासिक व्हेत्रारक । अन স্থাকাশ, তিনি যদি আপনাকে প্রকাশ না করেন, ভবে-তাঁহাকে কেহ প্রকাশিত দেখিতে পায় না। লোকে শাস্ত थूँ खित्रा (वर्षोत्र, च्यञाक्ष (वस वा वाहेदवल मःश्रह करत, कि**ख** ব্ৰহ্ম প্ৰকাশ ৰূপ প্ৰাকৃত শান্ত, প্ৰকৃত অভান্ত বেদ বাইবেল[®] কোরাণ কেবল বিশ্বাসীর নিকট আবিছত হয়। এক যদি আপনার শাস্তভাব প্রকাশ না করিতেন, তাহা হইলে উচোর भाखकारवत चारनाहना (केवन कतिक विवस्तत चारनाहना হইত। স্টের ছই বিভাগ অচেতন ও চেতন এই ছই বিভাগে ব্ৰনের শাস্তভাব হুই প্রকারে প্রকাশিত। যথন বাহ্ প্রকৃ-ভির দিকে দৃষ্টিপাত করি, তখন তাঁহার এক প্রকার ভাব (मिथ । **आगारमंत्र मन मियाबिमि आरमानि**क, अमास्ति । ছন্চিন্তার পূর্ণ। উবিশ্ব ও চিন্তা ক্লিষ্ট মন লইয়া ইখন আমের। প্রশাস্ত প্রতিঃকালের শাস্তভাব আলোচনা করি, তখন মনে ৰান্তৰিকই ধিকাৰ উপস্থিত হয়। দিক সকল শাস্ত, সমীৰণ শক্তি, ভূলোক, দ্যুলোক শান্ত, অশান্ত কেবল আমার হাদর 🕻 গগণ বিহারী গ্রহ তারার বিষরই ভাবি, আর ভুবন-শোভী **उक्रम**ानि **উडि**टमत विवाहे किया कति कातिमिटक टक्ननहे माखि छेनर्गाक कति। भनीत शामि कि भाख, देनम गंगरनावन ভারার কাস্তি কি প্রশাস্ত। এমনই স্থানর ও ক্টভর ভাবে ব্ৰদ্ম আপনার শান্তভাৰ কৃষ্টির মুখে মুক্তিত করিয়। দিয়াছেন, বে শক সহত্র উদ্বেগ ও উৎকণ্ঠার ছিল্ল ভিল্ল হইরাও প্রকৃতির মুখের দিকে চাহিয়া প্রাণে শাস্তিকাভ করে। বখন ঝটকা वरह, खीमहरद खावाहिक हरेबा वनम्भिक्टिक निभाव वा निर्मा न ও মানব গৃহ সকল উৎপাটিত করে, যথন কল প্রপাতের ভীবণ রবে কর্ণ বধির হইর৷ বায়, বধন আধোর গিরির লোমহর্ণ অগ্ৰপাতে অতি শাস্ত হারগ্রও বিকম্পিত হ্রগা উঠে, তখন-আর এক প্রকার শাস্তভাব দেখিতে পাই। সে শাস্তভাবের मर्था भीवन छारवत चालिनवा आकृतिक वरतत अवनेनीएक স্পামসা ভীত হই। সামাদের দ্বর কাণিরা উঠে সভ্য, কিন্তু विषम भागता छावि ता. बहे गरुन भागावकः विविद्ध खाइ-

निका नक्त चर्च । चरिनचंत्र निवंशायनीरं विवेशिका निक् ভৰন আসৱা ভীষণ ভাৰের সহিত শাস্ত ভাবের বিল্লগ বৈশিয়া आवाक हरे। क्षकृष्टित वाहिर्देश यमन भाव छाव छिक्ट्सक ट्रिम्म भाष छार। क्रिकटत खुहात मृत्युगा, क्ष्मत महित्युम, मत्मास्त कार्याक्षणौनीः अमनहे छ्वत्सान्छ द क्षर উপত্ৰছ ও ধুমকেতু সম্বলিত কোটি কোটি সৌর অগত আপন আপন কলে নিয়ত ভাষাখাৰ অবচ কেই কাহারও গাতা স্পর্ন 'करत ना, त्कर कारावश करक जुनिहा (वैज़ारेटक छात्र ना। भक्त माहे. ट्यांगाइन माहे, मीत्रटव धारे मक्न महाम याणात नःचित्र इत (पश्चित्र) कनिश्च music of the spheres. ((शानक मझीछ) कहामा कतिहारकृत । मिण्डेनानि कविनिर्शय औष्ट धरे चानुक्त महीराज्य छेटहर्य चाहि। माह्य अवनी वन नानाहराज कछ मक्त करत. केछ शानमान करत. आत अम क्लांग क्लांग कन गांगोहेट एक अभि (कर धक्षी भक्ष श्रमित भाव ना।

নাম প্রকৃতি ছাড়িয়া যখন মানবপ্রকৃতির আলোচনায় প্রবৃত্ত হট, তথনও দেখি যে আপাতভ: দেখিতে কোলাহলের মধ্যে আশ্চৰ্য্য শাস্ত ভাব। কত দেশ, কত জাতি, ক্ত লোক, कठ প্রভেদ, কত কলহ, অথচ দেগিতে পাই যে এক মহান পুরুষ ভীম আকর্ষণে এই বিবিধ বৈচিত্র শোভিত মানব-জগ-•তকে আপনার দিকে, অনস্ত উন্নতির দিকে আৰুর্ধণ করিতে-ছেন। কত অবিশাসের সাগর আলোড়িত হইতেছে, কত নাত্তিকতার তরক উঠিতেছে, কত পাপ, কত মলিনতা মানৱাত্মাকে বিপরীত দিকে টানিয়া লইবার জন্ম প্রাণপণে চেষ্টা করিতেছে, অপচ কেহই বিধির অখণ্ড অনস্ত উরতির প্রতিরোধ করিতে সমর্থ হইতেছে না। यूर्ग मःश्राम कतिराज्यक, त्मामत मिक तिरामत मनतानम श्राबक-ালিত হইতেছে, কত লোক মরিয়া বাইতেছে, অথচ ব্রেম্ব অব্ত মঙ্গলাভিপ্ৰায় অণিদ্ধ বহিতেছে না। মহাকাল ক্লপী পরবাদ জীব জগভকে বিবিধ পরিবর্তনের মধ্য দিয়া আনন্দ ধামের দিকে লইরা ঘাইতেছেন। কত ধর্ম বিধানের বিকাশ হটভেছে, কত নুচন চিত্তাস্ত্রোত পুলিয়া যাটতেছে, ভাবিলে ত্রাণ গা**ন্তীর্য্যের সমুদ্রে একেবারে নিমগ্ন হই**য়া ষ্য়ে।

व्यक्रिकि-र्वाम ७ मानव-हित्रज-भूत्रार्गश खालात भाष छ। दित्र এই যে विविध ध्यकाम तिथिए शाहे, छाहात मूल ध्यक्रमकान कतिएक कातरण शहेंगे महान (ब्रोनिक छात् छेननी छ हहे, তমধ্যে একটা নিয়ম ও আরে একটা প্রেম। ত্রন্ধ যাহা করেন मक्ति विधि, विश्वाणीत विधान निधि श्हेरव मा (का आंत्र कि इटेर्टर। अन्न रेव्हामंत्र जिल्लि ना कतिएल भारतन कि ? जिनि नर्समक्तिमान चथा डाहात्र कार्या गरथाहाहातिक वा डेक्ट खेनच नाई, मक्नरे अथ्छ नित्रम,मक्नरे अद्याख्यत निक्तत्रण विभिष्ठे। जनन विकामनित्रान चौकाम करतम, त्य भूबिवीएक विति किहू गर्सरामी मच्छ निकारा थाक, जान लाक्क कि निवास जारा ভিচাৰিত "Uniformity of Nature" স্বৰ্থ প্ৰকৃতিবতিৰ हेक्स मार्थनीहरू। यात्रम याद क्रमान एकसह बन्द क्रमान श्चिमाकात विनि अवेश्व । (वनन क्रूट्र क्रांत्र छोति, (क्रमनि mork

चक्रवहरू पृत्रजात हान चहुनाटम चाक्रवेटपत द्वीच टेक्सक्र वर्षाचा बन्दरः, , व्याक्षात्र 'शविक्षणा वर्ष्णगीयः अवानर्पर्यक्र उच्चालंब वृद्धि। इह विद्यंह चयान, चवानिहासी चमलिकान-नीय जिल्ला। कांत्र नावा जिल्लाक प्राप्ता पंडेटल विभिन्न किया श्रीरकार अविकात वृद्धिक आगमारक नावित नवेशा गाउँपक शांद्र । नियम्बद वाहित्य क्रज शब काहात्र वाहितात्र सीवा नारे।

विशालात शास्त्रा (व क्वनहे विधि, द्वनहरे Law सिविटल शाहे जाहा नरह, विधिव शतिममाश्चि (टाम & Law's Fulfilment Gospel स्विटिंड नाहे । यरचाहातारा मनन हम मा, स्वर्धे के বিধির সকলই নির্মিত। পূর্বা একদিনও ক্রিণ সিজে বিরস্ত इत ना जुड़न खार्बना कनानि निक्तन इत ना; विवित्र दक्षि এরণ বিধান না হইড, সুর্যা এক দিন যদি বিপত্তে পরিভ্রমণ করিত, ভাষা ভইলে পূর্য্য-প্রাণ সৌর মণতে হাহাকার পড়িরা याहेल । এक निम यनि आचा की बत्मत अब मा नाहेल, धक निम যদি ব্ৰহ্ম প্ৰাৰ্থনার প্ৰতি উদাসীন হইয়া বাইতেন, ভালা হইলে ধর্ম জগতে কালাকাটি পড়িয়া ঘাইত। মঙ্গণমর বিবামিশি জগতের মঙ্গল চিল্কার,বাস্ত। তিনি জ্ঞানময়, কিনে জগতের मक्रन इटेटर जिनि दियम कार्निन, अमन अस (कर कारन ना। নিয়মে—মঙ্গল নিয়মে জাপাততঃ কষ্ট হইলেও পরিণামে মঙ্গল कानिया मक्तमश्री करनी विधि व्यक्तांत्र अवः विधामक्ष आवि-কার করিয়াছেন। বাজিগত জীবন প্রাণ, জাতীয় ইতিবৃত্ত, এবং মাদবজাতির ইতিহাসে আমরা দেখিতে পাই, যে দামরিক क्रिक चर्राग्ठि मर्बंड ममश्र मानवज्ञाजिरक कक्रगमश्री নিয়ত প্রেমকরে আকর্ষণ করিতেছেন। মাতুব কত বাধা দেয়, क्छ ना ना वर्ण, क्छ मछक प्रकाणन करत, किन्त त्थाममहीत প্রেমবলের সঙ্গে ঘুঝিয়া উঠিতে পারে না। প্রেম পরাজিত,থেম বশীভূত হটলা প্রেমনরীর প্রেম ইচ্ছার জীব শেষ আপনার हेक्कारक दिशक्तिन करता

নিয়ম ও প্রেমশ্বপ বীজ হইতে এইরূপ শান্তি উৎপন্ন হই-য়াছে আমরা দেখিতে পাইতেছি। সকলই নিয়মিত ও সক-लाइरे युर्ण चार्थाणक्छ, मनाजन एक जेनी रेष्ट्रां, छारे मर्सव भाखकाव विश्व जार्य गायन रहेशाहित ।

महाचा भवत (व करेंबठवान धातिक कतिता शिवाह्म. **এই भाष्ट छात छाहात मरशा विश्मित्रकार मृजिक ब्रहिनाटह। এই শাস্ত ভাবই ठिन्मुट्योटशत विटम्पष । अश्या वृद्धत्तव** यंथन (वोद्यधन्त्रं व्यक्तांत्र करतन, उथन हिम्मुरवारशत कात्र व्यक्तिक **कार्य काहात्र गरका धारम**ा कतिता सिर्त्सान् आकात्र शांत्रन कतियाहिन। नकन ध्यकात हारचन मून शतिक्रीम खाशात অন্তরালে শাস্ত ও নিক্পাধি এক মহান আছা স্ববহিত, हिन्दू द्यानीनिटगत नका स्मेरे भवसाका वर्णत. दमहे अवस्थात गरिक गररवाम । किन्न जापमाक्षिणवा मिलेनन, करे भागकाव পরিশেষে এক বিক্ত নিজিয় পার্ড ভারের সাধ ধারণ ক্ষিয়াছিল। নিজিহ শাস্তভাব কড়েরই প্রকৃতি, টেডনেয় শাৰতাৰ অভগ্ৰহার। চেড্ডেরের লাভ ভাবের আম্রা অভ and 50 shall find (अक्षत्रकान केंद्र बाल क्रेट्स 🎢 द्वयम । अक्ष्य दक्षित कार्र । आखेन कार्क कार्रवय कुटले विवेद 🖝

क्षित्र विकास मानुकान मनव जावन-कोवान मानुकानिक इंड क्रिया मिन्न के ट्यायन महस्र म इरेंगे काव तावित्क गारे, ্দ্রাবার একটা নিম্বিত এম ও আর একটা নির্ভর ও বার্থ-अक्षेत्रका मान्यक जीवरमत स्थवम कथा मित्रम, स्थित कथा ामाना विश्वविका मार्थावन की रम संस्थितिक व्यथना वायुक्ति बिटनार्वत करित्व शासंघ वह चात्र विदूष्ट गरह। जीनव सपरतत कार्या निकारन कृष्टे व्यकान कान बाटक। अर्क व्यकान निना-ষক, বেষৰ জ্ঞান ও বিবেক'। আন এক প্রকার ভাব প্রবৃত্তি-मुगक। देशका माम्बरक कार्याः खंदुन्ति त्वतः। क्रांन ७ विरम् अनुचिद्य निविभिक् करत्र। विरविधी अनुचिद्यत्वत ভকালতি ভনিরা প্রজাবিত বিবরের মীয়াংসা করিয়া থাকে। नाधात्रम कीवरन काम वा विदयक शैन । विकास वावर धावृत्ति क्षरम बोरक। नायक कीवरनत क्षथम कावी मिट कन्न विरव-কের উচ্চলভা সাধন ও প্রবৃত্তিদিগকে উহার বস্তুতা স্বীকার কয়ান এবং নিকৃষ্ট প্রবৃত্তিকে হীন করিরা উৎকৃষ্ট প্রবৃত্তির श्राथां प्रश्चामन कता। कीवतन वथन कमिन्न थाकित्व ना वथन जाननात रम्हाहारतत उन्त किहु वाकित ना, छ्वन CM रामन मक्तान इहेरन, जन्द नथन् द्रशासन नकान हहरन, ভখন মন প্রকৃতরূপে শাস্ত ও সমাহিত হইবে। প্রবৃত্তিতে ७ विरव्ह यथन विरवाध शांकित्व ना, त्थात्र वृद्धि लाहेगा यथम अञ्चलितिशत यथायथ श्रान निर्मिण धरः विटवरकत वक्क जादक महत्व ७ विकारिक कतिता मिष्य, छचन कीरान भाष्टित ताका व्यक्तिक हरेरव । भाष्टित উत्मर्भ वाहिरत क्लानाहन नृत्र भान आखरण कत्रित कि इरेद, छिउदा অন্তররাক্ষো বালাতে শান্তি সংস্থাপিত হর সাধক তাহার জন্ত সচেষ্ট হ'ও। নিয়ম শৃঞ্জার জ্ঞচিরে জ্ঞানরমিত ভাবলোলুপ छत्रद्राक कंद्रिन कदित्र। दें। थिया दुक्त, छत्व फेक्टजुर माध्यात्र क्षिकात्री इट्टेंद । वीष এত्रियन कीवनरक निर्मायङ क्रिएड ना शांतिरन, जरव त्थम । देवताशांति केळ अर्चत कथा वृथा (क्न मूर्थ कानमन कत्र। द्य उक्त हद्दर्ग काम्बरिमर्व्छन ক্রিতে চার, সে সর্বতে ত্রন্মের অমুকরণ করিতে শিকা কর্মক। खामा नाष्ट्रकाव कायुक्तव कतिएक यथन ममर्थ इहरत, जधन निःचार्थ (श्रम, तक्त मस्रान विनश नत्रनातीत व्यक्ति निःचार्थ প্ৰেম প্ৰকাশিত হইবে।

চাতিনিকে উৎসাবের তরক উতিরাছে, এখন শান্ত ভাবের ক্ষেত্র অবভারণা করিতেছি। ইহার নিগৃঢ় কর্ম আছে। আমরা উৎসবে প্রমন্ত হইবার অভ সকলেই ব্যগ্র। আমা-মের কিছু পরণ করা উতিত বে প্রকৃত প্রমন্তভা কি ? উচ্ছাস মুই প্রকাশ। এক প্রকার বাহিরের কাঁদাকাটি লাকালাকি মারা উহা বাছির হইবা বার, স্থারী হয় না। আর এক আমার উচ্ছাস আছে ভাছা ভিতরের। বধন সে উচ্ছাস ক্ষেত্র, জননা মাহিরের চরণ নৃত্য না করিতে পারে, কিছু ভিতরে ভিতরে প্রাণ প্রমন্ত হইবা উঠে। প্রাণে রবি প্রম-মারা কালিকে, জীকনের ভর্মের প্রমন্তভা গইরা কি মুইবে। মারা কালিকে, জীকনের আম্বিটা। স্থানের জীকনের প্রমন্তভা

किह्न भतिनक्रमः, कतिया गरेएछ इहेरन, नाहा छैदमानत मर्टक मुरक सुनाहेबा नाहेरन मा।

म्हारत माखि नाहे, अक्ष-हत्रत माखि चारक। मानात কামনা পরিহার পূর্বক সাধক ব্রক্ষচরণের শরণাপর হও। डीहाब अनिर्वाहनीय श्राकृतिय अञ्चवन कतिएक भिका कव, শাস্ত স্মাহিত চইরা তাঁহার ক্রক্মলে আপনার চিত চির-नित्मत्र यक नवर्णन कत्र। यक्षतिम ना चामता माखकाव कीवाम সংক্রামিত করিতে না পারি তত্দিন চরিত্রের বিশেব উর্জ্ नाञ्च कतिवात ज्ञामा इतामामाख । महाज्ञास्तता द्य पंथ ज्यर्व-नवन कतिया करमागत छेडीर्न हरेबाएहन, त्य नथ प्रतिया তাঁহারা অসার চিন্তা, অনিয়মিড 'জীবন ও চাঞ্চলার অভীত इरेबाहिएनन, आमानिरभंत्र उनरे भर्थ अवनवन क्रिएक इहेरव। मान्छ बस्त्रत मत्रण नहेरन आर्गत मकन श्रकात. অশাস্তির হাত হইতে চিরকাশের জক্ত নিস্তার পাইবে। শাস্ত ব্রহ্ম আমাদিগকে অমতি দিন। তিনি আমাদিগের **इक्**ल मनत्क ज्ञारवर्ज, এवः चामानित्त्रंत्र यावशीत्र च्यां वि ও উদ্বেগকে বিদ্বিত করুন। তাঁহার কুপার আমাদিণের অনিয়মিত উচ্ছ খল জীবন নিয়মিত ও শৃখলাবদ ভউক।

৯ই মাঘ, সোমবার

প্রাতঃকালে উপাসনালরে ত্রান্ধিকা সমাজের উৎশ্ব। এই কারণে ত্রান্ধভাতৃগণ একত্রিত হইরা সিটি কালেজ ভবনে উপাসনা করেন। শ্রীবুক্ত বাবু শ্রীনাথ চন্দ উপাসনার কার্ব্য করিয়াছিলেন। এই দিনের সরস উপাসনায় উপাসকগণ বিশেষ ভাবে মুগ্ধ হুইয়াছিলেন। উপ্দেশের মর্ম্ম লিধিভ না হওয়ায় প্রকাশিত হইল না। শ্রীবুক্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী ত্রান্ধিকা সমাজে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন। উপদেশের সার মর্ম্ম নিয়ে প্রকাশিত হইল;

°পুন্মকাণে রাজারা সাধু পণ্ডিতদিগকে সভাতে নিমন্ত্রণ করিয়া আনিয়া ধর্ম বিষয়ে কণোপকথন করতঃ উৎসাহ দিভেন। একবার রাজা জনকের বাড়ীতে একটী যক্ত হয়। সভাষ্টে ব্রাহ্মণ্দিগকে দান করিবার জন্ম সহস্র পাতী আনীত হয়। রাজাজনক থেত্যেক গাভীর শৃঙ্গে দশটী করিয়া মোহর वैधिया সমাগত ত্রাহ্মণদিগকে বলিলেন, আপনাদিগের মধ্যে ষিনি এজনিষ্ট, ভিনিই এই গাভী লইয়া যান। এই কথা শুনিয়া সকল আহ্মণেরাই পরস্পর মুখের দিকে ভাকাইতে नाशितन, त्रह्हे अश्रमत हहेत्रा शक् नहेर्ड माहम क्रितनम न।। এমন সমরে জনকের কুল-পুরেগহিত বাজাইছা আপন भिषामिशाक दिलालम, अटह भिषानने, रखामता अहे नकन পাভী লইয়া যাও। শিষাপ্রণ পাডীসকল দইরা যাইবার উপ-' ক্রম করিলে, উপস্থিত অঞ্চান্ত ব্রাহ্মণখণ স্কুলিত হইয়া বলিলেন, ছित्र ६, १९८वा व्यामार एत व्यामन छेखन हाथ भरत नाकी गरेती श्रृत्ता वाक्यकारक एक क्षत्र कतित्व, फशन करे क्षत्र छन-शिक रहेता। व्यवस्थित स्वि क्या शार्शीत खेशन राख्यकारक আন্ন ক্রিবার ভার ক্ষণিত হইল ৷ আবগণ কর্তৃক ক্ষ্যুক্ত क्रेश शाली कार्क्यकारक वृतित्वत, आरक्ष वित्र रहेत, व्यत्व

व्याप्त कार्याय छेक्य दिन गटन शाकी नहें से वान्टियम । अर्थी क्या करिएनम, धरे हारनाक क्रिया वार्या के स्वरंग मधाकि वर्ष मधाक करिएम करिएमम, धरे हारनाक करिया वार्य । गार्थी छात्र करिएमम, कार्याय करियम करियम करियम करियम करियम करियम करियम करियम वार्याय करियम वार्याय करियम वार्याय करियम वार्याय करियम वार्याय वार्याय मध्य मध्य वार्याय वार्याय मध्य मध्य वार्याय व

े प्रांत हे छा हि कि ब्राप्त प्रष्टि बहेन ध्याहीन कारनंत्र अविदा এই आदात्र मञ्ख्य निष्ठ CbBI कतिशाहितन ! जी ७ भूक्य দলের কিরুণে স্টে হইন, এশ্রশ্নও তাঁহানের মধ্যে উঠিয়াছিল। আমাদের দেলের প্রাচীন উপনিষ্ণ গ্রন্থে এবিষয়ে একটা বর্ণনা चोट्ड, त्र वर्गनां के बड़े, अध्य अवागि नाम शुक्रव कृष्टि ছইল। বিধাতা দেখিলেন যে প্রজাপতি আপনাকে একাকী ব্লিরা অনুভব করিতেছেন বলিরাবিষ্ণ হইয়া আছেন। তথন বিধাতা 🐙 বের দেহ হইতে রমণী উৎপন্ন করিলেন। নারী प्रक्षि कतित्रा श्रुक्तरवत्र शाक अहे आकर्षा र्याण कतित्रा पिरलन । আত্মাও দেহেতে যেমন বোগ, পুরুষ ও নারীতে তেমনই যোগ ছইল। আত্মা দেহ পরিত্যাগ করিলে শরীরের সকল যত্ত্র বিক্ল হইরা যায়, আবার শরীর ছাড়িয়া আত্মা কোন কাজই कतिएक भारत ना। नाती ७ भूक्तरवत अवैक्रभ र्याश इवेन, শ্বীর ধর্ম শাল্কে লিখিত আছে বে, জ্মার একটা স্থার উদ্যানে আদি পুরুষ স্ট্রিকরিদেন। তিনি একাকী উদ্যানে বেড়ান ও আনন্দ পান, কিন্তু ভাহার স্লান ভাব দূর হয় না। অব-শেৰে দেই আদিপুক্ষ যথন এক দিন নিজিত আছেন এমন সময়ে জাঁহার বাম পঞ্রের অভি খুলিয়া লইয়া বিধাতা নারী স্টি করিলেন। ইহারাট পৃথিবীর প্রথম পিতমোতা। এ স্কুল রচিভ কথা যে সভা ভাছার প্রমাণ নাই। ইহার উপদেশ কিন্তু গ্রহণ করিতে হইবে।

धारे दि व्याचातिक। वर देशामत मधा व्यापता तिथिए शिहे, दि व्याचालिक व्यन धकाकी दिवान, जगन ज्ञान चारकन, व्यापता व्यापता धारकन। व्यापता व

वित्र वह गांतः नाडीकाक यकि भूकरका नावारण निवृत्तः वह गां। विश्वाद्याः वह गां। विश्वाद्याः वह गां। विश्वाद्याः विवर्त्तः व्यक्त वर्षान कतिया वाकिर्द्धः गांतः नाः। विश्वाद्याः व्यक्त वर्षान कतिया वाकिर्द्धः गांतः नाः। विश्वाद्याः वर्षान वर्ष

এই কথার প্রমাণ পৃথিবীতেও পাওরা গিরাছে। বড় বড় জাতিরা বড় বড় কাল কারিয়াছেন, ভা**লাভে নারীর নাম** शक नाहे। नाती किलन, अञ्मान कतिया नहेट इस। নারী তুর্কলা বলিরা ভাহাদিগকে পশ্চাতে কেলিরা পুরুবেরা কাল করিরাছিল। বিতীবতঃ নারীরা বাহা করিয়াছিলেন **जांश नुकारेबा कविबाहित्यन. वाहित्व ध्यकांग करत्र नांहे।** দ্রীলোক অশিকিতা থাকিলে তাঁহাদের যে শক্তি থাকে না. তাহা নহে। ভাঁহারা পুরুবের উপর শক্তি প্রকাশ করেন, কিন্তু ভাহা গোপন ভাবে করেন বলিয়া প্রকাশ নাই। নারীর সাহায্য অভাবে পূর্বকার ফাজ মলিন ভাবে সম্পর হইয়াছিল। বর্ত্তমান কালে পুরুষ ও রমণীতে একতে কাল করিতেছেন। এক আকাজলা দইরা বিবাহ হইতেছে। মুক্তি ফ্রোকে জীকোক গাউন ছাড়িখা গৈরিক পরিধান করতঃ দেশে বিদৈশে খুরিয়া বেড়াইতেছেন। এই মুক্তি रको स्वतं कर्छ। एक स्नित्र में पूर्व १७ मिरमम् पूर्व माधारन याम করেন। 'লোকের মত এই যে মিসেস বুণের ছারা বেশী কাল হরেছে। তিনি আশ্চধ্য কাল করিতেছেন। সে কাজের বর্ণা হয় না। হাজার হাজার লোককে তিনি স্বাপান হইতে নিবৃত্ত করিয়াছেন। কলছিনী রমণীদিগকে পাপ পথ হইতে ফিয়াইয়া ধর্ম পর্থ আনিয়াছেন, কেনেরেল ও সিসেস বুণ ছই জনে উৎসাহী হওয়াতে কেমন আশ্চর্যা কাৰ চলিতেছে।

নারীরা যদি উৎসাহী হইতেন তাহা হইলে আরও ভাল কাজ হইত। সংসালে সন্তান পালন অচাক্ষরপে হর যদি পিতামাতা উভরে সে বিবরে মনোবোদী হন। পিতামাতা উভরে মিলিয়া বেমন সন্তাম পালন করেন, পুরুষ রম্বীর তেমনই উভরে মিলিয়া কার্য্য করিবেম। শিশুদিগতে শিক্ষা দেওয়া হুনীতি হর করা, পাল পর্য হইতে লোককে নির্ভ করা আনি সকল কাজ পুরুষ ও রমণী হুইভরে কারেলে বেমন হয়, পুরুষ কি মুমণী একা করিলে তালুল হয় না। মারীদিলেয় শক্তি প্রকাশ হইতে না সেওয়ায়ে আমালিসেয় বেশী হুর্গতিতে ছ্নিয়া সিয়াছে। নারীয়া সাহায়া করিলে পুরুষেলা আরভ ভাল হইতেন, পুরুষেরা অবজ্ঞা না করিলে লারীয়া আরভ ভাল হইতেন, পুরুষেরা অবজ্ঞা না করিলে লারীয়া আরভ ভাল হইতেন,

स्व। साहीविनात्क चुना कतिया पूर्व वाविहा भूक्तरवा होति । अस्वाची विश्व अक्षी केनात्व विहासिका, ता कैनारवन मान कार्यक काम काम कहिर्देश, छोडा क्ट्रेंग ता काम अहै। अक्षम मनिव विरक्षण वाहरवन । जिन्दून खेळाटक मनिन छार्द मन्त्रत देश । माही नाहात्रा कहिरण काम रक्षम प्राविहा कार्यिक मान कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक

विज्ञाद ग्रहेव। अन समारक अरू महस्य, अन्य समारक नीहम्स 🖢 धक क्रमान धक्रमञ होका विश्वम । बाहारक धक्र महस्र क्षेत्र विरवन, तम तमहे हो का वानि व्यां नानाहेवा खेळाळाला (हड़े। क्यकः (महे छोकारक नीह शंबात है।का कतिन। बाहारक नीह भक्त होका विहा हिराम, तम चीह भक्त होकारक बाहा-ইয়া ৰাড়াইয়া ফেলিল। কিন্তু বে এক শত টাকা পাইয়া हिन (न के छाका ना शांताहेन्री वा काटक ना मांगाहेन्रा श्रुक्तिना 'রাবিল_{ি,} মনিব_ুআসিয়া প্রণম[্]ও 'বিভীয় ভ্ত্যের উপর বিখাসী ভূতা বলিয়া বিশেব আমন প্রকাশ করিলেন। বে ড়ভা টাকা নাটাভে পুভিন্না রাধিরাছিল, ভালাকে ভিন-ছার করিরা ভারার নিকট হইতে দেট টাকা লইরা যে ভাজার টাকা পাইরাছিল, তাহাকে অর্পণ করিলেন। পর-त्यचेत्र आमारमत वार्गा मित्रारहम, खारा अव्हिख वस्त्र में खाराः আসাদিগের নিকেদের পূজার জন্ত নিযুক্ত করিয়া রাখা উচিত मरह। धनीरक छारात निर्वात कक नेवत धन रहन नाहै। बाहात अक खर्ने मिकि (म सम्भूष्टम) क्रतिरव। (सह मरानत मिकि পুরুষ রমণীর য়াহা আছে, পরমেখনের সেবাতে ভাঁহরো ভাহা অর্পণ করিবেন। পরমেশ্বর দেহ মনের শক্তি ভাঁহার সংকার্যা कतिवात अञ्च जीनाम कतिबाद्याता । छेटा वक्त साथित विशालात ইচ্ছ। পূর্ণ হইবে না। তাঁলার ইচ্ছা পুরুষরমণীর যাহা দিবার चाहि, छारा जनमार्खेद क्य शृथिवीत উद्वार्डित क्य निर्दन, ব্ৰাহ্মসমাজ হটতে আমরা এই উপদেশ পাইয়াছি। 🥕

तामत्मारम तारवत्र मभारत मर्क व्यथ्य खीरनाकरमंत्र कथा উঠিছাচিল। তিনি নারীদিগের অভ কাঁদিয়াছিলেন, তাহা-দিগের অবস্থা উন্নতি করিবার অক্ত প্রাণপণে বত্ন করিয়াছিলেন। কিছ বাল্লসমালে বে জীলোক্দিগকে আনিতে হইবে, এ চিন্তা তাঁহার মনে উদর হর নাঁই। তিনি যণন ত্রাহ্মসমান্ধে আসিতেন खबन এकाकी चानिएकन। होट्रलाटकता चवटताट्य बाकिता यथी ত মাকাল পূজা দইয়া ব্যস্ত থাকিতেন। এথানকায় ব্রাক্ষেরা ব্ৰাহ্মসমাৰে ভাল কথা বলিতেন কিন্তু বাড়ী গিয়া ভাছা গোপন कतिए हरेख। बाज्जनभाषा जाहानिगरक मनिन ভाবে काक করিতে হটত। বিধাতা দেখিলেন যে পুরুষেরা ব্রাক্ষসমাজে मनिम ভাবে काम कतिराउद्दर, मिथिया जिनि क्नामिशक **एक्टिनन । दुनिर्दान क्याशिय चात्र निर्दाणात चौधार्दा** খাৰিও না, দ্বার আইন, পুরুবেরা একা কাল করিতে পারি-**८७८७ मा, । एकामहा चानिता है हानिगटक नाहाया कता। शह** লকল **জীলোকবিনের হাতে পাড়ল। ঈবরের ডাক** গুলিয়া काषात्रा चानित्तम, चामारतत्र चामम हरेन। वाचनगरक বীয়াকে শিকা ব্যক্তাম এখন স্পরিবারে ভারতে পিতা ব্রি-্ৰেছি, পুত্ৰ ক্ৰমাৰ বিবাহাদিভেও তাহাকে পূলা ক্ৰিতেছি :

अपन दश्रून, केकरत काल कहिरान कछ जातल हत, वहि हैका करनन जानरजन इश्य एन इक्षेत्र, वहि हेका करनन इक्ष जानर नमते अ भूक्ष नगरमादन नाम क्षा नाम करून, श्रीत हैका करनन, हिस्सम क्षींकि एन इक्षेत्र, छारा हहेटन छेक्टन नम्द्रक्तिन निर्देशमादन कार्य जानिया कम त्यादक क्षीतमान सहैन। केंद्रनावहन महिक जाननाहिन्द्रक क्षीतम हहेटक हेन्द्र,।

ইবরে প্রকার প্রকার করেন প্রকার করিছে করিছে। স্বাধার বিশ্ব আপদের নিরাপা পরিভাগে করিরা উথার হাত প্রিরা ক্ডারমান হউতে হইবে। বালককালে পিন্তার অস্কুলি ধরিয়া বেড়াইয়াছিরেন, এখন প্রম পিতা প্রম মাভার অস্কুলি ধরিরা অর্পরাজ্যে কেন বেড়াইবেন না। উৎসাহিত হউন, উখরের রূপার সকল বাধা চলিয়া যাইবে, ভাঁহার প্রিয়কার্য্য সাধন করিয়া কুভার্থ হউবেন। "

আনন্দ বাদ্ধারে আহারান্তে মধ্যাহে মহিলাগণ পুনর্নির বলমহিলা সমাজের বার্ধিক অধিবেশন উপলক্ষে উপাসনালরে সন্মিলিভ হন। সর্কাসমতিক্রেমে স্মিযুক্তা সরলা রার, সভাপতির আসন গ্রহণ করিলে পর আগামী বৎসরের কর্মাচারী নিয়োগ ও কার্যা প্রধালী ছিরীকৃত হয়।

অপরাত্রে থিদিরপুরের একটা গোলা কার্যার সন্ধীর্তনান্তে বীবৃক্ত শশিভ্ষণ বহু (প্রচারক), শীনাথ চন্দ, অগদীপ্পর ওপ্ত ও লছমন প্রশাদ বজ্না করেন। সারংকালে ব্রহ্মান্দিরে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের বার্থিক অধিবেশন হর। এই অধিবেশনে বার্থিক কার্যাবিবরণ পঠিত ও গৃহীত তইলে, পর সভাপতি মহাশের একটা বজ্তা করেন, ডংপরে আগামী বর্ধের কর্মাচারী নিয়োগ ও অধ্যক্ষ সভার সভা মনোনয়ন কার্য্য সম্পাদিত হরণ সভার বিস্তারিত কার্য্য বিবরণ পরে প্রকাশিত হইবে বি

১০ই **শাঘ মঙ্গলবার**।

প্রাতঃকালে শীযুক উমেশচন্দ্র দত্ত সাণারণ ব্রাক্ষমমাজ
মন্দীরে উপাসনার কার্যা করেন ও উপদেশ দেন। ভাঁহার
প্রান্ত উপদেশের ভাব এই যে, উৎসব কেবল ভাই ভগ্নীদের
পরস্পর মিলনের ক্ষেত্র নছে। কিন্তু ইছা প্রমেশ্বরের সহিত
আমাদের মিলনের স্থান।

অপরাক্তে নগর সন্ধার্ত্তন হয়। অনুমান চারিঘটকার সমধ্য সংশীর্ত্তন করিগণ ওয়েলিংটন স্বোয়ারে সমবেত হইরা একটা প্রার্থনা করেন। তৎপরে লালোরের প্রীযুক্ত অবিনালচক্ত্র মক্ষ্মদার, কুষ্টিরার প্রীযুক্ত অগনীশচক্ত্র শুপ্ত, এবং প্রীযুক্ত রক্ষক্রমার মিজ সমাগত দর্শক মপ্তনীকে সংখাধন করিয়া বক্তাকরেন। বেলা পাঁচে ঘটকার সময় সন্ধীর্ত্তনকারিগণ ওয়েলিংট্রন স্বোয়ার পরিত্যাগ করিয়া ওরেলিংটন ব্রীট, কলেল ব্রীট ও কর্ণগুয়ালিস্ ব্রীট দিয়া নবরচিত সন্ধীর্ত্তন গান করিতে করিজে সন্ধা। প্রার ৭ টার সমর ব্রক্ষমন্দিরে উপন্থিত হন। পাঠকবর্পের গোচরার্থ সন্ধীর্ত্তনটী নিয়ে প্রকাশিত হইল;—

मधीर्वम ।

নেধ দিন যার, তোঁরা আর ভাই; নিরাশ করে বিষর কুণে
থেক না ডুবে। (দিশা হারা হরে)
যে কোম ভিত্র শান্তি পাবে না; খোর পাণানলে মর্বে অলে
মনের আঞ্চন নির্বেনা; সাধুভক্তগণ, তারা আনক্ষে যে প্রেমনীয়ে করেন সম্বরণ, একবার পিও রে সেই প্রেমের স্থা ভাই।
(আশা দুরে রাবে) তোলের ভাশিত পরাণ শীতন হবে।

त्यात्रा कृत काने; जनक दर विनि, किश कानि जन्मन ट्रिस्ट्रिक नीना किस्ट्रिन वार्थान ।

(किनि यादत सामान तमरे कांद्र) (किनि सुन्न करते हैं। (द्रात्मक) किस क्रमा करन रक्षण भारत करन महास मून्यत सर्थे। (किनि) निस क्रमा करन भागी करन, करन क्रमा करन कर्षे कर्ष

্ (আমরা আর কিছু জানি না হে) অপার তোমের সিস্কৃ ভিনি, পালীর কাতর এবল্লি ভনি, কাবেন নিজ কোগে টানি, করে মুড়াবেন ভারে আপনি।

⊰(নিজ কুণা ঋণে√হে)

সংসার আগনে মোছ নিজাবশে গেক ন। ভাই- দেশ দেশরে বেলি নয়নে। (দিন বার যার ভাই)
দেশ রে শোভা অপরূপ অফুরপ নাহি রে ভ্বনে;
ভই নতু নারী সবে যার ভরি দেশ রে ভাই! বিধির মকল
বিধানে; (জয় ব্রহ্ম জন বলে হে)
পাপ যাবেই যাবে ও তাঁর প্রভাবে স্থান পাবে চরবে।

🕶 ं ं(नित्राण इ'खना र'खना)

ঁৰল ভগতে আনন্দ সমাচার।

ভবে, হবে রে পাপীর উদ্ধার। (আর ভর নাই নাই রে)
পাপীর পাতকের ভার, শিতা করেছেন এবার, ভর নাইক আর
পাপী যাবে ভবসিদ্ধু পাদ্ধ। (অপার রুপা গুণে রে)
একবার নিজে পাসরে, ডোবো সে প্রেমসাগরে, গুড়াই বাঁচিবে
মরে, হবে হবে প্রেমে একাকার। (সব হুদর এক হবে রে)
বাঁধ আশাতে হুদ্য, বল জর ব্রহ্ম জয়, আর কি ভয় কি ভয়,
স্কেন জেন ব্রহ্ম রুপাই সার। (আর সকল অসার জেন রে)
(ব্রহ্ম রুপায় তরে যাব হে)

भिन-नेक्ति निद्भवनन, टाइश थाकिन्दन आतः विषय विषय हिस्स मर्गन,

সংৰে এগরে আজে ব্যাকুণ হয়ে ভাই ! আছের মধুমর পান গাইরে সবে।

সকলে ব্রহ্মনিদিরে সমাগত হট্লে পর শ্রীযুক্ত নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যায় উপাসনার কার্য্য করেন ও উপদেশ দেন্। ভাষার প্রদার উপদেশের প্রধান ভাব এই যে, উৎসবে যোগা দিবার পূর্বে ভাই ভারিগণের পরস্পরের প্রতি যাহা কিছু অস-ভাবে আছে ভাষা দূর করা অভ্যাবশ্রক। নতুবা আমরা উৎসরে কোনও কল পাইব না।

১১ই गाच-खाजःकान ।

त्रक्रमीत क्षाक्ष त्र गठ ना स्टैट्डिट्टिस्टिट् छेशानमा स्थित क्षेत्रात्रक दृत्क शूर्व स्टेट्ड माशिकः खेवात काटनाक स्थान मध्या अविदे स्टेट्न द्वया दशन, छेशानकर्मन च च कानद्य स्थान मध्य दिखादक्तः। मत्र मातीत क्षण्यात छ विधान शूर्व मूट्य छेवात काटनाक श्रीकृष्टी कि स्थान द्वयादेटक माशिकः। द्वरे खाद-शूर्व म्थनकर्ग छेशानमार्च स्वयदिक कार्दिकत क्षिक खेळकः

minut fen a fece Bein die ein secus dinie अरमिएक अनि छितारकः स्वर्धेत जनगरम मन्तितक गाँउ क्यां क्यां निष्ठ प्रदेशकेटहः। यथा नगरत्र लिखन लिवनान पाकी दवनी बार्य कडिरमन व्यथः मित्र मिश्रिक क्रेरमायम नेरकरिक क्रेमाममः व्याद्रक इतेका । केटबाधन्-छेरग्रत्यत्र कार्यकाची त्वनकात्र कान्यक अनिनाक भूकं के छोड़ाव आवाधनाटक अवस व्हेवाव मृत्यः जाबारमञ करवकी कर्डवा जारह। लाग्य कर्डवा जाबबा নৰ্কাংগ্ৰ: বাক্ষ্যক্ষ্য বাতিষ্ঠাকৰ্তা: প্ৰ্যুক্ত মহাস্থা নাৰাং त्रामरमाञ्च तात्ररक हासानून असरेत अतन कति। ेरमह अस कारतत मिर्टन विनि चट्मभवात्रीत निकटि कारना छेन्यन আলোক ধরিরাছিলেন, বিনি এটা আহ্নসমালের প্রতিষ্ঠার জন্ত শ্বভণরতঃ অন্যে ক্লেপ ও নির্যাতন সহ করিবাছিলেন তাঁহার ক্রতি ক্ষামাদের হৈ ক্রতক্ষতার স্কর স্থাছে। ভালা স্বরণ করি। বিতীয় প্রলোকগন্ত পশ্তিত নামচন্দ্র বিশাবাগীশ। ইনি নাম-মোহন রায়ের পরলোক গমনের পর তাঁহার রোণিজ, আক্ষ সমাজ-ভরুতে একাকী অসুরাপরারি সিঞ্চন করিয়া ইহাকে রক্ষা क्रिशिक्ष्ति। यथन छे९नाइ विवाद लाक अधिक हिन ना, বরং নিরুৎসাহকর কারণ সর্বতি বিদ্যমান ছিল, এরপ সময়ে বিখাস ও নিষ্ঠার সহিত ইনিই কেবল আদাসমাজকৈ মৃত্যুপুৰ হইতে রক্ষা করিয়াছিলেন। কৃতজ্ঞ অস্তরে তাঁহার ষেট্ অফ্রাগ जारा जामता ऋतन कृति । छ्डीत श्रीयुक्त महर्षि (सात्रस्थनाव ठाकूत । ইইার প্রতি আফাদের কৃতজ্ঞতার গ্লণ কত গভীর। মুম্ব্ প্রায় दास्त्रमाक्टक ज्ञमम मत्नव गमश मक्तिय निक्छ देनिहे जूनिया ধরিয়াছিলেন। অগদীখর এই মহাত্মাকে অভ্যুদিত না করিলে আল আমরা সকলে কোথায় থাকিতাম। ইনি ক্ষয়কীর্ণ ও क्य तरह अमानि आवारमत यादा वर्तमान थाकिया निक कीवटनत उच्छन मृद्देश्य बात्रा आमानिशस्य उत्राह्म निटल्ड्सन। এই মাংঘোৎসবের দিনে আমরা স্কৃতজ্ঞ চিত্তে তাঁচার क्षराम्य व्याप्न प्रत्र कति। ७९ भटतं शास्त्रामा ८० म विक्याः हेनि बाक्षम्याध्यत উन्नजि ଓ बीत्रहित वस याहा कतिया-(इस त्मक्क केशिक कुछक्क का कर्मन कृति। यामिक कासाव স্কল কার্য্যের সহিত আমরা যোগ দিতে পারি নাই, তথাপি जाक्षत्रमाञ्चरक (यक्षर्य जिनिश्चारी कत्रियाह्नन, काहा बहेटक **जा**मना निकृष्ठि शहिएक शादि मा। काहात व्यवन विश्वास, व्यनक क्रिश्नार, অসীম উদাস, ও রাক্ষ সুমহকের অভি গভীর ক্ষমবাধ ক্ষম पिरेणव चारक, स्वतंत्र कति । विश्वाका धारे जनका महाकृरनत वाता वाक नमारकव कक-पृष्टि करियाहरून । एकनम नेकेशन नहन्। (य मस्य मस्य क्षान्तानी काचा एक काइन ७ वर्षवान नगरत, **क्षेत्र वर्ष विश्वताक प्रका करिए एक्न, :कारायक जन्मदनक श्वतः पात्रमःस्मृति**यः गुण्यः पुरस्यः स्वरणस्य

उर्श्वाद वर्षमाम स्वर्ध मानावन काळ ग्रमाद्वस हा मक्त ग्रमा ग्रेटनाक श्रम करेकारकम, बाबारकम महिक विश्वक नहर्ष बरहादमान व्यवक क्रियाममा करियादिनाम, विश्व व्यवस्था विश्वक उगाममा कृष्टिक माहिनाम मा, रुष्टि ग्रम्भ कार्ष क क्रियादिक प्रमुख्य कवित

Machine Physicals Riminess alleinischen allein

विकास प्रदेश नेवानक वाच-वच्च नेवादक च कार्यमिक विद्या कर्या करिएक । जारे तर क्यों नेव काम चांक कर कर्या करिया करि

ভদনত্তর বিধিপুর্বক ব্রক্ষোপাসনা ইইল। উপাসনাত্তে উপদেশের পূর্বে আফার্য্য ভগবলগীতা হইতে ও এইীর ধর্মশাস্ত্র ক্ষতে ফুইটা বছনা উদ্ভ করিয়া গাঠ করিলেন। ভারার অসুবাদ নিরে প্রায়ত হইডেছে।

ভগবলগাতা ৯ম অধ্যায়, প্রীক্ষণ আর্থ্যকৈ বলিভেছেন—
হে আর্থ্য ব্যান কর, বধন তপতা কর, সমুদার আমাতে অর্পণ
কর। তাহা হইলে তুমি শুডাশুভ কলম্পণ কর্মা বন্ধনে আবদ্ধ
হইবে না। তোমার আত্মা প্রকৃত বৈরাগাও বোগ লাভ
করিবে, এবং তুমি আমাকে প্রাপ্ত হইবে। আমি সকল
প্রাণীতে সুমান ভাবে আছি; কাহারও প্রতি আমার বিরাগ
কাহারও ক্রন্তি অনুযাগ নাই; যে কেহ আমাকে ভভিপূর্বক
ভক্ষা কিলে আমি সে লনে পার্কি, সে লন আমাতে থাকে।
কে যদি হ্রাচার নিগের মধ্যে অগ্রস্পাও হয় এবং অনন্তগতি
হইমা ঐকাত্তিক ভাবে আমাকে ভলনা করে, তাহাকে সাধু
বিনা আনিতে হইবে; সে হরার ধর্মান্মা হইরা অকর শান্তি
লাভ করে। হে অর্জুন নিশ্চর জানিও আমার ভক্ত কথনও
বিনট্ট হয় না। তি এইরূপ এটিয় ধন্মশান্ত বাইবেলের আইসেয়া
নামক প্রছের ৪১ পরিছেদে আচে;—

ঈশর বলিতেছেন—"তোমাকে আমি পৃথিনীর প্রান্তভাগ হইতে আনিরাছি; কগতের বড় লোকনিগের মধ্য হইতে ভোমাকে আহ্বান করিয়াছ এবং তোমাকে বলিয়াছি যে তৃমি আমার ভৃত্য। আমি ভোমাকে মনোনীত করিয়াছি, ভোমাকে পরিত্যাপ করি নাই।

্ত্ৰি ভর পাইও না, ভারণ জানি ভোষার বলে আছি; আসমুক্ত হইও না কারণ আসি ভোষার উপর; আমি ভোষাকে সবল করিব; নিশ্চর বলিতেছি, আমি ভোষাকে আমার পুশা-ভাবের বজিব হও বারা তুলিয়া ধরিব।

দেশ বাহার। তৈনার প্রতি অভিশর বিরক্ত তাহার।
নিক্তিত ত অপকত হইবে; তাহার। অকিঞ্চিত্রর নিক্তর মত
ক্ষিতে। বাহার। তোকার শক্ষে বিস্কানী হইবা কভারনান
হইবে, তাহারা বিনট ক্ষিকে।

कृषि जात जारात्रियम पृक्षिया व नारेटव मा, त्यरे जारात्रा वारात्रा ट्यायाव स्थित्व प्रधानमान दिनः, वाराता जाज ट्यायाव सर्विक मेर्जारचे कावृत्व, जारात्रा जानिक्यं के वचन जात सरेटव। परिवाह मूना भावे जान्य नेवादर्वत जात्र सरेटव। नात्रव जात्रित क्षित्रक आर्ज नेवाद्वतिक ट्यायाव क्षित्व वर्षे वाहता कृषित এবং: বন্ধিৰ ক্ষম ক্ষমিত না, জামি ভোনাকে সাধিব। "

ভপন্দীতা ও জীনীয় বর্ণ শাস্ত্র হইতে কে বচন হটা
উদ্ভে করিয়া পাঠ করা, পেল, হিল্পুগণ ও জীনীরগণ সভা
সভাই বিশাস করেন যে ওপা স্বান্তর বালী। ক্ষর দ্বান্তর
মানবকে আখাস দিবার জন্ত মানব আকারে অবভীণ হইলা
অথবা সাধুর মুথ দিরা ঐ বাক্য গুলি বলিয়াছিলেন। ইইানের
মত ও বিখাস দেখিলে এই প্রকার বোধ হর বে ইইানের
মতে এমন এল সময় ছিল রখম ইখার অগভের হুঃ দভার
হরপের অভ ধরাধামে অবভীণ হইরাছিলেন, এবং প্রদ্রান্তর প্রান্তর সানবক্লের হাতি কৃপা-পরবশ হইয়া
ক্ষরং মানবকে উৎসাহকর বাক্য সকল গুনাইয়াছিলেন।
শিক্ত করণে অবভীণ হইরা তিনি বাত্তবিক্ষ বলিয়াছিলেন।
শিক্ত অর্কুন নিশ্চর জানিও আমার ভক্ত করনও বিন্তু হর্ন
না। শ্বান্তর বলিতেছি জানি ভোমাকে আমার প্রায় ভাবের দক্ষিণ
হত্ত ঘালা তুলিরা ধরিব। শ্বান্তর আমার প্রায় ভাবের দক্ষিণ
হত্ত ঘালা তুলিরা ধরিব। শ্বান্তর আমার প্রায় ভাবের দক্ষিণ
হত্ত ঘালা তুলিরা ধরিব। শ্বান্তর আমার প্রায় ভাবের দক্ষিণ

কিন্ত ইহাদিগকে যদি জিল্ঞাসা করা যার এক সমরে
ক্রিয় মানবকুলের প্রতি কুপা পরবল হইরা মানবকে সংপ্রথ
দেশাইবার জল্প অবতীর্ণ হইয়াছিলেন এখন কি সে কারপু
অন্তর্গিত হইরাছে? তিনি কি আর মানবের প্রতি কুপাপরবল নহেন ? ইহার উত্তরে তাঁঢারা হর্ম বলিবেন, যে সানহ
কুলের পাপ তাণ এত অধিক হইরাছে, মানবের ক্রন্তর পাণাজকার্মে এত পূর্ব হইরাছে, যে জন্মর মানবকুলকে ঘূণা পূর্বক
পরিত্যাগ করিয়াছেন; এখন আর তিনি মানবের সহিত
কথা কহেন না। তাঁঢার উাক্ত ও উপদেশানি লাভ করিতে
হইলে, প্রাচীন গ্রন্থ গীতা বা বাইবেল প্রভৃতি খুলিয়া দেখিতে
হইবে।

তকথা কি সত্য মানবকুল ক্রমাগত পাপ রাশির মধ্যেই
নিমগ্ন হইভেছে ? সংসারে অনেক লোককে দৈশা ষায় বঁলিদের এই প্রকার ভাব। তাঁহারা সত্য সভাহ মনে করেন
বে পৃশ্লিবী দিন দিন পাপ ভারে আক্রান্ত হইয়া গভীর কুপেঁ
নিমগ্ন হইভেছে। আর উঠিবার আশা ভরসা নাই। কিছ
ন্মামরা কথনই এরূপ বিশ্বাস করিতে পারি না। এরূপ
বলিলে এই কথা বলা হর যে ঈশ্রের রাজ্যে তাঁহার কক্ষণা
ভারম্ক্ত না হইয়া পাপই ভায়মুক্ত হইবে? অর্থাৎ মানব-ফ্রম্মে
ক্রম্র আরে রাজা থাকিবেন না। এরূপ চিস্তা করাও বোর
আবিশ্বাস; তাহাতেও অপরাধ আছে।

मुक्तिक कुरवेर कर्मा पारेटक्टक टर अक्षर अवन पर्या स्ट्रिकारिन र्व किमिकाकार्व आखाव म्हिका अनिशास्त्रिक गर्ने विकि क्षित्रहरूम विमा बादबात बटबा ५० हैकि सन्त नकियादह । १६ मधीन करना ५० देक वृष्टि — कहे क्यांना करमक जिम द्वार्यक मूर्य वाकित्य। अवेक्षण चाका मचस्क्र स्वित्क वाहे र्यं, यरमस्बद्ध " ५०% विरामक मरमा १०८० विमा द्या अन्य द्यार ७ ज्यासमा हिरा चाश्रात्र विश्वत कतिशक्ति, ग्रंगाप्तत व्यक्ति निरमत कांक कति-ৰাছি, প্ৰভাতকালের পৰিত্ৰ বাবু ও নিশাকালের বিশ্লাষ স্থ न(कार्ग क्रिवाकि, काना जागारतंत्र महत बाह्य ना । किन्न ५० मिन रच भी फिल बरेबा भवारिक भिज्ञा क्रियाम, ১৫ मिन रच बुक्त कारन चाराज विदान कतिएक नाति नाहे; सिहे कन्ने निर्मे दि द्वान यहनात्र क्यार्डनाम् कविष्ठ हरेवाट्हः त्नहे‴नमद्र द ্ঞাণ-সংশন হইনাছিল 🧣 খোর সংকট হইতে উত্তীর্ণ হঞ্জনা শিরাছে। সে কথা স্কলে স্কলের চিরদিনের মত স্বভিতে মুক্তিভ क्षेत्रा त्रवित्राह्म में व्हेनियात अवेडेने यक मरन चार्क निका खीख স্থ্যী ভত মনে নাই 👣 🦈

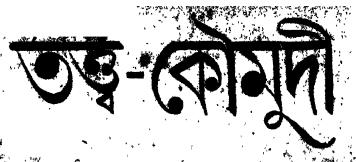
শানেক পাকের সন্দে বে এরণ আজি লগের বে পৃথিবীতে লাপেরই লয় কইডেছে; ভালারও কারণ এই বে পাপগুলিই বিশেষ ভাবে ভালারর করে পদ্ধা বে সার্তা মানব জ্লামে নিভা বিদামান, বৃদ্ধির জনসমাজ এক দিন থাকে না, বাহা মানবৈর জীবন রক্ষা করিছেছে, ভাহা আমরা ভূলিরা যাই। আমরা করিবের নিকট প্রতিদিন কি পাইতেছি, সে দিকে দৃষ্টি না করিবা কি পাইলাম না, সেই দিকেই অধিক দৃষ্টি করি। স্ভয়াং আমানের প্রাণ বিষাদে পূর্ণ হর। সম্ভিত কৃতজ্ঞভার ভাব আমাদের অভবে পাকে না।

সংস্যারে এক শ্রেণীর লোক দেখা যার, উন্হারা রাইবার ভল্প বত বাঞানিকে দিবার ক্ষয়তত বাঞানহেন ৷ এই সকল रताकरक नर्सनाहे चिंहिरवांश कतिएक छना यात्र, चामूक वच्च আমার আতি শীষ্চিত ব্যবহার করিলেন না; অমুক আমার সাহায্য করিলেন না; অমুক আমাকে আদর করিলেন না। কিছ আনি নাজুবের প্রতি সমূচিত ব্যবহার করিলাম না; . আমি ৰমুর কর্তৃৰা পালন করিলাম না; এরূপ বলিয়া 5:খ করিতে শুনা যায় না। বাঁছারা আপনাদের ক্রটি দেখিরা সর্ক্রদা ছঃৰিত ভাঁগদের পরের জ্ঞানীর উল্লেখের সময় হয় না। মান-পের বন্ধুতা সম্বন্ধেও বেরূপ ঈশ্বরের বিধি সম্বন্ধেও সেইরূপ। कांबारकत ऋचित विक अक्टू बावाछ एत, नान बहेरछ यदि अक्ट्रे हुन परम, अमिन, त्यन मरन क्य व्यक्तिय छै। अनिवृद्धक কেবল হঃখেই রাখিতেছেন। যেন ঈখর তাঁহাছিগতে পূর্ণ क्र्य द्राधियात अकरे वाशाः शावती मुखादनत मह्या अकति মার অকান মৃত্তে পতিত হয়, অমনি বোর অভিনার উপ্রিত ' হয়, ঈশুর জুনি কি করিলে। আর চারিটি বে ছরিল লে অভ क्रम्बका विवास मनेत्र वह ना। वनि वनसिन श्रीकारक श्रीकृतः। वाकिएक इत्र रन कृष्य मेरम बहुद मा। काहा कंकविम बहन थारक है, क्रेबर देक्न, अनुन दक्षण विलिन ; अंत्रण मान वरेटक बारक। किंच महरम्ब अव दिया अधिकार देन एक प्रमाणान करिया (हन 3 क्षेत्रीत क्षेत्र क्षेत्रक का माहै । क्रिनात निवस द्याका

क विकास के मिला के किया में के किया में किया है। जिस्से किया के किया में किया किया किया किया किया किया किया कि अविवादक अभावित श्रीवाद रविकार्ग, एउनाविक नव-व्यविक कामन कार्षि, त्यापूनि मुहर्सन लन्धिमाकारेणव वर्ग-वक्षिक रमस् यांगा, धनकन कछ जारेन यम बत्तन कतिवारक ; बींभूख निति-বারের অক্তিম প্রেম, বন্ধু বান্ধবের আন্মীরতা, শিশু স্থান-লিগের সরলভাপুর ব্যবহার, এসঙ্গার বন্ধকে কড ভূপে कतिराक्षक, त्र नक्षि काशाह कर्न् झारवेत कालनारक ज्ञानता वाम। विश्वत रंकन अर्थन कता अर्थ कतिका वार्थिकम मा अर्थ অভিযোগ্ন ইবর কুপা করিরা যাহা বিরাল্ভেন ভার্যর উপরে বেল দাওয়া আছে। কেছে বাপু তুনি, জোনার এত দাওয়া কিলৈর ? ক'ড শিশু ভ জনাত্ম দটরা পৃথিবীতে আনে ভূবি যদি সেইরাপে আন্মিডে, তাহা হইলে কাঁদিয়া কি করিতে পারিতে 📍 এটা কি বিশেব অত্থাহ নতে যে ছটটা চকু শটবা 🕟 আসিরাছ, বাহার শুণে জগতের কত শোভা দর্শন করিলে। 🕾 এই তুইটা চকুর জর্জ কতবার কৃতজ্ঞতা দিরাছ ? চকু চ্টা নিত্য আছে কিনা স্থতরাং সে কুপাটা মনে থাকে না।

অন্তএব অবিখাসী হইরা বলিও না যে মানবকুল পাণেই জুবিবে—ভালার আলা ভরসা নাই। মানব-হালরে জীবরের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত করিবার অন্তই প্রাহ্মসমাজের করা। এই মহৎ লক্ষ্য করিবার উহার অনুগত হইরা পাড়িরা থাকেন, কাহার সাধ্য ইচার কার্য্যে বাধা দের। আল এই মহোৎদ্দ্রের দিনে সকলে একবার করনার-চক্ষে দেখুন বেন প্রাহ্মসমাজ পবিত্র বসন পরিধান পূর্ব্বক ঈশবের সিংহাসনের সমাজ পবিত্র বসন পরিধান পূর্ব্বক ঈশবের সিংহাসনের সম্পূর্ণ দুটাভারাছেন এবং ঈশব ভাহাকে বলিতেছেন শ্রিশ্বর জানিও আমার ভক্ত কথনও বিনষ্ট হর না; এবং শ্রামার পূণ্য ভাবের দক্ষিণ হল্ত হারা আমি তোমাকে তৃশিরা ধরিব কি আশার কথা।

ঈশ্বর যে এক সমঙে মানবের সহিত কথা কহিরাছিলেন, আর এখন পৃথিবীর পাপ তাপ দেখিয়া মৌনী হইয়ামুখ কিরাইরাছেন ভাহা মহে। এই উৎসব কেল্লে কি ভিনি আমাদিগকে কিছু বলিভেছেন না 📍 বলিভেছেন বই কি 🕫 প্রত্যেকে আপুর আপুর মুদ্ধরকে প্রীক্ষা করিয়া স্থের, স্বীর্থ-दित (कार्य समी स्वीमा कार्य कि मी |--- (कर देश के नहिन ৰ্টল, দৈনিক জুলালুনা প্রিভাগণ কলিছা খ্রিছা আছেন্ केवत चाम क्राइटक लब्जा विद्या बुल्डिकासून, 🗝 पूर्वि एतिहासू ्षामात्रं मुर्ग ्नवकृति। कि अर्थवारत पुरावेरने 📆 किनि क्योनिक कृष्टिक वहेना महत यहने क्यक्किका कर्तिन Cocur atia किविना शिक्षा देशीयक विभागनाव मित्रक मृहतान वाक्षिक क्षित्र दिक्क वर्ष व द्वान वाच क्रांदे या छतिनीत गरिष आत्मक विम क्षेत्रेंद्र दिनाव सबिता श्राविशासका दा विश्वासका भाविक विद्यान वह साहे। त्नदे निवाक यन गरेका केलाह्य केलाहक, क्षेत्रहासल । स्वतं anici bun binice afficuten "fa i fe ji mit mein.
dan neut minis came um minus i e (muni)



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিয়য়ক পাক্ষিক পুত্রিকী।

२०५ काज्य २०५ काज्य

>ना का**ञ्चन** সোমবার, ১৮১*০* শক, তাক্ষ সম্বৎ ৬০।

বাৎসরিক ক্ষাগ্রিম মূল্য ২৯০ মুক্তবেল ৩. ক্রিভি শ্লুটের মূল্য ৫০

উনষঞ্চিত্ৰ বাছোৎসব।

(পূর্ব প্রকাশিতের প্রর)

বেদীর নিকট তোমার নৈবেদ্য রাখিরা বাও, আগে ভাষার সহিত সন্ধি হাপন করিয়। এস।" কেত্ হয়ত ক্রেল্ডার পাণের কথা লোকের নিকট সুকাইয়াবেডাইতে বিল ক্রিলি ক্রেল্ডার বালতেট্র নাপ সুকাইয়া রাখিবে, ইথে আমার নাম আর ক্রেল্ডার রাখিবে, ইথে আমার নাম আর ক্রেল্ডার রাখিবে, ইথে আমার নাম ক্রেল্ডার রাখিবে, ইথে আমার ক্রিলার ক্রিলার ক্রিলার ক্রেলানা আমের নানা রোগের প্রথম বিধান করিতেছেন। কিছু আমারেলানা রোগের প্রথম বিধান করিতেছেন। কিছু আমারেলান্ত হলনা, আমি তোমাদের সকলকে ভিনি গভীর অরে এফটী কথা বলিতেছেন—আসমুক হটুওনা, আমি তোমাদের সকল আহি, "আমি সভাস্বতাই বলিতেছি আমার পুণ্য ভাবের দক্ষিণ হস্ত খারাল তোমাদিগকে তুলিয়া ধরিব।" "নিশ্চর আনিও আমার ভক্ত কথনও বিনাই হয় না।" কি জ্বালাপ্রেল বাণী!

আজ আর কেছ নিরাশ থাকিও না। আজ অবিধানকে কারে পোষণ করিয়া অপরাধী হইওনা। ব্রাক্ষ সমাজ তাহারই চরণাপ্রিভ স্থতরাং তিনি ব্রাক্ষ সমাজ আছেন ও বান্ধ সমাজ তাহারে আছে। ইহাকে তিনি তুলিরা ধরিবেন নিশ্চর তুলিরা ধরিবেন। এই আশাতে সকলে আনন্দিত হই, জ্বাসর অভারে আহার প্রাক্ষা করি।

स्थाङ्कारलव छेशस्त्र ।

>>दे बाब तथाएकांसा वाद केरमणहळ एक छेलाजनाव कार्या करमना कीरात छेलटम्हलू अस्त्रेशक जिल्ला स्थानक इटेला---

यति श्विनीत देवान की में कृत्वी द्याण करे गरवार शाह दे काराक नाग कृतिएक यहें हैं बीने आहरू, करन देन कर्न श्रीकिकान कृतिका-देन की कात कृतिएक आहरू करते । एक श्रीकिका कृतिका-देन की कात कृतिका द्यार के ना शहरू दहते करते वे कार्यात कार्यन करें देन देने शृत्यी, गरकारक कारात हिन करन के क्षाका कार्यन करें देन देने शृत्यी, गरकारक कारात शहरू, তাহা পাইবার জন্ম যদি করু বার্তিকে হর, জালাতেও নে ব্যক্ত ;
তাহতে হয়, অনেক লগ কার্তিক হর, জালাতেও নে ব্যক্ত ;
কার্গ দেই ল্কারিত ধন যদি অক্তবার পার, তবে ভাণার
সকল রেশ দ্ব হইবে, লগ প্রিশোধ হইবে এবং স্থান কার্তিক প্রতিত প্রারিশে।

वास्तरहर्षक वार्गारम् भामता अरे मध्यापं शारेवार्डि एव भामा-त्नत्र अभीरक जिमन जिल्लामुना अस् त्नाका प्रारम्, स्व श्रीध-বীর কোনত রাজার বর্ণে ভেনন ধনু ক্রিব। ভালা কার্ণমণি, बाहारक लान क्रवान वार्ष काहार दानि। ब्रेरेबा यात्र। त्न धन गाहरत कीवरनद नकत इसे हिन्दा बाक् मिला कूर्य के निति ने र्वेखवा यात्रं, वीमन धन व्यामारतत्र गृंद्वत्र मरध्य रामाजी त्रहिवारः ! (म धन कि १: (महे भद्रमार्थ धन ! मक्न माध्यन, मकन त्थिमिक বিশাসী ও আত্মতত্বদশীগণ এই কণা বলিয়া পিয়াছেন পরীমাত্মা এই ক্লান্সার মধ্যেই রহিরাছেন। তাঁহাকে পাই-বীর জন্ম দ্রে যাইতে হয় না। ধীয় বাজিপণ তাঁহাকে আত্মস্থ विभिन्ना कानिया कार्यस्य रून, कार्य कारा भारत ना। ८कवन ভাঁহাকে জানিয়াই মৃত্যুকে অভিক্রেম করা বার, অমৃতলাভের আর অক্ত পথ নাই ৷ তিনি আমাদের প্রত্যেকের নিজ্পুধন, चार्याप्तत आंखारकत चरत्र मर्याहे चारहन। এই कथाइ বাঁহারা বিশ্বাস করিতে পারিয়াছেন, তাঁহারা কত বদ্ধ করিয়া, পরিশ্রম করিয়া সেই পোতা ধন বাহির করিবার 🕶 চেটা করিয়াছেন। অবিশ্রাম্ত আর্থনা ও ক্রন্সন করিয়া তাঁহারা আপনাদিগকে থাক্ করিয়াছেন। আত্মার ভিডরে প্রবেশ क्रिवा (महेचारन (महे म्यान्यनिरक् माख क्रिवारकून। वाहि-Can कथा बारा जात, त्याना कथाय मत्र, क्यि निर्द्ध व्यापवाता তাঁহাকে স্পূৰ্ণ করিয়া জীবন শীতল করিয়াছেন। লোক मक्त्र वर अन्तर राजा कविद्राह्म। तरे अमृगावप ब्यार्थ थात्र क्रतिया गयानम् बरेबारहन । तामात्र तामाव्य चक्र (शानुन इस माहे। ४ नहे दर्भ धनी इटेक्स नश्नाटव्रव नकनः ধনকৈ ভুক্ত করিয়াছেন। সেই ধন কগতকে পরিবেশন করিব। **काशत्र मरदाम मकनटक दनिवश्रीकृत्य इंश्वीटक धनी क**रिवाहिन। - अ धन द्व कि धन काहा वर्षेना कतिया त्वव कवा वात ना । . व्यक्तिमा अपन प्रदेशका सह, क्ष्मिन सह। अहे पन ब्रह्म गति-

পূর্ব , এই অনৃত পান করিলে সহ ছংগ দূর হয় বহুলোক বন পান্ধ পরলোক এক বেশা বার। চকু গুলিরা বার, মলর গুলিরা বার, সব নৃতন হইরা বার। প্রাণের আরাম লাভা, প্রাণস্থা প্রাণের নিয়া , অরুচের অন্তর্মা ভিনি, প্রাণের চিন্ন, অবল্যন ভিনি। বার প্রকৃতি প্রেমে পরিপূর্ণ কিনি প্রাণকে আলিক্য করিয়া ইহিয়াছেন। ভাহাকে পাইলেই অনম্ভ জীবন লাভ হর, খাখত শান্ধি লাভি হর। তোরের বিষয় ভাহার সমান্ধ আর কিছুই নহে। অনার মলিন পুথিবী ক্লথ বিবে আবার ছংগ দিবে। ভাহা কি ভোগের বোগা ? প্রাকৃত ভোগের বন্ধ বাহা—বাহা লাভ করিয়া প্রাণ চির আরাম সভোগ করে ভাহা এই।

প্রভাবের আত্মার মর্ক্টে এই ধন রহিয়াছে। তাঁহাকে कानि मा विनिधा कामार्रमद इश्वी, छाहारक शाहे नाहे विनिधा আমরা স্থের এক হাছকোর করিয়া বেড়াই। তাঁহার . সাক্ষাৰ পাইলে প্ৰাণ আনক্ষে উইলিয়া উঠেন তাঁহার সংস ্মিলন হইলে আনে বে কড় ছব হয় ভাচা কেচ বলিভে भारत मा। अहे कछ ७७% गंग, त्यामिकश्य (महे अपूछ यन नाज कतिकात जञ्च कड गुडियाम करतन्, कज नाधन् करतन । ् ७ धरमत्र कथा भद्नरकहे स्थारनन, मश्यात्र नान, मृत्रात्र नमस्त চক্ষেত্ত পড়ে ; কিন্তু খন্ত্ৰের অভাবে; আদরের জাঁভাবে এ धनाक नांच क्रांत्राक भारतन मा, त्रांचिएक भारतन ना व्यवः ভোগ করিতেও পারেন না। উপর-ত্থৈমিক রূপণের ধনের मण क्षि द्वाष्ट्र बार्वक मधीक शान वह धनक तका करतन। क्षे परम धनी व्हेश हिन्न कुछार्थ वन, चात्र क्यान चेखार थारक मा, चमुराज्य छेररमराज व्यवशास्त्र करत्रन्। यादा स्टेराज এত কুৰ, সেই বিায়তমের সেবাকে কড সৌভাগ্য বৃণিয়া भटन कट्यन १ काहाटक मुद्दे कायवाय अस खानटक अन য়ালে খলিদান দিতে পারেন। সেই অমৃত পুরুরের বলে यात (यान क्रेबा निवादक (नरे अमत्रक नाल, क्रिक्किं। এই দেহ আবরণ মাত্র, ইহা বিনাশ প্রাপ্ত হয়; সেই অ্মৃতের म्हिन्दू मा इहेरन दक्ष्ये व्यमत इहेर भारत ना। कि ञ्राधित मःवाम । बामारमत्र धारे मानन बांबारिकरे तिरे অমুবা ধনের ধনি রহিয়াছে। কে এ সংবাদ আনিয়া বিশ ? जिनि निष्य करे मध्याम पित्रारहन। मकरमत्रहे कार्ष्ट क्र अक ममेट्य जिलि अहे मश्याम आलियाटम :: मकनटक न्यांश-नात्र कारक नहेशा याहेशात्र कक्ष किनि नाना (कोमन कारनयन করেন। মাজুব ব্ধন পাপে অবসর হয়, তথন তিনি "আমি व्याहि" এই मःवाम विका लागरक छैर्दमीहिल क्रावन । क्र वात এই गरंबाम गारेवाहि। किन्ह जामत्रां (म श्रामत जन्न वशार्ष ব্যাকুল নই, সেই আচ বেষদ করিয়া লাভ করিছে হয়, रहरेक्रण टाडे। कवि मां । भाषांना टाडे। एक पा चन भाषकाः यात्र मा । जिमि दश्यम, यञ्ज, व्यापत्र, कम्मरमत्र व्यथीम । दश क्रम (मुद्र क्रमुक धरमंत्र कालानी बहेबा व्यक्ति कार्य कार्य **फारक, कांदात बना जागाहिकः व्हेशा व्यानगरन कांदारक** चारवरन करत्र, जिल्ल जाहात्र निकंष्ठे चाल्तारक क्षकाल करत्रत्र।

क्षा क्रिक्टबर्ड प्रश्वितारस्य। क्षित्र व क्षत्रस् ্তেরের করিতে পারিব নার্চ্চ বলি প্রাণের क्षिक्रित कार्राक कार्क क्षिएक छोड़ा ना कति। नामाना बरबब बड़ स्वारक कान बिरकरक, नामाझ निनाकी >० होकाब ক্ষা কামানের সন্মূর্ণে বিধা আপ বিতেছে। আর নিতা-कारणत (कांगा कह धन-कह सत्तत केंगा आर्गत मान ছাড়িতে পারি না, বলি ৫, টাকা বিজে ক্র জাহা পারি না, পরিশ্রম করিতে হয়, ভাহা পারি না। ইহাতে 💖 বুকার ? कामना के शरमन मथार्थ कालानी महै। लाएकत सम्पारित ? এক এক বার হা হতাশ করি মারে। প্রাণের ভিতর গভীর जाकाका मान्स्याति व वन भाषता गात्र ना। यति जम्छत क्षता आकाका इहेता शारक, अन उर्देव और स्त्रीनवां अहे ধনলাভ করিবার জাত লকল ক্লেশ, বতু, আরাদ স্বীকার স্থারি। না পাইলেই নয়, ইহা লাভ ক্রিবার ক্র সৰ ভর ভাবনা ভূচিত্ করিব, প্রাণের মালা ত্যাগ ক্রিব। ইহা ক্ষণেকা পরমধন, অমূল্য ধন আরিবাই। यद्ग कतित्व हे ভাষ্ঠ পাঁওয়া যার। আক্রধর্ম এই সংবাদ প্রচার করিয়াছেন। জী পুরুষ नकनर्दे निर्दिशास एः किटलहिन चरः वनिर्देशन-"कत्र শাৰ

নার পর পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়, তৎপর প্রাথ হইয়াহি কিয়ৎ পরিমাণে উপাসনার বিষণ্ড ক্টিরাছিল। উনাসনাকে নিয়লিখিত রূপ উপদেশ প্রদত্ত হয়।

উপদেশের পূর্বে এতীর ধর্মণাত্ম হইতে করেকটা বচন পঠিত হয় তাহার বিবরণ নিমে দেওরা যাইতেছে;—

"আমার আত্মন্! কেন তুমি পরাভূত ∍ইতেছ ? হালর কৈন তুমি চঞাৰ হইতেছ ? তুমি ঈখরে আসক হও ; কারণ আমি তাহার প্রসাদ ও অফুগ্রহের জন্ত এখনও তাঁহার ভাতিবাদ করিব ।"

"যদি প্রাক্ত পর যোগ নির্মাণ কার্য্যের সাহায্য না করেন, ভাহা হইলে আরি বাহারা নির্মাণ করিতে যার, ভাহাদের চেষ্টা বিফল হয়। প্রাক্ত যদি নগর রক্ষা না করেন, শরকী প্রক-বের জাগিরা থাকাই বুথা।"

"গৃহ নির্দাতারা যে পাধরধানিকে প্রিচ্যাপ করিরাছিল, তাছা ছাদের কোণের অধান প্রক্র হইরাছে।"

"हेरा टाजू शहरमंचरतबरे कार्या, जागारमत हरक हेरा । जाजान्त्र्या।"

"""" अहे हिम ग्रह्मचन्न सीमिनारस्म, सोमन्न करे हिम शाहेन। मुक्रम स्रोतेन स्तिद (" (हि)

ভন্নভর নিয়লিখিত মর্শ্বে উপদেশ আবত্ত হইব। 🐪

 হয় বে আগরতে রাবকবা করিবার অভিনাহের এর ক্রিট্রাইছ
নতুবা নে বাতুব। নেটরাপ বাহার ছই শত টাকা বই আর
নর দে বলি বিশ হাজার টাকা বাপ করিছে রার, ভাষাকে
লোকে প্রারক্ষক বলে। কারণ বে বাকি বাকির
আলা করে ভাহার কারণ বিহামান নাই। বিশ্ব ব্যক্তির
খরে ৫০ জন কোঁকেরঃ বাজ আরোজন আছে সে বলি
৫০০ শত পোল বিমারণ করে ভবে গোকে ভাহাকে
বাজুল বলিকা করে। লোকে বলন নিরাণ ছইর।
কিরিয়া যার, ভবন অভ লোকে কোন করিয়া বিজ্ঞাসা
করে ভূমি এত নিম্মণ করিয়াছিলে কোন সালসে ?

(महेद्रम कांक कांच इरेटल्ड बाक्यम दर व्यामा करवन Corn महरूरम् १ मानायत विदल अवने कथा चाट्य मणा श्राहित्छं कांश्रान शाका; बाह्न कार्द्या, शृहर बार्याक्रन कहित्व लाटक केश्वन विकास करत्। किन आका समारकत ठिक छारात विभवीक स्रवद्धाः, कामानः है। निवाद कर्क (यन मना शार्धानः ব্ৰাল সমাজের স্মাকাজ্ঞাটী স্মাকাশ পাতাল জোড়া।ৡলন সমা-জকে জামরা নৃত্ন করিয়া গড়িব--জীখরের স্বর্গ রাজ্য ধরাতে প্রতিষ্ঠিত করিব। বাপ্কি ভয়বর কথা, কি আম্পর্ভার কথা व्यथ्ड व्यारमध्यनेष्ठा कि धक्यात्र वित्यहमा कत्। क्रिक्शकाकात्र কৰ্ৰয়ালিস ট্ৰাটের ২১১নং বাড়ীতে এক মুটা প্ৰ সহায় সম্বল বিহীন লেকি একতা হইয়া বলিতেৰে वेदा चम-সমাজকে নৃতন করিয়া গড়িব। বাহিরের লেম অট্টহাস্য করিবে ভাহাতে বিচিত্র কি ? যে ব্যক্ষসমাজ জন-न्याक्र क्र क्र किशा शिष्ट्र मि बाक्य मास्क्र कि १ দেব এই ব্রাক্ষ সমাজ ভারত তক্ষ্য একটা পাভার এক আছে ভাগে এক বিন্দু শিশির জবের মত ছলিতেছে, একটু জোরে वाशु वहिटनहे (यन পांज्या यात्र। (पान महेटन मासदनद क्ना বৈষ্ম তাহার উপরে ভাগিতে থাকে সেইরপ এক মাধ্য ক্ৰিকার ভাষ প্রকাণ্ড ভারত পাত্রের এক কোণে বাদ্ধ সমাক ভাসিতেছে, অনুনি দিয়া একটু স্পর্ণ করিলেই উঠিয়া আসে। **এই छ आर्याञ्चन, छर्द कि नाहरन आना क्रिक्ट विन रय अहे** वाष्ट्रमाण क्य पुष्क रहेर्यः। 1

প্রথম বাজা সমাজের লোক-নলের বিষয় চিন্তা করি।
বর্তমান সময়ে সমগ্র ভারতে বত প্রাক্ত সমাজ আছে, বার
বাল নিরা তাহাদের সংখ্যা ২২০, ধরা বাউক। এই ২২০
সমাজের প্রত্যেকটা গড়ে ৩০ জন সভা ধরিলে ৭ হাজারের
অধিক হইবে না। ধরা বাউক স্ম্প্র ব্রাক্ত সমাজে ৭ হাজার
লোক আছে কিন্তু সম্প্র ভারতহার্তর প্রজ্য ক্ষথ্য ২৫ কোটা।
ভোগার ২৫ কোটা লোক আর কোখার ও হাজার লোক।
এইত লোক বল।

यन नगढ दाहेका । पूरे गांतका नगत त्यांच जिल्ल कि नगरका व्यक्तिका व्यक्तिका

(नाक् अक्वाह अवानकाह अक् धनी शहिराहर अक्षेत्र अक्षा জীপান্থিত করিয়াছিলেন। তিনি এক দিন বঁড় বাবুর সহিত लक्षेर क्विष लिहा विद्रानन,-- वाव जाननारवत वर्गीव कर्वाइ जामान जान्मारमत्र बाठे मिनटक तिछा कथकछा, भाई, कीर्जनकी हरेख ; शाकात गकन रमाक चामिता छनिता कछ। स्थी दरेष्ठें, जानवाता कि नकन ज्निका निस्तर ? अक निन एकन नाठ मनियत द्वाचा कीर्डन व्यंत्रक्ष याउँक ना। বড় ৰাবু ভনিরা বণিলেন, সমহাশর উৎক্ট প্রভাব করিয়া- 1 ছেন। তবে আপনি আক্ষণিকৈ নিমন্ত্ৰণ করিবার আছো-জন করন।" এমন সময়ে মেজ বাবু আসিয়া বলিলেন। माना व्यामात्मत्र वा रुक्के छू भवना 🌉 छ, त्भटित व्यक्तत नःश्वान चाह्य, चामारतत बान्नवर्षात वाजिएक बाद्यांकन कि 📍 **এই মেজ বাব্টা ঠিক ভাব আঁকাশ করিরা हिट्छान।** याहारमञ পেটের অরের সংস্থান আছে ভাচাদের বেন রাক্ষ ধর্মের थ्यदब्राजन नाहे। याहा हें फेक धन दश नर्वदक जामारिवब द्वनान षारमञ्जन नाहै।

বিদ্যা বৃদ্ধি পদগৌরবের বিষয় যদি চিন্ধা করা যার সে দিকেও বিলক্ষণ অপ্রতৃত্য। আন্ধাদলে প্রান্থৰ করিছে করিছে করিছে করিছে প্রান্থ বরং লোকের নিকট বিক্রণ সন্থ করিছে করিছে প্রাণ বার। এই কারণে দেখিরাছি পঠকণাতে অনেকে ভারি আন্ধাধকে, পা বাহির হইলেই তাহাদের আন্ধাধর্ম শ্রেকাচির লেজের ভারে থসিরা পড়ে; ভাহারা লাফাইয়া শংসার ভালার উঠিয়া যার। এক বালাক, পঠকশার বঁড় উৎসাহী আন্ধাহিল, বেই উকীল হইল, অমানি অপার দাকন উকিলের বিক্রণে আন্ধার্ম টুকু পুকাইয়া কেলিল। এই ত পদগৌরবের বল। এই জন্তই বলিয়াছি আন্ধানা ক্রান্ত ভারত তরুর একটী পাতার এক কোনে শিশির ক্লার ভারত তরুর একটী পাতার এক কোনে শিশির ক্লার ভারত গ্রেছ।

এই ত গেল আমাদের বল, তবে যে আলা করিতে বলি-তেছি, লে আলার মূল কোথায় ? এইখানে পুর্বোক্ত উচ্ ত বচন গুলি পারণ করাইয়া দিতেছি, "ঈশবে আলাহিত হও।" বানা সমাল তাহার প্রতিষ্ঠিত ইহা যদি সত্য হয়, ইহার জয়-বিধাতা তিনি আমারা ত আর পৈতৃক জমিদারী বলার রাখিতে আদি নাই বে অনেক মকদামা মামলা করিয়া, আদালতে ছুটাছুটা করিয়া বড় লোকের শরণাপার হইয়া তাহা রক্ষা করেতে ইইছে। তিসি আমাদিগকে, নবজীবন দিয়াছেন এবং আদেশ করিয়াছেন বেং এই নবজীবনের বার্ছা জগভকে শুনাইন্ডে হইবে। আমারা সেই ত্রুম তামিল করিতেছি। আহার পার ভাহার সত্য আছে আর তিনি আছেন। আমারা নিশ্ব লানি তিনি না পড়িলে গঠনের তেই। বিকল—তিনি নপার রক্ষা না করিলে প্রস্থিব স্থান্ট কুলা।

তিনি আবার গড়িবেন জি । জিনি কি কণিক বালি চূণ কাইর৷ গৃহু নির্মান্ডার কাজ করিবেন, অথবা তিনি কি পুলিন-কাইরীর ক্লায় গাংলার দিবেন ৷ এই কথার গভীর আর্থ-এই—তিনি মান্তবন্ধ হুলয় পরিস্কিন ক্রিয়া নবজীবন না দিলে, তিনি পুণ্যের ফুলা-আবল ক্রিয়া না দিলে, তিনি ধর্মে অতিঠিত ক্রিয়া বা দিকে, ক্যাল গঠনের সহল চেটা বিক্ল হইরা বার, आहरू पर्नदाका गठन रह मा; जल्म आरती वानित्मक नगर

কিছ উংহার গঠন প্রণালী অত্যান্ডর্যা। লোকে বৈ প্রান্তর বাদিকে অকর্ত্তা ব্যাহে পরিত্যাপ করিবাছিল ভাহাকে ভিনি কোণের প্রকাশ পরিত্যাপ করেব । উহার প্রাণ্ড অন্তর করেব । উহার প্রাণ্ড অব্যাহ করেব । বাজস্মাল মব্যেই ইবার বালাণ আমরা প্রাই ইবার বাজবিদিকে উপরে লোরালা করিবা করিবা লল্পীছাড়া হইরা বেডাইত। সংসারের লোকে ভাহাবিগকে অকর্ত্তা পানর বিনা কেলিয়া দিরাছিল, ঈশর ভাহাবিগকে ক্র্টেরা আনিয়া ভাহাবিগকে ক্রেইরা করিবা পরিচিত করিবা দিরাছেন, ভাহাবের আনেলিক ভাহাবিগের নিকট প্রকাশ করিবাছেন, অত্যাহ বলি উপরে আনন্দিত হও।—ভাহার বর ভিনিই গড়িবেন।

১২ই মাঘ প্রাতঃকাল।

১২ই মাৰ প্রাত্ঃকালে উপাসনা ও স্কীর্ত্ন হর। রার্
কৃষ্ণকুমার মিত্র আচার্যোর কার্য্য করেন। তাঁহার উপদেশের
সুস ভাব নিয়ে শিথিত হইল—

ঈশ্রের রাজ্যে আমরা কালালের ক্সার। কিন্তু ভোঁবার কি কল্পা। কালাবের মত এই উৎসবে শাসিরাছিলীয়। क्षि कानारेश्टरक्त (व ब्रविक कानान वर्षे, उथानि किनि जामारष्ट्रत दाता कैशित धर्मत्रारका किन्छ केश्व कराहेग महत्यम । (व वक मूर्व, भनीव, भागीर दरे मा (कर्ने; आमारतत व्यक्तित्व के कार्यात्र कि क्रू कि के कितिवात बाह्य। আমরা যত লোক আহুত হইরা আসিয়াছি, এই সকলের बाक्ष किलि केंद्रांत धर्च ताका मध्यक्रिक कतिर्दन । क्रमा ভবিলাম বে, মে মুকল প্রাক্তর জগতের লোকে দুরে ফেলিয়া দিরাছে, ভাগার দারা ভিনি ধর্মের গৃহ নির্দাণ করিবাছেন। आंग्रहा अव्हि नामाङ् लाकः किन्द्र, किनि आमानिश्रदत काकिशोरक्ष, काशा बाक्यभारक कानिशास्त्र । कामारवत् बुाजा रहन अंवन वरूर कार्या क्यारिएन, छयन कि सामारिक क्षार्थ छेरबरम्ब मकात हरेरव मा १ जामारकत मुख प्रविष्ठ माहरू मिश्नत बाता छोड़ात वत व्यक्तिक कतिर्दन धनवा चुत्रव कतिया कि व्हार्ट केटबरणव मकात रहेरन ना १ कालवर, जामान बिन्द् अवम् : (5है। क्षिएं ब्हेद्द (व कांबात केनत देवन मुह विकास बाटक,--डाहाहक, दबन मा कृति। नर्सहा अन्तर वाषिव (वं जिनि न्यामानिगरक जिन्दिराष्ट्रम । स्थामधा (व् खेनवृक्त मुद्दे खादा बानि ; विख नि नपदका किनि वनिवाद्यन द्र क्षण क्षम बक्ब हरेका क्षांक कार्य माधन छवन कतिरग अञ्चलके अञ्चल करा। अञ्चल अञ्चल अञ्चल विरमय ऋरण वृक्षिकाहि । नकान मिनिया छेनान्ना कविटन ट्यायब टावन वक्षा क्षावारिक रूप । किन्द्र निर्मातन जनाकीक सरमञ्जाना क्षिक हदेख, अनः मझान मक्रमंत्र मान विविद्या क्षेत्राममा कृतिहरू हरेरन । अरेशन क्विटन् करन् नियाशः वृक् व्हेरन

अपरे (आरंगज जाद चादो क्रेटन) त्वित्वां देव अन्याती, दि गांग प्रीकृठ क्षिटक गांति ना, वन बदन निनित्रा अकेषे नाथन क्षिति छाडा सन्त्र कृता नहम बहेता यात्र।

"ব্রেশ্বর কর্ম ক্রিক্ট বিনালে প্রথমে আমালের প্রাণের
মধ্যেই ভাষা ইওরা উচিত । বৈ প্রাণ নামা প্রকার পাণের
আরক্ষনার পরিপূর্ব, তাছাতে ক্রিক্টেরের ব্রেশ্বর জর
ছটবে । এজন্ত সর্কার্গ সাধন করিটের ইইবে। এখন
ব্রাহ্ম ধর্মের প্রসাদে সাধন খুব সহল হটরাছে। কাল কি
ভাষা প্রভাক করি নাই ! সকল সন্তান একন্ত মিলিয়া ভক্তিভরে তাঁছাকে ভাকিলে সব পাপ সব কল্ম একবারে চলিয়া
যায়। তথন জীবনে ব্রেশ্বের জর হর এবং আমালের মত
লোক দারাও দেশের কলালে স্থিত হয় । আর অলম হই।
বিসায় থাকিছ না। কাল উৎসবে আসিরা এই শিক্ষা পাইফারি,
বে আমি পান্ধী হট, আর অধন হই ভ্রমালি আনি ভাষার
কার্যা কিছু না কিছু ক্রিতে পারি। এই কল্প সন্তান ও
নির্জনে ব্রেশ্বের সাধন ক্রিব। এই কল্প সন্তান ও
নির্জনে ব্রেশ্বর সাধন ক্রিব। এই উভর রূপ সাধনট আবভাক। এইল্প ক্রিলে নিক্ষরই ব্রেশ্বের ক্রপা অবভীন হইবে।

অপরাহ্ ১ ঘটিকা হইতে 'প্রালার কঞ্চ' সম্বন্ধে আলোচনা হয়। ব্যাস্থিবচন্দ্ৰ সেব সভাপতির আক্ষ্টিবাইৰ করেন। । অর্থের অভ্যক্ত অভাস্ ৮ বৈ ই।দা পাওরা বার ভা বর্তমানে বৈ'লয় সংখ্যক প্রচারক আছেন, ठाहानित्वति छत्रण त्यायण निर्माह धर्म मा। ए छतार धारा-রছের সংখ্যা বৃদ্ধি করিবার কোনও উপার দেশা বার নাঃ क्ष विखी (क्ष गटक श्रामात कार्या स्वाकताल निर्मा-হিত হইতেছে লা। এই ভাবে আলোচনা আগত হয়। বাবু উন্মেশচন मञ्जू, दिक्तांत्रजान यात्र, श्रीमार्ग हका, दिकांत्रजान । मृत्यीनामुखंबं नित्रक्रका घटन्यानीयात, तांशीतमन तिरक, कीरवाय-केळ जीव, मंगीनवं वरम्यांनाशावः चिनामहळ वस्याहः अतः উল্লিন, কে দার প্রভৃতি কলিকাভার এবং সভ্তলের আনেক ব্ৰাদ্ধ কৰিব সংগ্ৰহ সহচে নানা প্ৰকাৰ উপাদেৰ কথা উত্থাপন कतिरहान । किन्नी केनारकेत कथा अवारम निविष्ठ । करेरकरक---) या श्रेष्ठात्रकान श्रक्षात अक्षात श्रृकारणका कविक क्षाणित कतिक्रा (क्षेत्र)हेट्बेन १४ कोइस क्षेत्रेस स्वाहे त्यहे द्यान स्टेटक सर्भात चार्चकः ठ*्रम* है (क्यू मध्युकीक करेएक) शासि । १३ है। नामाप्तन बाक नमारकत मुख्यन कीकारक कार्विक बारबक धक मुम्मभारम् काहात्र अरथ्य साम कतिरवन । अतः। সाधान्त्र वस्तु जान समासंन्तरम् कृत्युः, मकर्षात्ते हे , द्वासनमात्रः नकतः किंद्व ेश्वर वार्षिक है। मुच्चका विदेशन । सक्ष्यरमञ्ज्ञ कारमरक दमहे चरनहे किছু किছু रार्विक श्लीका निष्ठ खालिक्षक वहेर्तनः अवः, दक्ष वा ज्यमहे तान क्तित्वस ।

সভা খা॰ ঘটিকার সময় পণ্ডিত 'শিষ্টার্থ পালী "খুল-বংলাম" বিবাদ বৃদ্ধী করের। উপাসনা সন্ধির চেলাচক পারপূর্ণ হইরাছিল । এ এ বঞ্জা পরে প্রাকাশ করিবার ইফা বহিল। ভাষার সার মর্থ এই—

বাহারা বেবের নিন্দা, করে বিশুরা ভাষালিগতেই। বাজিপ ববে করেন। এবেই ক্লব পাকবিদানী জীৱনাক্র সাহায়। করে, তাহাদিপকে নাতিক বিশাগ থাকেন। বর্ত্তমান সময়ে প্রীপ্রধর্মের অবনতি দেখিয়া তাহাঁত্তা মনে করিতেছেন যে জারং কইতে ধর্মভাব করি হইতেছে। এই জন্তই মাহারা প্রীপ্রধর্ম তাগা করিতেছেন তাহারাও মনে করিতেছেন যে পৃথিবীতে ধর্ম করিছেনে জার কোনও পদার্থ নাই। আল কাল ইংলভে হই শ্রেমীর লোককে প্রীপ্রধর্মে অবিখাসী হইতে দেখা বাইতেছে। বাহারা বিজ্ঞানের আলোচনা করিয়া থাকেন, তাহারা প্রীপ্রধর্মের মধ্যে বিজ্ঞান বিক্লক ভাব দেখিয়া তাহাতে অবিখাস তাহা ত্যাগ করিতেছেন। আর এক শ্রেমীর লোক বাইবেল ও প্রীপ্রধর্মের মধ্যে অনক শ্রম দেখিয়া তাহাতে অবিখাস করিছেনে, এবং ঐ সকল দেখিয়া তাহাতে অবিখাস করিছেছেন, এবং ঐ সকল দেখিয়া উল্লেখ করিয়া ভাহার উল্লেখ করিয়া করিছেল।

और धर्मन क्षीं ती जन्में हरेले थ ताक क्रमनः छाहान रेनिष्ठिक ও आशाश्चिक छात नकन आमरद्रेत गहिल शहर করিভৈছে। ঈশবের ইচ্ছার সম্পূর্ণ রূপ স্বাহ্ণত ছওয়া, তাহা हरेगात अब भूति थाकात चार्थभतिहात कता, जेगातल माला खगटक विकृत इस्टेंच अहे विषया मृत् विकास कता, नाशीमितात मुक्ति वक धकार बामना, मोन्द्रः भीतिशाब शक् महा श्रकान করা এবং প্রাণপণে নরনারীর দেখা করা প্রভৃতি যে সকল भिका **कर:** উপদেশ' और निक कीवतन প्रकार कतिशास्त्रन ইংঅখের মধ্যে তাতা বিস্তৃত হইয়া পড়িতেছে। লোকে উচ্চ ধর্মজীবন লাভের জল্জ, নীতি পালনের জন্য, পতিত পাপী-निरंगते केषात्मम थना व्यवश्लीन महिल्लिमरगत विक्राध्तत वसा व्यक्तित्रक (प्रदेश क्रिएएह जर्द काश्व क्रमा चारमक व्यक्तात ষার্থত্যাগও করিতেছে। এই ভাবে ক্লাকার লোকে নেইকল माक भारिका मिटक व्यक्तानत ब्रह्मकरूक, संबादी संबं क শীতির দলে সামল্লদা রক্ষা করা যায়। ত্রাক্ষামাল ও এই জ্বাবে कार्या कतिरक्रहम, अवः कान, श्यामक श्र म्यारकतं विक्रमार्थन वाष्ट्रिक मक्त विश्रदेशक मध्य मामस्मा क्या क्रिया अध्यमत श्रीटिक्न । ' धरे जना देशम महाव्यव हाती :-

वक्षम हैंग विकार कराइका धर्म स्टेर्स

১৩ই মাঘ, শুক্রবার।

শ শীবুজু বাব্ আদিত্যকুমার চ্টোপ্রথান আভঃকালে বেঁদীর কার্যা সম্পাদন করেন। তাহার আদত উপদেশের ভাব নিমে আকাশিত হইল;—

আগনারা এই উৎসব উপলক্ষে অনেক অম্লা উপদেশ,
অনেক আশ', বিশ্বাস ও উৎসাহের কথা ভূনিরাছেন। বাহারা
আক্ষ সমাজের মালাপের জন্য প্রাণ সম্পূল করিয়াছেন,
বাঁহারা নিজ নিজ জাঁবনে বিশ্বাস, নিউর ও আত্মতারশ্লের
আলক দুটাত দেখাইতে সমর্থ ইইয়াছেন, উহাদের প্রদত্ত
আবিত উল্লেশের ছাত উজ্জ্ব থাকিতে থাকিতে আনাবের
আল বিশ্বী প্রেমের নিকট আপনারা এমন কি কথা গুনিতে
আলাকা বিশ্বী প্রেমের নিকট আপনারা এমন কি কথা গুনিতে

कात्र मर्निट्ड भारत ? अ क्लाब छेशासन मिट्ड शांति, जालना-দিগকে কোনও নৃতন কৰা জনাইতে পারি, এরপ যোগাতা भागात नारे। छटक नाकि वसूत्रण भएशह शृक्षक मध्या मध्या আমাদের ভার অফুণযুক্ত লোকের কথাও সদয়ভাবে প্রবণ कतिया थे दिकन तिम अप निरमत व्यवातालात निरक मृष्टि ना कतिया श्रमत्यत पूरे अवजी खाव धाकान कतिएक नाहनी क्टेटडिक । विश्वर्षक स्था अ महिमात कथा विश्वरङ স্থাগ পাওয়া অত্যন্ত সৌভাগোর বিষয়। তাঁহার বিধানের **अभिन महिमा (य हेहात मर्था आणित्रा आमारमत छात्र (लाटक छ** ভাঁহার কথা বলিবার, তাঁহার কার্য্য করিবার স্থবিধা পাই-बारह। आमार्रात्त्र मछ लारकत्र अमन कि श्र्ना आरह, यहारछ चामती धर्यात वित्रा क्षज्त नाम शहर कतिहा जीवन সার্থক করিতে পারি ? वखा जिम अबः यादामिशतक छारात विधानत्वार्जत मत्था जानिता रक्तन जाराता यकहे निखन, या के अञ्चल युक्त लाक रखेक ना दकन, जिनि खाहा-দের ছারা নিজের কার্যা করাইরা লন্। ঠিকু এক বংসর পূর্কে আমি এই স্থান হইতে বলিয়াছিলাম যে প্রভু সাঁহাদিগকে ডাকিয়া আনিয়াছেন তাঁহাদিলার মধ্যে জুদুত্ম ব্যক্তিকেও म्रा कतिवात, উপেকा कतिवात अधिकात आमाम्तत नाहै। তাঁহার গৃহে সুরুলেরই কার্য্য করিবার আছে। তিনি যাহাকে উপেকা करबन नारे, छिनि शहारक करवाना वित्रा छान करतन नारे, जिनि यहारक भानी विनत्रा श्रुण करतन नारे, आगता दक दय छाहादक् क्रिटेशका किति ? व्यामारमत मक्नटक এক প্রাণ হইনা প্রভুর বিধানের গৌরব রক্ষা করিবার জন্ত CDही क्तिटक श्रेहत। विश्वाम, এक धान्छ। ও आश्वविश्वि बाताक विश्वादनम रगोतन स्वतिक इस । दिवादन देश नार्ट र्मिशारन क्षेत्रदेव कुना कारास ध्ववाहिल इहेटलू नाम ना। यिन निष्य निष्य कीवटम श्रेयदेश कुना माछ करिया निर्विद्यार्गत পথে অতাসর হইতে হয়, যদি কগতে সর্গরাল্য প্রতিটিত कंतारे आमारमत कीनरनत गर्स अधान शुक्का विषया वृद्धिमा থাকি, তবে এই তিন্টা ভাৰকে প্রাণ্পণে ধরিয়া থাকিতে इटेर्ड भागत रिक अवसारत वनवर्ती व्वेदा ग्रीन्य क ভাচ্ছল্য করি, প্রস্পরের সহিত বিবাদ বিস্থাদে প্রস্তুত হুই তাহা হুইলে কথনই আমরা ঈশবের কুপা আভ করিয়া জীবন সার্থক করিতে পারিব না, এবং তাহার বিধানলোত অন্ত পথে প্রবাহিত হইরে।

আমরা এবারকার উৎসবে গুনিরাছি প্রাভুর উপর আশা হাপন করিতে হইবে। কিন্তু আশার মূলে বিখাস চাই— প্রভুর কুলার বিখাস, সভাের জয়—শীলতার বিখাস, বিধানে বিখাস চাই। মতুবা আশা মূল শৃষ্ঠ লভার ফার সংসারের উত্তাপে শুক্ষ হইরা যাইবে। বিশানের শক্তিতে, বিধানের মহবে বিখাস না থাকিলৈ আমরা কথনই পৃথিবীতে স্থারিলা ছাপনের সহায়তা করিতে পারিব না। আমরা এই ক্ষেক্ দিবস প্রেমের জােতে, আম্বেল্র জােতে ভাসিরা অনেক মান্তামান্তি করিয়াছ। এখন আস্থন একবার বিধানের গাস্কীর্যাও সহক্ষের বিষয় আক্রোচনা করি। ভাই, ভাসনা আমৰে ভাবের উচ্চাবে, উন্নত হও, ক্ষতি নাই; প্রমেশর ক্ষপা করিরা যাহা দেন ভাহা ক্লডভার সহিভ গ্রহণ কর।
কিন্ত ভাহার সক্ষে সংক্ষ বিধানের মহিমা ও শক্তি মরণ করিরা তিভিত হও।

्रवाक्षभर्य विधान कि ? नकीर्ग सृष्टिएं देविए द्वारण देश माञ्चादत कार्याः अनेनवादन दश्मन नश्माक्षिक, नास्टेनिक ৰা আত্মোলতি এভিতি পাঁচটী অনুষ্ঠান আছে ইহাও তাহার মধ্যে একটা। তোমার আমার ইচ্ছার ইছার কার্য্য চলি-(७१६—मामतारे रेश नानारेएकि। एडि चात्र विख्न कत, त्मांबरत हेहा शृथिनीत शाहिता धर्म निम्नाद्व व कहे।। আর্থে ইছা সামাজিক সভিতর এক প্রকার প্রকাশ মাতা। কিছ সার্বভৌষিক চকে, মানব সমাজের আহুপূর্বিক ব্যস্ত कैिङ्गारमत कारनारक रिवरिंग देशाएँ मकन विधारमंत्र পূर्व्छ। দেখিতে পাওরা যায়। বিধান সকল ভিন্ন ভিন্ন-নছে। ধ্বীদ্ধ, খৃষ্টীৰ প্ৰভৃতি বিধান একটা প্ৰকাণ্ড মুক্তি কাণ্ডের ভিন্ন ভিন্ন আংশ মাত্র, ইংরাজীতে যাহাকে parts of one grand scheme of salvation বহা যাইতে পারে। বিধান অংশ জনসমাজে ঈশবের ফুপার, এদা শক্তির প্রত্যক্ত প্রকাশ। বিভিন্ন সামাজিক ও মানসিক ক্ষবস্থা হইতেই বিধানের বিভিন্তা হুইরা থাকে। নতুবা মূণতঃ, প্রত্যেক বিধনেই শক্তির প্রকাশ, ঈখন-প্রেষের উচ্চ্বাস ব্যক্তীত আর किह्नहे नटह। (वोक्क, शृष्टीय अञ्चि विधान मनन दर कृषा সমুজের তরজ, বর্তমান শতাকীতে এই আজ সমাজ ও সেই कृषा मम्दल र जरून माल। ब्राम्स धर्म विधारन र विध्मय थ छ (य, देशांक विशक्त भक्त विधातित नामक्षण क्रेशांष्ठ ।

কৈ বলিল আনাদের শাস্ত্র নাই? পৃথিবীর সক্ল নর্মশাস্ত্র আনাদের জুনা উত্তর রহিরাতে। প্রত্যেক বিধানে বাহা কিছু সভ্য আছে ভাইাই আলধর্ম বিশ্বদের অন্তর্ম কি প্রত্যে আলি পর্যান্ত্র শাস্ত্র। অনসমাজের আকুকাল হইতে আলি পর্যান্ত্র বিদ্যান করিয়া গিয়াছেন তাহাই আমাদের পাস্তের অন্তর্ভুত। আলধ্য সকল অপ্তান্তর শাস্ত্র হইতে আনাদের নিকট পরিরাণকাল সভ্য সকল আনিয়া দিতেইন। ইহা অপেলা স্বের সংবাদ আর কি হইতে প্রত্তি

कि विश्व विश्व विश्व निश्व निश्व कि विश्व कि वि

বৈধাইরাছিলেন। প্রাক্ষণার বিধানের প্রসাদে আমরা ইটা-দের সকলকেই পরমানীর বলিরা গ্রহণ করিতে সমর্থ হইতেছি এই উ প্রাক্ষণার, এইত যুগধার। সমস্ত মানবজাতির জন্ত ইহার বার উল্লেখ্য। সমস্ত মানবজাতির জন্ত হার ইহারে গারিচালিড করিতেছেন। কোহার সাধা ইহার গতি রোধ করে ?

প্রভুর কুপা দেখিরা আনন্দিত হও, উন্মন্ত হও, ভাবলোতে অল ঢালিয়া লাও, কভি নাই কিন্তু ভাহার সলে সলে বিধানের গাঞ্জীর্যা আরণে রাখিতে হইবে! প্রেমে উকাত ইইডে চাও ভাল কিন্তু অপরদিকে ত্রন্ধের শক্তিও মহিমার গাড়ীর্ঘ্য স্মরণ করিয়া ভান্তিত হও—শাস্ত হও—চিত্ত সংযত করে। ভাক্তির क्रे किक् चार्ट,—(১) चानम ७ हं बरमाया खें जो, रि) महाम। আনন্ত উন্ততার ভাব আমর৷ প্রভূর ক্পীর সমরে সমরে উপলব্ধি করিয়া থাকি। কিন্তু সমুর্মের দিকে বড় একটা দৃষ্টি-পাত করি না। প্রভুর স্যার বিষয় আপুবিতে আংশাদের যত ভাল লাগে, ভাহার মহিমাও শক্তির বিষয় চিন্তা করিতে তক ৰচাল লালে না। ভূত তিনি, একদিকৈ বেমন ব্যাময় পিতা, অপন দিকে তেমনই স্কুৰ্ণক্তিমানু বিশ্বপতি। কৈছ মান্দকি-মানের উপার কের জীপনে রে জীয়ত উৎসাহ, আশা 🕸 তেজ থাকা উচিত আমার্টের জীকটো ভাছা কৈ ? আমরা তাহার সর্বাশক্তিমকা ভাল করিয়া উপনিধি করিতে চেটা করি না বিলিয়াই তাঁহার জীবভাবিধানের অন্তভূতি হইয়াও নিজ নিজ জীবনে উপকৃক বিশ্বাস ও উৎস্তির দৃষ্টান্ত দেপাইতে স্বসমর্থ 🛊 ্হিটুভেছি। ৢআপনার। স্কলেই নেপোশিয়ানের বীরছের কৰ। শুনিরাছেন। শীহার এমন অভুট এতিভাছিণ বে তাঁহার मार्टम जागाँव जागीवाह देगकारणेत मर्टन क्लाफर्रा উৎসাহের সঁঞার হুইভ,ও ভাকারা জীয় জ্নিশ্চিভ নিনে করিছ। *নে*পো-বিল্লানের লামে: ভারোর শক্তগণের আবে ভীতি সঞ্চার হইত ৩; *ম্ভাষ্ট্র*‡্রণকেঁতে পর্জের নিশ্চিভ-জানিয়া নিরুৎসূহে হইয়া, शिक्षि। अंकजन मासूरवह भक्तिक विचान कतिया वधन काम्ब বৈদ্যাগণ 'কেমৰ জীখন্ত উৎসাহানুক্ষে' প্ৰজ্ঞাগিত ছইন্দ' উঠিত, ७थर्न नत्मकिमान्दर रममानिक शास्त्रा भान्ता छन्दर्गणी मस्य केत फिरमान व अधिक वारा क्यानां विक हरेन मा-वाना পোৰণ করিব নঃ কেন ? যখন অকজন মাত্ৰের নামে তীহার मक्कर्राण की के के शदाबिक हरेक, फर्शन नर्सन कियारने सामि বিধানের শত্রুগণ ভীত ও পরাজিত হইবে, সভ্যের ক্ষম হইবে অরণ আশার জামরা আশাবিত হইব না কেন ? তাই আমা-দের আক্ষেয় ভাতা আমাদিগকে আশা করিতে বলিয়াছেন। व्यवर रमहे कछ जामानिशस्क विचान जाश्रेष्ठ कतिए हहेरव्। এই बाजामभाज नर्सनिकिमारनत विधान, छौहात है ए। अधारन কার্য্য করিতেছে, ইহপরণোকত্ব দক্ষ দাবুর ওচ আশীব্যাদ अ नाधुपृष्टीच व्यामापिनीटक उँद्रमार्थिक क्रिटिकटक् । हैश **भारतका जानात कथा जात कि स्टेट्ड गांद्र १ छट्ट जात्र**हा जाना कतिव ना एकन ? छट्व जामना जानमारकन जरवांशाखा कार्विम निमान रहेर दकन ? काहारक विश्वास शालन समिति। केरात केया वकाक भरत निकंद कतिया, कीरात दाके आधि-

मन्त्रपृतं क्षित्रम्, विक्ति निम्न पश्चि श्राकार्यः क्षित्रः। कामारमञ्ज्ञ अनिम मूत्र विकान कतिरवसः।

১৩ই মাখ সন্ধা ৩। ইটিকার পর বাবু মণেক্স নাথ চটোশাব্যার "ধর্মের সামঞ্জত" সহন্ধে রক্তা করেন। পরে তাই।
বিজ্ঞারিত ভাবে প্রকাশ কবিবার ইচ্ছা রহিল। আশাভতঃ
ভাহার তুল ভাব দ্বেওয়া বাইতেছে;—

সামধানী ভূক উর্ভিই ধর্মের প্রকৃত লকণ। বেমন
শরীরের কোন বিশেষ অলের পরিপৃষ্টিকে প্রকৃত স্বাস্থ্যের
কাকণ বলা বার না, সেইরাপ ধর্মের কোন বিশেষ অক্টের উরতিকে প্রকৃত ধর্ম-সাধনও বলা যাইতে পারে না। প্রকৃত
ক্ষেত্র ব্যক্তির সকল অলেরই পৃশীবিকাশ হর সেইরাপ প্রকৃত
শার্মিক ব্যক্তি ধর্মের সকল অলকেই সাধন করের। জ্ঞান,
বিশাস, প্রের্ম প্রভৃতি বিষর সকল পূর্ণরূপে সাধন করিলে তব্দে
ধর্মের সক্ষালিন উর্লি সাধিত হয়। ধর্মের ভিন্ন দিককে
আসারা প্রস্কৃত্রবিরোধী বলিয়া মনে করি। ইহা আরাদের
ক্রমেনদর্শিতি গাঁর ভাবে ভিতরে ক্সারেল করিলে দেশা
বার্মের, সকল বিষরেরই মূলে এক স্থানঞ্জের ভ্রাক আছে।

১৪ই गाप, भनिवात।

আহে উপাসনা। ক্রিকু ক্রেক্সনাথ চটোপাধ্যার আচা-ব্যার কার্য্য ক্রেন। ক্লিছার উপাইংশের ভাব নিয়ে প্রকাশিত হইল:—

भः नारत्रत किছू दे किছू 'नत्र--- याहारतत #क अाहिया स्ति তাহারা চিরলিন আমার থাকিবে না, এই ভার যখন মান-্বের মনে উদিত হয়, জ্বানই তাহায় সাধন আরেছ হয়, ज्यनहे कान्नद नायन कतिवात अधिकात अत्तरा संबद्ध छाता ্ৰাতীত ঘতই যাগম্জ, পূলা আঠনা কর, কিছুতেই শোলাতিক স্পার্শ করিছে পারিবে না। কারণ তপুনত অম্ভ বিষয়ে ক্রাত্মার · अक्रुताशः त्रशिक्षः, विश्वः यथन, त्रिधिदाः मध्मृत्त , अप्रकृति कद्वाः বলিরা বোধ হইতেছে_ক, তথনই জানিবে বেঁ সাগ্রনের, অবঙা ं निकारी। - असन विकाही याहा नकन नमात नकन , व्यविद्यार भाषातः थ।किटन →हेइकान शतकाटनतः हित-नलेन इंहेटत्.--**এই ভাক जब का जिल्ला शहिमार्ग इक्कें एक सिन. वा जनता** অবিবেধ ততবিন মাহব কিছুতেই অজ-সাধনের, অব্ধিকারী इहेटड शाबिद ना। रहेश वाडीूड कार्ने येक्टि इवड कडक-ষ্ঠিলি ধর্ম নত মানিয়া চলিতেও পারে। কিন্তু মত ধর্ম নহে। क्छक खिन मछ वा सूर्यंत्र कथा बाह्ना की्वरमंत्र शैंकि शृतिविधिक হর না ও আরোর উরভি হয় না। প্রাণের ভিতরে যথন বিধাৰ্থই একটা অশান্তি বা অতৃপ্তির ভাব ভলেন যে সংসারের मकन रख्डे हे बड़ेश या हेटन, खननहे दिवहाटशात केन्द्र इस -এবং সংসাদের অতীত বিধনে দৃষ্টি পতিত হয়। বৈরাগ্য ৰাজীত আকৃত[†] বাক্ৰভা আসিতে পারে না। বখন কেহ अ दिवास दव शृथियोत दकान दखहे छाहात चांशनात नत, छथन ভাষ্যে জনম শভাবভাই দেই মিতা বন্ধ অন্তেমণ করে, বাহাকে েশে স্থাননার আণের ভাগবাদা বিয়া পরিভূতী হইতে পারে : अविकारित वारात्मक अहे जान अधिकारक केरहात्मक ।

अर्थ-कीक्न ब्यानके बहेबारक । वांशासन वेदा वन नार्वे, जारा-त्मन किह्न सेन नाहे। अश्मादन की विवय चाटक, खांकारमन मृत्या छे भामना धक्षी। धक्षिम छे भामना ना कतिरण ६ हिनाटक भारत । अधि कारत क्षेत्र बारकत रहित कतिरत किहुरे ছইৰে না। অৱবজ্ঞ ব্যক্তীত বেষন্দিন চলে না, উপাসনা न। कतिरमञ्जामात्र मिन यात्र ना, अहे छार्व नाधन कतिर्दे হইবে। সংসারের বিষয় সব তুচ্ছ, স্মুখসন্পিদ সকল ক্ৰডসূর ইহা যে বুঝিয়াছে সে সার বস্তই অনুসন্ধান করিয়া বেড়ার। দে ব্যাকুলভাবে বলিভে পারে যে "প্রাভূ ভোষা ভির[্]ভামার चांत पित हत्व ना । चात किहूरे चामि हारे ना, ट्रामादकरे हाहै।" ् ७ थन हे नापृत्नत्र कार बाहुक इह, जथन है जैनाननाइ भूगा त्म वृक्षिरक भारत । .वागक रयमन माकारक मा रहिचता. व्याक्नकारव "मा मा" विनिष्ठा खन्मन करत, त्यहेक्न काछत्र enice "মা! কোণার, দেখা দাও মা, ভূমি ভির আনার पिन यात्र ना, ञ्चथहे रुक्के चात्र छः थहे रुक्के चामि टिंगाटक চাই, তুমিই আমার অবলম্বন" এই বলিয়া ঈশবের জঞ্জ কাঁদিতে পারিলে তবে ধর্মজীবন আরম্ভ হইবে। এই-রূপ ৰয়ুকুণতা ৰাভীত কিছুই, হইবে না। ঈশা বলিয়াছেন --জিখারের অভ কুখার্থ ও তৃষ্ণার্থ যাহারা, তাহারাই ধুকু, • কারণ, ভাহার। তাঁহাকে লাভ করিবে। আর এক সাধু ব্যক্তি বলিয়াঁছেন যে ধর্মপ্রাপ্তির। টিক কুরুরের ভায়ে। श्रीत्यत श्रापत (तोट्य (यमन कुकृत लान-किस्ता बहेता अंक মৃষ্টি অরের অভ ঘুরিরা বেড়ার, ভাহারাও সেইরূপ ব্যাকৃত ভাবে ঈশ্বেকে অনুসন্ধান ক্রিয়া বেড়ান। 📍

দেশ ভাই ভারগণ! তোমাদের জাবস্থা মেইরপ হইমাছে
কিছু এই উৎসৰ আসিয়া কি লাভ করিলে? তাঁহার জল্প
আণে একটু ব্যাক্লভা জারিরছে কি ? জাম কোধ প্রভৃতি
রীপুগণকে ক্ষম করিছে গারিরছি কি ! নিজের প্রতি দৃষ্টি
না করিয়া কেবল বাহিরের আন্দোলন করিলে নিজের পরিআণ ছইবে না। কল নিজের উপায় কি ভাবিয়াছ ? একটু
মাক জ্লাবিলেই ভাইাকে পাইবে না। পাপ, গিমাছে কিনা,
কু প্রকৃতি গিরাছে কি না দেখ। মাহারা নিজের দিকে না
চাহিয়া কেবল বুণা আন্দোলন করিল, পরের নিজ্বাবাদে মাভিল
ভাহারা ব্রাজ্ব সমাজের ক্তি করিল। অভ এব অল্প দিকে না
চাহিয়া স্কলে ব্যাক্লজ্বেরে তাঁহার দিকে ধারিত হও।
নংসারাশক্তি ভাগে কর, কু প্রত্তি সকল জয় কর, ভাঁহাকে
লাভ করিয়া কুছার্থ ছইলে।

অপরাত্র ৪ ঘটিকার সময় বালকবালিকা, সাজ্ঞলন। 'বহ
সংখ্যক বালকবালিকা অসজ্জিত হইয়া একত্রিত হয়। বাব্
উমেশচক্র রস্ত সংক্ষিপ্ত উপাসনা ক্রেন। পরে তিনি এবং বাব্
চণ্ডীচন্নণ বল্যোগাধ্যায় উভরে সরল ভাষায় ভালালিগকে উপদেশ দেন। মন্দির হইতে ভালালিগকে ১৩নং কণ্ডয়ালিস,
ব্রীটে লইয়া গিয়া নানা প্রকার ক্ষেদ্র থেলেনা উপলার দেওয়া
হয়।

नातः कार्त छेशामना इत्। भिष्ठिक निवनाथ भावी जाता-त्याब कार्या करवन । छेशरमानुत्र मात्र निरम्न धानक बहेग ;---

अरुवी वान प्राचन कनाशिवता वरेश कियान वेश्वर এক ক্ষীর ভবনে উপছিত বইল। ধনী বড় উল্লেখ্যভাত্য লোক; একল ভাৰার আলা বে পূর্ব হইরে ভাহার কোনও সভাৰণা ছিল না। আত্মণ ঠিক অনুকৃত সময় বুৰিয়া ভাষা निकड छेनविक वरेन। धनी विकामा क्षित्रम-"शेक्ष कि চা's ?" बाकन निवान संबुद्ध नित्यत छः (श्र क्था अहानसः) করিল। ধনী শুনিরা বর্লিলেন "কড টাকার আবশ্রক 🕫 ব্রাক্ত্রণ সামান্ত অর্থ পাইবার আশা করিভেছিল। জ্ঞাপি ं विना "८०० है कि। इंदेरन है इद्देश अभी चार्यमा दकारा-धाक्षरक हर होता कि जिल्ला है जिल्ला का का का कि साम कि क्याबा गारेश ना।" बाजन मही वारेट बाहेटक का कि हत्। यति अधिक छारिकाम, कारा वहेता निकार कामान बादिना पूर्व इहेछ । धारे मत्न कविता अवत्यास धनीत मृद्ध किविता। ধৰী জিজাসা করিলেন—"আবার ফিরিলে কেন ?" আঙ্গণু विनन ्रिकाद जानगारक विनष्ठ नात्रि नारे; किन्द्र भागात चात्र अधिक है। कात्र चार्चक।" এই कथा छनिया धनी चाल-नात एडानिशत्क बाकार्गत निक्षे हरेएक् भूस कान्छ ४०० টাকাকাড়িয়া বইতে ৰণিলেন ৷ ধনী কেন এরপ আচরণ ক্রিলেন ং তিনি দেখিলেন যে ব্রাহ্মণ এই আশাতীত অর্থ পাইরাও কৃতজ্ঞত≯ প্রকাশ করা দুরে থাকুক, বরং অধিক व्यार्थना कतिन। ब्लंडे कात्र (पटे जिनि क्यू इंट्रेश छेक है। कार् काष्ट्रिया गरेटल वनिरमम्।

লখনের হতে অনেক সমর আমাদের ও ঠিক এইরপ ত্র্মণা হয়। তিনি আশতীতভাবে কতবার কত রূপা করেন, তজ্জ্জ্জ্মানা তাঁহাকে হল্যের সহিত্ ধক্তবাল দিই না। বরং কত সমর অসহত প্রার্থনা করি। বরং কত সমর অসহত প্রার্থনা করি। তিনি করণা করিয়া মাহা আমাদিগকে দিরাছেন, ইহার কিছু-রই পাইবার উপযুক্ত আমরা নই, এই ক্থা মনে ক্রিয়া কোণায় আমাদের মন রুভপ্রতারসে পূর্ণ হরুবে, তাহা না হইয়া আরার আমরা তাহার নিকট অভায় অনুযোগ করি। এই অপরাধেই আমরা যাহা পাই তাহা হারাইয়া কেলি— ঈশ্বর ভাহা কাড্রা নন। আনের রাশ্ব ঘাহা পাইরা থাকেন, তাহা আম মনে করিয়া আনেক সময় তিহা হারাইয়া কেলি— ঈশ্বর ভাহা কাড়িয়া লন। অনেক সময় তিহু হইল না কিছু হইল না বিন্তা আমেকপ ক্রেন্ত এই আপে যাহা পাইরাছিলেন তৎক্ষণাৎ তাহা চলিয়া যায়। উপুনুর্য্ব আসিয়া আমাদের এই ক্থা শ্বরণ করা উচিত কে কোন প্রকার শ্বিষ্ণা শ্বিষা আমাদের এই কথা শ্বরণ করা উচিত কে কোন প্রকার শ্বিষ্ণা শ্বিষা আমাদের যুথ হইছে বাছির হইতে দেওয়া উচিত নহে।

कांत्रप्राध्यम, कांगळाचे नागरमय कांग क्षेत्रा उन्ने कांत्ररक छक्ते करून। काशास्य यहि छिनि बनिव बिटिक्स देव किंगालना नी रद," फरन छात्रा इते अक ब्रिटनंत्र क्षेत्र नर्गन नाहुन किविद्सान ৰজ্ঞাহা আবেশ করিল্ছেন। এইরপ বিশাস্ক্রিভে एरेटन । जामारपुत्र निकास तक जात, देश काता धर्चा और स ভাষী হইতে পাঢ়েব না: যুখন চারিলিকের অবভা অভুকুল थाक, ज्थन विद्यांनी रक्षत्रा विक्रित नरह ; किन्ह यथन व्यवहा প্রতিকৃপ হর, ক্রথনই প্রকৃত বিশ্বাদের প্রমান হয়,—জুঁহিছে কতদ্ব দিনিয়াছি, সেই ব্যৱট ভাষা আনিতে পারা বার। ব্ধন কোনও অভাব না থাকে তথন তাঁহাকে সরামন বলিয়া खाक अक गरक। किन्न हाँकि मिक स्टेटफ कु: **ब**्द्रेक विश्व क्यांनियां यथन क्युंबानिशस्त्र चाक्रमश करव, छन्न यनि वनिरङ পারি যে "তুৰি ধরাময়," তবেই বুৰা যায় ৰে আলাদের আঁকত বিশ্বাসূত্রিয়াছে। এই উৎসবে আমরা করেক দিন काष्ट्रीय, अकृतिरगत मरक विनिधा छ। रवत अन्यक सास्त्रिक তাহাকে কতবার ক্লামর বলিয়া ভাতিলান। ইহাতে কুল্মা-দের প্রকৃত্ববিশ্বাদের পরিচয় প্লাওয়া গেলুনা 📭 শুসন অঞ্চাকী शक्ति , विशास शिष्य अवः हाति हिन् इटेरेड क्षां कित्न अवश আসিয়া বেরিবে, তথন যদি প্রাণ খুলিয়া তাঁহাকে বলিতে পালি ৰে "জুমি ব্যাময়" জুখুনটু অনুমাদের বিখাদের স্থার্থ প্রমান পাওয়া বাইবে, তথুই রুদ্ধিব লে ভাঁহাকে চিরদিনের জনা "দয়াময়" বলিয়া চিনিহাছি। এইক্লপ বিখাদ আমা-দিগকে লাভ করিতে হইবে ; ভাতা হইলে স্কুমে ছঃখে বিপ্তৰে সম্পদে সকল অবস্থায় সমান ভাবে তাঁহার উপর নির্ভন করিয়া থাকিতে পারির। তাহা হইবে অন্যান্য স**ত্রদারের গোকের**: আমালের জীবনের হারা পরিচর গাইবে বে আমরা কেবল . . খাল তাঁহারই উপর জীবনের সক্ষী আশা ভরসা স্থাপন করি-রাছি। এই উৎসবে তাঁহার যে, কুপালাভ ক্রিয়াছি ছজ্জ্ব काँहारक मञ्जान मिन्। अभिकृत त्रजा नाहे तात्र अञ्च आद्भा सहस्र না। তিনি বাহা দিলাছেন ভাহাতে সভট হটবা আছালেক সহিজ তাঁহার নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিব ুলবং, জ্বাল্পুপ সায়ুন ভেক্তনর বারা তাহা চির্দিন রক্তা ক্রিছে যতুবান इहेरा।

३৫ই भाघ, द्रविवाद ।

১৫ই মাখ, রবিবার উদ্যান স্থিপন। প্রায় ৫০০ শৃষ্ঠ পুরুষ গ্রুষং মহিলা প্রাত্তঃকালে বাবু নন্দ্রনাল করের বেলপংক্ষিরাত্ত বাগালে সিরা স্থিলিত হইলেন। ৯ ঘটিকার স্থায়
উপাসনা আরম্ভ হইল। বাবু উমেশচক্ষ দত উপাসনার কার্য্য ক্রিলেন। তাঁহার প্রান্ত উপদেশের সার নিয়ে প্রাঞ্চালিত হইল—

শোতনিকগণ বধন মহোৎস্ব করেন, তথন তাহাদের উপাত দেবতার মূর্তি গঠন করিবা কত কুক্সর নাজে নাজাইয়া জাকজমকের সহিত ভাহার পূজা করেন, এবং পূজাবলানে ভাহা "গচ্ছ গচ্ছ" বলিয়া জব্ম বিদ্যান্ত কোনাক" পূজা শেব ব্রুরাছে, ক্যাবার এক বংসর পরে জোলাকে ক্যানিক

Ar north Changes and the Real Wife ! West लाव व करतनक कि त्रिकेशन कार्यक निम प्र वृषधाय क्षित्रों त्व द्वार्विक भूका क्षिताय, वैक्षित नाम गाह कतिया चेक चुनिक छैनारकान कंत्रिनाम, चाक कर छैरनरनेत लोक बिटमें के बिन व वाक कि कि हिना वाक ?" बाब विनय व ख्यं बर्रेनेवर् लात्र जागारमञ्ज छैरभव चामिरेव, कर्वन एक्सिंटिक ল্টকা আবার আনন্দ উপভোগ করিব ? ত্রকোর উপাসক বাহারা, জাহারা কি কণনও এ কথা মূবে আনিতৈ পারেন ? अहे देव करवर्क किन धरिया चामया जननीय भूका चार्कना कवि-লাম, আমরা কড লাভ করিয়াছি। ভালা ভালা আণ ক্ট্যা नकत्न जानियाकिनाम, जिनि जानिया नकन वृष्टिया नियादिक কত প্রাণে ক্ষিয়াস ছিল, তিনি সব প্র ফরিক্ট দিরাছেন। क्षांशांत्र क्षेत्रारम द्यानान व्यक्तत हाथ द्वाम कार्गा वित्र हे थारक ना। जांशांत्र चागमत्त चामारमत्र गृह च विशेषांत्रवेत्र कि भोजी देश जीता स्विताहि जीका यह मकन त्याँकी कामितारह, नविवेदिक यथा वहेरछ. नकन जनान्ति कनर हैनिक विवाद , जान जागार्शक अवास रहे अर्थ नृष्टमे गयान एरेशारही जिनि दक्षन आर्गह क्षांगद्रात्वे क्षांकेशिक हम, छथन मकन वैज्यकीन हिनेशा दात्र। कीशांत 'दनोन्मर्सी शृक्ष गतिकात समात्र हेन, कारे ভগ্নীর মূবে তাঁছার বৈশিক্ষা দেবা ব্যক্ত সমক্ত জগৎ তথ্য চক্ষের निक्रे चुन्तत हरेबा, रात्र। बाकात जाकारण अवदेन घर्डे, व्यामारमञ्ज कीवन मुख्ये हरेता योत्र, बाक्ष कि लान धनिता বলিতে পারি যে তৃষি এখন বিদায় হও 🕍 এখন কি আমাদের नकन कार्या रहेशा निशाष्ट ? आमश कि निष्मान प्रकृतिका कामि मा ? कारात रा द्यात इःथ अभाष्टि कानिएक भारत, আবার পাপ কুবাসনা আসিয়া আমাদিগকে বেরিভে পারে। इंडे ठानि निर्मेष्टननीत क्षणात्र ठानिनित्य चर्गन ठिख दाविनाम, व्याप्त नान्ति नारेनाम, जनएय त्याम नान्न कविनाम, काराएक कि निविष्ट्र हरेंद्रा निक्रिक हरेंद्र नाति ? अहे द्यान हरेंद्र विषान जर्देना व्यावान यथन मध्मादन व्यवस्य स्वितिन, छ्यून हातिनिक रहेटक क्छ नक जानियां जायानिगरक जाकमन क्रिया। स्निह সমর ইইতে আছে রক্ষা করিতে পারিব না। এই আছে এই, बुद्भावत मदश थाकिया चलदा (व नकन कार भारेयाकि, जाहा विरामासक चौरान, शृङ्शविचादक खरः व्यासारमुक खरे मनारसंब मर्टरा छाँदी द्वापी छाटन रमिन्टरज्रुहाहै। छोँदा दहेरन जात दक्षां विशव थाकिरव मा। किंद्य ट्राहे जनमी जिल्ल जात कार्यक नाया अज्ञन कतिएक नारव । किनि मिन्छवरे अञ्चन করিছা দিবেন; কিছ ডিনি বাহা চাম আমাদিসীকৈ ভাহা ্ক্রিছে হইবে। প্রেণি মন ভাছার অভয় চরণে চির্দিনের মৃত कैंदनेर्न कतिएकं इंटेटन। जाक कमनीएक विशास विराम छीनाद ता। जान विशेष निवास निन नय, किन वैक्तियात सिन। कृषि कैतिका किता छावाव मिल्ले आहे आर्थमा कतिएक हरेरन ্ৰা ক্ৰিক ভালা বৰে এসেন্ত ভবে ভোৰাকে স্বার বেভে বিব विक्रिकार स्थापा । त्यामार विमेश्विस विद्या वि क्षित्र के का कियर करे। पात्राह देशाना CHANGE WHEN MADE COURSE COME AND ASSESSMENT

नाहित नाहिक क्षित्र द्वाबादक बात नावेटक तिन मा। **ट्यामारक विकेट कामिर्टेश व्हेंटर । जूमि शास्त्र शहर कामिश्रा** अक्योत के विभाविता (य हमिन्ना याहेर्य कांश हहेर्य ना। क्षिमारक जागालेव खाल्बर क्षित्रं वाविद्या विद । ध्राप्त एकाम्हर कारह चाहि, त्वम्याहि, दक्षमा नावि चहुउव चंडिं-ू শক্ত অপেকা করিভেছে। তুমি আসিভেছ দেখিরা ভাষারা, পলাইতেছে; আবার ভূমি একটু সরিলেই ভাহারা আমা-বিশ্বকে নই কৰিতে আনিবে। ভোই ৰুনি ভূমি এস এক: जामात क्रान्ति क्रिक्त वन । जीव वाहित वाहित वावित क्षिकार किलाब विश्व वर्ग। किंच सबरेगत किंखत लारिय वर्ष-श्विकारन, रमुवेशाहन (छात्राहक नगरिव ।" এই ऋशा कि सनत्र प्नित्र साम्बद्धाः विनिष्ठ भाति ? এই कथा छाहारक चौंबरच ना भाकिस्य किन खार्णत्र मरश दित हरेत्रा वनिरदन ना, व्यानिवारक्ष्मः व्यावाद छनिवाः वाहेरवनः। खटकात्र स्वत्यः स्वतः বিহারী হইবা ডিমি যে চিরজীবন বিহার করেন, ভাহার কারণ কি ? "ভক্ত একেবাৰ্ফে বোল আনা প্ৰাণ ভাহাকে সমৰ্পণ ক্ষেন, এবং হাৰক্ষের মধ্যে পাপ সংবার আস্তিক প্রভৃতির হুৰ্ণক্ষম ভাৰ থাকিলে ভাহা প্ৰিরভমের বাসের আবোগ্য इ.स.न कतिवा नर्सना क्षत्रकंक विमन ७ পर्तिचक बारथम । স্ভী রমণী বেমন আপনার প্রাণপতিকে আদরে রাখিতে চেটা करतम, चंक ७ मिहेश्रम जाहात व्यानियत्तक वर्षात महिल व्यानि রাধিবার অভ কত আকার ক্লেশ খাঁকার করেন। ভাঁচাকে আবে রাখিতে হটলে আমাদের মুক্ল প্রকৃত্তি সংসারাসক্তি মুলিন বাসনা ও স্বার্থপরতা পরিত্যাগ করিতে ছইবে। ভিনি কুঠ বড় দেবতা তাহা কি আমরা জানি না ? বন্ধাণ্ডের অধি-পভি, স্বর্গের দ্বেবড়া, বেদছ্ল'ভ ধন ডিনি, কুণা করিয়া व्यामारम्ब मक्त कालपुरमद्र व्यार्थ जिनि श्राकिरवेन, व्यामारमद ইহা্কভ ∗গৌভাপা ৷ তবেুকি তাঁহার *শাস্ত* আমরা ক্ষর গৃহকে পরিকার করিব না ? ভিনি ততকৰ আমানের অভারে क्षाम क्रिक्के व्यक्तिक हरेएक भावित्व ना, विहास क्रिक्क भातित्वन मी, वक्कम कामना भारते गरम गरम, निकास अप क्तरबब क्लान स्वान न्याभिय। किनि धक निर्देश, अश्जारबब चात्र नव वष्ट चना निरम-धन्नम क्टरन छोहारक भावता वारेद्द नाम छिनि व्याह्मक चार्यक महेबा मुच्छे थाउकन मा, এই सनारे गायटकता काहारक (jealous God) विनित्राटकन । আণের একুদিন্দে, শাগ্ধ কুবলেনা সংবারাশুক্তি রাজক করিবে, चना विश्वक क्रीशास्क वनारेव धन्नन कांव वास्त्र, छारान প্রালৈ তিনি আদেন না। ভাঁহার সঙ্গে প্রাণ ভাগাভাগি कतियां (र किंदू रहे मां, कराएवत जबना एक ध्यानिकश्रम ভাষার সুক্রি বিরাহেন। বে ভাষাকে সব দের_{্য}ুসেই । **ভাঁহাকে পার। তিনি অষ্ণ্য ধন, এমন কোন স্ণ্য**ানাই वांशव बाता कें। वांटक श्राप्तका यात्र 🔅 किन्द जावत ध्याग गर्म म्बर्गन कतिरबंद् केविरक नाम क्या यात्र। चत्र ध्यानं बहर मनिम मीतम 🍁 ता कें। हार्रक तिरक भारत, 'त्यक व्यवे 'व्यव्याः File and that

wie uffinn i gle neinert ent auch mit affi-रात बाकाका बाबात्वत बाटक करन बाबात्विक होने बर्का रहेर्ड स्ट्रेंग अक कान, वर्ष वान नहीं कतिया क्षीपारण बारनव मध्या बाजिएक सुब्देश मणुन धनरवन भणीय गामेंगा भूगे स्टेरम बी, (मक्तुकार निवर कुलारवयः बारवा यात्र कत्रिका कृत्य वाक्तिक डिलाइक डिलाइक किंद्रा किंद्रा किंद्रा िकारम प्राप्तियो : Cक्यममीक क्यांच क्रिकाय क्रियाम कार्या-सन् कतिका कृषे रहेव ना। खास वानन व काहारक नाक कतियात समा बाम बाहरक अहरव मा, बादा वित्रश सक्षाता महिल कीशात मार्बन व्यक्तियाँ वार शृहस्त व्यक्ति कीशात দিংলাদন অভিষ্ঠিত ক্রিয়া ভারাকে ভারিকে এইরাম্বর ভীহাকে পাইব ে কিছু আমারের গুছেরভুলুব্যে কি জৈখিতে लाहे ? बारका शृह कि वर्ष गावरमत क्षेत्र अहेबाइह ? बारकत वृंद व नानातीत शुरू कि कामल व्याक्त क्यों बात ? व्यानक आरमतं गृश्टक मेचरत्रत्र छानः चणिक्का (द्यान क्षत्र नाक्षेत्र विवदी) र्लारकत स्नात सामताक मश्मात सार्वा कतिता वाकि। वर्ष अंशाहरक थक कतियं धरे छेरकरक्षाकार्या कतिरक शिता त्मारं मश्मात्रक्के मात्र कतिहा स्मिनि, अर्थ क्याता अपृक्ष ्बरेबा बाबंगः केना वनिवाद्यन, "द्वर धरे टापूर्व त्रंबा फ्रिट्ड পাৰে না।^{ব ক্ৰি}ক জনকে রাখিতে বাইলে অপরে থাকিলে লা। সংসার ও ধর্ম এই উভয়কে এক সমরে ভালবাস। বার ন। আমরা এই উভরকে রক্ষা করিভে গিরা এই করিরাছি प्य व्याप्त व्यापारमञ्ज (वाल काना , कनप्रके जारनादवत्र करेवा नित्रांटकः, चाकि चहारे क्रिकंटतत सना चाटकः। चामाटकः ज्ञानात क्षेत्रां विवास वर्णा यात्र सा । व्यामारमञ्जू कार्या मुक्क-লের ভিতর ধর্মের ভাব বড় অরই দেশা যাব। গৃতের মধ্যে বৰি জননীয় ভান করিতে না পারি, ক্লবে তাহা ধর্মের कहेटन मा, धनर काला कहेटन घटन वित्रक वर्षणांक कविनात व्यामा वृशा क्रेट्टा, धरे मना वाम विगटि स्टेरव "धन क्षत्र वह बुक्तिश वस, क (व (कामात्र नश्नात्र, देशांक व्यासत्रा প্ৰকৃষ্ণ কৰি। ইইভে ফাইব ? ছ একটা কাৰ্য্য মাল ভোষাৰ क्षक चार्व तानी नव चामका विरक्ष कत्रिक-धार्तन चारतन भारति निकृषे स्टेट्ड शाहेनाम् १^० छटन् स्ना श्रास्तान् नक्टनम् উপর-বে তাঁহার ক্ষমিকার 🛊 াশ্লমিরা ব্যাধনালী হইলা কেবল कारात वाक्या आमिया हतिय। किकि मारा क्या, काराहे ्रभाहे, नव कांशांत्रहे । स्वामार्टमक यदक क्रीसीर्क प्राथिता कांकात भावीन वेदेवा त्यम पाकिएक भावि । स्मातं अपे, पूर्व महात्मत अटबा केंग्सरक प्रातितक वरेटव, फेर्यटबन शबा क्रीकारक विवास बिरन চলিবে मा । हेशारक शारायन कश्च कतियाहि, जारनारकत मक सदेश कार्या कतिरखदि देशायदे कि वर्ष हिमार्व ? वकहे क्रिकाश्य त्वास् वर्षा वर्षा स्रोता स्वार्ण तार्थाः कस्म मा ्रंकन, काशंत्र देखात अक्षतंत्र ना प्रदेश किहू देहित मा । क्रिनिहें क मात्रारक्षे वर्ष जनस्थात वह विकारक्ष । व्यव क्रीब्राटक सूर्य क्रानिया नाइस सांशित क्रेका लागिक हामाहित्क TIT. THE PERSON NI 1. THE WAR STRIP BUR MIN विका कार्राके अर्थिक केव अर्थ आक्र कोश्चाक कर्युत जा सामित

উপ্রেন্তর পরে একটা যহিলা ভাবপূর্ব প্রার্থনা করেন।

তথ্যতোৰ জীতিভালনাতে অপরাক্তে "ত্রান্ধ পরিবাচনর নিচ্ছা
ধর্মভাব বৃদ্ধি" এই বিবরে আলোচনা করে। করেনজ্মন মছা ক্রান্ত করিয়াক্রিনাত্দাতে যোগ দিয়া আগ্রন আগ্রন মছা ক্রান্ত করিয়াহিলেন। নাত্রে উপাসনা-মন্দিরে উপাসনা কর্মা উৎসব শেষ
করি। পণ্ডিত শিবনক্য পান্ধী আচাত্রের ক্রেন্ত্র করেন।

ব্ৰাম্যমাজ।

निम्ननिथिक सान क्षेटक बान्तर्गन मार्याध्याद पानिया त्यान निम्ना जामानिगरक स्थी कविमाहिरनम ;—

मीश्रति वाक्षमभारकत्र এकानन वोविक मछात्र कार्याविवत्र । 1

৯ই নাথ গোৰবার পারংকারো উপাসনা বৃদ্ধিরে রাখারণ বাদ্ধপমানের একারণ বার্বিক সভার অধিবেশন হয়। বারু আনক্ষেত্র কয় সভাপতির জাবুর প্রথম করেন।

गांतु (रहत्यक्रक देवल जमारका जायरगांतक विवतन लेके गांतु जाविनाय कर्ष्ट्रामायगांड विज्ञाहब्द काजिका गाउँ सरदूत

PROPERTY OF STREET, ST

CHANGE THE GREET CONTROL OF ----क्षा विकार द्वारकको कातम । त्नाम दकाम विवासक Martin va Males ette es at aufa gibe वर्षे । अवस्था मधानावि बारात गार्विक वक्का करवन ।

अक्रमाविरायं वान् विमान् इन वाकान न्याम अवस्था ्रशिकेति क्षेत्र समूर्यनं कर्मण द्व अर्थमाम व्यवस्था सन् मात् कार्कार्यस्थाः वश्चरक नावास्त्रश्यात्रान् नगरकत्र समाधिकारित मध्यांनीक चन्ना एकेचन । श्राचान पृश्कि एम ।

्यान् क्षित्रवाच वात अकार स्टान धरा याँउ स्वयप्त दिनी (नावभक्ता करमन रव वायू जिस्त्रमध्या गर्करक वर्तमान वर्ष्ट मरकंत वर्ड मणावकारत मरनानीक क्या देवे है। 'श्रकार हेरीक

ुनाह् रीजानान रामनात्र श्राचार करतम धरः रात् (स्वत्रपटक दिक्क (क्षानकका : कालन हर वार्षे जाविमाय ठाउँगानामुहः वर् बाब् भनेष्ट्रका ब्लाटक महकाती जल्लाक्य झाल महनासीष्ट्र हाती **হউক্ৰ ভাৰতাৰ পূৰ্বিত হয়।** ১৯০০ চন চৰকাৰ চা চন্দ্ৰীপ্ৰত

্ৰানুৰহন্যৰ চক্ৰমন্ত্ৰী প্ৰান্ধ কলেন এবং বাৰু শ্লিপন क्रकारियाच नुमर्थन कर्यने छ। बाद् अक्टन महणान क्षेत्र ए वर्तमान वरनदात क्क सर्नामा एकाव भारत मानानीक क्या रखेन र প্ৰভাব গৃহীত হয়। 👙

खर शदा दक्षां विन्ता का की विषय मुख्या कि का শভার লভা_ন পদ আর্থিপণের বেধ্য বাঁহারা অধিক সংখ্যক (फांगे शाहेत्राकिरनन, फारांत छानिका नकाशिकरक धानान করেন। তিনি ঐ তালিকা হইতে সমাকের কর্মচায়ীগণের माम छा। ग कतिया, याहाता मर्सारणका अधिक मःश्राक (छा। शारेबाहिलन, जांशाप्त मधा शहेरा क्लिकालांत ७० वन जबर यकः यत्वम् २ व्यानत साम वृद्धि क्तित्वन । छीहाताहे , व्यक्षक निषाय निर्माठिक स्ट्रेलन । कार्यापत्र नाम निरम् आपक

কলিকাভা।

ः बार्ष् (रक्षपठळ रेमज, ११७७ निवनाथ भाळी, बार् कृकक्मार विका, वाद् जीकानाथ मछ, वाद् जातिकाकूनात हरहाशाधात, ৰাবু ছক্তি বোৰ, ৰাবু নীগ্ৰতন নৱকান, বাবু ৰাৱকানাথ ं शंदकार्याधारुम, वायू प्रकानीमाथ बाव, वायू शिवानान शानवाम, क्रमात्री कामिनी रनन, नात् रक्षारमधिन मूर्थाभाषात्, तात् धर्ना-दिहेक्त्रिकात, वाद् मधुवारमाञ्च शक्ताभाषाचि, वाद् छंछीहवर सामारत्राकात, वैदंदी कालिकी शाकाशाधारम, विद्या नेक्रमाक्षात्र, वाव् दिवसावनाय म्राथानायाय, वाव् विभिन्त सः भाग, खाक्यांत्र त्यः अस मिख, वाय् क्यमीनव्यः वस्त, वाय् वहविवाती बेंद्र, नानू भार्मकीनाथ एड, जीवकी चन्द्र श्रव वह , बातू म्रूप्रकन र्वेत, वार् क्षेत्रहामाहन रच, वार् इतकिरणात दिलान, वार् क्रितिहस तम, बाद काणीनका चक्रत, काकाव (बाहिनी)

一个大大大学的,然 Miles Marie (Alugar) 414 Mententa PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE

wen), minte grater ve (ausaffen) wit wiene क्यान (क्यारिक्यों), बाद् स्थ्या र स्वारी (नियंगा देवन) बायू बद्देशक इत्हाधासांक (हाका), निः वृहिता शाकान् (बालांक), वर्षे वाराष्ट्रक वस्तारायात्र (वानकृते हिन्दार् मध्याम्बाह्य कर (विकाल) मार्च प्रवास्त्रात प्रवास (शता), त्राप् विनीलंबिकोडी बाद (यामिकार), बादू मिवात्रगठल पूर्वा-भागाते (काशनशत क्रिकास द्वारा (क्रिकेसर), बाद (क्शाहनाच क्षाकी (रीक्का)ः त्रात् कानी धनत दश् (छानाः), विश्वकृ यदनावशः वक्ष्यसम्ब (क्रांस्ता), तात् वननीपवं वर्षः (কুটিরা), বাবু চঞ্চীবরণ সেন (ক্লক্ষ্ণর 💃 বাবু চঞ্চীকিশেরে कुनाही (छाकाः)।

निवाणिक व्यक्तिभागित क्षणाव धरा दर्भावकका व निवन निर्विष्ठ वाक्ष्मित् मृत्यस्तुत आक नमास्वत नकाकरन सरमानीक **घंडेटणम**ा १ % 13,36

वात् मनदीनहत्तः मार्गद्यं व्यक्तारः अवः वात् विविधारम (चावालाव र्शायकणात्र बार् छरशक्ताक नाम ७७; वर् मति-त्माहन द्यावारंनव व्यक्तादन धानर नातू चानिमाथ हरहे।शीयारव्यव পোষ্কভার প্রীমভী থেমলভা রার, বাবু সরকুমার গুই ও বাবু जिल्लामार्थं मतकावः; वात् इतिहासुद्रमः व्यावालम् अकार्यः अवर 🥕 শুৰু কেলায়নাথ মুখোপাধালের পোষকভার নিশ্হাটীর বাবু व्यमधमाथ जनकात, अवर वाच् विशिनहत्त हत्त्ववाः, वाव्-মহেশচন্ত্ৰ খোষের প্ৰান্তাৰে এবং বাবু মীলকাভ লিছাভের भारकजात वीयजी बाकमात्रिमी द्वार्यः वायू मरीमहत्व शास्त्रव প্রস্তাবে এবং বাবু আন্ধিন্তর উট্টোপাধারের পোবক্তার तक्तारमत जीमजी रहमछक्मात्री (होधूनी; वर्षे कानीनवन তুকুলের প্রস্তাবে এবং বাবু শ্রীশ্চচন্ত বৈধের পোৰকভার कवामी श्राव वाव् देवना महत्व वेदः ; वाव् वसनौकां क व्याप्तव এন্ডাৰে এবং দাৰ্ ক্লবিমোহন খোষালের পোষকভার বরি-শালের কাবু মনমোহন চক্রবর্তী এবং গ্রাকক্ষার रवात: बात् नीकामाथ मरखत खखारब अवर वांदू रक्तात-লাণ সুখোলাধাদের পেনবকভার খাসু গোপীকক কুপু; वात् चातिकान हरहानाधात्तत्र धालात् अवरः वात् कानीनान त्वावात्वत (भावनकात क्याती (रहमूनका छडे।छार्याः व्यापकी विधूम्भी बाब (होधूनी, । धीमकी भारतक्षामा वस अवः धीमकी वाक्यांना वात्रः वाक्य स्तित्यास्मा द्वीषात्मत्र व्याषात्य व्यत्रः भनीकृष्य वस्त्र : (भाष्ट्रकृष्णा वात् भितिनाम छक्त वस्त्रा-भाकाम, वक्ष मानू जैनवीश हस बारमन धारमा वाव् चर्षाक्रेम्भ्य म्र्याशाशास्त्रत शावक्षात्र वाव् वननीती वञ्च, वायू विक्रमान विचान, वायू बजनीकांख नवकाव, वायू मना-नांन मनक, वायू अनद्ग क्रमात नान ७४, वायू महिमाध्य (प. बावू जिल्ह्यक द्वाव बादः अभिन्नी सम्बद्धाती जिल्हा ।

ं वान् श्रामधाण (याय श्रष्ठाव कटडम धवर वात् स्याक्षात **अट्डि! लागांव ' दलावकका करहन दव मांवाह्य खाक मंगारकत** आसंद्रिकंतर विक ममार्क्ष कब स् नकन कार्या कतिशासन, क्षांक और मेका स्टेटक जीवानिमान जनाइत महिक बहुनी । राजा सा अवाद गुरीक सा

वान् हजीहतन परमानिशास दाखान करकी जानः सूनीते जानान जेनीन रक्षावन्छ। करतन रत याशादन दाखानपालक त्रक परमावन कर्षहानीनिशस्त्र जाने नचा स्टेरक क्षावा क्षावना स्केत। जीकान सुरीक क्षा

বাৰ বিশিনচন্দ্ৰ পাল প্ৰাৰ্থী করেন এবং পাবলার বাবু কৈলাসচন্দ্ৰ বাগচী পোৰকতা কৰিব ৰে এই দেশ এবং অভাল কেশের যে সকল ধর্ম লয়জ, রাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের অহলপ মৃত্ত ও উল্লেখ্য বারা চালিত হয় প্রত্তি একেশ্রবাদ প্রচা-রের জন্ত চেটা করিতেছেন, সে সকলের সলে আভারিক সহাচ্তৃতি প্রকাশ করা হউক প্রভাব গৃহীত হয়।

বাবু স্বার্কানাথ গলোগাঁথায় প্রভাব করেন এবং ডাক্রার
ক্রে, এন, মিত্র সমর্থন করেন যে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের কলাবি
সাধনের অক্ত কুমারী এস্, জি, কলেট বে নিরভিত্মর উলার
ও ঐকান্তিক বত্নের সহিত কর্ম্বা করিরাছেন, ভরিমিত ভাঁহাকে
অক্তরের সন্তিচ ধ্রুবাদ দেওবা হউক। আনক্রের সহিত এই
প্রভাব গুরীত হইল।

সভাপতি মহালরের আছেটের ছিরীকৃত হইল বে ৪ঠা কেব্রেয়ারী সোমবার অগরাক এট বটকার সময় নিটি কলেজ ভবনে কার্যা নির্বাহক সভার সভা নির্বাচন করিবার জন্য অধ্যক্ষ সভায় এক বিশেষ অধিবেশন হইবে।

ভাজার পি, কে, রার প্রভাব করেন এবং বারকানাথ গলোপাব্যার সমর্থন করেন যে সভাপতি মুর্ণান্তকে ধন্যবার দেওরা হর। প্রভাব কর্মোদিত হইলে,সভা ভঙ্গ হয়।

জাতকর্মা, --গত ১০ই নবেছর পাবনার বাষু কৈলাদ চল্ল বাগচী মহাশবের ২র পুজের (৭ম সম্ভানের) জাতকর্ম -সম্পাদিত হইরাছে। বাষু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার উপাসনার কার্যা করিরাছিলেন।

প্রান্ধ ;— বিগত ২৬ এ অগ্রহানণ নগহাটীতে পরলোক-গত রাধাচনণ ঘোঁবের তৃতীর বার্বিক আছকার্য সম্পন্ন হইরা গিরাতে। বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধারে আচার্ব্যের কার্য ক্রিরাছিলেন। তদ্যক্তর প্রণোক্ষণত ভাতার সহধ্যিনী একটা ক্রিরাছী প্রার্থনা ক্রেন্য

নামকরণ; সভ ২য়া মাখা নোমবার দিনাতপ্রের
বার পার্কতীনাথ সেনের বিভীয়া কভার নামকরণ কার্যা হইরা
গিলাছে। তছ্পদক্ষে সেই দিন ছই বেলা উপাসনা, সলীত
ও সভার্তন হইরাছিল। বাবু নববীণ্চক্র দাস আচাহর্যার কার্যা
ক্রিলাভিলেন। মেরেটার নাক স্পালিনী রাধা হইলাছে।

ক্রিপাস প্রাথান ;—গৌহাটী হইতে রাষ্ নিশিক্ষার বোৰ বিশিব্যাকেন বৈ উচ্চার আবেসনে আনাম মেইল টানার কোপানি একসন সহচয় সহ একজন আন্তর্গত বাটান্ত্রন ক্ষুণ্ট ক্ষুণ্ট ভিন্তপৰ বাভাগতের অন্য একখানা "ব্ৰিণান" নাকান ক্ষুণ্ডাতের কোন জন্যত আনাম নাইবার পূর্বে, "ক্ষুণ্টানিব। ক্ষেণানির গোরাটীত এলেউ" এই ঠিকানার ক্ষুণ্টান নামে পল লিখিলে তিনি জানা বৰাত্বানে পারাইবা ক্ষিণ্টান

শ্বীৰ নক্ষীপৃত্ত দাস। — দিনালপুৰ আন্তৰ্যালেই নলামক বাৰু কুনুন্নালন কর দিবিয়াছেন এই নাই ক্ষিতিক দাস ক্ষেত্ৰিন ভ্ৰায় থাকিয়া আৰু প্ৰাভাবিদের গৃহে উপা-সনাদি ক্ষিয়াছিলেন।

সংবাদ।

পঞ্চাব ত্রাক্ষসমাব্য।

বিগত ১১ই সবেষর রবিবার তাই গছমন প্রনাদকে পঞাৰ আক্ষমনাকৈর প্রচারক নিযুক্ত করিবার প্রভাব অবতারণা করিবার উলেপ্তে সর্বার দ্রাল, সিং মালিথিরা মহাল্যের গৃহে আহোর প্রাক্ষমনাকের সভাগানের এক সভা আহুত হর ৷ তথার সর্বার দরাল সিং মালিথিরা, বাবু জললাল খোব রার বাহান্তর, ভাই লছ্মন প্রসাদ, লালা গঞ্মন, লালা নিধা রার, লালা শোভারাম, লালা রামচাদ, পঞ্জিত ভাসুরাম, বাবু রামচক্র বন্দ্যোপাধ্যার এবং সম্পাদক বাবু অবিনাশচক্র মন্ত্রদার উপহিত ছিলেন।

১। ছিরীকৃত হইল বে ভাই লছ্মন্ প্রসাদের অধীনে লক্ষোনগরে বে প্রেস ও পুস্তকালর আছে পঞ্জাব আক্ষমান্ত নিয় লিখিত তিনটা নিয়মের অধীন হইর। তাহার ভার প্রহণ ক্রিবেন।

अहे त्यारमन भाग भनित्मांग अवः हेहारक मम्पूर्व कृतिएक । इहेरव ।

শক্ষ-স্থানকে" বর্তমানে পঞ্জাব ত্রান্ধ সমার্কের প্রিকা ব্লিয়া প্রকাশিত করা হইবে।

পঞাৰ বাদ্ধ সমাজ যতদিন কোনও বিশেষ সমাজের অধীন
না হইয়া নিয়পেক ভাবে চালিত «ছটবে, ততদিন এই বেস
এবং প্রকালয় ভাষার সম্পত্তি স্বরূপ থাকিবে। ভবিষাতে
যদি ইহা সাধারণ বাদ্ধ সমাজের অন্তর্ভু কা হইয়া আরু কোন
সমাজের সঙ্গে হয়, ভবে এই প্রেস ও প্রকালয় সাধারূপ বাদ্ধ সমাজকে দিতে হইবে।

- २। चित्रीकृष करेन एवं गक्षार्यत कार्या व्यक्ति कार्यात्र चात्र कार्ये गर्मन् व्यगारम्य करक नाच करेरव ध्वतः जिनि केक नमारकत नित्रमाधीन करेत्रा केश्वत कार्या निर्मादक गर्कात्र निर्मासनाहृत कार्या कतिर्यम।
- विशेषक परेन स्व केक नमाव द्वारत्त्र मार्कारन परेटक ता क्वक त्यान केनाइत कार्र ग्रह्मन् व्यानाइतक कार्न-त्याद्वत कार्य त्रहम किर्दिन है
- को विशेषिक करेगाँदर और नेकान विशेषक विशेष केवन कानजार्थ कारे नक्षण कामानत्य विशेषक क्षेत्रक

তাত্ত্ব - কোনাল ক ও স্থাক্ত বিষয়ক শাহ্নিক শা

२२म छात्र। २२म मरबाा।

১७ हे ऋहिन नक्नरात, ১৮১० नक, लाक नचर ७०।

বাৎসারক অপ্রিম মূল্য ২৪০ মফবলে ৩ প্রতি শণ্ডের মূল্য ৫০

প্রার্থনাশ

কক্ষ-প্রত্ন ধুমুকেতৃ-সম,
ভীবনের সায়াক্ সময়ে,
চলিরাছি অভ্যকার দেশে
লক্ষ্য-প্রত্ন ভয়-ভুলি লয়ে।
অত্ত্ব প্রাণের আশা যত
একে একে নিবে সব বার,
একাক্ষ্য-প্র অভ্যার হার।
কোপা যাব কিছুই জানি না,
ভীবনের পথ ভবে প্রতি

কোথা বাব কিছুহ পানি না,
জীবনের পথ ভূলে পেচি,
হেথা হোথা করিয়া করিয়া
ঘুরিয়া মরিচি মিছি মিছি।

নাহারার অগ্নিময় দেশে .
কর্জু বাই মিটাতে পিপারা,
মরীচিকা আলিজন করি
পুরাইতে চাই হানি-আাশা।

সব যার কিছু নাহি পাই, জীবন পড়িরা শুধুরর, আগুণ জলিয়া শুধুওঠে, পরাণ আগুনমর হব।

কোথা যাব বল দরাসর ! জীবনৈর লক্ষ্য লাও বেঁধে, অভ্নত এ শ্রাণটা লবে বেড়াইব কড কেঁলে কেঁলে কু

সম্পাদকীয় মন্তব্য

বিশাস ও সরস্তা।—বিশাস ও সরস্থাই আলায় অক্তি। এই সভই সাধান্তাত এই এইটা ভাগ বিশেষ প্রবণ

The rest of the transition of a

लिया बात। बानक 🚓 बाह्य বুনি ভাগতেই বিশা**স**্করে ; প্রাণ খুলিরা ভোমাকে বিখাস কিছু আচে অকপটে ভোমার একটু ভালবাসা দেও অমনি করিবে; তাহার ক্তুত্র প্রাণে 🍇 নিক্ট ব্যক্ত ক্রিরা ফেলিবে। বিহার চরিজে যে পরিসাপে এই আভাণিক বিখান ও নরস্কৃত্তী অভাব, সে সেই পরিমাণে শিওভাব হারাইয়াছে। বরে। বরে। বল সলে বত অভিজয় বাড়িতে পাকে, মহবা-হালয়ের ক্রিনিত অংশের দ্বিকে বত স্থাই 🗸 পড়িতে থাকে, ডতই আমালুক ক্রিনিহিত বিখাস ও সর-পড়িতে থাকে, ডতই আমা ক্লতিনিহিত বিখাস ও সর-লভা ক্ষীণ হটতে থাকে, বুলিক কুই কঠিন হইরা আদে, এবং° करमः और क्यविधारम्ब छात् खीरनब मृतरम्भ भर्याच अक्र ভাবে পরিব্যাপ্ত হইয়া, পড়েড় বে মানুষ আধ্যাত্মিক রাজে)র গভীর সভাসমূহে আর বিখাস ভাপন করিতে পারে না,ুএমন কি ঈশরের সভা ও অরপও ভাল করিয়া ধরিতে পারে না **এবং ধর্ম সম্বেক উদাসীন বা সংশলী "হই**য়া পড়ে। যতদিন না আত্মা পুনরার প্রকৃতিত্ব হয়, যতদিন না ভাহার স্বাভাৰিক বিষায় ও সর্বতা ফিরিয়া '্মানে তভদিন সে ধর্মরাজ্যে এক পদও অগ্রসর হইতে পারে না। এই জন্তই মহাত্মা ঈশা বলিয়াছিলেন, "কুল শিশুকে আমার নিকট" ষানিতে দেও। কারণ, এইরূপ লোক লইরাই স্বর্গরাল্য গঠিত হর্ম"

শৈশবের বিনয় ও নির্জির।—বালা জীবন হইতে বে কেবল বিখান ও সরলতা সখলে শিকা পাওরা বার তাহা নহে ; বিনর ও নির্জির সহলেও বালা জীবনে অর্গ রাজ্যের আভান পাওরা বার । বিশুর মনে অহজার নাই, সে আপ-নাকে চর্কান বলিয়া জানে এবং সেই জন্তই সকল বিবরে পিজামাভার উপর নির্জির করে। বলোর্দ্ধির সজে সজে অজ্যের উপর নির্জির করার ভাব ক্ষিয়া বার, নিজের বলের উপর বিখান এবং ভংগকে আত্মনির্জিরের ভাব বুদ্ধি গাইতে থাকে। বাহার জীবনে এই আত্মনির্জিরের ভাব বুদ্ধি গাইতে থাকে। বাহার জীবনে এই আত্মনির্জার আ্মনির্জির অভিনিক্ত মানোর বৃদ্ধি পাইরা অহজার ও আত্মনির্জির আভার বারণ করে, ভারার পক্ষে আপ্যানাকে অপ্যান্ধি বিরা মনে করা ও

ষ্টবারের উপর নির্ভর করা অভাত করিন হটরা প্রচ্যে। বিশ্ব विमि गण्डे रकन महुन्नातिक वर्णन मान्त्र मकरवन्न सी नरम अधार्म কোনও না কোন সঁবর উপছিত হর, বধন প্রভিকৃত্য অরক্ষ লোভে পড়িরা স্থাপনাকে মিভাত ছুর্মল বলিয়া গুনে হয় লাম আন কোনও উচ্চতর শক্তির আনুরগ্রহণের লভ ব্যক্ত '' মইরা পঁড়ে।' তথন আমারে 👺 প্রাধের ইশিওভাব অঞ্চরিত ष्ट्रिया केर्छ क्रवर चाचा वामरक ्रिकाक्षाक्ष्मिका, बका . अहे भिक्कारवंड, अहे । अत्र" विका ही श्वात कृति वा বালস্বভাবস্থাত বিনয় ও নিউল্ল টাবের প্রভাগবর্তন ভিন্ন জীবাত্মার সহিত পরমাত্মার <u>শ্রেকী</u>র্যালন জ্লভর্তী। कीवटन (व" পরিমাণে এই । বের পুনঃসঞ্চার চ্ইয়াছে, জিনি সেই পরিষাপে পরম পির্ नक्षेत्र श्रेटक शांत्रवार्हन।

আখ্যাত্মিক আয় ব্যয় ক্রিএই সংসারে এক প্রাকৃতির ক্লিবিতে পাওয়া বার লোক দেখিতে পাওয়া বার্ বিদের আম অপেকা ব্যয় অধিক। ইহালের অবস্থা বেৰ্ট্রীই হউক না কেন, লোকের • निक्षे व्यापनार्टक धनी वालवा । श्रीद्विष्ठिक कविदाय क्षेत्र हेशाया नर्मनारे वाछ। देशात कन अ 🌉 त देशाता अप्रेनितन मेरेशाहे बाग्याच रहेवा लाटकत निक् ৰিপদক্ষ 😘 অপমানিত হয়, যে দ্বিজ্ঞতা চাজিবার জন্ত ইহা ক্রিজাহিল, সেই দরিজভা ভীষণতর আকারে ল সমূৰে প্ৰকাশিত হইয়া गए, जवर देशामत्र कृष्मा शारक ना। অকৃতির লোক আছে ব্রাহ্ঞ क्षिक कारबंध मोना के क्रिक्स कतित्रा वात्र कृदत्र ना, वत्रः किছू जक्षत्र कतिवात (हर्ष्ट) करत्। (नाक्रक दिवार वाम, जाननारक मुम्बद्देनत अक्सन विज्ञा পরিচিত করিবার অভ ইহারা ততু ব্যস্ত নছে। এরপ লোককে क्षन ७ स्पर्ध वा लाकित्र निक्षे व्यथमानिक हहेटक हर ना। ছঃখ ছर्कित्न ऐहाता সঞ্চিত धटनत সভাবहात कृतिया सीवन तका করে! আধাাত্মিক রাজ্যেও এই ছই প্রকৃতির লোক দেখা धक छाकात (नाक चार्ह याहाता धकखन शहरन मन-अन (नथात्र। क्रिकत्र এक कना छाव भाहेल वाहित्र छाहा मणक्षण कतिया ध्यकाण करत्र। जाशाश्चिक थरन थनी हहेवात জন্ত ইহাদের তত বাস্ততা পাকুক বা না পাকুক, লোকের নিকট जांशनात्क धेनी विश्वता श्रीतिष्ठिक कतिवात क्षेत्र हेशासत विष् আগ্রহ। এই জন্ত ইহার। বার্হা পার ভাহা শীত্রই নিঃশেবিত ্বইয়া পড়ে, তথন ইহারা পরের ভাব ধার করিয়া ভাবুক্তা দেশাইতে বার। কিন্ত ইহাদের আধ্যাত্মিক দরিত্রতা শীত্রই व्यक्तिक हरेता शास्त्र, त्यारक रेशासत कथात ७ कार्ती, ভাবোচ্ছাদে । প্রভাবিক জীবনে সামগ্রত দেখিতে পার না। कारबरे नाटक रेराविनटक बनात ७ कर्रात वित्रा अलहा, ७ উপেকা করে। অভত্য নাধক ভিনিই, বিনি ভাবের বাছিক ं विकास्भित्र सक्ष किक वाक्ष सर्द्य : विनि अक् सन लाहेटम त्नारकत क्रिकेट वश्वान कत्रिवर्शक्षमधान मा ; विनि केचरतत्र नाक लागारम लागरम (यांच शागरमम राष्ट्री करवन, लागरम গোপঁনে শক্তি নক্ষ্য করেন। 'ছঃব' ছদ্মিনে আখার নগত। 'द्रिका कामाहम गाँकाक क्रेटक एव मा, नद्रवत्र काम समामित्रा

विवादक क्यांक्रिक निकृष्ट नेक्या क्यांक्रिक क्या ना, क्यांक्रिक क

डिखिरिक्न ।— रक्र न टाइड रेक्टा नामरनंड निर्क पृष्टि प्राधिक्षा काह्य मा कतिरम कार्या क्षेत्रप्रमान स्व मा । अवस्यकः नंगन रहेना वात देन जिन्दान पेट्टिक हुई जानिन कार्यन आनुसक করিরাও, কাঁব্য করিতে করিতে চিড বিকিপ্ত হইয়া পড়ে, लाटकत्र निमा व्यमश्मात्र प्रिटक पृष्टि भएए, त्क कि कान्टिकरहर, षामात क्यांत्र वा कार्या कांहाक्रक ल्यांन बाह्य हरेरहरू कि না, এই দক্ল বাহিছের ভাব আদিরা কর্মবাপের ব্যাষাত উৎপাদন করে। अपने कि উপাসনার সমরেও নিজার নাই। विट्मवर्कः मामाक्षिक वा भाविवाविक छेभागनाव छेभागनाव कार्या করিবার সময় কথম কথম ভাব ছঃডিয়া কথার দিকে দৃষ্টি পড়ে' এবং খুরূপ উপলব্ধি করিবার চেষ্টা দুরে সিরা লোকের মনে ভাৰ উৎশাদনের প্রবৃত্তি প্রবল হইরা উঠে। ইহাতে আত্মার অত্যন্ত অপকার হর ও আত্মা বহিমুখ হইয়া পড়ে। ধর্মজীব-मित्र शर्थ क्ष कर्िद्य श्रीकृत मेळ चाइक् को रात्र क्षेत्र मा। ष्ट्रेचरक्षत्र हार्ड, जोननारक मन्त्र्यक्रिय हाष्ट्रिता हिर्ड ना श्राहिर्य, একেবারে আত্মবিশ্বত চইয়া কেবল প্রভুর ইচ্ছা পালরের বিকে मुष्टि ब्रोथिबी हिनटक ना भावित्न এই मकन मञ्जूब इक इहेटक श्रिक्षाद्वत छेगांबा छत्र नाहे।

লক্ষ্য ও পথ।—উচ্চ পর্বত শৃলে উঠিবার সময় বলি জ্বমাগত পথের বিবর চিন্তা করা বার তাহা হইলে পথশ্রম নিতান্ত হঃসহ বনিরা অল্পত হর। বাধা বিদ্ধ দেখিলে প্রাণ তীত হইরা অল্প পথ আশ্রম করে। কিন্তু বাহারা পথের বিষয় না ভাবিরা লক্ষ্যন্থানের উপর দৃষ্টি নিবদ্ধ রাথে তাহারা পথের কিন্তু নাহারা স্বর্বদা সাধক্ষের ওকান্তের বিষয় চিন্তা করে, সাধন ভলন তাহাদের নিকট বড় কইকর বোধ হর। সামাল্প প্রতিক্রণতার তাহারা লক্ষ্য করিবা সেই দিকে জ্বমাগত অপ্রসর হইতে চেটা করে তাহারা সাধন্তের ক্লেশকে ক্লেশ বলিরাই অল্পত্র করে না এবং নানা প্রতিক্রণ অবন্থা অভিক্রম করিরা দিখনের সাহাল্যে গল্পম হানে উপন্থিত হইরা ক্লার্থি হয়। ক্লিয় অল্পত্র বাহাদিগকে পথ দেখাইরা লইরা বান। লক্ষ্য উচ্চ হুইলে ক্লান্ত বাহাদিগকে পথ দেখাইরা লইরা বান। লক্ষ্য উচ্চ হুইলে ক্লান্ত বাহাদিগকে পথ দেখাইরা লইরা বান। লক্ষ্য উচ্চ হুইলে ক্লান্ত বাধা বিদ্ধ আপনা আপনি থিনিয়া প্রত্যে।

পঞ্জীর সঙ্গে সংগ্রাম।—শরীরের রক্ত দূর্বিত হুইলে
নানা রোগের আকারে ভাষা প্রকাশিত হব। অন্তিঞ্জ চিকিৎসক্ষণ ঐ সকল বাহিন্দুরোগের চিকিৎসার প্রবৃত্ত হুইলা বিক্লকাস হয়। একটা রোগ ব্য করিছে বিলা জাহার। বেশেন ভাষার প্রানে ভার পাঁচটা সুক্তর হোকে প্রকাশিক্ষ ব্রী-

बार्स । विश्व स्थितिक कि करमक स्थारना सामक कारण पुरिस्त "नारिया अमेन गरशेरन आहोत्र करतत गागरिक अले प्रतिकृत ইছুইবা বোণের সূব উৎুক্লটিত হইতে পাবে, তিনি বৈ বাছিব द्वांत्र निवादान दृष्टी। बादकवादार कदान मा छारा नटर। छेश-स्मन्न बर्था रव श्विन विरम्ब जीवन श्व कडेनात्रक राश्वीन मृत्र कत्रि-े बाब क्ष वर्षि किनि (छ्टी) कतिया बारकम, क्षित्र तक क्षतिकात् क्षिता द्वारभव कावन स्त्रीक्षरनव विरक्ते कुँग्याव मुक्तिक्षिक व्यक्तिक । दनहे जान अञ्चल आर्मारेणव केव्हा विक्रक करेंगा वाव ্ভবন উহা নানা পাপের জীকারে প্রকাশিত হয়। এরপ সমান্ত কেবল বলি ছুই একটা করিয়া ঐ সকল পাপ দুর করিবার हेक्ट्री कहा बाह, करव शाहि हकांनव कन नारकह नहावना মাই ৷ এরপ করিতে গেলে একটা প্রশের স্থানে আর পাঁচটা মৃত্ন পাণ উদিত হটতে দেখা যায়।[া], কিন্তু যদি স্বীয় প্রেম-अन मरहोद्यदाता विकृष्ठ हेव्हारक विरमाधिष्ठ कतिरख रहेडी करी বার ভবে একেবারে পাপেল মূলে কুর্ছারাখাত করা হয়। এলপ क्राम त्व विरमव धौरम भागश्रम मृत कतिराक त्रही कतिराज इहेर्द मा छाहा गरह। अञ्चल कतिरम बद्रः चैरमञ्जे नायरमञ् সাহাষ্য হয় ৷ কিন্তু প্রেম্বারা ইচ্ছাকে প্রশ্নতির্ত্ত করিবার্দিকে विटमव मेंका ना त्राभिता चल्डा कांटर भाग निर्वात्र एउट्टी कर्ता विष्युना माख।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

श्रेयदात छमात विशि

व्योहीन कारण विष्कृती रमार्ग गुरामानियान नारम अकस्त्रन শাল্ল বেতা মহা পণ্ডিত ছিলেন। একদিন একজন বিদেশীপ त्नाक छै।हात्र निकार चानिया वनिन, महानय ! चानिन नकन भाष्त्रत मैर्च बारनन। आमात अक्षी असूरताथ आहि, कांश शूर्व केंत्रिएक बहेरव । शामानियान विकास कतिरान **কি ? সে ব্যক্তি ৰলিল "আমি এক পাল্লে দাঁড়াই; এই এক** পায়ে টাড়াইয়া থাকিডত থাকিতে আপনি সকল শাৰ্ষের निक्ष कतिया नर्साराका टाउँ वि छेनामंग गांछ कतियाहिन छांबा आमारक विनाछ बहेरव। न्यामानियान विवक्त बहेबा ৰম্বন্থিত ষ্টি ৰায়া ভাহাকে প্ৰহার ক্রিভে উদ্যত হইলেন এবং বলিলেন এ অভার অমুরেষি আমি রক্ষা করি না। এক পালে দাঁড়াইরা থাকিতে থাকিতে সকল শালের সার निक्य कतिया উপদেশ দেওয়া कि मस्टर ? उथन रंग वास्क्रि ুহিলেল দামক আৰু একক্সন ধর্মেশিদেষ্টার নিকট গমন করিল এবং সেই অছরোধ করিল। হিলেন ভাঁহাকে এক পায়ে मक्षात्रमान वरेटक चारमम कतिरमन। वथम तम मार्किहेन क्षेत्र विगरमन-भारत्वत्र ७ मक्न मीकि विकेशियन मात्र ্ৰিনা এই, স্থপৰে ভোষাৰ প্ৰতি বেৰণ বাবহায় কৰিলে তুমি नुष्के १५, चंगरतत काछि त्नरेतान गुनदात कत्र। करे चाचा-विकामि केशनामक सामक कारीन निक्की बद्ध पुढे दव । के अप में कि करियान अध्यक्त समाव शृदर्भ विक वरेगाविक।

এইরপ চীন দেশীর সাধু কংক্চের উপরেশাবলী পাঠ করিতে করিতে ঠিক করির অক্রণ একটা উল্লি, বৃষ্ট হয়। একদিন কংক্চের একলন শিবা তাহাকে জিল্লাসা করিবেন—"গুরো আপ্রিত আ্যাদিগকে অনেক উপরেশ দিরাছেন। অপনার সকল উপরেশের সার কি অক্প্রহ করিয়া বলুন। কংক্চ উল্লেক্ষ্য উপরেশের লার এই, অপরের নিক্টিবে ব্যবহার পাইলে অস্থাই ইন্ড অপরকে সে ব্যবহার দিওলা। কংক্চ দিশা অস্থাবার করিছ বংসর পূর্বে অব্যাহাইবে।

উক্ত উত্তর আথারিক। ছইতে আমরা কি উপদেশ পাই-তেছি ? উপার শিবাগণ কারাদের বাইবেল পাজের গোরব করিরা বলিয়া থাকেন, বে ভাহা বে ঈশর প্রেরিত ছাহার প্রমাণ এই, এমন উরত নীজির উপদেশ আর ক্ষাপি দুই হয় না; দুইত্তে অরপ তাহারা ইপার সেই ছবিব্যান্ত উক্তিগুলির উল্লেখ করেন বাহাতে ভিক্ত ঠিক্ ইহারই অন্তর্মণ উপদেশ দিরাছেন। অপরের নিক্ট বেরপ ব্যবহার পাইলে সম্ভই হও, অপরতে সেইরপ ন্যবহার দেও, এই অম্পা উপদেশের উক্তের তাহাল্ল কার্য বহুল হাগন করেন। জালা বে মহৎ ছিলেন, ভাহাতে আরু সুন্দেই কি ? তাহার মহন্ত লোপ করিবার প্রারাণ আমাদিগের নাই এবং ভাহা ক্ষন্ত বিল্পে ছইবে না। কিন্ত টালমভ্তাতে ও আখারিকা বিনি পাঠ করি বেন্টু তিনিই বলিবেন বে ক্রিয়া উপদেশটা ঈশা নিজনেশের বিন্তান শতের পাতা করিবার বান প্রারাণ করিবার বান প্রারাণ করিবার বান প্রার্থ করিবার বান বান করিবার বান বান তাহা বাহার প্রকাশিক্ত ক্তন সভা নহে।

সে, যাহা হউকু উক্তে সজ্য ঈশার প্রকাশিত কি না ভাষা विहात कता वर्षमान व्यवस्त्र के स्मा नरहा आत अकडी महा সত্য নির্দেশ করা আমাদের উদ্দেশ্ত। তাহা এই-- ইম্বর মানব-সাধারণের পিভা। তিনি কোন একটা নিশেষ লাভি কি विट्मय मनदक शहला कवित्रा जाहामिटशेव निकटिहे गकन गठा প্রকাশ করিরাছেন ভাষা নহে, কিছু দেশ ও জাতি নির্বিশেষে তিনি মানব জীবনের উপজীব্য সভাসকল,বিক্সিপ্ত করিয়াছেন। थाहीन कारन यथन रमान रात्म चार्किए बार्किए रवाई देवत्रानम श्रक्कांगछ हिन, छथन मारकत्र मरन विकाछि-विरश्य নিভান্ত প্ৰবল ধাকাতে প্ৰভ্যেক লগত এই ভ্ৰমে শভিত ৰুইয়া ছিল—বে ঈশর তাহাদের প্রতি আগরু ও তাহাদের শত্রুকুলের প্রতি বিবেৰভাবাপর। 🖟 ব্ড 🎏 ছু সত্য চিনি ভাহাদেরই মধ্যে প্রকাশ করিরাছেন অপর সকল জাতিকে অক্কারে ভুরিরা ছাড়িয়া দিরাছেন। বর্তমান সময়ে বাণিজ্যের বিভাক ও ঐতিহাসিক প্রেবণার প্রভৃত উন্নতি इंडबाट्ड धरे व्यवसां कि विदय करमक पत्रियादन मिथिन हरे-बाह्य वरहे किन अपमान हेरा मण्मूर्वकरन विहाल इस नाहे। व्ययन औदिकान व्यक्तात्र कतिरखरहम रच भूभियोत्र ममका ब्यास्त्रित मटवा क्रेयतः त्रिष्ट्यी विशदकः लक्ष्यः कतिशा व्याभनीत म्हाराति थातरनत भाव्यचन्नभ कतिवाहिरणनः। मानरकत मुक्तिव रव भाव्य **खारा खारात्रत मर्थारे धाकानिक रहेगाहिन। जनत नक्नर्**क मुख्यि क्ष छार्रावर्गवर वातव हरेटक ररेटव । अथनक तर-

বাহে বিভাগত কামেকাটে কুকি গাল আন্তর্গ নাজন ক্রিকার ক্রীকার্যে এবং কেব্যাবের ভাগ লাভি নাই; বর্ণের কর্মা মুক্তিইয়েন, বে নিজুকাভিন ভাগ কাভি নাই; বর্ণের কর্মা ইরার্যাই আনিবাহিল, অভেয়া অন্ধ্বাবে আহে। ইপ্রশোক্তি বর্ণের প্রতি বিশেষ প্রশন্ত হিলেন। স্কুডাং আম্বান বে প্রাচীন ক্ষাণের সাম্প্রদায়িকভা হুইন্ড ক্ষান্ত গাইবাহি ভালা নহে।

আনর। উপরে ছইটা বিভিন্ন আন্তির বে ছইটা আব্যারিকা
উক্ত করিবাছি, ভাহাতে এই অনাণ বে সকল দেশ ও
সকল জাতির মধ্যে এখন সকল মহাস্টার করিবাছেন ইবাল কের মুখের ঘারা ইখর অনেক মহাস্টা প্রকাশ করিবাছেন। এখন ও জিনিসকল জাতিমধ্যে ল্ডা সকলকে প্রকাশ করিবেত-ছেন। কেই তাহার ভ্যাক্তা কেই ভাহার পূজা এরপ নহে। বে কেই ব্যাকুল ভাবে অধ্যাত্মভন্তের অব্যেব করে,—সেই অধ্যাত্মভা আনিতে পার। চিত্তের পবিজ্ঞভা, অভিসন্ধির বিশুক্তা, ও ভ্যার গভীরতা, এই তিন্টা যে ব্যক্তির মধ্যে ক্ষিনিত হর সেই তাহার সভ্য কিরণ ধারণের উপযুক্ত হর।

ি চিছের পবিজ্ঞতা, অভিসন্ধির বিশুক্ষতা ও তৃষ্ণার গভীরতা

ত্রতি ভিনটীর একল স্মাবেশ হওয়া কত কঠিন ? বে বাজির
বা বে লাভির নীতি যে পরিমাণে কর্ষিত, যাহাদের ইক্রিয়ক্রথপ্রবৃত্তি প্রবল, যাহাদের চিন্তা ও আচরণে স্বার্থপরতা,
ভাহারা সেই পরিমাণে ঈর্থরের সভ্যান্তাতি ধারণে অক্ষঃ।
সেইক্রপ বে ব্যক্তি, অকপটে সর্ভাকে অবেষণ করেনা—যাহার
সভ্যাব্রেণের মধ্যে অপর, কোন অভিসন্ধি স্কারিত থাকে;
যে ভদ্মারা অপর কোন প্রকারে লাভবান হইবার আফাজ্রা
করে—ভাহার মন ও সভাজেমন্তি ক্রিয়ুণ অসমর্থ হইয়া
পড়ে, ক্রিন্ত কেবল মাল্ল এই ফুইটা থাকিলেও হয় মা—
এক ব্যক্তির নীতি ও চরিল্ল বিশুক্ষ হইডে পারে, হালর ও
অভিসন্ধিহীক হইডে পারে, কিন্ত পিপালা ক্ষীণ। পর্মার্থ
ভব্যের কম্প প্রাণ সমূচিত ব্যাকুল নয়; সভ্যের জম্প প্রবল
লালসা নাই। প্রক্লপ ব্যক্তিও সভাল্যোতি ধারণের উপযুক্ত
হয় মা। অভএব অপর তুইটার স্থার তৃষ্ণার গভীরভাও চাই।

সর্বদেশে ও সর্বকালে যথনই যে সাধু ক্ষর এই তিন ভাষাপন্ন হইরা সভ্যজ্যোতির জল্প উনুথ হইরাছে তথনি ভাজার নিকট ঈশবের ক্ষতাজ্যোতি প্রকাশিত হইরাজে।
আক্ষধর্শের প্রসাদে আমরা এই উদার ধর্মভাব ক্ষরে ধারণ
ক্রিতে সমর্থ হইরাজি।

ব্রাক্ষণর্ম যে কেবল এই উদার স্ত্যু গ্রহণ করিতে জামাবিগকে উপনেশ বিরাছেন তাহা নহে সকল দেশের ও সকল
কালের ধর্মশিপাত্ম সাধু-সজনকে গভীর প্রীতি ও প্রদার
কহিত দেখিতে উপদেশ দিয়াছেন। আমানিগকে প্রত্যুক্ত জাতির
কালে ও প্রত্যেক সাধু বহাজনের জীবনের মধ্যে বিধাতার
কালে বেশিতে হইবে। সকলেই আমানের জন্ত বিধাতা কর্তৃক
নির্ভা: তাহাদের জীবনের বারা আমানের জীবন পরিপৃষ্ট
হইবে, জীহাদের বোমের বারা আমানের প্রের আফুট হইবে;
ভাহাদের ক্রেক্ত বারীর হারা আমানের থাক্তিত হইবে;
ভাহাদের কর্ত্ত বারীর হারা আমানের প্রীবন পর্যে নাহার্য্য

ক্ষাৰ কৰিছি লগা কৰা নকৰ হোৱা এই নক্ষাৰ কৰিছাল আনামানত পৰাত সকৰ ভৌতিক প্ৰাৰ্থি নিয়ক কৰিছাল হোলা বৈং লগে বেহ পালিও চইডেবে; ভাষা কত হজে বলন বপন কৰিয়াহে, কত হলে কৰ্মন কৰিয়াহে, কত হজে বলন কৰিয়াহে। এইবাপে একটা মান্তবেহ ক্ষাৰ জনা তিনি হালারটা মাত্তবের দেহ মনকে খাটাইজেছেন। আধ্যাম্বিক বিবরেও এই প্রকার। একটা আজার পোলাক বোলাইবার জনা, তিনি হালার হালার আজার জান, প্রেম, পুণাকে খাটাইখাছেন। কত মহৎ ও কুল্ল জীবন চারিদিকে সহার-রূপে দিরাছেন। আমরা তাঁহার ঘারা এইবাপে পরিচালিত হইতেছি। আমরা সমগ্র মানব জাতির আধ্যাত্বিক সম্পত্তির উত্তরাধিকারী। কি মহৎভাব।

আত্ম-জিত পুরুষ।

[े]र्युत्रोकोला वृक्षः यंथम व्यवस्थि नगरतत्र मतिकंतेष्ठ **स्थि**जनम দামক ছাবে বাস্ করিভেছিলেন, তথন একলিন ় একলন ধনী গৃহত্ব তাঁচার নিক্ট আসিল এবং তাঁহার চরণে প্রণত रुरेश निर्देशन कतिल, अर्शास्त्र दक्षनीय श्रद्धाः। आभि यथन উপাসনঃ বা কোন ধর্মাফুঠানে প্রাবৃত্ত হট, তথ্ম কোন না কোন আর্ত্তি আবল হইয়া আমার চিত্তকে চঞ্চল করে ও ষ্মানার চিত্তের শাস্তি হরণ করে। স্থাপনি কুণা করিয়া ইহার উপার নির্দ্ধেশ করুন। শাক্যসিংহ তাহাকে বশিতে আদেশ ক্রিলেন এবং নাম ধাম বিজ্ঞাস। ক্রিলেন। তুথন নে ব্যক্তি পুনরায় চরণে আংণত হইয়া বলিল—বে ভূতপুর্ক্ রাজার অধিকার কালে সে ব্যক্তি তাঁহার হাতির **মাত্**ত ছিল। শাকাসিংহ বিজ্ঞাসা করিলেন—ভূমি যে হাতির মাহত হিলে কিরপে হাতী বশ করিতে ? সে বাঁকি বুলিল কিল প্রাক্রের হাতি বৃদ্ধ করিভাম, প্রাথম—লোহার ডাঙ্গের আঘাত দারী, ৰিতীয়—ভাহাকে অনাহারে রাখিয়া,ভূতীয়—প্রকাশ্ত এক গাছি বটির আঘাতের হারাঃ৷ বুক পুনরার জিজাসা করিলেন "ক্লাক্ছা এই তিন প্রকার উপায়ের মধ্যে কোনটা শ্রেষ্ঠ ? গৃহত্ব উত্তর করিল "লোঁহার ডা্ঙগটী সর্বাদেকা শ্রেষ্ঠ ; কারণ ইয়ার আঘাতে হাতি এমন কাবু হীর বে ইহার ভঙ্গে বাজাকে পুঠে তুলিবার জন্য শরন ক্রিতে খলিলে তৎক্ষণা প্রক করে अवर डेबात करत युक्त त्लरे महामातीय मरवा कर्मन इत। বুদ বলিলেন--ইহা ভিন্ন হাতি বল ক্রিবার অন্ত কোন উপাছ बान कि ना ? त्र वाकि উछत कतित्वन, ना। क्रमन पूक्क तम कतिरह ! (त वाक्ति कविरणन- अरहा ! वेहाब कानावी क्लांडे कतिवा वन्त । छत्रन वृद्ध वनिध्नन-द्रष्ट क्षित्र वाक्ष्ण । শামিও তিন উপারে যানবের ক্ষর বনীভূত করি ৷ এবং ঐ তিন উণারে এভোক মানর আপ্নাচক ব্রীভূত কুরিকে शास्त्र । त किसी देशा वह-व्यवस्था मामान्यस्य अभिनेत

त्व विश्व के विश्व क

मूर्काक वाषाविकां पूर्वत वीरनहितं हरेट गृहीछ।
नुर्वत काव रेवाता हर्ष किवा गिर्ट गरिता, "वाति वायाव व्यवक काव रेवाता हर्ष किवा गिर्ट गरिता, "वाति वायाव व्यवक हर्षी नमान मनरक बट्ट वानिवाहि" ठाँहावारे मानय-कृत्म पत्न! त्यांति वावात्रश्यम व्याह, त्रहेशात्नरे भर्त्यत व्यवक शोवन व्याह। यादात्र वावात्रश्यम व्याह, ठाँहाव वीर्त्तत वारे व्यक्षाण भाव त्य ठिनि चीव व्यक्वित्व ७ केह्न्यन हार्वित्रकेशास्त्र शर्यात्र केवा निवस्त्र व्यक्षात्र। कीहात क्षात्र वेषात्र वांका व्यक्तिक हरेवाहि।

আছা কিত পুরুষ প্রার্থ খাধীন। তাঁহার দাঁড়াইবার ভূমি আছে—বেথানে দাঁড়াইরা বীরভাবে ভিনি কার্য্য পর্যা-গোচনা করিতে পারেন ও খীর কর্ত্তব্য পথের অফুসরণ ক্রিতে পারেন। আল্ল-সংবম বাহার নাই সে সে পথে বাইতে পারে না, কারণ দক্ষকনে তাহার হাত ধরিরা টানাটানি করিতেছে। ভাহার নিজের পথ দেখিবার অবসর নাই। সে প্রকৃত পরাধীন।

আছালিত পুরুষই প্রাক্তত ভাবে গুড় সংকরের অনুশরণ ্ৰ রিভে পারে। বে ব্যক্তি আত্ম-লন্ন কঞ্চেনাই, চিন্ত বিক্ষে পের নানা কারণ উপস্থিত চইরা ভাচাকে শুভ সংক্রে স্থির ঝাকিতে দের না। ঈশরই প্রকৃত ভাবে "শিবং," কারণ তিনি "লাভং," তিনি নিভারল শাভিমর রাজে বাস করিতেছেন। আন্রা শোক নুমাহের অধীন চইয়া গুভ সংকর ছইতে বার ৰায় বিচাত হইতেছি কি**ন্ধ** তিনি সেরপ[্]নহেন। বে স্কল जुबल উथि । इहेता जी भारत श्रम समारक जारला निक कवि-ভেছে, সে সকল ভরজ ভাঁহার শ্বরণকে লপ্ল করে না। আনাদের হর্বের উল্লাস বা লোকের আর্ত্তনাদ; বন্ধুতার সঞ্জের वार्वेद्दीप्त वा मञ्ज्ञात विवाक वृष्टि ; नत्रज्ञात्वत विवाव, कन्द्र, দ্বত্তপাত,-এনকলের প্রতি উনাদীন থাকিয়া তিনি আপনার মক্ল সংক্রকেই সম্পন্ন ক্রিজেট্রন। বুধায়মান কল রাশির रक्क कांग (रामन कांग्यनशीन, 'एक मन (महे महाकिका मीन गुक्त कित्रमाखः देहा कीशारणहे जंबत्यः सामयकूरण वीहाता বেঁ পরিমানে আছ-জিত উহোর। সেই পরিমানে ভাহার ক্ষাক্তর অমূরণ।

বসস্ত-চিন্তা।

(entat)

विश्वेषक जनगान कानक तुकाक तुकाक विश्वीत विश्वेषक स्थान स्थान काना तुकाक तुकाक स्थान

Mild wind einer mind gint mitten fein beifen. कत्रम मध्य गर्वीक वर्षने करम मा, जाकनेकारम क्रिके खरेबा संविक्षत विवासिनात जात जाता जाता हातात हे नावान করে না। ভাষাধের বিকে বৃদ্ধীপাত করিলে মনে তথন কোনক আনক্ষের উন্নর হয় না। কিন্তু কিনু বিন পরে পুষ্ণর এসক कान चानिन,--- चर्मन खुक , काईवर दिने माथा आधार्या दुवन कतिया एटकामन नवीन विक्रात नकत विक्रिक स्ट्रेन, अभवपूर्व স্পর কুসুন সৰণ অক্টিড হইয়া সেই স্থান আলোকিও कतिन, ७ मध्य भोत्रक्षकेश ठातिनित्क विकीर्य कृतिरक नातिनः পাৰীগণ বাঁকে বাঁকে উড়িয়া আসিয়া সেই সকল দাখায় উপবেশন করিল এবং স্থাক কল ভোতান করিয়া আনক্ষে मत्नारत भाषा भारेत्छ नामिन ; भक्षिक्शन मत्न । मत्न अपंत्रिता নেই অনীতল ছায়ায় উপনীত হইল এবং শ্রীয়েয় প্রধান ক্রিল নিবারণ করিয়৷ অপূর্ক বিশ্রাসমূপ উপ্ভোগ করিয়ান 🖰 😘 मत्न कतित्र। य गकन बुद्ध्यत पिटक टक्ट मृष्टिभाज कदतन नाहे, এখন ভাহার কেমন ফুলর শোভা হইরাছে; এখন বেন সে নৰ প্রবের বসনে স্বীর শরীর আবৃত করিরা উচ্চন, কুরুমের যুক্ট শিরে ধারণ করিরাছে! . কে এই গুৰুকে সরস করিল 🀔 क बहे मृक्टक मुक्की विक कतिय १ बहे बदा बीर्ट्ड महीरह दिक नव रवीवन छानिया निग ? अहे मधूत वज्रसकान। वज्रस्त्रक ञ्चरकामन म्लर्टन बहे दक्त वाहिया राजू, वनरस्वत श्रविक निषारन रेश नवकीयन गांक कतिन!

বাঁহার ফুণার ওছ প্রায় তক সকল মুঞ্রিত হইছেছে, জুলর পূজাণজে সজ্জিত হইর। নব বেছ ধারণ করিতেছে; শঙ্কীর পাথা হইতে পালক থসিরা পড়িলে, বাঁহার করুণা আসিরা তাহাকে আবার নবীন উজ্জ্বল পালকের জুবণে জলক্ত করিতেছে,ইহা কি কথনও সম্ভব বে সেই করুণামর তাঁহার মানবসন্তানলিগকে ভূলিরা রহিরাছেন্ গুপাপের গর্ভে; পজিরা তাহারা চিরদিন হাহাকার করিবে, কুসংস্থারের আলে অভ্নিত হইরা তাঁহা হইতে দ্রে বাস করিবে, এবং তিনি ভাহাদের জ্বংথ দেখিবেন না, তাঁহার করুণা আসিরা তাহাদিগকে উদ্ধার জরিবে না—ইহা কথনই সন্তবপ্র নাজে। এই মানব-জীবনের মধ্যে প্রতিনিরতই তাঁহার করুণার পরিচর পাওরা বার।

সংসারাসকির দাস হইরা মাছুব বধন ধর্মহীন জীবন বাপন করে, হাদরের উচ্চ বৃদ্ধি সকলকে ভার্থপরভার সংকীর্থ ভাবের মধ্যে আবদ্ধ করিরা রাখে এবং নানা প্রকার পাল প্রাবৃত্তির অধীন হইরা ইক্রির পরভন্ততার মধ্যে অবিয়া থাকে, তথন ভাহার জীবন গণিতপত্র বৃদ্ধের ছার শুরু ও নির্মীর বিলিরা প্রতীয়মান হয়। তথন সে জীবনের কোনও প্রোদ্ধা কেই ছেবিতে গার না, ভাহার সন্ত্রপুর রাশির সৌরক্ষ চারি দিকে বিশীর্থ ইয়া কাহারও চিত্ত হরণ করে না, ভাষার প্রেমের স্থান্তর ভারা কাহারও প্রাণ পরিত্তপ্র কার্ম না, ঝারং ভাহার পরিক্রাক্র নির্মীন্তর স্থানিকে পরিক্রে এ জালার ভাহার নির্মীন করির সারকে পারিকে এ জালার ভাহার নির্মীন করিছে সারিকে পারিকে এ জালার ভাহার নির্মীন

(कर्षे क्रिका क्रेटक आहव मान दक जीवत्त दक्तानुक विर्य-वर्ष (कर क्षितिक शांव मा : व्यासंत्र निका व्यक्ति क्रावक्ती वृक्षिक अध्यक्षिक स्रेवा काला लावन्द्राविक स्र ; कार्याक क्षांत्रक केळ बाबा ना कैरमंत्र ब्याह्म, खादा विनिद्या क्रिके (स्क्रण दक्षर कतिरकु-प्राप्त जा। · कवरण्य वरश अक्रण कारशः कीयम मुद्दे क्षेट्रें में बादा राजिया। यामय की बरन र कामछ महक कारम देश करूकर कतिरक भारत राहित्य मा । नःबारम वाकारन कारा अक्रम विकृष्ठ स्टेश निवृक्ष्य । किस बारे क्रमणी तिरक्षक करवात बार्मवकीयन विविधिक के बर्धक मार्ट्स আলে, বভোর একটু ভাব কৰি ভাইকা উপর অভিক্ত হইরা यात, जेपदत्तत व्याम, त्याय या शविद्यकात व्याप्त व्याप्त व्यापात्रक বনি ভাহার উপর পভিত হয়, তাবে ব্যক্ত-স্মীরণ স্পার্শে বেমন ७क वृक्ष प्रकृत नरहित् थात्र करत, रा कीयन द राहेन्न नर ভাবে পদিবর্ত্তি হইবা যায়। পুরাতন পাণ ডাপ মলিনডা ক্ষেত্ৰাৰ ফলিয়া বাম ; সংসাম বাসনা, স্বাৰ্থপৰতা, নীচাশৰতা এছিভ সংকীৰ ভাৰ সকল দিখিল হইয়া পড়ে; অহল্যর আত্মা-ভিষান, ইজিলের স্থীনতা গুড়তি চুর্দদনীয় রিপুকুল বেগণায় भगात्रम करत्। त्र कीवन कथन क्यन त्रोक्तर्या विकृषिक स्तान द्रावादन कान हिन ना दनवादन कान वाणि व्यक्ताणिक হয় ; পাপের অন্ধকার যথার রাজত করিছেছিল, পুণ্য পবিজ-ভার জোগতি আনিয়া সেই স্থান আলোকিত করে; যোর বীর্ণস্তা ও বিষয়াসকি যালার অর্থত ছিল, ভাহার স্ব্য निशा अवन ध्यापंत्र वक्षा आवारिक रत । भूटर्स याचान निष्क (कह गांहबाও एएथ नाहे, कीवरनंत्र अहे चार्क्या शतिवर्धन (वांधम्) नकत्वत्र हुक् रावे विषक चाइडे रह। रावे वांकित कीयान एक आहे शिवर्षन चानिन १ आहे निष्यक मुख्शावरक (क अवकीवन नाम कतिन ? काशाब श्रष्ठात्व अरु अगाज कन्न्या জীখন এরণ সন্ধীৰ স্থব্দর ভাব ধারণ করিল 📍 ঈশ্বন-বিখাল 🏾 (महे नडाचकरणत मडाकारवन वाकाम अकवात माज अहे कीवत्वत छेलत मित्रा व्यवहिष्ठ इटेग्नाइ, छाई अटे ७६ कौवन মুকুলিত ত্ইরাছে; লেই তেনেমবের তেনের ক্ষুত্র এক ক্লিকা শিশিরাবন্দুর ভার এই জীবনের উপর নিপভিত হইরাছে, অমনি ইহা হইতে কড সম্প্রণ রাশি আক্টিড হইরাছে 🔋

Call again was must all water once क्रमनः कैलारिनटण पूर्णा कित्रशास्त्र । किया प्रमाने क्रमहे श्रविकार केरवाविद्वेष जीवटक न्यान कविवादक विवेद-द्वारवद अकट्टे कुछ कान भामित्रा क्रीशाहित्यम शहरत क्रुसकीर्ग वहेताहरू: ন্দৰ্শন্তি ক্ষাৰ্থে কোহ বেশ্বল স্থৰ্গ হইয়া যায় সেইভাবে উংহালেয় क्षेत्र मणिन बोयन क्ष्यनहे सूचन गरिया हरेता निपारक । धनारक दिविद्या गर्थ कतिनारक, केंब वाकि वृत्ति वा रम वाकि नम हैं। की नरन देवंस कुषान्छ कानेत्र डैनियुक्त इरेबार्कः। विनि देवायः, तूर्व क्रूयरकातानव क्रियंत्रम, डीवाव निकाध विविधा छपन क्रेक लाक बर्जानका कतिशास, छारात्र छैनस्यक कक्ष लास्क्रियः (बार मः नम्र कक्षम हरेया निकारकै। विसि बार्यमत विमान-शरायन किरणन, ट्यायन वाकारन फैलान समय केन्द्र सहें बाट्ड ; करतक कन काचीत नितिवादित मध्या वैशिव बान जारक हिन, जिनि छपन जाननात्र मरन कतिया वाह्न व्यनावप পূৰ্মক ৰগৎকে আলিজন করিতে অগ্রসর হইরাছেন। বাহার कीवरमय कुनाव शृंह পदियात क्यांबिक इंग्लाहिन, पाशान পাপের পুতিবদ্ধনৰ ভাবে সমাজের নৈতিক বায়ু দ্বিত হইবা গিয়াছিল, ভাঁছার পুৰোৱ যৌরভে আফুট হইয়া কভ লোক (त्रकृत्य कारन डांशनिशदक नमकात कतिवाद, डांशव প্ৰবিত্ৰ জীবনের সংস্পর্শে আদিয়া কত ব্যক্তির স্থণিত চরি-জের পরিবর্ত্তন হইরা গিরাছে। তথন তাঁলাদিগের পূর্ব জীবনের পাপ মলিনতা কোথার চলিরা গিরাছে, স্বার্থভাব সংসারাশক্তি চির্লিনের মৃত বিচ্ছির ইইয়াছে। বৃক্ষ স্ক্ৰ নবণক্কৰ ও স্থন্দর পূলো শোভিত হইয়া যেমন উন্যানকে चारनाकिक करत, केंद्रारमत कान, दशम, পविकात मोलयी छथम मानव समाकरक रमहैकान चारनांकि छ कतिशास् ! रनारक व्यन छाङ्गात्वत कीवानत धारे मक्न आफर्गा छाव त्वि-য়াছে, তথন ভাহার্যা সেই জীবনকে কোন দৃঢ়তর, উচ্চভর ভিভিন্ন উপর ছাপিত বলিয়া মনে না করিয়া পারে নাই। यहेक्करण मानव वयमरे क्षेत्रन-त्यायहरू जात्यव करत, उपनरे[ः] ভাৰার জীবনের প্রভাব ভক্ষাক্রাণিত ক্ষিয় ভার কোন না क्षान भारत क्षारकत्र मगरक खकालिक हरेवा शर**ए**।

ধবোর উপর জীবনের ভিজি ত্থাপন করিতে না পারিপে,
পরনেধরতে সভা বলিরা আত্রর করিতে না পারিপে, মাছবের
পশুক অচিবে না, ভাহার জীবনের কোনও মহল গালিত হইবে
না এবং ভাহাতে কোনও সন্ধাব সভ্জি বিকাসত হইবে না।
লগতের লোকেও যে জীবনে কোনও বিলেবত বেবিজ্ঞে
পাইবে না। মাধুগণ আমারিগেরই মত মাজুব বিলেবত বেবিজ্ঞে
পাইবে না। মাধুগণ আমারিগেরই মত মাজুব বিলেবত
কিছ ভাহারা সেই বল্প পর্ল করিতে পারিরাজিলা, নাছর
ভূইবে মানবের পশুক অভিনা বার, সাপ চলিরা বার, বার্ক
নার বন্ধন ভিজিলা বার, রিপ্রত্বের অভাব বিন্ত কইবা বার
নার বন্ধন ভিজিলা বার, রিপ্রত্বের অভাব বিন্ত কইবা বার
বাহা পাইবে জ্বনে বিন্তা আনের উত্তর হত, আবে ব্রুর
কোন পবিত্রতা জাত্রত হর, পারত প্রব হত, আবে ব্রুর
কালাবিজ্ঞান ব্রুরর বার্কিক করিতে ক্রিকা জ্বন্ধন
ব্রুরন্তব্যক্তর এই ভারাবের্কে ক্রের্কা জ্বন্ধন
ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরার্কার
ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরার্কার
ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরার্কার
ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরার্কার
ব্রুরন্তব্যক্তর ব্রুরন্তব

THE PARTY PARTY OF THE Confidence disco distantes. Ciela क्षाप्रक विभि वेक्ट्रेस् काञ्चन सन्दिक नविद्यादमा,काशास सीवदन ন্ম শ্রাম অভূম সাক্ষি ভত পরিবাবণ আলাশিত ব্রহাতে विविध सहिद्वादि जामारम्स गर्या कर शकालन वाकि নুষ্টেন, বাহানিগের নিকটে বসিয়া আসরা কভ সহপ্রেল नका कृतिकाहि, देशिविगेटक नार्देश खामनमाक व्यानमारक नीक्षेत्रासिक बंदम कतिरकटकन अन्दर राष्ट्राविष्टमेत्र कीचरमत प्रकृष्टिरक अवर माना धारणात विकक्त कार्या वाला कर्ननभाव কত উন্নতি লাভ করিয়াছে। কিন্তু প্রাক্ষ সমাজে আলিবার नुँद्भै छोहातम भीवन कि अमन समाप्त हिन ? य कार्याः काहिने निक बात्री जांशात्रा नेवारकेत खेठ विच नात्रन कतिरही-(इन, छपन कि काशांगरगत व मक्ति हिन ? काशता त व শক্তিম আধার তখন তাহা কর্নাও করিতে পারেন নাই। কিউ ত্রাক্ষণেত্রি সংস্পাদি আদিয়া সভাের বায়ু সেবন করিয়া कुँशिरारमव कीयरंग करे गरून विक्रिय कार व्यक्तिक हरेबारह, व्यक्ष व्यक्त मिक्किन छेरम छेरमानिङ इहेबारक्। क्रुक्त वा दूहर ध्यम बाब (क जामारमत मरश जारहन, विनि जज्ञ वा जिवक পরিমাণে আপনার জীবনে এই শক্তির পরিচয় পান নাই 🕈 কুদংস্কারের পাশ ছিন্ন করিয়া, অসভ্যের মৃস্তকে প্লাখাত कतिया या पिन धार्यस बाका गमारकत चारत जिननील इहेरनन, নৈ দিন সেই সভাস্ত্রপের, সভাভাব কাহার হৃদ্যকে আলো-কিড করে নাই ? ভাঁহার শ্রেম ও পবিত্রভার জ্যোভি প্রকা-শিত হইরা কাহার মুধকে অ্লার করে নাই ? ভাঁহার শক্তি মাসিরা কাহাকে অনুপ্রাণিত করে নাই ? ব্রাহ্ম ধর্ম গ্রহণ করিয়া ত্রন্ধকে সভা বলিয়া আশ্রয় করিয়া কাছার জীবন পরি-বর্ত্তি হয় নাই ? কত অজ্ঞান অশিক্ষিত লোক আসিয়া-हिल्नन, विश्वष खारमत्र व्यारमास्य ठाँशानिरगत सन्त्र व्यारमान्छि হইয়াছে। ইত স্বার্থপর সংসারাসক ব্যক্তি আসিয়াছিলেন, দকল স্বার্থ বিসক্ষন দিয়া, স্বধ্নালসা ভাগে করিয়া তাঁহারা প্রেমপূর্ণ ছদরে নরনারীর সেবার নিযুক্ত হইয়াছেন। কড চুষ্টরিত্র স্বীতিশরারণ থাকি আসিরাছিলেন, তাঁহালিগের লীবন পৰিত ভাবে পূৰ্ব হইয়া গিয়াছে, ভাহাদিগেয় বিভদ্ধ চিরিজের আকর্বণে কভ লোকের অসংধু জীবনের পরিবর্তন ছিবা গিৰাছে। বাদ ধৰ্ম এইরপে কত ছবলেকে স্বল ক্ষিয়াছে, কত মুৰ্বকে বেধক ক্ষিমাছে, কত মৃক্কে বক্তা করিলতে। আনাদের সমুধে ইয়া এক ছবিভৃত উল্ভিন্ন क्षित पूर्णिको तिवादक। इहै आक बारमव कीवन नवद्य सब, क्षि बारकाक बारका कीवन मदस्य धारे कथा किवर शावि-बाटन चाटके।

বাৰের শক্তিতে মানবৰে কত দ্ব অগ্রনর করিব। বের,
বাক্ষের বাব কীবনের উন্নতির পথ কেবন পরিকৃত হইলা বার,
কিন্তুল ব্যাহের মানবা ভাষার অনেক প্রভাক প্রমাণ
ক্রিকিটি । করু সামরা গোল অনিকালী সহিয়াতি, এই শক্তির
ক্রিকিটি । করু সামরা গোল অনিকালী সহিয়াতি, এই শক্তির
ক্রিকিটি । করু সামরা গোল অনিকালী সহিয়াতি, এই শক্তির
ক্রিকিটি । করু সামরা গোল অনিকালী সহিয়াতি । করু স্থাতি ।
ক্রিকিটি । করিবটি সামরা বিশ্বের সামরা বিশ্বর বিশ্বর

দ্ৰাছে ভাষা বৈশিক্ষাম। কিন্তু সেই সভাের আধানকে ব'ৰ मुख्यान जाला क्षेत्रिक गाँति, यह कीवाँव वेगव जीवान जून-किंखि द्यानम क्षित्व नाहि, छट्यं नाकानि कामीटमस बीनता কি অপুনা শক্তি, কি বিচিত্ৰ ভাব আসিয়া প্ৰকাশিত হয় ৷ तिहें (अम श्विषाजात छेरमत्क न्यान क्रिक्श निकश व्यामना नव-জীবন গাড় করিতে পারি। ভাহা হইলে এ প্রাতন পাপতাপ থাকে না, এ মলিনভা কুপ্ৰবৃত্তি থাকে না, এ আহ্ছায় व्याचार्किमान बाटक मा, अ हिश्मा विद्यव वार्यभवका बाटक ना। छान जानिया जीवनभवरक नेविक्ष ७ जारनांकिक करत, তোম আসিরা সকল কার্যাকে মিষ্ট ও সরস করে। বে ছব্দির तिशुक्तारक महत्व Cool मा बात करा यात्र मा जाराता जानमिरे বশীভূত হুইল যার; যে সকল ৰাধাও অভাব দেখিয়া **পোণ**্ আকৃণ টর, ভাছারা বিশ্বাসের প্রভাবে কোবাঁর চলিয়া বার। এই ভাবে ঈশ্বরকে আমরা আশ্রের করিতে পারি নাই; তাই चार्यात्वत्रं **ची**वत्मत्र এত वृद्ध्यण्डा, এত निष्ट्रध-चार त्रश्तिहरू এবং সেই জ্ঞ আমাদের সমাজের কার্য্যকারিণী শক্তি ভালরূপ शतिक् हे इस नाहे। आमता बाजानक एक एक विरम्भ व्यक्ति করিবার চেষ্টা করিতেছি। কিন্ত কিরণে আব্দর্শর প্রচারিত इटेल्ड शारत, यनि आयारमत जीवरन, आयारमत नमारजत मध्य खन्नमंक्तित्र क्षकामं मा इत्र १ वरे मक्ति चामारतत्र कीनत्न निकमिल हम नाहे; त्महे कल कार्यात्मन मर्या हिः श विरम्य व्यायम महास्वम महिमाहि। व्यक्त वारे महा-পর্লেণকে ভাল করিয়া আশ্রম করিতে হটবে, ভাঁহার উপর একাস্তমনে নির্ভন্ন করিতে হইবে, বাহার কথা জগতে বলিভে যাইডেছি তাঁহাকে অতো প্রত্যক্ষ করিতে হইবে। তথন ्यामार्त्तत्र जीवरम, चामारत्त्र नमारक ठाँचात्र भूक्तित्र मक्ति चावि-ভূতি হইবে। তথন জগভের লোক ব্রাকাংশের বিচিত্র ভাব रिविद्या, व्यापूर्व रामेन्वर्षा रिविद्या मुद्रा ष्ट्रिया विकास रिविद्य (प विकास अসংসারের বস্তু নর কিন্তু ইহা অর্গের জিনিস।" তথন ভাছারা ইহাকে মামুবের হাতগড়া বস্ত ৰণিয়া আর অবহেল৷ করিতে शांत्रित्व ना । किन्दु च्यारं भन्नत्मचन त्य क्रमारकत भन्निवार्णन জয় এই ধর্মকে প্রকাশিত করিয়াছেন তাহা ব্রেডে পারিয়া मरण मरण जाणिया हेशात निक्रे मखक व्यवन्छ क्रिया। মেশ্বর কর্মন আমরা যেন এইরূপ বিশাসের সাহত ভাঁচাকে আশ্রম করিতে পারি ভাঁহার সভ্যের উপর নির্ভর করিছে পারি; এবং ভাঁহার ত্রাহ্মধর্ম ও এইরূপে সম্ভ জগভের মধ্যে পরিবাপ্ত হউক !

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

কোচবিহার।

क्षणांमय पश्चरकत क्षणांच द्याविष्यात खाक्षणांद्यत ३९ण सावव्यतिक छेद्यव निर्माणिक खाणांगीः पश्चारत च्या रणांच वर्षेत्र भिकारम् ३५८६ त्यात अनिवास-केरशरम्य करवासन्। केशरम्यः "केषरम्य काक मानिया कन।"

३०६ विवात—आट उनामता। उनहमन,—नामाणिक धटा नावक व्याद नाव

১৭ই নোষৰার—প্রাতে ও সারংকালে উপাসন্থা উপ-দেশ—"প্রমার বেমন মধু লোভে ক্লে ক্লে বেড়ায় এবং বে ক্লে মধু পাল ভাষাতে বসে ও ভাষা ছইভে সহজে উঠে না। সেই লগ বাল পূজাল যদি ভোষালা মধু পাও ভাষা ছইলে কোন লগ নিবাভনেই ভীত হইবে না।'

১৮ই মল্লবার—প্রাতে উপাসনা। উপদেশ—"অরাহারের ছার সাধনও সহল হওরা উচিত।" মধ্যাহে নগর সংকীর্জন। কীর্ত্তন করিবার ও বোল বাজাইবার লোক হির ছিল
না। সমাজের সহকারী সম্পাদক বাবু সিজেশর বোব নহাশরের বাসাবাটীতে জ্রমে ক্রমে ক্রিপর লোক ফ্রটিতে লাগিলেন। প্রার ওটার সমর একটা প্রার্থনাতে বিগত অন্ত পঞাশক্তম মাবোৎসবের নগর জীর্ত্তনের শেষ হুই অংশ—"প্রাণ
ভরে আজি গান কর" ইত্যাদি কীর্ত্তন আরম্ভ তইল। ক্রমে
ক্রমে করেক জন লোক এবং ক্রিপর বিদ্যালয়ের ছাত্র, বোগ
দিরা প্রকাশ গথে বাহির হইলেন এবং পরে সমাজ গৃহে উপশক্ত হইরা উৎসাহের সহিত্ত কীর্ত্তন করিতে লাগিলেন। উৎক্রান্তে বালক ব্রন্থ খ্রা সকলে মাতিরা নৃত্য করিতে লাগিলেন।
তহলরে উপাসনা আরম্ভ হইল। উপদেশ—"নাম মহাত্ম,
ক্রম্বন।"

>> अ वृत्यात-शाटक निष्यंत वावृत वानात केनानना । नामाह्य, नमाक्ष्रद जाटनाठना ध्वर खार्थना ।

২০ এ বৃৎস্পতিবার—কেন্ধিস্ বিদ্যালয়ের কতিপন্ন ছাত্র-বিংগর অন্ন্রোধে, অপরাত্ন ভটার সমন্ন উক্ত বিদ্যালয়ে "ছাত্র-'জীবনের কর্ত্তবা" সম্বন্ধে বক্তৃতা হয়।

্ ৪১এ গুক্রবার—স্থানীয় ব্যক্তিবিধের সহিত সাক্ষাৎ ও আলাগারি হয়।

হং এ শনিবার—সাহাতে রার কালিকাদাস হস্ত দেওরান্
বাহাছর মহাশরের বাসভবনে উপাসনা। উপদেশ—হরি
কোমে অন্তর্কা নিরা বাইরের অভি সংক্ষিপ্ত জীবনী উল্লেখ
করিয়া, ও তাহার ক্রভ "হরিসে কাগি রহু ভাই, বনিত বনি
বাই" গীওটা অবশ্যন করিয়া উপদেশ দেওরা ক্ইল।

२७ व प्रविधान-विशाहरू निरम्बंध हात्क स्थाप स्थापना । करणद्य रहे। स्टेट्ड का गर्वाच बाह्य १०० विश्वविद्याल हिन्ह स्टिक्टी स्टेट्ड का चार्चा चाह्य स्टब्स स्ट्रा स्ट्रा

২৪এ সোমবার—সিভিল অস বাবু বারবচন্ত চক্রবর্তী মহাশ্বের বাস ভবনে, সারাছে উপাসনা হর। উপদেশ— "কোন কথা ও কোন কার্যা বারা ভগবান আমারিগকে ধরি-বেন ভাহা আমরা জানি না।"

এতত্পদক্ষে প্রছাম্পদ ন্যধীণচক্ষ দান মহাশর আছুত,
হইরা এথানে আনিরা উৎসবের সমস্ত কার্য্য সম্পাদন করেন।
আনরা সেই পূর্ণ বিদ্ধের অভর পদে বার বার ভক্তির সহিত প্রণাম করি, তিনি আমাদিপকে সর্বদাধর্ম পথে রক্ষা করিরা উহার প্রিয় কার্য সাধনে নিযুক্ত রাধুন।

করটীয়া।

মঙ্গলমর ঈশরের মঙ্গল ইচ্ছার খোরপৌত্তলিকতা পরিপূর্ণ কুসংকারাপর করটারা নামক এই কুজ পল্লীতে ১৮০৯ শক্ষের ই ১২ই মাঘ একটা আন্ধান্য স্থাপিত হইরাছে। এক বংসর কাল সমাজের কার্যা নির্বিত্মে ও স্থান্থলরপে সম্পন হইরা আসিরাছে। সমাজের বর্ত্তমান বংগরের মাঘোৎসব টাঙ্গাইল আন্ধান্য সহিত্য একযোগে হইরা গিরাছে। এ বংসর যে সকল প্রচারক ও আন্ধা বন্ধুগণ এছলে আগ্রমন করিবা থেরপ কার্যা করিবাছেন, নিয়ে ভাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ প্রাক্ত হইল।

গত ফান্তন মানে প্রচারক বাবু গুলুগোবিল চক্রবর্তী মহাপর আসিরা হাটবোলার একটা স্থপির বজুতা প্রারাদ করেন। বজুতার বিবর "ধর্মই মন্ত্র্য জীবনের প্রধান করেন। বজুতার বিবর "ধর্মই মন্ত্র্য জীবনের প্রধান করেন। বজুতার বিহর "ধর্মই মন্ত্র্য জীবনের প্রধান নবহীপচন্ত্র দাস মহাশর প্রচার কার্যোপলক্ষে প্রস্তুর আর নবহীপচন্ত্র দাস মহাশর প্রচার কার্যোপলক্ষে প্রস্তুর আর নম্ম করেন। তিনি নদীর গারে বাজারে একটা কার্যপ্রাহী বজুতা প্রধান করিয়া সূর্য্য সাধারণের সভোষ সাধ্যম করেন। বিবর—"আত্মার আহার অর্থাৎ লরীবের বৃদ্ধি ও পুরুষ জন্ত বেয়ন থালার প্রহোজন, তেমনি আত্মার উর্ভিনাধনের জন্ত ক্রমর চিন্তা ও বর্ষ সাধ্যম করা কর্ম্যা।" লৈটি সানে প্রস্তুর ক্রমর চিন্তা ও বর্ম সাধ্যম করেন। বিলাই সানে প্রস্তুর রার্ গ্রাহাস কর্ম বহাপার আসম্যক্ষ করেন। বজা বার্মক্ষ করেন। ক্রমর রার্যাই ক্রম্মার বিলাক্ষরের ব্যাহ্মীর সারিয়ের ক্রমেন। कि व्यक्त निवस्ता व्यक्त महिला निवस्त वन कि व्यक्त वर्ग कि व्यक्त वर्ग कि वर्

কর্মণামর ঈশরের অমুগ্রহে সম্প্রতি গত ১২ই মাঘ "কর্মীরা ाम भवारमत व्यथम वार्षिक **উৎসব कार्या मन्भन्न इ**हेवा निदाह्य। গ্ৰহাল্যৰ গুৰুগোবিক চক্ৰবৰ্তী মহাশয়, এবং টাস্থাইল*ু*ছ্ইতে रिनम हक्क रवार्य, वायू शाशामहक्क श्रष्ट,वायू हुर्शानाथ मञ्जूमहात्र াভৃতি ত্রাহ্ম বন্ধুগণ এবং পার্শ্ববর্তী অনেক গ্রামের ত্রাহ্মধর্মে षुरांग छेरमदि यांगमान कतिया थूर छेरमाद्द महिष कार्या ।রিয়াছেন। প্রাতঃকালে উৎসবের উদ্বোধন হয়, বাবু হরনাথ ঘাব মহাশর আচার্ব্যের কার্য্য করেন। মধ্যাক্তে শাস্ত্র পাঠ ও দালাপ হয়। অপরাফে একটি সংক্রিপ্ত প্রার্থনার পর মন্দিরের গালণ হইতে নগর সন্ধার্তনের দল বাহির হয়। ৮ জন বালক ব্ৰহ্মকুপাহিকেবলম্" "সত্যমেবজয়তে" "একমেবাছিতীয়ম" ভাাদি চিহ্নিত ৮টা পতাকা ধারণ করিয়া অঞাে অঞাে যাইতে াগিল। এবং সকলে প্রমন্তভাবে কীর্ত্তন করিতে করিতে মশ্রসর হটতে লাগিলেন। এইরূপে হাটখোলায় গিয়া বাবু अक्ररगांविन्य ठळवर्खी महायत्र উচ्চामत्म प्रशासमान इहेन्रा জ্জীরম্বরে একটি হৃদয়স্পশী বক্তৃতা করিলেন। বক্তৃতার ব্ৰদ্ম "ধৰ্মাই মানবের চিরস্কী ধৰ্মবিহীন হইলে মহুব্য কছতেই স্থী হইতে পারে না। বেরূপ সংসারে মা া থাকিলে সংসার-হথে স্থী হওয়া যায় না। সেইরূপ ।ববে ঈশ্ব না থাকিলে আন্তার যথার্থ হুথ হর না।" শিক্ষিত र्गामिकिछ, एक रेखत, हिन्दू मूजनमान, वानक दुस युवक, ছিসংখ্যক লোক সমাগত হইয়া নিজনভাবে তাঁহার উপদেশ বক্তাকে পুনর্মি কীর্ত্তন আরম্ভ হইল। ।निषाद्यन । हिकार नमक आम धारकिन कतिया नकाति भन्न की करनन পা ম্লির প্রাক্ষে আফিয়া উপস্থিত হয়। আদ্বা ভগবানের াষা ; বছ সংখ্যক হিন্দু বৃদ্ধ ও যুবকগণ ভক্তি ও উৎসাহের हिन्छ कीर्जदम द्वानमान कतिहा जामामिनदक सूबी कतिहा-क्रिया बाब्रिटक छेपानना स्त्र । अन्दर्शाविक वाव दवनीत कार्या हेटकरें। अक्टबारिक योवूब जदन जिलानना ७ ब्यार्वेनात अवर ক্ষাৰ বাৰ্থ জনসিত নাৰে উপাদকণণ খৰ্ণীয় আনক निर्देशक अधिवारक्त। विशाननाव त्रव बावू दवनाथ (बाव क्षा बार्क वास्त्र भारत्य । क्याननात्व करतानिक in and minute being and never 1 vice more to नहीं खेरन नर्ज छैन्नमात कार्या त्यव हत । त्रवनीत्क वार् हत्रमाथ त्यान महानत्वत्र छवत्न नकन वक्षु विनित्रा शिक्षित्र महिल ब्याहालाहि नन्नक्षं कत्वन । वत्रामत्र छन्नवान बहेबात्य छोहात ह्यांन नर्जानिविश्रत्य नहेतां छेपनत्वत्र कार्या क्षांच कत्रिताह्में।

षाहार्ट्यात छे शरप ।

মাবোৎসবের সমর ১০ই মাথ প্রাতঃকালের উপাসনার্র পর যাবু উদেশচক্র দন্ত যে উপদেশ দিরাছিলেন নিমে ভালা প্রকাশিত হইবা :---

ब्रामार्य थक महा मिनरनद्र बार्शात । हेवा बाक्टेनिक वा नामाज्यिक विनम मह। टन नव वाहिरवह मिनम ; किन्छ अहे মিশ্ন আছরিক, ইহা নিভাও পবিত্র। কাষার সলে মিশ্ন क्तिष्ट बहेरव ? (क्वन माख এक क्रान्त नरक। लिहे मिनन कार्या मकलात महा समानात हहेटन । हेहांत स्वि-**बाँखी (मनकात महिक यमिई मिनन इप्त, जारा इहेटन खहे** अस्त्राद्यत अधिकाती हहेरल शाहित धनः हहात आनमः সভোগ করিরা কভার্থ হইব। ইহা সেই পরমান্তার সঙ্গে मिनन, डाँहाँत मरल विवास खझन। डाँहांत मरल विवास, অসীম ব্রহ্মাণ্ডের অধিপতি বিনি তাঁছার সঙ্গে বিবাদ-এ কি व्यवस्य कथा ? अक निरक व्यवस्य बर्टे, व्यात अक निरक देश वफ़ मछा कथा, आमारित अवदा मस्तीत्र किंक कथा। এहे বিখরাজ তাঁহার ইচ্ছাকে সর্বত্ত জয় ফুক্ত করিতেছেন, অনন্ত প্রতাপে জগৎকে শাসন করিতেছেন, কিন্তু আয়াদের প্রকৃতির मत्था यनि व्यादन कति, जात त्मथात्म त्यांत्र विवासित जाते দেখিতে পাইব। তিনি এক স্থানে, আর্মীরা জার এক স্থানে। ষ্ণিও আমরা অতি কুল, কীটারুকীট, তথাপি আমরা এক এক জন। আমাদের জ্ঞান, ভাব, ইচ্ছা তাঁছা হইতে সভত্ত रुदेश कार्या कटब, डाँराब विद्याधी रुब, शाम शाम जीहा र्लाबर्फ शाहे। त्रहे अनस कान, त्थ्रम, शविक हेव्हा त्य थान य ভाবে कार्या कतिराज्यक, जारांत्र माना व्यामात्त्र कृष कान, ध्विम हैक्हारक युक्त कतिया निहे ना। आमता आशनात কর্তৃত্ব, ত্বার্থ রক্ষা করিতে গিয়া সংকীণ সীমার মধ্যে : আবদ্ধ থাকি। আমরা **আ**পনার ভূমি তাহা कतिया जाभनामिशक छाहाड म्याधिकाती व्लिया. रमधारन जागनांगिरगत महिमा क्षाकाम कदिएक याहे। काँहात कान, त्थाम ७ हेक्हात महिल जामात्मत कान, त्थाम ७ हेक्हात कर्छ विदेशेष । आयश आश्रेनाष्ट्रिशक वक वन मत्न क्रिया छाहाटक मृद्य प्राथिया नित्याम्य स्थित स्थ, नित्यामय স্বার্থের বস্তু কার্ব্য করিতে বাই। ধন, মান, পদ, প্রভূত্ব **ক্ষরিল ক্**রিয়া আপ্লারী বড় হইব মনে ক্রি। এইরূপে ষাপনাবিগকে আছু করিয়া যত মন্তক উত্তোলন করিতে याहै, 'क्कर देवनि' दर द्यान सम्मानकारण स्थानक हरेना পण्नि, ভত্ত মুর্বাণ হর্মা নানা অকার শতার নিকট হইতে আঘাত ध्योच पूर्व । देख शहिरवर्ष भावकामा भागिया भागात्व देव भूद भिन्न, अंकर क्रांबात प्रतित्व जामारतत जाना जाक

मामा क्षणात क्षत्रिक भागिकरण वर्षेट्र अक्ष Cबब्र मार्था रंगोरंग कवि, कक्ष्रे ऋखरक्षक मक्कि क्याँ रहेशा বার। তথন আখার অবহা কারাবশীর ভার হয়। নিরত क्षिरक व्यव्य-कार्यमात्र शत कात्रमाः, वित्रामात्र शत विद्यामाः, ल्यार्केक नव त्वाक चानित्रा चामाविशतक व्यक्तिक त्करन : আপ্রাদিগকে তাঁহা হইতে বতর করিতে বিরা আমরা এইরণে বিবৃত অবস্থার আসিরা পঢ়ি ৷ সেই পর্যান্থার একতি কি. भाव भागारमव व्यक्ति कि १ अवस्थित कि है सके, काशास्क जामता। विदूरे निष्ठ शांति ना। जांत किनि क्यनाय जागांत, জগৎ বন্ধাথের জন্ত আপনাচে সমর্পন করিরাছেন। ভাঁছার তোৰ উৰায় হইয়া সকলেয় দিহক সমান ভাবে প্ৰধাৰিত क्रेट्टिक्ट । व्यक्तिद्रभ की होत्र निष्म नामारमञ्ज्ञ विद्याप प्रक्रियाट्ट । चारारमंत्र गरा किছू चारह, चामना गरा किছू शहेरछहि, त्म मकन काहाबरे आपछ। काहाब मान वाशिया चामा: (१३३ यक्न इटे(व) এই क्छ छाहात नक्न मिनन करिवांक्र जक चामन्ना धर्म- नथ चवनचन कंत्रि, चाननारमन्न वाहा किছू चारह्ये छारांक मिर्फ हारे। धरे खकारत निरम्यम मनरक मुब्हे क्रिटि (6ही क्रिन्) क्रिक् फ्रांशत शक्त वर्धार्थ मिलम श्रा मा। आमत्रा जाननारमत ভृषिতে दै। होहोत्रा मिनन कंत्रिष्ठ याहे, কিন্ত ভাহার ভূমিতে না বাইলে তিনি মিলন করিতে চান না। আপনালের জিল্ যতদিন বজাম রাখিতে যাইব, ভড়দিন भिनन रक्षम इकेटर ना। छाहात्र किरमत्र अछार आहि (य काशर्टक किছू मिलाबे किन मिलन, कतिरवन? **किल् ७३ रा फाँहाक गरक मिनन रा कतिरव रम आंगना**त्र ভূমি ছাজিয়া ভাঁহার ভূমিতে গিয়া বাস করিবে। তিনি সর্ক্রণা वनिट्फरह्म-"मिनिद्व यनि वान नार्ड, जामात्र किछूत्रहे श्रकार माहे, मिनिर्य एपि ज्यान पाछ।" वक् कृतिन व्यक्तिका छै। हात्र, जिनि नक्वरे निवाह्मन, किन जाननारक सन नाहे। তিনি কাছে আছেন, বেধা বেন, সন্ধানও বলিয়া দেন, কিন্ত যভক্ষণ প্রাণটি তাঁহার হাতে দেওরা না হর, তভক্ষণ তাঁহার मक्ष मिनन इटेर्टन ना। त्रश्लाकत, बनारि माधारे कित्ररण खेवात হইল, তাঁহার ললে ভাহাদের কিন্নণে মিলন ছইল? মিল-न्तित नगत चाक्नवरात छाराता चाननारित्तत चत्र, मनिन, অপদার্থ প্রাণ তাঁহার হাতে দিল বলিরা। আপনাদিগকে জুলিয়া তাঁহার হাতে প্রাণ সমর্পণ করিয়া তথন তাহারা এক নুতন রাজ্যের লোক হইল। তোহার জন্ম এই প্রাণ এই মনে ক্ষিমা আপনাদের বার্থ স্থবের আলাভ্যাগ করিবা তাঁহাকে আত্ম-সমর্পণ করিল। অমনি জীবনের সকল অল্পলার কাটিয়া গেল।

चार्यकार वाक्तिम भारत्यक्षेत्र गर्म निगम रक्ष कृष्टिन, जानात चार्यमारक छोराज सारक निर्ण गातिरम हेरा रक्ष्ट्र गर्म । गर्मन चार्य रिमाण कृष्टिक स्त्र, चार्मिक छाराज महे कृष्टिक रहे, चार्यमात्र महे कृष्टिक रहे, चार्यमात्र महेर्म चार्यक चार्यक महिला छोराज राष्ट्र महिला स्त्र महिला चार्यक चार्यक विमाण कृष्टिकारक स्त्र चार्यक च

THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

miant market migra aufantige dan made des नाम कि देश कि भागात्त्व अनिक विसादय मैगनक भाव ! वाबरेनिएक, नातालिक विकास तक कि बनावन अक्रिक रहेग्रोहि ? अहे छेश्लादन यादा नद वसलाही दनहे क्रेनरबर्ग गरिक हिन्दविभिन्न स्टेटर । क्रेन्ट्स कानून क्रम লান ল পাই; কিছ ভাষাকে আমানের উল্লেখ্য বিদ্যালয় রাক্ত দাহৰ আমাদেৰ ভাই ক্ষমীদিদের সংক্ষমিণন এবং না ব্য भाभारमञ्ज्ञ পরিভাবের দিকে श्वितशक्ति। তারার কারণ এই एक जामना केपालन महिल मिलन जायन कविएक नगृति नाई। **बहै উপगद्रक क्यांशनामिश्यत कृषि काकिया मिता यहि अहै अब** क्ष्मिएक भाजप गरेएक भाषि, जाहा हरेरनरे भीवन एक स्टेटन। विमन कि मासूर्य मासूर्य रह ? भिनन धरे धर कावशांत्र। खार्डार्फ यणि जाननारक जाननारक झाकिया निर्छ नात्रि, छरवरे এক হইরা বাইব। অগ্নিতে সকল ধাতু গলিরা বেমন এক আিছ হুট্যা যায়,সেই ব্রহ্মাগ্রি স্পর্শে আমরাও ভেমনই এক হুইভে পারি। আমরা সব পরস্পর শতন্ত্র শতন্ত। দেখিলে সহজেই বোধ হর যে মিলন অসম্ভব; কিন্তু বধন সেই একের ভিতর মিলিত হইতে পারি, আমাদের প্রাণ মিশনের যতই অমুপগুক্ত হউক না কেন, **मिटे अक्टिय किया करा अब अब अवेश वार्य। मिथि करान स्थाप्त** ভিন্নতা নাই,এক মহা-মিলন সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। সেই একের সঙ্গে মিলনই সকলের সজে মিলনের মূলমন্ত্র। মহাপ্রাণ ডিনি, <u> সেই প্রাণের ভিতর প্রাণ ঢালিয়া দিলে আমরা সেই মহা</u> ভাবেতে ডুবিয়া যাই। এই মিলন কথন হয়, সকল প্রাণ্ **এरेशान यथन এक जिल्ल रहा, ल्यन चात्र पृथक करत एक ? এই মিলনের জন্মই ব্রেক্ষাৎসব।** ভাতাতে ভাতাতে, ভামীতে ভগ্নীতে মিলিতে পারি না, কেবল বিচ্ছেদ, কেবল দলাদলি, স্বভন্ত হইয়া থাকিবার ইচ্ছাই প্রবল। কিন্তু সেই এক প্রাণের मर्स्य व्यापनानिगरक ছाড़ियां निर्मितिन रिवेता यात्र। अहे উৎসব স্বাৰ্থক হইবে যদি তাঁহার সহিত মিণিত হইতে পারি, मकन व्याग यति त्रहे महाव्यात्वत मत्क मिमाहेर्ड शांति। नकरणत क्षम ७ थन व्यमच हरेत्रा शहेरत। একত্র মিণিত হইয়া দেব ভোগ্য শাস্তি স্থব ুউপভোগ স্পরিতে পারিব।

পূজার আয়োজন।

छरशद यहि श्रीयत्मत श्रीष्ठ शहरार्वित इत छरश्य छद्यरे व्यामात शहर मार्थक रहेरत । त्य छर्गद श्रीवर्गद श्रक हिंक वृश्चित मार्थक रहेरत । त्य छर्गद श्रीवर्गद श्रक हिंक वृश्चित मार्थिक रहे व्याम शहर व्

ब्रीकालक क्या प्रदेश स्वतं रिक्क क्याँ कार्य, महिर्म द्वासारक बादक कार्य क्रांकता तार रक्या है और खारश्व व्यास्थ देखांगांव वित्रक दिलिया बार्य, काहा व्येटम माथा खानाशांव क्या छड़िंग खारिक क्यें मां। यिन त्रम, इस व्येटक व्यासाम, साथ वरद कि क्येंटन है कान विविद्यालय यक द्वायात क्रेश थक क्येंप !

অভ্, বেৰিতেছি তথু পাৰণ করিয়া আর দিন কাটে না।

ক্ষিকাছে আছু অকুভব করিয়াও মন অনেক সময় তক
ক্ষিরা পড়ে। প্রকৃত ভাবে ভোনাকে অকুভব করি না বিনিয়া
প্রাণেয় ভৃতি হয় না। বে পারণে প্রাণ ক্ষেমণ ও সরস হইল
না, সে পারণ করিয়া আনার কি হইবে। ইচ্ছা হর, বধনই
ভোনাকে পারণ করিব, তথনই প্রেম ও পবিভারে বটিকা
বহিরা, আনার বিশুক প্রাণকে ভোমার দিকে ছুটাইয়া দিবে;
প্রাণ কোম্ব ও অপ্র অসহরনীর হইবে। আনার মন্ত হীনপ্রাণ কি সে অবস্থায় উঠিতে পারে না ? "পারে না" কিরপে
বলিব, আনার মত শত শত পাপীকে তুমি প্রেমে বিগলিত
করিয়াছ। ভোমার দ্রায় কি না হয়, ইচ্ছাময় তুমি যদি
ইচ্ছা কর, এখনই আনার সাধ পূর্ণ হইতে পারে, এখনই
আমি ধন্ত হইয়া যাইতে পারি।

যথনই ব্যাকুল হইয়া সরল ভাবে ডাকিয়াছি, তথনই एक एक । व्याप्ति कक्तकातं मृत्र कतिया जूमि व्यकानिक स्टेबाह । কিন্তু আমি সে প্রকাশ ধরিয়া রাখিতে পারি নাই। আমার কুত্র প্রাণ অরেতে তৃপ্ত হইরা পড়ে, প্রাণের দিকে চাহিরা, প্রাণ পূর্ণ অনুভব করিয়া আনন্দ হর বটে, কিন্তু সেই আন-ন্দের সঙ্গে এমন একটা নিশ্চিত্ত ভাব আদে, যাহাতে আমার বিশক্ষণ ক্ষতি হয়। ঐ নিশিক্ত ভাব হইতেই ভোমার বর্ত্ত-यानेका छेपनिक मद्दक रेमिथिना चानित्रा भएक, चात्र छेपनिक नंबस्क देनिथिना चानितन, ट्यामात चात्नाक हात्राहेश दक्ति, স্থানর অন্ধকারমর হইরা পড়ে। একবার শিথিণতা আসিলে, मन अयनि धर्मन रम, य टेन्डक रहेरन । नराम रामाम স্থানার ধরিতে পাঁরি না। স্থানার দরা করিয়া দেখা না ্দিলে, প্রকৃতিত্ব হইতে পারি না। কত দিন এই ভাবে कांग्रित, करव राष्ट्रामात्र कांग कतित्रा बादः भागीत्ररंभ स्थात শাভ করিব। দরা করিরা তুমি বলি আমাকে দিনরাত তোমার কল বাাকৃন শিপাসিত করিয়া রাধ, তাহা হইলে युचिय ट्लामाटक चात्र शताहरू इहेटच ना ; वित्रविद्यात मक व्यादन धारुनि बहेना भन्नकात मूत्र कतिदेव ।

্ অধ্যক সভার তুটী অধিবেশনের কার্য্য বিবরণ।

विश्व करे आहराती त्यावरात चनवास व वहिनाय त्या १४के करवल श्रंड गावातम ताच नवात्वत नहिन् विश्व विश्वताती हारचासत्वत क्षक चवाच तवात व्यव विश्वत प्रतिकास कर प्राप्त वास्त्रानाव वास्त्रानावात्र श्रीवृष्ट : वित्र श्रीवृष्ट विश्व वित्र वित्र विद्या विद्

मर्गक् निवाय स्विताणहळ सङ्ग्रात, वाव् भवश्वक वालाा-भाषाक, वाव् श्रेष्ट्रकळ त्याम, वाव् वत्रक्रमात श्वव, वाव् विश्वत-कृष्ण वस्र, वाव् श्रीमक्रमात कृष्ण ७ वाव् कालीहळ (पाषाण ।

প্রথমে এইরূপ অধিবেশন নিরম সম্বত কি না, এই প্রাপ্ত উঠিল। অধিকাংশ ব্যক্তির মতে ইহাকে নিরম সম্বত বলিষা হিনীকৃত হইল।

এ সম্বর্ধ বাবু মারকানাথ গলোপাধ্যারের সন্দেহ হও-রাতে তিনি সভাপতির আসন পরিত্যাগ করিলেন।

বাবু চপ্তীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের প্রস্তাবে এবং বাবু ছীরা- শ লাল হালদারের পোবকভায় ছিরীকৃত হইব যে বাবু আদিত্য-কুমার চট্টোপাধ্যারকে সভাপতির আসন প্রদান করা হউক।

তৎপরে সভাপতি মহাশর বাব্ সীতানাথ দম্ভকে ভাঁহার প্রভাবের অবতারণা করিতে বলিলেন।

গীতানাধ বাবু প্রভাব করিলেন কে পরিবর্ত্তি নিয়মাবলীর তর নিয়মের (গ) অংশের স্থানে "পৌডলিকতাইও কাতিভেদ পরিত্যাগ করা এবং ব্রাক্ষধর্মাত্মারে সম্পার গার্হয় অমুঠান করিতে প্রস্তুত হওয়া আবিশ্রক" এইরূপ পরিবর্ত্ত্বন করা হউক। বাবু চঙীচরণ বক্ষোপাধ্যার এই সংশোধনের পোষকতা করিলেন।

বাব্ বিপিনচক্ত পাল, বাব্ ছারকানাথ গলোপাধ্যায় এবং বাব্ আদিনাথ চটোপাধ্যায় ইহার বিফদ্ধে মত প্রকাশ করি-শ লেন। পরে বাব্ হীরালাল হালদারের প্রস্তাবে এই অধি-বেশন ৮ই জায়নায়ী পর্যান্ত স্থাপিত রহিল।

৮ই জাত্রারী মকলবার রাজি ৭॥ ঘটকার পর সিটি কলেজ গৃহে অধ্যক্ষ সভার এই ছগিত অধিবেশন হয়।

উপস্থিত; —বাবু আদিত্যক্ষার চটোপাধ্যার (সভাপতি), বাবু বারকানাথ গলোপাধ্যার, বাবু মধুস্থন সেন, বাবু জয়কক্ষ নিজ, বাবু কেলারনাথ সুখোপাধ্যার, বাবু সাতক্তি দেব, বাবু ছীরালাল হালগার, বাবু সীভানাথ ছড়, বাবু শশীভূষণ বস্তু, (সহঃ সম্পানক), ক্ষানী কামিনী সেন, বাবু মোহিলী নোহন রাম, বাবু ক্ষেত্রমাহন মুখোপাধ্যার, বাবু শশীভূষণ বস্তু (কালায়ক), হাবু হেরপ্তল্প নৈজ, বাবু কৈলাসচল্ল সেন, বাবু ক্ষেত্রমার মিজ, বাবু ইরিমোহন খোবাল, বাবু চভাচরণ ব্যালাশ্যার অবং বাবু বিশিন্তল পাল।

र्वेष् - पश्चिक विवनाव गाँवी, बाद बाहुगाव्य तात, वाते

कार्तिका द्यावान, वात् क्रेमान्त्रम द्रमम, वात् व्यक्तिमान्त्रस्य मञ्ज्ञनात अवर वात् नवरुकता बरन्तानावात ।

বাৰ হৈণৰচল নৈত্ৰ প্ৰজাৰ ক্রিলেন এবং বাৰু কৈলান-চল্লু কৈন পোষকভা ক্রিলেন যে এই অধিবেশন ১৯শে আছ-নামী ব্যায় পর্যন্ত হুগিত হউক। প্রাক্তার গুলীত হুইল না

বাবু ছারজানাথ গলোপাধার প্রভাব জরেন ও বার্ বিশিন্দক্ত পাল পোরকভা করেন যে, প্রের ছারা খাবু সীভা-নাথ লভের প্রভাবের সপকে এবং উল্লের প্রভাব সংশোধনের জন্ত পরে যে কেছ যে সকল মত প্রকাশ করিবেন, ভালার বিপক্ষে যে সকল মত প্রকাশ করিবেন, ভালার বিশিক্ষ যে সকল মত প্রকাশ করিবেন, জালার বিশিক্ষ গণ্য হউক। কারণ ভবিষাভের কোন প্রভাব সক্ষে জন্মান করিয়া কোন মত প্রকাশ করা নিরম সকত নহে।

वार् विभिन्नहस्य भाग जयः यात् वात्रकानांच अरमाभागात्र चारनिक टकार्ट संस्तीत नत्र विनया श्रास्तिक कतिरान ।

বাবু হেরখচন্দ্র নৈত্র প্রভাব করিলেন এবং বাবু কৈলাসচন্দ্র নেন পোৰকতা করিলেন বে, সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজের অধ্যক্ষ সভার বারা বাবু সীতানাথ দত্তের প্রভাব বিবেচিত হওরা আপাততঃ হুই মাসের ক্ষক্র হুলিত হউক এবং অধ্যক্ষ সভার বারা সংশোধিত নিয়মাবলীর বিচারের ক্ষক্র সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজের বে এক বিশেষ অধিবেশন আগামী ১২ই কার্যুয়ারী ভারিপে আহুত হইবে, উক্ত সভাকে এই সভা উক্ত ছই নিয়-মের আলোচনা স্থাতি রাধিতে অনুবোধ করণন, এবং এই সভার কার্য্য সকল সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজের বিশেষ অধি-বেশনে ক্ষাণনার্থ পথিত শিবনাথ শাস্ত্রীকে প্রতিনিধি করা হউক। প্রভাব গুইতি হইল।

भरत मखा, छक रहेग।

मर्वाम।

জাতকর্ম ;—বিগত ৭ই জাত্রারি সন্ধ্যাকালে নল-হাটীর বাবু প্রমণনাথ সরকারের বিতীর সন্ধানের জাতকর্ম উপদক্ষে তাঁহার বাড়ীতে উপাসনাদি হইরাছিল।

প্রান্ধ ;—গত নাম নাসে আমাদের বন্ধু বাব্ উমাপদ রাবের শিতার আলাপ্রাদ্ধ শশার হইরাছে। বাব্ নবৰীগচন্ত মান আচাবীর কার্যা করেন। তত্পলকে উমাপদ বাব্ অপ্রনীত "ব্রন্ধতর্গ" নামক প্রকের সমাধিকার এবং ভালার প্রথম সংক্রেপের অবিক্রিত প্রকেত ৩০০ থও সাধারণ ব্রাক্ষসমাজকে লান করিয়াছেন। এতথাতীত তিনি বার্গলাচভার ছানীর প্রচার কার্যাের সাচাযার্থ একলানীন ১০ টাকা দান করিবাছেন। এই মন্ত তিনি আনাদের সকলেরই বিশেষ ধন্ধ-ক্ষিত্র শারে।

क्षेत्र-शर्द्रणायन ;---त्रक ५०६ त्रोस बच्चा ६०० वहिन्छत्। यत्र क्षेत्रपट्टाला ७ अपूर्णिया वर्णात क्षेत्रपट १४ । याद् क्षात्रस्

मान प्रक्रिमानाम 'बर्डिन नामक' नवटक एन कक को आजन, काक के केनमरक्षके जन्म क्रियांकन ।

खेरम्य ;—विशव ১०३ छ ১१३ क्ल्याबि हिन्नावि वाक्षमपादक नावरमिक केंद्रमय मण्डम हरेगा विदादह । ১७३ पनिनात खपतादक मन्त्र-मरकीर्जन हत्त । ১१३ विद्यात खादक बाँव केंद्रमहिल नेक, व्यरं बाद्य वाव् मनवीमहिल होन काहारोत कावा करवन ।

পারিবারিক ঊৎসব ,—গত ১৭ই কেব্রুগারি ধবিবার পার্ত্তিরাঘটার বাব শভ্চক্ত মিজের বাড়ীতে পারিবারিক উৎসব সম্পন্ন হইরা গিরাছে। তর্গলক্ষে পঞ্জির শিবনাথ শালী প্রাতে এবং বাবু সীভানাথ দল রাবে উপাসনা করেন।

দান ,—বাৰু হেমচক্ষ দাসের বাড়ীতে বে পারিবারিক উৎসব হইরাছিল, ততুপলক্ষে তিনি সাধারণ আক্ষসমাজের প্রচার কণ্ডে এককালীন ৬ টাকা দান করিয়াছেন। এই দানের অন্ত আমরা তীহাকে ধন্তবাদ প্রদান করি।

উপবীত ত্যাগ ,—হগদি ছেলার অন্তঃপাতী দোগা-ছিলা নিবাদী বাবু কলালীচরণ রাল এবং বাবু ভারাপদ চটো-পাধ্যায় কিছু দিন হইল উপবীত ত্যাগ করিয়া প্রকাশ্ত ভাবে ব্রাক্ষধর্ম গ্রহণ করিয়াছেন। পূর্বের এই গ্রামে একটি চরিসভা ছিল। করালী বাবু ভাছার সম্পাদক এবং ভারাপদ বাবু তাহার একজন সভ্য ছিলেন ৷ একজন বাকাণর্ম প্রচারকের স্তে ধর্ম সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া এই সভার অধিকাংশ সভ্যের মত পরিবর্ত্তিত হট্যা ঘায়। তাহাতে তাঁহারা পৌত-লিকতার প্রতি খীতম্পুর হইয়া ঐ সভার নাস আর্য্যধর্ম রক্ষিণী সভা রাখেন এবং ইহাতে একমাত্র নিরাকার ঈশীরের পূজা প্রতিষ্ঠিত করেন। কিন্তু ভারাদের প্রাণ ইহাতেও পরিভূপ্ত চটল না। জাবশেষে ব্রাহ্মধর্মকে একমাত্র পরিত্রাণপ্রদ বর্ম জানিয়া সকল প্রকার পৌতলিকতা বর্জন করিয়া ইহা আত্রয় করিরাছেন। ভদবধি ইংাদিগকে নানা প্রকার অভ্যাচার ও নির্বাতন সহ করিতে হইতেছে। এই হভার আরও তিন व्यक्तित बाक्षधर्म विधान कत्रिवाहः। देशासन मध्य नात् ज्ञाहद्रण (म नामक धक वाक्रिक धरेकक रंज निन निराक्त পাতৃকা প্রহার সন্থ করিতে হইরাছে। করালী বাবুর শন্ধীঞ উহোর আমীর অফুগামিনী ছইরাছেন। "ক্রণামর প্রয়েশ্বর कारात वर मधानमिश्रदक वर कतिन भरीकात ममस्य यग साम কক্ষন, বেন উচ্ছালা হাদলে বে স্তা ব্বিরাছেন ভাছা অবস্থন केत्रिक्षा क्षांबात्र भर्य कार्यमञ्जू व्हेटक भारतम । 🦿

বিজ্ঞাপন।

ण्याको मृति व वात अक तरनत वाणील एरेडा व्यक्तित । अवत्य व्यक्ति आहरण निर्मेष रहेल नूर्य वरणस्त्र पूर्वा गांवश यात नारे । वालाबा अनुमाल पुना त्या वाले केल्यान निर्मे विनीक विद्यास त्य व्यक्तिनान त्यर हाला नीत क्षाम कविता वालिक संवित्य

sant medanten Et aimiten cute Gullenm en von ben bei bun affen den bent Gefenten bie geben annten be

छड़-काग्री

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

र्थेण मरबा।

১লা চৈত্র ব্ধবার, ১৮১০ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬০।

বাংসরিক অঞ্জিম মূল্য ২৪০° মকস্থাল ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ৫০°

প্রার্থনা। (উদ্ভ)

ना इरण कि (कान बन, मोन होन किक्न, (अम्बदन धनी हरक भारत ? (य नीह कतिएक शास्त्र, ভূণ হতে আপনারে, সেই প্রভূ পায় হে তোমারে। ধ্লিতে মিশারে রব, किर्म चकिक्षन इव, অহ্ছত প্রকৃতি আমার, कित्र इत्व त्थारमान्य, मक न्य अ श्रम् व भानी कि हरव ना उकात ? কাতরে ডাকিছে তাই, আমার যে আশা নাই; कत्र कत्र कल्मणा विधान ; ভূণের অধ্য কর, এ ছুর্দশা পরিহর, প্রেম ভক্তি কর মোরে দান। থাকি তব পদাশ্রনে,্ निवन्न जमान राज, ভক্তগণে সদা ভক্তি করি; टामान भोत्रव न्राव, ভা'হলে সুগতি হবে,

সম্পাদকীয় মন্তব্য ।

এ অধম যাবে প্রভূতরি।

ন্ধার অনন্তবরূপ আর মানবান্ধ। কুল ও চুর্বল। তাহার ইছো এবং শক্তি সীমাবদ্ধ। অথচ এই চুর্বল ও কুল আন্মার অনন্তব্ধন লিখারকে পাওয়া চাইল মানবান্ধা কুল হইলেও ভাহার গক্ষ লহে; কুল কিছু গইরা সম্ভই হওয়া ভাহার প্রকৃতি নহে; তাহার পক্ষে অনন্ত গক্ষোর দিকে বাওয়া এবং ভাহাতেই আরাম পাওয়া আবল্লক। এই কুল ও চুর্বল আত্মার কিরণে অনন্তব্ধরণকে লাভ করিবে, কিরণেই বা ভারার প্রাণের অসীম কুধার নিবৃত্তি হইবে? বলের সাহারাই বলি ক্ষার্ম লাভের একমান্ত কারণ হর ভবে অনেক সম্ভ আত্মার পক্ষে নির্মাণ্ড অবস্র হইরা পড়া বাভারিক। ইক্ষান্মান্ত একটা দিক লেখিয়াই অনেকে নির্মাণ হইরা পড়া এবং আত্মার পক্ষে ক্ষার্মান্ত

किन्द्र मानवाचा रामन राहे कात्रीय नरकात निर्क याहेवात জন্ম স্ট হইরাছে, তাহার কুধা পিশাসা বেমন কুল সার কিছু-ভেই নিবৃত্ত হয় না, তাহার লক্ষ্ণীসিদ্ধির উপায়ও তেমনি किছू चाह्हरे चाह्ह। स्थात हैहारक टाक्रिडिड चनस्टरक পাইবার উপযুক্ত, অনস্ত কুধা পিপাসা বিশিষ্ট করিরা ছাড়িরা **षित्रारह्म व्यथ** উष्णक गिषित्र वज दकान उपारत्रत्र रही করেন নাই, ভাগ হইতেই পারে না। বাত্তবিক জ্বল্ডাই মানবাদ্মার পক্ষে ঈশ্বর লাভের একটি প্রধান সহায়। ছর্কল যে ভাহার পক্ষে সবলকে পাইভে হইলে কি করিভে হয় ? সে কোন্ 🔑 প্রণালীতে স্বলকে লাভ করিতে পারে ? আমরা ভিক্কের আচরণ হইতে ভাহা শিক্ষা করিতে পারিট্ট ভিকৃক, हुर्सन, উপार्कात धानमर्थ, छाहात शत्क शावित्रा कीवनधात्र कता অসম্ভব। তাই বলিয়া কি সে চুপ[®]করিয়া বসিয়া থাকে <u>†</u> সে স্বলের ঘারে বায়, যাইয়া অবিরত সেই স্বলের ঘারে চিৎকার করিয়া আপন অভাব জানাইতে থাকে। ভাছার এমন শক্তিবা স্থবিধা নাই যে ধনীর গৃছে প্রবেশ করে এবং थारवण शृक्षक यरपञ्चा धनत्रज्ञ धारण कुरतः; किन्छ छ। हात धन চাই। স্থতরাং সে কাতর ধ্বনিতে ধনীর চিত্তের ছৈব্য নষ্ট করিবার চেষ্টা করে। অবিপ্রাস্ত তাহাকে এই কার্য্য করিতে হর। যে ভিকৃক, ২।৪ বার চাহি যাই বিরক্ত হর এবং ধনীর ছার পরিত্যাগ করিয়া অক্তত্ত যার তাহার পক্ষে ধন লাভ করা সম্ভব হয় না। ভিকুকের গকে অভিনান করা শোভা পায় না। কারণ সবলের অম্প্রহের প্রতি তাহার কোন দাওয়া নাই। তাহাকে সেই স্বলের অনুগ্রহের উপরেই নির্ভর করিতে হর। স্থতরাং ত্র্বলের পক্ষে প্রথম চেষ্টা চাওরা, কিন্ত অবিরত চাওরা। ঈশ্বর শাভের সম্বন্ধেও হর্বল মানবাদ্মার পক্ষে এই উপারই প্রশস্ত। সে চালিতে পারে এবঃ চাহিয়া हारिता क्रांख ना इरेत्रा काऊत व्यार्थना बाता गरान् जेयातत সিংছাস্ন বিচলিত ক্রিবার জন্ত চেটা কারতে পারে। বিতীর চেষ্টা, অভিযান পরিত্যাগ করিয়া একান্ত অন্তরে অকিঞ্ন ভাবে দাতার রূপার উপর নির্ভর করা। অরে বিরক্ত ্ ब्हेरन, - छ्हे छात्रियात छोहिता निर्माण ब्हेरन, रयमन खिक्क्रकत किहूरे लाख इस ना, क्षेत्रतत् बादत्त अधिमानी व्याणीत क्षे इस्मा बहिता बाटक।

Mein an malt gedat bemet abere mein de अवा कावात नाम अनम नाम्मको । चएवान आवता নৰ্কা ভূমিতে নদী সকলের বৈ ঘলোহয় শোভা বেলিয়া त्यं ध्रे, याचात्र विद्या शास्त्र वित्रतिम मानव व्यागन्तराकः **नका जिल्लामान क** विवादक, त्यारे क्षापूर्व व्यवस्थित छत्रनाविक विभाग-ब्रह्म मही जकरमत छेदगछित्र क्या बाह्यका छाविता-ছেল, পর্কত-গৃহ পরিত্যাগ করিয়া ছাহায় নিয়ে আখনন করিবার প্রশালী বাছার। লক্ষ্য ক্রিয়াছেন-শ্রেরা ^৯লেখিয়াছেন কভ সংগ্রাম ও অক্লাক্ত চেটার পর সেই কু<u>ল</u> नियं त्रियोत्र बनतामि नागद्वारकान् इतिता इतिता दक्यन कतित्रा नक्नमानात्रथ व्हेबाह्म, डीहाबाहे इसन कि कविया नवन বাধা অভিক্রম করিছে সমর্থ হর ভাছাও বৃলিতে পারিয়াছেন। া থাহারা সেই নর্মনানদীর জনমাশিকে কঠিন সর্পার প্রস্তার ভেদ করিয়া আপুন গভবা করেনে গ্রন করিতে দেখিরাছেন তাঁহারা অবভাই লক্ষা করিরাছেন অলরাশি কোন্ শক্তিতে সেই কঠিন মর্মার প্রাক্তর ভেল করিতে সমর্থ চইরাছে। युं गत गत यूर्ग हिनामा शिवादक, ह्रव्सॅन कनतानि शीरत शीरत 'ক্টিন প্রস্তেরে পাতা বহিরা পদন ক্রিতেছে, ভাহায় বিরাম নাই, তাহার অভিমান নাই, চেষ্টারও কাছি . নাই কিন্তু ক্ৰমাগভই দেই কাৰ্য্যে নিযুক্ত। কিন্তু ভাষাভে কি ক্ট্রাছে স্থিমূতার নিকট প্রবল পরাক্রান্ত যে কঠিন প্রান্তর তাহাকেও পরাক্ত ত্ইতেত ত্ইরাছে। দিলেরপর দিন অণু অণু করিয়া ভাহার গাতেরে অংশ সকল জলভোতে ভাসিয়া গিরাছে, এবং দেই নিয়ত চেষ্টাশীল ফলরাশির জন্ত অবশেবে ়পথ ছাড়িয়া দিংত হইয়াছে। জলের চ্বলতা এবং প্রস্তরের দৃঢ়তা আময়া বিশেব রূপে অবগত আছি ; অণচ জল আপন লক্ষ্য সাধন করিয়া গস্তবা ভানে যাইলা কেমন মিলি-তেছে তাৰাও দেখিতেছি। এই ঘটনাতে আমরা কি দেখিতেছি? জলের লক্ষ্য চির ছির ছিল, সে কথনও আপন লক্ষ্য বিশ্বত হর নাই। আবারও দেখিতেছি ভাগার চেটার বিরাম নাই; আকাজকা বেমন এক দিকে প্রবল তেমনি সুহিকুতার সহিত <u>्रिष्टीत ७ निथिनफा नाहे।</u> নিয়ত নিয়ত বহিয়া কঠিন প্রান্তর-দেহকে কীণ করিতে তাহার এক দিনের জন্ত অব-সরত। হর নাই। স্তরাং মানবাস্থার পক্ষে কৃত্বা এই, নেও বেন বিজানের জঞ্চ কালায়িত না হয়। তাইার লক্ষ্য সাধন অতি জুনহৎ ব্যাপার। কুল মানবান্ধার পকে মহান্ পীশ্বর লাভের মত স্থমহৎ কার্যা জগতে আর বিভীয় নাই; স্তরাং কুলা যেমন অসীম হইবে,লক্ষ্য সাধনের কল চেট্রা বেমন চির-জীবস্ত থাকিবে, তেমলি সহিষ্ণুতার ও বিরাম থাকিকে না! প্রবদ্ধাকুলতাও আহ্বাস এবং নির্ভন্ন ও সহিক্তা এই সকলের সন্মিশন ভিন্ন কুলের পক্ষে মহডের লাভ, তুর্কবের ুপক্ষে সৰলের আতার প্রাপ্তির অন্য উপার সম্ভবে না। मानवाचा त्य चार्यन त्जारवः श्रवचाचात्क है।निका चानित्व ति मकि छारात नारे। यति होतित्राध्याना क्या भारते छत्व वरे चाक्न वार्थना वरः नियक कमानव वर्गहे कार्याक हिनिया जाना राज्य।

मणामकीय छ आश अवस्।

ত্ৰাক্ষসমাজে কেন আছি?

(अक्जन बाच्चवस्कु कईक मारवाष्म्रव छेणतरक विवृष्ठ)

আমি ১৫ বংসর বরবে সমরে ভগবানের প্রসাদে ত্রাক্ষ্ণ ধর্মের পরিচর পাই। ভখন ত্রহ্মসমাল কি, ভাহা লানিভাম না। এক ঈশ্বরের উপাসনা করিব, স্চরিত্র হইব, সংলোকের সহবাসে থাকিব, এই আকাজ্জার ত্রাহ্মধর্ম গ্রহণ করি।

ক্রমে জীবন পথে অগ্রসর হইতে লাগিলাম। ব্রীক্ষসমাজের
সহিত পরিচিত হইলাম। সাধুসজ্জনদিগের জীবন দেখিলা,
তাঁহাদের মুখের নৃতন নৃতন ধর্মকথা শুনিরা যৌবন
জলস্ত ধর্মেংগিনেহে অতিক্রম করিতে লাগিলাম। আহা!
ব্রাক্ষসমাজের সে সময়ের অবস্থামনে হইলে সে জীব্র প্রেমক্র্যি
মনে হইলে, আজি ও চকুতে কল আইসে; সে স্থতি আজি ও
জীবন পথে আলো বিস্তার করে।

ভারণর বিধাতা ব্রাক্ষসমাজকে থোর অবিণরীক্ষার নিকেপ করিলেন। সলে সঙ্গে আমার এ ক্লে জীবনও সেই আরি পরীক্ষার পতিত হইল। জার! আমরা অসহার ব্যক্ষপ ব্রাক্ষসমাজের যে শীতলছায়ার নিশ্চিত্তমনে বাল করিডেছিলাম, সহলা কে যেন সে ছায়া দূর করিয়া বিল, কে যেল জানিয়া জামালের সে আমনল বাজার জালিয়া বিল! ব্রাক্ষসমাজে মধ্য প্রাবন উপস্থিত হইল! সে প্রাবদে কত ভরী অক্লে ভূমিয়া গোল, কত ব্যাণাধিক ভূজন অক্লে ভালিয়া পেল! যাহানিয়কে চিরলীবনের ধন্মবন্ধ জানিয়া প্রেম-বাহুতে ধ্রিমাছিলাম, সো ভীবণ প্রাবদে তাহায়া একে একে কোষাম ভালিয়া গোল, আমি

क्षम कोनम मुखा निवामात्र ज्ञान मूर्ग दहेगा वाद्यात्रक मूर्गत मन्त्र जानावागिरक ज्ञारन कक विश्वीद लाहेनाहि

े होतियिक्त कार्य अथन विशिष्टक, वासनगाया भुकन हिंबारक, आकर्ष चार्व अरवत्य हिन्दिन ना ! द्वीक्शर्यात त्य भा ईक्ष्मार्थिनं, आमानार्यात्र ७ (नरे नमा घटेर्य ।

ুৰাহিছে জে এই অবছা ! এ দিকে ভিতরেও নাধন পথে বিষ্ম বিষ্মা একে ভো সংসারভারে আপ ভারাকান্ত, রিপুর बानान क्या विष्य । जाहारक व्यायात नावकतिरान मत्या विदेश अफट जर । देवें बरमन, किल्लिश वाल, दक्र वरमन জ্ঞানসাগাস্পরণ না করিলে ধর্মে দাড়াইতে পারিবে না : (कह बरणन, कर्च कत्र, कर्खना कताहे धर्य। खोवात रमधून, লামাজিক বিবরেও কত ভর, কত চিত্তা। পুত্র কভার লভই বা কত ভয়, কত ভাবনা!

এইরূপ স্কটের অবস্থায় পড়িয়াও, এইরূপ বিষম অগ্নি পরীক্ষার ভাষা ভাষা হইবাও আক্ষসমাৰে কেন পড়িয়া আছি षाजि সেই প্রাবের নিগুড় কথা ভাই ভরিলিপের নিকট विविद । आमि वन्नरत्र अपनिदक्त (आर्ध स्ट्रेश अ सर्प्य नकरनत ক্ষরিষ্ঠ ; ডব্রিতে স্কলের থীন ! তথাপি আশা হয়, আমার পিতার পুত্রকল্লাগণ, তাঁহালের এই সকলের নিক্ট ও কনিষ্ঠ আইটার প্রাণের কথা গুনিতে অবহেলা করিবেন না।

় (১) আমাদের পরিবারে একটা গৃহ-দেবতা ছিলেন। ল দেব মূর্ক্তিটী আমি বড়ভাল বাসিতাম। তাহাতে যেন 奪 ক অপুৰ্ব মাধুৰ্বা ছিল, আমি বাল্যকালে সেই ম্ভিটীকে বড় ্রাল বাসিভীম। পুতুলের মত ভাল বাসিতাম তাহা নহে, ্লালক যেমন আর একটা স্থলর বালক বা বালিকাকে ভালবাদে ছাহার মুখের দিকে যেমন সতৃষ্ণ নয়নে বার বার চাহিয়া থাকে, নামিও দেই দেবমূর্ত্তিকে সেইরণভাল বাসিভাম। আমার য়াণে সকলা সাধ হইত, সেই মৃত্তিটার গায় হাত দিব, তাহাকে পুল দিয়া সাজাইব। কিন্তু আমি জাভিতে হীন, শুদ্রের কি দ্বমুর্ত্তি ছুইবার অধিকার আছে ? ঘরে বাইডে পারিতাম ্র বারাম্পায় দাঁড়াইয়া দাঁড়াইয়া সেই মূর্তিটা দেখিতাম, শ্ভ ভার্তি মনের আকাজক। মিটিড ন।! আদাণ্য গ্রহণ মুষ্ট্রেরা জানিতে পারিলাম, যিনি বিশ্ব প্রক্ষাণ্ডের পভি, যিনি বুৰভার ও দেবছা, যিনি কুলর হইতে ও কুলর, তিনি আমার ক্ষাৰ আছেন! সকলেই ভাঁচাকে পায়,দকলেই ভাঁচাকে ছুইতে हिटब ! कांक्षत्र निकरे बाका भूट्य एक नाहे, धनी एतिएक ক্ষাৰ লাইণ আমি বাল্যে যে দেবভার কলিভ মৃথিটী স্পূৰ্ণ विद्याल नार्वे, व्याचि त्मरे रमगानित्मय विक्रेमाय व्याः ইনিক আয়ায় প্রাণম্পিরে বিরাজ কবিতেছেন সেই ভূবন-इस्स्थात चाम महास्टादश खार्यमन मूच क्रिंटिक्ट्सन। विश्वक केरकूर क्यम क्यान क्या किया (गर्ट एवन वृधित श्रूमा क्रिक्त क्षम मरमा बरेख, बाग द्वम क्षेत्रण क्षमधान भूका

and the state of

une de ma weiter conge fentent enfern क्षा क्रमारिक तथा क्रिक्टिश रनहे विद्यायिक भर-रंबचंबरक "बार्नवीच" "बार्नवंब" बनिया गतिकृष केरेटकि ! ব্রাক্ষণর এটক্রনে সেই বিশ্বপতিকে আমার আপের নিকট चानिया निवारक्षम् । द्वाचनमास्य चामत्रा नकत्ववे नाकार-ভাবে সেই বিশ্বপতির পূজা করিবার অধিকার পাইয়াছি? ट्य धर्मा मानवांचारक क्रवेत्रण डेळ्डर व्यक्तिमात राष्ट्र, रम कि नामास धर्म ? य नवारक काछिवर्ग निर्कित्यात, नवनावी निर्कित्माय नकतारे अनवान्त्क माच्या कीत्व भूका कतित्व পারে, সে সমাজ কে ছাড়িতে পারে পু এমন অধিকার আর কোখার পাইব ?

(२) विमृत यस कविता लाग वर्ष मरकीर्गडात चारक दिन, জীবনের শিক্ষা ও চিতা বড় সংকীণ গণ্ডিভে আবদ ছিল! হিন্দু সাধুদিগকে ভক্তি করিউনি, হিন্দুশাল্লেও অমুরক্ত ছিলাম। কিন্ত বিজাভীয় সাধুও ধর্মগ্রছে বড় বিষেষ ছিল। ব্রাহ্মধর্ম আমার প্রাণের নিক্ট এক উদার সভারাজ্য প্রকাশ कतिशाष्ट्रिम। त्वल वाहेत्वल, भूतान त्कात्रान मकनहे व्यामारतृ শাল্প হইয়াছে। একটা সভাও আর পরের স্ত্য বলিয়া বোধ हत्र मा। जेणा मुद्दां, णाका, शोब, नानक कवीत, माडेस कनक्र, লুখার ও মহম্মদ সকলেই আমাদের আপনার লোক, এক-জনকেও আর পর বলিয়া বোধ হয় না। ভিন্ন ধর্মাবলখী विशा काहारक पृत गरम हत्र मा। वाकार्य धरेका फेमार्ड ও মৃহৎশিকা দিয়াছেন, এইক্সপে পরক্তে আপনার করিন্সছেন। य नगांक नेना ७ लोडान अकानत नृज्य कर्तन ; य नगांक বেদ ও কোরাণ স্মদৃষ্টিতে আদৃত হয়; যে সমাজে কেবল সভ্যেরই আদর চর, সাধুতারই স্মান হয়, সে সমাজ ছাড়িয়া কোথায় ষাইব ? শতবার আগ্রিতে নিক্ষিপ্ত ভ্ছলেও সেই সমাজের চরণতলে পড়িয়া থাকিব, मस्य ছ: থবছণায় निशीष्टिक इहेरम्छ (महें मशास्त्रत भएकरन भिष्याहे कम्मन कतिव।

(७) आमात्र कृडीय ६ स्मिर कथा कहे, वाक्तभार्यात वानारि আমার সশুখে এক উদার ও নিখব্যাপী প্রেমপরিবার প্রকা-শিত হইয়া পড়িয়াছে। ঈশ্বর যেমন এক, তাঁহার ধর্ম যেমন এক, তেমনি তাঁছার তোমপরিবার ও এক। এই বিখের अनुस्कानी नव नाती नकतारे छानात राहे त्याम-शतिवादतत लाक। डिनि सामारमञ्जा, सामता नकरनहे डाँहात मखान। हेह भन्न लाक-वामी छानी मूर्य, म छा व्यम छा भाषी भूगावान् সমস্ত নর নারীই আমাদের ভাই ভগী। তাঁহার বিশাল **ट्या-द्रक्क कामना नक्टाई वृड तहिनाहि। जिनि काराटक छ** খুৰা করেন না, কাহাকেও পর ভাবেন না; অতএব আমরাও কাছাকেও খুলা কাঁয়তে পারি না, পর ভাবিতে পারি না। आंगोरनत वर्षे ट्रेकाम ७ एटन आवस्त्र शास्त्र मा, आमारनत दश्यमे देकान्छ व्यक्ति वा मध्यमादत व्यक्ति थाकिएक भारत गा। छार द्वान । श्रःश (मधिता की छ इरें छ ना, विवास विमयान स्मिता शानाहेका याहिक मा । जानानगरम तथारमत कर स्टेटवरे स्टेटव, कृदेक हार्षि महित्र जाक अध्यादक अभादक जनायम । शुधिनीहेक दिश्रम-ताका जानिदन्दे जानिदन देशायक दिनास material to the less

সন্দেহ নাই। আমাদের শত শত দোৰ জটা ও অগরাথ আছে, ভাষা জানি; কিছ উহাও জানি, আমাদের না আছেন, আর ভাষার অমৃত-জোড়ে আমরা সকলেই ভাই বোন্!

তুই ভোগীর সাধক্।

িধর্মরাজ্যে চুই শ্রেণীর সাধক দেখিতে পাওয়া যায়। এক শ্রেণীর লোক থর্মের জ্ঞাধর্ম করেন, স্থপর শ্রেণীর লোক সার্থসাধনের অস্ত ধর্ম করেন। প্রথমোক্ত সাধক ঈশবের প্রৈমে এমনি মুগ্ধ হইয়া পড়েন, জীবনের প্রভি ঘটনার মধ্যে তাঁচার করণার এডই পরিচয় পান যে তাঁহাকে ভাল না यंत्रिया, छोहात हट्छ बाबा-ममर्पन ना कतिया बाकिएड पादबन ना । त्यरवाक वोकि रमध्यन त्य जानारवत हातिमिटक अञ হুঃখ ক্লেশ, এড ভয় বিপদ প্রভৃতি প্রতিকৃণ অবস্থা যে আগ-নার ক্স শক্তির উপর নির্ভর করিয়া আর্ট্রাড়ান যায় না,কোন फेक्क जब मेक्किन चोलान अरुग ना कन्नित चान हाल ना ; এই मन्त করিয়া তিনি ঈখরের প্রতি ভালবালা প্রকাশ করিতে চেষ্টা করেন। অগতের লোক আপাডত: এই উভয় প্রকার লোকের मर्था (कान ७ প্রভেদ দেখিতে পার না; এই कक क्षेत्रंतत প্রতি বিশাস ও নির্ভরশীলতা সম্বন্ধে উভয়কে সমান জ্ঞান করে। কিন্তু যথন পরীক্ষার সময় উপস্থিত হয়, তথন ইহাঁদের 'মধ্যে কে শ্রেষ্ঠ বিধাসী ও প্রকৃত ঈখর-প্রেমিক, তাহা প্রকা-শিত হইরা পড়ে। যভ দিন সংসারে সুখসজ্ঞলতা থাকে, ততদিন (मरबाक जाधक धूर छेदजारहत महिल क्षेत्रतत नाम गाम करतन, किन्द्र हात्रिषिक रहेएल नानाध्यकात हुः श यञ्जभा कानियां यथन আক্রমণ করে, তথনই তাঁচার ঈশরের সঙ্গে সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন হইয়া

ু এট প্রকারের লোক ধর্মজগতে ঠিক কোকিলের স্থায়। বসম্ভকালের সঙ্গে কোকিলের সম্বন্ধ। বসম্ভকালে ভক্রগণ যথন স্থামল পুলাপতে সজ্জিত হইয়া স্থানর শোভা ধারণ করে, নানা বর্ণের কুসুম সকল বিকশিত হইয়া দশদিক আলো-কিন্ত করে এবং দৌরভে প্রাণ মন মোহিত করে, রসনা তৃষ্ঠি-কর নানা প্রকার সুরসাল ফল সকল বুক্তে বুক্তে পরিপক্ত হইরা উঠে, स्थमल मनत्र मभीद्रण धाराहिक इहेता . भतीत्र क भीकन ध পুল্কিড করে এবং প্রকৃতি মনোহর সাজে বিভূষিত হইয়া न्डम औ शारन करत-नमच बगर (यम क्र मधा छरप्रत्य क्षित्वचन्न भ इहेन्। यात्र:-(महे चूर्य ७ चानत्मन मित्न (काकिन আসিয়া উপস্থিত হয়, কত আনন্দ প্রকাশ করে, কত উচ্চ ঋছার করে, কত উল্লাসের পৃথিত বৃক্ষ হইতে বৃক্ষাপ্তরে বিহার ক্ষিরণ বেভার। ভাগার পর হু:থের বর্ষা আসিল, গগনমগুল (यरच प्राव्हाधिक रहेन, श्रकृष्टित (माञ नकन विनष्ट रहेन) 🖰 (जन, तुक्रमखाप्रमुक 🕮 छाडे घरेन, बनाखन पूर्व नखीत बन्नकारन ्याक्कत रहेवा राग,—रनरे रमात्र द्वाप कृषित्न रमान्त्रितात्र लाकृष्ठिः मसिवर्कन रहेन, काशास कर्छ स्टेरक काम दन समुद्र क्नम निः गुड अब मा, त्र चात्र भागत्म पुरम बुद्ध के किया दिकात्र मा; कहे अर्ल करबक निरमत घरेबा दर्जाकिये देकाबाब केफिक्स दुर्जन,

जात छाहाच अकाम नेपिका एनमं मा । चार्च-मानामारकरम विभि भन्नत्वप्रमुक्त काम वामिष्क यान, कीकान अन्या विक विदेशना व्यक्त ग्रह नाना व्यक्तात एवं के जानाक निर्देश इंदेश दक्षिशास्त्र, स्रष्ट्रत व्यवीभावित वात्री नःनात्रराव्या नक्करन निकाहित इरेटलर्फ, भूख कक्षांत्रन आन्द्रक नारिया नारिया 🦈 हातिनिटक (थनिता दिक्।हेट्डटक, नकन द्वादकः काननानी দেগাইতেছে ও নানা ভাবে সুখ্যাতি ক্রিভেছে এবং শ্রীর ও সন সুস্তা ও আনন্দ অনুভব করিতেছে,—সেই স্থাপর বিবে जिमि केचरतत थिकि क्याम विचारमत काव रमशावेरकरहरू. কত বার ভাক্তির সহিত উহিার পূজা অর্চনা করিতেছেন, তাঁহাকে "দ্বামর দ্বামর" বলিরা ডাকিরা ভাবে উত্মন্ত হইডে-(छन, धवर कीवृतनत अण्डाक व्यवद्यात मर्रमा **डाँ**सात आम ड করুশার পরিচয় পাইতেছেন। তথন তাঁহার অবস্থা দেখিছা মনে হর যে এই ব্যক্তিই প্রকৃত ঈশ্বর-বিশাসী। কিন্তু কিছুদিন পরে সাংগারিক অবস্থার পরিবর্ত্তন হট্যা গেল ;--- তথ আনক কোথার তু:থবিবাদের স্রোতে ভাসিরা গেল; চারিদিক হইতে ভীষণ দারিস্তা ও অভাব আসিয়া পীড়ুন করিতে লাগিল, সম্ভানসম্ভতিগণ সেহকোড় শৃত করিয়া কোন্ অক্লারময় দেশে চলিয়া গেল; যে সকল আগীয়ত্বজন কত ভালবাসা দেখাইয়া সদ্পণের কন্ত প্রাশংসা করিতেছিল, তাহারা শত্রবেশ ধারণ করিয়া নিদারুণ অভ্যাচার ও কুৎসিৎ নিন্দাবাদ আরম্ভ করিল,এবং নানা প্রকার রোগশোকের তীত্র কশাঘাত জীবনকে ভারমর করিরা তুলিল ;—সেই খোর বিপদের দিলে উছেক সেইরূপ ঈশ্ব-বিশ্বাসের ভাব কি দেখা যায় ? না, তখন তিনি আর সেরপ ভক্তির সহিত তাঁহার আরোধনা করেন না, প্রাণ থুলিয়া আর তাঁহাকে দ্যাময় বলিয়া ডাকিতে পারেন না, মানবঞ্জীবনের উপরে তাঁহার প্রেমের স্রোত বে অবিশ্রাম প্রবাহিত হইতেছে, তিনি তাহা আর অনুভব করিতে পারেন না। প্রমেশ্বের মঙ্গলম্বপের উপর তথন তাঁচার সন্দেহ হয়। তিনি যদি মঙ্গৰময়, ভবে আমি এত ক্লেশ পাই কেন ? মাফুৰকে বুণা কষ্ট দিয়া তাঁহার কি লাভ হয় ? ভবে বোধ হয় জগতের অন্তরালে কোনও বিধাতা নাই। এই মনে করিয়া ক্রমে তাঁহার বিশ্বাস শিণিল হইয়া পড়ে, এবং বর্ণন্ধ আগমনে কে। কিল যেমন উড়িয়া যায়, দেখিতে দেখিতে তিনিও সেইরূপ धर्माकार इटेटिंड (काशोव कामुख इटेवा यान,--बाव डीहारक দেখিতে পাওয়া যায় না।

কেবণমাত্র সাংসারিক অবস্থার পরিবর্তনে যে ইহার
বিখাস নই হইয়া যায়, তাহা নতে। আধ্যাভিত্ব ভাবের একটু
বিপাসর ঘটিলে ও ইহার সহজেই বৈহাঁচ্যুতি হয়, তথ্য তেম্ম
বিখাসের সহিত আর সেই পরমনেবভাকে ধরিয়া থাকিতে
পারেন না। যখন সাধনভজনে প্রাণে খুব আনন্দ্র পান,
ভাহার নাম করিয়া হবর শীতল হয় এবং ধর্ম জীবল সহজ্জী
নানা প্রকার অভুকুল আবস্থা আলিয়া ইবরোপাসনার সহজ্জী
করে, তথ্য উৎসাহের সহিত্র সাধন ভজনে মনলোপ বেষ,
বিবানিশি প্রমেশ্রের নাম কীর্তন জ্লারন, ইয়ারার ইহাত্তির
প্রেবের বিবর স্কারা আলোচনায় করেন্ত কুবর উন্তার বিভাগ

minimum um alben neun rent etal bije i fen ক্ৰাৰ কাৰায় চিববিন থাকে না ৷ বধন গুক্তা আদিয়া व्यवस्थान व्यवस्थात करत. कर्गशामत मात्र रक्षम विदे विनित्र খোণ হয় লা, তীহার উপাসনাতে আপ ডেমন পরিভৃপ্ত হয় না—সেই বিষয় পরীকার সময়ে তাঁহার আণ ছিয় থাকিতে পারে না, তথম আর উপাসনাতে ভাল মন বসাইতে পারেন ना, जोधन कबरन टलनन चासूत्रकि बारक ना, धवर नदकारी क नवस्त्रीतमत्र विष्क सात्र सश्चरत्रत मणि शास्त्र मा। अवेत्रण श्वकान कि प्रमित शामी क्रेटिंग खान करने करने फैरानना প্রাকৃতি সাধন ভলনে উদাসীন হইরা যার। সেট আবস্থার বৃদ্ধি আবার আভুনিপ্রচ, প্রবৃত্তি প্রলোভনের বলে সংগ্রাম क्षक्रिक करिम माधरमत कथा यस्त छेनत्र वत्र, खरव खाँवात्र मन প্রকেষারে গভীর নিরাশার কুপে ভূবিয়া যায়। এইরপে ভিনি এই एक निवास ভাবের মধ্যে থাকিতে না পারিয়া অরে আল্লে ধর্মা জগৎ ছাড়িয়া স্থান চইতে দূরে চলিয়া যান।

প্রাক্তর বিশ্বাসী সাধকের জীবন ইছা ছইডে সম্পূর্ণ বিভিন্ন। সকল সময়ে সকল অনুবস্থার মধ্যে তাঁতার প্রাণ দুর্ট্ডাবে সেট পর্ম পিডাকে অবলম্বন করিয়া থাকে। নানা প্রকার সম্পদ ঐবর্য্যের দ্বারা পরিবেষ্টিত হটয়া মধন তাঁহার জীবনযাত্রা স্থাপে সক্ষান্দে নির্বাহিত হয়, তথন তিনি ভাহার মূলে সেই করুণাময়ের করুণা দেখিয়া কুতজ্ঞতার পরিপূর্ণ হন। আবার चार्मव क्षाकांत्र इ:थ (क्रूपं चानिता यथन कीवनरक (चत्रित्रा ক্রেলে, কোর অভাব ও দরিক্রভার উৎপীড়নে জীবন ধারণ 🌬 কঠিন হইরা পড়ে, ডিনি তথনও বিশাস ও আনন্দের সহিত (महे कु: थ प्रतिख्ञात विषयभात व्यवन्त मन्त्रक् वहन करवन। যাহা দেখিয়া তুর্বল সাধকের প্রাণ ভয়ে উড়িয়া যায়, ঈশবের মঙ্গলম্বরূপে সন্দেহ জন্মে, তিনি বুক পাতিয়া ভাচা গ্রহণ कतिया क्रेमात मक विदारमत महिक विनय् পारतन,—"बाबात পিতা যে পানপাত্র আনার সমুধে ধরিয়াছেন, তাহা কি আমি পান করিব না"। স্থুন্দর শিশুসকল জন্মগ্রহণ করিয়া বগদ গৃহ আলোকিত হয় এবং পত্নীর অপূর্ব্ধ প্রেমপ্রভাবে ৰ্খন ভাঁহার সমস্ত সংসার মধুমর হইলা যায়, তথন ডিনি ভাষার শশ্চাভে দেই প্রেমময়ের প্রেম দেখিয়া এবং আপনাকে ভাঁছার প্রেমের অনুপযুক্ত জানিয়া চিরজীবনের মত তাঁহার জৌভদান হইয়া বান। আবার বধন তাঁহার গৃহ শুক্ত করিয়া, ভীষার সংসার অন্ধকারে ডুবাইরা, সেই স্বেচ্রে পুত্রলিকা সকল লয়বোকে চলিয়া যায়, তখন ভিনি বলেন তুমি মললময়, ৰিক্লমন; তুমি বাহা কর ভাহাই ভাল। "আমি নহাবেশে माज्ञ कर हरे ज्या है हरे बाहि, अवर मधरवटन अथान करेरज ইশিরা বাইব। প্রাভু, তুমি নিরাছিলে তুমি লইয়াছ; তোমার नीय ४४ व्हेंक।" यथन जिनि मध्यात्त्रत लात्कत्र निक्वे वहेर्छ জ্ঞানবাসাও অ্থাতি প্রাপ্ত হন, তথন সেট পরম দেবতাকে चंक्रवाम निवा यरणन--- अन्य रक्षामात्रके कृषा, चामि किछूतहे विश्व महै। चीतांत्र यथम छाहाता विष्ट्रमधायम बहेया किश्व केन्द्र नामासून ज्ञाहात निर्देशित करेंद्र ज्यवश्राहर

নিক্তে চাহিল প্রশাস্ত মনে সকল সক্ত করিবা বংগন-তোমার টছোপূর্ণ হউক। আমি যে ভোষার অভ একটুক্র ফ্লেশ সহু ক্রিতে পারিভেছি, ইহাতে আমি বছ ক্ইলাম ;

সংসারের ছুলে বিপদের সময় ভিনি প্রাণকে যেরূপ দৃঢ়-ভাবে ঈশবের সঙ্গে বাধির। রাখেন, ধর্ম জীবনের ছন্দিনে ও তিনি সেইরপ কথন তাঁহার কাছ ছাড়া হন না। বধন প্রাণ मन्त्र थाटक, खेलाममा मधुत इस, क्षेत्रदेश माम मिर्छ मार्ग ध्वर छाहात श्रित्रकार्या कतिया श्रात्य भागम हत्र, (क्यनेमाळ তথনই যে তিনি ঈশবোশাসনা ও তাঁহার সেবা করেন, তাহা নর। কিন্তু বোর ওছতার দিনে বখন উপাসনা ডিক্স বোধ হয়, ঈশবের নাম করিয়া শান্তি অহুভূত হয় না এবং उँहात कार्याः कतिएउ উৎসাহ ও आनम হর না, তথনও তিনি কাভর প্রাণে পড়িয়া পড়িয়া তাঁহার নাম 'করেন, আশা ও देशाचीत महिक काशात बाद्य रक्ता मित्रा शक्ति थाटकन धनः তাঁহার নিকট বল ভিক্ষা করিয়া তাঁহারই প্রিয়কার্য্য সাধনে অগ্রসর হন: জীবনে যতই শুষ ভাব আত্মক না কেন, তিনি অবিচলিতচিত্তে তাঁহাকে আশ্রর করিরা তাঁহার অভয় চরণে পড়িয়া থাকেন। আর আমি কোথার যাইব ? তুমিই আমার একমাত্র গতি, তুমিই আমার চিরদিনের আশ্রয়। क्रूर्थ कुःरथ, विभएन जन्मारन, विश्वारम व्यविश्वारम मकन व्यवश्वाय ভোমারই ছারে পড়িয়া থাকিব। আমার ছঃথ আরে কেছ দুর করিতে পারে না, আমার বিপদ আর কেহ নিবারণ ক্রিতে পারে না, অবিখাসের হস্ত হইতে আর কেহ ,সামার উद्धात कतिएक भारत ना। ट्यामात नाम यथन मिष्टे नारंग ना, তখন কি নাম করিব না ? তুমি যে চিরদিনই আমার পিতা; শুক্ষতার সময় কি তোমার সঙ্গে আমার সকল সম্ভ ঘুচিয়া যায় বে তোমার নাম ভূলিয়া যাইব ? এই বলিয়া চিরজীবন তিনি ঈশবকে দৃঢ়কপে আলিজন করিয়াথাতকন। এইজয় সাধনের কঠোরতা দেখিয়া তাঁচাকে কথনও নিরাশ হইতে হয় না। তিনি বলেন যাহা করিলে ভোমাকে পাওয়া যায়, আমি তাই করিব। সামাক্ত সংসারের বস্তু লাভ করিবার জন্য কত পরিশ্রম করি, ক্লেশ-স্থাকার করি। আরে ডুর্মি অম্ণ্য অক্ষ ধন, ভোমাকে পাইবার জন্য যদি স্বার্থভাগে ই জিয়দমন, আত্মনিগ্রহ প্রাভৃতি সাধন করিতে হর, ভাহা কি করিব নাণু সংসারের এমন বস্তু কি আছে, যাহার সঙ্গে ভোমার উপযুক্ত বিনিময় চইতে পারে ? সামান্য সাধন ভলনে যদি ভোনার পাওরা বার, ভাহাত আমার সৌভাগা।

विधानी नाधरकत विधान छःथ विशरतत नमत द्वान ना हरेत्र। यत्र युक्ति आश्च हम । भूनः भूनः भूक्ति। भूक्ति। यर्ग रयमन थाँछि ও উक्कन इत्र, छाहात विधान त्नहेकान विनन পরীকার অমলে পুড়িয়া পুড়িয়া দিন দিন বিশুদ্ধ ও উজ্জ্বণ इहेता यात्र ।ं दिव मक्त माधूनाक्ति **अथन यानव म**मास्यत ' পুলনীয় হুইয়াছেন, ভাগাদিগকে হয়ত কেহই জানিতে পারিত ' मा, विन कृत्व विभन चानिया कैशानिय मध्य सगटकत मध्य अकान कविता ना निष्ठ। छन्तन वृत्क द्यमन यं उरे काका छ

color dans river dans ster and from non-Bican winis eifnigun, wob Gieren Bunduff अप्रतक पतिवाशि वरेबाए। छीवाश्व (व क्षाम्य क्षांक चात्र चात्र निः गत्य शत्रामश्यत्र निरम् खनावित हरेछहिन, বংগাৰের ছঃধক্ষেদ আদিরা ব্যুদ্দ ভাতার দৃদ্ধে বাধা বিহাছে , उपनदे काशांव (नग मण्डन विश्व बहेबाद्य, बनर म्माद मुक्त वाशा व्यवस्थान कामाह्या सहसा निवादक। जनम छीहाता विनिदारहर छोडू, चायका धर्मा हरेनाम। ह्यान वार्थशत कीव इहेबा कामता ८ए ट्रायति कमा धक्ट्रे ट्रिय সহিতে পারিলাম, ভাষাতে আমরা ধন্য হইলাম। কি ছার একটু ক্লেশ বহু করা, তোমার খনা যদি জীবন দিতে হয় তाहाथ आभारतत छान। अ जीवन, अ नर्सच पूर्वि नियाए, ভবে কেন ভাছা ৩ডামায় দিব না ? তাঁহারা: ঈশ্রের মঙ্গল স্বরূপে বিশ্বাস করিয়া ছিলেন, তাই তাঁহারা একথা বলিতে পারিরাছেন। তাঁহারা বুলিয়াছিলেন যে ঈখর অনস্ত জানময়। মাত্র তাহার কুত্র জ্ঞানে আপনার মূলন বত ব্ঝিবে, তাহা অপেকা নিশ্চর ভিনি কোট কোট গুণ অধিক ব্রেন। মাতুষ জাপনার ক্ষুত্র বর্ত্তমান কীবনের দিকে চাহিয়া কার্য্য করে, কিছু তিনি ভাষার অনস্ত জীবনের দিকে চাহিনা কার্য্য धानना जिनि चाहा कतिरवन निम्हे इं जाहारक मनन জিলি মাতৃষকে যে অবস্থায় স্বাধুন লা কেন, ·তाहारक काहात काचात कात्रकारमत कन्यान हहेरवहे हहेरव। তাই জাঁহারা বলিয়াছেন--

হৈর রাথ স্থাবা, না হয় রাথ ছাথে,
তোমার বিপদ সম্পদ আমার তই সমান;
ত্মি যে বিধি কর বিধি, সেই হর মলল বিধি
তাল নিধি হে—

(चातु विश्राम ७ वन्ति। ८ जामात्र मञ्जामञ्जा

পৌরাণিক আখ্যায়িকা।

বৌদ্ধীয় ধর্মপদ নামক গ্রন্থে এইরপ একটা আথারিকা আছে যে এক ব্যক্তির একমাত্র প্রাছিল। তিনি এবং তাঁহার পরী উভরে তাহাকে অভিশর ভাল বাসিতেন। তাঁহারা তাহার স্থানিকার জন্ত বিশেষ বন্দোবস্ত করিরা মনে মনে আশা করিতে লাগিলেন যে, সে ভবিষ্যতে তাঁহারের বংশের গৌরব স্থানপ হইরা কিছু ঘূর্ভাগ্যক্রমে শিকার অমনযোগী হইরা সে লেখাপড়া কিছুই শিষিতে প্রিরিণ না। এই কারণে শিকাব বন্ধ করিরা তাহারে গুলে আনিলেন, এবং বাহাতে সে গৃহকার্য্যে স্থানিপুর ও পারন্দা হর ওজন্ত চেটা ভরিতে কাগিলেন। কিছু সে অগন ও আপদার্থ হইরা তাহাদের স্থানিকান। কিছু সে অগন ও অপদার্থ হইরা তাহাদের স্থানিকান করিছে কারিল, বন্ধবান্ধবেরা ভাহাকে ঘূর্ণা করিতে কাগিলেন। আই লিখা করিছে কারিল, বন্ধবান্ধবেরা ভাহাকে ঘূর্ণা করিতে কাগিলেন। আই লাব ক্ষেত্র আইলার ক্ষেত্র অনুক্তাপের উন্ধর হইল, এবং নে ধর্মগান্ধন ছারা স্থানী হইবান চেটা ক্ষিড্রে

and the state of the

সেই ব্যক্তি এই কথা শ্রবণ করিয়া এবং আপ্রনাম নির্মার্কিভাকে সকল ছংথের কারণ স্থির করিয়া পিডামাভার নিকট ফিরিয়া গেল এবং তাঁহালের আলেশ পালন ও আপনার কর্তব্য সাধন করিছে লাগিল। শিক্ষক্তের প্রতি উপযুক্ত সম্মান প্রদর্শন এবং প্রার্থনা ও ধর্মগ্রন্থ পাঠে সর্মান অনুরক্ত হইল। এইরূপে বিশেষ ধৈর্যাও সাবধানভার সহিত আপনার জীবনকে স্থানিয়মের ছারা নিয়মিত করিয়া সে বুজের নিকট উপস্থিত হইল এবং কিরূপে তাহার জীবনের পরিবর্তন হইয়াছে তাহা বর্ণনা করিয়া তাঁহার সম্প্রদায়ে প্রবেশাধিকার প্রার্থনা করিল। তথন যথাবিধি অনুষ্ঠানের পর বৃদ্ধ ভাহাকে শিষা বলিয়া গ্রহণ করিলেন।

এই আখ্যায়িকা হইতে এই উপদেশ পাওয়া যায় যে, জীবনের সকল কার্য্যের মধ্যে বিশেষরূপে নিষ্ঠার ভাব স্থাপন করিতে নাপারিলে ধর্মরাজ্যের উপযুক্ত হওয়াযায় না। এমন বহু লোক দেখিতে পাওয়া যায়,বাঁচারা জীবনের কত কুত্র কুত্র কর্ত্তব্য অবছেলা করিয়া ধর্ম-দাধন করিতে যান। তাঁহারা উপাসনা ও সন্ধীর্ত্তন করেন, নানা প্রকার সমান্তের হিতকর কার্য্য করিতে অগ্রসর হন, অথচ তাঁহাদের নিজ নিজ কত কর্ত্তব্য অসম্পাদিত পড়িয়া থাকে। যাহার যে সকল কার্যু করিবার আছে তাহা স্থচারুরপে করিতে না পারিলে বে ঈশবের নিকট অপরাধী হইতে হর, তাঁহার রাজ্যে প্রবেশ করি বার অধিকারী হওরা যার না, ভাহা উাহারা বৃ্ঝিভে পাঞ্জেন না ৷ বিদ্যালয়ের এরপ খনেক ছাত্র আছেন, বাহারা লেখা-পড়ার তত মনবোগ না দিরা, বিবোপার্জনের লগু তত বছ না कतिया चारतक नमय धर्मारमानरन वाच वारकन। সমিতি করিব, বজুতা দিব, প্রচার করিব-এই সক্ষ বিবরে कारारमत्र व्यक्षिक च्यूका मृष्टे बाटक। धरे बच्च डाहाबा द्यानाका नद्दस विष्यवज्ञान উत्रष्टि कतिर्द्ध नारज्ञम ना। अञ्चल स्थानम गृसी वाकि आत्यन, नमक श्रीवदारतन करनावन, अपनेकार क व्याबाधिक कनाम वैविध्यत छैन्द्र विक्त क्रिएक्ट, मूबक्का विश्रादक क्यान वर्षों के मीकिएक विकित्त करियात काव सिंदेरिया केनक क्रम हिहारक धन्त गाविसक्रिक स्वापन-सीवन सामाध्याति दर्जिनरशन महत्राः सर्वे हान किसीर्थः कृतिस्तानः क्**रि**केट में स्वतिस्त

for their of you select dis क होबा दशक रमनमाख जावन समनगता वर्षकीयन क्षत्र देशके क्षत्रियं कर्ना अर्थः एकं एकं रक्षकः जाकनमारकव विश्वाद अक्ष निवक शतिकान कतिरहरूकत। शातिवादिक सिंह क्षांक्रिया क्रिस्त (व शर्मात्र अक्षिक्याक व्यवनिष्ठे वारक. कियों डीशरेमन मरम केमन स्ट्रेटिक मा। देवरविक कार्या क्राता करतमा जावारमञ्ज मत्या धारमत्क रूपक रमवे कार्या निर्वाद িছিত সম্পূৰ্ণভাবে সম্পাদন করেন না। নিয়নিত সমরে কর্ম কানে উপস্থিত হওয়া, আপনার দারিত অস্তব করিয়া স্ক্রায়-क्रटन कार्या मन्त्रम कत्रा अवः कार्या मःश्लिष्टे वास्त्रिनारनत्र नेहिस শ্বাৰহার করা প্রাভৃতির দিকে দৃষ্টি না থাকিলে যে ধর্ম-ল্ল হুইতে হয় ইহা স্ক্লা শ্বরণ রাথা উচিত। জীবনের ক্রুল বৃহৎ সকল কওবা সম্পূর্ণভাবে পালন করিলে ভবেই ধর্মের পূর্বভা হয়। সাধন ভজন, উপাসনা আব্যোচন। ধর্ম্বের একদিক মাজ। জীবনের কর্ত্তব্যপালন, ধর্মের অপর क्षिक । कर्ख बाहे भवत्मधावत चारमभ । जाहात चारमभ भागन মা করিলে ধর্ম অপ্রার্থ থাকে এবং তাঁহাকেও লাভ করা यात्र ना।

শনছে ধর্ম শুধু ব্রেক্ষে ডাকিলে;
তাঁহার আদেশ পালন নাহি করিলে।
গৃহস্থের গৃহধর্ম, ক্রমকের ক্রমিকর্ম,
সবই ধর্ম, তারি কাজ ভাবিলে।
কর্তব্য ব্রিবে যাহা, যদি না করহ তাহা,
কি ফল কেবল তাঁরে ভাবিলে।

জীবনের কর্ত্তব্য সকল অসম্পন্ন রাখিরা যদি আমরা ধর্মলাখন করিতে যাই, ঈশ্বরের রাজ্যে প্রবেশ করিতে চেষ্টা করি,
তবে মহাত্মা বৃদ্ধের জায় তিনিও বলিবেন,—"আমার রাজ্যে
ক্রবেশ করিয়া যদি স্থী হইতে চাও, তবে সর্বাধ্যে চরিত্রের
বিশুক্তা লাভ কর এবং স্থানিরমের ঘারা জীবনকে নির্মিত
কর। যাও ফিরিয়া যাও, জ্ঞান ও বিদ্যায় আপনাকে অলঙ্ক্
কর, স্বত্বে পরিবারবর্গকে প্রভিণালন কর, প্রক্রে দিগকে
ভাগ করিয়া সকল বিষয়ে শিক্ষিত কর। আপনার গৃহের মধ্যে
প্রভিষ প্রতিষ্ঠিত কর। আপনার প্রতি, প্রতিবেশীর প্রতিও
সমাক্ষের প্রতি ঘে সকল কর্ত্তব্য আছে, সকল সম্পৃতিরে
ক্রমানের প্রতি বে স্বর্থ হইয়া বথন প্রক্রার আনিবে, তথন
ভাগের রাজ্যে প্রবেশ করিবার প্রধিকারী বলিয়া গণ্য
ক্রিবে।"

धर्मा-वीत्र।

ক্ষিপ্ত বণতে প্রচারিত হইবার প্রথম অবস্থার প্রাষ্টোণা-কর্মগ্রহেত বোর অভ্যাচার ও বিষম নির্যাতন স্কু করিছে ক্ষ্মগ্রহেন ক্ষমন্ত প্রথমি অভিকাশে স্থান অভ্যানভা ও কুসং কালেন ক্ষমন্ত্রক আছেন হিন্দা, প্রচানত গ্রহ্ম ক্ষান্ত ক্রেন্দ্রক বিশ্বাস ক্ষান্ত্রিয়া ব্যান্ত বেক ক্ষেত্রক স্থান

नाव कार्याचन अधिकारका अध्यादे कादारक निर्मातक वेरणीयन नेक कविरक विकारका कि प्रकारका ग्रेसिका क्रीहेश्टर्य विश्वात स्विक्षाहिरमम्, लारमव मानमक्रष्टाशन छारा-मिश्राक कठिन निर्माण निर्माणिकान । काशास्त्र या कीवल वद करा बहैबादब, टाखबाबाटक ब्यान विनाम कता बहैबाटक। काहाबक वा चक्र अण्डा नक्य द्विष इरेबाट्य । बरेब्र्ट्य नामाध्यकातः माखित्र छेगात छेडावन कतिश छै।इतिशक् छत्र वानर्मन कत्र। हरेबाएए धारः याहाएक छाराता चालनाविद्यत छलाना Cनवर्डाटक পরিত্যাগ করিয়া কামনিক দেবদেবীর পূরা। করেম ভজ্জ চেটা করা ধ্ইয়াছে। কিন্তু গ্রীষ্টারগণ শাস্তভাবে সকল বন্ধ্ৰণা সহু করিয়াছেন, প্রমেখরে আত্ম-সম্পূর্ণ করিয়া व्यकान्द्रत भीवम नाम कत्रिशाहित। भीवटनत्र व्यानाय कूमःकात्र जान्त्रत्र करत्रन नाहे, मिणा बखत शृका करतन नाहे। औहै-क्दगुर्छत देखिहारम এই मकल विश्वामी धर्म-बीत्रनिरंगत नाम উজ্জন জক্ষরে লিখিত বহিরাছে। আমরা সময়ে সময়ে ইইনি (मत बीवानत এक এकी बाधातिका उपारकोम्मीड अकाम कत्रियः। निष्म এक निध्यती द्वार की बनी निधि छ इहेन।

মরিটেনিরার অন্ত:পাতি কোন নগরে আরকেডিয়স্নামে একব্যক্তি বাস করিতেন। তাঁহার এটিধর্মে দৃঢ় বিশাস ছিল। তথন দেখানে জীষ্টিরদিগের উপর খোর অত্যাচার হইতেছিল। নগরের গ্রহে গ্রহে অন্বেষণ করিয়া কোথায় কে উক্ত মতাবলম্বী আছে তাচাকে বাহির করা হইতেছিল। আরকেডিরস নগ-त्त्रत्र मत्था এইরূপ গোলমাল দেখিয়া আপনার সমস্ত সম্পত্তি পরিত্যাগ করিরা নিক্টবর্তী কোন ছানে গমন করিলেন এবং निर्व्छान खार्थना, क्रेचब किसा जनक महार भार्ठ कविया ममबन ক্ষেপ করিতে লাগিলেন। এই কথা অধিক দিন গোপন बहिन मा। সাধারণ দেবভার মন্দিরে তাঁহাকে দেখিতে না পাইয়া নগরাধাক তাঁহার বাড়ীতে দৈনা ক্লেরণ করিলেন। छाहादा रमश्रक्ष वात छात्रिता देखाहात शहर, धाराम कतिम এবং ডক্সধ্যে তাঁহার এক আত্মীয়কে দেখিতে পাইল। তিনি আরকেডিয়সের সম্বন্ধে কোনও কথা বলিতে না পারার নগরাধাক তাঁহাকে কারাক্ত্ম করিল। আরকেডিয়স তাঁহার এই विপদের কথা শুনিয়া স্বয়ং নগরাধ্যক্ষের নিকট উপস্থিত हहेगा विनिद्यान,—"यनि ज्यामात्र जना अहे निर्द्याची वाक्तिक পুত্রবাবদ্ধ করিয়া থাকেন, তবে তাঁহাকে মুক্ত করিয়া দিন। আমি আরকেডিয়স স্বয়ং এখানে উপস্থিত হইয়াছি এবং कानारेए कि एवं रेनि कामात विषय कि हूरे कामिए न ना । " नश्राश्यक वितरनन,- "कामि छिहादकः धवः द्वामादकं कमा করিতে প্রস্তুত, যদি তুমি দেবদেবীর নিকট বলি উৎসর্গ কর।" আরকেডিয়স উত্তর করিলেন, "আপনি কেনন कत्रित्री धक्रण क्षाच कित्रिक्ट्म ? जार्गनि कि अजिप्रमिश्राक हित्नन मा ? ज्यानि कि मत्न करत्रन त्व मृक्रु। छत्त जामि कर्जनानात्व विविष्ठ हहेन ? नेवरंगचेवहे सामाव धान; ভীহার জন্য মুক্তাড়ে আমার পরম লাভ। "বেরণ শাকি ইক্রা উद्देशिन क्यमें, किस क्रिइष्डिर चामि चामात उनामा त्रवाटक व्यविष्येत क्षिएक गाँवियं ना। " बहे कथा क्षेत्रिया नगदांशक

क्यार वालता छेडिलान धानः (काम धान दानात वाला काम का विद्या का विद्य का विद्या का विद्

ं क्यापूर्णि मीक इरेरन स्वाबदकक्षित्रंग मान बेरम क्रेसरंबद मिक्षे का किका कविराम, अवर बखक दहिना बहेवान का नाव चीत्र वीना व्यंगविक कत्रिरान । क्षित्र सन्नामन कार्राटक वाह বিস্তৃত করিতে কহিল, এবং অফুলি হইতে আরম্ভ করিয়া কল্পর্যান্ত প্রস্থিতে প্রস্থিত ভাষা খণ্ড খণ্ড করিল। তৎপরে উহিতি শয়ন করাইরা পদের অফুষ্ঠ হইতে উক্লেশ প্রান্ত लिहे जाएग गमख कर्खन कतिन। चाफर्या देश्या ७ चानताबिङ নাইনের দহিত মেই বিখাসী নীর পুরুষ একে একে আপনার আৰ্থ এড়াক বক্ল ৰাড়াইরা দিজে লাগিলেন। তাহারা তাঁলার রসনা কর্তন করিতে বিশ্বভ হইরাছিল; তাই তিনি পूनः পूनः "अछ जामारक कान जिला लाख"--- এই विनश প্রার্থনা করিভেছিলেন। তথন তাঁহার শরীর এক খণ্ড কার্চের "यात्र त्रक्टल्लाटक चानिएक्टिंग। এই श्वनत्रविनात्रक मृथ्य दम्थिता नम्ब मर्नेक दुन्म धारः बद्दामनन ७ व्यक्त नवत्र कतिए शातिन ना। किन्द्र चात्रक्षित्रम त्महे मन थथ थथ चक्र श्रांकात्मत्र मित्क मृष्टिभाक कवित्र। यनिरामन,—"(इ व्यक्त विकास मक्ने ! ट्यामदारे ধক। কোমরা আৰু প্রাকৃতই উপারের হইরা গিরাছ। ওঁছোর ৰণি-স্কুণ হইয়াছ ধলিয়া তোমরা এপন সমায় বড় প্রিয় वस्य" व्यवश करणदत मकनटक मार्याधन कतिया वनिर्मन,---ভোমরা এই যে শোকাবহ ব্যাপার অবলোকন করিলে, ইহা হইতে শিক্ষা কর যে বাহার সমূধে অনস্ত জীবন প্রসারিত রহিয়াছে, ভাছার পক্ষে এ যক্কণা কিছুই নয়। ভোমাদের বিষ্কৃতা দেবভাই নর; তাহাদের পূজা পরিভাগে কর। বাঁহার জভ আনি সরিলাম ও ব্রুণা পাইলাম, তিনিই স্ভা দেৰতা। বে ক্ষবভার ভোমরা আমাকে দেখিতেছ, ইহার মধ্যেও তিনি স্মামাকে শাস্তি দিতেছেন ও রক্ষা করিতেছেন। তাঁহার জন্ত খুড়াই জীবন; তাঁহার জন্ত যন্ত্রণা সহ্য করাতেই প্রাক্ত আনন্দ। এই ৰলিতে বলিতে ভাঁহার সংজ্ঞা বিণীন হইয়া গেল।

প্রদেশীয় বান্মসমাজ।

বাগেরহাট।

ক্ষাৰ প্রমেশরের কুপার বাগেরহাট ব্রাক্ষসমালের উন্যতিক্ষা থাখোৎস্ব নির্লিখিত আকারে সম্পন্ন হইরা বিবাছে।:- ১পা মার ইইন্তে ই । ৩ দিন প্রান্ত প্রত্যেক বারীতে উবাকীর্ত্তন ৷

AN ALT ANTIA MINIS ANTIAN LINE ANTIAN ME MANAGE AND ALTE MANAGES ANTIANA BEAUTH MEATHER AND MINIS ANTIAN ANTIANA MINIS ACTOR TO THE BEAUTH AND A CLASS TREMANDE MANAGES ANTIAN ANTIAN MANAGES MERCHANICAL MANAGES

ক্ষিত্র বার্ষিকার। আভ্রেকারে ও বার্ষিক প্রকৃত্রি বার্ষিকার বার্ষিকার বার্ষিকার বার্ষিকার বার্ষিকার বার্ষিকার বার্ষ্টির বার্ষিকার বার্ষ্টির বার্মিকার বার্ষ্টির বার্মির বার্ষ্টির বার্টির বার্ষ্টির বার্টির বার্ষ্টির বার্ষ্টির বার্টির ব

৯ই মাঘ গোমবার। সন্ধ্যার পর সর্বাঞ্গৃছে উপাসনা ও সঙ্গীত হয়।

>• हे माच मक्कारात । श्रांकिः काट्य नमाक्क गृहह छे भागनी । नक्षाति भटत मकीछ ७ श्रार्थना इत ध्वर छक्क टेड्ड छ व कीननी नच्यक च्यारगांडना इहेग्राहिन।

১১ই মাথ ব্ধবার। সমস্ত দিনবাাপী সঙ্গতি ও উপাসনা হয়। এই দিন সন্ধারি পর স্থানীর কোন কোন ভ্রুলোক উপত্তিত ছিলেন।

১২ই মাঘ বৃহম্পৃতিবার। প্রাত:কালে সঙ্গীত ও প্রার্থনা হয়। সন্ধার পর "ধন্মের আবশুক্তা কি ?" এই সম্বন্ধে আলোচনা হয়। বাবু যজেশ্বর মঞ্জন বলেন ধর্ম মমুষ্যের পক্ষে স্বাঞ্জাবিক, মনুষ্য ধর্ম বাতীত কথনও বাঁচিতে পারে না। "ধর্মের আবশুক্তা কি গ" এরূপ প্রশ্ন কথনও কাহারও মনে উদিত হওয়া উচিত নহে।

১৩ই মাঘ উক্রবার। প্রাভঃকালে সঙ্গীত ও প্রার্থনা হয়। সন্ধার পর সঙ্গত সভার উৎসব ও আলোচনা হয়।

১৪ই নাঘ শনিবার। প্রাভঃকালে সঙ্গীত ও উপাসনা হর,
বৈকালে সকলে মিলিরা প্রথান হইছে প্রার ও মাইল বুরে
জরগাহী প্রায়ে গমন করেন। উক্ত প্রায়ের ওপার মধুরা
নাথ মুখোপাধ্যার মহালবের বাটীতে প্রার ও। ৪ ঘণী ব্যাপী
সঙ্গীত ও সংকীর্তন হয়। বাবু হরিনাথ স্থাস একটী
বক্ত করেন। তিনি বলেন বে মহ্বা ধর্মের নামে বুলা
আভ্রর করিরা কথনও শান্তি লাভ করিতে পারে না।
পরমেশরে প্রারুত বিখাস ও প্রেম রাধিরা সামুদ্ধাবে হার্মা
না করিলে সংসারে কথনও পান্তি পাওরা বার না। স্থানীর
একটী অধ্যাপক এবং করেক ক্রম ব্যাহ্মণ ভ্রাহার
ছিলেন। ইহার পর হার্ম ব্যাহার বার্মিতে ক্রম্মের ক্রমের

and a large week

TOTAL TOTAL

तिक रिका पान स्टार वार नारिकान वर्ष प्राचित्रके विकास स्थान स्थान

১১ই বাষ। সমস্ত দিনবাণী উৎসব। প্রাতে উপাসনা পরে কোন কোন ধর্মগ্রহ হইতে কিয়নংশ পাঠ। মধ্যাহে প্রার্থনা ও কীর্ত্তন। অপরাহে প্রার্থনা ও ধ্যান। তৎপরে ধর্ম পৃস্তক পাঠ ও ফীর্ত্তন। সারং-কালে উপাসনা।

২ই মাৰ। প্ৰাতে, উপাসনা, অপরাকে "ব্রাক্ষণর্ম" পাঠ ও ক্রীর্ত্তন। সারংকালে উপাসনা।

ত্বীষ্। প্রাতে উপাসনা, অপরাকে "ব্রাক্ষণকোর ব্যাখ্যান" ও "বীবনালোক" পাঠ ও কীর্ত্তন। সারংকালে উপাসনা।

এই মাখ। উষাকীর্ত্তন। পরে উপাসনা। অপরাক্তে কীর্ত্তন
ও নানা বিষরের আলোচনা। সারংকালে উপাসনা।
এই মাখ। প্রাত্তে উপাসনা। অপরাক্তে নগর সংকীর্ত্তন।
প্রার্ত্তনা প্রবিষ্টেড হইরা "ভোরা আররে
ভাই, থাভিস্ না আর মোচেতে ভ্লে" এই স্থলীর্থ
ও লগরত্বালী গান্টী নগরের অভ্যন্তরে কীর্ত্তন
করেন। সন্ধার পর রুত্ত ক্ষন-সমাকীর্ণ সংকীর্ত্তন
সংখ্যার সমাজ গুল্লে প্রভ্যাবর্ত্তন করিলে উপাসনা
হয়। উপাসনার পর উপস্থিত আত্ মঙালীকে

উৎস্বের করেক দিন স্বাগত আৰু আঁত্র-বিসকে কিছু কিছু প্রসা দেওয়া হয়। বাবু মতিম ভক্ত রজোপালার ও বাবু মন্ত্রথ মোহন বাস উপা-প্রায় ভাষা করেন।

entun ducun prin at Gene broce almacele alle enfou cultes fureune ucacul un abru fucultus uburca, ann fo dentuntu number ubis albanca

क्ष्मिक क्षेत्रकारिक व्यक्तिक अपने व्यक्तिक व्यक्तिक

এই কেন্দ্রারি প্রিবার—চট্টনানে উপরিক হট্যা অপর্যাত প্রার্থনা ক্রান্তে উপাসনা করেন।

ed courses stand—dire cold nicks different

अहर क्यांगान प्राचात स्वाहरू स्वतास क्यांगान क्रिक्ट साह्य क्यांगान प्राचात स्वाबहरूत पाणिटक नाकि साहिक केनानमा वस ।

১২ই কেন্দ্রারি মললবার—প্রাতে বারকানাই গুপ্ত নহাশতের ন্ত্রীর প্রাক্ত উপলক্ষে প্রথমতঃ পোল পাহাতে উপাসনা হয়। তথা হইতে পঞ্জাকপতা বহিলার খাশান হানে আগমন করত, উাহার ও উাহার ব্রভ স্থানের আছার কল্যাবার্থে প্রার্থনা করা হয়। এই উপলক্ষে বারকানাথ বাবু স্মাক্ষে প্রকৃষ্টি টাক্ষা ও সরিত্র লোক্ষিপকৈ কিছু কিছু বান করি-রাছেন।

১৩ই ক্ষেত্রারি বুধবার-প্রাতে ছ্র্যাদাস বাব্র খালা বাড়ীতে উপাসনা। বৈকালে সমাজ গৃছে উপাসনা হয়।

১৪ই ফেব্রুরারি বৃহস্পতিবার—ছই বেলা সমাজে উপাসমা হটয়াছিল।

>৫ই ফেব্রেয়ারি শুক্রবার—প্রোচ্চে সাধারণ উপাসনা, বৈকালে কালিমালীয় কুল গুৱে "ভারতে ধর্মের বিকাশ" বিষয়ে বজুতা প্রদাস করেন।

১৬ই ফেব্রুয়ারি শনিবার—প্রাতে নববিধান এযাজের সভা-দিগের সলে কৈণাস বাব্র বাসার উপাসনা করেন! রাজে সমাজ গৃহে উপাসনা হয়।

অধ্যক্ষ সভার ৪র্থ ত্রৈমাসিক অধিবেশনের কার্য্য-বিবরণ।

বিগত ১০ই জাত্যায়ী বৃহস্পতিবার অপরাক্ত খাট্টকায়
সময় সিট কলেজ গৃহে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অধাক
সভায় চতুর্ব বৈনাসিক অধিবেশন হয়। বাবু নম্মুখ্যন
সেন সভাপতির আসম গ্রহণ করেন। নিয়লিখিড ব্যক্তিপণ
উপস্থিত ছিলেন—

वाव् धक्रवत्रन महलाम नीने, वाव् वात्रकामाथ महलानाथात्र, वाव् नाधक्षि त्यन, वाव् व्यापक्ष त्य, वाव् व्यापक्ष त्य, वाव् व्यापक्ष त्यन, वाव् व्यापक्ष त्यन, वाव् व्यापक्ष त्यन, वाव् व्यापक्ष व्यापक्य व्यापक्ष व्या

्रम ७ वर देवनानिक क्रिक्सिट्स्म् वरः वक्के क्रिस्स क्रिक् (रामस्मर कार्या-विराध सकत गठित के सुरीक रहेन

বাৰু সীতানাথ মন্তের তথ নিয়মের (গ) অংশ স্থানীধন করিবার প্রজাব বিভাগ, করিবার কর অবাক স্থান থে গিলের ক্ষিবেশন ইইবাছিল, তাহা নিয়ম বিক্ত মোৰ করিবা বাব্ আদিনাথ চাইাপাধ্যার এবং বাবু বারকানাথ গলো-পাধ্যার তাহার কার্য সঙ্গলে আগন্ধানের বিগরীত মত নিনি-নক্ষ করিবার কর সভাপতির আগন্ধ প্রার্কী করিবেন্দ ।

সভাপতি মহাশয় শীমাংসা করিলের বে এ বিশ্রীত মঞ্জ বিশিব্য হইতে পারে না।

বাবু বারকানাথ গলোপাধ্যার সভাপতির এই নীমাংসার প্রতিবাদ ক্রিলেন।

ৰাৰ্ হীরালাল হালদার প্রভাব করিলেন এবং বাৰু চণ্ডী চরণ ৰংশ্যাপাথার পোষকভা করিলেন বে কার্য্-নির্বাহক লভার হর্ষ বৈথাসিক কার্য-বিবরণ ও আর ব্যায়ের হিলাব গৃহীত হউক, এবং বাবু নগেজনাণ চট্টোপাথার ও বাবু নবনীপ চক্ত লাসের প্রচারের বিবরণ আৈমাসিক কার্য্য-বিবরণের সঙ্গে সংযুক্ত হউক। প্রভাব গৃহীত হইল।

ছিরীক্ত দইল বে বাবু শরংচন্ত বন্দ্যোপাধ্যার, বাবু জরকৃষ্ণ বিজ, বাবু কালীচন্ত বোবাল, বাবু মধুক্দন সেন, বাবু গুরু
চরণ মহলানবিস, বাবু হীরালাল হালদার ভেন্ট-গণনাকারী
সব-ক্ষিটির সভ্য এবং বাবু শশিভ্বণ বস্থ ভাহার সম্পাদক
মরোনীভ হউন।

নিয়লিখিভ ব্যক্তিগণ সাধারণ আক্ষসমাঞ্চের সভ্য মনো-নীত হইলেন:—

বাবু সীভানাথ দভের প্রভাবে ও বাবু হরিমোহন বোবালের পোবকভার বাবু রজনীকান্ত গুহ, বাবু হ্লুবিনাশচফ্র বোব এবং বাবু দেবেজনাথ চৌধুরী।

বাৰু শশিভ্যণ ৰক্ষর প্রস্তাবে এবং বাৰু ছরিযোহন বোৰালের পোষকভার বাবু সভীনাথ চট্টোপাধ্যার, এবং বাবু শুস্চরণ মহলানবীসের প্রস্তাবে ও বাবু হীরালাল ছালন্যরের পোরকভার মিঃ সাঁহেব স্থালি।

মন্ত্র বাব্ কৃষ্ণনাল রানের লিখিত একথানি পত্র শঠিত হইল। এবং দ্বিরীকৃত হইল বৈ বিচারের জন্ত ইহা ক্যার্য-নির্বাহক সভাতে সমর্পিত হউক।

मार्थात्रण खाकामगाटकत विटमय खिस्टरमटनत्र कार्या विवत्रण ।

ক্ষাক রভার বারা সাধারণ রাজসমাজের নির্মায়ণী সংলোধনের অভাব বিচার করিবার অভ, বিগত ১২ই আছু-বারী শনিবার অপরাফ ৬ ঘটকার সময় সিটি কলেল গৃহে সারাজ্য একে সমাজের এক বিশেষ অধিবেশন হয়।

वान् श्रावकामान गरमानाशाय वाषात कविरमत स्थार नाव् भन्तिकृतन त्रक्ष रक्षात्रका कृतिरमत रम नावादन वाषा महारकत निवना ननी नारमाधन नवस्ति वाकारवत्र विकास कत्र व्यक्त भार केलान कालाहक कर काला कि आकार कारणानक कारणान ता नावादन आफ नवादल निवस्तादकी कालाविक नवादों आकादिक विवह नक्त न्यारिकादक क्षण कालाक नवादक कर्तन कवा वक्त । यात् व्हित्सावन त्यावास केलाव नवादन करवन।

क्रिप्रश्मन यात्राञ्चारमप्र शत करें क्षेत्राय गृरीके स्थे 🖰 🕬

পুকার আয়োজন।

 (इ मध्यत्र (१वछा । कृषि वक्ष्ये मध्यः, कृषि वक्ष्यः किछे। বাঁছার আত্মার রসনা একবার ভোমার মিটত্ব একটুকু আলায়ন করিয়াছেন, তিনি আর এ জীবনে ভোষাকে ভুলিজে গরুরেন না। এক কোঁটা মধু বেখানে পার, মধুকর বেমন *রোধান* হইতে নড়িতে চার না,—শতবার তাড়াইরা দিলে, মারিকে: छिड़ी क्रिल मक्न मञ्क्तिवा (महे थान्निहे निष्या थार्≉; ভোমার সহবাস গোলুপ ব।ক্তিও সেইরপ⊯তোমার সহবাস-রূপ মধুর রুসে বিভোর হইয়া ভোমার কাছে হত্যা দিলা পঞ্জিয়া থাকেন। সংসারের কড শতার কড আতামণ, কছ নিদারণ সভ্যাচার সম্বেও ভোমায় ছাড়িতে চান না। ভোমার মিট্রস্থ অরে অরে তাঁহাতে সংক্রামিত হইলা যার—ভোমার সহি-বাসে ডুবিয়া ডুবিয়া তিনি ক্রমশ:মধুর হইয়ায়ান। ভাঁহার বাকা মিট হন, ভাঁহার কার্যা মিট হয়, ভাঁহার চিতা। মিট হল; —তাঁহার সমস্ত জীবন মিট হইয়া যায়। কে তোমাকে কডটুকু আখাদন করিয়াছে, ভাষার জীবন দেখিরা স্পষ্টই বুল্লিভে পারা যায়।

তোমার মিইছ আছাদন করিয়া কেইই স্থার্থপর থাকিতে পারে না। চিরদিন দেখা বার সাধু সকল তোমার মধুর ভাষ উপভোগ করিয়া নিশ্চিত্ত থাকিতে পারেন নাই। কিসে জগতের সকল পাণী ভাণী সেই মিইছ জতুত্ব করিয়া জীবন শীতল করিবে এবং জন্ত প্রকারের সকল ক্ষুত্র ভূলিয়া বাইবে, এই জন্ত ভাহারা সর্বাদা চেই। করেন। বছু মেনন কোনও স্থানা পাইলে আপনার বছুকে না খাওরাইয়া ভূপে হইতে পারেনা, তাঁহারাও সেইরপ ভোমার মিইভাব অগতের সকলকে জন্তব না করাইয়ী স্থা হন না।

व्यक्ष । जरगारत धनन कि विदे यस सारक तारात जरम कामात कृतना कतित ? साम गारा मिटे नार्ता, साम कामा काम मार्ग ना। नरगारत मिटेकात कीतका सारक समक काराक शिक्ति नारे। ध त्व यक शावनीत सम्बद्धाः सामा सामाक्ष्मा विदेश स्थान किया किया मिले विद्यान किया कामात मिटेस स्थान मह। कामात महस्म स्थानक सारक मध्य तम गांव स्थान स्थान स्थान स्थानक सारक धनम गांवकवि-स्थान हासारत स्थान स्थान सामान

ALLEN AND THE REST OF THE PARTY OF THE PARTY

CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR O

वाक्षालक विके वस जनन क' किर्नाहन कान करिए नारे वाक्षा कावाहन किर्माह कर कान वान्न विन्न कर्म, काक्षा क्षित्रा, कल क्ष्में क्षाहा का वान के नारे ना। वाक्ष हाहा क्षम कार्य कार्य कारा का वाक्ष किन पित्रा लाका किर्माह कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कर कर्म लाजा, वल क्षम्याती। क्षित्र क्षित कर्म कर वह नहा वान, क्षित्मह मर्या क्षम कार्य हन। किन्न क्षम क्षम वह नहा क्षमारक कार्यक क्षम में क्षम क्षम क्षम क्षम क्षम ना। क्षित्मह मिन्न क्षम में क्षमान क्षम क्षम क्षम ना। क्षित्मह मिन्न क्षम में क्षमान क्षम क्षम क्षम ना। क्षित्मह मिन्न क्षम में क्षमान क्षम क्षम क्षम क्षम ना। क्षित्मह मिन्न क्षम में क्षमान क्षम क्षम क्षम क्षम क्षम क्षम ना।

হে বিইতার আধার! সেই বস্তুই ত তোমাকে চাই।

নি অমৃত, ডোমাকে আখালন করিরা আমি অমর হইব।
ভামার মিইতার প্রাণ এরপ পরিতৃপ্ত হইবে যে সংসারের

ক্রে কুলে বস্তুর দিকে আরু ফিরিলা চাহিবে না, অবচ ডোমার

াধুরতার কল্প এমন পিপাসিত হইবে যে চির্নিন অননামনে
ভামারই পানে ছুটিবে। 'লোভী পেটুক বেমন স্থরসাল বাদ্য

ক্যে পাইলে আনকো নাচির। উঠে, কে তৃপ্ত-হেতু রস্-অরপ

ক্ষের! আমার প্রাণ ডোমার অল ক্রে সেইরপ লোলুপ

ইবে! ডোমার মিইছে মজিরা, ডোমার সহবাসের মধুরতাতে

বিরা কবে আমি মিই হইরা বাইব, আমার জীবনও মধুর

হৈবে! তৃমি যে কেমন মধুর, কেমন মিই কবে আমি তাহা

কিত্তের লোকদিগকে ব্বাইতে পারিব! তৃমি আশীর্মাদ

কর।

প্রেরিত পত্র।

গঁত ১৬ই পোষের তথকোমুদীতে প্রেরিত পত্র গুড়ে শীৰ্ক বাবু ভগবতীচরণ দে খ্যাকরিত এক থানি চিঠি প্রকা-শিত হইরাছে। তিনি ঐ চিঠিতে যে করেকটা বিষয়ের অব-ভারণা করিয়াছেন সে-সম্বন্ধে আমি কিছু বলিতে ইচ্ছা করি। ভাষা নিয়ে নিবেদন করিতেছি।

১৮০৯ শকে আবাঢ় মাসের তথ্যোধনী প্রিকার ব্যন্ত ও ব্যাহার করিয়াছেন তাহা জানি না কিছু মন ও আছা প্রিক্ত ব্যাহার করিয়াছেন তাহা জানি না কিছু মন ও আছা প্রকৃত ব্যাহারীর কালের হিন্দু ভার্গনিকগণ ইয়ার পূথক পূথক ক্ষাহারীর ব্যাহান হিন্দু ভার্গনিকগণ ইয়ার পূথক পূথক ক্ষাহারী ক্ষাহান হিন্দু হার্থ, স্বেষ্ট্র, মনভা, প্রকৃতি সংগা-ক্ষাহারী ক্ষাহানীয়া ক্ষাহার ক্ষাহান বিদ্যাহারী ক্ষাহারীয়া ক্ষাহা

केंद्रान्यक न्यूनक व्यक्ति केंद्रान्य विश्व विश्व है स्व विश्व केंद्रान्य केंद्र व्यासारमञ्जू सरवाद्यासीका प्रवेटी विकास मध्याय रविषय व्यासका बाह्य । अवः बिट्रक मुश्माह मानमा वनिरक्षरक, वेक्कित कृषि नमूबत চরিভার্ক কর ; বন, সান; তুখ সম্পর ইভাবি বাঞ্চক ; বংসা-दिव ट्यांन विमानिकाव गर्व रहा। अनव विटक विश्व अपन विवासिक्षा । व नश्मादबन सूच किन्नू व नटव, ममुबन समान, हेशहरू कुक्क कतिया मध्यात्वतः निकृष्टे दर्जानः विमानिजाव वाजना शक्तिकाण कतिया विश्वच कान, त्यांम, जानरंग निमक इक्षा अहे त्व भागात्वत्र अंखरत्रत्र मत्वा निक्टे व वैर्वेट এব্ভির সংগ্রাম স্ক্রি। চলিতেছে সম্ভব্তঃ প্রাচীনেরা আন্ত্রীয় 🧸 बह क्षर्याक बृष्टिमेरक यम ७ भारताक वृष्टिमेरक जाया विश्वा लाहात्र कतितारक्षम । खुक्तार हेराहे काम स्वाय (मधिक माहेत्वहि ना, जात्र वाथ हत्र वामता व हेरा जनी-কার করিতে পারিবেন না। পশু, পদী ইত্যাদি নির্ভঃ দীব দিগের ধর্ম প্রবৃত্তি প্রফ্টাত ভাবে আছে কিনা জানি না किन छोड़ारमन यथन सूथ हुःथ वाथ आह्य छथ्न छोड़ारमन (य यम चाह्य छाहा नकताहे अक वात्का चीकात चतिरवर्ते। ভাহাদের ধর্মপ্রত্তি থাকা বা না থাকা, ভাহাদের উন্নতি चारक कि नाहे व विषय प्रश्निमाश्त्रा ना बहेरन मस्त्वात सर्व गांधानत (कान क्षकांत्र वार्षाण हहेटल भारत ना। छावे वना वाह्ना (य यथन ভाशामित मत्या चात्रात अवारण चर्याय मन मुष्टे इंदेर्डिक् छथन (य चनद्राःम वर्षा অপরিফুট ভাবে রহিরাছে ভাহাতে আর সন্দেহ নাই। জন विकारनत नित्रमाञ्चनारत ज्ञारम ज्ञारम छेडार्डि इटेर्डर ए व्हेरव ।

বিতীৰ কথা-পুনৰ্জন্ম আছে কিনা ? ভগবতী বাবু পুন-র্জন্ম কি অর্থে ব্যবহার করিয়াছেন 💡 পুনর্জন্ম কাছার 🤋 শরী-दबन ना चाचात ? धाषम भवीत मदास शूनर्भवा मद्भाव ना, कात्रण यदिया (शरण नदीरदद भद्रमान् गम्हि भद्रमान्ट मिनिया বার স্তরাং ইহা বলা নিপ্রাঞ্জন। বিভীর আত্মা স্বত্ত পুনর্জন্ম, ইহাও অসম্ভব; কারণ হিন্দু দর্শন কর্ত্তাগণ আত্মার 💂 পুনর্জন্ম স্বীকার করেন না। তাঁহারা ববেন আত্মার একবার লনা হয় কিন্তু ভাহার স্কৃতি ছড়াত ফল ভোগের মন্ত সংসারে प्तः भूतः (पर शादन करतः, क्षताः अत्र धकवारतत्र (वने एकर चौकात करतन मा। अहे चारन किन्तु । द्वारवात अक्षण । किन्द अथन क्षत्रं रहेरण्डक् रव काका जूनः भूनः (तर धात्रव करत्र किना ? भागात्र विविध्नात्र खाल्यता (य युक्ति त्रनः, छाहाई ष्याण, देश ष्यकिक्षिर कन्न बनिन्न छेड़ाहेन्न निर्देश निर्देश খাৰরা খাখা বলিলে কি বুঝি,—খাখা জান, প্রেম, ইচ্চা স্থলিত একটা হৈতভূ বস্ত। আন হাড়া সাল্লার অভিন সভবে मा, रायम रच्यारीन वृष्ठ चन्छर, रखमिन सामरीन चार्यात चनखर। चाचा अनिरनरे काम वर्ष द्वि। काम ७ चाचा अकरे--कानरे जायात जिल्ह, युखताः खारम वाश मा बाटक काका चाचारकक बादक मा। क "चावि" कहे कथात चलिएहे

ी व निषयक नारियांक निवारण चयुरवारियो पांत्रकात वर्गम नर्शका। नार्ग्य अनुवारताक के बाद बीकानाम वरणक कृत "स्ववस्थिताना" जातक देशको वरियोग्य ।

कारम, जानि जामार वानिएक के के ता बाहा है और काम भागारक कृतिश वर्षार "मावि भावि" वरे कान कृतिस আমার অভিত্ব অসম্ভব, স্তরাং আছার প্নঃ প্নঃ পৃথিবীতে कामा मुद्धार स्टेडनः कार्य कार्य पत्रन नानित्य, कार्यन पत्रन ক্লামপুৰত। তাৰি পূৰ্বে ছিলাৰ এখবচ ভাষা আৰাৰ कारन गारे वर्षाय छात्रा कानिंना देश ऋतिरवासी व्यतका क्या के ज्ञामि शूरमें दिशाम क्यि "ज्ञामि शूरमें दिशाम" , अन्या जन्म मार्ड केंद्रा कि मुक्य ? ८० विगरकाह रव व्यापि शूर्वि हिनाम ? कान, लेक्टि तो कान वामान नारे वर्षार जानि जानिएउडि मा, ज्ञानार विमा कारन पूर्व क्या चीकात्र कत्रा कत्रना माखा। क्यात्र अंकी कथा, क्षवकी बावू (व बनिवार्डन (व "बाना कारनेव नकन कव। (बोदन कारन, रवोदनकारमञ्जूषानक कवा वृद्ध कारन विरायकः **জীমন্নতীর অবস্থান আমানের কি অরণ থাকে 🕫 বাত্তবিক** मक्त क्या प्रध्न थाकि ना। किन्न प्रात्क कथा प्रद्रन थाकि। विरमक्षः बानाकारमञ्जल वाभि, योगनकारमञ्जल राहे चामि, आवात वृक्षकारणत (गरे आसिरे। এरे य अविक्ति कानवाता ইছাভ লোপ পাইৰে না। স্তরাং পূর্ব ক্ষা, পর ক্ষা ইভ্যাদি আত্মার সূধন যে অবহা হউক নাকেন আমি যে পাঁকিব ভাষার আয়ু কোন সন্দেহ নাই। এই পানিত্ব জান বলি লোপ পার অবীথ "আমি ছিলাম" ইলা আমার পরতে ন। बारक खांचा बहेरल सामात्र मद्यक सावात भूकी समा वा भन समा কি ক্রিলা সম্ভবে ৷ "লোমি" এই জ্ঞান বাতীত বধন আমার जिल्हिन करने ना_{ल्डि}नर्छमान ८४६ भारेनात भूट्य "जानि हिनाम" बरे साम वयन सामात्र मारे, छथन शूर्व सम्मवानी निर्मत यूकि क्रिक्षिया मात्रवास विवास भावि । "भाग भूगा ७ कमाकन জোপের জোপদক্তা বিনি ডিনি আমাদিগকে কি কার্যোর ভয় कि क्व विष्ठदंबन, देश ना बानादेश विष्ठ भारतन ना। चाठावन नूर्व व्याप्तत्र कताकत व व्याप्त यथन चत्र व व्हेटल्ट मा कथम चाबि (व शृदर्स द्विनाम ना छाशव टकान मत्त्वर नाहे"। अहे (य যুক্তি ব্রান্থেরা দেন ভাষা বাজিক যুক্তি যাল, আমি ভাষাকে मुंगानाम युक्ति मान कति मा। या नमच मान मा वाकित्म छ লা বাকিতে পারে, কিন্ত "লামি ছিলাম---আমার অভিছ ছিল" 🙉 स्थान वृष्टि चांब्राय ना शांकिन करन शृंदर्स व्यामात्र कना ५७३। ऋहत्र ना ५७वा . ७करे कथा। क्षत्रहर, भूसंक्ष्यवातीगरनव कुक्किक किছू मात्रच चाटक बिनातो दवाब वत्र ना

खग्तको वाद्व एकोत कथा छेषत्वत गर्तकका ७ वस्तात वातीनकात नामका विवतक। कथन क्षत्र करे त छगवजी कात्र पानीनका कार्वात्क विवतक। कथन क्षत्र करे त छगवजी कात्र पानीनका कार्वात वात्र विवत त गतिमार्थ केर्यत्वत क्षतीनका कर्यात विवत त गतिमार्थ केर्यत्वत क्षतीनका कर्यात वात्र वात्र कर्यात कर्य

क्षेत्रहाराम सर्वित्वकात व्यक्तिक विश्व कारण क्षेत्र स्वितिक एकरण नाचित्रिक व्यक्तिक विश्व निर्मा त्याय एक। विश्व विश्व किरण व्यक्त स्वरण त्यं बंदन कक्ष कडिन विश्व त्याय क्षेत्र ना। वाहा क्षेत्रक अवियदिक चोमान संक्षा वक्ष्य कारण व्यक्ति क्षेत्राण कत्रियान केष्ण करिन।

> विद्यम् । अक्षानियाची (नम् ।

ত্রামসমাজ।

বর্ত্তমান বর্ষের জন্ত নির্দাধিত ব্যক্তিগণ সাবাহণ আছ সমাজের কার্যা নির্দাহক সভার সভ্য সনোনীত হইরাছেন। ক্রাচারীগণও পদক্তে সভ্য বলিয়া গণ্য হইবেন।

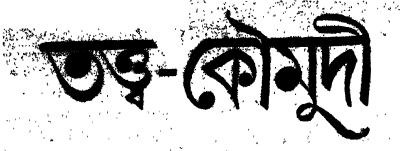
ভাঃ পি, কে, রার, পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী, বাবু হেরছচল্ল মৈত্র, বাবু ক্ষকুমার মিত্র, বাবু ছারকানাথ প্রলোগাধ্যার, বাবু রজনীনাথ রার, বাবু মথুবামোহন প্রলোগাধ্যার, বাবু হীরাণাল হালদার, বাবু ক্ষেত্রমোহন মুখোগাধ্যার, বাবু নীল-রভন সরকার, বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার ও বাবু মধুক্ষন সেন।

मर्वाम।

পরিবারে উপাসনাশীলতা—সম্প্রতি সাধারণ বাল সমাজের সভাগণ করেক বার একত্রিত হইরা কি কি উপারে বালপরিবারের মধ্যে উপাসনাশীলতা প্রতিষ্টিত করিতে পারা বার, সেধানে তৎসবদ্ধে আলোচনা করা হয়। আনক উপযুক্ত উপারের কথা তথার আলোচিত হয়। এই সকল উপার কার্য্যে পরিণত ইইবার আশা আছে।

লালা রজ্বং বিহারী—কিছুবিন পূর্বে প্রকালিত হইরাছিল বে সামানের বন্ধু লালা বন্ধ্যং বিহারী একটা পুত্র এ একটা কলা রাখিরা হহলোক ভাগে করেন। আর্ত্তা একণে রংখের সহিত জানাইতেহি বে তাহার কলাও বন্ধা রোগাক্রান্ত হইরা মৃত্যুমুখে পভিত হইরাছেন। প্রবেশর এই পরলোকগভ আন্ধানিগকে শান্তি ও ভাহার প্রটাকে বল বান কলন।

আদ্যুত্তীত্তা—আমানিগতে হংবের সহিত প্রকার করিতে হইতেছে বে ভিছুদিন পূর্বে বাবু রার্ডক আন্ধ্রী মহাপরের পত্নীর মৃত্যু ফইরাছে। সন্তবের অভ কিনি মক-শের বিশেব প্রভাৱ পাত্রী ছিলেন। তাহার আগান কল্যান্তর অভ এবং পোনাকুন পছিবারের পাত্তির অভ আহমা ক্রীক্রের নিকট প্রার্থনা করিতেছি। মাত ২৮০০ ক্রেক্রাটী ব্রক্তভিনার ভাষার আন্ধ্রাক্র সম্পন্ন হার্ড বিরাজে। অনুসাম্প্রকার ক্রিক্রানার করিক্রানার উন্যান্তর ক্রেক্রানার



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

একাদশ ভাগ। ১৮১০ শক।

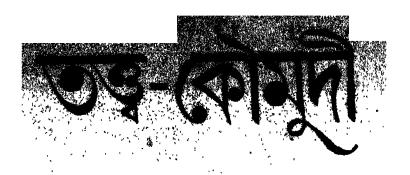
সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের অমুমত্যমুসারে প্রকাশিত।

কলিকাতা

১৩নং কর্ণওয়ানিস্ ব্রীট্ প্রাথমিসন প্রেসে জীকার্তিকচক্ত দত ধারা সুদ্রিত ও ২১১ নং সাধারণ প্রাথসমালের কার্য্যালর হইতে প্রচারিত।

অভি ব্যাপন নুদ্য ৮০, অজিন বাৰ্ষিক নুদ্য কলিকাভার ২০০ নক্ষাল জ

		There is a second of the secon	i Sati
₹	.64	াণ্ বরূপ	40, 44, 14
ब्रह्मांक जनस सीवन	274	त्वारनव मारव धर्म	, 16
-मांबाचा	>9€	প্রকৃত ধর্ম	386
हर्वाणा	५१ २	প্ৰতিষা বিসৰ্জন	>43
ক সভার ফুইটা অধিবেশনের কার্যা বিবর	4 200	পণ্ডিত শিবনাথ শান্তীর পত্ত	. 284
क म्हात वर्ष देवमानिक व्यक्तियातन का		প্রাণকুল ভালি দিব	<i>>⊌</i> *
ৰ্য্য ও মণ্ডলী	65	প্রবোধ	259
रिट व वाक्रिक	ड ंद, ১२७	পৌরাণিক আখ্যারিকা	
রা, কার হেংক	>->	আন্ধাসমান্তের কার্য্য ও ভাহার ঐ বোবেগান্তিরানের ভূতপুর্ব সম্পাণ	
নালের বরুস কত	*****	বোৰেগা।ব্যাহনের ভূতপুন্দ সন্পা। ব্রাহ্মসমাব্দের উৎপত্তি ও উন্নতি	१प ज्याचा पाबूदम्या
गांचिक देनक्छ।	228		>२०, २४, १४४, १४५, १४५ >२०, १४४, १४४, १४५
ার সাধীনতা	556	\$\$\$, 2.0, 236, 226, 268,	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
-कान ७ विवृत्र कान	> *> , > 1 >	ভ্ৰাহ্মসমাল কি করিতেছেন	84
# ⁴	20 E	ত্রাহ্মসমাজে ত্রহ্মচর্য্য	
मनी सर्वार जेक्स्य स	२ ०७ २७১	बिवाट्टन छेथहान	« 9
হোর উপদেশ কিন্তু প্রস্তুত্ত	₹ % 5 ₹%	ব্ৰহ্ম চৰ্য্য	€9
জিত পুরুষ রণেট বিখাসের পরিচর	289 293	বিধানসঙ্গীত	44
प्रतिक विकारनाम भाषात्र ह्योश	206	বিখাস ও বাহাম্ঠান	>•8
^{বে।স} রর উদার বিধি	200	ত্র ক্ষানির্ণর	34
সম ভাগ গাগে না কেন ?	>>@	विविध সংवाम	١٥٨, ١٥١
गमा काम भारत सा ८२स ! गिक-श्रव	526	বান্ধবৰ্মাজ ১১৮, ১৩০, ১৪৪, ১	064, 344, 340, 369, 202
ধর্মজীবন ও কুদ্র কর্ত্তব্যপালন	386	₹58, ₹₹७, ₹₡∙, ₹9७	
ष्टि मारचादनव	२३৯, २८১	বাদ্যসমালে হিন্দু প্রতিক্রিয়ার ভাব	589
ন সংগ্রান্ত	98	বোলপুর শাস্তিনিকেতন	• > 55%
র জীবন	59	ত্রন্দ্র পা	. 392
ত উদারতা	98	বিনীত প্রেম	728
ার পূজা	১৩৭	ব্ৰসাধন	244
রগর ত্রাহ্মসমাজে বিবৃত উপদেশ	59@	ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিশ্বাদ	२५२
। ও বা রণ	590	ত্রশোৎসব	>>
লভ দি .	>8	বসস্থ চিন্তা	•
	5ab, 20a, 25a	ব্ৰাহ্মসমাৰে কেন আছি	
हर्दना किंद्र ?	559	भ्गा थाथि ३२, ६३	, 1 ২, ৯৬, ১২•, ১৩২, ১৬৮,
1	2 <i>6</i> 4	যুগধৰ্ম	ર
গ ও লাভ	> 6	যুগ সংগ্রাম	२७२
	२०२, २३६, २२४	রোগ ও প্রতিকার	>>>
শ্রেণীর সাধক	२७৮	८ त्रामन	299
প্রচারকের শক্ষণ	82	শত্ৰু কয়জন	>60
महत्व रहा ना	8 • 1	नाधात्रण द्वाञ्चनमारवत्र कार्यानिक	াছক সভার ১ম তৈমাসিক
রাথ	₹•€	कार्या विवत्रण	৬, ৮১, ১৮৭, ২২৪,
ोत्र	295		ta, 95, 68, ae, 50%, 5 0 0,
ন পুস্তক * ৩৫ হৰ্ষোৎসৰ	, be, 3.9, 228	२ ¢ २, २ ७ ८, २ १ ७, २ ৮৮	•
(বোৎসৰ জনচি ন্তা	৩ ২	সাহায্য প্রার্থনা	₹8, 0 ७, 8₽, ১ •₽,
जन १५ स्था इंद्या	59 %	সম্পাদকীয় মন্তব্য ৪৬, ৫৮, १०,	
•	(military	>86, >69, >69, >65, >69,	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
ছত শিবনাথ শান্তীমহাশদের প্রতি বান্ধবস হার		সাধারণ ব্রাক্ষদমাজের দশম সাধং	
	6¢	সার ধর্ম	9 9
		সংগীত যোগ	&
	, < > >, 298, 269	সভ্যামুরাগ	, 256
पश्चिम जानगान '১৯, ७४, ४४, १०, ३२,	340, 340, 580,	ত্র। পানের বিরুদ্ধে মত	396
३४७, ३७४, ३५१, ३৯४, २३०, २२५ शिव क्लोरसामसं २, ३७, २४, ७९, ८८, ७५	45 <i>4</i> 7, 373, 388	সিন্দ্রিয়াপটা ব্রাহ্ম সমাজের উৎস	
1, 25 1, 26 1, 201, 214, 2+1, 250, 222	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		
	1 1 4 4 A	दिन्द् विश्वानद्वत अञ्च जाल्य वाति	中 <u> </u> 49.



ধর্ম ও সমাজতন্ত্র বিষয়ক পাক্ষিক শত্তিকা।

२४म जाम। २८म जरबा।

১৬ই চৈত্র হৃহস্পতিবার, ১৮১০ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬০।

বাংসরিক অপ্রিম মৃশ্য থাও মকপ্রনে তিতি পণ্ডের মৃশ্য ক

(त्रापन।

ै(द्वस्ट)

সংসারের শুরুজার
স্থিতে পারি না কার;
ছালক রাখিতে ধর্ম পাকে না বজার।
ক্রমনীশ ! কি হবে উপার গ্
বুঝি নাধ! হারাই তোমার!

একে ত নিজের ভার
জগদীশ ! সহা ভার,
সংসারের ভার পুন আমার গণার!
বল, দাস কেমনে দাঁড়ার,
পিতা! তুমি না হলে সহার!

সম্পাদকীয় মন্তব্য

ধর্মা মত ও ধর্মায়ি।—ধর্ম মত অপরকে দেওর। সহজ কিছু ধর্মায়ি অপরকে দেওয়া সহজ নহে। জ্ঞানের পরির্ন্তন যত শীভা ঘটো ছালরের পরিবর্ত্তন তত শীভা ঘটে না। নিভান্ত মৃঢ় প্রকৃতি লোক ভির অণর সকলকেই একটুচেষ্টা করিলে কোন নৃতন সভা বুঝাটরা দিভে পারা যায়, কিন্তু হুদরে সেই সভোর বাক্ত অনুরাগ উদীপ্ত করা, ও সেই সভ্যের অক্স স্বার্থনাশ করিতে গ্রন্থক করা অতি কঠিন কার্ব্য। किकार रव भागरवत्र कारतात्र शतिवर्श्वन वर्षे छांहा निर्वन्न এরণ দেখা গিরাছে যে ত্রাদা সহাজের উপদেশে শত শত বৃবকের অন্তরে ধর্মীয়ি জ্লিয়া উটিতেছে সেই ত্রাহ্ম সমাজে এক ত্রাক্তি ৩০ বংসর গান ক্ষিতেছে অথচ তাহার ফদর পরিব্রিত হইল না। বে বান্ধ-নাধুর একটা কথাতে একজন পাপী পাণ পথ হইতে ফিরিল, নেই ভাষ্ণাধুর নিজ সভানগণ জাহার জোভে প্রভিপালিত व्हेंबोध रन स्थि व्यास व्हेंग ना। वह सम्रहे यहांचा हेगा वनिवाहित्यन देश काकारमंत्र बाह्य छात्र क्यांन विक वित्रा मारत, क्यांन विक निवा यात्र द्वरहरे चानिएक शाद्य मा ;

ভবে সুগভাবে হুইটা কথা বলিতে পারা যার। অরির সংস্পর্ক বা ব্যক্তীত অগ্নি অলে না। বিভীর ক্ষরটা অলিবার উপযুক্ত না থাকিলে অলে না। বাহার নিজের অন্তরে অগ্নি নাই; তিনি সহস্র চেটা ঘারা ও অপরকে ভাহা দিতে পারেন না। বিভীয় নিঃখার্থভাব ও সরল সত্যপ্রিরভা বে অন্তরে নাই, ভাহা আর্জ কার্চধণ্ডের ভার অনেক প্ররাস পাইলেও ভাহাতে অগ্নি লাগে না।

প্রকৃত ত্রাক্ষ প্রচারক কে ?—পূর্ব্বোক্ত বিষয়টা বিদ্ সত্য হয় তাহা হুইলে ইহা হইতে আর একটা গভীর প্রশ্ন উবিত হইতেছে। প্রকৃত ত্রান্ধ প্রচারক কে ? ত্রান্ধর্ম প্রচারককে ব্ৰাহ্মধৰ্মের মত সকল লোককে বিশদ্ধণে ব্ৰাটয়া দিতে হইবে; স্তরাং তাঁহার জ্ঞান উজ্জ্ব থাকা চাই। জ্ঞানের বিকাশ ও উন্নভির অস্ত শিক্ষা সহায় স্থতরাং তাঁহাদিগের শিক্ষা লাভ করা আবশ্রক। বুঝাইবার শক্তির অভাবে নিজের অন্তরত্ব কান অপরকে দিতে পারিবেন না ; স্থভরাং বুঝাইবার শক্তি অর্থাৎ ব্যাখ্যাশক্তি ও বাক্পটুতা থাকা আবঞ্চক। যদি স্থাশৃকা ব্যাথ্যা শক্তি, ও বাক্পটুভা এই ভিনটী ঋণের একতা সমাবেশু হর ভাষা হইলেও যথেষ্ট হইল না। তিনি বিশ্বরণে 🚎 धर्म्बत यक वार्था कतिर्देष भातिर्देश ; रनारकत मस्नर 🖼 म করিতে পারিবেন; ভর্কবুদ্ধে প্রতিপক্ষণপকে পরাস্ত করিরা জয় পত্র লাভ করিছে পারিবেন; এ সকলি হুটবে কেবল একটী বাকি থাকিবে। লোকের অন্তরে ধর্মায়ি প্রজ্বলিত করিতে পারিবেন না; ঈশ্বরামুরাগকে উদ্দীপ্ত ও স্বার্থনাশ বাসনাকে क्षावन कतिरा भाविरवन मा। यनि **अंगेरे अवभिष्ठे बहुन ७**रव অপরগুলি থাকিয়াই বা ফল কি ? ত্রক্ষঞানে পরিণক কিন্তু ব্রহ্ম-প্রেমে হীন এমন হৃদরেধর্ম বাস করিতে পারে না। সেথানে সংসারের নিকৃষ্ট কামনা ও রিপু সকল অবাধে রাজত্ব করিতে পার। অতএব সেরপে প্রচারে কিছুই লাভ নাই। এজয় व्यवादरूत मर्नेद्धकं व्यादायनीत 🖦 ७३ एर जिनि निष्य प्रदि-भागी वाकि,नवकीवन खाख माक बहेरवन ; जिन अक्र लाक त्य कार्रात्र मश्करम काणिया । लाटकब खनटब काळन नाणिया याच । বরং এরণ বেখা গিয়াছে যে একলন শিক্ষাও বাক্পটুতাতে व्यक्त वाक्ति वर्रात, क्षित्र वर्त्तावित्व आत्र वेतीश, अज्ञल वाक्तित

বারা অনেক স্থানিক ও সহজা ব্যক্তির অপেকা অধিক কাজ হইলাছে। তাহার ঈশবব্যেন, ব্যাকুলভা ও বৈরাপ্টোর সংস্পৃতি আসিয়া অনেক লোকের হুদ্ধ পরিবর্তন হইলা গিরাছে।

পরিবারে ধর্মাগ্রি—এই সলে আর একটা প্রশ্ন উবিভ हरेटल्ट्ड। धर्माति **এর**ণ জিনিय सम स्व केखनाधिकाती-पर्व मुखानिविश्राक : विका वास्त्री याव। वर्षमान आक्राग्राव ष्यात्म नवषीवन व्याखं हरेत्रा ष्यानियाद्यन । सम्बद्ध दय धर्मावि পাইরাছিলেন, তালার বলে অনেক ফ্লেশ সভ্ করিবাছেন। कांशाता कि हेक्का कतिरम जाननारमंत्र कमरवत धर्माति नढान विश्व किया याँगेष्ठ शास्त्र ? अ छ विवये मण्यन नरह द क्षेत्रेरणत चात्रा व्यथाक नियुक्त कतिता नकानमिरशत क्रम त्रांथित्र। বাইবেন। সন্তানগণ তাঁহার সহিত বাস করিয়াও ভাঁহার खेशासम मर्कास स्रवंग कतिया जाँशांत्र मछ मकन खंदग कतिएक ॰ পারে কিন্ত ভাছাদের ছদয়ে ধর্মায়ি কিরূপে জ্বলিবে ? মনে ৰুর এক জন ব্রাক্ষের সন্তানগণ পৌত্তলিকতা মানে না, স্কাতি-(छम् मारन ना, खी निका ७ खोचारीनछात्र नकनाछी, मानक সেবন বিরহিত, এক মাত্র নিরাকার প্রমেশ্বরকে মানবের खेशाजा बनिया कारन, हेहार्टिह कि कामना नद्ध हेहर रय তাহারা যাতা পাইবার পাইয়াছে? এই ছবির আর এক দিক দেধ-ক্লিখনে ভাগাদের অনুরাগ নাই; পিতার সময়ে वाड़ीएंड रव शांत्रवादिक डिशागनात निवय हिने छाहा ज्लिता निवारक ; छेशामून। मन्तिरत रक् अकरे। यात्र ना ; विरमय विरमय সমরে এক আধবার যায়; ত্রাহ্ম সমাজের কার্য্যের সাহায্যার্থ অর্থ সাহাযা করিবার প্রবৃত্তি নাই সে অর্থ বেশ, ভূষা, রজ-ভূমিতে ব্যয় করে। ইহারা ত্রাক্ষের সম্ভানের আদর্শ কি না ? মনে कतन व्यामदा मकरन এইরূপ পরিবার র। ধিয়া যাইতেছি, ইহা ভাবিয়া বর্ত্তমান ব্রাহ্মগণ স্থাপে মরিতে পারেন কি না? হয়ত चारतक बाक्ष विनिद्यत, यनि श्रेष्टात काबाङ चासूत्रांग ना शांकिल **ভাগ হইলে ড কিছুই রহিল না। ইহাই কঠিন কথা—ধর্মারি** यनि काशास्त्र कार्स कार्यिया याहे एक ना शातिनाम करव व्यात যাহা রাখিরা যাওলা হইল সকলি অসার। এই জন্ম ত্রান্ধ মাত্রেরই গুরুতম ভাবে চিগু করা কর্ত্তব্য কিরণে তিনি স্বীর পরিবার মধ্যে ধর্মাখি রাখিখা যাইতে পারিবেন।

কৃশনের পরীকা।—এক ব্যক্তি সর্বনাই মুখে আকালন করিত। কোন রাজসন্তীর প্রশংসা হইলেই সেবলিড, যে উহা আামও পারি, একবার নিরম বাঁধিরা লইলে কলের মত কাল চলে। একটু চতুর ও সর্বতোদশী লোক হটনেই ও কার্যা চালাইতে পারে। সেই আআভিমানী ব্যক্তির পিডা ভাগার এই আকালন ভানিয়া ভানিয়া বিরক্তির পিডা ভাগার এই আকালন ভানিয়া ভানিয়া বিরক্তির পিডাভ আবভাক বোধ হইয়াছে। ইহা ভাবিয়া তিনি চঠাং বিদেশ মালার অভিপার প্রকাশ ক্রিণেন, এবং আক্রনার ভারিয়ারীর এক এক আংশের ভারাবিয়ানের ভার এক এক

त्रहंबा छेनाव हिर्देश किक बोचार्किशनी पूरवा छेनाव व्यक्ती नामान बहरमह कांत्र निष्म । निष्म विरम्दन (नारमन, तम च्यानमात्र विद्यान नित्रों धक्केंचन वादत्र प्राप्त मध्यक्षन वादत्र कतिष्ठ बार्गिन ; वश्चवाद्धव नहेवा नर्यमा व्याप्तांतशस्यासः কাটাইতে লাগিল; প্রজাগণের উপর উৎপীত্ন করিয়া ভাষা-निशरक वोिवाच कविया कृतिन। किहूमिन शरव शिकांं. বাড়ীতে আদিলেন ডখন সেই পুদ্ধ অতিশঃ লক্ষিত। পিডা छोड़ाटक निकार छाकिया बनिरमन। क्रेंबि स्व वर्ष कर्णात कतिएक बढ़ बढ़ बाका चाक्राम हानाहरक भाव, वर्षन कि वृत्ति-ভেছ ? একটা সামাস্ত ভালুকের ভতাবধান করিতে পারিলে मा, এक्शन वारत्रत्र कारम मण्डन वात्र कतिया विगरन ; ताका মধ্যে ঘোর বিজ্ঞোহারি প্রজ্ঞালিত করিয়া তুলিলে। তুমি অভি অপদার্থ, অভিমান তোমার সাজে না। পিডার এই কথা अनिया (प्रहे मञ्जीन प्रशास अपभारत पूथ अवनक क्रिया রহিল। ব্রাহ্ম সমাজের কি সেই দশা ঘটিতে বাইতেছে না ? ব্রাক্ষেরা তুরী ভেরী বাজাইরা বলিতে লাগিলেন, আমরা ভার-তকে নবজীবন দিব,ভারত সমাঞ্চক নৃতন করিরা গড়িব, ভারত-ক্ষেত্রে ঈশবের সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিব। স্টশব এক কৌশব বিস্তার করিলেন তিনি আন্দাদগকে এক একটা কুত্র পরিবার निया विनात-- "आर्थ हेहानिशत्क नवधीयन ८५७। हेहानिश-কে ত নৃতন করিয়া গড়, তৎপরে সমগ্র মানব সমাজকে গড়িছে ষাইও।" আমরা এক একটা পরিবার পাইরা কিরূপ গড়িয়া তুলিতেছি ? যে জমি টুকু আমার নিজম, যাহার ভিডরে জায় (कह रुखार्थन करत्र ना, त्मथारनह यांच क्रेचरत्रत्र मिश्शामम व्यक्ति-ষ্ঠিত ক্রিতে না পারিলাম, তথন সমগ্র ভারত-ক্ষেত্রে ঈশ্বরের সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত করিবার আশাকি গ্রাশা নয় 🔈 বাহা দিগকে যথেচ্ছা মনের মত করিয়া গড়িতে পারি সে সম্বন্ধে বাধা দিবার কেচ নাই, ভাহাদিগকেই যথন নৰভাবে পড়িতে পারি-লাম না, তথন সমগ্র ভারতসমালকে গড়িতে বাওয়া কি श्रुष्टेजा नम्र १ याहाता पिनतािख हाट्यत निकटि त्रहिमाट्ह, जाहा-मिशरक हे यथन नवकी वन मिटल भाता (शन ना, जयन व्यक्करक নবজীবন দিবার বাসনা করা উপযুক্ত কার্যা নয়। এক একটী ব্রাহ্ম পরিবার ধর্মায়ি ধারণের এক একটী কঠাছ না হইকে अरमरम बाक्षधर्षं व्यठात हरेरव ना ।

বিখ্যাত খ্রীতীর সাধু সেণ্ট অগন্তাইনের জাবন চরিতে
এরূপ কণিত আছে, যে বৌবন কালে তাঁহার চণিত্র আতি
দ্বিত চিল। তিনি নানা প্রকার কুক্রিরাতে আসক্ত হুইরা
কালাতিপাত করিতেন। এজন্ত তাঁহার ধর্ম পরারণা মাডা
মনিকা সতত রোদন করিতেন এবং ঈশরের নিক্ট প্রার্থনা
করিতেন। প্রতি রবিবার ধর্ম অন্দিরের ভক্ষনা শেব হুইবে
তিনি শ্রীর আচার্যোর নিক্টে গিরা তাঁহাকে প্রের
প্রতি
প্রথিনা করিতে অনুবোধ করিতেন। আচার্যা মহালর আছি
রবিবার প্রথিনা করিবা করিবা পরিপ্রাক্ত হুইবা পরিস্কাল
ভ্রমণ

काविक मा -- दा मकादनक कके अंक सरकार केंगे मरकादन क्रममा वांत्रा बाहरव ना ।" समिका कार्यना कडिएक झाक्रियन या। অবংশ্যে বছম্মল পরে অগ্রাটনের মতি কিরিল, ভিনি শাৰ্মিক শ্ৰেষ্ঠ হইয়া উঠিলেন। ইহায়ই অন্নৱণ একটা বিষয়ণ লক্ষতি একখানি মার্কিন দেশীয় পরিকাতে পাঠ কয়। পেল। अक्ष्ममं धर्च नवावेश खोलांक और टाक्रिका कविवाहित्तम ৰে ভাৰাৰ প্ৰথম গৰ্ভে যে সন্তান জন্মিৰে সে যদি পুত হয় ভবে ভাষাকে ভিনি ক্লমবের নাম প্রচারের জন্ত উৎসর্গ করি-त्वन । चडेना क्राम छाहात शूकरे कवित । छिनि यथानगरत वश्च बाश्चबटक नियञ्जन कतिया शुक्रकीटक श्रेचरत्रत्र नाटम छेरनर्ग कतिरमम ; आवः जनविष जोशत धर्म निकात पिरक विरमव बरमारयांनी इटेरनन। किन्ह देनरवत्र धन्नि विक्रवना शूटांने ব্যোবুদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে ছাজিয়াসক ও ধর্মের বিজ্ঞপকারী হইয়া উঠিল ৷ তথন সেই রমণীর পতি ও আত্মীর স্বলনগণ তাঁহাকে বিজ্ঞপ করিয়া বলিতে লাগিলেন দেখ ঈশ্বর তোমার প্রার্থনা কিল্লপ গুনিয়াছেন। কিছু আশ্চর্যা এই কিছুতেই ঐ মহি-नात्र विश्वान विव्वतिक व्हेन मा, लाक छेनहान कतिरन विनि ৰলিতেন—আমি যত দিন বাঁচিব সেই প্ৰাৰ্থনা কৰিব, ঈশ্বৰ আমার প্রার্থনা অপূর্ণ রাখিবেন না, ভাহাকে কথনই পাপে পড়িয়া থাকিতে দিবেন না। এই বলিয়া তিনি রোজ রোজ প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। এদিকে পুত্রটী ক্রমে এত হরস্ত ও অত্যাচারী হইরা উঠিল, যে অবশেষে ভাহাকে সৈত্তদলে @বিষ্ট করিয়া দেশ হটতে বাহির করিয়া দিতে হইল। সে ব্যক্তি বচ্কাল নানা দেশ ভ্রমণ করিয়া আবার দেশে ফিরিয়া আসিল। সকলে ভাবিল, নানা ক্লেশে পডিয়া ব্ঝিবা তাহার হৈতক্ত চটরাছে ও চিত্তে গান্তীর্যা ভাবের উদয় হট্যাছে। কিছ কিছুট নছে: দেখা গেল তাহার চরিত্র পূর্বাণেকা দৃষিত হইয়াছে। ইহার অল দিন পরেই তদীর ক্লুননীর মৃত্যু হইল—ভিনি মৃত্যু শব্যাতেও পুত্রকে ধর্ম পথে ফিরিবার জন্ত चकुरत्राध कतिराम ७ क्रेचेबरक द्वारे धार्थमा बानावेरामा। ভাষার হৃদর পাপে এত কঠোর হইরাছিল বে ইহাতেও তাহার মন ফিরিল না। তৎপরে অনেক দিন চলিয়া গেল, আশ্চ-র্বোর বিষয় বছদিন পরে কোন এক বিশেষ ঘটনাতে তাহার হৃদরে নির্বেদ উপন্থিত হইল এবং তাহার জীবন এতদুর পরি-ব্রিভি হইল যে সে বজি সমুদার বিষয় কর্ম পরিভাগে করিয়া ধর্ম প্রচার কার্যো নির্যুক্ত হইল। লীয় মাডার প্রার্থনা পূর্ণ হইল। সেই মাডার বিখাসকে শ্র্মাণ ৷ ^মাহাতে সহিঞ্জা নাই, সে বিশাস বিশাসই नंदर ।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ে । আচরণেই বিশ্বাসের পরিচয়,।

(वर्ष) मध्य त्रिकेटक विष्युक्त इथहा माशूरवय चकाव नय। 'शुरु 'नशानवदी ज्यानिकाकारक कक स्वास्त स्थानमाय, साविका

क्रिकाल, असे विकेश क्रिकाल, आरमान क्रामान क्रिक ভেছে; সর্বান্ন পর্তায়াত করিতেতে, নিশ্চিত মনে বাশীর কাৰে আরোহণ করিয়া স্ত্রীপুত্র রাখিরা কত দূর দেশে গমন করিতেছে। ইছার মূলে কি লেখিতে পাওয়া করে। চিডা कतिरागरे भक्ता चाकुछन कतिराज शांत्रितन त्य रेश्ताम भन्न-ब्या के बार के विकास किए विकास के कि कि कार के मूरण विकि अक किम जन्मात जमन अहे मरवान चारम या उन्न निक-माकालत अकाल निशांहे आवात वित्लाही हहेबाएं धवः অনেক যুদ্ধে ইংরেজছিগকে পরাস্ত করিয়া কলিকাভার অভি-মূৰে ধাৰিত হইয়াছে। ভাৰালা বভদুৰ অঞাসর হইভেছে, প্রজালিত গ্রাম সকলের ধুমরাশি ও গৃহশূক্ত প্রজা পুরের ভাছাকারে, ভাহাদের স্বাগমন বার্তা ঘোষণা করিভেছে। ভাছারা সমীপে যাত্র। পাইভেছে লুগ্রন করিভেছে। ভাছার। क्लिकालात अछि नित्रकटि উপস্থিত চইরাছে, রাজি কালেব मध्या जन्दर चाजिया १ फिट्य । कांस निम जायाकाटन यनि এরপ জনরব সহরে প্রচার হট্যা পড়ে. এবং ভাচা সভ্য বলিয়া यि महत्रवानी मिर्शत विधान वत्र जधन मिथिए शाख्या मात्रः এই সহরে কি ভুর্ন কাণ্ড ঘটে। কোণায় যায় বাবসার বাণিজ্য, কোশায় যার আমোদ, কোণায় যায় যাভারাত। এক ঘণ্টার মধ্যে সমুদার দোকানের ছার বন্ধ হর, বাজারের কেনা বেচা ত্রিত হইরা বার; রক্ত্মির নৃতা গীত রহিত চইয়া যায়: কে কোথায় পলাইবে, কে কোথায় লুকাইবে, সেই চিস্তায় সকলে বিব্ৰভ হয়: পক্ষী যেমন ঝুড়ের উপক্রম দেখিলে. আপনার শাবকগুলিকে পক্ষপুটের ছারা আবরণ করিরা বসে তেমনি প্রত্যেক গৃহস্থ আপনার স্ত্রীপুত্র পরিবার শুলিকে রক্ষা করিবার জন্ত বিত্রত হয়। এক স্থানে বিশাসের বিপর্যায় ঘটাতে এত দিকে বিপর্যার ঘটিয়া যার।

তবে দেখা ষ্টিতেছে ধে আমরা যে সীজ্জা চিডে । নিশ্চিস্ত মনে এই মহানগ্রে বাস করিতেছি, ভাহার মূলে ইংরাজদিগের পালনী শক্তিতে বিখাস। মহু বলিরাছেন ;—

দিশ্রঃ হৃত্তের্ কাগর্তি দণ্ডোহ হ্রভিক্রমঃ।"

শব্ধন সকলে নিজিত থাকে দণ্ডই তথন জাগ্রত থাকে, দণ্ডকে কেছ অভিক্রম করিতে পারে না।" ইহা সভ্য কথা, রাজদণ্ডে বিশ্বাস থাকাতে আমরা প্রভ্যেকেই স্বীর স্বীর অধিকার মধ্যে নিরুপজ্রবে বাস করিতেছি। রাজশাসন একটা সভ্য পদার্থ আমরা দেখিরাছি, অভ্তব করিয়াছি, প্রতিদিন ভাষার বিবর শুনিতেছি স্ক্রাং ভাষাতে আমাদের বিশ্বাস স্প্রতিষ্ঠিত কইরা গিয়াছে। সেই বিশ্বাস অক্তাতসারে আমাদের হৃদ্রে নিহিত থাকিয়া আমাদের প্রতিদিনের কার্যাকে নির্মিত করিতেছে। আমরা ব্যবসায় বাণিজ্য, আমোদ প্রত্যেক্তি না বটে, কিছ সেই সকল কার্য্যের স্বারাই প্রতিপদ্ধ কইতেছে, যে ইহার প্রতিবিশ্বাস আমাদের আমাদের প্রতিশিব্ধ করিতেছে।

অধন প্রশ্ন আই জাসাদের আভিদিনের কার্য্যে ও ব্যবহারে উপজের ধর্মপাসনে স্থ্রতিষ্ঠিত বিশাসের সৈত্রপ প্রমাণ পাওরা বাইভেছে কি নাও তিনি জামাদের প্রিতা নাডা প্রত্ ও প্রতি-

Arris at feste ner unte sect attere come supr बंधावतः एवं रमक्षण क्ष्मप्रते कावासम् प्रेरण्ड कि वान बंद्रिणक्टिक विवास थाकारक चामता विवास निकित मूर्ति व्याहात्र, विश्वत, ब्रवनात्र वानिका क्षण्डि कृति, त्वव पिकिएक विकास बन्छ: (सक्रम निष्ठिक महम, निर्कटक धर्मणहरू प्रेक्षिक्रिक है नातिरहि कि ना है किनि आवात त्रेक्क विषे क्षेत्र विषात (क्रम्म सामद्रक्षिक काराब केंभर मिर्के क्रिके माहिएक कि ना १ अहे तकन व्यक्तिय बाता चाननानिगरक विठात कतिएक (शामह देविएक भावता सात्र, त्य चामता मूर्थ क्रेमतरक वर्क्ट गठा यज्ञभ, ६ आभारतत भिंछा, भाषा, भजिखांचा वनि सा दर्कन त्र विश्वात काबारमञ्ज मत्न करम नाहै। कामजा क्रमना काजा ় তীছাকে বতদুর স্তাবলি হাদ্য ভতদুর সতাভাবে তীহাকে অবশ্বন করিতে পারে নাই। কিছ তাঁহাকে সভাভাবে ধরিতে না পারিলে আরাম নাই। পিতা, মাতা, প্রতিপালকের স্থান ভাছার উপরে সম্পূর্ণ জ্বন্ন মনের সহিত নির্ভর করিতে না পারিলে গ্রন্থত শান্তি নাই।

- ধর্মজীবনের পথে একটা মহা বিপদ আছে। সেটা এই, মাতৃষ এক প্রকার করিত অবস্থার মধ্যে আপনাকে ফেলিরা এক প্রকার ক্ষণিক ভাবের পরিতৃপ্তি লাভ করিতে পারে। দৃষ্টাভবরণ বৃদ্ধতি নারুবের যেরূপ বুদ্ধি বিভ্রম ঘটে ভাছার উল্লেখ করা বাইতে পারে। অভিনয় ছলে অভিনয় কার্য্যটী ৰদি অক্ষের হয়, লোকের এমনি চিত বিভ্রম উপস্থিত হয় যে তাহারী যে অভিনর দর্শন করিভেছে,ভাহা ভূলিরা গিরা অভি-नी छ विवरत्रत्र मृत्था निमन्न हरेता हर्व विदान अञ्चन कतिएड থাকে। কলিত তুঃশাসন কলিত দ্রৌপদীর কেশাকর্ষণ করিয়া चनमान कतिराज्य है, किन्द ভाবপ্রবৰ দর্শক ভূলিয়া ∤গিয়াছেন त्व फाशाता फेक्टबरे कबिक वालि, फाशास्त्र कार्या देक्वन সভ্যের ছারা মাত্র। এই ভ্রান্তি বশত: তিনি ছারাকে সভ্য **खाबिया ट्यार्थ क्योत्र हहेगा छिटि छ छन । এक्र १ हेन्ड इहेट छ** (य नक्क निश्च। পिছता क्रवाचा क्रःभागत्मत इस्त इहेटल दिलोश-দীকে উনুক করেন। কিছা পঞ্জন্ত গ্রন্থে যে শজুপূর্ণ মহা ষটের গর আছে ভাহা শারণ করুন। এক দহিতা ব্যক্তি শক্ত অৰ্থাৎ ছাড়ু বিক্ৰের করিত। এক দিন ছাড়ুর কণস্টী সৃষ্ধে রাখিয়া ৰদিয়া চিন্তা করিতেছে। সেই ছাতুর কলসিতে ভাষার ছই টাকা লাভ হইবে, তত্বারা আর একটা ব্যবসায় করিবে, ভাগতে যে লাভ হইবে, তত্বারা আরও ব্যবসায় वाफ़ाइरव ; এইऋर भ जन्म धनी इहरव ; वफ़ वाफ़ी, श्वन्त्री ही, मान मानी, अपन, नाम, तथ, आकृष्ठि स्टेरव धटेकन ठिखान निम्म इहेशारह। जात त्म व जगरा नाहे--त्म निरंकत मनः क्षिक त्रारकात्र मत्याह्ने वान कतिरक्रकः; व्यवद्र अक टाकात গঞ্জীর আমন্দ অমুভব করিতেছে। কথনও হর্ব কথনও বিবাদ ক্ৰদণ্ড ফ্ৰোধ নানা ভাবের চিহু গক্ব তাহার মুখে প্রকাশ পাইতেছে। অবশেষে আছার বোধ হইল বেন তাছায় পদ্মী जीशास्त्र दकाम वानमारनत क्या विनिवारह अवर रन काशास्त्र नवाचाक कविष्टकरकः, दबरे दकार्य देखीरवं नविश्वक कवा ज्यान ছाতुर करान रेफिशे जिल्ला तीमा अर्था सीमा

ক্ষমতান্যার পরর বাহুবের এই আন্তর আনির ক্ষমতান্ত ক্ষমতান্ত বিশালের ক্ষমতান্ত বিশালের ক্ষমতান্ত বিশালের উভিনিধনে আন্তর্গন ক্ষেত্র বে সংবার্থাক লেও ক্ষমতান্ত ক্মতান্ত ক্ষমতান্ত ক্ষমতান্ত

এই জন্মই প্রকৃত ঈশরপ্রেমিক বাজিগণ ক্ষণিক ভাবোচনুদ্য অপেক্ষা বিশাদেরই অধিক মূল্য দিরা থাকেন। বিশাদ
দার বস্তু। ইহা চরিত্রের মূলে প্রবিষ্ট হর; ইহা ক্ষান্তরে
প্রচন্তর থাকিয়া কার্য্য সকলকে নিয়মিত করে; ইহা বিপদের
মধ্যে বলবিধান করে; ইহা ধর্মজীবনে মানবকে স্থপ্রতিটিত
করে।

আমরা স্বাধরের সত্য ভাব বত্ট উচ্ছেলরপে গ্রাহণ করিব, ভত্তই আমাদের বিশাস উচ্ছেল হটবে; তভ্তই ঠোঁছাকে স্পুদ্ধে বিপদে, পিতা মাতা প্রভূ বলিয়া আশ্রর করিয়া থাকিজে পারিব।

হিন্দু বিধবাগণের জন্ম আশ্রয়-বাটিক।।

সম্প্রতি চতুর্দিকেই হিন্দু বিধবাগণের জন্ত আপ্রর বাটিক।
নির্দ্রাণের উদ্যোগ দেখা বাইতেতে। তত্তকোর্দীর পাঠকগণের স্বরণ থাকিতে পারে, যে আমরা করেক বংসর পূর্বের
এইরপ আপ্রর বাটিক। স্থাপনের প্রামর্শ দিয়াছিলাম।
আমরা দেখিয়া স্থী হইলাম অনেকে এবিবরে উদ্যোগী
ইইয়াছেন।

পণ্ডিতা রমাবাই সম্প্রতি আমেরিকা হইতে কিরিরা আসিরা বোঘাই নগরে শারদা সদন নামে কিন্দু বিধবাগণের জন্ম আলের বাটিকা স্থাপন করিরাছেন। হুই জন মার্কিন রমণী ভাষার সহকারিণী হইরা এই কার্ব্যের জন্ম আসিরাছেন। ইহারা কি প্রণালীতে কার্য্য করিবেন, এবং কর জন ছাল্লী এই আশ্রের বাটকাতে থাকিবার জন্ম অন্ত্রসর হইরাছেন, ভাষা এখনও আনিতে পারা বার নাই।

त्रमा वारे क्रिक क्रिकारण निष्य निर्माण वार्मक क्रिकारण क्रिकारण

the first with their rest their very which were with the property of the service of the शिक्षा करि जीम भाव अभिना भाग वन । ज्यानश्चन (बाब म विकृतिकारकरमञ्जलिकारभटक विक नारवण कनातर ७ क्या-্ৰক্ষী ভটমা থাকিতে না তইত ; বলি তাঁহালা খীৰ পৰি-अध्यक्ष सामा योव केनमारमक अध्यान कतिरक लामिएकन ; यान हासारमत किसाफ नवविवासक धानरक प्राविवास केनाम वाकिक, क्षर कीशायक राव् यमस्य मासू कार्यर निवक कार्यरण भावि-क्रिम, काहा बहेरण केंद्रिसाम शास्त्र कीर्यम वात्रण अक कडे सन हरेक मा। अर्थाटनका इंटरंग्न विवश करे, दव दिन्यू विश्वालन विक्रम मानामिक प्रीक्षि मी जित्र बर्धा क रायतम अश्वर्ण विक्रिक হন, ডাহাতে বিবাহ ও গৃহবর্ম অপেকা জীবনের উচ্চ লকা छारात्रा खारणम गा। छारारकत मृष्टि मर्कमा विवारिक कीवरनत সুৰের দিকেই পজিরা থাকে। ইহাতে ক্রমণঃ ভাঁছাবের क्जना पृथिक श्रेटिक बाटक अवर जांबाटनत नीकि क ठित्रिक्छ चातक नमात्र होन वर्वता भएए।

এরপ অবভায় বিশু বিধবাগণের জীবনকে স্বাধীন ও উন্নত করিবার কোন উপার যদি করিরা দেওরা বার, তালা কটলে দেশের একটা মলা কল্যাণ সাবন করা হল। তাঁহারা বদি জানেন যে বিবাহিত না হট্যাও নারীগণ অনেক প্রকারে আপনাদের জীবনকে সুলাবান করিছে পারেন, ভালা হট্লে দেশের একটা ভালী উন্নতির পথ খুলিয়া দেওয়া হর। এই জন্মই আমরা এই আশ্রম বাটিকাগুলির আরোজন দেবিরা এত স্থানন্দিত হইডেছি।

কিন্ত এবিবরে সকলমনোরণ হইবার পক্ষে আনেকগুলি বিশ্ব আছে। উল্যোপকর্তাদিপের ভাহা বিবেচনা করিরা প্রথম হইভেই ভাহার উপার বিধান করা কর্তবা।

এখন বিশ্ব—আপ্রা বাটিকাতে থাকিবার বস্ত ছাত্রী শাওয়া যাম কোখার? বিধবাদিশের প্রতি हिन्सू সমাজের াবে কঠোর শাসন, ভাছাতে অল বিধ্যারই আপ্রয় বাটিকাতে আসিগা থাকিবার সাহস হটবে। যদি বা কোন যুবভী সাহস করিরা আনে সে তৎক্ষণাৎ নিজ আত্মীয় স্থজন বন্ধু বান্ধব कर्डक भविकाक इहेर्द। अवन कविना कछ मिन काक हिनाड 'পারে ? একটা বিদ্যালয়কে জীবিত রাখিতে গেলে ভাহাতে वरमञ्जय मुख्य मुख्य मुख्य छाजी व्यामा हाहे। वरमत वरमत त्कन हाळी त्काशांव भाषता यावेटव १ वरे वित्रही वि क्वन क्षमा कविश्व केलाब क्या राष्ट्रिकट्ड छारा नरहर आह ১৫ ৷ ১৬ বংসয় গত ভ্টল ক্লিকাভায় কভিপয় প্রান্মের উৎ-नारंह नवरनाक्षत्रक केटका जारकव, स्ववृत्र कूरन हिन्तू विधवा-দিগের আৰু একটা নাৰ্যাণ ক্লাস খুলিয়াছিলেব। শিক্ষকতা শার্ব্যে নারী দিগতে আছত করা ভাষার স্কুল্যা জিল। তালগণ मार्गक cost कर्नाका खावरम क्लक्काण विश्वा छ प्राचा प्रमणी क्षेत्रियाक्टिनाम किन्नु हुई अने यरमण्डत अदबाई एन राजनेति प्रविद्या विदेश एक्षेत्र । अक्षेत्रारम् सामनाकीरका विश्वकानियात्र ৰত একটা আন্তৰ বাটকা স্থাপিত হইয়াছিল ৰাজীয়া স্কাৰে

स्वात कार्या अव स्वीत स्वात । करने दक्ष क्षण नागरक गाउन र काम स्वात कार्यो कृतिया गाउन्या। ग्रातरणका स्वारका वक करवक्षी क्षण बहेप्राटक नरके किथ उपाति अक देवान कर बारे रा क्षि कृत्यान वानगारका मृश्का निवन-विश्वस्थ वास्त नार्किकारक वानिना शांकिरक निरक नारतम।

्षिकीम विक्र-स्थान सरम कहा दश्य (व. चरमक विश्य) च्छा अपूज्य इतेश निविधात निविध्यत्य च्यारक च्यारिकम । क वियास 🐂 हैश विठाय कतिएक इरेटन, त्य क व्यापात नाति-বারিক অশান্তি উৎপাধন বিষয়ে সহায়তা করা কোন বিব্যা-नरमम कर्खवा कि मा १ (कान विमानम दिलानम অনুসন্ধান ও প্রশংসাপত্র বাতীত কোন সুবতীকে গ্রহণ कतिर्देश मा । अविहातिष श्रांटर बात उत्रुक्त त्राथित वर्गत विकासकक्षिक कनाक्षत्र छात्त्र विमाडे स्वेत्र। यादेव । . कर्जु-भरकत मन्नाजित व्याभका कतिएक श्राम निधवा भाषकार किन इदेरि। यनि वा चिक्रिकेट कडक्छनि छान्नी भावता रागन, क्षम कात्र এक क्रिन मम्ला এই। दनि काला वाजिका मर्था कान विश्वारक अनुमान्त्रव कतिरु (मर्था र्यन छ ভাছাকে স্থানাত্ত্ব কলা আবস্তক হইণ, তথন সে যায় কোণায় ? হিন্দু সমাজ ভাহাকে বহিষ্কৃত করিয়া দিয়াছে। आधीत पद्मन दात क्या कवित्राष्ट्र, त्म छथन कान छाटन আশ্রম পাইবে 📍 এ জন্ত প্রভাকে বিধবাকে শইবার সময় • वक्षन वयन व्यक्षितिक स्वित्री गरेए हरेरन, रव नाक्षिक সংবাদ দিবা যাত্র ভাষাকে স্থানার্ডরিত করিবে। নতুবা আশ্রর বাটীকাগুলি রক্ষা করা যাইবে না। গৃহ ভাড়িত ও আশ্রম বাটাকা হইতে অসদাচরণের জল্প বহিষ্কৃত বিধবাকে নিজ গৃহে আশ্র দের, এমন অভিভাবক কর্জন ? যদি এরপ অভিভাবক পাওয়া যার ভাল, নতুবা প্রভ্যেক আশ্রর वाहीकात माल धक धक्छी "त्रिकत्राम्हाती" वर्षाए भागन वानिका बाबिए इहेरव।

জ্ভীয় বিশ্ব—বিধৰাগণ শিক্ষিত হইরা যে স্বাধীন ভাবে শীয় জীবিকা উপার্জন করিবেন, এদেশ এখনও তাহার " অমুকৃণ নহে। লোকে দ্বীলোকের এ প্রকার স্বাধীনভার এভদুর বিরোধী যে ভাষারা বিধবাগণের সহায় না হইয়া বরং প্রান্তিপক হইবে। অথ্যাতি রটনা ও অপরাপর প্রকারে ভাহাদিখের শ্রনিষ্ট সাধন করিতে চেষ্টা করিবে। লোকের এই প্রকার ভাব থাকাতে এখন সাহস করিয়া কোন রমণীকে একাকিনী কর্মা করিবার অস্ত কোথারও পাঠাইতে পারা ৰাইতেছে না। ইভি মধ্যে যে হুই একটা হিন্দু বিধবা শিক-विकी रहेन्रा छुटे क्रक प्राम कर्म कविष्ठाह्न। जाहारमञ কৃ**ষিকে কাহাকেও অনেক উপদ্ৰব সম্ভ** করিতে হইতেছে। बर्डे एकाइएंडारनंद्र भरत बर्डे मक्त विद्यार्थन। किंद्र ' करन कि निवास बहेबा अहे केंद्रगांश स्वित्रांश कविरक स्टेर्व ? कहरा नरह 🌶 , धरेक्स (इंडा क्रिका विकल हरेल '७ गाउ मार्फ, महिन क्यामा ल्याका लाद श्राव श्रीवर्धन रहेवाव शत्म 可要情報】業費七

ক্ষা কাৰ্য কিছা বিচ্ছ বছৰ বিষয় বিশ্ব নিৰ্দ্দ কৈ কৰিব বিজ্ ক্ষা কাৰ্য কিছা বিচ্ছ বছৰে কাৰা বাব ;—কাৰ্যকৰ বিজ্ ক্ষেত্ৰ পৰিজ্ঞৰ বাবা কীৰিকা উপাৰ্জন কৰিবে কাৰে, এমৰ সকল দিল পিজা দেওবাও উচিত। খোৰাই কাল, বিভিন্ন কাৰ, পাড় ভোলাল কাল, চিত্ৰ বিন্যা, কটোগ্ৰাকি, আছুভি কনেক বিহন পিজা বেওৱা বাইকে পালে, বাহাতে কন্দীপৰ উত্তৰ কাৰে কাৰ্যক ক্ষাৰন বাপন ক্ষাৰে পালে। আপা ক্ষাৰ কাল্য-বাটকাগুনির কৰ্তৃপক্ষণ এমিকেও সৃষ্টি ব্যবিধন। বাহারা একেতে কাৰ্য ক্ষাতেছেন ক্ষাৰালা একেশীর ক্ষানী-গণের গ্রহতত্বাধীনতার হার উত্তক ক্ষিতেছেন।

যুগ সংগ্রাম।

মাবোৎসৰ উপলক্ষে ১২ই মাৰ পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী কৰ্তৃক প্ৰদন্ত বজ্ঞার সারাংশ।—

আমানের দেশে প্রাচীন কাল হইতে নাতিকের একটা লক্ষণ চলিরা আসিতেছে। সেটা এই ;—"নাতিকেরা বের নিক্ষক" অর্থাৎ সেই নাতিক বে বেদের নিক্ষা করে। ইহাতে এই প্রমাণ হর যে প্রাচীন ভারতবর্ণীর আর্থাগণ ইচা ভারতে পারিতেন না, বে একজন থেককে পরিত্যাগ করিরাও আন্তিক থাকিতে পারে। তাঁহাদের বিশ্বাস ছিল, বেদ ভিন্ন অন্ত কোন ভিত্তির উপর মানবের ধর্ম জীবন দণ্ডারমান হইতে পারে না। স্কুভরাং লে ভিত্তিকে যাক্ষায়া পরিভ্যাগ করিত ভালাদিগকে তাঁহারা নাতিক বলিরা গণ্য করিতেন। কেবল বে প্রাচীন হিন্দ্দিণের মনে এইরূপ বিশ্বাস দৃষ্ট হয় ভাহা নছে; প্রীইধর্ম বিশ্বাসী বাইবেলবাদী প্রীষ্টারগণণ্ড বলিয়া থাকেন বে বাইবেলকে অপ্রাচ্ছ করে সেই নাতিক।

ইংলতের লোকের মনে এইরপ সংস্থার বন্ধুন থাকাতে ছই শ্রেণীর লোকে ছই প্রকার কার্য্য করিতেছেন। প্রথম, যে সকল লোক স্বাধীন চিজ্ঞার প্রভাবে বাইবেলের অল্যন্তভাতে অবিশ্বাস প্রকাশ করিতেছেন, প্রীষ্টধর্ম যাজকগণ তাঁহাদের আতিকতা থাকিলেও তাহার প্রতি দৃষ্টিশাত না করিরা তাহাদিগকে নাজিক বলিরা খোরণা করিতেছেন। থিতীরত গাঁহারা প্রীষ্টধর্মের কোন কোন মতের ও বাইবেলের অল্যন্তভার প্রতি বীতশ্রম কইতেছেন, তাঁহারা নিজেও মনে করিতেছেন, বাইবেলকে পরিত্যাগ করার পর নাজিকভার করাল্যাসে আত্ম-সমর্পণ করা ভিন্ন জাঁহাদের আর গত্যন্তর নাই। অন্ধ বিশ্বাস ও নাজিকতা এই উভরের মধ্যে দণ্ডার-মান হইবার মধ্যভূমি নাই। স্কভরাং তাঁহাদের অনেকে প্রীষ্ট-মর্মের প্রতি বীতশ্রম হইরা একেবারে খোর নাজিকভার মধ্যে গিরা প্রতিক ইইতেছেন।

ক্ষাৰিক ক্ষাৰিক বাল বাল ক্ষাৰিকাৰ স্থানিক বিশ্ব বিশ্

কিন্ত ইইাবের নিরে আর এক শ্রেণীর লোক আছে, ভারা-নের ভাব অন্ত প্রকার। তাহারা প্রীই ধর্মের লাক্ষণ বিরোধী। ইহারা খুইধর্মের মত সকল উক্ত করিরা বিজ্ঞপ করে; প্রকাজ রাজপথে ও উল্লান প্রভৃতিতে খুইধর্মের লোব কীর্ত্তন করিরা বজ্ঞাকরে; গ্রন্থ লিখিরা অপরকে খুই ধর্ম পরিত্যাপে উৎ-নাহিতকরে। ইহালের অধিকাংশই শ্রমজীবী শ্রেণীর লোক। ভালকুতা খরগোলকে ধরিলে যেমন কড়া ভেড়া করে, সেইরূপ ইহারাও খুইপর্মের বিজ্ঞান-বিরোধী মত সকলকে লইরা কড়া ভেড়া করিরা থাকে।

উক্ত উভয় আচরণ হইতে একটা শিক্ষা লাভ করা বয়ৰু। জগতের প্রার সমূদর প্রাচীন ধর্মশান্তই একটা ভ্রমে প্রিক্ হইরাছিলেন। বে সকল প্রশ্ন বিজ্ঞানের সীমার অন্তর্গত याशास्त्र धर्मामाख्यत रहात्क्य कहा कर्हवा नार, छाराता त्यहे সমুদর বিবরকে ধর্মশাজের অন্তর্গত করিরা লইরাছিলেন। পৃথিবী এক দিনে স্টেহইয়াছে কি ৭ লক্ষ মুগে বিৰ্ভিত হইরাছে ? এ আখের সৃহিত ধর্মের কোন সম্বন্ধ নাই। ধ্রি ইহার একটি সভাবলিরা প্রমাণিত না হইরা অপেরটা সভ विनिधा व्यमाणिक स्म, जांसा करेरण स्मित्र महिल जामारम्ब नवक विमुख इस ना। व्यर्ष धात्र नमूनत्र धातीन धर्मणाञ्च है अहे গুলিকে নিজ দীমার অন্তর্গত করিয়া তত্ত্পরি আপদারের ধর্মমতের ও বিখাসের ভিত্তি স্থাপন করিরাছিলেন। এক্সণে বিজ্ঞানের উরতি নিবন্ধন এই সক্লমত বৰ্জিত হঞ্জাতে ধর্মের ভিত্তিমূল পর্যান্ত জাকোনিত হইতেছে। এক কালের ल्या क्रम चात्र क्रक कारम स्थान क्रिएक हरेएक हा स्मान व वाश्तित लाटक और्रवर्षक পतिकाश कतिता वाश्रिकाह. छारा नरह। ब्रोडे वासकंतिरगत मरवात व्यस्तरक विकास विस्तानी मक नक्त्रारक वर्काम कृतिहा धृष्टेशर्याक छेतान आधारिक्षक ভিভিন্ন উপর দুঙারমান ক্রিবার প্রান্ত পাইতেছেন। আনুত্র मतकवान, कर ठात्रक्षान, मधावश्चितान धाक्षि मुहेब्दर्कत विस्तित विराग्य मछ गरून कांबादा वर्कन कत्रिकाहन धारा कांबाहन উगामरण धारे मक्न माञ्च व्यक्ति एक स्थान मा निशा औरहेत कीनरमत्र देमिक ७ जाशास्त्रिक जरानत निरक अधिक मुझ

विश्व करिया है से अपने कर्म करिया करिया महिराजरण।
विश्व करिया करिया है से अपने करिया करिय

ं लाधन चर्नद्वात्का विचान। बीखन केकि नकरमङ मध्य কোন একটা সভ্য বলি বিশেষরূপে অভুক্তর করা বার্য, ভাহা এট বে ডিনি বিখাস করিছেন যে তাঁহার পিতা পরমেশ্বরের बाबा जानन कहारे छारात बीयत्मत नका। এर विधान कारा चर्चा कित्रमिम धारण छिन। हातिमिटकत्र भाभकाश মুর্নীতি দর্শন করিয়াও এই বিখাস একটা দিনেয় বার প্রাস হয় নাই; সহস্র সংস্র লোকের প্রতিকৃশতাচরণেও কুষ্টিভ হয় नार : (वात मुजालरत्रत मर्याख विषक्ष रत्र नारे। यीखन श्रीयन विश्रामित जाम्मा हेश्माखन खान मकन त्यमीन माधा পর্নরাক্ষ্যে বিশ্বাসের ভাব প্রবল হইরা উঠিতেছে। অপতে चनाभुका चत्रपृक रहेरव ना, किन्द नाधुकारे चत्रपृक रहेरव এই বিশ্বাস সকল শ্রেণীর মধ্যে দিন দিন এত বাডিতেছে एप त्रवित्म काम्ठर्ग इहेटल इत। याहाता धर्म विधानी कांशास्त्र मान क देश धावन बहेत्वहै। याश्रामा कालनामिनाक नाखिक विनवा शांतिहत निवा थारकन ७ छाहारक श्राचात विवय मान कारतन, काशास्त्र मार्था अहे विश्वान कावन मुद्दे হইভেছে। স্ক্ররণে বিচার করিলে দেখা ঘাইবে সে সাধুতার बर रहेरवरे रहेरव अहे विधान मूनकः खेनी भक्तिष्ठ विधान। 'ইহা যে ব্যক্তি ৰলে সে ইহাও বলে যে এই জগৎ ধর্মনির্ম দারা শাসিত এবং এবানে অধর্মের পরাজর অবশুভাবী।

বিতীর পাপীর উদ্ধারের জন্ত ব্যপ্রতা। এটা বীশুর বীবনের একটা প্রধান ভাব। তিনি দৃষ্টান্ত বারা সর্বাদা এই উপদেশ বিতেন, যে মেবপালক বেমন ৯৯টা মেব পথে বভারমান রাখিয়া একটা পথলান্ত মেবকে পুঁলিতে বার এবং তাহাকে পাইলে, যত্নপূর্বক জ্যোড়ে করিয়া আনে। সেইরপ লীবনের এই ভাবে ইংলগুরি সমাজের ভাব বার্বিত হইতেছে। বিশবসামী মরলারীকে জ্পথে আনিবার জন্ত দিন বিন নানা উপায় সকল অবলবিত হইতেছে। যাহারা বিপথে পদার্পণ করিয়াছে ভাহারা বাহাতে কিরিতে পারে ভাহার উপার, বাহারের পাণে পড়িবার মন্তাবনা ভাহারা বাহাতে পাপে না পড়ে ভাহার উপার এই উত্তর প্রকার উপারই অবলবিত হরতেই।

∳जन्म\$}

THE RESERVE OF THE PARTY OF THE

कार्यम्बीक क्ष्मान बार्ड प्रदेशन बाब्हांग्रम् बार्ड त পিতৰ নগৰে এত নীয়ৰী খান কৰিছেন। আমেক বংনর नवीक केलाव बीक बर्क स्थानक महान बक्करन मा स्वारक **খাৰণেবে ছিন্তি খাণনাবের বিবাহ-চুক্তিভল ভরিতে সমস্থ** कतिराम । এই कार्या कार्रम अञ्चलारम मन्त्रामम कश्चिमान रेक्षात्र कीवायाः केक्ट्रत क्षावाम शुरुविद्यत चामरत केमिक्ष इरेराम । उक्क खन्ना छनिया भूतिर वनिरमम,- वश्यमन । रहामत्रा रक्षाय वा अमरहाय खेलान भूक्त और विवास-वस्त्र विश्व कविश्व था: छाश व्येटन ट्यामारम्ब कार्यात जुला कात्र प्रतीय:काशात चार् वित्र (नारक मान क्रिएक भारत । . विवारहरू गमम ८वमन चानत्मत्र गहि**छ (**छामना মিলিত হইরাছিলে, সেইরপ আনন্দ পূর্বক ভোমরা পৃথক হও। শ্বতএব পূহে ফিরিয়া গিয়া এক ভোজের আয়োলন কর **এবং বন্ধবন্ধবকে নিমন্ত্রণ করিরা ভাহাদের সহিত আনক্ষ কর**। পরে কলা আমার নিকট আগমন করিলে আমি ভোমাদের विवाद-कृष्टि छन कतिया निव।" डाहात छे भरतम मछ डाहात्र। गृष्ट् शिर्वा এक ভाव्यत चार्याक्य क्रिल्म। यथम मुख् গীত আনন্দে সকলে নিমগ্ন জ্ঞান সেই ব্যক্তি সর্ব্যসমকে উছেরে भन्नीरक वनिरनंत.—"चरनक वर्त्रत ,चामता मरश्राम **एक**ख वान कतिवाछि। यनिश्र जामता १९क हरेए वारेए छि, किन्द তাহার কারণ ইহা নর যে আমাদের মধ্যে কোনও বিছেব-ভাব আছে। এডদিন প্রান্ত আ্মাণের কোনও সন্তান ररेग ना, रक्रम माख रेहारे जाहात्र कात्रु। चामि रव তোমার মদল কাম্মা করি এবং আমার ভালবাসা যে অকুর রহিরাছে, ভাহার প্রমাণ ক্ষমণ আমি ভোমাকে এই অধিকার দিতেছি যে আমার গৃহের বে বস্তুকে তুমি সর্বাণেকা ভালবাস, यारेवात नमत्र खादा कृति नहेत्रा वाहेत्क शातित्व।" छादात जी শন্তইচিতে ইহাতে সম্মত হইলেন। সমর স্থাপে অভিবাণিত হইতে লাগিল; এবং নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণ অনবরত মন্যুপান क्षित्रो क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हे हो निक्ति क्रांस क তৎসকে সকে খোর নিজাভিভূত হইলেন। সেই রম্ণী তথন चाननात्र विश्वष्ठ नतिहात्रिकाशनात्क छाकिया चानित्तन এवः তাহাদের বারা আপনার অচেতন স্বামীকে নিঃশব্দে স্বীর পিতৃ-शृंदर् वहन कत्राहेवा गहेवां श्रात्मन । श्रविन खां छः काटन वधन তাঁহার চৈত্র হইল, তখন তিনি আশ্চর্য্য হইরা জিলাসা ক্রিলেন,—"আমি কোধার আসিরাছি !" তাঁহার পত্নী विनरगन,- "वामिन्, हिखिल इरेश ना। जुनि जानार्टक पाश णितिवात अधिकात वित्राहित्य, आमि छाहाहे कतिवाहि। গত স্থনীতে সমস্ত নিমন্ত্রিত ব্যক্তির সমক্ষে তোমার গুড়ের মধ্যে णामात्र मर्सारमका बारा जित्रवञ्च छारा णामिवात जारम দিয়।ছিলে। আমি চিন্তা করিয়া দেবিলাম, তুমিই আমার नवीरियम विश्व वंश्व, चड এव ভোমারই चारतभाग्रमारत चामि खाबादक दर्बात्र कानिवाछि। जानि दर्बादन वाकिव कृतिक रमबादम बाकिटवं द्रकृत किन्न जान किन्नुटक्टे द्यम जामानिगरक **१५० क**बिएक ना गाउँ।

প্রনিদ উচ্চারা উভবে প্রধান পুরুষ্টিভবেন নক্ষা মটলা ক্ষাত ক্ষিত্রা বলিলেন বেশ্টাহারা: বিবাহ কুজিতক ক্ষিত্রক না । ভিনি এই কলা শুনিজা আনন্দিত হইলা ভাষাক্ষের ক্ষতসর অভ প্রধানবারে নিকট আর্থনা ক্ষিণেন এবং শ্রেক্তাত প্রের ক্ষেত্রালাক্রকে, সেই স্থানী ক্ষতে ক্ষ্মেক পুরুষ ক্ষা-

" **এই चार्च**शिवका इहरेक अहे **डेनएम्म मन्द्रिया बाद एवं एव** वाकि बाहारक श्राकुणकार्य छात्र वारत स्व क्यान्हे खाहारक পরিভাগে করিতে পারে লা। "শভ শভ বার ঘরিও বিজেবের নানা কারণ আনিয়া উপস্থিত হয়, তবু সে আপনার ভোষ-পাত্রহক ছাড়িতে পারে না। প্রকৃত দীবর প্রেমিক বিনি, এইরূপ তাঁহার প্রাণও চিয়দিন ঈখনে অভুরক্ত থাকে। প্রত সহল এতিকুণ অবহা উপস্থিত হইলে তবুও ভিনি ভাষাকে 'क्निर्फ भारतम् मा। नडी ही रायम काममात्र वायी कित्र व्यक्त कार्यक कार्यन ना, जिनित (बहेन्न पारे नव्यक्तिका ভিন্ন कड़ किहूरे दार्थमा करतम नर्ग। चर्रा पत्रस्यत कानिया ,ষ্টি ভাষাকে বলেন বে"এ,পৃথিবীর মধ্যে বে বন্ধকে ভূমি সর্বা-শেষ্যা মূল্যবান বিবেচনা কর ডাছা ভূমি পাইবে।" সে ব্যক্তি तरन,--- अञ्च व्याबि व्यत्नक युतिना चूतिना व्यव्या व्यवस्थ करिना দেখিলাম, কিন্তু তোমার মত বিলয়বস্তু কোবারও দেখিতে পাইলাম না। আমি আর কিছু চাই না, ভূমিই কামার ঁসর্ক্স। সেই কণ্ডই আমি ভোসাকে আতার করিয়াছি। আমি যেথানে পাঞ্জিব ভোমাকেও তথার থাকিতে হটবে। **চিরলিনের মৃত আমার বে প্রেমের বন্ধনে বাঁধিরাছ। क्षियाटक क्षाक्रिया ज्यामि टकानांत्र यादेव.? दशास्त्र श्रद्ध कृमि** আহার হইবাছ, আমিও ভোমার হইবাছি। তোমার লগে এ मध्यक्षक कथन । विज्ञान कहेरव ना ।"

> "ভূবিত' আমারে ছাড়িতে পার না, তোমারে ছাড়িলে আমিও ব্রাচিনা, (কত) ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধে আবন্ধ হলনা, এ কথা জগতে বলি কার কাছে।"

প্রদেশীয় বান্সমাজ।

সিরাজগঞ্জ । ·

আমরা সিরাজগঞ্জ আন্সসাজের বালশ সাহৎস্থিক উৎ-সবের যে ভার্যাবিষরণ প্রাপ্ত হইরাছি স্থানাভাবে ভাষা বিস্তৃতভাবে প্রকাশ করিতে পারিলাম না। ভারার সংক্ষিপ্ত মর্শ্ব নিয়ে প্রসম্ভ ক্ষতেছে;—

्रः रहेण्यं नाम निमान,---नाबाद्धः छर्गासन छर्वायमः वात् अन्द्रशक्तमाथ छर्छाभागात छगानना करतमः

२४० वाष प्रविवास, जाएक क्षेत्रामका । वाबु विद्रताम-विकासी काम क्षेत्रामना करतम । अनुवादक नटकक वाबु विद्रताम-जानकथ्य विकास अक वेक्कृषा करतम । सामारक क्षेत्रासम् इत्र १ विद्रतान वाबु क्षेत्रामनाम् कृषका करतम ।

क्षा कास्त्र हतीयशीक्ष क्षांत्र स्विनासका। आषु विविद्यत्त क्षांत्र स्वाप्त क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र क्षांत्र कृष्णानांत्राक व्यक्तार्यक कार्या करवतः। अस्त्रत्व से नावरणव क्षाः। अस्त्राह्म वात्रं व्यक्तियेश कार्या करवतः। क्षांत्रात्र से नावरणव कांत्र क्षां विद्या श्राप्त क्षेत्र :--

শালি প্রাচীনকাল চইতে স্থান্ত বিনিশ্বে বর্ষ লাবনের একটা প্রাণান প্রাণান প্রাণান করিছেল। উপনিষ্টে নামির্টারে করিয়া করি নাম্পার্থন করিয়া করিছেল। উপনিষ্টে নামির্টারে করিয়া করি নাম্পার্থন করিছেল। উপনিষ্টে নাম্পার্থন করিছেল। উপনিষ্টে নাম্পার্থন করিছেল। উপনিষ্টে নাম্পার্থন করিছেল। এই প্রথম ধরু স্বরূপ। বছুক ইইলেই পর চাই। পর আত্মা। আর প্রত্ম ভাহার স্বন্ধা। কর্মানির করিছে লগ করিছে পাক, ভ্রমাররূপ বছুর ভিতরে সমস্ত আত্ম-শক্তি বোজনাকর, তথ্য প্রস্কারণ করারিছ হইরা হাইবে। এ প্রিমীর বহু মজিনভাব দূর করিয়া বিয়া বল ধেথি ভূ-ভূ"। একেখাছে সেই প্রত্মে গিয়া সেই ভীর লাগিবে। বর্মা একটা প্রথমের তিন্তে তীর ভিতরে সিয়া প্রবেশ করে। একান্ত চিতে বল ভূ"—ভূ", আত্মাটা প্রক্ষের ভিতরে গিয়া ভূবিয়া যাইবে। এই নাম নার্য আর যোগ সাধন একই।

हाजात हाजात वर्ष हहेटल विविध मध्यमादत विविध ध्यकारत নাম সাধন প্রচলিত আছে। প্রকৃত নাম সাধন হইলে ধ্যান সাধন হয়, ধ্যান হইতে যোগ। এখন এমন গোক্ত আছেন বাঁহারা নামসাধনের বিরোধী। নাম একটা হাওয়া ভার ভার্মার अफड़ा माधन कि ? किस अड़ी रक्षना दुसियांत्र स्मा। अक मिरक विर्वाहन क्रिल रहिष्ट भारेरक, नाम अपनी चान्त्र्य निक् অসামান্ত পদার্থ। পদার্থের সংক্র নামের অবশুভাষী বোগ, र्यमन तुक्त विवासीय तुक्त नामशाती अक्षेत्र भार्य सम्बद्धत्र रगांচत रहेरव, रगांचाय, मंजनन, नारमत्र गरम के मणन नायशात्री वस्त्रकण मान निकार । उत्त माम बुशा (क वर्ष १ সভীর নিকট যদি ভাহার বিদেশীর পভির নাম কয়া যায়, ভবে ভার প্রাণের ভিতর প্রেমের তর্জ উথ্পিয়া উঠে। ৰখন বলি "প্রমেখন" তখন কি কেবল ঐ করটা আক্সই মলে হরণ আর কিছু কি মনে হর মাণু নামের সলে भगार्थंत व्यवश्रकारी र्यात्र । अन्नर्यायद्वत याश्रविक कि नाम चारह ? नाम चारात्र कि ? छीशांत्र क्या नाहे, मा यान नाहे, তাঁহার নামকরণ নাই। এঁক দিকে এসৰ মত্য। কিছু আৰার বলি ভিনি ক্ষেন—অবভীৰ্ণ হন হৈ কি ৽ৃ ভাঁহার বাণ না আহে, कीशोत्र मामकत्र एत्र, गकनरे गछा। छिनि क्षत्रकीर्ग समः सा १ **এই उकाथ, এकि १ रनरे विश्वज्ञन कि रमब मां १ मक्किक्स**न, काबकाल, त्यासकाल लाहे महान् थाकि धृति क्यान, हिन्दानंत्र-नियद्र, मानव-एक्ट्य मर्मबः व्यक्ति हरेका ब्रह्मित्रहरून, शंक कार नार, त कवा दल दलत्व मान करे दव गर्बाहरू फिनि बरिवार्टन, त्मर्थ एक १ त्महे त्मर्थ, यांश्रांस संमद्ध चिति व्यक्तिम्बान् वन-नावात क्षत्र छिनि व्यवशीन दन। छिनि यथार्वरे व्यवधीन स्मन क्ष्य शहरक्त शृहर, व्यासम्बद्धन जागदम्।

TO THE RESE CONTRACTOR WE OF THE RESERVE Cielle Bile : Mais wire, - pe camite minie wire, न्तीय कोगोर्क तीर कार्य क्षेत्र विशे । किस मानि नीन देशा विनदीक क्यां प्रका। किनि देव बादवे वीहांत निकेष्ठे लोकी-भिक इन, त्म दम कारवह केव्हाहेक बासिएक भारत, तमहे कारवह स्टिंग स्टब्डे स्थलाम ब्राह्मत सामकान स्टेश तना बाम अमारतत कारक जिलि मा, आहित कारक निजा, मध्यदेवत कार्ड त्राजा, टिडाएड कारक ट्याममत व्यार्थमत-एक के किना मा वान-किस सर्वात कारात खारा खारा करू नाम अध्य । टाक्रकसरन, माम क्रम क्रिडिंड भातिरन, शास्त्र भतिनड इत्र, शांस ममासिंड लेडिनके एवं। धेरे दर्व माम नावन बाजा दकाम दकाम विवदक वर्फ रे কুৰিখা গর ৷ অনেক সময় উপাসনার উপযুক্ত স্থান মিলিচেতে ना, नाम करा। । धार्ताण गर्थ छनित्य खिळिनत विस्करण माम कंद्रे मी टक्न ? शान चाहाद श्रंथ हुना, जकन नश्रंदारे खरे नाम সাধন হয়। সময় मह आंत्र जीवन महे धकः। लोइड छाट्य, मतंत्र कार्त्व, कांक कार्य यति (कड नांच कतिएक शास्त्र, कर्ष সকল পাপ তাপ ছঃধ সভাপ, গুত্তপোক দুরে যায় 🕼 একাউ 'हिट्छ बनटम्बि, "मोनवजु"। এক सन छट्छन प्राप्त छनित्राण्टि "আমার দেবভার চেয়ে ভাঁহার নাম বড়।" ভিনি কথন আনেন, क्यन यान, किन्द नाम का जागात का फिन्न वात ना। यथा वि তিনি গ্লেমিক। সেই নাম—সেই দড়ি ধরিরা থাকিতে হয়। मन क्छ नाम्म जुवित्रा शाहेटव, ज्वाम क्रिक कथा वह इहेबा बाहेटव अक्टब खाल्बन्न छिक्ठत्त वनित्व, मून वक्त ब्हेना याहेत्व। छाहान हारेट छ अ की ब एन चारह। गथन अस्क वास्त निक्तानम সাগরে ডুবিয়া যাইবে তথন আবে নাম পাকিবে না। বৰন কাহার বাড়ী যাই, ভখন পথে ভাহার নাম করিরা অসুসদ্ধান कति। यथन वाछी शहिनाम, (तथा हहेन, छथन चात नाम थाकिन ना। आनन रच्छ शाहेरन आत नाम थाँटक ना। कहें नाम नाथन चल्क जिनिन, विनि यद्वलूर्वक कतिरवन, ভিনি কুতার্থ হইয়া যাইবেন।

২রা ফাস্তুন,—প্রাতে উপাসনা। বিনোদ বাবু আচার্ঘোর কার্য্য করেন। সন্ধ্যাকালে নগেজবাবু "জ্ঞান, ভক্তি ও কর্ম" সম্বন্ধ একটা স্থানীর্ঘ বক্তৃতা করেন। তৎপরে উপাসনা হয়। বাবু শুক্কগোবিক্ষ চক্ষবর্ষী আচার্য্যের কার্য্য করেন।

वँ । कूष्। ।

ं चामता दीक्षा आम नगरमत छेरनत्वत करे त्रण विवतन ं खीश हरेगाहि ---

টটোপাধারে উপাসনার কার্যা করেন। অপরাছে "ধর্ম কি ?"

এই বিষয়ে বঞ্জা হয়। তর্পরে উপাসনা হয়। বাবু ক্ষেত্র

নাব সেন উপাসনায় ভাষ্য করেন।

> शर्के काश्चम द्यावचार, मत्रश्वनित्वाणी छैरम्य। आछ:-कारम बाद् वाहान्यी हरहामानाच छेमाममात्र कार्या करतम। छेमाममात्र शहर अभिक्षिणी वृद्धेत्व मान्छ नियमाय बादी, बाद् नीमक्षि क्रम्बर्की नेहा द्वालानाम प्रवाशायात्र अवस्तात्

ক্ষ্মিন্তরণ সরক্ষর অবার নিরা উপত্তি হন। পরসাবের
ক্ষিত্রিক আন্তর্নার ক্ষেত্রিক নিতা ইবন, ও সমাক্ষ্যত পরবৈধরের নামে অভিধানিত হইতে লাগিন। অপরাক্তে সমার মন্দিরের ভিত্তি ছাপিত ইইন। পণ্ডিত শিবনাণ শার্ত্তা উপাসনা ক্ষরের কার্য্য আরম্ভ পূর্বক এবং তৎপরে ভিনি ভংসম্বোপ্যোগী একটা হ্রদর গ্রাহী বক্তৃতা করেন সন্ধার পর উপাসনা হয়। আন্তরীম্বাপর উপাসনার কার্য্য করেন।

১৬ই ফাস্কুন মন্তবার, প্রাতে উপাসনা। বাবু নীলমণি
চক্রবর্তী আচার্য্যের কার্যা করেন। অপরাছে বাঁকুড়া সহরের
এক প্রান্ত হাঁতে অপর প্রান্ত পর্যন্ত নগর-সভীর্তন হর।
পশ্তিত শিশনাথ শক্তি সকল সোক্ষিগকে সম্বোধন করিরা
একটা স্থান্তর ক্রেন। স্থীর্তনের শেষে উপাসনা হয়।
ভিনিই আচার্যের কার্যা করেন। উপদেশ অভ্যন্ত হার্যাশার্শী
হট্যাছিল।

্ শ ১৭ই কাস্ত্রন ব্ধবার, প্রাত্তে উপাসনা। শালী মহাশর উপাসনা করেন। সায়ংকালে তিনি "উপাসনা-তত্ব" বিবরে এক স্থলীর্থ বক্তৃতা করেন। বক্তৃতার শেবে কেছ কেছ সন্দেহ ভশ্বনের মান্ত প্রাম্ন মিল্লাসা করেন। শালীমহাশের সকল প্রামের মীমাংসা করিয়া দেন।

১৮ই কান্তন বৃহস্পতিবার, প্রাতে ধর্মসম্বনীয় নানা বিষয় বিচারের অক্ত অনেক ব্যক্তি একত্রিত হন। তুই বাক্তি শিশু ধর্মের সপক্ষেও ব্রাহ্মধর্মের কতকগুলি মত প্রকাশ করিন। নানা প্রকার তর্ক উত্থাপন করেন। শাল্রীমহাশরের কথার তাঁহাদের সকল বৃক্তি বিশ্বভিত হইরা বার। ত্রাত্রে বাঁকুড়ার শ ক্লসমুহের ভেপুটা ইনস্পেটর বাবু ব্রক্তে ক্লার গুহমহাশরের বাঁড়ীভে উপাসনার হব শাল্রীমহাশর উপাসনার কার্য্য করেন।

বরাহনগর।

वहाइनशत बाक्तनभारकत शक्कविश्म छेर्श्तरवत मःकिछ विवत्रण निष्त्र श्रीमण्ड इटेण।

২৭এ ফান্ধন শনিবার, প্রাতঃকালে উপাদনা। অপরাহে বাবু রামদাস ভট্টাচার্ব্যর গৃহপ্রাকৃত্বে "এই দেশের বর্ত্তমান ও ভবিষাৎ" বিষয়ে বাবু আনন্দচক্র মিত্র একটা বক্তুপা করেন। ভাহাতে ভিনি বলিলেন, বে পৃথিবীর মধ্যে এমন কোনও ধর্ম সম্প্রদায় নাই বাহা সর্বভোজারে মানব-জীবনের প্রকৃত্ত উপরোগী হইতে পারে! প্রভোক সম্প্রদায় এক একটা লক্ষ্যে দিকে অগ্রসর হইভেছে। কিন্দুদিগের ভাব-প্রবণতা, বৌদ্ধনিগের ধ্যামশীলভা এবং আঁকীরদিগের কর্ত্তবাপরায়ণতা এই প্রভোক বিষয়ই ধর্মের এক একটা দিক মাত্র। কেবল মাত্র আদ্সমান্দই ধর্মের এই ভিন্ন ভিন্ন সংশ্বেক একত্রীভূত্ত করিয়া ভাহাদের মধ্যে সামঞ্জ্য স্থাপনের চেন্তা করিতেছেন '' ২৮ কান্ধনা নৈবিবার, প্রাত্তে উপাসনা। বাবু উন্দেশ্যর মর্ম্ম এই বিষয়ের উপাসনা। বাবু উন্দেশ্যর মর্ম এই বি

पढ जाहार्रात कार्या केंद्रेस । जीवाब जेन्द्रित मर्च वहे एव नक्षरावेत्रक जाजात मर्दा नर्द्धान कतिएक ना नातिरन व्यक्त क क्ष्य देखांच कक्षा बाह ना । नाश्नातिक विषय नक्षा जीव-करनेत्र जो जीवाब रहत माख। योद रक्षांचनांच तात नायश-करनेत्र जो जीवाब रहत माख। योद रक्षांचनांच तात नायश-

क्ष वाशक्य

कर्मकाश्वत किएत कामाकि मन्त्रं क्रमकी कार्यने क्रम म मत्म करत द छारात्र कछरे चारता । किन्न रश्म निर्मा আকালিত চর তথন তাহার সকল আলোক নিবির্ণালয় **७४म व्य मिर्लंड क्लंड** वृत्तिष्ठ शास्त्र । क्लाम वर्षन रकतन 'बाक निक्का निक्क हार्डे, छथनरे करकारत कोछ रहेत्रा छेठि, न्यास केति आमि क्छ वड़ खामी, कछ वड़ महर शाक हरेताड़ि, षामि वांशा वृक्षि छाशाहे ष्रकाष्ठा, ष्यामि निरक्षत्र कारन रव शर्थ চলিতে চাই ভাচাই ঠিক পথ কিছু এ অচ্ছার অধিককণ भारक ना, महरकारे हुन इहेशा यात्र । यथन द्वारा दव व्यामि वाही মনৈ করিরাছিলাম তাচা হইল না, কিন্তু তোমার ইচ্ছা পূর্ণ रहेन, यथन दिश्य पात्रि दिश्य कामि दिश्य कि विकास দে পথে অগ্রসর হইতে পারিলাম না, তুমি বলপুর্বক আমার কোথার টানিরা আনিলে, তথনই আপনার কুলেছ, অসারছ ব্বিতে সক্ষ হই, তখন তোমার অসীম জ্ঞানের আলোকের 'মধ্যে আমার কুত জানের আলোক নিবিয়া যায়, তথন 'ভোমার অদীম চরণে আমার অহত্ত মন্তক আপনাপনি অবনত হয় এবং আমার প্রাণ বলিয়া উঠে,... "হে অনস্ত দেবতা। আনি আবার কি, যে অহঙ্কার করিব ?"

প্রভূ ! আমার জীবনের ভার যে আমার নিজের হাতে না निया जूमि नहेबाइ, जाहाटक खानहे हहेबाटह। आमि निटक्त মলল কিলে ইর তাহা ব্ঝিজে পারিনা; আমার নিজের জান কুল বাতির আলোকের মত জীবনের অভি অল্পথকে जारणाकिङ करतः; कोवरनद वर्खमान ममग्रे ८कवणमाख कामात पृष्टिनरथ नरक । याहा अब्रमाख्य रमिश्च नाहे, याहा किहू ভাল বলিয়া বুরিতে পারি, ভাহাও কার্ব্যে স্থ্যস্পন্ন করিবার শক্তি আমার কোণার ? এই হ্র্বল অবস্থার মধ্যে যদি তৃমি আমার হত্তে জীবনের শুরুতর ভার 😻ত করিতে ভবে আমার জীবন নিশ্চর কগনই রক্ষাহইত না। কিন্তু তুমি আমার 🥞 ক্ৰিতা, আমায় জুৱে আভানের বিৰয় জান, তাই তুমি এ ভার নিজে বছন করিতেছ। তোমার অসীম জ্ঞানে আমার অনস্ত জীবলের পণে কি বিশ্ব ও অভাব আছে ভাহা পূর্ব হইতে জানিতে পারিয়া সে সব মোচনের ব্যবস্থা করিয়া য়াথিতেছ। জোমার বিধানে আমি বেশ হুখে'আছি, সকল প্ররোজনীয় বস্ত হাতের কাছে পাইভেড়ি কিন্ধপে দিন কাটিয়া ষাটতেছে কিছুই ব্ৰিতে পারিতেছি না। আমার প্রকৃত मलन किटन रह, कृषि दिशम जान ध्वतम कात किरहे जातन ना; ধন্ত মলশমর ভোষার বলশ বাবখা। কেবলমান ভোষার ध्वारक्रे बोर स्टब नाम कतिएक भारत !

প্রস্থান তোমার যা ব্লিয়া জাকিলাস; কিছ আঞ্চ প্রস্থান বিশ্বার উপযুক্ত হইনার না। অত্যে সিঞ্চ ক্রতে পারিলে তবে হে তোমার না বলিয়া জাকা লামার মধ্যে শোভা পার। পিতর মত সমস্ভা আবার ফুইণু কণ্ট কৃটিই লোকের

and their marks bein allow and confidence. वित्रकात अध्यानपुर व्हेश कि त्वामक वक्तकात अध्या कविटक नात्रिवाहि । बाटक क्रांकिश निक्र क्रांतिक शास्त्र ना, मां तथात्र वस्म निक कीकात्र चौहले विक्रित अर्थि औरम र्पणात, या मेकवात विकास, काष्ट्रीया विराम, कवून एम क्रियू-एउरे **डॉरांत नक कारक ना,—बाद बारेतरक अर्थ** आ अधिता কাঁৰিতে কাঁৰিতে তাঁহার পদ্মাৰ পদ্মাৰ ছুটে; আৰি কি ट्यायांत्र ८७मिन नकान एरेग्राहि १ मात्रिटन, शत्रिटन, इंश्व निटन, বিপদে ফেলিবে, আর আমি বলিব---মা মা আৰি আর रकाशाब छ नाहेंव मा, चाबि रकामाब है कारह शांकिय; कृषि र्यथाटन याहेर्द चामिड नटक नटक वाहेर, छूमि चामान त्य ভাবে রাখিবে আমি সেই ভাবে থাকিব। এরপ শিশুভাব কি আমার জয়িরাছে ৽ ভাহা যদি না হইল, তবে কেবল মূথে মানা বলিরা কোন ফল নাই। ভূমি আংশীকলি কর আমি বেন তোমার সরল শিশু হইতে পারি !

মা বই শিশু আর কিছু জানে না। সে সংসারের সংবাদ বড় রাথে না। সে কেবল মাকে জানে এবং তাঁহার কুত্র পুঁহ জানে। সেই খানেই সে খেলা করিয়া বেড়ায়, যাহাকে দেবে ভাহার নিকট কেবণ মাধের গরই করে। আমার প্রকৃতি কি সেইরূপ হইয়াছে, আমি কি আর সব স্কুলিয়। কেবল তোমাকে ও তোমার সহবাসকে সার জ্ঞান করিরাছি ? ভোমার সহবাসরূপ প্রাঙ্গনে আমি কুল শিশুর মত কি খেলিয়া বেড়াইতে শিখিয়াছি,যাহার সঙ্গে দেখা হয় ভাহাকে কি ভোমার ক্থা বলিতে পারিতেছি? কেছ শিভকে মারিলে বা কোনও ক্লেশ দিলেদেও আর কোথায়ও যায় না,কাঁদিতে কাঁদিতে মারের काटक क्रुमित्रा आंत्रिता डीकात टकाटन माथा नुकारेता आर्थनात एः थ्यत कात्रण थ्निया वटन। आभिक त्मक्रम कतिरक भावि मा। यथन जारमादित कान ज्ञान हरेक काम व चाचा छ छा छ हरे, যথন ছংখ্যস্ত্ৰণা আসিয়া আক্ৰমণ করে,...তখন ভাষ্ট্ৰত অভিভূত না হইরা শিশুর মত সরলভাবে ভোমার ক্যোড়ে नुकारेशा अखदात (तनना नकन कि ट्यामात निर्देशन काँब्रिए পারি ? আবার শিশুর কেমন নির্ভয়ের ভাব দেখিতে পুরুই ? त्म भारतत राटक मकन कार्त तिका निक्ति शास्त्र । तन कारन বে বতকণ আমি মারের কোলে আছি, ডডকণ আমায় কোনও ভর নাই, কোন দক্ত আমার বিছুই ক্রিভে পারিকেলা। जीवत्मत बाहा किंदू जावश्रक छाहात ও जना त्म किंदूरे कारव नी, त्म खारन त्व काहात चाहेबात मनत हहेरण हा कार्गनि ভাকিরা ভাষাকে ৰাইভে বিবেন। কিন্তু ইয়ার কঞ বিশ্বীক ভাব আমার মধ্যে। আমি নিবানিশি তোমার কোলে ক্ষিয়া पहिताहि, जश्य क्रिकित्रकहे खत्र काश्यात कहित, क्रिके लेखात भागकात व्यान जक रहेना नक्तिहरून, क्लामान कारक क्लिक्टन त्यामञ्जू त न्यान कतिरकं नारके मा काका विश्वास के किए शांतिएकहि ना । भारति सीमून शांता निम्हारम् ।

প্রেরিত পত্র।

(अञ्च द्वारकतिरनत वक्रामरकत कत्र वन्नानक मात्री करवा ।)

গত ১৬ই গোৰের জন্ধনামূলীতে ব্রীকৃত বাবু ভগবতীচরণ ধা স্বাক্ষিত চিঠির ওটা আগ্রের মধ্যে গত ১লা চৈত্তের ভন্ত-কৌমুদীতে ছুইটা আগ্রের উত্তর দিরা ওর অগ্রেটীর উত্তর পরে আকাশ করিব এইমাল অতিশ্রুত ছিলাম। অদ্য তাহা নিবে-দন করিতেছি।

ভগবতী বাবুর ৩র প্রাপ্তা, ঈশ্বরের সর্বজ্ঞতা ও মনুবারের স্থাধীনত। বিবরক। বিশেষ ভাবে চিন্তা করিরা দেখিলে বাধ কর যে ধর্মজগতে ইহাপেকা কঠিন প্রাপ্তা আর নাই, এই প্রাপ্তা মিমাংসা করিতে না পারিয়া কেছ বা 'জীব ব্রহ্ম এক'' ভাবিয়া ঘোর অবৈতবাদী হইয়া পাপ পুণ্য অস্বীকার করেন, কেছ বা জীবকে ব্রহ্ম হইতে সম্পূর্ণ পূথক মনে করিয়া ঘোর বৈতবাদী হইয়াছেন। বাহাইউক আমি এসম্বন্ধে চিন্তা ও আলোচনা করিয়া যাহা কিছু আলোক পাইয়াছি ভাহাই

এবিবরের আলোচনা করিতে হইলে, প্রথমতঃ ঈশ্র ও জীবাল্পা কি এবং ইহাদের পরস্পার সম্বন্ধ কি ? দিতীরতঃ ঈশ্রকে সর্ব্বজ্ঞ বলি কেন ? ভূতীরতঃ জীবের স্বাধীনত। কি ও তাহা কি প্রকার স্বাধীনতা?—এই ক্রেক্টী বিষয় জন্তের বুঝা স্বাবস্ত্রক। কিন্তু এই সামাক্ত চিঠিতে উক্ত গুক্তর বিষয় গুলির ব্যাখ্যা বিষদক্ষণে করা স্বস্ত্রক স্ক্রেয়ং তাহা স্থিত সংক্ষেণে লিখিত হইল।

আমরা সকলেই বীকার করি যে ঈশর জ্ঞান প্রেম শক্তিপূর্ব অনন্ত পূর্মণ অর্থাৎ পরমান্তা, আর মানব ঐ ক্ঞান প্রেম
ইচ্ছানত্ত পরিমিতান্তা অর্থাৎ জীর। জ্ঞান প্রেম ও পতিন
বন্ধ বালা ভালা এক—তালার পূণক ও থও চইতে পারে না।
কিছু মানরের মধ্যে যে জ্ঞান প্রেম ও শক্তি দৃষ্ট হউতেছে তালা
পূণক কি বঙ ? না, জালা পূণকও নহে বঙ ও সংগ, তালা
ক পূর্ব জ্ঞান প্রেম শক্তির কণামান্তা। মূল বন্ধতে উল্লির
বিহত আমরা এক, কিছু পরিমাণে গূথক। তিনি পূর্বজ্ঞান,
পূর্বপ্রেম ও পূর্ব দক্তিসকলার পূর্বপ্রেম ; আর আমরা পরিনিত জ্ঞান, পরিন্তিত প্রেম ও পরিন্তিত শক্তিসকলার পরিমিত
পূর্ব অভ্যাহ অক্রিকে জ্বাহি জ্ঞান প্রেম ও পঞ্জিতে মানবও
কর্ম উভাই অক্রিক ক্রামান অভ্যাহ ক্রিকের চেরা ক্রিকের
ক্রিকের অভ্যাহ আক্রিক ক্রামান অভ্যাহ ক্রিকের চেরা ক্রিকের
ক্রিকের অভ্যাহ আক্রিক ক্রামান ক্রিকের চেরা ক্রিকের
ক্রিকের অভ্যাহ আক্রিক ক্রামান ক্রিকের চেরা ক্রিকের
ক্রিকের অভ্যাহ আক্রিক ক্রামান ক্রিকের চেরা ক্রিকের
ক্রিকের অভ্যাহ আক্রিক ক্রিকের হেলান অংশ। অকুলী প্রীরের
ক্রেমিক ক্রিকের ক্রিকের হেলান অংশ। অকুলী প্রীরের

San A. A. Gallerin Continues.

with the first main street of the large of the co नपारव कि कि में कि मिला महीतर महीतर महानी मना नाम मा कार अध्योदिकेश महीत त्रमा शरिष्ठ भारत माः अवह देशिया भक्षभाव विश्व अटहे। भवीत यनितम क्टहत ममच व्यवस्था ৰুষার, আর অজুণী বলিলে কেইের এক অতি কুলাংশকে दुशात्र : क्रुक्ताः "এक वार्थ कक्रुनी मंत्रीत, व्यात अक वार्थ कक्की महीत मरह" बहे रा एक एक काव स्थम महीत '७ অন্তুণী সম্বন্ধে প্রকাশ গুটেতেছে, জীব অক্ষের ভেগাভেম্ব ঠিক त्महे श्राप्ता । पाठका वाहना (य क्रिया ह क्रीत मनक कंक इंडेटमं अधियांत्व करू का शाकास जीरवस जीवफ छ ঈশবের ঈশর্ভ অকুর্রপে প্রতিষ্ঠিত রহিরাছে। িজীয় ও **রখ**র এক" অথবা "জীব ও ঈশ্বর ইহারা পরস্পর পृथक्" बहै हुई खकांत्र क्षम हहेवात्र टकान । म्हावना नाहे। ফলতঃ এতত্ত্তরের মধ্যে বে বৈতাহৈত ভাব তাহাই প্রকাশ পাইতেছে ৷ তিনি আন প্রেম ইচ্ছাময় হইয়া উক্তরণে মানবকে সেই জ্ঞান প্রেম ও ইচ্ছার এক কণা দারা আপন আদর্শে স্থান করিয়া অনস্ত উরতির পণে ছাভিয়া শিরাছেন। সেই জন্তই তাঁহার সহিত আমাদের পিতা পুত্র স্বন্ধ। তিনি পিতা আর আমরা পুত্র; এই বে জীব ব্রক্ষের একড ও দ্বিত্ব ভাব দেখা যাইতেছে. ভাহার মধ্যে আমাদের বেলেও दिमास्टिक्शन धरे धक्य छावडे विराग करल छेनल के कतिया ছিলেন কিন্তু পৃথকত্ব ভাব দেখিতে খান নাই। সেই অক্সই **डाँरात्रा (यात्र कदेवलवाती क्रेताट्य ।**

একণে প্রশ্ন হইডেছে যে "এক দিকে যেমন দ্বীর ও কীবেতে এক, আর একদিকে ঈশ্বর ও জীবেতে এক ন্যু,"---এই বে একছ ও বিষভাব বা বৈভাবৈভভাব—ুবে স্থলে অংশতে ও জীবেতে এক চইয়াও পৃথক রহিরাছে—সে ভাবের স্থিত্প বা যোগ কোথায় ? সেই সন্ধিত্ন কি প্রকাশ করা সম্ভব ? না, ভাহা বাক্তবিকই প্রকাশ করিয়া বলা সম্ভব নয়। যে মহাদ্মা বিভক্জানালোচনাও সাধন ধারা ুসেই স্থানে গিয়াছেন বা **শাখ-ৰোজতে সেই ভান দেখিতে পাইয়াছেন তিনিই** এই ভাব পরিকাররূপে বুঝিতে পারিবেন্। বাহিরে এইভাব তাকাশ করিয়া বুঝাইতে গেলে কেবল এই মাজ বলা যায় যে. त्मम अस्कात ७ चाटनारकत छात । यथन अस्कात ताळी (अत হইরা ভোর হইতে থাকে, ক্রমে ক্রমে অক্ষকার চলিয়া যাইয়া ভাবোক হয়, কিন্তু অন্ধকার ও আলোকেয় সন্ধিত্ব • কোণায় ভাহা কেই রেখা কাটিরা নির্দিষ্ট করিরা দেখাইভে পারেন ন। অধচ আমর। জানি যে অক্ষকার ও আলোক চুইই আছে এবং উভাবের সন্ধিত্পও আছে; সেইরূপ এই জীব ত্রক্ষের সন্ধিত্র বা त्याग त्काबात छाडा ल्लंडे कतिया द्राचा कारिता निर्मिष्ठ कता -वार ना, अथे भायुत्र अनि त्य क्षेत्र ଓ कीव कहे आएक। सीव ও ত্রন সম্বন্ধে বেমন এইরপ ভাব দেখা যাইতেছে; জগং ও ত্রন্ধ महास्त्र कार्डि । अधन यह बाह्य । विष् जात कि श्राकाण वार्वेष्ण्यके अपने क्या बाद्य केचर व नर्सवाशीय विश्वास वसँकाका, भारत धारे विश्व कानरे औरवत्र मृतका विशास देविकत ভিত্তি স্বাধীনতা একাশ পাইভেছে।

अथम दिना वाक्रिक जीदनत प्रात्तीनकाः कि अने कार्यक वाशीनकात्र नीमा एक मृत ? जामत्री संक्रताकृत अस्ट्य क्रिक्ट् कति (व शांश व्यामारमा व्याकाकाः व देखाः क्षांस व्यादिमक ক্ষিতে পারি না। ইহার ভারণ ভি ? ইহার কারণ আনাদের পক্তির অৱসা। সামরা ইছে। করি বে কোন একটা বুবং কাজ করিব কিন্তু শক্তির অল্পড়া বন্দতঃ তাহা করিছে পারি না। ইহাতেই প্রায়াণ হইতেতে বে আমারা খাণীন নহি। আমনা नीधीन रहेरल याहा ठेक्का छाहाहे कार्री मिलिनेक कविएक পরিতাম। ফলত: আমরা পরিমিভ, জ্ঞান শক্তি ঘাহা প্রাপ্ত **इहेब्राइट छाहा यादीय ना हहेब्रा अक्लूर्य काम खेमिकित व्यक्ति**न नर्यमा बहिबाछ। कुछतार धामिक चामबा वाधीन नहि। কিন্তু ইহার আকু একটা কুন্তু দিক আছে ৷ ভাহা এই বে चामारमञ्ज পরিমিত জান, তেখন, শক্তি থাকার আমাদের विठात भक्ति तहिताए। कामारमत अहे कृत कान किर्वा द ममञ्ज विवय श्रीकिकां क्य कांकांके आमता आगिएक भारत, **(महे क्यांना विवन्न इहेटल्डे कामास्मत विलान मक्ति वातान** ভালমন্ত্র বিবেচনা করিয়া চলিয়া থাকি। এই যে গ্রন্থিভাত বিষয় সমুখ্য জানিয়া ভালমুক্ত বিবেচনা করিয়া চলা-ইংটি जाभारमत्र वाशीमका अर्थाए এই अर्थ हे आमना वाशीम । हेह বাভীত আমানের স্বাধীনতার লক্ত কোন অর্থ নাই।

এডক্ণে আমরা মূল প্রাপ্তের মীমাংলার বারে উপভিত **इहेगांग**। এक निरु পूर्व चन्नुश जकन चारन अ जकन कारन भाकिया भूर्व स्थान कारण वर्तमान चारहम ; चात कीव त्महे পূর্ণ স্বর্নেরই হ্লান কণা প্রাপ্ত হইরা তাঁহারই ইচ্ছার পূর্ণতার াদকে চৰিরাছে; প্রাকৃত পক্ষে তিনিই জীবের চাঁগঁক। জীব তাঁহারই কর্ত্তাত চলিতে কেবল এক একবার এদিক ওদিক মুধ কেরাইভে চেষ্টা করে, ইছাই ভাহার স্বাধীনভা, স্থুতরাং ঈশার দর্মজ্ঞা, আমি বাহা আদা করিডেছি তিনি जान। जनमि मान रहेंटल सानिया त्राधिताहन, **जा**नात ক্লানিত প্ৰের এক চুলও আমর। এদিক ওদিক করিতে भाति ना। व्यक्त निर्क व्यामि छाँदाइटे श्राप्त कान, महिन ও বিবেচনার ভারা নিজকে চালিত করিয়া ভাঁহারই সেই অনাদি কাল হটতে জানিত পথেই চলিতেছি। তিনি क्षनामि काल इन्डिक कामात कक्क त्य शर्श निर्मिष्ठे कतिया शांबिशाहित्नन, व्यामि व्यामात्र निखं कान ও বিবেচনা पत्रा খাধীন ভাবে চলিতেছি, ইহা মনে করিয়া অক্সান্ত লারে তাঁহা-রই 'সেই নিন্দিষ্ট পথেই চলিতেছি। স্কুডরাং ইহাতে তাঁচার স্ক্রতার ও আমার স্বাধীনতার কোনও বৈশক্ষ দৃষ্ট , ইই-८७१६ मा। पामि तारे ककरे आमात्र शूर्व विक्रिक विविधा-ছিলাম যে স্বাধীন অর্থে ঈশ্বরের অধীন। বলা বাহল্য যে ভগবতী বাবুর প্রশ্নের উত্তর দিতে গিয়া কিছু কঠিন ভালে উপস্থিত इरेशाहि, जशान जिनि चात्र जानक जान के के किए नारतन। वांहाई हुउँक फाँकांत याश टाम हिन टक्वन फालाबरे छेखेब निएक (हरी कविदाहि। देश स्ट्रेंटिक का बाद कैरिया कवि-बाटक कागात खेखन निटक टाडी कनिया

क्षभारम ककी कथा वना चावककात्र मार्थावरन चानमारक दे चर्च याधीन वनिया मान करक्य वाष्ट्रविक छालाया एन कर्श्य शारीम नरहम । डीहारश्य निकरक त्यंत्रण शारीन अहम क्या है अकाष अव। कार्यस्य अवन सम करेनाव कारन करें दर फीनाता त्य मगक कार्या करहन छाहा डोहाता निरमत कृषे साम देशा विरव्हना कवित्रा करतम । किश्मा करे विष्कृता कविता करतम गा त्य, व्यापि

THE RESIDENCE THE PARTY NAMED IN वानिकारकम्, नेवद् काक्षक् भाननारिकः नामाव न्यास्त सामा व्यक्ति कालक वर्ष कारावेद काल मन विश्ववना कवित्रा करत्य क्षेत्रकाश्चीत्वात्रां भागमाविनेत्य मण्यान्यानीमं मणिना महत्र करवाने । भवित्मद्द मिर्द्यम्, छन्द्रश्री बाद् ह्यांच मार्थात्रद्रगढे ब्राह्म विधानी देखांकि" कीत कांवा टार्जान कतिहारक्य, कामा चार्यात निक्ते फ्रेडिक कार्या कर्षेत्राटक विनेता द्यांस कर्य मेर । বাস্তবিক ভৌৰার প্রাপ্ন শুলিন যে কিছু জটিল ভাষার স্বাস্থ भ्रत्मन मारे किंद जाना बनिया आरमता ता हेराय मीयारमं मा क्षित्री (करन चर्द्धत क्षात्र विद्यान करतन छात्रा बरन कति ना । विरमदण्डः किनि निकारक खाना बनिया हितिएक चौकांब ক্রিরাডেন এরণ স্থাে ভিনি নিজেট জােঠ লাভার্য স্থায় প্রায় ক্ষটার মীমাংসা অ্যুক্তি ছারা ব্রাক্ষরিগকে উপদেশ বিতে পারিতেন অথবা তাঁহাদের সহিত আলোচনা করিতে পারী-८५म किन्द्र धहेन्नर चार्टन छीत छात्रा खारवान करा क्रम हा मुक्छ दरेबार्ट; आभाक्ति छारा फिनि निर्वह विश्ववैन। कविदयन देखि।

निर्वत्रक শ্ৰীকুঞ্বিহারী সেন ট

मर्वाम।

नामकत्र ;--- गंड ১৪ मार्क द्रम्म किवाब वाव व्यवहत्त्व বস্থুর প্রথমা কন্তার নামকরণ হইয়া গিরাছে। ভত্নলক্ষ্রেশক্তিত भिवनाथ भाजी छेेेेेे छेें नात्र कार्या करवन । वानिकांच नाम মনিকা রাধা হইরাছে।

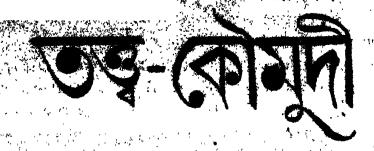
উৎসব ;---গত ১০ মার্চ রবিবার শিবপুর প্রার্থনা সমাজের সাম্ৎসরিক উৎসব হট্রা গিয়াছে। প্রাতঃকালে উপাসনা হয়। অপরাক্তে আলোচনা ও প্রবেদ্ধ পাঠ হয়। ভৎপরে বাবু উমেশ্চন্ত দত্ত ধর্মগ্রহ হইতে পাঠ ও ব্যাখ্যা करतन। ভिनिष्टे मात्रःकानीन छेपामनात कार्या मन्त्राहन करत्रम ।

নৃতন সমাজ ;—বাবু কালীপ্রসর বন্ধ লিখিয়াছেন যে ঢাকাদেশার অন্তর্গত তিল্লীপ্রামে সম্রাতি একটা প্রার্থনা সভা স্থাপিত হইরাছে। প্রতি রবিধার প্রাত্তে এবং সন্ধ্যাকালে জ্ঞার উপাসনাদি হয়। প্রভাকে বুধবার তপ্সংশ্লিষ্ট সক্ষত সভার कश्रित्यम्य रहेवा श्राटकः। जयादकः वर्खमान म्हानःशाः १ वसः।

ब्राज्ञिका मश्राद्धतं छे९मद :—विशव ३८३ काडन বরিশাল ত্রান্ধিক সমাজের ১২ল সাক্ষর কিবস্ব সম্প্র হ্ট্রাছে। এমতী সরলা বিশাস ব্রশ্নগীতোপনিবৎ ও জীবন সংক্ষে ইত্যাদি পুত্তক হইতে পাঠ করেন। তীযুক কুত্ম-कुमाती वक शार्थमा करवेन। अध्याकीक चारमाहमा अवः স্কীত সংকীর্ত্তন হয়।

যফস্বলম্থ বন্ধদিগের নিকট নিবেদন।

मक्त्रलात बाक्र वच्च्यात्वत निक्ठे निर्देशन करे द्यु, यथन কোন প্রচারক ভাঁছাদের নিকটবন্ধী স্থানে প্রচার করিতে योदेर्यन, डाहादा एयन जब्बार भूतक देशहात कार्यात वधायन বিষয়ণ তথ্যসূদী সম্পাদক্ষের নামে cotae ক্ষেত্র টোছার दक्कुण ७ जेनरसरमत वर्ष व्हरूत नश्रकरन ज्ञान निर्विष्ठ cb है। कतिरवन। **छेरमरवह विवत्न वैद्यान भाठान, क्री**जाही कार्श नश्क्तिसंज्ञादन निविद्य कार्य इत्। का क्योंक सम्ब विवतन निविष्ठ हरेत, व्यवष्ठ छाहात मध्या बेळ छा 🕸 🗫न-तिर्मित्र नावारमध्ये वाक्टिय बाहे छात्य माहाहरू होही कृति-विन। छेष्रकोष्मीरक अपिक साम माहे, व्यक्त आनेत मकन विवत्रन विकुष्ठ फारव काकान क्रिक्टक नामि महिल्ली



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক শাক্ষিক পত্তিকা।

५२मी स्नान । ५म मरबान

>ला देवनाथ मनिवास, ১৮-১১ मक, खाना मच९ ७०।

বাৎসন্ধিক অগ্রিম মৃশ্য ২৪* সক্ষরণে ৩১ প্রতি গণ্ডেমু মুশ্য ৮০

ৰী ন-স্বোত।

জীবন হরিয়া কাল বার ফ্রচগতি,
হিন্ন গাকি নাহি সে শকহি
না জানি যে কোন খানে,
সদা এই স্রোভ টানে,
আঁধারে জয়িয়া বহে যার স্রোভস্বতী;
জাধারে লুকার; কোথা তার পরিণতি ?

কাহার আদেশে নদী কোণা জনমিল ?
কি উদ্দেশে কোণা সে ছুটিল;
আমাতে উৎপত্তি নয়,
এ আদেশে নাহি বয়,
আমাক্ষ রাথিয়া পাশে, কেলিয়া চলিল;
স্থ জ্থে জুই মোর ভাসায়ে লইল।

বাঁচাতে জীবন-শ্রোত হরেছে উৎপত্তি;
ভাঁহাভেই হয় বেন ছিভি।
জাঁদ্ম মেঘ সিদ্ধু জালা,
পড়িয়া ধরার কোলো,
পূন সেই সিদ্ধু-পানে যথা ভার গতি;
বাও রে জীবন তপা নিজের বস্তি।

সম্পাদকীয় মুম্ভব্য ।

কোন বুণা ঈশবের নিকট প্রার্থনা করিন ? প্রার্থনা করিয়।
কোন ফল নাই লোহারও বাবহার সেইরূপ। বে বাজি মানবকে
ঈশবের ক্রেণাতে অবিখাসী করিয়া সভীর নিরাপক্পে
তাহাকে কেলিয়া দের, তাহার স্থার শক্ত আর কে আছে ?
আমাদের তুর্রুল মানব প্রকৃতি সমরে সমরে জীবন সংগ্রামে
অবসর হইয়া পড়ে। কেই নিরাপাজনক কথা না বলিলেও
আমাদের মন সমরে আপা হইতে খোর নিরাপার মধ্যে
পড়িয়া যায়। সে সমরে আপা ও বিখাসের কথা ওনিলে প্রাণে
কত বল পাওয়া বায়। তখন সেরপ কথা বে বলে সেই বছু।
তাহা না ইইয়া বে নিজের ছংপভারে নিজে অবসর হইয়া
পড়িতেছে, তাহার গলে আবার অবিখাসের পার্যাণ বাধিয়া
বে তাহাকে নিরাপার গভীর জলে নিজেপ করে সে পরম
শক্রের করি। তে! সংসার পথের অবসর পথিক, ভূমি
আখাসিত হও, প্রভু পরমেশ্বর ভোমার নিকটে রহিয়াছেন,
তিনি তোমাকে পরিত্যাগ করিবেন না।

আর কেনই বা পরিভ্যাপ করিবেন ? ভিনি বে আমা-निगटक এই अधिकात निवादक्त दि आमता छाँकाटक स्निटिक পারি ও তাঁহাকে প্রীতি করিতে পারি। ইহাতেই কি প্রমাণ 📍 भाउता यात्र मा (स जिमि चांसानिशतक जाहात गहराम्य अस स्ष्टि कतिशास्त्र ? धेरे असरे ७ मानवसीयानत मृता ७७। আমরা উহোর সহযাদে থাকিতে পারি, এট অধিকার যদি আজ विशृक्ष इत, जाहा इरेटन कि आमारनत जीवन गलावत कीवन অংশের্য অক্কারমর হট্রাধার নাঃ প্রয়া বর্তমানের স্থ জুঃধইতিভাগ করে; অভীতেব ছড়ভি শ্বরণ করিয়া ভাহাদিগকে অঞ্পাত ক্রিতে হর না; ভবিষাতের বিপদের আশহাতে মলিন हहेट इब मा। यासरवर्त वर्त्तमारमद स्थ कड नमरव छक উভन्न कातर्थ विकास इहेबा यात्र। श्रेयतरक स्नानियात अ लीकि कतियात व्यक्षिकात यति, वाक विन्शे वत, जावा व्वेटन मामक्षीवरमञ्ज गटकंतक छह्यत बात वस हरेग ; किन्न वर्छमान कीयांन इ:बार्क आर्थिष्ठ वहेंबात इंहे बात छेण्यांक्रिक प्रस्मि। भूणकार मामदः जीवन नंधनकीय जीवन करेराज्य शेन क्^{रेसा} संक्रिण । केंच्य क्रीहास ग्रह्मारमध कक्क कार्यामगरक\ स्टि कडि-

ग्राट्डम, धरे मध्ये ज्ञान किता हो महिल किता नामादिक जामादित नाटन कि इव ध्वर जामूहा को निम्न नामान द्वर किता कि की नाटक जानम किता कि कि के नामान निगटक की व महनाटम वाबिएक हाम, बक्दे धरे महानका मि करता भागन किता करहे देन्द्रामा, जाक्य-महत्वम, हेस्सिन-मिख्य मानटन न्द्रश्म, महेक्स्ट्रोटन के रुगाह, श्राकृति वर्षात मकन मुक्य जामादित हिताब श्राकृति हुन्हें हुन्हें ।

٦.

' কোষেকার সম্পানের প্রতিষ্ঠা কর্তা কর্ম ক্ষ্যু ভাঁহার নিল জীবনের দৈনিক লিপিতে এক স্থানে বলিরাছেম বে উहित्त बहुः क्रम वयन २० कि २> वरमृत, छवनै छहित असदि जुम्न मरवाम वैधिश (अन। क्षीस विश्कृत्वत महिक मरवारक তিনি ক্লান্ত হইয়া পড়িতে লাগিলেন। একান্ত অন্তরে ঈশংগর निक्षे वन किका कतिएक नानितनः, किन्द्र तात वात आनुक् रहेश व्यार्थनात व्यक्ति दन व्यक्तिम व्यक्ति वाहित्व गानिन। क्रम मोहन, ७६ ७ विधानविशीन हहेता गिछ्न। धहेन्ना সংকটের মধ্যে পঞ্জিয়া তিনি সর্ব্ব প্রথমে নানা শ্রেণীর ধর্ম वाबरकत निक्र ग्रेजाताक कतिरक नागिरनन। दुर्यशास्त्र रय थार्षिक रनारकत करा खन्य करत्रन, छ। हात्रहे निकाँ ने त्रमन करत्रन তাঁহারই নিকটে হাদর বার উল্বাটন করিয়া আপনার অবস্থা বর্ণনা করেন। তিনি দেখিলেন নিতান্ত সাধুও ঈশ্বলেমিক ু ব্যক্তিরাও ঠিক তাঁছার মর্ম্মানের ব্যাধিকে ধরিতে পারিদেন न।। विनि याहा छेभान्न विभाग नित्मम छाहान्न दकानितेहे चूनः-লগ চইল না। অবশেষৈ ভিনি বুঝিতে পারিলেন যে তিনি (र পाश्यक्षणांत्र ममस्माननदक काळात्र कटतन, हेवा क्रेचटतत हेव्हा नत्र, गर्काख:कत्राण छाहात्रहे छाठि निर्कत कतिएछ हहेर्त्। এই সতাটী অফ্ডৰ করিয়া ভিনি মানবের নিকট প্রভায়াত পরিত্যাগ করিশেন এবং নির্কানবাস, আছচিতা ও অবিশ্রাম্ভ প্রার্থনাতে আত্মসমর্পণ করিলেন। ঈশবের চরণ গাড়রণে আলিখন করির৷ পড়িয়া থাকাতে কাবশেবে এমন আদ্ব্য্য আলোক প্রাপ্ত ছইলেন, যাহাতে জন্মের মত তাঁহার মন হইতে 🕳 অবিখালের অক্কার বিদ্রিত হইয়া গেল। সকলের জীবনের পক্ষেই এই সভা ক্ষরগ্রনীয় । মাহুর ধর্মে শ্রেষ্ঠ হইলেও ज्म पत्र क्षा दाक्ष क्ष का का विकिथ हरे एक शास्त्र ना । ज्यादात्र যাদও বিদিত হয়, ভাহা ঠিকরণে পূরণ করিতে পারে না। পরমেশরকে একন্তে বন্ধুও পরম গুরু বলিয়া ধরিতে না পারিলে এবং তাঁছার উপর দৃঢ়ভাবে নির্ভর করিতে না শারিলে, ষটণ ক্রিয়াসের ভূমি প্রাপ্ত হওয়া বার না। 💆 হার খার্ক্সিকে বে ভূনি দেৰিভে পাওয়া বায়, তাহাই সভ্য ভূমি।

পশ্চিম দেশীর। একটা ধর্ম প্রার্থা নারীও আপনার জীবনে

এই সাক্ষ্য দিরা পিরাছেন। ইহার নাম ম্যাভাম লোনো।

ইনিও বছ রিন পাপ প্রবেশনা সামের পরিষ্যা মনের বস্ত্রগার

ইতস্কতঃ করিতা বেডাইনেন। সামের ধর্মারক ই সামুল কনের নিক্ট সাক্ষ্য হংখ নিবেশন ক্রিণের। ক্রোন ক্রেনেই

শান্তি বাড় ক্রিভে পারিবেশন না। স্বংশনে এক্রন্য ধ্রিক্

পুষাৰ উহোচৰ বলিংগল,—"কুৰি পাৰ্কিছ ক্ষম নাৰিয়ে ক্ষমেৰণ कवित्रा ८वक्वविद्यम् वर्णिका द्रश्वाचात्र् अन्यतः लाखि वेदैयस्य आन्। বিমি শান্তিয়াভা ভিষি ভোষার মন্ত্রে বাস ভরিভেঙ্কেন---कारारक संबद्ध कार्यम् क्रम ।" वह केनरबंदन महाकाम एनरबंदम অভবের চকু বেন জুলিয়া পেল। তিনি জাপনার অভবে कार्विष्ठे रहेशा श्रेचतरक कार्ययन कश्चिर्छ नाशिरमध्ये यनम चार्यन चक्रतः तर्रे महात्वाछि वर्णन कवित्वम, क्ष्यम द्वम নৃত্ৰ রাজ্য খুলিরা কেল; ভিনি জানজে অধীর হইরা क्रेंबिटनन ; काशाव सरदाव ८ श्रम केस्कृतिक स्टेबा साहेटक गानिगः। धरे केवल ८१८मन व्यवस्था किमि ८४ मक्स क्या करिवाहित्यम्, छावात किवयश्य नित्य छेष्ट्र छ कता याहेटस्टाह । "(ए जामात अपू । जूमि जामात समरत्रहे हिर्म क्षेत्रः जरभका ক্ষিতেছিলে বে আনি ভোমারণিকে কিরিবল্ভ ভোগায় প্রকাশ দেখিব। হে অনম্ভ প্রেমের আধার। ভূমি এভ নিকটে হিলে অথচ আমি ভোমাকে অংকীণ করিরা এদিক ওদিক ছুটিরা বেড়াইতে হিলাম; এবং ভোমার উদ্দেশ পাইতে-ছিলাম না। আমার লুখের উৎস আমার অন্তরেই স্থিয়াছিল, অবচ আমার জীবন ভার শক্ষণ বোধ হইভেছিল। আমি धनवार्णित मत्था विश्वता सावित्या त्काश कविताविक्साम, ध्वदः ञ्चाका-भूर्व भाष्यत्र निकटि शाक्ति। व क्थाप्र मविष्किश्वाम । হে প্রাচীন ও নবীন সৌন্দর্যোর খনি। সামি ভোষাকে এড বিলছে জানিলাম কেন? হার হার! তোমাকে বেখানে পাওয়া বাদ্বনা, সেই খানেই তোনাকে খুলিলাম। আর বেধানে ভূমি ছিলে, সেধানে ভোমাকে খুঁজিলাম লা 📍 🖣খ-दित छेशानक विरागत सर्था कारमर क मिक्क की बरन এই পत्रिवर्कन অমুভব করিয়া থাকিনেন।

একজন महिना এकतिन धात्र कतिराहरून,-- এই বে आण-नाता এত श्रान खान्त निवाह निर्मान, विनारकत शत विवाहिक দম্পতির ধর্মান্ত্রাগ দ্বিওণ উদ্দীপ্ত হইরা উঠিল, এক্সপ দেখি-তেছেন কি তাঁহাদের যে কিছু ধর্মাক্সরাগ ছিল ভাষাও যেন मनीकुछ बदेग, छ।हाहे (नविटल्ड्ब ? केवब,--कृष्टे क्रिकी ত্ব ভির উভনের ধর্মাস্রাগ যে উদ্বীপ্ত হইরাছে এক্সণ:বলা वात ना। व्यक्त-देशत कावन हिन् छेखत-कावन आहे द আনরা আমাদের বালিকাদের মধ্যে ধর্মানুদাগ্ উদ্দীপ্ত স্কিতে शांतिएकि ना, क्षत्राः छाद्दा शतिनत्र-शार्म वैद्यालक मुस्कि चावक रहेटल्ट्स, कंक्षिनिशृदक केंद्रिवाद मध्य महिदा ত্বার্থপরতার গর্ভেই টানিরা কেলিতেছে। নারীগণের একর मत्था वर्षाचि क्षेत्रक्तिक मा हरेल, विवाह नेष्टकत बाहा वर्ष ভাবের সহারত। इटेरव ना । खान्त अभारत এয়ঀ अक्त नरमक त्विथ्य भाषता याहेटल्ड्स, वाहादमञ्जलक निक्षां कार भारत व्यवनाष्ठ रहेतारह ; याहाश बांच नमारवात रनदास अब वार्थनान कतिएक रेक्क् । किन्दु आमानिकरक ब्राट्सिक मेर्बिक वीकात कतिएक इरेएक्ट्स स्व कामना मानीनर्गन बहुना स्वानक বে ক্ষমি ভাগ কৰিয়া আগাইজে প্ৰিয় নাইছ প্ৰায়ীখন ক্ষাৰ धरे धन पेचन निष्ठ नामना जात्रका सबसा वृति विद्याप

वर का विस्पर्धात श्रमक्षानकात्री वर्कान दकान जाक लाहातकहरू किकाना कतिरामन, चार्यगांवा बाब, इके, लाख छ श्वादन वर्षिक महाशूक्रविशदक कि मदन करबन ? लाब-लाहातक উखत कतिरणम :-- शृतारण वर्गिक এই महाशृक्षकारणत যে ইভিবৃত্ত পাওৱা বার, তাহা অত্যক্তিবোৰসিঞ্জিত, ঠিক निर्द्भम कतिया कि हुरे बना यात्र ना। ए दर्कत अञ्चरत्रार्थ दवन चौकांत्र कतारे राज रय अरे नारम रकास रकाम महान्त्रा हिट्नम ; खारा करेटम : डानावा बनाईक्रम माछ, देखान आधिक नरहरा। महाशुक्रवितिशतक (यन चंडे (कंब छ। प्र विटव्हमा कता यात्। चंत्रेक कश्चात्र वाखीत्क चानिशा बदत्रत्र नाना खन वर्गना করে, ডম্বারা কল্পারে অন্তরাগ দিগুণ বর্দ্ধিত হয় এবং পরিপয়ের वामना श्रवण इयः ; किन्द्र भविषयः यथनः इयः उथनः वरत्रत्र मरण्डे ध्य, यहेटक्त मटक् ब्यू मा । महास्रम्भ ८ श्राद्याहरू क्त्र महात्र, किंद्ध (यात्र छ। हास्त्र माल्य माह्य, (महे मखानुक्रायवहे माल्यः) जक जक महाबारनत कोवन (यन जक जक्ति भतिरवमरनत भारणत क्षांत्र, कार्राक क्षत्रमा भवरमध्य क्षत्रक त्थामात्र भवित्यमन করিরাছেন ৷ অগতের ছই শ্রেণীর লোক দৃষ্ট হইতেছে, এক শ্ৰেণীৰ লোক সেই প্ৰেমান সম্ভোগ কৰিয়া ক্তঞ্চতা পূৰ্ণ দৃষ্টিভে गतिरवहेरसं मुरबस निरक हाहिरछरहन : व्यात এक स्थिपेत শেক, পরিবেটার গুণ ভত অসুভণ না করিবা পাত্রের গুণ্ট वर्गमा क्रिएक्ट्सम ! कार्यम (अपीमा (गारकता जाका, विकीय **अवीत लाइकत्रा मधानकी बाह्ये।**

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

धन्त्रकीयदनद्र केन्द्रमञा मण्यापन ।

देनभारतमः व्यापनक्षित्रमः रहरणत व्यरकाक विश्व छ नाय-नाशीत गरक क्षण्यो। विराम हिना। नमक देश्य मान भूताकन वर्ष्यदेश काम त्रारवक क्षित्रक स्थित कविरक मित्रारक देशभारणत व्ययक विनादक क्षणक विश्व स्थाप स्थाप व्यवहार नाम। देव नाकि

আপ্নার আর বারের রণনা করিয়া আপনাকে ক্ষতিগ্রন্ত দেখিতেছে—নে এই বৈশাবের প্রথম দিনে পভীর চিন্তার নিমর
হইতেতে; কিন্তুপে ব্যবসায়কে দুখারমান হাবে, কোণার
মূতন বন পরে; ভবিষাতে ভাজের কি প্রণানী অবশ্যন
করে; বে বে কারণে ক্ষতিগ্রন্ত হইতে হইরাছে হবিষাতে তালা
পরিহার করিবার উপায় কি,ইত্যাদি নানা চিন্তা ভালার স্বর্গর আদ্বাক্তি করিছেছে। জীপ-প্রতিক্তা ব্যক্তিরা এই চিন্তার
আ্লিক্সিক্ত করিছেছে। জীপ-প্রতিক্তা ব্যক্তিরা এই চিন্তার
আহিন্তির করিছেছে। জীপ-প্রতিক্তা ব্যক্তিরা এই চিন্তার
আহিন্তির করিছেল অতীত্তের ব্যক্ত সংগোধন করিছা
ভবিষাকের প্রাক্তির করিছেলেন।

বাহার। আর ব্যক্তর গণনাতে আপনারিগতে লাভবান বলিল দেখিতে পাইছেছেন, উল্লেখ্য মূপ আৰু আনম্প উৎস্কা। উহিল্ল অভীতের প্রতি সুন্ধাত করিবা ভবিবাডের লভ আশাবিত হইতেছেন। ভাবী কালে আরও লাভবান হইবার প্রভাগো করিভেছেন। বে সকল প্রণালী অবলহন ভারতে লাভ হইবাছে, তাহার আরও উরতি করিবার সংক্র করিভেছেন।

ध्य जककु विकि चाव वाद्यत ग्रांना करत्र ना—वर्वात्यः निस बाबनाराव अवदा विहात कतिया (मर्थ ना, क्वन माज वास्टित्र क्रेप विकास रम्भिया मुख्छे थाएक, छाहारम्य मदन्छ। স্বরার দুর্মাণভাতে পরিণ্ড হর। অনেক চিস্তাবিহীন গোকে मान कात वानिकात छात्र महत्र कार्या जात किছू नाहे। सामाव " हर्ष कर बारक ; अक्षात निरक्षत्र अर्थ शरतत नरह ; स्य रा জব্য লোকে সচরচের চার ভাহা ক্রের করিবা আনিরা নিজ (माकारन त्राचिन, (मारक व्यव कतिया नहेता वाहेरन, ज्यामात প্রাণ্য লাভ আমার থাকিবে। তাঁহারা যদি দেখেন প্রতিদিন ক্রেডা আসিতেছে বাইডেছে, দ্রব্য আনা হইডেছে বিক্রয় बहेब्रा बाहेरलल, आवात आनिएल इहेल्लस्ह, खाहारलह তীছারা সম্ভষ্ট হইরা বিবেচনা করেন যে পড়ের উপর উাধা-বিশেষ সভকভার সহিত (मत गास बाकिया याहेरलहा হিগাব পতা রাণা ভত আবশ্রক বোধ করেন না। হিগাব ভ কাহাকেও দিতে হইবে না। এই ভাবিদা জাহারা হিসাব পত্র " **काल क**तिया तांर्थन ना। कि**क्र**काल भरत यथन काठल हहेता नैष्क्रिन, जबन रम्यां रमन रव माथा माथा रमाकान क्रेर्ड हेकि। गरेत्रा शृंद्धत वात्र कतित्रा कतित्रा এक कर्ष गंधता हहे-ब्राह्म (व मृण बटनत व्यक्तिकत्र अधिक कनिया शिकारक, वाकारित रहना में कि होतारक, चारनक विमाल প्रकृत शिवारक ; এখন আর ব্যবসায় চলিবার উপায় নাই। এই কারণে বাণিজ্য কার্যো ভাগক ব্যক্তিগণ প্রতিদিনের জায় বারের গণনা পরিষ্কার রাখিবার জন্ত এত ক্লেশ স্বীকার করিরা গাকেন। ভাছাদের দৈনিক ছিলাব পরিকার ছট্টরা না মিটিলে তাহার। च्रत्य निक्षा वाहेटल भारत्रम ना ।

নধ্যাত্ম বিবলে ও আমানের একপ্রকার আগত ও ওবা-নীয় আনের বংক ; বাহাতে আমানিগকে অনেক সমর আত্ম-বিশ্বত করিয়া বাবে। ধর্ম জীবনের নির্দিষ্ট সাধনগুলি এক প্রকার চলিতেছে; বৈনিক উলাসনা রীতিসত চলিয়াছে; नामासिक सेनानमारक (दोन कार्य नगाइक कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक नगाइक कार्यक कार्यक नगाइक कार्यक कार्यक कार्यक कार्यक निर्माण कार्यक का

একারণে আধ্যাত্মিক উন্নতিপ্রাণী ব্যক্তিমাত্রেরই সমূরে नमात्र नक्त कार्या हरेए व्यवस्य हरेया। वश्चीयवान व्याद्यास्त्री अप्राच-छत्पद भारताहनाटङ आय-नमर्गन कहा कर्दना । अवश्व मत्या मत्या भिष्या कर्मा हरेटल विवास नहेशा निर्वात वाम क्त्री बुक्तिमा ७ विषया (ताथ स्था। व्यानता भरता भरता क्रिएक गारे विनमार्क, प्राष्ट्रदेशन व्यक्षि रेक्ट्याशीय बाजमधीनन, बाज-कार्या रहेरक व्यक्षक रहेश। किङ्कानिसम् वक्क निर्वामनशाम कतिशा থাকেন। সে সময়ে তাঁহার। বহু জনাকীর্ণ নগর স্কল পরি-ত্যাগ করিয়। কোন জন-সম্বাধ-রহিত নির্জ্ঞ বিরিকু. 📽 , কি আন মধ্যে গিয়াবাস করিতে থাকেন। তাঁহাদের আবাস-খানের বিষয় নিজ পরিবারের লোক ভিন্ন অভে জানেনা; সেই সমরে মধ্যে সংবাদপত্ত অথবা চিঠিপত্রাদি তাঁহার নিকট -এপ্রেরণ করিতে।নধে গাকে। তাঁহারা নিরুপদ্রবে শাস্তির ক্রোড়ে আপনাদিগতে অর্পণ করিয়া বিশ্রাম সূথ ভোগ করিতে थाक्ता। अरुक्तभ निक्क नैराम बाबा इरेजी উत्मर्थ माधिक इस। প্রথম, বিশ্রাম হথ ভোগ করিয়া উহোদের পারশ্রাস্ত ও ভারা-काख मन विश्व दब ; अवगद्य त्वह मत्नत मक्ति मक्त भूनक्ती।वड থম ; বিতীয় তাঁহার। এই সময়ের মধ্যে আপনাদের অবণাবিত রাজনীতির পূর্ব্পের চিতা করিবার অবকাশ পান। কোন্ কারণে আশাসুরূপ ই তকাব্যতা লাভ কারতে পারা यां इंटिए ना ध्वर कि छे शाब अवनयन कतिताह वा कुछ কাষ্যতা লাভ করিতে পারা ষাইতে পারে, এই সকল চিস্তার ' ছারা ভাববাতের কার্যা নির্দ্ধারণ করেন। রাজনীতিজ্ঞার। প্ৰাছ বে নিৰ্কানবাদ ও আত্ম-চিস্তার প্ৰয়োজনীয়তা অভুভব क्रबन--- सशाच माधनाथीं विरागत भरक (य छाहा चाकास क्राया-নীয় তংগতে আর সন্দেহ কি ? অনেকের মুথে এই অভিবোগ শ্রুত হওরা গিয়াছে যে আক্ষ জীবনে সাধনের গভীরতা वयन ९ डेर्ग्य रहेर्छ्य ना। धरे षिंद्रशांश औं मक स्टर्। प्यामारम्ब रा धर्म-स्रीवरम्म गणीतकात्र प्रकाव ভাষতে সন্দেহ নাই। নির্কানবাস ও আত্ম-চিন্তার অভ্যাস ना भाकार देशह धारान काहन दनिया अस्वद कहा बाहा অনেক ত্রাক্ষের জীগরে এই কথা বতা যে আহিবন 'केपाननाकारण केरिया द्य इरे व्यक्त वक सिकास बरनन फ बिन्न कार्य निर्कारन विश्ववात्र विश्वव साहे। विश्वत कार्या वांस्वित्रकः निठाक वाक शाक्टकः द्य, छारात्राः क्रांचित्र कविक समय निर्माटन वालास कविद्याना शिक्त गर्थाटक महना करबक वर्षे विस्ति निकाननात । वाश्व-विश्वाद निक्रम करबस

আচার্যোর উপদেশ।

(गफ ४३व देव्य गिक्ष नियमाय माजी क्र्इंक खरस 🎄

কিছু দিন ছইল কলিকাতার সালকটে জোন উপনক্রে একজন দরিত্র আত্ম বাদ করিতেন। তিনি একটি সামাল স্থানে ছই গালি গোলপাডার বর বাধিবা বাস করিতেন। তে কিছু আন উপার্জন করিতেন তাহাতে অতি কটে পরিবারের বার নির্মাহ হইতা ভাষার একটা গুণ এই ছিল যে তিনি লিটেল দরিত্র হইতাও দরিত্র জনের প্রতি তাহার বড় দরা ছিল। নিংল মনোবোগপুর্বক পড়িরা চিকিৎসা লাল্ল কিঞ্ছিৎ শিক্ষা করিয়াছিলেন। ভাহার সাহায়ে দীন স্বন্ধিনিইগল গৃহে বিনা মূল্যে চিকিৎসা করিতেন। কে জানে হাড়ি, কে জানে চণ্ডাল, কে জানে মুটে মজুর ঘাহারই ঘরে পীড়া হইত সংবাদ পাইবামাল গিয়া অতি বজুপুর্বক চিকিৎসা করিতেন। কথন কথনও ভিকা করিয়া তাহাদের পণ্ডোর বন্দৌবত্তও করিতে হইত। অনেক দিন শুনন ঘটিত যে বালি বিশ্বহরের সমর উঠিরা গিয়া সমস্ত রালি জাগিরা কোন গারবের ছেলেকে চিকিৎসা করিতে হইত।

এक्षिन व्हार मरनाम चामिल दय चामारमञ्ज रम्हे बहुद श्वक्र इत्र भी हा। शिशा (भिभि वाष्ट्री (भारक दलाकात्रगा। क्य लारकरे पांचरक आंत्रशास, कळ लारकर क्तिएएए। घरे मध्य विभाग चाहि, स्वि (कर क्रुवेन विद्याग), কেহবা থানিকটা মিছ্রি, ८० ह्वा अञ्च कि ह्व করিয়া আসিভেছে। বিদিয়া থাকিতে থাকিতে একক্ষন क्षामा हिक्रियक वानिया उन्हिक ब्रेशन। দেখিলান সেই সামায় পর্ণকূটীরে খ্যাকয়াও ভাছার ভিক্তিসং वा उद्यावात त्नाम अपनी स्रेगाः। अवनह व्यक्ति विश्वमेक्सन 6 निग। क्राप्त श्रीका यथन चळाछ वृद्धि इहेन, ७५न अङ्गित আমরা ক্ষেক জন বছুতে বলাবলি ক্রিডে লাগিলাম যে **এখন একবার একজন বড় ইংরাজ ভাজার আনিরা পেবাইডে** गातिरम काम व्हेंछ। किन्न ३७वेका किनिके देवाना स्ट्रेंड आहेरम ? आमत। यथन धहेन्नण कथायाचा कविरक्षकि अध्यम সেধানে একজন দরিত লোক নাসরা ভিল। ঐ ব্যক্তি ইঠাৎ ইলিয়া फेठिन;—महानद्र! व्यामात्र मुखारमतः अक्यात श्रीकृतिहरून ইনি রাজি দিন আমার কুঁড়ে ব্যরে পড়িয়া থাকিয়া চিকিৎ্যাঞ ভঞ্জৰা করিয়া ভাষাকে বাঁচাইরাছিলেন। व्यक्ति कीवरन कृतियं माः इति क होनरलनः कानि हैदान कक भात्र कि कतिवार अविश्विष्ठशिक विश्विष्ठ वेश्वाक क्रिक्टा ব্দাৰিবাস ভিৰিট ১৯টা টাকা খাবি জি। কান্ত্ৰা বুলুলাৰ (ण कि किंदिक लिक्कि, द्वारायक अस्ते दक विकास समिति। Biai wang binimpfernin, min beinn, mining

कार्य, प्रमान के राज मिला देव महिमा कार्य मामान शास्त किंदू हाको काशिशाक, ट्रेनर हिम्मा वर्ष प्रवर कार्याचे गांचक। बानना आन्त्रया बहेगान, द्रिमिनाम व्यवस्थ हेरलेंच खाक्यांत स्व हहेबन वक दिनी खाक्यांदन हिमिनाम हिम्मिन्द्रपत्र खाक्यांत किंदूरे कही हहेगाना। चान द्र्य क्षांत्र द्र्यूटम काम इन ट्राहे ट्रिम बारक यान-नानि कार्यन्त्रय क्षक व्यवस्थ ट्राह्मिन खान्नम म्ह्राह्मिन हहेकन मक्क ; खाक्यांत्र खान्नम वक्क वक्क स्टान व्यवस्थ बहेदम हहेकन मक्क ; खाक्यांत्र वानियांत्र क्षक वक्क स्टान व्यवस्थ बानांत्र हिम्म क्षेत्र का अधीनन। मिल्लिंस क्षक वक्क वक्क स्टेन बानांत्र हिम्म वानिय । अवह द्रय वाक्यित क्षक वक्क वक्क वहेन

वह क (भन वक्षम महिल बारमह मुका। वह कनिकाका महात अक्षम धरी महात्मत किन्नाम मृद्ध हरेताहिन छाहा अर्थ क्लम। जिलि टेप्लुक सामियातीत अधिकाती हरेता शानामक ও इक्तियाबिङ व्हेश छेडित्यम । "भवियाव भविजन নিজ বাসপ্রামে পড়িয়া রহিল: তিনি ক্লিকাভার আসিরা विनामभन्नात्रभका ७ हेक्किन्नरम्बाटक पुविना त्रहित्सन । कांश्रान পরিবারের অপ্রভুগ ছিল না। পদ্মী, তিন চারিটী ক্ঞা, তিন চারিটা পুত্র, দাস দাসী লোক জন গনীর বেমন থাকা আবক্তক (गरेक्कन) किছ मिन नरक कनिकालां **किनि नी** फिल करे-শেন। বাড়ীতে সংবাদ গেল। পীড়া যখন ব্যক্তিরা উঠিল, তখন কল্পারা চুই একজন আসিয়া কেচ এক রাজি, কেচ এक निन शक्ति (शत्त्रन। वनित्तर-व्याभाष्ट्रत चत्र कका আছে, ছেলে পিলে আছে, আমাদের কি থাকিবার যে_ আছে। পত্নীত আসিলেনট না। ছয়ত বিখাস করিলেন ना ८४ अज़ इन भीड़ा इहेनाइह । वायुनि करम कमन ভূতোর হাতে পড়িরা খাসতে লাগিলেন। ভূতাগুলি ভয়ে ভবে কাৰ কৰিত স্ত্তাং প্ৰভুৱ যথন আৰু শান্তি দিবার শ্বস্থা রহিল না তথন ভাষারাও কর্ত্ব্য সাধনে শিথিল হট্যা পড়িল। জল জল করিয়াদশ দত্তে একটু জল পাওরা যায় नाः अदनक राषाहेशा राषाहेशा जात्मत छाक छना यात ना। व्याचात्र अमनहे व्यान्तर्वा वार्शात ! ममत वृत्तिता त्मके ममत्त्र मकत हाक्त्र कांच हाज़िशा वाहेटल नाजिल। ध दनना धक सनदक चारन. ६रवना रम भागात्र । এই क्रांभ जी भूख भतियात्र कर्सक পরিভাজা হট্য়া বলু বার্বহীন আবভাগ ধনীর প্রাণ (श्रम् ।

धरे (व कृष्टेंगे मृज्य परिमात पेटल थ करा (जन हेश नजा।
देश इटेंग्ड क्यामात्रा कि छेशर म शाहे १ ध्वक खरनत वा
माल्य ना बाकिया ७ माल्य वृष्टिंग (कन १ ग्रीका ना बाकिया
७ ग्रेम्पात काल इटेंग (कन १ च्याप्त ध्वक खरनत वा नव बाकिया
७ किहुएंड काल्य कृषात नाई (कन १ टेंग्ड ध्वक विष्ठ
नाइ। नकरनई धविद्यन दाधरमान्त चरण (खमहे मस्ता
भगवत होनक इटेंग्ड काल्य क्याप्त केयावा क्याप्त व्याप्त व्याप्त क्याप्त व्याप्त क्याप्त क्याप्त क्याप्त क्याप्त क्याप्त व्याप्त क्याप्त व्याप्त व्याप्त क्याप्त क

 $x^{\sqrt{\frac{1}{2}-\frac{1}{2}+\frac{1}{2}+\frac{1}{2}}}$

पॉरंक् मा---देशम् देवेपीरन मार्चे दनपाटन धर्म क्रम पाकिशास कोटक मूनाश्च मार्ग

এখন রাজ্যবাবের বিশ্ব সকলে চিন্তা ভরুম। ইনার কাল বেখিলে প্রথম বস্তির কথা মনে পড়ে কিংবা বিতীর বাক্তির কথা মনে পড়ে থ একটা বিবর ধরিরা প্রের করা বাইভেছে। প্রথম—আক্ষেরা ধনী নহেন জানি, কিন্তু বৈ কিছু ধন রাজনিগের আছে, ভাষার বত জংশ রাজন্মাধের কালে গেলে ভাল হর, ও বত অংশ বাওরা উচিত, ভালা বাইভিছে কি না ? প্রভাবেক জাপন আপন বক্ষঃহলে হল্প দিরা বিবেককে লাকী করিরা এই প্রয়ের উত্তর দিবার চেটা করন।

ষিতীয় বাদ্দিশের বে পরিমাণে বৃদ্ধি বিদ্যা আছে, ভাষা সম্চিতরূপে বাদ্ধার্ম প্রচারে ও রাশ্ধ সমাজের উর্ভি করে লাগিতেছে কি না ? বাদ্দিশের মধ্যে শেপক যতলন আছেন ভাষাদের কত জনের শক্তি বাদ্ধার্ম প্রচারে ব্যুর চইতেছে ?

তৃতীর, ব্রাহ্মপর্ম প্রচার ও ব্রাহ্ম স্মাজের উরাএর অঞ্চ যে বে কার্যোর আফোজন করা গিরাছে, সেই স্কল াক ভোরের স্ক্রিড চলিতেছে অধ্বা খাট্বার লোকের অভাবে চুর্ম্ন ও মৃতভাবে চলিতেছে १ -

यान देश एक स्य जाक गमारक धन त्रविवाहत, व्यन जाक नमार्कत कारक गातिएक का। वृद्धि विमा त'व्याह अवह ভদ্ধারা সমাজের উন্নতি হইতেছে না। তাহা চটণে কি এই প্রমাণ হয় ন। যে ভ্রাহ্ম স্মাজের প্রতি ভ্রাহ্মণিগের প্রেম नाहे। (यथाम (श्रम (प्रते थारनते मुख्यना, (प्रते थारनते উৎসাহের সাহত কার্যা হর। আমরা কতবারু দেশিরাছি বে আমাদের কোন সাধারণের অসুরাগভালন ও প্রভাম্পদ বন্ধুর গৃহে কোন বিবাহ, কি অপর কোন প্রকার উৎসব উপস্থিত। অনেক লোক ধাইবে। গৃহস্বামীর প্রতি **८शम थाकारक रमचि मरण मरण रणाक शतिरवर्धानत सम्र रकामन** বাঁধিয়াছে, যাহার ভাঁড়ারে বসিলে ভাল হর সে ভাঁড়ারের স্বার চাপিরা বসিরাছে, যে জের কার্য্যে পরিপক্ষ সে বাজারে ছুটিরাছে, দশ বনে মিলির। তাঁহার কাবে স্থাতুল করির। बिट्ट हा बाज नगामत काम धनार हिन्द मा (कन ? मार्ता विमारक्त निःयार्थ (अम (वंशान विमान (नंशान क्षेत्रदेव क्षेत्री मक्ति । निमामान । क्षेत्री मक्तित क्षेत्रीन क्रेड्रा यथन मासूच हरन, जबन क्रिक हरन : एबन (यथारन वाहाव विगरण काम वस, रम रमवारमहे वरम ; य कारक बावात कांच भिल्लं खाल इब, त्म (महे कात्वहे हांड (मब; (काम विवास वित्त्रांध काटक ना ; चिक्क काँगात छात्र निर्कित्मदर मुख्यानात महिल काक्षिक रहेशा यात्र। ज्यात त्य नमात्वत मत्भा केली भक्ति होनक मार : किन्द्र मानद्वत व्यवकात ও हुशका क्वाहे প্ৰ-প্ৰদৰ্শক, বেখালে সৰই বিষয়ীত। সেখানে গোকে বসিতে (श्रा बक्कर प्राक्षत्र शास्त्र राम, बक काक महेता इहेकरन বিধায় কলে; চটক গঞ্চ বিস্তাস করিয়া অনস্ত আকাশ পার ब्हेर्ड बार : भूँ जीमाह किमित विकास क्षातान कतिए वात ; क्रकात (बीका क्यान्त्र) कामारतत काकृषी धरत ; कामान दिवा बहेश केवाकेनि करता बारक्या वित्वहना करून, डाहाता

পুর্ব্যক্ত হই ছবির কোনটা বেবিজে চান ? এনিকে জ নাল্যনের ক্লভাবের দীমা পরিসীমা নাই। প্রাক্তর্থনে সর্ক্তপ্রের প্রক্রথান কারীদিগকে গালাগালি দিবার সময়ে ভ খুব বিজ্ঞান কিন্তু জিল্লাসাকরি নাল্যসমাজের প্রতি জামারেরট প্রেমের অবস্থা ঘরি এই হর, তবে ঢাক ঢোল বালাইয়া জগংকে কাঁণাইলে ফল কি ? যে জিনিবকে জামরা ভালবাসি না, ভালাকে ভাল বাসিতে বলিলে লোকে ভাল বাসিবে কেন ? এই অন্তই ড প্রাক্ষধর্মা প্রচার হইভেছে না। বে বং-সরে সাধারণ বাজসমাজ জন্মগ্রান্থ করিয়াছে, সেই বংসারেই মৃক্তি কৌজের জন্ম হইয়াছে। জন্মের সমন্ন ইছাদের ৩০ জন প্রচারক ছিল, এখন ভিন সহল্রের অধিক হইয়াছে, আর আমরা কোণার রহিয়াছি। এইরণে কি ব্যক্ষধর্ম প্রচার হইবে ?

যুগ সংগ্রাম।

১২ই মাঘ ছাত্রসমান্তের উৎসব উপলক্ষে পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কর্ত্তক প্রদত্ত বক্তৃতার সারাংশ।

(পূর্বা একাশিতের পর)

বে ব্যক্তির পাপে পতিত হইবার সম্ভাবনা তাহাকে পত্ন ভ্টতে রক্ষা করা, যে পাপে পডিয়াছে তাহাকে গাপ হটতে উদ্ধার করা এই উভর বিধ কার্যোর জন্ত ইলেণ্ডে মৃত পেকার চেষ্টা হইতেছ, স্থুণভাবে ভাহার কয়েকটা বর্ণন করা যাইতে भारत । अथमण्डः (म (मरभत अवाहिदेशि वाक्तिता (मभितार्ह्स (य काश्यातम्ब देव्हा मानव मत्न काराङ कावन। विश्वविकः बाहारमञ्जू मिन कर्छात शतिश्वास शक हत, बाहारमत शह अशति-চছন, অন্ন পরিদর ও অন্ধকারময়, তাহারা আমোদ-প্রবৃত্তি চরিতার্থ করিবার কোন উপায় উপস্থিত হইলে প্রায় সে আকর্ষণ লজ্বন করিতে পারে না। সেথানকার স্থাড়ীর দোকানগুলি র্মাত উৎকৃষ্টরূপে স্থাব্দত: গ্যাসের আলোকে আলোকিত.বসি-* বার অতি উৎকৃষ্ট আসন যুক্ত। এতত্তির সেধানে প্রায় গীত বাদ্য চলিয়া थाका এই कातरा भागक खनलीवी लाक कर्पात्रान হটতে ফিরিবার সময় তথার গিয়া প্রাবিষ্ট হয়, এবং সেখানকার चारमाम धारमारमत ल्वारंड चावस रहेता ख्तासारन साछ्ड হইরা পড়ে। অনেক সদাশয় পুরুষ ও রমণী আমোদণাশ व्टेट अमधीरी निग्रंक जेबाक कतिवात क्या वस शतिकत क्रेबा एक. जैशिश चारमाम शतुखित हतिजार्थका छ श्र<u>णी</u>नरमम अहे উভয়কে একল করিবার প্রয়াস পাইতেছেন। এক এক স্থানে এক একটা বাটা নির্মাণ করিরা হন্দররূপে সাঞ্চাইরা সেখানে মধ্যে মধ্যে গীত বাদ্য প্রভৃতি দিয়া থাকেন; তত্তির স্মাগত 'अभकोबी निगरक स्मष्ठ मृत्मा উত্তৰ चार्यात्वत यस निवा बारकन। এই नकन चाकर्रान चाकडे हरेग्री महिल्लान महन महन चाहन ; जनन कांगत। जाशानिश्यक धर्म । मीकि विषया छेन्यम । जना भारकम । ः त्रिकीशटः (य शक्त महिद्धान एक्टन स्मरतः ब्रह्मक छः नागम विश्वीन वृदेशा बाळात बाळात पृथ्यित ८१फाव ७ लान निका

কৰে জাহানিসকৈ কুজাইনা বিষ্যাদৰে নামিছা, শিকা বিশ্বী নাই করিয়া কাজের লোক ক্ষিত্রা বিষয়ে ক্ষম অনেক আগ্রাম-থাইকা নিশ্বিক হটনাছে।

ভূতীরত: অনেক গরিবের সেরে কর্ম প্রাথিনী বইরা গঞ্জ আনো। ভ্রিয় বহু সংধাক বুৰতী স্ত্রীণোক প্রাথেন কাল বারাইয়া নৃত্ন কর্মের চেটার বড় বড় বছু সহতে খুরিয়া বেড়ার। কর্ম বিতীন কর্মাতে নারিজ্যের ভাড়নাতে ভারাদের ক্ষমেকে পাপে পভিত হয় এই কারণে এই শ্রেমির স্ত্রীলোকনিগের সাহা-বাার্থে অনেক সভা করা হইরাতে। ঐ সভার সভাগণ এই সকল খুবতী স্ত্রীলোকের জল্প সর্বনা কর্মের সন্ধান ক্রিয়া বেড়াইভেছেন ও আস্র বিপদ হইতে রক্ষা ক্রিভেছেন।

বাহাদের পাপে পড়িবার স্স্তাবনা ভাষাদিগকে রক্ষা করিবার অন্ত বেমন বাপ্রতা, পতিভানিগকৈ ভূলিয়া আনিবার অন্ত ও তেমনি বাপ্রতা। ভল্ল মহিলাদিগের এমন অনেক সভা আছে যাহার সভাগণ রাজি বিপ্রহরের সমর রাজার রাজার কুণ্টাদিগের মধ্যে খুরিয়া বেড়ান ও ভাষাদিগকে বিপথ হইতে ফিরাইবার চেটা করেন; কোন পভিতা নারী অন্তভাপিতা হইলে ভাষাকে আল্রয়-বাটিকাতে আল্রা দেওয়া হর, বন্ধ প্রতিপালন করা হয়, কাহাকেও বা আল্রীয় অন্তনের হল্পে সমর্পণ করা হয়, কাহাকেও বা কর্ম জ্টাইয়া দেওয়া হয়; কেহ বা বিবাহিত হয়। এইয়পে পাপীর উদ্ধারের অন্তব্যতা প্রায় সকল শ্রেণীর মধ্যে দুই হইতেছে।

তৎপরে দরিক্রেব সহিত সমবেদনা। এটাও মহাত্ম ঈশার একটা বিশেষ ভাব। ভিনি যথন ধর্ম প্রচার আরম্ভ করিলেন, তথন দরিত্রদিগকে আশীকাদ করিয়া আরম্ভ क्तिलन। ७९भरत कथात्र कथात्र, द्यथारन रमधारन पश्चित्र-দিগের হটয়া কণা বলিতেন। দরিভ্রদিগকে পীড়ন করে विनया कत-शाहकराण छीहात निमायण शुनाव लाख हिन। किनि नाना "धामाक मक्षण धनिविधाक निका करिएका मतिराज्य गरिक गमार्यमनात काव देशमधीम अमास मासा सिम দিন ব্যাপ্ত হইভেছে। ইউরোপের সম্বত্তই এই ভাব পরিষাপ্ত চটয়াছে বলিলে অভাজি করা হয় না। এখন সর্বজ্ঞ ধনির विकरक प्रतिरखन व्यक्ताचान पृष्ठे इहेट छ । हेश्लुक धनिन्धाना (तम, धनिटमत मक्ति (मधाटन काठाक क्षवन, कवानि (महे हेश्नाटक हे দরিজেদিগের অভ্ ও অধিকার ভাপনের জয়ত প্রবল আংক্ষেশন पृष्ठे क्रेटल्टा अपन अहे विराय के क्राहिट उसीविश्या क्रमान मुष्टि विगटन चाकुांक एव मा। पविक्रमिटिशय सम्ब चारमाधनाना সকল নিশ্বিত হট্যাছে ; দ্যিত্তদিপের কল স্কুণরিকৃত ও স্বাধা-कत्र गृह मकन मिर्न्सिङ हेरेएडएड; मतिस्मिर्गत कक व्यक्ष विक উদ্যান ও চিত্রশালিকার বার স্কৃত উস্কু হইভেছে; বে সে বাজি সেখানে প্রবেশ ও বিচরণ করিছে পারিতেছে। দরিস্তাপ বড় বড় সহরে যেরপ হরবছাতে বাস করে ভাহাতে আনেইক হয় ত একটা ভাগ ফুগ দেখিতে পায় না কিয়া বংগরেছ এইটা कात कर काशासन कतिएक शास मा। अहे सक महस्रा महस्र महिल्लामितम क्रम भूम्मदाम्मी स्मा एवता शादक। क्रम जारनक नवाभन वाक्ति जानम जानम वानाम स्टेटक काल कान চ্ছুৰ্ভঃ সাক্ষ্য কৰিছ কৰিছ কৰিছ কৰিছা বাকেন ই
চ্ছুৰ্ভঃ সাক্ষ্য কৰিছ কৰিছ । একজন গণনা কৰিয়া কেপিয়াচ্ন বে ইংলপ্তে প্ৰোপকারাৰে অভাবপক্ষে কৰ কোটি
কি অভার প্রোপকারার আলা আলাগ ও ব্যৱ হয়। গভনে
ত প্রজার প্রোপকারার আলোজন আছে, ভাষার সংক্ষিপ্ত
বিশ্বন সম্বানি অক্ষানি পুজক প্রতি বংসর স্ক্রিত হয়।
বিশ্বন বংসর বে প্রছ্থানি মুক্তিত হইয়াছে, ভাষাতে দেখা বার
বে বর্তমান সময়ে এক শশুন স্ক্রেই প্রার ২০৭৮টা জারগা
আচে বেখানে কোন না কোন প্রভাৱ জনহিত্বর কার্য্যের
অক্ষান হয় এবং এ সম্বার কার্য্যের ব্যর প্রঃপ্রকৃত্ত লানের
ভারাই চলিয়া থাকে।

এই সকল কারণে বোধ হর বে ইংলতে খুঁইার ধর্মের বিশেষ বিশেষ মত সকল বলিও শিথিল ও পরিভাক্ত হুইভেছে, তথাপি ঈশার চরিত্র ও উপদেশের প্রতি শ্রদ্ধা না করিবা বরং বাড়ি-ভেছে। ওলীর জীবনের বিশেষ বিশেষ ভাব গুলি মানবমনে প্রকৃতিক হুইভেছে। বর্ত্তমান ইংল্ডীর সমাজের ধর্ম ভাবের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে দেখা বার যে চুইটা ভাব প্রধানক্রণে বিকাশ হুইভেছে। (১ম) স্বাধীন চিন্তা প্রবৃত্তি (২য়) জপতের চুংগ ভার করণের ইচ্ছা। প্রথম প্রবৃত্তির প্রভাবে প্রাচীন কুসংদ্ধার সকল ভগ্ন কইবা বাইভেছে; বিভীর প্রবৃত্তির প্রভাবে জনতিকর কার্যা সকল দিন দিন নব নব বেশে প্রকাশ প্রতিক্তে

ইংলত্তে যেরূপ আমেরিকা দেশে তদপেকা অধিক।
সেগানে আদমি চিন্তার প্রোভ ধরতর বেশে বহিতেছে। ধল্ম
বিষয়ে লোকে সাদীন ভাবে চিন্তা ও আলোচনা করিতেছে;
এবং তাহার ফল অরূপ ধর্ম সম্প্রনায় সকল অভি উদার ভাবাপন্ন চইনা উঠিতেছে। অগতের ভ্:থ হরণের ইচ্ছা ও সেণানে
অতিশন্ন প্রবল। সে অন্ত বিধিদ প্রকার উপার অবলায়ত
ইউছেছে।

च्छ এব পশ্চিমদেশে ধর্মজীবনের বর্ত্তমান ভাবের দিকে मृष्टि क्तिरण छ्टेंगे काव मृष्टे रहा। (১ম) वाधीन हिन्छा वादुहि (रत्र) सर्गाष्ठत कः वछात इत्रागत देखा। এপন यनि । এकदात ভারতবর্ষের প্রতি দৃষ্টিপাত করা বার ভাষা হইলে কি (१४) बाब १ अथारन (व मःश्वाम वाधिवारक अवः (व मःश्वाम नगरत नगरत आत्म आत्म, चरत चरत व्यविष्ठ क्षेत्रारक ख শর্মীর আপনার বল আকৃশি করিটেছে ভাছার অস্তরালে धाविष्टे क्हें ल कि लक्षा कता यात्र ? मर्काट्य विद्वहरा कत्रा राष्ट्रक किन्नन काशाक्षिक करदात मरश এই সংগ্রান বাধিবাছে। বে আধান্ত্রিক কাবস্থার মটী এই সংগ্রাম वाधिवादक मुहे हैं। ভাহার শোচনীয় ভাব দৃষ্টি হয়। () व ्वित्वत्कन्न होम्छ। (२३) अन नगाय्यत भाग ভাগ ও হুংখ ছুৰ্গজি निवासर्गम जान्खित व्यक्तात। शृष् करण विका कविषा सिविश्यक अञ्चल कविरक लाजा बाहरव ^{१५ वर्ड} इरेडी कार्यहे काशांद्यक त्राकटेनकिक ७ थर्च नवसीय नेक्न व्यक्तांत्र क्रुवेक्टित मुक्ता वर्ष गरकाते वाणीय मरकारकम् बाकाम क्षेत्राचा शहिकारकम क्षेत्राचा मकरणहे |

জানেন, যে বেরের পোকের বিষেকের একালছা বশতট উলেলের চেটা সকল হর না। যুক্তি ও শাস্ত্রীর বচন প্রভৃতি বারা লোকের আন্ধানিবাস নিম্নিক হইছেছে, অবচ লোককরে লোককরে কেনিক অন্তর্গত পারিভেছে না; ভারাদের অন্তর্গত বল নাই, বিষেকের এত শক্তি নাই বে, সাহসের সহিত সভোর উপরে ও নিজ কর্ত্রর জানের উপরে প্রতিষ্ঠিত বাকে। পালের প্রতি জাপ্রত স্থানার, প্রোর প্রতি জাপ্রত আপ্রত আকাকা নাই। একদিকে যেমন বিষেক হর্মাণ, অপর- দিকে সমাজের হুংখ হ্রতি নিবারণের প্রবৃত্তি নিতান্ত ক্ষীণ। লোকে নানা প্রকার রাজনৈতিক বা সামাজিক অত্যাচার অহরহ সম্ভ করিতেছে, অবচ কেহু উচ্চ বাচ্য করে না। নির্মাক হুইরা নিরীহ প্রতাব নেরম্বলের জার সকল সম্ভ ক্রিতেছে।

ইছার কারণ কি ? এই উভরবিধ হীনভারই মূলে ঘোর कीयन विषयक देनवामा प्रविष्ठ भाषया यात्र। भानत्वय Cestre की बानत काथ जकल मृत क्षेत्रात व कान छेलाव इकेट्ड शाद्य-- এविवास नाशासन धाका भूत्यत विचान नाहे। নিরাশা গভীর মর্শ্ব ছানে বসিয়াছে। এই জীবন বিবয়ক নিরাশার কারণাতুসস্থানে প্রবৃত্ত হটলে ইছার ছুইটা প্রবল कातन मृष्टे इया ध्राथम कर्षा नद्यान विचान। ভाরতবর্ষ वानी विमु माटक के कर्हरेवाली। डीहाजा विदान करतन रव मानव পূর্ব অনুত্রত শুভাগুড কর্মের ফল ভোগের নিমিত্তই এ জগতে আছে। যে কর্ম-পৃথালে মানৰ আবন্ধ হইরা আছে বে मुद्धानरक करिक्रम कतिवात माधा माहे। • कहे जुनिएड हे हरेव, শাব্তি পাইতেই চইবে। যে ক্লেশ মানব পাইতেছে ভাহা বিধি নির্দিষ্ট, স্কুতরাং ভাছাকে অভিক্রম করিবার প্রয়াস বুণা। **এট विश्वान मानव मनटक (श्वाद निर्दाणांत मरशा निर्द्धण करत!** शिक्षतावद्य विरुक्तम (यमन श्लावतनत वह धावान शरिवा,-আপনার পদর্ব, পক্ষপুট ও চঞ্বদকে দেট চেটাতে আহত করিয়া অবশেষে ধেমন জানিতে পারে যে লৌহ নির্দ্মিত পিঞ্চর হইতে মিদ্ধতি পাইবার চেষ্টা করা বিড়ম্বনা মাত্র—তথন নিরা-भात हार आर्थनाटक ममर्थन कहत, अवः जाहात दिन के जनकन, ও পক্ষ বাচঞুর আঘোতে নিরস্ত ছইয়া সে শান্ত ভাব ধারণ করে, সেইরূপ মানবের মনে এই বিখাস যপন বন্ধমূল হয় ষে দে কর্মজানে আবৃত লৌহের পিঞ্চার বন্ধ চইয়াছে। সহস্র চেষ্টাতেও নিষ্কৃতি নাই, তথন ভাচার উদাম বিশোণ প্রাপ্ত হর এবং দে সকল প্রকার প্রয়াস পরিভ্যাগ করে।

কর্ম বন্ধনে বিখাসের স্থায় সামাজিক ও আধাাখ্যিক পরা-,
ধীনভাতেও মাসুবকে নিরাশ করিয়া ফেলে। প্রবল সামাজিক ও আধাাখ্যিক শক্তির নিকটে ব্যক্তি বিশেবের শক্তি অভি
সামাস্ত; অভি অল্ল চেটাভেট বিনট হইতে পারে। এই
কারণে যে দেশে প্রবল সামাজিক শক্তি বাক্তিগত শক্তিকে
পিষিলা ফেলে, সে দেশে মানব মনের ক্তি থাকে না;
এবং মানব চিক্ত খোর নিরাশার মধ্যে পভিত হল। তপন
লোকে মনে মনে চিক্তা করিছে থাকে, এছবড় প্রবল শক্তির
সহিত সংগ্রাম করিয়া কল কি? ইহার সহিত কভক্পই
খা সংগ্রাম করিয়া গ্রাহতের প্রাচীন ধর্ম ভাবও এই নৈরা-

ভের ভিজির উপরে প্রতিষ্ঠিত ছিল। প্রাচীন শাল্প কার্প্র নানব জীবনকে জাতি বিবাদের বর্ণে চিঞ্জিত ক্রিরাছিলেন। নানব জীবনকে তাঁহারা এক ঘার বিজ্বনা বলিয়া গণনা করিতেন এবং এই জন্মধারণ রূপ বিজ্বনা হইতে নিজ্তি লাভ করার নাম মুক্তি বলিয়া উপদেশ দিজেন। মানব ধীব-নকে এইল্লপ দৃষ্টিতে দেগাতেই মানবাম্বার স্বাধীনতা ও অগতের তুঃথ ভার হরণের ইচ্ছা, এই তুইটা ভাব ভারতীয় বর্ণা জীবনে প্রশ্বরূপে প্রেক্টার হইতে পারে নাই। তং-পরিবর্গ্তে শাল্পাদিট ক্রিয়াস্কান ও সন্নাদ এই তুই ফল কলিয়াছিল।

কিন্তু বর্ত্তমান সময়ে এমন ধর্ম দাঁড়াইবে না যাহাতে পূর্ব্বোক্ত হুইটা ভাব না থাকিবে—(১ম) মানবাত্মার স্বাধীনতা ও (২র) ক্ষগতের হুঃপ ভার হরপের ইচ্ছা। যে ধর্ম এই ছুইটা ভাব বক্ষেধারণ করিবে তালাই বর্ত্তমান সময়ে দাঁড়াইতে পারিবে। যাহা জাবার মানব চিন্তার লাত পা কাটিরা দৃষ্টিকে অন্ধ করিয়া অন্ধকারে পূরিতে চাহিবে জ্পবা মানুষকে মানুষের হুঃপের প্রতি উদাসীন করিয়া নিজের ভাবের চরিতার্থতার মধ্যে বন্ধ রাথিতে চাহিবে তাহা নিকুই বোধে স্ভা ক্লগতের হারা পরিতাক্ত হইবে।

স্পৃষ্টিই দেখা যাইতেতে পশ্চিমদেশীর ধর্ম সম্প্রদার সকল এই তুইটী ভাব রক্ষার জন্ত নাপ্র হইতেছে। আমাদের ব্রাহ্মধর্মের ও এই তুইটী প্রধান ভাব। ব্রাহ্মধর্মই মানবায়াকে প্রাক্ত স্বাধীনতা দিবে। সংক্ষাৎ ও অন্যবহিত ভাবে ঈর্মরে প্রীতি অর্পণ করিলেও তাঁহার পূণ্য জ্যোতি হৃদরে ধারণ করিলে মানব অন্তরে যে আধ্যান্ত্রিক জীবনের উৎপত্তি হয়, তাহাই প্রান্ত্রত স্বাধীনতা। এই স্বাধীনতার আস্বাদন দিয়া ব্রাহ্মধর্ম মানবকে মৃক্ত করিবেন। ত্বিতীয় ব্রাহ্মধর্ম জগতের হৃংধ হ্রণের ইচ্ছাকেও পোষণ করিতেছেন।

এই জয়াই ব্রাহ্মধর্মের জায়ের প্রতি আমাদের এত আশা। বর্ত্তমান সমরে মানব-হৃদর অপরিক্টু আকাজকার সহিত যাহা চাহিতেছে, ব্রাহ্মধর্ম তাহাই হৃদরে ধারণ করিয়া অবতীর্ণ হইয়াছেন।

প্রবচন-সংগ্রহ।

কোরাণ।

পরমেশর ভোমাদিগকে কথনও পরিত্যাপ করেন নাই,
এবং কথনও স্থান করিবেন না। এই জীবনের অপেকা
নিশ্চরই ভোমাদের পরকালের অবস্থা অধিকতর মঙ্গাকর
হটবে; পরমেশর তোমাদিগকে পুরস্কার দিবেন, বাহা পাইরা
ভোমরা স্থী হটবে। ভোমরা কি শিতৃমাভৃষীনের মত
ছিলে না, এবং সেই অবস্থার তিনি কি ভোমাদের সহার হন
নাই ? ভোমরা কি কুসংকারের রাজ্যে বিচরণ করিতে ছিলে
না, এবং ভিনি আসিরা কি ভোমাদিগকে সভাপথে চালিভ
করেন নাই ? ভোমরা কি জভাবের মধ্যে ভ্রিরা ছিলে না,

এবং তিনি কি তোমাধিগকে অনেক মূল্যবান বস্ত দেন নাই ? তবে পিড়ুমাজ্হীনদিগকে শীড়ন করিও না ও কালালরিগকে তাড়াইরা দিও না ; কিন্তু প্রভুৱ ক্লণার কথা খোবণা কয়।

मायू रमत मन्नोछ ।

আমি মেব এবং প্রভু আমার পালক; আমার কোনও অভাব নাই।

তিনি স্থামাকে উর্বর কেটেত্রর মধ্যে শরন করাইবেন এবং স্থাতিক নিঝারিনিকট লইয়া ক্ষেত্রেন।

তিনি আমার আতাকে দজীব করিবেন, এবং ওাঁছার নামের মহিমাতে আমাকে পবিত্র পথে লট্যা বাটবেন।

যদিও আমি মৃত্যুর রাজ্যে বিচরণ করি, তথাপি কোলও আশহা করিব না, কারণ তাঁহার শক্তি আমাকে বিপ্রুক্ত করিবে।

. . .

কংফুচ।

(अर्थ वास्कि (क?

যিনি কথা কহিবার পূর্বের কার্য্য করেন, এবং পরে স্বস্তুত কার্য্য অমুসারে কথা বলেন।

যিনি পৃথিবীর কোনও বস্তুর স্পক্ষে বা বিপক্ষে আপনার মনকে চাণিত না করিয়া চিরদিন কেবলমার নারের অমু-সরণ করেন।

শ্রেষ্ঠ বাক্তি ধর্ম্মের বিষয় চিস্তা করেন। কিন্তু নিকৃষ্ঠ ব্যক্তি স্থাবের কণা চিন্তা করে। নাারের ক্ষত্সরপের দিকে শ্রেষ্ঠ ব্যক্তির দৃষ্টি থাকে, কিন্তু কির্পে অস্তের কুপা লাভ করিবে নিকৃষ্ট ব্যক্তি ভাহাই মনে করে।

--:+:---

সতা নিপাত (বৌদ্ধগ্ৰন্থ)।

वाभग (मात्र) (क १

বে ব্যক্তি ক্রোধপ্রায়ণ, প্রনিদ্দক, অভ্যের সদ্ভণবেষী, ধর্ম অবমাননাকারী, ভাহাকেই বাশণ বলিয়া জান।

যে বাক্তি সক্ষম হইরাও দুর্মল বৃদ্ধ পিতামাতাকে ভরণ পোষণ করে না, তাহাকে বাশল বলিয়া জান।

বে ব্যক্তি কোনও শাপকার্যা করিয়া মনে করে যে ইচা কেহ না জাত্বক এবং যে ছলবেশী, ভাহাকে বাশল বলিয়া। জান।

যে ব্যক্তি আৰু চইয়াও আত্মাভিমানের বনীভূত হইয়া আপনাকে বড়বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে ও অভ্রেম মুহস্ককে ধর্ক করিতে চার, ভাহাকে বাশল বলিয়া জান।

षकপট ভাব।

প্রাপ্ত

नश्दात रकान रकान नहीत स्थानिहा ग्रंगन कतिहत द्वेशिए नाउदा याव रव कारम जारन नाव: अनावी नवन क्रुलिन नुवि-

gune men eller effet felenten wiet ebem aun कार्यनीय वर्षक किलीर्न वरेटक बीटक दय देन चीटनंत्र निकड़े विश्वा शहरक कांबाब अधाविक स्य मा । त्रहे शक्तिशक्तव कांबाबकत সেই পল্লীর বাছর সঙ্গে মিপ্রিত হুটরা ভাতাকে এরপ বিষয়য় कतिया छल्न दर कारा दंगरम कतिया छएनातम कवियानीशलय श्राक्षा क्रांच क्रांच मंडे व्हेना वान। आगात त्रहे क्ल-नानात केनडिकांग वनि दमान वस बाह्य क्रकाटन क्षांबुक शास्क दन दन्हें जिल्ले खरनत छेगत कामछ खकारत प्रशंकितम् मिएएछ गारत मा. छटन रमहेकन क्रमण व्यक्तिकछत्र प्रतिक्षुर्ग । विवाद्य हहेता यात्र । किन्तु कि व्याष्ट्रदर्शन विवत् । सूर्वा-किन्नर्शन महिन একবার ইয়ার সংবোগ চর, তবে তাছার উত্তাপে ইতার পৃতি-शक्त चाह्य चाह्य विकृतिक कहेता तांत्र। ভৎপরে সেই মলিন জন রাপাকারে পরিণত হটরা আকাশে উথিত হর। তথ্য নেট বালা মেবের আকারে পরিবর্ত্তিত হটকা বৃষ্টিধারালণে পতিত হইয়া ধরতিক শীতল করে। তথন তাহার নব আকার ও নির্দাল ভাব দেখিয়া কেছ করনা ও করিতে পারে না যে ইহা এক সময়ে পর:প্রণাশীর মধ্যে প্তিগদ্ধনর জাকারে থাকিয়া সকলের পীড়ার কারণ হইয়াছিল। তথ্ন ভাছা চইতে ভগতের অশেব কলাাণ উৎপাদিত হয়। বাহা এক সমর জীবের জীবন নালের কারণ চটছাভিল্ ভাচাট জাবার তখন সকলের জীবন ধারণের পক্ষে স্থারতা করে, সকলের পিশাসা নিবারণ করে, সকলের আহারোপ্যোগী নানা প্রকার শক্ত পরিবর্জিত করে। এই পরিবর্তনের কারণ কি ? একট চিত্তা করিলেই বুঝা যায় যে পূর্যোর উদ্ভাপই এই মলিন सगरक नवकीयन निवारक। এট भग्नः श्रेगांकी समाभि कालनाव বক্ষঃস্থলকে সূর্য্যের দিকে প্রাসারিত করিয়া না রাখিত,—যদি ট্চার উপরিভাগ এরণ কোনও আছে।দনে আবৃত থাকিত, যে সূৰ্য্য কিবৰ ইছার উপরে পতিত হুইতে না পারে, ভবে এই আবর্জনাপুর্ণ জল কখনট এমন নির্দাণ চটত লা। ভাহা চটবে ট্রা থারা কালারও উপকার হওয়া দূবে থাকুক, বরং चानित्व चाचा एक ब्रहेश खीवन विनर्ध ब्रहेखा

এই তাবের সদৃশ ভাব ধর্ম অগতের মধ্যেও দেখিতে পাওরা বার। অগতের ইতিহাসে এরপ কত সাধু মহাত্মার জীবনের কথা পাওরা বার, বাহাদের জীবন প্রথম অবস্থার ঠিক চুর্গন্ধর পর:প্রণালীর স্থার জিল। শত শত পাপ চুর্গীত, শত মধিনতা অপবিল্লভার ভাব উহ্বাদের জীবনকে পৃতিগন্ধরর করিরাজিন। তাঁহাদের জীবনের সেই কদব্য ভাব দেখিলা কোনও ভাল লোক তাঁহাদের সহবাসে আসিতে চান নাই; অধিকত তাঁহারা বে সকল লোকের দলে মিল্লিক কইরাছেন, তাঁহাদের আবর্জনারর জীবনের চুর্গান্ধে ভালাদের সকলের আব্যাত্মিক আব্যাত্ম নাই কর্মল পিরাছে, তাঁহাদের পাপ ও চুর্লীভির ভাব ভাহাদের জীবনে সংক্রান্ত হুইরা ভাবা বিষাক্ষ ও কলুবিত ক্রিয়ার। কিন্তু ক্রিয়ার ভাবার দেখা গিরাছে বে তাহাদের জীবনে খোর প্রিবর্জন আসিরাছে। সকল পাপ স্থান্ধর জীবনে জাবনে খোর পরিবর্জন আসিরাছে। সকল পাপ স্থান্ধর জীবনে জাবনে খোর পরিবর্জন আসিরাছে। সকল পাপ স্থান্ধর জীবনে জাবনে খোর পরিবর্জন আসিরাছে। সকল পাপ স্থান্ধর জীবনে জাবনে জাবনে ক্রিয়ার জাবুতের অলের কল্যাণ সাধন

ক্ষিয়াছেন । क्षिक क्षित्राम कांबारमञ्ज को बान कहे পরিবর্তনের প্রোত আবাহিত হটন ? বিশেবভাগে অভুসরান कतिया दिन वृतिएंड भाषा वाहरत दि छ। हारमय अक्नि नव्रमञ्चावहे जीहानिराव कीयमरक अञ्चल खेबा करिवाहि। আপনাদের পাপ ইক্লিডা ্যবন ভাহারা ব্যাতে পারিলেন, धनः तारे गाम भाम वधन कानिराम (व नवरम्यत्वव कुना क्रिक छ। हारत इ के कारत का का का ना ना है, उसन मक्त कहकात छ ক্পটড়া পরিভাগে করিয়া বিনীভভাবে, সর্লাস্থাভ্যুগে সেই कृषामद्वत मत्रपाणत व्हेत्राद्वम । निद्यत भाग मक्न छाकिताः সাবুতার ভাগ করিতে চেটা করেন নাই। উপরোক্ত পয়:-প্রাণালীর স্থার আপনার হৃদ্ধ উলুক্ত করিয়া পাপর্ক্ষণতা, लिय व्यवसार नक्त शत्राव्यद्वत नमत्क चुलिया धनियाद्वन । "এই দেব প্রভোগ আমি কি খোর অপরাধী, আমি কভ ছুমাচার পাপাসক ৷ তুমি আমার স্কুল্ট কান, তুমি ভিন্ন আমার জার কেইট নাই, তোমার কুণা বাডীত আমার উদ্ধারের পথ নাই। আমি এই আমার মলিন প্রাণ্মন স্বর্জস্ব তোৰারই জন্ত রাবিলা দিলাস। তুমি আনিলা আমাকে পৰিত্ৰ কর ও আমার গাঁভি কর ; আমি আর কোথারও ব্টিব ना ।" এই वित्रा छत्रवारमत बादत পश्चित्र পश्चित्र छाहात्र निवानिनि काँनिवाहिन। अनावृक्त भव:-अनानीत छन्दत বেরপ স্ব্যকিরণ নিপতিত হর, সরল প্রের্থনা ও অকপট অফু-ভাপে অবলেবে তাঁহাছের জীবনের উপর সেইরপ ব্রক্তরণ। विनिज हरेबारह । तनहे जन्मकुनात कालात्व कीहारमूत कीवरमत ये जान मनिन्छा क्यांचार शिवाह । ज्या कार्य कार्य পূণা পবিত্তার ভাবে পরিপূর্ণ হইরাছে ; নীট স্বার্থপরতার ভাব বিশুদ্ধ প্রেমে পরিণত হটরা তথন সেই প্রেমময়কে আশ্রম করিবার অক তাঁচার দিকে অগ্রসর চুট্টরাছে: প্রমে-খবের সহবাদে সেই প্রেম ঘনীভূত হইরা ক্রমে ভাঙা বৃটি-ধারার স্থার অগতের উপর নিশতিত হইরাছে। তথন জাঁচাদের পবিত भीवन, छाहारमञ निःचार्थ (छात्र मानरवेड कछ मक्तन-माधन करिवारकः; य कीवरमत शृष्टिशक्तमत्र छाव এक ममरवन জগতের আধ্যাত্মিক আস্থা নষ্ট করিয়াছিল, পাপের চুর্গত্বে মানব সমাজের বায়কে বিবাক্ত করিরাছিল, তাতাই আবার তথন প্রেমের আকারে পরিবর্ত্তিত চটরা কত লোকের ধর্মজীবন রক্ষা করিবাছে: কত লোকের প্রাথের গভীর পিপাসাকে পরি-ত্ত করিবাছে এবং মানবান্ধার খাদ্যের উপবোগী কত শস্য উংপাদনের সহায়তা করিয়াছে। কেবল মাত্র প্রাণের সর্বতা ও নির্ভরের ভাব তাঁহাদের শীষনকে এইরূপ নৃত্নুকরিয়া मिताएकः केंद्रिता श्रद्धान्यस्त्र श्रम्यक व्यालनारम् अमय উত্তৰ করিবা যদি সমস্ত পাণমলিনতা না খুলিয়া ধীরিতেন এবং ওজ্জার পাতীর পায়ুতাপের সহিত যদি ভাঁচার कुणा ना किका कतिएकम, जांका बहेरन जावक शबः श्रामानीत উপর যেমন সুধা কিল্ল নিপ্তিত হল না, ভজুপ তাঁহাদেল कीवानव छेगात्रक अवकृषा अवछीर्ग हरेल ना धवः काहात्मव লীবন ও পরিবর্ত্তিত হইয়া নুজন আকার ধারণ করিত না।

यान दक्ष विकास क्रिका दक्ष आसारमत कीवरमत दम

প্রকার পরিবর্তন ছইডেছে না কেন ? ভাষার উত্তর এই বে আমরা সেইরূপ অকপট ভাবে দেই পরম বেবভাকে আপ্রার্থ করিছে পারি নাই। যদি প্রাণের গভীর কলক রেখা সকল ভাষার নিকটে থুলিরা ধরিয়া ব্যাকৃণভাবে, সরণ অন্তরে ভাষার রূপা ভিকা করিতে পারিভাম, ভাষা ইলে তাঁহার রূপা, প্রকাশিত হইরা আমারিগকের নবজীবন দান করিত, এরং তথন আমাদের দ্বীবনের প্রেম ও প্রিক্তর্ভা হারা দ্বগভেষ উপকার হইত। যদাপি আমরা পাশসকলকে অন্তরের মধ্যে প্রকাইয়ারাখিয়া বাহিরে রুখা ধর্মের ভাব প্রকাশ করিছে যাই, ভাষ্য হইলে আমরা ত বিনই হইবই, অধিকত্ত আমাদের জীবনের প্রিগজনমন্ত্র বিনই হইবই, অধিকত্ত আমাদের জীবনের প্রিগজনমন্ত্র ভাব বারা সমাজের আধ্যাত্মিক বায়ু দ্বিত হইবে। সরল প্রার্থনা ও অকপট অন্তর্গই ব্রক্ত্রপা লাভের প্রকাশক উপার। ক্রণামর কর্মন আমরা যেন অকপট ভাবে ভাষাকে অবলম্বন করিতে পারি।

षायाम वागी।

ভগবদগীতা নবম অধ্যায়।

যৎ করে বি বদখাসি যজ্জু ছোসি দ দাসিবং।

যন্তপশুসি কোন্তের তৎকু ক্ষমদর্শনিম্॥ ২৭

ভভাভ ভ-কলৈরেবং মোক্যাসে কর্ম্মবন্ধনৈঃ।

সন্ত্যাস-বোগ-যুক্তরে বিমুক্তো মামু পৈবাসি ॥ ২৮

সমোহং সর্বভ্তেরু নমে ছেব্যোন্তিন প্রিরঃ।

বে ভজন্তি তু মাং ভক্ত্যা মার তে তের্চাপাহং॥২৯

অপিচেৎ স্ক্রাচারের ভলতে মামন্ডাক্।

সাধুরেব স মন্তব্যং সমাক্ ব্যবসিভোহি সং॥০০

কিপ্রং ভবাত ধন্মান্ধা শন্তভান্তং নিগছন্ত।

কৌবের প্রতিজ্ঞানীতি নমে ভক্তং প্রণশ্রত।

"

শীকৃষ্ণ বলিতেছেন,—হে অর্জুন যথন তুমি কোনও ধার্যা কর, বথন আহার কর, বথন দান ধ্যান কর, বথন তপস্তা কর সমৃদার আমাতে অর্পণ কর। তাহা হইলে তুমি গুলাগুল ফলকপ কর্ম বন্ধনে আবদ্ধ হইবে না। তোমার আমা প্রেক্ত বৈরাগা ও লাভ করিবে এবং তুমি আমাকে প্রাপ্ত হইবে। আমি সকল প্রাণিতে সমানভাবে আছি কাহারও প্রতি আমার বিরাগ নাই কাহার প্রতি অনুরাগ নাই; বে কেহ আমাকে ভক্তি পূর্কক ভজনা করে আমি সে জনে থাকি, সেজন আমাতে থাকে। সে বদি ত্রাচারদিগের মধ্যে অগ্রাগা হয় এবং অনন্য গতি হইয়া ঐকান্তিক ভাবে আমাকে ভল্পনা করে তাহাকে সাধু বলিয়া জানিতে হইবে; সে দ্বায় ধর্মান্থা হইয়া অক্ষর শান্তিলাভ করে।

হে কাৰ্ক্ন! নিশচর জানিও আমার ভক্ত কথনও বিন্ত হরুনা।

षाहेरमस (वाहेरवम)

লখন বলিভেছেন;—ভোষাকে আমি পৃথিবীর প্রান্তভাগ ইইছে আনিয়াছি; অগতের বড়গোক্দিগের মুখ্য চইছে ভোষাকে আহ্বান ক্রিয়াছি এবং জোসাকে বলিভেছি বে

ভূমি আমার ছুতা। আমি ভোষাকে মনোনীত করিয়াছি, ভোষাকে প্রক্রিগান করি সাই।

ভূমি ভর পাইও না, কারণ আমি চোমার সংক্র আছি; আসমুক্ত হইও মা, কারণ আমি ভোমার ঈশর। আমি ভোমাকে স্বল করিব; নিশ্চর দলিতেটি আমি ভোমাকে আমার পুণাভাবের দক্ষিণ হল্প দারা ভূলিয়া ধরিব।

দেশ বাহারা ভোমার প্রতি অভিশয় বিরক্ত, ভাষারা অকিঞ্চিংকর বস্তর মত হইবে। বাহারা ভোমার পথে বিশ্বকারী হুইয়া দুখায়মান হুইবে ভাষারা বিনষ্ট হুইবে।

তৃমি আর তালাদিগকে খুঁলিয়া ও পাইবে না; সেই ভাগার বালার। ভোমার বিরুদ্ধে দুখারমান ছিল, বালার। আল তোমার সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত, ভাগার। অক্লিংকর বজর স্থার হইবে,—বালার মূণ্য নাই এমন প্রাথের ভাগার হইবে।

কারণ, আমি ভোষার প্রভু পরমেখন ভোষার দক্ষিণ হস্ত ধরিরা ভূলিব এবং বলিব—ভন করিও না, আমি ভোষাকে রাখিব।

পৌরাণিক আখ্যায়িকা।

शीड्नीत्नत्र मत्या এই क्षकात्र अक्षी व्याथाात्रिका च्या इंटर এক সময়ে শতবৎসর বয়স্ক এক বৃদ্ধ এব্রাহিমের নিকট উপস্থিত हरेगा बिलन- "आमि जिन हिन कि कि हरे आशात कि तारे, আমার অত্যন্ত কুধা চইয়াছে; অতএব অফুগ্রহ করিয়া তুমি আমাকে কিছু খাইতে দেও।" এবাটিম তৎক্ষণাৎ ভাহার সমুবে একপাত খাদ্যদ্রব্য স্থাপন করিলেন। বৃদ্ধ খাইতে উণ্যত হইলে, িনি বলিলেন, "বাঁহার কুণায় তিন দিবদের পর আহার্য্য বস্তু পাইলে, হে বৃদ্ধ । সেই পর্মেশ্রকে ধরুবাদ দিয়া ভোজনে প্রাবৃত্ত হও।" বৃদ্ধ উত্তর করিল---"পর্যেশ্বর আবার কে ? আমি ভাহাকে মানি না।" এই কথায় এবাহিম কুণিত হইয়া সেই মুহুর্ত্তেই বুদ্ধকে গৃহ হটতে বহিষ্ণুত করিয়া দিলেন। পর ক্ষণেই পরমেশ্বর এত্রাহিমকে ভাকিরা ব**লিলেম**— "কেন ভূমি গৃহ হইতে আভণিকে ভাড়াইয়া দিলে ?" এবাহিম বণিলেন—"সে বে প্রভু ভোষাতে বিশ্বাস করে না,কেছ ভোষার ষ্মবিশ্বাস করিলে আমি যে ভাঙা সহু করিতে পারি না।'' ইশ্বৰ তথন বলিলেন—"তাহার, এই অপরাধ আমি শত ব্ৎস্র ধরিরা সহু করিরা আসিতেছি, আর তুমি একবারও ভারাকে ^ই क्यां कतिएक शांतिरण मा ?" अहे काशांतिकात मृत्युक्तां ना थाकिएक भारत, किन्द देश इंटेस्क अहे केम्राम भारता याह्र (व, ঈবর দিবানিশি আমাদের শত সহল অপরাধ ক্ষা করিভেছেন, আমরা তাঁহার নিক্ট ক্ইতে ক্ষমা চাই, অবচ তাঁহার কার অপরকে কমা করিতে জানি না। তাঁহার সহিত্তা ও ক্রাধী-লভার বিষয় অস্থানি করিয়া আমরণও বেন বহিছু ও ক্ষালীল रहेटक भारत।

अरमभी य जानमणाक।

बिलामा।

বৃদ্ধান্ত প্রতিষ্ঠ হৈ বিষয় নির্মাণে ব্যক্ষি বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত একটা উৎসব হইয়া গিরাছে। অন্ধিক বিংশ বংশর বৃদ্ধান্ত বিশ্বেষ্টি বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বৃদ্ধান্ত বিশ্ব বিশ

১৩ই চৈত্র সোমবার;—প্রাতে উপাসনা। কোন বাণিকার বচিত্র নিম্ন বিধিত গান্টী গীত হইয়া কার্যারম্ভ হইল।

ैं(**एक्ट्रिन क्रित्रक्रम '' स्ट्र**बंध

আজি এ আনন্দ দিনে ডাকিতে আনন্দমরে,
আসিরাছি মোরা সবে কত আশা মনে লরে।
এস বোন সবে মিলে, ডাকি আজ প্রাণ খুলে,
পাইব তাঁহারে মোরা ডাকিলে ব্যাকুল হরে।
এস মন প্রাণ দিরে, পুজি সেই প্রেমনরে,
অসার বাসনা-রাশি দ্রেতে ফেলিরে।
ভ নিয়াছি ভক্তিভরে, ডাকিতে পারিলে তাঁরে,
দিখা দেন নিজ গুণে মলিন সদরে।
দর্র-সাগর বিনে, কি কাজ বল জীবনে,
এস তবে ভ্রি সেই অম্ত-নিলরে।
তিনি অ্ব, তিনি শান্তি, তিনিই পর্মগতি,
জীবন সফল করি তাঁহারে লভিরে।
দ্রে যাবে পাপ ছংগ, পাইব অপার স্থা,
এস তবে ভ্রা করে ডাকি সেই দর্মান্রে।

কুমারী কোমদা দাস উপাসনার কার্য্য করেন। উপাসনাক্তে সংকীর্দ্তন হয়, পরে সকলে মিলিয়া পরমানকে প্রীতি-ভোজন কটল।

মণ্যাহ্নে অন্ধ, পঞ্চ, আজুর, বধি র. স্থবির দিপকে কিঞিং দান করিবার কথা ছিল, কিন্তু ২০১টা ব্যতীত উপস্থিত না হওয়াতে অঞ্চান্ত দিনে দান করা হইয়াছে।

বেলা ১ ঘটকার পরে উপাসনা শ্রীমতী সরলা বিশ্বাস উপাসনা করেন। পরে "ব্রাক্ষার্শা ও আকা বালিকাদের কর্ত্তব্য" সম্বন্ধে পাঁচটা প্রবন্ধ পাঠ হইল।

বালিকাদিগের অন্ধ্রোধে বাবু মনোরঞ্জন গুছ ও বাবু চত্তীচরণ গুছ কিছু উপদেশ প্রদান করেন। ৪॥ টার পরে সংগ্রহণ গাঁচ হয়।

সন্ধাপ ছওয়ার কথাছিল কিন্তু সময়ে কুলাইল না।
সন্ধার পর উপাসনা করা ছইল, প্রীবুক্তা সর্পাস্থ্যারী বিখাস
উপাসনার কার্য করেন। উপাসনাতে অভ একটা বালিকার
নচিত নিয় নিষ্কিত ধান্টী শীক্ত ছইল।

"रेक रक रक वाकि" हार । व्यक्ति अ केंद्रमन विस्म ब्रह्मिक मन्द्रम । দরামরী জননী পো লও তব কোলে।
আজি বোন সবে মিলে
ভাকি মা কদর খুলে
প্রাসন নয়নে চেরে

😕 🕡 गर क्लाल ज्ला।

অবোধ সম্ভান বলে স্ব অপ্রাধ ভূলে গও গো কফ্ণামরী

(श्रर यश्र कोरण।

আমরা ছর্মন অভি নাহি আনি শুব শুভি ভোষার আশীৰ ভিশা

মাগিমা সকলে !

ভোমারে স্থ্য জেনে ভোমারি ক্রণা খণে (বেন) ভোমাতে নির্ভর করি

বিশ্বাসের বলে।

মোগ্য তব সঙ্গ ছেড়ে থাকিনা কথন যেন

তব দয়া ভূলে।

তুর্গতি কলুষ হর শুভমতি দান কর রাথ চির দাসী করে

তব পদতলে।

নাহি ভক্তি নাহি জ্ঞান মোরা মলিন সস্থান বিভূষিত কর মাগো

প্রেম ভক্তি কুলে।

মা হলে মা সকে রাধ নিত্য সঙ্গী হয়ে থাক ভোমারে লইলে মোরা

शृंद्ध् मारे हत्न ।

সকলেই ব্রহ্মকুণা লাভ করিয়া আনন্দমনে পুনঃ প্রীতি ভৌজনাত্তে অত্ম গ্রহ গমন করিলেন।

ব্দারণ কেবল জ্ঞানী বয়স্বদের জন্ম নছে। অবোধ বাল-কারাও যে সেখনে বঞ্চিত হয় না এই কুন্ত উৎসবেই তাহায় প্রভাক্ষ প্রমাণ পাওয়া গেল।

দর্মের পর্মেশ্বর তাঁছার ব্রাক্ষ সমাজের আপামর সাধা-রণকে এক্সপ সদস্থভানে নিয়ত উৎসাহিত করেন এই প্রার্থনা।

अश्वाम।

উৎস্ব :-- বিগত ১৭ই ফেব্রুরারী রবিবার কোরগর আক্ষমহালের উৎস্ব হইরা সিরাছে। বাবু কেদারনাণ রার আভঃকালে উপাসনার কার্বা করেন। অপরাক্তে ধর্ম বিব্যের नारमाध्यापि स्त्र । योख्य नियमानं गावी माहारीका पार्यः मध्यतः

্ত্ৰাকা সন্মিলন—গৰ ২০ শে ফেকবারী বিশার मिर्देशक कामकीय छेगारन आम्बर्शनय अक निवनसी स्वंत ज्यांत्र शंबका धवर कत्तिकहेरकी चार्यंत्र कंदनकी नर्माक स्टेरक মিন্ন ৫০ জন বান্ধ ও বান্ধধর্ম ব্রুপ্রেভৃতিকারী ব্যক্তি মিলিড वन । वायू केरमणहाल एक खाकः कारण खेलानमात्र कार्या करतन । श्रीजिरणांजनारस, चित्ररण এই नकेश विकित नेमारसत সভাগশৈর মধ্যে সহাত্মভৃতি ও সম্ভাব স্থাপন করা ঘাইতে পারে, ७९मयस्य चाटनाहमा रुष्ट। न्वविधान मनार्यंत्र आहात्रक बाव् देवलाकामाथ माञ्चान मःक्लिश धार्यमा क्तिरन कार्रावस इत। পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী এই ঘলিয়া প্রস্তাবের উত্থাপন করেন र्व मरकत्र विভिন्নजा मरक ख जानाग्य এक ख मिनिक इहेता कार्या করিতে পারেন, যদি ভাঁহারা এই ভিনটী উপদেশের কথা শ্বরণ करत्रन,--"(>) वृत विषया धक्छा, (२) मःभन्नक्रनक विषया चांधीनछा, (७) मकन विवस्त्र छेनात्रछ।।" छरशस्त्र धहेन्नश निमानन बाता विश्मव जैनकात्र भाउता यात्र नकरन करे मड श्रकाण कतियां काश्री (भव कटवन ।

নৃতন ব্রাক্ষ সমাজ—বিলাতের ভরষী সাহেবের সমাজের সভা বেকার নামক এক সাহেব কলিকাতার বাস করেন। তাঁহার উৎসাহে ও যত্নে গত ১০ই মার্চ রবিবার একটা ব্রাদ্ধ সমাজ ভাপিত চইরাছে। ঐ দিবস প্রাতঃকালে তাঁহার চক্রবেড়ীয়াস্থ বাড়ীতে ইংরাজীতে উপাসনা হইরা গিরাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী আচার্যোর কার্য্য করেন। ভবিষ্যতে প্রত্যেক রবিবার ঐ সমাজে এইরূপ ইংরাজীতে উপাসনা হইবে।

ত্রীক্ষা-বন্ধু সভা--বিগত ১২ই মার্চ মললবার রাত্রি
৮ ঘটিকার পর ১৩ নং কর্ণওয়ালিস ব্রীটন্থ ভবনে ত্রান্ধবন্ধ্ সভার এক অধিবেশন হইরাভিল। তত্বপলকে পণ্ডিত রাম-কুমার বিদ্যারত্ব "হিন্দু একেখরবাদ ও ত্রান্ধব্দ" এই বিষয়ে বক্তৃতা করেন।

জাতকর্ম—বিগত ২২এ ফারুন সোমবার দিনাজপ্রের বাব্ মনমোহন দের এক পুত্র জারিছে। ভাহার
জাতকর্ম উপলক্ষে ২৭এ ভারিখে বাব্ ভ্রনমোহন করের
বাড়ীতে উপাসনা হয়। বাব্ শশীভ্রণ বোবাল আচার্যার
কার্যা করেন। উপাসনা শেবে শিশুর মাতা একটা প্রার্থনা
করিয়াছিলেন।

নামকরণ — গত ১ই মার্চ শনিবাদ বাবু মধুরামোতন গলোপাণাবের প্রথম প্রের নামকরণ সম্পন্ন হটনা লিরাতে। বালকের নাম স্থাংশুমোতন রাথা হটনাছে। পঞ্জি শিবনাথ পান্তী তত্পলকে আচার্বের কার্যা করেন।

সাস্ত্সরিক শ্রাজ-পত ১২ই নার্চ ম্লগবার আমানের বন্ধু বাবু কানাইলাল গাট্ডন মহাশ্রের মাতার সাবেৎস্ত্রিক প্রান্ধ উপলক্ষে উপাস্ত্রা কর। পঞ্জি শিবনাথ শাস্ত্রী আচাব্যের কর্ম্যে করেন।

यागन्त्री काम स्थापन fife wice of wife withment county व्यक्त नात् वरहतानाच नहानाच अक्रानतात्र व्यक्ति व्यक्ति त्वत केविक क्षेत्राहित। योगाक कि किनिये काशक यम् दिलन्। ज तान क्रेट्ड डाक्नन सस्ता निहा केर्डान करान चाकिया सूच रकाश कतिरकन, अवर देखिनवारक में मूलन व्यक्ति कार्यात महोत्रका कवितात कथ महत्वतान विकास मुख्य किरमन। आमहा कानिया हः विक हरेगाम् इत किङ्ग्तिन इरेण महस्त्राचात् वहनी इरेवा नीकाशूरव विवादक्ताः ভাষার অলুপরিভিতে কানী সমাজের বিশেব কভি হইবার नक्षांनना। नव्यक्षांन् कानाकतिक रक्षत्राटक कानाटकत्र द्यान **এक विरक देश्य अभवतिरक अंक आमर्श्वद जर्शक आहेह**। कैशित नमनी रहेवात कथा दवन क्षाना हरेन, छबन कानीन चानायत नाथात्रण नकरमहे इंड्रंड कडिएड मानिस्थम । सोनी मर्गाताण, बाला निवजनाम, टाक्ठि वाकिया के वहैं तरहा क मध्यांगत वर्गतायत्र एखरमाक द्वराबंदत द्याण्यांनित निकर्ष তাঁহাকে কাশীতে প্রতিষ্ঠিত দেখিবার **জন্ত অ**পবেদন করিলেন। স্কলেই এক বাকো আমাদের বছুর অমারিক ব্যবহার সৌজস্ত কর্ত্তবাধ্যিরতা প্রভৃতির অনেক প্রশংসা করিছেন। **এই चार्यम्यात्र कान क्षम क्षमिश्राह्य कि ना आश्रदा सानि** ন। আমাদের দৃঢ় বিখাস প্রভাক ব্রাক্ষই ক্রবা প্রায়ণ ও সৌন্দর্যাশালী হউলে এইস্ক্রণে সকল শ্রেণীর প্রেম আকর্ষণ করিতে পারেন। আমরা দেখিতে চাই প্রাঞ্জের বান্ধ সীয় चीत चिथिकात मर्था निक চतिरखत बाह्य लाक्किनरक मुद्र করিলা ব্রাহ্ম সমাজের নামকে গৌরবাহিত করেন।

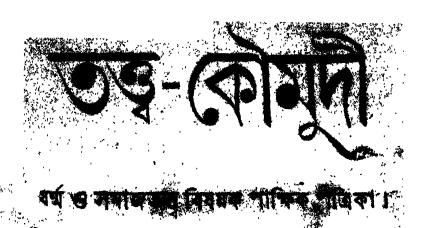
কৃতজ্ঞতার সহিত সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজের জা-সনালয় নির্ম্মাণার্থ নিম্মলিখিত দান প্রাপ্তি স্বীকার করা যাইতেছে।

(১৮৮৭ মে হইতে ১৮৮৯ মার্চ পর্যান্ত) ১৮০৯ শকের ১লা জৈয়েটের তর্বনৌমুদীতে প্রকাশিক্তর ক্ষের ৩৪৫৯৩/৪৪ পাই।

वाव् भारतमान जात, काकिनीता	3,
" গগনচজা খোৰ 🗳	کر
ু ক্ষেত্ৰযোহন মুখোপাধ্যায়, কলিকাডা	b •.
ুমণিশাল মলিক 🦼 👌	₹•.
ু গিরিশচফ্র রায় 🏅 👌	8
" (शालीत्माङ्स (चाय, यद्रमस्त्रः	10.
্ৰ ত্কড়ি বোৰ, কলিকাভা	346
" नमग्रहत्रण मान्न, मानः	b:4q/6
ু চপ্তীচরণ সেম, ক্লক্ষনগর	₹6,
্ৰীনাথ দত্ত, ময়ুৱতঞ্	201
, काणीनात्रात्रण तात्र, हैं हिल	
, जनमें निरुष रस्, क्रिकाल।	
ू (क, बि, श्रश्च के	
" मनी क् रम मृत्थानांतात्त, कान्नन्त	
" कांडिकाल मिख, स्मिनमीशून	346/
ू द्रध्नाथ नाम,	***
শ্ৰীৰ্কা দলিতা নাম, কলিকাতা	39
अक्षी मिल्य रमाक, रकाइविशास	
We will be a series of the	
The state of the s	

তঃরচকা/৭ পাই উল্লেখ্য মহলান্ত্রিস

> নশানক বিভিন্ন কৰা কৰিছি। সাংগ্ৰহ নৰাক।



५२म छात्र। २४ मध्याः

১৬ই বৈশাৰ রবিবার, ১৮১১ শক, আক্ষ সন্থৎ ৬০।

বাৎসন্থিক অপ্রিম মূল্য ২৪০ মক্ত্রণে ৩ প্রান্তি গঞ্জের,মূল্য ৮০

উন্তি।

कांग्रहत्यं विम बाक अक घ्रें करव चूरव रंगन ; यांगरकत यांगकच निशा यस्थाच रंगने विम ; यह विन धरव रंग मेरे उद्यक्त आंगा यजन कविता रंगरिक्स, शृष्टि कांका मानग-कृतरव धार्याव कींगने कवि याहे कांगारेवा गरंगाय-गांगरत ; कृग मिनिटन रंगाया, बहेनाव वांग कींच युर्विक् प्रवाह ।

প্রত্যুক্তি।
কার বিশ্ব মৃত্ নর ? তোমার গৌরব
সাজে কোপা ? বারে তুমি এত ভালবাস
সে জীবন তোমার কি ? এই শক্তি সব
ভালিছে গড়িছে বারা, বাহালের জাস
ভোমার পরাণে পশি করিছে নীরব,
তারা কি ভোমার ? নর দেখ তুমি ভাস
বে শক্তির পারাবারে, সেই শক্তি কার,
ভালিছে চুর্ণিছে দর্শ সতত ভৌমার।

(इड्ड)

मन्भानकीय मख्य ।

भारतरम्भेत्र এको हान्छ कथाए वरन,—

(व भक्क भवह सारम मा रव रन भक्क ;

रन भारतभाक ; छारारक वर्कन कर ।

रव भक्क भवह सारम रव रन भक्क,

रन नर्रान ; छारारक भिका रव ।

रव विक्क भवह सारम मा रव रन विक्क,

रन निर्वाच ; छारारक सार्वाच कर ।

रव विक्क भवर सारम रन विक्क,

रन देख भारत सारम दा निर्वच ।

विक्क भारतभाम ; छारात भारतभाम कर ।

विक्क भारतभाम ; छारात भारतभाम कर ।

विक्क भारतभाम ; छारात भारतभाम कर ।

विक्क भारतभाम ।

সে শঠ; ভাষাকে বর্জন কর।
বে খার্থে মনোবোদী কিন্তু পরার্থে উদাসীন,
বে খার্থে ও পরার্থে উত্তরের প্রতি উদাসীন,
সে সম্মাসী; ভাষাকে উদ্বেহিত কর।
বে খার্থে উদাসীন কিন্তু পরার্থে মনোবোদী,
সেই সমাশর; ভাষার অন্ত্সরণ কর।

विकार क भशीयका अने क्रेगीय मध्या (कांनुनी व्यक्तीय ? . दकाल शुक्रक्षिक कवानि यात यह निकीर्न एवं किन्न जाराव मञीत्रका यति ना भारक काना इत्रेश वर्षे औरप्रद मारून केकारन छाजात वन ७६ व्हेत्रा दातः, उछ्छ वान मर्जनकन व्यान ভাগে করিতে থাকে; সে জল আর নরনারীর ব্যবহারের উপ-ষুক্ত থাকে না; পিশাসাভূৱ পথিক দ্ব হইতে আসিয়া আর ভাহাতে ভৃষ্ণা নিবারণ করিছে পারে না। কিছুবে সরোররেব वन गर्कोत, खारात वैপतिकांग উठ्ठ रहेर्न ७, व्यक्त व्यक्त স্থাতিল থাকে; মংক্ষদকল তাহাতে ক্রীড়া করিতে পারে, চিতৃদ্দিকের লোকের ভ্ষা নিবারণের উপার থাকে। বাচার विकारितत महिक भणीतका चार्ट्स कारावक कथाहे नाहे। भन्द ममास्मत्र धर्मकीयन मश्यक्ष ७ व्यक्ता । বিস্তার যদি অধিক হয় কিন্তু গভীরতা যদি অল হয়, ভবে नश्मारक्षत्र উद्धारम रम धर्म भीवन तका भाव ना; जागाज আধ্যাত্মিক গুণসকল বর্ষিত হইতে পারে না এবং ভদ্বারা गःगात्र भर्थत ज्विज भविकतिरात ज्ञा निवातर्गत माहाया वत्र না। বিভার অপেকা গভীরতার দিকে অধিক মনেঃবোগী रहेल त भौतानत साबिष मदाब महलाव कवा हत।

সুদৃঢ় মণ্ডলী—কোন উপাসক মণ্ডলীর সহয়ে আলোচনা করিতে করিতে এক বাজি অপরকে এই কথা বিজ্ঞাসা করিলেন—"উহা কি সুষ্ট মণ্ডলা" ? অপর বাজি হা বলিরা উত্তর করাতে ভিনি বিজ্ঞাসা করিলেন—"উহার সভাসংখ্যা ক্ত গ্রু ইবল "ছিয়াতার ক্ষা।" তিনি বলিলেন—"ইহাজর কন নাতা। তবে কি সকলেই বনী ?" উত্তর হইণ—

"না সকল সভাই দরিত ।" তিনি জিফ্রাসা করিলেন—"তবে আপনি কিরপে ইহাকে স্থান্ত মণ্ডলী বলিতেছেন ?" উত্তর-কর্ত্তা বলিলেন,—"কারণ, সকলেই ব্যাকুণ, উৎসাহী, ধর্মায়-রাগী, উপাসনাশীল, পরস্পারের প্রতি শ্রদ্ধায়ক্ত ও সন্তাবাপর, এবং সন্মিলিতভাবে প্রভু পরমেশরের কার্য্য করিবার জন্ত সচেট ও অগ্রসর। অভএব সভ্য সংখ্যা ৫ বা ৫০০ শত কন ১উক. এইরপ মণ্ডলী নিশ্চরই স্থান্ত।" আমাদের মণ্ডলীর অবস্থা কিরপ এই কণা যদি কেচ এখন আমাদিশকৈ কিফ্রাসা কবেন, তবে আমরা ভাষার এই প্রকার উত্তর কি দিতে পারি ?

মানব ও ঈশ্বরের প্রতি বিশ্বাস—মহম্মদ সম্বন্ধে এই ক্লপ একটী আখ্যায়িকা আছে যে একলা ভিনি এক বৃক্ষভলে মল্পক রাখিয়া নিজা যাইতেছিলেন। তথন তাঁহার অভ্চরগণ কোনও প্রয়োজনে কিয়দূরে গমন করিয়াছিল। অকল্পাৎ তাঁহার নিজ্ঞাভল হটলে চকুমন্মীলন করিয়া দেখেন যে মরুভূম বাদী এক আরব তাঁহার পার্যে দণ্ডারমান রহিয়াছে। সে ভর-वाती উত্তোলন করিয়া বলিল,—"মংমাদ, এপন আমার হস্ত চ্টতে কে ভোমাকে রক্ষা করে ?" মহম্মদ বিশ্বাসের সহিত অবিশ্বাসীর প্রাণকে বিদ্ধ করিল। যে কথনও পরমেশ্বরকে मानत्वत त्रकाकर्छ। विवास कल्लमा करत नाहे, कौवस विवासीत সুথে এই কণা শুনিয়া ভাষার হৃদর ভয়ে কম্পিত হইল। তাড়ি-তের মত এই ভাব মুহুর্ক মধ্যে তাহার সমস্ত শরীরে পরিব্যাপ্ত চইয়া ভাহার শিরাসকলকে শিথিল করিয়া ফেলিল এবং নি:-শব্দে ভাষার হস্ত হইতে তরবার স্থালিত হইরা পাড়ল। মহস্মদ তাহা তুলিয়া লইয়া তাহাকে সেই প্রশ্ন জিজ্ঞাদা ভরিলেন,— "এপন আনার হস্ত হইতে কে তোমাকে রক্ষা করে ?" 'সে वितन,-- " आत दक्हरे नारे, आयात औवन এখন आलनात হাতে। আপনি আমাকে রক্ষা করুন, আমি আপনার শ্রণা-প্র হইলাম। এক জনের নির্ভর ঈশ্বরের উপর, অপরের নির্ভির মামুধের উপর।

আমাদের নিজ নিজ কীবন সহদ্ধে আলোচনা করিলেই বৃথিতে পারি যে আমাদের বিখাসের গতি মাহুবের দিকে রহিয়াছে, মাহুবের উপর যত পরিমাণে নির্ভর করিতেছি, পরমেখরের উপর তত্ত নির্ভর করিতে পারিতেছি না। সচরাচর দেখিতে পাই যে কাহার সঙ্গে ধখন আলাপ হইল, কিছু দিন একত্র মিলিতে মিলিতে অমনি তাহার সঙ্গে ঘনিষ্ঠ সহদ্ধ জারা গেল। ছই চারিটা কার্য্যে তাহার ভাল ব্যবহার দেখিয়া অমান ভাহাকে বিখাস করিয়৷ ফেলিলাম। এইয়প সাংসারিক বে কোন ও কার্য্য বা ব্যাপারের মধ্যে কাহারও বিশ্বত ভাব কিছু দিন দেখিলে তাহার উপর বিশ্বাস স্থাপন না করিয়া পারি না। আবার যাহার নিকট হইছে একটুও ভাল বাসা পাই, যে কাহাকেও আমাদের কোনও উপকার করিছে দেখি, আমাদের হিছ সাধনের জন্ম বধনই কাহাকে

একটু সচেষ্ট বলিয়া বুঝিতে পারি, তথন ভাষাকে আমাদের পরম বন্ধু, নিতান্ত হিতাকাজনী মনে না করিয়া পারি নাণ কিছ পরমেশবের সম্বন্ধে আমাদের মনে এট ভাব আছে কি, না 📍 তিনি যে সভাভরণ সারাৎসার ভালা বুঝিলাম, অনস্ত জ্ঞানের স্বার। তিনি যে সমস্ত অংগং নির্মিত করিভেছেন,— বিখ্যংসার পালন করিতেছেন ভাগাও জানিলাম, ভাঁছার করুণা বে অজলধারে আমাদের উপ্র ধর্বিভ চইরা আমাদের कीवनत्क वका कविष्ठत्व, व्यामारमव क्ष माख्यावधान कवि-তেছে ভাষাও অমুভব করিলান, কিন্তু আমাদের প্রাণ কই ভাঁহাকে দৃঢ়ভাবে আল্রন করিছে পারিল, কই সমস্ত দ্বর্মন দিয়া তাঁহাকে ভালবাসিতে পারিতেছি 🕈 তাঁহা 🌣 প্রেমে: পরিচর প্রতি মৃহুর্তেই পাইডেছি, জীবনধারণের উপযোগী সকল বস্তু ভিনি দিতেছেন, আত্মার কল্যাণের জঞ্চ কত আয়ো-জন করিতেছেন, কিন্তুভৰুণ্ড ভাঁছাকে চির হিতাকাজ্জী বন্ধু বলিয়া বিখাস করিতে পারিভেছি না, অনত ম্ললের আস্থ বলিরা তাঁহার উপর চিরদিনের জম্ম নির্ভর করিতে পারিলাম না। ভাই বলি মানুষের **উ**পর নির্ভরের ভাব আমাদের যন্ত, ঈশবের উপর ভত নহে। মাসুষের নিকট হইতে একটু সামাস্ত উপকার পাইয়া আমরা তাহার প্রতি কড়ই কুড়ক্ত হই, কিন্তু পরমেশ্বরের এত ক্রণা উপভোগ করিয়াও আমাদের প্রাণ ক্বডজ্বভাভাৱে 🐞 হার কাছে অবনত হইতেছে না।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ত্তাক্ষসমাজে আগাছা।

এক দিন ঈশা তাহার শিষাদিগকে নিম্পিথিত গলছেলে উপদেশ দিভোছণেন। এক বাজি তাহার কেতে শঙ্কের বীজ বপন করিল। ভাষার ভৃতাগণ নিজিত ছইলে পর কোনও শক্র আসিয়া গোপনে ভাগার মধ্যে আগাছার বীক নিকেণ করিয়াগেল। যথন শভের বীজ সকল অস্কুরিত হইয়া পরি-विक्रिष्ठ এवः पूक्लिफ हरेन, उथन क्लिका मध्या पानाहा अ উৎপন্ন হইতে দেখা পেল। ভৃত্যগণ আদিয়া ঐ ব্যক্তিকে কহিল "প্ৰভূ, আপনি কি ভাল বীল ৰপন করেন নাই ! ক্ষেত্রের মধ্যে আগোছা সকল ক্ষরিয়াছে কেন 🕍 ডিনি উত্তর क्त्रिलन,—"निम्हम दकान्त अख्य आशिमा हेहा द्वापन अदि-য়াছে।" ভূচাপণ ভাষাতে জিঞ্জাদা করিল,—"আপনি 🗣 हेळ्। करतन (य च्यामत्रा शिवा (त्र त्रकल नहे कांत्रवा (कशिव !" किनि वनिरमन,--"ना ; काब्रम आशाहा উৎপাটন कविट्ड गिरी পাছে তাহার সঙ্গে তোমরা শশু সকলও উপাড়িরা ফেল। শভোর পূর্ণবিকাশ পর্যান্ত উভয়কে বিদ্ধিত হইতে দেও। শত পরিপক হটলে আমি কর্তুনকারীলগকে বলিয়া দিব বে তাহার শ্রামণ শক্ত সংগ্রহ করিয়া আমার শক্তাগারে রাশিরা म्बर, ध्वर व्याताहा मक्न धकरत वहन कतिया विश्व नित्कर করে।"

नेणां जेचरतत ताकारक अहे क्लावत मध्य फूनमा कतिरणन।

द्धे कथा । आव्यमधास मचरवा व्यवद्याश कता शहरक भारतः। चारमक लोकरक नमरत्र नमरत्र धारे कथा बनिटल छन। यात्र दा ব্ৰাক্ষ্যালের স্কল লোক কেবলমাত ঈশবের কম্ম ব্রাক্ষ্যালে बारमन नाहै। खाक्रममास्क्र मर्था अमन व्यानक लाक দেশিতে পাওয়া যায় বাঁহারা কোনও প্রকার স্বার্থসাধনের লা বাৰ্ষণ প্ৰচণ কৰিবাচেন। জীবনের মাধ্যায়িক উল্লভি সাধন এবং যথাসাধ্য পর্যেশব্যকে ভাল বাসিতে ও ভাঁচার সেবা করিতে চেষ্টা করা ভাঁহাদের উদ্দেশ্য ছিল না এবং এখনও মাই। মানবের চকু তাঁহাদের এট কণ্টভা দেখিতে পার माहे। किन्न कैं।शासित बाता बान्ननमारमत मारतक कि हरे-ভেছে, ব্রাক্ষসমাব্দের উন্নতির পথে তাঁহারা প্রবদ বাধাপরণ ছটরা রহিয়াছেন। বিশেষ ভাবে চিম্না, করিয়া দেখিলেই ৰুলিতে পারা যায় যে ভাঁছাদের এই কথার মূলে অনেক পরি-ষাণে সভা আছে। বস্তভঃ ত্রাহ্মসমাজে এর্প লোক আছেন वैशिता मुक्ति नाट्यत हेव्हात ब्रथात चारम माहै। खाम्रममा-কের মধ্যে পরনেখারের মঙ্গল ইচ্ছা কার্যা করিতেছে, আমাদের দেশের পরিত্রাণের কল্প, সমস্ত কগতের পরিত্রাণের কল্প ভিনি কুপা করিয়া এই সভ্য পশ্ম প্রাকাশিত করিয়াছেন, নিশ্চয় ইহা এক্লিন সমস্ত জগতের ধর্ম হইবে, জনেক ব্যক্তি এইরূপ বিশাস लहेशा आक्षत्रवारम धारान करतन नाहे ; এवः महे क्रम छाहाता নিশ্চরই ইহাকে দেরপ ভাল বাসিতে, তেমন শ্রমার চংক (पिथिटक भावित कर्ष्ट्रम ना । याँकांद्रा विधारने व मर्गा विकारकने, মণ্চ ভাষ্টকে ঈশ্বরের বিধান বর্লিয়া বিশ্বাস করিতে এবং যথাশক্তি দাল বাসিতে পারেন না, উচ্চাদের ছারা ভাচার কি কাৰ্য্য হয় ? বরং ক্ষতিই ছইতেছে। ভাঁছার। আবিৰ্জ্ঞনা-चक्रण रहेगा जाक्रमभाष्ट्रज कात्मक छान क्रिकांत्र क्रिका तह-রাছেন, বালা প্রকৃত ধর্মবিখাসীদিপের ব্রো অধিকৃত হওয়া উচিত ছিল। পুনশ্চ ত্রাহ্মধর্মের যাহা লক্ষা, ভাচা সাধন कतिवात मिटक भूटर्स उंग्लिएत मृष्टि किन ना, ध्वन अ नाहे। म साम्राज्य महिल भवरमध्यरक कालवामा, कार्यस्मावारका উচ্চার সেবা করা এবং উচ্চার সতা নিজ জীবনে পালন ক্রিয়া তাহা অভ্যের নিকট প্রচার করা প্রভৃতি বিষয়ের জন্ম উাহারা কভটুক চেষ্টা করিতেছেন ? কতলোক দেখিতে পাই বাঁচারা উপাস্না মন্দিরে কথনও উপস্থিত হন না ; কত লোক দেখা যার বীহার: আপন আপন পরিবারবর্গকে উপাসনা-বিহীন করিবা রাধিরা অধঃপজ্জনের দিকে অগ্রসর করিয়া नि:उक्ति; धवर धक्र अक्षेत्र का हारक का हारक अस्ति वास वैध्यत्र निष्य विनारस अक्यात्र अवस्ताभागना करत्न न। । খার্থতাগে করিবার কণা বলি না, জনহিতকর কার্য্য ক্রিবার কথা বলি না, সভা প্রচার করিবার কথাও বলি না, — (त नकन कारमक मृत्यत कथा। किन्न मिनाएक **এ**कवात বাঁচারা নিজে পরমেখনের নামগ্রহণ করেন না এবং পরিবার দিগকে ভাহা করিবার পক্ষে সহারতা করেন না_{য়র} ভাই*াদ্*র বাক সমাজে থাকা নাম মাতা? তীহারা কি অভের भनिष्ठे क्रिएक्ट्स मा १ आक्षर्य श्राह्म कृतिका देशिया राहे न्त्रमिकारक काम वानित्य क्रिडी क्राइम मा, केर्राह माम गेर्श-

रमन भिष्ठे वाजिन ना, बाक्षतमास्य उपित्र बाकाटक कन कि ? কারণ এখানে না থাকিলে তাঁচাদের কোনও ক্ষতি হটবে না,---हिम्मन्मारक डाहारतत की नम रवक्रण हिल. अथम किंक रमहेक्रण त्रश्चितारक खबर हेडा काफिरमञ्ज शांकिरव । छाहाता ना शांकिरम वाकानमाह्यात (काम ७ काछ करेटन मा, नतर नाम कहेटन। कातन উছিরো যে স্বার্থপরভার ভাব লইয়া ব্রাহ্মসমাজে প্রবেশ করি: রাছেন, যত লোক বা পরিবার তাঁহাদের সংম্পর্শে আসিতে-(इन. (महे महन द्याक वा श्रितात मासा (महे छाव खड़ा-धिक পরিমাণে পরিবাধি চইরা ঘাইতেছে। ভাঁহাদের জীবনের ৰারা কাচারও কোন আধাাঞ্জিক কল্যাণ হওয়া দূরে থাকুক. বরং তাঁহাদের সংসারাস্তি, বিশাসিতা ও স্বার্থপরতা প্রভৃতি নীচভাৰ সকল অম্বলোক নিগের নিকট দৃষ্টান্তপক্রণ চইয়া ভাগ-দের আধ্যাত্মিক গতি রোধ করিতেছে। ত্রাক্ষর্ম গ্রহণযোগ্য किना এই विहास कतिबाद संख्य आक्रममार्मित पारत प्रशासना হট্মা বাচারা ট্রার গতি প্রাবেক্ষণ করিতেছেন, তাঁচাবা ক্রমে ক্রমে এট সকল লোকের জীবনে ধর্ম-বিগর্ভিত ভাব দেখিতে পাইরা বাক্ষদর্শের প্রতি বীতপ্রক চটয়া দুরে চলিয়া ষাইতেছেন। বাঁছারা আহ্মধর্ম-নিছেমী, তাঁচারাও এই সকল লোকের বাজিগত জীবনে নানা পকার ছিল্র দেখিতে পাইরা তাহা সমস্ত ত্রাক্ষ সমাজের উপর আরোপ করিতেছেন এবং জগতের সমক্ষে দাড়াইয়া ভীত্র কটুব্জিব গাণ বর্ষণ করিভেছেন আবার পরমেশবকে লাভ করিবার জঞ্ঠাহারা চেট্ট। করিতে-ু ছেন, তাঁচারা এট শ্রেণীর লোকদিগের সঙ্গে খনিষ্টভাবে মিলিত হটয়া কার্যা করিতে পারিকেছেন না৷ আধায়িক বোগট মিশনের প্রকৃত ভিত্তি। ইহা বাতীত আর কিছুতেত মানবের ভিন্ন ভিন্ন চেষ্টাও হৃদবের গতিকে একীভূত করিবা কোনও বিশেষ লক্ষ্যসাধনে সমর্থ করিতে পারে না। প্রকৃত বিশ্বাসীপণ যে কার্য্যকে ঈশ্বরের আদেশ বলিরা করিতে অগ্রসর ছইলেন, স্বার্থান্ত্রেমী ব্যক্তিগণ চারিদিক বিচার করিয়া ভাষাতে স্বাধের কোনও বাতিক্রম হয় দেখিয়া তাহা করিতে বাণা मिल्ना धरे कांद्रण दाक्रमभाष्यत कार्या क्रांक्करण छ'ल-ভেচে না। এইরপে এই শ্রেণীর ব্যক্তিগণ আক্ষদমাভেত মধ্যে আগাছা অরণ হইয়া ভাষার অনেক ক্ষতি করিভেছেন : निष्यता व्यवानत स्टेटिकान ना, जनः व्यक्तित भाषाहेका है। विशिश चार्यम।

এখন চিন্তা করিয়া দেখা উচিত বে এট সকল লোকের
সম্ব্রে রাজসমাজের কি কবা কওবা। সহজেই বুবতে পাবা
বায় বে এই সকল লোকদিগের এইরূপ স্বার্থসাধনের কঞ
রাজসমাজ রাজ্যগুহল করেন নাই; কিন্তু পালী ভালী ও প্রার্থক
মুমুক্ত্ ব্যক্তির পরিজাণের কঞ এবং সমস্ত জগতে সভা ও
পাবজভারে রাজ্য স্থাপনের কল্প ইহার অভ্যথান হইরাছে কিন্তু
পরমেশ্বরকে বঞ্জবাদ হৈ রাজসমাজের মধ্যে এমন অনেক
সরল বিশাসী ও পরিজাণলাভার্থী আছেন বাহারা আপনাদের
আধ্যোত্মিক কল্যাণের ক্রন্ত এবং রাজসমাজের উর্লভির কল্প
বর্ণাসাধ্য ভেটা করিছেছেন। ইইতে পারে বে উল্লেখ্য
কার্যার কাহার দ্বীবনে এলন্ড অনেক চ্ক্রিছা আছে, কিন্তু

जैचेरतत्र मिरक व्यक्तानत रहेरात सम्भ डीहारमत्र नतन व्यक्ति। ও वशामिक (हरे। चारक विनिन्ना च्यामा कता यात (व ध्वकनिन তাঁহাদের সে দকল এর্কালতা দুরীভূত চইবে-পরমেখরের कुला व्यवजीर्ग इहेग्रा छाहाभिगटक शविक नवसीयम मान করিবে। বিধাতা শ্বরং এই সকল লোকদিগকে ছাতে ধরিয়া ব্রাহ্মদ্যালে আনিয়াছেন এবং আপনার মদল ছায়ার-মধ্যে রক্ষা করিতেছেন। আর উপরোক্ত স্বার্থান্থেরী ব্যক্তিগণ ইচার মধ্যে আগাভার স্থায় পরিবর্দ্ধিত হইয়াছেন। অভান্ত স্মাজকে অমুদার ও সংকীর্ণভার মধ্যে আবন্ধ দেখিয়া ভাঁচারা তথায় বে রকল স্বার্থাভিলাষ পূর্ণ করিতে পারেন নাই, আছ-সমাজের উদারতা ব্ঝিতে পারিয়া সেইস্কল উদ্দেশ্ত সিদ্ধ कतिवात चाणात्र जाहातं चालात नहेशात्क्रम । देहाँ दिनत नष्टक কর্ত্তব্য কি ৪ মহাত্মা ঈশা উপরের গলোলিখিত ক্ষেত্রখামীর মুণ দিয়া এই প্রশ্নের স্থানর উত্তর দিয়াছেন।—"ঐ সকল আগাছা এখন উৎপাটন করিও না; উহা উপাড়িতে গিয়া পাছে উহার সঙ্গে শহাও নই কর। এখন উভয়কে বর্দ্ধিত হটতে দেও। শৃস্য পরিপক্ক হটলে আমি কর্ত্তনকারীদিগকে বলিয়া দিব যে ভাহারা বেন শ্সা সকল সংগ্রহ করিয়া শ্স্যা-গারে রাখিয়া দেয়, এবং আগাচা সকল একত্রে বন্ধন করিয়া অগ্রিভে নিকেপ করে।"

থ্রীরীরগণ নরকাগ্নিতে বিশাস করেন, অগ্নিতে নিক্ষেপ করার অর্থ তাঁহার। নরকাগ্নি ব্ঝিয়া থাকেন। নরক নামে যে কোন একটী স্থান আছে, সেথানে প্রদীপ্ত হু হাশন সর্বাণা জ্ঞলিতেছে, আমাদিগের এরপ বিখাস নহে। আমরা অগ্নিতে নিক্ষেপের অর্থ আর এক প্রকারে গ্রহণ করিতে পারি। কোন একটী সমাজের মধ্যে বিখাসী ও অফুরাগী লোকের সংখ্যা যদি অধিক হয় ভাহা হইলে ভাহাদের জীবন ও কার্যা হইতে এমন এক পবিত্তার ভেল, এমন এক বৈরাগ্যের অগ্নি প্রজ্ঞানত হুটবে যাহাতে প্র্যোক্ত স্থাথ-সাধন-ভংগর বক্তিগণের সকল প্রাকার নীচ প্রবৃত্তি দ্য়ে হুইরা যাইবে। হয় ভাহাদিগকে হুদর মন পরিবৃত্তিত করিয়া ঈর্বরের শ্রণাপল হুইতে হুইবে, না হয় সেই অগ্নির উত্তাপে দ্বে গিয়া পড়িতে হুইবে।

আমবা যদি নিতান্ত স্তর্কও চই, যদি অতি কঠোর পরীক্ষার বারা মান্ত্রকে পরীক্ষা করিয়া গ্রহণ করি, তথাপি ইহা
সন্তব বলিরা বোণ হয় না, যে সমাজ মধ্যে তুর্বল বিখাসী,
ই'ক্ষেমপরতন্ত্র ও আর্থপরায়ণ লোক প্রবিষ্ট হইবে না। আর
যদিও বা প্রবেশের হারে পরীক্ষার অগ্নি জ্ঞালিরা উপযুক্ত
ব্যক্তিদিগুকেই গ্রহণ করিতে সমর্থ হই, তথাপি এক সমযকার
প্রজ্ঞানত অফ্রাগ যে কালক্রমে শিথিল হইতে পারে না
ভাষা কে বলিল । যে ব্যক্তি আজ অফ্রাগাগ্নিতে উজ্জ্ঞান,
ক্লা ভাহার অগ্নি মন্দীভূত হইতে পারে। তথন ত সে সকল
লোক সমাজের মধ্যে আগাছার ভার হইয়া থাকিতে পারে।
মানবীয় সমাজ গঠন করিতে গেলেই সংএর সঙ্গে অসং
মিশিরা থাকিবে; ভাহা বলিয়া কি আমরা সমাল গঠন
পরিভ্যাগ করিব ! কথনই নহে। আমাদের বোধ হয় সং
অসং এর একল বাস বিধাতার মন্ধা বিধির অন্তর্গতি । বিদি

অস্থ নিকটে ন। থাকে স্থ কাছার সাইজ সংগ্রাম করিবে 🕫 সংএর সে কিছু শক্তি ও মহত্ত আছে তাহা কিরুপে বিকশিঙ ছটবে ? অসংএর সাহত সংগ্রামেই সংএর **শক্তি প্রকাশ**। আমরা প্রতিদিন যে সকল পদার্থ আহার করি তল্মধ্যে অসার **ভাগ কত থাকে, বাহা আমাদের বেছ হইতে রূপান্তর ধারণ** করিয়া বহির্গত হইয়া বার। এখন প্রাশ্ন হইতে পারে বাই। অসার, বাহার দ্বারা শরীরের কোনও ধাতর পুষ্ট হইতেছে না তাহা विश्वां आमार्तित भाषामुख्यात मर्या त्राधिर्णन रक्त १ উত্তর এই, সে সকলের ছারা সাক্ষাৎ সহজে দেহের পুষ্টি হয় ন। বটে কিন্তু ভাহাদের খার। পুষ্টিকর পদার্থ সকলের কার্য্য कतिवात माश्या इस। त्महेल्या धर्म छाव विशेम वास्क्रिमित्रत ৰারা সমালের দেহ পুষ্টি হয় না বটে কিন্তু ভালাদের বিদ্যমান তাতে ধর্মভাব সম্পন্ন ব্যক্তিদিগের সংগ্রাম ও শক্তিকে বিকশিত करत। यनि व्यामारमत कीवरन खाला छन ना बारक, विष्य ना थार्क, मःश्राम ना शारक, यपि नकन लाक्छनिष्टे आमना विश्वांत्री, त्थानिक, नहांभन्न, नाधु इहे छाहा इहेटन धर्च नःश्रान একেবারে ভিরোহিত হইরা যার এবং অচিরকালের মধ্যে আমরা অলস ও অকম্মণা চইরা প্ডি।

শভেব সংক্ষ আগছো থাকিবেই, তবে দেখিতে হইবে যে
শভ অপেকা আগাছা অধিক না হয় তাহা হইলে আর শভের
কেত না পাকিয়া আগাছার কেত হইয়া যাইবে। ছই দশ্টী
ছ্রল লোক থাকে থাকুক ধর্মায় যেন সমাজ মধ্যে আগ্রহ
গাকে; পবিত্রতার তেজ যেন প্রজ্জালত থাকে; তাহা ছইলে
ধল্পজগতের আগাছা গুলিকে হয় সেই তেজ প্রাপ্ত হইতে হইবে
না হয় দূরে নিকিপ্ত হইতে হইবে।

প্রবচন-সংগ্রহ।

ভাগৰত।

চে সভা, যিনি কোনও বিষয়ের অপেক্স না রাখিরা আমাতে আত্মা সমর্পণ করিয়াছেন, তিনি যে সুথ উপভোগ করেন বিষয়ীদের সে সুগ কোথায় ? যিনি অফিঞ্চন, লাভ্ত, সমচেতা ও আমাকে লইয়া সন্তুষ্ট, তাঁহার স্ক্ল দ্বিক্ট সুধ্ময়।

> भूर्ण मनित्र मःभूनः समय नर्मः छ्नावरेमः । छेनानम्भूष्नामण यथा हत्त्वावरेखन छः॥

> > যোগবার্লিষ্ঠ।

সেই পূর্ণ পুরুষ দারা মন পরিপূর্ণ হইলে সমস্ত জগৎ স্থা-রুষে পরিপূর্ণ হয়। যেনন যে বাজিন চরণ পাছকার্ড, ভাহাব নিকটে সকল ভূমিই চর্মারত বোধ হয়। स्वश्चन कहें सगर कहा को नाग कहा म मारेन। प्र निष्ट्रणवन कर वाहेरह टको स्वस्त आरेग। जक देहन्त काशन ठाएक मिछ हाथ नारन। जान नरत जानत सिर्ट्स क्य का बारव॥ देश महि खड़ रही महि कृष्ट करेट म स्यात। जानगत नक्य। साग्रन गायन। हम् रुग्ता।

-- 747 |

যদি পাপ কর্মের নাশই না হয়, ভবে হে জগৎশুরো!
ভোষার মহিমা কি ? যদি জলুকেই গ্রাস করে, ভবে সিংহের
ন্ত্রণ কেন লইবে ? এক বিন্দু জলের জন্ত চাডক নিরন্তর
ক্লেপ পার; বদি ভার প্রাণ বিরোগ হর, আর সাগরও মিলে,
ভগাচ ভালাভে ভালার কোনও কাব দেখে না। আমি কিছু
নই, আমারও কিছু নাই; হে প্রভু! ভূমিই আছ; এ সমরে
লক্ষা হইভে রক্ষা কর, সধন ভোষারই।

তৃক্ষনানীজৈরাণ্যাহযৈথি বিখং বশীক্তম্।
বস্তানি কেতৃং শক্রোতি স বিশ্বক্ষী মতঃ ঃ
কাঞ্রন্তবৃদ্ধি প্রমানক্ষিয়াং।
স্থাকাশং ন বাবেতি স মুড়োহন্ধা প্রকীঠিতঃ॥

–সম্ভাব

লোকে ইন্দ্রিরপ্রামকে ছর্জার বলে, কেন না উচারাই আমাদিগের বিখকে অধীনত করিয়াতে, যিনি তাহাদিগকে জয়
করিছে পারেন, ভিনিই বিশ্ববিজয়ী। অন্তরে ও বাহিরে জাগ্রত পরমানক্ষমর চিন্মর অপ্রকাশ ব্রহ্মকে যে দেখিতে পার না,
সেই মৃচ্ই অরঃ।

ज्यामात्मत्र क्षमतत्रत्र मत्था এक त्मवठा वाम करत्रन-छिनि वित्वक।

কেবলমাত্র আপনার জন্য বাঁচিয়া থাকাতে প্রকৃত জীবন ধারণ হয় না। বধন কোনও সাধুকার্য্য করিবে, তধন ঈশ্বর শ্বয়ং তোমার সেই সংসাহসের মধ্যে রহিয়াছেন মনে করিয়া আনন্দিত হও। প্রকৃত উচ্চ প্রাণস্ত অস্করণই মান-বের প্রধান অভাবের বস্তু ।

--এীককবি মিনাস্তার।

বর্তমান মৃহুর্তকে দেবতা পর্মণ,মনে কর।

ভোষার কর্ত্তবা কি ? অনা ভোষার সমূপে যে কার্যা অসম্পাদিত পড়িয়া রভিয়াছে ভাষা স্থান্সর করা। পুনশ্চ, সংক্ষান্তয় শাসন প্রণানী কি ? ধাহা আমাদিগকে আত্মশাসন শিক্ষা দেয়।

—গেটা।

শভা বাঁহাদিগকে স্বাধীন করিয়াছে, তাঁহারাই প্রকৃত মানুষ, স্পর সকলে দাস মাত্র।

—কাউপার।

বধন মানবের ইক্ষা ঈশবের ইক্ষার সঙ্গে ঐক্য হর, তথন ভালা ১ক্ষর শক্তি ধারণ করে।

আইন আমরা পরমেশরকে প্রাকৃতির মধ্যে অবেষণ করি, কিন্ত হাদরের মধ্যে সভারতে পূলা করি, এবং মানব সমাজের ভিতর দিয়া তাঁহাকে ভালবাসি ও তাঁহার সেবা করি। ইহাই চিরস্থায়ী ও নিরপেক ধর্ম।

—हेनिकम् लिख

প্রেমিক ব্যক্তি বালকের সহিত বালক হইরা থেলিতে পারেন, ব্রার সহিত ব্রা হইরা উল্লাসে মাভিতে পারেন এবং বৃদ্ধের সহিত বৃদ্ধ হইরা গান্তীর্ম্য ধারণ করিতে পারেন। জ্ঞানীর সহবাসে তিনি ক্থাক্তব করিতে পারেন আ্বার অজ্ঞানের নিকট ধৈর্যাবণখন করিতে জানেন। সকলের হাসিতে তিনি হাসিতে পারেন এবং সকলের ক্রমনে তিনি কাঁদিতে ও পারেন। সকল উৎসবে তিনি মিশিতে পারেন, আবার সকল হাহাকারে তিনি সহাম্ভৃতি করিতে পারেন। সাধু বাক্তির সল্পণ তিনি হৃদরের সহিত আদর করেন এবং পাপীর হর্মন্তাকে মার্জনা করিতে জানেন।

---हेनिकम् लिखि।

সতুক্তি। আয়ত্যাগ।

চিনি মিষ্ট ছটলেও, অক্স জবোর সংযোগ ভিন্ন, অনুট আহার করা যায়। লেবু মুগবিধার বটে; কিন্তু স্বভন্তভাবে, অনাহার্য্য বলিলেও অসঙ্গত হয় না। লবণের ত কথাই নাই; পৃথকরণে আহার্যাই নহে। কিন্তু এই বিপরীত রসমূত জব্য-গুলি, জলে অচিক্ হইরা, যে উপাদের পানীর, প্রস্তুত কংব, ভাহার আহাদ কত মধুর ও তৃত্তিকর।

প্রকৃত ধর্ম ও ঠিক্ এইরপ। ইহাতে জ্ঞান, বিশ্বাস, ভক্তি ও
হিতাফুর্ন্থান প্রভৃতির সমাবেশ, পূর্ণ মাজার বিরাজ করিতেছে।
এবং আত্মতাগই ত'হার একনাত্র সাধন। জগবান করুন।
বেন এ আদর্শ সাধন পূর্ম্বক,গভীর জ্ঞানী, অটপ বিশ্বাসী, পরম
ভক্ত, এবং কঠোর কর্মী প্রভৃতি বিভিন্ন প্রকৃতির লোক, সেই
পবিত্র বারি "এক্মেবাছিতীরমে" আত্মতাগ পূর্মক ভারতেব
অগণ্য ধর্মপিশাস্থানরনারীর পিপাসাসান্তির স্থমিষ্ট সরবং
হইতে পারি।

नवकीवन ।

বলপূর্মক সভেজ পত্র প্রবচ্যত করিছে গিরা দেখিতে পাই, শাখা ভগ্ন হইলেও, পত্র কত সময়ে ভাহাতেই সংলগ্ন থাকিয়া যায়। কিন্তু বসন্ত সমাগমে, বুক্লের শিরায় শিবাখ. যখন নব মসের সঞ্চার হয়, তখন আপনা হইতেই,সেই হুক্লেগ পত্র ব্যারিষ মুক্ল ও নবীন পত্ররাজি তকর অতুল শোভা বিকাস করে; এবং তখনই, স্কেণ্ঠ বিহল রবে, বনত্বনী মহোলাসে পূর্ব হয়।

क्षाक्ष विचारम পরিণত হইছা, खाम वक्षीन मुक्तः বলের সঞ্চার না করে, তত দিন নির্মীব বাছার্চানে, সুফল लाक वृक्त, ७ जानक प्राण जावाधनीतः। विष्न वाखनिक हे नव-की बननार खन्न वाजना किया शास्त्र, खरव कृतिम चिक्न वर्जून शृक्षक, राशास्त्र आर्गत्र भित्रात्र नय तरमत्र त्यांच काराहिण स्त्र, প্রথমে তাহারট আংরোজন কর। দেখিবে, এ পুরাতন ভাব-নিচয়, আপনা হইতেই দুর হইরা, পরিমণপূর্ণ জীতিকুস্থম, ५ की वन्न अञ्चीन-भटि श्रुटभाष्ठिल हहेग्रा वाहेटव । এवং छश्नहे জীবন-বিহলের ভক্তিপূর্ণ মধুর সঙ্গীতে, জনসমাজ প্রতিধ্বনিত बहेरवा अहे अबहे क्रेमा छेनएम पित्राह्मन--- "मर्साछा क्रेमत ताका, ও উাছার ধর্ম অবেষণ কর।" 🖟

नगरनम्ना ।

বালাকালে এক সমব্রম্ব বালকের সহিত চৈতক্ত এমন व्यगाए ভानरामा खाँचवाहिन (य, निराखारगंत अधिकाश्म কালই তাহার গৃহে অভিবাহিত হইত। ভাহার সহিত এক পাত্রে আহার, এবং তাহার পিতা মাতাকে, পিতৃমাতৃ সংঘাধন করিতেন। একদা অপরাধ চেতু, মাভা নিজ পুত্রকে প্রহার করিয়াছিলেন।

वानरकत्र निजा शृह्य चात्रितन, देठजञ्ज बनितनम,--"बादा, মা আমাকে মারিরাছেন।" গৃহস্বামী লজ্জিত হইরা, ২ন্ত্রীকে যথেষ্ট ভিরস্কার করিলেন। মাতা, বিশ্বিত হইয়া, চৈতক্তকে ভিজ্ঞাসা করিলেন,--- "বাবা,আমি নাকি ভোষাকে মারিয়াছি?" टिण्डना वनिर्मिन, "हैं। मां, मातिशाह देविक । উहारक मातिरा कि আমার লাগেনা ? এই দেখ আমার পিঠে আঙ্গুলের দাগ পড়ি-য়াছে !" এ অমুপম সমবেদনার জীব্স্ত দৃষ্টাস্তে দৃষ্ঠী অবাক !

এ আখারিকা সতা হউক আর নাই হউক, ইচা নিশ্চয় বে, স্থামানের একের ক্লেলে, যত দিন সমগ্র মণ্ডলীর প্রাণ আকুল হইরা না উঠে, তত দিন ভাতৃভাবের কথা, সাহিত্যের ভ্ৰণ মাত্ৰ থাকিয়া যাইবে। এ উচ্চ আন্দৰ্শের কথা ছাড়িয়া पि। (र मामाक मदावशांत्र, मश्मात मत्था (पथिएक भारे, व পৰিত্ৰ আতৃমণ্ডলীকে কত সময়ে ভাষা হইতেও বঞ্চিত কৰিয়া বাণিরাছি। কড সময়ে প্রচ্ছ এবং গুপ্ত ঘাতকের ক্রায়, পর-স্পরতে, কুৎসার তীক্ত ছুরিকার আঘাতে, ক্ষত বিক্ষত করি- (कक्कि । सूम्यू व्यवस्था, औहमस क्यांनीन हरेश, व्याग हस्यान মঙ্গল কামনা ছঃসাধ্য চটলেও, অসুখোচনার অঞাবারিতে, निकर्छ- अवाहिछ, खांकृत्मानिक स्थीत कता त्य जनातान्त्राथा, ভাগতে আর সংশয় নাই। কিন্তু এটুকুও কি আমরা কভ সময় করিয়া থাকি ?

ব্ৰাম্মসমাজ।

विश्व ७०८म टेव्य एकवात्र मन्त्रीकारण वर्तान्य छिल्मारक नावात्रम खाक्रमबाटकत केमार्गमामटक विटमबं केमार्गमा इतः।

) भा कैरनाच निवात मदराबी भगता छेरनेचे वेत्र के निवेश नाथ माली खाणाकानीन सेनानमार काठार्यात कार्या कर्यना जनवारक मनील ७ महीर्दम इत। महारत्भव मेखिल नियमान भाद्यी "धर्मभीवम ७ धर्ममंगाम" मधरकं वस्तृष्ठां करवन । छार वि ভুল মন্ত্ৰ নিয়ে প্ৰকাশিত হইল :---

चामारतत्र रहरण अमन धर्चमञ्ज नकण चार्छ वाशास्त्र वरन एवं शर्मात जरण जमारकत त्कान । अर्थजामन সভত্ত বস্তু, ধর্মসাজ না হইলে তাহা চলে। আমধর্ম এই छेखदाक अक कतिएक हाम। जीहीत भएमीत मध्या स्वामीन काथितिक ध्वर दशारिहीकी धरे हुई स्वर्धन (स्वती बादका कार्थालरकता धर्मानमारसम् ध्वर त्यारिहारिकता धर्मानारसम् অত্রান্ততা মানেন। বাইবেল প্রচার না করিয়া শোণের अधीन हे जा हनाहै काथनिकत्तत्र में छ ध्वर (क्वनमांख वाहे-त्वन दांता क्रीवनत्क नित्रमिछ कता त्थारिक छैतन मछ। किंद्र শিক্ষিত ব্যক্তিগণ বলেন হে আগে বেমন ভাষা ও পরে ব্যাক-त्रण, (त्रहेत्रण चार्था धर्मकीयम, शरव धर्मामा । धार्मिटकत्रा ধর্মজীবন হারা যে বহুদর্শিতা লাভ করিয়াছেন, ভাতাই শান্ত্রন্তে পরিণত চটবাছে। ধর্মজীবন চটতে ধর্মসমাজ, এবং তাহা চইতে ধর্মশাল্প। অনেক দিন বাচা চলিয়া যার ভাচাই শাল্প চর। ধর্মজীবনের সঙ্গে ধর্মসমাজের সম্বন্ধ. —ঠিক আন্তের বীক্সের সঙ্গে ভাহার আঁটির গেমন সহস্ক। আঁটি বীজেরবর সর্মণ চইয়া ভাহাকে রক্ষা করে! ভবে ভাহাহটতে বুক হয়। সেইরূপ কোনও ব্যক্তির মধ্যে যে সূত্য অবভীর্ণ হয় তাহা রক্ষা করিবার জক্ত ঈশ্বর সমাজ করেন। ধর্মজীবনের শক্তিই সমাজের শক্তি। ইছা থাকিলে সমাজ আপনি গঠিত হয়, নীভি আপনি রক্ষিত হয়। এটিয় শিৰোয়া অত্যাচারিত ও দেশতাভিত হইরা যথায় পিয়াছেন ভণায় সমাজ হইয়াছে। কেন চইল ? তাঁহাদের ধর্মজীবন ছিল, **जोहे इंडेशांक । धर्मभी वस थाकिरन गर इत्र । भूरना ऋ**कि ও পাপে অকৃচি না ক্রিলে বেমন নীতিরকা হর না, ধর্ম জীবন না থাকিলে সেইরূপ সমাজ ও রক্ষিত হয় না।

এট জন্ত আমরা ব্রাহ্মসমাজে আসিরাছি। এখানে ধর্ম জীবন ও সমাজ একতা সম্ভাগ্তা। ঈশার ভারং এই স্ব গড়িয়াছেন। আঁর কেহ আমাদিগকৈ ডাকে নাই। इंडेटड পারে কেচ কেচ হয়ত শুর্থের আরু আসিয়াছেন। ক্রি जारत्यके भारभन्न सक सङ्ख्या । जेपातन सक माक्न करेना আসিরাছেন। ,ত্যা বেষন ভুড় জগতের জক্ত স্কলই করি-्छट्ड. (जडेज्रन क्रेयन ब्यामार्यन क्रमा जब क्रिएक्रेड्डन। তাহার ক্লোভিতে মানব উচ্ছণ। কেন'ভিনি আমাধের क्षमा এই সমাজ গঠন করিরাছেন ? আমানের ধর্মজীবন গঠ-रमन जना देशांत रुष्टि । जारमरक केल नमन निमान सम, क्रिक ভাঁহারা মনে করেন না যে এ সমাজ হটতে বিক্রিয় ইটলে र्जीकात मतिया वार्वेट्यन । महा। दमत वर्ष धका हरण, काक-**धर्ष** कका हरण ना।

ं वाक्यरचंत्र विदर्भयकायः ५व । विश्वस्य मर्ट्यहर्कः वान वाव् छेटमणहळ वच चाहारवीत्रं कावी करवन। छर्भवत्रिम रविश्वा। चक्र वृद्धं मध्यमध्य मध्यक्ति काम द्वस्य विश्वास

A CONTRACT OF THE CONTRACT OF THE

चात्रक मान सांक किन्नु त्यांन करवन ; बीडीरवता वरमन---वित १६ अहित मूनवमारमता गरमम - मेथत १६ महत्त्वर । काहाता का क्रेन्स्टक ब्रांबंड विवेदा प्रत्न कट्डम मा। चामता चार हाहाटक चाला क्रिएक हारे ना । २व । विटरक के नाधू-हिल्ला সমবার। সচবটের লোকে এই উভয়কে পরস্পর ৰ্বেশ্ৰী ৰলিয়া মনে করে। বাহারা সাধু মানে ভাহারা ব্ৰেক্ষে গৰ্ম করিয়া আপনার ব্যক্তিছ নষ্ট করে, আবার ाहाता विरमरकत्र कासूनत्र करत छोहाता स्करणमाळ वास्ति-রুকে আপ্রান্ত বিষয়ে জীবমকে শুক্ত করিয়া কেলে। বিধাতাকে গ্নাৰাল গু প্ৰাক্ষণণ বিবেহুত্ব আদেশ, অন্থসাৰে কাৰ্য্য করিতে शिवा क्छ छा।श श्रीकांत केविवाटकन । आसाटलव टलटम विटव-কের ৰড়ট ছুৰ্ণতি। বিখাস অনুসারে কার্ব্য করা যে দোব ভালা লোকে বুবে না। িন্দুধর্মের পুনরুখানকারীগণ খাল ঠিক ভালা ব্ৰিতে পারিয়া কি কাষে করিতে পারিভেছেন ? কিছু ব্রাহ্মগণ সাধু ভক্তিতে অগ্রগণ্য। আদেশ ও বিদেশের সাধুদিগকে এত ভক্তি কে করে? ধর। জ্ঞান ও বিশ্বাস। লোকের ধারণা যে জ্ঞান থাকিলে বিশাস হয় না এবং বিশাস ক্রিলেট হইল ; জ্ঞানের তত আবিশুক নাট। ত্রাদ্ধসমাজ বলেন--জ্ঞান পাকিলে বিখাস আপনি উৎপর চর এবং জ্ঞান ৰাণীত যে বিশ্বাস তালা অন্ধবিশ্বাস। ৪ৰ্থ। বৈরাগা ও নরবেবা। : বৈবাগেরে জন্য মানবসমাজ ছাড়িরা নির্জ্জনে याहेट इस ना ; कि इ भागा क जारव सवत्त्रवा कदाहे श्रक्त छ टेनबाजा। १म। ८क्सम ७ क्रियकार्या माथन। क्रेमात्वय প্রাত প্রেম পাকিশে জগতের হিতকর উচ্চার প্রিরকার্য্য সকল न। कतिहा (कह शांकि: 5 भारत ना ; आवाद अन्नरत यनि नेचंद-প্রেম না পাকে, তবে কেবলমাত্র প্রিয়কার্য্য সাধন করিয়া কোনও ফল নাই। ৬৪। নীতি ও আধান্মিকভা। ধর্মভাব বজ্জিত হটয়া কেবলমাত্ত নীতিপালন করিলে জীবন শুক हहेबा यात्र अवश् काहा कर्कांत्र कर्खवा विनेत्री (वाध हत्र । अकता ভাগার সঙ্গে আধাাব্রিকতা থাকা চাই। আবার নীতিবিহীন গে আধ্যাত্মিক ভাব ভাগর কোনও মৃদ্য নাই।

THE SHALL SHAD WATER

मर्वाम।

দ্বেষ্ট্রা;—জটবাসাধারণ রাক্ষসমাজের প্রচারক মন্ত্রাদ্বির ক্রিক্তেকের কল্প যে কার্যা বিভাগ নির্দিষ্ট হন্যাছে তাদার বাহিরের কোন স্থান ক্রিড কালাকেও চাহিতে হন্তলে, সেই প্রচারককে গোপনে পজ্র না ক্রিমিয়া কার্যানির্দ্ধানক সভাকে পেশাই ভাল; কারণ কোন প্রচারকের স্থীয় বিভাগের বাহিরের কার্যায় ভার কার্যা নির্দ্ধানক সভার হল্পে। প্রচারক মন্ত্রাশ্বন্ধ স্থায় ভারে কার্যা নির্দ্ধানক সভার হল্পে। প্রচারক মন্ত্রাশ্বন্ধ স্থায় ভাবে প্রাপ্তনে বন্দোবন্ধ করেন ইলা প্রার্থনীয় নতে। স্ক্রির ভাবে প্রাপ্তনে ব্যক্তির বৃদ্ধাণ এবিষয়টা স্মরণ স্থাপ্তনে।

व्यक्ति,—विशव ১०१ देव्य वात् चानमामाहत पख परमाद्वम साहीदक क्षतिम्भूत त्यमात चवर्गक त्याहानीभाषा सिनामी वात् अविकादम्भ त्यम यहानायत भिकात सामाजाक

ব্রাহ্মধার্মর পদ্ধতিতে সম্পন্ন হইরাছে। আচার্যর গিরিক্তরে মন্ত্র্যার মহাশর উপাসনার কার্যা করেন। তংগরে বার্ অধিকাচরণ সেন শিতার পরিশৌকিক আত্মার অন্ত প্রার্থনা করেন।

স্থারণ ত্রাক্ষসমাজের **জন্মোৎসব।** আগামী চলা জৈটি হইতে তরা পর্যান্ত নিয়লিথিত প্রণাশী

जारूनाटत नाथात्र वाजायमाटकत >>भ वार्षिक अर्थाएनव

্ৰলা কৈটে মকলবার ; আছে উপাসনা, সারংকালে বক্তা। বক্তা—পশ্তিত শিণনাথ শালী।

২বা জৈটি বুধনার ;—প্রাজে উপাসনা, অপরাক্তে বিবিধ ধর্মপ্রাছ হইতে পাঠ ও ব্যাখ্যা, এবং সায়ংকালে সকীর্ত্তন ও পরে উপাসনা !

তথা লৈট বৃহস্পতিবার; স্নারংকালে সিটকলেজ গৃতে আন্দাণও আন্দামাজের সহাস্তৃতিকারীপণের এক সন্মিলনী ভটবে।

কার্য্যনির্ব্বাহক সভার ১ম ত্রৈমাসিক কার্য্যবিবর**ণ।**

গ্রহার ক্রেরারি অধাক্ষ সভার একটা বিশেষ অধিবেশনে বর্ত্তমান বর্ষের কার্যানিক্রান্তক সভা গঠিত হয়। বাবু
চেরছচন্ত্র মৈত্র, ডাঃ প্রসরকুমার রায়, বাবু রজনীনাণ রায়,
বাবু ছারকানাথ গলোপাগায়,বাবু মধুস্বলন সেন, বাবু কীরালাল
ছালদার, বাবু মপুরামোছন গলোপাগায়, বাবু নীলরতন
সরকার, বাবু চণ্ডীচরণ বল্লোপাগায়, বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র,
পণ্ডিত শিবনাণ শাস্ত্রী, ভ বাবু ক্ষেত্রমোছন মুর্থাপাধায়
মহাশারণ কার্যানিক্রাছক সভার সভা নিযুক্ত চইয়াছেন।
এভদ্তির ৫ জন কর্মারী সমেত ১৭ জন সভা লইছা এবংসরের
কার্যানিক্রাছক সভা গঠিত চইয়াছে। নুতন কার্যানিক্রাছক
সভা গঠিত চইবার পূর্কে, পূর্সা বংসবের সভাই সমাজের কার্যা
সকল সম্পায় করিয়াছেন। বাষিক সভার পর পূর্কাতন ক্ষিটির ৩টা বিশেষ এবং নুতন ক্রিটির ৮টা নিয়্নিভ এবং ২টা
বিশেষ অধিবেশন ছইয়াছে।

বৎসারের প্রাথমে কার্য্যনির্ব্বাহক সভা উনষ্টি মাঘোৎসাবের আরোজনে নাস্ত ছিলেন। একটা বিশেষ কমিটির হস্তে উৎসবের কার্যাপ্রশাশী নির্ব্বাহণের ভার অপিত হয়। স্ব কমিটির গাছত কার্য্যনির্বাহক সভা একথােলে উৎসবের কার্যাপ্রশালী নির্ব্বাহক সভা একথােলে উৎসবের কার্যাপ্রশালী নির্ব্বাহণপুর্বক উৎসবের সমস্ত কার্য্য সম্পন্ন করিবার ভার সেই কমিটির হস্তে অর্পন করেন। তাঁহারা উৎসবের বার নির্ব্বাহার্থ অর্থ সংব্বাহ এবং অক্তান্ত বিষয়ের স্বাবস্থা করিয়া উৎসব অসম্পন্ন করিয়াছেন। উৎসবের যে কার্য্যপালা নির্দ্ধিট হল্যাভিল, কোন কোন অনিবার্য্য কারণে ভাষার কিছু কিছু পারিবর্ত্তনপুর্বাক উৎসবের কার্য্য সম্পন্ন হল্যাভে।

छेरतरवत कार्याभागी भृत्स उत्तरकार्यीए धारामिछ इहेत्राष्ट्र मुख्ताः धानावश्च १ (शास अथन आत शाका केत्रा रशन मा।

মঙ্গণমর ঈশবের কুপার এবারও উৎসব ফুক্ররপে সম্পর হট্যা পিয়াছে। নিম্নলিখিত ছান হইছে ব্রাক্ষরস্থাণ আসিয়া উৎসবে যোগদান করিয়া আমাদিগকে উপকৃত করিয়াছেন।

বোষাট, লাখোর, গাজিপুর, মঞ্চেরপুর, বাকুড়া, ধ্লি-যান, নলহাটি, বোলপুর, নড়বেলুন, বর্ত্মান, হুগলি, উণ্-কেছিলা, কার্থন, কারি, বেলিনীবপুর, দশ্যরা, কালনা, আছ্ল, মহিপুর, শ্রীরাজপুর, আলীপাড়াকুক্ষনগর, দোগাছিলা, বাহিরগড়া, চক্ষনগর, হড়া, চক্ষবেড়, শিশপুর, ব্যিরহাট, वात्राम् छ, मिलनपूत्र, कामात्रभूत्र, नक्ष्या, वात्रभाष्ट्रकृत्तं, वार्णतः ।

काछ, नज्ञान, थारलांक, वमना, कृष्टिता, ध्नमा, क्षतिम्भूत्र ।

ताक्षवाजी, रणात्रानक्ष, मानिकत्तर, क्षणताथपूत्र, काणीकक्क, छाका, मत्रमनिर्द्ध, छाकाहेग, वित्रमान, भावता, थानिनपूत्र, ताक्षमाही, वश्का, कनभाहेश्विष्ठ, त्रःभूत रेमम्भूत, निमाक्षभूत, ध्विष्ठ, नश्जा, ममम्भूत, वारमधाभूत, रणात्रानभाष्ट्रा । ध्वरः कनिकाजात निक्ठवर्शी काम मक्ष्य।

কার্যা নির্মাণক সভার নৃতন বর্ধের কার্যা ভার প্রছণের সমর উপাসনালয়ে বিশেষ উপসনা ভ্রম্ছিল।

নুতন বর্ষে কি প্রাণালীতে কার্য্য চলিবে এবং কোন্কোন্
কার্য্য হল্তে লুওরা ষাইবে, কার্যানির্কাহক সভার করেকটা
অদিবেশনে ভাহারই বিশেষ আলোচনা হয়। নিম্নলিখিত
করেকটা স্বকমিটা গঠনপূর্ব্বক এ বংস্থের কার্য্য স্কল সম্পার
করিবার ভার দেওরা হইয়াছে।

সাধারণ কার্য্য সাধক (business) ক্মিটা পুস্তক প্রচার কমিটি, ব্রহ্ম বিদ্যালয় কমিটি, দাতব্য কমিটি, প্রেস কমিটি, মিসনফণ্ড কমিটি, লাইব্রেরি কমিটি, সামাজিক নিয়ম প্রণয়নকারী কমিটি। এতজ্ঞির পূর্ব্ব বংসরের গঠিত প্রচার কমিটি এবং সামাজিক কমিটিও তাঁছাদের কার্য্য সম্পন্ন করিবেন। ন্তন গঠিত কমিটি সকল কার্য্য করিবার জন্তু বেশী সময় প্রাপ্ত হন নাই বলিরা, এখনও অনেক কমিটীর কার্য্য বিশেষ ভাবে আরম্ভ হয় নাই।

গত দুই বৎসরের স্থার এ বৎসরও প্রেচারক মহাশ্রাদিগের কার্যা ক্ষেত্র নির্দিষ্ট করিয়া দেওয়া ছইয়াছে। তাঁহারা আপন আপন নির্দিষ্ট ক্ষেত্রে প্রচার করিবেন। এ বৎসর কার্যা নির্বাহক সভা প্রচারকগণের নিজের স্থ্রিধা এবং আবশ্রুকাল্যারে তাঁহারিগিকে বৎসরের মধে। ২ মাস কাল অবকাশ দানের ব্যবস্থা করিয়াছেন। তাঁহারা আপনাপন ইচ্ছাসুসারে এই ছই মাস যে কোন স্থানে অভিবাহিত করিছে পারিবেন। স্থির হইয়াছে পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী কলিকাতা। এবং ভারতবর্ষের ভিন্ন ভিন্ন অংশে; বাবু নগেক্রনাপ চট্টোপাধ্যার পশ্চিম বাঙ্গালাও উড়িয়্যায়; বাবু নবছীপ চক্র দাস বেহার ও ছোটনাগপুরে; পণ্ডিত রামকুমার বিদ্যায়ত্র পূর্ব্ব বাঙ্গালাও আসামে; বাবু শশিভ্ষণ বন্দ উত্তর বাঙ্গালায়; বাবু আঘোরনাথ মুখোপাধ্যায় বাগ্রুজিড়া, যশোহর, খুলনায়; এবং প্রচারকার্যো প্রবেশার্থী বাবু কালীপ্রসন্ন বন্ধ অধিকাংশ সময় ঢাকায় গাকিয়া কার্যা করিবেন।

নিম্লিখিত স্থান চইতে প্রচারক পাঠাইবার জন্ত নিমন্ত্রণ আম্লিয়াছিল—

চট্টপ্রাম মেদিনীপুর, বর্জমান, রামপুরহাট, শিলং, বরিশাল, মন্ত্রমনসিংহ, ভিন্থারিয়া, কোলগর, বরাহনগর, বাঁকুড়া, কুঞ্চন নগর, শিবপুর, হরিনাভি এবং জলপাইগুড়ি।

প্রচার—নিম্নলিথিতরূপে প্রচারক মহাশরেরা গভ তিন মাস কার্য্য করিয়াছেন।

বাবু অহোরনাথ মুখোপাধ্যায়—বাগআচড়া ব্রান্ধ সমার্থের বার্থিক উৎসবে উপাসনার আচার্ব্যের কার্যা ও আলোচনাদি করেন এবং নিম্নলিবিত অমুষ্ঠানে আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।

১৪ই ভিসেম্ব-শঙ্বপুরের বাবু প্রহলাদচক্র মলিকের মিতীয় সন্তান অর্থাৎ প্রথম পুরের নাম করণ।

২না জারুরারী—শঙ্কপুর নিবাসী প্রশোক্পত চাঁদ মরিক সহাপরের সাধ্বস্থিক প্রাত্ম উপলক্ষে উপাসনা।

্ট ঐ —কুলবেডিয়ার বাবু সীতানাধ সন্ধিক মহাশরের ৮ মাতা ঠাকুরাপীর সাধৎসন্ধিক প্রাদ্ধ
উপালকে উপাসনা।

- ১-ই জাত্মালী —বাঞ্চী নিবাসী খাবু ক্ষুত্ৰাল বিট্লিক মহালৱের ৮ মাতা ঠাকুরাণীর সাধ্বানিক প্রান্ধ উপলক্ষে উপাসনা।
- ১১ই ঐ —কুলবেড়ীরার শ্রীমতী বসন্ত জুমারী বৈন্ধার নাডা ঠাকুরাণীর সাম্বসরিক প্রান্ধ উপনক্ষে উপাসনা।
- ১২ই ঐ —বাগজাঁচড়ার বাবু কুড়ানচক্র মলিকের বিভীয়া কঞ্চার জন্মদিন উপলক্ষে উপাসনা।
- ৩রা কেকুয়ারি—বাগুড়ীর পরণোকগত ঋবিবর মলিক মহা-শরের সাধংসরিক প্রায় উপলক্ষে উপাসনা।
- ৫ই ঐ —কুশবেডীয়ায় বাবু আনেক্সচক্র ময়িকের
 শিতামদীয় সাখৎসয়িক প্রাদ্ধ উপলক্ষে
 উপাসনা।
- ১০ই ঐ —বাগআঁচিড়ার মাসিক উৎসব—পৃর্বাছে,
 সংকীর্ত্তন ও উপাসনা, মধ্যাছে কুড়ান চক্র
 মলিকের প্রথমা কল্পার জন্মদিন উপলক্ষে
 উপাসনা, অপরাছে ব্রাক্ষিকা সমাজ, সন্ধারি
 সমর ব্রাক্ষ সমাজের উপাসনা।
- ১৫ই ঐ —বাশ্বড়ীর ৮ মতিলাল মল্লিকের সাম্বৎসরিক প্রান্ধ উপলক্ষে উপাসনা।
- ১৯ই ঐ —শহরপুরের বাবু তারণ মল্লিক মহাশরের।
 ৮ পিতা ঠাকুরের সাহৎস্যিক প্রায় উপ্পক্তে
 উপাসনা।
- ২৬এ ঐ —বাগজাঁচভার বাবু রাধানাথ ম**লিক মতা-**শরের ৮ মাতা ঠাকুরাণীর সাম্বাদ্ধ শ্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাসনা।
 - শৃত্ব ক্রিয়াব বাবু শ্রামাচরণ মলিকের ৺ মাতা
 ঠাকুরাণীর সাম্বন্ধিক প্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাসনা।
- ১২ই ঐ বাগুড়ীর বাবু বিনয়ভূষণ এবং কুলবেড়ী যার বাবু স্থামাচরণ মলিকের পুতের জন্মনিন উপলক্ষে উপাসনা।
- ১৭ই ঐ —শঙ্করপুরের বাবু অবিনাশচন্ত্র মল্লিকের ৮ পিতানভের সাধংসরিক আছ উপলক্ষে উপাদনা।
- ২০-এ ঐ —াগআঁচড়ার নাবু নটবর মলিক ম**ভাশ্ছে**ৰ

 ৺ গিভা ঠাকুরের সাখংসরিক প্রা**দ্ধ উপলকে**উপাসনা।
- ২২এ ঐ নাগআঁচ্ডার বাবু গোবর্ধন মারকের

 ১ মাজা ঠাকুরাণীর সায়ৎসারক প্রাক্ষ উপলক্ষে
 উপাসনা।

এতত্তির তিনি নিম্নলিখিত রূপে নির্মিত কার্য্য সক্ষ সম্পর করিয়াজেন।

নাগলাঁচড়া, শহরপ্র, কুলবেড়ীরা ও বাগুড়ীর ব্রাক্ষ সমালে ও প্রাক্ষিকা সমালে নির্মিত উপাসনা, পুরুষ পাঠ ও ধর্মালাগ। ব্রাক্ষ ধর্মের মত কি ব্যাইবার জন্ত কিছুদিন হইতে সেই বিষয়ে আলোচনা। বলেক বালিকাগণও নেই সকল মত বাহাতে ব্বিতে পারে, সেট নিমিত্ত তাহাদিগকেও প্রাক্ষিত্ত। সমালে লইয়া যাওয়া। সমালের দিন বাতীত সন্তাহে বৈ অবশিষ্ট দিন থাকে সেই দেই দিন কোন প্রিমারে উপাসনা এবং প্রভাহ রাজিতে ব্রাক্ষ বালিকাদিরের প্রাক্ষিত্র কার্যো সহায়তা করা। 'এতবাঠীত প্রতাহ প্রায় সমস্ত দিন বিদ্যালয়ের শিক্ষকতা ও অস্তান্ত কর্যো। এবং ব্রান্ধিকা সমাজগুলিতে ব্রান্ধ ধর্মের মন্তসার, ধর্মশিক্ষা ও ব্রান্ধ ধর্মের অসুষ্ঠান প্রভৃতি প্রক বাহাতে পঠিত হর এবং উপাসনা সাধনে ,সকলে বাহাতে বত্ন করেন তাহার (চষ্টা। ব্রান্ধ সমাজের বাহিরে ধর্ম প্রচারের কোন চেষ্টা এখনও করিয়া উঠিতে পারেন নাই। ব্রান্ধ ব্রান্ধিকা ও বালক বালিকাদিগের মধ্যাই অধিকাংশ সময় কার্যা করিয়াছেন।

নগেল্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—২০০ পোর—প্রাত্তে ও সান্নাকে রামপুরহাট ব্রহ্মন্দিরে উপাসনা।

৫ই মাঘ—সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরে "প্রকৃত ধর্মজীবন" বিষয়ে প্রকাশ্স বজুতা।

৬ই মাঘ—সাধারণ ব্রাহ্মসমাব্দ মন্দিরে উপাসনা এবং ধ্যানে চিত্তের স্থিরতা বিষয়ে উপদেশ।

১০ই মাথ-সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ মন্দিরে উপাসন। ও আছ্ম-সমর্পণ বিষয়ে উপদেশ।

১৩ই মাখ—সাধারণ ব্রাক্ষসমান্দ মন্দিরে 'ধর্মের সাম্প্রক্ত' বিষয়ে প্রকাশ্র বক্ত ভা।

১৪ই মাব — সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ মন্দিরে উপাসনা এবং বৈরাগ্য ও ব্যাকুলতা বিষয়ে উপদেশ।

২৩এ মাখ— ত্রিবেণী গ্রামে গৃহপ্রতিষ্ঠা উপলক্ষে উপাসনা।
২৮এ মাঘ— দিরাজগঞ্জ ব্রহ্মনিদকে উৎসবের উদ্বোধন;
ধর্ম পিশাসা বিষয়ে উপদেশ।

২৯এ মাঘ—অপরাক্তে সমাজ প্রাঙ্গনে ধর্মের সারতত্ত বিষয়ে প্রকাশ্য বঞ্চুতা।

ংরা ফাস্কেন-সমাজমশিবে উপাসনার সময় কীর্ত্তন। উক্ত দিবস অপরাক্তে সমাজ প্রাঙ্গনে, জ্ঞান, ভক্তি, কম্ম বিষয়ে প্রকাশ বক্তা।

তবা ফাল্পন—'অহৈতবাদ' বিষয়ে আলোচনা। এবং কোন ভজ লোকের বাটাতে কীর্ত্তন।

६ठी काञ्चन--- धर्म विषय आरमाहना ।

€ छ ७ इं का बन-- थमा विषय जारना हना।

१३ कास्त्र--- बाक्षत्रभाक मन्तित खेलात्रना ७ खेलातना

४ रे ७ २ हे का सन-गर्नो छ खालाह्या।

> हे कासून-'आश्वात वाधीनका' विश्वत आलाहना।

১২ই ফাস্ক্রন—সম্পাদকের গৃহ প্রাঙ্গনে শিপ সম্প্রদায় বিষয়ে প্রকাশ্র বস্কৃতা।

১৯এ कास्त्रन—वर्क्षमान आक्रममारक উৎসবের উদ্বোধন।

२०७ काबन-- मण्यामत्कत्र खबरन छेशामना ७ छेशाम ।

২>এ ফাস্তুন—প্রাতে বর্ত্তমান ব্রাক্ষসমাজে উপাসনা ও উপদেশ।

80। देवळ—द्रामश्रद्भावे अक्रमन्दित छेरशत्वत्र छेरमाधन ।

६६ टेडब्र—डेक्ट श्रांत चनतारक् चार्त्नाहना ध्वर नद्यात्र नत्र देनानना ७ केन्ट्रस्थ ।

ंदे देवज—सन्बादक मन्नावटकत्र गृह श्रावटन 'कक्ति' विवयः संकात वक्तृका। ৭ই তৈত্র—রামপুবহাট প্রামে কোন ভদ্র লোকের বাটারত উপাসনা।

৮ই চৈত্র—প্রাতে নশহাটিতে কোন ভদ্র লোকের বাটাতে পারিবারিক উপাসনা। উক্ত দিবস সন্ধার প্র নলহাট ব্রহ্মেসমালে উপাসনা ও উপদেশ।

বাবু শশিভূষণ বস্ত্ৰ-বর্তমান বংসরের প্রারম্ভ চটতে (অর্থাৎ মাঘোৎসবের পূর্ব্ব ছইছে) মাঘোৎসব পর্যায় প্রায় প্রায় প্রায়ে প্রায়ে প্রায়ে প্রায়ে প্রায়ে করেন। মধ্যে মধ্যে সায়ংকালে কোন কোন পরিবারে উপাসনাদি করেন। উৎসবের সমর মন্দিরে একদিন উপাসনাম, আচার্য্যের কার্য্য করেন ও খিদিরপ্রে প্রকাশ্য বক্তৃতা করেন।

তৎপরে অবলণাইগুড়ি আক্ষ্যমাজের উৎসবে গ্রনপুরক তথাকার উপাসনা কাথ্য নির্বাহ করেন এবং ভত্রত্য সমাজ-গৃছে "বৃদ্ধদেবের জীবন হইতে শিক্ষা লাভ" সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করেন ও সাধারণ লোকদিগের জন্ত চুইটা প্রাকাশ্র বক্তৃতা করেন।

বাবু নবদীপচন্দ্র দাস—মাঘোৎসবের সময়ে তাঁচাব নির্দিষ্ট কার্যান্থল হটতে কলিকাভার আগমন পূর্ব্বক উৎসবে একদিন আচার্যোর কার্যা করেন এবং অক্সাক্ত উপারে উৎসব সম্পন্ন চটবার পক্ষে সহায়তা করেন। তৎপরে তাঁহার নিন্দিষ্ট কার্যা ক্ষেত্রে গমন কালে পথে বর্দ্ধমান ব্রাহ্ম সমাজেব উৎসবে গমন পূর্ব্বক আলোচনা ও উপাসনা করেন। এখন তিনি বেহারে অবস্থান করিতেছেন। ইহার তথাকার কার্য্য বিষরণ এখনও পাওরা যার নাই।

পণ্ডিত রামকুমার বিদ্যারত্ব—মাঘ মাসের প্রথমে পূর্ববাদালা আদ্ধ সমাজের মাবোৎসবে বক্তু ও উপাসনং করেন এবং অস্তান্ত প্রকারে উৎসবের কার্য্যের স্থায়ত। করেন। ইহার বিশেষ কার্য্য বিবরণ পাওয়া যার নাই।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী—বংসরের প্রথম কলিকাতার থাকিরা মাঘোৎসবের কার্য্যে বাাপৃত ছিলেন, তিনি
মাঘোৎসবের ঠা মাঘ সায়ংকালে, ৭ই মাঘ প্রাতঃকালে, এবং
১১ই মাঘ ছই বেলার উপাসনার আচার্য্যের কার্যা করেন।
"জীবনের অল্ল" এবং "যুগসংগ্রাম" বিষয়ে ছইটা বঞ্জা
করেন। তৎপর কলিকাতা অবস্থিতি কালে এখানকার উপাসক্ষপত্রপীর জাচার্য্যের কার্য্যা নির্মিত রূপে সম্পন্ন করিয়াছেন। কলিকাতার ১০নং ক্যামাক ব্রীটে একটা উপাসনা
সমাজ প্রতিষ্ঠিত ইইলাছে। তাহাতে তিনি নির্মিত রূপে
জাচার্য্যের কার্য্য করিভেছেন এই সমাজের কার্য্য ইংরাজিতে
সম্পন্ন ইতেছে। তত্তকামুনী ও ইণ্ডিরান, মেসেক্সার পাঞ্জার সম্পাদনের সাহায্য করিয়াছেন। এত্যাতীত মে'দনীপুর, বাকুড়া, কোল্লগন্ত প্রাক্ষ সমাজের উৎসবে গ্রনন
করিয়া বজ্বতা আলোচনা ও উপলেশ ঘারা আক্ষধ্য
প্রচারের সাহায্য করিয়াছেন। একদিন পিদিরপুরে যাইয়া

একংক ভত্ততোলের গৃহে উপজেন দেন ও আর্থনি ক্রয়ন। ইহায়ও বিশেষ কার্যা বিষয়ণ পাওয়া যায় নাই।

অভবিদ্ন বাব্ কালীপ্রালন্ধ বস্থান্ধ নিব্দির বাব্ কালীপ্রালন্ধ বস্থানি বিষয় কার্যা পরিত্যাগ পূক্ষক প্রচারার্থ সমস্ত সমস্ত বাপন করিতে প্রবৃদ্ধ হইন্নাছেন। উৎসবের পর চন্ট্রপ্রামে গমন করেন। তথায় বক্তৃতা, আলোচনা ও উপাসনাদি ছারা প্রাল্ধ ধর্ম প্রচারের সাহায়া করিয়াছেন এবং তথাকার কোন বন্ধুর স্থাহে একটা প্রান্ধা ফুটানে আচার্য্যের কার্যা সম্পন্ন করেন। তিনি সম্প্রতি ঢাকার অন্তর্গত তিল্লি প্রার্থা প্রভৃতি গ্রামে উপাসনা, আলোচনা কীর্ত্তনাদি ছারা প্রান্ধ ধর্ম প্রচারের সাহ্য্য করিতেছেন। তিনি কিছুকাল, যথন যেখানে যাইবেন টুএই ভাবে কার্য্য করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন।

শ্রীষ্ক্ত লছমনপ্রসাদ, বাব্ চণ্ডীকিলোর কুশারী, বাবু উমেশচক্ত দত্ত, বাবু কেদারনাথ রায়, বাবু মনোরঞ্জন গুড়, বাবু কালীমোছন দাস এবং বাবু নীলমণি চক্রবর্তী প্রভৃতি মহাশারগণ প্রচারের সাহাযা করিয়াছেন।

ব্যাক্ষকা সমাজের কার্যা সুশৃষ্থালার সহিত চালাইবার লক্ত একটা কমিটি গঠিত হইবাছে। এই সমাজ বাহাতে বাস্ত-বিক ব্রাক্ষিকাগণের ধর্ম সাধনের সহায় হর উাহারা ভাহার উপায় করিবেন। মাঘোৎসবেব সময় উদ্যান-সন্মিলনে ব্রাক্ষ-প্রিবার সম্বন্ধ আলোচনা হয়—উৎস্বাস্তে ক্য়েক দিন বিশেষ ভাবে পরিবারের মধ্যে ধর্মভাব বুজি এবং যাহাতে পরিবারে পরিবারে নিয়ানত রূপে পারিবারিক উপাসনা ইইতে পারে ভাহার কক্ত আলোচনা ইইয়াছে।

উপাসকমণ্ডলী—বর্তমান বর্ষের জন্ত পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী এবং বাবু উমেশচক্র দত্ত উপাসক মগুলীর আচায়্য মনেনীত হইস্লভেন। ইইাদের অমুপশ্চিতে আবশুক্ষতে বাবু আদিভাকুমার চট্টোপাধ্যায়, বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র बार् मौडानाथ मछ, बाब् च्यामिनाच हरहे। भाषाम, बाब् श्वक्ठत्र मध्यानिविय, वात् (ऋजामाहन मूर्यापाधााध जवः माधातम जाक्रमभारकत व्यनामा अहात्रकत्र আচার্যোর কার্ম করিবেন। এই তিন মাদের প্রথমভাগে মাহোৎ-সবের জার উপাদক মণ্ডলীর শ্বতম্ব নিয়মিত উপাদনা वर नाहे। अस ममरम्ब डेलामना नियमिङकाल बहेबा आमि-রাছে। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী, বাবু উমেশচন্ত্র দত্ত, বাবু . সীতানাপ দত্ত উপাসনাম আচার্যোর কার্যা ক্রিয়াছেন। এত-ष्ठित्र 'क्षां त्रिवात क्षान्य:कारम केशामनामारत विरमद्यादि উপাসনা व्वेताए । উপাসক মগুলীর সভাগণ মধ্যে মধ্যে রবিবার অপরাক্ত ৪॥ ঘটকার সময় ধর্মশাস্ত্র ও প্রবন্ধ পাঠ এবং व्यादिनाह्यापित बच्च मात्राम् इ इहेट उद्दर्ग।

ছাত্রসমাজ—বস্তমান বার্ধর ছাত্র সমাজের কার্যা, বিগভ ২রা ফেব্রুরারী ভারেশে আরম্ভ হয়।

এত সমধ মধ্যে নিম্নিবিভ বিষয়ে বক্তা হইয়াছে। ভারিথ বক্তা বিষয় ২য়া কেব্ৰুয়ানী পণ্ডিভ শিননাথ শালী শ্রার্ভ ক্রক

अरे (सक्तारी	ary proprie file	"बरचन दण्डेसम"
५५६ खे	ণভিড শিৎনাথ শাস্ত্ৰী	"देःताची निका व नर्तमाम नमास नक्ष्या
৯ই মার্চ	বাবু বিপিনচ <u>ক্র</u> পাল	"ভারতবরীর বৃহৎ সমগ্রা কে ইগার মীমাংসা ক্রিবে ং"
५७ई खे	বাবু বিজ্লাস দত্ত	"আমাদের আশাও ভর"
२७० खे	\(\)	"ভারতবর্ষ এবং ইংল- প্রের ধর্ম।"

গত ২৩এ কেক্রারী ছাত্র সমাজের সভাবিগের একটা সন্মিলন হইয়াছিল। ভাগতে উপাসনা, আগাণ ও অল্যোগ হইয়াছিল। ছাত্র সমাজের বর্ত্তান সভা সংখ্যা ২১৮।

স্কৃত স্ভ|--গত উৎসবের পরে ২৭ এ মাঘ সক্ষতেব কার্যা পুনরারক হইরাছে। প্রতি মঙ্গলবার সন্ধ্যার পর এক-মালবে ইহার অধিবেশন হতরা গাকে। এহ ও মাসের মধ্যে কার্যাের কোন বিশৃত্বলা ঘটে নাই।

পটী অধিবেশনেব, তুহটীতে কয়েকছন সুৰকের সন্দেহ ভঞ্জনোপযোগীনানা প্রস্কুক্রিতে হইয়াছিল।

অপর ২টাতে "ব্রাহ্ম পরিবার মধ্যে নির্মাত উপাসন! প্রবর্তন" সম্বন্ধে বিশেষরূপ আলোচনা হইয়াছে। কিঞিৎ সুকলও শক্ষিত হইয়াছে। ইহার উপযোগীতা সম্বন্ধে আনেকের সল্লেহছিল। তাহা এক প্রকার দূর হইরা, কোন কোন পরিবারে কায়োর সূত্রপাত হহয়াছে।

অবশিষ্ট ৩টা অধিবেশনে "মহকার ধর্ম পথের প্রমুশক্ত" এবং "জীবনের লক্ষ্য" বিষয়ে বিশদক্ষণে আকোচন। হইয়াছে।

প্রচার কমিটি—আমরা আফ্লাদের সাহত জানাইতেছি
যে বাবু নীলমণি চক্রবর্তী, বাবু চক্রনাথ চটোপাধ্যার এবং বাবু
চণ্ডীকিশোর কুশারী সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচারকপদে নিযুক্ত
হইবার জক্ত আবেদন করিরাছেন। উহোদের আবেদন
এখনও প্রচার কমিটির বিবেচনাধীন আছে। এবংসর প্রচার
কমিটি কলিকাতা ও তাহার নিক্টবর্তী ভানে প্রচার আহার
বাবস্থা করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন। ইহার মধ্যে থিলিরপ্রে
একদিন সংকীর্ত্তন ও উপদেশ হইয়াছিল। হরিনাতি, শিবপুর
কোরগর, বরাহনগর এবং কলিকাতার কোন কোন উপাসনাসমাজের উপাসনায়, আচার্যা প্রেরণের বন্দোবন্ত করা ছইরাছে।

পুত্ক প্রচার—এই তিন মাসের মধ্যে "ব্রহ্ম সদীত" এম
সংকরণ প্রকাশিত হইয়াছে। "সাধু দৃষ্টাত্ম" পুন্সু ক্লিভ হইয়াছে।
বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধাায় মহালয় প্রবীত "ধর্ম-জিজাস।"
সমাধের বাবে পুন্সু জিত হইতেছে। পঞ্জিত বিশ্বনাথ শারী

महानव तारीक "वक्तृकांकवंक" अंगर नेशृन्तं केती" समास हरेटक वृद्धिक क्या ब्रहेपाटक ।

শ্রেমাবিদ্যালয়— বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীক্ষার কিছু বিন পূর্ম হইছেই উচ্চতর শ্রেণী (Senior Class) বন্ধ আছে, তুন মাসের পূর্মেই ইবার কার্যা পুনরারন্ধ হটবে না। মধ্যম শ্রেণী (Junior Class)র কার্য্য পূর্মেবৎ চলিতেছে। নিয়তর শ্রেণী (Primary Class)র বে সকল ছাত্র ও ছাত্রী পূর্মে বংলর নিয়নিতরণে অধ্যয়ন করিয়াছিলেন, ভাঁচাদিগকে লটবা একটা নুতন শ্রেণী গঠিত হইরাছে; এই শ্রেণীতে সম্প্রতি কাতপর বরুছা মহিলা যোগ দিয়াছেন। সম্প্রতি মধ্যম শ্রেণীর ছাত্র সংখ্যা ২৬ নিয়তর শ্রেণীর প্রথম বিভাগে ১৬ এবং বিতীয় বিভাগে ১০ জন।

ব্রাহ্মবন্ধু সভা-এই সভার একটা মাত্র অধিবেশন হই-রাছে ভাছাতে পণ্ডিত রামকুমার বিদারিত্র "হিন্দুএকেশ্রবাদ ও ব্রাহ্মশন্ম" বিষয়ে বস্ত্তা করেন এবং সেই বিষয়ে আরও অনেকে আপন অপেন অভিযত বাক্ত করেন।

রবিবাসরিক নৈতিক বিদ্যালয়—নীতিবিদ্যালয়ের
এ বংসরের কার্যা ফাল্কন মাস ১০তে আরক্ষ হট্যাছে। ইহার
বর্তমান ছাত্রছাত্রী সংখ্যা চলিশের কিছু অধিক। বালক
বালিকাদিগকে বয়সামুসারে চারি শ্রেণীতে বিভক্ত করা
হত্যাছে; প্রথম শ্রেণীতে ৭ জন বালক আর বালকবালিকা
সন্মেত ২য় শ্রেণীতে ১০ জন, ৩র শ্রেণীতে ১০ জন এবং ৪র্থ
শ্রেণীতে ১৪ জন। ইহাদের মধ্যে তিন চারিটি হিন্দু বালকও
সাছে।

এ পর্যান্ত এই বিদ্যালন্ত্রের অধ্যাপন ও তৈর্বেধান কার্যা
মহিলাদিগের দার্যেই নির্কাঠিত হইত। এ বংসর বিদ্যালয়ের
ওবাবধানের জন্ম একটা নুতন কমিটি গঠিত হইরাছে;
ভালতে মহিলাগণের সাহায্যার্থ ক্ষেক জন পুরুষ সভা
মনোনীত হইরাছেন, শিক্ষা কাথ্যেও ছহজন পুরুষ সভা
সাহায্য ক্রিবেন ব্যায়া স্থিয়ীকৃত হইরাছে।

ক্ষিটির নির্মানুসারে গত ৮ই টেক্র বুধবার নীতিবিদ্যালরের ছাত্রনিগের আমোদ্বিধানার্থ কাষ্টির জানৈক সভোব
বাটীতে ছারাবালী প্রধাশিত হুইরাছিল। তত্পলাকে কলিকাতাছ সমুদর অরবয়য় বালকবালিকাাদগের নিমন্ত্রণ
হয়। প্রায় ৪০টা বালকবালকা প্রদেশন ছানে উপাত্তত
ছিল, তাহাদের অনেকের পিতামাত। এবং অভিভাবকগণ
অন্তর্ত ক্রিরা তথার উপাত্ত থাকিয়া কমিটার উৎসাহ
বন্ধন ক্রিরাছিলেন। বালকবালিকাাদগকে সঙ্গীত শিক্ষা
দেওয়া ইইতেছে।

পুস্তকালার কমিটী—ইংগর কার্যা সুস্থালার সহিত চালাইথার অন্ত একটা কামটি গঠিও হইরাছে। কামটির কোন কার্যা বিবরণ পাওরা বায় নাই।

তত্ত্বকে। মূলী এবং ইণ্ডিয়ান মেনেঞ্জার - বাব্
ভালিভাকুমার চটোপাগার মহাশয় সমরাভাবে ভবকোমুণীর
ব্যতন ছিলাবে ০০০০ দেনা ছাছে
শব্দাধকের পর পরিভাবে করাতে পণ্ডিভ শিবনাথ শাস্ত্রী

বহাশরের প্রতি ভর্কীবৃধী সম্পাদনের ভার অপিত হইরাছে।
ইভিয়ান মেনেলারের পূর্ব সম্পাদক বাবু হেরছচক্ত নৈত্র
মহাশরই এ বংসরের জন্ত সম্পাদক পদে পুমর্নিস্কু হইরাছেন।
মেনেলারের আর্থিক অবস্থার উর্গতর জন্ত একটা বিশেষ
কমিটি গঠিত হইরাছে। এখনও তাঁহাদের কার্য্য বিব্ররণ

দাতব্য বিভাগ— এ বংসরের জন্ত বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ সম্পাদক এবং বাবু মধুরামোহন প্রশোধারে ইহার
সহকারী সম্পাদক নিযুক্ত হইয়াছেন। এখনও এই ক্ষিটির
কার্যা বিশেষ ভাবে আবন হয় নাই।

নৃতন সমাজ— ঢকোর অন্তর্গত তিরি নামক গ্রামে একটী প্রার্থনা সভা এবং প্রীযুক্ত বেকারসাহেবেরষ্ট্রেকলিকাতার ২০নং ক্যামাক স্থানৈ একটা উপাসনা সমাজ স্থাপিত হইরাছে। এখানে ২ তিপর ইংরেজ পুরুষ ও রমণী নির্মানতরূপে উপাসনার জন্ম উপস্থিত হইতেছেন.। এই সমাজের উপাসনাদি ইংরেজিডে সম্পর হইতেছে।

ব্ৰাক্ষামিশন প্রেস—বাবু হীরাশাল হালদার প্রেস কমিটির সম্পাদক নিস্কু হইরাছেন। এই তিন মাণে ৭৬২॥ ४० র কাজ হইরাছে। ৭১৬৮ ১৫ আদায় হইরাছে। ১৫০ টাকা স্পুণ শোধ হইরাছে এবং ১৫০ টাকা হাওলাত শোধ হইরাছে। বর্তমানে ২২৭০ টাকা পার্যানা আছে এবং ২৯০০ টাকা ঋণ আছে।

দান প্রাপ্তি – বাব্ উমাপদ রীয় তাঁহার পিতার আদা প্রাজ্ঞানক তাঁহার প্রণীত ব্রহ্মতর্যা (ভগিনী ডোরা) ১ম সংস্করণের ৩০০ থণ্ড এবং গ্রন্থক সাধারণ ব্রহ্মসমাজকে দান করিয়াছেন। তজ্জখ আমরা তাঁগাকে কুডজ্জতার সহিত ধন্ত-বাদ প্রদান করিতেছি।

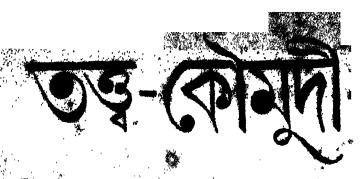
আয় ব্যয়ের হিসাব।

সাধারণ তাক্ষ্যমাজ।

আয় ——		-বায়	ســـــــ . و حســــــ		
माधातन डान	न्गारकत 🛎	প্রচার বায়	er5/5.		
र्हे । मा	≥ 6 > };•	কণ্মচারীর বেহন	> € ⊙# •		
वाविक	>> €	ডাক মাণ্ডণ	>5,56		
মাাসক	e - 1	কামশন	!•		
এককালীন	8 u •	भुजादन हिः	>•<		
সুভকত উপল	েক	প্রচারক গৃহ হি:	abab.		
প্রাপ্ত	>•/	भारचग्र हिः	984, •		
		পরিদ্র ব্রাহ্ম ছাত্রদিগের			
	507110	সুলের বেভন	99110		
প্রচার ফণ্ড	8841	বিবিধ হি:	oon/se		
বাষিক	>60/	Name of the last o			
ম। দিক	₹ 9 • 1 •		3:2>H)€		

মার্ক নাস পর্যাপ্ত প্রভারকসনের বৃত্তির দরণ ১৩৪ এবং কর্মচারীর ।
 বেতন ছিলাবে ০০০০ দেনা আছে। হাওলাত গলিহত হিলাবেও প্রাব
 ৭০০) সার শত টাকা দেনা আছে।

₹8		,			7.1		
এক কালীন তং প্রাপ্ত চাউলের	`	গড়িত শোধ গাওঁলাড শোধ		মফিস হইছে) বিভাপন হিচ	ે અહીં • ૨૫•	কৰ্মচাষ্ট্ৰীয় বেডন (ডিসেশ্বৰ জাম্বাসী ক্ষেত্ৰবাহি)	40.
म् <i>न</i> ग	\	· · · · · · · · · · · ·		4	***	निविध हिः	500
		*	>20104	গকিত চি:	> \ `		
881		ন্তিতে			N.	6	2 92 rd = .
প্রচারক গৃহহর ভাড় পাপের হিঃ	991e/e	মোট ব	posend.		⊴ঽ≱ัทว•	শিক	300010
পাপের য়ং- সিটা কলেক হইতে			þ '	গত ্ _{টি} ত্রমাসিকের স্থিত) 50e54/5•	মোট	3455Hd+ 1
দরিজ ত্রাদা ছাত্র-	F.			142		•	
দিগের স্থলের বেত	न			মোট	>64:10/·		
मार्गत्र जन थार	9.9#•		(\$c)		উণ্ডি দ্বান	মেসেঞ্চার।	
কর্মচারীর বেতন				मृना वाशि	৩৬৪১	কাগক	• 911•
ভৰকৌষ্ণী বুক ফণ্ড হইতে প্ৰাপ্ত	84			মূল্য আনও বিজ্ঞাপন হিঃ	۵۱/۵۰	ডাকমাশুল	52 old C 1
विविध हिः	805.		1	নগদ বিক্ৰব	15.	কর্মচারীয় বেডন	(b •
1717Y ISP			1			मुखाइन	ery
	৯ ₹8₺//÷•				99010	বিবিধ চিঃ	38100
গচিছত হিঃ	૨•• \			পূর্ব হিড	>4 Ong/ > €		055/50
হাওলাভ হিঃ	2201720		1	.	e891/5¢	চাওলাভ শোধ	261
				শেট	6011/JC		७२५/১•
art for a	>>940 .					শ্বিভ	\$165
পৃৰ্বন্থিত						মোট	e891/3e
মোট	socend.						
`	পুস্তক বিভ	कृत्र न्व ७ ।		ইণ্ডিয়ান মে	সঞ্চারের প্রার	२७००, हाका सन	चारक।
•	•			় মা	গ্রাৎসবের অ	त्र नारम्य विवयण।	
शृक्षकंत्र वाकी मृत	II v	অপরের পুস্তক বিক্রমের মূল্য		भिक्तित्व मान मः	ाड् ७२ ८/५€	मन्त्रित नाजान,	
আদার	2/11 668	्मा ध	:8010	छिन्। स-मिन्दिन		নিশান প্রস্তুত	
নগদ বিক্রন্থ সমাজের ৩৩৮ ঠ		কমিশন	8d>•	জন্ত দান সংগ্ৰহ	• < N8 G	ও চিক পরিদ	> ₹ ৸/ > •
व्यथरत्रत्र ১७১/		পুন্তকের ডাক-		होता সংগ্রহ	soun/se	অভ্যাগতগণেরথ বার হার ভাড়া	
		মাপুল	5•¶• .	'বাশ বিজ্ঞায়	1/5•	নার বর ভাড়া - আহারগৃহ-প্রা স্থ	
648		ডাক মাওল	n) C		427470	•	
ক মিশন	৩৫॥৫ ভুল ১৮১১ •	কর্মচারীর বেতন (ডিসেম্বর, জা মু-				বিচানা ভাড়া এ	44:
পুস্তকের ডাক মা	85/ 85/	য়ারী, ফেব্রুয়ারী)	२५			विविध वाग्र	00>/
चून ६:	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	मृज्यादन	₹ ११। •			. चारनांत्र वाय	₹:11•
•	•9 9<>>•	· ·	÷08∦•			মুদ্রামণ ও ডাক	
গজিত হিঃ	ર શાંહે •	পুস্তক বাধাই	(• \			মান্ত্র সংকীর্ত্তনের খুণি) 1945 · N
		- কাগ ল থরিদ গোলিং লিং	•116			श्राम्याचारमञ्जू) >b\
	.collec=	বিবিধ হিঃ	82/20			উদ্যান-সন্মিল	
भूकं देखगानिय	কর ২•৯•∥ ৫	•	9 210			• ব্যয়	>==
হিত	< - W - II E	- গচ্ছিত শোধ				वानक वानिय	
মোট-	292005			•		দিগের উৎসং	व ् ⊶.1∙
÷ 111			9260/30			(मखन) यात्र	4.
		স্থিত	2226/6	-			esal
	•		৯१२ ७०५	¢		হিচ	; ₹/€
•	দ্বা	কে মুদী।					6254
_	į.	ut.	€810/€	A		i	
म्मा आखि	११७४ ७।४	.0.4	1810	fhw.			1 }
নগদ বিজেম সুদ্ধিঃ	V.6.	काशंक पंत्रिम	£61•		٠,٠	-	52F T 45
ক্ষণ । ৭০ কেন্ত জমা । ১খনং ক		₩श्रिमन "	310		4	সম্পাদক সাধারণ	ব্ৰাহ্ম সমাৰ



ৰৰ্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্ৰিকা।

১২শ ভার। কয় সংখ্যা।

) मा दिवार्छ मक्सवात, ১৮১১ **गक, खाँका मन्द**९७०।

বাৎসারিক অব্রিয় মূল্য ইয়াও মকস্বলে প্রতি বঙ্গের মূল্য

अवात गूरवृष्टि करन करवृद्धि करवृद्धि ।

নংসার জগধি জলে তৃবিধা রয়েছি,
আচও ভরজাঘাত জনেক সরেছি;
ভ অক্লেডে তৃণ নাই, অতলে তলায়ে বাই,
দাঁড়াইছ ভাবি বেখা, আগ্রয় লয়েছি
লোডে পড়ে পুন ভাবে বঞ্জিত হয়েছি।

কাবু ভূবু পেরে শেবে তোমারে ধরেছি,

তোমারি শক্তি সার আসারে করেছি;

বুচেছে সক্ষ আস, প্রাশেতে বৈড়েছে আস,

সংশর তিমির দুরে হরেছি হরেছি,

এবার বুরেছি ভবে তরেছি তরেছি।

मन्भानकीय मस्त्रता ।

কৈথোপকথন। প্রথম বছু,—বল দেখি মুসলমান দর্শের মডের সার কি ?

विकीत वर्ष-पूननगान शर्यंत मरखत नात वह :--

- ७ अन्यांक निताकांत नत्ररमचत्र मानरवद्ग छेनांछ ।
- ২। সহস্ম ইশ্বন-প্লেরিত বিধাস-প্রবর্তক।
- ৩। মৃহস্পাদর প্রভাবিত বিদান-শাল্প অর্থাৎ কোরাণ জন্মভাত।

व्यथम बङ्ग-देशारक खान्नवर्ष यन किमा १ वनि मा यनः किम्बन्धाः १

विक्रियु-छुटे कांग्राम वनि मा ।

- (৯ম) ক্ষিতের মৃক্তি-বিধান একজন বিচশম বাজিতে আবন্ধ, প্রাক্তিয়া উন্নয় সংখীব ও অন্তলার মন্ত পোনণ উল্লেখ্য
- (২ছা আন্দৰ্শন কোন শাস্ত্ৰকে অত্তৰ আন কেন্দ্ৰেন না। অবস বস্থা—এবস আন কংগ্ৰুটী সূপ সংজ্ঞান কাভি সৃষ্টি-গাত কয়
 - कें कि महत्र शिक्षकार केयह मानदरक केनाक । न्यू है

- २। ८०मवहस्य दान केपत-दश्रास्त्री विद्यान-शवर्षकः।
- ৩। কেশৰচন্দ্ৰ সেনের প্রকাশিত বিধান-শাস্ত্র শর্থাৎ দৰসংহিতা প্রভৃতি শ্বাস্ত।

প্রথমোক তিনটা মূল সভোর সহিত এই তিন্টার তুলনা করিয়া বল এই উভয়ে প্রতেষ কি !

विजीत वक्-वास्त्रम धरे मांज त्व मश्वर्रमं वृत्तित्रहर्क् दक्ष्मवहत्त्व राग्तत्व नाम त्व छत्रा हरेसारक ।

প্রথম বন্ধু-এখন বিবেচনা কর খেবোক মত ্রান্ধি হাং-রঙ হর তিনি আদ্ধ কিনা ?

ষিড়ীয় বন্ধু—তিনি ত্রিক আন্ধানহেন; মুগণমানহেন শেমন মহম্মীর ধর্মাবল্যী বলা বায়, বিতীয় ব্যক্তিকে সেইর্প কৈশব ধর্মাবল্যী বলা বাইতে পারে।

আমাদের দরবার মতাবলছী নববিধানত বৃষ্টুপ্র ইদানীং বে স্কল মত প্রচার করিতেছেন—ভাষার স্কুর্যে তিন্দী মত দেবিরা আমাদের প্রাণে প্রবল আশ্বাক্ষজিতেইছ বে মব-বিধান জ্বার পৃথিবীর অভাভ কুজ উপধর্ষের ভার প্রকৃতিঃ উপধর্ষে পরিণ্ড চটবে।

প্রথম, এই একটা মত পরিক্ট হইরা উঠিতেতে বে পর-বিলাকগত কেশবচন্ত সেন মহাশর চিরকাল বিধানের সর্বাধিক বিশু রূপে বিদামান থাকিবেন। বিতীয়, একটা মত এই দেখিতেতি, বে বিধান সম্বদ্ধে মৃত আচার্য্য বাহা কিছু প্রকাশ করিয়াছেন, তালা অবিচারিত ভাবে অবজ্ঞ প্রতিপাণা। ভৃতীয়, দলগত বিবেল্লের নিকট অর্থাৎ দর্ভবারে প্রাপ্ত আবেদশের নিকট ব্যক্তিগত বিবেক্তে নত করিতে হইবে। —আনরা বন্ধুগণের মতের সার নির্যাস করিয়া বাহা লিখিকাম, অবিষ্ঠা বন্ধুগণ প্রবাধিক করা বাইতে পারে। এই মতগুলি নববিধান করার বাহার করা বাইতে পারে। এই মতগুলি নববিধান করার বাহার করার আহু কিনা লানি লা। কিছু আমার দিবা চক্তে দেখিতেতি— এই ভিন্নী সভ বৃদ্ধি প্রথম ও সাধারণো গৃগীত করাই হবন ভাষার অপার্যাই বৃদ্ধি, কর্ণো করাই বৃদ্ধি, কর্ণো আর্যাই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধি, কর্ণো আর্যাই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধির ক্রেয়াই বৃদ্ধি, কর্ণাই বৃদ্ধির ক্রিয়াই ক্রেয়াই বৃদ্ধির বিশ্বর বিশ্বর ব্যাহাই বৃদ্ধির বিশ্বর বি

অইনা: প্রিক্রের র ক্রের ক্রেরিটের ক্রিক্র ও জ্বার্থিক ব্রেরিটের ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রির্বিটির ক্রির্বিটির ক্রির্বিটির ক্রির্বিটির ক্রির্বিটির ক্রের্বিটির ক্রের্বিটির

শ্বনিরা এইটা মত প্রক্রিল হইলে মানব বিবেকের মৃক্তি-দাতা বিলয় এইটো মত প্রক্রিল হইলে মানব বিবেকের মৃক্তি-দাতা বিবেকের শক্ত শালার শালার মক্ত করি প্রক্রিল করে করে এবং দলগত বিবেকের নিক্ট বাজিগত বিবেক যদি বলিদান দিতে উপদেশ দেওয়া হয়, কর এই ইইবে, বিবেক নিজেজ ও নিজিত হইবে। যে সমাজে বিবেক নিজেজ ও নিজিত তাহা পচা পুকুরের স্থার, দেখানে দাম,ও আর্জ্জনা খ্রার জন্মিবে। আনাদের মত এই ছে বাজিগত বিবেকের অপেক্ষা প্রেট শাল্ত আর নাই। বছুরা ছির্কিডেড চিন্তা করিয়া দেখন আক্ষণজের প্রধান গৌরব খলিয়া,খাহা টারাক্ষ্যুপ্রক সমরে খোষণা করিয়াছেন, ভাহা তাহারহি নেগণ প্রাপ্ত করিডেছেন।

সামুভ্জি ও বিবেক-পরায়ণতা—এই উভ্রের
একটা বর্ম অপর্টীকে বিনাশ করে তথন মানুবের অধােগতি
উপস্থিত ছব। সাঞ্জিক বথন এত প্রবল হয় যে বিবেকপরাছণ্ডা নির্মাণ প্রাপ্ত হইয়া যায়, তথন মানব-মন নানা প্রকার
ভ্রম, কুসংস্কার ও আধ্যাত্মিক অভ্তার মধাে নিপতিত
জয়, আরায় বিবেক-পরায়ণ্ডা যথন উদ্ধৃত অমভপ্রিয়তার
আনহার বারণ করে, এবং সেই ঔদ্ধতাের প্রভাবে সাধুভজি
নিন্ত ভইয়া যায়, তথন আর সে প্রকৃতিতে ভক্তি স্বান্তি
নারই ভইয়া যায়, তথন আর সে প্রকৃতিতে ভক্তি স্বান্তি
নারই ভইয়া যায়, তথন আর সে প্রকৃতিতে ভক্তি স্বান্তি
নারই ভইয়া যায়, তথন আর সে প্রকৃতিতে ভক্তি স্বান্তি
নারীর প্রতি স্বাণা্য স্বভাবিত অর্থানী নহে। যে প্রকৃত
ভিত্তে অকল লেন্ত্রের ও সকল কালের সাধু সাধ্বী নয়ন
নারীর প্রতি প্রগাঢ় প্রভাবিত ভাব, অথচ নিজ্যের
নিব্রেক স্বান্ত্রার চলিবার ভক্ত আথাহ, ভাহাতে উভ্র

द्रगान्यां मह जार जार ;--

नापूछाणः प्रयोद्यम् श्रातारिकरेगकशकाणाः। श्रानवात रिकारिक त्याव, नरमास ४ श्रमत मधीराज्ञीक श्रामन बाह्निक केन्द्रनम् १६६ विकारक विकारक मधीराज्ञी स्वातिक स्वारक इकेरवा। विति किर्द्रम् स्वारकालका स्वातिक स्वारका

खिनि देव अपन प्रदेशिक्ष आर्थनोत्री अधीय के विश्वनी जाता। नरह ; श्रिष्ठ निरंधन निरंबरकत मुक्कि बाई किन्द्रात, जान्यकाले ७ कम्बाना कोशावत गरक ताशीन नम्

The same of the same

বাক্য ও কাৰ্য। কাতীয় স্বাধীনতা সহকে আংশ্রেচনা
ক্ষিণার অন্ন ইংগতের কোনও স্থানে এক সম্বী
সঙ্গা আছত হইয়াছিল। তথায় একজন ইংরাক ইংলকেই
সাধীনতা নিয়রে বক্তা ক্ষিতেছিলেন। "আমরা স্থানীন
কাতি; কোনও বিষয়ে কাহারও অধীন নই—এই ভাবে
বলিতে বলিতে উৎসাহিত হইয়া তিনি সগর্মে উলৈঃখরে বলিয়া
উলিনেন,—"স্থানি এখন স্থানীনভাষ ভ্রিষ্ক উপন্ন স্থায়মান
বহিয়াছি।" এই কণা ভ্রিয়া নিমেন্ত মণ্যে গৃহের অপন্ন প্রাপ্তি
হইতে এক চর্ম্বার গাত্তোখান করিয়া বলিল—"না ভাষা মন্ত্র
ভূমি এখন একলোড়া পাছকার উপরে ক্ষিছাইনা বহিয়াছ,
ব্যাহার মুগ্য ভূমি আমানে দেও লাই।"

त्र वृत्वाख एरेट आना त्राण त्य करे वक्षा मार्गा भी क्षा अप रहेट मुक रहेट ना भाजियाँ अ जाभगार की दी में विद्या जरहात कि दिवास मगर कह के कि कि क्षारे वत्ता; कि क्षार भागार हिसा त्र विद्या मगर कह के कि कि क्षारे वत्ता; कि क्षार भागार हिसा त्र विता त्र विद्या मगर कह के कि कि क्षार भागार है। त्र के भागार हिसा त्र विता त्र विद्या नार्ग कि हो ते कि का विद्या मार्ग कह ने कि का का विद्या का विद्या कि श्री कि मुख्य के विद्या त्र कि भागार का विद्या भागार कि है कि का विद्या का विद्य का विद्या का विद्या

উপাসনায় একাগ্ৰতা—একদা হইলন ইউরোপীর; যুবক এক পাছনিবাদে আসিয়া উপস্থিত চইল। গুইজিলেরই । हैक्का (य रुगहे लारम बीन' कतिहा मिक्छेवर्की कामक विमान লবে বিদ্যা শিক্ষা করিবে ৷ এই জন্ত পরস্পার অসরিভিত ছইলে ও ভির করিণ বে একটা যর ভাড়া রুইয়া ভাষাতে किंदा वात कृतिरव । जियातत कथिकारन नमग्र शृह् तीला করিতেই অভিবাহিত হইল। এক ব্ৰক্ষের প্রভাব উপাস্কাং করার অভ্যাস ছিল। সমস্ত বিস বিলা উপাসনার গভ দইশ Cमिन्द्र। जन्मात मगय कानात थात वक्टे महिस घटना । क्लाहित উপার-না দেখিয়া পরিশেষে অগ্যানন্ত নিকট প্রান্তাব ক্রিন্তি "अशा रहेटल वर्ग सामता अकटेंब वॉग कतिव ज्ञिक सिकार्यक, भारत जत्र गत्रस्थितत नाम कतिहा करे कार्या भ অপর বৃহক কখনট উপাসনা করিত না এবং আকর্ত্তী করেবের क्षेत्रि ७ क्रापृत् विश्वत् हिन्दुमा । क्षेत्रकः त्म क्षिण, स्तृ अन्यः ce vei mari oculo que feinantem ent. **ক্ষি**রৎক্ষণ চিক্কা করিল এবং-ক্ষণণে ক্ষেত্র মধ্যক্তর ক্ষান্ত্র लाल बहेबा कर दबनी शामिन क्षार विनिन,--- कर पूरवन कर wer minte to more men mintell mintell

कार करने अने कार्य विशेष विशेष कार्य कर्मना कर्मन स्थाप कर्मना कर्मन स्थाप कर्मन क्रिक्ट कर्मन क्रिक्ट क्रिक्ट

উপাসনার প্রতি এই প্রকার নির্ভার ভাব করে আমারের জীবনে অভিবেং শন্ত সহল বাধা সভেও করে আমর। জীবনে অভিবেং এইলপ স্চুলাবে আপ্রের করিয়া থাকিতে পাছিবং বিদি কোন অন্ত্রিধা বা প্রতিকৃণ করতা বটে, ভবে মনে করিব বে অদা আহার এবং অভান্ত শারীরিক আরক্তনীয় কার্যা করিতে ত নিরত হই নাই, ভবে প্রভুর আম না কইয়া কিন্তুপে নিশ্চিত পাকিতে পারিণ খালাজবা প্রহণ না করিলে বেখন সহীর কলা হয় না দেখিতেছি, উপা-জায়া না করিলে আত্মা ও বে কলা হয় না ভাষা কবে আমরা গ্রেই ভাবে ব্রিতে পারিবণ্

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ভজের ভার ঈশ্বর বহন,করেন। *

অনভাশিচ ভরতো মাং বে ফ্নাঃ প্র্পোসতে। তেবাং নিত্যাভিত্তানাং যোগকেমং বহাম্যহং॥

खशवागीला प्रय खशात २२ (साक्।

অর্থ,—হাহারা অনন্তগতি হইরা আমাকে চিস্তা করে এবং নেট ভাবে আমার উপাদনা করে, সভক্ত আমার শরণাগত त्महे काल्किविट्यंत त्यांग त्क्रम चामि वहम केति, व्यर्थाए जक्य विनय चालि कको कवि ७ नकन खात चालि वहन कवि।" वनच-कारम युक्तकामित र्माका स्मित्रा व्यत्मकरोत এই हिन्छ। कति-য়াভি বে জন্মণ্ডাই কি প্রমেশবের এভ প্রিয়! তাহা-দিগকে সাজাইতে তিনি এত ভাল বালেন ! শীতের পারত্তে রুক্ষণ্ডলির পাতা অবিদ্যা গিয়া কিরণ জীর্ণ খির্ণ ও কদাকার ्रमगाक्ष्यक्रमा दर्भाम देखांगजीत्य द्विता द्वाव हरेशांकिन ৰে লে গুলি অকেবালে মলিয়া পিন্তে, আর ভাষতে পাতা ब्रुकारेटव हा, भाव छात्राटक 🕮 कितिया भागित्व ना, भाव खाशास्त्र माबादक नाबी विभिन्द मा, चात्र क्राब मिवक्शन छाहारक माध्यम् कतिएव ना । किन्द्रांक दय वगरखन मधीयन क्रामिद्रम्य नजीदव नाजिन, त्कावा क्रेटल द्रकान त्रम (व लाशारकत गर्या ज्ञानिक जमम रव जील शिर्य ७क गर्वावहीन इक आहारक दक्षामण कहि कहि शब गरण दकावा केट्ड (म्याक्षिम । ... दम स्वः भट्यक्ष कि क्रिस्त्रमः), कि विषेठा, कि नवन मरहाशाची अरक्षामनं इतिवर्त। यक रवर्ति छक् त्यदेश

ेरे रेपनाथ बहिराय मात्र कार मनाक समिरक लेकिक जिल्हाक नार्थी परिक सम्बद्ध केरारक्षण सम्बद्धन

শেকাই বেপিনে সামে, বিশাসক হল্যাক্তিত ছবি, স্পারণ চিত্র, ভাহার অভুরূপ কে জেবাইভে শাবে 🚩 এক ছিনা ঐ প্রাথার अक्री बुद्धा केशव के कि एक निवा का विरुक्त के लगा कि निवास के धरे वृक्तिकित स्टा तका कतिरहत्वम, विकास भूताकन । गर्व वित्रिश विश्वादिन, भागात हेटाटम मुक्त भागा मूस्टे मना টয়াছেন। ্আমি কি বুঞ্জেরও অধম, তাঁহার নিক্ট এট नावरोत्र (य मृन्। चारक व्यामीत चाचात कि त्निश्चनां कारें,' एक फिनि भागारक अध्करादत सकावेत्रा वावेटक विष्यमं। मन् क्षानु व्यक्ताकर मानिएक हारिका ना दिव मानवासात मूना ভালীর মিক্ট থ্র বুকের মৃণ্য অপেকা কম। 'বৃক্তক পরিত্যাক করিয়া পঞ্চীবিংগর বিষয় চিকা করিতে লাগেলার ১ ভাষাদের প্রতিত্ব বিধাভার কি কমান তাহাদের পুরীভেন স্থাভাল अविवा त्थरण, जायाव छाशामिश्राक मृह्म शाक्षण कावुङ केवी হয়। আবি কি একটা পক্ষী অংশকা স্ক্রীধন যে ভিন্নি আনাকে अरकवारत विमेष्ठे हहेरछ निरंतने १ आगात **गृता**डन शीर्गछ। দুর করিলা নূতন কীবন দিবার ব্যবস্থা কি ভাইকৈ অগতে नाहे १

এই চিন্তার গভীররণে নিবিট হইরা অনুভক্তরা গেল বে উাহার বিশ-রাজ্যের নিষম এই দেখিতেছি যে ভিনি যাইাকে বে কার্ব্যের অস্তু সৃষ্টি করিয়াছেন, দেই 🐃 ব্যাহ্য 🗷 স্বভাষন ক্রিভেছে ও সেই কার্যোর জন্ধ ভাষার মতদিন পাকা আমো-ক্ষম হইতেছে তওদিন ভিনি কাছাকে স্থাণভেছেন । বধন वाहात्र जात्र टार्त्राकन शामिर्ड्स्ट क्ष्मी क्षमा वाहात्र वाना. जात উল্লান কাৰ্য্য হইডেছে না, তথন ভালাকে বিনষ্ট ভ্ৰডে হুইছেছে। পশু পক্ষীর সন্তান বাৎস্কা কেমন প্রবল। একবার मात्रि এक्টी कारकत वानाव कांग्रे निवाहिनाम, त्नरे क्लात्न (महे: भावक श्रानित मार्जा शाम se मिन व्यामात अश्वतक क्रूनिका हेबाह्य। (भारत अमन विश्व हहेबाहिल रव क्यांमि क्येनातृ । মন্তকে ঘরের বাহির হউতে পারিতাম না। বৈ সাক্ষ আছতি গাড়ী অতি নিরীহমভাব, তাছার শিশুকে ধরিছে স্বায়: (प्रशिद्ध (चात्र क्राप्तभृति शांत्रण कतिया एकामारक आवश्र कतियक ধাবিত হটুবে। কিন্তু এই স্নেচ্রে তীব্রতা কডবিন ? বঙ্গিন शिक्षत त्रकात कन्न हेनात श्रीदाकत । छाहात भन्न (महे माछाने আর সেই স্থানের দিকে ফিরিয়া চায় না। এইক্লণ খে ব্স্তুটীর ছারা যত্রিন তাঁহার কার্যা হচ্বে ভত্তনিন ভাহাকে किनि प्रका करतन, कार्या एमंद इवेटन ना कार्या ना कदिएन जाहारक বিনত্ত হইতে হয়। আমাদিগকে হস্ত দিরাছেল সংসারের कां क्षित्र करू, वश्च मकनारक शहन कतित्र क्ष्म । राष्ट्र হতকে উদ্ধাৰত করিয়া রাণ ভাষা শুকাইরা স্বার্টবে, ভাষার শক্তি বিনয় চইবে। তিনি খেন বলেন "আমার কাজ ব্যন कक्षिण ना फथने जाभि छेशांक तका कतित ना ।"

 minute netae netum faste gotten, Watt gerfind. अक्टर वाक्टिवां वाता कि छोड़ा प्रकार कार्या प्रदेश " क्रांशक स्वात कार किति गरेटवंस । क्राष्ट्रात तकात<u>े वक्</u>र स्वीती ्रिकेड्र कारकाक्षम मक्कि युहिटक । स्वति वार्यत कारवार्थीते वैत्र एव ्राक्रिय, विकि अजीदतक्ष्रेत्राटकात ध्यातासन वय कावान काका थाक्रियाँ पृति दशादकत् शास्त्राक्षम् इत्र काकात्र दशाक वृतिद्व । ভাষার কিছুত অঞ্চল হইবে না, কিন্ত ভাষাকে গলপুরিবে স্থানের উচ্চার অনুগত হইতে হইবে ও বাকিতে হইবে। বৃক্ বেমন, উল্লেখ কার্য্য সাধল করে ও সেই অন্তট জীবন ধারণ করে দেইরপ ছটতে চইবে। বৃক্ষের ভার উচার অনুগত श्राक, बुरक्क क्रांब एकामात ३ त्रकांच काच जिल्ली गरेरवन। एक वन আখাদীনক জাই নহে তোমার বৈহিক ভারও তিনি লইবেন। अके श्वास्त श्रीकारमत् अरमस्कत अक्षेत्र अक्षेत्र किन ८५८सः। ্ট্রীশ্বর ইন্থাপতের, লৈহিক ভার বছন করিবেন ইছা তাঁহারা म्हानिका छेडिएक शास्त्रम ना। आमत्राहेक मक्न कति। कुरक ভূমি কৰ্যণ করে, বপন কন্তা বপন করে, কন্তক কন্তন করে, ভারী বচন করে, দোকানী বিজের করে, ভূত্য জানয়ৰ করে, শোচক রক্ক**ল করে, আমরা আহার করি**, कामबर्क कति, देशात जिल्हात कार्यात क्रेयत (कार्थात ? क्रेयेंत তাঁহার ভক্তকে অন্ন বস্ত্র দিবেন বল। এক প্রকার কুসংস্কার। আমাদের বিখাস বে প্রকার চ্বলি ভাষাতে এরূপ চিন্তা হওয়া বিচিত্র নছে। কিছ প্রশ্ন এই তক্ষাপ্তের স্বতিই ব্বন এই নির্ম দেখি যে উর্বোল কাজ বে করে ভালার রক্ষার ভার ভিনি গ্রহণ ্করেন, ভবে ফানবের পকে সেনিরমের ব্রেক্রম ঘটিবে কেন্? ভাঁছার কার্য্যকে ভিনি রক্ষা করিবেন, সে জক্ত যদি আমার थान्त्रात्र व्यक्ताध्यम वत्र च्यामि निम्मिष्ठ थाकिय। क्यमम कतिचा বাজিৰ,কি জ্বির। সকল অভাব পূর্ণ হইবে, কোন সমরে কাহার 'बार्ड नित्रा चात्र राज्य चानित्व, जाशात्र किहूहे खानि ना ; किस ইহাৰিক্সিত্ৰ যে তীহার কাজের জনা যদি আমার বাঁচিয়া পাকার প্রান্থেনন হর আমি বাঁচিয়া পাকিবই; আমার অন্ধ বস্ত্র ভূতে উक्षावेश काश्विरवः; (कह वृक्षिरक । भाषित्व ना काशा व्हेरक े क्यॉनक्र । वस्त ७ ८४६ भटन इंडेटन, ८२क्रटभड़े इंडेस ना ८०ग, ভখন বৃষ্থিৰ এ দাসের কার্য্য সমাধা হইরাছে আরে থাকিবার -শ্ৰেছিন নাই। ইহা যদি মানিতে না পারা যায় ভাঁহা হটলে ৰিধাভার বিধাভূত্বে বিখাসই করা হইল না। বুলা ভাঁচাকে বিধাজা বলা। একটা বুক্ষের সঙ্গে তাঁচার বভটা সংস্কৃ, একটা नाबीतः गरम वक्षा नवक, जामात गरम वनि कक्षां का बारक ুজারি ভুত্রুবা তাঁহাকে বিধাতা বলি। এই বিখাদের ভূমি ্ৰত্বার অস্প্ৰত্ব ক্ষিতে পাছিলে ভবিষ্যতের চিন্তা আর . अहर इ. ना. । व्यवसाय वस बाक्स पर्या मीकिक व्हे क्यम अकस्त চুডুর ব্যেক আলমাকে বলিরাছিলেন "ভোমরা কি করিতেছ ्रिक्षकृति विका करा। यति देश्याक नवन्यकि केविया वात्र काला ুঁহৰলৈ,ভোষয়া বে একটা মুক্তন সমাজ গড়িছে আইভেছে काक्षक श्रीक कि क्रेटिय ? देवा अकड़े। स्मृता अवहीं बर्गाव मठ व्यक्तित्। कांत्रजरीर्व अक बाबात मध्यक्तिरमम वार्थ ्रक्षिमको क्ष राष्ट्रक क्षेत्र मध्यवात अभिना स्वादेश । कालीक

na man eter, without finte down for the मति द्यांत्रक्ष काला बाक, कालावा द्यांचाव विकास (काशारमंत्र मधामनाम अहे कामानव मा एवं कामाना नि विवाद वाबारमत निकास कि क्षेत्रक क्षिति विश्वतिक जानारकत्र जाक रेकिंग्डेबार काम मार्ड वर्क व्यक्ति छर्क (व छेनविछ इरेशांडिन छोबाब मध्या महिं। अर्थनक বোৰ হয় খানেক ত্ৰামতে এক্লণ আনেক ভৰ্ক ভানিতে अप्रेम प्रथम अस्टर विभावन वाहन करि स्थन विभा भविनात्वाच मरना। चाकि चाकि हिन, नमध कानक्यार्व केन्द्री वाकानमांक किन किंगा नत्सक, त्व छहे ठोडिकन वीच विविक्तम काहारमञ्जूषिकाश्यके महिला। त्यारक स्विक कि द्विष्ठिमा था छ। अरमत हान हूरना नाहे, याथा अस्ति । व्यान नहिं , हहे চারিটা কুল প্রাণী উচারা কি সমাজের পর্কির সমীপে পঞ্জাই-त्राम शक्टिक शांतिरव ? त्राःत्रातिक वृद्धिक धनव छ शाँकः कथा। किन्न क्षेत्रदेवत मिल्कित महिन्त वाहाता मात माहे, कार्की-দের প্রথম বৃদ্ধি যে মূর্থতা মাত্র ঈশ্বর বার ভাছ। 🛲 ভিশ্বর ক্রিতেছেন। এবারও ভাষ্ট ক্রিলৈন। প্রাহ্ম ব্রাক্ষিকার্থণ! আমরা যথম অঞ্সর চটরাছিলাম তথম অপ্রেও জানি নাই (य ভোমরা আবার আসিয়া আমাদের চারিদিকে খিরিবে, তথন জানিতাম না ব্রাহ্ম পরিবারের সংখ্যা শত শত ছইবে, ক্ষধন জানিতাম না এই কলিকাতা নগছে ডিনটা প্রকাণ ব্রেলাগা-সনার স্থান হটবে, ভখন জানিডাম না এড গুলি লোক প্রচার কার্যো জীবন উৎপর্গ করিবেন। তথন জ্বানিভাম না যে আর ভারতবর্ষে ২৩০ এর অধিক ব্রাহ্মসমাজ স্থাপিত ছটবে। व्हिन्नहिट्छ विटबहना कन्निन्ना वन मिथि (म अक्षांव क्रेयन আপমা হইতে পূরণ করিয়াছেন কিনা ? তবু কেম ভাঁচার উপরে বিশ্বাস স্থাপ্স করিতে পারিব না ? আমরা ভবিবাতের অৱই দেণিতে পাই, স্তৱাং ভাচাৰ সম্পূৰ্ণ স্বাবয়া কৰিবার कात कांगरनत नरक। कांगारनत (करन केंबरतत कार्रम अ উপদেশের অন্থগত হট্যা, চলিবার ভার। আমরা আনভ গৃতি হইরা তাঁহাকে ভলনা করিব, ভাঁচাকে ভিন্ন আর কিছু জানিব না; সত্ত তাঁচারই চরণাপ্রিত থাকিব, ৰঙটুকু শক্তি আছে তাঁচার জিল্প কার্য্য সাধন করিব; ভালার পর ডিনি আটেটন। वाभिएक हत क्रांभिएन बाजिएक क्षेत्र क्षांहिएसम्। व्हाइति क्योत ভাৰিৰ কি ? যে আমাকৈ ভিন্ন ভানে না ভালার স্কল ভার আমি বছন করি," কি আশার কথা ৷ আঞ্চরিগ্রেক্স প্রিকে এই, नका त्यारन वास्कर करा विकास त्याराक्रिय हरेगाड़। जामात छत्र इत जामता शृशिरीत सामवृत्सत्र केले कि विक থাইতেছি, ক্ষতি লাভ কিছু ৰেলি গণনা কৰিছে ক্ৰিৰিতেছি। लाटक बाक्षमिशटक धाँहै बनिया निका करत द्व वैद्याता (यम कारव ना, देशात्वत मुक्त कारक किছू ना किहू विद्रवा विरिष्ठ गांछश्च मृह्य । हेश्या चिक्र भाग^{वाश} न्युव्यक्ति , कारावर्ष व्यादन वाड नारम् त्व कार्यका नरश्माविक कारन विका परेवाह क्षेत्र राज । जे सहानह नूप । जीवान विका

कारण विश्वास में क्षेत्र के कारण करें। कारण कारण करें। कारण करें। कारण करें। कारण करें। कारण करें। कारण करें।

যুগ-ভাব ও যুগ-ধর্ম। (बाड)

সুল দৃষ্টিতে প্রাক্ষ স্মান্তের আভারতিক বিচ্ছেদের দিকে
দৃষ্টি পাত করিলে ইহাকে অবনতির কারণ বলিরা বোধ হয়,
তাহাতে কোনও সন্দেহ নাই। কিন্তু স্থা দৃষ্টির নিকটে এই প্রম
তিরোহিত হইরা বরং ইহাকে প্রাক্ষ স্মান্তের উরতির সহার বলিরাই স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়। স্মান্তের আতাত ইতিহানের প্রতি দৃষ্টি
নিক্ষেপ করিলে কি দেখি ? এক একটা সভ্য আসিরা দেখা
বিভেছে আর এক একটা বোর আন্দোলনে সেই সভ্যের
আক্রিমতা পরীক্ষিত হইরা প্রাক্ষ স্মান্তের কার্যসংহাসনে
ভাষা প্রতিষ্ঠিত হইতেছে। যাহাদের চক্ষ্ আছে তাহারা একবিক্রে অস্ত্রাও প্রাক্ষর প্রতিরাক্ষ স্মান্তের বিরাগ ও অপর
বিক্রে সত্যের প্রতি অন্তরাগ দেখিয়া ব্রাক্ষ স্মান্তের জীবনী
শক্ষির পরিচর পাইতেছে; আর যাহারা অক্ষ ভাহারা বাহিরের
বিরাদ কলহ দেখিয়া ইহার মুর্জনতা অন্ত্রমান করিতেছে।

ব্ৰাহ্ম স্মান্তের গৃহ বিচ্ছেদ দেখিয়া নিরাশার যেমন কোন কারণ নাই, ভেমনই শিক্ষিত নামধারীদের বর্তমান প্রতিকৃশতা দেখিয়া তীত হইবারও কোন কারণ দেখিতে পাইতেছি না। এরণ প্রতিকৃশতা কারছা ব্রাহ্ম সান্তের পদে ত আর নৃত্য নর। রাষ্ট্রেম্বার্টন রাহ্মর সময়ে রাছা রাষ্ট্রাহ্মত দেব প্রভৃতির প্রতিকৃশতা ও ভাছার পরিণাম ইতিহাসে অণত অক্ষরে গিনিত ও ব্রাহ্ম সাধারণের স্বতিতে দৃচ মৃত্রিত রহিরাছে; ভ্রুমন ভূমিত রাহ্মরাছে; ভ্রুমন ভূমিত সামার সমালাত শিশু, হই একটা লোকের কোনার্ট্রেমন আলোকার। পাল ব্রাহ্মর অফ্রান্ট্রাহ্মর প্রাহ্মরাক্ত। আল ব্রাহ্মর সম্বাহ্মর অফ্রান্ট্রাহ্মর প্রাহ্মর প্রাহ্মর শালার রাম্বার ব্রহ্মর অফ্রান্ট্রাহ্মর প্রাহ্মর ক্রাহ্মর ক্রা

A COLOR COLOR COLOR COLOR COLOR wit (apicil of the ago) waterige Course fania बाक्यरमें स्वामी छेवानकाती मेरानदेश बाक्रदेश नाम छक्कारम मूर्व देश चीकांत्र में क्लमे, किंद कराँशब মণ্ডণে বাড়াইরা লিরোবেইনে নাসিকা ল্পর্ণ করিরা কার্বাডঃ बौकात कविएक वावा हम। छोहा मा हहेरन बरमत्र वरमत करात-সের স্বর সভাত্ব কাঁপাইরা আকাশের বারু আন্দোলিত कृतिया देश्यांच च े अरमनीरवंद खैंकि शंदनीसर हेंद्र , चचाका-বিক বৈৰ্য্যাত্মক নীতির বজু নির্বোধে প্রতিবাদ করিতেন ন) ও স্বরায় এ বৈষ্ম্যাত্মক নীতির সংস্কারেয় বিশ্বনিউদন ক্রিয়া গ্রণমেন্টকে অনুরোধ করিটেন না। প্তা মধ্যাছ ক্ৰোর ক্রিপের স্থার। বে বাজি নব সভাকে আসিতে দিবেনা বলিয়া আপন গৃহে অর্থনবছ করিয়া থাকে, সভা ভাহার গৃহের ছিল দিবা গৃহে আবিট হয়। বাহা হউক ইহা সভা হৈ লোকে কথনও কালে ক্ৰনৰ বাক্যে উপরোক্ত বিশেষ ভাবেরই আগমন ঘোষণা করিভেছে, এই যুগভাবের আগমনী গাহিভেছে। ব্রাক্ষ স্মাজ এই যুগভাব বকে লইয়া জন্মগ্রহণ করিয়াছেন এবং এই জ্ঞুই টছা যুগধর্ম। কি রাজ-নীতি কি সমাজ-নীতি কি ধৰ্ম-নীতি সকল বিভাগেই যুগভাব দিন দিন ফুটিরা উঠিতেছে। ইহা অদ্পুত্রের স্থার এদাকুও ছইতে নিঃস্ত হইয়া সাগর সক্ষমে চলিঝাছে। কুল আণীরত কথাই নাই, ইল্রের ঐরবেভের সাধ্য কি ইহারীগতিরোধ করে ? हिन् रार्श्वतिक्रिनी, व्याव्याधार्यश्चित्रातिनी, व्याव्या नमाक, नव हिन्तू সামাৰ এই সব বিভিন্ন নামধারী সমাজ যতই কেন ধনকুবের-গণ পরিশোষিত শিক্ষিত জনগণ কুলকুলারিত ছউক না, ষুপভাব চত্তে পড়িয়া অনুশন হইবে। খুলিয়া চিত্র প্রান্ত भावया वाहेरव ना।

.এই যুগভাবের চক্তে ত্রান্দ সমাজের ক্রমোরভির কথা यथन छाति, छथन পाखवरम् व मनतीरत चर्गारतावर्णत आथातिक। মনে পড়ে। সুহধর্মিণীসহ পাঁচ ভাই অর্ণের বাত্তী হইলেন; কিন্তু সদরীর স্বর্গারোহণ এক ঘুষিষ্ঠির ভিন্ন অপর কাহারও ভাগো चिन ना। একে একে छोनने ७ ठाविक्रम नथकरहे व्यवमञ् इदेवा मृङ्ग मद्याभाषी इदेश्यन, डाहारम्य स्वद शक्क शर्थहे পঞ্জিরা রভিল। একমাত্র ধর্মরাজ সপরীরে অর্গারোহণ করি-(गन। এই आंशांत्रिकात मरन बान ममास्त्र कि जान्ध्री त्रोगाष्ट्रकः। बाक् नमाक अवाकादिक देश्यमा पृत्र कतिया স্প্রাক্ষা স্থাপন করিবেন বলিয়া যাত্রা করিলেন। কতক দুর আদিয়। আদি স্মাঞ্চ দণ্ডারমান হইলেন, আর চলিতে शाविद्यास ता । किन्न यूगेबाद छ शाविद्द ना ; बान्न . गबाल व देशांदक झाफिता मनिशाता क्नी बहेता चाकित्छ हास्टिक्त ना, होनीटिंड नाजिटनम । आह किहू मूत जानिता भटन स्वविद्यान समाटकत जल जनम इटेना जानिन, छत्रन साब छात्रां मा, सदिशाम विश्वा शिक्षाना। वृशकार युग-

माराष्ट्रा चापन कतिएक उनिशास, विशास मारे विश्वास नारे देश भनाए कितियां हारिण ना। कावि नमान हेराटक राताहेमा वर्डभाटनत ना स्टेमा व्यानित नामान प्रदेश बहिरमन, नव विश्वान मधाम व छात्र विहरन नारम नवविश्विः थाकियाध मंत्रपूर्वत विधि ब्रहिटनम मार्ग छट्य कि आक्रमश्रक এ মাণিক হাতে পাইরাও আস্মাদোর হারাইল ? না হারায় नाहे। माधापन खाचा मगारक युगकार अधनल विहास स्त्रिएकरकः সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজের অক্ষয় কবচ হইরা রহিরাছে। বক্তমিন माधात्रण मगास देदादक ज्यानन ज्याकत ज्याचत्रण कतियां नाधिरंत, তত্তিৰ ইহার মার নাই। দিক পালগণ দলবন্ধ ছইলা আসি-লেও ইহার কিছুই করিতে পারিবেন না। যুগভাব যুগধৰ্মক विषया गरेवा हिनारह। गम्जूनि निया हिनारक इनिएक नही चानिया दकान शक्रेणरन टाजिइफ इंहरन करम चन म्या कतिया दिसम मददर्श रमहे श्रक्षदेनन निका निया निया नाय, **জেমনি যুগধর্ম আন্ধ সমাজ যুগভাব প্রভাবে বল সঞ্চ করির।** অবাধে শিক্ষিত দলের বর্ত্তবান প্রতিকৃণতা উল্লেখন করিয়া **हिंग्जा याहेट्य**।

আমরা এখানেই ধামিব তাহা নয়, আরও অগ্রসর হট্যা (मिथियः। এই পুনরুখানের দিনে উত্থান-ধ্রতী শিক্ষিত মহা-শ্রেরা পাশ্চত্যে আচার্য্যের বৈজ্ঞানিক সিদ্ধান্ত সকল নাডিয়া চাড়িয়া हिन्दुशर्यात क्षशान क्षशान मण हहेटल आत्रस क्रिया তাঁহাদের সমাজের অভি নগণ্য আচার ব্যবহারের পর্য্যন্ত সকল विषयात्रहे व्यविभिक्ष देवकानिक, भिक्ष देवकानिक भिक्षाभिक्ष देवसानिक नाना श्रकाक गाथा। कतिया गरेएछएए। आमना পাশাত্য আচুয়াদের কোনও একটা বৈক্সানিক সিদ্ধা-ত্তের উপযুক্ত প্ররোগ হারা আমাদের উপনীত দিয়াভের সত্যতা মাত্র দেখাইতে যাইতেছি। পাশ্চাত্য আচার্যের। **এই निकास कत्रिवाद्यन दर सौरन मध्यादम क्रमशास्त्र विकिं** ও অক্ষের বিনাশ নিশ্চয়। कीवनमध्यास्य बाहा শীবনের অভাব দৃর করিতে পারিবে না তাহার কর ও যাহা পারিবে তাহার স্থিতি নিশ্চয়,—একথা যদি সত্য হয়,তবে ध कथा अ मडा दब धरे गूनमः आरम ध मूल्यम काव कि धनारेन-जिक, कि नमास निष्कि, कि तास निष्कि नर्सक्षकातात्र काश्चा-ভাবিক বৈৰম্য যে गरून नमास पृत করিছে, পারিৰে না ভাছা-त्तव भवासव ७ (य ममास भावित्व जाशांत्र स्वय निम्हता। প্রাণমে বলিয়া আসিয়াছি অস্বাভাবিক বৈষ্ম্যের বিদাশ, এই युग्नार गहेबा आक्षामाक कमाशहर कविवादक व्यवस्था कव्ह রূপে গালে ধারণ করিতেছে। বুগভাব প্রভাবে প্রভাবশালী दाक्रमाण क्षेत्र व मानटवत्र, देश्टब्स व द्वनीटवत्र, दाक्रन छ मृटस्र পুरुष अञ्चलीत अध्याष्टाविक देवसमा सृत कतिएछ श्यमम अध्यान् ব্ৰেন্ন উপৰে৷গী অপর কোনও ধর্মসমাজ তেম্ন ক্ষমবান . ८७ मन छे भरवात्री इंश्वा नृत्तत्र कथा, आन्द्रवर यूमाछाव दयाहन क्तिए हार्ड ना एडवार वाचनमासरे बुनाकारामाहरम अक भावा क्यवान समाम् वावः देशह महत्व क्व निक्रतः।

चामवा विना हरक (प्रतिष्ठः गाहेरङहि आक्राम्बारकम

विषान ए तिन, कनवर कनाक कल्यान स्रोधा - विकारन व्यवस्था कर्ष नीक हरेय, काशास्त्र आह वशास्त्र, मामहात् ७ निवानात्रक रहेर १ समाक्तवा अनुक रहेन, अनिराम भाषामा गरमस महिलाम करून, निश्नाबद्धमा बोमाबिक रक्षेत्र । अस्य तमारमञ्जूष स्टेश्यूरे स्टेश्यू, मह्मार सार्वे । এ বুগে পর্বরাজ্য স্থাপনার্থ ব্যাক্ষমান্ধ বিধাতা কর্তৃক वृष्ठ। जाकानमाम यूगविधि, विधित्र विधि। यक्ति कांद्रश्र विधि, मार्व (क ?

मगारलाह्ना । (4)4)

उक्रविकाना, वर्षाए क्षेत्ररतंत्र कविष् छ त्रज्ञन विवयक मार्जनिक মালোচনা। শ্ৰীণীতানাথ দম্ভ প্ৰণীত।

मृष्ठ महाचा किनवहत्त (भन अक्-विशादक काक् केंद्रहारवंत्र উপর প্রতিষ্ঠিত করিয়া যান,কিন্তু তিনি আত্মপ্রতারের প্রচলিত বাাখ্যার অভিরিক্ত কোন সংস্থাধ অনক ব্যাখ্যা দিতে পারেন नारे; "अक्षिकांगा" (नथक रम्थावेदाह्म त्य धर्मक्र गरका मून में मक्न किन्न अञ्चित्रात्र गत्र, विशा भाष्त्रहे सर्वाद काहनत कि खि थावर छेश मिशक अखिताम कतिया आहम छेर-পতি कामकव। तनशरकत्र महत्र कामारमञ अविवस्य मन्त्री जेक মত। আমাদের মনে হর যে হিউমের পর আত্মপ্রভার সহছে **এই ছান ভিন্ন অন্ত ছান গ্রহণ করা নিরাপন নছে। সংক্র** व्यक्ति विवय व्यक्तः। स्वथास्य श्रीकार ७ शतकारणत कथाः रम्बारन विने मान्यर यूर्गाकरत्रक बारक, छान्। इहेरन विनेत्र, कंछ-धर उम्मेरिका अथवा उम्मितिहाति किछि प्रमुप आसू श्रीकास्त्र त्महे काटम महिविष्ठे करा कर्डवा (वशास्म मास्मरहत्र महाबना मारे। परितादीकात अञादहे (महे दान।

অধ্যাপক বেনও একণা খীকার করিয়াছেন। যে সকল গড়া अधीकांत्र कतित्व चविद्याधिक। स्माद्य क्रुडे इत्रेटक इत अपूर कारमद मुक्क वाला। दनक्षा बाद मा, दनके मकत मुकानीक হইতে বন্ধবিদ্যা ভক্ষ উৎপত্তি দেখাইয়া বন্ধবিদ্যাকে সীত্ৰি নাথ বাবু কেশৰ বাবু অংশকা উচ্চতর ও নিভারতর ছানে স্থাপন করিতে চেটা করিয়াছেন এবং কৃতক পরিমাণে কুল্ক-कार्या व बरेग्रार्ट्सन, देश व्यवंश्व चीकांत्र कृतिराज बरेर्ट्स । 🚉

क्ष्मव वावृत्र क्रीवरमञ्जू शृक्षकारश[्]काशात्र (व मक्षण क्षेत्र व्यक्तिक रूप, कारा गाउँ क्षित्न त्याप रूप त्य किनि आकृष्टि वारमत नक्षमाठी किरमम । "अवाधिकामा" (मथक दम्यादेशास्त्रमः त्य आकृष्टिकारमञ्ज केनत्र अवस्थिताः जानम कत्रिद्रक एनएन चविरवाधिका स्मार्थ प्रदे थयः चरकावामा व वर्षका चनाविर्देश **छैननीच रहेट७ इत्र। ७ दिस्टबंड व्यानारम्य रमस्टक्षं महन** क्षमक। चामारमत्र विमान, द्वार्कनित नम् क्रमुक्तिसर्वे উপর জাসতৰ প্রতিষ্ঠিত করিতে চেটা করা বাজুলকা রাজ। काराष्ट्रि रम्भणारतय यक संविक्त हैशाइक कुक्कारी देत साहै। MACHA AN ESCH OF THE MAIN CHALLES TANCE छनियाद केवान कारनाक्त्रिक, त्राविता क्रिक्ट केवान देश है कि स्वाप कार्य कार्य कार्य कार्य कार्या कार्या

CERTA PRESENTA CE, MENTAL PER POR PRESENTA with the law exten stone : Mewiche Geriffen Winters क्ष बाक्ष वाक्षी अक्षेत्र क्षत्रमा करवम, व्यव वरणम केश भारतात्रात अपन बात बारे, यनि छेश चारतात्र करन केशास्त्र वाक्षकरवर्त्त कार्त्तन वनिवां किसंदर्ग कांन ? वथम छेड़ाटक कांनि-(जह, जनम छेश टक्क वंच ; जनह खेंक्क जानी डेशटक जटका विश्वता क्षात्रांत्र कटतमः। दश्यके ट्राम्मातः वीकात कटतम (व अब ब्रह्मणीक सुनाकत कावन साम वर्षमान, अवह वरनन (व छेश आरंकत । देशांटक महर्त्वहें कहें काम केंद्रे, दे विम (महे कांत्रव कारकत, करन काशास्त्र कात्रवक्राण, निक्कारण কিয়ণে জানিলে ? বখন শক্তি বলিভেছ ভৰন অন্ততঃ নেই कार्यात्र मुख्यि अनु कार्क हरेग्राष्ट्र । जात्र अकी कथा, यथम এই अञ्चलायित बर्ध्य कांत्रन आया, छनन विक्रीय कांत्रन কল্পা কলার প্রাজনীভাব। বাস্তবিক পরীকা করিয়া तिबिद्दा मार्क्कप्रकावान मकि प्रमान यस विनेता व्यक्तिन हरेत्व, मामह नाहे।

প্রছের প্রথম হই অধায়ই বিশেষ মৃত্যবান। উহাতে আলোচা বিষয়গুলি প্রকের আকার বিরেচনার বিস্তৃতভাবে আলোচা কিছিল হইরাছে। এই চুই অধারে লেখক নির লিখিত সিহাছে উপনীত হইরাছেন "আনরা দেখাইরাছি যে ঘটনা-প্রবাহ অনাদি অনস্ক, এবং এই অনাদি অনস্ক ঘটনা-প্রবাহ এক অনাদি অনস্ক অবিতীয় জানকে অবিত্যম করিয়া সংঘটিত হয়। এই অবিতীয় জানই তাহার সংযোগকারিনী পজিতে এই অনাদি অনস্ক ঘটনা-প্রবাহকে এক অচ্ছেদা স্থালে আব্দ্ধ করিয়া রাখিরাছেন; এবং ঘটনা অহারী প্রবাহশীল হইলেও সম্বার ঘটনার জান নিত্যজানের বিষয়ীভূত হুইরা নিত্যজানের সাহিত একীভূত হইরা স্থানিছণে বর্জমান রহিয়াছে। আরও দেখাইরাছি বে এই নিত্য কাঞ্রত সর্ব্জ প্রকার জান আয়াছের ব্যক্তিগত জীবনে আংশিক জাবে প্রবাহিত হইরাই আমানের জীবন সংগটিত হয়। পরসান্ধাই জীবান্ধার প্রাণ্থর প্রকার প্রাণ্ডার প্রাণ্ডার প্রাণ্ডার প্রাণ্ডার জীবনাবার।"

रेश आरम्भा अधिक छत्र नरकारक मन्या यनि द्वर निर्ण भारतम छात्र। इत्रेश छात्रात्र निक्ष आयत्र। विश्वयत्तर वाविष्ठ हत्र । त्राक्षणमार्क छत्रविनात रेणिशाम देश अश्वयाः प्रेश्च करत्रमा एक्षित्राद्ध विन्ना द्वाप इत्र मा । अश्विवर्ध-भीव भारत्मक किन्नर्ग अत्र श्विवर्धन-ध्वाद आगमात्र मर्या केर्यात्र करत्रम्, अत्र किन्नर्भ या भूग मत्ररम्य अश्वत्तर्भ कीरतम् आरम् स्वकालिक कर्म, केन्नियक वावाः। छात्रात्र मर्यरक्ष किर्णात्र साम्यास्त्र क्रिक्ट अञ्चलक नावः। अर्थक कावाः। व्यव कानकाल्य क्रक्क ध्वादेश स्वक्रिक मौष्याम आगावित्ररम् गरेता वात्र स्वयत् केन्नर अन्यस्य क्रवा द्व वृक्तिक्ष वेशः द्वायः

७९त विक्रिः (१९६८ (१ वर्ड सामात्र निक्ष कामारस्य नागरस्य क्षत्र विक्रिके सम्बद्धः) इत स्त्राचा कामानिकाक नागरस्य निक्षत्रको साम्रद्धाः (१ साम्राह्म संस्था क्षत्र मानवस्य निर्मुत क्षत्र

আমানিগের প্রাণে বৃদ্ধন্দেশে সুবিত করে তেই ব্যাখ্যাই আমা-দের বৃদ্ধ করিবার বস্তা। আমরা কবিরকে প্রাণ্ডন্তর বলি, 'বন্ধ-বিজ্ঞান্য' পাঠে আম্মানেশিতে পাই বে প্রাণ্ডন্তর কথার কথা করে, ক্রীকার প্রক্রেক বর্গ জগন্ত ও শীবন্ত সভ্য। আমরা ব্রহ্মের আপ্রিত্ত, আমরা খুমাইলে চৈতক্তরপিণী বিশ্বন্দনী জাগিয়া থাক্রিয়া আমানের চৈতক্ত রক্ষা করেন, আমরা ভারারই ক্রেণ প্রকাশ, আম্মা শিতার প্র, 'বন্ধজিক্ষাদা' এই সকল কথা বেশ কুক্তর রূপে বুঝাইরা বিরাছেন।

আমাদের মতে এই প্রতক্ষের জন্য সাধারণ আক্ষসমাজ সীতা-'
নাথ বাবুর নিকট বিশেব ধণী। বত দিন বাইবে, ততই বন্ধবিদ্যার আদর্য বাড়িবে, এবং বন্ধবিদ্যার আদরের সলে সঙ্গে
'বন্ধবিজ্ঞাসা'রও আদ্ধার বৃদ্ধি হইবে। এই পুতক প্রত্যেক ব্রাহ্মর
হত্তে বৈধিলে আমরা স্থা হইব। আশা করি নেথক 'ব্রহ্মজিক্রাসা' ভবিষ্যতে বৃদ্ধিত কলেবরে প্রকাশ করিতে সমর্থ
ইইবেন।

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

খাসিয়া পর্বতে ত্রাক্ষধর্ম প্রচার।

আনেক দিন হইতে এই পাহাড়ে জ্ঞান ও ধর্ম তৃষ্ণা উদ্দীপিত হইরাছে। এই পর্বতবাসী পুরুষ ও রমণীগণ দিন দিন
শিক্ষা লাভ করিয়া উরভ হইতেছেন। ইহাদের শিক্ষার অভ্ত
নানা ছানে বিদ্যালর প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। ধর্ম শিক্ষার অভ্ত
গ্রীষ্টির পালীগণ প্রামে প্রামে ভ্রুনালর প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন।
বহুকাল ধরিয়া ইহারা ডিম ভাঙ্গিতেছে, বহুকাল ধরিয়া গ্রীষ্টের
পূজা করিতেছে ভ্রথাণি ইহাদের ধর্মভূক্যা পরিভ্রা ইইছেছে
না। ইহাদের মধ্যে শিক্ষিত ও চিন্তানীল ক্ষাক্তগণ আর
গ্রীষ্টকে ক্ষার বলিয়া বিশ্বাস করিতে পারিতেছে না।

ইছাদের মধ্যে নানা প্রকার কুসংখ্যার ও চুর্নীতি আছে সভ্য। ইহারা ডিম ভালিয়া কুকুটাদির উদর পরীক্ষা করিয়। ভারত নির্বর করে সভা। সভা ইহারা রোগ শোক প্রেরণ काती पृष्ठे व्यनम्बर्काविशस्य (नानिक क्षकृष्ठि वाता भविक्छ करब। किन धानिवाशन नित्रीचत नरह। ইशासत शुर्व পুক্ষপণ আদিম কাল হইতে বিখান ক্রিয়া আসিয়াছে "উৰুই বা থাও" এক ঈশ্ব সৃষ্টিকর্তা। শিক্ষিত ও চিস্তাশীল খানিয়া ঐ সকল কুসংস্থার পরিভাগে করিতেছেন। এবং প্রবৃত্তিত বিশ্ববাদের সামশ্রম্য করিয়া উঠিতে পারিতভেন না ভাই আগ্রহেয় সহিত বিজ্ঞাসা করিভেছেন আলধর্ম কি 📍 বলিতে-**एम**्धक नेथव एडिकडी आमता कानि। अमन धर्ष कि নাই বাহা আমাদিপকে বিশুদ্ধ প্রাণাণীতে নেই এক প্রভূর नृका क्तिए**ड निका** स्वत ? दनहे गरिज धर्म कि व्यामता ताश्व कतिरक गाति गा ? विश्वित व्यमक गांक देशासन मान वह िखात्याक व्यवस्थि पवित्राधिन, पैश्वत प्रमुख रख देश-विनटक कार्य केंद्रकि नटन हानिया नहेन छोहात महिमा (गीत-शाष्ट्रिक एक स्टब्स नाम जडगुक्त रुकेन।

. बाक्षणमाम श्राक्तिक व्हेत्राट्ट । गृह हिन मा काहात्रहे कहनात अव्वि प्राटक्सनाथ ठीकूरतम व्यार्थ सक्तमन्त्र । श्रीकिस व्यक्तरह बरनत्वक धके नवाद्यत कार्या अवि क्रेक्नात्वत निका क्षिण अवरागर मूठन छेताम न्डन छेरणाई हिना। देशमा विकास ं विभिन्न कात वृति दमेगात वाकनमाक देव दक्त मा । अहै जान बाबार बहार वह वी विकासकार तह की तक वार्यक महान् व्यक्त कार्या डाजार्ट्ड मानिस्त्रम । व्यक्त सर् क्ष आहे साह "কড দিন থাকে? মাল্য কি আৰু চিরকাল মৃত থাকিছে शांति ? एककार छैरतव चातिम त्रकान त्यांत्व व्यांत्व विभि-रमन। भुक लान नशीविक दरेग। नक्रवारे जान कतिराम, "ভোমারি করতে প্রেম বিলাইব, ছোমারি, কাব্য বা সাধিব।" हेकि गर्या (नर्गा, त्वतार्शक अकृषि शाम बहेरक वाक्यर्पन ্ষুণ সভা সমুদার বাসিয়া ভাষার নিসিবন করতঃ মুক্তিত করিয়া ু আই পর্বচের ভানে ভানে প্রেরিভ হইয়াছিল। বোধ হয় ইহা বারা তাহাদের জানিবার আকাঞা আরও বর্ষিত করিয়াছে। त्वभीत्र औष्ठित्रानशं वाक्षसंदर्भत कथा गहेता जात्वाहमा ... कति-टिट्र । औडित्रवर्षे श्रेष्ट्राता व वानियान व निव्यत्त में काममान হইরা ভাবিতেছেন কোনু পথে বাই। থাসিরাধর্মাবন্ধী কি বাহারা কোন ধর্মাবলম্বীই নহেন তাহারা ভাবিতেছেন ইহার কোনটা অবলখনীয়। ইহাদের মধ্যে এক চিস্তা স্লোভ প্রবাহিত হইয়াছে। এমন সুসময়ে কে জড় ভাব অবলম্বন করিরা পাকিতে পারে ? কোন্ ব্রেলাপাদকের মনে আনন্দ ও উৎসাহের উদয় না হয় ? তাই আক্ষিত্রণ আর হির থাকিতে পারিলেন না। শিवज्ञ बाचा नाधात्रन ध्वर बाच्यनमार्कत एकाक्यायीत्रने छ শিলং ব্রাক্ষসমাজ এক্তিত হইয়া মৌধার ব্রাক্ষসমাকের জন্য একটা কার্য্যকারী সভা(Working Committee) গঠন করিবেন। এই नका द्योशात्र बाक्षमभाष्मत कार्या निर्माह कतित्वन ও এই नर्काछ खाक्रथर्फा धाहारतत कना यथामाथा कार्या कतिरवन। কার্যা সুসুঝ্লার জন্য এই সভা পাঁচটী বিভাগে বিভক্ত হই-शाटका यथा--

১। পুত্তক প্রকাশ কমিটা (publication Committee)
ইহার। থাসিয়া ভাষার পুত্তক পত্রিকা প্রভৃতি প্রথমণ করিবেন,
অন্তের প্রণীত পুত্তকাদি এই কমিটা কর্তৃক প্রকাশের উপযুক্ত
কিনা বিচার করিবেন। এবং পুত্তক পত্রিকা প্রভৃতি প্রকাশ,
কল্প অর্থ সংগ্রহ কি অক্তান্ত বিহিত উপার অবশ্যন করিবেন।
ইহার সভা সংখ্যা ৯ জন। সম্পাদক বাবু ভরিণীচরণ নজী
ও শুবু বজেজনার্থ সেন।

ই হারা মৌথার প্রাহ্মসমাজে কিরপ উপাসনা ছইবে, কে কোন দিবস উপাসনা করিবেন, উপাসক মগুলীর স্থা সংখ্যা বাহাতে বৃদ্ধি হয় ভাহা ও বাহাতে কোন প্রকার কার্যবিধা কি সোলবোগ না হয় ভাহার চেটা ক্রিবেন। স্থা সংখ্যা কন। প্রশাসক বাবু রাজচক্র চৌধুরী ও বাবু বৈর্থনার

e regis as (Preaching and visitation Commit-

উচ্চার কলণার আজি তিন বংগরের অধিক ক্ষুবা বৌধার । ১৯৫)। ইরাচা নিকটক প্রায় কর্তে এবং ব্যোস্থাকে এই পর্যাত প্রতিষ্ঠ কর্তিক প্রয়োজনতে এই পর্যাত ক্ষুবার ক্ষিত্র কর্তিক ক্ষুবার ক্ষিত্র কর্ত্র কর্তিক ক্ষুবার ক্ষিত্র কর্তিক ক্ষুবার ক্ষিত্র কর্তিক ক্ষুবার ক্ষুবার

े विश् तथा कर्षा तथा स्वयं तथा (Orrespondence Commission) देश्या हुई नवाक वानित्य देखा एकार द्वारात्रक निवदे देशा हुई तथा विश्वत्य (प्राथितिक पूर्व विश्वति विश्वति (प्राथ क्ष्म स्वयं (श्वि क्षावि देशा विश्वति (प्राय) का नवाक वान्यवि (प्रायक्ति) तथा (पानित व्य (प्रायक) वार् प्रश्वति प्रायक्ति (प्रायक्ति) तथा (पानिक) पान् विश्वीवत्य पान (देशाक्ति व्यक्त स्वयं

" छश्च प्रकृतक नाम विता मधा वर्धन कतित्व है टका हैत मा, कांक क्या हारे। त्यहें क्षण Working Committee (कार्याकांत्री नका) वित्र कतिरागन Good Friday উপन किन निम हो, শেই সমগ্ন চেরাপুঞ্জি ঘাইতে হইবে। দিলং হইতে চেরাপুঞ্জি ৩৩ মাইল, জিল দিলের মধ্যে এই স্বাস্থা হাটিয়া বাওয়া, স্পাসা এবং সেধানে কাজ করা সহজ কথা নয়। ছবাপি ইহারা যাইতে কুটিভ হইলেন না। খাসিয়া ও বালাদীতে ২০ জন लारकत याखना वित्र हरेगा धरे एक अनुकान क्रिमेगरक ১१६ अधिन वृथवात मक्तात शत योवात आक्रमसाल गृहर উপাসনা হইরাছিল। বাবু শিবনাথ দত ইংটেই লারিছ ও কর্ত্তব্য সম্বন্ধে উপদেশ কিয়াছিলেন এবং বাবু গর্কান্ত্র দাস त्महे जिन छे**लार्गमात काँका कतिशाहित्सन। होक**्यू कि করেক লব থাসিরাবদ্ধু চেরাপুলিতে উপাসনাদি করিবার ও এখান হইতে বাঁহারা বাইবেন তাঁহাবের থাকিবার স্থান निर्वत कतिवाद कछ চलिया (शरणम । वृष्णाक्रवायः विमार वाकाममाक शृंदर मकरन এकविष्ठ सरेबा धार्वमा क्रियानम धवः मल्लमत अतरमधरतत छकानीकीष किना कतिया देखाति जिल्ह्या याचा वितितन्। ज्यम शक्ता व्हेतास्त्रं हे विक्रिताह वस्ती नवागल खात । अवन नमत्र अख्या दनाक देखार भाकिया हिनदा पारेटकट्सन । जकन वन हाविद्दा की देंग ক্রিতেছে। কোথারও বা নিব রিণী খন বর ক্রিয়া ব্রিক্তেই क्यांवात्रक वा क्रमधानाक्ष्ममूद नकीत नकाल विकास পতিত হইতেছে। অভকার বই আর কিছুই দেখা ব্রিচেছে ता। काकू शको क्षिडे परह का-कू का-कू जीव जीव PIECOLE, MIN BIGICHE MICH THE AN MINT VISI elfen fecere, fe an fente bie dallen war INCHES STATES MANUFACTOR STATE OF THE RESERVED Attent | mittelle einen alle men antiet att

সভূবে আন্তৰ অনেক বছুছা বহিষাকে, বাজিতে না চলিলে व्यात शक्किंग चारम मगरम देनीकिटक नुम्बा नाहेरन जा वह कर्नहें क्रिक्ट वहें देश किया मुख्या (वादम) smal fante; co talfreico den con ? Min vall de plem die De alem gert magus une main. GRETTE MITTE - THE WAR MICH AND SHIELDS AND SHIELDS na biffin an muen Marie, weitelle ges ges बार्बा क्षेत्र नक्षण गर्सक नाटक गोहिका वीक्सारक । व्यवस्था and seed note to fine were at his first way. विश्वविद्या एक्षिया निर्वादय । अके ना निर्वाद स्वीद विद्याप माहें। इरेकन लाक अप प्राणिक नव व्यक्तिक नव व्याप क्षेट्रेक कार्याविगटक नहेशा जाबि त्मकृष्टात अवक गतारे गृहक ্টগছিত ইইলেন। থাসিয়া রমণী আসিখার সময় ভাষার कुन्न निष्ठ ज्ञामरण करे नहीत प्रवमीरह हाकिया वनियादिन "নভান নভান আৰি চেরাপুত্তি বাইভেছি। ভোমার জন্য कि बानिया कृष्टे बामोद थन, बामाद नश्य, बामाद नक জামার কেটিখন ছুই, ভোর জন। কি আনিব।" সাহা এই-क्षन बाज-त्यहे त्यविद्या अशेष्क्रममीत त्यह त्य ज्वित्य नात्र ? श्राधि हुईहै। वाशिश २० मिनिष्ठ इन्म, सुकरमहे तथना रहेवात क्या गान्ध क्हेंरनम । क्रिमिन गत्न वाक्षा चात्रन्त हरेन । राबिटक দেশিতে রাজি ভিনটা ব্যক্ষিয়া গেল। ছাথের পর ছব. রোগের **नत्र चारवान्। चन्नकारवव नत्र ट्यारिया काहात मा काम मार्ट्स** ? ভল্ন চন্তালোক পর্বাভের শিখরে শিখরে কি এক অপূর্ক শোভা ধারৰ করিল। সেই গভীর নিস্তর্ভার মধ্যে জ্যোৎসালোক (का क्रिकां जिन बात जेकातिज इहेन,-- अक्रकुशांदि (क्रवनम्, ত্রজকুণাহি কেবলম্, ব্রজকুণাতি কেবলম্। সেই গভীর শব্দ তিন बात भक्षरकत मृत्य मृत्य, शब्दरबद दकछित्त दकछित्त, व्यवगा-বীর ষ্ধ্যে মধ্যে প্রতিধানিত হইল। তাঁহারা যাত্রা করিলেন। तिर्दिष्ठ (पर्विट्ड वाजि वाजांड इर्रेग। श्रुविद वाजांड वांव বহিতে গাগিল। কেছ বা অনিদ্রার কাতর, কাহারও বা কুধা कृषांत्र कर्ष क्षक हरेबाहरू, काशत आत शा हरन ना। किस शखना फ्रांटम बाइटकरे करेंद्र । शीर्त शीरत हिनता त्मरे निम লাড়ে চারিটার সময় তাঁহারা চেরাপুঞ্জিতে পৌছিলেন। রাভা ্ত্ৰীতে কলেক অন তাহাদিগকে পুঞ্জিতে অভাৰ্না ক্রিয়া লইমা বিমাছিলেন। বাবু হীমানণি বার প্রাকৃতি করেক জন नेषु छीहात्वत्र थाकिनात्र ७ छेनानुमानि कतिनात बद्ध छुहै बामा वर्षत्र वरकावक कतिया जाविशाहित्यन। विशः वरेटकरे त्यमांक व्यक्तिशंक ज्ञान (मध्या व्हेशक्ति। छावाश ७ त्रहे मध्य मानिया देशकिक इंडेर्सन, नकरमत्र चानरकत्र नीया तरिम ना। क्षेत्राद्वत क्रेत्राष्ट्र क अञ्चत्राम दर्शिया श्रारम जामात्र नकाव रव, थक बम राष्ट्रीटक शैकिक बाबीबटक स्थानवा वहे 58150 गरिन पृत्य चात्रिशाहित्नम ।

कृतकान विज्ञासम्ब यह गकान छेनाममा शृक्ष छेनावड वरेरमका तुर लगाक विज्ञान बरेग। सांत् वस्त्रमध्य त्रवे विग छेनामसङ्ख्यास अध्यक्ष ६ फरणाड आवत्रमंत्र छिलि विश् विगाद अक्ष समझ बुक्ता गाउँ मारसस् । क्षत्रमा सानु विज्ञीन চক্ত দাস উহিচের আসমতের কারণ সংক্ষেপে ব্রাইরা দেন আনং চেরাপ্রিত রস্থাণ বে উহিচিপকে সাদরে এবণ করিরা-বেন জন্ম বিষয়ের আয়ান করেন। সেই সভার প্রবিদের কার্য আপানী বিজ্ঞাণিত হইকে রাজি ১০টার সমর সভা ভঙ্গ

्रिक्षाक्रिया अवेदार्था जनाम डेनाममा भूरह डेनाइड हरेरन প্ৰাৰ্থ প্ৰতিকাশ সময় উপাসনা আৰম্ভ হয়। বাবু ভাঙিৰ क्षेत्र मन्द्रि वनाममा करमम थपर खायपर्यंत्र मून नका नमुसान राक्षा अक्षान अध्यान नवांग्य व्यूनित्तन नविक विद्यान श्वीमहित्र नव श्रीर ५३ छोड नमर नहां हर । पहःगर र्मिमार्च बहुद्रन मुसंबाद वानांत्र जानमम कविरन छीहारवत गॅडिके छवाद बाखुम्बाक मरकामन ७ धर्म विदश्य कानक মালাণ হয়। ১২টার পর পুনর্কার আলোচনা সভার কার্যা व्यात्रश्च एव । (शोछनिक्छा, और्द्धेत्र मेथत्रम्, व्यवहात्रवाम, বিষেক, আত্মা এবং জীষ্টধর্ম, হিন্দুধর্ম ওপ্রাক্ষধর্ম সংক্রান্ত অনেক অটিল বিষয়ের আলোচনা ও মীমাংসা হয়। সমাগত লোক্দিপের মধ্যে চেরাপঞ্জির ভাবি রাজা ও ব্রাক্ষ ধর্মান্তরাগী केरहक अन वानिया बच्च हिरातन। हातिहाद नव बहे नछा छन्न হইরাছিল। রাজি ৬টার সময় পুনরায় স্কলে স্ভাগৃহে আগ-त्रन कविरामन । मछाशृंशी भूनदात लाएक भविभून हरेम । किছू কাল সমীত ও সংকীর্ত্তনের পর রাত্তি ৭।টোর সময় উপাস্ন। व्यावस्त्र हरा। वाव वाधन भिः छेशामनात कार्या करवन ; छ० शरव . বাবু ভারিণীচরণ নদ্দী "ভাক্ষণর্ম ও ত্রকোপাসনা সহকে এক বজ্তা পাঠ করেন এবং বাবু রাধন বিং "আমরা কেন ত্রাক্ষ धर्म शहर कति" धहे मधर्म धक समप्रशाही वकुषा राम।

উপাসনাম্ভে বাবু অজেন্তনাথ চেরাপুঞ্জিত বন্ধুদিপের আগ্রহ ও উৎসাহ এবং তাঁহারা যে শিলকত বন্ধুদিপকে সাদ্ধে গ্রহণ ক্রিরাছেন ভজ্জন্ত ধন্তবাদ প্রদান করেন। তৎপরে বাবু গিবীশ চন্দ্ৰ দাস সভাকে অভি স্থাৰের সহিত জানান বে বাবু কুঞ্ধন রায়, বাবু অয়কিশোর, বাবু কুসিং ও বাবু জন রবার্ট ব্রাক্ষ ধর্ণের আত্রর গ্রহণ করিলেন, তাঁহারা গেলাপুঞ্জিতে যাইয়া ব্ৰাহ্মদুমাৰ সংস্থাপন করিবেন, তথার তাঁহাদের সহিত আরও . ১৪ জন লোক বোগ দিবেন। এবং মৌস্মাইস্থিত বাবু সিমি-রন ছই মাল পরে ব্রাহ্মসমাজে বোগ দিতে ইচ্ছা প্রকাশ করি-রাছেন, এই ছই মাস কাল তিনি ত্রাহ্মধর্ম্ম সহছে গ্রন্থানি পাঠ कतिरदम। हेहारमञ्ज मकरनहे चरनक मिन श्रहेर्ड এरक्यंत्र-वासरे व्यक्त वर्षा विवश वृत्रिशाहित्तन अवः बाक्यवर्ष शहरतकः ছিলেন। যৌদমাই স্থিত দিনিয়ন গত ছই মাদ যাবুৎ নিজ श्रीरम अरक्षेत्रवाम आठात कतिराज्यक्त । वाव निवहत्व द्वारा केंगद्राक इरे बहुत बाटकात मात्राःम थामिता ভाষার সকলকে बुक्षादेवां (पन ।

এই রপে যাত্রি ১১টার পর সভা ভল হইল। থাসিয়া ।
বিদ্বাধিকার সহিত আলাগ ও আহারাদি করিতে রাত্রি ০টা
বাজিয়া গেল। পর দিন প্রভাবে সকলে পৃথিবীর মধ্যে সকা
কার্যান বৃষ্টিছান চেরাপুত্তি ছাড়িয়া চলিলেন এবং রাত্রি নরটার
বৃষ্টাই বিশ্বং প্রাশ্বসাল গৃহে উপস্থিত হইলেন ওথার বছুগণ

ভারদের অপেকা করিছেছের। সর্কসিদ্ধিরাভা পরবেষরকৈ ভথার ধন্তবাদ দিরা লকলে আস গৃহে চলিরা গেলেন।

এক উদ্দেশ্যে এক কাৰ্য্যের জন্ত এক গুলি বোটকে বিলাদ কি আশাপ্রোদ নহে ? ইহাদের এক গুলাকা কটসন্ধিত্ব জ উৎসাহ দেখিয়া কি মৃত প্রাণেও আশার গঞ্চার হয় না ? জ্ঞা-বান ইহাদের মঞ্চল করুন।

বাজবদ্ধণণ ! এখন আপনালের সাহায্য ভিন্ন এ কাজ ওলিবে
কিরপে ? আপাততঃ ভালগদের সত ও বিষাস, প্রকোপাসনা প্রণালী ও বালগদানীভি বিষয়ক জিন থানা পুত্ত থাসিলা ভাষার প্রকাশ করা নিতান্ত প্রয়োজন । থাসিরা ভাষার এই সকল পুত্তক লিখিত হইরাছে। অর্থাভাবে কি এই সকল মুক্তিত হইবে না ? মৌধার বাজারমাজ গৃহ জীর্ণ হইরাছে। অর্থাভাবে মেরামত না হইলে এই বর্ষাতে হয়ত ইহা ভূমিসাং হইবে । এমন সমর কি আপনারা নিশ্চিত্ত থাকিবেন ? এই সকল সৎ কার্যো আপনালের সাহায্য একান্ত প্রার্থনীয় । অধিক লেথা নিশ্বব্যাজন।

প্রেরিত পত্র।

(পত্তবৈরকের মতামতের লক্ত স্কুলাদক দারী নহেন)
ত্তাক্ষাধর্ম্মের মত ও বিখাস।

ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিখাস সম্বন্ধে গভ ১৯ই পৌষের ডল্ব-কৌমুদীতে আমি একটা প্রাবদ্ধ লিখিয়াভিলাম। গভ লো ও ১৬ই চৈত্রের উক্ত পঞ্জিকাতে শ্রীযুক্ত বাবু কুঞ্জবিহায়ী সেন তাহার উত্তর দিয়াছেন। বোধ হয়^{*}অর দিন মাত্র **হইবে, এ**ক্ষি সমাজের সঙ্গে তাঁহার আত্মীয়তা হইয়া থাকিবে এবং সেই ক্ষুই তিনি ব্ৰাক্ষণিকে অন্ধ বিশ্বাসী বলাতে বিভক্তি প্ৰাকৃত করিরাছেন; কেন না ডিনি হর তো এখনও আক্সিগের ভিতরের সকল সংবাদ জালেন না। रे बाज ৩২ বংসর ত্রান্ধ সমাজের সহিত সংঅব রাখিয়া আমি ইছাই জানিয়াছি বে অক্সাক্ত ধর্মতাবলমীরা বেরণ, ব্রাজেরাও সেইরণ শব্দ বিখাদী; আমি ইছাও বৃঝিয়াছি বে, ঈশবপরায়ণ ভক্ত হইছে क्टेंटन अक्षिविधानी इट्रेटिक्ट क्टेंट्य। अक्ष विधान क्टेंटिक विमि যত মুক্ত হইরাছেন, উপার ভক্তি হইতে তিনি ভত ভুট্টি ছটয়াছেন—ইছা কুভর্কের কথা নছে, প্রভ্যক্ষের বিষয়। অভ-এব ব্রাহ্মদিগকে অন্ধ বিশ্বাসী বলাতে মহাভারত অগুদ্ধ হয় नारे, बाक्रमिटभन्न रशोन्नरवन । अर्थ रूप नारे। अर्थ विद्यामी কথাটী কুল বাবুর সহু হয় নাই, কিন্তু আমার শলের প্রতিবাদ कविरक निमा किमि किवन त्य बान्सभरणीय वाश्वी मृत नरका আঘাত করিয়াছেন এমন নতে কিন্ত ভিনি নিজেই আগাগোড়া ष्मक्ष विचारतत्र शक्षितत्र निर्वाष्ट्रमः। द्वा त्रक्श स्वयं अध्य থাকুল। কুল বাবু একছলে লিবিরাছেন, "এই সালাল চিঠিতে,উক্ত ওকতর বিষয় গুলির বাসা বিষদরলো করা প্ৰসম্ভৱ প্ৰভাৱাঃ তাহা সংক্ষেণে শি**ৰিক্ত ভূইণ।" কেবুল** কুঞ্ बार्व मुह्यू महद्य, श्किक चारनक थावक श्रमक क बादककी विस्तृत

छित्र श्रेमण्य निवन नेवरक नुबंद नेव व्यक्त व्यक्त व्यक्त नुबंद न्या क्रिक्त व्यक्त न्या क्रिक्त क्रिक क्रिक्त क्रिक्त

- (১) मन ७ चांचा। क्ष वांच् व छेडतक वक विवाध **भागातित निकटे दृष्टि छनिएक मन ७ छैएक्टे दृष्टि छन्छिक**ः আত্মা বলিয়াছেন। আত্মায় এরপা নাম বিভাগে ব্যুদ্ধিত ভত আপত্তি না^মধাকিলেও ভত্তবোধিনীয় **প্ৰান্তাৰ্যসৰ্বী**ছ**্তে** विजिल्लातक महीरतक स्तराम महमज्ञ स्तरम व्हेका बाटक একথাতে নিশ্চরই অনেকের আপত্তি আছে। আমিও আই কথারই প্রভিবাদ করিয়াহিলাম; কিন্ত কুঞ্জ বাবু এসিবলৈ 🖔 अक्षादा मीत्रव इदेगारहन। भतीत्र स्वर्रभन्न महक्षः ज्ञानः मरमज्ञ श्वरण इत्र वीशांवा वरणम, छीशांत्वत मूक्ति थारे दिन, এই সংসায়ই কুপ্রাবৃত্তি সকলের নীশা খেলার ভূষি, লয়ীবের পরিচালনা বারা আমরা এই সংসারে কুপ্রবৃত্তি সকলের পরি-চালমা করিতে সক্ষম হই ছত্যাং শরীরের ধাংশে কুপ্রবৃত্তির व्यवीर जीवाटमत व्याचात मत्मत्र व स्वरण वरेत्रा थात्क। क्ष्मिनी ঠিক নতে। শারীর ধবংশে বলি কুপ্রবৃত্তির ধবংশ তর করে। कुलाबुक्ति जनरागत्र श्वास्य एवं यमिएल स्टेर्स . निमाना भृतीत व्यवन्त्रम कतित्रा स्थमम निकृष्टे व्यवृष्टि गुक्त गतिहानमा कति, त्महेक्ष्ण रमहे भंतीय अवनयन कवित्राहे आमका आधारमञ्ज উৎकृष्टे दृष्टि गुक्त পরিচালন করিতে সক্ষম ছই। पद्मीव नृष्ठ निक्षेष्ठ वृद्धि नकरणत कार्य। एकन, महीत नृष्ठ 💆 वृत्ति नकलात कार्या अस्ति है जिल्ला, त्कर क्षम अस्ति नारे, करम नाहे। अनुदक्ष विनि पांश पर्णन छारा कानमूनक महरू मछामृतक मार्ट, छाड़ा (करन कवित कन्नमात्र कथा, क्या বিখাসের কথা। মৃত্যুর পরে আত্মার অক্সিছ সীকার করিলে। ভাহা বে কোন এক স্থানে অবস্থিতি করে ভাষাতে কেই অবিধান করিতে পারেন না। স্তরাং ছই চারি শক আছি। -- विरुग्रहः वाष्ट्रांनी जांचा नकन अक्टब बाकिए जांकर कृषातृष्टित गतिहासमा अबीए भवलाते विवास विवासकार विकास हिश्या कतित्व मा देश कद्भवाद्यदे व्यमक्षय भूषा। व्यमका 4411
- আৰু বিশাসের পরিচর দিরাছেন। সে সকল কথা এখন
 থাকুন। কুল বাবু একছলে লিখিরাছেন, "এই সালাল্ত
 ক্রিডে উক্ত শুকুতর বিষয় প্রলিয় ক্রালা বিষদরালে করা
 ক্রিডে ইন্ডে শুকুতর সংগ্রেম প্রলিয় ক্রিডের ক্রিড

TO SERVE STATE OF THE SERVE

त्यक गुलका स्थान समाच्या है। बहुकर परिवारन fact officers, while courses where wifinite office सिर्मन माहे। किनि स्वत नेश्वनिद्धांत जावित प्रक्रिय क ভাষায় ক্রমণ্ট উর্ভি ছীকার ক্রিরারেন, তথ্ন ক্রম বিকা-त्नित्र निवस्त्राईनिरिक्ष छांदात्रा ८६ कर्षाक्षरंग व्याप्य व्याप्य समुद्रा कवा धनर मूनकात कर्च स्वारत यस्वाच स्टेटक विकृष्ण स्टेश जन्म ণত কুমা গ্রহণ করে, ভাষা স্বীকার। করিতেই ছাইবে। স্টাইর ক্রমণঃ ইরতি হওয়া ত্রাক্রথর্মের একটা মূল্যবাদ সভ্য। बक्षा जाना जबक क्रित्र कित गर्भ क्रमण्डे क्रितंत करेटन, আৰু পণ্ড আছা কৰা ও ৰুত্য হইয়াই একেবাৰে ৰুস্কিতে वहिर्द, मिखांच अर्थ मा इरेश्न, निर्द्धात ना व्हेरेन स्कर अक्या बूट्य जाबिटक शांतम मा। कृषि कामि नकरनहे अक স্মান্ত পাঞ্চ ছিলাম এবং পশু হইতে জ্বামে মত্বা ইইবাছি। গৌজাৰি ভাগে করিয়া, লক বিশাস ভাগে করিয়া একট্ চিতা ক্ষিমা বেধিলে সকলকেই একৰা খীকান ক্ষিতে हरेता क्य नातू निषिद्यादहम जाचात्र भूनर्जन रखना जनस्व (क्न मार्श्वमू प्रमानवाद्वत्रम छाहा चीकात करवन नाः। "विष्णु धर्ममकात चौकात करतन मा--- अफ এव द्यामा रहेश (व सर्च-(वाप्र गूनर्कमा नाहे!! এই উमविश्म भठाकीएक विनि अक्या বলিকে পারেন, ত্রাক্ষ্মিগকে অন্ধবিশ্বাসী বলাতে ভাঁহার वित्रक एक्ष्मा क्रेटिक सद्द। (म वाहा इप्रेक कामि किळामा कति, हिम्पूर्णनकात्रभग गणामणाहे कि मसूरवात्र भूनर्कता वीकात करतम ताहे ? जछान्छाই कि हिन्दू नीट्य प्रश्रदात श्रमकट्यप काम क्यात्र উল্লেখ নাই ? जामि वनिष्कृष्टि हिन्दू नर्गनकात्र-গ্ৰ-ভাছা শীকার করিতেন এবং আমার একবা প্রমাণের अब जामि हिन् नाब रहेट लाक छेड़ ए पत्रिका निर्छि :--यथा, "बानक बचानकार च विहातर हिकीर्वेडि । विहात्त्रव বিনটারাং মালারাং সিবাতে প্রম্ ॥" (शक्षतभी) "नाशक অনেক জন্ম পর্যান্ত উপাসনা করিয়া আত্মতত বিচারে নষ্ট হইলে রভ হন। আছেত্ব বিচার বারা মোহ দেশ মছ্বাাদি উপাধি বিনষ্ট ছয়। তথন তিনি নিতা "সংস্থার-সাক্ষাৎ-করণাৎ ব্দবিহাতি করেন।" পুর্বজাতি জানম্।" (পাতঞ্বলদর্শন) "সংঘ্য হারা ধ্বন চিম্বাত খৰ্মীৰৰ্থ প্ৰভাক ভূত হয় ভখন পূৰ্মকল ব্ভাত भ्यमेष्ठ स्टेट्ड शांत्रा यात्र।" "निमियः निमियाद्यः या, मनाविम-শৃষ্ট্ৰি, শভ জন্মাৰ্কিডং পাপং ডৎকণাদেৰ নশুতি—কান সৰ-ननी छड ।" "विनि निरम्य वा निरम्यां कान छ नमाधियुक इन **किश्ति नक क्षेत्रार्किक भा**नतानि कश्क्रमाथ विमुख एव ।" क्षांत्र भिषिक छेक क क कि बहुत्र । आयात्र कथा, रिजू विकासिका स्वि विलय हेशांक वाश व् किर्य काराहे नावता वाइरवाः कुछ वान् अक प्राम विनदारसने (व, विन्मू ७ खारमद वर्ग अफ मंख (त, जाका अकाशिक वात बचार्यर्ग करत मा, **एटवं विक्कृती ज्याचात्र जूमाः जूमाः ८१४ वातम जीमात्र कटाम,** वात्यता कांद्रा विकास कटलेग जा । किस दिन्द्रा देव ज्यापात पुनः पुनः क्या अवन बीको क्रांतन क्रांता क्रांति क्रियान क्रांति पतिगाम । अवस्था जानाम जूनाः स्टाई त्यके बामन नर्माटक विश्व

बीगरक देखा कति। क्षिति कामात भूकी भरत कि कार्य भूत-र्कन क्या रायभाव कविषाणि कृत यातृ अक्या चामारक विकास अजियाक किमि निष्य छेवात्र या कि वर्ष करतन कारात्र किहू आफ छिलाच करवन मारे। यादा शृद्ध कि हिन नी, शरप हरेन देशरकरे विन "छिनि छना वर्णन, छर्व हिनि हेना कामिद्दम दय, त्कदन भिन्नीदात मरह, आचात्र श्रमः " পুনঃ কেন--একবারও লাভ হব না। মৃত্যুর পরে শরী-রের পরসাণু সকল বেমন পরমাণু পুরে মিশিরা যার, আবার কভক প্রমাণু সেই প্রমাণু পুঞ্চইতে পৃথক * ছইলা দুভল পরীর ধারণ করে, দেইরূপ মৃত্যুর পরে আমাদের चाचा चर्धाः काम महे जानच काम वस्त्र मिनिया यात्र धरः जावात तमक विरमस्य अक्ट्री कनामां कान रन है जनस कान ছটটে (কুঞ্চ বাবুর ক্ৰাকুদায়েই বলিতেছি) পূণক হইরা ব্দাসাদের আত্মা নাম গ্রহণ করিয়া থাকে। এখানে বেষন শরীরের, শেইশ্লপ আত্মারও একবারও অন্ম হর না প্রমাণিত ∌ইতেছে। বাশ্ববিদ কথা, কি হিন্দু, কি মুশ্ণমান, কি খ্রীষ্টিশ্বান সকল দেশে ও সকল কালে আবালবৃদ্ধবনিতা সকলেই সান্মার এক দেহ ভাগে করিয়া অন্ত দেহ গ্রহণ করাকেই পুনর্জন্ম বলে। ত্রাক্ষেরা এরূপ পুনর্জন্ম স্বীকার করেন না, কিছ তীহাদের নিজের কথার কোন প্রমাণও দিতে পারেন ना, काई कामना बामारमंत्र शूर्व शर्क अविद्यान केला कान-রাছিলান। কুল বাবু ভাঁছার পত্তে "আছাই তান" "ভানই আস্বা" এই প্রকারে ভিনি অনেকবার জ্ঞানের উল্লেখ করি-बाएक्त। स्थानहे चाचा कि नां ति नवत्त चानबा क्वा বলিৰ না কিন্তু তিনি ঘুটধানি পুতকের দোচাই দিয়াছেন, ভাহাতে এমন বিশেষ কি যে আছে ভাহা ভো ব্ৰিভে পরি-"আমি বনিছেছি ইহা বৃক্ষ, অভএব ভোষাকে বিশ্বাস করিতে হইবে ইহা সভাই বৃক্ষ।" উজু প্তক ৰয়ে हेशांत अधिक आत किছू आहि कि ! ति गारा रहेक, स्नानरे বৰি আত্মাহর, তবে জানের উন্নতি অফুরতি, বৃদ্ধি ও লর পাওরার সঙ্গে সঙ্গে আত্মারও উরতি অমুরতি, বৃদ্ধি ও লর इहेबा बाटक हेडा चीकाब कविटल इहेटर कि मा १ वर्ष कानीब আত্মাবড়, আর জ্ঞানীর আত্মাছোট মনিরা জানিতে হটবে कि मा ? श्रीकांक देवश वाहराइट्ड कार्मात नकन क्षत्का नमान নছে। গর্জ মধ্যে ধর্মন ক্রশ শরীর অবস্থিতি করে তথ্য জ্ঞানের অর্থাৎ আত্মার কোন চিক্ মাত্র পরিণক্ষিত হর না; শিশু ভ্নিষ্ঠ হইলে আছার চিক্ অভি অল পরিমাণে দেখিতে পাওরা ধার, वहन वृद्धित मान मान कारनत्र वर्षार वाचात्र वृद्धि वहें, उ থাকে, জাৰাত্ব মৃত্যুর ২৮১ মিনিট পূর্বে আছা আছে বা আন্তার কর পাইরাহেছ ভাষী প্রার ঠিক করিতে পারা যার না। এল্লপ অবস্থায় পেরীরের ধ্বংপে বা রূপান্তরে আত্মাও লোপ व्यक्ति इंडेटन कि ना 🏲 峰 क्यांत्र উत्तत जामाटक एक मिटन ? শশ্রীয় শিক্ষ হট্ভে সুক্ত হটয়া আত্মা বিশুদ্ধ জ্ঞান শাভ क्त्रिरंग, क्षेत्रदत्रत्र सर्वा लेहेंचे क्षेत्रण स्थानत स्ट्रेटन।" अहे दर अरू क्या हेड्डा (करन पास दिशारमप्रहे कथा ; विश्वस स्थान वा नव-वृक्तिक कवा महर । आमित अञ्चल यह विधान कतिमा शाकि;

আমার ইহাও বিশাস, আমার স্লাম অস্তান্ত ত্রালোরাও এইরূপ अक विधानहे कतिन। थाटकन। आमिटकन पूनलंब अनेहे यनि थाकिक, करव जामारनत श्रस जरबाद गांग श्रांत्र क्या बहेन थाकिछ बारकता अरे रव अक क्या नानम, कुन वार्व अक्थारक খুল্যবান মনে করেন না অখচ ভিনি নিজেই বলিলাছেন 'আমি' এই জন্ন ব্যতীত যথন আমার**্জ্ডিছ সভ**ৰে না, वर्तमान त्मर भारेवात शृदक्षं 'कामि हिनाम' এरे कानरे वर्षन আমার নাই তথন পূর্বজন্মবাদীদিপের যুক্তি কি করিয়া সার-বান বলিতে পারি ?" আমি জিঞাসা করি' শিও ভূমিট হইবা মাত্রে, বা মৃত্যুর অব্যবহিত পূর্বের, বা ত্রুণ পরীর মধ্যে পাত্মা व्यवश्विक करत्र कि ना १ वित करत, ज्ञाद कथन व्यासारमञ्जाचा জ্ঞান থাকে না, তথন (আমি পূর্ব্বেও বলিয়াছি এখনও বলি-ভেচি) মৃত্যুরণ ভরানক পরিবর্তনের অবস্থার আমরা একে-বাবে বে পূর্ব জম্মের কথা ভূলিয়া বাইব, আত্মজান হইতে বঞ্চিত হইব তাহাতে আর আশুর্বা কি 🕈 কুঞ্চ বাবু আমার একথায় কোন উত্তর দেন নাই কেন ? কোন বিষয়ের মীমাংগা করিবার সময়ে নিজের স্থাধি। মঙ কথাটীর আলোচনা করিব অথচ অক্তান্ত গুরুতর বিষয়গুলি চাপিয়া রাখিতে চেষ্টা করিব--ইহা ঠিক নহে। পূর্বজন্মবাদীদিগের যে সকল যুক্তি আছে আমরা বিশেষ করিয়া এবারেও ভালার উল্লেখ করিলাম না; याहाता शृक्षकम नाहे बलन कामना (कवन धवादन छाहातनत যুক্তিরই অসারতা প্রদর্শন করিতে চেষ্টা করিলাম। এবিষয়ে বাঁহার বাহা ব্যক্তব্য আছে এই তত্ত্তেমুদীতে ভাছা প্রকাশ करतन देश क्रकांच श्रीर्थनीय।

(৩) ঈশবের সর্বজ্ঞতাও মহুষ্যের স্বাধীনভার সর্মন্তর করিতে গিয়া কুঞ্জ বাবু অনেক কথাই লিখিয়াছেন কিন্তু তাহার একটাও কাজের কথা বলিয়া বোধ চয় না। "এই প্রশ্ন মীমাংসা করিতে না পারিয়া কেহ বা জীব ব্রহ্ম এক ভাবিয়া খোর অহৈ-তবাদী হইয়া পাপ পুণা অবীকার করিয়াছেন" কুঞা বাবু একণা বলিয়াও, মুণে বৈভবাদী হইয়াও ডিনি বাহা লিখিয়া-ছেন ভাহাতে তিনি নিজেই অসাবধানে অধৈতবাদ ক্রিরাছেন। সে সকল ভাষা হৈ ব এখানে কোন বিশেষ উল্লেখ করার তত প্রব্যোজন দেখিতেছি ना। धाषाविकः विषय मधास कृष वावू निधियारहम त्य, "बीव তাঁহারই (ঈশরের) কর্তৃত্বে চলিতে চলিতে কেবল এক धक्रात धिनक अनिक मूथ (क्रताहरू (हड़ी करत-हेहाहे ভাহার স্বাধীনভা। धितक धितक मूच रकताहरक वर्षाद উষ্ণবের ইচ্ছার বিকল্পে কার্য্য করিছে—এক কথায়, পাপ কাজ করিতে জীবের যে চেটা তাহাই ভাহার স্থানীনতা ! ७ रति ! এতদিন পরে তবে कि ইशहे शिका कतिए इहेरव (व, भाग काल कतिवाद खछरे सामत्रा वादीनका शारेताहि ? ंगान कार्यात्र हेव्हा वा त्रहेश्यक्त कि कामारमूत्र वाशीनका विगटिक हरेटव ? ज्यानन कथी जहाँ दक्यन लाल कांग्री कड़ि-ंबात प्रकृषे तः कामना पानीनका नाहताहि काहा नहरू ः (चन्द्राहाबीकारक्ष चारीनका नरम ना—चोबीनकि चर्च च व्यथीमका बुकाम । व्यामि व्यामीन निरुवन व्यक्ति वृद्देशक

मामि पारीम। मानि एक 🕆 मी, मान शैकि, रेम्हा (करने कान्, वी (करन अक्षा क्रक्रि, वा (करन देखानूनाटर कार्य क्यारक बाबीनक बाल का, किन्द्र काम खीं है रेक्टी क्षरे किरमंत्र नहरवारंग, क्षरे किरमंत्र मरफ रव कार्या कता स्त्र क्षांहारकरे कामारमञ्जूषायीन कार्या बना वार्टेस्क औरव्रः। स्वयास আমার সাধীনতা, সেবানে আমার কর্তৃত্ব বর্তমান বাকিবেই थाकिरत। क्बि रा कार्या जान जामि कत्रिन, रक्कि रक्कि वरमतं भृत्यं क्षेत्रक यथम छोहा क्षांनिया त्राधियाद्यम ऋखताः अक प्रकम यथन छात्रा क्रिक क्यारे प्रशिवाद, उथम आमि স্বাধীনভাবে কার্যা কি আকারে করিছে পারি ? স্থানার निरमत कान खींक रेव्हांत व्यक्तिमरक वामि कार्या क्रिक्टिक সক্ষম, একথা কি প্রকারে বলিভে পারি ? কোন কার্যা করি-वात नगरत जोमता (य जामारमत कर्जन जम्मन कर्ति मी क्रेमन নহে, আমরা তাহা অভুতৰ করি কিন্তু রক্তৃতি মুর্র ভাষের ভার হর, তাহা আমাদের প্রম, না হর ঈর্বরে স্ব্রিভি নচেন ইহাই বলিতে হইবে। কিছ আম্রা অল বিখাসী, আমর। আমাদের স্বাধীনতা ও ঈশবের সর্বজ্ঞতা উভরই স্বীকার ও বিখাস না করিয়া থাকিতে পারি না। এই সকল কারণেই আমরা পূর্কে বলিয়াছিলাম যে, অক্তাক্ত ধর্মফাবলম্বীনিদের ষ্ঠার ত্রান্ধেরাও অন্ধ বিখাসী এবং তাঁহাদিগের মধ্যে উপযুক্ত উপদেষ্ঠা ও উপযুক্ত প্রচারক নাই বলিরাই ক্রমে আন্ধ সমাজের অধগতি হইতেছে। ছঃধের কণা বলিব কি, ব্রাহ্মধর্ম প্রচা-রক মহাপ্রেরা কভকগুলি অন্ধ মত লইরা ধর্ম প্রচার করিরা থাকেন—ভীছারা যে সকল ধর্মতকে সভ্য ধনিয়া বিশাস করেন তাহা তাঁহায়া অভ কাহাকে ভাল করিয়া বুবাইয়া দিতে পারেন না, এবং তাঁহাদের সমান্ত মধ্যে এমন কোনও গ্রন্হ বাহা পাঠ করিয়া তাঁহাদের ধর্মত সকল ভাল করিয়া বৃষিত্তে পারা যায়। এই সকল কারণেই আমরা অভ্যস্ত কোভ ও হুঃধ প্রকাশ করিরা পর্য বিশিয়াভিদ্যাস, वाक्रमिगरक गानि (मञ्जा वा अनम्य कता आभारमञ्जे केरमञ नरह ।

কানপুর ২৭শে এপ্রেল ১৮৮৯ i

ঞ্জিভগবতীচনৰ দে।

अर्वाष्ट्र।

ফ্রীপাশ শ্রেদান; সামরা আনন্দের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে পূর্ব বালালা রেলওব্রর ম্যানেলার জীয়ার করিতেছি যে পূর্ব বালালা রেলওব্রর ম্যানেলার জীয়ার করিবানে বিনা আড়ার প্রমণ করিবার অন্ত চুইবানি পার জারান করিবাহেন। তক্ষত কার্যা নির্কাহক সভা ভাঁহাকে: করিবার বিরাহেন। তক্ষত কার্যা নির্কাহক সভা ভাঁহাকে: করিবার বিরাহেন।

सहिया । नागाम सामानहारण वार्षिक कृष्ण विश्वत क्षांनिक दहेंबारक क्षेत्र काला वृह्णांक है। न नाहांकेटन क्षण क्षण रामक्षेत्र केन क्षण क्षण नाहरक नाटक ।

a transferring i British night of the colors of assistationalists of colors and a significant of the colors of



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাকিক পাত্রকা।

) रूप काम । क्य मरबाग ।

১৬ই देवार्छ वृश्वात, ১৮১১ শक, विकास ४०

বাৎসরিক অগ্রিম মৃল্য ২ ৪ -মফরলে ৩ প্রক্রি বড়ের মূল্য ৫ -

জীবন ও মরণ।

ভোনাকির আলো আকাশের গার আলে বিটি বিটি, পুনঃ নিভে বার; এই মৃত্যু, এই জীবন-সঞ্চার; এই কীব আলো, অমনি আঁধার।

ঠিক এই মত শীবন আমার,

আৰ্দ্ধ আলো তার, অৰ্দ্ধ অদ্ধকার;

এই অনে উঠি, এই নিয়েছ বাট;
এই কৰে আছি, পর কৰে নাই।

ভোমার আলোক ববে প্রাণে ধরি, ভবে বেঁচে থাকি, নডুবা বে মরি; কতবার বরি ভোমারে হাড়িয়া, তব লাগে পুন: উঠি বে বাঁচিয়া।

না হবে আঁথার, না রবে মরণ,
পাব নিভাজোতি,—অসর জীবন;
ফুবে সেই ভাবে জীবন আমার
ফুরিবে হে নাথ। বল অধিকার ?

मन्नामकीय मस्या ।

तृष्य-वाणिका ;— এकी वर्ष वेशाम कहिए (गरम अकी एक इक-वाणिका कहिएक रक्ष। अरे वृष्य-वाणिकारक मिल वृष्यविश्वरक मानवा अविभागन क्या एक। स्मारम अविद्यन विषय मिलानुक मानवारक वाण्डियम केम्ब्र करेरक उच्चा केना वेद, कामन मिला रव केवान मह कविरक मारम मा, जाशास्त्र वातारक क्षामा एक , इव मिला महिरक मारम मा, जाशास्त्र केक वरत वाला क्षामा स्थान क्षामा मानवा मानवा वाण्डिक कामन व्यविष्ठ, मन मानवा मिला कामा क्षामा अविद्यान वृष्यका मानवा वाण्डिक, मनम क मानवा क्षामा क्षामा अविद्यान वृष्यका मानवा वाण्डिक,

फिशारन टामच रमस्य दान्ति कता हत। वर्षमान नगरन त्मिरिक्ष भारे जार्बरे मका मन्द्रकड्ड गकरा धाकांत्र मःसात्र हिनाहर । देश्म**७ एडेएक नावमात महस्रो**त्र अक टिहेनी खाणा यशम कृतियात व्यादाचन करेना स्वातिक स्वरकन् वाहेष्ठे वाकृति त्यन किटेल ये। वाक्किया अपनी पूज मन दी वितन, त्यहे मनते व মধ্যে নৃতন ব্∰াঙলি ৰঙ্কিত ও প্রিপ্ট ইইতে লাগিল। ভাঁহারা নিরন্তর ভাহার আচারে বান্ত রহিলেন। ক্রনে ঐ সভ্যের বল বধন বৃদ্ধি হইল, ভধন ভাহঃ প্রেলভ ক্ষেত্রে পরি-वाक्ष इरेश निकृत अवर अवस्य बामविधिक निवरिक कतिशा (किनिम। अहेन्नम हेरनश्च इहेर्फ मान्य ध्वना, पूनिश (मंत्रता चारक्रक त्याव रहेंने, करत्रकबन मानत वाद्विक व्यवस्य মানবের ত্রাভূত্ব রূপ মহাসভা ক্রবের ভাল করিবা ধারণ করি-লেন; তাঁহারা সেই কুল দলটার মধ্যে অতি বত্নে নৰ সভা श्रीतिक (शावन क्रिक्ट नाशिस्त्रमः , गाँछात्र वन विक्रम यसन বিশ্বিত হুটল, ভব্ন ভাছা বিশ্বীৰ্ণ কেন্তে পরিব্যাপ্ত হইল্ এবং অবশেষে রাজবিধিকে পর্যান্ত পরিবর্তিত করিয়া ফেলিল। সুরাপান নিবারিণী সভার কার্যাও এইরপ। অধ্যে ছই চুর্নি-क्रम त्नांक प्रमथक स्टेरनम, काशायत केरवाण ७ ८५डाट मछा थनि पिन पिस छेव्यन ७ अयन इहेर्छ नामिन। व्यवस्थान ভাহা বহু বিস্তীৰ্ণ ক্লেন্তে ছড়াইয়া, পড়িয়াছে। পুৰোক্ত সভাটী শ্বনৰ রাখিলে ইহা আৰৱা বৃষিতে পাবিৰ বে ত্রান্ধ স্মাজ ভারত কেন্দ্রে বৃক্ষ-বাটিকার ভার। বে সকল সভা উত্তর कारन कांत्रक न्याकरक नवकीयन विरय ७ नवकारय शर्मन कतिरव भागवा (नरे नरून, नकाह्क क्यासन्याक मध्या (भावन कतिन, क्षडे मन्द कार्या विशाणी हैहारक नियुक्त कतिबारहन । जानात এক একটা আৰু পরিবার এক একটা কুল বৃক্তবাটকার স্থার; बाक्तमान याना त्र नकन मठा व्यक्तिक कतिएक हरेतन, कारात व्यक्ति नर्नात्य शहियात मृत्या कतिरक ब्रहेट्य । त्यय बाक्तिरगर भार्तिनाहिक कीवरनेत छे भन्न कछ पूर्व निर्फन्न करत्र !

বেখানে শক্তি সেই খানেই দায়িত;—এচলন লোক দ্বীয় কলে ভ্ৰিয়া ময়িতেছে, কুল নিয়া ছইজন লোক হান্ত, একজন নীভার ভানে, খনর জন জানে না। বল দেখি

जहारक देविहेबाब रहते कहा मदास नावित कारास विकास है সভরণ জানে ভাষার; কারণ ভাষার বীচাইবার শক্ষি আর্থ। धक्यन जाम पनि जामनवास नपश्च देशान साम स्थापन निर्मा विक्रण महात्राच इन, जिनि वह देखिला व्यानकारक विक्रिक দিতে পারেন, আমিত ভাল ভাবেই কার্যা করিছে গিটাছিলান, त्नारक जामात्र कार्या वाशा भिन, जानि कि कड़ि, जानि টচ্ছা সংস্থেও কাজ করিব। উঠিতে থাকিলাম সা। কিন্তু পরিক बात मयत्त्र ७ अञ्चल कथा विभिनात द्या मारे। मासूब महम कतिरा जाननात निवाहरक मिन्न केन्द्र र क्षेत्रम कतिया निकृत्क भारतः; भागनात निक मखान विकार है हिन्दी निका तिरक भारतः (मथारन छाहारक वाशा विक्रीत दक्ष नाहे। दुम्बादन আপনার ইচ্ছামত কাজ করিবার শক্তি শাছে এবং বাধা निवात (कर् नांदे ञ्डताः (मशास कामारम्ब मात्रिक करिक। क्षेत्र कान कामारम्य करूत क्ष्यन अ निकृष्टे रय नारे ; সেই অভ আমরা এই ওক্তর কাবোর এতি উদাসীন রহিয়াছি।

কোপন স্বভাবের ন্যায় পারিবারিক স্থথের শত্রু আরু নাই ;—চিস্তাশীল ব্যক্তিরা বলিয়াছেন বে অভ্যাচারী ও थ्यकाशीएक क्राकात वारका वाम ७ मनर्भ शृंदर वाम-इरे नमान। भमर्भ शृह् वाम कतिया अक माख्य कच्च मान नाचि बादक मा ; नि: १५७ मत्न निष्ठा याष्ट्रमा यात्र ना, कथन १९भन करत्र। নিশ্চর উল্বেখ্যের মধ্যে বাস করার স্থায় যন্ত্রণা আর নাত। कथन मर्भन करत, कथन मर्भन करत, এই ভঞ্ছ अधित থাকিতে হয়। প্রজাপীড়ক রাজার রাজ্যেও দেইরূপ।কাছা-वर्ष मान्त्र पाटक मा, कंचम काहात्र खर्जि पाठा।हात्र हत्र, अहे উদ্দেশে कान कारीहरेल रहा। किन्द्र भृश्यामी यपि कालनं-चलाव ७ चल्डाहाशी इश, जत्व दम शृहदत्र ममूनव পরিবনের ণক্ষে সে গৃছে বাস, সমর্প গৃছে বাস, বা অজাপীড়ক রাজার রাজ্যে বাস অপেকাও ভয়ানক। রাজা প্রজাপীড়ক হ্রলে চিত্তে প্তত একটা উদ্বেগ থাকে বটে, क्षित्र मिलत मार्था এমন ज्यानक नम्ब भा दशा यात्र, यथन बासूय निज भतियात्र भारतियान्त्र, আত্মীয় বস্থুল সহবাসকলে তাহা ভূলিয়া থাকে; क्लान चलाव ७ चलाहात्रो वाक्तित्र चरीत वान कविरत मिन वावित मध्य माखि शास्य मा। अक्रम मूक्ष्यत मःमधी चारनक तमनीवः कीवन विक्यत कहेता विक्यारकः। यनि न्यायता (काम आक भित्रवादत ध्रहेक्सण व्यवस्था त्विस काहा दहें । छरक्षार मध्य इत्र (र जाक्षर्य (मशास्य माहे। वेयत कृषाम वाकात समय गतिवर्षिण स्टेबारक दम' कथनरे 'अक्षाकाती' स्टेटक भारत ना। শतिवाध भतिवन, गर्ना छारात छविष हावारण वात्र करत । जाकारक त्रार्क्षण की बसुदक त्रविद्ध करक (बेटबन, क्षक्रवार जामधर्म यांत शत्रुवारत सूत्र 💥 महिष कामवन 🔅 विद्रष न्। शास्त्रम्, ऋष्य ठार्। बावश्यक् सम्बद्ध

and the miles and an cools in the second of the second of

वार्य-कारीयन दय कुटेर नजारका नाम, दनवका देन छटकर अपिक अमेत्र क्रम, जाप र्राप्त मृहितन महाकृष क्रम मा रमनान-কার সকল কার্য্য বিষয়ে i ্ট্রীহার যে কেন্দ্র গতীর গলাই তাহা जानक जन्मक करिए गार्यम मा। गामाबिक मीकि किव शाहियदिक मीकि : कावियदिक मीकित किकि मानीक व्यक्ति লমানর। ইয়া অত্যন্ত সভ্য কথা, "বে গৃহে নারীর সমানর क्षेत्रं (म ग्रेट्स व्यक्ति व्यमस् ।" अन्य महिनातः सम्मद्रेकः आहे मुद्रीक आपर्यन कृतिएक व्वरेष । जाना पत्रिकात मन्नाः ध्रमम इस्त्रा हाई (य कांदा देवश्वित्रो द्वरणत मात्रीकृत्मत पर्म कहे আশা জন্মিৰে বে ব্ৰাহ্মধৰ্ম ভাষত লগনাৰিলেৰ নৰ্মাঞ্জীন मुक्तित्र बक्त व्यानिवारम् । यमि द्याम याक्तिस्य धक्रमः द्रम्पिएक পাওয়া যে, সে আপনাকে আন্ধ বলিয়া পরিচিত্ত করেন অথচ স্বীয় পরিবারত্ব রমণীদিগের প্রাত অভ্যানায় করে, কিছা ভাষা-দের সুথ শান্তির প্রতি দৃষ্টি রাখে না, ভবে সে ব্যক্তি জান্ত পরিচ্ছদ্ধারী তাবঞ্ক। সে ধর্মসাধনের জন্ত বাহা কিছু करत्र मकनरे वृथा। जेयन कारात्र व्याचना वार्य करत्रन मा।

धर्या महाक मान्त्रम् नहाना व मूक्तिका व तमानि क्षामत्रम युथ छै। हात यष्टिकम समामिन छेनन एक वस्तु छ। कति-वात সমন্ত একটা পাকা কথা বলিরাছেন: ভিনি বলিয়াছেন, मधु-मक्षिकाता (र मधुठक निर्माण करत छ। हार्छ छ्हे (स्वित মক্ষিকা থাকে। কতক্তৰি প্ৰতিক মক্ষিকা, ভালারা মধ্ जाहतन कंदर, ठक निर्यान कदर ও निरंबर क्षाय नियुक्त नाटक ; আর কতদত্তি সক্ষিকা জলস, ভাহাদিগকে ইংরাজীতে "ভ্রোণ" वरन। हेडावा कि हुहे करत ना एक वन विश्व अभए बन्न मिक्क मर् षाहात करत । त्महेक्षण मकन धर्ममभारक "धैमिक" ও "क्रोम" তুই শ্রেণীর লোকই আছে। যাগারা শ্রমিক, যাহারা বধু সঞ্ম করিতেছে, ভাষামেরই নেতা হওয়া উচিত কিন্ত ভাষামা निका ना बहेशा निकृष कार्य अनगतिराध के भरत व्यक्त भर्क তখন আর কাল' হয় না। ছই' জন লোকের মনে^গ এইটা न्डन छाव चानिन, छ।हाता कार्या कतिए छेरनाकी हेहेशन, কিন্তু এক কমিটা আছে, ভাগতে বৰ্ণভাৰবিধীন লোক जारन कारात्रा (म कार खहर अक्ट्रिक मधर्व स्टेश्नम मा; तिहे हरे कत्मन कार्यात महान करेलम ना ; नामू-क्रानी व्यक्टन निगारेना टंगम । टक्टननेम यूच विनिन्नेट्रिके विनेन वर्ष मेमात्मेन महिक काबारमन मुक्तिकोत्मन वहे व्यक्ति द्व चार्यादकः नरम चनन निक्ताता देनहा ना बहेता आयुक्तिई रनेको रत क मनम्भित्रकः निका विशा एत नगुत्रकः केन्द्रिय अञ्चा जारोजिनटच जाक रहेरछ विशाय कविता (विश्वास स्वर् चनकात काक्या सिविद्यां अ क्याप्त मर्स्य आहे हुन् क्रिक्ट्य कृष्टे रह ८४, १८व धर्मन्यारमः बन्धकाय-मन्त्रम् वर्गकान् स्वका मी वर्षेत्री, वर्षे कार्यावर्षीय कार्याक्ष्में होनका क्या एक नेवादेश केर्याकाव नाव वरेएक जारक का विश्वास कावी के जलाकता ने उटन मान

and the state of t SICE WHAT WEST WANTED THE SHITTERS WHEN WHEN efficeferne "aife ne genig annie falle gruit-शाहित कामार नहीं और केवा क्षतिक विद्यान ने का चर्मप तरह, बहे हर जाति पहिराहि ।" व्याहार स्मार्क गुर्क स्तिम-'क्याविक देव शक्तिक्षिक !'A' व्यवति कार्यात कतिका कथा (शोक्षिक आणिका कारोत कारो आकारेका विशित-"आजिक बाहित वह बाबा बाबारक छ पूर्वि हाबाक महित्र छवम काशाम नहीं बुदर्बात विन्तानम्-िकामान नहीं प्रकृत्वाहरू, এবং তোলার বাহতে কার্বা, করিবার উপযুক্ত বলও আছে। कांडे गुरू विमन--"अवर चार्त्रिक एकामारेक माराचा कतिएक শান্তির" শ্বান্ত, ইভগ্ততা এবণ করিবার অক্ত ভোষার পদবর आरेष्, ं अवश गणन वच दनिश्वात वच पूरे विव्यान केनू अ तरि-রাছে"-জাহার কমিষ্ঠ কলা এই কথা ধৰিয়া উপ্লি: তথ্য छाहात माका विशासन्म"मानव-स्वतत्त्र चेषत्र स्व व्यामा नित्रा-ছেন, ভালাও জোমার বহিনাতে।" ভালার পঞ্জী কাবার वित्रा छेडिटनन-"व्यावात कावित्रा द्वेष त्रहे कक्नामह (१रका कामात्र अक्षरहरे देशियाद्यन । स्व त्रका क्या ভনিয়া সেই ৰণিকের আগে বিগলিত ছইল। ভিনি অঞ্পূৰ্ণ नदैंटन दनिटलन,--"পরমেখর আমাকে कृषा कরুन, आমি শুর্মার বাই নাই; আমার বাহা আছে ভাহার তুল-नाव जानि याका शतारेवाहि, छारी अछि नामाछ।" विभाग किमि सम्दर्भ नाविनास कतिराम अवः श्रेषद्वतः करुनाव विवय पात्र कविया अर्थ कीकात जिलत मिर्कत कविया जकन চিন্তা বিশ্বত ছইলেন। বিশাস্ত স্বাৰণ্ডন বলে যে বলী निवामा काहात अस मटह।

निन्दिष्ठ ভाব-नारनादन अक स्थापेत लाक चाहर वाहाता সাংগন সাগন অব্যার উর্ভিত্র জঞ্চ অবিশ্রাম চেটা করিতে চার না । সঞ্চরের দিকে ভাগাদের ভাগুশ দৃষ্টি নাই।। আজ यि किছू वर्ष हारक शाहेल, छटन कैशाकात्मन दहिहान विवर क्टेबा किंदुसिन निक्तिस क्टेबा विविद्या अक्ति। प्रतिपटि रम्बिएक कक्ष विद्रमुक्त मार्था काका मिश्रम्य करेगा रमन, फ्यम क्रहारम्य (इडमा इरेम। उपन चात्र मिन इरम ना रप्तिया पेक्ताहरूत्र, मस्ज्ञ्जानात्र कर्यात्रायते दहहा कविटल गाणिनः। . मानावः क्षिष्टः विद्यतः ८७ द्वेतः भव यनि , किष्टः गाण कितिएक ग्विम्, अयमि जुक्म, केशदय मिथिन क्रेश क्लिक कृति यात्र निवास अवेदार्थ वार्ष किছु भारेरावरे नकवात्र कावाता षाहारक त्रवहे महेवा विरामहे वहेवा शर्फ, ७४९ ककवार विरमन ्राव दर्शनको प्रालिक एक । क्षेत्रादक्ष बीवरम अवेशन जिन्तिक els similar was aware then bead all alates वादावित्रहरू, सूत्रह, सूत्रह, भागाध्यक्ष , त्रक्षाः अभिहासः वक्षः अनुह

नापाक्रित कीन्द्रका कामान वारमण समय वार्क विक्रिक

wie enforcement in the state of the prince, and मुक्त भागती देशां के विकास के किया है कि मान कर कर की का अपने stall at their the state of white we we cold चित्रक मानिकाल, कार्किवरक मृद्धि जाविता भाग मनिमका भवि-वात्र धरा श्रीवंत्र क्येंद्रनम् कात्रा कार्य (क्येन छ परिवर्णात सन शांक कतियात सक्ष कंक वक्त कविनाम । अवत्यव्यक्त कल्लाव क्षिप भविषात्न रहेश मेक्ष बरेल, खारन बक्ट्रे जदमका भारे-নাম, প্রেম ও পরিজভার আকাজ্যা একটু লাগ্রত হইল, क्षेत्राममा विके त्यांव क्षेत्रक नात्रिम,—स्याद्य अमनि त्यारे गत्य । महाम शक्तिकृत्यिक कार कार्यिकी द्वारी विन, महाम क्षिनाम करमक कहेबाद्य, बाद कारमा कि ; बाद नान वार्वास निकटी आर्गिटक भावित्य मा, ब्लाइ किছूटकरे भवित भथ रहेटक विहास কুরিছে পারিবে মা, : আর কীবনে ৩ফ ভার আসিবে না। बहे कारबर महा माध्य कवान मिलिनका कांत्रन, धर्म कीरम शर्कसम्बद्धाः एक coë। ॥ क्षेत्राम, छात्रास्य केतामीन वृहेता নিশ্চিত্ত ভাব ধারণ করিলাম। বেধিতে দেধিতে হই এক দিনের মধ্যে সেই সরস পৰিজ্ঞভাবটুকু কোণার অন্তর্হিত ন্ইরা গেল। পূর্বপেকা অধিক শুক কঠোর, মলিন অপবিত্র कारबन्न मरधा कीवम कृषिना (जन,--कावान शृरस्त मरु कान-কার করিতে লাগিলাম। এইরূপে আমরা অরতে পরিতৃপ্ত **ब्हेश जांधन फल्टन निधिन इहेश लिए दलिश व्यामारम**त আধ্যাত্মিক দীনতা দুরীকৃত হইতেছে না, আমরা ধর্ম-রাজ্যের निवालय चारम शिवा (शीक्टिक शाविटककि मा, धर्य-कीवटन এখন বস্তু লাভ করিতে পারিতেছি না; বাহা পাইলৈ আর हाबाहेटल इत ना। **हो**चेव कक्कन आमत्रा (यन धर्म छीवटन कथम अ निक्ति का व व्यवस्था मा कति, वित्रशिन द्यम व्यवस्थ উৎসাহের সহিত সাধন জ্ঞানের পথে অগ্রসর হই, কুপণ रवम्त चन्न धन भारेका मुद्धे ना रहेना क्यान्छ धनम्बरम्य চেষ্টা করে, আমরাও সেইরূপ অর প্রেম, পবিত্রতা ও সরস ভাব भारेबा निक्तित ना रहेबा क्यांगल धरे मक्ष कार मक्स बब अब (यन ८०डी कतिएक लाति।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

সম্প্রদায় ও সাম্প্রদায়িকতা।

यामत्वाक्त वात चाति वाक्षणवात्वय त्य हे हे छोछ निश्वित्रा निश्वात्वम, छावात अकि वृष्टिभाष कतित्व, म्लिटेरे टाण्डेणि क्य त्य अकी प्रण्य धर्मन्याक शर्मन क्या छावात्र निकास्त किल मा । कार्त्य त्याय क्य किल अवे टाणांव मत्य किलास्त निम्न त्याय मक्य अत्याव्य मत्य किलास्त निम्न त्याय मक्य अत्याव्य मत्य त्याय त्याय त्याय विकास व्याप्त क्याय त्याय त्याय व्याप्त व्

ভাবা ভিনি पश्चन कति । जिन्ह की शाह दी है । जिन्ह की शाह दी है । जात व दाक्षण प्राप्त वर्षणान पर्या और के कर कर कर कर कर कर व्यापत । वर्षणा अपने कर्मणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा वर्षणा । वर्षणा ।

आभवा हिवनिन बनिवा चानिट्छक्टि आस्तर्थ नुष्टानाविक धर्ष नरह, हेहा जरून धर्षात जात, हेश जार्काको यक धर्म। किंद जामता मृत्य रठहे किन खेनात्रकात कथा विन ना, करन আমরা একটা সম্প্রদারে বন্ধ হইরা পাড়তেছি। কভক্তাল व्यानवादी कार्या वहें अप वहें का कहें एक हैं। व्यान कहें বাল্রা আন্দাদিগের প্রতি দোষারোপ করিতেছেন, যে তাঁহারা ইচ্ছাপুৰ্কক হিন্দুগমাজ হইতে খতৱ চইরা দাঁডাইভেছেন. उँ। हात्रा हिन्दुमिश्रदक चुनात हत्क (मिश्रा शास्त्रम, हिन्दु समा-**ब्बर हो** जि नी डिटक घुना कतिया शास्त्रन श्रुख्यार पृदव माँ का हेट हेक्का कतिरक्षाक्त ७ पृत्व माकाहरकरक्ता वाकामिश्वत মধ্যে কেছ এই ভাবে গ্রাহ্মনমান্তের সহিত বোগ দিয়াছেন किना कानि ना। किन्द अधिकाश्लात शक्त जक्या कथनहे সভ্য নহে। তাঁহাদের পক্ষে এই কথাই সভ্য যে ভাঁহায়। विद्याकत अकृत्वार चीत्र चीत्र विचान अकृतात्त्र कार्या कति-বার প্রয়াস পাইয়াছেন, অমনি উাহাদের আত্মীর স্কন विरवाधी क्षेत्र। व्यवस्य कांहानिशत्क भागम ७ शरव वर्कन ক্রিরাছেন। এই বিরোধের ভাব হইভেই ত্রাহ্মগণ থক धननिविष्ठे नत्न वारक रहेटल्डिन। वामना त्निविष्ठिक मच्च-मान वस वक्षता वासमिर्गत वर्तमान स्वत्रांत स्मात्रहार्गा। ধর্মের অমূগত হইতে হইলে তাঁহাদিগকে বিখাসামুসারে कार्या क्रांत्रएक हे स्टेटव : विधानाञ्चनात्त्र कार्या क्रांत्रिक (शताहे (मर्भन क्यारकत महिल विरन्नाथ छेर्थन स्वेटन ; विरन्नाथ छेर्थन ●हेरल चाच-द्रकार्थ छाहानिशस्य मनव्य हहेर्छ हहेरव। **च**ळ्यव আমরা প্রার্থনীয় মনে করি আরু না করি ব্রাহ্মসমাজ একটা मध्येषारम भावम स्ट्रेस । अधिम मनाम, मस्यापीम मनाम व्यक्षि नम्नाम नमासरे बरे व्यगानीए गठिल स्टेबाइ । প্রভাবেই কিছু किছু নৃতৰ কথা বৰিবার প্রবার পাইরাছেন; ভাষার অপারহার্যা ফল অরপ প্রাচীন ভাবাপর ব্যক্তিগণের शहिल विद्याध छैरशह इरेशांख, त्मरे विद्याहर मवलावाश्व वाकिनिशाक अकल पनिनिष्ठि कतिबाह्य। अहे ऋरु मक-(गत्र कत्रा

সভাদার বছ হওয়াতে বিশেষ ছাবের কারণ কিছু নাই,
বরং ইতাতে সত্যের রক্ষা সম্বাদ্ধ বিশেষ উপকার হয়। বীজ
বেমন কোষের মধ্যে নিহিত পালে, এবং সেই জোক বেমন
ভালাকে রক্ষা করে, ক্লেইল্লপ নাজারের রূপ সভ্য-বীজাতে রক্ষা
ও লোধন করিবার কম্ম কর্মীখন রোজসমাজকে কোবছন্দশ
বিশ্বিক ক্রিয়াহেন। বে সক্ষা মধ্যা কানে সম্ম রেশে
পরিবারে ক্রিয়ে, ভালা ছারে এই সংকীণ সীমার ক্ষেয়া সাম্ম

कवित्रा द्वाबिद्ध क्षेत्रका असे आहर बाबस्तात्मक अकी। वहर केटकक अमिटक लाक्स स्वत्र

ক্ষি ক্ষান্ত্ৰিক ক্ষান্ত ব্যক্তি না হইলেও সাম্প্রদানিকতা বে মিক্সীর ভারতে ক্ষেত্র নাই। বীর স্থানারের প্রতি প্রেম ব্যবন অপরের ক্রতি ত্বণ বা বিষেত্র আক্রয়ে থারণ করে তথনই ভাগ সাজানারিকতা নানে অভিনিত হর ৮ আক্ষান্ত্রের তথনই ভাগ সাজানারিকতা নামে অভার মাজেই ত্বিভি ক্রই ভাব সাজানারিকতা। সাজানারিকতার উজ্ঞান স্থান্ত ব্যক্তর আর্থ হওলা বার—এমন সাজানারিকতা দ্বিত ধর্ম পৃথিবীতে আর প্রভার হইরাছে কিমা সল্লের। মনজান বে ভালার ধর্মবিরোধীনিককে হত্যা অনিবার জন্ত্রমতি নিরাছিলেন ভালা এই ভাবে বে বে বাক্তি সভ্যান্ত্র ক্রতা ক্ষিত্র ক্রান্তিলেন ভালা এই ভাবে বে বে বাক্তি সভ্যান্ত্র ক্রতা ক্ষান্তিলের ভালার বিলিক্তার বিষ ক্রিলেও ভালা। বীলানের ক্রান্ত্রের আরা বিলার ক্রান্ত্রের সাজানারিকভার বিষ ক্রান্তি হইয়াছে ভালানের আরা বিক পরিমাণে এই ভাব।

ইতিমধ্যে অনেকে এই বলিরা ছঃও করিতেছেন বে ব্রাশ্বদিগের অস্করেও এই ভাব প্রবিদ্ধি ইইতেছে। ব্রাশ্বেমা ব্রাদ্ধ
সমাল বাতীত অন্ধ্য পোন সমাজের লোককে ব্রুবর পুলিরা
শ্রহা করিতে পারেন না। তাঁছারা বলেন ব্রাশ্বরণ ছিন দিন
আপনালের মধ্যেই, আবদ্ধ হইরা পড়িতেছেন; কাছানাছি
বিনিয়া পরস্পরের মুধ পরস্পরে দেখিতেছেন; পরস্পরের
গুণাবলী সমাণোচনা করিতেছেন; পরস্পরকে দেখিরা মুগ্র
ইইতেছেন। তাঁছাদের গণ্ডীর বাহিরে আর কাছারও কোন
শুণ আছে কিনা সে দিকে দৃষ্টি নাই; অভের খণ প্রারণের
শক্তি নাই। হিন্দু শক্ষা তাঁছাদের নিকট একটা দ্বণা স্ব্রুক
পক্ষ হইরা উটিরাছে ইত্যাদি। ব্রাশ্বরণ সাধারণের কত্যুর
এই অভিযোগের পাত্র ভারা আনরা বলিতে পান্ধি না। আমান
দের বোধ হর বদি এরপ ভাব কোনও প্রান্ধের মনে থাকে
তবে তাঁছাদের সংখ্যা অতি অন্ধ হইরে।

याश क्षेत्र याशांता जाबारम्य मृष्टि अभिरक्षः जाकर्षन् अस्ति-তেছেন তাহারা আমাবের প্রকৃত বছর কার্য্য করিছেল। মুক্তিতে বাহারা অভিনয় করিতেছে ভারারা বেশ্ল বৃদ্ধিতে भारत मा त्य प्रर्थकशत्यत्र हत्क काशास्त्र कथाशास्त्र क श्रीकविधि किञ्चन द्रमाहेरछ्ट्, त्रहेञ्चन खाचनमाचन्न प्रकृतिहरू जेहे-খন্ত্ৰ হইবা বাহায়া কাৰ্যা ক্ৰিছেছেন ভাৰায়াও ৰঞ্জিত शादम ना काशादम्य मान कर्ष किस्तर दम्बद्धिकाक । लक्क्किन वास (नाटक विव वटका वटका व्यामादका व्यवसा व्यामाविकारक श्वत क्यादेश राम. छाहारक व्यायारक्य क्यान क्रिय क्रक्यान नारे, ध्वर कांबारमम अकि चामराहर कृष्टक स्वमारे कृष्ट्रेश । माच्यवस्थिक जासन (व नगरि कादा देवानहस्रदेशक अर्थान, ून केकामरतागळक एक दम दुनिहरू गाटक सा दम काहामा किया भक्तिक वाक्रिक्षण वहेवर्थकः देव माम महत् ह्रकम भारतिक ह्रवण गुजारक मान कर्न चतिरकहित क्षेत्र क्यारे अभिक्राकृति विम wiede wie whereft, winte affer arfrang mit atter? नाव्यशिककार्यक गाकिक विराहमा मुद्दक आधिक केवार-

कारय अक्रमारक क्रिकि करिएकोर अवस्थित आवित्रभाषात्र । विस्तर ant; once more west are every at बर त्यांकी चरि इन्हिक्शिक

ना क्षेत्राविकका व्यवस्थातक क्षेत्र व्यवसायिक क्षेत्रसम्ब स्ट्र चहवान राष्ट्रण चकि एक्टिशारन चंद्रात निविष বাৰিদ্যাত্ত্বাস্থ্য বৰ্ষভাৰকে জানিকে দেব না। 'গাব্দাছিকতা थ देनदेक्क् जटक जटक कार्य केन्द्रिक कविका मानदेवक बार्वारं जिक की बेटन व रमांका मंडे करता जरमंक ममत स्थितिक भाश्वत योक, दा प्रकाशास दा मकन बाक यान करवन, कीवा-सिर्मन कर्मका नश्यन वामनिर्मन मार्चनानिक्वान कान कविक हंत्रे, कावन वकःचरम । लाटक क्रमन मन्त्रमादेवत । लोक-सित्तित मरेशा बीग करत ; व्यवद्यार्थ कांगरसब नगांत कत ; নামা ভারণে দকলের সহিত ভাত্মীরতা ক্ষে ভাবত হয়। क्षकार जगरतन की बाम रव कि हू मन् छन वा महत्व कारण, छांग ्रांचिरक भाव ; घटम मध्यीर्व काव ब्राचिरक भारतल्ला । जहातव क्षांव आक्र क्षांचात्र, क्षांचाच मन्दत्र क्षांकिदनीविद्रमंत्र मन्दि লোকের আলাপ পরিচয় হয় মা। নিজে ইচ্চুক হটরা আত্মীয়তা লা করিলে কাহারও সহিত আত্মীরতা করে না ^{শেহ}বিশেব এখানে স্কলেই নিরস্তর সার্য্যে বাস্ত, লোকের সহিত আত্মী-क्षका कतियात व्यवज्ञत मञ्जव । अ माहे। स्टबार अधान मिन ্যানুদের আলোপ পরিচয় ও আত্মীরতা করিবার একটু সময় টর, ভাষা ক্ষমভাষান্ লোকের সঙ্গেই করিয়া থাকে। লোকে बाड़ी श्हेरफ़ बाधित व्हेरनहे चीत खावानत लारकत वाड़ीरफ बाह्र ६/ विभिष्टक इंडेटन फाबारमञ्ज मरक्षेत्रे विरम् । अवैकारम उत्तरम क्राम लारकत्र श्रीष्ठि अरु मश्कीर्ग (क्रावित बादा) चारक रहेश পড়ে। অলে অলে দাব্রাদারিকভার বাাধিতে মাত্রকে প্রাদ

रि कार्रावे गालावाद्रिकलात छैर गाँच बढेक जा, विरमव আম্মৃতি, চিন্তাশীলতা ও প্রার্থনা পরারণতা ব্যতীত গোকে এই ব্যাধিকে অভিক্রম করিতে পারে না।

हिन्मू এवः खोक्रमगारक विदवक । (बाव)

🗝 আমাজের দেশে বিবেকের বড়ই ছর্গভি। বাহা সভ্য विनेत्री वृक्षा चात्र, काहा कार्या नानन ना कतिरन रव व्यनदाध ं इंड अक्षा कामारम्ब (वर्णन करनरक हे द्रायन ना । वितरमधन 🗠 मानवरक मंख्यामच्या विठात कत्रियात मंख्यि विदारहरन । 🔞 दे ী শক্তিৰ উপযুক্ত ব্যবহার করিবা দে বাহা সভ্যা বলিবা বৃদ্ধিবে े जिल्ला अंक्ष्मत्रम कतिर्दन, अपर याहा क्षमका यनिया विर्दरना ं क्षिरियं काका नविवर्कात कृतिस्य । अञ्चलन कार्याः कविता स्म ^{क्रमात} निम्न गान ७ इस्तिका श्डेटक विमूक हरेटव अवर कामा कीयम भवित व्हेशन काव केहिक भटन कडामा हरेटर । मानिक्षिक कीनात्मक और देवकित काला मध्या मानव नवाक केंद्रक बहेदक विश्वकृत व्यवद्या माथ क्षित्रा केन्द्रदर

किवि; नवादे केलाव वसन्। अवक (र नका नानन करत्, দে ভাৰাকেই আন্তৰ কৰে; স্তৰাং তাৰাকে তিনি বকা करम्ब, मुक्तुशासरम् काशास्य किमि महामका करवम। यात्र क्षांमित्रा क्षेत्रिते देव कीश्य महादक পतिलाग करत, त्म लीश-त्वरे चवर्यानसा कदतः चच्चारं त्वरे नत्कात चवर्याननाकाती আপ্নাপ্ৰি নই হুঁহ, ভাষায় সভা কথনই ভাষাকেই বৃদ্ধিত **ংইতে দেখ না। কিন্তু অনেকে একধা** ব্ৰিয়াও ব্ৰেন না; ডাই আখাদের নরলারীপণ এত হীন ও নিবীর্যা হইরাছে। কিনে ভাছামিগতে স্বল ক্রিবে, আপম আপন পালের উপর ভর দিনা গড়েইবার শক্তি দিবে ? সতা ভিন্ন আর কিছুতেই ত বানবলীবনকে পরিপুট ও পরিবর্দ্ধিত করিতে পারে না। একমাল সভাই বানবাস্থার কর জন। আনাহারে নামূব কত-विव बार्ट ? कार्रे चात्रारवत्र (मध्यत्र गत्रमात्री गुक्न निरक्षक

ৰাহান্না অঞ্চানাজ্য এবং সভ্য ভালরপে বুবে না ভাহা-विश्रतक क्रिष्ठ दिशव विहे ना ; किन्द्र देशिया कानारमारू व्याश्र ছইয়াছেল এবং সভ্যাস্ভা বিচার করিবার শক্তি বাঁহাদের পরিক্ট হইরাছে, তাঁচাদের দারিত্ব কত অধিক! বলি তাঁহা-विश्रदक म्छानानस्य भिषिन स्विषे छट्य खार्य यक्ष्टे (यवना পাই। কত কুডবিদা স্থলিকিড ব্যক্তি দেখিতে পাই পৌত-লিকভাকে অসার বলিয়া বাঁহারা বুবিতে পারিয়াছেন, ভাহার প্রতি বাঁছাদের অশ্বরের বিখাস চিরদিনের মত চলিরা গিরাছে, একমাত্র নিরাকার সভাবরণ ঈর্বর বে মানবের উপাস্ত काका काशास्त्र सम्बद्धिय रहेबाट्य। क्यि कार्गाया বুরিয়াছেন কার্যো ভাছা কি করিতে পারিভেছেন? मा, कार्द्या कदा मृद्य थाकूक, भद्रनिका এवः नर्माखद ক্ৰকুটীর ভবে সে কথা ভাঁহারা মূধ কুটিরাও কাহার কাচে বলিতে পারিভেছেন না। কেচ বা সমাজের প্রিয় ইইবার জন্ত আবার পৌত্তলিকভার আধাাত্মিক ব্যাখ্যা করিভেছেন। हेड़ा चारमच्या विरयरकत वृत्तीक चात्र कि इंडेरक मारत ? (यरम কড চিত্তালীল ব্যক্তি আছেল বাঁহারা জাভিতের প্রধার জপ-কারিডা বিশক্ষণ বুবিতে পারিয়াছেন, ইহাই বে ভারতের মধ্যে পৃহবিচ্ছেৰ ঘটাইরাছে, ইনাই ভারার ফুর্জন সমবেড भक्तिरक क्रिन्न विक्रिन्न कतिन्न। क्षावरमध्य कालान वन्तरम इरम्बना পরাধীনভার দৃত্যল পরাইয়াছে ভাষা ভাষারা দিবাচক্ষে বেথিতে পাইভেছেন,—তাঁহারা হয়ত অনেক সময় উলারতা दिवारेता लाक्ष्म्य व्यवसार किन्न किन्न काजिन लाक्षिर न গঙ্গে এক্ষে বসিয়া আহায়াদি করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহারা কি এই কুমবা পরিভাগে করিতে পারিয়াছেন ? পরিভাগে ৰুৱা দূৰে খাকুক, জীহারা গোপনে বে অন্ত জাতির সঙ্গে क्षकरंख ब्याशंत्रीय कतिबार्यम क्षत्री पुनिया वनिवाद मिक क्षेत्रश्रांदेश माहे। नेपाल कीशारमत रखनम करिन वदरम जावद क्षित्रा शामिश्रातक, जिल्लास्त्र मिक्नात एक्नात मिक्न नारे। नवाक छारानिनाक विकारिकार प्रारेक्टर, केंग्रेटकार मगरिएएए ; क्षेत्र कार्या गर्नात्वत्र हत्रत् मक्षक जननक

(कत्र प्र्णंकि चात्र कि इट्टेंड नाटत के निक्रतायक विदेशियोध काब बंगनीनेन स्कटवर्त (वंशीय वक्,-विनानिकात मोर्बर्दी रहेवा समाधारण करव माहे; वानविश्वालण अविश्वास दम्बीन-नारत धनायन निक कतियात क्या हैनी कि बाद निर्माण की-फिल कतिवात क्रम ' मानवरमक् बाँडमें करन मार्ड,--- बक्या क्राप्तिक मक्ष्मीत्र करनरकहै वृत्तिरक भातिबारहर्ग, डेबाइ विवह किया कतिया कैशिएमत मध्या किस किस सबस নির্জ্ঞনে অশ্রণাতও করিয়াছেন। কিছু ছায়। উছিলের कामन कार्याङ: हेरात क्षार्जियात्मतः त्कान रहेरा कतिया-ट्रिन १ छांशास्त्र (य किंड्रे मिक्क माहै। मौद्ध अवर नमास्र উ। हानिगटक निर्धीय कतिया बाबिबाटह। डालाबा चाननाटनम হত্তপদ আপনারা বাঁধিয়া সমাজের ছারে হড়য় দিয়া পড়িয়া বহিষাছেন। তাঁহারা ঈশ্বর অপেকা মানব সমালকে অধিক छत्र कतिएउएछन। আপনায় আপনার ব্যক্তিত সমাজের निक्षे विवास विशाहन। देश अल्बा विरव्हन पूर्वि चात्र व्यक्षिक कि इटेटल शास्त्र १ ८व कालित विस्वत्कत्र व्यवशा **এইরপ শোচনীর, তাহার পুনরুত্থান কিরুপে আশা করা** যাইতে পারে 🕈

কিন্তু লগতের বিধাতা বিলি, তিনি আমাদিগকৈ ভূলেন नारे। जामता यनि जाननारमत विमार्गित कक जानन रूख বিধের পাত্র ভূলিয়া মুখে ঢালিতে ষাই, সেই কক্ষণাময় পিডা কি ভাগা দেখিয়া নিশ্চিত্ত থাকিছে পারেন ? আমরা ভ मंत्रिए हे हाहे, किन्द्र जिलि महिएक हिर्दन ना। , काहे कुक्करण উ।হার করণা ভ্রাহ্মসমাজরূপে ভারতভূমে অবভীর্ণ হইল। भद्राशीना सम्मैगालव क्रिक्न। एव कतिवास खन्न, विश्वाभागत ज्यक्षम मृहाहेरात क्य, बाचन भन्नमणिठ,--भावनामध्य निर्ण्न विड मुखेनिश्वत यस वरेटि गमाममाग्रस्य प्रसंद कात्र मार्मा-ইয়া দিবার জন্তুও তাহাদের অন্তন্তে আত্মধ্যাদার ভাব জাগ্রহ कतित्र निवाद क्छ अरे बाक्यमार्कत रुख अमाहित हरेग। ভাহা দেখিয়া কত নিরাশ নরনারীয় আনে আশা 🛎 আনন্দের সঞার হইতে লাগিল। বিধাতা আপনি আসিরা মধুর ছরে खाक्तिरिशत क्षमरतत मरशा विण्यम-- "विष्वरकत असून्त्रव कत, यहा मछा बालको बुखिरव छाहा भागम कत, आमि दशमा-দিগকে রকা করিব।" সে বাণী গুনিয়া কড নিজিত প্রাণ कार्याक इहेन,--वार्यव्यव्य व्यामात्र क्रमाकृति पित्रो, क्रमनीत्र चल्यानत व्यक्ति छेनाशीम हहेता, चाचीत्रवासत्वत (श्रद्धत বন্ধন ছিল করিয়া এবং শত সহল অভাব ও নির্যাতনকে অপ্রায় করিয়া কত নরনারী আদিয়া উচার অভয় চয়ণে মন্তদ রাধিল। বে দিন চইতে ত্রাশ্মসমাজ এই ভাবে অগ্রসর हरेशाह्म, (र मिन हरेल खासदासिकाशन मछानानांमह জন্ত,--বিবেকের অভুসরণ করিবার জন্ত একটা ক্ষুদ্র স্বার্থন **खात्र कतिरक मिथिशास्त्रत, ता निर्म १३८७ आणी बहेबारह** বে ভারতের এ ছর্গতি পুর হইবে, বেশের সর্বল আক্ সভ্য-विकर्णक राष्ट्री अधिक इंग्रेटर विवर नमेख मास्त्रीमार्ड्य মধ্যে জাতুৰের ভাব প্রতিষ্ঠিত হইবৈ গ

COLEM ! FOR APPLANT WE WERE THE MINE WHEN THE PARTY कार्र कार्या कांग्रिकेटका कार्या अवस्था विकास अविद्या रहेका कर्षमा । विरममें कार्य प्रिक्षा के दिल्ला दमविरम देववा लाग देव ट्योक्टिक का हिस्सिया के का आकारिया अक्टे क्टेरक विमान तारंग' कविकारक। :- माही विकारक केंगरेक " व्यक्तिकाक विकास क्षण अभागभारक गरवडे ८५डा स्टेटल्ट । क्षिक ८४ की वर्ष कुरारकात्र नक्षणाण स्टेटल । कायरकात्र व्यक्तिकात्र : नर्गा हिनियाः चारक, रमरे रमरमाध्यिकाकाती काकिरकत जार्था चन्नामि निमृत्यः উৎপাটিত হয় নাই। প্রাক্তাকের আলোকের প্রাকাশে রক্ষনীর অক্কার বেমন অনাবৃত ও প্রাণত স্থান সকল পরিভাগে ক্ষরিয়ান निविष वन ७ मश्मीर्ग नर्सठकमात्र चार्जात करत्र हाइनक्षेत्रम विवा कामालात्कत गत्क गत्क अहे कूत्रश्चात्तत अक्षेत्रत केवात প্রকৃতি ও সরলবিখাসী আক্ষাগণের হৃদর পরিভাগ ক্ষরিয়া कीक ७ इस्वाहका वाक्तिगत्वत व्यवता नित्री व्याखन करें-बाटक। देशका नकन निक निहात कतिया, हार्वि शासित नव উল্লে রাখিয়া ধর্ম-সাধন করিতে চেষ্টা করিতেছেন। 🗫 . बामि बाक्षतमाब दिन छात्री ना इत, शूर्य इटेटफ जान्धान क्षत्रा छात्र, देहाहे देकारमत मामत छात्। चार्थरक देवाताः वज्रे जानवारमम, जारे जनकात्रक भूविता वाचित्र हाहित्य-र्ष्ट्रम, शत्रामध्यारंक कीवरनत्र विधाला ना कतिया जालमात्राह বিধাতা হটতে যাইতেছেন।

अकड़े विरमय कारन कारनाहना कतिया रहिया अहे विश्व পরিষাররূপে বৃথিতে পারা ষাইবে। জাতিভেদ প্রাণার ভিন্তী यून विकान चाटक,--धानम ननमर्वामान्छ काकिएकम, विकीय ज्यामान अमानगठ जाि एक विशेष कृतीय जाहाबाम नष्टक वाजित्यम्। भागर्यभागात्राज्ञ वाजित्यम् वर्गात्र न्यात्र मुक्तिवर् भद्राविक शतियात्। तिविद्ध शांख्या यात् । किन्द बान्तनप्राद्धव মধ্যে ইহার প্রশ্রষ্ঠ দেওর। অভি অঞ্চার কার্যা। পরম প্রস্ত পরবেশর সকলের পিতা এবং বিধাতা : তিনি নির্কিশেনে সকল নরনারীদিগকে আপনার স্বেত্যে ছারার রাখিয়া পরি-कान विद्यान---(द धर्ष-प्रश्रनीत लाएक देश विधान करवन. তাঁহাদের কীবনে এরণ ভাব ও মাচরণ অবিশ্বাসেরট পরিচয় रत्रा व्यानक कृतिम धनी, शिक्षक धवर केळशक्क वार्किक वक्ष আছর দেশা যার, দরিতা ও অরশিক্তি বাঞ্চির আক্র मनगरमञ्जलक रमका बाद ना। कल ममन समा बाद दि दे दे । স্থিতনের স্থান হটতে ফিরিয়া আসিয়া ক্ষত লোক আইকেন্ট্ क्तिएएएम रव सामन्ना गनीव ७ मूर्व विनन्ना सामारमन विद्या (कर छाड़िन मा, क्या आधारतत गर्क आनामानि क्रिन मा: ३३ अत्र न वार्गात यंत्रि आक्रमनात्कत मर्ट्या प्राप्त करने केंद्रीकी केवारे ध्यमानिक रव दा खामाने मासूबदक स्वेचात्र गुळ स्त्रिती व्यक्ती करत ना, किन्द्र यन, ७ लोबरवृत्त बाबात विविधिक विविधिक करत, व्याशास्त्रिकंका वरशका मारमात्रिकंकारक विक्रकंप क्षेत्रक मिट्ड ठीत । व्यवक्र कट्नत व्यवस्त कतिएक विविद्धिक्ति. किंक गाँवशाम । तम बंक केवरवर्ष कीम मखाबनन दक्त केलिकिक मा समे। " जायाचिक क्षेत्र के बेबरवर्ष पिटनय क्षापत क्षिएक कातकवर्ष जानागात्व निकृष्ठ करेट देशरे जाना कति वहेटन कि वार्ताहिक वर्षाक जानक जाना जानागरिक

TOUT AND THE MET MANE OF BUREAU MINE COUNTY WITH A POST OF THE PROPERTY OF THE

बाराम बाराम शक काविएकम गुनिवीय बारमक व्यटनरे त्वविष्टक मोक्का ताव । किन्न कामकवर्णक घरणा वेंबा रवक्रम जारव वर्डवाम, वार्क क्रुंबरिन क्षात्रः रमक्षन कारव रमयाः वात्र मा। अंग्र (पटण देश कुंगगर), किंग्र अवादम देश कुंग क वर्ग পত। অন্ত বৈশে বিভিন্ন কুলছ লোকনিলের সলে আবান প্রদান করিলে, কেবল মাজ কুলমর্ব্যালার হানি হয়, কিছ काशास्त्र क्षमञ्जनमाक्ष्यविष्ठत श्रदेश श्रद्ध मा । जात स বেশে কেচ বদি বিভিন্ন বৰ্ণের লোকেছ সহিত আমান প্রানান ক্ষার ভবে ভাষাকে চির্ছিমের মত আপনায় সমাল চইতে নির্মানিত করা হয়। এই কঠিন পাল ভিন্ন করিবার কর ব্রাহ্ম সমাজ চেটা করিভেছেন; কিন্তু ভার ! অনেক ব্রাক্ষের মধো এই আদান প্রদানগত জাডিতের অব্যালি বর্তমান विश्वारकाः त्राचे सक्षेत्रे वाका नमारका मरशा कानवर्गः निवारका मःशा এक **कहा (मधा वाहेरकतक। काकित्कतम वक्र विदर्श**की वानामा वावर काना केठांनेता निवात कम वानाता वर्षा है है। कर्त्रम, कार्याकारण कें।शांतां ९ भफार भम ब्हेरक्टहम, विवारण সমর উছোর চেষ্টা করিয়া স্বর্ণের মধেই বিবাদ করিছেছেন अनुवार जीवारमव Cobi बावा टकान । कन फेर्श्व बहेरफरक না। কেবলমাত্র মুখের কণার কি চর, যদি সে কথার পশ্চাতে কার্যা না থাকে १ আদ্ধসমাজে প্রবেশ করিবার অভ ভাতার বাবে আসিয়া বাঁতারা লাখার্মান রতিয়াছেন, জাঁকা-(भव गर्भा जारनरकरे डांचानिराव धरे छाव स्विता चार्छिन व চিত্তিত হটপাছেন। ভাঁহার মনে করিভেছেন,—"আমরা उ हिम्मुरमञ् ठाक निकृष्ठे बाजि; ख्रांक्यिनतत्र मर्था वर्षन चारान क्षतान नवस्त्र छेक्ठ मीठ कांछि गर्गना करा वस, छथन এখানে चांबारमत পুত্র কঞ্চাদিগের বিবাহ হওয়া ত বড় कठिन शाभात ।" এই छाविश छाहात्रा चात्र चर्छानत करेटक भावि-চেছেন না। অনেক সময় স্বৰ্ণ পাত্ৰ বা পাত্ৰী অফুসন্ধান করিয়া না পাএয়াতে বড়ই অস্থবিশা ঘটতেছে। পিভামাভার মনে এট ভাষ ৰাকাতে ক্ৰমণ: ডাহা পুত্ৰ কভাগণেয় মধ্যে ও পরিব্যাপ্ত ভটরা পঞ্চিতেছে। এটরূপে বে যুবক ব্রতীপণ বান্ধ্যমান্তের ভাষী আশাস্থল ভাষাবের মধ্যে ভাতিভেবের मध्व शामिका वाकेटछटक् । आधा विवादकत व भावर्ग.-- भर्वाव পুলৰ ও বৰনীধৰ পৰিয়া প্ৰেম প্ৰস্তাবে প্ৰস্পাধের প্ৰতি অনু-विकासिका श्वरमध्यक श्वराह क्या विवाहनक्षात आवस हरे-(देन्_{र देने} क्यूक्रार्क्ड नर्थ पुत्रक्रिक्रममीत योग चानम कडा वहे-वार्ड्य 🛌 निकायोखाननः दणमण "गवर्य गवर्ग" चूँ किरस्रदङ्ग, चित्राह पुत्र क्रमानारम्य सारीमणा , ८कावाव १ धरे कावटनरे र्वे अन् पूर्ण पश्चिमार्यक्षा भाव या शाबीरक पालम महना-मीक शक्तिरक विदाद अधिरक दलन माहै। कादाव सावन अक्ष महसूर् विद्याद विद्या दिन्तुगमामम् मामीकाराक निकरे नागण क्षेत्रका,,,,, जासन क्षित्र काहिता काहित काहित काहित त्या नवा अवस्थात्मक त्याच कार्य कारत पार्टक चुना 100 1 4 4

ক্ষা প্রথম ক্ষাত্র কর ক্ষেত্র হয়। বাহারা হিন্দুববাজ তাাগ ক্ষারার করে প্রথম বার্ক্স করিকে প্রথমিত করিবাছে, আল কারারা করে হীন্সবীর্ক্স কেন গু এট দেশ আমরা পৌত-ক্ষিত্র মানি, মা, এই দেশ আমরা জাতিতের মানি না, তাট উপরীজ্ঞান করিতেহি,—এই বলিরা বাহারা একবিন সক্-লের নিকট আপ্নান্তের বিশ্বাসের পরিচর দিয়াছে, আল কেন কার্যায়া,—"এই দেশ আমরা আভিতের মানি না, তাই প্রে ক্যাবিণের অসবর্গ বিবাহ দিডেছি," এই বলিরা জগতের সমক্ষে আপনাধের বিশ্বাসের পরিচর দিনা সদ্ভাত স্থাপন করিতে না পারেন ? জতএব এ বিবরেও আমানিগকে বিশেষ সাবধান হইরা কার্যা করিতে হইবে। ভারতের উন্ন-ভির যে ভবিষাৎ আলা ভারা ব্যাক্ষসমাজের উপর স্থাপিত।

আহারাদি সৰ্মে ভাড়িভেদ ভারতবর্ষ ব্যতীভ আর **ट्याबाइक अञ्चल छाट्य वर्क्याम नाहे। अहे छावहे छाइट**छत्र ভিত্ৰ ভিত্ৰ আভিত্ৰ মধ্যে ভীত্ৰ ঘূণা ও অপ্ৰেমের ভাব পরিবর্দ্ধিত ভবিষ্ঠাতে। "'(প্রেমের সহিত সকলে একল মিলিত হইয়া कार्डा कतिरम दवल्लभ धकते विस्मय मेकि भावता वात. जामारक রিক্সিত হইতে দিতেছে না। স্থতরাং এরপ ভাব বে আন্ধ-মিগের কাহারও মধ্যে দেখিতে পাইব এপ্রকার আশ। কেইই কণমও করেন না। কিন্তু অতি ছঃখের সহিত বলিতে চট-(७(ए (व धक्रभ णावं कृष्टे हात्रिणम बारक्रक मर्था (विनर्फ পাইভেছি। কি কারণে বলিতে পারি না তাঁহারা হিন্দুসমা-ক্ষের নিষ্ণু বর্ণন্থ বাংলার সংশও বাড়ীতে আহারাদি করিতে প্রস্তুত নহেন। আদান প্রদানগত আভিডেদ ক্রমণ: উঠিश याहेट्य अक्रम आणा कता यात्र ; किन्द आशीतानि मनकीत अहे জাভিডেম ব্রাহ্মসমাজের মধ্যে দেখিলে সে আশা করিতে আর ইচ্ছা হর সা। বাছারা এই ভাবের প্রাপ্তর দিতেছেন. ভাহানা বে কোনএ কুসংস্কারের বশবর্জী হইরা এরূপ করিজে ছেন, ভালা মনে হয় না। হয়ত মানমৰ্ব্যালা স্বয়ে অনিষ্ট আপতা করিয়া জাঁছারা এরূপ করিজেছেন। কিন্তু এই আচ-রবের ছাতা জাঁছারা ত্রাল্পসমাজের বিশেষ অনিষ্ট করিতেছেন। क्षावमण: छाशात्रा भागनात्मत वित्यत्मत विक्राफ कार्या कति-ভেছেন, খিতীয়ত: ভাঁহারা নবাগত ব্রাক্ষবিদের নিকট ত্রাক্ষ জীবনের অভি নিত্তই আয়র্শ প্রকাশ করিতেছন, এবং কৃতীয়তঃ क्षिणभाष्मव निक्र वर्ष करेटल वागावा लाख करेवारकन, कारा-क्षत्र अखरेत विषय विषया विराज्यक्त । क्षित्र शासात्र निय-ज्ञात्व कात्म क्रेमकिक करेगा करे (मारशक खास्राव क कांगाया পরিবারবর্গের মনে এই সন্দেহ উপীত্বিত হর সে বৃষি আমা-। प्रशास नीहका कि विश्वा मकरन व्यवसाय हरक (प्रविष्टाइम्) कवार पासर मामाहर देशन कहेरा चार खारन मासि बारक না। আরু কত বলিব, প্রবন্ধ অভিশয় বীর্ষ ক্রয়াছে। ভাব ব্ৰাক্ষনযাক্ষের বিশেষ ক্ষতি ক্ষরিভেছে। ইহার প্রতি-विशासिक वस कामारमय (लब्दे ८५६) क्या कर्वरा ।

ইখনের ইক্ষা নাধারণ জাত্ম সমাজের মধ্যে বিলেবভাবে কার্ব্য করিতেছে। ইক্ষার ভিতৰ বিরা উচ্চার স্থাসকল তিনি ভারত কেরে ক্লাইকা বিভেক্তেন। এই ভারণে তিনি আমা-

त्वर नक्षाद्य का विवारकते, अन्य अभिवादस्य विकास रहेना पार्थ। वरश वामा वृति काश्रा हैकाल मान ज्यारम्य यस कार्या कवि; स्राप किया सामाविरस्त्र असी कार्या कथानेवा महेटनम्, धनः चामना कीशाव दनवा किनिया नेक वरेव । जात्र जामजा वित्र मः की व अस्वत मध्या जालमहिन्दिक जुनारेबा पाविक हारे किया चार्यकारपत्र बाबा नक्षित्रां विक रेडेबा निरंकत रेष्ट्रामं कार्या किरिक वारे, जर्द किनि बाब्धिक शाटक रव चात्र विशादक्त खावा काक्त्रित कहेदवन अवर जाया-त्मत वर्रशक्काकारतत मक्टिक धर्म कतिया मित्वन। नश्की**र्यका** ও স্বার্থপরতাকে প্রভার দিতে গিরা অক্তাঞ্জ দমাৰ বৈরূপ निष्टिक हरेबा পড़िबाह्य, मार्वाबय बाक्त मधाकक रनस्क्रण स्टेबा পড़िব। किन्न आमासित बाबा किছू मा इन्टेंग्ल क्षेत्रसङ्ख्या অস্ত কোনও আধারের ভিতর বিরা ভার্য্য করিয়া আপনাকে ক্ষযুক্ত ক্রিবে। বিবেক্ষের উপর সাধারণ ব্রাক্স সমাজ স্থাপিত क्षेत्रारक, विटक्टकत्र चार्मिटमरे हेवात्र व्यक्षर्रक खोचार्गन मिन-निक इहेबाइकत। जेबेब कक्रम विस्वत्कत चारितरण व्यक्तिमा এখনও বেন অগ্রসঃ ছইডে পারি। আর কোনও বিকে চাहिय ना, वार्थ वा मानमर्वाशात ब्रिटक वृष्टिभाष्ठ कतिय ना ; কিছ বালা ঈশরের ইচ্ছা ও উাহার সভ্য ধৰিরা বুঝিব ভাহা পালনের জন্ত বর্কবি পণ করিব। তাছা হইলে ভিনি আমা-विशदक वन विद्यान, छाहा स्टेटन छिनि आमानिशदक त्रका ক্রিবেন,—ভাহার ব্রাহ্মণর করবুক চইবে।

षाहार्त्गात्र छेलदन्न।

(১৬ই বৈশাধ স্ববিষয় পণ্ডিত শিবনাথ শাল্লী কর্ম্ব প্রয়ন্ত)
"অক্রোধেন করেৎ ক্লোধ অসাধুং সাধুনা করেৎ।
করেৎ কর্মবাং দানেন করেৎ সত্যেন চানুতং॥"

শর্থ,--- অ্তোধের বারা ক্রোধ্বে কর করিবেক, সাধুতার বারা অসাধুতাকে কর করিবে, বানের বারা ক্রণণকে কর করি-বেক এবং সত্যের বারা সিধ্যাকে কর করিবেক।

বর্তনান সময়ে আক্ষ সমাজের বিষেষীর গংখ্যা অনেক।
করেক বংসর হইতে এই সংখ্যা অভ্যন্ত বর্দ্ধিত হইনাছে।
প্রথমতং বাঁহারা প্রাচীন পৌডলিক ধর্ম্বে নিষ্ঠাবান্, চিরনিন্ন
সেই বিখাসে বর্দ্ধিত হইনাছেন, উনহারা শ্বভাবতংই আক্ষসনাকের বিষেষ্ঠা, কারণ উহাদের দৃচ বিখান বে পৌতলিকতা ও
লাভিজেন বিশুপ্ত হইলে বর্ম্ব থাকিবে না, স্বান্ধ থাকিবে না,
লোকের প্রতিক পারত্রিক্ষিসকল প্রাক্ষর অকল্যাণ ছইবে।
এই বাঁহাদের বিখাস উহারা কি প্রকারে আক্ষসনালকে প্রীভিন্ন
চল্লে লোক্ষর উহারা সর্বান্ধই অক্ষতন করিভেছেন বে,
আক্ষান্ম পৌতলিকতা ও আজিতেনের স্বে কুঠরায়াত করিতেছে। বাহাদিপকে তাঁহারা বর্শের উজ্জেনকানী এলিরা বনে
করেন, তাহানিগকে স্থানর চল্লে মেখাইত আজানিক। আজা
বিশি এক নল এল্পে নাজিক অভ্যান্ধির হয়, খাহারা বলে
কর্মন নাই, পদ্ধনান মাই, ধর্মান্ধ্র নাই, সার কাই, লোটো থাক,
বিশেক্ষানার কর, তবে আক্রেরা ভিত্তানিক্ষক কি উপ্রেশ নার্দ্ধিন

THE THE WEST CALL STREET, AND STREET, वाकावेशास्त्रम्, वेवारमञ्जामा न्यायामा क्रेगी । व्यक्तिक मुर्य क्रमा क्रिक्टाईक प्रमाणान करा वेदेरकक व्यक्तिक विक करंग तिबिट्ड भारे आस्विदियस्य व्यथनस्य विद्यालक्ष्याः विद्यालकः क्षर्य अर्मन विकास प्रक्रिय कांच देहारमन वाहे। ब्रेन्ट्रेय निकात क्रम देहारवत्र ८०८ठ शक्तिशास, विकारनंत्र के कांबीन क्रियात्र काव देवारमम मरम व्यविद्यान व्यक्तिमा विद्यारक, क्रिय क्याम क्यांन चाकचिक कांबरन (वाचानिरवय कांबाब बरधा क्रफी क्षांम कात्रन), देहामा दिन्तू नत्नम भूममचारमंत्र कात्र जिल्लाहरून । अरे अरू वहा विक्रवना ; निकानियोन द्राहरूका দায়া ধর্মের পুনরবার ইতিহাসে আর ক্রমণ্ড ভ্রমী দার नारे। याहा बड़ेक और भूमक्यानकाशीयनक खांचनपारकर বিষ্টোর ঘলে নাম লিথাইয়াছেন। এই ঘলের লোকের আছি विरम्दित कामन कि, व्यत्नक ठिखा कतिया रम्बिमाडि ; अक्षेत्र कात्रण क्रेड त्यांव एवं देशांता कांन पात्रा त्य भन कात्रमधीय विनेत्रा अञ्चल करवम अवह तम भए हिनवान माहन माहे, लोहे পথে প্রান্মেরা অপ্রসর, এজভ ইইাবের বিবেক ইইাবিগকে সক্ষা দেয়, অভবাং ইহারা আক্ষানগের প্রতি উর্ব্যা পরভন্ত কইবা কোনরূপে বৃক্তিকে নিওড়াইয়া, বিজ্ঞানকে পিৰিয়া,ইভিছাসক্ हिनिया, जाननारवत्र अवनश्विक भरवत्र अञ्चल पृक्ति वैद्यावन ক্ৰিটেট্ল এবং অপনু দিকে খড়া পদ্ভঃ পোশনে 🛎 क्षकात्म बाधानरनंत्र क्षांक करूँ कि वर्षन ७ बाधानगरमंत्र कूरना ् त्रहेमा कतिएक्ट्म।

कृतीत विरव्यो पन्कानमाक्ष्यरकारविरताथी वाक्षित्रं । खोक-পৰ জাভিতেদ ভালিয়া অস্বৰ্ণ বিবাহ বিভেছেন ও অৰ্তুল क्षबाब कार्रात मानन वहें एक मात्रीविशाय उन्न कर्नि **क्षत्रात्र नाहरकरहन, हेहारक अब स्वतीत्र लारक** मन्त्र हिन আশভা উপস্থিত হইডেছে, বে এইরণে ভাজ চলির্বেরন, সমাক উৎসন্ন হইরা বাইবে। বিশেষ রম্পীর সা<u>র্</u>বিভ ৰড় বড় শিক্ষিত ৰাজিদিগেরও এ সৰছে তাৰণ কুসংক্রিন। **इत्र । कांगरिवत्रक विचाम वि नातीत्र व्यवस्त्राथ ना विद्युक्त** স্মাজ উৎসভ বার। এই বন্ধুল সংখ্যার পাক্ষাতে ভাঙ্গালিই क्षकि, विरमेश जानावन बाक्सनमारकव बाक्सनियन ककि विहासना বিবেব বৃদ্ধি কৰিতেছে ৷ু ইইারা বলেন আছও ড বাঞ্জ আছৈ-चापि बाक्षनगटबन बाक्ष, मनविवादमन बाक्ष (क्यम चक्क लाहरू, त्यरम् अरतारक मानम नारव, चात अरे नावांत्रव साक्ष्मसम्बद्धाः बारकत्रा रनरत्र करणारक चापीनका विना दक्त केश्यक् विनात नव वृत्तिरक्रमः। क्षकशार मानामित्रस्य काशास विश्वित क्राप्त বৈথিতে পারিছেবেল নার্ব এববে বেশের বিব্যক্তিক বিলের অধিকাংশ আছেন ব

च्च्यकः---वाक अक वन विदेशके। चारक, याना वृद्धिक विदेश नवण्यका अकृतिक वाक्ष्म निक्क, कावश्यक्रिक क्षेत्रक्रमसम्बद्ध वाजारवर नोक लोगांक वाक्ष्म करके । दश्य अस्ट्री क्षमानाम

এইরণে বেবা যার এক লিও ব্রাহ্মনবালু, ভাইনে শক্ত শত বিবেটা ভারিদিকে উরিনছে। ইনাদের সধ্যে সংকোত বাহারা, উলোরা ভ্রমনোকের ভার ভর্কবৃদ্ধে প্রভিবাদশরারণ হইভেছেন, ভিন্ত বিভাইছেকা ব্যক্তিগণ করিও কুৎসা রটনার ভার ব্রিক্ট ও সাধুক্ষবিদিশিত উপার সকল অবশ্যন করিতেছেন।

ं अभूमान वात्र , वार्षका अहे नकन मानक वार्षि कितन বার্থায় ক্রিবেন ? তাঁথারা কি যাতায় ইবড়াইয়া প্রত্যেক বিপক্ষে,সহিত উভঃ অভ্যুত্তরে কালাভিপাত ভরিবেন, অধ্বা मनित्र यस्य व्यविष्ठे व्वेत्राः चार्यमारमन वेहेरमवळीत् चृक्तमारळ निविद्ये क्रेटरन १ नमरत नमरत ७३ नवरतत तालगरेन शाली शक्षामा धेर्गाच्छ रव, छ्रेसन लाहक मात्रामाति कविटकरइ, त्रविष्ठ विविध्य हरे ठातिकनं चतित्रा त्नाक स्विमा त्रान । क्ट ब्ल्ब्स मधाञ्च हरेना वियोग मिछाहेना निर्छह्न,---वानी এভিবাণীর সহিত বকাৰকি করিতেছে, দোষী ব্যক্তির দোষ সাব্যক্ত ক্ষিবার জন্ম ভূক বিভূক ক্ষিতেছে, এইল্লণ ঘণ্টার नव पकी बाखाब छनावर साकर्मा हिनाछर्द, रेखिमाश अक-ল্লন লোক ফ্রতবেংগ মাসিল, সে একবার ভিড়ের মধ্যে 🕏 কি মারিল, বিষরটার ভাব একটু সংগ্রহ করিয়া লইল, वारात्र क्रफरवर्रं हिनदा र्यन। (य वाक्रि क्रफरदर्भ व्यामिन क्षकार का किया किया कि हिलाइ, अरे इंटेब्स्न व्यास्त्र कि १ व्यास्त्र अरे (व एव मश्राष्ट्रा) ক্রিতেছে ভাষার করিবার কিছুই নাই, ক্রতগামী ব্যক্তির করি-বার কিছু আছে। বাহার করিবায় কিছু নাই সে পথের ক্ষাহে কাশবিশৰ করিতে পারে, যুাহার করিবার কিছু আছে, छाराइ वृथा फनरर कानविनय थारि मा। बाक्सिरगढ कि क्टिक विशेष मारे वि छाराहा शब में कि बार्क क दिनामित्र महिक देवा कमर कतिरवस १ व्याकामस्य रक्किन काष्य राष्ठ्र विद्यारहम, गरून श्वनिष्ठे श्वक्रकतः। तनमस्या विशेषकरण्य भूवा अधिष्ठिक करा, अकेश नव वर्षवयाय शर्वन क्यों नवनाहीश्रानय भाषां चिक् क्षेत्रकित गरायका करा। देशाय वर वर्ग मान वर वर्ग है (तर्ग त वज्र मर्गान बान विष्युन, क्राप्ताचा नकरम जिन्दाचि धरे नकम कार्या निर्क पोक्तिमध्यासके जन ना । देवादाव भाषतत कहे, द्व वृथा वैगरर प्राचात्र वैक्षिरेया कांगाकियांच करतम 🖰 🖓 🚾 🛒

विक्रीय अपकी अपने अहे वि जायता एवं स्थान गड़ा महात क्रिक्टिक वि व नक्षण आद्य छात्र विश्ववि जांदा छ नाम व्याह्मक अञ्चलकार विश्वविक्र अहे विश्वविद्यालय अहे व मारका विश्वविक्र स्वाहित क्रम से विस्त्यमाताल क्रम विक्र व्यक्ति के व्यक्तिकार के वर्षा कि वर्षा एका नावर नव men dining and minu- enter fetatel etene विवास त्वांक जानक स्टेंटक जामानिगत्न दक विकास कतिएक लारिक है। यहाँ हिनाहरू वे स्वयंकाय स्विधा यदि आयहा विस्वय শীৰাৰণ হই ভাৰা ভটলে গেই সেৰা হইছে এই হইৰ। ভাজা-বেরা বলি রোপীর কটুজির প্রতি কর্ণণাত করে ও তাহার জ্ঞোধ দেখিরা জুল হয় ভবে ভালার কর্তব্যসাধ্য করা হয় मा, कौरात अवद्यविकिरना हरत ना। विष्यवद्श्वित पात्रा জনমংক চক্ষ হইছে দিলে কৰ্ডব্যের পথকে হারাইরা ফেলিতে 🔭 हत्र। धरे अक्रष्टे छेक हरेत्राहर, चांकार्यत्र बाता क्लांसरक ক্ষম করিতে হটবে। বিবেবের গতি ধরগোসের গতির স্থার, প্রেমের গতি ক্রিপের গতির ভার। অথচ কচ্চ্পের নিকটে প্রপোসকে অবলেতে পরাজিত হইতে হর'। বাহারা বিষেষ ৰ্ণজঃ কোলাহল করিয়া বেড়াইভেছে, ভাহারা কতদিন क्लाहरू क्रिट्व ? क्यांग्यां नेपबट्यटम क्यांगवा दिशाम, কাক করিতে থাকিশাম, তাহারা বধন খুমাইবে, তথন আমর। ভাহাদিগকে ফেলিয়া ৰাইব ।

বেরূপ মাসুবকে হাতেও মারা বার, আবার ভাতেও মারা বার,কিন্ত ক্ষেত্র মারা ব্যাপকা ভাতে মারা শক্ত মারা। সেইরূপ मास्टिय कथात स्वांव क्रे व्यक्तात (मध्या यांव, अक वाटका আর কার্যো। তক্ষণো কার্যো বে অবার দেওয়া যার, ভাচাই শক লবাব। বিগত শতাকীতে ইংলপ্তে ও আমেরিকার মধ্যে বধনী সংগ্রাম বাধিবার উপক্রম হইল, তথন ইংলভের লোকেরা অহন্বার করিরা বলিতে লাগিলেন, ইংলভের স্হিত বিরোধ করিলে আমেরিকার চলিবে না। আমেরিকগণ বাক্রার না ক্রিয়া ইংল্ডীয় বজের আমলানী বন্ধ করিয়া দিল এবং নিজেরা বস্ত্র প্রস্তুত করিতে লাগিল। ইংল্ডের ৰে কোটি কোটি টাকার কাপড় বিজ্ঞান্ত্তি, তাহার পথ বন্ধ ब्हेन, त्क्यन क्वार ! दूधा राकारात चारणका ७ छेन्द्र कि ভাল নয় ? ব্রাক্ষদিগকেও সকল বিপক্ষের কট্টিকর উত্তর **धरे टॉकारं निरफ हरेरा। स्व मक्न कार्या इस निवाहि** বিওণ উৎসাহের সহিত সে সকল কার্ব্য করিয়া বাইব। ঈশ্বরের व्यवन, मनन, निषिधात्रस्य श्रीहकाल नियुक्त इहेव। क्राल नायन कवानव अरव, विचान ७ निर्दाय अरव व्यावाज्यिक শক্তি বত্ট ক্ষিবে, জ্ভট ভারত স্মাক্তের বক্ষে বিশ্মণ পাৰ্যমের ভার চাপিরা বসিব। এই ব্রাক্ষসমান্তকে ভোলে সাধ্য

জোধের পরিবর্তে জোধ, অসাধুতার পরিবর্তে অসাধুতা বলি আমরা লিভে অগ্রসর হই, ভাহাতে এই প্রমাণ হইবে বে, আমাদের লৃষ্টি ইবরের উপরে নর; আমরা উল্লায় আদেশ ও উপলেশ অহুসারে চলিভেছি না। লোকের আমাদের প্রতি বিবেদ ভাব থাকিতে পারে কিন্তু কাহারও প্রতি আমাদের বিবেদ ভাব থাকিবে না। নহাভারতে গ্রন্থ কবিত আহে যে ব্যাধর্মী শিবের সহিত্য অর্জুনের ব্যবন মুক্ত হর, তথন অর্জুন ব্যাধর্মী শিবের সহিত্য অর্জুনের ব্যবন মুক্ত হর, তথন অর্জুন ব্যাধর্মী আরু ক্ষেক্ত বেই থাবের স্থীরে নিক্ষেপ করেন, ভঙ্গী আরু স্কল্প নেই পার্যাপ্রয় স্বেহে গাণিরা দ্বে নিজিপ্র বাহ কাব বাব্যাপ পিয় কৰিবাই কান্তিৰ ইয়ালৈ কান্তিৰ কোৰে কাছিল,বাস্থাপৰ আগৰ কান্তিৰ কান্তিন ক

चात्र अक कात्ररंग चटकारधत्र बांडा टकांधरक चत्र कत्रिएछ हरेरन, माधुलीत बाता जमाधुलारक जन्न कतिएल हरेरन। जामना वयन क्षेत्रतात्र रिनवक, छथन आमारशत नाश्रुं जा जनरमत्र नाश्रुं নিরপেক হইবে। অপরে ভত্ত ব্যবহার করিলে ভবে আমরা ভত্র বাবহার করিব, নতুবা করিব বা, এরপ নহে। ভত্র चक्क नकरनत शांख चामारमत चांहत्र कत रहेरन, कात्रन चामारमत श्रेष्ठ् भतरमधरतत व्यारम् अहे चामना गर्समा नाधुषा-ভেই প্ৰতিষ্ঠিত থাকিব। আমি নোজা পথও চিনি বাঁকা পথও চিনি, এমন কথা আব্দ ধলিবেন মা, ভাঁছার এ🗮 পথ সে সোজা পথ। যে ব্যক্তি সোজা পথ ভিন্ন জানে না, সোজা भाष छित्र हाल ना, मन्य यांचा भारेरमक, मस्य खारमाकम प्रवाहरताल रव रमाष्ट्रा भव हहेरल अक्टून वाहिरत था वाष्ट्रा-हेट भारत मा-त्महे वाक्तिहे क्षत्र स्वेषत्रक निप्रार्टिक, त्महे की बनहे बाक्षणमारकत्र वर अहेक्श की वरमत्र मंक्रिके क्याय শক্তি। ঈশ্বর করুন এরূপ এক্তি ভাবে বেন আমরা ভাছার অমুসম্বণ করিতে পারি।

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

নিম্লিধিত প্রধালীতে কাকিনীয়া ব্রাহ্মসমাজ ও ছাত্র-সমাজের উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে।

ব্রাহ্মসমাজের চতুর্থ সাহত্সরিক উৎসব।
১৯এ বৈশাধ ব্ধবার য়াতি '৭ ঘটকার সময় উঘোধন,
আচার্য্য পণ্ডিভ রামকুমার বিদ্যারত্ম।

২০এ বৈশাধ বৃহস্পতিবার প্রাতে ৬ টার সময় উপাসনা, আচার্যা পণ্ডিত রামকুষার বিদ্যারত্ব; মধ্যাত্নে উপাসনা, আচার্য্য মুখী জালাগউদ্দীন , অপরাত্ন ৫২ বটকার সময় নগর সহীত্তন ও রাত্রি ৭২ টার সময় উপাসনা, আচার্য্য প্রচারক শবিভূষণ বস্থা।

২১এ বৈশাৰ গুক্তবার আছে ৭ ঘটকার সময় উপাসনা, আচাৰ্য্য বাবু গৌরবাল বাব; অপরায় ৬ টার সময় অকান্ত বক্তা, বিষয় "জীবন কাহানে যলে"—বজন অচার্ক শশি-ভূষণ বহু; রাজি ৮ টার সময় কীর্তন।

হংজ বৈশাধ শনিবার আতে ও টার লম্ম উপাসনা, আচারী প্রচারক শনিভূবন বৃশ্ব; অপহাসু ও টার গম্ম আবেট্ডবা। ২০এ বৈশাধ মবিবার আতে ও টার সময় বিশ্ববিভ ক্রীসমা,

भन्ने देशतान जानाम साम् । साम प्राप्त के साम स्थापनी साम साम साम ।

ान होता । वाक्षिक निवास नाम केनानमा, बाह्यमा प्राप्त वान हात : वाक्षिक निवास नाम केनानमा, बाह्यमा प्राप्त विशासका प्राप्त कोनूनी ।

া ছাত্রসমাজের গৃহ প্রতিষ্ঠা। । ক্রিক

२८७ देवभाव मणनवात खाटक छेत्रानेना, चाहाँची चार्

২৬এ বৈদাধ বুধবার রাত্তি ৮২ টার সময় উপাসনা, আটার্বা প্রচারক দশিভূষণ বস্থ ।

অনুষ্ঠান পত্র। ও তংগং।

অন্য ত্রান্ধার্য ৬০, বলাক ১২৯৬। ২৪এ বৈশার্থ, ইংরাজী ৬ই মে ১৮৮৯ সোমবার সায়ংকালে শস্তু সরোবরের উত্তরন্থ মব-গঠিত গৃহ ছাত্রদিপ্লের উপাসনার কম্ম আমি সর্ব্ব সমক্ষেত্রিই সর্ব করিলাম, এই গৃহ ছাত্রসমাজ নামে অভিভিত চটবে।

এই গৃহৈ কেবল একমাত সভা শ্বরণ নিরাকার পরব্রক্ষের উপাসনা ও ভবিবরক জানালোচনা হটবে। এখানে কোন রূপ দেবদেবীর উপাসনা হটবে না। সর্কা ধর্দাবলন্ধী লোক আসিয়া এখানে উপাসনার যোগ দিতে পারিবেন। কিছু নিরা-কার পরব্রক্ষের উপাসনা ভিন্ন কেছ এখানে দৈবদেবীর কার্যা করিতে পারিবেন না।

এই গৃহ কাকিনীয়া ব্রাক্ষসমাজের কমিটির ভ্রমানের পাকিবে, উক্ত কমিটির অধিকাংশের মত ভিন্ন এখানে কোন কার্যা হইতে পারিবে না।

আমি কি আমার উত্তরাধিকারী এই গৃহ আরু কোন কার্য্যের অন্ত প্রাদান করিতে পারিব না। ইহার স্পূর্ণ সূত্র কাকিনীয়া ব্রাশ্বসমাজের থাকিবে।

वीयस्मित्रक्षत्र शांव दशेत्वहाँ त्राचा वास्त्रिता

· **

माणी

विवादसम्बद्ध प्राप्त होत्ती विकाशीक्षणात्र कर्ष विकाशिकाल गांत्र विकाशिकाल गांत्र विकाशिकाल विकाशका जन्मालक विकारकाल विकाशका

MINNE APIE BER PHILLE

क्ष्मा देवाई नक्ष्मवात-शाकाकारण केणानमा । वायु जीका-संक वर्ष व्याठारवीय कार्या करतम । नकाश्व भरत "विधानी श्वर कम विकानी" करे विश्वत भश्चिक निकामक भागी क्षम वक्ष्मा करतम । कार्यात द्वन वर्ष भरत क्षमानिक हरेरव ।

২ বা বৈশ্ব কৃষ্ণার—এই দিন লাখাবণ আক্ষনাজের জন্ম।

ক্ষিন। আতে পঞ্জিত শিবনাথ শালী উপাসনার কার্য করেন।

ক্ষেন্ত নাবু নীজালাথ দক এমাসন প্রবিত প্রস্থ হইতে

এবং পশ্চিত শিবনাথ শালী সংস্কৃত প্রস্থ হইতে পাঠ ও ব্যাখা

ক্রেন। তংগার দলীত ও সভীর্তম হয়। সন্ধার পরে উপাসনা

হয়। পশ্চিত শিবনাথ শালী আচার্য্যের কার্য্য করেন। উপাসনা

নাতে মুইক্ষন ব্যক্ষের আক্ষরণের দীক্ষিত মুইবল্ল কথা দিল। কিছ

কোন কারণে একক্ষন সেনিন উপস্থিত মুইক্লে পারেন নাই।

কণার মুবক দীক্ষিত মুইগেন; জাহার নাম নামেরটার বৈরাণী।

তরা ঝোঠ বৃহস্পতিবার—রাজি আট ঘটিকার পর সিটি কলেক ভবনে প্রাক্ষ ও প্রাক্ষিকাগণের একটা সন্মিলন সভা হয়। প্রার্থনার পর পণ্ডিত শিবনাথ শালী সাধারণ প্রাক্ষসবাজ্যের সভাগণের জীবনের দায়িত্ব সহজে কুরেকটা কথা বলেন।

সাধারণ আক্ষসমাজের অধ্যক্ষ সভার ১ম ত্রৈমাসিক অধিবেশনের কার্য্য বিবরণ।

পত ৩০ এ চৈত্র বৃহস্পতিবার রাত্রি ৭ ঘটিকার সমর সিটি কলেল পৃত্তে সাধারণ আক্ষমমাজের অধ্যক্ষ স্ভার প্রথম ত্রৈমাসিক অধিবেশন হর।

निम्निष्ठ दाकि गन उथान छैनव्छि हिल्न,—निछल निय्नाच भाषी (न्छान्छि), बात् क्षीक्षरमाहन वस्, वात् धानिनाच हाह्यानाधान, वात् हनिहल्लान विचान, वात् धानिनाच हाह्यानाधान, वात् हनिहल्लान विचान, वात् धानिनाच निष्का, वात् पानिनाच गार्काक्षराधान, वात् क्षान्नाच प्राप्त, वात् पानिका एमन, वात् मार्ककि (मय, वात् दोन्नामान सामकान, वात् पानिक्षन वस् (महकानी मल्लानक), वात् छैरमणहक्ष वस्त, वात् वस्तिनानिका प्राप्त, वात् वस्तिनानिका प्राप्तिनानिका प्राप्

गंड व्यविद्यम्पत्म कार्या विषयम गरिक क गृरीक करेन। विशेषक करेन वि कार्या निर्वादक गठाव श्रावय देववानिक वि कार्या विषयम युविक ब्रहेश मुख्यस्था विक्रिक करेगाक, कार्या शर्किक ब्रहेशास्त्र अस्विद्य स्था ब्रहेक

वाव् किन्त्रेष स्वापकी अकार महिस्तान अका मान् देशमानस्का

and the second of the second s

विकास विकास का क्षेत्रक मान, क्षित्रकाचा कार् पनि-क्षेत्रकार, कार्यास्थ्य किन्द्रक राष्ट्रस्य आगाप आर कुका नगरसाई कोन् क्षेत्रकाल स्वयं तथा सक्ष्य सक्षित क्षेत्र ।

া এই দমর পশ্চিত শিবনাথ শালী সভাপ্তির আদন পরি-ভাগে করার বাবু চঞ্চীচরণ বন্দ্যোপাধ্যামের প্রভাবে ও বাবু বিশিনচন্দ্র পালের পোষকভার বাবু বধুস্থন দেন সভাপ্তি ব্রহনন।

বাৰ্ থ্ৰীচরণ চক্তবর্তীর প্রভাবের সংশোধন করিয়া বার্ বিশিনচক্ত পাল প্রভাব করিলেন এবং বার্ হীরালাল হালদার পোরক্তা করিলেন হে কার্য নির্নাহক সভার বিনা অভিমতে ক্ষারক্তার আপন আপন নির্দিষ্ট কার্যক্ষেত্রের বাহিরে যে সক্তা কার্য করিয়াহেন ভাষার বিষয়ণ কার্য নির্নাহক সভার প্রথম বৈষাদিক কার্য বিষয়ণ হইতে পরিভাক্ত হউক।

কিরংকণ বাদাক্রাদের পর বাবু হীরালাল হালদার প্রভাব করিলেন ও বাবু হয়কিলোর বিখান পোষ্ঠত। করিলেন বে সেদিনকার ক্ষাধ্যেশন স্থাতি রাখা হউক।

কনৈৰ সভা তথন সভাতে আগনার কিছু বজবা প্রকাশ করিতে বাইতে ছিলেন,এম্বস্ত সভাপতি বলিলেন বে সভা ছগিত করিবার প্রয়োব তথন করা বাইতে পারে না।

কিরৎক্ষণ বাদাস্বাদের পর স্থির করা হইল যে ১ই বৈশাথ শুক্রবার শর্মান্ত এই অধিবেশন স্থগিত থাকুক।

গত ৭ই বৈশাধ গুক্রবার রাত্রি ৮ ঘটিকার সমীর নিটি কলেজ গৃহে সাধারণ আক্ষমমাজের অধ্যক্ষ সঞ্ভার হুগিত অধিবেশন হয়।

উপস্থিত; —বাবু ওক্ষচরণ মহলানবিস (সভাপতি), বাবু হীরালাল হাণদার, বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার, বাবু বিদিন-চক্ত পাল, বাবু চঙীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার, বাবু মধুরামোহন গাল্যোপাধ্যার, বাবু হর্কিশোর বিশাস, বাবু হেরছচক্ত মৈত্র, বাবু কৃষ্ণকুষার মিত্র এবং বাবু উমেশচক্ত দক্ত।

বাবু জীচরণ চক্রবর্তীর প্রস্তাবের সংশোধন করিয়া বাবু বিশিনচক্র পাল বে প্রস্তাব করেন, ভাষা অধিকাংখের মতে গৃহীত হইল।

বাৰু উমেশচন্ত্ৰ দিন্ত এই বলিয়া ইংগুৱ আজিবাদ করিলেন যে এক্লপ সুংশোধন উচ্চার মতে নিরম বিকৃত্ব।

वाव् विभिन्नस्य भाग गार्नेष्ठन वाष्ठ्रमाद्यव अन्णानस्ट निर्माणिक क्षेत्र गरण विकामः करित्ननः —वाग्रकांष्ठ्रपात्र वाव् प्रदान स्थाप्त प्रदान स्थाप्त व्याप्त व

সহকারী সম্পাদক বাবু আধিনাথ চটোপাধানে উজন করিলেন যে, সাধারণ প্রাক্ষসমাজ হইছে: বাধলাঁচড়া বিশ্বাল্যের
কোনও আর্থিক সাহায্য দেওছা হর না, ক্ষাের মাধুর জ্বান্ত্রাকার প্রচার কার্য্যের সঙ্গে এই বিদ্যাল্যের সম্বন্ধ আছে, কর্ট্যা
নির্বাহক সভা আঘাের বাব্রী প্রচার কার্যের অংশপ্রমাণ
বাগলাঁচড়ায় একটা বিদ্যালর ছাপ্ন সম্বন্ধ অভিনত প্রকাশ
করেন। গত তিন মাসের মধ্যে এই বিদ্যাল্যের কার্য্য সম্বন্ধ
কোনও বিস্তৃত বিবরণ কার্য্য নির্বাহক সভা প্রাপ্ত হন নাই।
এবং কার্য্য নির্বাহক সভা এই বিদ্যাল্যের অবস্থা সম্বন্ধে বেনান

বাবু বিশিন্দক্ষ পালের এই সকল প্রায় এবং ভাছার উভর কার্য্য বিবরণের সজে প্রকাশিত হইবে কি না এই প্রায় উথা-পিত হইলে সভার মত গৃহীত হইল, এবং অধিকাংশ ব্যক্তির মত হারা ছিরীকৃত হইল বে এই সকল প্রায় কার্য্য বিবরণের সঙ্গে প্রকাশিত হইবে।

বাবু মথুরামোহন গাজ্যোপাধ্যার প্রস্তাব করিলেন এবং বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার সমর্থন করিলেন যে কার্যানির্কাহক সভার প্রথম বৈমাসিক কার্য্য বিবরণ সংশোধিত হইরা বেরূপ হইল তাহা গৃহীত হউক। প্রস্তাব গৃহীত হইল।

বাবু হীরালাল হালদার প্রভাব করিলেন এবং বাবু মধুরা-মোহন গাল্যোপাধ্যার সমর্থন করিলেন বে, বে সকল পত্র এই সভার পঠিত হইল, তাহার বিচার এবং মীমাংসার জন্ত কার্য্য নির্মাহত সভাতে অর্পিত হউক। প্রভাব গৃহীত হইল।

নিম্লিথিত ব্যক্তিগণ সাধারণ বান্ধসমাজের সভ্য মনোনীত হইলেন:—

বাবু কেদারনাথ কুলভীর প্রভাবে এবং বাবু ছেরছচন্দ্র নৈত্রের পোষকভার বাবু রামানক চটোপাধ্যার; বাবু চঙীচরণ বল্যোপাধ্যারের প্রভাবে এবং বাবু বিপিনচন্দ্র পালের পোষ-কভার বাবু রামগ্রন্ধ সাক্ষাল; বাবু ছরিমোছন খোবালের প্রভাবে এবং বাবু আদিনাথ চটোপাধ্যারর পোষকভার বাবু অক্সমোছন খোষ।

বাব্ চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার প্রভাব করিলেন এবং বাব্ হেরছচক্র মৈত্র পোবকভা করিলেন বে,কার্যা নির্কাহক সভা বে বাবু বিপিনচক্র পাল,বাবু মধুক্দন সেন এবং বাবু মথুরামোদন গাল্যোপাধ্যায়কে সাধায়ণ আক্ষসমাজের আর ব্যয়ের হিসাবের পরীক্ষা নিযুক্ত করিরাচেন, ভাষা অনুমোদিত্ত ছউক। প্রভাব গৃহীত চইল।

मर्वाम ।

নামকরণ; — গত ১৫ই বৈশাপ শনিবার বাবু শর্ক চক্ত বন্দ্যোপাধ্যারের প্রথম প্রের নামকরণ কার্ক্য সপার ভইরা গিরাছে। তত্পলকে বাবু উন্মেশচক্ত বন্ধ আচর্যোর কার্য করেন। বালকের নাম আধাকুমার রাধা হইরাছে।

मानिक छेरमद ; नव २०८५ देव्य दविशात वार्ग- श्रीमा किताब देवर कान त्याक काँठका बाकनमारकत मानिक छेरमद बहेत्रा निशास । छह- छ। हारक बाक वर्ग गाहरक साहित मा।

नगरक विमकी कोक्साक्ष्मकी अध्यक्ष को कि हम। विकि

প্রাক্ত কর্ম বিশ্বর বিশাব শ্রিকার প্রাণীপ্রসর সালের
বিভার সময় বেশ্বর ক্ষেত্র শিক্ষক বাবু কালীপ্রসর সালের
শিক্তার আছি আলা কার্যা ক্ষেত্র হবাছে। শিক্তি সিবনাব
শাল্লী আচাব্যের কার্যা ক্রেন। কালীপ্রসর বাবু ক্রেনিক্রে
লাধারণ ব্রাহ্মসনাক্ষের প্রচার ক্ষেত্র ও টাকা বার্থিনে।
ভক্ষা তিনি আমানের ক্রেক্তার পাত্র।

ভবানীপুরে বক্তৃতা; — বিগত ২৭এ এএলক পনিবার রাত্রি ৭৪০ বটিকার সময় পণ্ডিত পিবনাথ শাস্ত্রী ভবানীপ্রের সাউণ প্রার্কন কুল গৃহে "ভারতের ভবিবাং" বিবরে
একটা বক্তৃতা করেন। বক্তৃতাস্থলে অনেক লোক উপস্থিত
ভিলেন। আমাদের ভবানীপুরস্থ বস্থানের আবোজনেই এই
বক্তৃতা হয়।

দৃশ্বরায় প্রচার; —গত ১৭ই বৈশাধ সোমবার
পাঞ্চ শিবনাথ শাল্পী এবং কভিপর বন্ধু তারকেখরের নিক্টবর্তী দশখনা প্রামে বাবু উমাপদ রায়ের বাড়ীতে গমন করেন।
পর্যাদন প্রাতে উাহার বাড়ীতে উপাসনা হয়। সন্ধ্যাকালে
পশ্চিত শিবনাথ শাল্পী প্রকাশ্চ সভার "সাকার ও নিরাকার
উপাসনা" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন। তৎপর দিন সেই স্থানে
শাল্প হইতে, স্নোকের ব্যাখ্যা করা হয়। পরে "সাকার ও
নিরাকার উপাসনাল প্রকৃত উপাসনা বলিরা স্থীকার করিরাও
সাকার উপাসনার আবশ্চকতা আছে বলিরা ব্যাইতে চাহেন।
কিন্তু তর্ক, বৃক্তি এবং শাল্পপ্রমাণ হারা নিক্তর হন। তথাপি
আপনাদিগকে পরান্ত বলিরা শীকার করেন নাই।

খাসিরাদিগের মধ্যে প্রচার ,— সিলক্ষের আদ্ধ বদ্ধুগণ থাসিরা জাতির মধ্যে আদ্ধর্ম প্রচারের চেটা করিভেছেন।
কিছুদিন হইল থাসিরা ভাষার অক্ষসন্ধীত প্রকাশিত হইরাছে।
ক্ষুত্র প্রিকার আকারে আদ্ধর্মের মত সকল থাসিরা ভাষার
প্রকাশ করিয়া তাঁহারা বিভরণ করিভেছেন। ভালা ছারা
সিলল ও চিরাপ্রীর অনেক থাসিরাগণের দৃষ্টি আক্রই হইরাছে। চিরাপ্রীর থাসিরাগণের বিশেষ আহ্বানে সিলল্প
বদ্ধাণ গত ওডজাইভের বদ্ধ উপলক্ষে ভথার গমন করিয়া
আদ্ধর্ম প্রচার করেন। ইলা ছারা অনেক থাসিরা ভঞ্জাক
আদ্ধর্ম প্রচার করেন। ইলা ছারা অনেক থাসিরা ভঞ্জাক

বাবু কালীপ্রসন্ন বসু; — খোলাবাড়িয়া নামক কানে কিছু দিন হইগ একটা আতু সন্মিননী সভা ছাপিত হইয়াজে। তথার প্রতিদিন নিয়মিতরপে উপাসনালি হইয়া থাকে। বাবু কালীপ্রসার বস্তু ই রবিবার তথার উপাসনা করেন। একদিন "ভারতের" ইভিগাস বারা আম্রা কবরের ইছোর বিষয় কিব্রিতে পারি" এই স্বজ্বে আলোচনা হর এবং অঞ্জ দিল "উচ্চতর জীবন" সম্বন্ধে বজ্বুতা হর।

নক্ত স্তা; — কিছুদিন হবল সকত স্তান "কি ক্লি
বিষয় দেখিলা কোনত বাজিকে প্রাক্ত বিদ্যা প্রহণ করা হাইছে
লাকে" এই স্থক্তে আলোচনা হয়। অনেক বালাহ্যাক্রর
পল সকলে এই শীমাংসার উপনীত হন;—প্রথম, বিনি
আপনার হুদ্দের মধ্যে ও জীবনের প্রতিকার্কো ক্লিইনিক সংক্রাক্ত হান, দিতে প্রক্তা; হিতীন, প্রাক্তনালকে বিনি
ক্লিকের বিধান বণিরা বিশাস ক্রিতে ও ভাল্যানিতেও প্রক্তা।
প্রক্রণ না করিয়াও কেন্দ্র ভালা স্থোক্ত ইত্তে পার্থেক; ক্লিক্
ভালাকে প্রক্র ব্যাহ্যার ব্যাহ্যার প্রাক্ত না

ण्ड-कागृती

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ভাগ। ৫ম সংখ্যা।

১লা আবাঢ় শুক্রবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্স সম্বৎ ৬০।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥ ০ মফস্বলে ৩ প্রতি থাঞ্রে মূল্য ৫০

প্রার্থনা।

আ ভগ হদর ভার—কে ঘুচাবে ভার—
তুমি বিনে, দীনবন্ধু এশ দল্পা কার ?
পাপীর হর্দশা হেরি এনে কুপাকরে
বিসবেন হৃদি মাঝে দগধ অস্তরে—
ঢালিয়ে শাস্তির জল—নিবারি জনল,
তুষিবেন দিরে হুধা প্রেম পরিমল ?
দারণ সংসার ববে ফেলে নিরাশাল,
সংশদ-তিমির ঘার জাঁধারে ডুবাল ;
হুগভীর অক্ষকার—দিগন্ত প্রসার !
নির্ধি কম্পিত প্রাণ—করে হাহাকার !
তথন সে জসহাল্ল জবন্ধাল মোরে,
পসারিয়ে প্রেম বাহু—ক্ষেত্র ক্রোড়ে—
তুলিবেন,—কেবা হেন দলার নিদান ?
ধন্ত দেব দল্লা তব মদল বিধান !

পরম ব্রক্ষ ! খন্ত ভোমার প্রেম ! ভোমার প্রেমের ত্রনা নাই ! কে বলে মানব প্রেম ভোমারই প্রেমের প্রতিকৃতি ? কে বলে জনক জননীর প্রেম ভোমারই প্রেমের ছবি ? মানব কদর রূপ ও গুণের পক্ষণাতী, মানব প্রেম উর্জামী। যে ক্লে মধু নাই মানব হাদর স্বে ক্লে বসে না। যে ক্লে গোরভ নাই মানব ভাহার আদর করিছে পারে না। অনক জননীর অক্সন্তিম প্রেম সকল সন্তানকে সমান ভাবে আলিজন করে না। কিন্তু ভোমার প্রেমের প্রকৃতি স্বতন্ত্র। ভোমার প্রেম নিম্নগামী। রূপে গুণে অমুপম হইরাও ভূমি নিগুণ এবং বির্মাক আন্বর্ণ করিয়া বেড়াও। যে পাপাচারীর, মানব সমাজে ছান হয় না, যাহার ছর্গতি দেখিয়া সজ্জন ভাদরও দ্বে সরিয়া পড়ে, যাহার দ্রীরের ছর্গছে প্রেমিক ভাদরও দ্বে প্রক্রিট হয়, সেই পাপাচারীও ভোমার প্রেমান্য মৃত হইতে বঞ্চিত হয় না। বে ভোমাকে জানে না, বে

ভোমাকে বুঝিরাও অস্বীকার করে, যে ইচ্ছিয় মদে মত্ত **ब्हेबा पृष्ट्रक पृष्ट्रक (**छामात मलशमत विधि छेन्नज्यन करत, বোমে বিগলিত হ'রে ভূমি সর্কাদা ভাহারই মঙ্গল সাধন করি-তেছ। সাধুও অসাধু, পাপী ও প্ৰ্যাক্ষা, পণ্ডিত ও মুৰ্থ, ধনীও দরিত সকলে সমান প্রিমাণে ভোমার প্রেমামৃত পান করিডেছে। আমরা মানব, পাপের স্স্তাবনা স্ইরাই আমা-(सत्र व्यवः । जारे भाशीत मः मर्ग व्यामाद्यत व्यावह । शाद्धः পাপের সংক্রমণ আমাদের মধ্যে প্রবেশ করিয়া প্রাণ বিনাশের কারণ হয়, এই ভয়ে অনিচ্ছাসত্ত্বেও আমরা পাপীর সহবাদ পরিত্যাপ করিতে বাধা হই। কিন্তু তোমার সে ভয় নাই। তোমার প্রাকৃতি ভাজ এবং পবিত্র :ু আংইনিশি রুল্ল ব্যক্তিদেব সহবাস করিতেছ, অব্বচ পাপের সংক্রমক তোমাকে স্পর্ন করিতেও পারিতেছে না। জল ধেমন অগ্নিকে নির্বাণ করে কিন্ত ভদারা ভসীভৃত হয় না। সেইক্লপ ভোমার ভল্ল কান্তি পাপের সংস্পর্শে কল্বিত হয় না, কিন্তু পাপকেই বিনট করিয়া থাকে। হে কোমনর পবিভাতা! মৃত্মুহি∙ছুমি আনাদিগের জীবনে ভোমার অভুল প্রেমের ও পবিত্রভার সাক্ষ্য প্রদান করিতেছ। দেখিয়াছি পাপারিতে ছট ফট করিয়া একবাব তোমার পবিত্র নাম শ্বরণ করিতেই প্রাণ শীতল হইয়া গিরাছে। আমাদের মত পাপীষ্ঠ যথন তোমার সহবাস স্থা বঞ্চিত । হইতেছে না; তথন তোখার প্রেম যে নিয়গামী এই দাক্য আবি বছ দূরে অংখবণ করিতে হয়না। প্রভো! ধঞাধন্ত ভূমি ? কেন আমাদের পাপ রদনা কেবল ভোমারই প্রেমের ও পবিঅভার গান করে না। কেন এ রসনা অকিঞ্চিংকর विवय, क्रमचाबी मान मज्जम, क्रगट्य मत्रभीन घटेनात्रक्षित মহিমা কীর্ত্তনেই ব্যক্তিব্যক্ত হইতেছে। কেন কোটিকণ্ঠ এক-তানে ভোমার গুণকীর্ত্তনে জগৎকে জাগ্রত করিতেছে না। হে ছর্কলের সহায় ! আনাদের বল দাও ! আনাদের বিকৃত ব্দরকে প্রাকৃতিস্থ কর। আমাদের রসনাকে উত্তেলিত কর, खार छेरमाह धर छेनाम नाउ। (करन राजानहे त्थारमत, কেবল ভোমারই প্ৰিত্তার গুণ কীর্ত্তন করিতে করিতে ভোমার মত হইরা বাই। আমাদের হৃদয় উলার হউক, আমা-দের পোন ভোনারই মত নিম্নগামী হউক। কেবল ভাই ভগী

বোধে নরনারীর চরণ সেবা করিতে প্রস্তুত ইই। **ওণে**র দিকে চাহিব না, রূপের জন্ত ব্যাকৃণ ইইব না। কেবল ভোমার সন্তান বলিরা, ক্ত শক্তি বারা সকলের সেবাতে নির্ভু থাকিব।

मन्नामकीय मखवा ।

• ঈশ্বর দেশ কালের অতীত—অজ প্রতিমা পুৰুক, वही शूक्रदव मध्यक्ष दानाधात कन्नना कतिरवन विकित नरह। তাঁহাদের বিখাদ অর্গ ও নরক নামক ছই স্থান আছে। বিধাতা পুরুষ অর্গধামে হীরক থচিত মহামূল্য আসনে আসীন থাকিয়া জীবের ধর্মাধর্মের ফল প্রদান ক্রিভেছেন। ক্থন বা ব্যাকুলিত চিত্ত ভক্তের কাতরোক্তি প্রবণে অধীর হইরা সিংহাসন পরিভ্যাপ করেন এবং সৌদামিনী বেগে মর্ভাধামে ব্দব্ভরণ করিয়া ভক্তের বাজা পূর্ণ করিয়া থাকেন। একমাত্র লখবের উপাসক মহমদের শিষ্যগণও পৌতলিক আরবের এই সাকার ভাব অভিক্রম করিয়া উঠিতে পারেন নাই। মহম্মদ স্বয়ং ঈশারের বাস্থান ভিত্তের (স্বর্গের) মনোরম ভবি উপাসক মগুলীবিগের নিক্ট ধরিরাছিলেন। অবতার-वानी और मच्चनाम निवाकात नेषट्टत खेलामक विनम प्रीड হইলেও তাহার। ঈশ্বকে স্থানাতীত মনে করিতে পারেন না। ীনিরাকার ত্রেক্ষাপাসকদিগের কেহ কেহ বংশ পরক্ষারাগত **এই পৌত** লিক ভাব চিরু নির্কাসিত করিতে সমর্থ হন নাই। ঈশ্র বিষয় কথোঞাকখন কালে ইছার বিশেব প্রামাণ প্রাপ্ত इंड्या यात्र। दकान दकान बाक्स ध्यन कतिया थारकन, श्रेषत এই স্থানে আছেন কিনা ? ঈখর সক্ষত্ত আছেন কিনা ? ঈখর मुखंबानी किना ? जेयत काथात आह्म १ अरे क्षण खिन াবশেষ পরীকা করিয়া দেখিলে চিন্তাশীল পাঠক মাত্রই বুঝিতে পারিবেন যে ইহার প্রভ্যেক গ্রন্নই "ঈশ্বর স্থানাধিকরণে" বিদামান আছেন বলিয়া নির্দেশ করিতেছে। বাঁহাদের জীবনের অধিক সময় দেশ-প্রতিষ্ঠিত রূপ রুস গন্ধ শব্দ স্পর্শ। আহক পদা-ংখের সহিত সম্বন্ধ, তাঁহারা সহজে দেশাতীত স্বার উপলব্ধি कत्रिटक পात्रित्वन ना, देश वकु आफ्टर्यात्र विषय नटर। স্থুণ দৃষ্টিতে দেশকেই সকল সন্থার আধার বলিয়া বোধ হয়। এজস্তুই হয়ত বেদে ঈশ্বরকে ছাঃ শব্দে আখ্যাত করিয়াছেন। বাভবিক অন্তদ্টি বিহীন বহিদ্টি শীল ব্যক্তির निक्ठे आकामहे नर्सनचात्र मिमान बीनता जरूज्ठ रहेना शास्त्र । কিন্তু সূক্ষ্য দৃষ্টিতে দেখিলে দেশকে আপেক্ষিক বলিয়া স্থীকার कतिएक रहेरव। (नमकान कीव टेहजटकातरे आरुप् छ ; जीव হৈতভাকে ছাড়িয়া আকাশের সন্ধানাই। স্থতরাং আকাশও জাব চৈতভের অংশেক্ষা করিতেছে। আকাশ যে চৈতভের 'আ**প্রায়** কারয়া আছে দে জীব চৈত**ন্ত আকাশের অ**ভীত বলিয়া শীকার করিভে হইবে। প্রভরাং জীব চৈতন্ত সম্বন্ধেই উলিধিত লপ প্রশ্ন করা যুক্তি বিলক্ষ বলিরা বিবেচিত হয়। ওক टिन्डना मध्यक्ष क कथारे नारे।

কেই কেই বলিতে পারেন ভাষার অপূর্ণতা জনা ওরপ প্রের্ম করা কইরা থাকে। বে ভাষা ভাষকে বাজ করিতে পারে না, নে ভাষা প্রহোগের প্ররোজনীয়তা কি? বরং এরপ প্রায়োগে সভ্য উপলব্ধির ব্যাঘাত হইরা থাকে। ভাষা যদি অপূর্ণ হর, ভবে উহা পরিত্যাপ করিয়া সভ্য উপলব্ধি করিতে চেটা করাই জ্ঞানিগণের কর্ত্ব্য। অথবা সম্ভবপর হইলে ভাষার অপূর্ণতা দূর করিয়া লওরাই উচিত। ব্রক্ষোপাসকগণ এদেশে নিরাকার পর্ম ব্রক্ষের উপাসনা প্রতিষ্ঠিত করিতে চাহিতেছেন; স্থতরাং ভাষা সম্বন্ধে সাবধান না হইলে ক্রমে ক্রমে পূর্বতন ভারগুলি সভ্যের পূর্ণতা বিদ্ধা করিবে। এবং অচিরেই পরিজ ভন্ম সভ্য অসভ্যের সক্রমে মলিন বেশ ধারণ করিবে।

जेथबर मकल धरनव अधिकादी—अधि প्राकाल এক রাজা ছিলেন। একদা মহারাজ চর পাঠাইয়া প্রজা-দিগকে অপুরে আহ্বান করিয়া আনিশেন। রাজাজার বশবর্ত্তী হইয়া প্রজার্ক দলে দলে লাজ বাড়ীতে আসিলা উপনীত হইল। মহারাজ সভামগুপে পাত মিত পরি-বেটিত হইয়া রাজকার্য্যে প্রবৃত্ত হইলেন। সর্কা প্রথমে প্রকামগুলীকে সংখাধন করিয়া বলিলেন, "আজি ভোমাদের সহিত নৃত্ন বনেশ্বেশ্ত হইবে। আমি কাহাকেও চির্তামী বন্দোবতঃ দিব না। ভবিষাতে প্রয়োজন হইলে আনি ইচ্ছ।মত প্রত্যেক প্রকাষেক আধিকার চুতে করিতে পারিব। তোমরা ইছা অরণ রাখিরা च च অধিকারে বাদ করিবে।" মহারাজ अहेक्रश विस्ताविक क्तिया नक्तरक विषाय मिलन। ध्यक्षेश्व :. মহারাজের আদেশ শিরোধার্য করিয়া বিদায় গ্রহণ করিল, এবং অ অ গৃহে প্রভাবের্ডন করিছা রাজ্যনত সম্পরি সভোগ করিতে আরম্ভ করিল। দিনের পর দিন চলিরা বাইতে লাগিল এদিকে প্রজাপুঞ্জের প্রত্যেকেই সুধ প্রবাহে আদ ঢাণিয়া দিয়া মোহে অভিভূত হইণ। পূৰ্ব স্বৃতি কাতে আছে বিদায় এহণ ক্রিল এবং প্রত্যেকেই আপনাকে মহারাক প্রদত্ত ভূসম্পত্তির একমাত্র অভাধিকারী মনে করিতে লাগিল। বংসরের পর বৎসর কালচক্রে ঘূর্ণারমান হইডেছে, ডথাপি রাজ ভূত্য আসি-ভেছে না। একদিন রাজচ্র জকস্মাৎ রাজাদেশ ধারণ করিয়া জনপদে উপস্থিত হইল। বিস্থৃতির বশবর্তী প্রজাপ্ত কারণ অত্যান করিতে অসমর্থ হটরা, রাজভৃত্ডোর সম্চিত স্থান করিল না। প্রাকৃতি ভাছাকে যথেট ঋণমানিত করিতে टाट्रामिरभन्न धहेन्नभ व्यक्तांनीत .. লাগিল। রাজভ্তা ছ্ৰব্যবহারে মৰ্ক বাধিত হইয়া রাজগৃতে প্রত্যাবর্তন করিল। মহারাজ ও প্রফাদিণের ধৃষ্টভার কথা প্রবণ করিয়া একদল বৈশ্ব সহ সেনাপতিকে তথার প্রেরণ করিলেন। সমর সক্ষা দেখিয়া অহমত প্রজাবনের অন্তরাত্মা কম্পিত হইরা উটিশ। ख्यन थान बन्धां बज्ज वाक्नि इरेबा ननावन कविरक Cbst দেখিল। কিন্ত চ্র্কার রাজ শক্তির হস্ত হইকে কোন জেমেই মৃক্তি লাভ করিতে পারিল না। তারপর অঞা মোচন করিতে क्तिए प्राण गतिथान উপস্থিত रहेग । महादाज काश्विति भन चुकि बाजक कविवाद किंगारन काशनिश्तक वर्षके कितकार

করিতে লাগিলেন। কিন্তু কিছুতেই মোথাক্সাদিত প্রজাপণের চৈতজ্যাদর কইবানা। ক্ষুম্ব চিয়ে তাবারা গোপনে মহারাজকে অভিসম্পাত কারতে লাগিব।

উল্লিখিত আখ্যাদ্বিকাটী পাঠ করিয়া আত্ম জীবনের দিকে লক পড়িব। এই বিশাল বিশ্বাজ্যের অধিপতি আমালিগের প্রত্যেক্ত **আহ্**বান করিয়া বছ সম্পত্তি প্রদান করিতেছেন। মৃতা, পিডা, লাডা, ভগিনী, স্ত্রী, পুত্র, কম্ভা, অর্থ মান সম্ভম तकतरे छीरात्र धामखः धानानकारम बनिएक एक मिष्क, नाव-ধান। কথনও স্থাও উন্মত চইরা আতা বিশ্বত হইও না। বাহা নাভ করিলে ভাষা ভোমার চির্ম্থায়ী সম্পত্তি নহে। যথন ইচ্ছা ও लायाजन क्रेट्न, खबनके हेश शूनला हन कविवा" समग्र त्याज ल्याहिक हरेएक गानिन, जामबाख त्यां ह मुद्ध हरेनाम । निकृ-पुष्ठ धन मरक्षार्श क्षेत्राख इहेश निष्ठारक विश्वष्ठ इहेशाम। व्यव-শেবে মহারাজ একটা ছুইটা করিয়া অধিকার কাড়িয়া লইতে লাগিলেন, তবুও চেতন। হইতেছে না। ছঃখিত ও বিষয় इहेब्रा शिक्टिक छि। हात्र कर्द थ लग मूत्र हहेरव। कर्द भूक মুতি অগ্নিৰৎ অশিয়া উঠিবে! কবে অনিভো নিতা শ্ৰম वृतिशा वाहरत ! निष्ठः ! ष्यानीर्सात कत्र । रखामारकहे मुस्ति। প্রভূমনে করিয়া জীবন চালাইতে আরম্ভ করি।

মানব প্রেমেই ঈশ্বর প্রেম;—লোকে উচ্চতম হইতে নিম্মত রাজ কর্মচারীকে স্মান প্রদর্শন করে। কারণ তাशात्र। देशानिशत्क माधात्रण त्नात्कत मण काम करत ना ; किन्न देशएमत मन्या मिन्ना त्राकाटक है एए एकं नाक्षण कि हेशएमत ভিতর দিয়া কার্যা করিতেছে, রাজ্বিধি স্কল ইত্রাদের ছারা প্রবর্ত্তিত হইতেছে, স্তরাং ইহারা রাজার প্রতিনিধি স্থরণ। **এই बक्र हे हो मिश्र क मधान क तिरण ताकारक है मधान क**ता रत्र এবং ইशनिगत्क अनुभाग कतिता त्रांकात्क अनुभाग कता হয়। ইহাদিগকে সাধারণ লোকের মত মনে করিলে কখনই গোকে এরপ ব্যবহার করিত না। সেইরপ মাতুর যদি ঈশ্বর হইতে সম্পূৰ্ণ সভম্ৰ হইড, ভাহা হইলে সে অৰফার পাত্র **হইতে পারিত। যথন দেখি যে সম্বয়ের মধ্যে ঈশবের শক্তি**, ঈখরের ইচহা কার্য্য করিতেছে, তখন আরে ভাহাকে তৃচ্ছ कतिरा भावि ना। मासूरवत मर्था याहा कि इ महजू, তারা তাঁহারই। মাধুবের যে জ্ঞান ভাছা তাঁহার জনস্ত জানালোকের কুল একটা কিরণ, মামুষের যে জোম তাহা উহিার অনক্ত কোমসাগরের কুজ একুটা তর্জ, মাছুবের যে পৰিত্ৰতা তাহা ভাঁহায় অসীম পৰিত্ৰতায় অভি ক্ষীণ আভাগ মাতা। মাত্র উহার মহৎ ভাব সকলের কুল কুল আধার। এম্ব্ৰ বে মামুৰকে ভালবালে লে ভাঁহাকেই ভালবালে, যে মানুৰের সেবা ক্ষরে, দে ভাঁছার্ট দেবা ক্ষরে এবং বে মানুবকে वृंगी करत (म छोड़ांतरे व्यवसानमा करत, ८व माञ्चरक (दमना ^{দের} সে তাঁহাকেই আখাত করে। মার্ছের অভরালে ভিনি वित्रमिन सर्विश्राद्यम ।

অনম্ভ আকাজনার পরিতৃত্তি;—বাভির আলোক क्षमदे भृषिवीरक विषरमत्र मह चारणाकिछ कत्रिएछ भारत ना। বাতির আলোকের বাাপ্তি অল, একম্ম তাহা অল পরিসর স্থানকেই আলোকিড ক্লবিডে পারে। পৃথিবী বহু বিভূত, এলভ ভাষাকে আলোকিত করিতে হইলে প্র্যার ভার কোনও বৃহৎ আলোক ময় পদার্থ চাই। নতুবা তাহার আয়- • काम पुहित्व ना । अहेक्र मश्माद्यत कृष्ठ वस्त्र गहेशा मानत्वत्र অন্তরের আকাজকাপূর্ণ হয় না। কুদ্র কুদ্র বিষয় স্কল প্রাণের ক্ষণিক বাসনাকে ভৃপ্ত করিতে পারে, কিয়ৎক্ষণের জন্ত সূপ . দিতে পারে। মানব-জ্বর কিন্তু অনস্ত বস্তুকে চায়, অনস্তের দিকে ভাহার শভাবতঃই গতি, শনস্তের জম্ম তাহা গঠিত। अक्रमा अनुस्राप्त ना भारेल छाशात्र अ आकाष्ट्र गिष्टिय ना। ব্দনত্ত আকাজকা দূর করিবার জন্ত অনত বস্তই আবিশ্রক। क्युक्त विशु घथन मामाविनिश्राकुल्यन करत्र, ७ थन यपि व्यथत কোনও জীলোক মারের মত দাজিয়া ভাগতে দাজনা করিতে যার, শিশু ভাহার মুখের দিকে চাহিয়া মা নর কানিয়া মুগ कित्रारेषा गहेरन। रमहेन्नम ध्वनत्यत्र बच्च निमामिख रग जान, ভাহার সেই পিপাদা দূর করিবার জন্ত যদি সাংগারিক কোন স্থের বন্ধ তাহার সন্মুপে ধরা যায়, তবে সে প্রাণ সে দিকে চাহিয়া ভাষা তাহার আংকাজকার বস্তু নয় জানিয়া তৎকণাৎ त्में निक इटेटफ सूथ किताहेबा नहेटव।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

এশী শক্তি।*

আচীনকালের ঋষিরা ঈশবের শক্তিকে দক্ষদার বিনিঃস্ত জনলের সহিত তুলনা করিয়াছেন। জনল যথন দার অর্থাৎ কার্ছের সহিত থাকে তথনই ভাহার দীপ্তি এবং ঐত্যাপ প্রকাশ भाषा कार्ड ना धाकिरन अनगढ धारक ना, आभनाभनि निर्दाण रहेशा यात्र। यथन ८कान आद्मित मध्या घटत आध्य नार्श, ষ্টক্ষণ নিকটে পুজ্বার উপযুক্ত ঘ্র থাকে, ততক্ষণ সে আগ্র-ণের গভিরোধ করাই কঠিন। বায়ুপুঠে আরোহণ করিয়া अधि এक চাল इहेट आत अक हाल लाकाहेश याहेट থাকে; অবশেষে বণন পুড়িবার মত কিছু না থাকে কোন বাপানের বা বনের পাশে আসিয়া উপস্থিত হয় তথন আপনা-পনি নিবিয়া যায়। আগুলকে কাষ্ঠরূপ আহার যোগাইয়া বাঁচাইয়া য়াখিতে হয়। পূর্বকালে একলেণীর ত্রাহ্মণ থাকি-তেন তাঁহাদিগকে আছিতামি কহিত; তাঁহারা শৈশবকালে णाश्वन ज्ञानिष्ठन, कार्क (यात्राहेशा छाहारक निस्तान हरेएछ मिर्डिन ना। **এখন भावभीकमिर**शंत्र मर्सा अभित शृक्षा अर्धति छ व्यर डाहाबा डडाहारम्ब डिनामना मन्मित्र व्यक्तिक निर्द्धान रहेटक (पन मा।

^{*} माः वाः मर्नारकत्र छेणांमना मस्तितः श'च्छ भिवनाच मात्री कर्ज्य अन्छ छैलद्रवरम्य मात्रारमः

चत्रिक बीविष्ठ त्राधिवात शत्क (यमम कार्डित व्यवसाजन, अनी मक्टिर मानवस्तर ध्राजनिक त्राधिवात एक एकमि किर्नत व्यावश्रक ! व्यामना नर्सना द्वारिक शहे, खेनी विका येख क्षमादक व्यक्तिक करत, जाहात मकन ज्ञानता कित्रमिन क्षक्रिक থাকে না। ভাষার উদ্ভাগ কালে জুড়াইরা যায় তখন মামুয वाहित्त्र (वड़ात्र, कांक करत, धर्म नाथम करत किंख किंडरतत উভাপ টুকু আর থাকে না। ইহার কারণ কি 🤊 ইহা বেন ঠিক প্রণয়ের গতির ভাষ। আনেক সময়ে ব্বক ব্বতীদিগকে ্ প্রাণরে পড়িতে ভনা যায়; প্রেমের আগুণ হঠাৎ দপ্করিয়া জলিয়া উঠিল; আপাদ মন্তক দেই অগ্নিতে ব্যাপ্ত হইয়া পড়িল; नम्मत ठिका, नभूमत ভाব, नभूमत कामना, त्महे व्यधित উछात्भ সতেম হইয়া উঠিল। তখনকার আগ্রহ, ব্যাকুলতা, নি:স্বার্থতা **(मर्थ क् १ '(म ममग्रकांत जांव स्मिश्त तोध इग्न भिरूप** সেই রমণীর জন্ম জলে ডুবিতে পারে, আগুণে পুড়িতে পারে; সাঁভার দিয়া সমুদ্র পার হইতে পারে। কিন্তু কোন কারণে সেই প্রণয় পরিণয়ে পরিণত হইল না; শুরুদ্ধনের প্রতিবন্ধকতা বা অন্ত কোন কারণে বিবাহ সম্বন্ধ ভালিয়া গেল। তথন সেই যুবক ক্ষিপ্ত হয়, কি বিষণান করে, কি দেশান্তরী হয়, তাহার স্থির নাই। বিস্তু অপেকা কর, কালের চক্র প্রণয়ও মানে না, विष्ठान व्यर्थे वित्रहेश शंगना करते ना। कानहांक मगरा অভীত হইয়া গেল ছই চারি বৎসর নিঃশব্দে অলম্রোতের ক্রায় বহিয়া গেল, নবীন তাণয় পুরাতন হইল। দেখি আর সে যুবা দে রমণীর নাম করে না, জার দে উত্তাপ নাই,জার দে ব্যগ্রতা नाहे; आत आयम्पर्यन नाहे। तारक दनिन हेहात छान-বাদা জুড়াইর গিয়াছে। **ঈশ**রের সম্বন্ধে আমাদের যে ভাল বাসা তাহাও কি এই প্রকার জুড়াইয়া যায় ? দেখি মনেক স্থলে বাস্তবিক জুড়াইয়া যায়। ধর্মজীবনের প্রাথমে যে ব্যাকু-লতা বৈরাগ্য, আত্ম সমর্পণ ছিল, তাহা আরু থাকে না।

মানবীয় ভালবাসার স্থলে প্রণয় পরিণত না হইলে যেমন ভালবাসার শক্তি হয় না, ঈশ্বর সম্বন্ধেও সেইরূপ প্রণয় পরিণয়ে পরিণত হওয়া চাই।

ঐশী শক্তি যপন সদয়কে অধিকার করে তথন হাদয়কে পাপ বর্জন ও সাধুতা অর্জনের দিকে প্রোরণ করিতে থাকে। যেমন প্রেরণা আসে অমনি যদি তত্ত্সসারে চলা যার, তাহা হইলে সেই প্রেরণা জীবনে আরও প্রবল হইতে থাকে, এবং ঐশী শক্তির প্রভাবও সেই সঙ্গে বাড়িতে থাকে। ক্রমে সমগ্র জীবন ঐশী শক্তির অধীন হইয়া পড়ে এবং সেই শক্তি দক্ষ দারু বিনিঃস্ত অনলের ভার দীপ্তি পাইতে থাকে।

• অপরদিকে ঐশীশক্তির প্রেরণা যদি অবহেলা করা যার; সংসারের ক্ষতি গণনা বারা মহৎভাবকে যদি মান করা যার; ঈর্বরের প্রেরণা অপেক্ষা মানবের পরামর্শকে যদি শ্রেষ্ঠ হলে দেওরা যার; ঈর্বর অপেক্ষা মানবের উপর যদি অধিক নির্ভর করা যার, তাচা হইলে তাহার শান্তি এই হয় য়ে, সে প্রেরণা আর থাকে না এবং কাষ্ঠাভাবে অধি যেমন নির্কাণ প্রাপ্ত হয়, ঐশী শক্তিও তক্ষপ জুড়াইরা যার!

মানব উপাসনা কালে ও আত্মার উচ্চ অবস্থাতে যে স্ক্র

একলা আমি একটা সমাজের উৎসবে গিরাছিলাম,সেধানে এक छन लोक बामारक विलितन, जिनि अपन महकाह: ভিনি যথন জিনিব পত্তের 'ওজন শইতে যান ভখন বাহার। **७वन (नम्र जाहानिर्शन निक्**षे **नम्र**नि गहेमा **पार्कन**, जाहा উচিত কিনা? আমি জিজাসাকরিলাম, দভরির অর্থ এই किना (य. जाहांत्रा এहे बक्क व्याननात मरखाव माधन करत (य আপনি ঠিক নমুনার মত জিনিষ মিলাইরা লইবার জন্ত পীড়া-পীড়িনা করেন ? তিনি বলিলেন হাঁ তাহা বই ছি। তখন আমি বলিলাম তবেত আপনি আপনার প্রভুকে প্রবঞ্চনা করি-তেছেন। একার্য্যে আপনার পাপ হইতেছে। তিনি বলিলেন "এখন আমার কর্তব্য কি" ? আমি বলিলাম দল্ভরি না লওয়া। তিনি বলিলেন 'পরিবার চলিবে কিরুপে''। উত্তর—'ভাগ আমি জানি না, অস্ত কোন বৈধ উপায় অবলম্বন করুন। আফি এই মাত্র বলিতে পারি আপনার সমগ্র পরিবার পথে পড়িয় মরিলেও এরপে অর্থ উপার্জন আপনার বিধের নয়। আহি पिथिनाम जिनि त्योनी ७ ज्ञान इटेग्ना त्शालन । **ভाবে** त्याः হইল এত সাহদ ভাহার হইবে না। **উঠিয়া আসি**বাং भगर वाहित्र कामित्रा मिथानकात डाक्मिमिश्क विमास, अम् वाकि जाननारम्य मध्य बाकिर्यन मा। नक्ष कांत्र विकार क्रिलन-कार्य विनाम ना। श्राप्त अक वर्गायत मार তিনি ত্রাহ্মসমাজ পরিভাগে করিলেন। এখন তিনি বিষয়ী পক্ষে বেশ আছেন, বিলক্ষণ উপাৰ্জন করিতেছেন, শরীর বেল আরামে আছে, টাকা কড়ি, ধন দৌলত, বাড়ী ঘ बी भूख भविवात, मान मानी, नव त्रहिताहा। किन उम्मणि যাহা এক সমরে একট জাগিরাছিল তাহা মরিয়া পিরাছে क्षेत्रंद्र नात्म चात्र कृति नारे--श्रामंत्र कामक चात्र खान ना না-এখন তিনি নিরুপদ্ধবে সংসার রাজ্যে হর বাঁধিয়া ব ক্রিতেছেন।

এইরপ আরও অনেক দৃষ্টান্ত দেখা গিরাছে। একব একটা যুবক আসিরা আমাদের সঙ্গে মিশিল। ছেলেটা ে আগুণের থাপ্রা, সকল বিবরে উৎসাহ স্বার্থনাশে অপ্রসর, গ' প্রমে কাতর নব, উপাসনাতে ক্ষচি, সম্বর্ছানে অন্তরাগ, সং সক্ষণই স্থানর। আমরা গোপনে ব্যাবলি ক্রিডে লাগিল' ক্ষরারুপার এই একটা ছেলে আসিয়া পড়িরাছে, প্রারুসন

चलके नाक कहिए। आयेश नकन sain wiern wienn fininmi waten miffenin : fin हात। कांत्र महत् दव क्लिकांत्र जूनावेश बाटक क्ला वाद मा। একবার নৈ বাকীতে গেল, শুনিলাব যে ভাতার কিন্তু আখীর অস্বানের অস্থারোধে প্রারশিক্ত করিয়া পৌত্তনিক মতে বিবাহ ক্রিরাছে। সেবে ঈশবের নাম ক্রিরাছিল এবং উচ্চার ह्यनामक्तिरंगंत गरिष्ठ मिनित्राहिण, त्यरे माल्यत धायन्तिष क्तिशाह ! तिहै वि गर्नतिम विवाह हहेन, ति यूवक्कीत्क আম্বা জ্যের মত হারাইলাম। ত্রন্থাক্তি অপনানিত হইরা जाहाटक शक्तिकाश कविद्यान । आह दन आमानित्रात निक्षे प्रथ (तथाहेन मा। धारेक्ररण धारे पीतिम यरप्रदा कछ लारकत ভালবাদা বে ভুড়াইরা গেল এবং কতলোক যে ধর্মরাজ্য পরি-ত্যাগ করিল ভাষা বলা যার না। ব্রহ্মারি এমন জিনির নর বে ভাষার প্রতিকৃশাচরণ করিয়াও ভাষাকে রক্ষা করা ঘার। वाक्तिश्र कीवान वमन धहे कथा नछा. ध्यानभाष्ट्रत कार्या ल्यांनी मद्द्र १ हेरा महेक्य मछा। द्यान धर्ममाल यनि मुत्थ वरनम, चामारमय निर्खन्न स्वेषदेवन केशदून, विश्व **कार्य**ी रमश्री যার ভারাবের নির্ভর মারুবের উপরে রহিরাছে, ভাষা চইবে जतात्र कांशास्त्र मधा इटेटल बन्नाधि निर्साण शांख इरेश यात्र। (य तकन डेफ डेफ नठा व्यामना श्रामत कतिन, यनि निरस्त्रा भवनाख:कब्रान जमसूनारत कार्या कतिवात (ठडी) ना कति जर्व स्म ধর্মসমাজ ছারা আর সবই প্রচার হইবে, কেবল ধর্মজীবন গঠন इटेरव ना ; तम्भ मरभा अश्वाधि व्यनित्व ना ।

আমরা বতই এক্ষণক্তির প্রেরণার বশব্দী হইণ ততই चामारतत्र कीवरन बन्नभिक्त शतिका है इडेरव। य चामारतत कार्गा (मिथिदन वा तम विषया विश्वा कवित्व छोहात छ समय स्थि-मन इरेट्य। এই अवनी क्या चार्मानिशक मर्त्रमा मटन द्राधिट ठहेता आमता मूर्य य ठहे अठात कति ना कन, आमारमत कार्रात अञ्चनहारन यनि अभरतत क्रम अधिमत ना इत्र, यनि केचंत्र-विचान जासदत केकीश ना रूप, यनि शविद्य व्याकास्का গ্রন্থলিভ না হয়, যদি আর্থনাশ প্রবৃত্তি প্রবল না হয়, তবে ব্ৰিতে হইবে আমাদের ছারা কোন কাল হইতেছে না। দীপা-वगात मिन बानरकता चारश अवनी धामीन चानिया छ९भटत গেই প্রদীপ হইতে শত শত প্রদীপ জালিয়া গাকে; প্রকৃত धर्षे श्रीहात छ। एक अकारक इत्र । धर्मात वाहिए तत्र माधन व्याहात क्त्री 'अ कारतक्षत क्त्रा काकि महस्य वालित। विना वारत, বিনা আয়াদে, বিনাজ্বয় পরিবর্ক্তনে লোকে তাহা গ্রহণ ক্রিতে পারে। সেইরূপ ধর্মের মন্ত প্রচার ও কঠিন কথা নর: विकियान चाहार्या हरेला विजयक्रार्थ वृक्षाहिया छाहा रिगारक व क्षेत्रणम कत्रिया मिट्ड भारतमः। मुक्कारभका क्रिन, त्नारकत्र ^{অন্তরে} বন্ধারি উদ্দীপ্ত করা; নিত্রিত অস্তাপকে জাগ্রত করা; শাধ্তার আকাজকাকে অভিশিধার স্থায় অভাগিত করা; भेवत-नानमारक धारन कहा। धहे जिनियी चारन रहत, मङ प चर्ठीन भरत चानिर्द। **এই जिनिय्**ति भिटल चनमर्थ इड, ^{धरः} मठ ६ अष्ट्ठीरन मांसूबरक नित्रक कत, (न नमांस आधा-ত্মিক ভাবে মৃত ব্যক্তির স্থাল হইবে। তাহা লগপার্থে (

টোলিক বুলের ভার বিশ্র বিলে বর্মান এবং শোভানানী হইবে না, কিন্তু মহুগার্জাগিত বুলের ভার জীবস্ত হইর। ব্যক্তির।

खाकाशर्मात श्राह । (६६७)

আখাদের কোন কোন আন-আভার এইরপ মত বে, অর্ক ু শতালীর অধিক কাল এদেশে আন্ধর্ম প্রবৃত্তিত হইয়া উহা মঙদুর প্রচারিত হইয়াছে ভাষা বড় আশাপ্রদ নহে। উহোদের সংকার বে আন্ধর্ম বতন্ব প্রচারিত হওয়া উচিত ছিল ভাষা হয় নাই এবং উহা ধারা পেশের লোকের কুলংকার মতন্ব দ্রীকৃত হইবার ভরসা ছিল ভাষা হয় নাই। আমাদের বিখাল ও সংখ্যার শতর।

यात्राम्य पाकि डेक मर्चा. भृशिवीटि चक्रास रा मक्न मर्च প্রচলিত দেখা বার মাধ্যাত্মিকতা সম্বন্ধে তাহা হইতে ভ্রামা-श्राच्यात केक जा काल कालिक दम काला अर्थावन की गण कामाराम ও স্চলে এ:জ্বার্মের মত ও বিখাস স্কৃণ জ্বরে ধারণ করিতে পারিবে এরপ আশা করা বার না। মানব মন বে মত ও বিখাদে চিরাভাত, বা বছকাল হইতে অভাত্ত, তাহা উরত ও সংস্কৃত করা সময়-সাপেক, এবং উহা যত অধিক পরিমাণে উন্নত ও সংস্কৃত ক্রিতে যাওয়া যায় তত অধিক সমরের আবস্তাক হয়, ইহা একটা প্রম স্তা। একটা জাতির প্রাণে কোন একটা নুত্র ভাব স্ঞার করিরা দেওরা তুদিনের কার্যা নহে, ভাগা শত শত বংগরের চেষ্টা-সাধ্য। ধর্ম, ধর্মনীতি, বা রাজনীতি, যে কোন বিষয়েরই হউক একটা নুচন উল্লভ মত বা একটা নুত্র উচ্চতর আদর্শ একটা জাতির মান্সিক প্রকুতিতে ব্রুষ্ कत्रा (व कानगारभक्त, भृषिवीत देखिहान हरेएछ छाहात निरमव ध्यमान भावता यात्र। माकात्रवामी हिन्मूरक निवाकांत्रवामी क्या. ली छानक हिम्मूतक ब्रह्मानाम क क्या, लोकिक आंठा-रतम क्ली छमामवर अञ्चर्धि अच्छित्क विरवकवानीत स्मवक अहतः। भक्षाण वा अक्षण व व पात्रत कार्या नहरू । महस्य महस्य व प्रात সাকারোপাসনা করিয়া, পুত্তলিকা পৃত্তা করিয়া, এবং বিবেক বাণীর পরিবর্ত্তে আচার ব্যবহারের সেবা করিয়া, যে আছির মানসিক প্রকৃতি গঠিত হইয়াছে, সে জাতি বাহাতে নিরাকার ব্ৰন্ধের পূঞ্জা করিতে পারে এবং বিবেকবাণীরই সেবা করিছে গারে এমন করিরা তাহার প্রকৃতি উরত ও সংস্কৃত করা কি कथन खन्न मनत्र ७ सन्न स्थाताम माधा इटेट्ड भारत ? हिन्सू জাতির বর্তনান ধর্ম ও নৈতিক অবস্থা যালা, এবং ত্রাহ্মসমাজ উहाटक दय डेक्क मामनीकृताती कतिएक हाटहन, यहे व्हेटप्रत मत्था जुनना कतिरन अञ्चल अञ्चल प्राचित्र भावता यात्र त्य গত বাইট বংগরে এক্ষেসমাল বালা করিয়াছেন ভাচা আলো-हमा क्रिया चामता टेमबाच्छरक क्थनहे सप्तत्र श्वान पिटल भाति

ব্রান্ধের বা ব্রাক্ষসমান্ধের সংখ্যা কন্ত বৃদ্ধি হটতেছে তাহা বাঁহারা ব্রাক্ষধর্শের কার্ষোর পরিমাণ ছারা সিদ্ধান্ত করেন ভাঁহারা ভ্রমান্ধ। অসাক্ষাৎ ভাবে দেশের উপর ব্রাহ্মধর্শের প্রভাব বেরুপ বিস্তৃত হইডেছে তাহার প্রতি অন্ধ হওরা উচিত হর

मा। এই य चाक कान रहरम्य मगरत मगरत आया आया হরিসভা দেখা যায়, আক্ষধর্মই ঐগুলির জন্মদাতা। এই সক্ল ग्राका जाकात्रवामी नरह, (भोखनिक अन्दर्। बाक्ष सर्पात ध्याम ভাব যে একেখরোপাসনা তাহাই এই সভাগুলির প্রাণ। যে मक्न लाक बाक्ष इरेश हिन्दूमभाष्ठां इरेवात छत्र करतन, কিছ সাকারবাদের ও পৃত্তলিক পৃত্তার অমাত্মকতা কারলম করিয়াছেন তাঁহারাই এই সভার স্ভ্য হয়েন। ইইাদিগের অনেকে কার্য্যে ও মতে সঙ্গতি রক্ষা করিতে সমর্থ হয়েন না বটে, তথাপি ছরিসভার সভাগণ সাধারণ হিন্দু সম্প্রদার হইতে উন্নত ও ব্ৰাহ্মসমাৰের অধিকতর নিক্টবর্তী তাহা আশীকার করা যার না। পুরণোকগত দয়ানন্দ অরম্বতী প্রতিষ্ঠিত আব্যি-সমাজ্ঞও ব্রাহ্মসমাজের সপ্তান। যথন ব্রাহ্মধর্ম উত্তর পশ্চি-মাঞ্চলে প্রচলিত হইতে আরম্ভ হয় এবং ঐ অঞ্চলীয় অৱেকে ঐ ধর্ম গ্রহণ করিতে আরম্ভ করেন, তথন দয়ানন্দ অরম্বতী ঐ ধর্মমতের সভ্যতা উপলব্ধি করেন এবং আ ঋধর্ম গ্রহণ করিতে গেলে হিন্দু সমাজচ্যুত হইতে হয় দেখিয়া তিনি আহ্মধর্মের প্রধান মন্ত যে একেখরোপাসনা ভাছাই আর্যাধর্ম নাম দিয়া প্রচার করিতে আরম্ভ করেন। আর্যাধর্মে ত্রাহ্মধর্মবিরোধী কোন কোন মত আছে বটে, কিন্তু উহার ভিত্তিভূমি একেখর-বাদ। এই আর্যাধর্ম পঞ্জাব ও উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে একণে খুব প্রচলিত হইতেছে। হরিসভার ভায় আর্থ্য সমাজও ব্রংকা-অবির আজকাল মাজ্রাজ প্রদেশে দেওয়ান ধর্ম্মের ফল। বাহাত্র রঘুনাণ রাও হিন্দু শাস্ত্র হইতে সার সংগ্রহ করিয়া "সংস্কৃত হিন্দু ধর্ম" নাম দিয়া যে ধর্মমত প্রচার করিতে জারম্ভ করিয়াছেন তাহার সহিত ব্রাহ্মধর্মের বিশেষ ঐক্য আছে এবং তাহাও আক্ষধশ্যের ফল। আক্ষধশ্য মাজ্রাজে প্রচারিত হইতে আরম্ভ হইবার পরে তথায় "সংস্কৃত হিন্দুধর্মের" অভ্যুদর হই-রাছে। এখানেও সমাজচ্যুত হইবার ভবে শিক্ষিত লোকে আক্ষানা হইয়া দেওয়ান রঘুনাথ রাওর এইবর্ভিত ধর্ম গ্রহণ করিতেছে। আমাদিগের বিখাস যে হরিসভা, পঞ্জাব ও উত্তর পশ্চিমাঞ্লের আর্য্যসভা ও মাক্রাজের সংস্কৃত হিন্দু সভার সভ্য-গণ ক্রমে রাহ্মধর্মের রাহ্ম নাম গ্রহণ করিতে ক্ষঞ্জসর হইবেন। এই সকল সভাগুলি যেন হিন্দুদিগকে ত্রাহ্মসমাজের উপবোগী করিবার জক্তই জন্মগ্রহণ করিয়াছে। যেমন কোন কোন ধর্মের মত এই যে জনাদি পুরুষ পরত্রক্ষের নিক্ট উপাস্থত হইতে গেলে কোন মধ্যবর্তী মহাপুরুষের সাহায্য আবশুক, তেমনি আমরা দেণিতেছি যে ত্রাহ্মসমাজে আদিতে পেলে অনেকের পক্ষে উপরোলিথিত সংস্কৃত হিন্দু সমাজের কোনটার মধ্য দিরা আসো আবিশ্রক। ভরস। হর ঐত্তলি ক্রেমে অনেকের পক্ষে এইরূপ মধ্যবতী সভার কার্য্য করিবে।

ব্রাহ্মধর্ম যে জ্বভবেগে প্রচারিত হইতেছে না তাহার প্রধান কারণ এই যে প্রচলিত ধর্ম সকল অপেক্ষা ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিখাস এত উন্নত ও সংস্কৃত যে মানব প্রকৃতির নির্মান্ত্র-সারে উহা অরকাল মধ্যে বহু সংখ্যক লোক কর্তৃক গৃহীত হইতে পারে না। ব্রাহ্মধর্ম যেরপ উচ্চ ধর্ম এবং প্রচলিত অক্সান্ত ধর্মের অপেকা উহা যেরপ শ্রেষ্ঠ তাহাতে বংসরে বৎসরে উহা সহজ্ঞ সহজ্ঞ লোক গ্রহণ করিবে দেশের বর্ত্তমান শিক্ষার অবস্থার এরপ আশা আমরা করিতে পারি না। বীহীরান মিদনরিদিগের ভার চ্ছিক্তপ্রাণীড়িত স্থানে বাইরা চ্ছ মাসের মধ্যে এক লক্ষ লোককে আমাদিগের উচ্চ ধণ্মে দীকিত করা আমরা স্থা করি। আক্ষাণ্যের প্রচার কার্য্যের উন্নতি ধীর অথচ স্থির হইবে ইহাই আমরা ভাষ্যরূপে আশা করিতে পারি।

উপসংহারে বলা নিতান্ত আবশ্রক যে ব্রাহ্মণর্শের উচ্চ ও সংস্কৃত মত অপেক্ষা ব্রাহ্ম শীবনে প্রদর্শিত ব্রাহ্ম ধর্মানুষারী পবিত্রতা ও মহত্ব ব্রাহ্মধর্ম প্রচার কার্যোর অধিকতঃ সহারতা করিবে।—তত্ববোধিনী।

अपनीय बानामगाज।

ভাঙ্গীপাড়া কৃষ্ণনগর। (ছগণী)

গত ৫ই জৈঠি প্রজের বাবু নীলমণি চক্রবর্তী মহাশর, এখানকার বাবু রতিকান্ত দিংহ রার মহাশর প্রভৃতি ছারা বিশেষ ভাবে নিমন্তিত হইরা আদেন। রতি বাবুর প্রস্তু, এককড়ি বাবু আক্ষ ধর্ম্মে দীক্ষিত হইবার কারণ দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হওয়াতে, তাঁহাদের বাটীতে ও আন্মীরদিগের মধ্যে আন্দোলন ও কারা কাটী পড়িয়া যার; সকলকে সান্ধা দিবার করেন। তিনি নীলমণি বাবুকে উইবো এখানে আহ্বান করেন। তিনি এখানে চারি দিন থাকিরা যেরপ কার্যের অসুষ্ঠান করিয়া গিয়াছেন তাহার বিবরণ প্রাল্ভ হইল।

- ই জার্চ শমিবার—রাত্রে মাধবপুরে রতি বাবুর বাটাতে
 অনেক গুলি আক্ষধর্মান্ত্রাগীর সহিত উপাসনা ও

 সংকীর্ত্তন। উপদেশ "সকল অবস্থার মধ্যে ঈশ্বরের
 উপর নির্ভর।"
- ৬ই জৈঠ রবিবার—প্রাতে স্নানান্তে নির্জ্জন বাগানে উপাসনা। রাজে রতি বাব্র বৈঠকখানার উপাসনা। উপদেশ "সংসারে থাকিয়া ধর্ম সাধন।"
- পই জৈঠি সোমবার—প্রাতে বাহিরগড়ার বাবুদের পূজার
 দালানে পারিবারিক উপাসনা। উপদেশ "প্রমেখরকৈ আশ্রম করিয়া থাক, ধর্মাজীবন আপনাআপনি
 গঠিত হইবে।" মধ্যাতে ''সভ্যধর্ম প্রচারিণী সভা"র
 সভ্যদিগের মধ্যে ধর্মাজীবন গঠন সম্বন্ধে আলোচনা।
 রাত্রে সামাজিক উপাসনা, সংকীর্ত্রন; উপদেশ ''বিপদ আসিলে মানব জীবনে সদ্পুণ ও ঈশ্বর প্রেমের পরিচয় পাওরা বার।" পরে কভকগুলি প্রতিজ্ঞায়
 (বেমন—নির্মিত দৈনিক উপাসনা করিব ইভ্যাদি)
 সমাজের সভ্যদিগের স্বাক্ষর করা।
- ৮ই জৈঠ নক্ষবার—প্রাত্তে পারিবারিক উপাসনা, উপরেদ 'বিখাস এবং প্রেম ব্যতীত বাহিরের আড়ম্বর অফু-ঠানের কোন মুল্য নাই।" রাজে, নাধবপুরে রতি বাব্র বাটীতে উপাসনা; উপদেশ "সংসারের সহিত আমাদিগের অল দিনের সম্ম, কিন্তু ইশ্রের সহিত অনস্ত কালের সম্মুদ্ধ।

এই ক্ষেক দিনের প্রতিবারের উপাদনার স্ত্রীলোকেরা আজি আগ্রহের সহিত বোগ দিলাছিলেন। তাহাদের বড় প্রশ্না ও জজি। পুরুষ্থের অপেকা যেন তাঁহাদের জগবানের নামে বেশী টান। এই ক্য দিনের উপাদনা, সংকীর্ত্রন, উপদেশ প্রভৃতি বড় মধুর ও হালয়গ্রাহী হইরাছিল। নয়, নারী, বৃদ্ধ ও যুবা সকণেই সন্তই হটরাছেন। কাহারও প্রতিকৃশ ভাব বড় দেখা গেল না। সকলেরই হালয় বিশেষ ভাবে আফুট হটরাছিল ও সকলেই নোহিত হইরা গিয়াছেন। এখানে এখন অহক্ল বাতাস বহিরাছে, কাল করিতে পারিলে বড় স্ক্লন ফালার আশা। হই একটা প্রিবারে দৈনিক নির্মিত পারিবারিক উপাদনা প্রার্থনাদি হইতেছে। 'মা'র জয় হউক।

বৃধনার দিন নীলমণি বাবু "হড়া হিল্পুধর্ম প্রচারিণী সভা"র সম্পাদক বাবু বিশিন বিহারী ঘোষাল (হিল্পুধর্ম ক্ষানকাণ্ড ও কর্মকাণ্ড প্রভৃতি সঙ্কলন্ধিতা) নহাশরের বাটী হইরা যান। উহার সহিত ৩৪ ঘণ্টাকাল আমাদের দেশের ধর্ম ও সমাজ সম্বন্ধে নানা রূপ আলোচনা হর। বিশিন বাবু স্বীকার করেন যে, রাহ্মসমাজ যে ভাবে কার্য্য করিতেছেন তাহাই ঠিক। তিনি হিল্পুশাল্পের প্রমাণ বারা যে ভাবে একেশ্বর বাদ প্রচার করিতেছেন তাহাতে তেমন ফল হইতেছে না। ভবে আর কিছু দিন অপেকা করিবেন। 'সত্যের ক্ষয় হউক'।

বৈশ্বলপুর হইতে জনৈক বন্ধু লিখিরাছেন:

গত ৩০ লৈ বৈশাধ রবিবার বরিশাল আক্ষদমান্তের প্রচারক
শ্রম্বাশন বাবু মনোরপ্রন গুছ ও আরও ছুইটা ভজ্তলাক প্রচাবার্থ মহেশ্রপাশা গ্রামে আগমন করেন। রবিবারে রাত্রিতে
বাবু বৈশাসনাথ মজুমদার মহাশরের ভবনে, "আক্ষধর্ম কি"
এতং সম্বন্ধে মনোরপ্রন বাবু অতি স্থানর হৃদরগ্রাহী বজ্তা
প্রদান করেন। পৌত্তলিকতা ও জাতিভেদের দ্যনীয়তা
উত্তমরূপে ব্যাপাত হয়। বজ্তাতে অনেক গুলি ভল্তমহিলা
উপস্থিত ছিলেন। সোমবার প্রত্যুধে নিম্নলিখিত গীত্তী
লোকের ছারে ছারে কীর্জন করিয়া পরে বাবু রামলাল মজুমদার
মহাশরের ভবনে উপাসনা হয়।

গীত :— "ব্ৰহ্মনাম বদনেতে বল অবিরাম,
ব্ৰহ্মনিশে মেতে সংৰ কর নাম গান।
চেরে দেব বিশ্বন ব্ৰহ্মনাম পাইল,
পশু পদ্দী ভক্ষণতা ব্ৰহ্মানশে মাতিল।
নগনারী সংব ভবে কোন,প্রাণে ভূলে রবে,
বদন ভরিবে বল জর প্রাণারাম।
(জর প্রাণারাম, জর প্রাণারাম, বল জর প্রাণারাম,
বল জর জর প্রাণারাম)
সারানিশি বার কোলে নিরাপদে ছিলে,
বাঁছার ক্রপার পুনঃ নরন মেলিলে,
জাগে ভারে প্রশ্যারে ছক্তি পুশাঞ্জলি দিরে,
জানেশ মাভিন্নে বল জর প্রশারাম।
(জর প্রাণারাম, জর প্রাণারাম, বল জর প্রাণারাম,
বল জয় জর প্রাণারাম)

নৈকালে দৌলভপুর ছাত্র সভার সভালিগের হারা অভ্কল্প হারা, তাঁছালিগকে চরিত্রোয়তি-বিধায়ক নালাবিধ উপদেশ প্রাদান করেন। রাত্রিভে পুনরায় বাব্রামণাল মৃত্যুম্বার
মহাশয়ের ভবনে উপাসনা ও উপদেশ প্রান্ত হর। কলেকটা ভল্লমহিলা উপাসনার সময় উপস্থিত ছিলেন। মঙ্গলার
সকালে বাব্রামণাল মজ্মদার মহাশয়ের ভবনে উপায়না
হয়। বৈকালে প্রামন্থ বালকদিগের অসুরোধে বালিকা-বিদ্যালয়
গৃহে অভি ক্ষার উপদেশ পূর্ণ একটা বক্তৃতা করেন। রাত্রিতে
বাব্ জয়চরণ পাল মহাশয়ের বাটীতে বক্তৃতার কণা ছিল, কিন্তু
বৃষ্টির জন্ত হয় নাই। ব্ধবারে মনোরঞ্জম বাব্ খুলনাতে ব্রাহ্মসমাজ
সম্বন্ধীয় বিশেষ কার্যোর জন্ত চলিয়া যান। আবার পুনরায়
প্রামে প্রভাগমন করেন। রাত্রিতে বাব্ জয়চরণ পাল মহাশয়ের বাটীতে বক্তৃতা দেন। ভগবানের ক্রপায় উপাসনা,
উপদেশ ও বক্তৃতা ইত্যাদি অভ্যন্ত মনোরম হইয়াছিল।
প্রামের আবালবৃদ্ধ বনিতার মধ্যে একটা আন্দোলনের স্লোভ

भाकान्त भारतात्र विषय शास्त्र এकनन का व्यक्त ৰালক, যাহারা হ্নীভির জ্রোভে গা ঢালিয়া দিয়া অব-নতির পথে অগ্রসর হইতেছিল, মনোরঞ্জন বাবুর উপাদনা, উপদেশ ও বক্তার দারা তাহাদিগের সকলেরই মনের গতি ফিরিয়া গিয়াছে। বিশেষতঃ ছটী বালকের বিশেষ পরিবর্তন (मथा याहेरङहा अञास इः स्थित এवः आफर्रात विवत अहे বপন গ্রামের এই সকল বালকেরা ছ্নীভির স্বোভে ভাসিতে ছিল, তথন ইহাদিগের অভিভাবকেরা কোন প্রকার শাসন किया উপদেশ बाता मर्पर्य होताहर् एठ हो करतन नाह, किय এখন বেমন তাহাদিগের ধর্মের দিকে—ঈশবের দিকে— চরিজোরতির দিকে দৃষ্টি পড়িয়াছে, তেমনি অভিভাবকেরা তাহাদিগের প্রতি কঠোর বাবহার করিতে আরম্ভ করিয়াছেন ! পূर्स्स यथन वांनरकत्रा क्कार्यात बच्च এकव मिनिक, ख्यन **অভিভাবকেরা শাসন করিতেন না, কিন্তু এথন তা**হারা ধর্মালোচনার জন্য, চরিজোন্নতির জন্য মিশিতে গেলে পিতা মাতা হইতে বাধা প্রাপ্ত হইতেছে। হায় । কবে এই স্কল (नारकत हक् कृष्टित !

বাব্ মেঘনাদ মজ্মদার পূর্ব্ধে মৃত্তিকা নির্দ্ধিত শিবপুঞা কবিতেন, কিছ তিনি যে মৃত্ত্ হইতে বৃথিতে পারিয়া- ছেন যে, পৌলিকতা অনম্ভ ঈশরের পূজা নহে, সেই মৃত্ত্তি ইউতেই মৃত্তিকার শিবকে বিদায় দিরা অনম্ভ মঞ্লের প্রাপ্রণনি তাঁহার পূজার মনোনিবেশ করিয়াছেন। গালাগালি তাঁহার অঞ্চের ভূষণ হইয়াছে। ভগবানের নিকট প্রার্থনা তিনি তাঁহার ভূব্বল সম্ভানের অঞ্চলরণে বলের সঞ্চার ক্ষেন, যাহাতে তাঁহার সম্ভান সকল প্রকার অপমান যাতনা সৃষ্ঠ্ করিয়া তাঁহার নাম মহীয়ান্ ক্রিতে পারেন।

বাঁহারা প্রকাশ্তে জাতিতেদ পরিত্যাগ করিয়াছেন নানা প্রকার কুৎসা করিয়া তাঁহাদিগদে অপদস্থ করিবার জনা হিন্দু সমাজের অপ্রদীগণ বিশেষ চেষ্টা করিতেছেন; এবং তাঁহাদের আত্মীয়দিগদে নানাপ্রকার ভর দেখাইয়া ঘাহাতে তাঁহাদের দমন হর, এরপ চেটা করিতেছেন, কিছু আগুণ কাণড়ে বাধিয়া লাগে কাহার সাধা ? পুর্কোরিপিত দৌশতপুর ছাত্র সভার ছারা বালকদিগের সর্বাপ্রকার উরতির যথেষ্ট সাহাব্য ছইডেছিল কিছু এই আন্দোলনের পর হইতে বৃদ্ধেরা সভার উপর খড়গান্তত হইয়াছেন। তাঁহাদিগের বিশ্বাস বালকদিগকে ব্রাহ্ম করিবার জন্ত এই সভা হইয়াছে। কিছু বাত্তবিক এই সভাতে কোন প্রকার ধর্মের আলোচনা হয় না। বিশেষতঃ যে সকল বালকের মনের গাঁত পরিবর্ত্তিত হইরাছে তাঁহারা কেছই এ, সভার সভা ছিলেন না। যাহাতে এই সভাতে বালকেরা যাইতে না পারে বিশেষ ভাবে এরপ চেটা হইডেছে। কিছু ভগবানের কুপার এ সকল চেটা ব্যর্থ হইয়া যাইবে। ভগবান আমাদিগকে বল বিধান করুন। তাঁহার সভা জাযুক্ত হউক।

প্রেরিত পত্র।

ব্রাহ্মধর্মের মত ও বিখাদ সম্বন্ধে শ্রীযুক্ত বাবু ভগবতীচরণ দের ২লা কৈয়ঠের তত্তকোম্দীতে পুনরায় যে পত্র বাহির হইয়াছে দে সম্বন্ধে আনার কিছু বলা আবশ্রক বিশেচনায় এই চিঠিখানি লিখিত হইল।

- (১) মন ও আত্মা—মন ও আত্মা সম্বন্ধে আমার আর বিশেষ কিছু বলিবার নাই। মন ও আত্মা প্রকৃত পক্ষে একই বস্তু, তাহা ভগবতী বাবুও স্বীকার করিয়াছেন। কেবল ব্ঝি-বার স্থবিধার জন্ম পৃথক্ পৃথক্ নামকরণ করা হইয়াছে। কিন্তু শরীরের ধ্বংসের সঙ্গে সঙ্গে মনের অর্থাৎ নিকৃষ্ট প্রানৃত্তির আধাররূপ আক্মার যেঁ অংশ করনা করা হইয়াছে তাহার ধ্বংস হয় কি না তাহা পরিছাররূপে বুঝিতে পারি না। তবে এই মাত্র বলিতে পারি যে আত্মা যতই জ্ঞানে, প্রোমে উন্নতি লাভ করিতে থাকে তত্তই যে তাহার নিকৃষ্ট প্রস্তুতি অর্থাৎ কাম, জ্রোধ, লোভ প্রভৃতি ক্রেমে ক্রমে হ্রাস হইতে থাকে তাহার আর সন্দেহ নাই। ইহা প্রত্যেক ধর্মাসুরাগী চিস্তাশীল ব্যক্তি নিজ নিজ জীবন পরীক্ষা করিয়া সাক্ষ্য দিয়াছেন ও দিতেছেন।
- (২) আমার ১লা চৈত্রের চিঠিতে আমি বলিরাছিলাম যে

 "যথন তাহাদের (ইতর প্রাণীদিগের) মধ্যে আত্মার একাংশ
 অর্থাৎ মন দৃষ্ট হইতেছে তথন অপরাংশ অর্থাৎ ধর্ম প্রবৃত্তি
 অপরিক্ষুটভাবে রহিয়াছে তাহাতে আর সন্দেহ নাই। ক্রম
 বিকাশের নিয়মাস্নারে ক্রমে ক্রমে উরতি হইতেছে ও হইবে।"
 এই কথাতে মানবাত্মার পূর্বজন্মেরও কোন প্রমাণ হয় না অথবা
 তাহাদের (ইতর প্রাণীদের) উরতিও অত্মীকার করা হয় না।
 মানব আত্মা দেহ ত্যাপের পর যেমন উরত হইতে উয়ততর
 স্থানে যাইবে, ইতর প্রাণীদিগের আত্মারাও তেমন উরত হইতে
 ভরততর স্থানে যাইতে পারে। ফলতঃ তাহাদের আত্মা যে
 মানব আত্মাতে পরিণত হইবে তাহার কোন প্রমাণ নাই।
 ছঃথের বিষয় ভগবতী বাবু এই লইয়া কত কি কয়না করিয়াছেল
 ও যথেই গালাগালি দিয়াছেল। যাক্, সে সমত্ত কথার কোন
 উত্তর দিতে ইচ্ছা করি না। পুনর্জন্ম সৃষ্দ্ধে আমি বলিয়াছিলাম

"विठोष, भाषा मदस्त भूनर्जन, हेहा भग्छन; कावन हिन्सू वर्षन-क्छींगन व्याचात्र भूनर्जना दीकांत्र करतन न(। उँ।हांता वटनम আস্বাদ্ম একবার জন্ম হয়, ভাহার স্ফ্রতি চ্ছতি ফল ভোগের कछ नरमादा भूनःभूनः ८४१ सदिन करत, ज्ञाख्यार क्या अक्वादित (वनी (कह चौकात करतन मा।" ध कथा वनिवास कातन धहे व हिम्मूशगरे टाधानणः श्रनक्रम चौकात करतन, छाशांता कि अर्थ चौकात करतन छाहाहै (मथाहैबात अस खेतर्भ निविधा-ছिनाम। व्याचा त्य এक वादतत्र त्वनी व्यनात ना ও छाहात স্কৃতি চ্ছাতি ফল ভোগের জন্ত পুংনপুংন দেহ ধারণ করে— ইহার প্রমাণ শ্রীমন্তগ্ৰদ্দীতা প্রভৃতি প্রধান প্রধান এছ স্বাধায়ন করিলেই ভগবজী,বাবু দেখিতে পারিবেন। তিনি হিন্দু দার্শনিক-গণের "আত্মার পুনঃপুনঃ জন্ম" এই মতের প্রমাণ অরপ বে সকল লোক উদ্ভ করিয়াছেন সে সকল প্লোকের অর্থ তিনি (वांध इम्र व्याणिधान कविमा (मर्थन नाहै। (म नकन स्मारकन वर्षहे এहे (य এक व्याचात भूनः भूनः (तह शांत्रण। जाहा ना হইলে পুনর্জনা কণাই ব্যবহার হইতে পারে না। পুনর্জনা काहात ? आश्वात । (महे आश्वायित पृशक् पृथक् हहेन उत्य ভাহার পুনর্জন্ম কি করিয়া সম্ভবে ? পুনর্জন্ম বলিলে এক বস্তুরই बांद्र बांद्र कमा वृद्धात्र। এ मक्स कांद्र दिनी विनवांद्र आद्राक्षन নাই, আশা করি ভগবতী বাবু এখন ইহা স্পষ্ট বুঝিতে পারি-Can । खाक्रात्मत शूनर्जन चीकात ना कतात कातन धरे Cu পুনর্জনোর কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না। আমি কি স্ত্র व्यवस्थान कतिका भूर्तक्या चीकांत कतित ? भूर्तक्या चीकांत করিলে পূর্বভ্রের সহিত ইচজন্মের অবশ্র এমন একটা যোগ স্ত্র থাকা চাই যাহা ছারা বলিতে পারিব যে আমি পুর্বে हिनाम। वना वाहना (य हेशत अमन (कान ९ (यांत्र एवं (प्रथा यहिएल मा। यनि शृक्षवासार महिल हेहबासार एकान योश সূত্র না থাকিল ভাচা হটলে পৃক্ষিত্র কথা বলা কেবল করনা মাতা। পূर्वजन्य व्यर्थाए এक हे. व्याच्यात वात वात वन व्याटह व्यर्ध ভাগার একত্বের কোনও প্রমাণ নাই —ইহা যুক্তি সঙ্গত কথা না কল্পনার কথা,ইহার কোন জ্ঞান গত প্রমাণ না পাওরাতে বাঁহারা ইচাতে বিখাস করেন না,তাঁহারা অন্ধ বিখাসী, না-অনুসানের উপর নির্ভর করিয়া বাঁহারা বিখাদ করেন, তাঁহারা আদ বিশ্বসী, ভাহা ভগবতী বাবু নিজেই বিবেচনা করিবেন। পূর্ম कत्यात পाপ পूना हेडानि भारत ना शाकिएड शास किन्न "बानि ছিলাম" এই জ্ঞান অৰ্থাৎ আত্মবোধ (self-consciousness) ना शाकित्न "आमात्र शृक्षका" जक्श वनाहे मञ्जद मा। ব্রাহ্মদের সাধারণ যুক্তির সহিত এই যুক্তির যে কত ডকাৎ **छाहा এक টু विष्मव छारव छनाहै या एक भिरन हे बुबा या है रव**। ভগবতী বাবু জিজাসা করিয়াছেন, "পিও ভুমিষ্ঠ হইবা মাত্র, বাস্ত্রে অব্যবহিত পূর্বের, বাজন শরীর মধ্যে আছা অব-विकि करत कि ना ?" हैशात छेन्दर এই बना यात्र त्य माकृ গর্ভে জণ দেহে কোনু সময় আত্মা জণের সহিত মিলিত হয়, जारा चामि चानि मा, **किन्छ भिक्ष कृ**मिष्ठ रहेरात भूकी हहेर छहे তাহাতে আল্না অস্থ্যবিস্থার পাকে, তথন তাহার (আল্লার) বিকাশ না হওরার তৎসামরিক কোন বিষয় আর্থ হয় না।

वना वाहना दय अकवात कारमत विकास स्टेटन छोड़ा कांत्र तिर्तात रव ना, छारा करन करन केतर देहर थारक। अभवती वात कि नक्तर दिश्वा मृहात अवाविष्ठ शूर्य आधाम शास्त्र ना वरनन जारा किहूरे रनरथन नारे। मृक्त्र शृर्क আত্মা যথন দেহ ত্যাপের জন্ত উন্মুধ হয়, তথন দেহেতে জ্ঞানের কার্য্য বরং না হওয়াই সম্ভব। আমরা মৃত্যোলুখ, वाकित एक एमिना जानि एम जाना जाना काम नाहे किन्द वास्त्रिक रत्रत्रभ छावा कामारमत् स्त्रम । कात्रभ यथम काचा (पह हरेएंड जानन (यान कार्य कार्य निधिन कांत्ररंड थारक তথন শরীলের নানা প্রকার বিকার উপস্থিত হল এবং যতই আন্থার যোগ শিথিক হয় ডডই শরীরের অবস্থা থারাপ (যাহাকে আমরা ज्ञाम या जीय-त्रथी यति) इत्र ; পরে সম্পূর্ণরূপে আত্মা শরীর ভাগে করিলে একবারে মৃত্যু হয়। স্থভরাং মৃত্যুর अवारहिक शृद्धि (य जाजाकान शांक ना काश नहह। नाधात्रग लाटक त्मर ७ जाबाटक अक विनम्न ज्ञाद विनम्न अहेक्स दाध হয়। পুনর্জনা সহকে হিন্দ্দিগের যুক্তি বলবান বলিয়া **खगवजी वांद्र निथियादहम, अञ्चव वर्धम छाहादक धहे अमूरतांध** कति य यपि श्रनक्षेत्र मदस्त हिनि कान वनवर युक्ति एक्शोहेश তাर्ग क्षेत्रांग कविएक भारतम काहा हर्देश कक्षम महहर अक्षम কলনার কথা লইয়া বুথা বাক্বিতপ্তার কোনও প্রয়োজন নাই। বলা বাছলা যে পূর্বজন্মের জ্ঞানগত কোন প্রমাণ না থাকায় আমরা বিশাস করি নাই। কিন্তু বাঁহার। পূর্বজন্ম আছে বলেন, মৃতিশালের নিগমানুদারে তাহার প্রমাণ তাঁহাদেরই করা উচিত।

(৩) ঈশরের দর্বজ্ঞতা ও মহুখোর খাণীনতা সমন্তর কবিতে গিয়া আমি মুখে বৈতবাদী হইরা অবৈতবাদ সমর্থন কবিয়াছি বলিয়া যে ভগবতী বাবু লিপিয়াছেন, তাহা তাঁহার বুঝিবার ভুল হটরাছে। আমি ছৈতবানও সমর্থন করি নাট আর অবৈভবাদও সমর্থন করি নাই। আমার বিবেচনায় এই তই বাদের কোন বাদই সভা নহে। আমি অবৈতের মধো হৈত (Unity in duality) व्यर्शार देवजादेव क्या विकास कवि अवश ভাহাই বলিয়াছি। আমরা সচরাচর যে অর্থে আধীনতা শক বাৰহার করি বাস্তবিক আমরা সে অর্থে স্বাধীন নহি। ইহা আমি আমার :৬ই চৈত্রের চিঠিতে লিখিয়ছি এবং এইরূপ অমের কারণ কি তালাও দেখাইয়াছি, স্বভরাং একণে ভালার भगक खित (कान श्रास्त्र नाहे। 'की व छांगातहे (से **च**टतत) ন ভূঁছে চলিতে চলিতে কেবল এক একবার এদিক ওদিক মুখ ফিগাইতে চেষ্টা করে ইহাই ভাহার স্বাধীনভা।" ইহার অর্থ যে কেবল পাপ কার্য্য করে ভাচা নচে, পরস্কু পাপ ও পুণা এট উ कत कार्या कताहे हेडात व्यर्थ। जित्रत व्यामात्क स्रृष्टि कतिया ডাঁহার যে সমন্ত অথওলীয় নিয়মের অধীন করিয়া উন্নতির পথে ছাড়িয়া দিয়াছেন আমা পেই সমস্ত অবওলীয় নিয়মের व्यभीन व्हेबाहे छिन्छि, - हेबाहे छावात कर्ड्य। व्यामि तिहे **মণ্ডনীয় নিয়মের অদীনে থাকিলেও এমন কতক্তলি** মুদ্র কুদু নিয়ম আছে, যাহা আমি ইচ্ছা করিলে প্রতিপালন কবিতে পারি ও ইচ্ছা করিলে কিছু সময়ের 🛊 জন্ম ভাঙ্গিতেও

* किहू नगरप्रत क्षेत्र पश्चिमात्र कात्रन अहे त्य सामि असनाहत स्म निव्रम

नाति ;-- देशहे चारीमछ। এवः এই कार्थर "अमिक अमिक मून क्षित्रान" वाका वावहात कतियाहिनाम। वना वाहना (य. ८७ मम् छ কুত্র কুত্র নিরম রক্ষা ওড়ক করার ক্স ফলাফল অর্থাৎ প্রতিপা-লনরপ পুলোর পুর্কার ও ভক্তরণ পাপের দণ্ড আমাকে নিশ্চয়ত ভোগ ক্রিতে হয়। ইহাতে জীবের স্বাধীনতা অথবা ঈশ্বরের সর্বজ্ঞতার কোন বিরোধ নাই। আমাদিপকে ঐ সকল কুদ্র কুদ্র নিয়ম রক্ষা ও ভলের ক্ষমতা দিয়া, তাহা কোণায় রক্ষা ও কোথায় ভল হইবে এবং তাহার জন্ত আমাদিগকে কি ফলভোগ করিতে হইবে, তাহা তিনি অনাদি কাল হইতেই সমস্ত জানিভেছেন ।। এখন হয়ত ভগবতী বাবু বলিতে পারেন ट्य, जिनि यथन आमारिक कुछ कुछ निव्रम श्रीण (काशाव ভালিব ও কোথার রক্ষা করিব তাহা জানিয়া গুনিয়া এই क्रम हा निवारहन, उथन व्यामारनत वाधीन हा टकार्याय १ हेशत উভরে এই বলা যায় যে, তিনি যেমন এক াদকে ঐ সকল কুত্র কুত্র নিয়ম রক্ষা ও ভঞ্চ করিবার ক্ষমতা দিয়াছেন সেই-क्रम अभव बिटक आमामिशक मनमन वित्वहना भक्ति । निया-**एक । आमता मिट वित्वहमा मिल्क बाता नियम छानि विश्वा** তদ্মুদারে চলিব ইহাই তাঁহার অভিপায়, সুতরাং আমরা **ইচ্ছা** করিলে ভাহা রক্ষা ও ইচ্ছা করিলে ভাহা কিছ সময়ের অভ ভল করিতে পারি। বলা বাছল্য যে, তিনি এই নিয়মেই জীবকে সৃষ্টি করিয়া উল্লেস্তর পথে অগ্রস্থ করিভেছেন।

ভগৰতী বাবু ভাঁছার চিঠির এক স্থানে বলিয়াছেন যে, . "मेयंत भन्नाम् । अक स्टेट रहेट यम् विषानी हुटेट इंटरन " ইহা নিতাস্ত অসার কথা। কারণ ঈশ্বদ্ধ রায়ণ হইতে হইলে জীখারকে নাজানিয়া "জীখার পরায়ণ" এই কথাই বলা যাইতে পারে না। না জানিয়া বিশ্বাস করাকে অবশ্র অন্ধ বিশ্বাস বলিব, কিন্তু আমি এমন অনেক ভক্ত লোককে জানি याँहात्रा क्लान विषय ना कानिया कथन । विषान करतन न' তবে ভগবতী বাবু ওাঁহাদিগকে ভক্ত না বলিতে পারেন। আমি আমার চিঠিতে এমন কোন বিষয় লিখি নাই যাহা ব্রাহ্মণন্মের মূল সভ্যের বিরোধী এবং এমন কথা বলি নাই যাহা আমি জ্ঞান গত বিখাদ না করি। তবে ভগবতী বাবু সে সকল কণা বুঝিতে ভুল করিয়া থাকিবেন। "কাজে কিছুই পারিব না, অবচ নিজের অক্ষতা স্বীকারও করিব না।" ইত্যাদি কণা যে ভগবতী বাবু লিখিয়াছেন তাহা সতা নচে। अभिष्य स्थामि मुद्यान लाट्डिय क्लान (५८) क्रिया नाहे, কেবল সভ্যামুরোণে তাঁহার চিঠির উত্তর দিতে চেষ্টা করিয়া-ছিল(ম।

ভক্ষ করিতে পারি না, কিছু সমলের জন্ম ভক্ষ করিলেও পুন্রায় আ াকে অফুতত চইরা দেই নিয়মের অধীনে আদিছে ছইবে।

† এখানে জান। ও করাকে এক খলিয়া কেই বেয় জ্ঞান গাইন। আমার সন্তানের অমুক দোব আছে ভালা পানি কালি কিছ ভালাণ গাই। আমি করি না ভালা আমার সন্তান বিভিন্ন হৈ তুড়াং জানান ও এক মামে।

काम ଓ जाचा अक्षे वश्च हेश्य शक्षिया मीमारमा (मेरि-वात सञ्च छल्दाविमी शिक्षकात्र मर्भन गरिका सामक ध्यायका সমূহের ও বাবু সীতানাথ দত কত "ব্ৰহ্মবিজ্ঞাস।" নামক পুত-কের উল্লেখ করিয়াছিলাম। তাহার উত্তরে ভগবতী বাবু निविधारहन त्य, "जिनि क्षानि शुख्यकत्र काशहे निष्ठारहन, ভালতে এমন বিশেষ কি যে আছে ভালা তো বুঝিতে পারি-লাম না। 'আমি বলিতেছি ইহা বুক্ষ, অতএব তোমাকে বিশ্বাস করিতে ছইবে ইছা সভাই বুক্ষা' উক্ত পুত্তকঘ্ৰে ইহার অধিক আর কিছু আছে কি !" এ সম্বন্ধে আমার প্রথম কথা এই যে, ভগবতী বাবু বোধ হয় ঐ ছ্থানি পুত্তকের অস্ততঃ একথানি পুতাক (ইছা ভগবভী বাবুর কথামুসারে বলিডেছি) जामि शर्फन नाहे। उद्दर्शाधनी शशिका कान शृक्षक विश्वत নহে। বিশেষ উহার দর্শন সংহিতা নামক প্রবন্ধ গুলি কোন **এक थानिएक कावस नहरू: ১৮०৮ मह्कत देवमाथ इहेटक** আরম্ভ করিয়া ১৮১০ শকের আখিন পর্যাস্ত ক্রমান্বয়ে (মাঝে মাঝে কয়েক সংখ্যাতে বাহির হয় নাই) বাহির হইয়াছে। ত্তরাং ভগ্ৰতী বাবুর লেখাতুষারে তিনি ইহা পড়িয়াছেন বলিয়া বোধ হয় না, পড়িয়া থাকিলে কথনই "গুইথানি পুস্তক" বালয়া লিখিতেন না। শ্বিতীয় কথা "জ্ঞানের অংশজ্ঘনীয় নিয়মের অধীন হইয়া যদি কেহ রক্ষের স্বরূপ, প্রকার ইত্যাদি লক্ষণসকল, সুযুক্তি ছারা বাক্তবিক বৃক্ষ দেখাইয়া বলেন -- তाहा इटेटल कि विनिष्ठ इटेंदि (स, ना, -- देश तूक नरह ?" অবশু এরপস্থলে ভর্কপ্রিয় লোকেরা এই লইয়া তর্ক করিতে পারেন, কিন্তু সভ্যাত্মসরণকারী ব্যক্তি ইছা বুক্ষ বলিয়া নিশ্চয়ই श्रीकात कत्रिरान्।

পরিশেষে আমার বক্তব্য যে সভ্যাত্মসদ্ধান করাই আমার উদ্দেশ্য, যে আলোচনায় সভ্যাত্মসদ্ধানের ভাব নাই ভাহা লইয়া বৃণা গণ্ডগোল করিভে ইচ্ছা হয় না। কিন্ত হঃথের সহিভ বলিভে হইভেচ্ছে এই আলোচনাতে সভ্যাত্মসদ্ধানের ভাব নাই বলিয়া আমার সন্দেহ হয়। অভ এব ভবিষাতে এই প্রকার আলোচনা হইলে ভাহাতে যোগ দিভে বিরভ থাকিব।

निद्वम् क

শ্ৰীকুঞ্জবিহারী দেন।

मश्नेन्त्र,

আগনি গত ১৬ই পৌষের তত্তকৌম্নীতে লিখিয়াছেন:—
"অনেক দিন পুর্নে যে সকল কথার মীমাংসা হইয়া গিয়াছে,
আমরা দেখিতে পাই যে, সনাজে মধ্যে মধ্যে সেই সব কথা
উঠিয়া ভুম্ল আন্দোলন উপস্থিত হয়। জাতিভেদ আক্ষধর্মের
মূল সত্য কিনা, সম্প্রাত এই বিষয়ে কিঞ্চিৎ আলোচনা হইতেছে। এবিষয়ের আলোচনা আবশ্রক, যুক্তি তর্ক করিয়া
এটা আবার ব্যাইতে হইবে, ইহা আমাদের ধারণা ছিল না।"
তৎপরে আপনি এই বলিয়া উক্ত প্রস্তাবের উপসংখার করিয়া
ছেন যে, "যিনি ঈশরকে মানিতে প্রস্তাত কিছে লাভি নির্বিশেবে ঈশরের পুত্রকে গ্রহণ ক্রিতে প্রস্তাত নহেন, তিনি কি

ब्राट्स व्यापनाटक आवा विश्वा विशेषक मिन्द्र विश्विष करि. (यम ?" आंगनि (य छाटव अहे बाखावती विश्वविक्र सहिद्यादकन ভारा क्षित्रा द्याध एव (व, क्ष्ट्रम्ब स्माटक द्य कांद्रेय क्राफिएक्स चीकात करतम, आधानमारम कठकथान लाक विक रनहे छारत কাতি ভেষের পক সমর্থন করিতেছেন। তাঁহায়া "মানবের ত্রাভূষ'' বীকার করিতে, "ঈখরের পুরের প্রতি প্রেম্" পরিতে প্রস্তুত নহেন। আত্মাতের প্রতিপক্ষণিরে মন্তরে এই ভাবে উপস্থিত করা সম্বত কিনা তাহা একবার ভিত্র ভাবে চিস্তা করিয়া দেখিতে আপনাকে অনুরোধ করি। ব্ৰাহ্মসমাৰ এই হুৰ্গতির অবস্থার আসিবাছে, আমি ভাষার त्कान मध्मभेटे प्रथिष्ठ भारेराजीह ना; दबर शक कारनुब তুলনায় বর্ত্তমান সময়কে আমি অনেক পরিমাণে উল্লভ ব্লিয়া मत्न कति, खिरार कामात मणूर्य वित्मय कामाध्यमः। कानि বাক্ষদমান্তের পত্তন হইতেই বাক্ষদমাজ জাতিভেদে বিখাস পরিত্যাগ করিয়াছেন। কিন্তু নিজ সংস্থার ছাতি ভেদের অভিকৃল হইলেও বছদিন পর্যান্ত ত্রান্দোর কার্য্য ও বিশ্বাস একরূপ হয় নাই। কার্য্যে আম্মেরা অনেক দিন জাতিভেদ পরিত্যাগ করিতে পারেন নাই। প্রথমে আচার বাবহারে আতিভেদ পরিত্যাগ করা হয়। ক্রমে ক্রমে আদান প্রদানেও জাতিভেদ পরিত্যাগ করা হইতেছে। ব্রাক্ষেরা এপথে ক্রেট অগ্রসর হইতেছেন। স্বভরাং এসময়ে আপনার পক্ষে নিরা-শার ধ্বনি উথিত করা কভদুর সঞ্চত তাহা আমি বৃথিতে পারিতেছি না। কিছু আপনার কাতর ধ্বনির কারণ সন্তবতঃ কতক অফুভৰ করিয়াছি।

সাধারণ আক্ষাসমাজের সংশোধিত নিয়মাবলীর ৩য় নিয়মে সভা হওয়ার যোগ্যতা সম্বন্ধে লিখিত হইয়াছে, ''ব্ৰাহ্মধৰ্মাফু-সারে সমুদয় গাইস্থা অমুষ্ঠান করিতে প্রান্তত হওয়া আবশুক ,'' क्ट क्ट बटे क्थात भूर्त्स "(भोखनिक्डा व कार्किक्म भित-ত্যাগ" এই কথাগুলি যোগ করিতে চাহেন। এই উপলক্ষে কিঞ্চিৎ আলোচনা উপস্থিত হইয়াছে। কিন্তু সেই আলো-চনায় ভাতিভেদের পক্ষ কেহ সমর্থন করিতেছে, ইছা মনে করা স্থাপত নহে। ভাবিতে কট হয় যে, আমরা যে সকল ত্তকতর বিবয়ের আলোচনা করিতে প্রস্তুত হই, ভাছার যে ভিন্ন ভিন্ন দিক আছে ভাহা আমরা অনেক সমরে স্মরণ রাগি না এবং নিজ মতের কোন অংশে প্রভিক্ল কণা উপস্থিত हरेलरे यामना উত্তেজিত ९ वित्रक हरेना शाकि। याताहा বিষয়ে এই ভাণটা অভান্ত প্রবল দেখা গিয়াছে। এক পক এই বিষয়ে অপরাধী, অপর পক্ষ নহেন, এই কথা বলা আমাৰ অভিপ্রেত নহে। উভয় পক্ষেরই এসম্বন্ধে দেশে আছে এবং त्य द्वार करेट आमि निकटक शक महा व विष्कृति। किन क्यात्र (र धक्रामनिका । अ केरलक्रमा शक्राम शाह्र, লেখার ভাহার অলভা কতক পরিমাণে ঘটিতে পুরে এই মনে क्रियां के जाननारक खरे नख थानि विशिष्टिक ।

সাধারণ আক্ষসমাজের সভাদিগের মধ্যে এখনও এমন কতকগুলি লোক আছেন, বাঁহারা সংস্কারে গৌতুলিকতা ও জাতিভেদের বিরোধী **হইলেও পৌতুলিক** তাবহার ও কাতি

(जातव मुख्यम स्टेटफ कार्या कारण बूक स्टेटफ शारवन नाहे। **बहे (अमेर्ड लाक्निगटक नार्यात्रन आक्रमयांक अक्रमिम क्रमास्**-ঠানিক আৰু বলিয়া অভিষিত করিয়া আসিয়াছেন। সংশো-थिए सिम्मायनी मृरीक शंकेतन, अहे मकन लाक जात नाथाप्रन ্রাশ্বসমান্তের সভা ও আদ্ধাবলিরা প্রিক্রণিত হইতে পারিবেন না। তাঁহারা সহবোগী বলিরা আখ্যাত হইবেন। সাধারণ বালাসমাল যদি এই চেষ্টার ক্রতকার্য্য হন,--আমি আশা করি, কুতকার্যা হইবেন, ভাচা হটলেই আমি মনে করিব, क्रेचतित विस्मिव कृशांत्र कांगता अ (ठडीव नक्नडा नास कवि-য়াছি। ত্রাক্ষদর্শ্বাসুসারে অসুষ্ঠান করিতে অগ্রসর না হইরা (कह डाक विषया भग क्टेंटिक भातिर्यम मा, व्यामहा यनि আপাততঃ টহা করিয়া উঠিতে পারি, আমি যথেষ্ট লাভ মনে कविव। किन्न बान्निमिश्व मास्ता अमन कठकश्रीन वन् आहिन, र्याहाता मत्न करत्रन, हेहाहे यरश्डे नरह । छाहाता "बाखिएछम ও পৌত্তলিকতা পরিতাপি" এই কথা গুলি ভূতীয় নিয়মে मित्रिविष्टे क्रिएक हारहम। किन्नु बहे क्या खिल मित्रिवन করিবার বিশেষ আবশ্রকতা কি, তাহা অনেকে বৃথিতে পারি-তেছেন না, এবং বাঁহারা বুঝিতে অসমর্থ আমি উল্লেখ্য ম্প্যে একজন: বাঁকুড়ার শ্রমের বান্ধাব কেদারনাথ কুলভি মহাশর এই প্রকাবনার একাংশ গ্রহ্মে যাহা বলিয়াছেন, তৎ পতি ব্রাহ্মদিগের দৃষ্টি আকর্ষণ করা উচিত বোধ হইতেছে। কুণ্ডি মৃহাশয় প্ৰিয়াছেন, আকা হইলে এবং আকা অনুষ্ঠান ক্রিলেও কেছ পৌত্তলিকভার সংস্রণ রাখিতে পারেন একণা ভিন বিশ্বাস করেন না। আনামও ভাগা বিশ্বাস করি না। স্কুতরাং ''ংপাওলিকতা পরিতাগে'' একথার সংযোজন করা কেবল অনা-वशक (नाध करि ना : निर्मय व्यापश्चित्रनक मरन करि ; दक्तना টলার দ্বারা প্রাক্ষমান্ত প্রাক্ষের চরিতের উপর অস্তার কলম্ব নিক্ষেপ করা হটবে; আত্ম অফুটানের অগৌরৰ করা হটবে। याहाता अहे कथा इवंति मः याखनात खन्न वाज डीहामिरशंत्र **क्रिके जामात माठ कुनिछ महाभारत कथात उँछत निर्छ ममर्थ** হন নাই। আন্ধ্র অমুষ্ঠানই পৌত্রণিকতার বিরোধী স্কুতরাং আন্ধ অনুষ্ঠান করিয়া লোকে কি রূপে পৌত্তলিকভা পরিত্যাগ ন। করিয়া থাকিতে পারেন, তাহা আমার বোধের অসম্য। याहाता शुर्त्व कहे मः याक्षनात ममर्थक किलन, उहामित्यत কেচ কেহ ইহার নিপ্রালেনীয়তা অভুত্তব করিয়াছেন। ইহার অনাবভাকতা যত সহজে বুঝা যায় আমি স্বীকার করি-ভেছি যে, "জাভি ভেদ পরিতাশে" এই কথা সংযোজনার খনবিশ্ৰকতা প্ৰতীতি হওয়া তত সহল নহে। কিন্তু এই শেবাক কথা সংযোজনার বাঁছারা সপক্ষ, ভাঁছারা আছামত সমর্থন কালে যে সকল যুক্তি প্রদান করিয়াছেন, ভালার किथा ७ हे हा अमर्नन करवन नाहे (य, आकारणासूनारत नर्क-অকার গার্হা অহ্ঠান করিয়াও জাভিচ্যত হন নাই আকা সমাজে এমন লোক আছেন। বরং যথন ইহা পরিক্রেরণে (तथा याहेटलड्ड (य, बाक्सधर्याक्त्रादत क्ष्युंडोनानि कतिरण कालि-চাত হইতে হয়, তথন অফুঠানেই যে জাতি ভেদ পরিতাগে क्त्री हहेएएह, छोटा बना निर्म्माशन। किंद्र श्रेष्ठांव कर्छा-

निर्भव केरिक्क है के करहा की बादा विश्व विकार हर, का बात षाता चन्निक्रमान देशहे टाजिनत एत (व, डांशका, "कांठि **८७१ शतिकार्शत पर वर्ष क**तिएक कारक्त रव, कार्कि वर्ग নির্কিশেষে পরস্পার পরস্পারের সহিত একতে পান ভোজন क्रितिम अवर विवाहापि कृत्व मिल्लिक हहेरवम । हेश विरमव প্রার্থনীয় পদার্থ হুইতে পারে, ক্ষিত্ত আপাততঃ ইহা সম্ভাবিত कार्यात भीमात मत्था तकिताह कि ना, छाहाई छिन्ना कता উচিত। जाणिन निटक लिथियाहरून, ''कान व्यर्थानि विषय **टक्क्वाटक्क्व थाकि**रवर्षे थाकिरव।'' आश्रमात्र वाश किछू आश्रक्ति তাহা এদেশের "অখন বর্ণ ছেদ" সম্বন্ধ। পূর্বোদ্র "থাকি-(वह शांकित्व," हेबांव कार्य विन वित्रकान शांकित्व, धड़े ब्य, ভবে কামি বলিব, আপনার এমতের সহিত আমার কিছু মাত্র সহাতুত্তি নাই। আমার ভবিষাৎ আশার পথ ইহা অংগেকা অনেক উজ্জ্ব: আমার ধারণা এই, মতুষা সমাজক্রমে উর-তির পথে যত অগ্রসর হইবে, মামুষে মামুষে এখন যত জ্ঞানেব -বিভেদ রহিয়াছে, ক্রমে তাহা ভত থবা হটয়া আদিবে। তথন আর জ্ঞান জনিত আভিজাত্য বিদ্যমান থাকিবে না ৷ এ আশা করনা পণের অনেক দূরণতী স্থানে আপাতভঃ পাকিলেও क्राप्त्र निक्षे उत्र इहेग्रा चानि एउट अवः त्नहे भर्भ चामापि-গের যত্ন ও শক্তি পরিচালিত হওয়া উচিত। আপোততঃ এ পার্থকা দুর হটবে, আমিও ভাষা মনে করিনা।

এখন আমি দেখাইতে (5) कित्र (य. আপনার সহিত • আবাণনার প্রতিপক্ষগণের মতের বড়বিভেদ নাই। ববং ভবিষ্যতের আশা সম্বন্ধে তাঁহারা আপনার অপেক্ষা অগ্রসর ! আপান বোধ बन्न अक्षा ऋषीकांत्र कविट्ड श्रञ्ज इवेटवन ना ८४,८४ कावरणहे হউক জাতিগত হীনতা, মানসিক, আধ্যাত্মিক ও সামাজিক व्यत्नक क्षकात्र ही न जात्र कादन इटेशाएह। व्यापनि व एमएनत (य, জ্বন্ত বর্ণ ভেদের বিরোধী ভাছার প্রথমোৎপত্তি যে জ্ঞান-বিভেদ জনিত তাহা বোধ হয় আপনার আবৃদিত নাই ৷ তবে পরিভাপের বিষয় এই বে, কালক্রমে উহা পুরুষাফুক্রমিক चाकात शांत्रण कतियोद्धः किन्न अ त्माय त्य तकवन अत्मरणहे প্রবেশ করিয়াছে ভাষা নছে, ইংলগু প্রভৃতি স্থানেও এই পুরু-ষামুক্রমিকভা বিলক্ষণ বিদ্যমান। তথাকার অভিজাত কুলের मकन किया व्यक्षिकाः न वा क्रिके दा क्षान धर्मा केवज छोहा नरह, তথাপি ভাহাদিপের সংখ্যও কুলগ্রিম। যথেষ্ট বিদ্যমান রহি-য়াছে; ভাগারাও হানজাত পাত্রে কল্তা দান কণিতে কিয়া হীন কুল হইতে কঞা গ্রহণ করিতে অসম্মত। সেণানেও ভজ বংশে পুরুষামুক্রমিকভার গৌরব বিলক্ষণ দেখিতে পাওয়া ষায় এবং উচ্চ খংশের লোকে নীচ বংশের স্চিত বিবাহ স্ত্রে সাম্মলিত চইতে অনিচ্ছা প্রকাশ করিয়া থাকেন। এমন কি গুণবান্ধশ্ৰীল ব্যক্তিও অনেক সময়ে নীচ কাত ব'লয়া প্ৰত্য था। उ र्देश थारकम । इश्व कात्र कि १ देशात भूरण कडक পরিমাণে একটা নিগৃঢ় ভাব নিহিত রহিয়াছে टमरभडे गामाकिक कांत्र किन्न किन्न स्था विमामान त'÷।।एक, धनः এক স্তারের প্রাকৃতি অস্তা স্থারের প্রাকৃতি হইকে এসন ভাবে चारनकृष्टी चारुजा (य, जिक्कित अक खात हरेट यान निस्मित छिन

চারি তার অতিক্রম করিয়া তৎপরবর্তী তারে সৃষ্টিপাত করা যার, ভাৰা হইলে এই উভয় স্তরের লোককে এক সমজাতীর মহুষা বলিয়া অফুভব করা কঠিন হইবে। নীচ সংসর্গে আত্ম সমাজের নীচভা লাভ হইতে পারে, এ আশহা কেবল এদেশের লোকে করেন না, অক্তান্ত দেশেও এ আশক। প্রচুর পরিমাণে বিদ্যমান आर्ट्ड এवः उपयूत्रादा उशाकात लाएक नीठ मःमार्ग (कवन আদান প্রদানে নয়; পান ভোজনে পর্য্যস্ত পরিভাগে করিয়া थारकन। विहात ना कतिया (य, यर्थछ छारव मकल कार्कित সহিত সন্মিলিত হওয়া উচিত নহে, আপনার কোন কোন কথায়ই ভাহা প্রতিপন্ন হইতেছে; কেন না আপনিও সকল প্রকার হীন জাত পাতেই কপ্রা দান ব্যবস্থা করিছেছেন ना, (करण ''धनदान धर्मभीन" वाष्ट्रित्क क्या मान ना कन्नाम প্রতিবাদ করিতেছেন, এখন ভাবিগা দেখা উচিত যে, গুণ ও धर्यात किছू এकটা निर्किष्ठ পরিমাণ নাই। একের নিকট ঘাহা আকাজকণীয় গুণ ও ধর্ম হইতে পারে, অন্যের নিকট তাহা সমৃচিত বলিয়া গণ্য নাহওয়া অসম্ভব নহে। স্থুতরাং এক ব্যক্তি অপর ব্যক্তিকে আয়ু-কন্যা দানে কেন অগমত হইলেন, ইহা বিচার করার ভার যদি সমাজ গ্রহণ করেন, তাহা হইলে স্ফল অপেক্ষা কুফল অধিক ফলিবার সম্ভাবনা। ইহার স্বারা ব্যক্তিগত স্বাধীনভার উপর হস্তক্ষেপ হইতে পারে। কে कोशारक विवाह कतिरवन, ना कतिरवन, ভाहा প্রভ্যেক প্রাপ্ত व्यक्त खी श्रेक स्वत्र निष्य निष्य विष्ठारी विषय। त्रभाष्य এ विष्ठाय কেবল মাত্র পরামর্শ দিতে পারেন, কোন রূপ অবভ্যনীয় বিধান প্রচলিত করিছে পারেন না। আমি যতদ্র বুঝিতে পারিয়াছি ভাছাতে বোধ হইতেছে যে, "জাতি ভেদ পরিত্যাগ্" কথা সংযোজনা এরণ বিগানের সপক্ষতা করিবার উদ্দেশেই প্রস্থাবিত হইয়াছে।

কাহাকে বিবাহ করিব কেবল সে সম্বন্ধে নছে, আমি কাহার সহিত আহার ব্যবহার করিব তাহা নির্ণর করাও আমা-রই নিজের কার্যা, সমাজ সে সম্বন্ধে আমাকে কোন অংশে সঙ্গত ভাবে বাধ্য করিতে পারিবেন না। ইহার দ্বারা মানবের ভাতৃত্ব বিশ্বত হওয়া হয় না, আত্ম-রক্ষণ করা হয়। যে বাজি মামুধের জন্মগত শীমাকে অভিজ্ঞান করিতে উন্নত হুইতে প্রতি-বন্ধকতা উপস্থিত করে, নিন্দিষ্ট দীমার মধ্যে মহুষ্যের শক্তি আবন্ধ রাণিতে চাঙে, সেই ব্যক্তিই মানবের ভ্রাতৃত্ব অস্থীকার করে এবং জাভিডেদ পোষণ করে। নতুবা যে ব্যক্তি অপর মামুষকে উন্নতিব পথে অগ্রসর চইতে মাপনার হন্ত নিজ শক্তির অমুরূপ ভাবে প্রায়ারণ করিয়া দেন, অপ্রা তাহার উন্নতির প্রতিশন্ধকতা উপস্থিত না করেন, তিনি যদি এই অপর ব্যক্তির সহিতা কোন কারণে আহরে ব্যবহার কবিতে অস্মত হন, किश्वा विवागित किया ना करतन जाहा धरेटल है जिनि काजि ভেদ রক্ষা কালেন, আমি একথা বলিতে সন্মত নাই। আমি প্রেমিই বলিয়াছি যে প্রভাক বাক্তি নিজ স্বার্থ রক্ষা করিছে বাধ্য; উক্ত যদি মনে করেন যে আমি অমুক ব্যক্তির সভিত দর্ব প্রকার সামাজিকতা স্ত্রে আনদ্ধ হটলে আমার নিজ নংশের ক্ষাত করিব, ভাচা হইলে ভাচার পক্ষে দেরূপ সন্মিলন पृथनीय इरेटर मत्मर नार्षे। प्यामत्रा मकत्तरे उत्तर हरे, हेशहे প্রত্যেক ব্রাক্ষের আক।জ্জা হওয়া উচিত। নত্রা সকলে অবাসর হইতে না পাবিলে, সকলেই এক নিম্নতারে ষ্ট্রা

সমান ভাবে স্মিলিত হইব, এল্লপ চেষ্টা ছওয়া উচিত নহে : ভাহার ধারা আন্দ্র স্থানিষ্ট ব্যন্তীত ইট হটবে না। সমুবা বে আনেক পরিমাণে নিজ পিড় মাড় কুলের গুণ লোবের অধি-কারী হইয়া জন্ম গ্রহণ করে, তাহা বোধ হয় কেহই অস্বীকার कतिरवम ना। भावीतिक व्यवद्या प्रवस्ति (य हेरा परिवा शास्त्र) ভা্হা প্রায় কাহারও প্রথবিদিত নাই। "মানসিক শক্তি সহ-দ্ধেও যে ইহা ঘটিয়া খাকে গ্যাণ্টন তাঁহার "বংশাছুক্রমিক প্রতিভা" নামক গ্রন্থে তাহা পরিষ্কাররপে প্রদর্শন করিয়াছেনই। আমি অবশ্রাই একথা বলিতেভি না যে, মাতুর আপনার জন্মগত অবস্থাকে কোন ক্রমে অভিক্রম করিতে পারে না। শারীরিক वाधि लाटक ममूहिल (हही कांद्रशा त्यमन कात्मक मम्द्र काल-ক্রম করিতে পারে, মান্দিক ব্যাদিও সেইরূপে অভিক্রম করিতে সমর্থ হয়। কিন্তু শারীরিক ব্যাণিপ্রস্ত ব্যক্তির সন্তান (महे वार्षि हहेएक मम्पूर्ण भूक थाकित्म छ (कह यान छविवाद আখেলা করিয়া ভাছাকে আত্ম কন্তা দানে অসমত হন, তবে ষেমন দেই অসম্মত পিতার প্রতি লোকে অসম্ভোব প্রকাশ क्तिट कि उँ। हाटक डेक शास्त्र निक क्छा मान क्रिट वाधा করিতে পারেন না, মানসিক রোগঞ্জ ব্যক্তির সম্ভান স্কুত্ত মানস হইলেও কেহ যদি আশক্ষা করিয়া তাঁচাকে নিজ ক্ঞা দানে অসমত হন, তবে সে সম্বন্ধে কাছারও হন্তক্ষেপণ উচিত হইতে পারে না।

व महत्य जात्र बक्ती क्या वित्यम विध्वत्या कतियात আবিশ্রকতা আছে। পথাদির বংশ সমূলত কবিবার জভা যে স্কল সাবধানভার আয়োজন দৃষ্ট হয়, অম্বেধানভা বশতঃ তাহাতে যে সকল অনিষ্ট ঘটিয়াছে, মনুষা সমাজের উল্লতি পক্ষেও সেই সকল সাবধানতা অবলম্বিত না ২ইলে উন্নতির পরিবত্তে অবনতি ঘটিতে পারে। আমার পতা দীর্ঘ হট্যা পড়িয়াছে, সুতরাং অদা এ সম্বন্ধে অধিক কথা বলা সম্ভব নছে। আমি কেবল এই কথাই বলিতে চাতি যে, কোন ব্যক্তি যদি নিজ বর্ণ অভিক্রেম করিয়া অন্য বর্ণের সহিত বিবাহাদি क्रिया ऋ व स्थापक इहेट ना हात्कन अनः त्मक्रण कदिनात যদি তাহার উপযুক্ত কারণও বিদ্যান্ত না থাকে, ভাগ ষ্দি কেবল মাত্র জ্বলিতা মূলকই হয়, তথাপি তাঁহাকে এই অপরাধে সমাজ বহিভ্তি করা উচিত নহে; সম্ভাবের দারা তাঁহার তুর্বলভাকে বিদুরিত করিছে চেষ্টা করা উচিত। হৃদ্দলের সাহায্যের অনুত্র স্বলের হস্ত প্রাসারিত হওয়া করবা। আমা যথন শত শত বিষয়ে আছে ছুর্বণিডা আরণ করি, তথন অঞ তুর্মলতা আমার অংশকা ছকলের প্রতি—বাঁহাদিগের অনেকাংশে অর তাঁহাদিগের প্রতি আমার স্চার্ভুতি না অনিয়োপারে না। আননি নিজে ছুর্বল হইয়া স্বলভার গ্র কিরূপে করিব, মাঁচারা আসার স্থায় সম্ভরণ করিনা ভীরবভী হইতে চাহিতেছেন, তাঁগদিগকে কিন্তুপে দাগর গর্ডে ডুবাইয়া দিব। তাঁহারা অভা লোকের স্হিত সমূচিত স্ভাব অস্পন ক্রিতে পাবিতেছেন না, বলিয়া কি আমি ভাঁচাদিবের প্রতি অসম্ভাব প্রদর্শন করিতে অধিকারী ৭ বাঁহারা আপনার মতেব অফুকুলে অভিমত জ্ঞাপন করিতে পাবেন নাই, তাঁহাদিগেব चार्ताक वे बे कार्य भारतालिक इवेशा विल्ला । बार्के चाभराध यभि छै। शामिशक जाशिम "बाजा विषया सगरकत निक्रेष्ठ भति-চিত" ১ইবার পক্ষে অন্ধিকারী মনে করেন, সে অধিকার আবশ্রট আপনার আছে। কিন্তু আমার ধারণা এই, এক मित्न कथन (कान (मण वा সমा**ज সভা** जांत উচ্চ मिथरत चार्ताः হণ করিবার অধিকারী হয় না। কেবল মাত্রে নিয়মের খারা কোন দেশে ধর্ম, পবিজ্ঞাও সভাতা প্রতিষ্ঠিত হয় নাই! ष्मध्ये (नारकत ष्मष्टिमण সংগঠনে यञ्च कता कर्खना ।

गिटन सक

श्रीषात्रकामाथ अर्थाभागा।

^{১০}নং কর্ণজালিস্ স্থাট রাক্ষনিসন্ প্রেসে শীকার্তিকচ**ল্ল দত্ত কর্ছক** গলা আবাচ মুল্লিড ও ২১১ নং **কর্ণজালিস**্ **স্থাট হইতে প্রকাশিত**।

তত্ত্ব-কোমুদী

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ভাগ। ৬**ঠ** সংখ্যা।

১৬ই আঘাঢ় শনিবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্স সন্থৎ ৬০।

বাৎস্থিক অপ্রিম মূল্য ২৮০ মফস্বলে ৩২ প্রতি পণ্ডের মূল্য 🛷

সংশয়-বিকার।

প্ৰিত্ৰতা সিংহাদনে তুমি প্ৰতিষ্টিত ; 🯶 অপবিত্র চিত্র মোর পাপেতে অভিত; অপৰিত্ৰ চৰ্কেন্চাই, ভোমা না দেখিতে পাই, সম্পেহে আকুল মন হয় আন্দোলিত; শোন কিনা শোন কথা, হই সংশয়িত। প্রবৃত্তি-হতাশে পুড়ে হাদর অলার, স্থানির্মাল প্রেম তাতে না হয় সঞ্চার ; नीवन-समस्य छाकि, অশ্বপ্ৰায় পড়ে থাকি, (मारहत चौंभारत हिएल मःभन्न-विकांत ; প্রেম্পিক্ তুমি কিনা ভাবি বার বার। रम ९ मकि मकिमानी अवृत्ति मनाम, (१६ क्यांकि: क्यांकियंत्र व अक नत्रतः ; नः नंत्र क्यांना (चात्र, त्र चार्तारक याक् त्यात्र, (पशि चानि भूग)मत्त्र क्षत्र-चान्त ; দেখিয়া কুতার্থ হই প্রেম আখাদনে।

সম্পাদকীয় মন্তব্য ।

বেখানে প্রেম সেইখানেই গুণ কীন্ত ন।—
সংসারে দেখিতে পাই যে যাহাকে ভালবাসে, সে ভাহার গুণ
শত মুধে বলিতে ইচ্ছা করিয়া থাকে। পিতৃত্তক সন্তান,
মেহমর জনকের গুণ বর্ণনা করিতে কথনও ক্লান্ত হয় না;
জননী-জহুরক্তা বালিকা মায়ের মহিমা কীর্ত্তন করিয়াই পরম
আনন্দ জহুতব করে; পতিব্রতা রমণী পতির গুণ বর্ণনা
করিয়া রসনার সার্থকতা জহুতব করেন; রেহময়ী সহোদরা
পোকান। বাগুবিক প্রেমিকের চক্ষে প্রেমের বন্ধর দোব ও
গুণ বলিয়া প্রতীর্থান হয়। প্রেমিক যখন প্রেমের দ্রবীক্ষণ
যোগে প্রেমের বন্ধ প্রত্যক্ষ করিতে থাকেন, তথন ভাহার
চরিত্রের জাতি নিপ্রতি নক্ষতা উক্ষণ আলোকে জালিতে
গাকে। প্রেমিক দেখিয়া আনক্ষে বিহ্বল হন; এবং প্রেমের
দ্রবীক্ষণ অপরেয় চক্ষে সংযোজন করিয়া সেই জানন্দের

অধিকারী করিবার জন্ধ বাস্ত হন। পৃথিবীর শৈশ্যমিক পরিমিত সন্থার গুণ গানে যদি এতদুর বাস্ত হন তবে আমরা কেন
আলস থাকিব। আমরা কি সেই প্রেমময়, সন্তান-বংশল পর্ম
পিতার পূত্র কল্পা নই। আমরা তাঁহার সন্তান বলিরা পরিচর
দিতেছি, কিন্তু এই কি আমাদের প্রেমের পরিচর! আমাদের
পিতা রূপে গুণে অনুপ্রম। পৃথিবীর শ্রেইতম রূপবান, গুণবান
পবিত্র-চরিত্র সাধু সাধ্বীও তাঁহার সন্মুথে বিশ্রত হইরা যান।
স্থ্যোদ্যে যেমন নক্ষত্ররাজীর হীনালোক অদ্পুত্র হইরা পড়ে:
দেইরূপ পর্ম পিতার জলন্ত জ্যোতির আভার পড়িয়া সকলই
নিজ্যেল হইরা যায়। এরূপ পিতার মহিমা কীর্ত্তন, গুণ প্রচাবে
যদি আমাদের ত্র্মল রুসনা নিরোজিত না হইল, ভাহা হইলে
কোন্ মুখে পিতার সন্তান বিল্লা পরিচর দ্বিত্ত প্রচার কার্যা
কেবল নির্দ্দিই সংখ্যক বিশেষরূপে মনোনীত ক্তিপর ব্যক্তির
কার্যা নহে
থ পর্ম বন্ধের প্রত্যেক প্রেমিক পূত্র কল্পা তাঁহার
গুণ বর্ণনা না করিরা পাকিতে পারেন না।

সহিষ্ণুতা ও সাধন।—একজন পণিক গ্রীমকালে এক মাঠের উপর দিরা গমন করিতেছিলেন। যতই স্র্যোর তাপ वाष्ट्रिक नाशिन ७७६ मधिक आख इहेट्ड नाशितन। भरत মণ্যাহ্ন স্থায়ে তীক্ষ তেজ সহা করিছে অসমর্থ হইয়া উন্মন্ত প্রায় হইলেন। কোথায় গেলে শান্তি পাইবেন, তাপ দল্প শরীর 📩 শীতল করিবেন তাহারই জন্ত হাত হইলেন। চতুর্দিকে দেখিতে गानित्तन, किंद्ध कोशोब्र भाखियन दम्बिट्ड भारेत्नन ना । অবশেষে সম্ভাপহারিণী আশাকে সহচরী করিয়া সাহসের সহিত পথ চলিতে লাগিলেন। কিছুদ্র অগ্রসর হইরা অদুরে এক বিশাল বট বুক্ষ দেখিতে পাইলেন, অমনি আনন্দিত চিত্তে ভাহার দিকে চলিতে আরম্ভ করিলেন। কিছুকাল পরে' সেই বটবুক্ষ তলে আসিরা উপনীত হইলেন। দেখিলেন আরও ছুই চার জন পথিক ভথার বসিরা বিশ্রাম লাভ করিতেছে। ভাহাদের দৃষ্টাত্তে নবাগত পথিকও বৃক্ষতলে ছালোপরি উপ-বেশন করিলেন। কিন্তু কিছুতেই শান্তিলাভ করিতে পারিতে ছেন না। জমণকালে যে ডেলোরাশি ভাঁহার শরীর মধ্যে व्यादम कतिबाहिन छाहारे छाहारक व्यवस् याजना व्यवसन

করিতেছিল। বহুক্শ চলিয়া গেল, ভাঁছার উত্তপ্ত শরীর শীভল হইতেছে না। তিনি আর ধৈর্যা রাধিতে পারিলেন না। वर्षे वृक्त करन वनारक कन नारे विरवहना कविया आवाद नथ চলিতে লাগিলেন। অস্তান্ত পথিকপণ স্বাক্ হইরা পথিকের এইক্লুপ ব্যবহার অবলোকন করিতে লাগিল। ঠিক্ এই ্প্রকার সংসার ক্ষেত্রে বিচরণ করিতে করিতে আমাদের चार्तिक है आह है हो। भाषि नाट्यत चामात माखिमरत्र আশ্রয় গ্রহণ করিয়া থাকি। কিন্তু শরীরের উত্তাপ বিকীর্ণ হটতে যে কাল বিলম্বের প্রয়োজন আমাদের অনেকেরই ভত্ত-ক্ষণ ধৈর্য্য থাকে না। পুনর্কার শান্তিময়ের সংসর্গ পরিত্যাগ कतिया मः मात्र क्यायवं कति। अञ्चामारमत विवय आखि। যথন আমরা পরম ত্রহ্মের শীতল ছায়ায় উপবেশন করিতে याहेबा (मिथ (य मन खित इहेटलाइ ना, शान (महे शार्मधात के সংসর্গে অধীর হইয়া পড়িতেছে, তথন ইহাই মনে করা উচিত ্য বিষয়ের উত্তাপই আমাদিগকে কণ্ট দিতেছে। যিনি শান্তি-ময় তাঁহার সহবাস কথনও অশান্তি আনেয়ন করিতে পারে ना। এই রূপ চিন্তা করিয়া দৈর্ঘ্য অবলম্বন করিলে অবশেষে চিত্ত-চাঞ্চল্য বিদ্রিত হইয়া যায়। বাঁহারা উপাদনার উপর लायाद्याभ कतिया भूनक्षात्र मः मादतत्र क्याञ्चय जिक्का कदत्रन। বিষয়ের ক্রোড়ে ছুটিয়া যান, তাঁহারা উল্লিখিত পণিকের মত।

স্বার্থপর ধর্ম্মদাধন। — মতি প্রাচীনতম কাল হইতে माञ्चर जाननात स्वय छः थ हेष्ठे त्वि ठात्क सानाहेगा छ । त्वरमत मर्या अक्र शास्त्र दाया यात्र—" आक्रानिशहक शक रम ९ इस পান कति"—"धन प्लि उ एत पि," এই সকল প্রার্থনার মধ্যে একদিকে কেমন শিশুর সরলতা নিহিত রহিয়াছে। ভারতীয় আর্যা সমাজের আদিম অবস্থায়, যথন অনাহার-ক্রেশ ও দারিন্তা হঃথে লোক মান হইয়া থাকিত, তখন এইরূপ সরল প্রার্থনাই স্বাভাবিক ভাবকে ব্যক্ত করিতেছে। কিন্তু এরূপ व्यार्थनात्र व्यात्र धक्तिक व्याह-हेष्ठे त्मवजात्र भव्रगाशम हरे কেন ? কারণ তাঁহার দারা কিছু ইষ্ট সিদ্ধির সম্ভাবনা আছে: কারণ তিনি ছ:গ নিবারণ করিছে পারেন ও স্থা দিতে পারেন। একপ ডাকার সঙ্গে প্রেমের কোন সম্বন্ধ না পাকি-তেও পারে। সহরে একজন ডাক্তার আছেন। অস্থ লোক विनशा मकरनहे डाँहारक घुना करत ; अन् सीवरनत सम সকলেই তাঁহার মিন্দা করে, কিন্তু তথাপি বাড়ীতে কঠিন রোগ উপস্থিত হুইলে তাঁহাকে লোকে ডাকিয়া থাকে। किकामा कतिरल नरन कि कति,—शार्गत नारत छाकिए इस । সে ডাক্তারের সহিত যেমন প্রেমের সম্বন্ধ নাই,--সেইরূপ ভয় বা স্বার্থের প্ররোচনাতে মাত্র্য যে ইপ্ত দেবতাকে ভাকে ভাগার সঙ্গেও প্রেমের সম্বন্ধ না থাকিতে পারে।

উপাসনার পূর্বে এবং পর।—উণাসক উপাসনার পূর্বে কথনও কোন হাল্কা বা অসার বিষয় লইয়া কথোপ-কথন করিবেন না। যথন উপাসনার্থ গৃহ হইতে বহির্মন হইবেন, তথন ইইতে উপাসনার প্রারম্ভ পর্যাস্ত সেই স্ব বিষ্ণায়ের ক্পাবর্ত্তা विश्वत याहारण हिष्ण प्रमुद्ध प्रश्वा प्रश्व प्रश्

আচার্স্যের উপদেশ।—উপদেশ দিতে হয় দিলাম, বা শুনিতে হয় শুনিলাম, এরপে ভাবের উপদেশ দেওয়া বা গুনায় কোন ফল নাই। অবশু যিনি দেন তিনি প্রাণের ব্যাকু-नजाय वावर निष कर्तना त्नार्थहे (हम. जत्व नकन नमय रजमन প্রাণ-স্পানী উপদেশ না হইছে পারে। কিন্তু উপাদক বা প্রোতা-গণ বিশেষ মনোযোগী হইয়ানা শুনিলে সবই বিফল, তৎপর শুনিলেই হইবে না, যাহাতে শীবনে সেই সৰ সত্য প্ৰতিপালিত হয়, যাহাতে সেইসৰ সাধনে জীবন গঠিত হয়, তাহা করা প্রয়োজন, উপাদকগণের বা শ্রোভাদের এবিষয়ে যেমন দৃষ্টি बाका श्रामाञ्चन, जाहार्या वा छैलामरे। ७४ छैलाम मिया निजुन्ह ছটবেন না, তাঁহারও ভৎসাধনে সহায়তা করা আবস্তুক। এবিষয় উভয় পক্ষের বিশেষ দৃষ্টি না থাকাতেই এমন স্ব স্থন্য স্থন্য উপদেশ যেন মাঠে মারা ধাইতেছে, অনেক বিষয় আলোচনা অপেকা এবিষয় পুনঃ পুনঃ আলোচনা করা **फान এবং সেই বিষয় জীবনে क** उन्द्र সাধিত इहेन, সে বিষয় विटमयक्ररण ८एथा च्यावश्रक, यक्तिन এहेक्रण ८५छ। ना इहेरन, **ज्ञानित व्यानक छान कथा छैनामान द्वान शाकिया गाउँत.** আচার্য্য ও উপাদক বা শ্রোতাগণের এনিষয় দৃষ্টি আকুট **इ**डेक।

সামাজিক উপাসনার ব্যবস্থা।—যদি নেতার অণীন হওয়া কোন হানে আবিশ্রক হয়, তাহা সংগীতের স্থান। তানপুরাটী আগে বাঁধিয়া ভবে ভাহার সঙ্গে আর সমুদায় বস্ত্রকে বাঁপিতে হয়, তবেই স্থান্ধ উৎপন্ন হয়। সংগীতেব পক্ষেও সেইরূপ; যিনি গান ধরিবেন অপর সকলকে তাঁহার অহুগত হইয়া চলিতে হইবে। নতুবা শ্বস্থর থাকিবে না। र्य शायक म छलीटि मकलाई च च श्रामन, मकलाई (मठा **হ্টবার জন্ম ব্যগ্র, কেহ্ট নেতৃত্ব স্বীকার করিতে প্রস্তুত নয়,** সেণানে গানের অভি ছরবঁসা ঘটে। আমরা অনেক ত্রাদ্ সমাজে এইরূপ তুর্দশা দেখিয়াছি। আক্ষমাত্রেই ছুইটা কাল कतिराज भारतम ;— श्राभम, बाक्षनारखरे वक्तृ जा कतिराज भारतम, খিতীয় আহ্মমাত্রেই গান ক্রিতে পারেন। কিছু আহ্মমাত্রেই ৰ ৰ প্ৰধান গায়ক হওয়াতে উপাসনা কালে বৃদ্ধ গোলযোগ परिया थारक। आमत्रा आमानिशत्क धक्री भन्नामर्न निष्कृहि,-डीहात्रा धक्ती निवम व्यवस्थन कवित्रा हिल्दिम । (य क्रक्ति গাহিবার শক্তি আছে, এবং লোকে বাঁছার গান শুনিতে ভাল-বাদে,এরপ ব্যক্তি গান ধরিলে ভাছারা ভাছাত্তে ছাড়াইরা

নিত্যসাধন—উপাসনা কাহাকে বলে ব্রাক্ষ মাত্রেই জানেন, পরমেশবৈতে প্রীতি সংস্থাপন এবং তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন, নিত্য ঈশবের আরাধনা, ধ্যান এবং প্রার্থনা বেমন প্রয়েজন সেইক্ষপ নিত্য জ্ঞান অর্জন এবং পরোপকার সাধন আবেশুক। প্রীতির অঙ্গ সকলও যেমন পূর্ণভাবে সাধন না করিলে আত্মার নিকাশ হয় না, সেইক্ষপ প্রিয় কার্য্য সাপন না করিলেও আত্মার পূর্ণ নিকাশ হয় না, যিনি শুধু আরাধনা করেন অপর ছটা করেন না তাঁহার আত্মার নিকাশ হওরা যেমন অসন্তব সেইক্রপ যিনি দানাদি করেন কিন্তু জ্ঞান অর্জন করেন না তাঁহার আত্মারও বিকাশ অসন্তব। সাধক নিত্য জীবনে এই সব পূর্ণক্রপে সাধন করিবেন। পূর্ণজ্ঞ সাধনের অভ্যবেই এমন সাধন প্রণানী পাইয়ও সাধক ক্রতার্থ ইইতে পারিত্রেছেন না। তাই সাধন প্রণানী সম্বন্ধে নানা কথা শুনিতে পাওয়া যায়।

ভক্তনালয় — যদিও এমন কুসংস্থার কাহারও নাই যে ভ্রুনালয় ব্যুতীত ঈশ্বর আর কোপাও নাই বা আর কোপাও তাঁহার উপাসনা ইইভে পারে না; কিন্তু তবুও এ হানের বিশেষ মর্গ্যাদা আছে; এন্থানের বিশেষ উপকারিতা আছে। ভ্রুনালয় কথন আমোদ প্রমোদের স্থান করিবেন না; সেধানে সংসারের বাজে কথা, সেথানে বাজে বিষয় আলোচনা বা পাঠ করিবেন না; অনেক লোক ভ্রুনা করিতে যাইয়াও বাজে আলাপ ছাড়িতে পারেন না বা বাজে কথা ভূলিতে পারেন না। বাঁহারা এরপ করেন তাঁহারা যে ভ্রুমানজদেরই অনিষ্ট করেন তাহা নহে অপরেরও অনিষ্ট করেন। এন্থান সেই জ্রুমান্ত প্রাণেশ্বরকে বিশেষরপে প্রাণে অমুভ্র করিবেন, এন্থান সেই ভাবই উদ্দীপিত করিবে যাহাতে পরমেশ্বরকে পাইবার জ্রুমান্ত করা উচিত নয়, উপাসকগণের এবিষরে খ্ব সাবধান হওয়া উচিত।

আচার্য্য ও উপাস্কগণ —ইহাদের মধ্যে যে সম্বন্ধ তাহা অতি পাবত্র, যদিও গুরু মানি না মধ্যবর্তী মানি না কিছ যধন সামাজিক উপাসনার বসি তথন জাচার্য্যের প্রতি গঙীর শ্রন্ধা থাকা প্রয়োজন; তাহার কথার প্রতি আছা এবং স্থান প্রদর্শন প্রয়োজন; তিনি যে সরল বিখাদে প্রাণের অফ্ডবের কথা বলিতেছেন ইহা বিখাস করা প্রয়োজন নতুবা এমন পবিত্র সম্বন্ধও অতি হীন হইরা যার এবং সামাজিক উপাসনা বিকল ছইরা যার, আচার্য্য উপাসকর্গণের সাহায্য করিবেন এবং উপাসকর্গণও আচার্য্যকে সহায়তা করিবেন

কিন্ত প্রত্যেক্ট সেই প্রাণ ক্ষ্যেপের সঙ্গে প্রাণের সাক্ষাৎ বোগে উপাসনা ক্ষিবেন।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ত্রাক্ষসমাব্দের দায়িত্বভার।

অপন সামালিগকে ছুইটা বিষয় ভাবিতে ছুইতেতে। প্রাণম কিরণে দেশমণো আফার্য প্রচার হয়—দিতীর বাঁহারা আফারণ সমাজ মধ্যে আপ্রয় প্রাপ্ত ছুইরাছেন, উহােদের মানসিক ও আধ্যাত্মিক উরতির কি উপায় বিধান করা যায়। বিবেচনা ক্রিতে পোলে প্রথম কক্ষটা স্থায় ছওয়া বিতীয়টার স্থাবছাব উপরে অনেক পরিমাণে নির্ভব করে। কার্নণ যাহাদিগকে জোড়ে পাইরাছি, বাঁহারা সকল দিক প্রচাইরা আ্যাদের সঙ্গে ভাগিয়াছে, ভাহাদের উরতির যদি সহুপায় না হয়, ভাহারা ও ভালাদের বংশলাত বাক্তিগণ কালক্রমে আফার্মার্ম ইইতে যদি বিচাত হইতে থাকে, ভাহাদের আক্রমার্ম কলক্ষিত হইতে থাকে, ভাহা হইলে বাহিরের প্রাচার ও কালে বন্ধ ছইয়া যাইবে। যদি নামুষ আনিবার জক্ত একটা দার খুলিয়া রাণি, কিন্ধ ঘরের লোককে বাহির করিবার জক্ত দল্লী দার খুলিয়া রাণি, ভাহা হইলে প্রচারের ফল কিরপ হর সকলেই অমুভব করিতে পারেন।

এই কারণে আক্ষসমাজ ভূক নরনারী বালক বালিকার মানসিক ও আধ্যাত্মিক উন্নতির প্রতি দৃষ্টি রাখা নি হান্ত প্রযোজন । এই দৃষ্টি রাখিতে হইলে কতপ্রকার উপায় অবলম্বিভ হওয়া উচিত ও হইতে পারে ভাহার স্বিস্তর আলোচনা করা বর্তমান প্রবন্ধের উদ্দেশ্য নহে। সম্প্রতি যে করেকটা বিষয়ের স্থাবস্থার অভাবে আন্ধাণের বিশেষ ক্লেশ হইতেছে, এবং শে বিষয়ে স্বরায় কোন না কোন প্রকার উপায় অবলম্বিত হওয়া করেবা, ভাহারই উল্লেখ করা যাইভেছে।

প্রথম,--মফস্বলে যে স্কল ব্রাহ্ম-পরিবাব বাস করিছে:ছন। তাঁহাদের ঘরে ছেলে মেয়ে দিন দিন বড হইতেছে। তাঁহার। বেখানে আছেন সেণানে বালকদিগের পড়িবার মত বিদ্যালয় • বরং এক প্রকার পাওয়া যায়, কিন্তু বালিকাদিগের স্থশিক্ষার উপযুক্ত विमानिय पृष्टे हम ना। मक्च रत (य मक्त वानिका-বিদ্যালয় আছে ভাহাদের অবস্থা অতি হীন ৷ ব্রাক্ষেরা কন্যা-দিগকে যেরূপ বেথাপড়া শিখাইতে চান, সেরূপ লেখা পড়া शिका मिनात खेशाम नाहे। विस्थि खास्त्रता कन्यामिशक অধিক বয়স পর্যান্ত অবিবাহিত রাণেন। দেশের যেক্প ক্সবস্থা ভাহাতে মকস্পণের বালিকাবিদ্যালয়ে বড় বড় মেয়ে পাঠান যাম না। চারিদিকের কুদংস্কারাপর ও প্রতিকৃদ ভাবাপর लाटकत मर्सा এक चत्र आका शहक वड़ वड़ काविवाहिङ स्मर्य লইয়া বাদ করেন; স্বভরাং চারিদিকের কুশিক্ষা হইতে ভাহ!-দিগকৈ দুরে রাখিবার জক্ত সর্মনা চিস্কিত ও সশ্বিত থাকিতে হয়। এই সকণ কারণে সকল আন্ধাপিতা মাতাই বয়: প্রাপ্ত वानक वानिकानिशक कनिकाजार अध्याप कतिवात देव्हा

करतम । किन्तु महरत अन्नभ वागक वागिकामिरभन्न शिक्तिनात द्यान नाहे। এक रव्यून दून, रयशास्त्र शवर्यस्य कार्यन कार्य-श्रष्ट कवित्रो (महत्रहरूद शांकिवात वात्र माला >> हाका माज করিরাছেন। প্রত্যেক মেরেডে তাঁহাদের যে বার হয়, ১১ টাকাতে ভাৰার অভি অরই সাহাযা হয়। সেথানে মেরেদের থাকিবার যেরূপ সুব্যবস্থা ও বাঁহাদের প্রতি কর্তৃত্ব ভার আছে, তাঁহারা যেরপ স্থযোগ্য লোক, ভাহাতে এই শ্বর ব্যয়ের শ্বর গ্ৰণ্মেণ্টের প্রতি আমাদের কুডক হওয়া কর্ত্তব্য যে न्त्रकन बार्क्यत्र वर्ध मन्नि चार्ह छ।हातिन्रदक ब्रथान चम्रा-দিগকে রাখিতে আমরা অনুরোধ করি। কিন্তু সাধারণভঃ ব্ৰাহ্মদিগের অর্থ সঙ্গতি অতি অল। এক একটা কন্যার প্রতি মাসিক ১১ টাকা ব্যর করিতে অনেকে অসমর্থ। অথচ वयः धार्थ बार्का वालिकात मःथा मिन मिन वर्षिक इटेप्डाइ। ব্রাহ্ম সমাজের কার্যাভার বাহাদের প্রতি অর্পিত আছে তাঁহাদের ইহা একটী শুরুতর চিস্তার বিষয়। কলিকাতাতে যদি কন্তা-দিগকে রাখিতে হয় তবে বেথুন স্থলে পড়িবার বন্দোবন্ত করাই কর্ত্তব্য : কারণ সেধানে ছতি উপযুক্ত ব্যক্তিদিগের ঘারাই শিকা দেওয়া ছইয়া থাকে। কলিকাকাতে বালালির মেয়েদের শিক্ষার উপযোগী উৎকৃষ্টভন্ন বিদ্যালয় আর দৃষ্ট হয় না। কলিকাভাতে থাকিয়া ব্রাহ্মদের কন্তাগণ বেণুন স্কুলে পাঠ করিতে পারে অথচ वात्र यह दश अक्रम दक्तान वत्सावछ कहा मछव कि ना ? मतन কর কোন সচ্চরিত্র ও ধর্মপরায়ণ ত্রাহ্ম বা ত্রাহ্মিকার তত্ববে-धान यमि अमन अक्षी वाड़ी बाबा यात्र दिशान बाक्सामत्र कर्णा-গণ আসিয়া থাকিবে; সেথানে ভাহাদের ধর্ম শিকাও উপাসনাদির এন্দোবন্ত থাকিবে; পার্হস্থ্য কার্যাদি ও শিল্প প্রভৃতিও শিক্ষা দেওয়া হইবে; তাহারা দিবাভাগে বেথুন স্কুলে গিয়া পড়িয়া আসিবে। লেখা পড়ার জন্ত কুল--ধর্ম ও নীতি শিক্ষার ভার আমাদের প্রতি। এরূপ একটা বোর্ডিং খুলিলে অনেক বালিকা ধ্যাটে ভাহাতে সন্দেহ নাই। কেবল ভাৰিবার বিষয় চুইটা আছে-প্রথম, ভার লইবার উপযুক্ত লোক কোথায় পাওয়া যায়; দ্বিতীয় এরূপ একটা বিদ্যালয় রাখিতে य वाग्र इटेरव ७७ वाग्र मकल मिर्ड भावित्वन कि ना १ আমরা বেশ চিন্তা করিয়া দেখিয়াছি, স্থুলের বেতন ২ টাকা বাদ দিয়া ও প্রত্যেক মেয়ে পিছু ৮।৯ টাকা পড়ে। সেই ১১ টাকা। খ্রীষ্ঠীয় সমাজের লোকেরা টাদা করিয়া টাকা ভলিয়া দ্রিত খ্রীষ্টানদিগের মেয়েদিগকে পড়াইয়া থাকেন। ব্রাহ্মদিগের মধ্যে সেরপ সাহায্য করিবার লোক কই। অথচ এবিষয়ে একটা किছু कता निकास शरतासन रहेगा छेठियाटह ।

কেবল ব্রাহ্মদের ক্সাদের বিষয় ভাবিলেও চলিবে না। ব্রাশ্ধ্ বালকদিগেরও থাকিবার একটা স্থান করা কর্ত্তব্য। কলিকা-ভাতে অনেক ছাত্রদের ব্যাসা আছে—সেধানে ছাত্রগণ আপনা-পনি সকল বন্দোবত করিয়া থাকে। তাঁহাদের উপরে কেহ থাকে না; সমবয়স্কদিগের মধ্যে সর্কালা বাস করে; শাসন করিবার কেহ থাকে না। এইরূপ অসংযত অবস্থাতে থাকাতে অনেক বালকের চরিত্রে বিশ্ব্যালা উপস্থিত হয়। ব্রাহ্ম বালক দিগকে ওরূপ অবস্থাতে না রাধিরা কোন উপযুক্ত চরিত্রবান ব্রান্ধের ভন্নাথবাদে এক নুৰাজিং ছঙরা কর্জন। সেধানে ব্রান্ধ বালকবিগকে দ্বীভিষ্ট বিশ্বা কর্জন। সেধানে ব্রান্ধ বিশ্বা ক্ষিত্র ও ভাহাদের চরিত্র ও আচরপের প্রতি লুট নুৰা ছইবে। এবারে অনেক গুলি মক্ষলবাসি ব্রান্ধের পুর প্রবেশিক। পরীক্ষাতে উত্তীর্ণ হইরাছে; ভাচাদের অভিচাবক্রণ ভাহাদের থাকি কর্মান করিবার নিমিন্ত ব্যক্ত হইরা বেড়াইভেছেন। উপযুক্ত হানাভাবে রাণিতে পারিভেছেন না। বংসর বংসর এই অভাব আরও প্রবেশ রূপে অন্তুত হইবে। ব্রান্ধসমান্ধের কার্যভার বাঁহাদের প্রতি আছে তাঁহারা যদি ইহার একটা উপার না করেন, ব্রান্ধ বালক গুলি কালে তাঁহাদের হাভ ছাড়া হইরা বাইবে।

এই ছইটা বিষয়ে কোন উপার করা যায় কি না ভ্রায় চিন্তা করা প্রয়েজন হইয়াছে। প্রাক্ষণিপর মধ্যে ইছোদের অবস্থা ভাল, ইছাদিগকে বিধাতা অর্থসলতি দিরাছেন, উাহাদের এই সকল বিষয়ে সাহায্য করা উচিত। যদি উাহার। পরস্পারের ভার বহন না করেন, তাহা হইলে ঈশ্বরের নিকট অপরাধী হইবেন এবং ভাহাদের দৃষ্টান্তে প্রাক্ষ-ধর্ম প্রচার বন্ধ ইইবে।

অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা।

একজন সাধু পুরুষ বলিয়াছেন, সর্লতা ও অভিসন্ধির বিভদ্ধতা এই উভয় পক্ষের উপরে ভর করিয়া মানবাস্থা ঈশবের চরণাকালে উঠিয়া থাকে। অভিস্কির বিশুভতা সহদ্ধে দ্বীর প্রেমিক সাধকেরা বলিয়াছেন-সর্ব কার্য্যে निष्कत्र शोदव व्यवस्था ना कतिया विश्वतित्र शोदव व्यवस्थ করার নামই অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা। সাধক মাত্রেই জানেন, धर्म कीवरनत नकन क्षकांत्र कठिन माधरनत मर्गा अकिमहित বিশুদ্ধতা সাধন সর্বাপেকা কঠিন। স্বার্থ-প্রবৃত্তি বা স্থ্যাশা वा यामानिका, वा षाग्र कोन श्रकांत निकृष्टे वामना षात्रक সময় এমন প্রচ্ছর ভাবে আমাদের হৃদয়ে নিহিত হইয়া থাকে, যে আমরা নিতান্ত সতর্ক থাকিয়াও আনেক সময়ে তাহা লক্ষ্য করিটেউ পারি না। যথন আমরা মনে করিভেছি যে আমরা বিশুদ্ধ সাধুভাবেই কার্য্য করিতেছি—ভথন চরত গুঢ়রপে কোন একটা মলিন ভাব ভাহার মধ্যে **প্রান্**য রহি-য়াছে। আবার অনেক সময় এরপ হয় যে কার্যায়ভ করি-বার সময়, অতি মহৎ ও উদার ভাবেই কার্যারম্ভ করা গিয়াচে, কিন্তু কার্য্য করিতে করিছে তল্মধ্যে যশংম্পুল বা অ্থাস্কি কিছা অন্ত কোন ভাব অলক্ষিত ভাবে প্ৰবিষ্ট হইয়া গিয়াছে।

অভিস্থির বিশুদ্ধতা বিবরে আমাদের একজন প্রথম বলু একবার একটা ক্ষার দৃষ্টান্ত দিরাছিলেন। মহীরাবণ রাম লক্ষণকে চুরি করিবার চেটার খুরিডেছে। শিবির মধ্যে উভর প্রতা নিজিত; খারে খারং প্রন-মন্দম ভার-পাল। বিভীবণ সকল প্রকার রাজ্সী মারার গুড় তম্ব জানিতেন। তিনি মহীরাবণের হুরভিস্থি বৃষ্ধিতে পারিয়াছিলেন। তিনি হছকে সাবধান করিয়া হলিয়া পেলেন,—"কাছাকেও আল রাজে ভার ছাড়িবে না, এমন কি খারং রামী কৌশ্লায় বিদ

ভগছিত হন, তাঁহাকেও বার ছাড়িবে না। বিভীবণ চলিরা গেলেন কির্থেশ পরেই মহারাবণ নানারূপ ব্রিয়া বারে আনিতে লাগিল। হন্ কিছুতেই বার ছাড়িল না। অবশেষে চতুর রাক্ষ্য অবং বিভীবণের মূর্ত্তি ধারণ করিয়া উপস্থিত হইল। এইবার হন্র বৃদ্ধিতে আর কুলাইল না। হন্ বার ছাড়িয়া দিল। বানবের ভাগোও এইরূপ অবহা সমরে সমরে ঘটে। যে বিবেকের আদেশ ক্রমে মানব আগ্রত থাকে এবং সকল প্রকার অসাধু ভাবকে হাদমে প্রেইট হইতে দের না—কোন কেনি সমরে অসাধুভাব কেই বিবেকের আকার বারণ করিবা আদিরা উপস্থিত হর এবং হাদরে ভাবাধে প্রতিই হয়। আনরা একটু সতর্কভার সহিত নিজ নিজ কার্যা পরিদর্শন করিলেই দেণিতে পাইব যে অনেক সমরে একটা সালাক্ত হীনভাব বিবেকের আকার ধারণ করিলেই

हेहात मुद्देश्व रमियात क्रम्म अधिक मृत्य याख्यात व्याताकन माहे। मनामगित विवश हिंखा कतिराहे देशत खेळान मुद्देशि लाश हु बता यात्र। मनामनित वसवर्षी हु है तो अक मन कारत मनदक এত নিৰ্যাত্তন করিয়াছে, এত বিষেধ করিয়াছে, যাছা স্মরণ कतिल आक्तर्याचित वहेटल वृत्त । এই विद्युत्तत वनवर्की बहेन्ना মাফুর অপর মাফুরকে এত প্রকার যন্ত্রণা দিয়াছে, যে কোন দ্মা বা ভন্ধর বা নর-হত্যাকারী, তত নির্দরতা স্বপ্নেও দেখে नाहे। औह धार्यत हे छिहारन राष्ट्री यात. धर्माक छानियक्त अक मन लाक जनत मनाक धतिया छश्च देखलात करोटर छानियाट : शास्त्रत माश्त्र माँकानि निषा छिकिया छिका मातियाटछ ; বোলতা ভীমকুল ৰারা দংশন করাইরা মারিরাছে; ছই দিন তিন দিন ধরির। অল প্রত্যক্ষ সকল থগু থগু করিরা কটিয়া হত্যা করিয়াছে: তপ্ত অঙ্গারের কটাছ পেটে বসাইয়া দিয়া উদর দক্ষ করিয়া সারিয়াছে: অস্থায়া রম্ণীদিগকে পুরুত দানব সমান পুরুষদিগের হতে দিরা ধর্ম নষ্ট করাইয়াছে। এই সকল অভ্যাচার যাহারা করিয়াছে ভাহারা কি সকলেই অসং लाक हिल ? छांश नहर । छाशालव बानाक रे धर्मा छुवानी अ বিখাসী লোক ছিলেন। ভাঁছারা ধর্ম বৃদ্ধিভেই কাল করিয়া-চিলেন; হৃদয়ের অতি দ্বিত ভাবকে তাঁহারা বিবেকামুমো-দিত মনে করিয়াছিলেন: মালুষের রক্ত পাত করিয়া ঈশ্বরের शिव कार्या कतिनाम वनिया आनम कतियाहितन। छाँछा-দের ধর্মার সহিত বিধেববৃদ্ধি প্রচ্ছের ভাবে মিপ্রিত হইয়া ণে কার্যা করিয়াছিল ভাষা ভাষার ধরিতে পারেন নাই।

অত এব সংসারে অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা রক্ষা করিয়া কাজ করা বড় কঠিন। অথচ অভিসন্ধির বিশুদ্ধতা ভিন্ন প্রকৃত ঈশর-প্রেম অন্তরে জাগে না; তভিন্ন ধর্ম সাধনের স্থকণ ফলে না। কিন্তু এখন এই প্রশ্ন চইতে পারে যে আমার অভিসন্ধি বিশুদ্ধ কি না কিরপে ব্যাব ? এবিষয়ে একজন সাধু প্রকৃত ছইটা উপার নির্দ্ধেক করিয়াছেন :—

প্রথম, তুমি যদি দেখ ডোমা অপেকা অপর কোন ব্যক্তি অগ্রসর হইতেছেন, সকলের প্রজাপ্ত ভক্তিভালন হইতে-ছেন, লোকে ডোমা অপেকা উচ্চার ছারা অধিক উপরুত ইইডেছে, ইহা দেখিলে ভোমার আনন্দের উদ্ধ না হইরা

যদি ক্রিরের উদয় হয়, ভাহার প্রশংসা যদি ভোমার ভাল লাগে না; ভাহার কোন প্রকার দোবের ক্রা গুনিলে যদি ভোমার আনক্ষ হয়; ভাহা হইলে নিশ্চয় ব্রিবে তুমি ধর্ম সাধন বিষয়ে ক্রিয়ের বা ধর্মের গৌরব অবেষণ ক্রিভেছ না নিজের গৌরব অবেষণ ক্রিভেছ।

• বিতীর, বদি দেখ তোমার মন ধর্মার্থে স্কল প্রকার কার্গ্য করিতে প্রস্তুত মর; আপনার পদের মত কার্য্য দেওয়া হই-তেছে না খলিরা বিরক্ষা, ভাতা হইলে ব্ঝিবে ভূমি বিশুদ্ধ শ্রী শক্তির বারা প্রেরিত হইভেছ না; ভোমার কার্য্যের মণ্যে পার্থিব কল্বিত ভাব আছে।

এই চুইটা সঙ্কেত অতি উৎক্লষ্ট। এই চুইটার ধারা আপনাবিপত্তে বিচার করিবেই দেশা যার, যে আমাদের কার্যোর
মধ্যে কত কল্বিত ভাব রহিরাছে। সেই অফুই আমাদের
কার্যো ভাল্ল ফল কলিতেছে না। আমাদের প্রচারে ও
চেষ্টাতে ক্রমায়ি ভাল করিয়া আগিতেছে না। ঈশর কর্নন
আমরা বিশ্বর অস্তরে যেন ভালার দেশা করিতে পারি।

বিধান প্রবর্ত্তন ও বিধান সংস্থাপন। (ধার)

ধর্মবিধান সকলের ইতিহাস পর্যালোচনা করিলে দেশিতে পাওরা যার, বিধানের প্রাপম অভ্যাদর বা প্রাবর্তনে যে সকল লোক বিধানের নিশান হল্ডে করিরা আসিয়াছেন, আর বিধানের প্রভাব কালে বা সংস্থাপন সমরে ইন্থারা বিধানের নিশান বহুন করিরাছেন, তাঁহারা ঠিক এক প্রকারের লোক নহেন। উভরের লক্ষণে সমভাও আছে, আবার বৈষ্মা ও আছে। বৃদ্ধ, ঈশা, মহম্মদ ও চৈডক্ত, ইইারা সকলেই এক একটী ধর্মনির নিশান হল্ডে করিয়া জগতে আসিরাছেন। ইইারো বে সকল সভ্য প্রচার করিয়াছেন, ইইাদিগকে সেই সব সভ্যে অবিশ্বাস প্রকাশ করিতে কেই কথনও শুনে নাই। বিশ্বাস আহিতারি ব্রাহ্মণরের অর্থার স্থার ইইাদের অন্তর্যার ব্রাহ্মণরের আহিতারি ব্রাহ্মণরের অর্থার স্থার ইইাদের অন্তর্যার ব্যাহ্মণরের আনিরাহে।

আরে একটা লক্ষণ এই, যে ইইালের বিশাস গভীর তথ্যবিদ্যা আলোচনার ফল নহে, সহজ দৃষ্টির ফল। ইইালের দৃষ্টি সভাবভঃই এমন উজ্জন ছিল বে দেই উজ্জন দৃষ্টিতে সভ্য সহজেই প্রকাশিত হইরাছে। বৃদ্ধ ও চৈতক্ত যদিও পঞ্জিত হিলেন, তথাপি তাহাদের বিশাস গভীর তথ্যবিদ্যা আলোচনার ফল বলিরা বোধ হর না। কথিত আছে বৃদ্ধ তাঁহার জানী গুরু-দিগের মিকট অধ্যয়ন করিয়া তাহার লক্ষ্য সিদ্ধির কিছুই ইইল না দেখিয়া শরং সাধনে প্রার্থত হন। সকলেই জানেন চৈতক্ত যতদিন জান পক্ষপাতী হিলেন, ততদিন তাহার ভক্তিলাভ হয় নাই। আর ভক্তিলাভ হইলে চৈতক্ত জানের বড়ই বিরোধী হইরা উঠিয়াছিলেন। ইইারা সহক্ষ দৃষ্টিতে সভ্যকে উজ্জন ভাবে দেখিয়াছেন ও ভাহাতে বিশাস স্থাপন করিয়া-ছেন। কিন্তু সহজ দৃষ্টিতে সভ্য দেখিয়াছেন এই কথার অর্থ

এই नव (य ইहांता हिश्वामीण ७ धानभवावन हिटनन मा, স্ত্য ভাহাদের নিক্ট ভাসিয়া আসিয়াছিল ; "একথার অর্থ এই त्य हेहाँ ता ७ वृतिमा। ममूल महन कतिमा मठातक छक्षात करतन नाहे । देहाँता जालन जालन धर्म जीवन गर्टरन त्यमन छच्वित्रात সাহায্য প্রহণ করেন নাই, সেইক্লপ ধর্ম প্রচার বিষয়েও ওছ-विमात महात्रका शहर करतन नाहै। यनि वा देहाँदनत কেছ কখনও প্রহণ করিয়াছেন, ভাহা অনিচ্ছার সহিত বাণ্য হট্রা করিয়াছেন। ইহাঁদের বিশ্বাস লাভের ও বিশ্বাস প্রচা-(त्रेत श्रेशांनी भव्यात्माहना कतित्म दिवा यात्र, हेहाँता महत्र मृष्टित्छ স্তালাত ও সহজ কথার আথ্যারিকার সাহায্যে সভা প্রচারের _{(চেষ্টা} পাটরাছেন। মূচ্যি ঈশা **ঈশ্ব**র বিধাতা এই সত্যের ব্যাপ্যা করিতে গিয়া গগণবিহারী বিহঙ্গদদের দিকে অঙ্গুলি निर्दिम कत्रिया (आंजिनिशंदक विनिशंदिन,--दिन हैगारी वर्गन করে না, কর্ত্তন করে না তবু কেমন স্থলর পালকে আছাদিত্র ভোমরা সর্বাধ্যে স্বর্গরাজ্য অংব্রণ কর, কল্যকার জন্ত ভাবিও ना. (जामारमत कि हुत्रहे जानांव हहेरव ना। वृष्कत्र जांशाधिका পংলিও এইরূপ সরল।

ইহাঁদের অপর একটা লক্ষণ এই যে পূণ্যের প্রতি ইহাঁদের বেমন অলম্ভ অনুরাগ তেমনি পাপীর প্রতি অগাধ প্রেম। ইহাঁরা পাপীকে পাষ্ণুী কণটা বলিরা ভর্গনা করিয়াছেন, কেছ বা বেঅঘাত করিয়াছেন; কিছু পাপী যখন আঘাত করিয়াছে, তথন প্রতিঘাত করেন নাই। যে মহম্মদ বিধানা-শ্রিহদিগের রক্ষণ ও লোকের বিধান গ্রহণের অন্তরায়দিগের দুমুনের জন্ত আপনাকে ধর্ম-বুদ্ধি-প্রণোদিত মনে করিয়া যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, তাঁহাকেও কেছ কথনও স্বহস্তে অন্তর ব্যবহার করিতে দেখে নাই। কথিত আছে একদা করেকজন বিধানবৈরী তাঁহাকে একাকী পাইরা এমন গুরুতর প্রহার করে যে তাহাতে তাঁহার এক চক্ষু নইও এক দম্ভ তয় হইয়া যায়, তথাপি ভিনি ছাল্যদের গাত্র স্পর্শ করেন নাই। কুশ্বিদ্ধ দ্বশার মৃত্যুকালে আতভায়ীদের জন্ত প্রার্থনা ও গুরু আঘাতে রক্তাক্ত কলেবর নিত্যানন্দের মাধাইর নিকট প্রেমভিক্ষা ইইটাদের অগাধ প্রেমের পরিচায়ক।

বিধানের প্রভাব কালে বা সংস্থাপনে ঘাঁহারা ইহার পতাকা বহন করিয়াছেন তাঁহারাও ঐকান্তিক পুণাালুরাগী অগাধ প্রেমিক ও গভীর বিধানী। কিন্তু পুর্ব্বোক্ত মহাত্মানের বিধান লাভের ও প্রচারের প্রণালীর সঙ্গে শেংহাক্তদিগের প্রণালীর বিশেষ পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায়। পেংহাক্তেরা ভল্পবিদ্যা সমুদ্র মহন করিয়া সত্যরত্ন উদ্ধার করিয়াছেন, স্প্রা স্থান করিয়াছেন, অবং প্রচারক করিয়া তাহাতে বিধান স্থাপন করিয়াছেন; এবং প্রচারক লোও এই পাণ্ডিত্য পূর্ব প্রণালী অবলম্বন করিয়াছেন। পূর্ব্বোক্ত মহাত্মারা বলিয়াছেন সভ্যে বিধান কর, পেংহাক্ত মহাত্মারা বলিয়াছেন সভ্যে বিধান কর, পেংহাক্ত মহাত্মারা বলিয়াছেন, যদি আমার প্রচারিত সভ্যে বিধান স্থাপন করিছেল। পার, যদি ইহার অক্তর্মের বিচারে প্রাবৃত্ত হও, দিব্যক্তানের উদ্যা ইইবে, বিধান লা করিয়া পাণ্ডিতে পারিবে না।

নোরাতে কলম জুবাইতে বাইর। নিজে জুবিরা বাইবে বের্থম ভর কর না, ভেমনি মন সংক্ষর-গোপ্পার জবে ভুবিরা ঈশ্বরকে হারাইরা ফেলিবে এভর রাখিও না। ঈশ্বর প্রাণে রভিরাছেন। ভরজানালোকে সক্ষেহ কোরাসা কাটিয়া গেলেই সহজ্র কিরণে প্রকাশিত হইরা পড়িবেন।

এখন সহজেই এই প্রাপ্ন উঠে বিধানের প্রবর্তনে বে বিধান্তা বিধানের সংস্থাপনেও সেই বিধাতা সমানভাবে বর্ত্তমান: একই বিশাতা কেন একই বিধানের বিভিন্ন সমরে বিভিন্ন প্রাকারের লোক প্রেরণ করেন—বিভিন্ন সময়ে কেন বিভিন্ন নীডিভে কাল করেন ? ইহা আপাততঃ কিছু রহস্তমর বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু একটুভিতরে প্রবেশ করিয়াদেখিলে এই নীতি-বৈচিতের বিধাভার আশ্চর্যা নৈপুণা ও অপার প্রেম দেখিলা অবাক হইতে হয়। এক একটা বিধান প্রবর্তন এক একটা বছদিনের স্থপীক্ষত পাপ ক্ষপ্রেম ও অসত্যের উপর পুণ্য প্রেম ও সত্যের আক্রমণ। মানুষ যেমন সমরনীভিতে কোন দেশ অধিকার করে, বিধাতা ভেমনি প্রবর্তনী নীভিতে বিধান প্রবৃত্তিত করেন। এই প্রবর্তনীনীতি দেবসমর নীতি বই স্থার কিছু নয়। এ সমর নীতি অতি অভুত। ইছা শক্তর প্রাণ লইতে না ধলিয়া শত্রুর জন্ম প্রাণ দিতে বলে এবং প্রাণ দিয়া জয়গান্ত করে। বিখাণীর রক্ত পাতের সঙ্গে গঙ্গে রক্তবীজের ভার বিখাসীর সংখ্যা বাজিতে থাকে। বিখাসের অগ্নিতে ঘুভাছতির স্তান্ত আপনাদের জীবন আছতি দিয়া বিধান।গ্লি প্রজ্জলিত রাখেন। विधारनत्र अवर्खन कारन विधाला जाहात विधानी मञ्जानिहरतत्र ছারা এরপ আন্থা-বিস্ত্রেনের ব্যাপার প্রদর্শন করেন এই জনা ষে অংপ্রেমিক অবিখাসী বিখাস ও প্রেমের মহত্ব দেখিয়া আরুট হইবে। তথন লোক অবিখাস ও পাপে মজিয়া এভদূব পতিত হইয়াচে যে সভ্য লাভের কচি ও সভ্যায়েশণের অনুসর ভাহাদের নাই। সভালাভের ক্লচি ও সভাবেষণের জনসর থাকিলে তত্ত্বিদ্যার আলোচনা করিয়া সভালাভ করিবে। পাপীর এ দূরবভার নিকটে বিধাতার বিণাতৃত্ব শক্তি কি হার মানিবে ? তাঁহার অপার প্রেম কি পরাজিত হইবে ? ভাছা ভ रहेवात नत्र। এक्टल छिनि छोडात कारीय काटन ७ क्यात প্রেমে এরণ নীতিতে কার্ক করেন যে পাপী অবিখানী ষ্মকৃতি সত্ত্বেও পূণ্য ও বিখাসের দিকে আকৃষ্ট হয়। পাপী জ্বেম ও সভা লাভের কণা ভাবে না,কিছ বিধাতা সাধুলীবনে সভোর মাহাত্ম্য প্রকাশ করিয়া ভাহার চকুর সমক্ষে এমন ভাবে ধারণ করেন যে সভ্যের মালাক্স দেশিলা সে মন্ত্রমুগ্ধ সর্পের ন্যার তাঁহার চরণে লুটাইরা পড়ে। ইহাই ভগবানের প্রাবর্তনী নীতি। ভগবানের এই নীতিতে যুগে যুগে কত হালার হালার **जगारे गाधारे शांग भारेटल्ट** ।

ু বিধানের সংস্থাপনকালে বিধাতা বে সাধুজীবনে স্ভোর
মাহান্তা দেখাইয়া পাপীকে আকর্ষণ করিতে বিরত হন তাহা
নয়, তবে এ সময়ে এমন এক শ্রেণীর মহাজনের অভ্যানর করেন
বাঁহারা আপনাদের জীবনে প্রকাশিত সভ্যের মাধান্তাে
পাপীকে আকর্ষণ করেন। ইয়া ব্যতীত আপনাদের দিখাকান
সাহাব্যে অবিখাসী ও সন্দেহাত্মাদিগের ভ্রম প্রদর্শন করিয়া

जाहारम्य विभवनामी हिडारक स्थार्थ जानमम करमम अ जायन নিখাস উৎপাদন করেন। ভগবান এই প্রণালীতে কাল করিতে গিয়া প্রবর্তিত সভাবে তথকানের অ্দৃঢ় ভূমির উপর সংস্থা-लिंड करतम विश्वा देश फैंशित मरश्रामनी मीडि। मकन विधा-श्विता नवन छार्व महा ध्वकान कविवाहितन द्वनारखन শ্বিরা ভাহা সংস্থাপন করিরাছেন। মধ্বি ঈশার পণ্ডিত শিষোরা তাঁহার প্রচারিত সত্যের মধ্যে দার্শনিক শুরু প্রেটোর মতের সলিবেশ পূর্বক গভীর পাঞ্জিতাপূর্ণ করিলা সংস্থাপন ভ্রিয়ছেন। রূপসনাতন প্রভৃতি বৈক্ষব জ্ঞানীরা গভীর लाखिका महकारत देवकरनात व्यवादिक मका मक्य मध्याभन कतिया निवाहकत। मानत्वत्र खम ध्यन्गठा धावूक चानक স্ময় সভ্যের সঙ্গে অস্তা, স্মরুক্রের সঙ্গে আগাছার সংস্থাপিত ভুগ ত্ৰান্তি ednice i क्र স্ব ছাড়িয়া দিলে দোধতে পাওয়া ধার সকল বিধানেই এমন এক সময় আসি-য়াছে যণন প্রাবর্ত্তি সভ্য সংস্থাপিত হইয়াছে। আক্ষণত্র এ युरभव भयं विभाग । भमरत्रव हिस्र दमिया द्वां इहेरछ हा त्य হহারও স্থাপনের সময় আবিয়াছে। বর্তমান বিধান বিরোধী-श्राप्त पर्मन विकास्त्र मारारा अध्या **या या मूल महा मक्ल**रक অসতা ৰ্লিয়া প্ৰমাণ ক্রিবার জন্য প্রয়াস্পাইভেছে, চিন্তার हरक हैश व्यर्थ हीन नह। विद्यागीत्मत वाग्विङ्खात सङ् কর্ণের উপর দিয়া প্রবাহিত হুইয়া গেলে গুলিতে পাওয়া যায় এক গভারিষর দূর হইতে বলিতেছে—এক্ষণণ, ভোমরা আক ধল্মের ভিত্তি আপনারা ভাল করিয়া বুঝাও বুঝাইতে চেটা কর। আবার ব্রাহ্ম সমাজের দিকে কর্ণণাত করিলে গুনিতে शां ध्या यात्र (महे कर्ष ध्वनिह क्यांक निकार जन्म विकास पिरनत থাংল ওপজ্ঞানাকাজকার মধ্য দিয়া অতি স্পষ্টভাবে বলিতেছে আন্দাণ প্রাবর্তিত সভোর স্থান জান-গত ভিত্তি অযেষণ করিয়া पाँशता विष्णवकारक विधान शाहारवत्र कात গ্ইণাছেন তাঁহারা কি বিধাভার এ ডাক গুনিতে পাইভেছেন ? বিধাতার এ অভিলার বুঝিতে পাারতেছেন ৮ প্রভুর কাল করিতে গিরা নিজের অভিনার মত কাজ করিলে প্রভুর কাল করা হইল না, প্রভুর অভিপ্রায় বুঝিয়া কাল করা ^{हाहै।} विशालात अविधादित्रहें छें भन्न विशासन अकार निर्स्त করিতেছে। আমাদের মধ্যে প্রবেদ প্রতিভাশালী লোকের অভাব বলিরা আমালিগের নিরাশ ছইরার কোন কারণ নাই। যুক্রাজ্যের স্বাধীন্তা প্রবর্তনের সময়ই বীর ওয়াসিংটনের श्रीत रोत मखनीत व्यक्ताकन हिन, वर्डमारन नतः। लादकत कना थांमानिशतक खांविरक इंदेरिन ना। व्यामारमन्न बाहा कर्खना ভাহাএই বে আমারা ভাঁহার নীতি আহুদারে চলিব, ভাঁহার অভিতাম বুঝিরা কাল করিব; তাঁহারই ডাক ভনিয়া ^{हिनित}। (य यात्र या**फ,** (य शांदक शांक, शुरन हिन छै। हात्रहे

ত্রান্ধর্ম্ম প্রচার।

াবগত ১০ই আবাঢ় রঃববার সাবারণ ব্রাক্ষসমাজ মন্দিরে পণ্ডিত পিবনাঁথ শক্ষী কর্ত্তক প্রদন্ত উপদেশের সারাংস।

हेश्त्र वानिनी धक्कन अद्भाग प्रिता वह कांग्रान कीका प्र পূর্বক e · 1 ७ । বৎসরের পূর্বকার এদেশে মৃদ্রিত ধবরের কাগত্র সকল সংগ্রহ করিয়া ভাষাতে সতীদিগের সহময়ণের (व विवत्र**ण चाट्ड छाटा मध्यट क्**तिष्ठिहन। छिनि এक्सिन আমার নিকট একটা বিবরণ পাঠ করিলেন এবং বাললেন যে 📩 সেইটা পড়িবার সময় তাঁথার চক্ষে লল পড়িয়াছিল। সেটা এই : প্রায় ৭০ বংসর পূর্ব্বে উদ্ভন্ন পশ্চিমের কানপুবের নিকটে একটা রম্ণী স্কুমুভা হয় ৷ তথ্ন এই নিয়ম হইয়াছিল যে কেহ সহসং-(लाखूब विश्वादक हिडात महन वैधिया निष्ड लातिरव ना, কিংবা কোন প্রকারে বল প্রয়োগ করিছে পারিবে না। ভদ্মুপারে উক্ল সহ্মরণ স্থাে গ্রথমেণ্টের ভর্ফের গোক উপস্থিত ছিল, পাছে কেহ বল প্রয়োগ করে। যুবতীটীর वयः उक्कम २०।२৫ এव मस्या। मः मारविव कान घः थ नाहे। लाक नाना क्षकांत्र वृक्षाहेत्छ नाशिन। लाटकत क्षादाहना আছীর স্বজনের ক্রন্সন, রাজকর্ম্মচারিদিগের পরামর্শ এই সকলে युवजीत मन क्लकारमञ्ज कल मःभव-कावानच इडेल : क्लकाल कीश्रातत मात्रा मनाक व्यक्तिकात कतिन। किन्न उर्शत कालहे যুবতী ছট কর যুজিয়। বলিতে লাগিল, "ছে রাম। তে রাম আমাকে এই সময়ে বল দেও, ছে জানকি, ছে সাবিজি, ছে প্রাচীনকালের পতীগণ আমাকে এসময়ে রক্ষা কর।" এই विनम्ना निरम्भवत मर्ता वन नाम कतिमा त्रहे मृत्ही क्षामस অন্তরে চিতাতে আবোহণ করিল।

এই বিবরণটী পডিয়া উক্ত ইংরাজ মহিলা আমাকে বলি-(मन.-- এরপ আয় হত্যা অতি শোচনীয় বিষয় সন্দেহ নাই, কিছু বে দেশের নারীগণ এরাণ ধর্মনিষ্ঠা ও মাদ্দিক বলের দৃষ্টাস্ত দেখাইলাছে দে দেখের বিষয়ে তোমরা নিরাশ হইও না। কিছু পরে তাহাঁর নিকট হইতে উঠিয়া আসিলাম, কিছ "দে দেখের বিষয় নিরাশ হইও না," এই কথাটা আমার মনে ঘুরিতে লাগিল। তৎপরে অনেকবার এবিষয়ে চিস্তা করি-য়াছি। ব্রাহ্মসমাজ कি ভারতের ধর্মভাবকে বিনাশ করিবার প্রাদ পাইতেছেন ? কথনই না। ভারতের ধর্মচিন্তা ও ধর্মভাব যে প্রশালী দিয়া প্রবাহিত রহিয়াছে, সে প্রশালী হইছে সেই স্লোভকে পরিবর্ত্তিত করিয়া উৎক্রষ্টভর প্রণালীতে लावाहिक कताहे हेशत छेल्ला । देश ठिक त्यन तकान निमेत স্রোভ ফিরাইবার প্রায়। এক ধার দিয়া একটা ধাল ধনন ক্রিয়া আর এ4টী নদীর দলে যোগ করিয়া দেওয়া গেল; অমনি জলরাশি সেই কাটা খাল দিয়া টানিতে আরম্ভ করিল ; জলের টানে ছুই পাড় ভালিয়া খালের পরিসর দিন দিন বাড়িতে नाशिन; এবং अज्ञकारनत्र मर्या काठा थानरी এक श्राकाश नहीं হইয়াপুরাতন নদীটা চড়া পড়িয়া গেল। আক্ষামক যেন (महे अकात कार्या शतुष्ठ हहेत्राह्न। **खात्रक अथन** ९ धर्म-**छार चारह। धर्मशार्यद्र अश्य गक्य एवं माध्यक्ति ठाटा यर्थ्डे**

আছে; বরং তাছা কিছু অভিরিক্ত নাজার থাকাতে গোলের বাণীন চিন্তার পথ রোধ হইরাছে। বিতীর ককণ বৈরাগ্য তাহাও এখনও বিন্যুমান আছে। তৃতীয় লক্ষণ জীবে ইয়া তাহাও এখনও অন্তর্হিত হয় নাই। আমাদের পক্ষে ইয়া একটা গুলুতর প্রান্ত কিলপে সামরা এই ধর্মভাবকে বিদ্ধান নাকরিরা বিশুদ্ধ জ্ঞান-সম্মত পথে নিরোজিত করিব, আমা সমাল বদি দেশের পোকের ধর্মভাবকে অধিকার করিতে না পারে তবে সেইট সিক্ক হইবে না।

किन्द्र (मर्गत वर्ष ज्ञावरक काविकात कतिर्व्छ इन्ट्रेश आन्न সমাজে তিনটী গুণ বিদ্যমান থাকা চাই। প্রথম আধ্যা-স্মিকতা বা সাধন-তৎপরতা। ব্র:ক্ষসমাজ ধর্মসমাজ, সভাব্রপ नेचंत्रक क्षप्रात ७ कीवरमंत्र मर्स्वाक स्थाम (ए ७३१) हेशास्त्र লক্ষ্য এই ধারণাটী লোকের মনে দৃঢ়ক্সণে মুদ্রিত হওয়া চাই। এরপ ব্রাহ্ম থাকিতে পারেন ঘাঁচারা অপর সকল সম্প্রদারের माजत (माय कीईन कतिएक वाष्ट : जाहारमत धात्रणी मर्का श्राम ভাত মতের প্রতিবাদ করিবার জন্মই ব্রাহ্মসমাজের জন্ম। বাস্ত্রণিক ত্রাহ্মসমাজের প্রধান লক্ষ্য তাহা নহে। কোন কোন त्नारकत नमाब-मश्कारत षाजिना उरमान, डाहाता मरन करतम সমাজ-সংকার করাই ত্রাহ্মসমাজের প্রধান লক্ষ্য; ভাহা ও নহে। মানবকে সভা স্বরূপের চরণেউপনীত করিয়া নব জীবন প্রাপ্ত করা ইহার লক্ষ্য। মতগত বিশুদ্ধতা ও সমাজ-সংস্কার এই উৎস इहेट छेदमातिक इहेटल्ड । स्मान्य स्मारक मान वह धात्रणा জিমিরা দিতে হইবে, যে ব্রাহ্মণণ পবিত্রস্বরূপ প্রমেশ্বরকে क्षपायत ও জীবনের সর্বশ্রেষ্ঠ সিংহাসন দিবার জন্ম ব্যঞ্জ; সে জন্ম তাঁহারা সকল ক্লেশ বহন করিতে প্রস্তুত। ত্রাহ্মসমাঙ্গের ত্রহ্ম-নিষ্ঠার ভাব লোকের মনে দৃঢ়রূপে মুজিত না হইলে ইহার আধ্যান্মিক শক্তি লোকের মনকে অধিকার করিতে পারিবে না।

বিতীর গুণ—নীতিগত পবিত্রতা। ব্রাহ্মসমাজের প্রতিলোকের বির্দ্ধ ভাব জায়াবার যত কেন কারণ থাকুক না, আয়-সংযম ও ইব্রিয়-নিপ্রাহ বলে ব্রাহ্মগণ যদি বলী হন, তাহা হইলে, তাহাদের প্রভাব আপনামাপনি বিস্তৃত হইবে। তাহাদের মত ও মমুষ্ঠানের প্রতি সহল্র আপত্তি সংস্কৃত পোকে তাহাদিগকে শ্রন্ধা না দিয়া থাকিতে পারিবে না। লোকে বলিবে, লোকগুলো বেয়াড়া বটে, মত শত কেমন বিদ্কুটে, যার তার থার, জাত মানে না; কিন্তু লোকগুলো ভাল লোক, মন্তারের ছন্দাংশ পাকে না; অসাধুতাকে খুণা ও সাধুতাকে আদর করে।" নীতিগত পবিত্রতা যার আছে, মানব হৃদ্ধের শ্রন্ধিক বে স্থাপনার হস্তে বাধিরা রাধিরাছে। স্থনীতির প্রাতি যদি একবার বিনষ্ট হয়, তাহা হইলে ব্রাহ্মসমাসুলর শক্তিও বিশ্ব হইবে।

তৃতীর সদ্গুণ—নর-প্রীতি। লোকে যদি দেখে ব্রাহ্মসমাজ সকল শ্রেণীর লোককে ছণা করিয়া এক পার্দ্ধে দিড়াইয়া আছে, লোকগুলি আছা-তৃপ্ত গুলাপনাদিগকেই বড় বলিয়া জানে, চারিদিকে যে এত বিষয়ের আন্দোলন হইতেছে, এত সংকার্য্যের অস্কুলন হইতেছে তাহার কিছুরই সহিত প্রাহ্মদের হুদরেব বোগ নাই; ইহারা লোকের ইহকালের সূপ ভূংথের

क्षा कि क्षाणीन परेश देववसे नवेश्वादेशक विकार के आहे.
हेशांश रेशांद्र स्था प्रति के कि क्षाण के क्षाण

भूर्यांक विविध अन वर्षमान वीकिएन बान्तनमारकत अकि विक्रिक हरेरन, ध्वश बान्तमंत्र (मनवट्मा जाननाजानि खहाहिछ हरेरन।

কংফুচের বচনাবলী। গাধু।

যিনি পূর্ণ সাধুতা লাভে ইচ্ছুক, তিনি আছার বিষয়ে রস্নার তৃথি অবেষণ করেন না; গৃহে ভোগ স্থাপর আয়োলন অবেষণ করেন না; বে কোন কার্যা করেন সমূদর হৃদর সন্দর সহিত করেন; যাহা কিছু বলেন সতর্কতার সহিত বলেন; তিনি নিজের ভ্রম সংশোধন মানসে জানী ও নীতিমান লোক-দিগেরই সহবাস অবেষণ করেন, এইরপ ব্যক্তিরই বান্তবিক্
জান স্থাহা আছে।

কি কঙ্ (একজন কংফ্চের শিবা) জিজাসা করিলেন— প্রকৃত সাধুর শক্ষণ কি ?

গুরু (কংফুচ) উত্তর করিলেন;—তিনি মুথে বলিবার পূর্বেক কাজে করেন, এবং কাজে যাহা করেন পরে মুশ্ ভাহা বলেন।

শুরু বলিলেন—প্রকৃত সাধু যিনি তিনি উদার চেচা, তাঁহাতে দুগাদলির ভাব নাই; কুলুচেডা ব্যক্তি দুলাদলিতে ব্যস্ত, তাহাতে উদারভা নাই।

প্রকৃত সাধুব্যকি যদি সাধুহার নিষ্ম পরিহ্যাপ করেন ভবে ভিনি আর কি প্রকারে সাধুনামের যোগ্য হইবেন ?

সাধুব্যক্তি একবার আহার করিতে যে সমর্চুকু লাগে গে সমর্চুকুর জন্তও সাধ্তার নিয়ম লজনন করেন না; নিভাগ ব্যস্তভার মধ্যেও সে নিরমকে তিনি রক্ষা করেন; বিপদেশ মধ্যে তিনি সেই নিয়ম রক্ষা করেন।

গুরু বলিবেন:— প্রকৃত সাধু ব্যক্তি অগতে বাস করেন বটে কিছ ভিনি কোন বস্তুতে অভিশার আসক্ত বা অভিশা বিরক্ত নহেন, যাহা সং ও বাহা কর্ত্তব্য ভিনি ভাহার অহুসর। করেন।

প্রকৃত সাধু ব্যক্তি চিতা করেন কিরপে সাধুতা রক্ষা হইবে ক্রচেতা ব্যক্তি চিতা করে কিরপে ত্রণ মিলিবে। সাধু বার্চি কাজ করিবার সময় ভাবেন মীতির নিরম গাকিল কি না ? ক্র চেতা ভাবে ইহাতে লোকাভুরার পাওরা ঘাইবে কি না ?

শুর বলিলেন—প্রাক্ত সাধু ব্যক্তির চিত্ত কেবল সাধু^{তার} উপার চিত্তা করে, কুল চেতার মন কেবল লাভেরই উ^{পার} চিত্তা করে।

গুৰু বলিলেন—প্ৰাক্ষত সাধু ব্যক্তি কথাতে সন্দৰ্গতি ^{বিৰ্} কাৰ্য্যে সতেন্দ্ৰ। श्वक विगासन जोहात जिला कि हास्मृत माह्य हाति अने हिन्दु-मु (१म) की राव काल्यहात विज्ञा क्रिक (२) लटक लहिक बाह्यटम क्षवा हिन ; (७) खाबाकुरस्य क्रतरम् वशा हिन, खनर (०) सामम कार्या क्षांत्र क्षित्र ।

শুক বলিলেন :—বেখানে জ্বর মনের সার্বান গুণ আছে কিছু সৌজভের শিক্ষা নাই—সেখানে প্রামীণতা আছে :— বেখানে সৌজভের শিক্ষা আছে সার্বান গুণ নাই সেখানে বার্গিরি আছে—বেখানে সার্বান গুণ ও আছে সৌজভের শিক্ষাও আছে, সেখানেই প্রকৃত সাধুতা আছে।—ক্রমশ:

मर्वाम ।

শ্রু পঞ্জিত রামকুমার বিদ্যারত্ব মহাশর প্রচার কার্য্য হইতে কিছুদিনের কল্প অবসর লইবা আপাততঃ হিমালর পৃষ্ণে তিনধেরিয়া নামক স্থানে বাস করিতেছেন। শ্রুক্তর প্রীযুক্ত বাবু নগেক্রনাণ চট্টোপাধ্যার মহাশর উহার বাস প্রাম বঁ,শতাক্তিরা সমাজের উৎসব উপলক্ষে তথার গমন করিয়া এথনও সেধানে আছেন; শ্রুক্তর প্রীযুক্ত নবহীপচক্ত দাস সম্প্রতি বনসঁ। সমাজের উৎসব উপলক্ষে তথার গমন করিয়াছিলেন; শ্রুক্তর প্রীযুক্ত শশি ভূষণ বস্তু উত্তর বঙ্গের সমাজ সকলে কার্য্য করিতেছেন; শ্রুক্তর প্রীযুক্ত বাবু অঘোরনাথ মুধোপাধ্যার অদ্যাপি বাপ্রতাচড়াতে গাকিয়া কাজ করিতেছেন। পশ্রিত শিবনাণ শান্ত্রী কলিকাভাতেই আছেন।

কিছুদিন হইল সাধারণ আন্ধ সমাজের কার্য্যনির্বাহক সভা ভাষমগুহারবার স্বডিভিজানের ছুর্ভিক বিষয়ে অফুসন্ধানার্থ প্ৰিত শিবনাথ শাল্পীকে ভার দিরা করেকজন সহকারী সজে প্রেরণ করেন। তাঁহারা উক্ত স্বডিভিজানের কুল্পী থানার অমুর্গত ঘাটেখরা গ্রামে গিয়া দেই গ্রামকে মধ্যবিন্দু স্বরূপ क्रियां भित्रमान क्रिट्ड चाइड क्राइन। अक् मश्चारहद मरशु উচারা ৩১ থানি গ্রাম পরিদর্শন করিয়া দেখিতে পান যে শতকরা প্রায় ৮ কি ১০ জন লোকের এক দিন হইভেছে ত এক मिन हरेट उटह ना এই क्रथ अवसा। हेशामत अधिकाश्मेर मञ्जूत অন সংখ্যক বেওয়া বিধ্বা, ইত্যাদি। তাঁহারা এই শ্রেণীর लाटकत्र माराचार्थि धान विन्ना ठाउँन कन्नान, ७ भाग विन्ना দড়ি কাটাইবার পরামর্শ করিতেছিলেন, ইতিমধ্যে সুবর্ষা আরম্ভ হওয়াতে চারিদিকে চাব আারম্ভ হইয়াছে; আমাদের কাজ করিবার লোক আর পাওয়া বার না; স্তয়াং তাঁছারা সেধানে থাকা অমাবশুক বোধে কলিকাডায় ফিরিয়া আসিয়া-^{८ह्न ।} नकरन बहेन्नभ करूमान करतम हुई यान भरत लारकत আবার কিছু অন্নই ধ্ইবার সভাবনা।

সাধারণ আদ্ধসমাজের কার্য্য-নির্কাহক সভা কিছুদিন হইণ ত্রীযুক্ত বাবু নীলমনি চক্রবর্তীকে থানি পর্কতে ধর্ম প্রচারার্থ প্রেরণ করিয়াছেন। নীলমনি বাবু নিলং পাছাড়ে পৌছিয়া-ছেন এবং উৎসাহের সহিত কার্য্য করিতেছেন। শিলংএর সরিবিত নেশ্বার পাহাজে থারিবের আই বে লবাজ আছে ভালতে ভিনি ইংরাজীতে উপাসনা ও বজুতানি করিছা থাকেন। উল্লেখ গমনে থাসিগণ পরম আনন্দিত ও উৎনাহিত হইরাজেন। কই জন থাসি যুবক ভালার সহিত যোগ দিরা বিশেষ ভাবে কার্যা করিতেছেন। নীলমনি বাবু থাসি ভাষা শিখিতে আরম্ভ করিরাজেন এবং আশা করেন বে স্বরায় তাহা অধিগত করিতে পারিবেন। পরমেশ্বর আমানের তাতার কার্যার সহার হউন।

উলুবেড়িয়ার ব্রাহ্ম সন্মিলনী সভার উৎসৰ বিবরণ আমরা ख्याकात कान वसूत्र निक्षे क्षेट्र क क्षेत्रम खाख हरेशाहि। "বিগত ১ল। জুন হইতে ৩৪। জ্ন প্ৰায় উপুৰেভিয়ার মচকু-মান্তিত প্রাক্ষ দলিবনী সভাগ সাংৰৎস্ত্রিক উৎস্ব বিধাভার কুশাম নিম্নলিধিত প্রণালী অনুসায়ে উলুবেড়িয়াতে সম্পন্ন হট্যা গিরাছে। তপার মহাকুমান্থিত অমরাগড়ি, রসপুর, বানিবন, ভামপুর, স্থসপুরও বাঁটুলের আক্ষাও আক্ষার্থ সহাত্ত্তিকারী এবং স্থানীয় মুন্সেফ উকিল ও অভাভ ব্যক্তিগণ মিলিত হন। मयदिशान बाज्यशर्ष धारात्रक वात् देवलाकानाथ मानात इह দিন উপাসনার কার্য্য করেন। ১লা প্রাতে উপাসনা, স্ক্রা-कारण छेरगरवत छेरबाधन। २वा खार्ड छेनामना छर्नरत धर्य-লোচনা এবং দক্ষিণনীর গত বৎসরের রিপোর্ট পাঠাত্তে কিরপে পরস্পরের মধ্যে সম্ভাব স্থাপন করা যাইতে পাবে **७९**मदरस करवानकथन। जानद्राहरू बक्टूछ। ७ ननद्रकीर्छन, বাজারে, মাঠে, ঘটে, বব্জুতা হয়। বক্তা কাঁথি কুলের শিক্ষক ৰাবু শশিভ্ৰণ চক্ৰবভা, আমৰাদীর ও সন্মিলনীর সম্পাদক বাবু প্রিয়নাথ মলিক এবং অমরাগড়ি নববিধান ব্রাহ্মণমাঞ্চের উপাচার্য বাবু ফ্কিরদাস রায়। অদ্ম্য •উৎসাছের সহিত সংকীর্ত্তন বাহির হইয়াছিল। আর ৩০০ শভ লোক সংকীর্ত্ত-নের সঙ্গে স্রেয়াছিল। বজাত্রের বজুতা অত্যক্ত হৃদর আহী হইমাছিল।"

২৭এ দৈঠ রবিবার রাজসাহীর অন্তর্গত নওগাঁ এণ্টুন্স কুলের হেডমাটার বাবু হীরালাল রায় মহাশায়ের, প্রথম পুত্রের নামকরণ সম্পন্ন হইয়াছে। বাবু বনমালী বস্থ মহালম্ম এই অম্ঠানে উপাসনা করেন। এই অম্ঠানে স্থানীর অনেক ভত্ত লোক উপস্থিত ছিলেন। বালকের নাম সত্যানন্দ রায় রাধা হইয়াছে। আমরা কভক্তভার সহিত স্থীকার করিতেছি। এই অম্ঠান উপলক্ষে হীয়ালাল বাবু সাধায়ণ ব্রাক্ষসমাজে ২১ দান করিয়াছেন।

নামক্রণ-শত ১৩ই জুন বৃহস্পতিবার বাবু হরকুমার রাম চৌধুরির প্রথম প্তের নামকরণ কার্য্য সম্পান চইরা গিরাছে। তছপলকে বাবু নবৰীপচন্ত দাস আচার্চ্যের কার্য্য করেন। বালকের নাম দেবকুমার রাধা হইরাছে। আমা-দের বন্ধু তছপলকে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচার ফণ্ডে ৫ টাকা দান করেন। তজ্জন্য তিনি আমাদের ক্রতজ্ঞতার পাত্র।

নামকরণ-গত ৭ই জুন গুক্রবার বাবু গোপালচন্দ্র মরিকের প্রথম পুরের নামকরণ কার্য্য সম্পন্ন হইলা গিয়াছে। ভচ্চপদক্ষে পণ্ডিভ শিবনাথ শাস্ত্রী আচার্য্যের কার্য্য করেন। वागरक्त नाम बीरतक द्रांचा बहेतारह। रशाणांचा वार् कहरी-गरक कांत्र करक के हिला गाम करतन। उच्छेमा डिमि जामारम्ब कृष्ठकावांत्र शाका

ই বড়বাজার স্তাপটা বার্যারী কণ্ড হইতে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের দাতব্য বিভাগে এককালীন ৫০ টাকা দান প্রাপ্ত হওয়া সিরাছে। এ জন্ত আমরা উদ্যোগীদিগকে ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি।

জনদরের সেবন জ্ঞানহাশর আমাদের মত। দি আমাদের প্রেরিজ পুজকাদিতে অবগত হট্যা আমাদের মতের সহিত সম্পূর্ণ সহাত্ত্তি প্রকাশ করিয়াছেন। বলা বাহুলা ইনি একজন ইংরেজ।

শ্রমের কানী প্রসর বস্থ মহাশর নিথিরাছেন,—শ্রীবাড়ীতে
"ঈপর পিতা মাত্র ভাই" এই বিষর অবলম্বন করিয়া
সরল ভাষার একটা বক্তা হইরাছে; এত ত্পলকে প্রার্থনা ও
সঙ্গীত হইরাছিল। শ্রমদীবা লোকও করেকটা উপস্থিত ছিল।

দিনাস্পুর হইতে একজন ব্রাহ্ম বন্ধু লিখিয়াছেন-

মহাশর! শ্রেজের প্রচারক শ্রীধুক্ত বাবু শশীভূষণ বস্থ মহা-শর বিগত ২৭এ জৈঠ দিনাজপুরে আসিয়া যে যে কার্য্য করিয়াছেন তাহা নিয়ে বিবৃত হইল ইতি।

२१७ देवर्षे त्रतिगात--- जन्म मन्तित्व উপामना।

সোম, মঙ্গল, বৃহস্পতি এবং শুক্রবারে—প্রক্ষের ত্রীযুক্ত বাবু পার্শ্বতীনাথ সেন মহাশবের বাড়ীতে পারিবারিক উপাসনা।

৩ এ কৈ চুধ্বার— এক মন্দিরে সন্ধার পরে "সমাজের উন্নতি ও অবনতি"সম্বন্ধে বকুক:।

ংরা আষাঢ় শনিবার—সন্ধার পরে একি মনিবে ''কোন পথ অবলম্বন করি" সম্বন্ধে বক্তা।

তরা আঘাঢ় রবিবার---সন্ধার পরে ব্রহ্মমন্দিরে উপাদন। এবং "প্রচার" সম্বন্ধে উপদেশ।

এই স্থানে মকসলের ব্রাহ্ম বজুদিগকে একটা কথা বলা আবশুক বোধ হইতেছে। আমাদের প্রচারকগণ যেখানে যেথানে যাইবেন, সে থানকার কেহ একজন বিশেষ ভার
লট্যা তাঁহার কার্য্যের বিবরণ আমাদের নিকট প্রেরণ করিবেন। কিন্তু "মমুক দিন উপাদনা," "অমুক দিন বক্তৃতা,
কেবল এইরপ উল্লেখ মাত্র না করিয়া উপাদনা ও বক্তৃতা দির
এক একটু ভাব ও লোকে কি ভাবে তাঁহাদের কথা গ্রহণ
করিতেছে, তাহার এক একটু বিবরণ দিলে ভাল হয়। নতুবা
অমুক দিন উপাদনা, অমুক দিন বক্তৃতা, এইমাত্র জানিলে

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরক্দিগের মতামতের স্বস্তু সম্পাদক দাঘী নছেন) মান্যবর প্রীযুক্ত তত্তকোমুদী সম্পাদক মহাশয়,

স্মীপেযু—

নম্পাদক মহাশয় গত সংখ্যক তত্ত্ব কৌমুণীতে আমাদের বিজ্ঞ ও বহুদলী বন্ধু বাবু বারকানাথ গাসুলী মহাশয় পৌতলি कठाकार, काकि एक नवरक करें करें के कि कि विश्व है। वाकि वार् वाकिएक नवरक सेवरक सर्वेश वार्थ विश्वकर्त टायमका कविरात करें कर कथा विश्वक

वातिक वायु गांवावन जाकनवारकत मध्यमाविक विवयम्बीय ভূতীয় নিরমে "কাজিভেদ ও পৌতলিকজা পঞ্জিত্যাপ্র সংখ্যে জনের বিরুদ্ধে আপতি উত্থাপন করিটভাছন। कारीशन बाक्रमान मस्या काण्डिका व्यवास काण्या बाजाक করিয়াই উরিধিত প্রভাবনা করিয়াহেন। কিছ বারিক বাবু विनिष्ठ हम (य धरे थायाव मृशी क एहेरन किलम इसन आम বৰুর প্রতি অভার করা হইবে। তিনি এইরূপ সামাজিক উৎপীড়ন দৃষ্ণীয় মনে করেন। কোন ও ব্যক্তিকে অষ্থা কটে অফলিয়া অপরাধী হওয়া প্রস্তাবনা কারীদের কাহারও উদ্দেশ্ত নহে। তবে কিনা ভিনি বে ''আত্মরক্ষণ" মৌণিক সভ্য অব-লখনে সমাজের এক স্করকে অপর স্কর হইতে স্বতম্ভ থাকিতে वावचा निवादहन, त्रहे मृत एवं चवधवन कतिवाहे आखावना কারীগণ উলিথিত প্রস্তাব মানরন করিয়াছেন। ছর্মণকে তুলিয়া লওয়া অভিপ্রেড; কিন্তু বাঁহালিগকে শৈশবকালীন ছুর্মালভার স্থিত অবিরত সংগ্রামে ক্রিতে হইতেছে, ব্রোরা অভি ক্ষে গস্তবা পথে অন্তাসর হইতে চেষ্টা করিভেছেন, তাঁহারা আংখ-রকা করিয়া বতদ্র সন্তব অপেরের সহায়তা করিবেন। স্বারিক বাবুও আফুঠানিক আক্ষণিগকে খনাফুঠানিক আক্ষণিগের হইতে স্বতন্ত্রীকরণের সমর্থন করিয়া এইরূপ ব্যবহারের ঔচিভ্য স্বীকার ক্রিতেছেন।

ছারিক বাবু জাতিভেদ রক্ষণকারী আক্ষা বন্ধুদিগকে কেবল ছ্ৰ্মল বলিয়া নির্ভ হন নাই। তিনি তাঁহাদের জাতিভেদ রক্ষণের হেতু নির্দেশ করিতে ঘাইয়া ঞাকা-রাস্তরে ,উহার পৃষ্ঠ পোষণ করিয়াছেন। তিনি এক্ছলে विश्वाद्याद्य "त्क काहादक विवाह कब्रिद्यम, বেন তাহা প্রত্যেক প্রাপ্ত বয়ক্ষ ল্লী পুরুষের নিজ বিচার্য্য বিষয়, সমাজ এ বিষয়ে কেবল পরামর্শ দিতে পালোন, কোন অণজ্বনীয় বিধান প্রচলিত করিতে পারেন না" নির্ণয় করা ও আমার নিজের কার্যা। সমাজ সে সম্বন্ধে আমাকে কোন অংশে সকত ভাবে বাধ্য করিতে পারেন না।" এই বিষয়ের অবভারণা করিয়া স্বান্ধিক বাবু "ব্যক্তিপত স্বাধীনতা" ভাস্বি, সমাজ শাসন প্ল উত্থাপন ক্রিরাছেন। প্রভাবনা কারীগণ সমাজ শাসন বারা ব্যক্তিগত স্বাধীনতা বিলুপ্ত ক্রিতে অভিপ্রায় করেন না ৷ কে কাহাকে বিবাহ করিবে, কে কাহার সহিত পাইবে, তাহা নির্দারণ করিবার জঞ্চ তাঁহারা কোন বিধির প্রান্তবে করিতেছেন না। তবে কিনা অপর সমাজের দুধ-ণীয় ভাব ঘটোতে আকা সম:জবে অপবিতানা করে, সমাঞ তক্ষর বিধি প্রণয়ন করিতে বাধা। আক্স সমার যে উদ্দেশ্ত माधरनद्र जन्न जम शर्ग कतिवाहिन किश्विमधिक कार्स শতাকী চলিয়া গেল, আজি ও তাহা সাধনের পথে ক্ত **অন্ত**রায় উপস্থিত হইতেছে। হিন্দুসমাজের সহিত সংশ্লিষ্ট বলিয়া, হিন্দু नगारकत वन रहेर७ र्विनः एड बनिवा, वाकि व वानक न्योगेव

हिल्बी कि सीकि, दिल् कार्डिक प्रेरकात जाय जानकाल कर्म-चित्र कतिरकदेश । अभिनेमाण वृष्टि अधम विदेशीर अवेर विवादयंत्र प्रक्रिक करे नकन मृत्य मिकिस मा करवान, छाना करेरन कारनव গভিতে গ্ৰম নিৰিলতা আগমন কৰিবে, তথন এই সমত বৰ্জ-तीव जावर्जना दानि चन्नावनीटल गतिगठ वहेबा खाचनमाटलव (वह काकि कन्दिक कविश कृतित्व। हिन्तू नवाटक बाजिएक त्य चाकारत वर्डमान, बाक्यमारक ७ क्वकिश अत्रिमारन छाहाहे लाकिया वाहरलटक, हेरा कि खाक्रशमास्क्रय गरक शाचात विवय ? এই মুহুর্তে কি সমধেত চেঙা বারা ইহা দ্ব করা অভিপ্রেড নর? क्ति क्रिक् विवास भारतम हेरा पूर्व करा क्रिटांड क्रिस नमन এখনও আদে নাই। আৰল জিলাসা করি কোন বুলিমান নোক রোগগ্রন্থ হইয়া চিকিৎসার অভ সময় অংশকা করিয়া शास्क ? यमि (ताश विनवा बातना इहेबा बादक छाहा इहेटन कानविनय विद्वास सम् । अहे अकहे विधि अन्यद्भाव अद्यासन ! বিদি বাক্তিগত স্বাধীনতা থকা করিবার জন্ত নয়। সমাংজ্র দ্বিত নীতি অপ্নাৱিত করিবার জন্ম ? ইহাতে যদি কেহ ভাছার স্বাধীনতা বিনষ্ট হইল বলিয়া আশতা করেন; তিনি ভ্রম कदिरवन ।

হিন্দু সমাজের জাতিভেদ প্রণা বারিক বাবুর চোথে তত দ্ৰণীয় নয় বলিয়া অফুমিত হয়। কারণ তিনি লিখিয়াছেন "মহুষা যে অনেক পরিমাণে নিজ পিতৃ মাতৃ কুলের গুণ ে বের অধিকারী হইয়া অন্য গ্রহণ করে, ভাহা বোণ হয় (कहरे अञ्चीकात कतिराम मा। भातीतिक अवदा मध्या रा है। परिश्रा शांक छाटा शांत काहांत ७ व्यक्तिक नाहे, माननिक শক্তি मचद्र ও यে देश घरिया थाटक गाल्टेन छाहात वः मासू ক্রমিক প্রতিভা নামক গ্রন্থে ভাষা পরিষ্যার রূপে প্রদর্শন করি-য়াছেন। • • • পখাদির বংশ সমুরত করিবার জভ বে সকল সাবধানভার প্রয়োজন দৃষ্ট হয় অসাবধানভা বশভঃ ভাছাতে যে স্কল আনিষ্ট ঘটিয়াছে মনুষ্য সমাজের উন্নতি পক্ষেও সেই স্কল স্বিধানতা অবল্খিত না হটলে উন্নতির পরিবর্তে ষ্বনতি ঘটতে পারে" শ্বারিক্বাব্ উত্তরাধিকারী স্তে প্রাপ্ত खनावनीत विषय यादा विनद्याद्यन, जाहात ममात्नाहना এहे ষানে সম্ভবপর নছে। যাহা হউক ছারিকবাবৃই আবার ব্ৰিয়াছেন "ক্লুগ্ড অবস্থা অভিক্রম সম্ভব" হিন্দুস্মাজ এই "এমগত থীনভা দুর করিতে স্থোগ প্রদান করুক আরে নাই ক্ষক, কিন্তু আহ্মসমাল এই বিষয়ে স্বতম্ন ভাব অবলম্বন ক্রিয়া চলিয়াছেন। যে **জাভীয় লোকই হউক না কেন জাভীয় ভা**য পরিত্যাগ করিয়া ত্রাহ্মসমান্দের সঞ্জীবনী মত্তে দীক্ষিত না হইলে, िनि म्यांबज्ज इहेट्ड काधिकांत्री नरहन। अन्यग्रंड देग्रमा ^{डित्राहि} कतिया नाधूका ७ कारमत क्षर् नत मात्रीरक निकार ^{ক্রিবার জ্}ন্ত ভালাস্মালের জন্ম। বাস্তবিক আলা স্মালের ^{পবিত্র} বায়ু দেবলে অনেক নীচ ফুলোম্ভব বস্থু লাভীয় নীচতা ^{পরিত্যাগ করিয়া পবিত্র ছইয়া গিয়াছেন। তাঁহাদের জীবনের} ^{দৃঠান্ত} সম্পুণে রাখিরা প্রাহ্ম সমাজের কোন সভা কি আরে কুল গৌরণ করিতে পারেন ? বে কুণেই অন্ম গ্রহণ করুক না ^{(क त} जान धरर्मन भन्न माने म्लार्ट काइन क्रेन क्रेन यहि-

एक । एत स्थान पुक्रिक दिन् नशासके सामित्व वास न्यारक त्नाविक स्टेरव ? छटव द्याम कैश्वरव अक जान অপারের সহিত আহার ব্যবহারে কৃষ্টিভ হইবেন? এবং र्देशमें कार्तन अवस्थारम रक्षन माळ क्रानत रहार क्षारम আদান প্রদানে সমূচিত হইবেন ? বাহাকে প্রাক্ষ বলিয়া প্রহণ করিরাছি উহোকে দীচ কুলোম্ভব বলিয়া ভুচ্ছ করা উচিত নহে। অক্ট আন্দ্রনালের শিতা এবং প্রভূ। শিভার এক পরিবারের সভ্য হইয়াও ধনি আবার ভাই ভাই ঠাই ঠাই হুঁৱ ভাহা হটলে এ পরিবার গঠন করিবার कि প্রয়োলনীয়তা ছিল? o ভাই ভাই ঠাই ঠাই হওয়াতে ভারতবর্বের অধঃপত্তন হইরাছে, किन्यू नगांव कनाव्यत सूकी माधात कतिया विनात्मत हित्क का সর চইতেছে। আকা সমাজ ইং। প্রতাক করিয়াও কি চেতন হ**ইবে নাণ আ**,বার **কি ভা**তিভেদরূপ বিধাক্ত মৃত্যু-অল্প **আহ্বান ক**রিবে ? তুমি বলিতেছ আত্ম রক্ষা করিতে তুমি বাধা ? আনাকে ছাজিয়া ভোমার আলা কোপার ? একি সমাস্ত্র অপর সমাজের মত ভারাবলীতে বিভক্ত নহে। আদ্ স্মাব্দই এক মাত্র গুর। তবে এই শুর ভুক্ত গোক কোন শুরের লোক হইতে আ্যারকাকরিবেন ? যে মুহুর্তে আহাসমাজ ন্তরে ব্রেবে বিভক্ত হইবে সে মুহুর্বেই ভাহাকে আর রাহ্ম সমাজ বলিব না। সে মৃহুর্তে আহ্মদমাঞ্চের তুঃপ রক্ষনীর আবিভাব হইবে। ছাত্রিক বাবুও ব্রাহ্ম সমালকে একই ভারে পরিণ্ড **मिथिए हेल्हा करत्रन, यनि ९ हेल्हा পরিপুরণের জন্ম তিনি** দূরবর্তী ভবিধ্যতের দিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিভেছেন।

ষারিক বাবু লিগিয়াছেল "মানসিক রোগ গ্রন্থ ব্যক্তির সন্ধান স্থাই মানস ইইলেও কেই যদি আশকী ক্রিয়া তাঁছাকে নিজ কঞা দানে অসমত হন" মানসিক রোগ প্রস্ত শব্দ হয়ত তিনি মুর্থ অর্থে ব্যবহার করিয়া পাকিবেন। মুর্থ পিতার সন্ধান জানী হইলে ভবিষাতে আবার পিতৃধারা কিরপে পাইতে পারে তাহা ব্রিগাম না। শরীর সম্বন্ধে আশকা সন্তব পর হইলেও মন সম্বন্ধে আশকা হইতে পারে না। স্থাই শরীর ভবিষাতে করা হইতে পারে। কিন্তু প্রকৃতি অলস না হইলে স্থান অস্থাই ইতে পারে না। ব্রাহ্ম সমাজেও জ্ঞানী গুণীলোকেরও যদি কুল মর্যাদা অব্যেশ করা হয়,তাহা হইলে আর আক্ষেপ রাথিবার স্থান নাই। আশা করি দ্বারিক বাবু এই স্কল বিষয় বিশেষ বিশেষ বিশেষ করিয়া দেপিবেন।

এচণ্ডাকিলোর কুশারি।

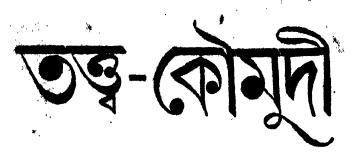
তত্ত্বকোমুদীর মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার।

(जून, जूनारे, जागर्छ २५४४)

পূর্ব প্রকাশিতের পর।

मुम्भाष्य बाद्यममाध्य, हळाटवड्	৩
বাবু বারকনাথ চক্রবর্তী, পার্কতীপুর	ø,
ু পারীলাল ঘোষ, সদ্য পুষ্রিণী	•
ু শার্কানথি গাল্যোপাধ্যায়, কলিকাভ	н •
ু অক্রকুমার রাগ ঐ	"

্ লালবিহারী পাল, চজপুর	*	, यूवानाधनात रुख्यानाथारिक,	
শ্ৰীমতী রাজবালা রার, হরিন' ভি	'a'	ु ल्यालाक्टल रमन, धनाश्चाम	
বাবু যোগেশুক্ত চক্তবন্তী, কাকিনিয়া	ره ،	ু বলচক্র ভট্টারার্থা, আগরতলা	>•<
वीमजी हक्ता (चार, क्रिकांडा	•n•	ু হরনাথ সাহা, ফলিকাডা	e,
रांत्रात्मारमारम विश्वाम धे	31	महर्षि (परवळनाथ ठीकूत खे	- \ २॥•
ु, भ्रतकृष्ट त्रांत्र, मण्यासक त्रमभूत बाक्षममांज	31	रावू (मरवज्रमाथ भाग जे	·
ू भभिकृष्य तात्र, शिःना	24/50	, त्रवनीकास निर्दाती थे	۱ کر
ু তিনকড়ি মুখোণাধ্যায়, কলিবাতা	2	" রাজকুমার দত্ত, জৈনসার	٠,
ু কালীশন্ব, সুকুল ঐ	31	ু প্রসরকুমার বহু, ভাওরালপুর	94
ु द्वाधारगरिक श्रामानिक, द्वाधारो	٥	, जरतिनान भारेन, क्लिकाणा	10 •
ু হরিদাস মলিক, থাগড়।	ં	ু উদেশচন্দ্র স্থার ঐ	2110
ু শহতক্র দান, স্থানালপুর	u,	শ্রীমতী গিরিবালা বিশ্বাস, কলিকাতা	₹∦•
ু বরদানাথ হালদার, লক্ষীপুর	58	বাবু কেদারনাথ রায় ঐ	ئ ر
ু তারিণীচরণ দক্ত, ধুবড়ি	٠,	,, ভগ্ৰতীচরণ হালদার মলিক, পেডায	v ,
ু বিপিনবিহারী রায়, মনিকদহ	هر	,, त्रमानाथ ८६ोधूबी, গড়दरल।	•
ু হরনাথ বস্থ, করটিয়া বাক্ষসমাজ	> 110	,, মীতানাধ বক্সী ঐ	o,
्र भारतमाध्यमात सञ्ज, इन्द ननगर	٤,	,, ठळकाख नख, मिनिनीश्व	٤,
সম্পাদক বাদ্ধসমান, ফরিদপুর	ė,	,, তারকচন্দ্র ঘোষ, 🗳	2(50
वावू नीनवन्न मिळ, नांत्रांश्रभंश	ر` ا	,, স্থরেদ্রনাথ গুর্ব, ভাগলপুর	২ ,
ু ক্মলাকান্ত ব্লোপাধ্যায়, ক্লিকাভা	ર∦•	,, কানাইলাল সাহা, তিলি	٤,
ু বটক্ক চট্টোপাধ্যায় 🗿	ه/د	,, भद्रकळ वरमार्शाशांत्र, कविकाटः।	3,
ु नंसनान मिळ	3/	,, শ্ৰীশচক্ৰ দন্ত, হুগণি	٤,
সম্পাদক ভরাকর ভাক্ষসমান্ত	> #0	শীমতী মহারাণী স্বৰ্ময়ী, কা শীমবালার	ψ,
বাব্ হুর্গাপ্রসাদ মুথোপাধ্যায়, ব্রুরাট	٩	বংবু বেণীমাধৰ পাল, কলিকাভা	રા•
্ব বাধানাথ রায়, নিলিগুড়ি	9	,, ছারকানাথ শেঠ ঐ	₹ •
" ভোলানাথ সরকার, মানভূম	হা•	,, হরিহর চক্রণভী ঐ	*{•
, त्याहिनीत्याहन तांत्र, कनिकांछा	Į.	,, শশিভূষণ বিখাস 🗳	₹;•
ু অহৈতচরণ মলিক 💩	31	" খারকানাথ দেন, ধুবড়ি	9
ু রামবাল সাহা, পাবনা	२॥०	ম্যানেজার মজুমদার কেম্পোনি	>\
্, রামেক্রলাল বাগছি, ভররা	>110	বাব্ মন্মথনাথ দাস, পিরোজপুর	4
" গোবিন্দচন্দ্ৰ বস্থ, কলিকাতা	110	,, গোবিক্ষচক্স মিত্র, সায়েড়াগ্রাস	0,
ु मह्दस्ताथ हर्षे । त्या वि	3/	" কালীকৃষ্ণ দত্ত, কলিকাতা	1•
ু উমেশচক্র ঘোষ, ঐ	\$ li •	,, হরিনারায়ণ দা 🔄	۶.
" গোবিন্দচন্দ্র রক্ষিত, গ্রা	٥	,, রামপোল মজুমদার, রণধাগপুর	61
্রু রাস্বিহারী সেন, বরিশাল	3/	,, আনন্দমোহন বস্থু, ক্ৰিকাভা	₹10
ु উপেক্সনাথ চটোপাধ্যায়, কলিকাতা	51•	,, গোপালচক্র মল্লিক ঐ	₹11•
্, উমেশচন্ত্র মিত্র, তুর্ক্লিয়া	a -	,, তারাপ্রসম দাস, কাজা	>/
ু আশুতোষ মিত্ৰ, কলিকাতা -	२॥०	,, ছারকানাথ গুণ্ড, বরিশাল	۷,
ু অতুশচন্ত্র ক	5	সম্পাদক ত্রাহ্মসমাজ রামপ্রহাট	>•
, ব্ৰেক্তনাথ সেন, শিশং	12/	বাবুরামচরণ পাল, মাঁচি	4
ু যোগেন্দ্ৰনাথ মিল্ল, কলিকাভা	21	,, भगमाञ्चनत त्रांग, संवादियांग	٠٠/٠
्र उस्तीकान्छ मत्रकात, थिननभूत	'9	,, ভ্ৰনমোহন খোৰ, ক লিকাতা	67
্ৰ অনাথবন্ধু রার, কাকিনিরা	91	,, टक्नूहळ हटडोलाधाम, हटडोमा	6 \
্রু রাধারমণ সিংহ, কলিকান্ডা	6 <2 •	,, (गोविन्मठल मञ्जूमनात्र, क्लिकांछ।	>/
ু ৰারকানাথ ঘোষ, ক্ষেত্পাড়া	0 4•	,, হরিচরণ সেন, খারভাগ।	4
ু অভরচরণ দাস, মনমুধ	.01		ক্রমণ:



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ভাগ। ৭ম সংখ্যা।

১লা আবেণ মঙ্গলবার, ১৮১১ শক, ত্রাহ্ম সম্বৎ ৬০।

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥• মক্তবেল ৩ প্রতি পঞ্জের মূল্য ৮০

এ নীরবে তুমি কও কথা।

श्रम विकाशी (मात्र, निर्वान चौधांत्र (चात्र, गाफ़ा भक्त कांशाता ना नाहे: किছू फान नाहि नात्म, लार्गरक निवामा कारम. कि त्य চाहि काशांत स्थाहे ; बनপূर्व क नगत পরিজন পূর্ণ বর जव मुंख, भरम ना भन्नारम ; রহিয়াছে গ্রন্থ রাশি, পড়িতে না ভাল বাসি, नटर भक्त माखना विधारनः, षष्ठतः এका (गड़ाहे, कार्गाता ना (मेश शाहे माधु जल (कह नाहि जला; निर्कात मनन कति প্রকাশ হও হে হরি ध नौत्रत कृति कड कथा।

मन्नानकीय मस्त्रा।

ভाই ভাই ঠাঁই ঠাঁই-এক शांत इहे **डाहे** वान क्तिएवन, उँश्वात छक्टत वकास मत्न नचीत छ्लामना कति-তেন। ভাঁহাদের পূজাতে প্রীত হইরা একদিন লক্ষ্মী উভরকে সংখাধন করিয়া বলিলেন—''বৎসগণ ভোমাদের নিষ্ঠা দেখিরা আমি সাতিশয় প্রীত ২ইয়াছি; তোমরা আমার নিক্টবর আর্থনা কর। আর ভোমাদিগকে আমার ভূটির নিষিত্ত আরাধনা করিতে হইবে না। তোমরা কি ভোগ হুধ আহিনা কর তাহা বল।" উভয় আভা বলিলেন—"জননি ! বর-প্রার্থনা রূপ গুরুতর কার্য্য আমরা সহজে করিতে পারি না। আযাদিগকে ছই দিনের সময় দিন, আমরা ইহার মধ্যে চিতা করিরা আপনাকে বলিব।'' গৃই দিনের পর উভর প্রাভাতে পরাম্প করিয়া আসিরা বলিল—"দেবি আমরা আপনার নিক্ট ভোগৈখব্য আহাৰ্থনা করি না, এই বর প্রদান করুন যে আমরা উভয় ত্রাভাতে আলৌবন সভাবের সহিত একল বাস विति, क्थन ७ (यस कामारमय मरशा विराह्म विना ना स्त्र।" नेको विनिध्यम्-"वर्त्रशन चाम्न द्य यत्र आर्थना कत्र विष्ठ शांति |

धिनै हरव ना ; राष्ट्रामारमत शृह-विवास आधात निर्शमरनत পण, সে পথ আমি বন্ধ করিতে পারি না''। এই গল যাঁহারা রচনা कतिबाटकन, छांशामत अखिलाब बहे गृह विनादमहे नची ছাড়ির। বার। দকল দেশের সকল জাতির অভিক্ষতার ফল এই; महा छात्र छ त्रामात्र एवं मर्हा श्राम थहे, शह विवास त्रावन नहे. क्क शाखरवत्र विवास क्कक्न नहे; शृह विवास यहक्न नहे। विष्ती काठित मर्या चिंछ श्राहीन कान हरेटछ अवही श्रक्तनवाका চৰিয়া আসিতেচে ভাষা এই—বে গৃহের ভিতরে বিবাদ ভাষা দভারমান হইতে পারে না। সম্প্রতি একটা ক্রীয় সংবাদ পতা লিখিয়াছেন—"পর্তান যথন দেখিল বে যীঞ্জাভাদিত হটয়া ভাহার রা**জ**্ বিল**ট ক**রিয়া **ঈশ্রের**ুরাজ্য স্থাপন क्रिंडिक्न उपन रम कोमन क्रिया शेख्य नियामानव मधाहे विवास वाँधाहेम्रा मिल, धवः औद्येशक टाठारतत भर्ष महा विश्व উপস্থিত করিল। এ সকল উক্তির তাৎপর্য্য একই। আমা-দিগকে কেই বদি জিজ্ঞাসা করেন যে বর্ত্তমান সময়ে আক্ষধশ্ম আচারের পথে প্রধান বিদ্ব কি कि। আনরা বলি ছুইটা-শ্রেথম আক্ষদিগের মধ্যে গৃহবিচ্ছেদ অর্থাৎ প্রেম ও আত্মীয়তার অভাব—বিতীয় ব্রাক্ষদিগের মধ্যে ব্রোরা অগ্রণীস্বরূপ হট্যা-हिर्णिन ও गाथांत्रर्भित मृष्टिरक चाकर्षन कतिबाहिर्णन, छाहारमत অনেকে আপনাদের অবলম্বিত মতও প্রণালীতে স্থৃত্রি পাকিতে পারিলেন না।ইহা দেখিয়া লোকে ব্রাদ্ধ ধর্মকে অসার ভাবিতেছে, ও ব্রাক্ষান্ধের উপরে আশা স্থাপন করিতে পারিতেছে না।

মতভেদ ও বিষেষ।—লোকের সচরাচর ধারণা আছে যে পুণার বধন রোমান কাথলিক ধর্মের প্রতিবাদ করিরা ধর্মালেশন উপন্থিত করেন,তথন কাথলিকগণ প্রোটেটাণ্টিদিগকে বোরতর রূপে নির্যাছল করিরাছিল; অলম্ভ চিতার শরীর কর্ম করিরাছিল, ও বিবিধ প্রকার যন্ত্রণা দিরা ছত্যা করিয়াছিল। প্রোটেট্টাণ্টগণ বাহারা মানবের বাধীনভার ক্ষ এত সংশ্রাম করিয়াছিলেন, বাহারা বিবেকের মহন্দ ও পবিত্রভা ঘোষণা করিয়াছিলেন; ভাহারা ও যে মত-ভেদের ক্ষম্ভ মানুষকে হত্যা করিয়াছিলেন, ইহা অনেকে

कार्यन ना अवर इब्रज मञ्जय विनिद्या निरंदहमा करवन ना। ज्यलह अञ्जल चर्रेमा चर्रिताहिल। लुशास्त्रम धर्मिनिशस्त्रम हे जिस्हाल বাহারা পাঠ করিয়াছেন, ভাহারা সকলেই কাবেন, বে লে সময়ে বে করেকজন অগামান্ত প্রতিভাশালী নেডা অভাথিত হই য়া-हिट्टनन एयाचा कानिकिन अक्बन। कानिकिन वर्षन स्विमिका নগরে সর্বাপ্রগণ্য ব্যক্তিরণে প্রতিষ্ঠিত হইরাছেন, তথ্ন সাভিট্য নামক একজন চিন্তাশীল লেকক বেধা দিলেন। তিনিও সংখ্যার-পক্ষীর শোক, তিমিও পোপের দৌরাজ্যের প্রতিবাদ করিলেন: তিনিও রোমান কার্থলিক মতের ভ্রম প্রদর্শন করিতে ক্রটী করিলেন না। কিন্তু অপরাধের মধ্যে ভিনি লুণার ও ক্যালভিন অপেকা আরও একটু অগ্রসর হইরা-ছিলেন। ডিনি তীখরবাদের দোষ ঘোষণা করিয়া লিথিলেন বে মানবের একমাত্র মুক্তিদাতা আছেন,তিনি পরমেশ্বর : যীও यानव ७ भर्थ-ध्यमर्भक गाळ। क्यान्तिन मः हीर्भ अनस नत्रदक्त মত প্রচার করিয়াছিলেন তাহারও তিনি প্রতিবাদ করিলেন। **এই অ**পরাধে ভাঁহাকে ১৫৫৩ খ্রীষ্টাব্দে ধৃত করা ছইল, এবং ক্যালভিনের আদেশ ক্রমে তাঁহাকে শৃথল বারা খুনতে বাধিয়া काँठा कार्ष्ट्रंत कांग्रेत बाता थारत थीरत मध्य कता बहेन जवर তিনি যে সকল গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন তাহাও তাঁহার উরতে বাধিয়া দিয়া দগ্ধ করা হইল।

প্রাচীন কালে লোকের এতদূর সংশীর্ণতা ছিল, হাদর এত কঠোর ছিল, যে মত ভেদের জ্ঞ মানুষ মানুষকে চোর ডাকাভের সাঞ্চা দিত। মহম্মদের কাফের বিনাশও ইহার আরে वक थामा। । कि खें थान वह आमता वह मः सीर्वात हरा रहेट मण्पूर्व निखात भाहेगाहि कि ना ? क्यानि जित्त नाम জীবন মৃত্যুর উপর ক্ষমতা পাইলে আমর। বিরুদ্ধ মতাবলখী দিগকে দথ্য করিতাম কি না ? ততদূর বোধহর করিতাম ন।; কিন্তু যাহার মত্ ভ্রান্ত সে অসৎ ও বিশ্বেরে পাত্র, এ ভাব ছইতে আমরা এপনও উদ্ধার বাষ্ট করিতে পারি নাই। অধিক पृष्टेारश्वत व्यव्याक्षन नाहे; व्यामात्मत नवविधानी वस्तुनन अहे क्षा धाठात कतियां पाटकन, (य नविधाटनत छेमांत्र छ। नर्वाधारी ইংা উদার প্রেমবাছতে হিন্দু মুদলমান, খ্রীষ্টান দকলকে আলিক্সন করিবে। এমন উদার ভাবাপর বাঁহারা, শুনিতে পাই সাধারণ এক্সিমাঞ্জের আক্ষদলের প্রতি বিদেষ উহোদের মনে অত্যন্ত প্রবল। তাঁহাদের যে প্রেমবাছ ত্রিসংসার আবে-ষ্টন ক্রিতে যাইতেছে, তাহা ক্লিকাতার ২১১ নং ক্র্রানিস ব্রীটের নিকট আসিয়াই সংকুচিত হইয়া যাইতেছে। এক্লপ কেন্ নৰবিধানীর অপরাপর লক্ষণের মধ্যে সাধারণ ব্যক্ত সমাজের প্রতি বিদেষ একটা প্রধান লগগে। যদি শুনি কোন যুবক নববিধানে অমুরক্ত হইতেছে,তথনি জিজ্ঞাসা করি সাধারণ ত্রাক্ষদমাজের প্রতি বিষেধী হইয়াছে কি না ? যদি ভনি अथन उर्द्र नारे, ७८९ विण भूता नविष्यानी अथन उद्य नारे। नकरन रिष्ठा कतिया (मधून अक्रभ विष्ट्रिय कन हार्तिनिटकत **लाद्कित मदन कि अकात इरेट उद्ह**।

কিঞ্চিৎ আত্ম-চিন্তা--- সাধাৰণ বাৰ্মসমাল বখন প্ৰতি-क्षिण रस, छथम देशांत फेल्यांश-कश्वांशन श्रृहेण विवास धार्मान क्रारं कामा कतिवाहित्यमः अथयं निवयक्त आनीत अक्षेत्र थन करे, देश नवन्त्रव विश्वित मक्ति नक्तरक कवल जिल्ला करते; वर्णवासि पाछ अकता क्रिया कार्या निवृक्त करते; क्रमात्रा विश्वाचित्र केष्ठ पश्चित्यात स्थाननात्र रहे ; जाशाह्य जाया. मयाचे मित्रबर्ध्य वानानी वार्विक कतिया वर्णेनामि श्राक्टक একত ক্রিয়া ভ্রাহ্মসমাজের সেবাড়ে নিযুক্ত ক্রিবেন। বিজীয় -चाना এই हिन, यं दाचानमान नकन नवन्नव विक्रित हहेबा निक्ति चाटक ; नांशातन जान्यनाथ कांबेरिमंत्र मेरना केता वक्षन क्षापन कविद्यम । नांबाधन खाक्रममार्थित महाने हिला করন উক্ত উভয় উদ্দেশ্য কত্ত্ব নিম্ক করিছে পারিয়াছেন। कारात्मत्र मत्या वारात्क वियाचा त्य किन्नु लक्कि विद्यारस्य. তাহা ব্রাক্ষসমাক্ষের কার্যো লাগিডেছে কি না 🕴 দশধানি হাত ঠিক একঅ হইভেছে কি না ? বাহিরের কোকের ধারণা সাধা-রণ এক্সেম।জ দশকনে মিলিয়া কাম করিবার স্থানর দুটাত रमथारेबार्ड्स। किंख चामवा रमिएडिंड धरे विवाब है चामा-দের বিশেষ ক্রটা রহিরাছে। প্রেম ও আত্মীরভার অভাবে সভাগণ বেশ করিয়া মিলিয়া কাজ করিতে পারিতেছেন না: বান্দ্রসমান্তের মহা লক্ষ্যে তাতি দৃষ্টি রাখিয়া ঈর্বা, অক্ষমা, ক্ষতা-প্রিয়তা প্রভৃতি মানবীয় কুল ভাব স্কল্কে দমন করিয়া একতাবলম্বন করিতে পারিতেছেন না। প্রাথম লক্ষা সিজি বিষয়ে যেরপে তাঁহারা সম্পূর্ণ কৃতকার্য্য হইতে পারেন नाहे; विजीय नकारी नियसाउ (महेक्रम अङ्गड-कार्याछा पृष्टे হয়৷ সাধারণ ত্রাহ্মগমান্ত আজিও দেশের নানা স্থানে বিকিপ্ত সমাজ সকলকে একভাস্থে বন্ধ করিতে পারেন নাই। এবি-ষয়ে যে বিশেষ চেষ্টা করা ছইয়াছে তাচাও বোদ ভয় না। অতএব সাধারণ আক্ষমনাজ গঠনের ছইটা মূল উল্লেখ্য অদ্যাণি সিদ্ধ হয় নাই। সভাগণ কেন এবিবরে কুভকার্য্য হইতে পারিতেছেন নাণ কেন পরস্পারের মধ্যে প্রেম ও আত্মীয়তা স্থাপন ক্ষিতে সমর্থ হইতেছেন না ? কেন একডাসুৱে সকলকে বাধিতে পারিতেছেন না ? ইহা গভীর আলোচনার বিষয়। আমাদের বিখাস প্রার্থনাকে সহায় করিয়া এই চিস্তায় নিযুক্ত হইলেই তাঁহারা ইহার উপার আধিকার করিতে भातिरवन ।

পারিবারিক শিক্ষী—আমরা এক গৃহদ্বের কথা লা ()
তাঁহারা পলীপ্রামে বাস করিতেন। বাড়ীর বালক বালিকাদিগের প্রতি তাঁগাদের বিশেব পুষ্টি ছিল। ডাহাদিগকে স্থাকিলা
দিবার জন্ত ভাঁহারা বিশেব প্ররাস পাইডেন। গৃহ্বের মণ্যে
বে প্রাকার শিক্ষা দেওরা আবস্তুক ভাহা দিতে জ্রুতী করিতেন
না৷ বাহিরে ভাহারা নানা প্রকার সজে মিশিত, কত
অভ্যা ভাষা কর্পে গুনিত, অপের বালক বালিকাকে হ্রুত
কত অভ্যা আচরণ করিতে দেখিত, কিন্তু গৃহ্বে শিশুগণ বে
শিক্ষা পাইত ভাহার এমনি স্কুণ ছিল, যে ভাছাদিগকে প্রকটী
দিনের অভ্যন্ত একটা অভ্যাশক ব্যবহার ক্রিভে শুনা ব্যি

নাই কিছা একটা অভন্ত ব্যবহার করিতে দেবা বার নাই। পাড়ার বালক / বালিকাছিলের সুক্ धारकवादम वात्रन कता मछद हिन मा, किन्न छात्रायसत्र भिन्तास खरून छात्रात्र जञ्ज वानक वानिकामिशतक अत्र विश्वम आमिन क छाहारमङ অভন্ত: ব্যবহার শিক্ষা করিজ বাঃ এই গৃহত্বের গুরু হইতে **এक्টी निका नाज करा सर्वेट्ड शाहर। कामदा एक दकन** जावशान हरे मा, अखानिविधय दय धारकन्यांत कूनश्चर्य हरेटक न्द्रदेव प्रापिटक नाकिन स्थलने कामा क्या हात्र ना betterविक সহকারে ভাষারা সব ও অসৎ উভয়ই প্রভাক করিকে। এইনাগ धित्रा तावा कर्यका । कटन शृत्यत महवा अमन विका विद्व হটবে, ভাহাদিপকে নীভিন্ন নিম্মে এমন সুদৃদ্যপে প্রভিত্তিত ক্রিছে হইবে, বাহাডে জীবন পথে তাহারা যভত সংক্ আলিখন করিবে ও অস্থকে বর্জন করিবে। শিক্ষার অর্থ क नत, (र अखानश्रु काल कित्र मन्य क्यनक क्यानित्य ना, ওনিবে না, বা দেখিৰে না। মানৰ সমাজই ভাল মুক্ত মিপ্ৰিত; मनारक व्यवस्थ ना कतिरा छाडा (काश इहेर्ड व्यानिया ভাহাদের জীবন পথের মধ্যে পড়িবে। যে ব্যক্তি ভালটা ভির मक्ती क्थन ३ स्थ्य नारे, दा अन्न कार्य निक्छ, मस्कृत महिल সংগ্রাম ডপঙ্গিত হইলে ভাষার বিপদ, ভাষার পরাভূত হইবার অধিক সম্ভাবনা। বে মন্দের সাক্ষাতে ভালকে আলিখন क्तिएक निविदारक, भत्रीका निवारक ও উछीर्ग स्टेबारक, मह निवानन। सिंह निवानन अवस् अधि कवा निकान **উ**ष्म 🗗 ।

खर्गतारका **अर्वरमंत्र (याग्राका**—धनी मानी नारक-बारे बाज पत्रवादव धारवरमञ्जूषाधकाती। पाविष्य याहात निष्ठा गरहत, अज्ञाखाद याश्व भंत्रीत कीर्व नीर्व ; क्रिन मालन वश्व हे यागत वक्षां अतिर्धम ; मश्नाति यागत आपत नाहे, अप-भगामा नारे, तम बाक्ति ताम मत्रवादत्र क्षादम कतिएक भारत না। এরপ নিরক্ষর মূর্থ চাষা, পাঞ্চ মগুলীর সংসর্গের व्यक्तिकारी नरहा कनकि छ- हतिक व्यक्तिभू, नाधू नव्यनित्वर गहनात्म विकाछ इहेबा थारक। इस्तन भानकात्र छीक कालूक्य, वृष्टकात्र विश्वके वीत्रश्रुक्षयित्वात्र समाद्यः आदिष कति काम-गर्थ रत्र। किन्तु चर्नशास्त्रा आदम अञ्च हेरात किन्द्रे आसासन ইয় না। যি।ন স্থোপার্ক্সিড গুণে ভূবিত হইয়া স্থর্গরাকা व्यत्वभावी इन, जिनि व्यद्यभाधिकारत विक्रिष्ठ इरेन्ना भारकत्। · এই ब्राह्मा व्यादम क्बिएक क्हेरन ⁸एका शाक्किक थन जन्मारम्ब পৌরব ক্রিলে চলিবে না। দীন দরিত্র বেলে ছারে উপস্থিত ^{२६८७ व्हेर्}रः अक्ककृशास क्षाइती मक्समारे चारत म्खासमान विधानी मारजन हे इन्छ भातन कतिन्न। भूत घरधा ध्यरवन कताहै-^{তেছে।} অংকারী সাধনাভিষানী সাধুতার বাঞ্কি বেশভূবাধারী व्याविणार्थीरमञ्ज (क्ष्य हे शार्यण कतिर्क समर्थ एवरकाक् ना। क्षिणि धाष्ठावर्षन कतिएक हरेएकाइ। आमना वास्त्रिक हे विषाती जिथातीय दश्म त्यहे महात्रामात वादत जैनगीक हहेव। कृषा अवती जनसङ् जायादमत २७ वात्रण कतिया लहेता याहेटव ।

शृहीत शृह्हे लक्षा-ज्यमावका कवनी ; (बात बनबहाब গগনম**ওল আছানিত। গ্রন্থতি গভীর অন্ধলরে** ভূবিরা विशिष्टि। सिक्टियेव वखात्र मृष्टिंदशास्त्र वस्र मा। अमन जयव একজন প্ৰিক গৃহাভিদ্ধে পথ চলিতেছে। গৃহই ভাহার লক্ষ্য, স্তরাং শ্রন্ধতির ভয়ধর দৃষ্ঠও তাহাকে ভীক্ত করিছে পারিতেছে না। শে নিতীক চিত্তে পথ চলিতেছে। ছর্কল किन अविदयम बाकारभन्न जाव जव्या (मविन्ना व्यात व्यक्तमन হইণ ন। পৰ পাৰ্থতী গৃহত্ত্য ৰাড়ীতে ৰাইছা আশ্রম ডিকা করিণ। কিন্তু নিশীৰ সময়ে ছাঞ্জভ হট্না ्मिशिन योशामित जालाय क्षत्रन कतिबारक, कांशांत्रा जकरणह েয়া। আশ্রিচগণের প্রাণ হরণ জন্ত অন্ত শন্ত শাণিত করি-তেছে। তথন আতকে ভাহাদের মন কম্পিত হৈইল। প্রাণ রক্ষা করিবার অক্ত উদ্বাদে বৌড়িতে লাগিল। প্রকৃতির করাল মূর্ত্তি এখন আর ভাহাদিগকে ভীত করিতে পারিল না ! দস্থাগণও ভাছাদের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হইল। কেহ কেছ व्याप व्याप तका भारेग; अवनिष्ठे मञ्जानित्रम श्रष्ठ भिक्रमा मुख-**व९ इरेब्रा १ फ़िन। वश्रम अब्ब विधानी शश्रिक ११ मञ्जादन उ** হত্তে এরণ বিভ্ৰিত হইয়াছিল, তথন বিশ্বাসী পথিক গুছে আসিয়া পরমানন্দে বিশ্রাম স্থুখ স্থোগ করিতেছিল। যাহারা শেই অনস্ত ধামের যাত্রী ভাছাদেরও এরূপ ঘটিরা["]থাকে। কত ৰাজী পথের ভূৰ্গমতা প্রাতাক করিয়া নিকটবভী বিষয় এবং ভোগ বিলাসের গৃহে আশ্রয় লইয়া পাকে। কিন্তু নিশীপ রালে জাগ্রত হইরা দেবে আপ্রমদাতাগণ দক্ষাবেশে ভাছাদের खान क्रता উनाउ दहेगारह। सिविया **दैकर ८कर खान भरन** দৌড়তে থাকে। কিম দহাদের হস্ত চইতে নিষ্কৃতি লাভ করিতে পারে না। আমরা কখনও পথের ছর্গমভা প্রভাক क्रिया निव्रक्त ध्टेन ना। शृहीत शृहहे नका शांकित्व। आकः ধামে পঁত্তিতে না পারিলে শাস্তি নাই। পথ যত তুর্মই হউক না কেন, এক মাত্র আশ্রয়স্থান ব্রশ্বকে লক্ষ্য করিয়া निजैक हिट्छ १४ हिन्द । विषय अवः हेक्सियामिक एक विनव ভোমরা আমার আশ্রেষ্টান নও। ভোমরা দ্যা। ভোমরা আমাকে মুগ্ধ করিতে পারিবে না।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ধর্ম্ম-কোষ।

বীজ ধথন ভূমিতে নিক্ষিপ্ত হয় তথন ভাছা অচিরকালের
মধ্যে চতুঃপার্শ্বর ক্ষিতাপতেজ্ঞমরু ছোম এই পঞ্চল্ভ ছইতে
সামগ্রী সকল আছরণ করিয়া আপনাপনি একটী মৃথার কোষ
নির্মাণ করে। উক্ত কোষের মধ্যে সেই ক্ষুদ্র বীজ বাস
করিতে থাকে। কোষের মধ্যে আবদ্ধ থাকাতে, কোন প্রানার
আধিলৈবিক বা আদিভৌতিক উৎপাত নিবদ্ধন বিনষ্ট ছটতে
পারে না।

মান্ব স্থাজে (যক্তপে মান্ত্রের ধর্মভাব রক্ষিত হইয়া থাকে ভাছার প্রশালীও বেন কভক্ট। এই প্রকার। মান্বায়া

यथम लेखेरतत क्षत्र केंग्रंथ इत, अवर मुक्तित क्षत्र लिलाच्य हत, ख्यम मानव अखात श्रेषत जाननारक टाकान करतन। ८नह প্রকাশের জ্যোতিতে মানব অনেক প্রমার্থতন্ত দেখিতে পায়; ও তাহার অন্যের গভীর ও পবিএ ভাব সকল ক্তি প্রাপ্ত হইতে থাকে। ইহাই মানবান্ধার আধ্যান্মিক জীবন। এই জীবন যথন মানব প্রাপ্ত হয় তথন যদি তাহাকে রক্ষা করিবার क्क छेलात व्यवन्त्र ना करत, छाहा हहेरन, मःमारतत छेख्छ বায়ুতে ও অপরাপর সামাজিক উপদ্রবে সে জীবন বিনষ্ট হইয়া যায়। ধর্মজীবনের সঙ্গে সঙ্গেই তাহার রক্ষার উপায়ের চিস্তা ও মানব মনে উদিত হয়। এই রক্ষা প্রবৃত্তি ষেন পক্ষীর বাসা निर्मार्गित शांत्र, वा मार्कातीत निश्त बस नुकातिष शांन अस्वत-ণের স্থায় স্বাভাবিক বলিয়াবোধ হয়। গুট পোকা যেরূপ আপনার দেহ হইতে আপনার দেহকোব নির্দাণ করে, মানবও সেই প্রকার আগনার আত্মা হইছে ধর্ম সমাজ, উপাসনা-মন্দির, অনুষ্ঠান পদ্ধতি প্রভৃতি সৃষ্টি করিয়াছে। উভয়ের गर्भाटे विभाजात रुख चार्छ !

বে সকল উপার ছার। মানব-সমাজের ধর্ম-ভাব রক্ষিত হইয়াছে, এবং কালের গতিতে বিনষ্ট না হইয়া বংশ পরস্পারা ক্রেমে নামিয়াস্থাসিতেছে, সেই সকল উপায়কে আমরা ধর্ম-কোষ নাম দিয়াছি। নিম্নে ক্তকগুলি ধর্ম-কোষের উল্লেখ ক্রা যাইতেছে:—

সামাজিক ও পারিবারিক উপাসনা প্রণালী ও অমুষ্ঠান প্রভৃতি প্রাণম ধর্ম-কোষ। এতদ্বারা পরিবার ও অনসমাজ মধ্যে ধর্ম-ভাবকে রক্ষা করিয়াতে; মানবের আধ্যাত্মিক আকাজ্জার একটী প্রণালী ধুলিয়া রাখিরাছে। সামাজিক ও পারিবারিক ধর্ম-সাধনের নিয়ম যদি শিথিল হইতে দেওয়া যায়, তাহা হইলে জন সমাজের ধর্মভাব ভ্রায় স্নান হটগা যাইবে। প্রাচীন हिन्द्वित्शव मत्या त्य वात्र मात्म एकत शार्खन, याखा मत्हादमन প্রভৃতি হয়, তত্ত্বারা সাধারণ প্রজাবর্গের ধর্মভাবকে পরিপোষণ करत ; ज्ञानिक विषय वाानारतत्र ज्ञानितक मानत्वत्र ज्ञाका-জ্ঞার বস্তু যে কিছু আছে, এই ভাবটী জাগ্রত রাণে। এইরূপ প্রতি গৃহত্বের গৃহে যে কোন নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়া কলাপ হয় তেদ্বারাও ধর্মভাবকে পোষণ করে, পারমার্থিক বিষয়ের দিকে লোকের দৃষ্টিকে আফুষ্ট রাখে। আমরা পৌত্তলিকভাতে বিখাদ করি না বলিয়া কি সমাজ ও পরিবার মধ্যে ধর্মজাব পোৰণ করিবার কোন উপায় রাখিব না ? অনেক ব্রাহ্মকে সামাজিক উপাসনা ও পারিবারিক উপাসনার প্রতি উদাসীন দেখিতে পাওয়া যায়। ভাঁহারা একবার চিন্তা করেন ना (यं काँचारमञ्जू शृहर मखानगर यं उदे विद्वार दहेरत, खलहे **क्विन (गोकिक विषय व्यागायम बाह्न) हे एम्बिट्स, व्याधाश्चिक** विषयत्र मिटक जाहारमत्र मृष्टि चात्र चाकुडे हहेरव ना।

ধর্মশান্ত--- বিভীর ধর্ম-কোব। লোকে মানব প্রণীত প্রস্থ সক-লকে তাম প্রমাদ শৃষ্ট জ্ঞান করিয়া তাহাদের অপ্রো আপনাদের স্থাধীন চিস্তাকে বলিদান দিয়াছে, ইহা শোচনীয় বিষয় সন্দেহ নাই। কিন্তু এই প্রস্থার মধ্যে প্রবিষ্ট হইরা দেখিতে হইবে। কত শত শত গ্রন্থ বিরুপ্ত রচিত হইরাছে, ও কালে বিস্প্ত

व्हेशारह । यम अव अनिवे द्रवन अञ्च नवानरवेद नाथ वहेश त्रवितारक ? देवारक कि अदे व्यकाल लांब का, देन बाजन वन প্রভাবতঃ আধাাত্মিকভার অর্কুণ ? অর্থি ব্পাছার মানর অন্তরের স্বাভাবিক ভাব। এই স্বাভাবিক ধর্মভাব বিরুত हहेबारे अह भूकात त्री**डि डेर** भन्न कतिबाह्य । कि**ड** हेरा व गडा त्य कहे बाह्यन कक ककी धर्म-देकांव चन्ना कहें। धर्म-कार्यक (भाषन ७ वर्षन कविवादक। धर्म श्रेष्ट मक्नादक माध्य ट्रा এত সমালর করে তাহা ভর হইয়। বাউক আমরা कि हेয়। आर्थनीत मान कति ? अर्थाए (वन, क्लातान वा वाहेरवन, এवर नात अवानिष्ठात ऋष्टित नास्त्रन, लाएक थेहे केकावत माधा श्राप्ति ना कक्रक, चामत्रा कि छांदा हारे ? क्षनरे ना। ধর্ম গ্রাছ সকলের প্রতি গভীর সমাদরের ভাব যদি বিলুপ্ত হয়, ভাহাতে এই প্ৰমাণ হইবে, যে ধৰ্মভাব ও আধাাত্মিকভা মান্ব অন্তর হইতে বিলুপ্ত হইতেছে। আমরা জ্ঞান্ত এছ মানি না বলিয়া কি আমাদের ধর্ম ভাব পোষণের উপযোগী কোন গ্রন্থ থাকিবে নাণু ধর্মগ্রন্থ পাঠের রীতি কি আমরা ভুলিরা দিব ? আমরা রোগে শেকে সাজনা পাইতে পারি, ভয় विशास वन नाम कतिएक शाति, खेशामना कारन धर्मा छावरक উদীপ্ত করিতে পারি, এমন সকল গ্রন্থ আদ্ধানিগের জন্ত সংক-निक इंड्या कर्डवा, डाहाटक बास्मना धर्म कीरानन महामन्तरभ ष्यवन्यन कतिरवन।

ভূতীর ধর্ম-কোব সাধুদের স্বৃতি। এই স্বৃতি ছই প্রকারে জাগ্রত রাধা হয়, প্রথম উহোদের জীবন চরিত ও উক্তি সক-त्वत्र भारताहना बात्रां, बिजीत्र जाहाराहत भाष्टानामिए जीर्थ यांजामित दाता। এक এक अन मरांचन राशान अभिवाहितन, (वशास्त (यथारन की खिं छाभन कतिशाहित्यन त्म मक्य छात्न তীর্থ বাতা করিবার রীতি আছে। কালজনে এই তীর্থ-বাতা। এক প্রকার অন্ধ ক্রিয়াতে পরিণত হইয়াছে। কিন্তু সাধুদের প্রতি এই সম্মান প্রদর্শনে মানব ছবছের স্বাভাবিক ধর্ম প্রিয়-তারই পরিচর প্রাপ্ত হওয়া যার। এছ পূজার স্থায় সাধুভক্তিও अत्मारण विकृष्ठ व्याकात भारत कतिबाद्य। किन्न व्यामत्रा कि চাই यে **गाधूकांक जारकवारत विनष्टे रुक्क ? व्यर्था**९ यो ७९ नार्डवाहेबन, এই উভয়ের মধ্যে লোকে প্রভেদ না করক हैश कि खार्थनीय मत्न कति ? कथनहे ना। ददः यह সাধুছজি বিশুপ্ত হইতেছে দেখিতে পাই, ভাহা হইলে ভাবিব তাহাদের অন্তরের ধর্মভাব ও লান হইভেছে। আমরা সাধু-ভিক্তিকে অন্ধ রাধিব না, किन्ত खानालाक উন্নত করিব, রক্ষা করিব। বর্ষে বর্ষে হাজার হাজার লোক পৃথিবীর নানা দেশ হইতে সেক্ষণীরের গোর দেখিতে বার, সেওত এক প্রকার ভীর্থবাত্রা। এ ভীর্থ বাত্রাভে দোষ 🗣 🖰 প্রণীর গুণাবণী अत्राप क खनकारमध्ये देवस प्रेयात महायना ।

এখন প্রশ্ন এই, ত্রাহ্মসমাজ কি প্রকারে এ কেন্দের বর্ম চাব ও আধ্যাত্মিকভাকে পোষণ করিবেন; কেবল মাত্র ভঞ্জন ক্রিরা ছারা নহে। প্রাতন ধর্ম-কোষগুলি ভালিরা কেলিরা তৎসানে যান উৎফুটতর ও বিভন্নভার ধর্ম কোষ নির্মাণ না ক্রিকে পারেন, তাহা হইলে ধর্মভাব কালে শিধিল হইবা প্রিবে, সাধ্যা খিকতা বিস্থ ইইরা বাইবে, এবং প্রমার্থ-ডড়ের লালসা লোকের অন্তরে পাকিবে না। তাহা চইলে আদ্ধ্যমাল ধর্মসমাল বলিরা লোকের শ্রমাণ প্রীতি অধিকার ক্রিতে পারিবে না।

ভারত-নারী ও ত্রাক্ষসমাজ।

বীশুর জীবন বুতান্ত পাঠ করিলে দেখিতে পাওয়া বার তিনি বেথানেট ঘাইতেন সেটখানেট নারীগণ তাঁহার অস্ত দার উন্মুক্ত করিছেন: তাঁচার শুল্লায়া করিতেন, ও মনোযোগ পর্মক তাঁচার কথা প্রবণ করিছেন। কতকগুলি স্ত্রীলোককে তিনি বোগমুক করিয়াছিলেন, ভালারা তাঁলার উপদেশে এতদ্র মৃগ্র হইয়াছিল যে, তাঁহারা তাঁহার ১০ ফন শিষ্যের সঙ্গে সর্বত্ত খুরিয়া বেড়াইত। ঐ রমণীদিপের মধ্যে মেরী নায়ী এক রমণী ছিল-সে ইভিবৃত্তে মেরী মাগদলিন নামে शाक करेबारक। धे तमनी धार्थरम कूनके। किल ; महरावय सकत লোকে তাহাকে অস্পুত্র জানিয়া খুণা করিত। যীশুর প্রতি ঐ রমণীর এত গভীর প্রেম অবিষয়াছল যে, সে আপেনার পাপ পণ পরিত্যাগ করিয়া নবজীবন লাভ করিয়াচিল। সে সভার মধ্যে আসিয়া যীশুর চরণাশিক্ষন করিয়া উচ্চার চরণ ধৌত করিত ও আপেনার আলুলায়িত কেশপাশ ধারা চরণ মৃচাইয়া দিত। তাহাতে শিষ্যদিগের মধ্যে একই কেই বিরক্তি প্রাকাশ করিছেন কিন্তু যীশু তালার ব্যাকুলতাতে বাধা দিতে নিষেধ ক্রিভেন। এত্তির ক্লেক্শাল্ম নগ্রের স্বিধানে কোন গ্রামে ল্যাক্সারস নামে এক ব্যক্তি বাস করিত। উাগ্র মেরীও মার্থা নামে ছই ভগিনী ছিল। ঐ ছই ভগিনীর বিশেষতঃ মেরীর যীশুর প্রতি অবতিশয় প্রেম ছিল। যীও বেরুশালম যাত্রা কালে প্রায় ভাছাদের বাটীতে বাস করিতেন। ঐ গুট ভগিনীকে যীও এত ভাল বাসিতেন যে মেরী ভাতুশোকে काँमिटलट्ड (मथिया यीश काँमिया किनिटनन।

এটি ধর্মের প্রচার কালে ধেরপ, যীশুর মৃত্যু কালেও সেইরূপ নারীগণের প্রেমের বিশেষ পরিচয় প্রাপ্ত কওয়া যার। ধর্মাদ্ধ বিজ্নীগণ যথন হতা৷ করিবার মানসে যীওকে ধুভ করিতে প্ররাস পাইতে লাগিল, তথন যীওর শিষা দলের মধ্যে অধি-কাংশই তাঁহাকে পরিভাগে কবিয়া গেল। স্বাদশক্ষন শিষা মাত্র শেষ দিনে তাঁচার সজে ইহিল 🖛 যীণ্ড তাহাদিগকে জিজ্ঞাস। করিলেন—"ভোমরাও कি আমাকে ছাড়িয়া যাইবে।" যে রাজে যীত ধৃত হটলেন সে রাজে সে বালশলনও উচ্চার সহচর হটতে সাহসী হইল না। পিটার তাঁহার শিব্যদিগের মধ্যে সর্ক্তপ্রেষ্ঠ ভিলেন, তিনি গোপনে সঙ্গে গেলেন বটে কিন্তু প্রাণভরে মিথা৷ কথা কহিয়া তাঁহার শিবাদ অস্থীকার করি-লেন। এইরণ ঘোরভর সামাজিক নির্যাতনের সময়েও वी छत्र जून कार्छत निक्रे बामता करमकी नात्री मूर्खि राविरङ शाहे; धावश वाहेरबरण धाक्राज वर्णिक व्हेत्रारक रच मी ७ कवन व्हेट एकोन निवान केंद्रिन अभाग त्यनीत्ववे त्या नितनन । বীতর মৃত্যুর পর ভাছার ১২০জন শিব্য জেরশালম নগরের এক বিতশ পূর্বে পঞ্জিরা জন্মন ও প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। ইহালের মুখ্যেও অনেক দ্রীলোক ছিলেন।

এইরপে স্থামর। দেখিতে পাই, প্রীষ্ট ধর্মের প্রথম প্রচার চটভেই টহার বীক্ষ সকল নারী ছদরে স্থান প্রাপ্ত হইরাছিল। প্রীষ্ট ধর্ম যে ক্তগতে ক্ষর লাভ করিরাছে নারী ক্ষরের প্রৈম ভাহার একটা প্রধান কারণ ভাহাতে সন্দেহ নাই। যে ধর্ম নারী ক্ষরে স্থান প্রাপ্ত হয় না ভাহা ক্ষনসমান্তে প্রবিষ্ট হটতে পারে না।

ব্রাহ্মসমাজকে ভারত নারীর সৌভাগ্য রবি বলিলে হয়। लाक्षमभाव अमार्ग यक भवा कन्यान माधन कतियात कम्र बन्म গ্রহণ করিয়াছেন তথাগে ভারতনারীর বন্ধন মুক্তি একটা व्यथान। এই नक्षम मूं उन कृष्टे श्राकारत क्षेत्र-श्रथाम उक्ष-সমাল ভাঁহাদিগকে অজ্ঞতা ও কুসংস্কার বন্ধন চইতে মৃক্ত করিবেন: বিভীয়, ইহা তাঁহাদিগকে সামাজিক দাসত পাশ হুইতে মুক্ত করিবেন। এই লক্ষ্যের অমুসরণ করিয়া ব্রাহ্মগণ দেশ मरशा खोशिका विचारत छिलाती; वाना विवारहत विरवाधी; বালবিধবাদিগের বিবাহের অমুকুণ; ও নারীর স্বাধীনতার शक्तभा**छी। छात्र** छ नातीतिरात मधा याहाता कि किश मिकात আলোক প্রাপ্ত হটতেছেন, বাহাদের চক্ষ কর্ণ ফুটতেছে, ভাঁহারাই ত্রাহ্মসমাজের এই শক্ষা অমুভব করিতে পারিভেছেন. এবং ব্রাহ্মসমাজের প্রতি তাঁছাদের অমুরাগ খতঃই আরুষ্ট হউভেছে। আমরা নারীগণের মধ্যে ত্রাক্ষ-ধর্মকে বিশেষরূপে প্রচার করিবার জম্ভ কোন উপায় ছেবলছন করিতেছি না; তথাপি নারীগণ দলে দলে আমাদের উপাসনাদিতে আকৃষ্ট হুটভেছেন। সাধারণ জান্ধসমাজের উপাসনা মন্দিরে সময়ে সময়ে এত নারীর সমাগম হয় যে মহিলাদিগের আসলে श्वान नमारवर्भ क्य ना । मार्घाष्ट्रपत्य नमस्य मन्मिरवय लाग चार्क्क छान महिलामित्त्रत सम् चितिया (मध्या इत उथानि অনেকে স্থানাভাবে বসিভে পান না. কাছাকে কাছাকেও বা ফিরিয়া যাইতে হয়। এ সকল অতি ও ভ চিহু তাহাতে সন্দেহ नाहे। हेहाएक अहे श्रमान इस त्य बाक्सममारकद विशक्तरान याहाँहै बनून हेशांत्र मून ममाख माला व्यविष्ठे हटेए छ।

বর্তমান সময়ে এক শ্রেণীর হিন্দ্রমণীর ব্রাক্ষসমাজের দিকে বিশেষ আকর্ষণ দৃষ্ট চলাছে। ইইারা চিন্দ্বিধরা। বিগত ২০ বৎসরের মধ্যে বহু সংখ্যক হিন্দ্বিধরা ব্রাক্ষণাজে জানপ্রাপ্ত চইরাছেন। উলিদের ব্রাক্ষ আত্মীরগণ প্রথমে উদ্যোগী ছইরা উলিদিগকে আনিরাছিলেন। তৎপরে ব্রাক্ষবন্ধুগণ স্থীর স্থীর গৃহে উলিদিগকে জান দিয়া কিছু কিছু শিক্ষা দিয়াছেন। তীলাদের মধ্যে অনেকের প্রবার বিবাহ ছইরা তালারা সম্ভান্যাণ পরিবেষ্টিত চইরা স্থাে সংসার করিতেছেন। এই সংবাদ যতদ্র যাইতেছে তত্দ্র হিন্দ্বিধ্যাদিগের মনে এই আক্যাক্ষণার উদয় ছইতেছে, কিরপে তালারা ব্রাক্ষসমাজের আপ্রয় লাভ করিবেন ও ঐ প্রকার জানধর্ম লাভ করিরা স্থাও স্থানীনভাবে বাস করিবেন। এরণ আক্যাক্ষা অভি স্থাভাবিক ও নিক্ষনীয় নহে। এই সকল বিধ্বা স্ক্ষাই ব্যাক্ষদিগকে প্রাদি লিখিতেছেন ও সাঞ্রয়

ভিক্ষা করিতেছেন। অবচ তীছাদিগকে আমিয়া রাধা যার ্ এরপ কোন আশ্রে-বাটিকা (এসাইলম্) নাই ; শিক্ষা দেওয়া খায় এরূপ কোন বিদ্যালয় নাই; বিশেষ ভাবে ব্রাকাণর্ম শিক্ষা (महा यात्र अञ्चल कान बल्लावल नाहे। अक्षन विश्वा যথন আর্সেন, তথন সচরাচর উাহাকে কোন ব্রাহ্মগৃহছের গৃহে রাণা হয়। এরূপ গৃহস্ত আক্ষাদের মধ্যে অধিক নাই। তাঁহারা हिन्तुममास्त्र गाकिरम भरतत भन्छाह इहेशा भाकिरछन, ज्यान আংগিয়াও পরের গলগ্রহ হইয়া থাকিতে হয়। বিশেষের মধ্যে এই সেখানে বাঁচাদের গলগ্রত হইয়া পাকিতেন, তাঁহারা স্থাস্প্ কীর লোক ও তাঁহাদের সঙ্গে রক্তের সম্বন্ধ; অর্থাৎ তাঁহারা নিভাস্ত বিরক্ত হটলেও ঠেলিভে পারেন না; স্থান দিভেট হয়। किन्द बाक्षमभाष्य चानिया पैशातित शृह शास्त्र, छानाता একেবারেই নিঃসম্পর্কীয় লোক, রেকান প্রকার দোষ বা ত্রুটি দেশিলে, বা অন্ত কোনরূপে পারিবারিক অশান্তি উপস্থিত হটলে আর তাঁহার। শেষে গৃহে স্থান দিতে চান না। যাঁহারা উদ্যোগী হটরা বিশবাকে আনিয়াছিলেন, তাঁহাদিগকে ऋरक कतिया व्याध्यय चारनत करवरा वारत वारत प्रतिएक व्या যে বিধবা এক ব্রাহ্ম গৃহ ছের গৃহ হটতে তাড়িত হটল, অপ-বেরা আর ভাহার জন্ত হার খুলিতে চার না। সূতরাং মহাসংস্কট উপ্তিত হয়। এরূপ অবস্থাতে এক একক্সন বিধবাকে এত ্যাতনা পাইতে হয় যে তখন জীবন ভার বলিয়া বোধ হয়। এক দিকে ত এই ক্লেশ আবার অপর দিকে আর এক বিপদ। ভিন্দু বিধবাগণ ছঠাৎ আন্দেমাজে আদিয়াই এক সম্পূর্ণ নূতন জগতে প্রিয়াযান। ত্রাহ্মনিগের মধ্যে স্মাসিয়াদেখিতে পান নারীগণ অনেক পরিমাণে স্বাধীনতা স্থপ সম্ভোগ কবিতেছেন। সাধীনভাবে চলা ফিরা তাঁহাদের কখনও অভ্যাস নাই। সে অবস্তাতে কিরূপে আপনাকে রক্ষা করিয়া চলিতে হয় তাঁহারা कारान मा; स्वताः अरानक निध्या हिनाए मा कानाएड গোকের বিরাগ ভাজন হইয়া পড়েন এবং কোন কোন স্থানে ानभाष भिष्मा यान । अथस छेलानी बहेबा यांबाता चारनन, ्रांट्य कात केंक्सिंग्यत स्था পां अया यात्र ना, कवास्त्रत फालि সমগ্র সমাজকেট বহিতে হয়। এই সকল চিস্তা করিয়া আন্ধ-দিগের মধ্যে চিন্তাশীল ব্যক্তিগণ এই মতে উপনীত হটগাছেন — "যে যতদিন আশ্রয়া গত বিধবাদিগের শিক্ষা ও উন্নতির কোন সভূপায় না করা যায় যতদিন কোন আগ্রয়-বাটিকা না পোলা নায়, ততদিন আর কোন হিন্দু নিধবাকে আসিবার জগ্য উৎসাহ দেওয়া কর্ত্তবা নতে। ভাহাতে ভাহাদিগকে স্থা না করিয়া অপুথী করা হয় ৷

দিত বিষ কপ। এই শিধবাদিশের শিবাচ ঘটনার জন্য ত আক্ষান্ত র জন্ম হয় নাই। মৃত্তি শিপাস্থ নরনারীকে ঈশবের সির্ধানে উপনীত করিবার জন্মই ইহার জন্ম। অভএব আমরা কাহাকেও গ্রহণ করিবার সময় এই মাত্র দেশিব যে সে মৃত্তিশিপাস্থ কিনা ? বিচারে আমাদের ভ্রম থাকিতে পারে কিন্তু এদিকে আমাদের ভীক্ষ দৃষ্টি গাকা কর্ত্তবা। যদি আক্ষাণ মৃত্তি শিপাসার প্রতি দৃষ্টি না রাধিয়া বিবহার্থিনী বিধ্বাদিগকে স্থান দিতে উৎসাহ প্রকাশ করেন তাহাতে লেনেের মনে এই

भःकात अधिकार दय धर्म गाधानत **अस छ। हो। एतः भगास न**हर ।

আভ এব এক দিকে ভারতীয় নারীগণের বেমন ব্রাক্ষসমাধ্যের দিকে আকর্ষণ হইতেছে অপরদিকে তাঁহাদের সম্বন্ধে ব্রাক্ষ-সমাধ্যের দায়িজভার বর্দ্ধিত চইতেছে। ব্রাক্ষসমাজকে তাঁহাদের স্কুণে প্রাকৃত ধর্ম জীবনকেট ধ্রিতে চইবে।

হিন্দু বিধবাদিগের আন্তথ্যনির প্রাক্তি ব্রাহ্মগণ কি বধির ছটবেন ? কথনই না। ভিন্দ্বিধবাগণ যাহাতে জ্ঞান ও ধর্ম শিক্ষা লাভ করিতে পারেন, যালাতে স্বাধীন বুদ্ধি লাভে সমর্থ हन; वाहाएक चालन चालन की वनएक चुनी कहिएक लारतन, দে বিষয়ে ব্রাহ্মগণ স্বতঃ পরতঃ সাহায্য করিবেম। সে সম্বন্ধে निवय এই--- "मिक्नार्थिमी विधवामिशटक वजाइमशरतत मानिशम वस्मार्शिशांत्र महामरसंत्र (वां छिः कृत वा त्रमावाडे अत भारताः সদমের ভাগ ভানে তেখরণ কর; বিবাহার্থিণী বিধ্বাদিপকে তছদেখে স্থাপিত আশ্রয়বাটীকাতে প্রেরণ কর; দীক্ষার্থিনী বিধবাকে গ্রাহ্মসমাজে স্থান দিয়াধ্যা শিক্ষাব উপায় বিধান কর, শিক্ষার্থিনীদিগকে আশা দিয়া ব্রাহ্মসমাজে আনা অস্তার कात्र वाद्याता ठाँशारमत्र मिकार्य कान विमानिय करतन नाहे; বিবাহার্থিনীদিগকে ও আশা দিয়া আনা অভায়; কারণ সে আশা কেহই দিতে পারে না। বিশেষ সে জন্ম বাক্ষসমাজ নহে। मीकार्थिनी निश्तक है. आमता आधार निष्ठ পाति। आमारनत অফুরোধ আহ্ম বন্ধুগণ এবিষয়ে বিশেষরূপ চিস্তা করিয়া (मध्यन।

বাদাসমাজ।

বিগত ১৬ই আষাত্ বরিশাল নগরে একটা রাক্ষ বিবাহ

হইয়া গিয়াছে। বরের নাম বাবু বরদাপ্রেদর রায়.নিবাস লাখুটির।
বরিশাল, বরস ২৮ বৎসব, কস্তার নাম প্রীমতী ইন্দুনিভা সরকরে। খীইধর্ম প্রচারক রেভারেপ্ত প্রীযুক্ত কন্ সরকারের
কন্তা। বয়স ২৫ বৎসর। কন্তা প্রথমে প্রীষ্টধর্মে বিশাসী
ভিলেন, কালক্রমে রাক্ষধর্ম গ্রহণ করেন। বাবু মনোরঞ্জন গুছ্
আচার্যের কান্য করেন। এই বিবাহে খ্রীইধর্ম প্রচারকগণ
বাধা দিতে অনেক চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু তাঁহাদের চেষ্টা
বিকল হট্যাছে। বিবাহ ১৮৭২ সনের ও আইন অমুসারে
রেক্সিটারী হইয়াছে। আমরা এই নব দম্পতীর কল্যাণ

বিগত ২৩এ আষাড়, চবিবেশ প্রগণার অন্তর্গত মঞ্জিলপুর্
গ্রামে আর একটা প্রাক্ষ বিবাহ হটয়। গিয়াছে। বরের নাম
বাব্ হরকুমার গুচ, নিবাস বক্সযোগিনী, বিক্রমপুর, বয়স প্রার
৩০ বৎসর, ইনি বিণাছক। পাত্রীর নাম শ্রীনতী চেমন্তবালা
দক্ত, মঞ্জিলপুর নিবাসী বাবু কালীনাথ দক্ত মহাশরের কল্পা,বয়স
প্রায় ২০ বৎসর। বাবু নগেক্সনাপ চট্টোপাধ্যার ও বাবু
উমেশচক্ত দক্ত মহাশর্গণ আচার্যোর কার্যা নির্কাহ করেন।

বাঘজাঁচড়া হইতে বাবু অঘোরনাণ মুণোপাধ্যার লিথিয়া-ছেন,যে, গত ১০ই জুন ১৮৮৯, ২৮০ জৈছি লোমবার বাঘ-আঁচড়ার বাবু বভিকান্ত মলিক মহাশ্রের কঞা কুমারী নব-কুমারীর প্রবোক হয়। ভাহার অস্তোষ্টি জিয়া হইছে কিছ প্রতি সপ্তাছে ২ । ও দিন করিরা উচ্চার পুছে উপাসনা

রাছেন। পুশ্বদাছ করিছে যাটবার সময় পথে ও

ানে সংকীর্ত্রন হইয়াছিল। এইরূপ করাতে প্রলোকার পিতা মাজার শোকাবেগ অনেক পরিমাণে হ্রাস অথবা
বানের নামে পরিবর্তিত হইয়াছিল বলিয়া বোধ
ারাচেন।

কুলবাড়িয়ার বাবু বৈক্ঠনাথ মল্লিক মহাশরের পত্নী দারিনী মালকের প্রস্বার্থ কলিকাভার যাইবার কালিন ধেধো যাদবপুর টেসনে প্রস্ব কটে মৃত্যু হইয়াছে। শব দাহ শক্ষে উপাসনা করেন। গভ ৮ই জুলাই ভারিথে তাঁহার জোপলক্ষে ছই বেলা উপাসনা হইয়াছে।

গ্রত ৩রা ফুলাই ১৮৮৯ বাঘ্যাঁচাড়ার বাবুরাধানাথ মলিক ।শ্যের ঘিতীয় পুত্র পরলোকগ্মন করিয়াছে। ভাহার জোপলক্ষে উপাসনা করিয়াছেন।

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

हे। ऋहिन।

কলিকান্তা হইতে প্রজ্ঞান্দ বাবু ক্ষকুষ্মার মিএ, বাবু
জনীকান্তানিয়েগী ও বাবু প্রস্কৃষার বস্থু মহাশল্পণ ও
লমন সিংহ হইতে বাবু গুরুগোবিন্দ চক্রবর্তী মহাশল্প ও গল্পা
লোর হেড মাইরে বাবু গোবিন্দচক্র গুরু মহাশল্প ও গল্পা
লোর হেড মাইরে বাবু হেরদাস গুরু, বাবু রহ্গনীকান্ত গুরু ও
াবু রমণীকান্ত গুরু এই উৎসব উপলক্ষে এগানে আগমন
লেন ও উংগবের ক্ষেক দিন থাকিয়া কার্যা সম্পাল ক্রেন।
লা ভিরবড় বাশালীলা হইতে বাবু চক্রনাথ বাগাছ ক্রাটিলা
লিরবড় বাশালীলা হইতে বাবু চক্রনাথ বাগাছ ক্রাটিলা
লিরবড় বাশালীলা হইতে বাবু চক্রনাথ বাগাছ ক্রাটিলা
ক্লির নাণ ঘোষ স্কুল ডিঃ ইনস্পেক্টর বাবু ভারক্বন্ধু চক্রবর্তী
ক্লিতি মহাশ্রপণ উৎসবে ব্যাগদান ক্রিলাছিলেন।

নিম্নণিখিত প্রশাণীতে উৎসবের কার্য্য সম্পন্ন হটয়। গ্রাছে।

২০এ জার্চ রবিবার পূর্বাক্টে উল্লেখন—বাবু ক্লংকুমার
নিত্র মণাশর উপাসনার কার্য্য করেন। উপাসনাক্ত কিছুকাল
ভার সহিত সংকীর্ত্তন হয়। অপরাক্টে ৪॥ ঘটিকাব সময়
বিহু কুল গৃহে যোগতত্ব বিবরে বাবু ক্লুক্টকুমার মিত্র মহাশর
কিটা স্থাই বক্তৃতা করেন। বক্তৃতার মন্ম এই—প্রাচীন
বিত্রে নানাপ্রকার যোগ প্রণালী প্রচলিত ছিল, কাল ক্রমে
বি সব অনেক পরিমাণে বিলুপ্ত হইয়াছে। এখন যোগ
বাহায়্য অনেকের নিকটেই অপরিচিত। প্রাণায়াম প্রভৃতি
প্রক্রিয়া বারা লোকে যে আলৌকিক ক্রিয়া সকল দেখাইতে
পারে ভাহা মিখ্যা নয়। কিছু প্র সকল অলৌকিক ক্রিয়া
বাহিক শারীরিক ক্রিয়ার ফল মাত্র। প্র সকল ক্রিয়া
বাহাছ্যের প্রকৃত্ত পরিচায়ক মহে। প্রাণায়াম প্রাভৃতি যোগ
প্রণালী মনান্থির ক্রয়ার এক প্রকার উপায় মাত্র। কিছু পরমান্মার সহিতৃ ক্রীযাক্সার পাঢ় যোগই প্রকৃত যোগ, এবং

केशहे मञ्चा कीवटनत फेक्कनका। (य नकन (मर्ग वा य সকল স্থানে ভারতব্যীয় বোগ প্রণালী প্রচলিত নাই, সে সকল স্থানেও কেহবা বাছিক প্রাকৃতিতে, কেহবা অন্তর্জতের विरामश् निरामय काव सिहरत क्षेत्ररात कार्याच मक्कि केननिक कतिया जनवन्यत्म ब्राम मागरत निमय ब्हेबाइन। धवः এই ধ্যান যোগে আধ্যাত্মিক রাজ্যে পত্তিয়া প্রমাত্মার 🍿 সহিত কীৰাত্মার গভীর বোগ সাধনে কৃতকার্য্য হইরাছেন। যে কোন উপায় অবলম্বনে হউক প্রমান্তার সহিত জীবাঝার বোগই প্রকৃত বোগ। মাহুৰ বখন এই যোগ বলে বলীয়ান্ হয়, তখন তাহার শক্তি মহুবা শক্তির সাধারণ সীমা অতিক্রম করিয়া এক অপূর্ব্ব আকার ধারণ করে। তণন সে ্ধগ্ম প্রবর্ত্তক হইলে শত শত লোকের জ্রুটী অগ্রাহ্ করিয়া অমিড ভেজে বছ্যুগের কুসংস্কারের তুর্প উল্লব্ডন করতঃ সভ্যের জয় পতাকা সংস্থাপন করিতে সমর্থ হয়। দেশের উদ্ধার কাৰ্য্যে হস্তক্ষেপ করিলে সে এক অমামূষিক শক্তি বলে রাশি রালি লোক আপনার পক্ষে আকর্ষণ করিতে পারে। পৃষ্ট, গৌরাজ, ওরুগোবিশ্ব প্রভৃতি মহাস্মাগণের জীবন উল্লেখ कतिया वक्का इंहा विभावकार्य वृक्षाहेशा स्वत अवः निवाकात পর ব্রহ্মের ধ্যান যে অতি স্বাভাবিক এবং ইহাই প্রকৃত ধ্যান, সাকার ধানি ধ্যানই নহে ইহা বক্তার কথার বিশেষরূপে উপলব্ধি হয়। সাকার বাদী (বাঁচাদিগের সংখ্যাই অধিক ছিল) ও নিরাকার বাদী উভয় শ্রেণীর লোকই প্রথম চইতে শেষ প্রাপ্ত বক্তাটী অভি মনোযোগের সহিত শুনিরা ভিলেন এবং আমাদিগের বিশ্বাস উভর শ্রেণীই বিলেষরূপে छे १ क्ष इ व हे श (इन ।

বস্তা শেষ হটলে সংকীর্ত্তন করিতে করিতে স্থানীর মৃদ্লমান জনীদার বাবু মহম্মদ জালী খাঁ সাহেব প্রদন্ত গৃগাভিম্থে যাত্রা করা হয়। জালা এই নব গৃগ প্রবেশের দিন। গৃতের সন্মৃথে জাসিয়া কিছুকাল প্রমন্তভার সহিত সংকীর্ত্তন ইলে ঠিক সন্ধ্যার সময় একটা প্রার্থনা দ্বামার ঈশ্বরেব ক্রণকোজনী হুইলা গৃতে প্রবেশ করা হয়। ভংপর বাবু ক্রঞ্জনার মিত্র মহাশয় নবগৃহ প্রভিষ্ঠা স্চক ঘোষণা পত্র পাঠ করেন। পরে উপাসনা হয়। বাবু শুক্রগোবিদ্দ চক্রবর্ত্তী মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। উপাসনার সময়ে স্থানীয় জনেকে যোগ দিয়াছিলেন শ্রেবং সক্রপ্রকার সাম্প্রদারিক ভাব ভ্লিয়া প্রথম হইতে শেষ পর্যান্ত উপাসনার কার্য্যে যোগ রক্ষা করিয়াছিলেন।

২১ এ কৈঠ সোমবার—অন্য ৬॥ বটকার সময় স্থানীয় উপাদক মগুলী ভূক প্রীযুক্ত তুর্গানাথ মজুমদার মহাশরের বাসায় পারিবারিক উপাদনা হয়। প্রীযুক্ত রজনীকান্ত নিয়োগী মহাশয় উপাদনার কার্যা করেন। উপাদনাক্তে "ঈশ্বরকে প্রীতি করা মান্ত্যের স্থান্তাবিক ভাব" এই বিষয়ে উপদেশ দেন। অপরান্ত বেটকার সময় নগর কীর্ত্তনের কথা চিল কিন্ত বৃষ্টির গোলবোগে কীর্ত্তন বাহ্র হইন্তে পারে নাই। সন্ধ্যার পর সমাক্ত গৃহে উপাদনা হয়। শ্রীযুক্ত রক্তকুমার নিত্র মহাশয় উপাদনায় কার্যা করেন। উপাদনাক্তে বাইবেল ও

অন্ত ছই একথানা ধর্মগ্রন্থ হইতে কিছু কিছু ব্যাখ্যা করিয়া উপদেশ দেন।

२२ व देकार्छ मननवात-जना निनवाां के देवत । खार्ड প্রায় ৭ ঘটিকার সময় ডোর কীর্ত্তন হয়। তৎপর সমাজ গৃতে উপাসনা হয়। বাবু প্রসন্ধ কুমার বস্থ মহাশর উপাসনার কার্য্য 🏂 করেন। উপাদনান্তে উপাদক মগুলী মত্তার সহিত অনেক ক্ষণ সংকীর্ত্তন করেন। তৎপর ভিকৃক্দিগকে তথুল বিভরণ করা হয়। অপরাহ্ণ ঘটীকার সময় উপাদনা গৃত্তে সকলে একত্রিত হইলে মাধাাহ্নিক উপাসনা হয়। জানীয় উপাসক মগুলীভূক প্রীযুক্ত গোপালচন্দ্র শুহ উপাসনার কার্য্য করেন। ৩ ঘটিকা হইতে প্রায় ৪॥ ঘটিকা পর্যায় গ্রন্থ পাঠ হর। গয়া অংশের প্রধান শিক্ষক শ্রীযুক্ত গোবিন্দ নাথ গুড় মহাশয় শ্লোক সংগ্রহ হটতে কয়েকটা শ্লোক বিশদরূপে ব্যাখ্যা করেন। ৪॥ ঘটিকা হইতে প্রায় ৬ ঘটিকা পর্যান্ত সমাজের দ্বিতীয় বার্ষিক সভার অধিবেশন হয়। তৎপর প্রায় ৭ ঘটকার সময় স্থানীয় উকীলবাবু কুণানাথ চৌধুরী गश्मारमञ्ज बांगावाति छ नात्री स्रीवन चानस्य कतिया श्रीयुक्त কৃষ্ণকুমার মিত্র মহাশয় একটী স্থললিত ও সারগর্ভ বক্তৃতা করেন। এই শেষোক্ত অমুষ্ঠানটী উৎসবের নির্দিষ্ট অমুষ্ঠান जुक हिनना। ज्ञानीय करयक्षी खद्धमहिनात विस्थि छै९माह ও বাপ্রতায় বাধা হটয়া এই বজ্বতা করা হয়। তাঁহাদের সে দিনের উৎসাহ ও ব্যগ্রভার কথা মনে হইলে আশা ও আনলে সদয় উৎফুল হয়। রাত্তিতে সমাঞ্চ গৃহে উপাসনা হয়। প্রীযুক্ত গুরুগোবিল চক্তবর্তী মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন।

এবার কার উৎসব উপলক্ষে দয়াময় ঈশর আমানিগতে বিশেষ কপার পরিচয় দিয়াছেন। মন্দিরের জন্ত একপানা পড়ের ঘর করিবার আমাদের শক্তি ছিল না। কিন্তু এট সমরে তাঁছারট কুপাগুণে করটীয়ার জমিদার শ্রীযুক্ত হাকেজ মাহ্ম্মদ ধা সাছেব আমাদিগকে এক পানা প্রাশস্ত টিনের ঘর দান করিয়া হৃদয়ের বদান্ততা প্রকাশ করিয়াছেন। এই উপলক্ষে এট বদান্ত মহোদয়কে আমরা হৃদয়ের কৃতজ্ঞতার সহিত ধতাবাদ দিতেছি।

সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের কার্য্য নির্ব্বাহক সভার ২য় ত্রৈমাসিক (এপ্রিল, মে, জুন) কার্য্যবিবরণ

১৮৮৯

বিগত তিনমাসে কার্যা নির্বাহক সভার ১২টা নিয়মিত ও ৫টা বিশেষ অধিবেশন হটয়াছে—

৩১এ চৈত্র ও ১লা বৈশাথ—বর্ষশেষ ও নববর্ষ উপলক্ষে উৎসব হইরাছে। ৩১এ চৈত্র সায়ংকালে উপাসনা হয়। বাবু উমেশ চক্র মন্ত মনাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। ১লা বৈশাথ প্রান্তঃ কালে উপাসনা হয়। পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করেন। অপরাক্রে সংগীত সংক্ষীর্ত্তন হয় এবং সন্ধ্যার পর পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় "ধর্মজীবন ও ধর্মসমাজ" সম্বন্ধে বক্তৃতা করেন।

गांधात्रण बाजाग्रमारकत करणांश्यव উপলক্ষে शृष्ठ ३म ২রাও ৩রা কৈটি উপাসনাও বক্তৃতাবি হর_ক >লা _{বৈচ}ি প্রাতঃকালে উপাসনা হয়। বাবু সীতানাথ দত্ত আচা র্বোর কার্য্য করেন। সন্ধ্যার পর পশুভ বিব্নার শাস্ত্র "বিখানী ও অল্পবিখানী" বিষয়ে বক্তৃতা করেন। ২রা দ্যো ২ তুই বেলা উপাসনা হয়, তুই বেলাই পণ্ডিভ শিবনাথ শাখী উপাসনা করেন। অপরাত্তে বাবু সীতানাথ দত্ত এমার্থন প্রণীত ইংরাজি গ্রন্থ এবং পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী সংখ্য লোক পাঠ ও ব্যাৰ্থা করেন। পরে সংগীত সম্বীর্তন হয় এই দিন চুইজন যুবকের ব্রাহ্ম ধর্মে দীক্ষিত হইবার কা ছিল। কিন্তু একজন ঘটনাক্রমে সে দিন উপস্থিত হটায়ে পারেন নাই। অপর যুবক সায়ং কালীন উপাসনার পর দীকিং হন। তাঁহার নাম নদেরটাদ বৈরাণী। বাবু এককড়ি সিংক রাং। পরে দীক্ষিত হটয়াছেন। ৩রা জোর্ট রাত্তি আট ঘটিক। সময় সিটিকলেজ ভবনে সামাজিক সন্মিলন হয়। তথার প্রথা প্রার্থনা হয়। তৎপর পণ্ডিত শিবনাথ শান্তী সাধারণ আহ সমাজের সভাগণের দায়িত্ব সহন্ধে কিছু বলেন। তৎপর বালঃ বালিকাদিগকে আমোদ জনক ছবি প্রভৃতি প্রদর্শিত হইয় क्रमार्यारभव भव मिलान मछात्र कार्या (भव इत्र।

বাগ্রাঁচড়া স্কুল-১৮৮৮ সালের তারিথে বাগমাঁচড়ায় প্রচারকার্গ্যের সঙ্গে সংক বাবু অংখ্য নাণ মুখোপাধ্যার একটা স্থল থুলিয়াছেন। ভাচাতে ইংরারি ও বাঙ্গালা শিক্ষা দেওয়া হয়। তিনি নিজেট ইহার সম্পাদকের কার্য্য ও ইংরাজি শিক্ষার কার্য্য সম্পন্ন করেন। আরু চুই লন পণ্ডিত আছেন তাঁহারা বাঙ্গালা শিক্ষা দিয়া পাকেন। স্কুলে এপন ৪০ জন বালক ও >০ জন বালিকা আছে। তথাকার আছ বালক বালিকাদিগের শিক্ষার জন্ম কোন ভাল উপায় চিন ना। এই विमानम पात्री छाजाएनत विटमव छेलकात के তেছে। ২ জন পণ্ডিতের মাসিক বেতন ১৫১ এবং অক্সায় বায় মাসিক ২্। মোট ১৭ করিয়া বার চইতেছে। এট বাং কুলের ছাত্রবৈতন এবং অক্সাস্তের প্রদত্ত শাহায্য বারা চলিতেছে। আমরা সাহায়া দাতা মহাশরদিগকে এজন্ত বিশেব ধন্তবা প্রদান করিতেছি। এই কুণ্টী মাইনর ক্লাস কুলে পরি^{গত} করিতে পারিলে ব্রাহ্ম বালকদিপের সঙ্গে স্থানীর অঞ্জ वालक्षिरात्रक विरम्ब উপकात हत। वर्गरतक कान औ কুল চালাইতে পারিলে পরে গ্রথমেণ্টের সাহায্য পা^{রা} যাইতে পারে। মাইনর কুল সংস্থাপন বিষরক প্রস্তাব এখন कार्यामिक्वाइक म्हात विद्युष्टनाथीम चाट्छ।

জুজিক—ভারমগুহারবার অঞ্চলে বিশেব অন্ত্রকট উপবিত হইরাছে, এই সংবাদ পাইরা কার্যনির্বাহক সভা পণ্ডি
শিবনাথ শাল্লীমহাশরকে তথাকার অবস্থা জাত হইরা আবর্ত্তন
রূপ সাহাব্য দান ও কর্ত্তব্য নির্দারণ করিবার ভার প্রদান করেন।
তিনি বাবু হরিমোহন ঘোষাল, বাবু উপেক্রনার সরকার ও
বাবু রাম গোপাল মন্ত্র্মদারমহাশরদিগকে সঙ্গে করিরা তথার
গমন করেন। তারদিন ভথার থাকিরা ২২ খানি প্রাম পরিদর্শন
করেন। তৎপরে তিনি এখানে আগম্ম ক্রিলৈ জাহার নদীগ্র

चात्रछत्रथाना आम भतिवर्णन करब्रन। छीवाद्रा द्य विवयप धानान তদারা জানা ঘাইতেছে ৩১ খানা প্রামের লোকের মধ্যে ২২ পানা গ্রামের লোকেরই ক্ষধিক পরিমাণে কট চইরাছে। ভাচাদের শতকরা ৮ জনের কটই খুব বেশী। **এह नक्न (नांट्क्त मध्य ००৮ खनटक हाँडेन भन्ना ७वर का**न्ड প্রভৃতি দান করা হটরাছিল। অত্সভানকারীগণের গমনা-পমন ও তেপার আবভিতির বায় এবং দানের অভ ১১১√৫ নাগিরাছে। উক্তন্থান সকলের লোকনিগকে কিছু কিছু কাজ দিয়া সাহায্য করাই যুক্তিসিদ্ধ মনে হইরাছিল এবং তদমু-রূপ আয়োজন হইতেছিল। এমন সময় উপবৃক্ত রূপ বৃষ্টি হওরায় कुषक धावर मञ्जूतिभागत विरामव काम छेन्द्रिक इहेनारक। এ সময় ডায়মগুৰুরেবারের ডিপ্টি মাজিট্রেট মহাশয় ও অবক্রিষ্ট বাজিগণের সাহায্যার্থে কাজ দিতে প্রস্তুত ছিলেন। বিশ্ব এখন কেহই তথার যাইয়া কাজ করিতে সম্মত নর। এক্স এখন আর তণার বিশেষ কিছুই করা হইবে না। আন্যশ্রক চইলে পরে সাহাযা করা যাইবে। এই ছুর্ভিক্ষের সাহায্যের জক্ত আমরা ১৯ টাক। সাহায্য পাইয়াছি। বাকী টাকা নলহাটি ছঠিক ফণ্ডের উদ্ভ ট।কা হটতে দেওলা চটবে। বেগার, উড়িব্যা, ভারপ্তভারবার প্রভৃতি ছানের ছভিক্ষ প্রপীড়িত লোকদিগের সাহাযা অভ একটী সন্মিলত কমিটী হটয়াছে। াৰণনী থিওস্ফিকালি সোধাইটা, সঞ্জীৰনী, ভারতস্ভা, আদি ত্রান্ধ সমাজ এবং দাধারণ ত্রান্ধ সমাজ্যের সম্পাদকগণ মিলিয়া এজনা অর্থ সংগ্রহ করিতেছেন।

প্রচার---থানিয়াদিগের মধ্যে স্থায়ীক্রণে একজন প্রচা-রক রাথিয়া ব্রাহ্মধর্ম প্রচারের জগু অনেক দিন ছইতে শিশংস্ বন্ধুগণ কার্যানিকাছিক সভাকে অফুরোধ করিতে ছিণেন। কার্য্য নির্বাহক সভাও তথায় প্রচারক পাঠটেবার জন্ম বিশেষ চেষ্টা ৰবিতেছিলেন। কিন্তু তথায় যাইলা কাৰ্য্য কবিতে প্ৰাস্তুত এমন লোক না পাওয়ায় এত দিন ইচছ। কার্য্যে পরিণত হর নাই। সম্প্রতি চেণাপুঞ্জি চইতে থাসিয়াদিগের করেকজন মিলিয়া একধানি পত্র লিখেন এবং তথার ত্রাহ্মধর্ম-প্রচারক পাঠাইয়া তাঁহাদের সাহাষা করিতে অফুরোধ করেন। কার্যা-নির্বাচক সভা তাঁচাদের পত্র পাইয়া এসম্বন্ধে কিছু করিবার অভ বিশেষ চেটা করেন। আননেশর সহিত জানাইতেছি যে বাবু নীলমণিচক্রবর্ত্তী (যিনি ইতিপূর্কে সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের প্রচারক চ্ট্ৰার অক্ত আবেদন করিয়াছেন এবং বিষয়কর্ম পরিভ্যাগ र्भूक्क नामा क्षकारत आक्र धर्क क्षाठारतत्र माशाया कतिरछहिरतम) থাসিরাদিণের মধ্যে আত্থর্ম প্রচারের অভ প্রার কাৰ্বানিৰ্বাহক সভা ভাঁহাকে তথার প্রচার কার্য্যের কিরুপ স্থবিধা পাছে জানিবার জন্ত প্রেরণ করিয়াছেন। কিছুদিন ছইল তিনি শিলংএ গমন করিয়াছেন। তথার বাইরা তিনি বে পতা লিখি-বাছেন ভাৰতে জানা বার ভিনি খাসিরাকে প্রচারের বিশেব कार्या त्काल विकास मान कतिशास्त्र । ভাঁহাকে এবিষরে বিশেষ সাহাব্য করিতেছেন। সম্রতি তিনি শিলংলে থাকিয়া থাসিয়া ভাষা শিক্ষা করিভেছেন धनः चानाहेबाट्डन ७ जिन नाटनत मर्थाहे थानिता छातात |

উপদেশ দিতে পারিবেন। এখন ইংরেজিতে তথাকার থাসিরা সমাজে কাল করিতেছেন। থাসিরাদিগের মধ্যে ত্রান্ধ ধর্ম প্রচারের সাহাব্যার্থ সম্প্রতি একথানি সংগীত পৃত্তক ও ব্রাহ্মধর্মের মতসার থাসিরা ভাষার প্রকাশিত হইয়াছে।

বেগার প্রদেশে রাজ্যধর্ম প্রচারোক্ষেশ্র পরলোকগও
লালী বন্ধরংবিহারী মহাশর ২০০ শত টাকা বার্ষিক আরের
সম্পত্তি প্রদান করিয়া বেছার প্রদেশ প্রচারের প্রকান করিয়া বেছার প্রদেশ প্রচারের জন্ত একজন
প্রচারক থাকিলে এই টাকা পাওয়া যাইতে পারে।
কার্যা নির্বাহক সন্তা অন্ত উপবৃক্ত লোক না পাওয়া পর্যান্ত বাব্
নব্দীপচন্দ্র দাস মহাশরকেই তথার থাকিয়া কার্যা করিতে
সন্ত্রোধ করিয়াছেন।

নিয়্রলিধিত ছাল সকল হটতে প্রচারক প্রেরণের জন্ত অফুরোধ পত্র আসিরাছিল। কুটিয়া, মুর্সিদাবাদ, বাগেরহাট, কাঁথি, হাজারিবাগ, বনগাঁ, কুমিয়া, নওগাঁ, (রাজসাহি) পাবনা। শিলচার, প্রািয়া, কাকিনিয়া, নলধা, বাঁশেবাড়িয়া, বড়বেপুন টাজাটল।

নিয়ণিথিত ভাবে আমাদের প্রচারকগণ বিগত তিন মাস কার্য্য করিরাছেন।

वां वृ नवबी भारत्क पाम-)ना विद्यान इहेरड পর্বাস্ত মোলফরপুরে থাকিয়া প্রায় প্রতিদিন তথাকার বন্ধু-গণের সহিত উপাসনা করেন এবং ভত্ততা ভত্ত লোক-দিগের স্তিত ধর্ম বিষয়ে আলোচনা করেন। ৭ই এপ্রিল তণার সানাঞ্জিক উপাসনার আচার্যোর কার্য্য করেন এবং অপরাফে "বর্ত্তমানে ধর্ম্বের অবস্থা" সম্বন্ধে বর্ত্তৃতা করেন। তৎপর সমস্তিপুরে গমন করেন। এখানে ত্রিছকটেট রেলওয়ের অনেক কর্মচারী অবস্থিতি করেন। এখানে আসিয়া ভদ্র ণোক্দিগের সহিত আলোচনা ক্রেন এবং "সংসারে কি ভাবে থাকিতে হইবে" এবিষয়ে একটা বজ্ঞা করেন এবং প্রতিদিন ব্রাক্ষ বন্ধুগণের সহিত উপাসন। করেন। এস্থান হইতে লাহি-ড়িয়াসরাই নামক স্থানে গমন করেন। এখানে বিশেষ কার্যোর অসুরোধে তাঁচাকে ২৪এ পর্যাস্ত থাকিতে হয়। এই সময় মধ্যে যে বাটীতে তিনি ছিলেন প্রতিদিন তাঁহাদের সঙ্গে উপাসনা ও আলোচনা করেন। তথাকার টেশন মাটার মৃচাশ্রের স্থিত ২ দিন উপাসনা ও আলোচনা করেন এবং সামাজিক উপাসনা করেন। ২৫এ এপ্রিল ছারভালার গমন করেন। ভণার বন্ধুগণের সহিত আলোচনা এবং উপাসনা ভিল্ল আর কোন কাজ করিতে পারেন নাই। ১লা মে ত্রীযুক্ত এক্ষদেব-নারারণ বাবুর সহিত সাক্ষাৎ করিবার জল্প তাঁহার বাসস্থান একরি নামক ভানে গমন করেন। তথার যাইবার পথে ঝাঞ্চারপুর নামক টেশনে একটা ভত্র গোকের গৃহে ব্রাক্ষধর্ম্ম সম্বন্ধে অনেক আলোচনা হয়। একার নামক স্থানে গমন পূর্বক ৯ই মে পর্যান্ত তথাকার বছুগণের সহিত প্রতিদিন উপাসনা, আলো-हना करतन अवर नामाकिक छेनाननात्र विकार छेनान (मन। "ঈখরের ভার ও দ্বাতে সামগ্রস্ত আছে কি না"। "জীবহিংসার পাপ আছে किमा" "পাপের জন্ত একবার অমৃতপ্ত इहेলে পুন-वाव त्कांन भाषि चारक किना" এই नक्श विवदत चारमाहन।

व्ह । श्वरणाकगंक माना व्याद्ध विकास यहानाहत है अवर अविकि उठांत--- व्याद्ध वार्ताहत एक महानाहत महिला व्याद्ध धर्म शांताहत व्याद्ध वार्ताहत महानाहत महिला वार्ताहत व्याद्ध व्

তপা হইতে কলিকাভার আসিবার পথে নকহাটীতে আৰস্থিতি করিয়া সামাজিক ও পারিবারিক উপাসনা ও "আগে
মাত্র হও" বিবরে বক্তৃতা করেন। তথা হইতে কলিকাভার
আসিয়া বনসাঁ ব্রাক্ষ সমাজের উৎসবে গমন করেন। তথার
উপাসনা ও "ধর্মবাই সমাজ রক্ষার উপায়" বিবরে বক্তৃতা
করেন। আসিবার সময় মঙ্গলগঞ্জে বাব্ লক্ষণচন্ত্র আস মহাশরের
ভবনে গমন করিয়া উপাসনাদি করেন। শীপ্রই বেহার অঞ্চলে
গমন করিবেন।

বাবু অভোরনাথ মুখোপাধ্যায়—বাগআঁচড়া কুলের কার্যেই অঘোরনাথ মুখোপাধ্যায় মহাশয়কে বিশেষ ভাবে পরিশ্রম করিতে হইয়াছে। প্রতিদিন পূর্বাহ্ন ১০টা হইতে অপরাক্ত ৫ । ৬ ঘটিকা পর্যান্ত কুলের বালক বালিকাদিগকে শিক্ষা দিয়াছেন এবং কুলের আবশ্রকীয় কার্য্য সম্পন্ন করিবাছেন। কুলের পর রাত্রিতেও প্রাক্ষা বালক বালিকাদিগের পাঠাভ্যাধ্রের সাহাব্যার্থ ৩ । ৪ ঘণ্টা করিয়া কাল্ল করিয়াছেন। বাগলাচড়ার ভিন্ন ভিন্ন চারিটা পল্লিতে ৪টা প্রাক্ষামান্ত ও প্রাক্ষিকা সমাত্র ভাগিত হইয়াছে, ভাহাতে নিয়মিত ক্লে উপাসনা করিয়াছেন। তপাকার পারিবারিক অনুষ্ঠান সকলে উপাসনা করিয়াছেন। তপাকার পারিবারিক অনুষ্ঠান সকলে উপাসনা করিয়াছেন এবং আলোচনা করিয়াছেন।

বাবু শশিভূষণ বস্থ—নিম্নলিখিত রূপে কার্য্য করিয়াছেন।

জলপাই গুড়ি— সামাজিক উপাসনা করিয়া আক্ষবজুদের সহিত সায়ংকালে উপাসনা ও আলোচনাদি করেন। সাধারণ এক্ষে সমাজের জন্মদিনে আক্ষবজুদের সহিত বিশেষ উপাসনা করেন। "আক্ষধর্ম কি ?" "প্রকৃত পথ কোণায় ?" এই ছুই বিষয়ে ছুইটা বক্তু ভা করেন।

সিলি গুড়ি—সমাজ গৃহে বিশেষ উপাসনা করেন,ও উপদেশ প্রাদান করেন ও ব্রাশ্ববশ্বদের সহিত বিশেষ উপাসনা করেন।

ंदगयमभूत-- बाक्षतम्बद्धाः महिन्छ विद्याय छेशामना कदवन ।

বদরগঞ্জ-- এখানে কোন বাক্তির সহিত (তাঁছার বিশেষ আবস্তাক হেতু) নির্জনে প্রার্থনা ও ধর্ম বিষয়ে আলোচনাদি করেন। অন্তান্ত লোককে ব্রাহ্মধর্ম কি ? ভাষা বৃষাইরা দেন।

कारिकीश-छिपनव छेननत्क नमास्व छेनाननानि करत्रन,

सास ममारका देशका दिनारक विभावकी कर्मक क्रिक्स क्रिक्स

विनामशूष--- नावाकिक ७ शांत्रकाष्ट्रिक खेलाजमानि अल्लह्न करकम ; कामीय कत्तरमाकविरगंत गरिक खांमाशांति करहेत, ७ नवाक गृटह (२) "नवारकत केवांक ७ खनमकि" (२) "टक्सन् १४४ खरमक्षम कति।" विदश्य रहे। वक्का करतन

বোয়ালিয়া—সম্প্রতি এখানে অবস্থান ক্ষিয়া সাম্বাহ্ণালে ব্রাহ্মবন্ধুদের সভিত উপাসনাদি ক্ষিতেছেন। সম্প্রতি কিছু-কাল এহানে অবস্থিতি ক্রিবেন।

বাবৃ নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাখ্যায়—৩১ এ চৈতা হাছারিনাগ প্রাক্ষসাজ্যের উৎসবে গমন করেন। তথার ১-ই জাই
পর্যন্ত অবস্থিতি করিয়া প্রাক্ত প্রক্তিনিন সমাজ গৃহে ও বঙ্গুগণের
গৃহে উপাসনা ও আলোচনা ও সংকীর্ত্তন করিয়াছেন। তথাকার উৎসবে উপাসনালিতে আচার্য্যের কার্য্য করেন এবং ৭ই
বৈশার্থ "ধর্ম জীবন" বিবরে একটা ও৫ই জাই "জাতীয় আলোলন" বিবয়ে একটা প্রকাশ্র বক্ত তা করেন। তথা ছইতে আগমন পূর্বাক ১৮ই জাই বংশবাটা প্রশ্ন মন্দিরে তথাকার সমা
জ্যের জন্মদিন উপলক্ষে করেকদিন উপাসনা করেন এবং উপদেশ। দেন এই উৎসবে সার ধর্মণ বিবয়ে একটা বক্ত ভা করেন।
এবং এথানে কয়েকদিন অবছিতি করিয়া যুবকলিগেল্ল সহিত
ধর্ম্মালোচনা করেন। ছাত্রসনাজের অধিবেশনে সভাপতির
কার্যা করেন। এই সময় মধ্যে একধানা ধর্ম পৃস্তক প্রকাশের
ভক্ত উচ্চাকে কাল্ক করিতে হইয়াছিল।

পণ্ডিতে রামকুমার বিদ্যারত্ব— কিছু দিন কইল তিন-ধারিয়ার অবস্থিতি করিয়া ধর্মসাধন প্রাভৃতিতে নিযুক্ত আচেন। সম্প্রতি তিনি নিয়মান্ত্রসারে ২ মাসের জন্ত প্রচার কার্যা হইতে অবসর গ্রহণ পূর্বাক বিদায় লটয়া আছেন।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্ৰী-ক্লিকাতা লবাহতি কালে এধানকার উপাসকমগুলীতে সানাজিক উপাসনার আধকাংশ সময় আচার্যোর কার্যা করিয়াছেন। মিঃ বেুকার সাহেব কর্তৃক সংস্থাপিত সমাৰে প্ৰতি রবিবার নিয়মিত রূপে ইংরাজিতে উপাসনা করিয়াছেন এবং উপদেশ প্রদান করিয়াছেন। করেকটা পারিবারিক অত্ষ্ঠানে উপাসনা করিয়াছেন। তত্ত্তোমুদীর সম্পাদকভা করিয়াছেন এবং ইভিয়ান মেসে-ঞ্জার সম্পাদনের সাহায্য করিয়াছেন। বর্ষশেষ ও নবৰর্ষের छे ९ मार 'शर्म की बन छ भर्म माम ' विवास धावः माधावन आम সমাজের জন্মোৎসবে "বিশাসী ৪ জন্ন বিশাসী" বিবরে বক্তা করেন। ভবানীপুর প্রার্থনা সমাজের সাৰ্ৎস্রিক উৎসবে উপাসনা করেন ও উপদেশ দেন এবং ভবানীপুরের সাউথ সুবার্কন স্থুপ গৃহে "ভারতের ভবিষ্যত" বিষয়ে বক্তা करतम । এ ভত্তিत দশ্यत। প্রামে গমন পূর্মক বাবু উপাশ্স রার মহাশ্যের গৃঙে উপাসনা করেন। তথার বাঞ্ধর্শের সভ^{্বিবরে}। এবং সাকার নিরাকার উপাসনা বিষয়ে ছুইটা বস্তু তা করেল। একদিন তথাকার পঞ্চিত্রণের সহিত সাক্ষার ও বিরাক্ষি

বাবু কালীপ্রসন্ন বস্থা—চাকার অভর্গত ডিলিনামক ভানে অবস্থিতি ক্রিরা ক্রেক রবিবার সামাজিক উপাসনা कतिशास्त्र अवः छेन्द्रम्भ मिशास्त्रः। अक्षिन आवश्यक्ति লুসংবাদ বিষয়ে বজুভা ক্ষিয়াছেন। এবাড়ী নামক প্রাথে গমন পূৰ্বাৰ "ঈশার শিতা ও মাজুৰ ভাই" "কিলে প্রায়শ্চিত হয়" এই ছুই বিষয়ে বক্তা করেন। খোলাবাড়ীয়া নামক ভানে একটা ভ্ৰাভূ সন্মিণনী সভা আছে তাহাতে মধ্যে মধ্যে উলাসনা করিবাচেন এবং একদিন "ভারতের ইতিহাস বার' আমরা ঐশবের ইচ্ছার বিষয়ে কি কানিতে পারি' এ দিব... बारनाहन। এবং ''উচ্চভর ধর্মজীবন'' ''हिन्ताई তোম সাধনের উপায়' বিষয়ে বক্তা করিয়াছেন ৷ খান খানাপুরে গমন भुक्तक छळ्छा कुरमत अमिकभिनारक किছू **डेशरमण रम**न। ध्वरः ্রায় উপাসনা করেন। ফ্রিদপুরে গমন পুর্বাক ভথায় পারি-ৰারিক উপাদনা করেন এবং সমাজ গৃহে ছুই বেলা উপাদনা करवन। धवर উপদেশ (मन। वाकारण "अकारछत्र श्रेश्वत" াব্যয়ে বক্তা ও কীর্ত্তন করেন।

এতদ্ভিন্ন শ্রীযুক্ত লছমনপ্রসাদ, বাবু উমেশচক্ত দত্ত, বাবু ক্ষাক্মার মিক্র, বাবু আদিনাথ চট্টোপাধ্যার, বাবু কেদার-নাগ রার, বাবু চঞ্জীতরণ বন্দোপাধ্যার, বাবু নীলমণি চক্রবর্তী প্রভৃতি মহাশয়গণ নানা প্রকারে ব্রাহ্মান্থ প্রচারের সাহায্য করিয়াছেন।

উপাসক মণ্ডলী—এই তিন মাস উপাসক মণ্ডলীর নিশ্মিত সামাজিক উপাসনা নির্কিল্লে চইয়া আসিয়াছে। এই ममग्र मर्गा मिलक भिवनाथ भाजी, वाव केरम मक पर वाव সীতানাথ দত্ত মহাশয়গণ মন্দিরের উপাসনার কার্যা করিয়া-**्ष्टन। वर्ष(भव ९ नववर्ष छेलनाक्य (व छेल्यव इग्न. छोड़ा**ड ^{ছই দিন} উপাসনা হয় ও পণ্ডিত শিবনাথ শান্তী মহাশ্র কর্ত্ত্ব ,^{"পর্ম} ও ধর্মসমাজন" বিষয়ে একটি বক্তৃতা হয়। ধর্ম সম্বন্ধে আলাণাদি করিয়া মঞ্জীর আচার্যা ও উপাস্কগণের মধ্যে বাহাতে খনিষ্ট সম্বন্ধ প্রতিষ্ঠিত হর ডক্ষক শ্রীযুক্ত শিবনাথ गायी ७ वीयुक बावू हैरममहत्व मछ ७ वीयुक वावू छक्रहतन ^{मञ्जा}निष्म महाभवत्रेण खांत श्राह्म कविवारिष्ठन । मिलाटे त्रिति ৰার প্রাতঃকালীন উপাসনা ও মললবার সলতের কার্যা পুর্বের ^{জার} সম্পাদিত হইতেতে। কিন্তু রবিবার অপরা<u>ছ</u> ৪ ঘটিকার শ^{নরে} মঙ্গীর ক্তিপর স্ভা মন্দিরে মিলিত হইরা ধর্ম বিষয়ে যে কথোপকৰন ও গ্রন্থপাঠ করিভেন ভাষা আপাছভ: স্থলিভ मार्ट ।

সক্ষাত বৃদ্ধান সক্ষা এই আৰু নানে ইয়াছিল। এই আন্তাহত আনিবেশনে হই রাছিল। এই আন সভ্যা নির্মিত রূপে উপস্থিত হই রা উপাসনাও ও গ্রাজ্যেলনা ক্রিয়াছেন। এই সক্ষণ আনিবেশনে এবানাভঃ ক্ষেত্র কুইটা নাত্র আনোচ্যা বিষয় ছিল। এবমটা "কি কি বিষয় দেবিয়া কোনও ব্যক্তিকে ত্রাক্ষ বলিয়া এইণ ক্ষা বাইতে পারে।" ২ বটা উপাসনা।

জাতিবা ক্ষিটি—এই সময় মধ্যে টালা ২০০ টাকা
আক্ষম হইরাছে, এক কালীন দান প্রায় ১০০০ টাকা, ''
আক্ষম হইরাছে, (তন্মধা ৭৬৪০ টাকা আনায় হইরাছে)
এবার টালার বহি ২২ খানা প্রস্তুত্ত করাইরা বছুগণের নিকট
ক্ষেরা কইরাছে। এই জিন মান মধ্যে সাহায্য দান অভি
আরই করা হইরাছে। আর ব্যরের হিসাব

जग		435	
এक कानीम मान		পুস্তক ফণ্ডের ঋণ	
সংগ্ৰহ একটা ভৱা মহিলা	96#0	শোধ ৫০১ মধ্যে এক কালীন দান মাসিক দান	8•. \$\$!• 8.
কোন অনাথা			,
ব। শকবালি কাকে		विविध वाष	4/4
(मध्यात क्य मान			
करत्रन	>.		4014
वार्विक हैं। ना जानात	۵,	হিড	9.05.
থিওডোর পার্কার ফ	9		
চইতে প্রাপ্ত	seld.		2001976
•	>.8he/o		
পূর্বস্থিত	> e 11 \ @	•	
•	> 2016/2¢		

ছাত্রসমাত, রবিবাসনিক নৈতিক বিদ্যালয় এবং ব্রশ্বনিদ্যালয়ের কার্যা গ্রীশ্বের বন্ধের পর পুনরারক হইরাছে। কিন্তু এখনও এই সকল সন্তার কোন কার্যা বিবরণ পাওয়া যায় নাই। ব্রাহ্মবন্ধু সভার কার্যা ২৮এ জুন তারিপে আরক্ষ হইরাছে। ভাহাতে আমাদের আধ্যাত্মিক জীবনের শৃঞ্জা বিবরে আলোচনা হয়। বাবু ক্ষকুমার নিত্ত প্রথম বক্তৃতা করেন।

প্রচার ফণ্ড কমিটি, পুস্তক প্রচার কমিটি, প্রচার কমিটি, পুস্তকালর কমিটী এবং সামাজিক নিয়ম প্রাণরনকারী কমিটীরও কোন কার্যা বিবরণ পাওয়া যার নাই।

তত্ত্বিমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার—তত্ত্বেমুদী ও ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জারের কার্যা নিয়মিতক্রণে চলিতেতে। ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জারের কার্থিক অবঙা উন্নতির জক্ষ যে স্বক্ষিটি গৃষ্ঠিত চইলাতে, তাঁচারা ইহার অর্থাভাব দূর করিবার অন্ধ বিশেষ চেষ্টা করিতেত্বেন, কিন্তু এখনও ইহার অভাব যাইতেছে না। তত্ত্বেমুদী কণ্ড. হইতে মেসেঞ্জাবের মুক্তাছণের বাল নির্কাচার্থ ৩০০ তিন শত টাকা প্রদান কবা হইলাছে।

দান প্রাপ্তি-মরমনসিংহের অন্তর্গত করটিয়ার জনি-দার শীসুক হাকেল মহলদ লাণি যাঁ মহাশর তথাকার বাস্ক সমাজের উপাসনার্থ ৫০০ পাঁচ শক টাকা সুকোর জীয়ার একটা বাড়ী প্রদান করিরাছেন। এই গৃহের অন্ধ স্থাধারণ বান্ধ সমাজকে প্রদান করিরাছেন। আমরা তাঁকার এই দান প্রাপ্ত হইরা কুভজ্ঞতার সহিত বিশেষ ভাবে ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি। উক্ত গৃহ সম্বন্ধীর ভন্তাব্ধানের সমন্ত ভার বাব্ কুককুমার বিজ মহাশরের উপায় অপিত হইরাছে।

পূর্বে বলবেলওয়ের মানেজার মন্দার সাধারণ বাল্লসমাজের প্রচারক্দিগের অন্ধ সেকেও ক্লাসের ক্রি পাস প্রদান করিবান্দেন। এই পাস ঘারা পূর্বে বালালা, উত্তর বালালা মধ্য বালালা ঢাকা মরমনসিংহ রেলওরে এবং ডারমগুহারবার লাইনে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের প্রচারকর্যণ গমনাগমন করিতে পারিবন। জিহত মজফরপুর স্তেট রেলওরের ম্যানেজার মহাশরও, বারু নববীপঠকে দাস মহাশরকে সেকেও ক্লাসে গমনাগমন করিবার জন্ত ১ থানি পাস প্রদান করিবাছেন। আমরা এই অন্তর্গ্রের জন্ত ক্রতজ্ঞতার সহিত উচ্চাদিগকে ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি।

ব্ৰাক্ষ মিশন প্রেস—সমান্ত মন্দিরের পশ্চাতত্ব ভূমিতে এই প্রেসের ক্ষক্ত একথানি চীনের গৃহ প্রস্তুত হুতেছে। শীঘ্র এই বাটাতে প্রেসের উঠিয়া ঘাইবে। প্রেসের জন্ত অনেক ভাড়া লাগিত এবং সকল সময় উপযুক্ত স্থানও পাওয়ার সন্তাবনা নাই বলিয়াই এই গৃহ প্রস্তুত করা হুইডেচে। গৃহ নির্দ্ধাণ করিতে প্রায় সাড়ে ছয় শত টাকা বায় পড়িবে। এই তিন মাসে প্রেসের ৬৮৯ টাকার কাজ হুইয়াচে, ১০৭৪৮৫ আদায় হুইয়াচে এবং ৫৮৮ খরচ হুইয়াছে। এই তিন মাসে ০০০ টাকা দেনা পরিলোধ হুইয়াছে। এখন মোট ২৯৭৭৮৫ দেনা আছে ইহার মধ্যে ২১৬৫ টাকার আল দ্বিতে হয়। ১৭৫৮৮০০০ পাওনা আছে।

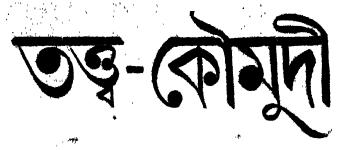
আয় ব্যব্যের হিসাব। সাধারণ বাদ্ধসমাল।

W18			- 4(¥	
প্রচার	. 27	81/5¢	# প্রচার	500 le/0
মাসিক	₹ • 81 •		+ কর্মচারীর বেত	न ५७६॥०
বার্ষিক	6810		মুদ্রাক ণ	₹8、
এক কালী	न ७२५०/५€		ডাক মাৰুল	»(>¢
লাপ্ত চাউলের		ৰিবিধ	۲۶,	
भूगा	٠ الحا -		ক মিশন	1•
नाः बाः नमात्कत्र हाना ১८५।•		পাথেয়	>110/e	
वार्षिक > > > h •		मतिस बाक्त छाजमिरगत		
শা গিক	9) •		স্থলের বেতন দা	
ভত কৰ্মে	त्र मान	२ ८५	প্রচার গৃহ	882110/21
পাৰ্গের	ِ رَبُونِ رَبُونِ	300		
विविध		511·		200 6110 3411
কর্মচারীর বেতন হিদাবে ডম্বকৌনুদী ও পুস্তক ফণ্ড		হাওলাভ শোধ	b • 11 •	
		গক্তিত শোধ	8121-	
रहेए अ	াপ্ত	. 86		
व्यवात्रक १	চুহের ভাড়া	38.0€		363616391
खांचा वश्तुकितिरगत कृत्नत		* হিড	e>40/9	
1	বার জন্ত ৫		-	
	नव रहेए	26	,	` >>9911/e
' v ,	-	1>>1/4		

riento	2004	
न्यक्षात्र शृंदश्य		• ভূন মাস পৰ্যাত
· 中學 95	"\ "	
न्यादकत		विगाय स्वना चारक केन
মঞ্জ ১৪ পঞ্জিত	'50Mdo	जनर कारावक विद्यास दुष्टिस महस्य दमना
_	>900 Hd.	चारह ५०१
পূৰ্ক ছিত	stolde	>141.
	SUPPRICE	

शृक्षक विकारतत हिनाव।

शृक्षक विकासित वाकि		ष्मभारतत भूखरकत मृगा	
মূল্য আদার	- 58915+	CMIN	21845¢
नशम विक्रम	₹8€√>•	क मिलन	> 4/>
जगारकत >৮०/	¢	विविध	wh/se
चनद्वत ७१/६	:	পুস্তকের ডাক মান্তর	7 > 115.
•	-	কর্মচান্ত্রীর বেডন	231
কমিশন	>> 640/a	म् खाइन	2011.
পুরুকের ডাক মাণ্ড	শ ভাপ ১৫	ভাক মাওল	/5•
ञ ्	₹81•	কাগ ঞ	₩
গচ্ছিত	₹4•	পুস্তক বাধাই	>-/
		গচ্ছিত শোধ	sew/se
	६ ७७॥ ८ ३ ६	•	
পৃৰ্ব স্থিত	3736/6		• (46 60
		হি ত	२५६२८५•
	२६७५५/•	•	
			२६७५५/०
	८ व ्क	रेमूनी ।	
म्ना शासि	998115¢	ডাক মাওল	७२॥/•
নগদ বিক্রব	>0/0	विविध	5017.
ফেরত শ্বমা	2010	কাগ্স	9116
		মুড়াঙ্কণ	***************
	oppha/se		
গভ ত্রৈমাসিকের		(মে পর্যাস্ত)	8>\
স্থিত	2884 Mel.	দান (মেসেঞ্চারকে	-
		গক্তিত শোধ	, 3/
	\$409H/SE	ক্মিশন	34/38
			eaghele
	•	হিত '	, c pades c
		·	24024/28
	हे फियान	प्राचिक्षांत्र ।	
मृगा खाखि	43548/e		3774
বিজ্ঞাপন কিঃ	₹8₩.	विविध -	Sb/è
नशम विज्ञन	W30		941/51
1	4	কর্মচারীর বেতন	498-
	9 < 811 > •	মুস্তাছণ	99311.
मान व्याखि	,, ,	ক্ষিশন	224/36
(उच्च को भूगी इह	(B) 000.		-
			<i>ভৰঝাৰ</i> >•
	12887	হিত	2920/6
গড জৈমাসিকের হিড	૨ ૨১ । ¢		386476
	3864.6	हे विद्यान (सरमझ २०० होका (सर्ग	



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্তিকা।

১২শ ভা**ৰ**। ১ম সংখ্যা।

১৬ই শ্রাবণ বুধবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্ষ সম্বৎ ৬০

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য ২৪০ -মফস্বলে ১ ৩ প্রান্তি বাঞ্জের মূল্য প্র

পিচিছ্ল-পথ।

নীবন পিছিলপথে সদর্শে চলিতে

চরণ খলিত হরে পড়েছি ধরার;
প্রবৃত্তি-আঁধার মাঝে আপন বাতিতে

সদর্শে দেখিতে পথ ডুবেছি মারার।

হরি লও এই দর্প, দেও হে বিনর,

দাঁড়াই তোমার বলে বলবান হ'রে;

তব জ্যোতি দেও চক্ষে প্রভু জ্যোতির্মার,

হর্মন সবল তব ক্বপার আশ্রের।

मन्भावकीय यखवा।

অভয়-বাণী-স্বধরের উপাসক মাত্রেই অহভব করিয়া থাকিবেন যে সময়ে সময়ে এরপ অবস্থা উপস্থিত হয় যথন আত্মার মধ্যে এক প্রকার গভীর অশান্তি উপদ্বিত হয়; সে সময়ে কিছুই ভাল লাগে না; অক্সসময়ে যে সকল সাধনের উপায় মিষ্ট লাগিয়াছে, এবং যদ্ধারা বহু কল্যাণ সাধিত হইয়াছে, তাহাও তথন ভাল লাগে না। সাধুসন্ধ, সংগ্রন্থ-পাঠ, সদালোচনা কিছুতেই মন ভৃপ্তি পার না। প্রাণের মধ্যে এক প্রকার গভীর নির্ক্ষনতা অহুভূত হইতে থাকে। যাহারা আত্মার প্রিয় ছিল তথন তাহাদিগকে বাহিরে দেখিতে পাওরা যায়। শাল্প বাহিরে শাধুগণ বাহিরে, নিতান্ত অন্তরক ধর্মবন্ধু বাহিরে, উপাসনা মন্দির ও উপাসক মণ্ডলী বাহিরে। আত্মার এই ঘোর নির্ক্ষনতার মধ্যে পড়িরা অনেকে এক প্রকার নিরাশার মধ্যে পতিত হন। কিন্তু ধীর ভাবে চিন্তা করিয়া দেখিলে দেখিতে পাওয়া যায়. भामात्मत्र कन्नार्गत्र कश्चर केचन मत्था मत्था भामामिशत्क अन्नभ অবস্থাতে পতিত করেন। এই অবস্থাতে তিনি বার বার আত্মাকে বনিতে থাকেন—"দেখ ভূমি যাহাদের উপর নির্ভর করিতেছিলে, ভাহারা কেহ কোথাও নাই, এখন কেবল ডুমি শার আমি। এই নির্জন পথে দেও আমিই কেবল ভোমার সহার আছি।" নিরাশার হতে আপনাকে সমর্শণ না করিরা সেই

সমরে ঈশবের এই অভয় বাণী শুনিবার জন্ত প্ররাসী হওয়া কর্তবা।

ভাবুকতা ও বিবেক-পরারণতা—ভাবুকতার হাস বৃদ্ধি আছে। ভাব এক সময়ে উচ্ছ দিত হয়, আর এক সময়ে নিত্তেজ ভাব ধরিতে পারে। শরীর মনের বিশেষ অবস্থার উপরে তাহা নির্ভর করে: স্থতরাং তাহা এক সময় থাকিতে পারে, আর এক সমরে না থাকিতেও পারে; স্থতরাং বাঁহাদের কার্য্য ও ধর্ম-জীবন প্রধানতঃ ভাবের উপরে দণ্ডারমান, তাঁহাদের কার্য্যের ও ধর্মজীবনের স্থিরতা থাকে না। ধ্বন তাঁহাদের অস্তবে ভাব-তরঙ্গ প্রবল ভাবে উচ্ছু সিত হইতে থাকে, তুথন তাঁহার৷ তাহাব উত্তেজনাতে কার্য্যে প্রবৃত্ত হন এবং উৎসাহের সহিত কার্য্য করিতে থাকেন। কিন্তু আরে আরে অন্তরের ভাব রাশি যেমন নিস্তেজ ভাব ধারণ করিতে থাকে। অমনি তাঁহাদের ধশ্বজীবনও নিত্তেজ ভাব ধারণ করে। এই রূপে সেই সকল জীবনে ১ই मिन উৎসাহ, इरे मिन निक्र शाह, इरे मिन श्रामा, इरे फेन নিরাশা, ছই দিন ঈশর-দেবা, ছই দিন স্বার্থ-দেবা দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু যাঁহারা ভাবরাশিকে বিবেক-পরারণতাব অধীন করেন, নিজের ভাবের দারা চালিত না হইয়া ঈশবের আদেশ ও উপদেশের হারা চালিত হন, সহস্র প্রতিবন্ধক সত্ত্বেও সত্যকে অবলম্বন করিয়া থাকেন এবং স্বীয় কর্ত্তব্য পালন করেন. তাঁহাদের ধর্মজীবন হুদুচ ভিত্তির উপরে প্রতিষ্ঠিত। যে জীবন বিবেক-পরারণভার উপরে প্রতিষ্ঠিত নহে, তাহা সমুদ্র পুলিনেব বালুকারাশির উপরে নির্শ্বিত গৃহের **ভার। আজ আছে** কল্য তরঙ্গে ভাসিয়া যাইবে : চিহ্নপ্ত থাকিবে না।

উপাসক-পরিবার—এক পরিবারে যতগুলি লোক থাকেন, গৃহের অভিভাবকগণ সেই সমুদরের স্থ ছঃথের জল্ল আপনাদিগকে দারী বলিয়া বিবেচনা করেন; তাঁহাদের উন্নতি ও কল্যাণের কল্প চিন্তা করিয়া থাকেন ও তজ্জল্প বিবিধ উপায় অবশ্বন করিয়া থাকেন। ধর্ম সমাজের কার্য্যের ভার যাহাদের প্রতি তাঁহাদেরও উপরে এই প্রকার দায়িছ ভার অর্পিত আছে। সেক্টপলের জীবন্টিরিতে দেখা বার, তাঁহার চেটাতে চারিদিকে

বে সকল কুদ্ৰ কুদ্ৰ খুটীর মঙলী স্থাপিত হইরাছিল, তাঁহানের কল্যাণের চিন্তাতে তাঁহার মন সর্বদা ভারাক্রান্ত থাকিত। ভিনি मृत्त्रहे थाकून, आत निक्टिहे थाकून, डीहाएरत उपनियान করিতে কথনই বিরত হইতেন না; সর্ক্রণাই লোক জ্বেরণ করিয়া সংবাদ শইতেন, ও দিতেন; চিঠীপত্র ছারা তাইটেম্ব সন্দেহ সকল নিরসন করিতেন; এবং ধর্ম-সাধনে উৎসাহ দান করিতেন। ইহাকেই বলে পারিবারিক সম্বন্ধ। পৃষ্টার সমাজের আদিম ইতিবৃত্তে দেখা যায় একবার সেণ্টপিটার একজন যুবা-পুরুষকে খুটীর ধর্মে দীক্ষিত করিয়াছিলেন; করিয়া ধর্মশিক্ষার জগু তাহাকে একজন ধর্মাচার্য্যের নিকট দিলেন। কিন্তু উক্ত ধর্মাচার্য্য সে দায়িজভার সমূচিত রূপে বহন করিতে পারিলেন না। কিছু দিন পরে হঠাৎ এক দিন পিটার ভানিলেন বে সেই যুবক গিয়া এক ডাকাতের দলে প্রবিষ্ট হইয়াছে। শুনিবামাত্র পিটারের প্রাণে এরপ আঘাত লাগিল যে তাঁহার চক্ষে জলধারা পড়িতে লাগিল; তিনি বার বার বলিতে লাগিলেন, "যদি তাহাকে রক্ষা করিবার জন্ম যত্ন করিবেন না তবে তাহার ভার লইলেন কেন ?" এই বলিয়া পিটার তৎক্ষণাৎ সেই যুবকের অনুসন্ধানে বহিৰ্গত হইলেন এবং সেই ডাকাতের দলে গিয়া সেই যুবকের কণ্ঠালিঙ্গন করিয়া বলিতে লাগিলেন, "বৎস! ভূমি আমাকে না বলিয়া আদিয়াছ কেন? তুমি চলিয়া আসাতে আমি বড় ক্লেশ পাইয়াছি।" এরপ কথিত আছে, তাঁহার প্রেম ও ব্যাকুলতা দেথিয়া সেই যুবকের কঠিন হৃদয় এমন আর্দ্র ইল: বে সে আবার পাপপথ পরিত্যাগ করিয়া তাহার বশবর্তী হইছ। এই ভাবের সঙ্গে ব্রাহ্মসমধ্যের বর্ত্তমান ভাবের তুপনা করিলে কি প্রভেদ লক্ষিত হয়! যাহারা আমাদের ক্রোড়ে আগ্রয় লইরাছে তাহাদের প্রতি আমরা উদাসীন। দেশের নান। স্থানে যে সকল ত্রাহ্ম পরিবার ও ব্রাহ্ম ব্রাহ্মিকা বাস করিতেছেন তাঁহাদের স্থ ত্ব:থের প্রতি আমাদের দৃষ্টি নাই; যে সকল যুবাপুরুষ ব্রাহ্মধর্মে দীক্ষিত হইতেছে, তাহারা কে কোথায় যাইতেছে, কে কি করি-তেছে সে বিষয়ে দেখিবার কেহ নাই। এরপ অবস্থাতে সমাজের সহিত যোগ দিয়া ধর্মজীবন সম্বন্ধে কেহু কোন প্রকার সহায়ত। প্রাপ্ত হয় না; স্থতরাং লোকের মনে সমাজের সহিত যোগ দিবার প্রবৃত্তি প্রবল হয় ন।। আমাদের এই ওদাক্ত বশত: वाकाधर्म थाठारतत्र वााचाउ इटेंट्डएह। ऋरथत् विषय् अनिरक আমাদের দৃষ্টি ক্রমে আকৃষ্ট হইতেছে এবং এরূপ আশা করা যার কোন উৎক্রপ্ত তর প্রণালী ছরার উন্তাবিত হইবে।

আশ্র গৃহ—বিহলগণ উচ্চ বৃক্ষে কুলার নির্মাণ করে;
মৃগ সকল রবিকর সন্তাপ হইতে আপনাদিগকে রক্ষা করিবার
জন্ম নিজ্ত কুঞ্জবনে আশ্রর গ্রহণ করে। প্রলোভন ও পাপ
ছইতে মৃক্ত হইবার এবং শাস্তি ও বল লাভের জন্ম আত্মারও
সেইরূপ ঈবর চরণে কুলার নির্মাণ করা আবশ্রক। ঈবরচরণের জুল্য শীতল ও সন্তাগহারী স্থান আর কোণাও দেখা
বার না। সকল বেশের ও যুগের ভক্ত সক্ষনগণ ঐ চরণেই
তাহাদের বিশ্রাম গৃহ নির্মাণ করিদা ক্যতার্থ হইরাছেন। প্রলোভন
ভন প্রশৃদ্ধ করা দুরে থাকুক, তাহাদের অসুস্কানই পাইনা

উঠে না। বধন তাহারা অগতের নেনা করিছে আছি আছি হন বা আঘাত পান, ছুটিরা অনস্ত শান্তিপ্রদ ইইনেবতার চর্পে আতার গ্রহণ করেন। দেক আলিস ভি নেলস নামক প্রকল্পন সাধু মহাত্মা বলিরা গিরাছেন, "ধন্ত সেই আত্মা বে প্রক্ত রূপে বলিতে পারে, প্রভা তুমি আমার আত্রর, আমার অবল্যন এবং ঝটিকা ও দিবলের আতপে আমার আপ্রয় গৃহ।" স্থামর কুসমর সকলেরই আছে, পুব সাবধানে থাকিলেও মাঝে মাঝে কুসমর আদিরা পড়ে। স্থামনের বিদি আত্রর গৃহ নির্মাণ না কর, তবে কুসমরে কোথার দাড়াইবে। ছদিনে বিদ বাচিতে চাও, তাহা হইলে স্থাদিনে কাল বিলম্ব না করিরা করির চরণে আপান বিপ্রাম ও আশ্রর গৃহ রচনা কর।

কালক্ষয়ে বলক্ষয়—একজন ফরাদি রাজনীতিক্স বলিয়া-ছেন, "অদ্য তাহা কথন করিবে না, যাহা কল্য পর্যান্ত ফেলিয়া রাখিতে পারিবে।" লর্ড নেলস্ন ইছার ঠিক বিপরীত উপদেশ দিয়াছেন। তিনি বলেন, মাতুষকে নির্দিষ্ট সময়ের এক কোয়াটার পুর্বেকার্যা করিতে হইবে। এই উভয় নিয়মই কর্ত্তবা পালন সম্বন্ধে অপ্রয়োজ্য। যাঁহাদের হাতে অনেক কাজ তাঁহারা জানেন, ফরাসী রাজনীতিজ্ঞের উপদেশ শুনিয়া চলিলে, বিষম বিপদে পতিত হইতে হয়। যে কাজ কাল করিব বলিয়া রাখা যায় তাহা कथनहे मन्भन्न इत्र ना, रम कान्छ कथनछ आरम ना। निर्फिटे नमस्त्रत शृद्ध काक कतिरम् अस्तक श्रकात शानस्यान परिश थारक, সাধুজনেরা তাই সর্বাদা উপদেশ দিয়া থাকেন, যথনকার যে কাজ তথন ঈশ্বরের দিকে দৃষ্টি রাখিয়া তাহা করিয়া যাইতে हरैरत। यपि प्रिथि, रकान विराग भारिश्त अग्र धर्म कीवन उन्नड হইতেছে না, তথন ভাল অবস্থা আসিলে সেই পাপের সহিত मधाम कतिय विनम्ना निम्बन्ध थाकिल हिलाद ना। य मुहूर्ल পাপ বোধ হইবে, সেই মৃহুর্তেই পাপের মুওচ্ছেদের জন্ত প্রাণণণ कतिरव। अक्रम ना कतिरल भाजनात बात कथनर क्रक रहेरव ना। व्यावात व्यक्त मिरक त्य नाधत्मत्र त्य नगर, त्मरे नगरत जाहा অবলম্বন করিতে হইবে। এখানে লর্ড নেলসনের উপদেশ গ্রহণে অনিষ্ট বই ইষ্ট হয় না। আমার চরিত্র এখনও গুদ্ধ হয় নাই, অথচ আমি যদি ভক্তির সাধন গ্রহণ করি, আমার না হইবে ভক্তি, না হইবে চরিত্র গুদ্ধি।

জীবনগত আরাধনা। — অনেকে মনে করেন, বে আরাধনা কেবল উপাসনার সময়েই করিতে হর। তাঁহারা ভাবেন না যে, যে ভাব সমস্ত দিন প্রাণে সাধন না হইল, আরাধনার সময় সে ভাব আসা সহজ বা স্বাভাবিক নহে। সমস্ত দিন অসভোর সেবা করিরা আরাধনার সময় সত্যক্ষণ বলা ঘোর কপটতা। সমস্ত দিন পর-নিন্দা, বকা বকি ও গালাগালি করিরা উপাসনার সময় প্রেমশ্বরূপ বলা মহান্ ঈশ্বরকে পরিহাস করা মাত্র। সমস্ত দিন আন্থ-সংযমের চেষ্টা কিছুই করিলাম না, বধন বাহা ইচ্ছা হইল করিলাম, অথচ আরাধনার সমস্ক পবিত্র শ্বরূপ উপলব্ধি করিতে বাওয়া গুইতা মাত্র। আরাধনার প্রভাবে করপের ভাবে যদি ধর্মজীবন সাঁথিতে পার, তবেই উপাসনা

নার্থক। বনি আবারনা করিয়ের বন্ধি ও প্রাক্তভাবে করিছে চাও, তবে সমস্ত দিন আরাবনার তার মনে আনোচনা ও প্রবিধা দ্রটনে তারা কার্ব্যে পরিপত করিতে চেঠা পাও। আরাবনা রুবর সমীপে ফকুতা ও কগত উক্তি নহে, আরাবনা জীবত রুবরকে উপলব্ধি করা। আরাবনার সমরে ক্ষরকে উপলব্ধি করিবার চেঠা বিকল, বলি অন্ত সমরে আরাবনার বিক্ষতাব ইচ্ছা করিয়া মনে পোষণ কর। কথিত আছে রাম-ডক্ত হন্ত্যান আপন কর্ উল্মোচন করিয়া অহিতে অভিতে রাম নাম লেখা দেখাইরাছিলেল। ত্রন্ধোপাসকের কর্ত্ব্য যে তাহার অধ্যান্ধ-

মোহ।—মোহ ধর্মজীবনের প্রধান অরি। বোধ হওয়া অপেক্ষাকৃত অমুকূল অবস্থা, কেননা পাপবোধ হইলে অমুতাপের উদ্রেক হয় ও পাপ পরিত্যাগের সংকর আসে। साह भाभरवाथ कतिएक स्वत्र मा। पिरनत भन्न पिन, मारमन পর মাস চলিয়া যাইতেছে, অথচ জীবন জাগিতেছে না, এরূপ অবস্থা অতি ভয়ানক। বিষয়াসক্তি এমনই কৌশল বিস্তার করে ্য সকলেই মনে করেন, মরিতে হইবে না, চিরকাল ধন মান আদি অনিতা বিষয় সম্ভোগ করিয়া জীবন কাটাইতে পারিব। জীবনের উদ্দেশ্য কি, আত্মা কোনু রাজ্যের লোক, কোপায় তাচাকে শাইতে হইবে এশকল কিছুই মনে থাকে না। দিন চাল্যা যায়, অথচ কষ্টবোধ হয় না, এবং কষ্টবোধ হয় না বলিয়া অবস্থান্তর লাভের জ্বন্স চেষ্টা হয় না। বেশ থাইতেছি, পরিতেছি, দশজনকে থাওয়াইতেছি, পরাইতেছি মনে চিস্তাই স্মাসে না যে একজনের কাছে জবাবদিহী করিতে হইবে। এই জম্ম সাধু সজ্জনেরা বিষের স্থায় মোহ পরিহার করিতে উপদেশ দেন। জীব চৈতন্তের অভিমান করে, অথচ অধিকাংশ সময় অচেতন ইহা এক অতি আশ্চর্য্য সত্য। সর্বাদা অপ্রমন্ত থাকিয়া আত্ম-পরীক্ষা করিবে, তবে আত্মাউন্নতিব পথে অগ্রসর হইবে।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

বিধি ও প্রেম।

বিধি ও প্রেম ছইই চাই। মানব জাতির যিনি আদর্শ, তাঁহাতে, বিধি ও প্রেম ছইই অনস্ত পরিমাণে রহিরাছে। বিধাতার অথগুনীর বিধির কথা কে না জানে? কি জড়জগতে কি অধ্যাত্ম-জগতে, বিধি-প্রতিষ্ঠিত বিধির কি বিবম অপরি-হার্যাতা! প্রাণান্তে তাহার বিপর্যার ঘটে না। প্রান্ত পথিকের আর্তনাদে মার্ত্তপ কি পৃথিবী দগ্ধ করিতে কান্ত হন? না অমৃতপ্র পাশীর ক্রন্দনে পাপের শান্তিদাতা অমৃতাপের অগ্নির তারতা হাস করিরাছেন? বিধির বিধি কিছ নির্দির বিধি কিছ নির্দির বিধি কিছে। সকল নির্মের মূলে দরা ও মঙ্গলভাব। রবির উত্তাপ কেন? সন্তাপহারী মেঘোদরের জন্ত। অমৃতাপের দহন কেন? পাশীর উদ্ধারের জন্ত। বিধাতার প্রকৃতিতে তাই বিধি ও প্রেমের বিচিত্র স্বাবেশ দেখিতে পাই। অনন্ত প্রেম ও অথপ্র

বিশির নিশ্ন জনত দেবতা তির আন কাহাতেও সভব নহে।
বিশি এই দেবতার অহুকরণ করিতে বান, তাহাতে জরাধিক
পরিমাণে এই স্বাবেশ থাকা আমঞ্জ । বে চরিত্রে বা বে ধর্ম
সমাজে উহা নাই, ভাষার পতন অবস্তাবী। প্রেম বিহীন বিধি
পালনের দৃষ্টান্ত রিছনী ও বৈদিক সমাজ; বিধি বিহীন প্রেমোন্মন্ততার দৃষ্টান্ত বৈশ্বব সমাজ। শার রিহলী জাতির মুক্তি
হইল লা, তাই উপার অভ্যানর শহরে আর্য্যাতি কেবল
ওক অবৈতভাবে উপনীত হইল, সেই জন্ত চৈতত্তের আগমন।
বেদ বিধিতে মুক্তি হইল না বলিয়া পুরাণ ও গীতার ।
অভ্যান। ব্রাহ্মসমাজের সকল বিভাগের লোকেই এই কণা
অন্ততঃ মুখে বীকার করেন, কিন্তু কাজে বাহা দেখা যার,
তাহা সন্তোবজনক নহে। মত ও বাবহারের মিলন করা
ব্যাহ্মসমাজের এক প্রধান উদ্দেশ্য, তাহাই বদি না হইল, তবে

আমরা এতদিন কি করিতেছি ?

ভাল, মানিলাম যে প্রেমে বিধি ও বিধিতে প্রেম মিলাইতে হইবে। এখন প্রশ্ন এই যে, ইহাদের কোনটাকে অগ্রে সাধন क्तिएक इहेरत। এই প্রশ্নের মীমাংসা ক্রিতে হইলে, বিধি ও প্রেমের স্বরূপ কি, বিধি ও প্রেম বলিলে কি বুঝার, ব্ঝিতে হইবে। বিধি কি ? সোজা কথায় ইহার উত্তর বিধাতা যা করেন। বিধাতা যা করেন, একথা বলিবার তাৎপর্য্য এই, যে ভুমি আমি যাহা করি, তাহা সকল সময়ে বিধি নাও হইতে भारत, किन्ह विधान। यादा करतन, जाहा विधि इहरवह हहरव। বিধাতা যাহা করেন, তাহা বিশ্বজনীন ও সকলের অবশ্র প্রতি-भागा। **आ**मात्मत्र वाधीन हेम्हा आह्न, ठाडू त्म विधि मानि, ठाडे না মানি; কিন্তু না মানা বিধি নহে,—অবিধি, পীপ। প্রেম কি ? সোজা কথার প্রেম বলিলে অস্তের জন্ত আত্মবিসর্জন বুঝায়। এখন পাঠক আস্থন দেখি বিধি ও প্রেমের এই চুই লক্ষণ লইয়া আমরা কোথায় উপস্থিত হই ? যথন জীবন বিধির অধীন তথন কি করি? নিজের বিধান ছাড়িয়া দিয়। কিখাতার বিধানেখ শরণাপন্ন হই। যথন জীবনে ঈশর প্রেমের অভ্যানয় হয় তথন কি হয় ৪ আত্মবশ মন ঈশ্বরণ হয়; তথন স্কল্ট ঈশ্বরের চরণে অর্পিত হয় বলিয়া আপনার বলিবার কিছুই থাকে না। বিধি ও প্রেমে স্থতরাং মূলে পরিণতির অবস্থায় বড় একটা अध्यम (मथा यात्र मा। विधि आञ्चात कार्याकरी मिरकत, এवः প্রেম আত্মার ভাবের দিকের খুরণ মাত্র। কিন্তু ইহা কেবল সিদ্ধ জীবনের লক্ষণ। সিদ্ধ জীবনে বিধি ও প্রেমেব সমাবেশ লোকে চিরকালই দেখিয়া আসিতেছে। তোমার ও আমার অসিদ্ধ জীবনের লক্ষণ অন্ত প্রকার। আমাদের বিধি রক্ষা করিতে প্রেম থাকে না. আবার প্রেমের মাত্রা বাড়াইতে গেলে বিধি শিথিল হইরা পড়ে। এ ছইটা বিষয় একেবারে সাধন করা আমাদের ক্ষতার কুলাইরা উঠে না। তাই বলিতেছিলাম, আগে কি, আগে প্রেম, না আগে বিধি, আগে উচ্ছাস, না আগে চিত্ত-णि ।

আমাদের সামায় অভিক্রতাতে আমরা যতদ্র বুঝিতে পারি-রাছি, তাহাতে বোধ হর, বিধি আগে, পরে প্রেম। ইহার কারণ ছুইটা;—প্রথম, বিধিশীালনে বুনিরাদ তৈরার না হইলে, পতনের

সম্ভাবনা অপরিহার্যা। প্রেম সাধন করিতেছি, মন স্বর্গের স্থাধ সাঁতার খেলিতেছে, সহসা বিধি পালনে জটা হইলে, অনমই পদ-খলন, আর শত শত বোজন নিমে বিষম পতন। দে পতন হইতে ভগরাইতে যে কি কট হয়, যিনি ভূগিয়াছেন তিনি জানেন বৰ্ণনা বাহুলা। দিতীয়, দ্বীশা বলিয়াছেন, পৰিআত্মায়াই बेचेत्रक पूर्वन कतिरव। विधि शानम मा कतिरम किक्रा शविक्रा সঞ্চার হইবে ? অপবিত্র মণিন চকুতে কি ঈশর দর্শন করা যার ? হিন্দু শান্তকারেরা একথার যাথার্থ্য বিলক্ষণ বুরিরাছিলেন, তাই পদে পদে সংঘদের বিধান করিরা গিরাছেন। আৰু করিতে इहेर्द, मरयम कब, बच्च धह्य वा छिन्यांत्रम कविरव मरयम कब, ইত্যাদি। বৃহষ্ তশীল ত্রদ্ধসাধকের পক্ষে এই সংব্য বে সর্বতো-ভাবে কর্ত্তব্য, ভাছাতে সন্দেহ নাই। সংব্যের পথ কঠোর ও প্রেমের পথ মধুর বলিয়া প্রেমের পথ ধরিবার প্রলোভন সহজেই উপস্থিত হয়; কিন্তু অভিজ্ঞ ব্যক্তি অগ্রে সংবদের পূথ প্রাণপণে थित्रश थोरकन । विधित्र श्वक्रफ, ७ कीवरनत मानिक यिनि श्रमतक्रम করিয়াছেন, তিনি সংযম ও বিধি পালনে প্রথমে মনোনিবেশ कतिराज मालक नाहे। यिनि श्रालात चावर छारात निकार থাকিব ও তাঁহাকে ভাল বাসিব অথচ চিত্ত অসংবত থাকিবে ইহা ভয়ানক কথা। ব্রাহ্ম সমাজের শীর্ষস্থানীয় মহাম্মাদিগের প্রশীত গ্রন্থাদি পাঠে জানা যায় যে "পাপ পুণ্যের অতীত যে স্থান সে স্থানে ভক্তি। ভক্ত কি পাপ করিতে পারে ? না। * * * পুণ্য স্থাপন হইলে তবে ভক্তি আরম্ভ হয়। যথন পাপ চলিয়া গেল. পুণ্য প্রতিষ্ঠিত হইল, তথন ভক্তিশাস্ত্র আরম্ভ হইল। মহুষা সচ্চরিত্র না হইলে ভক্তির প্রশ্নই আসিতে পারে না।"

পাঠকবর্গ, খাদ দমাজের কল্যাণ চাও ব্যক্তিগত জীবনে বিধি প্রতিষ্ঠিত কর। ইচ্ছা পূর্ব্বক বিধি লুজ্বন করি না, সরল প্রাণে একথা কি আমরা সকল সময়ে বলিতে পারি। উপাসনা ও সন্ধীর্ত্তনে সময়ে সময়ে প্রাণ বিগলিত হইল, তাহাতে কি ? তাছাতে জীবনের সম্বল হয় না, তাহাতে মুক্তির দিকে স্থায়ী ভাবে অগ্রসর হওয়া যায় না। উপাসনা ও সঙ্কীর্দ্তনে বিগলিত इ अज्ञा हारे ना. अपन कथा विलाए हिना। छेरा हारे, भूव हारे, কিন্তু আমাদের সে সময় এখন উপস্থিত হয় নাই। সঙ্গীত ও উপাসনা ঈশর-প্রেমিকদ্বিগের প্রমন্ততার সহায় হয়। আমরা এখনও ঈশ্বর প্রেমিক হই নাই, আমরা স্থতরাং উহা আশা করিতে পারি না। সঙ্গীত, প্রার্থনা আদি সকল অন্তকে এখন এক দিকে নিযুক্ত করা আমাদিগের পক্ষে আবশুক হইয়াছে। অপেকা ত্রন্ধোপাসকের চরিত্র দোব সহস্র গুণে অমার্জনীয় ও निकात পাত । উপাসনা করিব, আর স্বেচ্ছাচার করিব, স্কীর্ত্তন করিব আর যাহা যখন ভাল লাগিবে তথন তাহা করিব। ইহার উপর ভক্তির ভিত্তি নির্মাণ করা, বালুকান্ত,পের উপর গৃহ নির্মাণরপ নিতাম্ত হাস্তাম্পদ। আহন সকলে मिलिया आमत्रा विशालात विधित अत्र शायना कति, वर्ष वर्ष कथा ছাড়িয়া আমরা কুন্ত কুন্ত কর্ত্তব্য পালনে প্রাণপণে প্রবৃত্ত হই।

কেহ কেহ হরতো বলিবেন, যে আমরা কি এত অপরাধ করিয়া থাকি যে আমাদের উপর এত শাসমু হইতেছে। বাঁহারা

এই কথা বলেন, তাঁহাদের অতি আমাদের বিনীত নিবেদন, যে
কেবল বড় বড় অপরাধ বা অপরাদের বাহিরের প্রকাশ হইতে
সূক্ত আহি বলিয়া বেন আমরা অহলত না হই। অপরাদের
বাহিক প্রকাশ গিরা থাকে তানই, কিছু বাহিরে নির্পানী
হইলেই সকল হইল এরপ মনে করা উল্লিট্ন নাহ
লাল বছলপ আফিবে, ডভলপ কিছুতে নিরাপ্ত করিছে
পাল করিয়াই, তলপেন্ডা বে পাল করিছে নারি আহার সংখা
আনেক অধিক। পাণের মূল বে ল্বিড ইছা জাহা বডলন না
না বাইতেছে ভতলপ কেছাচারিভার পথ প্রার্ভ । বিধাতার
ইক্ষার ও আমাদের ইক্ষার বডলিন না মিল হর, ডভলিন বা নিলে
তডলিন সন্তান হওরা বার না, বাব্যভা শিবা হার না, গ্রেষ
লৈলের পাদদেশেও পৌহান বার না।

যদি ভক্তি চাও, চিত্তকে তদ্ধ কর, বনি প্রেছ বাতের প্ররামী হও, সংযম অভ্যাস কর, বিধাতাকে বনি লাভ করিতে চাও, তবে নিচার সহিত বিধি পালন কর।

छेभामना ।

সঙ্গ অমুসারে মামুষের প্রাকৃতি গঠিত হয়। সংসঙ্গে থাকিলে সং হওরা যায়, অসংসঙ্গে থাকিলে আুনুং হইতে হয়। সঙ্গুওণে চরিত্রের এরূপ পরিবর্ত্তন ঘটিবার কারণ এই যে যেরূপ আচার ব্যবহার বিশিষ্ট সহবাসে অবস্থিতি করা যায় সেইরূপ আচাব ব্যবহারে ক্রমে অভ্যন্ত হইতে হয়। অজ্ঞাত সারে সেই সকল ভাব চরিত্রে সংক্রামিত হইরা প্রকৃতিকে তদবস্থাপর করিতে থাকে।

সঙ্গলাভ ছারা যে কারণে মানব চরিত্রে, পরিবর্ত্তন উপস্থিত হর অর্থাৎ অধিক পরিমাণে কোন সঙ্গে বাস করিতে করিতে যেমন তাহাদের প্রকৃতিগত বিশেষ ভাবগুলি আসিরা স্বভাবকে অধিকার করে। সেই কারণে ঈশ্বরোপাসনাছারাও মানব স্বভাব্যুপরিবর্ত্তিত হইরা পুণা, ভার প্রেমের দিকে যাইতে থাকে।

উপাসনা শব্দের একটা অর্থ এই যে নিকটে উপবেশন করা।
ঈশ্বরোপাসনা অর্থাৎ ঈশ্বরের নিকটে বসা। ঈশ্বরের নিকটে
বসা এই কথার তাৎপর্য এই নর যে তিনি কোন একস্থানে অবস্থিতি করিতেছেন আমাদিগকে অনেক হাটিয়া হাটিয়া যাইয়া
তাঁহার নিকটে বসিতে হইবে। তিনি যথন সর্বব্যালী তথ্ন
'তাঁহার নিকটে যাইয়া বস্' কথার এক দিক দিয়া দেখিলে কোা
অর্থই হয় না। আমরা তাঁহার কাছেই আছি—তাঁহার সহিত
বিচ্ছিরতাও কোন ক্রমেই সম্ভবে না। তবে তাঁহার নিকলে
উপবেশনের অর্থ এই যে আমাদের আত্মা তাঁহার অভিমুখে না
থাকিয়া বিমুখে অবন্থিতি করিয়া থাকে। তিনি পূর্ণ স্থার প্রেম,
পবিত্রতার আধার আমরা অপ্রেম অস্থার ও অপবিত্রতার স্থাকি
আধার অর্থাৎ আমাদের আত্মা ঈশ্বর-বিরোধীভাবাপর স্ট্রী
অবন্থিতি করে। এই বিরোধী ভাব অ্চাইয়া তাঁহার ভাবাসুর্ক
চরিত্র লইয়া যদি থাকিতে পারি তবেই আমরা তাঁহার সহবাদে
থাকি বা তাঁহার নিকটে উপবেশন করিয়া থাকি।

এই বে ঈশনবিলোধী জনমান জনান জনান প্রান্ত প্রান্ত জনান পর করাই আমালের সক্ষা এই জনানিত হয় এই একট গত সাম্য ক্ষাত করিতে হাজে জনান জনান জনান জনান নিকটে বসিবার ক্ষাত্রে ক্ষাত্রিক্ত ক্ষাত্র ক্ষাত্র ক্ষাত্র

উপাসনা বাবা জীবার ক্রিবার ব্রিনার আশা করিবার হেড় এই বে উপাসনার বাবা কিছু অন্তর্ভিত হর, ভাষার প্রভ্যেকটাই আমানের প্রাণকে সেই দিকে লইবা বাব; ভাষার সঙ্গে বনিষ্ঠতা সাধনের সাহাযা করে।

এখনতঃ উপাসনা কালে আঘরা ভাহার আহাধনা ক্রিয়া থাতি অধাৰ জাহার তব ভতি করিয়া থাকি, এই কার্বাটী থারা আমাহিগকে কাষ্য হইরা উহিার স্বরূপ সমূত্র করিবার সভ বছুশীল হইতে হয়। স্বন্ধপ কি ভাছা অত্তৰ ক্রিতে না পারিবে স্তব করা সম্ভবে না। অমূভবের পরিমাণের যতই ভারতম্য থাকুক না কেন সামান্ত রূপেও অভুত্তব করিতে না পারিলে—স্বরূপ সহত্রে জ্ঞান লাভ করিতে না পারিলে কথনই আরাধনা সম্ভবে না। এজন্ত যতই অমুভবের চেষ্টা ইইতে থাকে, যতই ভাঁহার ্র ভিন্ন স্বরূপের ব্যাখ্যা হইতে থাকে, ততই আমরা তাঁহার ভাব লাভ করিতে থাকি। তৎপর বধন ধাানে মন নিবিষ্ট **इह, उपन (यमन এक्शिक् अञ्चल इहेट्ड थाक्, एउमनहे** তাহাতে গভীর হইতে গভীরতরক্রপে মগ্ন হইয়া শ্বরূপ চিস্তায় गन वाशृष्ठ **रहेबा शर्फ। मानरवत्र मन**∘रव विवरत्र व्यक्षिक পরিমাণে চিন্তা করে, তদত্বরপ অবস্থা প্রাপ্ত হয়। সং বিষয়ের চিন্তার মূল সং হয়, অসং বিষয়ের চিন্তায় মল অসং रहेट थारक। टिज्जमरावत जिल्लाव टिजना नाज करत, अज বা মৃত ভাবাপর বিষয়ের অফুণ্যানে জড়ত্ব বা মৃতত্ব লাভ করে। স্বতরাং দেখা যাইতেছে যে মাত্রুষ যে পরিমাণে ঈশ্বর-ধাানে নিযুক্ত থাকিবে, সেই পরিমাণে তাহার প্রকৃতি ঈশ্বর ভাবাপন্ন হইবে। তিনি পুণাময় তাঁহার চিন্তায় মন পুণাভাবে পরিপূর্ণ হইতে থাকে, তাঁহার প্রেম, ফ্রায় পবিত্রতা প্রভৃতির অমুধ্যানে যত অধিক পরিমাণে নিযুক্ত থাকা যাইবে, তত পরিমাণে প্রেম, স্থায় এবং পবিত্রতা জীবনে সংক্রামিত হইয়া প্রাণকে তাঁহার নিভ্য সহবাসের উপযোগী করিতে থাকিবে।

উপাসনার আর একটা অঙ্গ প্রার্থনা, প্রার্থনা বাঁহার নিকটে করিতে হয় তাঁহাকে সম্মুখে দেখিয়া করাই রীতি। অন্ততঃ তিনি কাছে আছেন, আমার কথা ভনিতেছেন, প্রাণে এরূপ বিশাস না থাকিলে শৃক্তের নিকট আর কেহ প্রার্থনা করিতে পারে না। স্থভরাং ঈশরের নিকট প্রার্থনা করিতে হইলেই স্ক্রীত্রে তাঁহাকে নিকটে অন্থভব করিতে হয়, তাঁহার সায়িধ্য অন্থভব বে পরিমাণে অধিক হইবে সেই পারিমাণে নিক্রতাও আশার সহিত প্রার্থনা উথিত হইতে থাকে।

শতএব উপাসনার এই তিনটা কার্যাই আমাদিগকে ঈশরের নিকটে গইরা বার; তাঁহার সারিধ্য অমুভব করিতে সক্ষম করে; তাহার সহবাসের সম্ভ আমাদের আত্মাকে প্রস্তুত করে। ইহা নিশ্চরই জানা উচিত বে আমরা তাঁহার নিকটে বনি বসিতে অভ্যন্ত না হই, বনি আমাদের প্রাণ তাঁহার অমুধ্যানকে সর্বাপেকা প্রিয় বন্ধ বনিরা অমুক্তব না করে, আমরা বনি অধিক বিষয়ে বিশ্ব বিষয়ে সুখের হেছু ব্রিয়া অন্তব বিষয়ে বিশ্ব বিষয়ে সাভ ক্ষমন্ত সভব নয়।
বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে সাভ ক্ষমন্ত সভব নয়।
বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বাতের
কার্য এই বে কামানের প্রকৃতি তন্ত্রপ হইবে; কামানের
কার্যকা তাঁহাকে লইরা বাাপ্ত থাকিবে; সংকর তাঁহার
ভাবাছরপ হইবে। প্রাণ তাঁহার ভাবে পূর্ণ হইবে কর্যাৎ
প্রেম, পরিক্রতা, ভার প্রভৃতি বারা প্রাণ ক্ষিত্রত হইবে। ক্ষমর্
লাভের ক্ষর্য বিশ্ব এই হব, ভাহা হইবে ক্ষামানের বর্তমান ক্ষমরবিধ্বাধী ভাবকে জোর ক্রিয়া ক্ষম্যাভিম্বী ক্রিতে হইবে।
ভাহার চিন্তা আর্যাধনা প্রভৃতি বারা প্রাণ বাহাতে তাঁহার
ক্রিয়ে বিন্তে পারে ভাহার চেন্তা ক্রিতে হইবে।

ৰাহারা প্রার্থনাকে অলসের প্রলাপোক্তি বা ভোষামোদ মনে করেন, ভাঁহারা যদি অধিক সমর দীখর ধ্যানে নিযুক্ত হইতে পারেন তাহাতেও যথেষ্ট লাভের সম্ভাবনা আছে। কারণ সেই স্বন্ধপ চিন্তার প্রকৃতি তদভাবাপর হইবেই হইবে। চরিত্রে ঐশবিক ভাব সংক্রামিত হইবেই হইবে। ত্ৰতরাং উপাসনাকে বে দিক্ দিয়াই দেখা যাক না কেন আত্মার অতি উপাদের পরিপৃষ্টির হেভুরণে—কল্যাণের কারণরূপে প্রতীর্মান হইবে। আমরা ঈশবের প্রবণ মনন এবং গুণ-কীৰ্ত্তন প্ৰভৃতি দারা যেমন তদ্ভাবাপর হইতে পারি, সংসারের कार्गामिट्ड ७ छाहात विष घरिवात मञ्जावना नाहै। यमि প্রকৃতি প্রেমনার হয়, যদি প্রকৃতি পুণা ও স্তামে অধিকৃত হয় তাহা হইলে আমরা সদাসর্বদা সেই সক্রু মহদ্ভাবে পরিপূর্ণ থাকিয়া কার্যাক্ষেত্রে বিচরণ করিতে পারি। লোকের প্রতি বা তাঁহার স্ট অক্তান্ত প্রাণির প্রতি প্রেম পূর্ণ ব্যবহার ছারা আমাদের প্রকৃতি আরও প্রেমিক হইতে পারে। আমরা যদি স্থায়াত্মণত হইয়া কার্যা করিতে থাকি তাহা ছারা সেই স্থায বানেরই সহবাসের উপযুক্ততা লাভ করিতে পাঁবিব। একমাত্র শ্রবণ কীর্ত্তন মনন প্রভৃতির নামই যে উপাসনা ভাছাও নয়, কিন্তু যে কিছু কার্য্য দারা আমরা ঈশবের সহিত একভাবাপন্ন হইতে পারি, তাঁহার প্রকৃতির অত্বরূপ প্রকৃতি পাইতে পারি বা তাঁহার সহবাসে থাকিতে পারি তাহাই উপাসনা।

এই উপাদনা আত্মার ক্ষ্ণার অন্ন পিপাদার বারি। আমরা যে পরিমাণে বহিম্থীন প্রকৃতি পবিত্যাগ করিয়া—বাহিরেব সক্ষ-ছাড়িয়া অন্তর্ম্থ প্রকৃতি লাভ করিব, অন্তরের ভিতরে যাইয়া স্থ্য ও লাভি পাইতে পারিব, দেই পরিমাণে ঈশ্বর সহ-বাসের অধিকারী হইতে পারিব, বাহ্ বিষয়ে আসক্তি ঈশ্বর লাভের প্রধান অন্তরায়। উপাদনা ধারাই এই অন্তরায়ের হাত ছইতে বিমৃক্তি লাভ করিতে পারিব। স্থতরাং দেই চেটাই আমাদের প্রাণে প্রবল হউক।

षाञ्च-वनिमान।

সার্দ্ধণত বংসর অতীত হইল, পৃথিবী পরিবেটনকারী কাপ্তান কুক অট্টেলিয়া ও আমেরিকার মধ্যস্থানে প্রশাস্ত মহা- সাগরে একটা ৰীপ পুঞ্জ আবিকার করেন। এই ৰীপপুঞ্চ হাউ-ইয়ান নামে প্রসিদ্ধ। হাউইয়ান ৰীপপুঞ্জের মধ্যে সাঞ্ইচ ও মলকাই অতি বিখ্যাত। প্রথমোক্ত ৰীপের রাজধানী হনপূল্ নগর ও শেষোক্ত ৰীপে কালাবাও ও কালাপাপা গ্রামে কুঠাশ্রম প্রতিষ্টিত। এই কুঠাশ্রম খৃষ্টীর ধর্মবাজকদিগের আত্মত্যাগের জলস্ত দৃষ্টান্ত।

কিরূপে এই দ্বীপপুঞ্জে খৃষ্ট ধর্ম প্রবেশ করিল, তাহার ইতি-হাসও অতি অভুত।

১৮০৯ খুটাব্দে আমেরিকার ইয়েল কলেজের ধারদেশে একটী পাংশু বর্ণ বালক চীৎকার করিয়া কাঁদিতেছিল। ইহার নাম অব্কিয়া, হাউইয়ান দ্বীপ হইতে আমেরিকায় আসিয়া পড়িয়াছে। তাহার পিতা মাতা স্থদেশে নিহত হইয়াছে, অব্ তাহার ছয়পোষ্য ভ্রাতাকে স্কুদ্ধে করিয়া পলাইতেছিল, একজন শক্র আসিয়া বর্শাঘাতে তাহার প্রাণ বধ করিল, অব্ বন্দী হইয়া কারাগারে রহিল। ঘটনাচক্রে অব্ আমেরিকায় আসিয়া পড়িয়াছে, নিরাশ্র অবস্থায় ইয়েল কলেজের ধারদেশে পড়িয়া পড়িয়া কাঁদিতেছে। কলেজে ডোয়াইট নামক একজন উপাধি ধারী ভদ্রলোক বাদ করিতেন। তিনি দয়াপরবশ হইয়া তাহাকে আশ্রেয় দিলেন। হাউইয়ান হইতে টেয় ও হপু নামক আরও ত্ইটা বালক আসিয়াছিল, তাহারাও ডোয়াইটের গৃহে আশ্রেয় পাইল। ইহারা ইয়েল কলেজে ফুন্লর রূপে শিক্ষিত হইল—খুট ধর্মে ইহাদের অনুরাগ বন্ধ্যল হইল।

এই ঘটনার দশ বৎসর পরে দাদশজন পুরুষ ও রমণী হাউইযান দ্বীপে খৃষ্ট ধর্ম প্রচালক হইলেন। হাউইয়ান দ্বীপপুঞ্জে দেবতার
নিকট নরবলি দেওয়া হইত; শিশু হত্যা, প্রস্তরাঘাতে ক্রিপ্ত
তত্যা, বৃদ্দিগকে জীবস্ত অবস্থার মৃত্তিকার প্রোধিত করা হইত।
দেবতার নিকট যে সমৃদয় স্থাদ্য বস্তু নৈবিদ্য দেওয়া হইত,
দ্বীলোকেরা জীবনে কখনও তাহা আহার করিতে পারিত না।
নারিকেল, কলা প্রভৃতি মাহার করিলে রমণীদিগের প্রাণদণ্ড
তইত। দেব মন্দির নির্মাণ কালে দেবতার প্রীত্যর্থে বহু সংখ্যক
নবহত্যা করা হইত। সাধারণ লোকের ছায়া যদি রাজার
শরীব স্পর্শ করিত, যদি তাহারা রাজপ্রাসাদে পদনিক্রেপ করিত
তাহা হইলে প্রাণদণ্ডের আজা হইত। জাতিভেদের প্রকোপে
ও পৌত্তলিকতার দৌরায়ো হাউইয়ান দ্বীপপুঞ্জের অধিবাসিগণ
জীবন্য ত হইয়াছিল।

১৮২০ খৃষ্টাব্দের ৩১ মার্চ্চ তারিথে খৃষ্টধর্ম প্রচারকণণ হাউই দ্বীপে পদার্পণ করিলেন। তথন প্রাচীন নরপতি কামেহামেহা প্রনাক গমন করিয়াছেন, ফ্রিনি জাতিভেদ ধ্বংস করিয়া, স্ত্রীলোকদিগের প্রতি যে অত্যাচার হইতেছিল, তাহার পথ প্রতিরোধ করিয়া ইহলোক হইতে চলিয়া গিয়াছেন, কিন্তু প্রজানিগকে পোত্তলিকতার হস্ত হইতে উদ্ধার করিয়া যাইতে পারেন নাই। কামেহামেহার পুত্র লিহোলিহো তথন তথাকার রাজা ছিলেন। প্রচারকদের আগমন বার্ত্তা ভনিয়া লিহোলিহো তাহার পাঁচ রাণীর সহিত প্রচারকদের সঙ্গে দেখা করিতে আসিলেন। রাজা ও রাণীগণ তথন লান করিতেছিলেন, উল্ক

অবস্থাতেই ভাঁহাদের নিকট আসিলেন। প্রচারকগণ তাহাদিগকে বন্ধ পরিধান করিরা আসিতে অন্থরোধ করিলেন। রাজা
ভারপর পারে মোজা ও মাধার টুপি দিয়া দেখা করিতে আসিলেন। কিন্তু বন্ধ পরিধান বে করিতে হয় ভাহা জানিতেন মা।

সদ্ধ প্রত্তাকে কাপিওলানি নারী একজন সন্তান্ত রমণী
সর্ক প্রথম খৃষ্টধর্মে দীক্ষিতা হন। ইহার শরীর চারি হন্ত দীর্ঘ
ছিল, ইনি অতি প্রতিভাশালিনী রমণী ছিলেন। খৃষ্টধর্ম প্রহণ
করিয়া ইনি বছ লোক সমভিব্যাহারে আগ্রেয় পর্কতে গমন
করিলেন, যেখানে ধাতু দ্রবীভূত হইয়া প্রকাশ্ত আগ্রেয় সরোবর হইয়াছে, সেই খানে গমন করিয়া অগ্রিকুশু মধ্যে পেলী
নামক দেবমূর্ত্তি নিক্ষেপ করিলেন। দর্শকগণ ভরে অভ্নস্ত হইল
কাপিওলানি উচ্চৈঃম্বরে বলিতে লাগিলেন, যদি দেবতার
সাধ্য থাকে, তবে আমার অনিষ্ট সাধন কর্মক। কিন্তু দেবতা
তাহার কোন অনিষ্ট করিতে সক্ষম হইল না। তথন দর্শকগণ
ব্রিল দেবতা নিতান্ত অকর্মণা—এই ঘটনার পর তথাকার
এক তৃতীয়াংশ লোক খৃষ্টধর্মে দীক্ষিত হইল।

ইহার পর প্রশাস্ত মহাসাগরের দ্বীপ সমূহে শৃষ্টধর্ম প্রচার করিবার জন্ম দলে দলে প্রচারকগণ ইউরোপ ও আমেরিক। হুইতে গমন করিতে লাগিলেন।

বেলজিয়াম হইতেও রোমান কাথলিক প্রচারকগণ প্রশাস্ত মহাসাগরের দ্বীপ সমূহে ধর্ম প্রচার করিতে যহিতেন।

১৮৪১ খুষ্টাব্দের ৩ রা জানুয়ারী তারিখে বেলজিয়ামের অন্ত র্ণত লোবাইন নগরের নিকটে বোদেফ ডামিয়েনের জন্ম হয়। ডামিয়েনের পিতা ধর্মপরায়ণ ও মাতা প্রগাঢ় ভক্তিমতী ছিলেন। ডামিয়েনের জ্বোষ্ঠভা তা রোমান ক্যাথলিক ধর্ম যাজকের কাল শিকা क्तिर्द्धन। यारमक जीमरायत्नत वन्नम यथन ১৮ वरमत भूर्ग इय, তথন তিনি পিতার সহিত ভ্রাতাকে দেখিতে যান। বাল্যকাল হইতেই যোসেফের প্রাণে ধর্ম ভাব জাগ্রত হইাছিল-ভিনি ধর্ম गांककरनत कीवन रमित्रा मुक्ष इटेरनन এवः चग्रः जित्रकोमार्गा-ব্রত অবলম্বন করিয়া জনসেবায় জীবন অতিবাহিত করিতে বাাকুল হইলেন। যোদেফ পিতাকে মনের ভাব খুলিয়া বলি-লেন-পিতা পুত্রের ব্যাকুলতা দেখিয়া তাঁহাকে সৎকার্য্য হইতে নিবৃত্ত করিলেন না-এক পুত্রকে ধর্মের নামে ইতিপুর্বে উৎসগ করিয়াছিলেন, দ্বিতীয় পুত্রকেও ধর্মের নিকট উৎদর্গ করিলেন। এ জগতে এমন পিতা করজন আছেন ? পুত্রকে স্রাাসী ছইতে দেথিয়া কয়জনে স্থী হইতে পারেন ? যোসেফ অতঃপর এক বার মাতার আশীর্কাদ লইবার জন্ত গৃহে গেলেন, পুণ্যবতী माठा भूखरक जैचरतत इस्ड व्यर्भन कतित्रा विनात निरमन। রোমাণ ক্যাথলিক ধর্ম প্রচারক হওরা যে সে কথা নতে। রোমাণ ক্যাথণিক প্রচারকগণ চিরকৌমার্য্য বত, দারিক্সব্রত ও অধীনতা ত্রত গ্রহণ করেন। ধর্মের নিকট আত্মোৎসর্ম করিয় আত্মহারা হইরা যান। যোসেকের জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা প্রশাস্ত মহা-मागदतत बील ममृद्द गाँदेगांत जन्म चालिंह इदेताहित्सन। किंग যাত্রা করিবার প্রাক্তালে প্রচণ্ড কর রোগে মুডপ্রায় ছইলেন, চিকিৎসকগণ ভাঁছাকে যাইতে বারণ করিলেন। বোলেফ প্রাতা^{কে} বলিলেন "আপনার গম্য স্থানে আমি বাইতে প্রস্তুত আছি!

বদি আমি পেলে আপনি ছমী হন, তবে এখনই বাইতে গারি।" প্রাভা বলিলেন "প্রালাভ মহানাগরের ঈশ্বর বিহীন বর্মর দিগকে ধর্মে আনিবার কন্ত কীবন উৎদর্গ করিতে আমার বড় ইচ্ছা ছিল, কিন্ত আমার হারা দে কার্য্য হইলনা, বদি তুমি গাইতে পার, তবে আনক্ষের সীমা থাকিবেনা।" বোসেফ যাহার নিকট ধর্ম শিক্ষা করিতেন তাঁহাকে না জানাইরাই ধর্ম সমাজের অধ্যক্ষদের নিকট আগনার অভিলাব জানাইলেন। অধ্যক্ষগণ তাঁহাকে প্রদাভ মহাসাগরে পাঠাইতে দীকত হইলেন। একদিন বোসেক পড়িতেছেন, এমন সময় তাঁহার শিক্ষক আসিরা কহিলেন "অধীর বালক! তুমি এই পত্র লিখিরাছ, তোমার এখনই যেতে হবে।" যোসেক এই সংবাদ শুনিরা আনক্ষে লক্ষ্য উঠিলেন, অধীর হইরা বন্ধনমুক্ত অখের স্থায় বাহিরে গিরা দৌঞ্চাইতে লাগিলেন। অস্থাস্ত ছাত্রেরা বলিতে লাগিল "বোসেক কি পাগল হইরাছে ?"

উনবিংশ বর্ষ বয়য় যোদেক জনতিবিলম্বেই য়দেশ পরিত্যাগ করিলেন। প্রশান্ত মহাসাগরের নানা বীপে বাদশ বংসরকাল প্রচার করিরা শুনিলেন, মলকাই বীপে কুঠ রোগীগণ ভীষণ যন্ত্রণা পাইতেছে। তাহারা লোকসমান্ত কর্ত্তক পরিত্যক্ত হইয়া কুকুর বিড়ালের ভায় গাছের তলায় ও মাঠে পড়িরা মরিতেছে। তাহাদের কল্যাণের ক্রন্ত জীবন উৎসর্গ করিতে প্রস্তুত হইলেন। তিনি জানিতেন কুঠ রোগীর সেবা করিলে ভাছাকেও ঐ রোগাক্রান্ত হইতে হইবে, কিন্তু তিনি তাহাতে ভীত হইলেন না। ১৮৭০ খুটাকে তিনি মলকাই বীপে পদার্পণ করিয়াই আপনাকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন "জোসেফ ইহাই তোমার জীবনের একমাত্রীকার্যা।"

टाउँदेशान बीर्लपुत्र याहारमत कूर्वरतांग इटेंछ, छाहामिशरक মলকাই দ্বীপে পাঠাইয়া দেওয়া হইত। মলকাই দ্বীপে কুঠরোগী ভিন্ন আর কেহই বাস কবিত না। হাউইয়ান দীপ সমূহে ৪০ হাজার লোক বাস করে, তন্মধো ২ হাজার लाक कुछत्त्रांशाका छ। मनकार बीट्य এर नकन द्रांशीनिशटक পাঠাইয়া দেওয়া হইত, কিন্তু তাহাদের ঘর ছিল না, ঔষধ ছিলনা, পানের জল ছিল না। যুবক যুবতী ঘোর ব্যভিচারে ^{বত থাকিত}, এক প্রকার গাছের মূল সিদ্ধ করিয়া মদ প্রস্তুত করিয়া গাইত, আর ৪ | ৫ বৎসর অশেষ যন্ত্রণা সহিয়া মার্রা याहे छ। कानांत्र छामित्वन मनकार चीत्र याहेबा मर्स न्ध्रशस তাহাদের জন্ম গৃহ প্রস্তুত করিতে আরম্ভ করিলেন। জলাভাবে তাহারা বন্ত্র ধৌত করিতে পারিত না, কুঠের পুঁল রক্তে ^{বল্লে} মহা তুৰ্গন্ধ হইয়াছিল। ডামিয়েন সে তুৰ্গন্ধে তাহাদের নিকট যাইতে পারিতেন না। দূরবর্ত্তী পর্মতাভ্যন্তরন্থ क्रितानंत्र इहेट्ड नम् त्यार्थ क्रम व्यानात्र वावका क्रितम । व्यतः ^{কৃষ্ঠরোগীদের ঘা প্রাঞ্চালন} করিয়া দিতে আরম্ভ করিলেন, স্বরং ভাছাদের গাত্র ধৌত, মৃত্যুকালে সাম্বনা দান, মৃত্যুর পর সমা-^{বিস্তু} করিতে লাগিলেন। ভাঁহার বেহ মমভার সকলেই ভাঁহার বশীভূত হইয়া পড়িল। তথন তিনি তাহাদের চরিত্র সংশোধনের ^{বাবহা} করিলেন। পুরুষ ও রমণীদিগের বাসের জভ্ত পৃথক্ ^{क्षान} निर्देश कतिया निर्देश । जाहानिशस्य व्यव कार्या

ও অসং চিত্তা ও কথা পরিত্যাগ করিবার জন্ম অমৃরোধ করিতে লাগিলেন। একে একে বছলোক মদ্যপান, ব্যভিচার ও কুংসিং ব্যবহার পরিত্যাগ করিতে আরম্ভ করিল। তই
একজন করিরা ধর্মের মধুর আহাদ পাইতে লাগিল। দয়া, দান,
সমবেদনা ও ধর্মশিকা কুঠরোগীদিগকে নব জীবন দান করিল।
ক্রেনে তথার ধর্ম মন্দির প্রতিষ্ঠিত হইল। ফাদার ডামিরেন বাল্য
কালে স্তর্ধের ও রাজ মিল্লীর কাজ শিথিরাছিলেন, এখন নিজ
হন্তেই মন্দির নির্মাণ করিলেন। যেথানে মদ্যপান ও ব্যভিচার
ছিল, দেখানে ধর্মের মধুর লকীত দিবানিশি গীত হইতে লাগিল।

कालांत छात्रियान ७५ वर्ष क्यारमत मगत्र मनकारे बीरा शिवा-ছিলেন, > ০ বৎসর অবিল্রান্ত পরিল্রমের পর এক দিন দেখিলেন তাঁহার শরীরে কুঠের বিষ প্রবেশ করিরাছে। 🖺 চিনি ডাক্তারকে ভাকিয়া তাঁহার শরীর পরীকা করিতে বলিলেন। ভাক্তার তাঁহার অঙ্গ পরীকা করিয়া বিষয় হইলেন। ডাক্তার বলিলেন "আমার মুথ দিরা কথা সরিতেছে না, যাহা সন্দেহ করিতেছেন, তাহাই হইয়াছে।" ফাদার ডামিয়েন বলিলেন "আমি এ কথা ভনিয়া কিছু মাত্ৰ ভীত হইলাম না, আমি জানিতাম নিশ্চ-রই কুষ্ঠ রোগাক্রান্ত হইব।" ঈশ্বরের ইচ্ছা শিরোধার্য্য করিয়া ডামিয়েন আরও উৎসাহের সহিত থাটতে লাগিলেন। কেহ কেহ তাঁহাকে আরোগ্য লাভের জন্ম মলকাই পরিতাাগ করিতে অমুরোধ করিলেন। কিন্তু তিনি দৃঢ়তার সহিত বলিলেন "আমি কুষ্ঠ রোগীদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আরোগ্য লাভ করিতে চাই না আমার অমুপস্থিতে শত শত লোক ক্লেশ পাইবে তাহা আমি সহু করিতে পারিব না ?" দিন দিন ক্রীন কঠিন হইতে লাগিল, তথাপি ভামিয়েনের উৎসাহ উদামের ব্লাস হইল না। তাঁহার মাতা পুত্রের কুর্চরোজার সংবাদে মৃতপ্রায় হইলেন। তিনি আর অধিক কাল জীবিত রহিলেন না।

১৮৮৩ দনে তাঁহার শরীরে কুঠ রোগের ছিল প্রকাশ পার ও ৬ বংসর কাল কঠ পাইরা বিগত এপ্রিল মাসে তিনি ইললোক পরিত্যাগ করিরাছেন। মৃত্যুর প্রাক্তালে তাঁহার ধর্মভাব আরও উজ্জ্বল হইরা উঠিয়াছিল।

২৮এ মার্ক ডামিয়েন মৃত্যু শ্যায় শরন করিলেন, আর সে শ্যা হইতে উঠিতে পারিলেন না। ৩০এ তারিথ তিনি মৃত্যুর জন্ত প্রস্তুত হইলেন। ১লা এপ্রিল তিনি সহচরদিগকে বলিতে লাগিলেন "দেখ আমার কুঠের ঘা শুকাইয়া যাইতেছে,উপরকার চামড়া কাল হইয়াছে, এই সকল কুঠ রোগীর মৃত্যুর চিহু। আমি কত কুঠ রোগীকে মরিতে দেখিয়াছি মৃত্যুর পুর্বেষ্ক সকলেরই ঘা শুকাইয়া যায়। আমার মৃত্যুর আর বেশী বিলম্ব নাই। মৃত্যুকালে ইচ্ছা ছিল, একবার ধর্মগুরুর আর বেশী বিলম্ব নাই। মৃত্যুকালে ইচ্ছা ছিল, একবার ধর্মগুরুকে দেখিয়া যাই কিন্তু সে বাসনা পূর্ণ হইল না। এবার বড়দিন স্বর্গীয় পিতার সহিত সজ্যোগ করিব।" হরা এপ্রিল, তিনি বলিলেন "ঈশ্বর কেমন দ্যালু, আমি একাকী এখানে আসিয়াছিলাম, এখন কুঠরোগীর সেবার জন্ম ছইজন প্রোহিত ও ছইটা ভগিনী এখানে সমাপ্ত হইয়াছেন, ইহাতেই আমার মনে শান্তি পাইয়াছি। আমার আর ইহলোকে থাকার প্রেয়াজন নাই, আমি শীম্বই ঐ লোকে চলিয়া যাইব।" এই বলিয়া তিনি অঙ্গুলী ছারা আকাশ দেখা-

्रेट्ट गानित्नमः। कार्यात्र अकलन नेस्ट्रज पनित्नमः विभिन्नान वक्क सामाटक नाम सक्रम,साशमात्र वक्क शतिधान कतिहा द्वेस स्रोध-নার হত অন্তঃকরণ লাভ করিতে পারি।" ডানিরেন বলিলেন "আপনি বন্তু লইয়া কি করিবেন, এই বন্তু বে কুঠের পুঁজ রক্তে বিষ্ঠাক্ত হইয়াছে।" ধীরে ধীরে ভামিরেনের বল কর ছইতে লাগিল। তিনি আর সে ভূমি শ্যা হইতে উঠিতে পারিলেন না। তাঁহার বস্ততঃই ভূমিশ্যা ছিল। অতি গরিব কুটির প্রধ্যা অপেকা তাঁহার মৃত্যু শ্ব্যা কোন অংশেই শ্রেষ্ঠ ছিল না। যিনি কুটিদের ব্যন্ত কত টাকাই ব্যন্ত করিয়াছেন, তিনি কিনা এমন গর্মিব ছিলেন, যে নিজের ছইথানা বস্ত্র ছিল না, প্রান্তে বিবর্ণ শয়াবন্ধ বদলাইবার উপার ছিল না। ১৫ই এপ্রিল তিনি নীরবে এ দেহ পরিত্যাগ করিরা চলিয়া যান। মৃত্যুর পর দেখা গেল, কুঠের কোন চিহ্ন নাই। তাঁহাকে তাঁহারই ইচ্ছামুসারে এক বুক্তলে সমাধিত্ব করা হয়। যথন তিনি সর্ব্ধ প্রথম মলাকাই ৰীপে পদাৰ্পণ করেন ডখন তাঁহার গৃহ ছিল না, এই বুক্ষ তলেই রাত্রি যাপন করিয়াছিলেন। তাঁহার পবিত্র দেহ এই বৃক্ষতলেই চিরকালের জন্ত শরান রহিল।

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

বংশবাচী।

নিম লিখিত প্রণালী অন্তুসারে বংশবাটী ব্রাহ্মসমাজের ৭ম বার্ষিক উৎসব হইরা গিরাছে।

১৮ই জ্রেষ্ঠ, শুক্রবার, সন্ধ্যার পর, বংশবাটী ব্রাক্ষসমাজের জন্ম দিন উপলক্ষে, বংশবাটী সমাজ মনিবের উপাসনা এবং "সংস্থার অনিত্য, সারাৎসার পরমেশ্বর নিত্য," এই বিষয়ে উপদেশ হয়। শ্রীযুক্ত নগেক্তনাথ চট্টোপাধ্যায় আচার্য্যের কার্য্য করেন।

১৯এ জৈচি, শনিবার, সন্ধ্যার পর, শ্রীযুক্ত নগেব্রুনাথ চট্টো-পাধ্যায় মহাশয়ের বাটীতে, ধর্মালোচনা হয়।

২০এ জৈচ রবিবার, সন্ধার পর, সমাজ মন্দিরে উপাসনা, সংগীত ও সংকীর্তন হয়। আচার্য্য শ্রীযুক্ত নগেজনাথ চটো-পাধাায়।

এই রূপ তিন দিবস, বংশবাটী আক্ষসমাজের জন্ম দিন উপ-লকে, উপাসনাদি ! হইয়া >লা জাষাঢ় হইতে উৎসব আরম্ভ হয়।

> লা আষাত, শুক্রবার, সন্ধ্যার পর, বংশবাটী প্রাহ্মসমাজ মন্দিরে উপাসনা, "বর্ত্তমান সময়ে এদেশে ধর্মেরঅভাব" বিষয়ে উপদেশ ও সংগীত হয়। আচার্য্য শ্রীবৃক্ত শক্তুনাথ গড়গড়ি।

২ রা আবাঢ়, শনিবার, সন্ধাঁ আ ঘটিকার সময়, রাজা স্থরেক্স দেব রায় মহাশয়ের ভবনে প্রকাশ্র বক্তা। বক্তা শ্রীযুক্ত নগেক্সনাথ চটোপাধ্যায়। বক্তৃতার বিষয়—"সার ধর্ম কি ?" বক্তৃতা প্রায় ২ ঘণ্টাকালব্যাপী হইয়াছিল। বক্তৃতা শ্রবণে সকলেই উপকৃত হইয়াছেল। বক্তৃতার পূর্বেও পরে নবনীপ নিবাসী প্রসিদ্ধ গারক শ্রীযুক্ত রাজকুমার বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় গান করিয়াছিলেন।

ত রা আবাঢ়, রবিবার প্রাতে, প্রীযুক্ত নগেক্সনাথ চট্টো-

শান্তার নহালবের বাটাতে উপান্তার ও নির্বাহন ক্রিক্টির বিদ্যান কর্মান কর

৪ঠা আবার, সোমবার প্রাতে, নগর সংকীর্তন। প্রীর্ক নগেল্ডনাথ চারীগাধ্যার মহাশরের বারী হইতে বাহির হইয়া গলাতীরের রাতা বিয়া কীর্তন গিলাছিল।

বিজয়ক্ত গোখানী মহাপর আনাবের উৎসবে বোগ দিরা ছিলেন। বদিও তিনি আচার্ব্যের কার্য্য করেন নাই, ভগাচ তাঁহার আগমনে, তিনি আমাদিগকে কি এক অপূর্ব্য অনির্বাচনীয় ভাবে মাতাইয়া গিরাছেন, এজন্মে ভাহা ভূলিতে পারিব না। তিনি ভক্তি রসে আগ্লুত হইয়া সমন্ত বাশবেড়িয়াকে মাতাইয়া ছিলেন।

নগর সংকীর্ত্তন ;—এই সংকীর্ত্তনের প্রকৃতি আমরা বর্ণনা করিতে অপারগ। এমন সংকীর্ত্তন বাশবেড়িরার কথন হওনা দরে থাকুক, বিজর বাবু স্বরং বিলিয়াছেন, "আমি এমন সংকীর্ত্তন বছকাল দেখি নাই।" গড় বাটীতে সংকীর্ত্তন বেরপ মধুব হইরাছিল, তাহা বর্ণনাতীত। অতঃপর সংকীর্ত্তন নগেক্ত বাবুব বাটী উপস্থিত হইরা ভঙ্গ হইল।

বনগ্রাম।

১০ই, ১১ই, ১২ই আষাত প্রীযুক্ত বাবু লক্ষণচক্ত আদ মহাশয়ের বনগ্রামন্থ নাগান বাটাতে বনগ্রাম ব্রাদ্ধ সেনাচেব প্রথম সাধংসরিক উৎসব হইমা গিরাছে। রবিবার প্রাতে উপাসনা, মধ্যাহে ধর্মালোচনা এবং সদ্ধাকালে উপাসনা হয়। সোমবার প্রক্রেয় প্রচারক প্রীযুক্ত বাবু নবধীপচক্ত দাদ মহাশয় তথায় গমন করেন। ঐ দিবস তিনি সাধংকালে এবং তৎপর দিবস প্রাতে উপাসনা করেন, মধ্যাহে প্রসরচক্ত রৌধুরী মহাশয়ের বাসায় পারিবারিক উপাসনা এবং সায়ংকালে তথাকার ইংরেজী স্কুল গৃহে "ধর্মই সমাজের ভিত্তি" এই মর্ম্মে একটা বক্তৃতা করিয়াছিলেন। সাধারণ উপাসনা ও বক্তৃতায় স্থানীর মৃন্সেফ এবং অক্সান্ত কর্মচারী মহাশয়গণ যোগ দান করিয়াছিলেন, অনেকেই তাহার উপাসনা

প্রেরিড পত্র।

(পত্র প্রেরকের মতামতের জন্ত সম্পাদক দারী নহেন)

विधानवाम ।

বাদ্ধসমালে অনেক দিন হইতে বিধানবাদ প্রচারিত হট তেছে। ঈশ্বরকে বাঁহারা বিধাতা বলিয়া বিশান করেন, তাঁহার বিধাত শক্তিতে বাঁহানের বিশান আছে, তাঁহানের পদ্দে বিধান না মানা কথনও সম্ভব নছে। বিধাতা মানিকেই বিধানিও

আমরা বেখিতেছি বিধানবাদ প্রচারের সহিত "পূর্ব পূর্ব বিধান", "বিধান সকল" এবং "বিশেষ বিধান" প্রাভৃতি শব্দ প্ৰয়োগ হইতেছে , এবং প্ৰাৰ সমল লেখনের লেখাতেই প্ৰচা-विक हरेरकरह रव क्षेत्रज्ञ नगरत नगरत अक अक्की विधान क्षेत्रांत्र করিয়া জগতের কল্যাণ সাধন করিতেছেন। বিধানের সঙ্গে সঙ্গে এক একলন প্রবর্ত্তক অর্থাৎ বিশেষ ভারপ্রাপ্ত ব্যক্তি লগতে প্রেরিত হইরাছেন ইত্যাদি। প্রথমতঃ "ঈশ্বর সময়ে সময়ে এক একটা বিধান প্ৰচাৰ করেন" এই প্ৰকাৰ উক্তিতে কোন দোৱ আছে কিনা দেখা বাউক; বাঁহারা বিধানবাদ প্রচার করেন कांबालित नकरनरे जाराम श्रद्धाचेत्र मकनमद धारा खगरखत कनागि नांधरनात्मक्तं विधान नकन क्षात्र कविन्न धारकतः छाहात। देहा वित्मवद्भारत विश्वान करतन द्य क्रेश्वत नर्का कियान. দর্মজ্ঞ, এবং দর্মব্যাপী অনন্ত পুরুষ: স্থুতরাং ইহাও জানা আবক্তক যে সর্বাধিকমানের কার্য্য প্রণালীর কথনও চর্বলের কার্যা প্রণালীর অনুসরপ হইবে না। চর্ব্বল ও অজ্ঞা যে সে একবার একটা প্রণালী অবলম্বন করে, কিছুকাল পরে যথন দেখা যায় তাহাছারা উপযুক্ত ফল উংপন্ন হইতেছে না, তখন আর একটা উপার অবলম্বন করে, এইরূপে যতবার সে এক একটা উপায় অবলম্বন করিয়া বিফল মনোবথ হয় তত্ত্বার আর একটা নৃতন উপায় অবলম্বন করে। কিন্তু ঈশ্বরের সম্বন্ধে উপায়ে অগতের কল্যাণ হইবে, তাহা তিনি যেমন অবগ্ত আছেন: তেমনই ভাহার অমুদ্ধপ কার্যা করিবার শক্তিও তাঁহার আছে। স্নতরাং ব্রুগতের কলাণের ব্রম্ম তিনি যে বিধান করি-বেন, ভাহা প্রথমেই এই প্রক্কৃতির:হইবে যে তাহার কোন পরি-বর্তুন আবিশ্রক হইবে না। তাহা এই প্রকারের হইবে, যে তাহাই একমাত্র কার্য্য সাধনকম হইবে। কিন্তু যদি এমন চয় যাহাকে বিধান শব্দে অভিহিত করা গেল। তাহা উপযুক্ত क्टनांश्नामत्न व्यक्तम। यमि जाहा क्रगटज्त मन्नन माधातरान्त छेन-योगी ना इहेन, তবে जानिए इहेरव मर्सनिकियान, मर्सक মঙ্গলমর ঈশ্বরের হক্ত হইতে সে বিধান আসে নাই। তিনি নেমন অপরিবর্ত্তনশীল, ভাঁহার প্রানত উপায় বা বিধানও তেমনি ষপরিবর্জনশীল হইবে। ভাঁহাতে যেমন জ্বলতা নাই, তাঁহার ক্বত বিধান বা উপায়েও তেমনই গুর্মালতা থাকিতে পারে না। তাঁহার বিধান অপরিবর্তনীয় সম্যক্রপে অভাব নিরাকরণে সক্ষ। স্থতরাং ঈশ্বরের বিধান সময় সময় যেমন পরিবর্ত্তিত হইবার সম্ভাবনা নাই, তেমনি নৃতন নৃতন বিধান আসিবারও সম্ভাবনা নাই। বিধান সম্বন্ধে পরিবর্ত্তনশীলতা শীকার করিলে দীৰরেও পরিব**র্জনশীলতা আ**রোপ করিতে হয়। বিধানকে উপযুক্ত ফলোৎপাদনে অক্ষম বলিলে ঈশ্বরের প্রতিও শক্তি হীনতাও অক্সতার আরোপ করিতে হর।

जीवीत बीक्षा बरमम केवस अब अक महरत अक अकी বিধান প্রেরণ স্করিরাছেন। তাহারা ইটাই বলিতেছেন केवन स्काम अक नगरन रव क्रिशास क्रगाजन क्रमान माधम ক্রিতে ইকা ক্রিয়াছিলেন সময়ে সে উপায় কার্যকারী না ইওয়ার অন্ত উপার অবলয়ন করিয়াছেন। প্রভরাং ভারতে সম্পূর্ণরূপে মুর্মানতা ও অঞ্চতার আরোপ কর। মুইভেছে। 📝 মুর্বল মাস্ত্র বেমন সচরাচর নানা কৌশল অবলয়ন করিয়া কার্য্যোদ্ধার করিতে চেষ্টা করে, এই বিধানবাদ প্রচারদার। দীবরকেও সেইরূপ ছর্বান সাছবের মত করিরা কেলা হইতেছে। यमि वना एम विधान नकन छिद्र छित्र इटेटन दिवस नम्। अक উপারই ভিন্ন ভিন্ন সমনে ব্যক্ত করা হইরাছে। তাহা হইলে ভিন্ন ভিন্ন বিধান বলিয়া উল্লেখের কোন সার্থকতা থাকে না। বাস্তবিক ভিন্ন ভিন্ন নাম দিয়া যে সকল ব্যাপারকে ভিন্ন ভিন্ন বিধান বলা হয়, তাহার সকলগুলি যে একই উপাৰ নির্দেশ করে বা একই কথা ব্যক্ত করে তাহাও নর। ভারতবর্ষের প্রাচীনকালের त्य नकन घटनाटक विधान विनवा छैत्त्रथ कवा यात्र. वोद्धधर्म वा ্রতক্তের ধর্ম সর্কাংশে তাহার সমর্থন করে না।

অধিক দৃটান্তের প্রয়োজন নাই। বৃদ্ধ, খুই, মহম্মদ, চৈত্র প্রশৃতি এক এক জনের কার্যাকে বে এক একটা বিধান বলিয়া উল্লেখ করা হইয়া থাকে, ইহাদের সকল কথায় যে সামাঞ্জ বা মিল নাই তাহা সকলেই জানে। স্মৃতরাং একই বিধি সর্কা সময়ে প্রচারিত হইয়াছে তাহা বলিবার উপায় নাই। এক এক জন ধর্মবীরের কার্যাকে যদি ঈশরের বিধান নামে আখ্যা দেওয়া যায়, তাহা হইলে ইহাও স্বীকার করিতে হইবে যে তিনি সর্কাশক্তিমানের মত কার্যা করিতে পারেন নাইক্ষাক তিনি এক জনের খারা যাহা করিয়াছেন অস্তের কার্য্য ছারা তাহার অস্তথা করিয়াছেন। স্মৃতরাং অক্তরাও শক্তির অভাব ছইই তাঁহাতে বর্তমান।

কথন কথন এমনও ব্যাখ্যা তনা গিয়াছে যে শিশুর পক্ষে তর্ল বন্ধ অর্থাৎ ছগ্ধাদি উপযুক্ত আহার্যা। কিছু ক্রেম বয়োবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে যেমন তাহার পরিবর্ত্তন করিয়া কঠিন বস্তু পথ্যের বাবভা করিতে হর, তেমনি মানব জাতির শৈশবাবস্থায় যে ধর্ম্ম বিধান ছিল, বয়োবুদ্ধির দঙ্গে দক্ষে তাহার পরিবর্ত্তন হইয়া ষ্মাদিতেছে। কিন্তু এখানেও দেখিতে হইবে যে শৈশবের ছ্মাদির পরিবর্ত্তে বরোক্তমির সঙ্গে সঙ্গে আহার্য্যের পরিবর্ত্তন ঘটলেও তাহাদের উপাদানগত সামঞ্জ সর্বদাই থাকিয়া যায়। বস্তুর মূল প্রকৃতির পরিবর্ত্তন কখনই ঘটে না। কিন্তু বিধান প্রবর্ত্তক বলিয়া বাঁহার৷ উক্ত হইয়াছেন অর্থাৎ বাঁহাদের কার্যাকে শ্বীখারের বিধান নামে অভিহিত করা হইয়াছে, তাঁহাদের সকলের কার্য্য এবং প্রচারিত মত কখনই মূলত: এক নয়। যজে পশু वर এवः ष्यदिः ना कथनहै এक श्रवृत्ति विभिन्ने नग्न। महत्त्रापत বিধি, এবং খুষ্টের বিধির সকল গুলিতেই যে ঐক্য আছে, তাহা নম। স্থতরাং ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তির (বাঁছাদের কার্য্য বিধান নাম প্রাপ্ত হইয়াছে) কার্য্য কথনই এক ভাবাপর নহে।

আবার এমন ব্যাখ্যাও সচরাচর শুনা গিরা থাকে যে এক এক জন বিধানপ্রবর্ত্তক এক একটা বিশেষ বিশেষ বিষয় প্রচার করিরাছেন। অর্থাৎ কেছ জ্ঞান, কেছ ভক্তি, কেছ বিখাস, এবং কর্ম প্রভূতির প্রচার করিরাছেন। স্কুতরাং তাহাদের সেই সেই

বিষয় গুলির প্রচার এক একটা বিধান। কিছ বলি এখন হইত বে काम धारातक उप कारमत कथारे धारात कतिवार्द्धन, क्रिक প্রচারক ওধু ভক্তির কথাই প্রচার করিরাছেন বা বিশাস প্রচা-রক নিখানের কথাই প্রচার করিরাছেন, তাহা হইলেও কভক্টা স্বীকার করা বাইড যে ঈশ্বর সমদ সমর এক এক ভাব প্রচার জন্ত এক এক জনকে প্রেরণ করিরাছেন। কিন্তু ভাছাও বলি-বার উপায় নাই। এক পথাবলম্বিগণ অন্ত পথাবলম্বিগণকে ভ্রান্ত বলিয়া ওধু নিন্দা করিয়াছেন, তাহা নর ভাঁহাদের প্রদর্শিত পথ भथरे नम, जमाना कन नार्डित मञ्जावना मारे विनम्नी करे मिरे পথাবলম্বীদিগকে নিজ পথে আনিতে চেটা পাইয়াছেন। স্থতরাং ভিন্ন ভিন্ন ভাব বিকাশও বলিবার উপান্ন নাই। আবার সর্বা-শক্তিমানের কার্য্য প্রণালী কখনই এক্লপ হইতে পারে না। তাহার কার্য্য দর্মদাই পূর্ণতা ও দর্ম প্রকারের উপাদান সম্পন্ন र्हेरव। यथन क्वांत्नित्र विधारन ७कि हिन ना, वा छक्तित्र विधारन জ্ঞান ছিল না, তথন এমন অসম্পূর্ণ কার্য্য কথনই ঈশ্বরের হইতে পারে না।

বিশেষ বিশেষবিধানবাদীগণের স্থার একটা মন্ত এই যে পৃথিবী যথন পাপ তাপে পরিপূর্ণ হয়,যথন তাহার পরিমাণ অতিশয় বেশী হইয়া পড়ে, তখনই তিনি এক এক বিধান প্রেরণ করেন। অর্থাৎ এক এক জন বিধানপ্রবর্ত্তককে জগতে পাঠাইয়া দেন। তাঁহারা এথানে আগমন পূর্বক পাপের উপর পূণ্যের জয় প্রতিষ্ঠা করেন। মঙ্গলময় প্রেমময় ও নিত্যক্রিয়াশীল ঈশবের कार्यात्र श्रेणांनी कथनहे এहेक्स नरह। উদাসীন, বা সকল অবস্থা যাহার জ্ঞানগোচর হয় না. তাঁহার; পক্ষে কথন কথন জগতের প্রতি মন্দের্ঘেগী হওয়ার কথা সাজে। জগৎ পাপে পাপে ছারথার হইতেছে, অথচ পূর্ণ জ্ঞানমর মঙ্গলময় ঈশ্বর তাহা দেখিতেছেন না বা ভাঁহার জগতের কল্যাণ সাধনের কোন উপায় করিতেছেন না। বহু বৎসর চলিয়া গেল, হঠাৎ ভাঁহার দৃষ্টি এদিকে পজ়িল৹জগতের ছঃথে তিনি ব্যথিত হইলেন এবং তথন একটা উপায় করিলেন, এরূপ বলিলে তিনি যে নিতাক্রিয়াশীল এবং মঙ্গলময় প্রতিনিয়ত জগতের কল্যাণে যে তাহার বাস্ততা আছে তাহা স্বীকার করিবার কোনই শার্থকতা দেখা যায় না। উদাসীন ঈশবে বাঁহারা বিশ্বাস করেন তাঁহাদের পক্ষে উক্তরূপ কথা বলা সাজে যে চুই শত বা পাঁচ শত বংসর পরে কোন ক্রমে তাঁহার চৈতত্ত হইল এবং জগতের রক্ষা করা আবশ্রক বলিয়া তাঁহার জ্ঞান জ্ঞানিল, তথন একটা উপায় যা হয় করিলেন। এরপ কথা নিত্য জ্ঞানময় ক্রিয়াশীল ঈশবে বিশাসী কঞ্জনই বলিতে পারেন না। নিত্য চৈতভ্রময় বিধাতা বিনি ড়াঁহার পক্ষে ছই শত পাঁচ শত বংসর পরে পরে বিধান প্রেরণ কখনই সম্ভবে না। হয় তিনি নিত্যক্রিয়াশীল, নিত্যবিধাতা ना इत्र, जिनि এकरे विधारनत প्रवित्रिका, এकरे विधारनत श्रीत-পোষক। থেকে থেকে কিছুকার্ন পরে পরে এক এক বিধান প্রেরণ কথনই নিত্য চৈতভামর নিত্য ক্রিরাশীল ও মঙ্গলমর श्रेषदा मञ्जद ना।

ঈশরের বিধান বিধানবাদীর পক্ষে অবস্থা অবস্থানীর। বিধান বলিয়া বাহা উক্ত হইবে, তাহার সম্বন্ধে বিচার করা বা

ভাহার দোৰ ওপ অহস্কান করিয়া ভদত্রনারে কার্ক্ত কর क्यमहे विधानवासीयः शत्क लोखा शांत ना । खिनि द्विधारा বিধান কি না। বদি বিধান হয়, তাহা হইলে ভবস্থনায়ে এলিতে ইতন্ততঃ করিলে ইহাই প্রমাণিত হইবে বে বিধানকে রান্তবিক कर्ण माना इत्र ना । जाया वित्त श्रृष्टित कार्या वा महत्त्वस्त्र कार्या কিমা বৃদ্ধ প্রভৃতির কার্যাকে বিধান বলিরা বিমান করেন, ভাহা इहेटन जनपूरांत्री कार्या कतिएं अनिष्कृत र अत्रा कथमरे मान्ड নয়। কিন্তু এক ব্যক্তির পক্ষে প্রত্যেক ধর্মবিধান-প্রবর্ত্তকের মতারুযায়ী হইয়া চলাও সম্ভবপর নর। সেরূপ ভাবে চলিতে शिल मान्यस्त विरवक वा कर्डवा कारनत कान मनाहे शास्त না। সে কোন দিকে যাইবে তাহাই স্থির করিতে পারে না। অতএব এক জনের পক্ষে এক সমরে ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম সম্প্রদায় যাহা বিধান নামে উক্ত হইতেছে তাহাদের অনুগত হইয়া চলা কথনই হইতে পারে না। অথচ বাহারা প্রায় সকল ধর্ম সন্তা-मात्रक्टे विधान विनित्रा वार्थिया क्रियम. डीहारमूत्र शक्क काहातु । বিধি মাক্ত করা আবার কাহারও বিধি অমাক্ত করিয়া চলা ত স্থসক্ষত হইতে পারে না। কারণ ঈশবের বিধান বাহাকে বলিব তাহার অমুগত হওয়াই ধর্ম। অক্তথা করাই পাপ। ব্রাহ্ম যে অস্তান্ত ধর্ম সম্প্রদায় প্রচারিত বিধি সকলের কিছু কিছু বাদসাদ দিয়া কাটিয়া ছাটিয়া আপন স্থবিধামুরূপ একটা পথ প্রান্তত করিরা লইবেন অথচ সে সকল ধর্ম সম্প্রদারকেই বিধান বলি-বেন ইহা কথনই উপযুক্ত হয় না। স্বতরাং বান্ধ ভিন্ন ভিন্ন ধর্ম বিধান" প্রভৃতি শব্দ প্রয়োগ দারা প্রায় সকল ধর্মকেই যে বিধান বলিয়া উল্লেখ করেন তাহ। যুক্তিসংগত নহে। বিধান বলিয়া যাহাকে অভিহিত করা যাইবে,সর্ব্ধ প্রযন্তে তাহার অন্তুগত হইয়া চলাই কর্ত্তব্য তথন দ্বিধা করিলে বাস্তবিক বিধান মান্ত कदा रहा ना ।

ঈশ্বর যে ত্র্বলের মত একবার একটা বিধান প্রেরণ করিয়া উপযুক্ত ফল না পাইলে, আবার তাহার সংশোধনার্থ আর একটা বিধান প্রেরণ করেন না অথবা তিনি ২ শত ৫ শত বংসর পরে পরে এক একটা বিধান প্রেরণ করেন বলিলে তাঁহার নিতা ক্রিয়াশীলতা প্রভৃতি স্বীকারের কোন তাৎপর্য্য থাকে না; এতকণ তাহাই প্রদর্শিত হইল। কিন্তু আমরা ঈশ্বরকে বিধাতা রূপে বিশাদ করি এবং তাঁহার বিধানেও বিশাদ করি। বাস্তবিক তাঁহার বিধাতৃত্ব শক্তি অত্থীকৃত হইলে ধর্মের সৌন্দর্যোর অতি অব্লই বাকী থাকে। তবে বিধান বলিলে আমরা কি বৃদ্ধিব ? এবং ব্রাহ্মধর্মকেই বা কোন্ অর্থে বিধান নামে অভিহিত করিব, ভাহাই এখন বিবেচা। বিধান বুলিলে আমরা এই বুঝি বে नर्समक्रियान ७ नर्सक भद्रायश्वद मानवाशाद महित महन रे তাহার কল্যাণ সাধনোপযোগী সমস্ত প্রয়োজনীয় বিধি ব্যবস্থা क्रमग्रज्ञभ नाटक अविनचंत्र अकटत निधिया त्राधियाद्वन । कान, ভক্তি, প্রেম, পর্বিত্রতা প্রভৃতি বাহা লাভ করিতে পারিলে মান-বান্ধার প্রকৃত কল্যাণ হইতে পারে এবং যাহা লাভ করিলে সে দর্মালীন উন্নতি লাভ করিতে পারে, ঈশর প্রথম হইতে আত্মায় সে সকল বিধান করিয়া শিক্ষাদাতা ও সাহায্যদাতা ক্ষণে নিত্য সৃত্তী হইয়া অবস্থিতি করিতেছেন। মানব বিদ

আপন স্বন্ধবিত সেই অনুন্ত উপরেল ও শাস্ত্র পাঠ করিছে বন্ধ করে, সে বনি ভাষার নিতা সদী ও উপরেষ্টার সাহব্য উপ্রুক্তরূপে প্রার্থনা করে, ভাষা হইলে ভাষার কোন সভাবই থাকে না, সমরে ভাষার সকল অভাব বৃতিরা প্রেক্ত কল্যাণ লাভ হয়। মানব নিভা সহার ও প্রকৃত উপনেষ্টার কথা না ওনিরা ও ভাষার উপর নির্ভর না করিরাই অসৎ পথের পথিক হর এবং প্রেবৃত্তির বলে আপন কল্যাণ হইতে গ্রে বাইরা কটভোগ করে, ভাষাতেই ভাষার পক্ষে হংশ ও অভাব সম্ভব হইরাছে। মাহ্রুষ এই খাধীনভাও সেই সর্কাশক্তিমান ইখর হইতেই লাভ করিরাছে। তিনি কথন মানবকে বৃক্ষাদির স্তার এক ভাষাপর করিরা কৃত্তি করেন নাই, কিন্তু খাধীন ও বিচারক্রম করিরা প্রকৃত কল্যাণ ও অনত উর্ল্ডির পথ উন্মৃক্ত করিরা দিরাছেন।

মানব বে সমর তাঁহার হাদরহিত এই অমৃল্য উপদেশ সকল পাঠ করিয়া তাহাতে আনবান হয়,তখনই সে উন্নত হইতে উন্নত-তর হইনা মহান্ ঈশবের আশ্চর্য বিধান প্রত্যক্ষ করিয়া বিমৃক্ষ হইতে থাকে।

এই বে বিধান ইছা কোন এক সময়ে, কোন এক দেশে বা কোন এক ব্যক্তিতে প্রকাশিত বা আবদ্ধ নয়। ইহা সর্মদেশে ও সর্মকালে সর্মন্তনের জন্ত বিহিত হইয়াছে। কোন এক দেশ বিধাতার কুপা হইতে বঞ্চিত নয়; কোন একজনও তাঁহার বিধান বহিভূতি নয়। কিন্তু ধর্মাজগতের ইতিহাস আলোচনা করিলে যেন বোধ হয়, ঈশ্বর এক এক ব্যক্তির ভিতর দিয়া এক একটা স্তা নৃতন স্ষ্টি করিয়াছেন। ইহা দেখিয়াই লোকে নৃতন বিধান প্রেরণের কথায় বিশ্বাস করে। বাস্তবিক ঈশবের পক্ষে নৃতন কিছুই নয়, কিন্তু মানবের পক্ষে নৃতন অম্ভব। তাহার অস্তবে বাহা নিহিত ছিল, বাহার সন্ধান সে এত দিন পায় নাই, এখন তাহা ব্রিতে সক্ষম হইল। ইহাকে নৃতন স্ষ্টি বলা সংগত নয়।

যেমন দৃষ্টাস্ত শ্বরূপে বলা যাইতে পারে "ন্বর্গ" সহক্ষে মানব ভিন্ন ভিন্ন সমরে ভিন্ন ভিন্ন রূপ করনা করিয়াছে। ন্বর্গকে বিভিন্ন প্রকার হুথভোগের স্থান বলিয়া মনে করিয়াছে। লোকে ভিন্ন ভিন্ন সমরে ভিন্ন ভিন্নরূপে শ্বর্গ সম্বন্ধে ব্যাখ্যা করিয়াছে বলিয়া দ্বরুও কি ভিন্ন ভিন্ন শ্বর্গ স্থাই করিয়াছেন। বাত্তবিক ঈশ্বরের ক্ষিত্র কি ভিন্ন ভিন্ন শ্বর্গ ক্ষিয়াছেন। স্থ্তরাং বিধানও ক্ষাব্র নিত্য নৃতন নয়। কিন্তু একইভাবে ভাহাতে নিত্য র্থমান।

বান্ধধর্মকে বিধান বলিবার তাৎপর্য্য ইহা নয় যে ঈশর হাকে হঠাৎ পৃথিবীতে প্রেরণ করিলেন। কিন্তু ব্রান্ধধর্ম বিধান ক্ষ্য বে ইহা তাঁছারই প্রেরিড ধর্ম। ব্রান্ধধর্মের মূল প্রকৃতিই ই বে ইহা সর্ব্যক্ষারে সত্যের অন্থসরণ করিবে। সত্যই ইহার বি। বর্ত্তমান সমরে ব্রান্ধ্যণ যে পরিমাণে জ্ঞাতসারে বা অজ্ঞাত-রে অজ্ঞানতাবশতঃ বা কোন স্বার্থ নিবন্ধন সত্যের পরিবর্ত্তে অজ্ঞানতাবশতঃ বা কোন স্বার্থ নিবন্ধন সত্যের পরিবর্ত্তে বিভাগ করিবেন কিন্তা অসভ্য বোধে সভ্য পরিহার করিবেন; ই পরিমাণে ভাঁছারা ব্রান্ধধর্ম হইতে বিভাগ থাকিবেন। তাই বান্ধধর্ম স্থতরাং সক্ষল সভ্যের আজ্ঞার—পরমেশ্বরই ব্রান্ধর্ম বিধাতা এবং প্রেরক ইহা আজ যে হঠাৎ এ প্রারশে প্রকা-

শিত হইরাছে ভাষা নয়। কিছ পরিচিত অপরিচিত বে কোন
নাধু সদাস্থা আপন অন্তরে বিধাতার দিখিত দত্যের যাহা কিছু
অন্তর করিরা বাজ করিরাছেন, তাহাই রাজধর্মের অঙ্গরণে
বর্তমান রহিরাছে। রাজধর্ম কোন স্থান বা কাল বিশেবের
ধর্ম ময়। ইহার প্রচার আজ বা ২ | ৪ শত বৎসর হইতে হইতেছে না। কিছু মানব স্পাইর সলে সলেই ইহার আজ প্রত্যঙ্গ
পরিপ্রেই হইতেছে। সকল সাধু সজ্জনগণই সেই এক বিধাতার
একই বিধানের কর্মচারী ইরা কার্য্য করিরাছেন। এই বিধান
বে এখন পূর্ণ হইরাছে বা কোন এক সমরে হইবে তাহা নয়।
কিছু মানব আস্থা, বেমন চির উরতিশীল, তাহার কল্যাণকর
এই বিধানও তেমনি চির উরতিশীল।

কলিকাতা

অ মুগত

व्यानिनाथ हट्डोभागाय।

মহাশর,

অনেকেই অবগত আছেন সময় সময় সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কোন কোন সভা বিশেষ চেষ্টার সহিত সবর্ণের পাত্র বা পাত্রী অনুসন্ধান করিয়া বিবাহাদি অনুষ্ঠান সম্পাদন করিয়া থাকেন। ঐ সকল বিবাহ পৌত্তলিকতা ও মন্ত্রান্ত কুসংস্কার বর্জিত হইলেও উহাদের মূলে জাতিভেদ রক্ষিত হয় বলিয়া প্রকৃত পক্ষে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের আদর্শায়্যায়ী বিবাহ নহে। এইজত্ত বে সকল ব্যক্তি সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রতিনিধি শ্বরূপ হইয়া কার্য্য করিতেছেন এবং তদমুরূপ অমুষ্ঠান প্রচলিত করিবার চেষ্টা করিতেছেন, তাঁহাদের পক্ষে উক্ত বিবাহে যোগদান করা বিধের নহে। অবশ্র এই সকল সভাের ফার্ট্রের প্রতি সহামুভ্তি দেখাইতে তাঁহাদিগকে নিষেধ করি না। কিন্তু প্রচারক মহাশায়দের একটু সাবধান হইয়া কার্য্য করা উচিত মনে করি এবং বিবাহের পূর্কে বিশেষ অমুসন্ধান করিয়া আচার্য্যের কার্য্যের লগুয়া উচিত। কারণ তাঁহাদের উপর সাধারণের দৃষ্টি সর্বাদা রহিয়াছে।

निनः

বশংবদ

श्रीभादीमाथ मसी।

मनिमम् निरंत्रम्म.

আপনার ১৬ই আষাঢ়ের পত্রিকার "ব্রাক্ষসমাজের দায়িত্ব-ভার" বিষয়ে যাহা লিথিয়াছেন, তাহার সহিত আমার সম্পূর্ণ সহাত্মভূতি আছে। ব্রাক্ষের সম্ভান, বিশেষতঃ কুমারীদিগের স্থানিকা বিষয়ে উদাসীন থাকিলে বাস্তবিকই আর চলিতেছে না।

বেপুন মূলে পড়াণ্ডনা অতি স্থল্যরূপে চলিতেছে। বিদ্যা শিক্ষার ব্যবস্থা সেথানে করিয়া নীতি, ধর্ম গৃহকার্য্য প্রভৃতি শিক্ষার অতত্ত্ব একটা বন্দোবস্ত করিয়া লইতে পারিলে, আমাদের উদ্দেশ্য এক প্রকার সফল হয়।

বায়সাধ্য হইলেও এভার বহনক্ষম ব্রাক্ষ কুমারীগণের জন্ম এক আশ্রম হউক। কিন্তু এক একটা কন্মার জন্ম মাসে ১০।১৫ টাকা বার বাঁহাদের জনারাস সাধ্য নহে,—এবং এই শ্রেণীর লোকট আমরা জনেকে—"বরাহনগর মহিলাশ্রম" তাঁহাদের পক্ষে উপকারী হইতে পারিবে। ইহাতে রীতিমত বাঙ্গালা ও ইংরাজি শিক্ষার সঙ্গে ছাত্রীদিগকে রন্ধন প্রভৃতি গৃহকার্য্য এবং ধর্ম ও নীতি শিক্ষা দেওয়া হয়। সজীক শশিপদ বাবু সমুদর ভার বহন করিরা থাকেন। প্রত্যাহ ছাত্রীদিগের সহিত মিলিত হইরা ক্ষাব্যোপদনা হয়। এবং ধর্ম বিবয়ে উপদেশ দিবার জন্ম কলিকাতা হইতে প্রাক্ষরন্ধগণ তথার গিয়া থাকেন।

340

3(2+

বিদ্যা শিকা, আহার, পরিজ্ঞা ও ভাজার ব্যক্তিক্র সমেত যাসে হাত্রী প্রতি ৮ আটি টাকা বিতে হয়। আজ্ঞান অনেকেরই ইয়া নাথায়ত।

উক্ত আত্রনের উদ্দেশ্তের সহিত আমাদের প্রভাবের ক্রিকিৎ भार्थका थाकिरमञ्जामात मरन इव नहरंकरे छेरारक जामारतव অনুকৃত করিরা লওয়া বাইতে পারেন বাত্তবিক উহার পহিত जामारनत्र अनीह रगान बहिन्नारह । नाशासन जाननगरिनकः वर्डमान সভাপতি শ্ৰীযুক্ত আনন্ধমোহন বস্তু মহালয় মৃত্ৰীক উহায় কর্ত্রপক শ্রেণীভুক্ত। ভৃতপূর্ব সভাপতি ত্রীযুক্ত শিবচক্র দেব মহাশয়ও সন্ত্ৰীক অৰ্থ সাহায্য ধারা উহার সহিত সহাত্ত্ত্তি কার্যাত: প্রকাশ করিয়াছেন। সম্পাদক শ্রীযুক্ত উমেশচন্ত দম্ভ মহাশয় তাঁহার বামাবোধিনীতে "বরাহনগর মহিলাশ্রম" এর উপকারিতা বিষয়ে অনেক কথা বলিয়াছেন এবং আমাদের "মেসেঞ্চার" ও আশ্রমের যথেষ্ট স্থ্যাতি করিয়াছেন। এত-দ্যতীত অধ্যক্ষ সভাব সভা, এবং অস্তান্ত মান্ত গণ্য ব্ৰাহ্ম ব্ৰাতী ভগ্নীগণ উক্ত আশ্রমের সহিত কার্ব্যতঃ সংস্ট রহিরাছেন। আমার অমুরোধ, আমাদের কর্ত্তপক্ষণণ শশী বাবুর সহিত পরামর্শ করিয়া উক্ত বিদ্যালয়কে শ্বরায়ে ভ্রান্ধ কুমারীগণের निकारकव इम्र कि ना, रमधून।

কলিকাতা

औक्लात्रनाथ तात्र।

ব্ৰান্মসমাজ।

উৎসব—বিগত >লা জুন হইতে ৩রা জুন পর্যান্ত উল্-বেড়িয়া মহকুমান্থিত ব্রাহ্ম সন্মিলনী সভার বিতীম সাম্বংসরিক উৎসব বিধাতার কুপায় নিম্নলিথিত প্রণালী অনুসারে সম্পন্ন হইরা সিয়াছে।

আমরাগড়ি, রদপ্র, বাণিবন, শ্রামপ্র ও বাঁটুলের অন্যন ২০ জন ব্রাহ্ম ও ব্রাহ্মগর্মে দহাস্থ্ ভূতিকারী এবং স্থানীয় মুনদেফ্, উকীল ও অফ্রাষ্ট্র ব্যক্তিগণ এই উৎসবে মিলিত হন। ভারত-বর্ষীয় ব্রাহ্ম সমাজের প্রচারক বাবু ত্রৈলোক্যনাথ সান্ন্যাল ২ দিন উপাদনার কার্যা করেন।

১লা, জুন প্রাতে উপাসনা, সদ্ধাকালে উৎসবের উদ্বোধন।
২রা প্রাতে উপাসনা; তৎপরে ধর্মালোচনা এবং সন্মিলনীর গতবৎসরের রিপোর্ট পাঠান্তে কিন্ধপে পরস্পরের মধ্যে সন্ধাব
সংস্থাপন হইতে পারে তৎসম্বন্ধে কথোপকথন। অপরাহে নগর
সংকীর্জন ও বক্তৃতা হয়। ২ রা প্রাত্তে উপাসনা এবং স্থানীয়
ব্যক্তিগণের অন্থরোধে অপরাকে নগর সংকীর্জন এবং বাজারে,মাঠে
ও ঘাটে বক্তৃতা হয়। বক্তা কাথি স্কুলের শিক্ষক বাবু শশীভূবণ
চক্রবর্ত্তী, গ্রামবাসী ও সন্মিলনীর সম্পাদক বাবু প্রিয়নাথ মল্লিক
এবং আমারাগড়ীর বাবু ক্রির্লাস রায়। বিশেষ উৎসাহের
সহত সংকীর্জন হইয়াছিল। প্রায় ৩০০ শত লোক সংকীর্জনের
সঙ্গে সন্দে ছিলেন এবং বক্তাত্রের বক্তৃতা অত্যক্ত হৃদয়গ্রাহী
হইয়াছিল।

দান প্রাপ্তি—বড়বাজার স্থতাপটা বারইয়ারি ফণ্ড হইতে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের দাত্ব্য বিভাগে এক কালীন ৫০১ টাকা দান প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে। আমরা এই দানের উদ্যোগী মহাশর্দিগকে ধ্যাবাদ প্রদান করিতেছি।

কৃতজ্ঞতার সহিত জানাইতেছি যে ভারমণ্ড হারবার ছর্ভিক্লের সাহাযার্থ আমরা নিম্নলিথিত দান প্রাপ্ত হইরাছি। এজস্থ দাতা মহাশর্মিগকে বিশেষ ভাবে ধস্থবাদ প্রদান করা যাইতেছে।

যাইতেছে।		ک ر
প্রীযুক্ত বাবু রাইচরণ মুখোপাখ্যা প্রীয়ক্তী নিক্তারিণী দেবী	त्र, कृष्णिका ज	3/
ভ্ৰমতী অম্বিকাদেব,	কোলগর	> > >
জীযুক্ত বাবু শিবচক্ত দেব	ক্র	4
, त्रज्ञीमाथ ताम,	মাজাৰ	२६५
একজন বন্ধু কলিকাতা মাং বাবু ছেমেজনাথ সিংছ		२५

বাবু বাৰত্বায় সেন,
বান্ধানাপ্ৰ হাজনুতা

ঐ ক্লুনের বিক্তান্ত

ঐ ক্লোবারির ভাহারি
বাবু ক্লেনোহন বেয়া,
বাবি

প্রচার নাব কালী অনম বন্ধ গত ২৭ এ কৈটি জীবাড়ী আবে একটা বক্তা করেন, বক্তার বিবর শিবর প্রাথিত হয়।" বক্তার অবানজ্য এই, কমট বিবরের উন্দেশ হইবাছিল। লীনতা অবল্যন না করিলে উক্তেম কান পাওয়া বার নাঃ আবন কারম্ব হলৈই বড় পোক হল্লা। আর ঈশ্বরের উপাত্ত জালিয়া উপাহত লোকনিগকে খুব সাহন করিতে পারে। কিছু আত্তাহে বিরাশ করিতে পারে। কিছু আত্তাহে বিরাশ করিতে পারে না।

र्पानार्विका आरम वाव ठळनांच जांचात्र वाहीरख बांच अभि-লনীতে "চিন্তাই প্ৰেম সাধনের উপায়" এই বিষয়ে কালী-প্রসর বাবু আর একটা বক্তা করেন। এবং করিলপুরে ৩০লে জুন তত্ত্রতা উপাসনালরে প্রাতে ও সারাকে উপাসনা করেন। প্রাত্যকালের উপদেশের তুল মর্ম এই বাহারা কিছু কিছু অগ্রদর হইয়াছেন, তাঁহারা আরও অগ্রসর হইয়া অফুন, অগ্রসর না হইলে ধর্মেতে ত্রথ নাই,ছ:থকে ভর করা অন্তচিত। বেহেডু ছ:এই ধর্মসাধনের রাজপথ, অক্সপথ নাই। সারাক্তে যে উপদেশ হট্_{যা} ছিল, তাহাতে ভালবালা ও চিস্তার সম্বন্ধে ব্যাখ্যা করেন। অর্থাৎ বাঁহার প্রতি ভালবাসা হয়, মনে শ্বতই তাঁহার চিন্তা হয়. আবার যে বন্ধর চিন্তা সভত করা বার, তাহার সঙ্গে প্রাপর হওয়া স্বাভাবিক। এই নিয়মেই বিষয়ের সহিত সতত স্বালাপ পরিচয়ে বিষয়ের প্রতি প্রণয় করে। চেষ্টা হারা চিস্তার স্রোভ ফিরাইয়া লইলে ঈশ্বর প্রেম ও লাভ হইবে। চিস্তার অসাধ্য কি ? অতএব কি আহার করিবে, পরিধান করিবে তাহার অতিরিক্ত চিস্তা পরিত্যাগ পূর্বক **ঈখ**র এবং স্বর্গরাজ্য অবেষণ করাই উচিত।

ভ্রম-সংশোধন—তত্তে মুদীর গত সংখ্যার সাধারণ বাদ্ধমনাজের কার্য্য নির্বাহক সভার কার্য্যবিবরণে লিখিত হইরাছে যে "মরমনসিংহের অন্তর্গত করটিয়ার জমিদার শ্রীযুক্ত মহন্দালি খাঁ মহাশয় তথাকার বাদ্ধসমাজের উপাসনার্থ ৫০০, টাকা ম্লোর তাঁহার একটা বাড়ী প্রদান করিয়াছেন।" ইহাছারা করটিয়া বাদ্ধসমাজের জন্ম দান করিয়াছেন বলিয়া বোধ হইতে পারে। কিন্ত উক্ত গৃহ টাঙ্গাইল বাদ্ধসমাজের উপাসনার্থ দান করিয়াছেন। বাড়ী শব্দ প্রেরাগ করা ও ঠিক হয় নাই কারণ তিনি কেবল অন্থমান ৫০০, মূল্যের একথানি টিনের গৃহই দান করিয়াছেন। কিন্ত ভূমির শ্বদ্ধ দান করেন নাই।

उद्दर्भभूमीत भूमा श्राखि श्रीकात।

((मर्ल्डेचत्-->४४४ । .)

	পূর্ব প্রকাশিতের পর। নবক্লক ভাছড়ি, নোরাধানি	
वाबु	্নবকৃষ্ণ ভাহাড়, নোরাখানি	٤,
,xo	শশিভূষণ চক্ৰবন্তী, কাঁথি	٩
"	কালীপন্ধর স্কুল, কলিকাভা	S.
"	হেরৰচন্দ্র মৈত্র, ঐ	\$10
,,,	চঞ্জীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, ঐ	;<
99	ক্ষেত্রেছন মুখোপাধ্যার, ঐ	۶,
,,	হরকান্ত সেন, বরিশাল	٨
2)	বোগেন্দ্ৰনাথ বিত্ৰ, কলিকাতা	> / '
,,,	ट्यम्ब म्बन्धी, स्वामीन्त	₹√.
20	त्रनिक्नान इत्हानाशात्र, निम्ना	•
,,,	কৈলাস চন্দ্ৰ সেন, কলিকাতা	21
"	পরেশনাথ সেন, ঐ	2 Ma/•
	क्लांबनाथ बाब , क्र	;\
"	শৰ্ৎকুৰার সিংহ, বৰ্মা	٩
	-	क्रमण:



বৰ্ষ ও সমাজভন্ত বিষয়ক পাক্ষিক পত্ৰিকা।

১ংশ ভাপ_{ার}. ৯ম সংখ্যার

১লা ভালে শুক্রবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্স সম্বৎ ৬০

বাংগরিক অবিষ্ মূল্য ্যাং মকক্ষের অবিষ্ মূল্য ক

এ কে শক্তি?

()

"দাড়াতে না দের কাল ঠেলিরা লইছে;
নদীর বালুকা মত, সদা পদতলে
বেন মাটা সরে বার; জান্মছে মানিছে
জীব কত; দাড়াবে যে হাসি কাদি ব'লে,.
তা হবে না; কেবা হেখা বসিতে পাইছে?
হোট আর হাস কাদ; দেখ ভূমগুলে
কাল চজে দিন রাত এক হুই করে
খুরে যার, হাসি কারা ভোবে পরস্পারে?

(২)
কার বিশ্ব, মৃচ নর! তোমার গৌরব
সাজে কোথা ? যারে তুমি এত ভাল বাদ
সে জীবন তোমার কি ? এই শক্তি সব
ভালিছে গড়িছে, যারা, যাহাদের ত্রাস
তোমার পরাণে প'লে করিছে নীরব,
তারা কি তোমার ? নর! দেখ তুমি ভাস
যে শক্তির পারাবারে, সেই শক্তি কার?
ভালিছে চুনিছে দর্প সতত তোমার!

(৩)

বেন কোন চক্রে পড়ি ঘুরি রে সকলে!

বেন সামালিতে নারি! না নিতে নিখাস

দুরায় প্রবল বেগে; সামালিব বলে

যক্তি জাঁটি গুঁড়া করে; দেখে লাগে তাস!

আমার ইচ্ছার মত কিছু নাইছি চলে।

এ কে শক্তি ? জোরে মোরে করিতেছে দাস!

আশার প্রাসাদ মোর প্রোতে ভাসাইছে;

পাষাণ্-শিলার মৃত্যু বাসনা পিবিছে।"

হিমাজি-কুন্তম।

मन्नामकीय यस्त्र ।

প্রশীশক্তির পরিচয়—কোরিছ নগরবাসি খৃষ্টানদিগকে

^{মহাত্মা} সেন্টপল যে ছুই পত্র লেখেন, তাহার প্রথম পত্রের এক

বানে আছে ;—"তোমরা এখনও আগান্ত্রিক ভাব সম্পন্ন হও নাই। সামান্ত সাংসারিক ভাবেই কার্য্য করিতেছ; কারণ ভাবিদা দেশ যথন তোমাদের মধ্যে এখনও ঈর্ব্যা, বিবাদ, ও বিচ্ছেদ রহিরাছে তখন কি তোমরা সাংসারিক ভাবেই কার্য্য করিতেছ না ?" কোন দলের মধ্যে ঐশী শক্তি কার্য্য করিতেছে কি না যদি জানিতে হয় তবে তাহা পরীকা করিবার প্রকৃষ্ট উপায় এই। অহুসন্ধান কর তাহাদের मध्य नेवी, विरवय अञ्चि निवक्त कार्यात वााचा इहेरलह कि ना ? कांत्रण এहे, राशान मकरनहे निस्त्रत्न राजीवत व्यवस्था না করিয়া ঈশরের গৌরবই অবেষণ করে, দেখানে ঈর্ব্যা প্রভৃতি প্রবেশ করিবার পথ পায় না। রাজা রামমোছন রায়ের জীবন চরিতে দেখা যায় যে পুরাতন হিন্দু কলেজ স্থাপনের যথন প্রস্তাব হয়, তথন তিনি ও মহাত্মা ডেবিড হেয়ার এই উভয়ে সে বিষয়ে উদ্যোগী ছিলেন। পরে তথনকার স্থপ্রিম কোর্টের চিফ জটিশ সার ছাইড ইপ্ট সাহেব তাহাতে যোগ দিলেন। সার ছাইড ইপ্ট हिन् नमारङ्ग अधनी बक्तभ वाकिनिगरक निष्ठ खरान छाकारेगा তাহাদিগকে এবিষয়ে মনোযোগী করিবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন সহরের কতকগুলি বড় লোককে নইয়া একটা কমিটা গঠন করিবার চেষ্টা করা হইল। ভাহার মধ্যে রামমোহন রাবের নাম ছিল কারণ তিনি প্রধান উদ্যোগী। কিন্তু হিন্দু সমাজের দলপতিগণ বলিলেন রামমোহন রায়ের নাম কর্মিটীতে থাকিলে তাঁহারা সে কমিটিতে থাকিবেন না। রামমোহন রায় এই কথা শুনিয়া সার হাইড ইউকে পত্র লিথিয়া কমিটী इटेट जापनांत नाम जुनिया नरेलन। তিনি বলিলেন কলেজটী স্থাপিত হওয়াই সকলেব প্রার্থনীয়; তাঁহার সংস্রব পাকাতে যদি কাহারও যোগ দিবার বিম্ন হয় তবে তাঁহার पृत्त थाकारे ভाव। (मर्गत्र कन्नागरक उक्त दान ও निरंजन গৌরবকে নিম্ন স্থান দিতে পারিয়াছিলেন বলিয়াই রামমোলন রায় ওপ্রকার করিতে পারিয়াছিলেন। সত্যের গৌরব ও ঈখ **रत्रत रागेत्रव रापारन नका पारक मिपान लारक निर्द्धत वार्थ छ** গৌরব বিশ্বত হইয়া যায়; স্থতরাং বদি দেখা যায় যে কোন मरनत् मरशा मनकरन केवा, विरवय था इंडि পরত इ रहेगा शतला-রকে বাধা দিতেছে;-পরস্পরকে সন্তাব ও উদারতার সহিত

গ্রহণ করিতে পারিতেছে না; পরস্পরের গুণভাগ অপেকা দোব ভাগেরই প্রতি অধিক দৃষ্টি করিতেছে; তাহাতে ইহাই প্রেমাণ পাওয়া যায় যে যে মহৎ কার্য্যের কম্ম তাহারা দলবক হইয়াছে, তাহার প্রতি তাহাদের দৃষ্টি নাই; তাহারা ঈশ্বরের গৌরব অবে-বণ করিতেছে না। আমাদের আশক্ষা হয় আমরা হয়ত এই প্রকার দশাতে পড়িয়াছি।

বিগ-কুন্ত —এতদ্দেশীয় প্রাচীন নীতিশাল্কে বলিয়াছে "যে ব্যক্তি সমকে প্রিয়বাদী কিছ পরোকে অনিষ্ট চেষ্টা করে, ং কপ বন্ধকে পরোম্থ বিষকুন্তের ভার বর্জন করিবে।"-- সন্মুধে কিছু বলে না বরং সৌজনোর সহিত ব্যবহার করে; কিন্তু পরোক্ষে কুংসা করে ও অনিষ্ট করে; এরূপ ব্যবহারের প্রতি বে কেবল হিন্দুশান্ত্রেই দারুণ মুণা প্রকাশ করা হইয়াছে তাহা নহে, সর্ব দেশীয় নীতিশাস্ত্রই এশ্রেণীর লোককে অতি স্থণিত বলিয়া ্ঘাষণা করিয়াছে। তণাপি ছঃথের সহিত বলিতে হইতেছে এইটা আমাদের একটা জাতীয় ছর্ম্মলতা বলিয়া বোধ হয়। এমন কি ব্রাহ্মগণ বাঁহারা উৎকৃষ্টতর নীতির গর্ব করেন, এবং ধর্ম-তত্ত্ব সম্বন্ধে অতি উচ্চ উচ্চ কথা দৰ্মদা বলিয়া থাকেন, তাঁহারাও এই তুর্বলতার হস্ত হইতে রক্ষা পান নাই। এরপ দৃষ্টান্ত সর্বাদাই চক্ষে পড়িতেছে, যে এক জন লোক আর একজনের কোন কার্য্যের প্রতি অতি অসৎ অভিসন্ধি আরোপ করিয়া লোকের নিকট নিন্দা করিয়া বেড়াইতেছেন, অথচ সে ব্যক্তিকে সাক্ষাৎ ভাবে কিছু বলিতেছেন না। মনে ভয় এই, যে সে বলিলে বিরক্ত হইবে,হয় ত ভাল ভাবে লইবে না; হয় ত হিতে বিপরীত ঘটিবে; বলিতে কিরূপ চকু লুব্জা হয় ইত্যাদি। তাহার সম্বন্ধে একটা কপা শোনা হইয়াছে, गাহার মূল নাই; তাহাকে জিজাসা করিলেই, প্রকৃত কথা জানিতে পারা ঘাইত, কিন্তু সে দিকে দৃষ্টি নাই; তাহা সত্য কি না অমুদন্ধান করিবার প্রবৃত্তিই নাই। অপচ যার তার নিকট সেই ব্যক্তির কুৎসা করা হইতেছে। এরূপ वावहात घट अक वाङ्कित मध्यादे त्य प्रथा यात्र अक्र नत्र जान ভাল লোককেও এই দোষে দোষী দেখা ষাইতেছে। এই সামাগ্র একটা চর্বলতা হইতে আমরা যথন উদ্ধার হইতে পারিতেছি না, এবিষয়ে যথন আত্ম-সংয্য শিক্ষা করিতে পারিতেছি না, তথন আধ্যাত্মিক তত্ত্ব সম্বন্ধে সপ্তম স্বর্গের কথা সকল বলা বিড়ম্বনা মাত্র।

আত্র-সংয্য—একজন লোক নিজ আয় ব্যয়ের সমতা বিধান করিতে পারিতেছেন না। তাঁহার যে আয় তাহাতে তাঁহার ঋণ হইবার কথা নয়। অথচ তাঁহার মনের এতটুকু দৃঢ়তা নাই, যাহাতে আপনাকে ও আপনার পরিবার পরিজনদিগকে একটু টানিয়া চলেন। তিনি ঋণ করিয়া বিলাসের স্থণ ভোগ করিতেছেন। এরূপ ব্যক্তি কিরূপে আয়ু-সংয্ম করিবেন ? আয় ব্যয়,—বাহাকে ধরা যায়, নির্দেশ করা যায়,বশে রাখা যায়,তাহাকেই যিনি নিজ কর্তৃবাধীনে রাখিতে পারেন না, অস্তরের স্থা ও প্রবল রিপু সকলকে তিনি কিরুপে সংয্ত করিয়া ধর্ম-জীবনে অপ্রসর ইইবেন ? আয়ু-সংয্যের অর্থ আপনাকে নিয়-জীবনে অপ্রসর ইইবেন ? আয়ু-সংয্যের অর্থ আপনাকে নিয়-

মাধীন করা, কঠোর প্রভিক্ষার অধীন করা। এই সংয়ম জীবনের সকল বিভাগেই অভ্যাস করিতে হইবে। আর ব্যারের সমতা বিধান তাঁহার একটা 🔭 ছ:খের বিষয় অনেক ব্রাজের এৰিবনে উদাসীভ দৈথিতে পাওয়া যায়। উাহারা আপনাদের প্রমাণাতিরিক্ত চলিয়া ধাকেন, ঋণকে ভর করেন না; অর্থ সহকে নিতাস্ত বিশৃথকার মধ্যে বাস করেন। গুঢ়রূপে বিবে-চনা করিলে দৃষ্ট হইবে যে, এই বিশৃত্বলতা হইতে সকল দিকে বিশৃথকা উপস্থিত হয়। যে ঋণজীবী ও উচ্ছৃথল সে সকল কর্ত্তৰ্য সকল সময়ে করিতে পারে না; লোকের সঙ্গে ভদ্রতা রক্ষা করিতে পারে না; দত্য ও প্রতিজ্ঞাকে রক্ষা করিতে পারে না; কার্যোর ও চিস্তার সময় রক্ষা করিতে পারে না। স্কুতরাং এই এক বিশৃষ্মলা হইতে সকল প্রকার বিশৃষ্মলা উপস্থিত হয়। অতএব ত্রাহ্মেরাযে আপনাদিগকে বিবেক ও কর্ত্তব্যের নিয়মাধীন করিবেন, তাছা এক বিভাগে করিতে গেলে কখনই ক্লতকার্য্য হইতে পারিবেন না। কুদ্র কুদ্র বিষয় অবসম্বন করিয়া কার্য্যারম্ভ করিতে ছইবে।

ক্ত কেত্ৰ-শত সহল লোকে লক লক টাকা উপা-র্জন ও ব্যর করিতেছে; ইহা ওনিয়া এক জন দরিদ্রের লাভ কি ? সে যে দশটী টাকা বেতন পায়, ভাহার স্থুণ, স্বাস্থা, আশা আকাজ্ঞা সকলই সেই সীমার মধ্যে স্থাপন করিতে হইবে। কত রাজ্যের উন্নতি কত রাজ্যের পতন হইতেছে; কত ধনীর ধন নিঃশেষ হইয়া বাইতেছে; কত ধনীর ধন বৰ্দ্ধিত হইতেছে, এ সমূদায়কে ভূলিয়া গিয়া তাহাকে চিন্তা করিতে হইবে আমি কিরুপে আমার দশটী টাকার মধ্যে আমার অত্যাবশুক ব্যয়ের স্থব্যবস্থা করিতে পারি; কিরপে ভাহার সন্থা বহার করিতে পারি। সেই দশটী টাকা ভাহার পকে একটা কুদ্র কেত্র। যেখানে বসিয়া ভাজাকে আত্ম-রক্ষার উপায় করিতে হইবে। ধর্ম সম্বন্ধেও কুদ্র কেত্র আছে। সাধুজনের যত উক্তি গুনিয়াছি, মহাজনদিগের জীবনে যে সকল অভ্যাত্তন দৃষ্টান্ত দেখিয়াছি, তাহা ক্ষণকালের জন্ম মনের এক পার্ষে রাখিয়া এই চিন্তা করিতে হইবে যে আমি যে একটা কুক্ত জীবনক্ষেত্র পাইয়াছি ইছার নধ্যে আমি কি করিতে পারি। সেই ক্ষেত্রটুকুর মধ্যে যে কর্ত্তবা গুলি আছে তাহা স্থচকেরপে পালন কর, **ঈখরের সে**বা ব। সদম্ভানের যে দামান্ত স্থবিধা আছে তাহা বিফলে যাইতে দিও না ; সেই ক্ষেত্রের মধ্যে যে আলোকটুকু পাইতেছ, তদম্পারে চলিবার জন্ম প্রাণপণে চেষ্টা কর; তাহাই তোমার পকে ঈশ-রের সর্বশ্রেষ্ঠ আদেশ। আর সব বাহিরের কণা ভোমার পকে এইটুকু সার কথা। তুমি আকাশ পাতাল ভাবিদ্না কি করিবে? ত্রিসংসারের লোকের কার্য্য ও নীতি পর্য্যালোচনা করিয়া কি করিবে ? তোমার কৃদ্র কেত্রটুকুর মধ্যে তুমি ঈশবের অনুগত ভূতা হও। একাম্বমনে তাঁহার উপর নির্ত্তর করিয়া সত্য ^ও সাধুতার অহুসরণ কর; তোমার পথ আসুনাপনি পরি^{ছার} হইবে ; ঈশর-প্রীতি শ্বত:ই তোমার দ্বদমে বর্দ্ধিত হইবে।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

कोरत उस श्रुका।

ব্রান্ধের ব্রহ্মোপাসনা স্থাবকের স্থাতিবাদ নহে। অন্তর দর্শী দ্বর বার্থাবেবীর মুখে তাঁহার গুণ গান শুনিরা সন্তই হন না। ব্রহ্মের প্রস্থৃত উপাসনা কিরপে করিতে হয়, প্রাচীন শ্বরো সে সহরে অতি উচ্চ উপদেশ প্রদান করিয়া গিয়াছেন। সেই উপদেশই ব্রহ্মোপাসনার বাজ মত্র। ব্রাহ্মসমাজ অতি শৈশবাবহা চইতেই এই মহামত্রে দীক্ষিত হইয়াছেন। কিন্তু মন্ত্রাত্রনপ কার্য্য হইতেছে কি না, ব্রাহ্মেরা সাধনার পথে অগ্রসর হইতেছেন কি না অর্দ্ধ শতাব্দী পরে একবার সে চিন্তা করা বোধ হয় মসত্রত হইবে না। যে মহামত্রের কথা উলিখিত হইয়াছে, তাহা এই;—

"তত্মিন প্রীতিস্তন্ত প্রিয়কার্য্য-সাধনঞ্চ তত্তপাসনমেব।" ভাঁহাকে প্রীতি করা ও তাঁহার প্রিম্নকার্য্য সাধন করাই কাচার উপাসনা। প্রীতি না থাকিলে প্রেমময়ের উপাসনা হয় ন। প্রীতিহীন উপাসনা প্রবঞ্চনার নামান্তর মাত্র। রঙ্গালয়ের জবাচার মট ধার্মিকের বেশ পরিগ্রহ করিয়া বাকাজ্ঞলে দর্শকের মন বিমোহিত করিতে পারে বটে : কিন্তু অন্তর্যামী ব্রন্ধ, কপটার বাক্যে বিমোহিত হন না। তিনি হ্রদরের নিগৃত্তম প্রদেশ অন্তেষণ করিয়া দেশেন, তথায় প্রীতির কোন চিছু বিদ্যমান আছে কি না। বদি জদয়ে ভালবাদা নিছিত থাকে, মুথে একটা বাক্য উচ্চারণ করিবার ক্ষমতা না পাকিলেও অন্তর্ধামী ঈশ্বর তাহার পুজা গ্রহণ করিবেন, সর্কা সিদ্ধিদাতা ভাহার সাধনার সহায় ১ইবেন। আর জদয় প্রীতি শৃক্ত হইলে কণ্ঠ নিগত ফাঁকা আঙে যাজ আকাশ পাতাল স্পূৰ্ণ করিয়। যদি দশদিকে বিস্তৃত হয়. গুথাপি মহান ঈশবের আসন এক বিন্দু টলিবে না, সে আরাধনা ঠাহার ছারে প্রছিবে না। পবিত্র ঈশ্বর কপ্টতাকে প্রশ্রর দেন না: তিনি সরল জনরের অক্তরিম কথা গুনিতে চাহেন। মহাপাপী পাপ যন্ত্রণায় কাতর ছইয়া সরল প্রাণে যথন ঈশ্বরকে অরণ করে, "হে ক্লপাসিত্র পরিত্রাণ কর" এই বলিয়া বখন নয়নের এক বিন্দু জল বর্ষণ করে, তখন করণাময় তাহার প্রতি কুপা-क्षा वर्षण ना कतिता शाकिएक शास्त्रन ना। नक नक आणी এইরপে পরিত্রাণ পাইরাছে, তবে আমরা পড়িয়া রহিলাম কেন, ক্ষিবের রূপার ভিখারী হইরা আসিরাছিলাম, আজও সে ভিথা-বীর দশা ঘুচিল না। পিড় ধনে সম্ভানের অধিকার, কিন্তু স্থামরা ^{ষাজ্}ও পিড় ক্লপার স**ল্পূ**ণ অধিকারী হইলাম না। কলতক পিতার অবারিত দার দিরা যে পিতৃ গৃহে প্রবেশ করিয়া পিতৃ-^{ধনে} অধিকারী ছইতে পারে না, ভিক্ষুকের বেশে দার দেশে পড়িয়া থাকে, সে সরল বিশ্বাসী সস্তান নছে, সে কপটাচারে ^{পিতার} মন ভুলাইয়া পিভূধনে অধিকারী হইতে আকাজ্ঞা ^{করে।} পিতা **কপটার আকাজনা পূ**র্ণ করেন না। আঙ্গও কপটাচারের হক্ত হইতে উদ্ধার হইতে পারিলাম না বলিয়া আমাদিগের অনেকের এই ছর্দশা। নতুবা ঈশ্বরের সেবক হইয়া ^{কে কবে} আমাদিগের মত ছার দেশে পড়িয়া রহিয়াছে। আমরা

বাক্যের পূজা শিবিরাছি,কিন্ত জীবনের পূজা শিথি নাই। প্রাণের পৃথিত কেমন করিয়া পিতাকে ভালবাসিতে হয় তাহা জানি না. আমরা তাঁহাকে স্ভোভ বাক্যে ভুলাইরা তাঁহার ধনে অধিকারী হইতে চাহি: সুর্বজ্ঞ শিতার নিকট প্রবঞ্চনা করিয়াকে জ্যী হইতে পারে ? সেই হেতু আমাদিগের এই ছর্দশা। প্রীতির প্রমাণ বাক্যে নহে, কার্য্যে। আমাদিগের ভালবাসা বাক্যে নিবন্ধ ना थाकिश यमि कार्या अमर्भिङ इहेड. कक्रगामरायत अर्थ क्रिंग আমাদিগের মন্তকে মিশ্চয় বর্ষিত হইত। প্রীতি হৃদরের অন্ত-ক্তল নিহিত ভাব, কাৰ্যো তাহার বিকাশ। এই হেতু ঋষির। বলিয়াছেন ঈশরকে প্রীতি করা ও তাঁহার প্রিয়কার্য্য সাধন কবাই তাঁহার উপাসনা। এই উভয়ের অবিচ্ছিন্ন সন্মিলনই লখবোপাসনার মূলমন্ত্র। ব্রাহ্মসমাজ এই মূলমন্ত্র গ্রহণ করিয়া-ছেন বটে, কিন্তু আমাদিগের অনেকের জীবনের প্রতি লক্ষ্য করিলে দেখা যায় যে, আমরা মন্ত্রপ্ত হইয়াছি। আমরা বাক্য ও কার্যোর একতা সাধনে ষদ্ধীল নহি। বাকোর আড়ম্বরে ব্রশাণ্ড জর করিতে চাহিতেছি, কার্য্য অপেকা বাক্য আমাদি গের ধর্ম নিষ্ঠার পরিচারক হইতেছে। ইহা কি শোচনীয় অবস্থা नरह: इंश्वाता कि कर्गणातात अञ्चत्र आश इंश.ठ.१६ ना। निधन स्थापन नानमात्र गैहात क्रमत्र मर्कमा अधाविक हहे कि. रिनि धन मारनद अन्य नर्सना नानाशिक काहात मुग हरेरक नर्सना যদি এই সঙ্গীত নিৰ্গত হয়, "বিষয় স্থা মন তৃপ্তি কি মানে। তব চরণামৃত, পান-পিপাধিভ: নাহি চাহি ধন জন মানে।" যাঁহার অতি দামান্ত প্রতিজ্ঞা পালনের ক্ষমতা নাই, দিনি সম্পূর্ণ রূপে দুঢ়তা হীন, ঈশ্বরের প্রিরকার্য্য সাধনে যিনি শরীরের এক विन् वक्त मान कतिएठ मुगर्थ नर्दन, छिनि यमि वर्दनन,

"যা হবার তাই হবে, যায় প্রাণ মটিই; ' তব ইচ্ছা পূর্ণ হউক এ.জীবনে। নিতা সত্যব্রত করিব পালন, মল্লের সাধন কি শরীর পতন।"

অথবা

"জীবন স'পিয়ে তোমার পদে প্রভু, নিউয হইব স্থা হে ; নকল কার্যা তোমার সমাপিয়ে, সহজে তাজিব এই দেহে।" তাহা হইলে উহাব মত কপটাচাব কি আছে ? অজ্ঞত্ত কপটা-हाती इहेरल रम भारभव कमा **बाइड. किन्नु क्रेब**रत्त मगीरभ যে কপটাচার করিতে সাহস করে তাহার পাপের ক্ষমা আছে কি না সন্দেহ। ব্রান্ধের জীবন বেরূপ বাক্য যেন তাহারই অমুরূপ হয়। আমরা যাহাতে কপটাচারের অপরাধে অপরাধী না হই.সে বিষয়ে আমাদিগের প্রত্যেকের সাবধান হওয়া কর্তবা। অকং টাচারী इইলে यहि आयता अधायिक विनता गणा इरे ठारा 3 ভাল। তথাপি কুরিম ধর্মভুষণে ভূষিত হইয়া আমরা যেন জগঃকে প্রবঞ্চিত করিবার চেষ্টা করিয়া ঈশ্বরের নিকট অপবাধী না হই। আমাদিগের অবস্থা যেরূপ দাড়াইরাছে তাহাতে আমাদিগের বাক্য সংযমনের একান্ত প্রয়োজন উপস্থিত হইয়াছে। বাকে ব্ৰহ্ম পূজা অনেক করিয়াছি, জীবনে ব্ৰহ্ম পূজা যাছাতে করিতে পারি, ব্রান্দের জীবন বাহাতে অমুগত ব্রহ্মসন্তানের অমুরপ হয়. একবার ভাহার চেষ্টা করা কর্ত্তবা হইরাছে। নতুবা কেবল মাত্র

বাক্যের পূজা নিকল হইবে। আমরা প্রকৃত্ব পক্ষে ব্রের পূজা করি কি না, তাঁহাকে প্রাণের সহিত ভাল বাসি কি না, ভাহার প্রমাণ বাক্যে নহে, তাহার প্রিরকার্ব্য সাধনে। অপরের কণা বলিতে পারি না, কিছু আত্মলীবনের প্রতি যথন দৃষ্টি নিক্ষেপ করি, তথন দেখিতে পাই যে, ব্রহ্ম পূজার যে মহামন্ত্র গ্রহণ করিয়া ছিলাম, সে মন্ত্র পালন করি নাই; মন্ত্র ভ্রন্ত হইরা এত হর্গতি ভোগ করিতেছি। জীবনে যদি ব্রহ্ম পূজা করিতে পারিতাম, "মন্ত্রের সাধন কিয়া শরীর পত্তন" একথা যদি দৃদ্ধ বিশ্বাসীর স্থায় বলিতে পারিতাম, পরম দেবতার প্রিরকার্য্য সাধনে "যায় প্রাণ যাবে" একথা যদি অকপট চিত্তে উচ্চারণ করিতে পারিতাম, এত দিনে এদেশে ব্রহ্মের পূজা নিশ্রয়ই প্রচারিত হইত। যত দিন জীবনে ব্রহ্ম পূজা করিতে অভ্যাস না করিব তত দিন আয়-হুর্গতি দূর হইবে না।

নিস্তরঙ্গ প্রেম।

প্রেমের চুই প্রকার অবস্থা আছে; এক তরন্ধিত অবস্থা, আর একটা নিস্তরক অবস্থা। শিশুর প্রতি জননীর যে ক্লেহ তাহা কথনও তর্মিত আকার ধারণ করে, কথনও বা নিম্তর্ম অবস্থাতে থাকিয়া কার্য্য করে। কখনও দেখি জননী শিশুকে সোহাগ করিতেছেন; বক্ষে চাপিয়া ধরিতেছেন; তাহার মুথে স্থথে ঘন ঘন চুম্বন করিভেছেন ; স্নেহপূর্ব্বক কত মধুর শব্দে সম্ভাষণ করিতেছেন; ইহা প্রেমের তর্মিত অবস্থা, উচ্ছ সিত ভাব। কিন্তু এক্নপ উচ্ছ সিত ভাব সদা সর্ব্বদা থাকে না। ২৪ ঘণ্টার मस्या जननी यथनटे এবং यखनात मञ्जानत्क (मस्थन खखनात्रे स প্রেমের এরপ উচ্চাদ হয় তাহা নহে। সমস্তদিন তিনি গৃহ কার্যো রত রহিন্নার্ভেন ; পাদ্যদ্রবা প্রস্তুত করিতেছেন ; গৃহের কার্য্য পরিদর্শন করিতেছেন; আপনার মনে রন্ধনশালায় পাক করিতেছেন। শিশু দোলাতে খুমাইতেছে। জন্নী যথন চুখন করিতেছেন না, সোহাগ করিতেছেন না; শিশুকে বুকে ধরি-তেছেন না, তখন কি বলিতে হইবে তাঁহার প্রেম নাই ? উঠ্চ --দিত ভাব না থাকিলে কি এই বলিয়া তঃথিত হইবে যে ভাঁচার প্রেম অন্তর্হিত হইয়াছে ? কণনই নহে। জননী যে গৃহকার্য্যে বাস্ত রহিয়াছেন তাহার মধ্যে প্রবিষ্ঠ হইয়া দেখিলেও দেখা যায় সেই শিশুর পরিচর্য্যাই তাঁহার ব্যস্ততার একটা প্রধান কারণ। তিনি এই শিশুর জন্ম থাদা দ্রব্য প্রস্তুত করিতেছেন: তাঁচার সাস্থ্য ও সুথের জন্ম উপায় চিস্তা করিতেছেন। যে প্রেম উচ্ছ-দিত আকারে এক সময় দেখা দিয়াছে, সেই প্রেমই এখন নিস্তরক অবস্থাতে প্রচ্ছন্ন থাকিয়া তাঁহাকে থাটাইতেছে।

মানবসম্বনীয় প্রেমের যেমন ছই ভাব ঈশ্বর সম্বন্ধীয় প্রেমেরও সেই প্রকার ছই ভাব আছে। ঈশ্বর সম্বন্ধেও তর্জিত প্রেম আছে এবং নিত্তরক প্রেম আছে। কথনও কথনও ঈশ্বরের নামে ভক্তের অঞ, প্লক, মৃচ্ছ্ । প্রভৃতি প্রেমোদ্মাদের লৃক্ষণ সকল প্রকাশ পাইতে পারে, আবার কথনও বা সেই নিত্তরক অবস্থাতে হৃদরে প্রচন্ধে থাকিয়া তাঁহাকে চালাইতে পারে। প্রেমোচ্ছ্বাস যে সকল সময়ে থাকিবে এরপ আশা করা কর্ত্তবা নহে এবং সকল সমরে না থাকিলেই যে ঈশ্বরপ্রীতি বিনুপ্ত হইল বলিরা হংথ করিছে হ্রবে ভাহাও নরে। দর্শনা উচ্ছাদ না দেখিলে যে প্রের অভাহত হয় ভাহা নহে। দেখিতে হইবে সেই প্রেম নিজনদ অবস্থাতে হদরে নিহিত রহিরাছে কিনা—অর্থাৎ কথার প্রীতি ভোষার প্রেরক হইবা খাটাইতেছে কি না ?

আমরা সংসারে হুই প্রাক্তরে লোক দেখিতে পাই। এক শ্রেণীর লোকের হৃদয়ের সকল ভাবই সহজে বাছিরে কুটিয়া উঠে। একদতে তাহাদের ভাব উথলিয়া উঠে, সজোরে কঠা-निक्रम करत ; क्षरत वनशृक्षक थात्रण करत, कछ मिडे गरबाधन করে: একেবারে প্রেম মাথাইয়া দেয়। কিন্তু কার্য্যকালে সেই বন্ধর প্রতি তত অনুরাগ দেখা যায় না; তাহার বস্ত স্থার্থনাল করিবার প্রবৃত্তি দৃষ্ট হয় না; কার্য্যে তাহার উপকার করিবার জম্ম ব্যপ্রতা দেখা যায় না; তাহার একটা অনিষ্ট হইতেছে জানিয়া তাহা নিবারণের জন্ম তত ব্যাকুলতা লক্ষিত হয় না। আর এক শ্রেণীর লোক আছে, তাহাদের বাহিরে প্রকাশ অর কিন্তু কাজে প্রেমের পরিচয় বেশী। বাহিরে বছুকে হৃদয়ে ধরিয়া "ভূমি আমার এমন, ভূমি আমার তেমন" এরপ বলে না वटि. किंड जाहात त्रांग लाक विशास हत्क जनशाता शास : তাহার সহায়তার জন্ত কোন ক্লেশকে ক্লেশ বলিয়া বোধ হয় না। সকলেই হয়ত বলিবেন এই উভয় শ্রেণীর মধ্যে এই বিতীয় শ্রেণীট্ শ্রেষ্ঠ। বে প্রেম কান্ধে উত্তরায় না সে প্রেমের গভীরতা অর।

ঈখর সম্বন্ধেও হুই শ্রেণীর সাধক আছেন। এক শ্রেণীব ভাব বাহিরে অধিক প্রকাশ পায়। তাঁহারা ঈশবের গুণ কীর্ত্তনে প্রবণে অঞ্চপাত করেন, তাঁহার সহবাসে প্রাণেব ভাবরাশি উচ্ছ দিত হইয়া উঠে। কিন্তু ঈশবের দেবা ও তাহার প্রিয় কার্য্য সাধনে তাঁহারা অমনোযোগী; নীতিব প্রভাব শিথিল; চরিত্রের উন্নতিসাধনে উদাসীন। কার্য্যে তাঁহাদের ঈশ্বর প্রেম দেখিতে পাওয়া যায় না। সামান্ত স্বার্থত্যাগ করিতে কুটিত হন; বিশ্বাসামুদারে কার্যা করিতে সাহসে কুলায় না। অপর শ্রেণীর সাধকের বাহিবে সেরপ প্রকাশ নাই। তাঁহারা ভাবকে সমরণ করেন, মুঞ্ হর্ষ পুরুক প্রান্ত বিষয় সকল বড় অধিক প্রকাশ পান না: কিছু ঈশবের জন্য ও ধর্মের জন্য সর্ববিভাগে করিতে প্রস্তুত, বিবেক উজ্জ্ব ; ঈশ্বরের আদেশ পালনে মনোযোগি : ও নীতির নিরম পালনে সর্বাদা স্বাদ্ধ। যে প্রেম কেবল তরঙ্গ ও উচ্ছাসেই शास्कः; अनस्त्रत अञ्चल्डरन अविष्ठे इरेन्ना सीवनस्क চালিত করে না. আমরা সে প্রেমের প্রার্থী নহি। আমন। মাতৃক্ষেত্রে নাার স্থারী প্রেমকে প্রার্থনীয় মনে করি। যাহ। সময়ক্রমে তর্কিত হইবে। ে আবার অপর সময়ে নিতরক অন স্থাতে থাকিয়া আমাদের কার্য্য সকলকে চালাইবে।

যে ধর্মভাব নীতি ও সদম্ভান হইতে বিচ্ছিন্ন হইনা কেবল ভাব মাজের পরিতৃথির মধ্যে বাস করে, তাহার পোবণ কর। প্রাক্ষসমাজের লক্ষ্য নহে। নীতি ও সদম্ভানে যাহাতে স্বভাবত: প্রাক্ষ্য সেইরূপ ধর্মভাব বর্দ্ধিত করাই ইহার লক্ষ্য। এই লক্ষ্য আমাদিগকে সর্কাদা স্মরণ রাখিতে হইবে।

महिकू रहेश माधन कत्र।

যে মৃত্তিকা অতি কদৰ্য্য, বাহাতে জল লাগিলেই কর্দমে
পরিণত হয়; পারে লাগিলে লোকে বদ্বপূর্কক পদ থেতি করে,
যে মৃত্তিকাকে সকলেই অপকৃষ্ট বন্ধ বলিয়া জানে, সেই মৃত্তিকা
হইতেই অন্দর গোলাপ ফুল ফুটিরা থাকে; পদ হইতেই লাবণ্যপূর্ণ অবাসিত পদ্ম জন্ম প্রহণ করিয়া থাকে। ইহা অপেকা
অধিকতর বিশ্বয়কর ব্যাপার আর কি আছে? কোথার পদ্ধ
আর কোথার পদ্ধজ। বে থাড়তে পদ্ধ গঠিত কিরপে সেই
ধাত্র এত সংশোধন হয়, যে তাহা হইতে নিম্নলম্ভ পদ্ম ফুলটা
ফুটিরা উঠে। এই বিবরের উল্লেখ করিরা বর্তমান সমরের
একজন চিক্তাশীল ব্যক্তি বলিয়াছেন,—কদর্যা মৃত্তিকা হইতে
বিদি অন্দর গোলাপ হইতে পারে, তবে অচেতন জড় হইতে
সচেতন জীব কেন হইতে পারিবে না ?

কিছ স্থলর ফুলটা যে ফুটে তাহা কি এক দিনে ঘটিয়া থাকে? ইক্সজাল প্রক্রিয়া যাহারা প্রদর্শন করে তাহারা দশ মিনিটের মধ্যে আম পুতিয়া, গাছ করিয়া, ফল দেখাইয়া দিতে গারে। কিছ প্রকৃতির রাজ্যে এমন ইক্সজাল প্রক্রিয়া ঘটে না। প্রকৃতি চির সহিষ্ণু—যথা সমরে বীজটা বপন কর; কতদিন পরে স্থলর ফুলটা ফুটিল। জিখবের কি আশ্চর্য্য সহিষ্ণুতা!

জড় রাজ্যের সর্বাত্র এই নিয়ম। এই ধন ধান্ত, পূর্ণা পৃথিবী এক দিনে নিবর্ত্তিত হয় নাই। কোন কোন ধর্ম শাস্ত্র বলে ঈশ্বর সাত দিনে জগৎ দৃষ্টি করিয়াছেন। কিন্তু বিজ্ঞান তাহা বলে না। বিজ্ঞান বলে আদিতে আকাশ ছিল, আকুশে হইতে বায়ু, বায়ু হইতে অগ্নি। অগ্নির পর জল, জল হইতে পৃথিবী ক্রমে বহু বছ লক্ষ যুগে এই জগৎ বিবর্ত্তিত হইয়াছে; বছকালের পরিশ্রমের পর কদর্যাতার মধ্য হইতে সৌন্দর্যা আবিভূতি হইয়াছে। স্ষ্টিকে এমন স্থলর করিতে স্ষ্টিকর্ত্তাকে স্থিক্তার সহিত কত যুগ কার্যা করিতে হইয়াছে।

প্রাণী রাজ্যেও এই নিরম। এক দিনে জ্ঞান সম্পন্ন মানব স্টি রাজ্যে আবিভূতি হয় নাই। প্রথমে একেল্রিয় জীব, তৎপরে ছই ইল্রিয় বিশিপ্তজীব, এইরূপে বছ যুগব্যাপী বিবর্জনের পর পঞ্চেরির বিশিপ্ত জ্ঞান সম্পন্ন মানব অভ্যুদিত হইয়াছে। মানবের মহন্ব বছকাল ব্যাপী সংগ্রাম ও চেষ্টার কল।

এই সকলের বারা ঈশ্বর আমাদিগকে সহিষ্ট্তাই শিক্ষা
দিতেছেন। ধর্ম সাধন সম্বন্ধে এই মহাসত্যটা স্মরণ রাখিলে
আমরা অনেক সময়ে নিরাশার হস্তু হইতে বাঁচিতে পারি।
দরিজ বাক্তি যেমন জাগ্রত স্বপ্নের প্রভাবে কথন কথনও আপনাকে ধনিশ্রেষ্ঠ বলিয়া বিবেচনা করিতে পারে; সেইরূপ এক
জন নিরুষ্ট বাক্তিও কথন কথনও চিন্তা ও আকাজ্ফাতে সপ্তম
স্বর্গে উঠিতে পারে; কিন্তু কার্য্যে সেই পরিমাণে উন্নতি লাভ
করা, দীর্ঘকাল ও বছ সাধন সাপেক। দৃষ্টান্ত স্বরূপ মনে কর
কোন স্থপ্রসিদ্ধ বজ্ঞার ইংরাজী বক্তৃতা শুনিয়া একজন বালকের
ইচ্ছা হইল যে সেও সেইরূপ শক্তি লাভ করে। এরূপ ইচ্ছা
হওয়া কিছুই বিচিত্র নহে, বরং স্বাভাবিক ও প্রশংসনীয়।
কিন্তু কার্য্যতঃ সেই শক্তি লাভ করিতে হইলে, ভাহাকে এ, বি,

নি, পড়িতে হইবে; শিক্ষকের সাহাব্য লইতে হইবে; অনেক তিরন্ধার ও শান্তি ভোগ করিতে হইবে; ডিক্সনারি দেখিতে হইবে; ক্তিকে ক্লেশ দিতে হইবে; বহবৎসর অপেকা করিতে হইবে; ইংরাজী সাহিত্য মনোবোগপূর্বক পাঠ করিতে হইবে। তবে সেই শক্তি ক্রিবে।

সেইরপ একবাজি ঈখরের নিকট এই প্রার্থনা করিতে পারে, "আমাকে একদিনে কাম ক্রোধের হাত হইতে মুক্ত কর; ঈশার জ্ঞার বিখানী কর; বৃদ্ধের জ্ঞার জ্ঞানী কর; চৈতন্তের জ্ঞার প্রেমিক কর; ইত্যাদি সে ব্যক্তি প্রার্থনা করিলেই যে ঈশার তাহা পূর্ণ করিবেন ভাহা নর। তাঁহার রাজ্যের এরপ নিরম নর যে রাভারাতি কেহ শর্গে যাইবে। তিনি আপনার দৃষ্টান্ত হারা দেখাইতৈছেন যে সহিষ্কৃতা সহকারে কদর্য্যভার ভিতর হইতে সৌন্দর্যাকে বিকাশ করিতে হইবে। যদি প্রকৃত ধর্মকীয়ন চাও দীর্ঘকান ভাহার অনুগত থাকিরা সাধন করিতে হইবে।

আমরা অনেকের জীবন দেখিয়াছি যে যথন তাঁহারা নবজীবন প্রাপ্ত হইরা ঈশবের চরণে আশ্রর লাভ করিরাছেন: যখন তাঁহাদের ইচ্ছা পাপপথ পরিত্যাগ করিয়া পুণাপথকে আশ্রয় করিরাছে; যথন তাঁহাদের আকাজ্ঞা ঈশ্বরের দিকে ধাবিত হই-তেছে, তথনও মধ্যে মধ্যে তাঁহাদের পুরাতন শত্রুগণ, তাঁহাদের প্রাতন পাপ ও হর্মলতা সকর সময়ে সময়ে আসিয়া তাঁহাদিগকে অভিভূত করে। এরপ অবস্থা অতিশয় নিরাশা জনক। এরপ অবস্থাতে পাড়িয়া, মামুষ বিষণ্ণ হইয়া পড়ে এবং মনে মনে চিন্তা করিতে থাকে, তবে কি ঈশ্বর আমার প্রার্থনা শুনিলেন না ? কই আমি ত রিপুকুলের হস্ত হইতে রক্ষা পাইনাম না। ঈশ্বরের ঘারে এত ক্রন্সন করিলাম, পাপের ভ্রন্ত এত **অমু**তাপাঞ্র বিদর্জন কারলাম তথাপিও আমার নিষ্কৃতি নাই। তবে কি আমি এই নিদারুণ দাসত্বপাশ হইতে মুক্ত হইতে পারিব না ? তবে কি আমার পক্ষে আর উদ্ধারের আশা নাই। এইরূপ नितामा यथन क्षमग्रत्क जाक्रमण करत, उथन यमि चत्रण कता याग्र. যে ঈশবের অভিপ্রায়ই এই যে আমরা সংগ্রামের ভিতরে থাকিয়া সাধন করিব। তাহা হইলে অনেক সান্তনা পাওয়া যায়। ঈশ্বর যে আমাদিগকে পুরাতন রিপুকুলের ঘারা আক্রান্ত হইতে দেন তাহার অভিপ্রায় এই যে অন্তরে অত্নভব করি. যে পাপের দাসত্ব এমনি ভয়ানক ব্যাপার যে किছू मिन देख्या शुक्रक তাহাতে অভাত হইলে সহজে তাহা হইতে নিষ্কৃতি পাওয়া যায় না। এরপ অবভাতে যতই পুরাতন পাপকে দেখিয়া আমাদের যাতনা হয়, ততই তাহার প্রতি আমাদের ম্বণা বন্ধিত হয়। ততই তাহার বীভংস মূর্ত্তি আমাদের হৃদয়ের বিরক্তি জনক হইতে থাকে। ইহা कि आमामের পক্ষে কল্যাণকর নহে ? অতএব সে প্রকার অবস্থাতেও আমাদিগকে ধৈর্ঘাবলমন করিয়া সাধনে নিযুক্ত থাকিতে হইবে।

ব্যক্তিগত ধর্মজীবন সম্বন্ধে যেরপ বাদ্ধসমাজ সম্বন্ধেও সেই রপ। অনেকে এই বলিয়া হংগ করেন "যে ব্রাহ্মসমাজ আশা-হূরপ উন্নতি লাভ করিতেছে না।" কিরূপ মৃত্তিকাতে কিরূপ বীজ পড়িয়াছে, তাহা তাঁহারা ভূলিয়া যান। আমরা কিরূপ

ধাতুর লোক, বহু শতাবীর পরাধীনতা, অঞ্জা ও দীরিটো আমরা কিরণ জিনিসে দাড়াইয়াছি, তাহা মনে বাকিলে ভিছেন निश्राक এত निताम हहेरा हम ना। ठिखा कवित्री सिनियन **दिन्धा याहेरेव एव वहकान धतिया नामा ध्यकात प्रशैक्तित्र मरधा जान** করিয়া আমরা প্রধানতঃ তিনটা গুণ হারাইয়া ফেলিয়াছি অথবা আমাদের জাতীর চরিত্রে প্রধান তিনটা লোষ জন্মিরাছে;—(১ম) সংসাহসের অভাব---(২র) কর্ত্তব্য জ্ঞানের শিথিলতা (৩য়) পরার্থ-প্রবৃত্তির অভাব। স্থামাদের এমনি ছববন্ধা হইরাছে, বে স্থামরা যাহাকে সং বলিয়া অমুভব করি, তাহাকে অবলম্বন করিতে সাহসে কুলায় না। জাতির ভয়ে সকলকেই জড় সড় হইয়া থাকিতে হয়। এদেশে সমাজ-শক্তি ব্যক্তিগত শক্তিকে একেবারে পিষিয়া কেলিয়াছে। দ্বিতীয়তঃ আমরা যে কার্য্য অবলম্বন করি তাহাতে দার্মিস্কলন থাকে না; এই জন্ত কোন কার্যাই আমাদের সমুচিতরূপে চলে না; কর্ত্তব্যপ্রিয়তা আমাদের হৃদয়ে অতি তুর্বল। যে কার্য্যের ভার লইয়াছি তাহা আমাকে স্কুচারুপে করিতে হইবে এজ্ঞান না থাকাতে মজুরকে কাজে লাগাইয়া পাহারা রাখিতে হয়, রাজনিস্ত্রিকে নিযুক্ত করিয়া তত্ত্বাবধায়ক রাখিতে হয়; গ্রন্থানি ছাপিতে দিয়া সর্বদা সতর্ক থাকিতে হয়; এইরূপে লোকের কর্ত্তব্য জ্ঞানের শিথিলতা নিবন্ধন কত শক্তি, কত অর্থ, কত সমন্ন ব্যয় করিতে হয়। আমাদের দশা এই প্রকার দাঁড়া-ইয়াছে। পরার্থ প্রবৃত্তি ও আমাদের অন্তরে অতি ক্ষীণ ভাব ধারণ ক্রিয়াছে, ছুর্বল ও রুগ্ন ব্যক্তি যেমন কেবল আপনাকে লইয়া ব্যস্ত থাকে, আমরাও সেইরূপ স্বার্থ চিস্তাতে নিমগ্ন রহি-য়াছি। এই ভূমিতে ব্রাহ্মধন্দার বীজ নিহিত হইয়াছে। জিরূপে আশা কর যে 🗩 দিনে **আ**কাজ্কার স্থায় উন্নতি দেখা যাইবে। সহিষ্ণুতার সহিত সাধন কর; ঈশ্বরের অমুগত থাক স্থানি সময়ে আদিবে।

সতুক্তি-সংগ্ৰহ।

কোরিস্থবাসিদিগের প্রতি পত্রে সেণ্টপল বলিতেছেন— "যদি আমি মানবের বা দেব লোকের ভাষাতে কথা কহি; কিন্তু যদি হৃদরে প্রেম না থাকে, তবে আমার সে ভাষা অন্তঃসার শৃষ্ঠ তাম পাত্রের শব্দের ভাষ। যদি আমার প্রচুর বাক্ শক্তি थारक এবং দৈবজ্ঞের শক্তি আমি পাই, यनि আমি প্রকৃতির গুঢ় রহস্ত সকল অবগত হই এবং সমগ্র জ্ঞানকে অধিকার করি ; এবং যন্ত্রারা পর্বত স্থানান্তরিত হইতে পারে এমন বিশ্বাসও থাকে; আর হৃদয়ে প্রেম নাথাকে, তাহা হইলে আমি অপ-দার্থের জার, আমার কিছুই মূল্য নাই। যদি আমি আমার যথা সর্বাস্থ দরিদ্রদিণের ভরণ পোষণার্থ অর্পণ করি এবং আমার দেহকে অগ্নিতে ভশ্ম হইতে দি। কিন্তু অন্তরে প্রেম না থাকে, তদ্বারা আমার কোন উপকার নাই। প্রেম দীর্ঘকাল সহ करत ; अथा मनम् थारक ; त्थाम निर्मा करत्र मा ; त्थाम भर्त्व স্ফীত হয় না; প্রেম অভদ্র ব্যবহার করে না; প্রেম স্বার্থকে অবেষণ করে না; প্রেম সহজে কুপিত হয় না; অপরাধ মনে রাথে না; অধর্মাচরণে আনন্দিত হয় না; কিন্তু সভ্যেতেই

্পাশ-প্রতিষ্ঠা । *

অন্যকার বক্ত তার বিষয় প্রাণ-প্রতিষ্ঠা-- ইংরাজীয়ত বরিছে Breath of Life विश्वास स्वा বংসরের মধ্যে এই দেশে ভিনটা আধান রাজনৈতিক আলে লন দেখা গিরাছে; সেই তিন্তী আব্দোলন হুইডে অনেত চিন্তার বিষয় পাওয়া গিয়াছে। তাহার কিঞ্চিৎ স্থাগত স্কল্ভে विनार रेक्श कति। यथन नर्फ त्रिशम एनम इंटेंट विनास नहेंग খদেশ প্রত্যাবর্ত্তন করেন, প্রথম আন্দোলনটা সেই সমরে ঘট্ট্যা ছিল। যে দিন তিনি বোখাই পরিত্যাগ করেন সে দিন আনি সেধানে উপস্থিত ছিলাম। কলিকাতাতে তাঁহাকে দেরপ স্মা রোহের সহিত বিদার দেওরা হর,লোকের মনে বে গভীর উজ্বা সের সঞ্চার হয় এবং বে উৎসাহ লোতে নগর প্লাবিত হইরা উঠে. তাহা নিজে দেখি নাই, সংবাদ পত্রে পাঠ করিরাছিলাম। কিয় त्वाचारे शांकिया यादा तमियाहिनाम, ठाहार हिसानीन वाहि মাত্রেরই মনে নানা গভীর চিস্তার উদয় হইয়াছিল। এমন কি আমাদের বিষেধী "পাইওনিয়ারে" সম্ভবতঃ কলভিন সাহেব निधियाहितन "If it is real what does it mean" अथीर प्रि ইহা সত্য হয় তবে ইহার অর্থ কি ৭ ইহাতে প্রমাণ হয় যে সে সময গ্রণমেন্টের উচ্চ কর্মচারীগণ পর্যান্তও এই দেশব্যাপী আন্দো वन प्रति हिन्ति इस्ता अजियाहित्वन। বোষাইএ উপন্থিত থাকিয়া যে রূপ অভার্থনার আয়োজন দেখিয়াছি, তাহা অঞ্চ পূর্ব্ব ও অভূতপূর্ব্ব। এইরূপ ঘটনা যে তথায় ঘটতে পারে হু মাদ পূর্ব্বে তাহা কেহ চিস্তাও করিতে পারেন নাই। ইহারই কিছুকাল পুর্বের, তথার ভারত সভার ক্লায় কোনও সভা স্থাপিত হইতে পারে কি না, সে সম্বন্ধে তথাকার কয়েক জন প্রধান প্রধান लारकत महिल खानाथ कति। **छाहार**मत्र खरमरकहे वरननः তথায় এত ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীর লোকের বাস, তাহারা গবস্পেরে এরপ ঘোর বিষেধী, যে তাছাদের সকলকে একজিত ক্য कृःमाधा । এक বোদ্বাইয়ে মহারাদ্রীয় পাশী, গুলরাটা কেনারী, প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন জাতীয় লোক বাস করেন। সেই সকল প্র^{গ্ন} প্রধান লোক (কাশীনাথ অন্বক্তেলাং মহাশয়ের নাম বিশেং ভাবে মনে হইভেছে) বলেন যে বোম্বাইএ এত প্রকৃতির ভিন্ন ধর্মাবলম্বী ও বিভিন্ন কৃচির লোকের বাুস্ সেখানে সকল শ্রেণীর লোক লইয়া একত্রে কাজ করা অৰী তাঁহাদের কথা শুনিয়া আমরা সে উদ্যোগ পরিত্যাগ কিন্তু সেই বোদাইএ লড় রিপণকে বিদায় দিবার দিনে ছটা ^{বিষ} বের প্রমাণ পাওয়া গিয়াছিল। প্রথম আশ্রব্য ঐক্য ভাব। দেখ গেল মহারাষ্ট্রীয়, পারশী, গুজরাটী, মুসলমান প্রভৃতি সকলে পর স্পরের বৈরভাব বিশ্ব ত হইয়া এক জ্বন্যে এক প্রাণে এই ^{সভূত} পূৰ্ব্ব একতা হুত্ৰে আবদ্ধ হইয়াছেন। পুৰুষ, স্ত্ৰী, হিন্দু, মুগল^{মান}

^{*} গত ৬ই এপ্রিল তারিবে ছাত্রসমাজে পৃতিত শিবনাথ শারী क¹³ বজ্তার সারাংশ।

গুলুৱাটা কৰাক কৰিছিল মান্ত কৰিছিল কৰিছিল কৰা কৰিছিল কৰা কৰিছিল আনু আনু আনু কৰা কৰিছিল আনু কৰিছিল কৰা কৰিছিল আনু কৰিছিল আনু কৰা কৰিছিল আনু কৰা কৰিছিল আনু ক

বিত্তীর পরিচয় Power of organisation অর্থাৎ সমবায় শক্তি। সমবেতভাবে কার্য্য করার শক্তি বিষয়ে ভারতবাসী वफ् होन। Power of organisation अर्थाৎ विভिন্ন अन य अनः করিয়া, বিভিন্ন শক্তি একত্রিত করিয়া সমাজ গঠন সহঙ্গে ভারত-বাসী নিতান্ত হীন। ইংরাজ বিশেতঃ আমেরিকান্রা এ বিষয়ে বড় অগ্রসর। সমাজের বিভিন্ন শক্তিকে একত্র যোজনা ব মহৎ কাজ করাই organisation! যেমন আলপিন নির্মাণ-এক জন তার পরিষার করিতেছে, এক জন আলপিন গঠন করি-তেছে, এক জন তাহা সাজাইতেছে—এইরূপ শ্রম বিভাগ করিয়া সমবেত ভাবে কার্য্য করিয়া অতি সহজে কাজটা নির্কাহ করি-্রছে। আবার দেখুন কাপড়ের কল এক স্থানে তুলা প্রস্তুত হইতেছে, এক স্থানে তাহা পরিষ্কৃত হইতেছে, এক জনে সূতা প্রস্তুত করিতেছে। এই বিভিন্ন অঙ্গ, বিভিন্ন কার্যা ও বিভিন্ন লোকের পরিশ্রম একত্রিত করিয়া মহৎ কাজ সম্পন্ন হইতেছে। organisation—ইংরাজগণ এবিষয়ে বড় অগ্রসর। তাহারা যে এদেশে রাজা স্থাপন করিয়াছেন ও শাসন করিতেছেন তাহা ইছার্ট বলে। তাঁছাদের এই সমবায় শক্তির প্রমাণ এ দেশেও অনেক পাওয়া যায়। যেমন পোষ্ট অফিস্। কত কুদ্ৰ কুদ্ৰ বভাগ, ক্ষু কুদ্র অঙ্গ একত্রে এই বৃহৎ ব্যাপারে পরিণত হইয়াছে।

বহুদিন হইতে সংস্থার আছে, এবং এই সংস্কারে সতাও আছে, যে এই দেশের লোক সমবায় শক্তি সম্বন্ধে অতি হুদিশাগ্রস্ত। যথার্থ ই জাতিভেদ প্রচলিত থাকাতে সমাজের লোক বিচ্ছিন্ন হইয়া রহিয়াছে। এই দেশে অনেক দেব মন্দির আছে, এই দেশের লোকের বিদ্যা ও বুদ্ধির সাক্ষী স্বরূপ অনেক প্রাচীন কীর্ত্তি রহিয়াছে, তাহা সমস্তই এক ু এক ব্যক্তির যত্নের ফল। দশ জনের কৃত্ত শক্তি ও অর্থে সমাজের কোনও মহৎ কাজ এ দেশে হয় নাই। কিন্তু সে দিন বোম্বাইএ দেখিলাম, এই সমবেত শক্তি প্রকাশ পাইতেছে। তাহাতে কোনও ইংরাজের সাহায্য ছিল না, মিউনিসিপালিটির হাত ছিল না, সকলে একত্রে সভা করিয়া একত্রে পরামর্শ করিয়া যাহা করিয়াছিলেন তাহাতেই ইংরাজগণ গভীর চিস্তায় পড়িয়াছিলেন। কারণ ভাঁহারা বৃক্তিতে পারিয়াছিলেন এ দেশে কাজের উপাদান রহিয়াছে, ব্যবহার ক্রিলেই হয়। প্রথম রাজনৈতিক ঘটনাটা এই।

বিতীয়টী—বখন বাবু হুরেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যার কারাক্ষ

মধ্যে কৃতি হাজার লোকে সভা করিরাছিলাম। প্রথমে টাউন হলে
সভা করিবার কথা ছব, কিন্তু বাহাতে আমাদের সভা না হইতে
পারে সেই জন্ত মিউনিসিপানিটার সভাপতি তাহা দিলেন না।
মেদিন সভা হইবে তাহার পূর্ব রাত্রে ধবর পাই যে টাউন হলে
সভা হইতে পারিবে না। প্রভাতে সকলে কোনও বড়মাছবের
বাটীতে সভার স্থান হয় কি না, তাহার চেপ্তায় বাহির হইলেন।
৮০৯ টা পর্যাস্ত কোনও স্থান পাওয়া গেল না। ২০০১ টার
সমর হির হইল অনাথ বাব্র বাড়ীর মাঠে সভা হইবে। তার
পর পাঁচটার সমর বিশ হাজার লোক লইয়া আমরা সভা করিলাম। তথন অল্প সমনের মধ্যে এই যে সভা হইল, তাহার মধ্যে
এই ভাবটী দেখি। সেই সময় দেখিয়াছি হিন্দু, মুললমান
পরস্পারের পার্থকা বিশ্ব ত হইয়া একত্রে কাল করিতে পারেন।

ভৃতীয় রাজনৈতিক ঘটনা এলাহাবাদে National Congress।
আমি অধার উপস্থিত ছিলাম না। দূরে থাকিয়া বাহা ভানিয়াছি
তাহাতেই একতা ও সমবেত শক্তির প্রকাশের পরিচয় পাওয়া
গিশাছে। তথায় প্রতিনিধিগণের থাকিবার যে বন্দোবস্ত হয়,
য়ে রূপ সূপ্রনার সহিত সমস্ত কার্য্য সম্পন্ন হয়, তাহার প্রশংস।
সর্বার ভানিতে পাই।

এই তিনটী আন্দোলনে একতাও সমবেত শক্তির প্রকাশ দেখা গিয়াছে। এই তিনটা ঘটনা হইতে এই একটা আভাস পাই বে যে উপাদানে জাতীয় মহৰ গঠিত হইতে পারে, জাতীয় স্বাধীনতা লাভ করা যাইতে পারে, একটী জাতি বড় হইতে পারে, তাহা এই জমিতে, এই ভারতবর্ষের নর নারীর হৃদরে বিদামান আছে। এই উপাদান হইতেই জাতীয় মহৰ গঠিত হ্ইতে পারে; তাহার একটু আভাস পাইয়াছি। একতা ও সম-বেত শক্তির একটু পরিচয় পাইয়াছি। তবে এখন প্রশ্ন এই যে, সমস্ত উপাদান যদি থাকিয়া থাকে, তবে অন্ত সময় তাহার ফল দেখা যায় না কেন ? এই একতাও সমবেত শক্তির কার্যা অন্ত সময় দৃষ্ট হয় না কেন ? ও জ রূপে কারণ অন্সন্ধান করিলে দেখিতে পাই যে, মাল মদলা আছে বটে, কিন্তু তাহা ভাঙ্গিয়। গড়িয়া তুলিতে পারে, এমন শক্তি নাই। যে তিনটী রাজনৈতিক আন্দোলনের উল্লেথ করিতেছি তাহার মূলে স্বজাতি প্রেম ছিল। ইলবার্ট বিল ও অক্তান্ত কারণে স্বজাতি প্রেম অগ্নি শিথার স্থায় সকলের হৃদয়ে জলিতেছিল। তাহাই এই শক্তিকে প্রকাশ করিয়া ছিল যদি এই স্বজাতি প্রেম স্থায়ী হইত, উদ্দীপ্ত স্বগ্নি শিধার স্থায় প্রেম শিখা যদি সকলের হৃদয়ে স্থায়ী হইত, তবে তাহা হইতে আমরা স্থায়ী ফল দেখিতে পাইতাম।

National congress এই স্বজাতি প্রেম বর্দ্ধিত করিতেছে।
এই জন্মই হীন বীর্যা উৎসাহহীন ঐক্যহান ভারতবাসীর মণা ও
এই প্রেম শক্তির আবির্ভাব প্রকাশ পাইতেছে। তাহাতেই
দেখিতে পাইতেছি, এই নিদ্রিত জাতীয় শক্তি ও প্রেম শক্তিব
মধ্যে প্রেমই প্রেষ্ঠ। প্রেম থাকিলে এই উপাদান হইতেই শক্তি
বিকাশ পাইতে পারে। রক্ষের কথা ভাবিয়া দেখুন। বীজ
যথন মাটিতে রোপিত হয়, তথন সেই বীজ অঙ্কুরিত হইতে
পারে, যদি বৃক্ষদেহ পৃষ্টির জন্ম যাহা কিছু প্রয়োজন সমন্ত

माहित्क विशामान शास्त्र । किकारस्यामकरवानि वह सुक्ष्मक हरेरा ब्राक्त पृष्टि हत। वीरण कीवनी मक्ति जारक विक्रिश हेरा छेनामान मरखर कतिया अबूब गठेन करता। वीर्वस वीस রোপণ না করিয়া মৃত বীজ রোপণ করিলে, জল উদ্ভাপ সমস্ত বিদামান থাকিলেও তাহা হইতে অভুর উৎপন্ন হইবে मा। যেমন বীজের জীবন্ত শক্তি সমস্ত সামগ্রী গ্রহণ করিরা বৃক্ষ গঠন করে, তদ্ধপ এই প্রেম যধন বিদ্যমান থাকে তথন আতীয় মহত্ব গঠিত হয়। আর যদি প্রেম না থাকে তবে অর্থ মুসায়, মাছৰ ৰালা কোনও কাজ হয় না, সময় বুখা বহিয়া যায়। ञ्जताः এই ममल जाराका (धामरे धारान, किलाखन जानि পঞ্চত্ত অপেকা বীজের জীবনী শক্তিই প্রধান। জাতীয় মহত্ব, জাতীয় সংস্থার বিষয়ে সর্বাদা মনে রাখিতে হইবে যে এই সমস্ত উপাদান অপেকা প্রেমই প্রধান। এই প্রেম শক্তিতে আশ্চর্য্য कां अ मः बंधि इरेग्राहा आश्नाता मकत्म (छिक्ताकी त्रिश-য়াছেন; আধ ঘণ্টার মধ্যে ধ্লী হইতে আম গাছ হয়। এক মৃষ্টি ধূলা ছিল, "লাগ ভেকি লাগ" বলিয়া ছাড়িয়া দিল, আর তাহা হইতে স্থমিষ্ট থানা প্রস্তুত হইল। স্থামরা দেখিয়াছি পৃথিবীতে সাধুগণ, ধর্ম সংকারকগণ এইরূপ ভেক্কি দেথাইয়া থাকেন। দৃষ্টাস্ত স্বরূপ, গুরুগোবিন্দ, মহম্মদ চৈতক্ত প্রভৃতির উল্লেখ করা যাইতে পারে। চৈতন্ত যঞ্চন জন্মগ্রহণ করেন তথন এই দেশে কিন্ধপ উপাদান ছিল। তান্ত্ৰিক ক্ৰিয়া কলাপে দেশ নিমগ্ন, ভক্তি ভঙ্ক, নবনারীর হৃদর ভঙ্ক, বাহিরের ক্রিয়া কলাপে মাতুষ নিমশ্ব। তাত্ত্ৰিক ক্ৰিয়াকলাপে সমস্ত দেশ পরিব্যাপ্ত, এমন সময়ে চৈতক্ত উদিত হইলেন, "লাগ ডেকি লাগ" বলিতেই শুদ্ধু মুকতে প্রেমনদী বহিল, ভক্তির আনন্দধ্বনি উখিত হইল। ভেকিলারা মাটী হইতে আম উৎপাদন করা আর তান্ত্রিক ভাবপূর্ণ দেশে ভক্তি স্রোত প্রবাহিত করা একই রূপ। গুরুগোবিন্দ ও নানকের কাজও এই প্রকার। আপ-নারা সকলেই শিধদিগের প্রশংসা শুনিয়াছেন; ইংরেজরাও তাহাদের প্রশংসা করিয়া থাকেন। শিথগণ পূর্কে কোথায় ছিল ? পঞ্চাবে এই বীরছ ও স্বার্থত্যাগ পূর্বে ছিল না। যাহা ছিল তাহা হইতেই গুরুগোবিন্দ এই বিক্রমশালী জাতির সৃষ্টি করিয়াছেন। মহম্মদ কর্তৃক আরবের পবিবর্ত্তনও এইরূপ অদুত। মহশ্বদের আবিষ্ঠাবের সময়ে **আরবের অবস্থা সকলে** জানেন। দস্থাতা, রক্তপাত এই সকলে আরবগণ মন্ত ছিল। মায়াবীর ভায় দক্তি ঘুরিয়া ফিরিত। জ্ঞান ছিল না, সভ্যতা ছিল না। এই জাতিকে হাতে পাইয়া মহক্ষদ একশত বৎপরের মধ্যে ভাছাদের চেহারা পরিবর্ত্তন করিয়া দিয়াছিলেন। ইহার ভিতরকার সংবাদ এই যে তাঁহারা প্রেমায়ি জালাইয়া দিয়াছিলেন। তাঁহারা বাহিরের मश्कात कतिएक रालन नाहे, किंद्ध मानव क्षतरह श्रीतम করিয়া প্রেমের আগুণ জালাইয়া দিয়াছিলেন। জনেক সমাজ সংশ্বারক এই সত্য ভূলিয়া যান। তাঁহারা মনে করেন যেন রতি, মাসা, তোলা হিসাবে; সমস্ত উপাদান সংগ্রহ করিয়া সমাজ সংস্থার করিবেন। যাঁহারা আজ কাল হিন্দু ধর্মের সংস্থার করিতে চাহেন,তাহাদের মতে এত টুকু জ্ঞান চাই,এত টুকু সত্য

हारे, अर हुन् (अन हारे। काराज्य मन्त्रात्म कार के नित्म प्रति हा বেন পাঁচ জনে বিচাৰ করিবা টিক করিবেন কেন্দ্রী কর্তনুত্র বার্থ व्यक्तिम । वहेन्नात्न गर्मान गरकात्त्रच व्यक्ति चात्र गाउँ का কাটিরা শাধার জল দেওরা একই কবা। মানবছণুরের ব্যের शक्षीकाष्ट्रां, वेषत्र गार्डत जाकाष्ट्रां উৎপাদন ना क्रिया मानत्वत श्वत ववनादेश मा वित्न वृक्ति जानमिर्क जानिया সকলে যোগ সাযোগ করিবা কথমও সমাজ সংখ্যার করা गरिए भारत ना। धरे बड़रे छोरालत मःबारतन कही विक्रम হইয়াছে। তাঁহাদের অনেকের প্রভাব ভনিলে হাঁদি পারু। তাহারা বলিলেন জাতিভেদ মন্দ, কিন্তু একেবারেই সব ভানিলে চলিবে না, স্থতরাং আপাততঃ রাড়ী বারেন্দ্র ভ্রেণীতে বিবাচ প্রচলিত হইলে ভাল হয়। এইরূপ পরামর্শ করিরা, সকলে মিলিরা Resolution করিয়া কখাও এ কাজ করা বার না। বুদ্ধির চালুনিতে কথনও সমাজ সংলার হয় নাই। আপনার। অনেকেই বেঞ্জামিন ফ্রান্থলিনের নাম গুনিরাছেন। তাঁহার জীবনীতে দেখিতে পাওরা যায় যে তাঁহার একবার জগংকে একটা নৃতন ধর্ম দিবার ইচ্ছা হইরাছিল। বহু চিস্তার পর কাগজে পরিস্কার করিয়া একটা নৃতন ধর্ম লিথিলেন। State deeds এর ভাষ পরিষার রূপে নানা স্থান হইতে সার সংগ্রহ করিয়া নুতন ধর্ম প্রণয়ন করিলেন। তাহাতে হিসাব মন্ত সভ্য প্রেম সকলই ছিল। সব হইয়াছিল, কিন্তু একজনও সে ধর্ম গ্রহণ করিল না। তাঁহার স্ত্রী পুত্রগণও সে ধর্মের অফুসরণ করিলেন ना। जकताई लागा कितिशाष्ट्रितन एव धर्माती दिन तथा हरे য়াছে কিন্তু কেহই সে ধর্ম লইতে চালিলেন না। Franklin বিষয়ী লোক ছিলেন, জদয়ে অগ্নি ছিল না, তাই বৃদ্ধির চালু-নিতে ঘরে বসিয়া নৃতন ধর্ম প্রস্তুত করিয়াছিলেন তাহাতে হইবে কেন প্রেমারি জালিয়া মানব হৃদয় পরিবর্ত্তন করিয়া ना मित्न. जाकां का फेक कतिया मन वननारेयां ना मित्न, क्थन । সংস্থার হইতে পারে না।

এ দেশে বিধবা বিবাহের প্রচলনের চেষ্টা হইয়াছিল। সকলে মনে করিরাছিলেন বিধবা বিবাহ শাস্ত্র সক্ষত প্রমাণ কবিতে পারিলে আর কোনও গোল থাকিবে না। তাই বিদ্যাসাগর মহাশয় নানা শাস্ত্র হইতে প্রমাণ তুলিয়া বিধবা বিবাহের শাস্ত্রীয়তা প্রতিপাদন করিলেন। কিন্তু কাজের সময় কিছুই হইল না। আমরা বৃদ্ধি দিতে পারি, প্রাণ ত আর দিতে পারি না। জ্ঞান দিতে পারি, সাহস ত আর দিতে পারি না। জ্ঞান যেন দিলাম কিন্তু ভিরুকে সাহসী করে কে ? সে শক্তি দেয় কে ? ময়ুয়ায় না থাকিলে সব র্থা। কোথার আটকাইয়াছে ?

আজ দ্বির করা গেল,বাল্য বিবাহ মন্দ,কিন্তু সাহস কোধায় ? বল কোথায় ? যে হাঁটুতে বসিরা পড়িয়াছে ভাহাকে ধরির। তোলে কে ? তাহাকে দাঁড়াইবার দক্তি দের কে ? এই জ্ঞুট সমস্ত সংকারের কথা বৃধা হইরাছে। প্রেম বদি হলর পরিবর্তন করিয়া না দের, তবে উপাদান ঘরে পড়িরা থাকিবে, তাহাতে কোনও কাল হইবে না। রতি মাসা হিসাবে এত বিনর চাই, এত সাধুতা চাই—সর্ক্ষমতান্তগহিত্য—এইল্পে ক্থনও সাধু জীবন লাভ করা বার না। বে প্রেমের সহিত্ত সাধুতাকে আনি

बन करत, अ कारांबर काम। कारांब क्या तांबू रहे, वृद्धि तांबू इत, वावश्व नायू रत, निःयान ध्यारातत कोत्र नमेख योकाविक इटेबा यात्र। क्षामां के धर्क मरकात्र, कतिएक इडेरना ट्याम भूनी প্ৰাণ চাই! ইট আছে, চুণ আছে, কিছ জল না থাকিলে কি কথনও যর হঁইতে পারে ? ইহাদিগকে বাঁথে কে ? সব নিশার কে ?—লগ। তেমনি প্রেম, সেই আধ্যাত্মিক শক্তি। ইহা না থাকিলে ধনবল, জনবল সমস্ত সভেও কোন কাজ হইবে না। এই অস্ত প্ৰেমই প্ৰাণ। যডকণ প্ৰাণ ততকণই দেহ কাজ करता और जीवनी मिलिन अर्छाद दर्गान कांब इन ना। ব্রাহ্ম সমাজ এই জীবনী শক্তির জন্ত চেষ্টা করিতেছেন। ব্রাহ্ম সমাজে রাজনৈতিক ও সামাজিক সংখারের কথা বিশেষ রূপে হয় না। বেদী ছইতে কখনও বাল্য বিবাহ বিধবা বিবাহ প্রভৃতির प्रशस्त **উপদেশ দেওয়া হয় না। অধিকাংশ উপদেশেই বলা** हत् ঈশ্বরকে হানর দেও, ইক্সির নিগ্রাহ কর, অন্থতাপ কর, জীবন পবিত্র কর। অথচ ফলে কি দেখিতেছি ? রাজনৈতিক আন্দো লনে ব্রাহ্মগণ উৎসাহী, সমাজ সংস্কারে ব্রাহ্মগণ অগ্রসর। স্মাণ প্রাণ দেও, কাজ দেখিতে পাইবে। আগে প্রেমারি আলিয়া দেও, দে ভাব সর্ব্বত্ত দেখিতে পাইবে। ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাস ইছার প্রমাণ। আমরা যদি এই পথে থাকিতে পারি সব হইবে। ১৮৭২ সনে এক জন ইংরেজ বলিয়াছিলেন ব্রাহ্মসমাজ ভারত-্র্যকে স্বাধীন করিবার পক্ষে প্রধান সহায় হইবে। আমারও বিশ্বাস তাই। যে শক্তি রাজনৈতিক সংস্কারে ব্রাক্ষভাব আনয়ন করিরাছে, তার্যা এই ব্রাহ্ম সমাজের শক্তি। সমাজ সংকার এই শক্তি দারাই ইইতেছে—এই শক্তি বিধাতার শক্তি। প্রভু পর-মেশ্বর এই শক্তি লাভে আমাদের সহায় হউন।

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরক্দিগের মতামতের জক্ত সম্পাদক দায়ী নহেন।)

শ্রদ্ধাপার শ্রীযুক্ত তত্ত্বকৌমুদী-সম্পাদক মহাশয় সমীপেযু—

"তত্ত্বকৌমুদীর" বিগত সংখ্যার "বিধানবাদ" সহকে শ্রহ্মাম্পদ বাব্ আদিনাথ চট্টোপাধ্যারের লিখিত প্রেরিত পত্রপাঠ করিরা আনন্দিত হইলাম। আনন্দের বিশেষ কারণ এই যে,এই গুরুতর বিষয়টীর প্রকাশ্র আলোচনা অতি আবশ্রক; আদিনাথ বাব্র পত্রে এই আলোচনার অবতারণা হইল। আদিনাথ বাব্ বে মতের সমালোচনা করিরাছেন, আমি, অনেকের মধ্যে, সেই মতাবলন্ধী একজন। কিন্তু এই মতাবলন্ধী দিগের উপর তিনি যে সমন্ত উক্তি ও সিদ্ধান্ত আবোপ করিরাছেন, তন্মধ্যে অনেক খালিই আমি স্বীকার করি না; স্কুতরাং সেই সকল উক্তি ও সিদ্ধান্তের বিরুদ্ধে তিনি বাহা বলিরাছেন সে বিষরে তাঁহার সলে আমি একমত। কিন্তু আমার বোধ হয় যে আদিনাথ বাব্ তাঁহার বিরুদ্ধবাদীদিগের পুত্তক প্রবন্ধানি বিশেষ মনো-যোগের সহিত পাঠ করিলে তাঁহাদের উপর ঐ সকল উক্তিও সিদ্ধান্ত আবোপ করিলে কাহাদের উপর ঐ সকল উক্তিও

পাৰি, আনিনাণ নাৰুৰ জোন কোন কথার উত্তর নিব।

عابد وفيلار

विश्वासनाम मुमद्रक म्यामिनाथ नानू ७ छोरात निमक्तनामी-দিগের পার্থক্যের মূল এক স্থানে; সেই স্থানটা—ঈশবের নিত্যক্রিয়াণীলভা। জাদিরাথ বাবু তাঁহার গতের অনেক ছানে ইশ্বরের নিভাজিয়াশীলভা শীকার করিয়াছেন। কেবল শীকার করিয়াছেন ভাহা নহে, ডিনি এক ছানে দেখা-ইতে চেষ্টা করিয়াছেন যে ঈশবের নিত্যক্রিরশীলতা হইতেই স্প্রমাণ হয় যে ভাঁহার বিক্রবাদীদিগের মত অসত্য। কিন্ত আমার বোধ বে এই সভাটী স্কীকার করিরাও তিনি প্রকারান্তরে ইছা অস্বীকার করিয়াছেন। ফলত: এই সত্য সম্পূর্ণরূপে স্বীকার ना क्त्रां छ आमारमत मर्जित मर्क छांशांत यछ विस्ताय। এই সভাটী বে তিনি সম্পূর্ণব্ধপে স্বীকার করেন নাই, তাহা ভাঁহার ক্তিপন্ন উক্তি হই গ্রহ আমি প্রমাণ করিতেছি। তিনি এক श्वात्न विनार्छहन—"वास्त्रविक क्षेत्रवित्र शक्त नृजन किहूरे नारे, তিনি নিত্য বর্ত্তমান। স্থতরাং বিধান ও তাঁহার নিত্য নৃতন নয়. কিন্তু একই ভাবে তাঁহাতে নিত্য বর্তমান।" বাস্তবিক ্ হাই কি ? প্রক্লুত কথা কি এই নম্ব দেমবর জ্ঞানে সমু-দায়ই পুরাতন, সমুদায়ই নিত্য বটে, কিন্তু তাঁহার কার্য্য নিত্য নৃতন। তিনি আজ যাহা করিতেছেন পূর্বে কোন দিন তাহা করেন নাই; এখন যাহা করিতেছেন, কথনও তাহ। করেন নাই। কালের প্রক্লতিই এই যে ইহা নিত্য নৃতন, এবং ইহার উপকরণ যে কার্য্য তাহা ও নিতা নৃতন। তিনি যাহা কিছু করিয়াছেন, করিতেছেন ও করিবেন, সে সমস্তই তাঁহার জ্ঞানে নিতা বর্ত্তমান বটে, কিন্তু তাঁহার কার্য্য মুহুর্ত্তে নৃতন, মুহুর্তে মুহুর্তে পরিবর্তনশীল। স্তরাং তিনি জ্ঞান, শক্তি, প্রেম ও পুণ্যে পরিপূর্ণ অক্ষয় অপরিবর্ত্তনীয় হইলেও এক অর্থে—নিতা ক্রিয়নীলতার অর্থে—তাঁহাকে পরি-বর্ত্তনশীল বলিলে কোন ক্ষতি হয় না। যিনি কাল-স্রোতের রচয়িতা, স্ষ্টিন্থিতি ও বিনাশকর্তা, তিনি এই অর্থে পরিবর্ত্তন-শীল না হইয়া থাকিতে পারেন না। কেহ কেহ হয়তঃ বলিতে পারেন যে তাঁহার কার্য্যই পরিবর্ত্তনশীল, তাঁহাকে বল কেন ১ বলিবার যথেষ্ট কারণ আছে। যাহার কার্য্য পরিবর্ত্তনশীল, তিনি নিজেও এক অর্থে পরিবর্ত্তনশীল। ঈশ্বর একটী জীব সৃষ্টি করি-করিলেন, অর্থাৎ এমন একটা কার্য্য করিলেন যাহা পুর্বের করেন নাই; ইহাতেই বুঝা গেল যে এই জীব স্বষ্টিরূপ বিশেষ কার্য্যটা সম্বন্ধে তিনি পূর্বে নিজিয় ছিলেন, এখন ক্রিয়াবান হইলেন, অর্থাৎ তিনি নিজ্ঞিয় অবস্থা হইতে ক্রিয়াণীল অবস্থায় (নিজ मिक्टिएंडर) পরিবর্ত্তিত ইইলেন। এইরূপে প্রত্যেক কার্যা महासारे (मथान यात्र जियत या कार्याजी शृद्ध करतन नारे, धंथन করিলেন, এই কথা বলিতে গেলেই তাঁহাকে এক অর্থে পরি-বর্ত্তনশীল বলিয়া মানিতে হইবে। সৃষ্টি মানিতে গেলে এই সিদ্ধান্ত অপরিহার্য। এই সব দেখিয়াই বৈদান্তিকেরা তাঁহা-দের পরব্রন্ধে নিক্রিয়তা আরোপ করেন, এবং সৃষ্টি ব্যাপারটাকে মিখ্যা মায়াময় বলিয়া ব্যাখ্যা করেন। আমরা যখন এরূপ নিক্রিয় ত্রন্মে বিশ্বাস করি না এবং সৃষ্টি ব্যাপারটাকে সত্য विनिन्ना भागि, उथन "अभूक भएउ द्वेशदात अशतिवर्जनीयठः

অস্বীকার করা হইতেছে" এই ধুরা তুলিরা কোল কথারই মীমাংসা হইতে পারে না। আদিনাথ বাবু বে ঈশরের নিত্য-ক্রিয়াশীলতা সম্পূর্ণরূপে স্বীকার করেন না, মানবের উন্নতি विषदा जिनि त्य केंद्रांद्र कियानीन डा चि चहर चौकांत्र करतन, তাহার আর একটা স্পষ্টতর প্রমাণ তাঁহার পত্র হইতে উদ্ভ করিতেছি। তিনি বলিতেছেন—"বিধান বলিলে স্পামর। এই विक्ष य नर्सनिकिमान ও नर्सक পরমেশ্বর মানবাত্মার সৃষ্টির সঙ্গে সঙ্গেই তাঁহার কলাণ সাধনোপযোগী সমস্ত প্রয়োজনীয় রিধি ব্যবস্থা হৃদয়রূপ শাস্ত্রে অবিনশ্বর অকরে নিথিয়া রাথিয়াছেন। জ্ঞান, ভক্তি, প্রেম, পবিত্রতা প্রভৃতি যাহা লাভ করিতে পারিলে মানবাত্মার প্রকৃত কল্যাণ হইতে পারে, এবং যাহা লাভ করিলে সে সর্বাঙ্গীন উন্নতি লাভ করিতে পারে, ঈশ্বর প্রথম হইতে আত্মায় সে সকল বিধান করিয়া শিক্ষাদাতা ও সাহায্যদাতা রূপে নিত্য সঙ্গী হইয়া অবস্থিতি করিতেছেন।" এই মতই সমস্ত বিরোধের মূল। জিজ্ঞাস। করি যদি ঈশ্বর আমাদের "স্টির সঙ্গে সঙ্গেই" সমস্ত বিধি ব্যবস্থা হুদয়রূপ শাস্ত্রে লিখিয়া রাখিয়াছেন.এবং "প্রথম হুইতেই" আত্মাতে উন্নতির উপযোগী সমুদায় বিধান করিয়া রাধিয়াছেন, তবে আর নিত্যক্রিয়াশীলতার প্রয়োজনই বা কি, অর্থ ই বা কি ? আর প্রথমে এত করিয়া আবার "শিকাদাতা ও সাহায্যদাতা রূপে নিতাসঙ্গী হইয়া অবস্থিতি" করিবারই প্রয়োজন কি ? युर्ग युर्ग नुजन नुजन विधि अठात कतिरण यपि मेश्वरत्रत्र भति-বর্ত্তনশীলভা ও অপূর্ণতা প্রকাশ পায়, তবে প্রথম হইতে স্মস্ত বিধি ব্যবস্থা আত্মাতে লিখিয়া রাখিয়া এবং উন্নতির উপযোগী সমস্ত বিধান করিয়া আবার শিক্ষা ও সাহায্য দিতে আসাতে কি পরিবর্তনশীলতা ও অপূর্ণতা প্রকাশ পার না? তিনি কি প্রথম হইতেই এমন বিধান করিতে পারিলেন না,---মানবকে এমন ভাবে গঠন করিতে পারিলেন না—বে তাহার যে কোন শিকা ও সাহায্য আবশুক হইবে, তাহা সে নিজ প্রকৃতি হইতেই পাইবে ? স্বাদিনাথ বাবু হৃদয়-নিহিত বিধি ব্যবস্থা ও প্রাথমিক বিধান সম্বন্ধে যে ভাবে তাহাতে ইহা স্পষ্টই বুঝা যায় যে ঈশ্বর স্ষ্টি কালেই এরপ বিধান করিতে পারিতেন, যাহাতে পরবর্ত্তী দময়ে তাঁহার কোন সাহায্যের প্রয়োজন থাকিত ন। বাস্তবিক এরপ মত অনেকে মানিয়া থাকেন, এবং কেহ কেহ এইমত হইতে যুক্তির নিয়মামুসারে এই সিদ্ধান্তও করেন যে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনার कान अत्याजन नारे। कनठः व्यानिनाथ वावृत्र अङ्ग्छ विश्वाम যাহাই হউক, তাঁহার উপরোক্ত উক্তি এক দিকে ঈশ্বরের নিত্য-क्रिग्रौनीनठा এবং अभन्न निरक श्रार्थनावात्मन्न श्रायन विद्यारी। সমস্ত বিধি ব্যবস্থা ও উন্নতির বিধান যদি প্রথম হইতেই হইয়া রহিল, তবে পরবর্ত্তী সময়ে ঈশ্বরের সাহায্যেরই বা অর্থ কি. আর তাঁহার নিকট প্রার্থনারই বা প্রয়োজন কি ?

যাহা হউক, এখন উক্ত মতের ভ্রম প্রদর্শন করিয়া আমি
দেখাইতে চেষ্টা করিব যে ঈশবের নিত্য-ক্রিয়াশীলতা মানিতে
গেলে ইহাও মানিতে হইবে যে তিনি নিত্য ন্তন বিধানের
প্রেরয়িতা। কার্য্য মাত্রেরই কর্তা চাই, ইহা আদিনাথ বারু

শীকার করিবেন, এবং জগতে জীব ও এম ভিন্ন জড়ীর করা क्ट मार्डे. तीथ रव देशां श्रीकांत्र कतित्वम । ध्यम किलांत्र এই যে আমাদের আত্মাতে যে নানা বিধি ব্যবস্থা প্রকাশিত হয়, জ্ঞান, প্রেম ও পুণ্যের উদর হয়, এই দকল কার্য্যের কর্ম্বা কে ? আমাদের ইচ্ছাতে বাহা হয় তাহার কর্তা অবশ্র আমরাই। কিন্ত বিধি ব্যবস্থার প্রকাশ, জ্ঞান, প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শের উদয়, এই সমস্ত ব্যাপার আমাদের ইচ্ছা-নিরপেক। আমা-দের ইচ্ছা-নিরপেক ভাবে যাহা হয়, তাহার কর্ত্তা ঈশ্বর ভিন্ন আর কেই ইইতে পারে না। যিনি বলেন এই সমস্ত **আপ**না আপনি হয়, তাঁহার সহিত আমাদের বর্তমান আলোচনা চলিতে পারে না, কেননা ধর্মবিজ্ঞানের মূল হত্ত সম্বন্ধেই তাঁহার সহিত विताध। यिनि वलन, এই ममुनाय अथम इटेट्ड नेयन আত্মাতে সঞ্চয় করিয়া রাধিয়াছেন, তাঁহার কথার উত্তর এই যে, যে বিধি ব্যবস্থা, যে জ্ঞান, প্রেম ও পুণা আমার জ্ঞানের ভূমিতে উদিত না হইল, যাহা জানিলাম না বা অহুভব করি-লাম না, যাহা আমার জীবনকে নিয়মিত করিল না, সে বিধি ব্যবস্থা, সে জ্ঞান, প্রেম ও পুণ্য কি অর্থে আমার আত্মার লিখিত বা নিহিত আছে, আমি তাহা কিছুই বুঝিতে পারি না; আর বদি স্বীকারও করা যায় যে কোন না কোন অর্থে এই সমুদায় আমার আস্থাতে নিহিত আছে, তথাপি ইহা নিশ্চর যে বথন আমি সজ্ঞানে এই সমুদায় লাভ করি, যথন আমার জ্ঞানগত জীবনে এই সমুদায় প্রকাশিত হইয়া আমার আত্মাকে আকর্ষণ করে, আমার উপর দাবি বসায়, তথন একটা সম্পূর্ণ নৃতন ঘটনা বটে। জ্ঞান, প্রেম বা পুণোর এই যে আবির্ভাব, ইহা একটী নৃতন ঘটনা, একটা নৃতন বিধান। আদিনাথ বাবুও প্রকারা-স্তরে এই কথা স্বীকার করিয়াছেন। তিনি এক স্থানে বলিয়া-ছেন- "বাস্তবিক ঈশ্বরের পক্ষে নৃতন কিছুই নয়, কিন্তু মানবের পক্ষে নৃতন অমুভব। তাহার অস্তরে যাহা নিহিত ছিল, যাহার সন্ধান সে এত দিন পায় নাই, এখন তাহা বু**ঝিতে সক্ষ** হইল। ইহাকে নুতন সৃষ্টি বলা সঙ্গত নয়।" वनून आत नांहे वनून, नृजन कार्या, नृजन विधान वनिराज्हे হইবে। যত দিন ইহা আমার সমকে প্রকাশিত হয় নাই, তত দিন ইহা স্ট হইয়া থাকিলেও আমার পক্ষে আমার কাজে লাগে নাই; যথন ইছা আমার সমকে আবিভূতি হইল, যখন ইহা আমার ধর্মজীবনকে নিয়মিত করিতে লাগিল, তথন ইহা যে আমার পক্ষে নৃতন বন্ধ, নৃতন বিধান, তাহাতে আর সন্দেহ কি ৫ এখন, এই যে মান্ব হৃদয়ে একটা সত্য, এক কণা প্রেম বা একটা পুণ্যাদর্শের প্রকাশ, **এই कार्यात्र कात्रण (क १ कात्रण निक्तत्रहे क्षेत्रत्न, रकम मा** अहे প্রকাশ সম্পূর্ণরূপেই মানবের ইচ্ছা-নিরপেক। আর, এই ^{বে} প্রকাশ রূপ কার্য্য, তাহা কেবল আপেক্ষিক ভাবে নৃতন নহে, নিরপেক ভাবে নৃতন ; অর্থাৎ কেবল মানবের পকে নৃতন নহে, ঈশবের পক্ষেও নৃতম। একে কার্য্য মাত্রই সাধারণ ভাবে নৃতন, তাহাতে আবার যথন কোন বিশেষ মানবের জনত্ত্ব কোন বিশেষ সত্যের প্রথম প্রকাশ হর, তথন ইহা বিশেষ রূপে নৃতন। এই विल्मेर मानदित क्रमात এই विल्मेर मुख्य भूदर्स क्रथाना

1977年 海路位 50 万二 网络克尔拉克克

व्यक्तान करहन नार्ड ; इस्केबार कार्यक्री क्रेबरबब नरक ४ न्छन। এইরাণে দেখিছে পাওরা বার বে ঈশ্বর নিজ্ঞ ক্রিয়াশীল। ইহা মানিতে গেলে ইহাও মানিতে হইবে বে ঈশ্বর মানবান্মার সহিত নিতা নৃতন শীলা করিতেছেন, তাঁহার প্রজার ভিতর দিলা न्जन न्जन मजा, विरादक प्रिका मित्रा म्जन न्जन चाराम अ প্ণাদর্শ, হাদমের ভিতর দিয়া ন্তন ভাব, এবং ইচ্ছার ভিতর _{দিরা} নিত্য নব ব**ল প্রকাশ ক**রিতেছেন। এই বে ব্যক্তিগত जीवान क्षेत्रदात्र विधान, अहे विधानहे मम्लाम कांजिंगं वा केंजि-হাসিক বিধানের মূল। এই যে ব্যক্তিগত জীবনে প্রকাশিত क्र्यात्तत ब्यालाक, এই ब्यालाकर मम्नाप्र वाहित्तत ब्यालात्कत প্রীক্ষক ও গ্রহীতা। ভিন্ন ভিন্ন ধ্র্মের মধ্যে কোন্ ধর্ম সত্য, কোনুধর্ম অসত্য; কোন্ ধর্ম ঈশবের বিধান, কোন ধর্ম বিধান নয়; মহাপুরুষদিগের প্রচারিত মত ও অত্তান সম্হের মধ্যে কোনু মত বা অফুগান ঈশ্বাভিপ্রেত, এবং কোন্ মত বা অফু-চান মানবের কল্পনা বা স্বার্থ প্রস্থত, এই সম্দায়ের বিচার কেবগ _{টিখর-}প্রকাশিত আন্তরিক আলোকের দারাই হইতে পারে।

বিধানবাদের—বিশেষ বিধানবাদের—মূল সত্য পাওরা গেল, এখন ইহার শাথা-সত্য সমূহের আলোচনা আবশুক। এই মূলসত্য সম্বন্ধে আদিনাথ বাবুর সহিত আমার অতিশয় অনৈক্য, এবং এই অনৈক্যই অক্ত সমুদায় অনৈক্যের মূল; এই জন্মই হৈয়ব ব্যাথায়ে কিছু অধিক স্থান দিতে হইল।

এখন, দিতীয় কথা এই যে ঈশর স্বয়ং পূর্ণ পুরুষ হইলেও তিনি যে বস্তুর উপার কার্য্য করিতেছেন,—ুঅর্থাৎ মানবায়া, ন বস্তুটী ক্রমিক-উন্নতিশীল বটে। কিন্তু প্রতিক্রণেই অপূর্ণ। ঈশ্বর হাকে ক্রমশঃ অপুর্ণতা হইতে পুর্ণতার দিকে লইয়া যাইতে-ছন; স্থতরাং মানবজীবন চিরপরিবর্ত্তনশীল। এই পরি-र्छनगीन मानत्वत्र प्रश्रदक्ष क्षेत्रांद्रत्व विधान এकवादत्र व्यवत्रिवर्छनीत्र ইতে পারে না। পরিবর্ত্তনশীল, বর্দ্ধনশীল মানবের উল্লভির বিধানও অনেকাংশে পরিবর্ত্তনশীল ও উন্নতিশীল হইবে ; তাহার ান, শক্তি ও অবস্থার উপযোগী হইবে। নিত্য অপরিবর্ত্তনীয় ठा (य किছू नाहे, এই कथा वना इहेर छहा ना। जित्रहात भूनी ঙ্গিপ যেমন অপরিবর্ত্তনীয়, ভাঁহার স্বরূপের প্রকাশরূপী নৈতিক আধ্যাত্মিক সত্য ও তেমনি অপরির্ত্তনীয়। কিন্তু এই সকল পরিবর্ত্তনীয় দত্যে মাহুষ অনেক সোপান, অনেক পরিবর্ত্তন তিক্রম করিরা উপনীত হয়, এবং যে সকল উপায়ে উপনীত নে সকল উপায় অবস্থাভেদে ভিন্ন ভিন্ন,এমন কি অনেক স্থলে ^{মুপার}-বিরোধী। যে অসভ্য মানব প**উ**র অবস্থা হইতে মানব-বীতে কেবল মাত্র পদক্ষেপ করিয়াছে,নরছত্যা করিবার প্রলো-শ্বাহার সমূধে চির বর্ত্তমান,তাহার পকে "নরহত্যা করিও না" ^{हि गर्}थे बारमम, এবং এই बारमम পानन कतिरङ পातिरनहे ঈৰরের নিকট পুণ্যবান বলিয়া গৃহীত। কিন্তু যে সভ্যতার উন্ন-^{তর} সোপানে আরোহণ করিয়াছে, নরহত্যার প্রলোভন যাহার থে নাই, ভাহার পক্ষে নরহত্যা না করা একটা পুণ্য কর্মের ^{ধই গণা নহে}। ভ্রাতার বিরুদ্ধে আন্তরিক রাগ পোষণ করা যাহার ^{প বলিয়া} বোধ হয় নাই, কেবল কার্য্যগত বৈরনির্যাতনই পাপ ^{নরা} বোধ হইরাছে, তাহার পক্ষে রাগ পোবণ করা প্রকৃত-

পক্ষে পাপ নতে, অপূর্ণভা মাত্র। কিন্তু বাহার বিবেকের সমক্ষে हैहा भाभन्नतभ व्यकामिक हहेनातह, त्म वाखविकहे हैहांत्र अछ ঈশবের নিকট দোবী। 'ঈশরকে প্রীতি দান করা কর্ত্তব্য' ইছা একটা অপরিবর্তনীয় সতা; কিন্ত ইহা পালন, সুৰদ্ধে অবহাভেদে ভিন্ন ভিন্ন •বিধান থাকিতে পারে। স্থাদিম অসভ্যাবস্থান মানুষ 🕴 স্থাহারীয় বা অন্য কোন বাছিক ব্যবহারোপযোগী বন্ধ উপহার 🕈 দেওয়া ভিন্ন শ্রীতি প্রকাশের অস্ত কোন উপায় জানিত না ; এমন कि नित्राकात्रवानी रेहनी भर्गाञ्च और উপার অবলয়ন করিতেন। কালে প্রীতি প্রকাশের উত্তর্ভন্ন উপায় প্রকাশিত হইয়াছে। এই নৃতন বিধি প্রচারের পর বাহিক পূজা দেওরা পাপ, ইহা যেমন সত্য, ইহাও কি তেমনি সত্য নহে যে এই বিধি প্রচারের পূর্কে বাহিক পূজা না দেওরা পাপ ছিল ? ধর্মরাজ্যের বিভর পকে ভক উপাসনা করা পাপ নহে; ধর্মরাজ্যের প্রোঢ়ের পকে তাহা পাপ। ধর্মরাজ্যের শিশুর পক্ষে অন্তের উ পকারার্থ আত্ম-ত্যাগ না করা পাপ নহে, নিজেকে বাঁচাইয়া যথাসাধ্য পরোপকার ন। করাই পাপ ; কিন্তু প্রোঢ়ের পক্ষে আত্ম-ত্যাগ না করাই পাপ। বাঁহারা ফাদার ড্যামিয়েনের ভীষণ আত্ম-বলিদানে কোন মহত্ব দেখেন না, কেবল পাগলামিই দেখেন, তাঁহাদের পক্ষে তাঁহার অমুসরণ না করাতে পাপ নাই; কিন্তু যাঁহারা এই কার্য্যের মহত্তে মুগ্ন হইয়াছেন, তাঁহাদের জীবনের উপর এই নৃতন বিধানের দাবি বসিয়াছে; অতঃপর, এই উচ্চ আদর্শামুসারেই তাঁছাদের জীবনের বিচার হইবে। এইরূপে দেখিতে পাওয়া যায় যে উন্নতির পরিমাণ ভেদে,ভিন্ন ভিন্ন অবস্থা ভেদে বিধানেরও ভিন্নত। হয়, অপচ তাহাতে মৌলিক অপরিবর্ত্তনীয় সত্যের ব্যতিক্রম घटि ना ; সমুদায় विधानहे এक উদার প্রশস্ত विधानের অন্তর্গত; সম্লারেরই উদ্দেশ্ত মানবকে পূর্ণতার দিকে লইয়া যাওয়া--মানব কে ঈশ্বরের সহিত পূর্ণ যোগে সংযুক্ত করা।

উপরোক্ত কথা গুলি ব্যক্তিগত জীবন সম্বন্ধে বেমন সভ্য, জাতিগত ও সম্প্রদায়গত জীবন সম্বন্ধে ও তেমনি স্ত্য। ব্যক্তি-গত, জাতিগত বা সম্প্রদায়গত বিকাশের ভিন্নতা অফুসারে বিধানের ভিন্নতা হর। কিন্ত ইহাই ভিন্নতার একমাত্র কাবণ নছে। আর একটা কারণ প্রাক্ততিক গঠনের ভিন্নতা। বিধাতা প্রত্যেক ব্যক্তি, জাতি ও সম্প্রদায়কে ঠিক একরূপ প্রকৃতি দিরা গঠন করেন নাই; বাহিরের অমুকৃল ও প্রতিকৃল অবস্থাও ঠিক একরূপ করেন নাই। কাজেই ধর্ম সাধন সম্বন্ধেও সকল বাক্তি, জাতি ও সম্প্রদায় ঠিক একরূপ নছে। কেহ জ্ঞানে শ্ৰেষ্ঠ, কেহ যোগে শ্ৰেষ্ঠ, কেহ বা প্ৰেমে শ্রেষ্ঠ, কেছ বা দেবায় শ্রেষ্ঠ। স্থতরাং ভিন্ন ভিন্ন বিষয়ে ভিন্ন ভিন্ন লোক, জাতি বা সম্প্রদারের নিকট আমাদের অনেক শিকা করিতে হইবে। কেহ কেহ মনে করিতে পারেন যে এই পার্থকা ঈশবের অপক্ষপাতিছের বিরোধী। সে যাহাই হউক, পার্ধকাট। নি:সন্দেহ। আমাদের বিবেচনায় এই পার্থক্য না থাকিলে পিতা পুত্র, গুরু শিব্য, জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠের সম্বন্ধের যে মধুরতা তাহা থাকিত না; জগৎ একটা শ্রীবিহীন সমতল ক্ষেত্রের মত হইত। वाहा इंडेक, উপরোক্ত প্রভেদ বশত: यहि माञ्य अहरकाती हत, এবং কেছ জ্ঞানের প্রশংসা ও ভক্তির নিন্দা করে, কেছ বা

ভক্তির প্রশংসা ও জ্ঞানের নিন্দা করে, তবে এই সকল মাছবেরই দোষ, ঈশরের দোষ নহে, তাঁহার বিধানেরও দোষ নহে।
বিশেষ বিশেষ সত্য ভাব বা অহুষ্ঠান প্রচারের ভার বিশেষ
বিশেষ ব্যক্তি, জাতি বা সম্প্রদারের উপর হান্ত হর। তাহারা
যদি সেই সত্য ভাব বা অহুষ্ঠানের সঙ্গে অসত্য এবং পাপও.
প্রচার করে; তাহাতে ঈশরের বিধানের মাহান্য থক্ক, হর্ম
তাহাতে কেবল মানবের ত্ক্লভারই পরিচয় পাওয়া বার।

সংক্ষেপে লিখিতে গিয়াও পত্র বিস্তৃত হইয়া গেল। আদিনাথ বাবুর সকল কথার উত্তর দিবার অবকাশ পাঁইলাম না; আগামী বাবে আরও কিছু বলিবার ইচ্ছা রহিল।

> অমুগত শ্রীদীতানাথ দত্ত।

ব্ৰাহ্মসমাজ।

বরিশাল হইতে বাবু মনোমোহন চক্রবর্তী লিথিয়াছেন—
"বরিশাল ব্রহ্মমন্দিরে বিগত ২০ শে শ্রাবণ রবিবার সায়ংকালীন
সামাজিক উপাসনাজে বরিশাল জ্বেলার অন্তর্গত ঝালকাটি
ষ্টেসনের অধীন কাচাবালিয়া গ্রামনিবাসী শ্রীযুক্ত বাবু ললিতকুমার বস্থ মহাশর্ম ব্রাহ্মধর্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। প্রচারক
শ্রীযুক্ত বাবু কালীমোহন দাস মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন।" মঙ্গলময় পরমেশ্বরের নিকট প্রার্থনা ধর্ম্মরাজ্যে নবপ্রবিষ্ট বন্ধুর প্রাণে দিন দিন ধর্মপিপাসা প্রবল করিয়া তাঁহাকে
ধর্ম্মরাজ্যে প্রতিষ্ঠিত রাখুন।

গত ২০এ শ্রাবণ মাক্রাজ নগরে শ্রীযুক্ত বাবু রজনীনাথ রার
মহাশরের ভবনে একটা সামাজিক সন্মিলন হইরাছিল। তাহাতে
মাক্রাজ দেশীয় ২০ জন ভদ্রমহিলা এবং প্রায় ৩০ জন ভদ্র পুরুষ
উপস্থিত হইরাছিলেন। আলাপ পরিচয় গান বাজনা এবং জল
যোগের পর স্থিলনের কার্য্য শেষ হয়। রজনীনাথ রায় মহাশয়
সপরিবারে তথায় গমন করাতে মাক্রাজের ব্রাহ্মমহিলাগণের মধ্যে
পরস্পরের সহিত দেখা সাক্ষাৎ হইবার বিশেষ স্থবিধা হইয়াছে।

কোচবিহার হইতে সংবাদ পাওয়া গিয়াছে, তথাকার ব্রাহ্মসমাজের জন্ম একটা পাকা মন্দির নির্দাণের আয়োজন হইতেছে। কোচবিহারের মহারাজা এই মন্দির নির্দাণের জন্ম

২ বিঘা জমি প্রদান করিয়াছেন। তাঁহার নিকট হইতে
অর্থ সাহাজ্যও পাওয়া যাইবে বলিয়া জানাগিয়াছে। এই
মন্দির নির্দাণের জন্ম প্রায় ২৭০০ টাকার প্রয়োজন হইবে।

ইহার মধ্যে প্রায় ১০০০ টাকা চাঁদা স্বাক্ষর হইয়াছে। আমরা
আশা করি কোচবিহারস্থ ব্রাহ্ম বন্ধ্যণ বিশেষ মনোমোগের
সহিত সম্বর এই মন্দির নির্দাণ কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবেন।

গত ২৬এ প্রাবণ শনিবার কলিকাতা নগরে ব্রাহ্ম পদ্ধতি অহুসারে একটা বিবাহ হইরা গিরাছে। এই বিবাহ ১৮৭২ সালের তিন আইন অহুসারে রেজেটারি করা হইরাছে। বরের নাম প্রীযুক্ত বারু বামনদাস মন্ত্র্মদার বরুস ২৪ বংসর। ইনি রংপ্রের অন্তর্গত গোপালপুর নামক হানে মাইনর ভুলের হেড মাটারের কার্যা করেন। কভার নাম প্রীমতী হেমান্ধিনী মুখো-

পাধ্যায়। ইনি মানিকদহের প্রাকৃত বাবু মধুয়ামোহন মুখো-পাধ্যারের ৪র্থ কল্পা। বরস ১৫ বংসর। প্রীযুক্ত বাবু উমেশ-চক্র দত্ত মহাশয় এই বিবাহে আচার্য্যের কার্য্য সম্পন্ন করিয়া-ছিলেন। বামন বাবু এই উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের প্রচার ফণ্ডে ২১ ছই টাকা দান করিয়াছেন।

গত ১৮ই প্রাবণ বাগজাঁচড়া গ্রামে সাধারণ রাজসমাজ কর্তৃক সংস্থাপিত প্রচার বিদ্যালয়ের (Mission School) জন্মোং-সব সম্পন্ধ-ছইয়া গিরাছে।

তত্ত্বকোমুদীর মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার। (সেপ্টেম্বর—অক্টোবর ১৮৮৮)

পূর্ব্ধ প্রকাশিতের পর

भूका व्यकारन	তর পর	
वाव् मधुरुषन त्त्रन	কলিকাতা	2/
ু ছারকানাথ রার	লাহোর	2
মিদেস রামগোপাল বন্ধী	লাহোর	<i>i</i> e
বাবু অক্ষকুমার রায়	কলিকাতা	3/
শ্রীমতী স্বর্ণপতা রায়	নওগাঁ	en•
বাবু বাণীকান্ত রায় চৌধুরী	সক্ষর	5/
निवष्टस मोत	ভবানীপুর	2110
ू कानीक्षमन स्मिन	পোড়াদহ	b \
्र विक्रकाराम	বোয়ালিয়া	>4.
"	6	4
সম্পাদক ব্রাহ্মসমাজ বোয়ালিয়া	•	,
বাব্ ভগবতীচরণ দাস	ভবানীপুর নাটোর	2110
" মহিমচজার	নাডোর কলিকাতা	<u>پر</u> ١٥
" গুরুচরণ মহলানবিশ	क्।नकाळा -	
" মোহিনীমোহন রায়	-	110
্, তারিণীচরণ নন্দী	निवर	> /
শ্রীমতী মোকদায়িনী দেবী	ভাগলপুর	4
বাবু রাধানাথ রায়	শিশিশুড়ি	٩
, जानमहस्य तांत्र	3	3
" শশিভ্যণ তালুকদার	টাঙ্গাইল	ু
" श्रुक्रमग्रान निःश्	কুমিলা	٥
" भिटवचत वत्कााशांचा	টিকারি	<u> </u>
" त्यारशक्तनात्रायम ताय	রাজারামপুর	۵,
" ক্ষেত্ৰমোহন মুখোপাধ্যায়	ক লিকা তা	3/
ু কেদারনাথ রায়	3	11.
শ্রীমতী সৌদাসিনী শুপ্ত	জলপাইগু ড়ি	٩
वाव् नवदी शहस मज्ञात	3	٩
" গিরিশচন্দ্র কাঞ্চিলাল	নেলফামারি	, sh
ু বিশ্বের সেন্ •	রংপুর	8
" প্রভাতচক্র চট্টোপাধ্যায়	&	9
" अन्ननाव्यमान स्मन कमिनात	3	9
🏻 🕮 মতী যোগমায়া খোব	ক্র	4
বাৰু ভ্ৰনমোহন সেন	ফরিদপুর	٩
" কেত্ৰমোহন দত্ত	ক লিকা তা	>/
" तक्रनीकां विद्यांशी	ক্র	110
" ভ্रनমোহন বোষ	B	e _\
" কেদারনাথ কুলভি	বাকুড়া	S.
" मर्ट्सिट्स रचीय	কলিকাভা	><
" হারকানাথ ঘোষ	ক্র	37
" वित्यंषद्र वस्म्यांभाशांत्र	a	2 No.
1		े अध्यानः

जड़-द्वागी

ধর্ম ও সুমাজতত্ত্ব বিষয়ক পুঁক্ষিক পত্রিক।

১২শ ভাগ। ১০ম সংখ্যা।

১৬ই জ্বান্ত শনিবার, ১৮১১ শক, জান্স শব্দ ৬০

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য ২॥০ মকস্বলে , ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য প্ত

"কে আছে জগতে মান ? নবপত্র বালে,
তরুটী আবরি দেহ নরন হরিছে;
প্রক্ষা তিত ফুল-রাশি তাহে মধু আর্টা,
প্রণ প্রণ রব অলি কতই করিছে;
কুমে কুমে গার পাথী, থেলে লাখে লাখে;
মনের আনন্দে পশু প্রান্তরে চরিছে;
জলে থেলে জলজন্ত দেখ লাখে লাখে;
একদণ্ডে লক হীট কমিছে মরিছে,
জনম বৌবন জরা প্রেম পরিপম,
একদণ্ডে সব কুখ আলাদ করিছে;
জলে অলে, অর্গে মর্ত্যে, এই বিশ্বময়
ক্রেজাছে সে কুপে আছে, কুর্থে বিহরিছে;
নর কি সবার হীন ? শুধু বিশ্বময়
তার কি জীবন-পাত্র ?—না—না তাহা নয়।

मन्त्रापकीय गखरा।

আত্ম-চিন্তা— যরের যে কোনটাতে অধিক দিন দৃষ্টিপৃতি
না করা যার, যে দিকে সংমার্জনীর কার্যাটা অনেক দিন না
হর, সে দিকে নির্জ্জনে বসিরা উর্ণনাতি আপনার কার্যা করিতে
থাকে। অচির কালের মধ্যে সেই হান উর্ণনাতির জালে,
ধুলার, ধ্মের ও সকল প্রকার আবর্জনার একটা আলর হইরা
উঠে। মানবের মনকেও এই প্রকার বিষেচনা করা কর্তব্য।
মনের যে র্ত্তিটার প্রতি উদাসীন হইরা থাকা বার, মনের যে
দিকটার চর্চা না থাকে, তাহাতে উর্ণনাতির জালও নানা প্রকার
আবর্জনা জমিতে থাকে। গৃহত্বের গৃহকে পরিকার রাখিবার
জন্ম বেমন সংমার্জনীর ব্যবহার আবন্ধক নাকরে পরিকার
রাখিবার জন্ম ভেমনি আলু-চিন্তা সংমার্জনী মধ্যে মধ্যে প্ররোগ
করা কর্ত্বের বাজনবীনেন, মধ্যে মধ্যে রাজকার্যা হইতে অবস্থিত প্রস্থিত আছে রাডভৌন, জিলা বিসমার্ক
প্রতিত প্রস্থিত আছে রাডভৌন, জিলা বিসমার্ক
শ্রেছ হবরা নির্জ্জনার জন্মন

महैवान छाहारमञ्ज निक्छ । त्थात्रन कतिर्घ निरंवे नारक-विमन কি প্রতিদিনের সংবাদ পত্রও প্রেরিত হয় না। এরপ নির্ক্তন-বাস ভাঁহাদের শরীর ও মনের স্বাস্থ্যের জন্ম একান্ত প্ররোজনীয়। রীল কার্য্যের কোলাইলে, গভীর হন্দ্র দর্শনের সময় থাকে না; এক এক দিন এক একটা ভাব ও চিস্তার তরঙ্গ সমাজের উপরে উথিত হয়, তাহাতে সকলকে অনেকটা চালিত করে। এই-त्रभ वाख्छा, উषित्रजा, विवाम,विषय ७ मनामनित्र मर्त्या थाकिएछ থাকিতে চিত্ত নিতান্ত বহিম্পীন হইয়া পড়ে; স্থতরাং বহি- . মুখীন চিত্তকে অন্তমুখীন করিবার জন্ত সময়ে সমরে নির্জ্জন बारमत প্রয়োজন। ঐ সময়ের মধ্যে তাঁহারা স্বীয় স্বীয় কার্য্য পর্য্যালোচনা করেন, যে সকল গুঢ় শক্তি সমাজে প্রচ্ছর থাকিয়া কার্য্য করিতেছে, ভাহার কার্য্য ও গতি লক্ষ্য করিবার চেষ্টা করেন এবং ভবিষ্যতের জন্ত কার্য্য প্রণালী নির্দারণ করেন। **रत्रामान काार्थानक धर्म वास्रकतिरात्र मरदा मारव मारव निर्कानवाम** ও আত্ম-চিন্তার নিরম আছে। সকল শ্রেণীর লোকের এইরূপ সময়ে সমরে নির্জ্জন-বাদ অভিশয় উপকার জনক। যাহার। ধনোপার্জনের আশার নিরম্ভর পরিশ্রম করিতেছে, দিন রাত্রি কেবল সেই চি💏 রভ রহিয়াছে, সেই চেষ্টার হাটে বাজারে कित्रिटल्ह, विवाप विद्यार्थत्र माथा पिन योशन क्रिटल्ट्ह, তাহাদের যদি নির্জন-বাস ও আত্ম-চিন্তার সময় থাকিত, তাহা হুইলে জন সমাজের পাপের ভাগ বোধ হয় অনেক হাস হইত। त्य नकन ब्राम्बरक दिवस कर्म नर्सना वाख शाकित्क श्य-डेम-রারের জন্ম গুরক্ষুর বঁরিশ্রম করিতে হয়, পরের চাকুরিতে জিন বাপন করিতে হর, তাঁহারা মধ্যে মধ্যে যে হুটী পান তাহা নির্জনে প্রকৃতির নিতক্তা ও মিশ্বতার মধ্যে পাঠ ও আন্ম-চিন্তার যাপন করা কর্তব্য। সহরে বাঁহারা থাকেন তাঁহাদের মধ্যে মধ্যে সহর ত্যাগ করিয়া প্রকৃতির রমণীয়তার মধ্যে কিছু किছू मगर वानत्नेत्र निवय कता छाय। आक्र-ठिका छित्र आगा-(मत्र धर्मकीयन प्राप्त स्टेडांब्रेट कथा।

বিশাস ও তেনেই আত্মরত্ত্বী শ্রীরান সভালারের লোকস্প সৌর্থ করিবা একটা কথা বলিরা থাকেন। তাঁহারা বলের আবাদের বর্ণ বে করুর তেরিক তাহার প্রমাণ দেখ, ইহা প্রথমে অতি অক্ত ও দরিত্র লোকদিনের বারা প্রশ্নবিক হইরাছিল; ইহার জন্মবিধি ইহার প্রতি লোকে খুজাহত, রাজা প্রজা সকলে মিলিয়া ইহাকে নির্যান্তন করিয়াছে: রোমীয় সমাটগণ ইহার উচ্ছেদের জন্ম সমগ্র রাজশক্তি প্ররোগ করিয়া-ছেন। তথাপি দেখ ইহার সন্মুখে রোমের রাজ প্রতাপ, জীনের পাণ্ডিত্য, রোমীয় সভ্যতা সমুদয় মন্তক অবনত করিছাতে ট্ ঐশী শক্তির ছারা স্থর্যক্ষিত না হইলে কথনও কি এরূপ ^{স্}ঘটনা ঘটতে পারে? একথা বলিবার তীহাদের অধিকার আছে। ইহার তুল্য ইতিহাসে আশ্চর্য্য ঘটনা **আর কিছুই নাই। খু**ই-ধর্মের জন্ন লাভের অনেক ঐতিহাসিক কারণ ঘটনাছিল তাহার আলোচনা এথানে প্রয়োজনীয় নহে। সে সময়কার ইতিবৃত্ত পাঠ করিলে একটা বিষয় দেখিয়া চমৎক্বত হইতে হয়। যখন চারি দিকের লোকে অত্যাচার করিতেছে, পশুরুথের স্তার খুষ্টীয়দিগকে প্রাম হইতে গ্রামে, নগর হইতে নগরে তাড়া করিয়া বেড়াইতেছে, কাহাকেও বা ইষ্টক প্রস্তর মারিয়া, কাহাকেও বা জীবস্ত পোড়াইরা, কাহাকেও বা ক্রুণে বিদ্ধ করিরা, কাহাকেও বা তপ্ত কটাহে ভাজিয়া হত্যা করিতেছে, তথন পুষীয়গণ সেই সকল অত্যাচার গ্রাহ্মনা করিয়া সমূদ্য হৃদয়ের সহিত বিশ্বাস করিতেছে যে তাহাদের জরের দিন ছরায় আসিতেছে—প্রভূর পুনরাগমন দল্লিকট। এই বিখাসে তাহারা হার বন্ধ করিয়া কেবল ঈশ্বরকে ধস্তবাদ ও প্রার্থনা করিতেছে। দিতীয়ত: আপনাদের মণ্ডলীর প্রতি তাহাদের এতই প্রেম ছিল যে যীওর মৃত্যুর পর কিছু দিন এই নিয়ম ছিল, যে কাহাকেও তাঁহার শিষ্য হইতে হইলে, সর্বস্থি বিক্রয় করিয়া এক সাধারণ ধনাগারে সেই সমুদর ধন অর্পণ করিতে হইত, তাহা হইতে মঙলীর সকল লোকের ব্যব্ত নির্কাহ হইত। ইহাতেও খুটার সংখ্যা বৰ্ষিত হইত। কেহ নিজন্ব কিছু রাখিতে পারিত না। একবার এক ধনী দৃশতি খুইধর্মাশ্রম গ্রহণ করিলেন ৷ ভাঁহারা আপনাদের সমুদয় বিষয় সম্পত্তি বিক্রেয় করিয়া সাধারণ ধন ভাঙারে দিলেন, কিন্তু দিবার সময় লোভ বলভ: কিছু ধন পত্নীর জন্ম লুকাইয়া রাখিলেন। পিটার প্রভৃতি 🕮রিতগণ যধন এই প্রতারণার বিষয় জাত হইলেন, তখন সেই ধনী ব্যক্তিকে ডাকিয়া তিরস্বার করিলেন। বলিলেন "কে তোমাকে আমা-দের দলে প্রবেশ করিতে বলিয়াছিল ? না করিলে ভোমাকে কে কি বলিত ? কেন ভূমি লোভে পড়িরা পাপাচরণ করিলে •ৃ" বাইবেলে লিখিত আছে যে এই তিরকারে তঞ্চুকণাৎ 'সেই খানে পড়িরা তাহার মৃত্যু হইল। একদিকে বেমন সঁক্ষান্ত করিল লোককে শিষ্য মণ্ডলীতে প্রবিষ্ট হইতে হইত, অপর দিকে কেই কোন অপরাধ করিলে, তাহাকে অভিশন্ত গুরুতর শান্তি দেওয়া হইত। একজন ইতিবৃত্ত দেশক এই বিষয়ের উল্লেখ করিরা বলিরাছেন বে খুষ্টের শিব্য হওরাতে ক্ষতি ভিন্ন বাভ हिन ना ; यह विषयी हहेता जन नमात्कवानानी भावता बाहेछ ; খুটীর দল ত্যাগ করিলে লোকে আদর পূর্বক ক্রোড়ে করিবা ণইত; এমন অৰ্থাতেও গুটার মঙ্গীর কাহাকে কোন অপ-রাধে অতি গুরুতর শান্তি দিলেও সে অনহ ক্লেশ সহিরা পঞ্চিয়া থাকিত, তথাপি সে মুখুলী পরিত্যাগ ক্রিত না । মুখুলীর

প্রতি এট প্রেন ছিল। উক্ত বিভাগীনালর প্রথম কি একটা আকর্ষণ ছিল। এই বিভাগ ও প্রেনের ভণেই আদিন নুষ্টার সমাজ কার্ড হইরা উঠিলাছিল। আক্ষণ এই অবভার স্থানিত আপনাদের অবভার তুলনা কক্ষম।

অগ্নি পরীক্ষাতে বিশ্বাসের পরিচয়—অনেকেরই মুখে ওনিতে পাওয়া যায় ;—এক সময়ে প্রাহ্মনিসের প্রাক্তি লোকের কত সভাব ছিল, শিক্ষিত ব্যক্তিমাত্রেই মনে মনে তাহাদের অহ্রাণী ছিনেন। মাহারা ব্রাহ্মনমান্তের মুক্ত ও কার্য্যাদিকে ভাল বুলিতেন না, তাহারাও আক্ষদিগকে আৰক্ষ করিতেন। কিন্তু একণে তাহার সম্পূর্ণ বিপরীক; এখন ত্রান সমাজের বিষেধী লোকের সংখ্যা বৰ্ষিত হইরাছে; এখন আৰু হইলে কেহ আদর না পাইরা শুরুতর বিবেবের পাত্র হয়; ব্রাদ্ধ হওরাতে এখন ক্ষেন্ত্র লাভ নাই বরং গুরুতর ক্তি। **এই** বলিয়া কেহ কেহ মুক্ত প্রকাশ করিরা থাকেন। আমরা বলি ইহাতে वित्नव शःथिक वा स्वित हरेवात किছू नारे। हेशांक अवितिक দেখিতে গেলে ক্লান্ধসমাজেরই কল্যাণ। লোকে যদি বাদ্ধ नमाब्बन चारत केंबीना এको जाखन कानिया त्राप्त, एव আসিবে তাহাকেই সেই আগুণের ভিতর দিয়া আসিতে হইবে, তাহা হইলে তাহার ভিতর দিয়া যে লোকগুলি আদিবে সে গুলি বিশ্বাসী লোক হইবার অধিক সম্ভাবনা। ব্রাক্ষ বলিলেই যদি আদর পাওয়া যায়, তাহা হইলে সেই আদরটুকুর লোভে জনেকে আপনাকে বাদ্ধ বলিয়া পরিচয় দিবে। এই कांत्रलंहे त्मथा यात्र त्य नकन लाक ७ त्मरन अकवात्र आक्रममा-ব্বের চৌকাট পার হন নাই, গ্রাহ্মধর্ম্বের কোন ধার ধারেন না, বান্ধসমাজের সহিত কোন সংস্তব রাখেন না , তাঁহারা ইংলতে গিয়া অনেক সময় ব্রাহ্ম বলিয়া আপনাৰ্ক্টিগকে পরি-চিত করিয়া থাকেন। কারণ এই সেথানে ব্রাক্ষ বলিলে তবু একটু আদর পাওয়া বায়। আবার তাঁহারাই ভাহাত হইতে নামিবার সময় সে ত্রাক্ষনাম জাহাজে রাখিয়া আসেন, কারণ ব্রাক্ষনামে এথানে আর আদর নাই। ব্রাক্ষ বলিলে লোকে আদর না করিয়া বিছেষ করে ইহা এক প্রকার ভাল। আমাদের বিশাস এই, হর্মলভা বাহির হইতে আসে না; ভিতর হুইতেই বাহিরে বার। ভিতরের সবলতার দিকে ব্রাহ্মগণ দৃষ্টি রাখুন বাহির আপনি সবব হইবে। তবে লোকের বিবেরে একটা ভয় আছে তাহা আমাদের বেরণ রাধা কর্ত্তব্য। লোকের বিষেধ দেখিতে দেখিতে তাহাদেরও প্রতি আনাদের বিধেব পরারণ হইয়া পড়িবার সম্ভাবনা। জগতে প্রাচীন ধর্ম স্প্রান্তিশন যে শাব্দায়িকতা চুট হয় বাহিরের বিষেষ ভাহার একটা প্রধান কারণ। মহমদ প্রথমে জাঁহার বিরুদ্ধ মন্তাবলম্বী লোক্রিগের व्यक्ति विस्वती हिरमन मा। जिल्ली मका नगरत वक्त मिल हिरमन, ততদিন তাহাদের প্রতি সমূচিত করা ও উপায়তা প্রদর্শন ক্রিয়া আনিতেছিবেন। কিন্ত শত্রুগণের উপাত্রবে কান্য উছি। শিষ্যরশ হিন্ন বিদ্যিক হইয়া প্রাক্তিন, প্রথম ভাষাবিগ্রন্তে প্রাণ जात जिनवास्ता, चाळत गरेरा स्टेस, स्था, क्रांस्टक मिल पंचि बर्ड जान बाजारेना महिना मनता नामान पानिक अस्ति। * **

বধান নাম্প্র নেশানেও ভাষ্টেক ছবিশ্ব বাকিছে বিল বা; ভবন ভাষার বিবেশারি আজনিত হইল; ভিনি আনেল করিনের লবিধানীবিদকে পান্তি দেও।" বিবেবে বিবেব করিনা নেল, সাজাধারিকভার উৎপত্তি হইল। এই সাজাধারিকভার করি এখনও মহলনের ধর্বের মধ্যে ভাবল রহিনাছে। বাহিরের বিবেবে পাছে আক্ষিণের মনে বাজ্যধারিক ভাব বর্ষিত হল এই এক আপরা আছে।

অসত্যে বাহার ভিডি সমূলে ভাহার বিনাশ— এক ব্যক্তি এক নমরে ত্রান্ম ছিল, তংপরে কোন ভয়তর অপ-রাবে ব্রাক্ষণ তাহার প্রতি বিরক্ত হইলেন। সে দেখিল ব্রাক্ষ-क्रिलाइ विरवष्टी हरण मिनिवाद स्विविध खारह. धवर मिथारन जाबबु जाहि। त्र त्रारे मत्न शिवा नाम निथारेन क्षेत्र जन-সমাজে ব্রাহ্মসমাজের কুৎসা রটনা করিতে লাসিল। এরাপ মধ্যে মধ্যে ঘটিবে: সেজত আমাদের প্রস্তুত হুইরা থাকা উচিত। ইহাতে আমানের চিত্তকে বিচলিত হইতে দিলে এই প্রকাশ পার যে উপরের প্রতি আমাদের বিশাস অতি ক্ষীণ। ঈশ্বরে যদি আমনা বাত্তবিক বিশ্বাস স্থাপন করিয়া থাকি, তাহা হইলে এই মহানত্যেও বিখান স্থাপন করিয়াছি যে তিনি ধর্মরাজ তাঁহার এই জগৎ ধর্ম নিরমের যারা শাসিত 🕯 তাঁহার রাজ্যে অণ্তা জন্ম লাভ করিতে পারে না! "সমূল বা এব পরিওব্যতি াবাদুত মভিবদতি"—যে অসত্যকে আশ্রন্ন করে সে সমূলে পরি- ৬ ছ ছয়।" অসতা যাহার ভিত্তি বিনাশ তাহাঁর পক্ষে অনিবার্য। মিণ্যার উপরে যে জাতসারে আপনার কার্যোর ভিত্তি দ্বাপন করিতেছে তাহার স্তায় নান্তিক আর নাই। সেই মিখ্যাকে অবশ্বন করিয়া সে যত কাজ করে,তাহার নাল্তিকতার গভীরতা তত অধিক প্রকাশিত হয়। সে ব্যক্তি আপনার कारकत बादा विकारिक एक में बाद कि बाद के बाद নির্মে শাসিত নর: এখানে মিথ্যা ও জালের উপরে টাডাইরা একটা কিছু করিয়া ভোলা যায়।" এরপ নান্তিকের প্রতি-পক্তা দেখিয়া বে চিন্তিত হয় সেও আংশিকরপে অবিবাসী দারণ সেও মনে করে এ জগৎ ধর্মনিরমের ছারা শাসিত নছ। এখানে মিখ্যার উপরে ভিত্তি স্থাপন করিয়া একটা কাপ্ত করিয়া তোনা যাইতে পারে। এক্লপ ঘটনা যথনি ঘটিবে তথন ব্রাক্ষণণ এই মহাসভাটী শ্বরণ করিবেন, "অস্তা বাহার ভিত্তি সমূলে তালার বিনাশ" অসত্যকে আশ্রর করিয়া কোন কাল দাঁড়াইতে ^{भीरत} मा। यनि नेकांत्र करन क के बाका क्रेस्टरज जाका मरह। এক্ষার বিশাসের চক্ষে দেখিলে আর বিখেবের ভাব ক্ষায়বে না। ^{হতি} বেমন মশকের কামভ উপেকা করে সেইরূপ ভাঁচারাও ^{এরণ} বিপক্ষিপের আক্রমণ উপেকা করিতে পারিবেম।

कुलनात विठात-->৮২८ व्हेर्ए ১৮৩० এই मध्येण कर्ण-एवत रेकिन्एक्स भरक अकी विज्ञाननेत भवत । अहै गर्याततं गरम अगरकत अन्यक्त वर्षात्मानम मृद्धे व्हेनाहिन । अहै नगरकत गरम जारमिकारक क्यूंक मध्येमारक क्यू व्या है स्टेन्टिक तिह-गानिक मध्येमारक क्यूंक क्यूंक अध्येमारक मध्येमारक मध्येमारक

मन र्षे , प्रेष्ट्रवर्गिकेट्य श्रांति मन्द्रवाद्यत्र बना र्षे , ক্রতিভা স্প্রাণার ও ব্রাহ্মসমাজের জন্ম হয়। অন্ত কোন দেশে অক্ত কোন সম্প্রদারের জন্ম চইয়া থাকিবে আমরা জানি না! ইহার মধ্যে আত্মসমাজ ভিত্র সকল সম্প্রদায়েরই বিশ্বাসীর সংখ্যা লক্ত লক্ষ্ হইয়াছে। সর্বাদেশল মর্কনদিগের বিশ্বাদের শক্তি-रिविवेदी क्रिकारक चांकर्गाविक हहेरक हहेब्राइ। धेर्ड नीर्यकान এই সম্প্রদারের লোক বত প্রকার অত্যাচার ও নির্বাতন সহ ক্রিয়াছে তাহার বর্ণনা হয় না । আমেরিকার ভায় সভাতম ও স্বাধীনত্ন দেশেও ইহারা প্রত্থের ভার এক নগর হইতে আৰু এক নগৰে, নে স্থান হইতে অন্ত স্থানে তাড়িত হইয়াছে। অবশেষে ইহায়া আমেরিকার এক প্রাত্তে গিরা ল্বণময় বীপে छेनित्वन दानमें कविवाद, त्रशात्म देशात्र निष्ठांत नारे। সেধানেও ইহাদিপের দুবিত মত ও আচরণ নিবারণের জন্ম ইউ-माइरिष्ण टिष्ठेन, शवर्गमा चाइरान प्र चाइन थावन कतिए-ছেম: ইহানের বেতাদিগকে কারারত্ব করিয়াছেন, আচার্য্য निश्राक तम इटेर्ड निर्कामिड क्रिवाह्म। बारेन्द्र बात्रा মাছবকে বত দুর পীড়ন করা বার তাহা করিতে বাকি রাখেন माहै। किन्नु नर्यन मरनद्र किन्नुर्र्छ निशां हरेन তাছারা লবণমন বীপকে প্রমের গুণে ইন্তপুরী করিরাছে; त्मधात जाननात्त्र हेकामुन्नाल भागन धारानी. निका धारानी. সামাজিক প্রণালী স্থাপন করিয়াছে। তাহাদের প্রচারকগণ तम विमान नजन निया मध्यह कतिराज्यह ; वर्ष वर्ष कार्यानि, ইংলগু, ফ্রান্স, প্রভৃতি দেশ হইতে শত শত মর্মন লবণ-ৰীপে গিয়া বাদ করিতেছে। কি আশ্চর্য্য জীবনী শক্তি। ভাহাদের কাঁৰ্যপ্রেশালীর বিষয় ভাবিলে ভাবার চমংকুত হইতে হয়। মর্ম্মন হইতে গেলেই এক জনকে নিজ আরের দশ ভাগের এক ভাগ স্বীয় ধর্মসমাজের উন্নতির জন্ত দান করিতে হর। প্রত্যেক ভল্নালয়ে প্রতি মাসে এই দশপ্রাগের এক ভাগ সংগ্ৰীত হইরা থাকে। প্রচারকদিগের প্রতি নির্ম আবার অতি কঠিন। এক ব্যক্তি কাম কর্ম করিতেছে, হঠাৎ তাহার প্রতি নেতারিগের আদেশ হইল যে, তাহাকে মর্মন ধর্ম প্রচারার্থ জার্মানি বাইতে হইবে। তাহাকে অমনি সকল কাজ ছাড়িরা যাত্রা করিতে হইবে। যাত্রার আরোজন, ভাহার পরসা সংগ্রহ, জার্মানিতে কাজ করিবার অর্থ সংগ্রহ, সকলি ভাহার ভার। বেমন করিরাই হউক তাহাকে যাইতে হইবে। সেই রূপ ক্রিয়াই ভাহার। যার। মর্মনদিগের মত ও আচরণ অতি कुरनिक, छाहात्रा मिछ दिहेरमक चालका एक दिहेरमुक्तित অধিক পক্ষপাতী। স্থতরাং বছবিবাহ ভাহাদের মধ্যে নিবিদ্ধ নহে। এই জন্মই আমেরিকাবাসিগণ ভাছাদের প্রতি জাত-ক্রোর। এই জন্মই এত জত্যাচার। কিছ কিছুতেই মুর্থন मिश्र के विमान क्या बार्ट कहा ना। खायागा क्वांत क्वांत ৰারা বিচার করুন। বে বিইসর ব্রাহ্মস্থার অভিটিত হইরাছে त्नहे वरनत्त्र यक नक्तमात्र एडे हरेबाह्य तन नकत्नवहे त्नाक मरथा। এত परिक दंकमा । बाक्रममास्त्रत्व स्वाक्रमरथारे या এত चन्न (कंग ?

অজ্ঞের ভার কার্য্য করেন এবং তাহাদের সে প্ররাস সফল হয় ना। कात्रण हेरदिराजत तीि नीि मिथिए कि हहेरत ? य সকল মাল মসলা লইয়া আমাদিগকে কাল করিতে হইবে অর্থাৎ যাহাদিগকে লইয়া চলিতে হইবে, তাহারা ভারতীয় স্তুতরাং অমুকরণ কোন রূপেই স্কুচারু হইবার উপায় নাই। অমুকরণের কথা বলিলেই আমাদের একটা গল মনে হয়। একবার এক চাবার গ্রামে যাতা হইতেছিল। এক জন চাবা গানে অত্যন্ত প্রীত হইয়া পারিতোষিক স্বরূপ একটা গরু লইয়া যাত্রা স্থলে উপস্থিত হইল। গরুটী দিতে যায়, এমন সময়ে আর এক চাষা, যে ভদ্র গ্রামের ভদ্রলোকদিগের ব্লীতি নীতি কিছু কিছু দেখিয়াছিল, তাহাকে বলিল "ওরে বাবুরা উমোলে ्रेट्स (भना (मग्न," প্রথম চাষা মহা বিপদে পড়িল রুমাল কোথায় পার ? কাজেই অবশেষে গরুর পেটে গামছা বাধিয়া সভার মধ্যে উপস্থিত করিল। বাবুদিগের রুমালে বাঁধিয়া যাতার পারিভোষিক দেওয়ার অমুকরণ করিতে গিয়া যেমন গরুর (পটে গামছা বাধিতে হইয়াছিল; দেশ কাল পাত্র বিবেচনা তুইটা শব্দ আছে, imitation ও assimilation এই চুইটাতে অনেক প্রভেদ। একটা অমুকরণ অপরটা অঙ্গীকরণ। মূল ভাবটী লইয়া নিজের প্রকৃতি, রীতি, নীতি ও ইতিবৃত্ত অমুসারে তাহাকে গ্রহণ করার নাম অঙ্গীকরণ। দৃষ্টান্ত স্বরূপ মনে কর, জার্মণি, ফ্রান্স, ডেনমার্ক প্রভৃতি ইউরোপের জাতি সকল ইংলপ্তের নিকট স্বায়ত্ত্ব শাসন লইয়াছেন। ইহার অর্থ এই নয় যে জাঁহাদেৰ এক একটা পাৰ্লেমেন্ট আছে, ভাহাতে একটা হাউস অব কমন্স আছে, তাহার সভ্য নির্বাচন প্রণালী ঠিক ইংলত্তের স্তায়—কার্য্য প্রণালী ঠিক ইংলত্তের স্তায়। একটী হাউস অব লর্ডদ আছে, তাহারও ব্যবস্থা ইংরাজী হাউদ অব লর্ডের ন্তায় ইত্যাদি। ইংলভের নিকট সায়ত্ব শাসন প্রণালী লওয়ার অর্থ এই যে তাহারা মূল ভাবটা ইংলণ্ডের নিকট পাইয়াছেন, গঠনটী স্বদেশের প্রকৃতি ও চরিত্রের অমুরূপ। মূল ভাবগুলি গ্রহণ কর। প্রকার ও প্রণালী গুলি জাতীয় থাকুক। মনে কর যে ইংরেছেবা পিতা, মাতা, পুল্ল, কন্তা, সকলে একত্র আহার করে, এই রীতিটা এক জনের ভাল লাগিয়াছে। বলিয়া যে তাঁহাকে টেবলে বসিয়া, কাঁটা চামচ দিয়া আহার করিতে হইবে, অথবা বাঙ্গালির ভোজ্য অন্ন ব্যঞ্জন পরিত্যাগ করিয়া ইংরেজের প্রণালীতে রন্ধন করিতে হইবে, তাহার অর্থ কি ? সপরিবারে আহার এই মূল ভাবটা গ্রহণ কর, দেশীয় রীতির অনুসারে তাহাকে কার্য্যে পরিণত কর; একটা দৃষ্টান্ত মাত্র। অমুকরণ নয় কিন্তু অঙ্গীকরণ।

তবে সমাজ-সংস্কার সম্বন্ধে একটা মূল কথা আমাদিগকে সর্বাদা মনে রাখিতে হইবে। আমরা বরে দ্বার দিয়া কলমটী হাতে লইয়া, নিজ্জনে বসিয়া কতটা রাখিতে হইবে কতটা ভালিতে হইবে, সে সম্বন্ধে যাহা কিছু ব্যবস্থা করিনা কেন ইহা নিশ্চয় যে সমাজ-সংস্কার সেরপে সাধিত হইবে না। নির্জ্জনে বসিয়া বৃদ্ধির তুলাদণ্ড ধরিয়া কোন বিষয়ে হিন্দুভাব কত তোলা থাকিলে ও পাশ্চাত্য ভাব কত তোলা মিশাইলে ভাল হয়

ভাহা বলা কঠিন নয়। কিন্তু আসল সংশ্বার কার্য্যটা এরপে চলিবে না। পাশ্চাত্য শিক্ষা লাভ করিরা ও পাশ্চাত্য সত্যতার সংল্রবে আসিরা নব্য ভারতের মনে যে সকল আকাজ্জা স্বতঃই উদিত হইবে, সেই সকল আকাজ্জার চরিতার্থতার জন্ম যে ভাব যতটুকু থাকিলে ভাল হয় তাহা থাকিয়া যাইবে, তাহার বেশীও থাকিবে না কমও থাকিবে না। বাহারা সেই আকাজ্জাকে ধরিতে পারিবেন ও ভাহার পথ পরিষ্কার করিতে পারিবন তাহারাই প্রক্বত সংশ্বারক।

প্রদেশীয় ব্রাহ্মস্মাজ।

বরিশাল হইতে একজন ব্রাহ্মবন্ধু লিথিয়াছেন—বরিশাল জেলার অন্তর্গত শুবিয়া গ্রাম নিবাসী শ্রীযুক্ত অরণাচরণ সেনেব দীক্ষিত হওয়ার বিজ্ঞাপন গত মাঘোৎসবের সময় প্রাচারিত হইয়াছিল। কিন্তু তাহার পিতা এথানকার হিন্দু সমাজের লোকের উদ্যোগে ও উত্তেজনায় একটী মোকদমা করিয়। দীকায় বাধা জন্মাইয়াছিলেন। কিন্তু বিগত ২৩এ বৈশাখ বরিশাল ব্রাহ্মসমাজের উপাসনালয়ে উক্ত সম্মদাচরণ সেন পবিত্র ব্রাহ্মধর্ম্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। প্রচারক শ্রীযুক্ত বাবু মনোরঞ্জন শুহু আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন।

গত ৪ঠা ভাদ্র রবিবার বরিশাল ব্রাক্ষসমাজের উপাসনা মন্দিবে করাপুর গ্রাম নিবাসী খ্রীযুক্ত বাবু প্রসন্ধক্ষার দাস মহাশন্ন পবিত্র ব্রাক্ষধর্মে দীক্ষিত হইরাছেন। বরিশাল ব্রাক্ষ সমাজেব আচার্য্য শ্রদ্ধান্দ শ্রীযুক্ত গিরিশালক্ষ মন্ত্র্মদার মহাশন্ন আচা-র্যার কার্য্য করিরাছেন।

গত আবাঢ় মাসে বরিশালের গৈলা নিবাসী শ্রীললিত মোহন দাস সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজে দাক্ষিত হইয়াছেন। বরিশাল ব্রাহ্ম সমাজ হইতে জাৈষ্ঠ মাসে তাহার দীক্ষার নোটাশ বাহির হইয়া-ছিল। পরে তাহার আগ্রীয়ের। কাঁকি দিয়া তাহাকে ১ মাস কয়েদ করিয়া রাথেন। এই কারণেই তিনি বরিশালে দীক্ষিত হইতে না পারিয়া কলিকাতায় সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজ মন্দিরে দীক্ষিত হইয়াছেন।

টালাইল মহকুমার অন্তর্গত কর্টীয়া হইতে একজন লিথিরাছেন—মঙ্গলময় বিধাতার মঙ্গল ইচ্ছায় থোর পৌত্তলিকত। পরিপূর্ণ কুসংস্কারাপের কর্টীয়া নামক এই কুদ্র পল্লীতে ১৮০৯ শক্ষের ১২ই মাঘ বৃধবার "কর্টীয়া ব্রাহ্মসমাজ" নামে একট সমাজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। তাহার অপার কুপাই ইহার একমাত্র অবলম্বন। নিরাকার অদিতীয় ঈশ্বের আরাধনা ও সভাধর্ম ব্রাহ্ম ধর্মের অনুষ্ঠান ইহার লক্ষা। প্রতি বৃধবার সন্ধ্যারপর বাবু হ্বনাও ঘোষ মহাশ্রের ভবনে সমাজের কার্যা নির্বাহ্ হইয়া থাকে। বাবু হ্রনাও ঘোষ মহাশ্রের ভবনে সমাজের কার্যা ও বাবু ললিতমোহন বন্ধ মহাশয় সঙ্গীত ও মন্ত্রান্থ প্রয়োজনীয় কার্য্য করিয়া থাকেন।

স্থাকরপে সঙ্গীত চর্চার জন্ম বাবু হরনাথ খোষ মহাশরে ভবনে একটা "সংগীত সমিতি" স্থাপিত হইরাছে। প্রতি শুক্রার বার সন্ধ্যারপর করেকটি ব্রাহ্মবন্ধু মিলিয়া সঙ্গীত চর্চা করিয়া পাকেন।

সমাজের কার্য্য নির্মিত ও স্থচারুরপে নির্বাহের জক্ত ৮ আট জন সভা হারা একটা কার্য্য নির্বাহক সভা গঠিত হইরাছে। এই সভার নির্মান্ত্রসারে সমাজের কার্য্য পরিচালিত হইর। গাকে।

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জন্ত সম্পাদক দায়ী নহেন) শ্রহাম্পাদ তত্তকৌমুদী সম্পাদক মহাশয়

া সমীপেৰু —

মহাশয়!

গত > भरे धावरंगत उचरकोमृतीरङ विधानवान मद्यस ध्यका-শিত আমার পত্তের উত্তরে ১লা ভালের তত্তকৌমুদীতে প্রদা-लाम औरक वाव मोजानाथ मुख महाभारवत এकथाना स्नमीर्घ পত্র প্রকাশিত হইয়াছে। তিনি লিখিয়াছেন আমার অনেক উক্লিব সহিত তিনি একমত। কিন্তু আমি যে বাস্তবিকরণে ঈুখুবের নিতাক্রিয়াশালতা স্বীকার করি না আমার পত্র হইতে তিনি তাহা প্রমাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন এবং তিনি মনে কবেন তাছাতে ক্লতকার্যা হইরাছেন। আমি ঈশবের নিত্তা-ক্রিয়াণীলতা মানি বলিয়া প্রচারিত ইইবার জন্ম বড় একটা ব্যস্ত নহ। আমার পত্র দ্বাবা যেরূপ বৃঝিবার স্থৃবিধা হয়, আমি আপা-ভতঃ সেইরূপেই পরিচিত থাকিলাম। কিন্তু ঈশরের নিতাক্রিয়া-শিল হা প্রমাণ করিয়া সীতানাথ বাবু ইহাই বলিয়াছেন যে ঈশ্বর "নিতা নৃতন বিধানের প্রেরয়িতা।" সীতানাথ বাবু ঈশ্বরকে "নিত। নূতন বিধানের (প্রবিষ্ঠি) বলিয়া যাঁহাদিগের মত সমধন করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন তাহা বাস্তবিকরূপে সমর্থিত इटेशाएक विश्वश मर्ग रहा ना। विधानवामी अञ्चान পত्रिकामि ংতে দৃষ্টান্ত সংগ্রহ্মা করিয়া তত্ত্তমামুদী হইতেই কয়েকটী তান মাত্র উল্লেখ করিয়া দেখাইতেছি যে আমি বাহাদিগের কুগার প্রতিবাদ করিয়াছি, দীতানাথ বাবু ঈশ্বরকে নিতা নূতন বিধানের প্রেবয়িত। বলিয়া <mark>তাঁহাদের মত বিশেষ সমর্থন</mark> কবিতে পাবেন নাই। ১১শ ভাগ তত্ত্বকৌমূদীৰ ১১শ সংখ্যায় সম্পাদকীয় মন্তব্যে লিখিত হইয়াছে "বিধানবাদী সকলবিধান ্কই সমচকে দেখেন। প্রত্যেক বিধানই তৎকাল দেশও পার্রোপযোগা। ব্রাহ্মধন্মে সকল বিধানের সমন্বয় ও ইছা শেষ বিধান।" । যিনি জ্রীচৈত্তভা দেবের ধর্মা বিধানের বিশেষ ভাব শাধন করিতে পারেন নাই, তিনি কেমন করিয়া উহার সহিত খুষ্টীয় ধর্মা বিধানের তুলনা করিয়া তাশ্বতম্য নির্দেশ করিবেন।" শেষ বিধান বলাতে অনেকে প্রতিবাদ করাতে সম্পাদক ১৪শ সংগ্যায় তাহার উত্তর প্রদান করিয়া লিথিয়াছেন যে "আসরাকিস্কুয়ে ভাবে মুদলমানেরা মহম্মদ প্রচারিত ধন্মকে শেষ ধর্ম-প্রবর্ত্তক ও মহম্মদ প্রচারিত ধর্মকে শেষ ধর্ম বিধান ^{বলেন} সে ভাবে ব্ৰাহ্মধন্মকে শেষ বিধান বলি নাই। সকল বিধানের শেষে এই বিধানের অভ্যাদর হইয়াছে সেই জহাই ^{উচাকে} শেষ বিধান বলিয়াছি; ভবিষ্যতে আর বিধান হইবে मी-- এরপ অর্থে উক্ত শব্দ প্রয়োগ করি নাই" ইত্যাদি।

वर्जमान वरमात्रत्र ५७६ साधारण्त्र जचरकोमूमीत "विधान ध्ववर्जन ও বিধান সংস্থাপন" নামক প্রাপ্তপ্রবন্ধে একস্থানে লিখিত হই-য়াছে এক একটা বিধান প্রবর্ত্তন এক একটা বচ দিনের স্থপীকৃত পাপ, অপ্রেম ও অসত্যের উপর পুণ্য, প্রেম ও সত্যের আক্র-यन।" >>म ভाগ তত্ত्विम्मीत ७ त्रं त्रः शांत्र मम्लामक "स्रामातमत . দায়িত্ব" নামক প্রস্তাবের প্রথমেই লিথিয়াছেন,"যে সময় কোনও रमर्ग वा त्रभारक क्रेश्वरत्रत कृषा धर्म विधारमत व्याकारत विस्थय ভাবে প্রকাশিত হয়, তাহা ঐ দেশ বা সমাজের পকে স্থপময়।" অন্তত্র লিখিয়াছেন, ধর্ম বিধানের দিন, ঐশী শক্তি কর্তৃক মান-বাস্থার প্রত্যক্ষ অফুপ্রাণনের দিন চলিয়া যার নাই। পরমেখর मस्या नमास्त्रत कार्या कनाश स्ट्रेट अवनत शहा करतन नाहे।" অন্তত্র বলিতেছেন, "বিশেষতঃ "ব্রাহ্মধর্মের স্থায় জীবস্ত ধর্মবিধানের আশ্রর লভি করা একদিকে যেমন সৌভাগ্যেব विषय हेजानि।" - व्यावात्र व्यामात्मत्र नाशिष नामक १व श्राहत ঐ বংসরের ১১শসংখ্যায় লিখিতেছেন. "ব্রাহ্মধর্ম বলিতেছেন জগতে এ পর্যান্ত যত ধর্মবিধান আসিয়াছে, তাহাদের সার ত্রাহ্মধর্মের অন্তর্ত। ব্রাহ্মধর্মেই তাহাদের পূর্ণতা। ঐ সমস্ত ধর্মবিধান ঈশবের করণায় প্রতাক প্রকাশ।" সীতানাথ বাবু সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উপাসনালয়ে একটা উপদেশে বিধানতত্ত্ব সম্বন্ধে यांको दिनमाकितन এवः यादा ১०म ভाগ उत्रकोमूमीत वम সংখ্যায় বিধানতত্ব নামে প্রকাশিত হইয়াছিল, তাহাতে ষ্ট্রশা, বৃদ্ধ, মহম্মদ, চৈতন্ত প্রভৃতির জীবন যে কেবল ব্যক্তিগত कीवन नरह। किन्तु এकी विक्रिय हेल्डिंग हेहा प्रथाहेगा বলিতেছেন, "তাহাতেই বলি ইহারা জগতের জন্ম আসিয়া-ছিলেন: ইইাদের জীবন সমগ্র মানবজাতির সাধারণ সম্পত্তি ইইাদের জীবন মানবের উল্লতির সাহায্যার্থ ঈশ্বরের বিশেষ বিধান।" আবার বলিতেছেন, "যে প্রমাণ ছারা ব্রিতে পারি, স্বা, চন্দ্ৰ, জল, বায়ু--প্রভৃতি আত্মার বিশেষ বিশেষ প্রয়োজন সাধনার্থ ঈশবের বিশেষ বিধান, সেই প্রমাণ ছারাই--- শুই প্রমাণে বরং উজ্জ্লতর প্রয়োগে বৃঝিতে পারি, বৃদ্ধদেব ঈশ্ প্রভৃতি মহাম্মাদিগের জীবন জগতের বিশেষ বিশেষ প্রযোগন সাধনার্থ ঈশ্বরের বিশেষ বিশেষ বিধান।" তংপর ঐ ভাংগে ৬ চ সংখ্যার উক্ত প্রস্তাবের অবশিষ্টাংশের প্রথমেই বলিতেছেন, "এখন দেখা যাক, এই সকল মহজ্জাবনরূপ বিধান যে জগতে আদে, তাহা কিরূপ উদ্দেশ্ত সাধনের জন্ত এবং এই সকল বিধান সম্বন্ধে আমাদের কণ্ঠব্য কি ? বিধানের উদ্দেশ্য (১) নুতন সত্যের প্রকাশ, (২) নবজীবন সঞ্চার।" আর উক্ত করিবার প্রয়োজন নাই। আমি ব্রাহ্মবন্ধদিগকে এই সকল প্রস্তাব গুলি ভাল করিয়া পড়িতে অমুরোধ করিতেছি,তাহা ১ইলে বিধান বলিতে আমি যাহাদের প্রতিবাদ করিয়াছি তাহার। কি বুঝিতেছেন, তাহ। অমুভব করিতে পারিবেন। ঈশ্বরকে যাঁহারা নিত্য নুতন বিধানেব প্রের্য়িতা বলিয়া বিশ্বাস করেন তাঁহাদের পকে উক্তরূপ ভাব প্রকাশ করা সম্ভব কিনা পাঠকগণই তাহার বিচার করিবেন।

বিধানবাদীদিগের সকলেই যদি ঈশ্বরকে নিত্য নূতন বিধানের প্রেরয়িতা এবং নিত্য নূতন বিধানে বিশ্বাস করেন, তাহাতে আমার বিশেষ আপত্তি নাই। আমি আমার পত্রের

এক স্থানে লিথিয়াছিলাম হয় তিনি নিত্য ক্রিয়াশীল, নিত্য-বিধাতা না হয় তিনি একই বিধানের প্রেরয়িতা।" কিন্তু যাঁহারা ঈশ্বর কথন কথন বিধান প্রেরণ করেন বলেন আমি প্রধানত: তাঁহাদের কথারই প্রতিবাদ করিয়াছি। ঈশ্বর যদি নিতা বিধান প্রেরণ করেন তাহা হইলে "এক একটী বিধান প্রবর্ত্তন এক একটা বহুদিনের স্থপীকৃত পাপ, অসত্যের উপর পুণ্য, প্রেম ও সত্যের আক্রমণ।" এরপ উক্তির কি স্বার্থকতা থাকে। ঈশ্বর কি প্রতি মুহুর্তেই পাপ, অসতা অপ্রে-মের উপর আক্রমণ করিতেছেন না বা করিতে পারেন না ? যাহা হউক সীতানাথ বাবু যে প্রমাণে ঈশ্বরকে নিতা নৃতন বিধানের প্রেরয়িতা বলিতে চাহেন তাহাতে আমার বিশেষ আপত্তি আছে। কারণ তিনি লিখিয়াছেন "কিন্তু বিধি ব্যবস্থার প্রকাশ: জ্ঞান, প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শের উদয়, এই সমস্ত ব্যাপার আমাদের ইচ্ছা-নিরপেক।" অন্তত্ত "এই যে মানব হৃদয়ে একটা সত্য, এক কণা প্রেম বা একটা প্র্ণ্যাদর্শের প্রকাশ, এ কার্য্যের কারণ কে ? কারণ নিখরই ঈখর, কেননা এই প্রকাশ সম্পূর্ণরূপেই মানবের ইচ্ছা-নিরপেক্ষ।" কথা হইতেছে যে বিধান বুঝিতে যদি মানবের কোনই হাত না থাকে, তাহা যদি সম্পূর্ণ রূপেই মানব-ইচ্ছানিরপেক্ষ হয় তবে অবশু প্রত্যেক বিধান প্রতি মহুষ্ট্যের নিকটে একই সময়ে প্রকাশ পাইবে। ঈশ্বরের বিধান তাঁহার কোন সম্ভানের জন্ম আসিবে আবার কোন সস্তানের জন্ম আসিবে মা, ইহা হইতে পারে না। কারণ তিনি সকল সম্ভানের প্রতিই সমান ভাবে করুণাময় এবং ভাষবান। কিন্ত জগতে ইহার সম্পূর্ণ অক্তথা দৃষ্ট হইতেছে। বিধাতার বিধান কেবল সকলে বু**ৰিতেছে না** এমন নয়। কিন্তু বিধান একজনে লাভ করিয়া যদি অক্তকে প্রদান করিতে यात्र अधिकाः म इत्लंहे तिथा यात्र, छाहा छ शहन करतहे ना, বরং তাহার পরিবর্ত্তে নির্যাতনও করিয়া থাকে। পৃথিবীতে এমন সহস্র সহস্র লোক আছে বর্ত্তমান সময়ে যাহা নির্কিবাদে সতা স্কুতরাং স্বাবের বিধান বলিয়া গৃহীত হইতেছে তাহারা তাহার কোন সংবাদও রাথে না। ঈশবের বিধান মানব অন্তরে প্রকাশিত হইতে যদি তাহার ইচ্ছার কিছুই অপেকা করে না, তবে এই সকল লোকের পকে সেই বিধান বুঝিবার পক্ষে কি বাগা আছে। সীতানাথ বাবুর উক্তরূপ উক্তি দারা সকল প্রকার ধর্মসাধনের আবশ্রকতা অস্বীকৃত इहेग्राइ । प्राष्ट्रत्य ८० छोत् एका मृता नाहे वना इहे-য়াছে। শুধু তাহাই নহে ঈশবের পূর্ণ স্থায়পরতাও অস্বীকৃত इटेट्टि । मीजानाथ वावू अग्रज विलग्नाहन य "वाकिशज, বা সম্প্রদায় গত বিকাশের ভিন্নতা অন্তুসারে বিধানের ভিন্নতা হায়" এবং আর এক স্থানে লিথিয়াছেন "যে কিন্তু এই সকল অপরিবর্ত্তণীয় সত্যে মামুষ অনেক সোপান, অনেক পরিবর্ত্তন অতিক্রম করিয়া উপনীত হয় এবং যে সকল উপায়ে উপনীত হয় সে সকল উপায় অবস্থা ভেদে ভিন্ন ভিন্ন। এমন কি অনেক স্থলে পরস্পর বিরোধী।" এথন জিজ্ঞাস্য এই যদি সত্যের বা বিধানের প্রকাশ মানবেব ইচ্ছা-নিরপেক্ষই হয় তাহা হইলে এরূপ ভিন্ন ভিন্ন অবস্থা বা বিধানের ভিন্নতা এবং উপান্নগুলি পরস্পর

বিরোধী" হইবার কি কারণ থাকিতে পারে ? তাহাইইলে নিশ্চরই বলিতে হইবে যে ঈশ্বর কাছারও নিকট দত্য প্রকাশ करतन काहात्र भिक्छे श्रकांभ करतन ना। काहारक व्यक्षिक আদর করেন,কাহাকেও বা কম আদর করেন। স্থতরাং ঈশ্বরের সর্বজনে সমান দয়া বা স্থায়পরতা আর স্বীকৃত হইতেছে না। শীতানাথ বাব কিন্তু প্রকারান্তরে ঈখরের পক্ষপাতিম্বও স্বীকার করিয়াছেন। তিনি লিখিয়াছেন "বিধাতা প্রত্যেক ব্যক্তি, জাতি ও সম্প্রদায়কে ঠিকএক রূপ প্রকৃতি দিয়া গঠন করেন নাই।... কেছ জ্ঞানে শ্ৰেষ্ঠ,কেছ যোগে শ্ৰেষ্ঠ,কেছ বা প্ৰেমে শ্ৰেষ্ঠ,কেছ বা সেবায় শ্রেষ্ঠ · · · কেহ কেহ মনে করিতে পারেন যে এই পার্থকা দ্বীরর অপক্ষপাতিছের বিরোধী। সে যাহা হউক" তবেই দেখা যাইতেছে প্রকৃত বিধানবাদ না মানিলে লোককে নানা দিক দিরা অফুবিধার পড়িতে হয়। **ঈখ**রের **ঈখরত্ব সম্পূ**র্ণ বজার রাথিয়াই আমাদিগের সকল প্রকার বিশ্বাসে বিশ্বাসী হওয়া উচিত। পূর্ণ স্থায়বান ঈশ্বরেই যদি পক্ষপাতিত্ব আরোপ করিতে হয়, তাহা হইলে না হয় ওক্ষপ বিধানে নাই মানিলাম। জগতে ব পার্থকা আছে কে অস্বীকার করিবে, কিন্তু তাহার কি আর অন্ত ব্যাখ্যা হয় না ৪

সীতানাথ বাব্ব আর একটা উক্তির প্রতি রাশ্বসাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছি। তিনি লিখিতেছেন "বিশেষ বিশেষ সত্য ভাব বা অমুষ্ঠান প্রচারের ভার বিশেষ বিশেষ বাক্তি, জাতি, সম্প্রদায়ের উপর হাস্ত হয়।" এই প্রকাব বিশাস হইতেই জগতে যত বিবাদের স্পষ্ট হইয়াছে। এই উক্তিব প্রতিক্লে অনেক কথা বলা যাইতে পারে কিন্তু পত্র বড় ছইফ যায় বলিয়া আমি রাক্ষসাধারণের উপরই এবিষয়ের বিচার ভাব অর্পণ করিলাম। সীতানাথ বাব্র যে সকল উক্তিতে আমাল বিশেষ ভাবে আপত্রি ছিল এতক্ষণ তাহা প্রকাশ পূর্বক এখন আমার কথার যে সকল প্রতিবাদ তিনি করিয়াছেন সংক্রেপ্রতাহার কোন কোনটা সম্বন্ধে আমার বক্তব্য প্রকাশ করিতেছি।

আমি লিথিয়াছিলাম যে ঈশ্বর মানব স্টের সঙ্গে সংক্ষা তাহার কল্যাণকর বিধি ব্যবস্থা তাহাতে বিহিত করিয়াছেন কর্মাতিনি নিজে সাহায্যদাতা ও শিক্ষক রূপে নিত্য সঙ্গী হট্যা আছেন। সীতানাথ বাবু এই কথার সম্বন্ধে আপত্তি পূর্বক লিথিয়াছেন যে যদি স্থান্তর সঙ্গের সমস্ত বিধি ব্যবস্থা হৃদয়ক শাস্ত্রে লিথিয়া রাথিয়াছেন · · · · তাহা হইলে শিক্ষাদাতা প্রায়োদাতারপে নিত্য সঙ্গী হইয়া অবস্থিত করিবার প্রয়োজন কি ? তিনি কি প্রথম হইতেই এমন বিধান করিতে পাবিশেন না · · যে তাহার যে কোন শিক্ষা বা সাহায্য আবশ্রুক হইবে তাহা সে নিজ প্রকৃতি হইতেই পাইবে ৷ ইত্যাদি।

এই কথার উত্তরে আমি প্রথমতঃ বলিতেছি যে তিনি তাঁহাব প্রণীত বন্ধজিজ্ঞাসা নামক পৃস্তকে"ক্রমবিকাশ কেন" "ধীর উর্মাণ্ড প্রক্রিয়া কেন" প্রভৃতি প্রশ্নের উত্তরে যেমন বলিয়াছেন যে "এই প্রশ্নের সন্তোষকর উত্তর শ্বরং ঈশ্বর ভিন্ন আর কেছই দিতে পাবে না।" আমিও তাহাই বলিতেছি ঈশ্বরই এই প্রশ্নের উত্তর দিতে পারেন যে কেন প্রথম হইতে উক্তন্ধপ করেন নাই। তৎপরে বলিতেছি যে বর্তমান সময়ে জ্ঞানের এই আশ্বর্যা উন্ধতির মধ্যে

জনগ্ৰহণ কৰিয়া কোন লোক বেনন শিকা প্ৰাপ্ত না ছইলে বালি রাশি প্রছের লিখিত বিবর ভাহার কোন কারেই আদে না, তেমনি আস্থায় সমুদ্ধ বিধি ব্যবস্থা লিখিত থাকিলেও ভাছাতে निका थांथ ना रहेरन रन नकन छाहात रकान कार्बाह चारन ना। আমার উক্তরণ ভাব প্রকাশের অর্থ এই নর যে মানব আপন इनविश्व जानं, त्याम, প্রভৃতির সম্পূর্ণ বিকাশের অবস্থা নইবাই জন্মগ্রহণ করে। কিন্তু তাহাতে এই সকলের মূল নিহিত থাকে। গীতানাথ বাবু যে এই মতে একবারে বিশ্বাস করেন লা তাহাও নর। ভারণ তিনি বিধানতত্ব নামক প্রভাবের এক ভানে নতন সভ্যের ব্যাখ্যা করিবার সময় বলিয়াছেন "এবং নতন সভা বলিতে সেই সভা বুঝার, যে সভা মান্থবের অন্তঃপ্রকৃতিতে নিহিত থাকে, লুকায়িত থাকে, কিন্তু বিশ্বাসীর জীবন্ত বাণী ভনিলেই নিতান্ত আত্মীয় ও নিকটছ ক্ষুদ্দ বলিয়া আত্মপরিচয় দেয়—বে সভা হৃদর কন্দরে নিদ্রিত থাকে কেবল বিশ্বাসীর চকা-ধনি তুল্য গভীর বর ওনিলেই জাগ্রত হয়।" স্থতরাং আমার বিধান সম্বনীর মত ওধু আমারই মনঃকল্লিত নছে, কারণ সীতা-নাথ বাবুর এই উক্তি তাহার যথেষ্ট পোষকতা করিতেছে।

বাহারা জড় ও ঈশ্বনকে শ্বতন্ত্র বলিয়া বিশ্বাস করেন না. তাঁছা-নিগকে বাধ্য হইয়াই মানিতে হয় যে ঈশ্বরই বিকশিত হইয়া ভড জগত রূপে প্রকাশিত হইরাছেন। কারণ জভ যে ক্রম-বিকশিত একথা সর্ববাদিসমত। স্মৃতরাং যাঁহারা ঈশ্বরের ক্রমাবকাশ মানিতে প্রস্তুত আছেন, তাঁহারা যে আত্মার ক্রম বিকাশ মানিত্রে কেন এত আপত্তি করিতেছেন বুঝিতে পারি না। প্রথম হইতে মূলে যাহার "উপাদান না থাকে তাহার বিকাশ সম্ভবে না। আত্মার মূলে যদি প্রথম হইতেই জ্ঞান, প্রেম প্রভৃতি না পাকে তবে তাহারও বিকাশ সম্ভবে না। এই জন্মই বলিয়াছি যে ঈশ্বর আত্মায় সমস্ত বিধান করিয়া তাহার সাহায্যদাতা ও শিক্ষাদাতা হইয়া আছেন। কুন্ত বীজটী হইতে যে প্রকাপ্ত বক্ষের উৎপত্তি হয়, তাহাতে যদি প্রথমেই আলো, উত্তাপ ও রস গ্রহণ করিবার শক্তি নিহিত না পাকিত তবে সে কখনই এরূপ প্রকাণ্ড ব্রক্ষে পরিণত হইতে পারিত না। ঈশরকে এইরূপে বিধাতা মানিলে তাঁহার সর্বশক্তিমতা, সর্ব-জতা, এবং ক্লামপরতা প্রভৃতি বজায় থাকে বলিয়াই আমি উক্ত রূপ বিধানে বিশ্বাসী। তাঁহাকে নিত্য নৃতন বিধানের বিধাতা মানিয়া যদি তাঁহার ক্যায়পরতা প্রভৃতি বজায় রাখিয়া ব্যাখ্যা দেওয়া যাইতে পারিত, তাহাতে আমার বিশেষ আপত্তি ছিল না। কিছ সীতানাথ বাবু বা কেহ তাহা•পারেন নাই বা সে চেটা करत्रन नाहै।

দীতানাথ বাবু আমার লিখিত বিধানবাদকে প্রার্থনাবাদের প্রবল বিরোধী বলিরাছেন। আমার উক্তি কেন যে প্রার্থনার বিরোধী তাছা আমি বুঝিতেছি না। সাহায্যদাতাও শিক্ষাদাতা বলিরা আমার লিখায় যদি প্রকাশ না থাকিত, তাহা হইলে অবউই একথা থাটিত। কিন্তু মনুষ্য যে সাহায্য করে বা যাহার সাহায্য করিবার শক্তি আছে ভাছারই নিক্টে প্রার্থনা করিরা থাকে। সাহায্য প্রাপ্তির আশা এবং সভাবনাই প্রার্থনার মূল। স্ক্তরাং আমার লিখা প্রার্থনাবাদের বিরোধী হইতেছে না। বরং

ক্ষারকে নিত্য নৃতন বিধানের প্রেরণ কর্তা বলিয়া বিশ্বাস করি-লেই প্রার্থনার আবহুকতা থাকে না। কারণ যিনি নিজেই সকল জানিয়া শুনিয়া আপনা হইতে প্রয়োজনীয় সমন্ত বিধান করিতেছেন, তাহার নিকট আবার চাহিতে যাওয়ায় কোনই হেতৃ. নাই। যিনি চাওয়ায় অপেকা করেন না এবং যিনি সর্বজি তাঁহার নিকট চাহিতে যাওয়া অস্বাভাবিক ও বৃথা পরিশ্রম ভিন্ন আরু কিছুই নয়। সীতানাথ বার্ মানব অন্তরে বিধান প্রকাশুকে যথন তাহার সম্পূর্ণ ইচ্ছানিয়পেক বলিয়াছেন, তথন তিনিই বরং প্রকারান্তরে প্রার্থনার বিরোধীগণের সপক্ষতা করিয়াছেন।

আমার পত্র আর দীর্ঘ করিবার ইচ্ছা নাই। বিধান
বিষয়ক মতে আমরা যাহাতে একা ইইতে পারি, তাহার বিচার
কল্পই আমি প্রথম পত্র লিধিরাছিলাম। ত্রাদ্ধাণ এ বিষয়ে
বিশেষ বিবেচনা পূর্বক একটা মীমাংসার উপস্থিত হন্দ্র
ইহাই প্রার্থনা। কোন পত্রের প্রত্যেক কথা নিরা কল্প ভাবে
বিচার করিতে যাইয়া স্থ্ কথার কাটাকাটি করিয়া বিশেষ কোন
ফল নাই। আমি যাহা লিধিয়াছি তাহাই বজায় থাকুক, আমাব
এমনও ইচ্ছা নয়। আমার বিশাস যদি অসঙ্গত হয়,তাহা পরিত্যাগ
করিয়া বিচার-সঙ্গত মত গ্রহণ করিতে আমার কোনই আপত্তি
নাই। ত্রাদ্ধাণ এই বিষয়ে উদাসীন না হইয়া উপযুক্ত মীমাংসায়
উপস্থিত হইলেই আমার উদ্দেশ্য সফল হইল মনে করিব।

কণিকাতা

অমুগত আদিনাথ চট্টোপাধ্যায়।

পত্র প্রেরকদিগের প্রতি।

"জনৈক ব্রাদ্ধ"—এই স্বাক্ষরিত পত্রে একজন পত্র প্রেরক ব্রাদ্ধ যুবকদিগের প্রতি বয়য় ব্রাদ্ধেরা দৃষ্টি রাখিতেছেন না বলিয়া তৃংথ প্রকাশ করিয়া পত্র লিখিয়াছেন। তিনি যে অছিযোগ করিয়াছেন তাহা অমূলক নহে। তাঁহার পত্রে নাম না থাকাতে তাহা মুদ্রিত হইতে পারিল না। নাম প্রকাশিত না হউক সম্পাদকের জানা আবশ্রক। নাম না দিয়া কেহ পত্র লিখিবেন না।

শ্রীযুক্ত বাবু কাশীচক্র ঘোষাল—শ্রীযুক্ত বাবু সীতানাথ দত্ত ও আদিনাথ চটোপাধ্যার মহাশর ছরের মধ্যে বিধানবাদ সম্বন্ধে যে বিচার উপস্থিত হইরাছে, তংসম্বন্ধে ঘোষাল মহাশর এক পত্র লিথিয়াছেন, স্থানাভাব বশতঃ তাঁহার সমগ্র পত্র মুদ্রিত হইতে পারিল না, নিম্ন লিথিত উদ্ধৃত অংশ হইতে তাঁহার মনোভাব আনিতে পারা যাইবে।

''সাধনের হইটি দিক আছে, একটা লক্ষ্য এবং আর একটা উপায়। জ্ঞানে প্রেমে উন্নত হইরা ভগবানকে লাভ করা মান-বের লক্ষ্য, এই লক্ষ্য সাধন করিতে হইলে সাধন ভজন, সাধু-সংসর্গ লাভ প্রভৃতি উপায় অবলম্বন করিতে হয়। ভগবানের মধ্যেও এই লক্ষ্য এবং উপায়ের অপুর্ব্ব সামঞ্জ্য দেখা বায়;—পরমাত্মার লক্ষ্য এই যে স্বীয় সাদৃশ্রে গঠিত জীবাত্মার সহবাসে অনস্ত কাল বাস করা। হংসিনী যেমন আপন শাবকদিগকে পকপ্টে রাখিয়া আনক্ষে বিভার হইরা থাকে, মহান পরমেশ্বর সেইরূপ

কোটা কোটা সন্তানকে বজে করিরা অনন্তকাল হইতে অইলেশে মগ্ন হইরা রহিরাছেন। সন্তানদিগকে লইরা ব্যা করা করা করাই তাহার লক্ষ্য, এই লক্ষ্য সাধনের জন্ত চক্র স্থ্য কীরণ মন্তিত এই ব্রহ্মান্তের সৃষ্টি করিরাছেন। ইহাই উপার।

জ্ঞান, প্রেম, কার্য্য প্রভৃতি হারা আত্মার বিকাশ হয়। যে
সকল নিরম হারা উক্ত জ্ঞান, প্রেম ও কার্য্যের উন্নতি হয় তাহাই
ভগবানের উপার। লক্ষ্য এবং উপারে এই পার্থকা যে
কোনও হলে এবং কোনও ব্যক্তিই ভগবানের লক্ষ্যের ব্যাহাত
জন্মাইতে পারে না; মধুময় সহবাসের জন্ম ভগবান লীবাদ্মাকে
নিয়ত আকর্ষণ করিতেছেন, এই আকর্ষণ হইতে কেহই দ্রে
থাকিতে পারে না। আজ হউক, কাল হউক, ইহ লোকে হউক
কি পর লোকে হউক সকল মানবই এক দিন না এক দিন তাহার
অমৃতময় ক্রোড়ে বসিয়া বন্ধুছের আত্মাদ অমুভব করিবে। তবে
এই সম্বন্ধ কার্য্যে পরিণত করিবার জন্ম তিনি আমাদের সন্মুথে
যে নানাবিধ উপায় করিয়া রাথিয়াছেন আহা সকলের পক্ষে
সমভাবে থাটে না।

মহাপুরুষগণ ঈশর প্রেরিত বিধান প্রবর্ত্তক নহেন, তাঁহারা সমাজরূপ বৃক্ষের ফল স্থরূপ। একেশ্বরণাদী এবং বছল ভাববাদী (প্রফেট) পূর্ণ ইছদি সমাজ হইতে খৃষ্ট এবং তাঁহার শিব্যগণের ক্যায় ধার্মিক লোকের অভ্যাদয় সম্ভব; সেইরূপ পবিত্র ধর্মাভাব লইয়া কতকগুলি লোক অট্রেলিয়ানদিগের মধ্য হইতে বাহির হওয়া সম্পূর্ণ অসম্ভব। যে সমাজ যত উন্ধৃতির দিকে অগ্রসর হইয়াছে, সে সমাজ হইতেই সেরূপ ধার্মিক লোক উদয় হন। ইহা ভগবানের উপদেশের ফল।

ঈশা, মহম্মদ, বৌদ্ধ প্রভৃতি মহাপুরুষগণ যে সকল ধর্ম মত প্রচার করিয়াছেন, তাহাতে সত্যাসত্য হুইই আছে। অসত্য আছে বলিয়া পরস্পরের মধ্যে বিরোধ। সত্যে সত্যে বিরোধ হয় স্কা। তন্মধ্যে যাহা সত্য আছে, তাহাও বিধান নহে। ভগবানের লক্ষ্য সিদ্ধির উপায় মাত্র।

যেমন ঈশ্বর এক ছাড়া ছই নাই, তেমন ধর্মাও এক ভিন্ন ছই नारे। ब्राह्मत च्राह्म पूर्व धर्मा, ष्यपूर्व मानव त्रारे धर्मा ष्यपूर्व ভাবে সাধন করিয়া থাকে। যাহা ত্রন্ধের ধর্ম তাহাই মানবের ধর্ম,পূর্ণাপূর্ণ মাত্র প্রভেদ। ত্রন্ধের ধর্মাই ত্রান্ধর্মা বলিয়া ব্যাখ্যাত হর। ঈশ্বর অবপূর্ণজ্ঞান ও প্রেম দিয়াআপন সাদৃভো মানব স্টি করিয়াছেন। যাহা ঈশ্বরের লক্ষা তাহাই তাঁহার ধর্ম, যাহা মানবের লক্ষ্য তাহাই মানবের ধর্ম। মানবের ধর্ম **ঈশ্বরের স**হ-वारम थाका, जिन्दरतत धर्म मानरवत महवारम थाका। भूर्व जिन्दत জ্ঞান এবং আশ্রয়দাতা রূপে থাকিয়া অপূর্ণ মানবকে ধর্ম সাধন করাইতেছেন। উপরে যাহা বলা হইয়াছে তাহাতে সংক্ষেপে এই বলা হইয়াছে ;—লক্ষ্য নিত্য স্থায়ী, উপায় পরীবর্ত্তনশীল। যাহা ভগবানের লক্ষ্য তাহাই তাঁহার ধর্ম। মানবেরও যাহা লক্ষ্য তাহা ধর্ম। ভগবান এবং মানবের ধর্ম এক। পূর্ণ এবং অপূর্ণ এই মাত্র পার্থকা। ধাহা ধর্ম তাহাই বিধান। তিনি ষথন একমেবাদ্বিতীয়ং স্থতরাং জাঁহার ধর্ম্মও এক এবং বিধি এক। পরিবর্ত্তনশীল উপায় বিধি নহে।

<u> বাৰস্থাক</u>

ভাদেয়াসের তত্ত্ববোধনী হইতে নিশ্লালিতিত সংবাদ উদ্ধৃত করা যাইতেছে— "দানিলাভার নোন সম্ভান্ত রাজপরিবার পবিত্র প্রাশ্লধর্মে নীক্ষিত হইরাছেন। রাজানিঃসন্তান। দত্তকপ্রহণ করা তাঁহার ইচ্ছা। কিছ চিরাগত প্রথাস্থসারের বহু দেবতার পূলা ও হোমাদি করিয়া দত্তকপ্রহণে তাঁহার সম্পূর্ণ অনিচ্ছা। এই লক্ত তিনি শ্রীমৎ প্রধান আচার্যা মহাশরকে একটা দত্তকপ্রহণের পদ্ধতি প্রত্তত করিয়া দিবার লক্ত অন্থরোধ করেন। প্রধান আচার্য্য মহাশর এই উপলক্ষে যেরূপ পদ্ধতি সঙ্কলন করিয়া উক্ত রাজাকে প্রেরণ করেন এক্সলে তাহাই মৃত্রিত হইল।

দত্তক গ্ৰহণ পদ্ধতি।

অমুষ্ঠাতা পূর্বাদিনে সংযত থাকিয়া পর দিনে ব্রন্ধোপাসনা পূর্বাক কর্মারম্ভ করিয়া স্বস্তিবাচন করিবেন।

ওঁ কর্ত্তব্যেহন্দিন পুত্রপ্রতিগ্রহকর্মণি ওঁ পুণ্যাহং ভবস্তো ব্রুবস্ক ।

আচার্য্য প্রতিবচনে কহিবেন।

उँ भूगाहः भूगाहः भूगाहः।

পরে অমুচাতা কহিবেন।

ওঁ কর্ত্তব্যেহশ্মিন পুত্রপ্রতিগ্রহকর্মণি ঋদিং স্বস্তিঞ্চ ভবস্তো ক্রবস্ত ।

আচার্য্য প্রতিবচনে ঋদ্যতাং বলিয়া পরে কহিবেন "স্বস্তি স্বস্তি স্বস্তি।"

অনস্তর অফুঠাতা কৃতাঞ্চলি হইরা অগ্রে এই মন্ত্র দারা ব্রহ্মের সান্নিধ্য অস্কৃত্তব করিবেন।

ওঁ তথিকোঃ পরমং পদং সদা পশুত্তি ক্রের: দিবীব চক্ষুরাততম্।

ठक् रायम आकारम विख्ठ शमार्थ मकन मर्न न करत, सहै कथ धीरतता विछ्त भतम शमरक मर्समा मर्गन कतिया शास्त्रन।

পরে এন্ধকে প্রণাম করিয়া সংশ্বর করিবেন।

ওঁ তৎসং অন্য অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক তিথো অমুক গোত্র: শ্রীঅমুকঃ অপ্রজাত্মযুক্ত পৈতৃকল্পণাপাকরণার্থং শ্রীপরমেশ্বরপ্রীত্যর্থং আত্মবংশ রক্ষার্থং চ পুত্রপ্রতিগ্রহমহং করিষ্যে।

পরে এই স্কুল পাঠ করিবেন।

বজ্জাগ্রতোহন্রমূদেতি দৈবং তত্ত্ স্থপ্ত তথৈবেতাদ্রং গমং জ্যোতিষাং জ্যোতিরেকং তথ্যে মনঃ শিবসকলমন্ত্র।

যেহেতু ব্রহ্ম জাগ্রত লোকের অদ্রে আছেন এবং স্বয়প্ত লোকের অদ্রে আছেন। তিনি জ্যোতির জ্যোতি এবং একমাত্র অতএব আমার মনের সম্বন্ধ শুভ হউক।

পরে কহিবেন।

সক্ষিতার্থা: সিদ্ধা: সন্ত। অনুমান্তত্তঃ গুড়ার ভবতু। অনস্তর অহুষ্ঠাতা আচার্য্যকে বরণ ক্ষিবেন। ওঁ সাধু ভবানান্তাং। जाहांचा करिएकम ।

७ नाथक्षांटन ।

পরে অহুঠাতা কৃহিবেন।

क्ष कित्रवादमा कवतः।

काठायां कहिर्यम।

ख कर्रम ।

অনন্তর অস্ঠাতা বল্লালভারাদি খারা আচার্যাকে অর্চনা করিরা তাঁহার দক্ষিণ আছু গ্রহণ পূর্বক কহিবেন।

ওঁ তৎসৎ আদা অমুকে মাসি অমুকে পকে অমুক তিথে। মংসঙ্গিতপুত্ৰপ্ৰতিগ্ৰহকৰ্মণি আচাৰ্য্যকৰ্মকরণায় অমুক গোত্ৰাং অমুকং ভৰম্ভমহং বৃণে।

আচার্য্য কহিবেন।

ওঁ বুতোশি।

পরে অমুষ্ঠাতা কহিবেন।

यथाळानः जाहार्याकर्ण क्रा

আচার্য্য কহিবেন।

ওঁ যথাক্তানং করবাণি।

অনন্তর অনুষ্ঠাতা বা পুত্রগৃহীতা পুত্রদাতার সমক্ষে গিয়া এই বিনয়া পুত্র ভিক্ষা করিবেন।

७ श्रृकः स्म सिर्हि।

আমাকে পুত্র দেও।

পরে প্রদাতা ওঁ তবিফো: পরমং পদং দুসদা পশুন্তি স্বরঃ
দিবীব চকুরাততম্।

এই মন্ত ছারা দ্রহ্মকে প্রমাণ করিয়া স্বস্তিবাচন করিবেন।

उँ कर्तताश्चिन शृक्षमानकर्षां भूगाहः जनस्वाक्रवस ।

প্রতিবচনে আচার্য্য কহিবেন।

उँ भूगारः भूगारः भूगारः।

পরে পুত্রদাতা কহিবেন।

ওঁ কর্তব্যেহিদান পুত্রদানকর্মণি ওঁ ঋদিং স্বস্তিঞ্চ ভবস্তো ক্রবস্তু।

প্রতিবচনে আচার্য্য শ্লদ্ধাতাং বলিয়া কহিবেন।

যতি যতি ছতি।

অনন্তর পুত্রদাতা সম্বর করিবেন।

ওঁ তংসং অদ্য অমৃকে মাসি, অমৃকে পক্ষে অমৃক তিথী অমৃক গোত্তঃ শ্রীঅমৃকঃ শ্রীপরমেশরপ্রীত্যর্থং পুশ্রদানকর্মাহং করিয়ে।

এইরূপ সম্বন্ধ করিয়া স্থক্ত পাঠ করিবেন।

বংজাগ্রভোহনুরমুদেতি দৈবং তত্ত্বপ্রস্য তথৈবেত্যদূরং গমং জ্যোতিবাং জ্যোতিরেকং তথ্যে মনঃ শিবসঙ্করমন্ত।

পরে কহিবেন।

সম্বিতার্থা: সিদ্ধা: সম্ভ। অন্নয়ারস্ত: শুভার ভবতু।
অনস্তর, যোদেবোহয়ে যোহপৃত্র যোবিশ্বং ভূবনমাবিবেশ
বিত্তবধীরু যো বনস্পতিরু তবৈদ্ধ দেবার নমোনম:।

এই मन्न बाता जन्मत्क धार्गाम कतियां शृज्यनाम कतिरवक।

ওঁ তংসং অল্য অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক তিথো
অমুকগোত্র: শ্রীসমুক: ইমং পুলা তব গৈতৃক্ধণাপাকরণার্থা

বংশরকালিছার্বং আত্মরক প্রবেশর গ্রীভার্বং অমৃক গোরার অমৃক প্রবহার শ্রীভার্কার জুভ্যমহৎ সভাবনে।

এই বলিয়া বালককৈ পরিভ্যাগ পূর্বক কহিবেন।

মম প্রতিগৃহাতু পূজ্ঞা ভবীন।

আপনি আমার পুত্রকে প্রতিপ্রহ করন। পরে প্রদাতা স্বর্ণ দইরা কহিবেন।

ওঁ তৎসৎ অদ্য অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক তিথোঁ অমুক গোত্র: জীঅমুক: জীপরমেশ্বর প্রীতিকামনর। বাচতে প্রদান সাক্ষতার্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনং (তব্ল্যং বা) অমুক গোত্রার অমুক প্রবরার জী শ্রুকার তুত্তামতং সম্প্রাদদে।

এই বলিয়া প্ত্রগৃহীতার হন্তে দক্ষিণা দিবেন।

পরে পুঞাগৃহীত। স্বন্ধি বলিয়া দক্ষিণা গ্রহণ করিবেন।

অনস্কর দাতা বালককে গৃহাতার হস্তে দিবেন।

গৃহীতা স্বন্ধি বলিয়া বালককে গ্রহণ করিবেন।

অনন্তর গৃহীতা বালককে উভর হস্তে গ্রহণ পূর্বক আপনার ক্রোড়ে বসাইয়া কহিবেন।

ওঁ অলাদলাৎ সম্ভবসি হৃদয়াদধি জারসে আত্মাবৈ পুত্র-নামাসি সন্ধীব শরদঃ শতং।

ভূমি অৰ্থাত্যৰ হইতে জ্মিতেছ, হৃদয় হইতে জ্মিতেছ, ভূমি পুত্ৰ নামক আন্ধা, শত বংসর জীবিত থাক।

এই মন্ত্র পাঠ করিরা বালকের মস্তকাদ্রাণ করিবে।

ছির ভূলোক মাদধামি। ওঁ ভূবন্থরি দধামি। স্বর্লোক-মাদধামি। ওঁ ভূভূবিং স্বন্ধরিদধামি। ওঁ ভূভূবিং স্বরেতলো-ক্তরোপলক্ষিতমেতদাশ্রিতং সর্বাং প্রমেরজাতং ছির দধামি। ছমনেন ত্রৈলোকাগতপ্রমের জাতাধানকর্মণা মেধাযুক্তো ভব।

তোমাতে ভূর্নোক আধান করিতেছি। তোমাতে ভ্রনোক আধান করিতেছি। বর্নোক তোমাতে আধান করিতেছি। ভূভূর্ব ও বর ওই ত্রিলোকোপলক্ষিত এতদান্তিত সমস্ত প্রমিত বন্ধর আধান করিতেছি। ভূমি এই ত্রিলোকগত প্রমিত বন্ধর আধান করিতেছি। ভূমি এই ত্রিলোকগত প্রমিত বন্ধর আধান কর্ম ছারা মেধাযুক্ত হও।

ওঁ অস্থাভব পরগুর্ভব হিরণামশ্রতং ভব আত্মা বৈ পুত্র নামাসি সঞ্জীব শরদঃ শতং।

তুমি প্রস্তরের ক্সার কঠিনদেহ হও, পরগুর স্থার কঠিনদেহ হয় এবং স্থবর্ণের স্থার অক্ষয় হও। তুমি পুত্র নামক আত্মা। শত বংসর জীবিত থাক।

এই বলিয়া বালককে আশীর্কাদ করিবে। আশীর্কাদ করি-বার পর কছিবে।

ওঁ ধর্মার তা পরিগৃহামি ওঁ সস্তানার তা পরিগৃহামি।

অামি ধর্মের নিমিত্ত তোমাকে পরিগ্রহ করিতেছি। সন্তা-

নের নিমিন্ত তোমাকে পরিগ্রহ করিতেছি।

ওঁ বস্তাণি পরিধৎস্ব।

তুমি বন্ধ পরিধান কর।

এই মন্ত্র পাঠ করিয়া বালককে বস্ত্র পরিধান করাইয়া মন্তকে উষ্ণীয় দিয়া কুরুমাদি ছারা তিলক করিয়া দিবে।

उँ विज्ञगुज्जभगवत्म क्यूभ्यः।

শোভার নিমিত্ত স্বর্ণকৃত্তল ধারণ কর।

এই মত্র পাঠ করিয়া বালককে কুঞ্জল পরাইকার্ত্রিবে। পরে, তাহার মন্তকে ছত্র ধারণ পূর্বক ক্রোহড় গইরা মৃতক্ষিত কাল্যানি লারা মহোৎসব করিবে। পরে আপনার দক্ষিণ নিয়া বালককে পত্নীর ক্রোড়ে রাখিয়া স্বয়ং উপবেশম ক্রিবে।

অনস্তর আচার্য্য চন্দন গইয়া এই মন্ত্র পাঠ করিবেন। ওঁ কল্পপন্থ ত্যায়ুবং।

কন্তপের যে তিন আয়ু অর্থাৎ বাল্য বৌবন জরা তাহা তোমার হউক।

এই विनया वानरकत ननार्छ हमारात्र स्काँका निस्त ।

उँ यत्कवांनार कााग्र्यर।

দেবতাদিগের যে তিন আয়ু অর্থাৎ বাল্য বৌবন জরা ভাহা তোমার হউক।

এই বলিয়া বালকের কঠে চন্দনের কোঁটা দিবে।

ওঁ তত্তে অন্ত ত্রায়ুবং।

সেই আয়ু তোমার হউক। এই বলিরা হৃদরে চন্দনের কোঁটা দিবে।

ওঁ তত্তে অন্ত ত্রায়ুবং।

সেই আয়ু তোমার হউক, এই বলিরা ছুই বাছতে চন্দনের ফোঁটা দিবে।

व्यनस्त व्यक्षे जा वार्गार्यात्क मिक्ना मिर्टा ।

ওঁ তংসং অদ্য অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক তিথোঁ মংসঙ্কন্নিতপুত্ৰপ্ৰতিগ্ৰহাঙ্গ আচাৰ্য্যকৰ্মপ্ৰতিষ্ঠাপনাৰ্থং ইমাং সবস্তাং ধেহং স্থৰণং (তন্ত্ৰাং বা) অম্ক গোত্ৰায় শ্ৰীঅমুকায় আচাৰ্য্যায় তৃভ্যমহং সম্প্ৰদদে।

পূর্ব্বাক্ত বিবরণটা পাঠ করিয়া অনেক ব্রাক্ষই বোধ হয়
মনে মনে প্রান্ন করিবেন ব্রাক্ষধর্ম মতে আবার দত্তক কি ?
অনেকে হয়ত বলিবেন, জগদীখর যাহাকে ধন সম্পদ দিয়াছেন,
কিন্তু সন্তান দেন নাই, ব্রাক্ষধর্মের ভাব যদি তাঁহার অন্তরে
প্রবিষ্ট হইয়া থাকে, তবে তিনি কেন সেই সব সম্পত্তি ভাল
কান্তে দিয়া মাউন না। ধন অর্জন করিয়া উড়াইবার জন্ত একটা লোক রাথিয়া যাওয়া প্রচীন কালের একটা কুসংস্কার।
হিন্দ্ধর্মে প্রান্ধ করিবার লোক না থাকিলে পিতৃপুরুষের হুর্গতি
হয়,ব্রাক্ষেরাত তাহা বিশ্বাস করেন না, তবে তাঁহাদের দত্তক গ্রহ-ণের অভিপ্রায় কি ? বিশেষ প্রাচীন কালের লোক বিশ্বাস
করিতেন যে পুত্র, কত্যা, পিতা, মাতার সম্পত্তি; স্কতরাং
তাহাদিগকে দান করিবার অধিকার পিতা মাতার আছে।
ব্রাক্ষধর্ম সেরপ বিশ্বাস করেন না, স্কতরাং এপ্রকার দান ব্রান্ধধর্মের ব্যবহা সন্ত নহে। ইহা একটা আলোচনীয় বিষয়
ভবিহাতে এসম্বন্ধে আমাদের কিছু বলিবার অভিপ্রায় রহিল।

প্রচার—বরিশাল ব্রাক্ষসমাজের প্রচারক বাবু মনোরঞ্জন ্ব গুহ ১ সপ্তাহ কাল নলহাটীতে অবস্থিতি করিয়া নিম্নলিখিত রূপে কার্য্য করিয়াছেন।

হে প্রাবণ শনিবার সন্ধার পর সন্ধীত সন্ধীর্তন ও উপাসনা হয়। উপাসনাত্তে পরকাল সম্বন্ধে আলোচনা হয়। তিনি পুন-র্জন্ম মতের বিষম ভূল অতি স্পষ্ট ভাবে বুঝাইয়া দেন। ৬ই প্রাবণ-রবিবার অপরাকে নগহানীর নিকটবর্তী পাহাড়ে মনোরঞ্জন বাব্র চজুই সন্তান (প্রথমা কন্তার) নামকরণ হয়। হানীর বান্ধ, বানিকা, বানক বালিকাগণ পাহাড়ে সমিলিত হইয়াছিলেন। মনোরঞ্জন বাব্ উপাসনা করেন—বালিকার নাম "প্রেমলতা" রাথা হইয়াছে। ৭ই প্রাবণ—সোমবার বৈকালে হানীর ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদকের গৃহে ব্রাহ্মধর্ম ও ব্রাহ্মসমাজ সহরে আলোচনা হয়। আলোচনার অনেকে বোগ দিয়াছিলেন। ৮ই প্রাবণ—মললবার সন্ধার পর হানীর স্থল গৃহে "ব্রহ্ম পূজা" সহরে বক্তৃতা হয়। প্রথমে "ধর্মের আব্দ্রতা ও উপাসনার আবশ্রকতা এবং পরে নিরাকার ভিন্ন সাকারের ধ্যান ধারণা হইতেই পারে না"—এই বিষয় অতি সরল যুক্তি সমূহ হারা ব্রাহ্মাদেন। বক্তৃতাটী বড়ই মধুর ও হ্লমগ্রাহী হইয়াছিল। ১ই প্রাবণ ব্ধবার সন্ধ্যার পর ব্রাহ্মমাজে উপাসনা ও উপদেশ দেন। ১০ই প্রাবণ বৃহস্পতিবার বৈকালে ধর্ম বিবরে আলোচনাদি হয়।

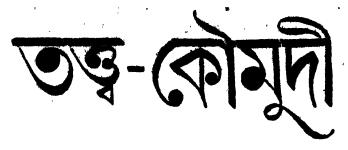
এতত্তির একটা ব্রান্ধ পরিবারে প্রতিদিন প্রাতে পারিবারিক উপাসনা ও কীর্ত্তনাদি করেন।

अ९वाम।

শোক সংবাদ—বেহারত্ব প্রজেয়বদু বাবু ব্রহ্মদেব নারা-য়ণ বিশেষ পরীক্ষার পড়িয়াছেন এবং ঈশবের কুপায় দিন দিন অগ্রসর হইরাছেন। গত ৩২ এ আষাচ তাঁহার সহধর্মিণী পর-লোকে গমন করিয়াছেন। তিনি ২৪ দিনের একটা শিশুসম্ভান রাথিয়া গিয়াছেন। ত্রহ্মদেব বাবু এই শোকের মধ্যে গৃহে এবং সমাজ কর্তৃক নানারপ অত্যাচার প্রাপ্ত হইরাছেন। যখন তিনি আপন বিশ্বাসাম্পারে পরলোকগতা ল্রীর শ্রাদ্ধ করিতে প্রস্তুত হন তথন শুধু যে গৃহের লোকেই বিরোধী হইয়াছিলেন, এমন নহে প্রতিবাসীগণও খুব বিরুদ্ধাচরণ করিয়াছিলেন। এমন কি শ্রাদ্ধকার্য্য সম্পন্নের জন্ত পুলিষ পর্যান্ত আনিতে হইয়াছিল ! কিন্তু দ্যাময়ের কুপায় তিনি বিশ্বাসামুসারে কার্য্য করিতে সক্ষম হইয়াছেন, বিশ্বাদের জয় ! মাসুব যাহা সভ্য ৰণিয়া বুঝে যদি সে অনুসারে চলিতে না পারে তবে একেবারে অসারও অপদার্থ হইয়া যায়। ঈশ্বর এ দেশের লোকদিগকে সাহস দিন. বেন তাঁহারা বিশ্বাসামূসারে কার্য্য করিতে সক্ষম হন। দরাময় আমাদের বন্ধুকে শোকের সময় সান্ত্রনা এবং উচ্ছেল বিশ্বাস প্রদান করুন এবং ইহার পরলোকগতাসহধর্মিণীকে শস্তি দান করুন।

নামকরণ—গত ২রা ভাত্ত শনিবার কলিকাতাত্ব শ্রীযুক্ত বারু বিপিনচন্দ্র পাল মহাশয়ের কনিষ্ঠ পুক্তের নামকরণ হইরা গিরাছে। বালকের নাম শ্রীমান্ নিরঞ্জন পাল রাধা হইরাছে। বিপিন বারু উপাসনা ও আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন।

গত ৫ই ভাত্ত মকলবার—হরিনাভি নিবাসী শ্রীষ্ক বার শ্রীশচন্দ্র রারমহাশরের ১ম পুত্রের নামকরণ কলিকাভা নগরে সম্পন্ন হইরাছে। বালকের নাম শ্রীমান অমিরকুমার রার রাথা হইরাছে। পণ্ডিত নিবনাথ শান্তী মহাশন্ন উপাসনার আচার্যের কার্য্য সম্পন্ন করেন। শ্রীশবার্ এই উপলক্ষে সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ পাঁচ টাকা প্রদান করিরাছেন।



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ভাগ। ১১শ সংখ্যা।

১লা আখিন সোমবার, ১৮১<mark>১ শক, ত্রাক্স সম্বৎ</mark> ৬০

বাংসরিক অগ্রিম মূল্য স্ক মফস্বলে ৩ প্রতি থাঞ্জের মূল্য প্র

गाडीएक खका-शृका।

প্রভূ হে! মস্তিকে বদ ; কলনা, কামনা স্থৃতি চিস্তা আদি রুদ্দি সাবে মিলাইয়া তান লয়ে করুক বন্দনা, জয় জন্ম বন্ধা জয় ববে।

নেত্রেতে স্বাসন পাত; তোমারি স্বালোকে বিশ্ব-শোভা দেখুক নয়ন; দেখুক ভোমার লীলা, চালোকে ভূলোকে, তুব শুণ করক কীওন।

শতি সিংহাসনে বস ; অভদ শ্রেণ ঘতে যাক্ তাহার কামনা ; *
সাধু সলে সং প্রসঙ্গে স্থা আস্বাদনে
করক সে তোমার বন্দনা।

বসনা আসনে বস ; অভদ্র বচনে
পা'ক লক্ষা; সতে হোক্ মতি :
বক্ষের নিনাদ পা'ক সত্যের ঘোষণে ,
গা'ক ভয়, জয় বিশ্ব পতি।

বাচ্যুগে অধিষ্ঠান কর ধর্মরাজ : পাপ-পক্তে নাহি যেন মজে ; ভাহার ভূষণ হোক প্রভু তব কাজ, মাথুক সে তব পদ-রজে।

জঠরে আসন পাত ;— চিত্তের বিকাব জন্মে বাহে, ঘুচুক সে কচি ; ফিল শভে তব কপা করুক প্রচার, হয়ে থাক অস্তরেতে শুচি।

স্পার্শন্তিয়ে বস ভূমি; পাপ আয়াদন ভূলে যাক্ তোমারি ক্লপায়; পাইয়ে পবিত্র প্রেম, অপূর্দ্ধ মিলন, প্রেমদাতা পৃত্তুক তোমার! চ্রণযুগলে বস; পাপ-পণ ভূলে ।
যাক্ তারা জনম-মতন;
বছক সাম্বনা, স্থুখ, দীন ছংখী কুলে;
তব নাম কম্বক বছন।

मन्भानकीय मखतु ।

তুর্বানতা ভিতর হইতেই আসে—গতবারে আমরা বলিয়াছি মুর্বলতা ভিতর হইতেই আদে। এবাবে দে नहरम् बात्र किছू वनिए देखा इटेटकर । मिहनीशन महाग्रा ন্ধীশাকে ধৃত করিয়া রোমীয় বিচারপতি পাইলেটের সমীপে যথন্ উপস্থিত করিল, তথন পাইলেট বিপদে পড়িলেন। তিনি দেখিলেন মৃত্যু দণ্ড করিতে পারা যায় এরূপ কোন অপবাধ তিনি করেন নাই; মণচ য়ীছদিগণ কিপ্ত প্রায়, তাহাদেব মনোমত কাজ না করিলে তাহারা বিদ্রোহী হইতে পাবে। অব-শেষে আর কিছু উপায় না দেথিয়া সমাগত রীহদীদিগকে বলে লেন আজ তোমাদের উৎসবের দিন। আজ একজন কয়েদীকে কারামুক্ত করিবার নিয়ন আছে; তদমুসারে এই ব্যক্তিকে ছাড়িবা **(म अया याक्ना (कन ? ब्रिट्नीश**ण এकवारका **ठी**श्कात करिया বলিতে লাগিল—না—ন:—"ঐ ব্যক্তিকে হত্যা কর ররং বাব:-বাসকে (এক জন চোর) আমাদের জন্ম ছাড়িয়া দেও!" এমনি ধর্মান্ধতা ৷ তাহারা ঈশার জীবন অপেক্ষা একটা চোরের জীবন মূল্যবান জ্ঞান করিল !!! জগতে এরূপ ব্যাপার বাব বাব ঘট রাছে। সাধুদিগকে অসাধুর শান্তি পাইয়া নিধন প্রাপ্ত ইইতে হইয়াছে। কিন্তু তাঁহাদের ভিতরে যে বন্ধ ছিল, তাহ।কেহ কথন গোপন করিতে পারে নাই। চন্দনকে পাষাণ-শিলাতে षिरात । प्राप्त । जाहात । जोत्र । वाहित हत्र, जाहारनत कीरांनति সৌরভও ফুটিয়া বাহির হইয়াছে। এতদ্বারা এই উপদেশ পাই, ভিতরে যদি বন্ধ থাকে, লোকের কুসংস্কার, বা বিশ্বেষে তাহাকে চাপা দিয়া রাখিছে পারে না। আজু না ছোক ছ দিন পুরে তাহার প্রভাব বিস্তার হইবেই হইবে। নিখাস কর, সতা ও সাধুতার জরবিধাতা করং ঈশর। মানবের প্রতিযোগিত্য

যদি নিরাশ হই, তাহাতে এই প্রেরাণ হর আমর। ঐশী শক্তি
অপেকা মানিব শক্তিকে বড় মনে করি। আক্ষ সমাজের কুৎসা বদি
কেহ করে ছুটিরা লাঠি লইরা রাতার ঘাইও না; সত্য ও সাধুতাকে আরও দৃঢ় ভাবে আশ্রর কর, কুৎসাকারীর রস্মা করিন
থাকিবে ? সত্যের শক্তি অকর।

ব্রাক্স স্মিতি—অনেকের হর্প থাকিতে পারে স্থাশ-मान करा शास्त्र विश्व अधित्यम काल अनाहावाम नगरत रा সকল ব্রাহ্ম বন্ধু উপনীত হইয়াছিলেন, তাঁহারা এক দিন সকলে একত্র হইয়া এক সভা করেন; তাহাতে এই স্থির হয় যে প্রতি বর্ষে কংগ্রেস সভার অধিবেশন কালে, এইরূপ ব্রাহ্মসমিতিরও অধিবেশন হইবে। তদমুসারে করেক ব্যক্তির প্রতি আরোজন করিবার ভার দেওরা হয়। কংগ্রেদের সময় নিকট হইরা আসিতেছে। আর সময় নাই সমুদায় সমাজে এতদর্থ অহুরোধ পত্র পেরিত হইরাছে। আমরা মফ:খলের ব্রাহ্ম বন্ধুদিগকে অমুরোধ করিতেছি তাঁহারা কালবিলম্ব না করিয়া সম্বর আপনাদের সমাজের এক এক জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবার শ্লায়োজন করুন! কংগ্রেস সভা খুষ্টমাস উৎসবের ছুটীর মধ্যেই বিদিয়া থাকে স্কুতরাং আর কয়েক দিনের ছুটী লইলেই যাঁহারা কোন প্রকার কার্য্যে আবদ্ধ আছেন, তাঁহারাও যাইতে পারিবেন, আর যাঁহারা কোন প্রকার কার্য্যে আবদ্ধ নহেন ভাঁহাদের ত কথাই নাই। বোম্বাই নগরে যাতায়াতের ব্যয়টা কোথা হইতে উঠে ? ইহার ছই উপায় আছে; প্রথম, বাহারা ব্রাহ্মসমাঙ্গের প্রতিনিধি রূপে মনোনীত হইবেন, অনেক স্থলে তাঁহাদের অনেককে স্থানীর ভদ্রমণ্ডলীর প্রতিনিধি রূপেও মনোনীত করান যাইতে পারে। তাহা হইলে তাঁছাদের যাতারাতের বারের অনেক সাহায্য হইতে পারে। দ্বিতীয়, এতদর্থ স্থানীয় সমাজ চাঁদা তুলিয়া সাহায্য করিতে পারেন। আমাদের বোধ হয় এবিষয়ে একটু ভরাভর করিয়া লাগিলে একটা না একটা উপায় হইয়া ঘাইতে পারে। যাহা হউক, একবার চেষ্টা করিয়া দেখা কর্ত্তব্য। ভারতবর্ষে ব্রাক্ষের সংখ্যা ত এক মৃষ্টি। এই এক মৃষ্টি লোক আবার পরস্পর হইতে বিচ্ছিন্ন হইয়া পড়াতে ব্রাহ্মসমাজের শক্তি অতি হর্কল ভাবাপর রহিরাছে। একতার দিকে যত গতি হয় ততই প্রার্থনীয়। বিশেষতঃ বঙ্গদেশের ব্রাক্ষ-গণ ভারতবর্ষের অপরাপর স্থানের ব্রাহ্মগণ হইতে এক প্রেকার `বিচ্ছিন্ন ভাবে রহিয়াছেন—এই বিভিন্ন ভাব দূর না করিলে, এ দেশে ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার হওয়া সহজ নহে।

একতাতেই দৃঢ়ত;—এই একটা উপদেশ অতি প্রাচীন কাল হইতে আমরা পাইয়া আসিতেছি। গ্রাস দেশীয় দাস পণ্ডিত দ্বীশপের সময় হইতে একটা গল চলিয়া আসিতেছে। এক ক্বৰক মৃত্যুকালে জাঁহার পাঁচ প্রকে নিকটে ডাকিয়া বলিলেন তোমরা পাঁচটা কাটি লইয়া এস। কাটি আনা হইলে এক এক জনের হাতে এক একটা দিয়া বলিলেন ভাঙ্গ। এক একজন অক্লেশে এক একটা কাটি ভাঙ্গিয়া কেলিল। আবার বলিলেন আর পাঁচটা কাটি আন। আবার আনা হইল, সেবার পাঁচটাকে

একত করিয়া বাধিয়া প্রত্যেককে ভালিতে আহেশ করিবেন। क्टिहे शांतिल मा। उथम विलियम अन्नत्भ भीक्र **कार्य** अक मन्द থাকিলে কেই ভানিতে পারিবে না। हेश करमक क्रिय শুনিরাছি। কেন মনে রাধিতে পারিতেছি না? আমাদিগের मिनिज इहेवांत्र भर्थ (क वांधा निष्ठ ह । ध विवदन्न धकछ। विषय ठिखा कतिवात चाहि। এकक्रम माष्ट्रदत इमिक त्रथा যার। চাই তার দোব ভাগের প্রতি দৃষ্টি কর; চাই ভার গুণভাগের প্রতি দৃষ্টি কর। তবে এই ছই প্রকার দেখাতে किकि९ প্রভেদ আছে। দোবভাগ যদি কেবল দেখ-দেখিবার তোমার অধিকার আছে—তবে স্থণারই উদর হইবে। অপ্রেম জন্মিৰে; বিষেষ বৃদ্ধি আসিবে। আবার যদি গুণভাগের প্রতি দৃষ্টি কর কোমল ভাব জন্মিৰে; ক্ষেহ আদিবে; ভক্তি শ্রহা বাড়িবে; এবং তাহাতে তোমার ও তাহার উভরের কল্যাণ इंहेरत। दियम माञ्चरतत्र त्नाय खन छ्हे त्नवा याहेरज भारत, সেইরূপ অপরের সহিত আমাদের যে সম্বন্ধ তাহারও ছই দিক আছে। প্রথম, বিচ্ছেদের দিক, দিতীর মিলনের দিক। তুমি যদি ইচ্ছা কর তাহা হইলে স্মার এক জনের সহিত তোমার কোন কোন বিষয়ে গরমিল আছে, তাহাই খুঁড়িয়া বাহির করিরা তাহারই ধ্যান করিতে পার; আবার ইচ্ছা করিলে গর-মিল্টা ফাঁপাইরা ফুলাইরা না তুলিরা মিল্টার দিকে দৃষ্টি করিতে পার। এইরূপ গুই প্রকার দেখাতে কিঞ্চিৎ প্রভেদ আছে। क्वन গ्रमिन थुँ किया विज्ञा क्षत्र पृत्त थाकिए हेस्ला क्रित्, निकटि मांड्रिट हाहित्व ना, शतमित्वत विषय खना वड़ खक-তর বোধ হইবে, বাধা দিতে ও প্রতিবাদ করিতে প্রবৃত্তি বাভিবে। আবার মিলের যে বিষয় গুলি আছে, সে দিকে অধিক দেখ, মনে কোমল ভাব আসিবে, একতা বসিতে ইচ্ছা হইবে, এক সঙ্গে কাজ করিবার প্রবৃত্তি বর্দ্ধিত হইবে। আমা-**म्ति अब इत्र बाम्मिम्लित मिल ज्यालका शत्रमिलात मिरक ज्य**िक দৃষ্টিপাত করারূপ রোগে ধরিয়াছে, তাই তাঁহারা ভাল করিয়। মিলিতে পারিতেছেন না।

স্বাধীনত। ও সাধুভক্তি—এই উভরে বখন একতে বাস করে তথন উংকৃত্ত ফল প্রস্তুত্ত হয়। একজন নিজের মত ও বিখাস অন্থসারে চলিতে ও বলিতে সাহনী, অথচ প্রজের ব্যক্তিনের নিকট তাহার মন্তক বিনরে অবনত এ ছবি অতি স্থলর। স্থান সমরের অধিনারক জেনেরল গর্জনের বিষরে এরূপ কথিত আছে, যে যুদ্দকেত্রে তাহার এত সাহস ছিল, যে লোকে যেমন ছড়ি হাতে করিয়া প্রাতঃসঞ্চরণে বাহির হয় সেইরূপ তিনি ছড়ি হাতে করিয়া প্রাতঃসঞ্চরণে বাহির হয় সেইরূপ তিনি ছড়ি হাতে করিয়া প্রাতঃসঞ্চরণে বাহির হয় সেইরূপ তিনি ছড়ি হাতে করিয়া প্রনেক সময় যুদ্ধকত্বে বাইতেন এবং সময়ক্তেরে ব্যক্ততা, রক্তপাত, কামানের গর্জনের মধ্যে অবিচলিত থাকিয়া কর্ত্তব্য কার্য্যের আলেশ করিতেন। একদিকে বাহার এতদ্র মানসিক বল, আর একদিকে তাহার এতদ্র বিনম্ন ছিল যে, তিনি মুখ ফুটিয়া কাহাকেও একটা ধর্মের কথা বলিতে পারিতেন না। এমন কি ধর্ম্ম বিষয়ে ক্রে ক্রে স্থাকা সকল বিতরণ করিতে ভাল বাসিতেন, তাহাও কাহারও হাতে দিতে পারিতেন না। বাড়ী হইতে বাহির হইবার সময় প্রকেটে

করিনা কতক গুলি প্রক্রিকা সইনা বাহির হইটেন; পথে বাইতে বাইতে বথন কেবিতেন নিকটে কেছ নাই আননি এমন স্থানে প্রিকা কেনিরা বাইতেন, বেথানে কেনিলে লোকের চফে পড়িতে পারে। এ সাহসের পার্বে এই বিনর কেনন ফ্লর দেখার। বেখানে স্বাধীনতা-প্রিয়তার সহিত সাধুতকি নাই তাহা ঔষত্য ও স্বেছাচারে পরিণত হয়; আবার বেথানে সাধু তক্তির সহিত স্বাধীন চিন্তা নাই, তাহা কুসংস্কারে ও ভ্রমান্ধতার পরিণত হয়। এই উভরের স্থিতন কি প্রকারে হইতে পারে ?

উন্নতির মূলমন্ত্র।—স্বামেরিকার ইউনাইটেড্ প্রেটের ভতপুর্ব্ব অধিনায়ক এত্রাহাম গিঙ্কনের জীবনচরিতথানি আদ্যো-পান্ত পাঠ করিয়া রাখিয়া দিলাম; দিয়া ভ্রিচিত্তে ভাবিতে লাগিলাম লিঙ্কন ক্বকের পর্ণকুটীরে জন্মিরা আমেরিকার সর্ব-শ্রেষ্ঠ স্থান অধিকার করিলেন—ইহার ভিতরের কথা কি গ অবশ্ৰ প্ৰথম কথা প্ৰতিভা। কিন্তু অনেক প্ৰতিভাশালী ব্যক্তিও অতি হীনভাবে চিরদিন থাকিয়াছেন; লিছনের কি গুণ ছিল বদ্বিরা একগুণ প্রতিভাদশগুণ হইরা ফুটিরা উঠিল ? ইহার উত্তৰ-- শিক্ষনে ছইটী দেখিতে পাই। প্ৰথম, যথন যে কাজে হাত নিরাছেন তাহা স্থলবন্ধপে করিবার জন্ধ একটা আকাক্ষা। লিখন যে জমি চৰিয়াছেন তাহা এমনভাবে চৰিয়াছেন যাহা দেখিল দশজনে ভাকিয়া খাটাইয়াছে; একটা নৌকা গডিলেন জাগ এমন উংকৃষ্ট হইল যে, লোকে দেখিবামাত্র মাল বোঝাই দিন; বেড়াব রেল নির্মাণ করিলেন, তাছ' অতি উংক্লষ্ট। দোকানদারের ম্যানেজাব হইলেন, এমন শ্রম, এমন কর্ত্তবা-ব্যায়ণতা, এমন নিজকার্য্যে মনোযোগ দেশাইলেন যে সকলের প্রজাভান্তন হইয়া উঠিলেন। যথন যে কাজে হাত দিব তাহা है॰क्रहेकरण कतिव এই रायन काका का किन। विकोद —यथन राय मक्षाएठ थाकि, मानिमिक छैब्रजित स्विधा विकाल घाইएड निव না। প্রথম অবস্থাতে তাঁহার গ্রন্থ করিবার সাধা ছিল না াচ মাইল পথ হাঁটিয়া গ্রন্থ ধার করিয়া আনিয়া পড়িয়া কিরা-য়ে দিয়া আদিতেন। খবে পড়িয়া ইঞ্জিনিয়ারিং বিদ্যা এমন শ্থিলেন যে একজন পাকা ইঞ্জিনিরার ছইরা উঠিলেন। মাইনের প্রশ্ন সমীপে আসিল, এমন একাগ্রতার সহিত আইন ছিলেন যে একজন বিখ্যাত উকীল হইন্না উঠিলেন। যে কাৰ্য্য াতে পড়ে তাহা উৎক্লুটক্ষণে করিবার জন্ত প্রতিজ্ঞা ও সকল কার অবস্থার মধ্যে আব্যোলভির স্পৃহা। এই ছুইটা ভাঁহার ^{বিনে} দেখিতে পাওলা যায়। উত্ততি বাঁহারা চান তাঁহাদের ^{টিড়ির} এই ছইটা বাশ। যে কাল হাতে পড়িবে তাহা দারিছ ^{ানের} সহিত **স্থচারুরূপে সম্পন্ন কর। এবং** যেখানে থাক না ^{কন,} গ্রহপাঠ, আফুচিস্তাদিয়ারা মানসিক উরতিতে বিমুখ াকিও না। অনেক আজের মানসিক উন্নতির স্পৃহা নির্বাণ ^{াপ্ত দেখা} বায়। **ভাঁহারা বলেন পাঠ অনেক করিরাছি** আর ^{ঠি ক্রিব} কি ? ইহার ফল এই হয় মান্সিক শক্তির হ্রাসের त्त्र महत्र धर्मकीवरसद्र मंक्तिवं ६ द्वाम इत्र।

দাম্প্রদায়িকতার জন্ম কে:খার ও তাহার ঔবধ कि ?-- बाक्रनबारकत्र व्यानक विरेखवी वक् व्यामानिगरक विन-তেছেন আন্ধান বভ সাম্প্রদায়িক হইয়া পড়িতেছেন। হিন্দু নামকে হিন্দুসমান্তকে ভাঁহারা দ্বণা করেন: আপনাদের কুদ্র মণ্ডলীর বাহিরে যে সাধুতা বা মহত্ত আছে তাহা দেখিতে পান না ; অপরের গুণের প্রতি তাঁহারা অন্ধ। সাজ্জদারিকভা কিরণে জ্ঞান গুলানা কারণে দেশীর স্মাজের সহিত ভাষস্মাজের বিরোধ উৎপন্ন হইরাছে। সে সকল কারণের উল্লেখের প্রয়ো-জন নাই। তবে পৌত্তলিকতা/ও জাতিতেদ বর্জন ও রমণীর निका ও चारीनका नात्नत्र अवांत्र काहात्र मरशा अधान विनवः (वाध रुष्त । এই वित्तांश चनिवार्या । किन्न ब्राह्मता ठिन्नाविशैन ও মানসিক উন্নতি বিহীন থাকিলে ইহার একটা অবশুস্তাবী ফগ कनित्त । वित्रांधीशलात्र ऋषाठ পाইয় আऋ, আऋतं हे मर्था जावड इंडरवन এवং क्रांस वित्राधी निगरक विर्वेष कतिए । निश्चित्व। এक निर्क चन्द्रनात मर्था नर्यना आवक, अभागितक বাছিরের লোকের প্রতি বিদেব, এই ছুইটা একতা মিলিলে যে ফল উৎপন্ন হন্ন তাহার নাম সাম্প্রদায়িকতা। ইহার ঔষধ কি ? (১ম) অঞ্চাল্ত ধর্মসমাজের ইতিবৃত্ত ও কর্মানি শ্রদাবিত হট্যা नर्सन जालाहमा कता (२३) माना প্রকার দেশহিতকর কার্বো অপর লোকের সহিত সর্বাদা মিশিবার চেষ্টা করা (৩য়) গভীব कानात्नाहनाबाजा हिड्टक छेमात्र जाया।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

আগ্যাত্মিকতার নৈতিক ভিত্তি।

করেক বংসর পূর্ব্বে একজন বিজ্ঞ ইংরাজ এদেশে আসিয়া ছিলেন। তিনি আদ্ধানাজের বিষয়ে সংবাদ সংগ্রহ করিব। ইংলণ্ডের এক বিধ্যাত মাদিক পত্রিকাতে এক প্রবন্ধ লিখিলেন ও প্রবন্ধে আদ্ধানাজের বিষয়ে যে যে সংবাদ দিয়াছিলেন, সে সম্বন্ধে আমাদের বলিবার কিছুই নাই; তবে তিনি উপসংহারে যে একটা কথা লিখিয়াছিলেন, তাহারই উল্লেখ করিয়া কিছুবিলিবার ইক্ষা আছে।

তিনি ব্রাক্ষ্মাজের আধ্যাত্মিকতার প্রশংসা করিয়াছিলেন।
তাঁহার ঠিক কথাগুলি মনে মাই, ভাবটা এই। ইহারা আধ্যাত্মিকতা সম্বন্ধে অতি উচ্চ ও গভীর ভাব সকল প্রাপ্ত হইয়াছে,
ইহালের উক্তি সকল পাঠ করিলে বিশ্বিত ও ন্তম হইতে হয় যে
বাহারা খৃষ্টধর্মকে আশ্রন্ধ করে নাই, তাহারা এত গভীর তর্ব কিন্ধপে পাইল। কিন্তু ইহালের নৈতিক শক্তি আধ্যাত্মিকতার
অম্রন্ধ নহে। ইহালের জীবনে নৈতিক হীনতা দৃষ্ট হইতেছে।
তিনি ইংরেজী (moral inadequacy) শক্ষ ব্যবহার করিয়া
ছিলেন। ইহা বলা তাঁহার অভিপ্রান্থ ছিল না যে তিনি ব্রান্ধদিগকে নানা প্রকার নীতি-বিগর্হিত কার্বো লিপ্ত দেখিরাছিলেন।
তাঁহার এই কথা বলিবার কারণও তিনি উক্ত প্রবন্ধে প্রদর্শন
করিয়াছিলেন। তিনি বলিয়াছিলেন ইহাদের অগ্রণী ব্যক্তিগণই
ইহাদের উচ্চ আদর্শের অমুসারে চলিতে অক্ষম; সুতরাং ইহানের উচ্চ আধ্যাত্মিক আন্দ[্] ইহানিগের নিকট খাহা চার, ইহারা তাহা নিতে প্রস্তুত নতে।

ব্রাহ্মগণ এই কথা ওলির প্রতি প্রনিধান কম্বন—"ইহাদের উচ্চ আধ্যাত্মিক আদর্শ ইহাদের নিকট যে জীবন চায়, তাহা দিবার মত বৈতিক শক্তি ইহাদের নাই।" অর্থাৎ ব্রাহ্মধর্মের উচ্চ ভাবে যে উল্লুৱতা, যে নিংস্বার্থতা, যে সাহস, যে সভাছ-রাগ, যে কর্ত্তবাপ্রীয়ণতা চায়, তাহা দিবার সাধ্য এখনও বান্ধ-দিগের নাই। এ কথা কি মিথ্যা ? ইহা কি কুংসার কথা ? আমাদের ত বোধ হয় না। কেন বোধ হয় না তাহার বলিবার পূর্বে একটা দৃষ্টান্ত ছারা আমাদের কথাটা একট বিশদরূপে প্রকাশকরা আবশ্যক বোধ হইতেছে। মনে কর এক ব্যক্তি বিপত্নীক হইয়াছে, তাহার প্রকাণ্ড সংসার ছই একটা শিশু আছে, দাস দাসী আছে, গরু বাছুর আছে, অতিথি অভ্যাগত আছে। গৃহিণী অভাবে সমুদায় বিশৃত্থল। দেশীয়প্রথা অনুসারে সে ব্যক্তি একটা দাদশ বর্ষীয়া বালিকাকে বিবাহ করিয়া ত্রয়োদশ বর্ষেই তাহাকে ঘর করা করিবার জন্ম আনিল। বালিকাটি যেই সেই সংসারকেত্তে পদার্পণ করিয়াছে, অমনি তাহার স্বন্ধে সমুদায় ভার পড়িয়া গেল। এক দিকে পতিসেবা, অন্তদিকে শিশুসেবা, ও গৃহস্থালি, বালিকাটির শরীর ভাঙ্গিয়া গেল ; দিন দিন চুর্বল হইয়া পড়িতে লাগিল। ইহার উপরে কয়েক বং-সরের মধ্যেই করেকটা সন্তানের মুথ দর্শন করিতে হইল। বালিকাটী অষ্টাদশ বর্ষে পদার্পণ না করিতে করিতে মিলাইয়া গেল। এরপ ঘটনা অনেকে দেখিয়া থাকিবেন। প্রশ্ন এই বালিকাটী অকালে কালগ্রাদে পতিত হইল কেন ? উত্তর-তাহার নূতন সংসার তাহার নিকট যাহা চায়, তাহা দিবার শক্তি তাহার ছিল না। সে কি চেষ্টা ও যত্নের ক্রটি করিয়াছে ? ফুগৃছিণী হইবাৰ ইচ্ছা কি তাছার ছিল না? সম্চিত্রপে পতিদেবা ও গৃহত্থালি করিবার বাসনা কি তাহার ছিল না ? ক্রবশুই ছিল। বরং এতদূর বলাযায়, যে সে বাসনা প্রবল ছিল বলিষাই তাহার অকাল মৃত্যু ঘটনা হইল। যদি সে অলস বা অকর্মণ্য, বা স্থার্থপর, বা পতির প্রতি উদাসীন, বা গৃহকার্য্যে অমনোগোগী হটত, যদি সে আপনার শরীরটী বাচাইয়া, ঘুনাইয়া কাল কাটাইতে পারিত তাহা হইলে সে মরিত না। সংসার যুদ্ধে সে তিল তিল করিয়া মরিল; কর্ত্ত-বোৰ চরণে আপনাকে বলিদান করিল। যাহাই বলি না কেন, ভিত্রের স্তাটা এই থাকিয়া গেল—নৃতন সংসার ভাহার নিকট যাহা চাহিয়াছিল তাহা দিবার শক্তি তাহাব ছিল না।

আমাদেব বোধ হয় বান্ধদের এইরূপ দশা ঘটিয়াছে। বান্ধ
ধর্ম তাঁহাদের নিকট যাহা চাহিতেছেন তাহা দিবার শক্তি
তাহাদের নাই। তত নৈতিক বল অন্তরে নাই। অর্থাৎ এই
বান্ধদ্ম সুচারক্রপে সাধন ও প্রচার করিতে হইল যে বৈরাগা,
যে আক্ম-সংযম, যে উদারতা, যে নিংস্বার্থতা, যে সাধ্-ভক্তি,
যে জনহিতেছা, যে সাধন-তংপরতার প্রয়োজন—তাহা আমাদের নাই। আমরা বান্ধদ্ম প্রচার করিব কিরূপে, যথন
দেখিতেছি আমাদের অ্থানী ব্যক্তিগণ আমাদের আদর্শকে ঠিক
রাথিতে পারিতেছেন না। ভাগো ভক্তিভাজন নহর্ষি দেবেক্সনাথ

ও পর্য প্রভাতার্থন রাজনারারণ বহু বহাপর আজিও বাচিল आहिन, उर् देवारमञ्जितिक अनुनि निर्देश किया त्रिका इहाराज कीवरमञ्ज कानरमंत्र महिन যাইতে পারিতেছে। স্কৃত্য ব্রাক্ষের আদর্শের মিলম না ছউক এ কথাত বলিতে भाता शहराज्य व हेराता त्योवतन त्य आनर्न धतित्राहितन অদ্যাপি তাহার অনুসরণ করিতেছেন। যথন বলে—"ভোমাদের উপর নির্ভর করিব কিরপে? তোমাদের অগ্রণী ব্যক্তিরাই এক সমরে যাহা গড়িয়া ছেন পরে তাহা ভাঙ্গিয়াছেন। তোমাদের কেশবচন্দ্র এক সময়ে যাহা গড়িলেন, নিজেই তাহা ভালিলেন; তোমাদেব বিজয়কৃষ্ণ যে আদর্শের জন্ম এক সময়ে প্রাণপণ করিলেন পরে তাহা ছাড়িলেন; তোমাদের অগিছোত্রী বেই একটু বাড়িলেন অমনি পূর্বকার আদর্শত্যাগ করিয়া গেলেন; আরও অপেক কর আরও কতজন ছাড়িবে।" লোকে বধন এরপ কথা বনে তথন আমাদের উত্তর দেওয়া কঠিন হয়; এবং আমরা অয় ভব করিতে থাকি, যে ইহাই ব্রাক্ষদমাঙ্গের হ্র্মণতার একটা প্রধান কারণ। যাহাঁরা বিশ্বাসের বশবর্তী হইরা সরল সত্যায় রাগে আদর্শ হইতে বিচ্যুত হইয়াছেন, তাঁহারা সকলের এদ্বের: আমরা কোভ করিতে পারি; কিন্তু তাঁহাদের প্রতি কর্কশ শক ব্যবহার করিতে পারি না। কিন্তু তাহা বলিয়া তদ্বারা বাদ সমাজের যে ক্ষতি হইরাছে ও হইতেছে তাহা অনিবার্যা।

কেবল যে শ্রেষ্ঠ ব্যক্তিদিগের জীবনে আমাদের আদেশ বক্ষণীতি হৈছে না তাহা নহে, ব্রাক্ষসাধারণের মধ্যেও বিবেকের ত্র্বলতা দেখিয়া মনোবেদনা পাইতে হইতেছে। গুরুতর ত্র্নীতি না থাকিলেই যে আনন্দ করিতে হইতেছে। গুরুতর ত্রাক্ষরা গাঁট কাটে না; মিগ্যা সাক্ষা দের না; প্রাক্ষনা করে না; মিগ্যা কথা কহে না; ইহা বলিলে করি কোন ব্রাক্ষ সম্ভ্রষ্ট হন ইউন; আমরা তাহাতে সম্ভূষ্ট নহি। আমরা যদি দেখি ব্রাক্ষরণ স্থীয় স্থীয় বিশ্বাস অন্তুসারে করে করিতে অক্ষম, অথবা স্ত্রী পুল, আগ্রীয় বহুলন, প্রতিবেদ্দা বা স্থাদেশের প্রতি কর্ত্তব্যসাধনে বিমুখ, তাহা হইলেই মনে হা আমাদের আধ্যাত্মিক জীবন নৈতিক ভিত্তি পাইতেছে না। এই প্রকার আধ্যাত্মিকতা আছে, যাহা নীতি-নিরপেক হইরা ব্যেকরে। সে আত্ম-তৃপ্ত আধ্যাত্মিকতা ব্যাহ্মসমাজ সাধন করিকে বিনায় সংকল্প করেন নাই।

আমাদের দেশে এই আয়ুহপু আধ্যাত্মিকতার ছইটা প্র
প্রদর্শিত হইরাছে। একটা পথ জ্ঞানের, অপরটা ভার্কতার।
আয়ু-তৃপ্ত জ্ঞানের পণে থাহারা গিয়াছেন, তাঁছারা জ্ঞানার
হইরা নির্জ্ঞানে সেই জ্ঞানের তৃপ্তি ক্র্ধা সন্তোগ করিরাছেন এব
নীতিকে জগতের অজ্ঞ মানবকুলের শাসনের নিগড় জানা
তৎপ্রতি উদাসীন হইরাছেন। ভাব্কতার পথাবলরীরা
আধ্যাত্মিকতার নৈতিক ভিত্তিকে অবহেলা করিরাছেন। ভাবে
ক্রমধুর সন্তোগে পরিতৃপ্ত হইরা আধ্যাত্মিক আনন্দর্গে এই
মর্ম হইরাছেন, যে বাহিরের ধর্মাধর্ম, কর্ম্বব্যাকর্ম্ভব্য জতি ম্বা
ও "মায়িক" কার্যা বোধে উপেক্ষিত ছইরাছে। ব্রাক্ষার্মাই
প্রারম্ভ হইতেই এই আত্মত্বপ্ত আধ্যাত্মিকতার পথ বর্জন করি

রাছেন। কিন্তু করিলে কি হয় আন্ত্র আন্যান্ত্রিকভার রক্তে আনানের আন্তার রক্ত নাংস গঠিত—আনানের নৈতিক তেল আনিতেছে না। প্রান্তর্গর আনানের চাহিতেছেন আনরা তাহা দিতে পারিতেছি না। এই হর্কগতা ও সংগ্রাম এখনও অনেক কাল চলিবে; যদি আমরা পরিপ্রান্ত বা নিরাশ না হইরা পড়ি; প্রাক্ষধর্মের মহৎ লক্ষ্য এক দিন সিদ্ধ হইবেই হুটবে।

জামরা কি হইব। ১ (ঞার)

বিজ্ঞানবিশারদ মহাত্মা সার আইজাক্ নিউটন আত্মপ্রশংসা শ্রবণ করিয়া বিশিয়ছিলেন—"I am gathering pebbles at the sea shore" জ্ঞানের অনন্ত পারাপারের উপকৃষত্ব উপলথগুসকল আহরণ করিতেছেন। জ্ঞানমনন্তং ব্রক্ষের ভিতরে প্রবেশ করিতে—তাঁহার গভীরতার ভিতরে ময় হইতে পারেন নাই। ইহাই তাঁহার কথার গুঢ় তাৎপর্যা।

ধর্মগত প্রাণ সক্রেটিস বলিতেন, লোকে যে তাঁহাকে পণ্ডিত নলে সে কথা বাস্তবিকই সত্যা, কারণ প্রত্যোকেই মনে করে সে নিজে বেশী বৃথিয়া থাকে, তাহার বৃথিবার এবং বিচারপূর্বক গ্রহণ করিবার শক্তি অন্তের অপেকা অধিক। কেইই নিজকে অপদার্থ মুর্থ বলিয়া মনে করে না, কিন্তু তিনি বুঝিতেন যে তাঁচার সে জ্ঞানাভিমান নাই; অন্তেরাও যে অপদার্থ তিনিও मिहे अभार्थ उरव श्राप्तम এই या जाहात्रा जाहा दूरवाना, তিনি তাহা বঝিতে পারিতেন। তাঁহার অপদার্থতা বুঝিতে পাবাতেই তিনি নিজকে অপরের অপেকা জ্ঞানী বলিয়া মনে করিতেন। ইহাতেই লোকের শ্রেষ্ঠহ। আনরা যদি এট আদর্শে আত্মপরীকা কবিয়া দেখি, তাহা হইলে কি সংস্পাদে আমরা আমাদের ক্রছ ও অপদার্থতা এই রূপে অজভব ক্রিয়াছিও মান্ব হইয়া জন্মগ্রহণ ক্রার মূল্য ^{এবং} তজ্জনিত যে গৌরবালুভূতি ও অভিমান, তাহা কি ব্রহ্মের শর্মজন্ত্রী শক্তির নিকট প্রাভ্য মানিয়াছে ৪ আপ্নার ক্ষুদ্রত্ব কি বুৰিয়াছি ? তাহ। যদি হইত তাহা হইলে আমাদের আধাাত্মিক শবন্থ। অনেক পুর্বেষ ভিন্ন আকার ধারণ করিত।

কিছুদিন পূর্বে আমরা আমাদিগকে এদেশের মগ্রণী দল
বিলয়া মনে করিতাম। মনে করিতাম ধর্ম বিষয়ে এবং
সামাজিক সূক্রল প্রকার হিত সাধনে আমরাই সর্বে সর্বা,
ইহার ফল এই হইয়াছে যে আমরা আর রাজ সমাজের
বাহিরের লোকের প্রতিবাদ সহু করিতে পাবি না, ক্রমে
একাপ হইয়াছে যে বন্ধু বান্ধবদের প্রতিবাদও সহু হয় না।য়হাদের পরস্পরের লক্ষ্য এক, উদ্দেশ্ত এক, এক হত্তে ভাগ্য বাধিয়া
আপন আপন কল্যাণ সাধন করিতে এবং সামাজিক উন্নতি
সাধন করিতে যাহারা মিলিত হইয়াছে, যাহারা ধর্মের আদেশে
আপনার জনকে পর করিতে এবং পরকে আপনার করিতে
বাধ্য হইয়াছে—ধর্ম তাহাদিগকে যেথানে লইয়া যাইবে তাহারা
সেই থানে যাইতে প্রতিশ্রুত,তবে কেন নিজ নিজ দোর প্রদর্শনে

মর্মপীড়া পাইরা স্মালোচকের উপর শক্ত ভাব পোষণ করি, সামান্ত বিবেচনার জাটতে বন্ধকে শত্র কেন করি ? বিধাতার অভিপ্রার বুঝা ভার। বোধ হয় আমাদিগকে শিকা দিবাব জন্ম আমাদিগের প্রতিষন্ধী দল সকল স্টে করিয়াছেন। বাল্য বিবাছ দেশের অশেষ অকল্যাণের কারণ ত্রান্ধেরাই একথা প্রচার করিলেন; তাঁহারা কাজেও দৃষ্টান্ত দেথাইতেছেন। किन्न अविषय जाहारा व विश्व हिन्स याहर है क् সমাজে পুত্রকণাার অভিভাবকশণ বিবাহের গুরুতর দায়িছ ক্রনে অমুভব করিতেছেন। উছিদের মধ্যে বয়স্বা পাত্রী পাওয়া যায়, ক্সার পিতা নাতা ক্সার বিবাহের সময়ে উপার্জনক্ষম পাত্র অফুসন্ধান করিতে আরিছ করিয়াছেন। চকের উপর এমন সকল ঘটনা উপস্থিত আছে যাহা উলেথ করিলে ইহা প্রতিপয় করা বাইতে পারে: বিধবা বিবাহে ব্রাহ্মগণের উৎসাহ সত্তে ? কোন দিন তাঁহার। ইহার প্রধান প্রপোষক নহেন। পরিচ্ছদা-দিতে তাঁহারা যে আদর্শ দেখাইয়াছেন তাহা একণে অনেক হিন্দু পরিবারে প্রচলিত হইতেছে। তংপরে প্রধান কথা এই যে সাহিত্য বিষয়ে এক দিন ব্রাহ্মগণ মগ্রণী ছিলেন। পরলোকগত বাবু অক্রকুমার দত্ত, মহর্ষি দেবেক্তনাথ, ও তাঁহার উপযুক্ত সম্ভানগণ পরলোকগত কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় এবং তাঁহাব অফুচরগণ কিছুদিন পূর্বে সাহিত্য সংসাবে অত্যুচ্ছ স্থান অধিকার করিয়াছিলেন। এখনও যে ত্রাহ্মসমাজ্ঞয় সাহিত্যের উন্নতি কল্লে অনেক শ্রম করিতেছেন তাহাতে অমুনাত্র সন্দেহ না করিয়া একথা বলা ঘাইতে পারে যে ব্রাহ্মসমাজ এ সকল বিষয়ে পশ্চাৎপদ হইয়া পড়িতেছেন। প্রশ্ন এই যে, কেন একপ হইল ? ইহার প্রধান কারণ এই প্রশ্নের প্রারম্ভে চটি প্রাতঃ-স্বাণীয় মহাত্মার উক্তিতে প্রতিপন্ন হইয়াছে। "আমরা এত বছ উপযুক্ত লোক যে দেশকে উদ্ধার করিব।" এচিন্তা মলকি : ভাবে আমানের অন্তরে স্থান পাইযাছিল বলিয়া আমর' দেই অপরাধের ফলভোগ করিতেছি। একোর রূপায় এসম্ভ इटेटिह, छिनिटे टेगत पृष्ट्रशायक् छिनिटे क्रमा कविय. এসকল অপদার্থ লোকদারা তাহার কার্যা করাইয়া লইতেছেন. আমরা তাহার অনুগত দৈলদ্ল—তাহারই অসুলি দঙ্কেত বুঝিয়া বুঝিয়া তাহারই অনুসরণ কবিব টোহার সংসারেত মঙ্গলের জন্ম নিজ বাজিত বলি দিব ইহাই তাঁহার ইছ:-তাহার এই ইচ্ছার অধীন হইযা তাঁহার সন্তানদের কলাও সাধন করিতে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি, সেই কাজ যতটুকু পাবি করিব—শেষে বিশ্বাসভারে তাঁহারই ক্রোভে শয়ন কবিব: ইহাই ত্রান্দের দর্বশ্রেষ্ঠ লক্ষা--- তৃঃথের বিষয় আমবা অনেক সময় তাহা ভুলিয়া যাই। যথন সে কথা সারণ হয় তথনই আমাদের ধারা একটু কাজ হয়। বর্ত্তমান অবস্থা দেখিক। বোধ হয় ব্রাহ্মদের মনের পূর্বে ধারণা একটু ভিন্ন আকাৰ ধারণ করিতেছে—বোধ হয় আমরা বৃথিতে পারিতেছি আনা দের পূর্ব্ব সংস্কার অর্থাৎ "সর্ব্বে সর্ব্বা" ভাবটা একটু ক্মি-তেছে, কমিবার কারণও আছে, চারিদিকের প্রতিকৃল ঘটনা সকল আমাদের এই জ্ঞানকে আরও একটু উচ্ছল কবিয়: मिट्ड ।

এখন বোধ হয় একটু নির্ভরশীল হইবার, একটু বিনয়ী

হইবার ইচ্ছা আমাদের প্রাণে জাগিয়া উঠিতেছে। কিন্তু

হাহারও আবার নৃতন প্রতিবন্ধক দেখা যাইতেছে। এক প্রকার

গাল বিনয় দেখা দিয়াছে—জাল বিনয় অর্থাৎ মনে মনে নিজকে

গুব কাজের লোক, খুব উপযুক্ত লোক বলিয়া জানা আছে, অথচ

বাহিরে লোকের নিকট বিনয়ের চরম সীমায় দাঁড়াইয়া বলিতেছি—

আজে না আমি—আমি অতি অপদার্থ, মূর্থ, কোন গুণ নাই।

এই বিনয়ের যে একটা প্রশংসা আছে তাহার প্রলোভন অতি
ভযদ্ধর, ধীরে ধীরে অজ্ঞাতসারে মনের মহন্ত্র ও সদয়ের উদারতা

হবণ করে।

একজন ডিস্তাশীল ব্যক্তি একবার বলিয়াছিলেন ব্রাহ্মসমাজের হাওয়ার ভিতরে আমাদের একটা অপদার্থ লোককে কিছু কাল বাথিয়া দাও,মে একটা নূতন মামুষ হইয়া যাইবে, তাহার প্রভাব মহা করা কঠিন হইয়া উঠিবে, কথাটীর মধ্যে ভাবিবার বিষয় মাছে, এমন কি শক্তি কি জ্ঞান কি ক্ষমতার প্রভাব এথানে আছে যাহার সংস্পর্ণে লোক ফুটিয়া উঠে ? সে প্রভাব ব্রহ্ম ব্যং, কিন্তু আবার অপ্র দিকে যাঁহাকে আম্রা যত প্রদ্ধেয় বলিয়া মনে করি, তাঁহার নিকটত্ব হইতে ততই বাধা পাইতে হয়, কেহ কেছ এ ভাবের অতীত ছইলেও সাধারণ ভাবে ব্রাহ্মসমাজের পক্ষে একণা বলিলে অক্সায় হয় না যে The more spiritual minded, the more unapproachable, বতই ধর্ম জীবনে—সাধ্যা-্মিক হায় অগ্রসর তহুই তাঁহার নিকটে যাইতে, আলাপ করিতে. তক করিতে ভয় হয়, প্রতিবাদে ও মত ভেদে ভয়ানক মন মংলিত সংঘটিত হয়, এমন কি পরস্পারের ধর্মভাব, উপাসনাশীলতা এবং সাধাৰণ সন্থাৰের প্রতি পর্যান্ত সন্দেহ জানিতে থাকে। েক্ষা ও মতেব একত। সত্তেও একজন লোক পাঁচ জনের বিরাগ ভাজন হইলে তাহার বন্ধ হওয়া পর্যান্ত সন্দেহের বিষয় হইয়া খাব, আবার একজন পাচ জনের প্রিয় পাত্র, তাহার বিরুদ্ধে কোন সঙ্গত কথা বলাও তত সহজনহে। এই রূপ ভাব-প্রবল সমাজে বাদু করিয়া কথনই উন্নতি করিতে, শান্তি, স্থ, সম্ভোগ করিতে পারে না, এরূপ অবস্থায় সমাজ গড়িয়া উঠা কঠিন ২ইব। উঠে। সমাজের শ্রন্ধেয় অগ্রণীগণের সর্ব্বাণ্ডে এই দিকে দাষ্ট আরুষ্ট হওয়। আবশ্রক। ধন্মের ভাব বৃদ্ধি হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে যদি নিজে এক একটা সঙ্কীর্ণতর গণ্ডি প্রস্তুত করি এবং অমার গণ্ডির বাহিরের লোককে সকল বিষয়ে আমাপেকা হীন ননে করি, তবেই ত অজ্ঞাতদারে আমার অধঃপতনের আয়োজন করিলাম। নববিধানী বাহিরের লোকেতে আর উচ্চ ধর্ম দেখিতে পান না। যোগের দলের বাহিরে যে ব্যক্তি আছে সে যোগের দল ভুক্ত অধমতম এক ব্যক্তি অপেক্ষা যে অধম. যোগীর নিকট ইতা আর বিচারসাপেক নত্তে—আবার আইডিয়ালিজ্মের দলের অধ্যত্য স্থানে অবস্থিত ব্যক্তি, দলের বাহিরের কোন এক ব্যক্তি অপেকা (যাহার সম্বন্ধে হয়ত ভাল মন্দ কিছুই জানা নাই— অথবা যাহা জানি তাহা ভালই জানি,) অধিক পদার্থবান এরূপ मःक्षात (करण डाँगामितरे रहेएड शास्त्र, यादामित मन मिन অহুদার হইয়া পড়িতেছে।

এক জনের মুথ থানি ঠিক আনার মুখের মত নয়

বলিয়া বেমন তাহাকে মাছ্য মনে না করা বাতুলতা, স্বাধীন চিস্তাসম্পন্ন লোকমগুলীর সকল গুলি লোক এক ছাঁচে গড়া হইবে এ কথা ভাবাও ঠিক সেই রূপ। এক জনের ব্রহ্ম বিজ্ঞান অপরের ব্রন্ধ বিজ্ঞানের সহিত না মিলিলেই তাহাকে "mob" বলিয়া উপেকা ও পরিহাস করিতে দেখিয়া কি মনে করিব গ এমন অবস্থায় এক জনের নিজের গণ্ডির বাহিরের লোককে নিজ গণ্ডির অপগণ্ড বালক অপেক্ষা অশ্রেষ্ঠ ভাবিলে কি উদারতা রকা পার ? না নিজের গৌরব বৃদ্ধি হয় ? বাছাড়ম্বরপূর্ণ ধর্ম-জীবনের আভান্তরিক চর্দশা না হইলে এরূপ ভাবিতে পারে ना। প্রিয় পরমেশ্বরকে সর্বাদা সন্মুথে রাথিয়া আপনার কুদ্র বৃহৎ সকল প্রকার ক্রটি ছর্বলতার দিকে দৃষ্টি রাখিলে আর এরূপ ভাব মনে উদয় হয় না। আনেকে পরলোকগভ আত্মাদের দৌরায়্যে (ভূতের দৌরাত্মা) বিশ্বাস করিয়া থাকেন। ভাল তাঁহাদিগকে জিজ্ঞাসা করি যে পরলোকগত আত্মাদের মধ্যে পুণাত্মারা আত্ম কার্যো সর্কাদাই বুত থাকেন দৌরাত্ম্য করিতে অবসর পান না, যাহারা সংসা রের পাপভারে অবসর তাহারাই আসিতে পারে. কিছ তাহাদের কি আসিবার অবকাশ আছে ? যে ব্যক্তি নিজেব জালায় অস্থির সে আবার অন্তকে বিরক্ত করিতে আসিবে কি γ ব্রাহ্ম ভাই তুমি যদি আপনাকে লইয়া ব্যস্ত হইয়া পাক তবে আর অপরের বিষয়ে হাত দিবার অবকাশ কোণায় ? তাই প্রারতে বলিয়াছি মহাত্মা দক্রেটিন ও নিউটনের মত হইতে হইবে। তাহা হইলে আমাদের ভিতর যে সকল বিসদৃশ ভাব দেখা যাই তেছে—নে সকল বিষয়ে আমরা খীনবল হইয়া পড়িতেছি, নে नकल विषय आगता अन्हानभन इहेग्रा अङ्गिटिছ, तम मकल विषय আপনাপনি আমাদের আয়হাধীন হইবে। আমরা নিজে দের দিকে তাকাইরা অধিকাংশ কাজ করি, কাজে কাজেই আমরা আশামুরপ ফল লাভ করিতেছি না। আমাদের ধর্ম সাধন যে বাছাড়র পূর্ণ তাহার প্রধান প্রমাণ এই যে আমাদের প্রেম অপ্রেমিক অভাগাজনের উপর ধারিত হয় না। ধর্মের গাঢ়তা ও মাধুর্য্য দেখিতে হইলে এখন অনেক मिन आमामिशक थृष्टेभिषात निरक ठाकारेट इहेरवः যাহাকে পছক করি না—তাহাকে যথন ভাল বাসিতে আমবা শিथित তথনই আমাদের ধর্ম জীবনের দার উন্মুক্ত হইবে। অনেক কান্ত নিজ শক্তিতে হইলেও হইতে পারে। কিন্তু এ কংগ্রি আর পরমেশ্বরের রূপা ভিন্ন হইতে পারে না। নিজের কৃত্টুকু শক্তি যে তাহাদারা আবার একটা এত বড় **ক্লাল** হইবে? বিধাতার শক্তিই শক্তি, দেই শক্তির অমুগত জনই মহাজন

সজন উপাসনা ও নির্জ্জন উপাসনা।

(BIB)

আমাদের মণ্যে কেহ কেহ উপাসনার আবশুকতা বীকাব করিয়াও সজন উপাসনার বিশেষ প্রয়োজনীয়তা বুঝেন না। এবং কেহ কেহ বা এভগুভয়েরভুগ্য উপকারিতাই অবীকাব করেন। আমরা দেখাইতে চেষ্টা করিব যে এই গুইটাই গুই আধান্মিক রোগের ছই প্রকার মহৌবধ এবং একজন ব্রক্ষো-পাসক বা ধর্ম পিপান্থ ব্যক্তির সময়ে এই উভয়েরই তুল্যরূপে আবশ্রক হয়।

প্রথমতঃ দেখা যাউক উপাসনার আবশুকতা কি ? ব্রাহ্মধর্মের _{অংশি}ত কোন ব্যক্তিকে যুক্তি **হারা উপাসনার আবশ্রকতা** স্বাইতে হইবে না, তিনি উপাসনাকে একটা (necessity) অবশ্য-কর্ত্তব্য কার্য্য মনে করেন, ত্রন্ধনিষ্ঠ ব্যক্তি নিজ জীবনে ত্রপাসনার ফল প্রত্যক্ষ করেন। অত্যান্তদের মধ্যে বাঁহারা क्षेत्रतत मान आमारित উপाक्त जेशामक, मिया स्मरक, भागक প্রজা ইত্যাদি সম্বন্ধ স্বীকার করেন, ঈশ্বরের প্রতি আমাদের নানাবিধ কর্ত্তব্য আছে একথা নানেন, এক কথায় যাহারা স্থানাদের (moral responsibility) নৈতিক দায়িত্ব স্বীকার করেন (utilitarian অর্থাৎ হিতবাদী ব্যতীত সকল আভিকই এ কথা মানেন) তাহারা ও একটু অনুধাবন করিলে মাহুষ নাত্রকই উপদনাশীল হইতে পরামর্শ দিবেন। আমার যষ্টিটা মাটাতে পড়িয়া গেলে একজন উঠাইয়া দিলে অমনি ভাহাকে বুলি "Thank you"—"আপনাকে ধন্তবাদ দিতেছি", মনে করি ্রগা না বলিলে সৌজ্ঞের ক্রটি হয়, অকুজ্ঞতা প্রকাশ পায়। চাহাই যদি হ'ইল তবে প্রতি মুহুর্তে যাঁহার ক্লপা লাভ করি-তেতি গাহার রূপা বর্জিত হইয়া এক তিলও বাঁচিতে পারি না, डाधात निकट वृद्धि जामात कुठळठा चीकारतत প্রয়োজন নাই ? नेयन निर्यात, जामता (चात भाभी, नेयन निष्ठा, जामता कनहारी कुछ জাব,ঈশ্বর দয়ার সাগর, আমর! নরাধম। স্রতরাং তাঁহার ক্রপার ভিগাবী। এসকল কথা জানিলে এবং জনমঙ্গন করিতে পারিলেও কি বলিব ভাহাৰ কাছে আমার যাক্স। কৰিবার কিছুই নাই, াতনি আমার অভাব জানিতেছেন, তাঁহার কাছে প্রার্থনার গাংশক নাই ইত্যাদি, কখনই নহে। বরং একথাই বলিতে ১টবে যে সর্ব্য প্রকার অপূর্ণ মানবকে পূর্ণ **ঈশ্বরের আশ্র**য় গ্রহণ কবিষা পাকাই তাহাব পক্ষে স্কতোভাবে কল্যাণ জনক ও এেফ কল। যাহার। নিতা উপাসনাশীল তাহার। উপাসনাকে এই জগুই আত্মার খাদ্য বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন, খাদ্য বাতাত যেমন শরীর জীবিত থাকে না, তেমনি উপাসনা বাতীত শাম্বান সজীবতা থাকে না। বাস্তবিক এই অস্থির নৈরাশ্রময় সংসারে উপাসনাই আত্মাকে স্থির ও আত্মন্ত রাথে। জলমগ্র ব্যক্তিকে যেমন ভূবিয়া মরিবার আশলায় প্রত্যেক মুহুর্ত্তেই ^{১ ওপদ} সঞ্চালন করিতে হয়, নতুবা তাহার মৃত্যু অবশুভাবী, ^{সেইরপ} এই পাপ প্রলোভনময় বিপদাকীর্ণ সংসারে ও আত্মাকে সর্বাদ উপাসনার ছর্গ ছারা হুর্কিত, রাখিতে হয় নতুবা আমার পতন নিশ্চিত।

দকলেই বোধ করি অনুভব করিয়া থাকিবেন যে যথনই আমরা সাংসারিকতার একটু বেশী মিজ তথনই আমাদের আত্মা থেন প্রেম ও পবিত্রতার রাজ্য হইতে একটু দুরে আসিয়া পড়ে, আমাদের বোধ হয় যেন আমরা আর সে রাজ্যের প্রেজা নাই এবং সে রাজ্যের তত্ত্ব লইতে অধিকরী নহি। কোন প্রিয় বিদ্বা তব্ব অধিক দিন না লইলে তাহার সঙ্গে দেখা হওয়া মাত্রই আমরা লজ্জিত হই, তাহার সঙ্গে তেমন মুক্ত ভাবে হলয় খুলিয়া

আলাপ করিতে সাহসী হই না। বছদিনের পর উপাসনায় প্রায়ন্ত হইলেও আত্মার ঠিক সেইরূপ ভাব হয়, প্রত্যেক সজীব আত্মাই এই কথার সাক্ষ্য দিবে। আত্মার এইরূপ অব্যাহইলে তাহাকে প্রকৃতিস্থ করিবার জন্ম তাহার বহিন্দ্রীন গতি ফিরাইবার জন্ম এবং তাহার উচ্ছ্ অলতা দূর করিবার জন্ম দীর্ঘ কালব্যাপী নির্জ্জন উপাসনার আবশুক। হদয়ের শুক্ষতা নির্জ্জন উপাসনা ব্যতীত কিছুতেই দূর হইবার নহে, এইটা নির্জ্জন উপাসনার একটা বিশেষ অবশুক্তা। সজন উপাসনা সর্বান সম্ভাবে না। অতএব প্রত্যাহ নির্জ্জন উপাসনা হারা আত্মান সন্ধাবতা,ধর্মের জন্য একাগ্রতা ইত্যাদি আধ্যাত্মিক উন্নতির বীজ শুলি রক্ষা করা কর্ম্বার, নির্জ্জন উপাসনা আত্মার ব্যক্তিগত কল্যানের সম্পূর্ণ উপযোগী, এতন্তির তাহার নানাবিধ উপকারিতা আছে। আমরা তাহার উল্লেখ না ক্রিয়া স্ক্রন উপাসনার আবশুক্তা কি তাহা সংক্রেপে বলিব।

নদীতে যেমন মধ্যে মধ্যে ভাটা লাগে তেমনি আমানেব আত্মাতে কথন কথন ভাবের অত্যন্ত অভাব হয়, আ্যার ভাব প্রবণতা একেবারে কমিয়া যায়। নাম গাণে, উপাসন্ত্র, কীর্ত্তনে কিছুতেই মন তত মাতেনা। চোকের সন্মুখে কোন ব্যক্তি কণ্ঠ বিদীর্ণ করিয়া, অঞ্জলে বক্ষ ভাসাইয়া প্রভুর নাম করিলেও প্রাণে তত আবেগ হয় না। আত্মার এই মহাব্যাধির ভ্রষণ সজন উপাসনা, এই অবস্থায় সজন উপাসনা অতি উপ-কারী। যেমন একটা স্রোতের বেগ অতান্ত মন্দ থাকিলে, আর দশ্টী স্রোত তাহার দঙ্গে মিশিবামাত্রই বর্দ্ধিত বেগে অভিপ্রেত পথে অবাধে চলিতে থাকে, তেননি একটা আত্মার কুদ্র ভাব-স্রোত আর একটা আত্মার ভারয়োগে প্রবল না হউক কিন্তু মার দশটী আত্মার ভাবস্রোতের সঙ্গে একীভূত হইলে উত্তাল তরকের স্থায় হ্রদয়কে প্লাবিত করে, তথন কাব সাধ্য বাধা দেয়। তথন আমার এই প্রেনোরতো এক হদর হইতে অভা হদরে সংক্রামক রোগের স্থায় সঞ্চাবিত হয়। উপাদকগণ ভাবে বিভোর হইয়া বালকের ভায় নৃত্য কবিতে থাকেন, আত্মা-রামকে নিজ আত্মাতে উপলব্ধি করিয়। কৃতার্থহন। ফদ্যেব ওকতা, দীনতা চিরকালের জন্ম পলাইরা যায়।

অতএব দেখিতে পাই আত্মার অবস্থাভেদে এই ছই প্রকাব উপাসনারই স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র উপকারিতা আছে। কোনটীর ছার: বেশী উপকৃত হই এবং কোনটীব ছারা কম উপকৃত হই বলিতে পারি না।

जगमः (भाषन ।

শ্রীযুক্ত বাব্ বটক্লফ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় অনুপ্রত করিয়:
আমাদিগকে শ্বন্ করাইয়া দিয়াছেন, যে আমাদের শ্রদ্ধের বক্
শ্রীযুক্ত হকড়ি ঘোষ মহাশরের কন্সার বিবাহের সংবাদ তত্ত্ব
কৌমুদীতে প্রকাশিত হয় নাই। বিশ্বতি ক্রমেই একপ ঘটিয়াছিল। যাহা হউক, পাঠকগণের বিদিতার্থে লিখিতেছি উক্
বিবাহ গত ৪ঠা জ্যৈষ্ঠ তারিখে সম্পন্ন হইয়াছে। পাত্রীর নাম
শ্রীমতী জীবনবালা ঘোষ, বিবাহ কালে বয়ঃক্রম ১৭ বংসর ছিল
ইনি গত বংসর বেপুন কলেজ হইতে এল, এ, পবীক্ষায় উত্তীণ
হইয়াছেন। পাত্রের নাম শ্রীমান্ জয়কালী দত্ত এম্ এ, বি,এল,

বিবাহ কালে বয়:ক্রম ২৭ বংসর ছিল। ক্কতপ্ততার সহিত জানাইতেছি যে এই বিবাহ উপলক্ষে হৃকড়ি বাবু সাধারণ বান্ধ-সমাজে ১০১ টাকা প্রদান করিয়াছেন।

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরকদের মতামতের জন্ম সম্পাদক দায়ী নহেন)

ত্রাক্ষধর্মের ধর্ম্মবিজ্ঞান।

ব্রাহ্মধর্মের ধর্মবিজ্ঞান (Theology) কি ? এবিবরে আমি অনেক সময় চিস্তা করিয়া বড়ই হঃথিত হই। বর্ত্তমান সময়ে ব্রাহ্মসমাজে যিনি যেরূপ ইচ্ছা ধর্মমত বিশ্বাস করিতেছেন। বর্ত্তমান সময়ে চিন্তাশীল ব্রাহ্মদিগের কোন সাধারণ ধর্ম মত নাই; ধর্ম মত এখন ব্যক্তিগত। ধর্মমত ব্যক্তিগত হওয়াতে আমি তুঃথিত নই বরং আনন্দিত এবং ইচ্ছা করি ব্রাহ্মসমাজ হইতে সাধারণ ধর্ম মত উঠিয়া যাক। কিন্তু ব্রাহ্মগণ ধর্মবিজ্ঞান(Theology) সম্বন্ধে নিরপেক্ষ ভাবে অর্থাৎ ইহার সকল দিক দেথিয়া চিন্তা করেন না বলিষাই আমি তঃথিত। এীযুক্ত বাবু সীতানাথ দত্ত মহাশয় বর্ত্তমান সময়ে ব্রাহ্মধর্মের ধর্মবিজ্ঞান কি হওয়া উচিত এ বিষয়ে চিন্তা করিতেছেন দেথিয়া, আমি অতিশয় আনন্দিত হইয়াছি। সীতানাথ বাবুর "ব্রন্ধজিজ্ঞাসা" পুস্তক পড়িয়া মনে হইল যদি আহ্মসমাজে এইরূপ চিন্তাণীল লোকের আদর হয়, তাহা হইলে ব্রাহ্মসমাজের নিশ্চয়ই কল্যাণ হইবে। সীতানাথ বাবু বলিয়াছেন তাঁহার মতের সহিত আদি ব্রাহ্মসমা-জের ঘিচেক্সনাথ ঠাকুর মহাশয়ের ও নববিধান সমাজের গৌর গোবিন্দ রায় মহাশয়ের ঐক্য আছে (ত্রন্ধজিজ্ঞাসা ১৬৮ পৃষ্ঠা দেখুন)। তাহা হইলে সীতানাথ বাবুর অধ্যাত্মবাদ সম্প্র ব্রাহ্মধর্ম্মের ধর্মবিজ্ঞান হইবে এরপ আশা করা যায়। সীতানাথ বাবুও একপ আশা করিয়াছেন। কিন্তু দীতানাথ বাবুর অধ্যাত্ম-বাদে যে প্রকাণ্ড ভ্রম (তাঁহার নিজের মতে, আমার মতে ভ্রম নহে) রহিয়াছে; দীতানাথ বাবু এত চিস্তানীল হইয়া কেন যে ভাহা বুঝিতে পারিলেন না, বলিতে পারি না। সীতানাথ বাবুব "এক্ষজিজ্ঞাসা" পুস্তকের শেষ অধ্যায় ব্যতীত আর সকল অধ্যায়ই শুক্তিপূর্ণ, যদিও ছুই এক স্থলে তাঁহার সহিত আমার মতের ঐক্য নাই। সীতানাথ বাবু যথন শেষ অধ্যায় লিখিতেছিলেন, তথন কি তাঁহার পূর্ব্বমত একেবারে বিশ্বত হইয়াছিলেন। প্রথম কয়েক অধ্যায়ে অনেক তর্ক যুক্তি করিয়া যে মত খাড়া করিলেন. শেষ অধ্যায়ে নিজেই সেই মতের প্রতিবাদ করিলেন। সীতানাথ বাবু প্রকৃতিবাদ খণ্ডন কবিতে গিযা, কিছু ধৈর্য্যচ্যুত হইয়াছেন, ঐ মতের দার্শনিকদিগকে কিছু কটুক্তি করিতে ইচ্ছা প্রকাশ কবিয়াছেন (১৪ পৃষ্ঠা দেখুন)। আমি সীতানাণ বাবুর শেষ অধ্যায় পড়িয়া ভাবিলাম মানবের চুর্বলতা সর্ব্বেই স্নান। পীতানাথ বাবু এত চিস্তা ও ধর্মদাধন করিয়াও মনে এপ্রকার অহমার ও মাত্মাভিমান রাথিয়াছেন, ইহা অতিশয় তঃথের বিষয়। নিজের মহাভ্রম না দেখিয়া অপরচে কটুক্তি করিতে ইচ্ছা প্রকাশ করাটা বোধ হয় ভাল হয় নাই। আমি সীতানাথ বাবুর এই মহাভ্রম দেখাইতেছি। সীতানাথ বাবুর "জ্ঞান ও কাল" এবিষয়টা ।

থিনি চিন্তার সহিত পাঠ করিয়াছেন, তিনি ব্রশ্বকে প্রেম ও অপ্রেম, মঙ্গল ও অমঙ্গল, পাপ ও পুণ্য সকল ঘটনার আশ্রয় ও আধার বলিতে বাধ্য হইবেন। কিন্তু সীতানাথ বাবু ব্রহ্মকে কেবল পূর্ণ প্রেম ও পূর্ণ পবিত্রতার আধার বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে গিয়া নিজেই নিজের মত অগ্রাহ্য করিয়াছেন। প্রমাত্মাকে আশ্রয় कतिग्राहे यथन अनस्र कारण अर्थाः अनस्र घटना अवाह ब्रहिगाहि, অতীত কালে ভাল, মন্দ যত ঘটনা ঘটিয়াছে, বর্ত্তমান কালে মঙ্গল, অমঙ্গল যত ঘটনা ঘটিতেছে এরং ভবিষ্যতে সাধু অসাধু যত ঘটনা ঘটিবে সকলেই যদি সমান ভাবে তাঁহার জ্ঞানের মধ্যে বর্তুমান রহিল, তাহা হইলে কি জগতের পাপ, অসাধু ও অমঙ্গল ঘটনা সকল তাঁহার জ্ঞানের মধ্যে রহিল না ? জীবাস্থার পাপ ও অসাধু চিস্তা কি পরমাত্মা হইতে আসিতেছে না ? জীবাত্মা যে সকল সাধুচিতা করিয়া বিশ্বত হন, সে সকল জীবাত্মার জ্ঞান হইতে যায় বটে, কিন্তু প্রমাত্মার জ্ঞানে থাকে। সেইরূপ জীবাত্মা যে সকল অসাধুচিন্তা করিয়া বিশ্বত হন তাহাও পর মাত্মাব জ্ঞানের মধ্যে অবস্থিতি করে। জ্ঞান সাধুই হউক আব व्यमाधूरे इंडेक, मन्नलरे इंडेक बाद व्यमनलरे इंडेक, राशन रेश কালে আমাদের মনে আসিতেছে এবং অনস্তকালে যণন অনস্ত জ্ঞান ভিন্ন থাকিতে পারে না,তথন নিশ্চরই আমাদের পাপ পুণ্য সকল জ্ঞান তাঁহা হইতে আমাদের মনে আসিতেছে এবং আমাদের মন হইতে তাঁহার মনে যাইতেছে। স্ব্রির প্রথম ভাগে আমরা সাধু অসাধু সকল চিন্তাই (কারণ উভয় প্রকার हिन्नाहे कात्न घाँउटाइ) छाहात हत्न मित्रा निमा गाहे, जान জাগ্রত হইবার সময় তাঁহারই হস্ত হইতে সাধু, সকল চিন্তা ফিরিয়া পাই। তিনি সাধু চিন্তাকে ফের্কণ আদরের সহিত রক্ষা করেন, অদাধু চিন্তাকেও তেমনি সহিত রকা করেন। একজন লোক নিড়া যাইবার সময় অন্ত একজন লোককে হত্যা করিবে এই ভাবিতে ভাবিতে গাঢ় নিদ্রায় অভিভূত হয়। নিদ্রার সময় সে তাহাব জ্ঞানকে হারাইয়া ফেলে, কিন্তু ত্রহ্ম যত্ন করিয়া তাহার এ^ট জ্ঞানকে নিজে রক্ষা করেন এবং জাগ্রত হইবামাত্র পুনবাং তাহাকে সেই জ্ঞান প্রদান করেন। সে ব্যক্তি ঐ জ্ঞান পাইছ যাহাকে বধ করিবে ভাবিতেছিল, তাহাকে বধ করিল। এর যদি তাহাকে ঐ জ্ঞান ফিরাইয়া না দিতেন তাহা হইলে সে বং করিত না, সে একেবারে সমস্ত বিশ্বত হইয়া ঘাইত। এখন সীতানাথ বাবুকে জিজ্ঞাসা করি এই হত্যাকাণ্ডের কর্ত্ত। কি এর হইলেন না? সীতানাণ বাবু এখন দেপুন তাঁছার অধ্যামানা জীবাত্মা ও প্রমাত্মার মধ্যে সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ জ্ঞান-যোগ স্থা^{প্র} করিতে গিয়া কোথাৰ আসিয়া পড়িয়াছেন। তিনি এই মু^{তি} অবলম্বন করিয়া আবার কি করিয়া বলেন যে ত্রন্ধ কেবল পূ^ল পবিত্রতার আধার তাহা আমরা কিছুই বুঝিতে পারি না। ^{তাই} বলি অধ্যাত্মদাদীই হও আর খোর অহৈতবাদীই হও, যদি সতা জ্ঞানের ঈশ্বরের উপাসনা করিয়া জ্ঞান লাভ করিতে চাও তাই। হইলে সমন্ত পাপ ও অনঙ্গল ঘটনার কারণ যে ঈশার তাহ স্বীকার করিতেই হইবে। আর যদি করনার অন্ধ বিশাসের, ও ভাব্কতার ঈখরের উপাসনা করিয়া সুখ লাভ করিতে চা^{ও,}

তাহা হইলে যাহা ইচ্ছা কর কোন আপত্তি নাই। আশাকরি সীতানাথ বাবু ইহার উত্তর এই পত্তে লিথিবেন, যদি না লেখেন তাহা হইলে বুঝিব তাঁহার আর কোন যুক্তিযুক্ত উত্তর নাই, অর্থাং তাঁহার অম প্রমাণিত হইরাছে।

প্রীহরকালী সেন।

अक्षाम्भाव श्रीयुक्त "তব্বকোমূদী"-সম্পাদক মহাশয় সমীপেষ্---

"তৰ্কৌমুদীর" বিগত সংখ্যায় প্রকাশিত শ্রদ্ধাম্পদ বাব্ ভালিনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশবের বিধানবাদ সম্বন্ধীর পত্রকে প্রধানতঃ তিন ভাগে বিভক্ত করা যাইতে পারে। এক ভাগে তিনি দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন যে আমি বিধানবাদের যে ব্যাথ্যা দিয়াছি, তাহাতে অপর কয়েক জন বিধানবাদীর মতের পোষকতা হয় না। অপর বিভাগে দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন ্য আমার ব্যাথ্যাত বিধানবাদেব মূল কৃত্র যাহা, অর্থাৎ বিধান-প্রকাশ মানবের ইচ্চা-নিরপেক, এই মত সতা নহে। তৃতীয় বিভাগে দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন যে তাঁহার বাাণ্যাত মতে নহে, কিন্তু আমারই ব্যাখ্যাত বিধানবাদে ধর্মসাধনের হ : শ্রুকতা থাকে না, প্রার্থনার অবেশুক্তা থাকে না, ইত্যাদি। এই বিভাগে অনেক গুলি এমন বিষয় আছে, যাহাকে আদিনাথ বাবুর নিজের কণায়ই "কথ:র কাটাকাটি" বলা ঘ্য। আদিনাথ বাবু আমাদিগকে এই "কথার কাটাকাটি" হইতে বিরত হইতে প্রামর্শ দিয়াছেন। তাঁহার নিজের দৃষ্টাস্ত এই পরামর্শের অফুরুপ নহে। যাহা হউক, আমি তাঁহার দ্ধীন্তের অনুসরণ না.করিয়া প্রামর্শেরই অনুসরণ করিব। প্রথম বিভাগ সম্বন্ধে ও আমি আপাততঃ কিছু বলিব না। আদিনাথ বার্ব উদ্ধৃত বিধানবাদী উক্তি গুলিতে আমি আমার ব্যাখ্যাত विधानवारमत विद्यांधी किंद्र सिथ ना ; यमि किंद्र विद्यांध शोरक, তাহা ভাষার বিরোধ। কিন্তু আমার বিশ্বাসের সহিত মিলুক यात नारे मिनुक, यामि अलत विधानवानी निरंगत डेकि ममर्थन বা বাখ্যা করিতে বাধ্য নহি। বিধান-বিরোধী দিগের মধ্যে যেমন मर्डत ष्रोतका ष्याष्ट्र, विधानवांनीनिर्शत मर्धा ७ ट्यान মনৈক্য থাকিতে পারে ও আছে। আদিনাথবারু যাহাদের উক্তি উদ্বত করিয়া তাহার প্রতিবাদ কবিয়াছেন, আশা করি ঠাহার। আবশ্রক বোধ করিলে নিজ নিজ মতকে সমর্থন করিয়া পত্র লিখিবেন। আমি আমার বক্তব্য প্রধানত: দিতীয় বিভাগে আবন্ধ রাখিব।

আদিনাথ বাবুর সঙ্গে আমার বিশেষ অনৈক্য এই;—আমি বিল, বিধান-প্রকাশ মানবের ইচ্ছা-নিরপেক্ষ, ইহার কর্ত্তা স্বরং ঈশর; বিধান নিত্য নৃতন, স্বতরাং ঈশর নিত্য নৃতন বিধানের প্রেরিছা। ঈশর ভিন্ন ভিন্ন অক্ষায় ভিন্ন ভিন্ন বিধান প্রেরণ করেন; মানবের অবস্থা ভিন্ন ভিন্ন, স্বতরাং বিধান ও ভিন্ন ভিন্ন, কিন্তু সমুদায় বিধানের লক্ষ্য এক, ইত্যাদি। আদিনাথ বাব বলেন, বিধানের বীজ ঈশর প্রথম হইতেই আম্মতে নিহিত

করিয়া রাথিয়াছেন, মাহুষ যে বিধান বুঝে না, সে তাহাব निरमत (मार्य; म वृत्थिए देव्हा कतिरन मेथत छ। इ.न. माहाया कहिएक मर्सनाई श्रेष्ठ त्रहियाएक । विधान श्रेकान যদি মানবের ইচ্ছা-নিরপেক হইত, কেবল ঈশ্বরের ইচ্ছা-সাপেক হইত, তবে মানবের অবস্থার এত অনৈক্য হইত না। অনৈক্যের কারণ ঈশ্বর নহেন; তিনি অনৈক্যের কারণ চ্ছালে তিনি পক্ষপাতী হইতেন: অনৈক্যের কারণ মানবের ইচ্ছা: मानव देख्या पूर्वक क्रेयत-अह ६ मठा पर्यन करत ना। এशन (मथा याहेरङह्ध "निहिङ" क्थाँछ। नहेब्राहे यङ अरेनका। বিধানের বীজ কি কথে আবায় নিহিত ছিল ৫ "নিহিত" অবস্থায় মানব তাহা জানিতে পারে কি না ? জানা ন' জানাব উপর্ট সমস্ত প্ররের মীমাংসা নির্ভর করে। যদি বলেন 'জানিতে পারে না,' 'নিহিত থাকার' অর্থ অজ্ঞাত অবস্থায় গাকা, তবে স্বীকার করা হইল যে নিহিত অবস্থায় বিধানেব প্রকাশ হন না। যে অবস্থায় বিধানের প্রকাশ হয় না, সে অবস্থা দার্শনিকের প্রয়েজনে লাগিতে পারে, আমাদের বর্তমান আলোচনায় তাহাব ट्यान প্রয়েজন নাই : বিধান-প্রকাশের সঙ্গেই আমাদের সয়য়। আমি পূর্বে পত্রে 'নিহিত থাকা' সম্বন্ধে বলিয়াছিলাম--"ন্নি স্বীকারও করা যায় যে কোন না কোন অর্থে এই সমুদ্রে আমার আয়াতে নিহিত আছে, তথাপি ইহা নিশ্চয যে যথন আমি সজ্ঞানে এই সমুদয় লাভ করি, যথন আমার জ্ঞানগত জীবনে এই সমদায় প্রকাশিত হইয়া আমার আয়াকে অকেশ্ন কবে, আমার উপর দাবি বসায়, তথন একটা নৃতন ঘটনা ঘটে"। এখন, যদি বলেন যে 'নিহিত' অবস্তায় বিধান প্রকাশিত গাকে, নিহিত থাকা আর প্রকাশিত হওয়া একই কথা.—আদিনাগ বাবুর মত ইহাই বলিয়া বোধ হয়—তবে চেষ্টা করিয়া জানা, চেষ্টা করিয়া বুঝার কোন অর্থ ই থাকে না। যাহা প্রকাশিত রহিয়াছে. জানা রহিয়াছে, তাহা আবার জানিব কি ? এই মূল বিষয়টীর প্রতি পাঠকের বিশেষ মনযোগ আকর্ষণ করিতেছি। বিধান প্রকাশের সম্পূর্ণ ভার ঈশবের হতে দিতে অদিনাথ বাবু নিত্য স্তই নারাজ, কিন্তু আমি দেখিতেছি বাধ্য হইয়াই তাহা ঈশবেন হত্তে দিতে হইতেছে। "প্রকাশ" ব্যাপারটাই এমন, "জান," कार्याठीहे अपन, (य छोड़ा कथरना छा छात हेळू।-मार्शक हहें ह পারে না। 'প্রকাশ' ইচ্ছা-দাপেক হইলে তাহা আর 'প্রকাশ' থাকে না, ধাঁদা হইয়া দাঁড়ায়; 'জ্ঞান' ইচ্ছা-সাপেক হইং া তাহা আর 'জ্ঞান' থাকে না, কল্পনা হইয়া দাড়ায়। আমবং (य (मिश्रे, अति, এই সকল আমাদের ইচ্ছালাপেক নতে। ইচ্ছাপুর্বক চকু মেলিয়া থাকিতে পারি, কিন্তু তাহা জ্ঞানেব আহুদঙ্গিক ক্রিয়া মাত্র, তাহাতে জ্ঞান আনিতে পারে না, বাহি-রের আলোক আমার ইচ্ছা-নিরপেক ভাবে চকুতে না পড়িল (मथा अमञ्जन; याहा (मथि जाडा मन्पूर्वक्राल आमात हेळ्डा नित-পেক ভাবে আমার জ্ঞানের সমকে আসে। কিরপ বস্তু দেথিব, তাহা আমার ইচ্ছা-সাপেক নহে; আমার ইচ্ছা-সাপেক হটলে আমার ইচ্ছামুরপ দৃষ্ট বস্তর পরিবর্তন হইছ। আমার কান যে (थाना थारक, जोहा जामात हेन्छा-नार्णक नरह; भक्त रा व्यामान কর্ণে প্রবেশ করে, তাছাও আমার ইচ্ছা-সাপেক্ষ নছে; কি শব্দ

ঙুনিব, তাহাও আমার ইচ্ছা-সাপেক নহে। ইক্রিয়গুলিকে পরিচালিত করিবার যে আমাদের একটু শক্তি আছে, তাছাও ইক্সা-নিরপেক মৌলিক জ্ঞানের উপর নির্ভর করে। ইক্সির-গুলিকে না জানিলে পরিচালিত করিতে পারিতাম না; কিন্ত ইক্রিয় সমূহ আমার ইচ্ছা-নিরপেক্ষ ভাবে আমার জ্ঞানের সমক্ষে প্রকাশিত হয়, ইহাতে আমার ইচ্ছার হাত কিছুই নাই। বাছে-ক্রিয় সম্বন্ধে বেমন, বাহ্ন জ্ঞান সম্বন্ধে বেমন, অন্তরেক্রিয় সম্বন্ধেও তেমনি, আধ্যাত্মিক জ্ঞান সম্বন্ধেও তেমনি। মনোবৃত্তি যে আছে, আধ্যাত্মিক ইন্দ্রির যে আছে, এই জ্ঞান সম্পূর্ণরূপেই আমাদের ইচ্ছা-নিলপেক ভাবে আদে। তারপর, মনোবৃত্তি যে চালনা করি, ইছা আধ্যাত্মিক জ্ঞানের আত্মঙ্গিক ক্রিয়া মাত্র, এই ক্রিয়া ঘটিলেও জ্ঞান না আসিতে পারে। আমি যতকণ অজ্ঞান, ততক্ষণ জ্ঞান আমার বাহিরে; বাহিরের জ্ঞান আমার ভিতরে প্রবেশ করা সম্পুরিপেই আমার ইচ্ছা-নিরপেক; সত্যের আধার যিনি, তিনি নিজ ইচ্ছায় সতা প্রকাশ না করিলে, আমার সহস্র চেঠাতেও সভা প্রকাশিত হইতে পারে না। এখন, এই সকল সত্যের আলোকে আদিনাথ বাবুর মতের একটু বিশেষ আলোচনা করিব। আদিনাথ বাব বলেন, ঈশ্বর মানবের স্প্রির সঙ্গে সঙ্গে প্রথম হইতেই আত্মাতে সমস্ত প্রয়োজনীয় বিধি ব্যবস্থা লিথিয়া রাথিয়াছেন, অনেকে ইচ্ছা পূৰ্ব্বক ভাহা বুৰে না, গ্ৰহণ করে না, তাহাতেই মানব সমাজে এত আধ্যাত্মিক অনৈক্য। এথন জিজ্ঞান্ত এই, रिम विधि तात्रका लाथारे तिहल, ध्वकाणिकरे तिहल, जत आत মানব ইচ্ছাপুর্বক বুঝিবে কি ? গ্রহণ করিবে কি ? আর দদি বলেন লিখিত থাকার অর্থ প্রকাশিত থাকা নহে, জ্ঞাত धाका नरह, निश्वि थाकिरन ७ भरत ज्ञानिए इस, वृक्षिण इस, গ্রহণ করিতে হয়, তবে বলি যাহা পূর্বে আমার জানা ছিল না, াতা আমার জ্ঞানের বাহিরে ছিল, তাহা আমি কখনো ইচ্ছা করিয়া, চেষ্টা কবিয়া, জানিতে পারি না; আমার জ্ঞানের বাহিরে ে বস্তু,তাহাব উপর আমার ইচ্ছার, আমার চেষ্টাব প্রয়োগ হইতে পারে না। স্কতরাং যে দিকেই যান, স্বীকার করিতে হইতেছে যে নানৰ অস্তবে যে সত্যের প্রকাশ হয়,তাহা সম্পূর্ণরপেই মানবের ইক্ষা-নিরপেক্ষ, তাহা সম্পূর্ণরূপেই ঈশ্বরের কার্য্য। আদিনাথ বাবু এক স্থানে বলিয়াছেন, "পৃথিবীতে এমন সহস্ৰ সহস্ৰ লোক আছে, বর্ত্তমান সময়ে যাহা নির্ব্বিবাদে সত্যা, স্কুতরাং ঈশ্বরের বিধান বলিয়া গৃহীত হইতেছে, তাহারা তাহার কোন সংবাদ ও तारथ ना।" बिक्डामा कति. "मः बांग द्रारथ ना." व्यर्थ कि न क्षाति ना १ (कन क्षाति ना १ हेक्स्) शूर्विक क्षाति ना १ "हेक्स পূৰ্বক জানে না" কথা দবিরোধী। জ্ঞান ছাড়া ইচ্ছা হইতে পারে না; কোন বম্বর উপর কার্য্য করিতে হইলে তাহা জানা চাই, কিন্তু বস্তুটা একবার জানিবে তাহার সম্বন্ধে আর যাহাই করি. ভাহাকে জ্ঞানের বাহিরে আর নেওয়া যায় না। উপরোক্ত লোকেরা যদি ঈশ্বরের বিধান জানিয়া থাকে, তবে তাহারা কথন ইহাকে ইচ্ছা পূর্বক না জানিতে পারে না. জ্ঞানের বাহিরে রাথিতে পারে না; স্থতরাং তাঁহারা ইচ্ছা পূর্মক বিধানের "সংবাদ রাথে না," এই কথা নিতান্তই অসকত। তবে তাহাদের

"সংবাদ না রাখার" কারণ কি ? না জানার কারণ কি ? মান-বের ইচ্ছা যথন কারণ হইল না. তথন ঈশবের ইচ্ছা ভিন্ন এই অজ্ঞানতার আর কোন কারণ নাই; স্থতরাং বাধ্য হইয়াই স্বীকার করিতে হইতেছে যে, ঈশ্বর তাহাদের সমকে বিধান প্রকাশ করেন নাই, তাহাতেই তাহার। জানিতে পারে নাই। 🛊 কিন্তু এস্থলে আদিনাথ বাবু বলিবেন এই মতে ঈশ্বরের অপক-পাতিকে আঘাত পড়িতেছে। আমি বলি তাহা নহে: যেমন চারি মাসের শিশুকে চলিবার শক্তি না দেওয়াতে ঈশ্বরের পক্ষ-পাতিত্ব প্রকাশ পায় না, দশ বংসরের বালককে বিজ্ঞান দর্শনের উচ্চ জ্ঞান না দেওয়াতে ঈশ্বরের পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায় না. পঞ্চদশ বৎসরের সুবককে উচ্চ আধ্যাত্মিক তত্ত্ব শিক্ষা না দেও-য়াতে ঈশ্বরের পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায় না, তেমনি অস্ভ্য, অশিকিত, অবিকশিত জাতি বা সম্প্রদায় সমূহের নিকট উচ্চতর বিধান প্রকাশ না করাতেও তাঁহার পক্ষপাতিত প্রকাশ পাই-তেছে না। যদি আদিনাথ বাবু বলেন যে জাতি বা সম্প্রদায়গত অসভ্যতা, অজ্ঞানতা, অবিকশিত অবস্থার কারণ যথন তিনি স্বয়ংই, তথন ইহাতেও তাঁহার পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পাইতেছে. তবে এই কথার উত্তর এই যে. জাতিগত অবিকশিত অজ্ঞান অবস্থা যদি ঈশ্বরের পক্ষপাতিস্থের পরিচায়ক হয়, তবে ব্যক্তিগত শৈশব, বালা এবং মৌবন প্রভৃতি অবস্থা ও তাঁহার পক্ষপাতিছের পরিচায়ক। যদি কেই বলেন যে এই সকল কথাতে জগতের বৈষ্মার সন্তোষকৰ ব্যাখ্যা হইতেছে না, তবে আমিও বলি যে, যে মতে এই দাঁড়াই-তেছে যে নিগ্রোজাতি যে অসভা, তাহারা যে ইংরেজের মত স্থ্য ভাষা নয়, ইহা কেবল তাহাদের ইচ্ছা-সাপেক ; থাসিয়া জাতি एव हिन्दूत डेफ अथााबा ठइ कार्त्न ना, बाक्यधर्य विधान कार्त्न ना. তাহার কারণ কেবল তাহাদের ইচ্ছা, তাহারা ইচ্ছাপূর্বক অজ্ঞান রহিয়াছে,—সেই মত ও মানবেব বৈষনোর সস্তোষকৰ ব্যাখ্যা করিতে পারিতেছে না। এই বিষয়ে আদিনাথ বাবু ও আমি উভয়েরই আপাতত: দ্যান অবস্থা। কিন্তু জাগতিক বৈষ্মাের বাাথাা কবা বর্তমান আলোচনার উদ্দেশ্য নহে: মুফ প্রশ্নের সহিত এই প্রশ্ন জড়ান ঠিক হয় নাই। মূল প্রশ্ন এই, বিধান প্রকাশ নানবের ইচ্ছা-সাপেক্ষ কি না ৭ আমি সংক্ষেপে যথাসাধ্য এই প্রশ্নের উত্তর দিতে চেষ্টা করিলাম, আদিনাং বাবু আমার উত্তরের প্রত্যুক্তর দিলে পরে অভ্যুক্থা বলিব। সম্প্রতি মার একটীয়াত্র কথা বলিয়া পত্র শেষ করিব। স্থামাদেব আধ্যাতি বুক জীবনের কত্কগুলি ঘটনাকে আমি আমাদেব रेष्हा-नितर्शक এवः श्रेशतत रेष्हा-मार्शक वनियाहि.—"यथा, জ্ঞান, প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশ।" সমুদায় ঘটনাকে আমাদের ইচ্ছা-নিরপেক বলি নাই। ঈশ্বর-প্রকাশিত সত্য ও প्ণामित्वं अस्मत्राभूर्वक डेभामना ७ भूगकार्या करें। जामाति ইচ্ছা-সাপেক; ঈশ্বর সম্প্রতি যাহা দিয়াছেন, তাহা অপেক। অধিকতর প্রাপ্তির আকাক্ষা করিয়া তাঁহার নিকট প্রার্থনা করাও আমাদের ইচ্ছা-সাপেক: সুতরাং আমার মতে ধর্মদাধন ও প্রার্থনার প্রশন্ত ভূমি রহিয়াছে।

শ্ৰীসীতানাথ দত্ত।

अकाम्मन उद्दर्शमूनी मम्मानक

মহাশয় সমীপেযু-

মহাশয়,

তহকৌষ্দীন্তন্তে শ্রহের আদিনাথ চটোপাধ্যার মহাশর ও শ্রহের সীতানাথ দত্ত মহাশরের মধ্যে যে বিচার চলিরাছে ভাহাতে যোগ দিবার আমার ইচ্ছাও ছিল না, আবশুকতাও ছিল না। বেহেতু শ্রহের সীতানাথ বাবু বিশেষ দক্ষতার সহিত বিধানবাদ সমর্থন করিতেছেন। কিন্তু আদিনাথ বাবু তাঁহার গত ১৬ই ভাল্লের তন্তকৌষ্দীতে প্রকাশিত পত্রে গত ১৬ই আবাঢ়ের তন্তকৌষ্দীর প্রাপ্ত স্তন্তে প্রকাশিত আমার "বিধান প্রবর্তন ও বিধান সংস্থাপন," শীর্ষক প্রবদ্ধে ব্যাখ্যাত বিধানবাদ নিত্য নৃতন বিধানবাদ হইতে ভিন্ন স্ক্ররাং বিশেষ আপত্তিজনক বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। আমার ব্যাখ্যাত বিধানবাদ নিত্য নৃতন বিধানবাদ হইতে ভিন্ন কিছুই নহে। স্ক্ররাং বিশেষ আপত্তিজনক হইতে পারে না। ইহা প্রদর্শন করিবার জন্ত এই প্রথানা লিথিতেছি।

শ্রদ্ধের আদিনাথ বাবু তাঁহার পত্রের একস্থানে লিথিয়াছেন, বাহাবা ঈশ্বর কপন কথন বিধান প্রেরণ করেন বলেন আমি প্রান্তঃ তাঁহাদের কথারই প্রতিবাদ করিরাছি। ঈশ্বর বিদান করেন তাহা হইলে "এক একটা বিধান প্রবর্তন একটা বছদিনের স্থপীকত পাপ অসত্যের উপর পুণা প্রেম ও সংত্যের আক্রমণ।" এরপ উক্তির কি স্থার্থকতা থাকে। ঈশ্বর কি প্রতি মৃহত্তেই পাপও অসত্যের উপর আক্রমণ করিতেছেন না বা কবিতে পাবেন না ?

এহলে আদিনাথ বাব তিনটী আপত্তি উথাপন করিয়াছেন।

ন ঈশ্বন কি প্রতি মুহুর্তেই পাপ, অসত্য, অপ্রেমের উপব আক্র
নণ কবিতেছেন ন। ? ২য় ঈশ্বর কি প্রতি মুহুর্তেই পাপ, অসত্য।

অপ্রেমের উপর আক্রমণ কবিতে পারেন না ? ৩য় ঈশ্বর কথন

কথন বিধান প্রেরণ কবেন বলিলে তাহাকে নিত্য বিধাতা বলা

কলৈ লগে

আদিনাথ বাব্র আপতিগুলির উত্তর দিবার পুর্বের আমি বিধান বলিতে কি বুঝি বলা আবশ্রক। বিধান শব্দ ব্রাহ্মসমাজে দান বা বিভবণ অর্থে ব্যবহার হইয়া আদিতেছে। কিছু ইহাতে এরপ বুঝিতে হইবে না যে ব্রাহ্মসমাজে কেহু কথনও অন্ত অর্থে বিধান শব্দ ব্যবহার করেন নাই! সাধারণতঃ এই অর্থেই ব্যবহার হইয়া আদিতেছে। আমি বিধান বলিতে ইচাই বুঝি। পিতা মাতা সাধু সংগ্রন্থ ধর্মসমাজ ভগবং প্রকাশ সকলই ভগবানের বিধান অর্থাৎ তাহার দান; এবং এই অর্থেই বিধান শব্দ ব্যবহার করিয়াছি।

আদিনাথ বাব্র প্রথম আপত্তি ঈশ্বর কি প্রতি মৃহুর্ত্তে পাপ, আপ্রম, অসতাকে আক্রমণ করিতেছেন না ? রজনীর অন্ধকার ভেদ করিয়া ক্র্যোর প্রকাশকে যেমন কবিত্বের ভাষায় অন্ধকারের প্রতি ক্র্যোর আক্রমণ বলিয়া বর্ণনা করা হয়, তেমনি পাপী ছদ্রের কি পতিত সমাজের পাপ মোহান্ধকার ভেদ করিয়া ঈশ্বরের প্রকাশকে পাপ, অসত্যা, অপ্রেমের প্রতি তাঁহার আক্রমণ বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। স্কুরাং ঈশ্বর প্রতি মৃহুর্তে পাপী হৃদ্যের

ও পতিত সমাজের পাপ, অসত্য, অপ্রেম আক্রমণ করিতেছেন বলিলে তিনি প্রতি মুহুর্তে পাপী হৃদয়েও পতিত সমাজে প্রকাশিত त्रिशोह्न वना इस । आिताथ वावृत आशिख देशोर विगरञ्जू যে তিনি পাপী হৃদয়ে ও পতিত সমাজে প্রতি মূহুর্তে প্রকাশিত রহিয়াছেন। বাস্তবিক ঘটনা কি তাই ? জগাই মাণাইর নব-জীবন লাভের পূর্বেও কি ঈশ্বর প্রতি মুহুর্ত্তে তাহাদের নিকট প্রকাশিত ছিলেন ? বৈষ্ণবধর্ণের আগমনের পূর্বে তান্ত্রিক কদাচারে পূর্বে অধঃপতিত বঙ্গ সমাজেও কি ঈখন প্রকাশিত ছিলেন
 বাধ হয় আদিশাথ বাবু কথনও এরূপ বিখাদ করেন না। ঠাবে এছলে বলা আবিশ্রক ভগবান ব্যক্তিগত मानवजीवत कि मानविष्ठभारक अञ्चकाभित्र शौरकन वितरक তিনি পরিত্যাণ করিয়া চলিয়া যান এরূপ ব্ঝিতে ইইবে না। এরপ পরিত্যাগ তাঁহার পক্ষে অসম্ভব। এই বুঝিতে হইবে যে ইহা তাঁহার প্রকাশের অবস্থা নয় আক্রমণের অবস্থা নয়। जामार्मत नदीरत প্রতি মুহুর্টেই তাপ রহিয়াছে, কিন্তু রোগ অথবা অন্ত কোন কারণে এই তাপ বৰ্দ্ধিত হইয়া প্রবল না হইলে বেমন আছে বলিয়াই অমুভূত হয় না এবং তাপাক্রান্ত হইয়াছি বলা যাইতে পারে না, তেমনই নির্বাপিত প্রায় সত্যও পবিত্রতাব তেজ যে পর্যাস্ত কোন ব্যক্তিগত জীবনে কি কোন সমাজে বৰ্দ্ধিত হইয়া তীব্বেগে মোহ পাপ দুরীভূত করিতে আরম্ভ ন। করে, সেই পর্যান্ত ঈশ্বর সেই বাক্তিগত জীবনের কি সমাজের পাপ অসতা অপ্রেম আক্রমণ করিয়াছেন বলা যাইতে পারে না।

আদিনাথ বাবুর দ্বিতীয় আপত্তি ঈশ্বর কি প্রতি মুহুর্কে অস্ঠ্য অপ্রেম ও পাপকে আক্রমণ করিতে পারেন না ৪ অস্ত্য অপ্রেম ও পাপকে সংক্ষেপে মানবের অপূর্ণতা বলা ঘাইতে পারে। স্ব্য যেরূপ পৃথিবী অংশক। সহস্র সহস্রগুণে বৃহৎ हरेगा अ शृथिवीत शालक एड इंट्रात वित्मय वित्मय अश्म वहे কোন মুহুর্ত্তেই সমগ্র আলোকিত করিতে পারে না; সেইরূপ পূর্ণ-স্বরূপ ঈশ্বর আমাদের অপেক। অন্তপ্তণে মহানু হইয়াও আমাদের অনন্ত উন্নতিশালত। প্র্যুক্ত বিশেষ বিশেষ অপূর্ণতঃ-ব্যতীত কোন মৃহুর্তেই সমগ্র অপুণত। দূব কবিতে পারেন न।। প্রতি মহর্তেই আয়াদের জীবনের এক দিকে অন্ধকারাচ্ছন্ন থাকিয়া যাইতেছে। তাহাতে আবার যে অবস্থায় অন্ধকার প্রায় সমস্ত জীবন আছের কবিয়। রাথে সতাও পবিত্রতাব আলোক জাবনের এক নিমৃত কোণে নিবু নিবু অলিতে পাকে, সেই অবস্থাকেও ঈশ্বরের প্রকাশের বা মাক্রমণের অবস্থা বলা কি কোনরূপে সঙ্গত ় আদিনাথ বাবুব 🕏 তীয় আপত্তি ঈশ্বর কথন কথন বিধান প্রেরণ কবেন বলিলে তাঁহাকে নিতা বিধাত। বলা হইল না। এটা সত্য কথা। কিন্তু আমার প্রবন্ধে ষ্টির কথন কথন বিধান করেন। কখন কখন বা করেন না কোখাও এরূপ বলা হয় নাই। আদিনাথ বাবু বলিতে পারেন ঈশ্বর কথন কথন পাপ অসত্য আক্রমণ করেন অথবা প্রকাশিত হন বলিলে কি তিনি কথন কথন বিধান প্রেরণ করেন বলা হইল না ? উত্তরে জিজ্ঞাস। করি ওধু তাঁহার প্রকাশই কি তাঁহাব দান, আর কিছু কি তাঁহার দান নহে ? তিনি কি সর্বা মঙ্গল বিধাতা নহেন, নিত্য বিধাতা অর্থ কি এই যে তিনি প্রতি

মৃহুর্ত্তে একই বস্তু বিধান করিতেছেন ? অতি শৈশবে স্বন্থ জীবিত রাথিয়া ছिলেन। বৰ্ত্তমানে জীবন রক্ষা করিতেছেন। ইহাতে কি তাঁহার নিতা বিধাতৃত্বের কিছু হানি হইতেছে? কথনই না। ঈশ্বর প্রতি মুহুর্ত্তেই কোন না কোন বস্তু বিধান করিতেছেন। এই অর্থে তিনি নিত্য বিধাত। স্বীকার করিলে তিনি কখন কখন বিধান প্রেপ্তর করেন বলা হইল না। তিনি বিশেষ বিশেষ সময়ে। বিশেষ বিশেষ বিধান করেন ইহাই বলা হইল। স্থতরাং क्रेश्वत विरमय विरमय नगरत्र वोक्सर्य, शृष्टेसर्य, मूननमानसर्य, रिक्षवधर्म ७ वाकाधर्म প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ धर्मविधान প্রেরণ করিয়াছেন, বলিলে তাঁহার নিত্য বিধাভূত্বের বিন্দুমাত্র অস্বীকার করা হুইল না এবং তাঁহাকে নিত্য নুতন বিধানের প্রেরয়িতা বলাঁইইল। আদিনাথ বাবু তাঁহার পত্রের এক क्रल विद्याहरून यनि विधानवानीत्मत नकरन क्रेश्वतरक निजा নুতন বিধানের প্রেরয়িতা ও নিত্য নুতন বিধানে বিশ্বাস করেন তাহাতে তাঁহার বিশেষ আপত্তি নাই। আমার ব্যাখ্যাত বিধান-বাদ যে নিত্য নৃতন বিধানবাদ ইহা প্রদর্শিত হইল। স্কুরাং ইহার সম্বন্ধে আদিনাথ বাবুর কোন ক্রমেই বিশেষ আপত্তি থাকিতে পারে না। নিত্যন্তন বিধানবাদ সম্বন্ধে যে কিছুমাত্র আপত্তি পাকাও উচিত নয় তাহা দীতানাথ বাবু প্রদর্শন করিবেন। আমার পত্র সেই উদ্দেশ্যে লিখিত হয় নাই।

এ সম্বন্ধে ইহাই আমার প্রথম এবং শেষ পত্র। সময়াভাবে পবে মাব কিছু লিখিতে পারিব এরূপ আশা নাই।

কলিকাতা।

বিনীত নিবেদক

১৬ই আষাঢ়ের তত্তকোমুদীর প্রাপ্ত প্রবন্ধলেথক।

ব্রাক্ষসমাজ।

নামকরণ — বিগত ২০এ ভাদ্র কলিকাতান্থ শ্রীযুক্ত বাবু অধরচন্দ্র মিত্র মহাশয়ের দিতীয় পুত্র ও শ্রীযুক্ত বাবু অবিনাশ-চন্দ্র সরকার মহাশয়ের দিতীয় কন্তার নামকরণ সম্পন্ন হইয়াছে। শ্রদ্ধাম্পদি শ্রীযুক্ত বাবু উমেশ্চন্দ্র দত্ত মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করিয়া ছিলেন। বালকের নাম স্কুমার ও বালিকাটীর নাম অমিরা রাখা হইয়াছে।

জাতকর্মা — বিগত ২৪এ ভাদ্র ভাগলপুরস্থ শ্রীযুক্ত বাবু জ্ঞানেজ চক্র বন্দ্যোপাধ্যার মহাশরের প্রথমা কল্পার জাত কন্দ্যায়ন্থান হইয়া গিয়াছে। এই উপলক্ষে নবজাতা কুমারীর মাতামহ শ্রীযুক্ত বাবু নিবারণচক্র মুখোপাধ্যার মহাশর সাধারণ ব্যাক্ষসমাজের প্রচার ফণ্ডে এককালীন ২ ছই টাকা দান করিয়াছেন।

বেলুচিন্থানের অন্তর্গত কোরেটা নগরে একটা বান্ধ বিবাহ ইয়া গিয়াছে। ১৮৭২ সালের ৩ আইন অন্থসারে এই বিবাহ রেজেন্টারি করা হইয়াছে। পাত্র শ্রীপুক্ত লেধীরাম নাওদা, বয়স ২৫ বংসর প্রক্রান্ত সক্রতদার। পাত্রী—শ্রীমতী শ্রামাদেবী ইনি বিধবা বয়স ১৫ বংসর। পঞ্জাব ব্রাহ্ম সমাজের শ্রীপুক্ত লছমন প্রসাদ মহাশয় উক্ত বিবাহে সাচার্য্যের কার্য্য করেন।

ত্রক্ষা বিদ্যালয়ের পারীক্ষার ফল—সাধারণ ত্রাহ্ম-সমাজের সংস্কৃত্ত ত্রহ্ম বিদ্যালয়ের বিগত পরীক্ষায় নিম লিথিত ছাত্র ও ছাত্রীগণ উত্তীণ হইয়াছেন।

निम्राखनी।

- >। শ্রীমান্রজনী কাস্ত গুহ
- ২। "রুমণীকান্ত দাস
- ৩। "নীলকান্ত মিত্র
- ৪। ু সতীশচন্দ্র রায়
- . जीतक विदाती
- ৬। "বিনোদবিহারী মিত্র

প্রাথমিক ঝেণী।

- ১। খ্রীমতী প্রেমকুস্থম সেন
- २। " हेमूमजी रेमज
- ৩। শ্ৰীমান্ গোপালচক্ৰ ছোহ
- ৪। ত্রীমতী প্রফুলবালা বহু
- बीमान् स्थीत हत्त हाछाशाधात्र
- ৬। খ্রীমতী স্থাসিনী ভট্টাচার্য্য
- १। श्रीमान् माधू हत्र १ (म

দান প্রাপ্তি—ফরিদপুরের জঙ্গ শ্রীযুক্ত বাবু বিহারীলাগ শুপ্ত মহাশয় তাঁহার ১মা কভার বিবাহ উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাজে ১৫ টাকা ত্রবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের দাতব্য বিভাগে ১৫ টাকা দান করিরাছেন। আমরা ক্লতজ্ঞতার সহিত এই দান প্রাপ্ত স্বীকার করিতেছি।

দীক্ষা — বিগত ১০ই ভাদ্র রবিবার বরিশাল ব্রহ্মানিরে সায়ংকালীন উপাসনাত্তে ফরিদপুর জেলার অন্তর্গত ওলপুর গ্রাম নিবাসী প্ররিশাল ব্রহ্মাছন কুলের ছাত্র প্রীবেণীমাধব দে ব্রাহ্মধর্ম্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। প্রচারক বাব্ মনোরঞ্জন গুহ্মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন। মঞ্চলময় প্রমেশ্বর ধর্ম্মরাজ্যে নব প্রবিষ্ট যুবকের প্রাণে ধর্ম্মবল প্রদান কর্মন।

সভা —গত ১১ই ভাদ্র সোমবার অপরাক্তে সিটি কলেজ ভবনে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কলিকাতান্থ সভাগণের একটা Informal সভা হইয়াছিল। তাহাতে ব্রাহ্মণণ ব্রাহ্মণর্ম প্রচাব এবং ব্রাহ্ম সমাজের আবশ্রকীয় কার্য্যদকল সম্পন্ন হইবার সাহায্যার্থ আপন আপন আয়ের কত অংশ দান করিবেন সে বিষয়ের আলোচনা হয়। সভায় বিভিন্নভাবে সভাগণ আপনাদের মত **अकाम क्रियाहित्नन, अधिकाश्म वकाई अक्रथ मात्नव अ**रग्रा-জনীতা স্বীকার করেন। তবে কি হারে দান করা উচিত এবং সকল প্রকার আয়সম্পন্ন ব্যক্তিগণেরই একই হারে দেওয়া কর্তব্য কিনা এ সকল বিষয়ে মতেব ভিন্নত। প্রচুর ছিল। অর্থাভাবে ব্রাহ্মদমাজ কেবল যে প্রচার কার্যোরই ভাল বন্দোবস্ত করিতে পারিতেছেন না এমন নয়। অনেক হিতকর কার্যাও সম্পন্ন ক্রিতে পারিতেছেন না। ব্রাহ্ম বালকবালিকাদিগের শিক্ষাব স্থবন্দোবন্ত, নিরাশ্রয়া বিধবাদিগের জন্ম কোন সহপায়, দরিদ্র গণের সাহায্য, ভাল ভাল গ্রন্থ প্রচার এবং পত্রিকার উন্নতি প্রভৃতি বহুবিধ কার্য্য আছে যাহা সম্পন্ন না হওরার বিশেষ ক্ষতি হইতেছে। স্তরাং অর্থ সংগ্রহ প্রচুর পরিমাণে আবশ্রুক। এসকল প্রয়োজনীয় কার্যাসাধনার্থ ত্রাহ্মগণ অর্থদানে মুক্তহন্ত না হইলে তাঁহাদের সমাজ দিন দিন হীন হইয়া পড়িবে । আশ। করি উক্ত সভার আলোচ্য বিষয় এথানেই শেষ না হইয়া আরও বিশেষ ভাবে আলোচিত হইবে।

বিজ্ঞাপন।

''গ্রামবাসী''

(সাপ্তাহিক পত্ৰ)

মকঃস্থল বাসীগণের মুখপাএ। অগ্রিম বাষিক ডাকে ১॥০ দেড় টাক।।

হাতে ১৲ এক টাকা। নগদ মূল্য ··· <ে এক পয়সা।

কেহ এজেণ্ট হইয়া এক খণ্ডের অধিক বিশি করিলে, প্রত্যেক থণ্ডের মূল্য এক টাকা। দশ থণ্ড বিশি করি^{লে} বিনামূল্যে এক থণ্ড পাইবেন। বিজ্ঞাপনের মূল্য খুব কম কিন্তু অগ্রিম দেয়। অস্তাস্ত কার্য্য সম্বনীয় প্রাদি নিম্নলি^{থিত} ঠিকানায় জ্ঞাতব্য।

উপেক্রনাথ মল্লিক। গ্রামবাসী কার্য্যাধ্যক। রামক্বক্ষপুর ঘাট রোড হাবড়া পোট।

তত্ত্ব-কৌমুদী

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ভাগ। ১২শ সংখ্যা।

১৬ই আধিন মঙ্গলবার, ১৮১১ শক, <mark>ত্রান্স সমূৎ ৬০</mark>

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২া।
মকন্মলে ৩
প্রতি গণ্ডের মূল্য 💉

তুই পৃষ্ঠ।

এক পৃঠে, আমি হীন, হর্মল, মলিন, বার্মাত্রে কাঁপি ভূণ সম; অশক্ত বহিতে ভার, তমু মন কীণ; বারে বারে হই ভগোদ্যম।

জন্ম পৃষ্ঠে, তোমা দনে বেখানে মিলন, 'তথা আমি বলেতে হৰ্জন ; তোমারি বলেতে বলী, তথা প্রলোভন, কটাক্ষেতে হর পরাজয়।

সম্পাদকীয় মন্তব্য।

বিশ্ব স তুর্গ —পৃথিবীর অনেক ঈশ্বর প্রেমিক সাধু বিশ্বাদকে ছর্গের সহিত তুলনা করিয়াছেন। ছর্গে যাহারা বাস করে তাহারা শত্রুকুলের গোলাগুলি বর্ষণে ভয় পায় না ; কারণ তাহারা এমন স্থানে আছে, যেখানে সে গোলাগুলি পৌছে না। বিখাসকে হর্গ বলিবার অভিপ্রায় এই যে প্রকৃত বিখাসী ব্যক্তিও এমন স্থানে বাস করেন যেখানে বিপক্ষগণের গোলাগুলি পৌছে ন:। তিনি আপনাকে পরীক্ষা করিয়া দেখিতে পান, ए विशक्कशंग रच निकार्याम कतिराज्यहः, जाहा ममृनकः; তাহাতে বাস্তবিক ঐ সকল দোষ আছে, তাহা হইলে তিনি ণীরচিত্তে বলেন, আমি যথন এই অুপরাধে বা এই ছর্মলতাতে निश्च उथन छ आमि निरमहे आशनारक मात्रिया ताथियाहि, অপরে আর কি মারিবে? অন্ত লোকে উপলক মাত্র। এ ব্যক্তির ^{হন্ত হইতে} আবাত না আ**ত্মক, অ**পর কাহারও হন্ত হ**ই**তে খাসিবে এবং আদা উচিত। এছলে নিন্দাকারীর পশ্চাতে ধাবিত না হইরা নিজের সংশোধনের প্রতি অধিক দৃষ্টি করি। ^{স্তরাং} তাঁহার বিৰেষ বৃদ্ধির উদর হর না। আবার যদি আপ-় ^{নাকে} নিরপরাধী বলিয়া অস্তব করেন, তাহা হইলেও বিৰেষ বৃদ্ধি উৎপন্ন হয় না; কারণ সেধানে বিশাস ভাঁহাকে সভ্যের ^{উপরে} প্রতি**টিত রাথে। তি**নি মনে মনে বলেন এ রাজ্য যদি ।

জনারের রাজ্য হর এবং তাঁহারই ধর্ম নিরম্বারা শাসিত হয তবে এথানে অসত্য জির লাভ করিতে পারে না, আমি কেন ব্যস্ত বা উদ্বিগ্ন হইব ? আমি সত্যের সেবক, সত্যেরই অনুসরক করা আমার কার্য্য, আমি তাহাই করি। মানবের প্রীতি, বা অপ্রীতি, প্রশংসা বা নিলা সমুদয়ই ঘটনার অধীন ও অজ্ঞতা-প্রস্তুত, স্কুতরাং তত্পরি স্থুখ হুংথের ভিত্তি স্থাপন করা যুক্তি যুক্ত নহে। বাহা করিয়াছি তাহা কি সং ও ঈশরের অনুমো-দিত ? যদি তাহা হয়, আমি তাহাতেই লগ্ন রহিলান, অনুমান বিরাগ, পুরস্কার তিরকার, কিছুরই প্রার্থী নহি। যাহা আসে আস্ক। এই বিশ্বাসের হুর্গকে বাহারা অধিকার করিয়াছেন, তাঁহারাই জগতের শান্তিতে বাস করেন; সত্যের অনুসরক করিতে গিয়া বিরোধ উৎপন্ন হইতে পারে কিন্তু বিদ্বেষ উৎপন্ন হয় না; সৎকার্য্যে তাঁহারা পরিশ্রান্ত হন না; সত্যের অনুসরবেণ ক্রান্ত হন না।

জাতি-পাশ-জাতিতেদ প্রথা এদেশে একটা কঠিন পাশের স্থার। এই পাশ সহজে ছেদন করা যার না। এ দেশে কত ধর্ম সম্প্রদায় উথিত হইলেন, যাহারা এই পাশকে ছিল ভিন্ন করিয়া কেলিবার আকাজ্জা করিলেন। কিন্তু এই পালেব যে कि মোহিনী শক্তি আছে, অবশেষে ইহা তাঁহাদিগকে কোন না कान थकारत कड़ारेम्रा स्मावक कतिन। महास्मा नानक विधान চক্ষে ধর্মের মহুংভাব কিঞ্চিং দর্শন ক্রিয়াছিলেন, তিনি এই জাতি-পাশকে ছেদন করিবার প্রয়াস পাইলেন; যতিনিন তাঁহার শক্তি জাগ্রত থাকিল, তভদিন একটু উদ্ধারতা থাকিল, কিন্তু অবশেষে তাঁছারই সম্প্রদারের মধ্যে জাতিভেদ প্রথা প্রচলিত হইল। চৈতক্তের সম্প্রদায়েরও সেই দশা ঘটিয়াছে। এখনও পৃহত্যাগী বৈরাগীদিগের মধ্যে বোধহয় জ্ঞাতি বিচার नारे, किंद देवकव नगाम कां जिल्ला अशे विनामान রহিরাছে! এমন কি খুটধর্মকেও. প্রথম প্রথম জাতিগত কুসংখারের নিকট পরাত্ত হইতে হইরাছে। দাকিণাতো অন্যাপি এমন সকল খৃষ্টিরান আছেন, যাহাদের মধ্যে ত্রাহ্মণ খুটান, শুদ্র খুটান প্রভৃতি শ্রেণী দৃট হয়। আহ্নণ পৃ^{টান} দিগের উপবীত আছে; এবং তাহার৷ শুদ্র খৃষ্টানদিগের সহিত

আহারাদি করেন না; কিম্বা পুত্র ক্ষ্মীর বিবাহ দিতেছেন না। দকল রোমান কাথলিক ধর্মপ্রচারক ঐ সকল দেশে খৃষ্ট ধর্ম প্রচার করিতে আসিয়।ছিলেন, তাঁহার। বিবেচনা করিয়াছিলেন যে জাতিভেদ একটা সামাজিক প্রথা, উহার সহিত ধর্মের কোন সংস্রব নাই। ভাল, যদি জাতিভেদ রক্ষা করিতে চায়,--করুক, তাহাতে ক্ষতি কি ? এই বলিয়া তাঁহারা ত্রাহ্মণদিগকে ত্রাহ্মণ রাথিয়া খৃষ্টান করিয়াভিলেন। তাহার হুইটা অনিষ্ট ফল ঘটি-য়াছে, প্রথম সেই সকল সম্প্রদায়ের মধ্যে গৃষ্টধর্মের ভাব মৃত হইয়া গিয়াছে, দিতীয়, সেই সকল ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীর খুষ্টানের মধ্যে সর্কাল জাতিগত প্রাধান্তজনিত বিবাদ বাঁধিয়া তাহাদের একতা ও উন্নতির পথে স্থমহৎ প্রতিবন্ধক উৎপন্ন করিয়াছে। ইহা দেখিয়াই কিছুকাল পূর্ব্বে তদানীস্তন্ লর্ড বিশপ এই আদেশ প্রচার করিয়াছিলেন যে, কেহ জাতিভেদ রক্ষা করিয়া খুষ্টান ছইতে পারিবে না। এই আদেশ প্রচার হওয়াতে কিছু দিন ঘোরতর বিবাদ চলিয়াছিল, এক্ষণে জাতি রক্ষা করিয়া খুষ্টান হইবার প্রথা বিলুপ্ত হইয়াছে। পুর্ব্বোল্লিথিত সম্প্রদারদিগেব জায় বাহ্মসমাজও জাতিপাশ ছেদন করিতে কৃতসংকল হুইয়া-ছেন। আমরা জানি, আমাদের বিশ্বাস ও কার্যোর এই অঙ্গ-টুকু ছাড়িয়া দিতে পারিলে আমরা অদ্যই প্রচুর পরিমাণে লোকাহরাগ লাভ করিতে পারি। কিন্তু আমরা সে লোকাহ-বাগের প্রার্থী নহি। আমরা বিশ্বাস করিয়াছি এবং প্রতিজ্ঞা করিয়াছি যে এই পাশকে ছেদন করা ত্রাহ্মধর্ম্মের একটা প্রধান লকা। নাগ-পাশ-বন্ধনের ভায় এই বন্ধনের ভিতর ইইতে মানুষকে বাহির করিয়া আনিতে না পারিলে, ত্রাহ্মধর্মের উন্নত সানাজিক আদর্শ কথনই কার্য্যে পরিণত হইবে না। স্বতরাং ব্রাহ্মদিগকে দেখিতে হইবে কি উপায় অবলম্বন করিলে তাঁছার। এই পাশ হইতে আপনাদিগকে রক্ষা করিতে পারেন। তাহা না হইলে ত্রাহ্মণর্ম হিন্দুধর্মের প্রকাণ্ড কুক্ষির মধ্যে একটু मामाल द्वान आंश्व इरेग्ना, তाहाट हे विनीन इरेटा।

আদর্শ কৃষকালয়—কিছুকাল হইতে মাক্রাজ গবর্ণমেণ্ট এনেশে বিলাতি কৃষি প্রণালী প্রবর্ত্তিত করিবার জন্ম চেটা করিবিভালন। এতদর্থে মাক্রাজের সন্নিকটবর্ত্তী সরদাপেট নামক স্থানে একটা কৃষিবিদ্যালয় স্থাপিত হইরাছিল। তাহাতে কৃষিবিদ্যালয় স্থাপিত হইরাছিল। তাহাতে কৃষিবিদ্যা বিষয়ে স্থযোগ্য ব্যক্তিদিগের দ্বারা উপদেশ প্রদন্ত হইত। তদ্ধির স্থানে প্রক একটা আদর্শ কৃষকালয় (model farm) থোলা হইরাছিল। তাহাতে কৃষি কার্য্যের উপযোগী সম্পন্ম উপকরণ ও আয়োজন রাখিয়া কিরূপে কৃষিকার্য্য করিতে হয় তাহা দেখান হইত। কেবল উপদেশ দিলে চলিবে না, একটু ক্রায়ত ভূমির মধ্যে কার্য্যতঃ করিয়া দেখাও যে তোমার উপদেশাস্থারে কার্য্য করিলে, বাস্তবিক স্কুল ফলিবার সম্ভাবনা। একবার কার্য্যতঃ দেখিলে লোকের মনে উপদেশের ভাব জন্মের মত নিহিত হইবে। এই প্রকার চিস্তা হইতেই আদর্শ কৃষকালরের স্থিই হইয়াছিল। এথাও প্রতিদিন বিজ্ঞানবিদ পঞ্চিত্রগণ এই কার্য্য করিতেন। মনে কর একজন পণ্ডিত স্থির করিতেন।

বে এক নৃতন উপায়ে রেলের গাঁটিকত চালান বাইতে পারে-जिनि ध्रथरम जाहान मरनत जाव कागरक निवक कतिरामनः কয়েক জন বিজ্ঞ ব্যক্তিকে মনের ভাব বুখাইবার চেষ্টা করি লেন। শেষে সর্ব্ধ সাধারণের বিশাস উৎপাদনের জন্ত কুদ্রারতন রেল, কুদ্রারতন গাড়ী সকল নির্দ্ধাণ করিয়া নিজের বাগানে একদিন নৃতন প্রণালীতে চালাইলেন, ও সর্বসাধারণকে দেখি-বার জন্য নিমন্ত্রণ করিলেন। যাহারা একবার দেখিল ভাহাদের সংশয় জ্বোর মত চলিয়া গেল। মাজ্রাজ কৃষি বিদ্যালয়ের উপদেশ ও जामर्ग कृषकांगग्न এই উভয়ে যে প্রভেদ ভাক্ষণর্ম ও ব্রাহ্মসমাজে সেই প্রভেদ। বিদ্যালয়ের মধ্যে যে ক্রবিতত্ত্ব সন্ধরে যে উপদেশ প্রদত্ত হইত আদর্শ কৃষকালয়ে তাহা হাতে কলমে করিয়া দেথান হইত। ব্রাহ্মসমাজ সম্বন্ধেও সেইরূপ। ব্রাহ্মগণ ব্রান্ধর্মের যে উপদেশ প্রাপ্ত হইরাছেন, তাহা ব্রাহ্মসমান্তর্প কুদ্র কেত্রের মধ্যে কার্য্যে পরিণত করিয়া দেখাইবেন। অতএব ব্রাহ্মসমাজের বেদীর উপদেশ অপেকা ব্রাহ্মসমাজের নৈতিক ও আধ্যাত্মিক উন্নতি ত্রাহ্মধর্ম প্রচারের উৎকৃষ্টতর সহায়। কিন্ত ব্রাহ্মসমাজের উন্নতি বলিলেই উহার অন্তর্গত পরিবার সকলের উন্নতি, ইহার অন্তর্গত বালক বালিকাদিগের উন্নতি বুঝায়। সতা আমরা যতই হৃদয়ে অতুভব করিব,ততই আমাদের ব্রান্ধ সমাজের আভ্যন্তরীণ উন্নতির দিকে দৃষ্টি পড়িবে।

अनामी त्यात व्यान्धे कल—श्राप्त मन वर्मत गठ इहें। উত্তর পশ্চিমাঞ্চলে একজন ব্রাহ্ম বাস করিতেন। তাঁহার হিন্দ ধর্ম মতে পরিণীত। পত্নীর বিয়োগ হইলে, তিনি ১৮৭২ সালেব ৩ আইনের মতে ব্রাহ্ম পদ্ধতি অনুসারে এক বিধবার পাগিগুট্ করিয়াছিলেন। তাঁহার হিন্দু পত্নীর গর্ত্তপাত এক পুদ্র ছিল, আবার ত্রান্ধিক। পত্নীর গত্তেও একটী কন্তা জন্মিল। ইহা: অর দিন পরেই পতি পরলোকগত হইলেন। কিছুকাল পরে বিধনা ত্রান্ধিকাপত্নী সন্তানদিগের ও পতির বিষয়ের কর্ত্তভা প্রাপ্ত হইবার জন্ম সাদালতে প্রার্থনা করিলেন। জঙ্গ জিজ্ঞাস कतिराम-"(जामारमत विवाह त्य ति क्रिष्टोति इटेग्ना छिन जो हात সাটিফিকেট কই ? ১৮৭২ সালে ৩ আইনে বিবাহান্তে রেছিটা রের যে একথানি সার্টিফিকেট লইয়া রাথিবার নিয়শ আছে উক্ত দম্পতী ওদাদীক্তবশত: তাহা রাখেন নাই। স্কুতরাং বিধবা উরুণ **मिलान, य विवारहत्र ममग्र मार्जिकिटक** न अग्र। हत्र नाहे ; किंड ডেপুটা কমিশনারের স্মীপে বিবাহ হইরাছিল এবং তিনিট ति अष्टीतित कार्या कतिया हिलान, **डाँ**रात आफिरन विवाहन রেজিন্টার আছে। ছই মাস ধরিয়া অমুসন্ধান হইতেছে ডেপ্টা ক্মিসনারের সে থাতা পাওয়া যাইতেছে না। জন্ত ব্লিয়াছেন বিবাহ যথন রীতিমত আইন অফুসারে রেজিষ্টারি হইয়াছিল, তথন তিনি সেই পাকা দলিল দেখিতে চান। তাহা থাকিতে অপর প্রমাণ লইবেন না। নতুবা তাঁহার বিখাস উৎপাদনের উপযুক্ত অনেক প্ৰমাণ আছে। সেই বিবাহে যে তিনজন সাকী र्हेग्राष्ट्रिन, उाहारान्त्र क्टेंजन এथन अहं महत्त्र चाह्नः বিবাহের সে সমাচার ত্রাহ্মপাবলিক ওপিনিয়ান ও তর্কৌম্ দীতে প্রকাশ হইরাছিল, ভাহা আছে; তৎপরে সেই সং^{বার}

ব্ৰান্ধণিক্লিকাডে ব্ৰাহ্ম বিৰাটিছর ভালিকা ভূক্ত হইরাছিল, जाहां ह चारह, किंद्र सम विगिट्डाइन शाका गरिन वर्धन चारह, তাল থাকিতে এসকৰ সাকী হঠাৎ গ্রহণ করিতে পারি না। ডিপুটা কমিদনারের আফিষ খুঁজিরা সেই রেজিটারি পাওয়া যার किना मुक्त्य । अधिकार विधवां विश्ववां अथन रचात्र विभागत मार्था প্রিয়া ভাসিতেছন। বাঁহারা ১৮৭২ সালের ও আইন অফুসারে বিবাহ করিয়াছেন তাঁহাদের সকলকে আমরা সতর্ক করিয়া मिटिक, यमि चीत्र चीत्र विवाद्य मार्वेकित्क दब्रिक्टीदात्र मिक्छ চইতে না লইয়া থাকেন অবিলম্বে এক এক থানি সার্টিফিকেট সংগ্রহ করিয়া নিবেন। নভুবা যদি তাঁহাদের বিধবা পদ্মীদিগকে সাক্ষী সংগ্রাহ করিয়া স্বীয় স্বীয় বিবাহের বৈধতা প্রতিপন্ন করিতে হর, তাহা হইলে ৩ আইনের আশ্রয় লওরাই রুথা। বিশেষ যাঁহাদের বিধবা ও সম্ভানদিগের দায়াধিকার লইয়া বিবাদ করিবার লোক আছে, ভাঁহাদের পক্ষে এ কার্যটা অবশ্র कर्त्वता । ज्यानाक देश वाध वय मान करतन द्वालिक्षीत्वत शाकारक এক একটা স্বাক্ষর করিলেই পতি ও পত্নীর দায়িত্ব শেষ হইল; তাহা নছে। তাঁহাদের প্রত্যেকেরই পত্নীর নিকটে বিবাহের এক একথানি সাটিফিকেট থাকা আবশ্রক। এ বিষয়ে উদাসীত করিলে এ**কটী কর্ত্তব্যের লঙ্খন হ**য়।

ত্তা সমিতি—আগামী স্তাশনাল কংগ্রেশের অধিবেশন কালে বোদ্বাই নগরে যে আদ্ধান সমিতির অধিবেশন হইবে, ভাহাতে স্থীয় স্থীয় সমাজের প্রতিনিধি প্রেরণ করিবার জন্ত অভ্রেষ করিয়া প্রভাক রাজসমাজে যে পত্র প্রেরিত ছইয়াছে, ভাহাতে একটা অন্থরোধ এই আছে, যে তাঁহাবা সেই সঙ্গে উক্ত সমিতিতে কি কি বিষয়ের আলোচনা করিতে ইচ্ছা করেন ভাহাও বলিয়া পাঠাইবেন। বোদ্বাই নগরের প্রার্থনা সমাজের সম্পাদক ইতিমধ্যেই এবিষয়ে এক পত্র লিথিয়াছেন, ভাহাতে নিম্লিথিত কয়েকটী আলোচ্য বিষয়ের উল্লেখ আছে—

- (১ম) ভারতবর্ষের সমুদার সমাজের একটা সাধারণ নাম ইংতে পারে কি না, অর্থাৎ কেছ প্রার্থনা সমাজ, কেছ ব্রাহ্ম-সমাজ এইরূপ ভিন্ন ভিন্ন নাম না লইরা সকলের পক্ষে এক সাধারণ নাম লওয়া সম্ভব কি না প
 - (२१) ১৮१२ সালের ७ আইনের সংশোধন।
 - (০য়) আহ্মধর্ম সম্বনীয় গ্রন্থাবলীর সংগ্রহ ও প্রচার।
- (৪র্থ) **অক্তান্ত ধর্ম সম্প্রদান্ত্রের কোকের সহিত ত্রাক্ষদি**গের কি সম্বন্ধ পাকিবে, তৎসম্বন্ধে বিচার ।
 - (ध्म) बाक्ष अञ्चीन भव्छि मच्दक आत्माहना।

নোদাই প্রার্থনা সমাজের সভ্যগণ যেমন এই পাঁচটা বিষয়
শুক্তর ও বিশেষ বিচারের উপযোগী বলিরা নির্দারণ করিয়াছেন,
সেইরপ চিস্তা করিলে অক্তান্ত সমাজও অনেক আলোচা
বিষয় নির্দারণ করিতে পারিবেন। যাহা হউক, এই সমিভিটা
যাহাতে স্ফলপ্রাদ হয়, সে বিষয়ে সকলের মনোবোগী হওরা
কর্ত্ত্ব্য।

मन्भानकौष ७ श्राश्च श्रवस ।

"ত্যাগেনৈকেনামৃতত্ত্ব মানস্তঃ"

উপরে যে সংস্কৃত বাকাটী দেওয়া হইল তাহার অর্থ এই, পুর্বকালের সাধকগণ "একমাত্র ত্যাগের দ্বারাই অমূত্র লাভ করিয়াছিলেন"। কিছদিন হ'ইল ভক্তিভালন মহর্ষি দেবেজনাপ ঠাকুর মহাশরের মুধ হইতে উপনিষদের এই প্রাচীন শক্তালি ন্তন ভাবে বিনির্গত হইয়াছে। তথকোমুণীর সম্পাদক ইতি মধ্যে একদিন উক্ত ভূক্তিভালন মহাশয়ের সহিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছিলেন। তিনি দেখিলেন মহর্ষি এক অত্যুক্ত ও অতি গভীর ভাবের মধ্যে বাস করিতেছেন, এই শব্দ গুলি সেই ভাব প্রস্ত। তিনি বলিলেন, ত্যাগই ধর্মজীবনের প্রধান সাধন। ত্যাগ শব্দের অনেক অর্থ। ইহার এক অর্থ দান অপর অর্থ বিচেছদ। কিন্তু মহর্ষি মহাশর যে অনুর্থে ইহার ব্যবহার কবি-তেন, তাহা এই, যে কোন বাসনা ঈশ্বরের ইচ্ছা বিরুদ্ধ, অথবা যাতা জনমকে তাহা হইতে আকৃষ্ট করিয়া বিষয় মধ্যে নিকিপ্ত করে, তাহাকে সংযত করাই ত্যাগ। এই যে বাসনার সংযম, क्रेश्वरत्त अकृत्तार्थ आश्रनात अजीहे वस्तत महिक वित्कृत हेशान ক্তায় সাধনের অমুকৃল আর কিছুই নাই। তিনি বলিলেন ইচাতে হৃদয়কে সবল করে এবং আত্মাকে ঈশ্বর প্রীতিতে উদ্দীপ করে। তংপরে বলিলেন এই আধ্যাত্মিক সাধন অতি চন্ধর ও শ্রমদাধ্য ও যাতনা বছল বলিয়া লোকে দাধনের বাহিক প্রণালীর অবলম্ম করে। কেছ পঞ্চপা হয়, কেছ শরীর শুক করে, কেহ কুম্বক প্রান্ত করে। সে সকলে কি ফল। পঞ তপা হওয়া ত সহত্র কথা আত্মতপা হওয়া অতি কঠিন।

व्यामता नकत्वरे जानि এवः नर्खना वित्रा शांकि एव आक-সমাজের সাধন প্রণালী আধ্যাত্মিক; তাহা কোন শ্রীরের বা মনের বিক্লান্ত অবস্থার উপর নির্ভর করে ন।। জগদীখন শরীরের স্বাস্থ্য লাভের যে সকল উপায় করিয়াছেন, ভাষ্টা কেমন স্বাভাবিক ও কেমন স্থলর। ছল, বায়, তাপ, ইহার। নিতা তোমার নিকট উপস্থিত, তোমার অভাস্তরের যন্ত্র প্র ধাতু সকলে নিরম্বর কার্যা করিতেছে। তুমি ইহাদের শক্তিকে वाधा मिछना, मजीतरक ऋध वा ७ध कति छना, चाछा ज्ञालनाश्रीन ষ্টির। উঠিবে। এই দেহের স্বাস্থ্য বৃদ্ধির জন্ত কোন চিকিং-সককে এরূপ বলিয়া দিতে হয় না যে তুমি প্রতাহ আধ ঘণ্টা পদৰয় উথিত করিয়া হতের বারা হাটিবে, কিখা নিম্বার বাবা विद्राह्म ना कतिया मुख्यात निया वसन कतित्व। यस्ताता (मह शवि-পুষ্ট, স্বল, ও কার্য্যক্ষম হয়, সেই করুণামর বিধাতা প্রকৃতির नमूनम्र भक्तिक जाहात उभाराशी ७ महाम्र कतिया निवाहन। এই দেহটা তাঁহার রূপায় কেমন স্থন্দর প্রতিপালিত হয়,আয়াট। কি তাঁহার ক্রোডে অবস্থিত নয় ? আত্মার স্বাস্থ্য ও বল্লাভ কি ইহার পক্ষে সহজ ও সুথকর করিয়া দেন নাই ? আমাদেব আধ্যাত্মিক প্রকৃতিকে কি তাহার অমুকৃল করিয়া দেন নাই ? विनि नीज चरस चावात तृक मकनरक इतिज वर्ग-मिं क करतन, यिनि विक्क्यितिशृद्ध नुजन शक नित्रा आव्हामन करतम, मकनदक

नवसीवन প্রদান করেন, তিনি कि सामार्गत आश्वारक अवनन দীন ও মুহুমান হইরা থাকিবার জয় হাট করিবাছেন; তাহাকে নব স্বাস্থ্যে স্থশোভিত করিবার উপায় কি করেন নাই ? ইহা স্বীকার করিলে এই বলিতে হয় তাঁহার নিকটে আমার এই বিচিত্ৰতা সম্পন্ন আত্মা অপেকা একটা তরু বা একটা পক্ষীর মূল্য অধিক। ইহা আমরা কথনই বিশ্বাস করিতে পারি না। আমাদিগকে স্বৃদু ভাবে এই সত্যটী ধরিতে হইবে যে তিনি প্রকৃতিকে আমাদের আধ্যাত্মিক উন্নতির অতুকৃত্ করিয়া দিয়াছেন। ধর্ম সাধন কথনই ক্লেশজনক বা শরীর মনের বিকারজনক হইবার কথা নহে। তবে যদি তাহা আমা-দের পক্ষে ক্লেশজনক হয়, আমাদের বিশ্বাস ও প্রেমের অল্পড়াই তাহার এক মাত্র কারণ। এই যে ত্যাগের কণা বলা হইয়াছে, ত্যাগ এক জনের নিকট অতি ক্লেশকর, অপরের পক্ষে অতি स्थिष्ठ : य वाक्तित विधान नेधरत स्थित रहा नारे, य এখনো তাঁছাকে স্ত্যের স্ত্যু বলিমা ধরিতে পারে নাই, যাহার চিত্ত এখনো বিষয়ের মধ্যে পরম পদার্থ অস্বেষণ করে, ত্যাগ তাহার পক্ষে ঘোর ভারবোঝা স্বরূপ। সেই প্রকার ঈশ্বরে যাহাদের প্রীতি নাই, তাঁহার নামে যাহাব আনন্দ নাই, তাঁহার চিস্তাতে যাহার আবাম নাই, তাঁহার ইচ্ছা পালনে যাহার উৎসাহ নাই, ত্যাগ তাহারও পক্ষে তুর্বহ ভার স্বরূপ, ঘার পরাধীনতা। चाचा नःशम यथन (अम इरेटि উৎপन्न वस उथनरे स्मिष्टे, यथन শাসন হইতে উৎপন্ন তথনই তিক্ত। স্বতরাং প্রেম যথন সাধনের চালক না হইয়া শাসন ধখন চালক হয় তথনই ছ:থ উৎপন্ন করে। যে ব্যক্তি বিশ্বাসী ও যিনি প্রেমিক সমুদায় প্রকৃতি তাঁহার সাধনের অফুকুল, ত্যাগ তাঁহার নিকট স্থমিষ্ট বস্তু ও বলপ্রদ। ঈশ্বর করুন এই মহাস্ত্যটী দুঢ়রূপে আমাদের হৃদয়ে মুদ্রিত থাকুক।

এশী শকি।

আকাশে বায়ু আছে, কিন্তু সকল সময় তাহার গতি পাকে না। গ্রীয়ে প্রাণ ছটফট করিতেছে, ঘরের ভিতর থাকা দায়, অথচ বাছিরেও একবিন্দু বাতাস নাই, গাছের পাতাটী পর্যাস্ত নড়িতেছে না, এরপ ঘটন। নিতান্ত বিরল নহে। আনেক সময় প্রবল বাত্যা বা বৃষ্টির পূর্বের দেখা যায় আকাশ কৃষ্ণবর্ণ মেঘে আচ্ছন হইয়া রহিয়াছে, কিন্তু বায়ুমণ্ডল একেবারে নিশ্চল, वुक्तभव मुकल এक्कार्त निम्मन, नमीद कल निखदन, खित। সাধারণতঃ বায়ুম গুলের অবস্থা সচল; বৎসরের মধ্যে অধি-ু কাংশ সমন্ত্র আমরা আমাদের চতুর্দিকস্থিত বায়ুরাশির চঞ্চলতা ও গতিশীলতার প্রমাণ দেখিতে পাই। বায়ুর এই গতি আছে বলিয়াই খোর গ্রীয়ের সময়েও আমরা মলয়ানিল সেবন করিয়। শরীর শীতল করি, বায়ুর গতি আছে বলিরাই দাগর পুষ্ঠ হইতে ৰুৰীয় বাশরাশি মাসিয়া পৃথিবীর উত্তাপকে দ্রীভূত ও পৃথি-वीटक भक्रमानिनी करत, वायुत्र शक्ति आह्य विवाह कर्नाकीर्ग হানের দূষিত বাব্দ সমূহ দুরীক্বত ও ঐ সকল স্থান মহযোর वाम्बद र्याणा हत । वाहुद धरे नाधादण शकि स्नामता शाह र

সর্বাদাই অভুত্তব করিরা থাকি। কিন্তু এই সাধারণ গতিভিত্ত বায়ুর আর এক প্রকার গতি সাছে। গতির কথা বলা হইল, ভাহা ধীর ভাবে বৃক্ষপত্র সকল সঞ্চালিত অথবা সাগর বক্ষ আন্দোলিত করে। সে গতি দেখিয়া বায়ুর শক্তি বিশেষ ভাবে অনুভব করা যায় না। কিন্তু আবার এই বায়ু যথন প্রবল বাত্যারূপে প্রবাহিত হই রা হইরা প্রকাও মহী-রুহ সকলকে সমূলে উৎপাটিত করিতে থাকে, সাগর বকে উত্তাল তর্দ্মালা উত্থাপিত ও বৃহৎ বৃহৎ অর্ণব পোত সকলকে ক্রীড়নকের স্থার ইতন্ততঃ বিক্লিপ্ত করিবা মান্তবের কুত্র শক্তিকে উপহাস করিতে থাকে, তখন মামরা পূর্ববর্ণিত শাস্ত বায় রাশির পরাক্রম দেখিয়া স্তম্ভিত ও ভীত হই! বায়ুর এই প্রবল পরাক্রম প্রকাশিত হইলে আমরা তাহাকে পৃথিবীর পকে. বিশেষতঃ যে দেশে উহা সংঘটিত হয় তাহার পক্ষে, একটা विलय घटेना विनया शांकि। (कवन ठांहा नय,--विकानाविष्ण) স্থির করিয়াছেন এবং আমরাও অনেক সময় দেখিতে পাই যে এইরূপ প্রবলবাতা৷ আপাতত: অতাম্ভ ভয়ানক হইলেও.ইহা যে দেশে বা স্থানে সংঘটিত হয় তাহার প্রভৃত উপকার সাধন কনে। এইরপ বাত্যাদারা বায়ুমগুলের তাপের সামঞ্জ সংসাধিত হয় এবং বছদিনের সঞ্চিত দৃষিত বায়ু পরিশোধিত হয়।

যদিও আমরা এইরপ প্রবল বাত্যাকে বিশেষ ঘটনা বলিয়। থাকি এবং যদিও ইহা দ্বারা বিশেষভাবে জগতের উপকাব সাধিত হয়, তথাপি শিক্ষিত ব্যক্তি মাত্রেই জানেন যে ইহ। জড়জগতের সাধারণ নিয়মের বহিভূতি ঘটনা নহে। বায়ুর নিশ্চলতা, মন্দগতি ও সংহারিণী মূর্ভি সকলই একই সাধারণ নিয়মের অধীন। সে নিয়ম কি অনেকেই জানেন, তথাপি পরে যাহা বলা হইবে তাহা বিশদ করিবার জন্ত আমরা সংক্ষেপে এন্থলে তাহার উল্লেখ করিব।

স্বা্যের উত্তাপে ধরাতল উত্তপ্ত হইয়া তৎসংস্পৃষ্ট বায়ু, রাশিকে উত্তাপিত করে। উত্তাপের অধর্ম দ্রব্যের আয়তন বৰ্দ্ধিত করা। উত্তাপের এই শক্তি নিবন্ধন উক্ত বায়ু রাশিং আয়তন বন্ধিত হওয়াতে চতুম্পার্মন্ত বায়ু অপেকা উহার ভাব কমিয়া যায়। পৃথিবীৰ মাধ্যাকৰ্ষণ শক্তির প্রভাবে চতুর্দিকে। অপেকাকত ভারী বায়ু নিমে মাসিতে চেষ্টা করে ও পূর্ফোড लघु नायुरक छेभरतत निरक छेठाहेबा (मब। अर्थाए स कातः 😊 ক কাৰ্চ বা অতা লঘু বস্ত জলের উপর ভাসে, সেই কারণে লগু বায়ু উপরে উঠিয়া যায় ও চারিদিকের ভারী বায়ু আসিয়া তাহার স্থান অধিকার করে। উপরে উঠিতে উঠিতে পর্কোর উক বায়ু ক্রমে শীতল স্বতরাং কুদ্রায়তন ছওয়াতে আবার নীটে আসিয়া যে ভারী বায়ু উহার পূর্বাধিকত স্থানে সরিয়া গিয়াছে, তাহার স্থান অধিকার করে। এইরূপে প্রায় প্রতিনি^{য়ত} পৃথিবীর উপরিস্থিত বায়ু রাশি চক্রাকারে ঘুরিভেছে! ^{স্থন} বায়ু মণ্ডলের (অস্তত: কতকদূর ব্যাপিরা) উত্তাপের তার^{ত্রা} চলিয়া গিয়া সামঞ্জ সংস্থাপিত হয়, তথনই বায়ু একেবাৰে भार ७ निक्त जार धात्र करत । शूर्व रायुत त्य नपूर्वन কথা বলা হইল, জলীয় বাম্পের বর্তমানতা নিবন্ধন ঐ লঘু? আরও বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। কারণ বায়ু যভই লঘু হউক না, জ^{লীয়}

বালা উহা অংশকা অনেক গুণ অবিক ন্যু। পৃথিবীর উত্তাপও
ক্রনীর বালোর বর্ত্তমানতা নিবন্ধন বধন বায়মগুলের কোনও
বিস্তৃত অংশের ভার চতৃদ্দিকের বায় অপেকা অধিক পরিমাণে
কমিরা গিরা বিশেষ অসামঞ্জয় উপন্থিত করে, তথন উহা দূর
করিবার জন্ত চতৃদ্দিকের বায় প্রবলবেগে ঐ লঘু বায়র স্থান
অধিকার করিতে চেত্তা করে এবং ভাহাতেই বিষম বাভা।
উৎপন্ন হইয়া ভূপ্রতিক আলোড়িত করিতে থাকে। স্থতরাং
দেখা যাইতেছে যে বায়র শাস্তভাব, মন্দর্গতি ও প্রবলবাভা।
সকলই এক সাধারণ নিরমের অধীন। মধুর মলরানিলের জন্ত
এক নিয়ম ও সর্বসংহারক ঘূর্ণিত বায়র জন্ত আর এক নিয়ম
নাই। এত্রভারের মৌলিক প্রভেদের মধ্যে কেবল কারণের
গুকত্বের ইতর বিশেষ—কেবল অবস্থাভেদ। অবস্থাভেদে একই
প্রকার কারণে বিভিন্ন প্রকারের কার্যা দেখিতে পাওয়া নার।

স্তমন্দ্র সমীরণ ও প্রবল ঝটকা একই কারণ ছইতে উৎপন্ন ও একট নিয়মের অধীন চটলেও আমরা প্রথমটীকে সাধারণ ঘটনা ও শেয়োক্রটীকে বিশেব ঘটনা বলিয়া থাকি। বিজ্ঞানের চক্ষে একভাবে উভয়ই সাধারণ ঘটনা : কারণ উহার প্রত্যেকটা এক সাধারণ নিয়মের অধীন। কিন্তু বিজ্ঞানের চক্ষেত্র আর একভাবে শেষোক্রটা একটা নিশেষ ঘটনা : কারণ উহা বিশেষ অবন্ধা হইতে সমুদ্র । বায়ু মাওলের ভারের বিশেষ তারতমা দ্দৈত উহার উৎপত্তি। আবাব বিজ্ঞান ছাড়িয়া আর একভাবে উহা বিশেষ ঘটনা—যে দেশে উহা ঘটিল সে দেশে প্রহাহ বা সচরাচর উহা ঘটে না : স্থতরাং সে দেশের পক্ষে উহাকে সাধা-বল ঘটনা বলা যায় না। এতদাতীত ঐ ঘটনাদারা সে দেশের বায়ৰ অবস্থা (দূষি চভাৰ ও উত্তাপাদির তাৰতমা) বিশেষভাবে পবিবর্ত্তি হইয়া গেল। এই ছই ভাব হইতেও উক্ত দেশের পক্ষে ঐ ঝটিকাকে একটা বিশেষ ঘটনা বলিতে হইবে। অপচ উল জড় জগতের সাধারণ নিয়মের অন্তর্ভ । কেবল বিশেষ স্থানে, বিশেষ অবস্থায়,বিশেষ ভাবে উহা সংঘটিত বলিয়া উহাকে नित्मय चरेना नला गाय। এরূপ उत्त गिम "वित्मय" मेक आखान क्ता नम्भीय इय. उत्व हेहा (य भाव क्लाणाय श्रायां क्ता যাইতে পারে তাহা আমরা ব্রিয়া উঠিতে পারি না।

বায়ুব গতি সম্বন্ধে উপরে যাহা বলা হইল, ঐনী শক্তির প্রকাশ সম্বন্ধে—ঈশ্বরের বিধান সম্বন্ধে প্রায় বর্ণে বর্ণে উহার মুমুক্তপ কথা বলা যাইতে পারে। আমরা নিমে বায়ুর সহিত ঐশী শক্তির উপমার সার্থকতা দেখাইতে ও বিশেষ বিধানের প্রকৃত অর্থ আমরা যাহা বুঝি তাহা প্রকৃতিত কবিতে চেটা কবিব।

বায়ুর বর্ত্তমানতা ও গতি ষেমন ছইটা স্বতন্ত্র ব্যাপার সেইরূপ ঐশী শক্তির বর্ত্তমানতা ও প্রকাশও ছইটা স্বতন্ত্র ব্যাপার।
আমরা বায়ুর গতি যথন অমুভব করি না, তথনও ষেমন বায়ু
আমাদিগকে বেষ্টন করিয়া অবস্থিতি করে, সেইরূপ যথন
আমরা ঐশী শক্তির প্রকাশ দেখিতে পাই না, তথনও উহা
আমাদের আত্মার আধারভূত হইয়া অবস্থিতি করে। কেবল
ভাহাই নহে। বায়ু ভিন্ন ষেমন আমাদের ভৌতিক জীবন
খারণ করা অসম্ভব, তেমনি ঐশী শক্তি ভিন্ন আমাদের আধা্যা-

স্থিক জীবন ধারণ করা অসম্ভব। বর্তমান প্রবন্ধে আমরা "এনা निकि" नेन केन्द्रतत्र, व्याधाश्चिक निक मन्द्रको श्रीता करित তেছি। নতুবা একভাবে দেখিতে গেলে আমাদের ভৌতিক জীবনও ঐশী শক্তির উপর নির্ভর করিতেছে,—আমরা কিন্তু टम अपर्थ छैहा नावहात्र कविन ना। कात्रण बाक्षमभाव्य विनान শব্দ সচরাচর আধ্যাত্মিক অর্থেই ব্যবস্থা হইয়া থাকে। এবং বিধান অর্থে ঐশী শক্তির প্রকাশ ভিন্ন আর কিছুই নতে। নিশ্চণ সচল সকল অবস্থাতেই যেমন বাবুর কার্যা চলিতেছে, সেইরপ প্রকাশিত অপ্রকাশিত সকল অবহাতেই ঐশী শক্তির কার্যা চলিতেছে। বাবুর গতি বেঁমন আমরা সকল সময় অন্ত-ভব করি না, ঐশী শক্তির প্রকাশও তেননি আমরা স্কুল সময় অঞ্ভব করি না। ভৌতিক জগতে বায়ু যেমন আধ্যাগ্রিক জগতে এশী শক্তিও সেইরপ। ধরাপৃষ্ঠ যেমন বায়ুর কার্য্যক্ষেত্র প্রত্যেক মনুষ্যের আত্ম ও তাহার সমবার হরপে যে আমানেব সামাজিক জীবন তাহাই এণী শক্তিব কাৰ্য্যকেত্ৰ। মৃত্যুক সমীরণ ও প্রবল বাত্যা যেমন একই সাধাবণ নিয়মের অনীন ঐশী শক্তির সাধারণ ও বিশেষ প্রকাশও সেইরূপ একই সাধারণ नित्राय वशीन। मानवाद्या ७ जनममाज यथन পाপ, व्यात्रम সাংসারিকতার উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া উঠে, মানবের জনয়নিহিত দেবভাব সকল যথন সেই উন্তাপে উড়িয়া যাইতে থাকে, তপন আত্মার আধারভূত ঐশী শক্তি প্রকাশিত হইয়া ঐ উত্তাপকে মনীভত কবিয়া দেয় এবং দেবভাবের আধিপতা পুনংস্থাপন কবিয়া প্রবৃত্তি সমূহের সামঞ্জ বিধান করে। ঐশী শক্তির এই সাধারণ কার্যা আমরা সচরাচর দেখিতে পাই। আমাদের প্রাত্যতিক আধাাত্মিক সংগ্রামে, নরনারীর সাধু কার্যো, জ্ঞান বিস্তার, ধর্মভাব প্রচার, সমাজ সংস্কার, পরোপকার প্রভৃতি সামাজিক হিতারভানে ঐশী শক্তির সাধারণ প্রকাশ দৃষ্ট হইয়া পাকে। আবার যথন কোনও দেশ বা সমাজ পাপ, অজ্ঞানতা, কুসংস্কার, কপটতা ও কদাচারেন উদ্ভাপে বিশেষভাবে উত্তপ্ত হইয়া উঠে, যথন ধশোর নামে ভীষণ পাপাচাব সকল অনুষ্ঠিত হইতে থাকে, যথন সমাজের কোনও এক অংশ প্রবল হইয়। অপর অংশকে পদদলিত করিতে চেষ্টা করে.—তথন জনদমাজে যোর প্রতিক্রিয়া উপস্থিত হইয়া সমাজকে আলোড়িত করিয়া তুলে এবং মানবের প্রকৃতি-নিহিত দেবভাব সকল পাশব শক্তির উপর আধিপতা সংস্থাপনের জন্ম ঘোর সংগ্রাম উপস্থিত করে। তথন এশী শক্তি ধর্ম বিধান বা সমাজ বিপ্লবরূপে প্রবল ঝটিকার স্থায় আপনার পরাক্রম প্রকাশ করিতে থাকে। এই শক্তির সন্মুপে যে কিছু বাধা বিদ্ন সমুপস্থিত হয় তাহ। দেখিতে দেখিতে কোণায় অন্তর্হিত হইয়া যায়। বছকালের সঞ্চিত পর্বতপ্রমাণ পাপরাশি সমূলে উৎপাটিত করিয়া, কুসংস্কারের অন্ধকারময় চুর্গকে ভূমিসাৎ করিরা, সমাজবক্ষকে ঘোর বিপ্লবে আলোড়িত করিয়া, প্রবল পরাক্রান্ত নরপতিগণেব সিংহাসন কম্পিত করিয়া ভীম পরাক্রমে এই অলোকিক শক্তি জনসমাজে ভায়, ধর্ম ও সুনীতির রাজত্ব প্রতিষ্ঠিত করিতে থাকে। ঐশী শক্তির এই ভীষণ প্রকাশ ও পূর্ব্বোক্ত মৃত্প্রকাশ এতগ্রভয়ই কিন্তু এক সাধারণ নিয়মের অধীন। তবে বিশেষত্ব

काशास ? हेशास विरमयच-अथमङ: कांत्ररणत 'खकरब, विजी-য়ত: দেশ বা সমাধ্বের বিশেবত্বে, তৃতীয়ত: ইহার ফলের বিলেবতে। বিলেবরূপে ঘনীভূত কারণ পরক্ষারার বিলেব দেশ বা সমাজে ইহার প্রকাশ হয় বলিয়া এবং ইহার প্রভাব ও উপকারিতা বিশেষভাবে অফুভূত হয় বলিয়া ইহাকে এশী শক্তির विश्लिष अकाम वा विश्लिष विश्लान विश्ला । এরূপ ऋल "विश्लिष" শব্দ প্ররোগ করা কেন দৃষণীয় হইবে তাহ। আমরা বুঝিতে পারি না। ঈশ্বরের সার্বভৌমিক কার্য্য প্রণালীর দিক্ দিয়া দেখিলে ইহা সাধারণ ঘটনা বটে, কিন্তু যে অবস্থায়, যে স্মাজে ইহা ঘটে তাহার পক্ষে ইহা বিশেষ ঘটনা। জনসমাজে নিতা এরূপ ঘটনা ঘটে না এবং ইহার সংঘটনের জন্ম গুরুতর কারণের প্রয়োজন। এতদ্বির ইহার প্রভাব ও উপকারিতা বিশেষভাবে অমুভূত হইয়া থাকে। এইরূপ ঘটনার বীঞ মানব প্রক্ততিতেই নিহ্ত আছে। অথচ বিশেষ কারণ ভিন্ন আমরা ইহার প্রকাশ দেখিতে পাই না। এই জন্ম ইহাকে বিশেষ ঘটনা বলি। বৌদ্ধ খৃষ্টীয়, মুসলমান প্রভৃতি ধর্মের অভাদর, नृथातकर्क्क शृष्टीय धर्म्यत मश्कात, ১१৮२ शृष्टीत्मत ফরাসি রাষ্ট্র বিপ্লব প্রভৃতি ব্যাপারকে যদি কেছ জন সমাজের পক্ষে বিশেষ ঘটনা বলিয়া স্বীকার করিতে অসমত হন, তবে তাঁহার সহিত বিচারে প্রবৃত্ত হওয়া বিভূষনা মাত্র।

আমাদের এসম্বন্ধে আরও অনেক কথা বলিবার আছে। আগামীবারে তাহা বলিবার ইচ্ছা রহিল।

ব্রাহ্ম বিবাহ বিষয়ে কয়েকটী কথা।

(প্রাপ্ত)

इंजिशृद्ध उन्रकोम्मीटा निनः इहेटा वावू शादीनाथ ननी একখানা পত্র লিখিয়া ত্রাহ্মসমাজের সবর্ণে বিবাহ প্রথার প্রতি-বাদ করিয়া ত্রাহ্মসমাঙ্গের প্রচারকগণকে সেই দকল বিবাহে (यांशनाम कतिएउ निरंदेध कतिशाष्ट्रितन। वाखिविक अविवरत ব্রাহ্মগণের চিন্তা করিবার সময় উপস্থিত হইয়াছে। স্বর্ণে বিবাহ দিবার প্রবৃত্তি ব্রাহ্মসমাজ মধ্যে ক্রমে প্রবল হইতেছে। যে সকল যোগ্যতা বিবাহ-সম্বন্ধের হেন্তু হওয়া উচিত, তাহার প্রতি দৃষ্টি না থাকিয়া একমাত্র বর্ণ-গত সমতাই যদি বিবাহ-সম্বন্ধের একমাত্র কারণ হয়, তাহা হইলে ব্রাহ্মগণ এণিষয়ে যে কোন না কোন আকারে জাতিতেদের প্রশ্রম দিবেন, তাহাতে সার সন্দেহ কি ? এরূপ অকারণে বর্ণগতসমতার অমুরোধে সমান সমান বর্ণে বিবাহ-বন্ধন হইতে থাকিলে বিশেষ অনিষ্ট এরপ একবর্ণে বিবাহ প্রদানের স্থপকে যদিও কোন যুক্তি থাকে, তাহা হইলেও ব্রাহ্মণণ এরূপ বিবাহ প্রথার পক্ষপাতী হইলে অধিকতর সামাজিক অনিষ্ট সাধন क्रिंदिन। প্রথমতঃ বিবাহ সম্বনীয় উচ্চ আদর্শ তাঁহাদিগকে হীন হইতে হইবে। কারণ বর কম্ভার পরস্পর পবিত্র-প্রণয়জাত বিবাহ-বন্ধনের .যে রীতি—যে রীতিকে উচ্চতর স্থান প্রদান করা হইয়াছে তাহার পক্ষে বিশেষ বিশ্ন ঘটবে। বিবাহ বিষয়ে বর কন্তার যে স্বাভাবিক স্বাধীনতা

থাকা প্রার্থনীয়, বাহার অভাবে সংসার ত্রের হান না হইয়া অপের কঠেরই হেতুদ্ধপে পরিণত হয়, এই প্রথা ভাহার পোব-কতা করে না। প্রণয় কখনও শাসন ছারা সংস্থাপিত হর না। তাহা স্বাধীন বিবেচনা এবং স্বাধীন কর্ত্তব্য জ্ঞান হইডেই জন্মিয়া थारक। युख्ताः कान এक वर्षत्र मस्या खनत्र वा नम्खावरक ष्पावस कतिएक वाश्यात एवंटी कथनहे क्षभःमनीय नय। विवाह-वसन मद्यस कान तीं जि व्यवनिष्ठ रख्या आर्थनीय, जारा নি:সংশয়রূপে নিরুপিত না হইয়া থাকিলেও বোধ হয় ব্রাক্ষ্যাস वत कञ्चात नचि हरेए ए विवाह-वहन हम मिरे त्रीजिएकरे শ্রেষ্ঠতা প্রদান করা কর্ত্তব্য জ্ঞান করিবেন। অবশ্য পিতা মাতা বা অভিভাবকগণের সম্মতি থাকা বিবাহের সম্বন্ধ নির্ণয়ে বিশেষ প্রয়োজনীয়। কিন্তু সর্ব্বোপরি যাহারা বিবাহিত হ'ইবে ভাহাদের পবিত্র ভালবাসাজনিত সন্মতিরই সন্মান থাকা উচিত। এরপ প্রথা অবলম্বিত না হইলে সমাজে স্বস্থ এবং স্থবী পরিবারের সংখ্যা আমরা বেশী দেখিতে পাইব না। যদি বিবাহ সম্বন্ধে বর ক্ষ্পার ইচ্ছাকে অধিক মূল্যবান মনে করা যায় এবং সেই সন্মতি যদি তাহাদের পবিত্র প্রণয়-সভূত হওয়া আবশ্রক হয়, তাহা হইলে বর্ণগত সাম্য যে সকল স্থানে রক্ষিত হইতে পারে আমাদের এমন ভরসা হয় না। বিবাহের এই উচ্চভাব রক্ষা করার পক্ষে বর্ণগত সাম্য রক্ষার প্রায়াস বিশেষ বিশ্ব আনয়ন করিবে। স্কুতরাং এই প্রথার বিরুদ্ধে সকলেরই প্রতিবাদ করা উচিত।

দ্বিতীয়ত: বিবাহের পাত্র পাত্রা নির্বাচন যদি অল সংগাক লোকের মধ্যে আবদ্ধ থাকে,তাহার ফল অতি অগুভজনক ছইবে। প্রভৃতি অতিক্রম করিয়া বিবাহ দিবার রীতি না থাকায় যে সকল অনিষ্ট উৎপন্ন হইয়াছে,তাহা আমরা বিশেষরূপে জানি। আমরা দেখিতেছি অনেককে বাধ্য হইয়া একমাত্র মেল রক্ষার অসুবোধে অতি অপাত্রে আপন আপন স্নেহের পাত্রীদিগকে অর্পণ করিতে হইতেছে। এরপ মেল-বন্ধন না থাকিলে সে সকল বালিকা দিগের সেরপ পাত্রের সহিত বিবাহিত হইয়া আজীবন জীবনে मुख्य शिक्टि हरेख ना। (य मक्न श्रृत्स-विनातक यञ्जना खारा-দিগকে সহা করিতে হইতেছে তাহা সহিতে হইত না। একমাত্র এই কুপ্ৰথা হইতে কত কত কুলিন কস্তাকে অবিবাহিত অবস্থায় সংসারে পরের গলগ্রহ ছইয়া,সংসারের প্রধানতম স্কুথ যে দাস্পত্য প্রেম তাহা হইতে বঞ্চিত হইতে হইগাছে। মেলবন্ধনের কঠোরতা ना थाकित्न डाहात्मत विवादहत शत्क हराड चात त्कान वाधार উপস্থিত হইত না। অনেকে মনে করেন বন্ধদেশের লোককে **ब्रह्म कूळा**थात जना ताना विवाहक्रल दीनकार्या नाधा हहेगा লিপ্ত হইতে হয়। ভাহাদের আশক্ষা এখন যে পাত্রটী পাইয়াছি তাহা যদি হাত ছাড়া হইয়া যায়, তাহা হইলে পরে আরু উপযুক বরের পাত্র পাওয়া ঘাইবে না। সুতরাং বত স্ভুর সভ্^র বিবাহ দিতে পারিলেই যেন বাঁচিয়া যান। এই সকল কার[ে] এক এক জন কুলিনকে বাধ্য হইয়া বহু বিবাহের পাপে পড়ি^{তে} হয়। আবার অনেকে বিবাহ করিবার স্থবিধা না পাইরা সংসা^{রে} বছমকল্যাণকর ঘটনায় আপনাকে লিপ্ত করে। এ সকল দৃষ্টা^{ন্ত} চক্ষের সম্মুখে বর্ত্তমান খাঁকিতেও থদি ব্রাশ্বরণ ভাঁহাদের ^{এই}

সামান্য সংখ্যার করে। আবার গণ্ডীর হাট করিতে থাকেন, वित जाबारन जाबारन कांबरक कांबरक देवरमा देवरमा विवास मिनान ক্রু প্রবাসী হস, অতি শীঘ্র তাঁহাদ্রিগকে উক্তরণ কৃষণ ভোগ ভবিতে ছইবে। ইহারই মধ্যে একমাত্র বর্ণামুরোধে অমুপবৃক্ত _{পাতে} সেই সকল কলা স্মর্পিত ছইতেছে, যাহাদিগের সেরপ পাত্রে সমর্শিত হইবার কোনই উপযুক্ত হেতু ছিল না। স্থতরাং বাৰগণ যেন এমন অহিতকর প্রথাব সমর্থন কথনও না করেন। আলাদের বোধ হয় আমাদের প্রচারকগণের এবিবয়ে বিশেষ _{দিট্টি} থাকা আবশাক। সর্কোপরি বর্ণগত সমতাই যে বিবাহ-স্বন্ধের মূল বণিয়া জানা যায় সে বিবাহে কথনও কোন প্রচারকের যাওয়া উচিত নয়। উক্ত প্রথার অনুকৃষে অস্ত যুক্তি থাকিলেও একমাত্র এই অনিষ্টের জন্মও ব্রাহ্মগণকে বর্ত্তমান সময়ে সতর্ক হইতে হইবে যে এই অল্প সংখ্যার মধ্যে যেন আবার গঞ্জীর সৃষ্টি না হয়। আমরা সম্প্রতি কেবল বর্ণগত গণ্ডী সৃষ্টির বিক্লটেই লিখিলাম। ধন, বিদ্যা বা অবস্থাগত গণ্ডীর যে অপ-কারিতা কম এমন যেন কেহ মনে না করেন। বর্ত্তমান সময়ে যে কোন প্রকার সীমাতে আবদ্ধ হওয়াই অকর্ত্তব্য। উদার প্রশন্ত প্রণালীর উপবই বিবাহ-সম্বন্ধ-মির্ণয় রীতি প্রতিষ্ঠিত রাখিতে इंडेर्द ।

প্রদেশীয় ব্রাহ্মসমাজ।

विक्रमभूत (वकुर्यानिनी)

গত ৩১এ ভাদ্র বিবার বিক্রমপুরের অন্তর্গত পূর্ব্বপাড়া উপাসনা সমান্দের প্রথম শারদীর উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। পূর্বাদিন মপরাক্তে উৎসবের উদ্বোধন স্চক উপাসনা হইয়াছিল। রবিবার প্রাতঃকালে প্রভাত কীর্ত্তন হয়। তৎপর স্লানান্তে নয়টা হইডে ১১টা পর্যান্ত উপাসনা হইয়াছিল। ২টা হইতে ৩টা পর্যান্ত সাধারণ আলোচনা এবং ৩টা হইতে ৫টা পর্যান্ত বিক্রমণ্য প্রচার সভা সম্বন্ধীর আলোচনা হইয়াছিল, প্রবার সভ্জালে কীর্ত্তন আরম্ভ হইয়া রাত্রি নয়টার সময় বৈকালিক উপাসনা শেষ হইয়াছিল। দয়াময়ের ক্রপায় উৎসব বেশ জ্লমাট হইয়াছিল, পালীয়্ব নয়নারীগণ অনেকেই উৎসবে উপস্থিত হইয়াছিলেন। ভার প্রাপ্ত বন্ধুগণ ও যুবক্রগণ আহারাদির ও গৃহ সক্রাদির পারিপাট্য অন্ধ সময়ে সম্পন্ন করিয়া ব্রাহ্ম সমাক্রের প্রতি বিলক্ষণ অন্থরাগ প্রদর্শন করিয়া হান্দ্র সমাক্রের

এই উৎসব উপলক্ষে এবং বিশেষতঃ বিক্রমপুর প্রচার সভার বিষয়ে আলোচনায় উপস্থিত থাকিবার জন্ম, ঢাকা মুন্দীগঞ্জ এবং বিক্রমপুরস্থ বান্ধদিগকে সমবেত করিবার চেষ্টা করা হইরাছিল। কিন্ত ঢাকা হইতে কেহই সমাগত হইতে পারেন নাই। স্থানীয় বান্ধগণ এবং মুন্দীগঞ্জ বেজগা ও ভরাকর গ্রাম হইতে কোন কোন বান্ধ সমবেত হইয়াই উৎসব ও আলোচনা করিরাছিলেন। অধিক বান্ধ উপস্থিত না থাকিলেও বিক্রমপুর প্রচার সভা সম্বন্ধ অভিনর ভাল ক্ষাব্রা ব্যাবিদ্যা হইয়াছিল। নিম্ন লিখিত নির্দ্ধারণ গুলি দেখিলেই ভালা বুঝা বাইবে।

- ১। ঢাকা, মুনীগঞ্জ ও বিক্রমপুরের ভিন্ন ভিন্ন গ্রামের আন্দিগকে সইনা বিক্রমপুর প্রচার সভার একটা স্থানীর বিভাগ গঠিত হওয়া আবস্তক।
- ২। বিক্রমপুর নিবাসী ব্রাক্ষদিগের একটি তালিকা প্রস্থত করা আবস্তুক।
- ৩। সংকার্য্য (Good work) দারা রাহ্মধন্ম প্রচার জ্ঞু একটী Charity fund হওরা আবশুক।
- ৪। বৎসরে একবার বিক্রমপুরবাসী আন্দলিগের বিক্রম-পুরের কোন স্থানে (বা ঢাকাতে) মিশিয়া আপনাদিগের মধ্যে একতারক্ষণ ও বাহিরে প্রচার জন্ম দচ্টা করা আবশ্রক।
- ৫। উল্লিখিত প্রস্তাব অন্তুসারে কার্য্য করিবার জন্ত একটা কমিটির উপর ভার দেওয়া উচিত।

এই আলোচনা ছলে বিক্রমপুব-প্রচার সভার অন্তত্তর সহকারী সম্পাদক বাবু আনন্দচন্দ্র মিত্র উপস্থিত ছিলেন। নির্দ্ধারণ গুলি কার্যো পরিণত করিবার জন্ম একটা কমিটা গঠিত হইরাছে। বিক্রমপুর প্রচার সভার স্থানীর প্রচারক বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যার ঐ কমিটার সম্পাদক নিযুক্ত হইরাছেন। আশা করি বিক্রমপুর প্রচার সভা বিশেষ উদ্যোগী হইরা সংপ্রস্তাব গুলি কার্যো পরিণত করিবেন।

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জ্বন্ত সম্পাদক দারী বছেন।

শ্রদ্ধাম্পদ তত্তকৌমুদী সম্পাদক মহাশয় শ্রদ্ধাম্পদেযু—

মহাশয় !

শ্রদ্ধের দীতানাথ বাবু আমার পত্রের উত্তরে তত্ত্তি মুদীর বিগত সংখ্যার আর একখানা পত্র লিখিয়াছেন। এবার তিনি প্রধানতঃ বিধান প্রকাশ যে মানবের ইচ্ছা-নিরপেক তাহাই প্রমাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন এবং তৎসক্তে সকল প্রকার জ্ঞান লাভই যে মানবের ইচ্ছা-নিরপেক তাহাও দেখা-ইতে চেষ্টা করিয়াছেন। কিন্তু কথাটী এখনও মীমাংসিত হয় নাই। সীতানাপ বাবু স্থামাদের দেখা শুনা প্রভৃতি বহিবিষয় হইতে অন্তর্জগতে প্রকাশিত প্রতোক ব্যাপারই আমাদের ইচ্ছা-নিরপেক বলিরাও কিন্তু পত্রের শেষভাগে বলিয়াছেন যে "আমাদের আধ্যাত্মিক জীবনের কতকওলি ঘটনাকে আমি. आमारनत्र हेक्हा-नितरभक ध्वरः क्रेचरतत्र हेक्हा-नारभक विवाहि — "ৰণাজ্ঞান, প্ৰেম ও পবিত্ৰতার আদেশ প্ৰকাশ" সমুদন্ন ঘট-नाटक आमारमत हैक्हां-नितरलक वनि नाहे।" इन्डताः (मेथा যাইতেছে দীতানাথ বাবু অনেক দার্শনিক যুক্তি প্রদর্শন করিয়া যাহা প্রমাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছিলেন নিজেই আবার তাহার অক্তথা করিতেছেন। কোন বিষয় জানা সম্বন্ধে মানবের ইচ্ছার সাপেক্ষতাকে তিনি যেরপ অযৌক্তিক অসম্ভব এবং স্ববিরোধী প্রভৃতি বৰিয়া উড়াইয়া দিতে চেষ্টা করিয়াছিলেন তাহা আর পারিতেছেন না। কথাটা তবে নিভান্তই অয়েজিক নর।

বাধা হইয়াই স্বীকার করিতে হইতেছে যে অন্ততঃ কতকগুলি বিবয় জানা আমাদের ইচ্ছালাপেক। **ব**দি ক তক গুলি বিষয় জানা আমাদের ইচ্ছা সাপেক হয়, তবে অল্ত-श्वनि श्रकारमंत शरक आमारनत देख्वात रकान थरताजन থাকার পকেই বা কি বাধা থাকিতে পারে ? বাস্তবিক কোন विवय काना कथन 9 এ कत दे ऋषि मन्नव द्य ना । मार्निक छार তর্ক করিবার শক্তি আমার নাই, কিন্তু আমি সোজা সোজি দেখিতে পাইতেছি, কোথাও একের ইচ্ছায় কার্য্য হয় না। मर्गन अवन नेयदिक कि कामात दकान है छ्वात भावश्रक दूस ना ? আলোক প্রকাশ ঈশরের কাজ, কিন্তু চকু খোলা বা বর্দ্ধ করা ত আমার ইচ্ছার উপর নির্ভর করে। আমি যদি চকু কর্ণ বন্ধ कतिया ताथि, पर्णन अवन कथनहै जन्त्रन इस ना। व्यत्नक जनम দেখা যার অন্তমনা হইয়া যথন কোন বিষয় চিন্তা করা যায় बस दिकान विवदवत ठिखाव बेशन गांत्रत्य निविधे इय, उशन ठकु कर् পোলা থাকিলেও দর্শন ও প্রবণ ক্রিয়া সন্ধার হয় না। এইরূপ প্রত্যেক ঘটনাতেই দেখা ঘাইবে ছুই ইচ্ছার মিলন ভিন্ন কোন का अहे हम मा। जे बंद (य विधारनंद्र कर्छा এ कथा किह अन्दीकांद्र করিতেছে না। কিন্তু তাহা গ্রহণ করা বা আত্মাকে সেই বিধান প্রকাশের উপযুক্ত অবস্থায় আনয়ন করা আমাদের কা**র্গ**। মানব ইচ্ছা করিলেই জানিতে পারে এ কথা আমি কোথাও विनाहे। किन्न हेन्हा ना कतिरलंड झानिवात छेलाम नाहे, हेहाई विलग्नाहि। क्रेश्वत याहा कानाहेट हैका क्रिटिड्सन, ভাহা গ্রহণ পক্ষে আমার ইচ্ছা থাকা আবশ্রক। জ্ঞান প্রকাশে মানবের ইচ্ছার সাপেকতা আছে। এ কথার অর্থ ইঙ্গানয় যে ঈশ্বরের সাহাঁয়্য ভিন্নও প্রকাশিত হইতে পারে। 🐬 স্ক তাঁহার সহায়তা এবং মানবের ইড্ছা হুইয়ের মিলন ভিন্ন ে জ্ঞান লাভ হইতে পারে তাহার দৃষ্টান্ত কোথাও নাই। আমি যে এখন নৃতন সত্য বুঝিতে পারিতেছি না, তাহার অর্থ এই নয় যে ঈশ্বর আমাকে জানাইতে ইচ্ছা করিতেছেন না। তিনি ত সর্বাদাই প্রত্যেকের হৃদয় দারে দাঁড়াইয়া তাঁহার শিক্ষা প্রদান করিতে প্রস্তুত রহিয়াছেন। তাঁহার দান ত সকলের জন্তই আদিতেছে। তবে সকল প্রাণে তাহা প্রকাশ পায় না কেন্ তিনি যে প্রত্যেকের হৃদর ছারে দাঁড়াইয়া শিক্ষাদিতে প্রস্তুত আছেন, ইহা বোধ হয় সী তানাথ বাবু অস্বীকার করিবেন না। যদি অস্বীকার করেন ভাহা হইলে ঈশ্বকে পক্ষণাতী বলিতেই হইবে। ঈশ্বকে পক্ষপাতীনেলিয়া দীতানাথ বাবু তাঁহার পূর্ব্ব,পত্রে একরূপ স্বীকার করিয়া ছিলেন, আমি তাহ। উদ্ধৃত করিয়া দেথাইয়া ছিলাম। এবারের পত্রে যাহ। লিথিয়াছেন,তাহ। দারাও দে আপত্তির কোন মীমাংসা হয় নাই। তিনি বলিয়াছেন "চারি মাসের শিশুকে চলিবার শক্তি না দেওয়াতে ঈশবের পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায় ना. मनवरमदात वानकरक विकान मर्गतन छक कान ना माछ-য়াতে ঈশ্বরের পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায় না" ইত্যাদি। এ সকল স্থানে যে পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায় তাহা কেহ বলিতেছে না। কারণ সকলের পক্ষেই এক নিয়ম। কিন্তু যদি এমন দেখা যায় বে দশটী ৪ মাদের শিশুর মধ্যে একটাকে হঠাং চলিতে ममर्थ क्त्रिरणम वा > • • जि मन व ९ मरत्र त्र वांगरकत्र मरक्षा २। > जि-

কে হঠাৎ প্রবীণের জ্ঞান দিলেন তাহাতেই পক্ষপাতিত্ব প্রকাশ পায়। এক সময়ে একদেশে একই প্রকার সভ্যতার নিয়ে জনিয়া যথন এক বাক্তি সম্ধিক জানী হইকেছেন, সাহে স্থান সে জান পাইতেছেন না; তথন অবস্তই বীকাৰ ক্ষিত্ৰ त्य हम क्रेयत जान मक्नारक উপেका करिया एनरे क्रिके वान कवित्नम, मा इव विविद्धः हहेरव स्वर्टे विक सामनाव क ও পরিত্রমে ঈশার-প্রদত্ত শিক্ষাকে আয়িত করিতে সমর্থ হইন। এই क्रेडिंग এक्টीटक श्रीकात क्रिट्डिंग हरेट्व। मिन अध्यक्ति স্বীকার করা যার তবে বলিতে হইবে ঈশর পক্ষপাতী। জার विजीयणी चीकात कतितन देशारे आमानिक हरेतन,मानत्वत रेकान চেষ্টার প্রবোজন নিশ্চরই আছে। কোন সত্য লাভই যানবের ইছা নিরপেক নতে। নীতা নাথ বাবু কিছ প্রকারান্তরে এক্ষা স্বীকার করিয়াছেন।কারণ তিনি বলিতেছেন "তেমনি অসভা, অণিছিত, অবিকশিত জাতি বা সম্প্রদায় সমূহের শিক্ট উচ্চতর বিধান প্রকাশ না করাতে ও তাঁহার পক্ষপাতির প্রকাশ পাইভেড না।" এই যে অসভা, অশিকিত, বা অবিকশি**ত অবহা**ৰ বানং तरिवारक, देश कि छारारमत यद ट्रिटोत अखार किया कैयात्तर ইচ্ছায়।কোন্টা সতা বলিয়া মানিতে হইবে। পৃথিবীতে প্রথম মানব স্টির সমর কত জন মানব স্ট হইরাছিল ভাষান জানিতে পারিলেও ইহা নিশ্চয় রূপেই বলা যাই*তে* <mark>পারে বে</mark> বুচ জনই স্ট হইনা থাকুক এক অবস্থাতেই স্ট হইনাছিল। কেঃ সভ্য কেই অসভ্য ইইয়া সৃষ্ট ইইয়াছিল বলিয়া নির্দেশ করিবাব উপায় নাই। যদি দেরপই হয় তবে নিশ্চয়ই ঈশ্বরে পক্ষণাতিই আরোপ করা যাইতে পারে। আর যদি সভা ও শিকিত ব বিকশিত হইবার পক্ষে মানবের ষত্র পরিভাষ ও 🕏 ছাব প্রয়োজন আছে স্বাকার কবা যায়, তাহা হইলে অবশ্র স্বীকার कतिए इहेन छान वा विधान भावेबात भएक मानरवत है छ। ও यद्वत প্রয়োজন আছে। ঈশ্বরই কোন জাতিকে উল্ল করিয়াছেন বা শিক্ষিত ও বিকশিত করিয়াছেন তাহাতে সে সকল ছাতির কোন ইচ্ছা ব। পরিশ্রমের আবশুক ছিল ন विनिद्य नामा वाम नहेशा এड शान्तसारभन कामरे कांन एमथिएड शांहे मा। खाजिएडएमत विकास वा कि विनिवान পাকে ? ঈশরই যদি সেরপ পাথকা কৃষ্টি করিয়া গাকেন তা माञ्च कि এত वड़ ब्लानी इहेन, त्य क्रेचरतत विक्रास आवार সাম্য প্রতিষ্ঠিত করিতে চেষ্টা করিবে। সত্য প্রকাশে মান (वत कामरे हेका नाह विशत्न जाननानि मामा देवस्याव কথা আসিয়া পড়ে। পরস্পর সংস্ট বিষয় বিচার করিটে হইলে সকল গুলির প্রতি দৃষ্টি না করিলে চলিবে কেন ?

"বিধানের বীজ কি অর্থে আত্মায় নিহিত ছিল" এই কথাট নিয়া সীতানাথ বাবু বিশেষরূপে আলোচনা করিয়াছেন। নিহিত ছিল একথা আমি যেমন বিখাস করি, সীতানাথ বাবুও সেরূপ বিশাস করেন। আমি আমার পূর্বে পত্রে সীতানাথবাবুর কোন কোন উল্পিউন্ত করিয়া তাহা দেখাইয়াছি। আত্মায় সত্য নিহিত থাকার যদি কোন অর্থ থাকে, তবে বিধানের বীজ নিহিত থাকারও অর্থ আছে স্বীকার করিতে হইবে। সীতানাথ বাবু বলিয়াহেন বিশাসীর জীবস্ত বাণী ভনিলেই ভাহা প্রকাশ পার আমি ব্রি-

वाहि—मागरम् येत के देखा धरे क्रिकाल नामाजा कार कर शाह । व्याप्त करें । कुछ तार कि कि साम त्या हरान कर मारे। अकान इंदेश नेयरको एक क्रियेक इस्तारह। विवागीत কথা ত অনেকেই শুনিরা থাকে কিছ কর জনৈর প্রাণে তাহা হান পার ? স্বতরাং এথানেও মানবের যত্ন ও ইচ্ছার প্রয়োজন দেখা शहिष्टा । अथन विधान প্रकान नहस्त हुई अवंडी कथा विनया এবারের মত দীতানাথ বাবুর পজের উত্তর শেব করিব। আয়ায় বে সভ্যের বীজ নিহিত থাকে একথা সীভানাথ বাবু বিশাস করেন। এখন কথা এই ২ ছই হাজার বৎসর পূর্বে কোন ব্যক্তির আত্মার বাহা নিহিত ছিল এখন বে আমরা ল্বিতেছি আমাদের আত্মাতেও অবস্ত তাহা নিহিত আছে। দেই সমরে ভাঁছারা বাহা ভানিরাছিলেন এখন যদি আমরা তাহা জানি তাহা অবস্তই আনার পক্ষে নৃতন ব্যাপার। কিন্তু তাহা कि ঈশবের পক্ষে নৃতন কার্যাণু কথনই নর। আমার জানা বা অকুভব করাটা কিছু ঈশরের পক্ষে 🚑 তন কার্য্য বা নৃতন স্থাই নহে। কিন্তু তাঁহার শিক্ষার আমি নৃত্পি আন পাইনাম। নৃতন বিধান যদি খীকার করিতে হয় তাঁব ইছাই বলিতে হইবে যে ঈশ্বর যাহা পূর্বেকরেন নাই অর্থাৎ আত্মায় যাহা নিহিত করেন নাই। তাহা এখন নিহিত করিয়া পরে প্রকাশ করিলেন। সীভানাথ বাবু এক্নপ নিভ্য নৃতন বিধানে বিখাস করেন কিনা জানিতে পারিলে ভাল হইত।

আমার পূর্ব্ব পত্রে ১৬ই আবাঢ়ের তরকৌমুদীতে প্রকাশিত "বিধান প্রবর্ত্তন ও বিধান সংস্থাপন" নামক প্রাপ্ত প্রবন্ধ হইডে তাহার কোন কোন হল উজ্ত করিয়া দেখাইয়াছিলাম বে সকলে ঈশরকে নিভা নৃতন বিধানের প্রেররিভা বলিয়। শীকার करतन ना। এবারের তম্বকৌমুদীতে উক্ত প্ৰাপ্ত প্ৰবন্ধ ণেথক মহাশর ভাহার প্রতিবাদ করিরাছেন। সংক্ষেপে তাহার উত্তর দিতে চেটা করিতেছি। বিধান বলিতে তিনি বাচাই বুঝুন ইহা শীকার করিতেই হইবে বে তাহা নিতাই ঘটিতেছে। যদি পতিত সমাজের পাপ মোহান্ধকার ভেদ করিয়া ঈশ্বরের প্রকাশকে পাপ, অসত্য অপ্রেমের প্রতি তাহার भाक्रम अवीर विधान वना यात्र। छाहा हहेताहे विनाट হইবে ঈশ্বর নিরত একার্য্য করিতেছেন। অস্থীকার করিলে তাঁহাকে নিত্য বিধাতা বলা হয় না। বদি তিনি জগাই মাধাইর নবজীবন লাভের পূর্বে অপ্রকাশিত ছিলেন, ৰীকার করা হইল তিনি সে সময় বিধান করেন নাই। কারণ প্রকাশিত হওয়াই ভাঁহার বিধান। অতএব ভাঁহাকে নিত্য ন্তন বিধাতা বলা হইল না।

আমার দিতীর কথার উত্তরে যাহা বলা হইরাছে তাহা বড়ই
আপত্তি জনক। কারণ, অসত্য অপ্রেম ও পাপকে যদি মানবের
অপূর্ণতা বলা হয়, তবে ইহাই বলা হইল যে মানব কখনও পাপ
শৃত্ত হইবে না। কেন না পূর্ণতা প্রাপ্ত হওরা কোন কালেই
মানবের ভাগ্যে ঘট্টবে না। অনক উন্নতিশীল মানব চিরকাল
উন্নতিই পাইবে কখনও পূর্ণ হইবে না। তাহা হইলেই পাপ
তাহার কখনও ঘাইবে না। তাহা হইলে পরিআণ ও মুক্তি
প্রভৃতি কথা খালর কোনই অর্থ থাকে না। পাপ করাই

বিব্যু প্ৰয়েষ্ট কৰে পৰে। বানৰ অপূৰ্ণ কিন্তু অপূৰ্ণতাই ক্ষুৰ্ব পূৰ্ণ নয়। অপূৰ্ণতা হইতে পাপ করে বটে কিছ অপূর্ণ হইরাও পাপ না করিতে পারে। বদি ইহা সম্ভব না হয়, তাহা হইলে মানবকে পাপ হইতে উদ্ধার করিবার জন্ত ক্লিখরের বিধান প্রেরণের কোন অর্থই থাকে না। কারণ त्र कथनरे निन्धां हरेत्व मा। নে চিরকালই পাপে পঞ্জির থাকিবে। তাহাকে পাণ শ্ন্য করিবার চেটার কোন কোনই অর্থ নাই। বে দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করা হইরাছে অর্থাৎ পৃথিবীর গোলবের জন্ত পূর্ব্য ভাহার সকল আংশ কোন কালেই আলোকিত করিতে পারেন না। তাহা মানবান্ধার পক্ষে বোর হর থাটে না। কারণ ঈশর সর্বশক্তিমান পাণী বঁতই কেন পাপ করুক না ভাহাকে পুণ্যবান করা সর্ব্যের পৃথিবীর সকল অংশ আলোকিত করার ভার কথরের পকে অসাধ্য-নর ১ ৰান্তবিক পৃথিবীয় সকল জংগ আলোকিত করা কর্ব্যের পকে বেমন প্রাকৃতিক নিরমানুসারে অসম্ভব , মানবাস্থাকে পবিত্র করার পক্ষে সেরপ কোন প্রাকৃতিক বাধা আছে বলিয়া মনে হর না। বরং ইহাই সভ্য যে পুণাই মানবের স্বভাব। পুণোই সে বিচরণ করিবে। পুণ্য ভাহার সর্কান্ত হইবে বলিরাই মনে হইতেছে। পূণো বাদ ও পুণাবান হওয়া যদি মানবের প্রকৃতিগত অধিকার না হয়, যদি তাহা ঈশরও আমাদিগকে প্রদান করিতে না পারেন, তাহা হইলে আর পুণ্যের জন্ম চেষ্টা করা বা নিস্পাপ হইবার চেষ্টা করার কি কোন হেতু থাকে ? তাহা কি রুখা বা পণ্ডশ্রম মাত্র হইবে না ? স্থতরাং এই উত্তরটী কোন ক্রমেই সঙ্গত বলিয়া মনে হইতেকে না।

ভৃতীর আপঞ্জির উত্তরে বাহা বলা হইরাছে অর্থাং ঈশ্বর প্রতি মুহুর্বে একই বস্তু দান করিতেছেন এমন নয়, কিছু তিনি কোন নাকোন রূপে দান করিতেছেন। স্বতরাং তিনি নিত্য বিধাতা। এভাবে যদি তাঁহাকে কেহ নিতা বিধাত। বলিয়া মানিরা সম্ভষ্ট হইতে চাহেন হউন। তাহাতে আমার আপত্তি নাই। কিন্তু আমি এক্লপে সন্তুষ্ট হইতে পারিতেছি না। এই রূপ উক্তি ছারা ঈশবকে হর্মল মানবের মত করিয়া ফেলা হর। মাছ্য যেমন একদিক দেখিতে অক্ত সব ভূলিয়া যায়, একটা বস্তু দান করিবার সময় অন্ত কিছু দিতে সমর্থ হয় না, দীখরও কি সেইরূপ ? তিনি কি কিছু দেন আবার কিছু দিতে পারেন না? তিনি একদিকে কোন উন্নত আদর্শ প্রদান করিতেছেন, কিন্তু অক্সদিকে লোক পাপের অত্যাচারে জালা-তন হইতেছে. ঈশর তাহার প্রতিকার করিতেছেন না বা পারিতেছেন না। তাঁহার শক্তি যেমন অসীম বিধানও সেইক্লপ° সর্ব্ব কল্যাণকর, সর্ব্বক্ষম ও সর্বাদা সর্ব্ববিষয়ক হইবে। এরূপ বলিলে ভিনি আর সর্কা শক্তিমান ঈশ্বর থাকিলেন না ৷ আমরা বিধানবাদ মানিতে বাইরা যেন ঈশরকে আমাদের মত চুর্বল করিয়া না ফেলি এই বিনীত নিবেদন।

> निर्वतक जानिनाथ हर्ष्ट्रांशांशांत्र।

जनानात सियुक्त "उपरकोष्ट्री"—नन्नाथक प्रशासक नवीरनवृत्र

"उद्दर्शमूरी"त रिगठ मःशाम धावानिक यात् इत्रवानी সেন মহাশরের পত্তের উত্তরে করেকটা কথা বগিতে ইচ্ছা করি। ১। হরকালী বাবু বলিয়াছেন, "দীতানাথ বাবুর জৈন-জিজ্ঞাদা' পুরুকের শেব অধ্যায় ব্যতিত জার দক্ষ অধ্যায়ই যুক্তিপূর্ণ"—অর্থাৎ শেষ অধ্যায় যুক্তিপূর্ণ নছে। আমি ভ আনি "বন্ধজিজাসা"র অস্তাস্ত অধ্যায়ের স্তায় "পূর্ণাপূর্ণ-বিবেক" নামক শেষ অধ্যায়ও যুক্তিপূর্ণ, যুক্তি না দিতে পারিলে আমি তাহা লিখিতাম না। যুক্তির বিভাসও স্পষ্টই রহিরাছে, যথা (১) বিবেক-বাণী হইতে ঈখরের পূর্ণ প্রেম ও পূর্ণ পবিত্রতার মূল युक्ति, (२) विक्रक्षवांनीनिश्वत जनक्रि-अमर्नेन, (७) विस्थव कृशांत्र যুক্তি ও ব্যাখ্যা, (৪) জাগতিক আপাত-অমঙ্গল ঘটনাসমূহের সংক্ষিপ্ত বিচার। ইহা সন্তেও যথন হরকালী বাবু বলিতেছেন উক্ত অধ্যায়ে যুক্তি নাই, এমন কি,এরূপ একটু ইন্সিতও করিয়া-ছেন যে উক্ত অধ্যায় অন্ধ-বিশ্বাস ও ভাবুকভায় পূর্ণ, তথন আমার বান্তবিকই সন্দেহ হয় হরকালী বাবু উক্ত অধ্যায়টা সমগ্র পড়িয়াছেন কি না,অন্ততঃ মনযোগের সহিত পড়িয়াছেন কি না। যাহা হউক উক্ত অধ্যায়ে যুক্তি নাই এই ক্থা তিনি এই অর্থে বলিয়া থাকিতে পারেন যে উহাতে তাঁহার মতে সুযুক্তি নাই। এই কথা বলিবার তাঁহার অধিকার আছে, কিন্তু তাঁহার অর্থ যদি हेहाई इब, তবে উক্ত অধ্যানের যুক্তির সমালোচনা করিলেই ভাগ হইত। যাহা হউক আমি খীকার করি বে পূর্ক তিন অধ্যায়ের স্থায় এই অধ্যায়কে তাঁহার স্থাক্তি পূর্ণ মনে না করি-বার কিছু কারণ পুস্তকেই মাছে, প্রথম তিন অধ্যায়ে প্রদর্শিত যুক্তি সমূহ যে যে মূলতঞ্জের উপর প্রতিষ্ঠিত, সেই সেই মূল-তত্ত্বের ব্যাখ্যা পুস্তকেই দেওয়া হইয়াছে, সেই সকল মূল তত্ত্ব দার্শনিক (metaphysical) মূল সত্য। চতুর্থ অধ্যায়ের যুক্তি প্রণালী এরপ নছে। এই অব্যামে প্রদর্শিত মূলমূকি যে মূল-তত্বের উপর প্রতিষ্ঠিত, সে মূলতত্ব নীতিবিজ্ঞানের (Ethical) মূল সতা। "ব্ৰহ্মজিজাসা"প্ৰধানতঃ দাৰ্শনিক পুস্তক: নীক্ষিবিজ্ঞান সম্বন্ধে বিশেষ ভাবে আলোচনা করা পুস্তকের উদ্দেশ্রের মধ্যে नरह, এই জञ्च এই मूनङ खंद बाधा ना पिता हैहा चीकाद कतिया ल अम बहेमारक, এवः এই चौकार्यम् छेभत केचरतत পূর্ণপ্রেম ও পূর্ণ পবিত্রতাবিষয়ক যুক্তি প্রতিষ্ঠিত করা হইয়াছে। উক্ত অধ্যায়ের প্রথমেই আমি এই দকল কথা স্পষ্টরূপে বলি-য়াছি এবং নীতিবিজ্ঞান সম্বন্ধে একথানি পুস্তক লিখিবার ইচ্ছা প্রকাশ করিয়াছি। বিবেকবাণীর উপর বাঁহাদের বিশ্বাস নাই, পাপ পুণোর মৌলিক অনতিক্রমণীর প্রভেদ বাছারা স্বীকার করেন না, তাঁহাদের নিকট এই অধ্যারের যুক্তি সুবৃদ্ধি विनिन्न (वाथ ना श्रेटन आगि किन्नूरे विनिन्न रहेव ना।

২। ঈশর মানবের চক্ষ্র চক্ষ্, শ্রোত্রের শ্রোত্র, মনের মন, প্রোণের প্রাণ, এক দিকে এই সত্য, অপর দিকে ঈশর পূর্ণ প্রেম ও পূর্ণ পবিত্র শ্বরূপ, তিনি মানবের অপ্রেম অপবিত্রতার ভাগী নছেন, এই সত্য,—এই উভন্ন সত্যের সামঞ্চত রক্ষা করা ধর্ম-বিক্ষান মাত্রেরই একটা কঠিন সমস্তা। ধর্মবিক্ষান প্রস্তৃতি वालीहे रहेक, जांत्र जांशांकारी रहेक, जांकाना रहेक धारावर रहेक, धारे धाराव दीमाश्ता मनक गर्मका क्षेत्रांका भारत रहांन नवका। धारे विवाद जांबात कांबाक जांबात वालाव वालाव रहांन विरावक नाहे। ज्यांकाना रव आहे आंबोहित किंदू विराव कांत्रेन किंद्रता जूरत, छांहा नरह। हैंद्रां रहेका नाहे या धारत धाराव मीमाश्ता ज्यांकावार व्यक्त कांत्रेन, अंकित वारत जांका छांक्त मीमाश्ता ज्यांकावार व्यक्त कांत्रेन, अंकित वारत जांका छांका कांत्र कांत्र कांत्र मीमाश्ता प्रति मान्यकानीरक छांखे विराव मा भारत, धाक्र कवांत्रीत मीमाश्ता कांत्र किंद्र जारणका जांका छांका किंद्र कांत्रिन नरह। जांका मानाक्त्रारत छांबा रामाहर छां।

৩। হরকালী বাবু জানা আর করাকে এক করিরা ফেলি-রাছেন, তাহাতেই তিনি গোলবোগে পড়িরাছেন। ঈশ্বর মানব মনের অপবিত্র চিস্তা জানেন, তাতেই বেন তিনি অপবিত্র হইয়া গেলেন। ভাহা হইলে জগতে পবিত্র কেহ থাকিত না, আর পবিত্রতার কোন অর্থও থাকিত না। যে পবিত্রতা পাপ জানে না, সে পৰিত্ৰতার কোন মূল্য নাই, এবং প্রক্লত অর্থে তাহা পবিত্রতাও নহে। পাপ পুণ্য উভন্ন জানিরা পুণা পথ অনুসর্ণ করাতেই পবিত্রভার মাহাত্মাও কার্ডবিক্ডা প্রকাশ পায়। ঈশরে আমরা এই পবিত্রতাই আরোপ করি। তিনি মানবের অপ্রেষ অপবিত্ততা জানেন। তিনি বেমন প্রেমিক ও পবিত্র জীবনের অবলম্বন, তেমনিই অপ্রেমিক ও অপবিত্র জীবনেরও অবলম্বন; তিনি যেমন পুণাবানের প্রাণ্ড প্রাণম, তেমনি পাপীরও প্রাণস্ত প্রাণম। কিন্তু ইহাতেই কিছু তিনি পাপীর পাপে লিপ্ত হইলেন না। তিনি পাপীর প্রাণের প্রাণ, স্থতরাং পাপীকে জ্ঞান ও স্থতি দিতে তিনি বাধ্য (নিজের বিধিতেই বাধা), কিন্তু পাপীর ইচ্ছার সহিত যথন তাঁহার ইচ্ছা এক হইল না, তখন তাহাকে কখনো পাণীব পাপের ভাগী বলা যাইতে পারে না। হরকালী বাবুর দুটান্ত-স্থানীর নিজোখিত ব্যক্তিকে বে ঈশ্বর তাহার নরহজ্ঞার চিম্বা মারণ করাইয়া দিলেন, তাহাতে তিনি সেই ব্যক্তির পাণে निश्व स्टेलिन ना । भाभ-िक्षा माज्ये यनि नेयत जूनाटेबा निष्ठन, তবে পুণ্যের মাহান্ম্য কিছই থাকিত না। পাপচিন্তা শ্বরণ হওয়া এবং শরণ থাকা সত্ত্বেও পাপ হইতে আপনাকে রক্ষা করাতেই আত্মার পুণ্য-কর্ত্ব প্রকাশ পায়। পাপ-চিন্তা ভূলাইয়া দেওয়াই यि मेचात्रत कर्खवा हत्र, जात अमन वस्त्र मा लियान, मा स्नान, না জানান ও তাহার কর্ত্তব্য, যাহা জানিলে ঘুনাক্ষরে ও পাণ বাসনা উদয়ের সম্ভাবনা আছে। ছংবের বিষয় এই বে স্বর্থতে এমন বন্ধ দেখিতে পাওয়া বার না যাছাতে অসংযত মনে কোন ना त्कान मगरत्र भाभ-वामना छेनत्र ना इटेर्फ भारतः। इछताः হরকালী বাবুর যুক্তির অনুসরণ করিতে গেলে এই নিভাজে উপনীত হইতে হয় বে আমাদিগকে কোন প্রকার কান না দিলেই অর্থাৎ আত্মারূপে সৃষ্টি না করিলেই সর্বভোডাবে ভাগ रहेज, जाहा रहेल जान जामानिगरक गानी स्हैरक रहेज मा व्यव क्षेत्रक ७ बामात्कत नारनत सक्त मादी हहेर्छ इहेफ मा।

expendit eight are are by spicer at, they telle or the वाडी बाबाह बनुवाक दावान कतिए डारिशासन, छारोड पश-_{সৰুণ} করিলে এই বীনাংসারই আদিতে হয়। বাডৰিক কথা **এই, পাগ जानाये, পাপ यदन कराय ७ भाग एक मा अवर मीन** क्षानान, भाग चत्रम कत्रानरकक्ष भाग एव सी, (बबर चरवक नवत তাঁহা নিভাভ আবভাক)—পাপ ইচ্ছা করাতেই পাপ হয়, পাপ বাসনা পোৰণ করাভেই পাপে লিপ্ত হইতে হয়। ঈশ্বর পাপীকে ভাহার পাপচিস্তা শ্বরণ করাইয়া দিতেছেন বটে, কিন্তু সঙ্গে সঙ্গে লাইরূপে ভাষাকে বলিয়া দিতেছেন যে ইছা পাপ-চিন্তা, ইছা তোমার পরিত্যাণ করা উচিত ; স্কুতরাং ঈশবেক্ষ ইচ্ছা যে চির-প্ৰিত্ৰ, তাহার ম্পাঠ প্ৰমাণ স্নাইয়াছে। দৃটাত-খানীয় ব্যক্তি ভাগার পাপ-চিস্কার শৃতি ও ঈখরের প্ণা-বাণী উভরই এক সঙ্গে লাভ করিতেছে; সে এই স্থৃতিকে অবলঘ্ন করিরা অমৃতপ্ত হইতে পারে, ঈশবের পুণ্যবাদীর অমুসরণ করিতে পারে, মুতরাং ঈশর-প্রদন্ত স্থতি তাহার মঙ্গলের নির্দান হইতে পারে; আবার এই স্বভিকে অবলম্বন করিয়াই সে পাপকার্ব্যে নিযুক্ত হটতে পারে। সে বাহাই করুক, তাহা তাহার নিজের, তাহাতে ঈশবের ইচ্ছার পাপ দর্লে না। এত্থনে ঈশব্ধ মানবে অনতিক্রমণীর প্রভেদ।

৪। "ব্রহ্ম জিজ্ঞাসার" ১৩৮এর পৃষ্ঠার আমি ভক্তিভাজন
শ্রীষ্ক বিজেজনাথ ঠাকুর ও গৌরগোবিন্দ রার মহাশর ব্যের
সহিত আমার একটা মতের ঐক্য সহদ্ধে যাহা বলিয়াছি, তাহা
উল্লেখ করিতে গিয়া হরকালী বাবু কিছু ভূল করিয়াছেন।
"ব্রহ্ম জিজ্ঞাসা"র পাঠক দেখিবেন আমি কেবল হৈতাহৈতবাদ
সহদ্ধে মৌলিক একতার কথাই বলিয়াছি, অস্তাস্থ মত সহদ্ধে
কিছু বলি নাই, এবং হৈতাহৈতবাদের বাাধ্যা সহৃদ্ধে যে
অনৈক্য থাকিতে পারে, তাহাও স্পষ্ট বলিয়াছি। উক্ত মহাশয় ধরের সহিত আমার সমুদার দার্শনিক মতে ঐক্য আছে,
এরপ কথা আমি বলি নাই, এবং কথনো ভাবিও নাই।

অমুগত শ্রীবানাধ দত্ত।

ব্ৰাশ্বসমাজ।

শোক সংবাদ—আমরা প্রায় দেড় বংসর পূর্বে ঢাকাস্থ वाव् नवकान्न ठटहाभाधाव महानद्यत (कार्धा कन्ना निर्मानावाना দেবীর সহিত শ্রীযুক্ত গুরুচরণ মহলানবিশ মহাশয়ের জেষ্ঠ পুত্র व्योगान् ऋरवायहत्त्व महानानविरमत् शतिशव मःवाम व्यापान कतिया **हिनाम। এই अन्नममन्न मर्ट्यारे आगामिशरक आवात मःवाम** ^{मिटि} रहेन स्व निर्मानां नाती एक २४ ७ खास २४ मित्नव একটা শিও সভান রাখিয়া পর্লোকগতা হইরাছেন। ভাঁছার প্রলোকগমনে তাঁহার পিভা মাতা, খণ্ডর শাণ্ড়ী স্বামী এছডি পরিবারদিগকে অতি বিষম শোক ভারেভারাক্রাস্ত হটতে হইরাছে। এরূপ বরুদে সংসারলীলা শেষ হইলে স্বভাবত:ই আন্মীয়গণকে বিশেষ শোক পাইতে হয়, তাহার উপর নির্মানা আপনার স্থমিষ্ট প্রাকৃতিগুণে কি পিড় ভবন কি শুশুর ভবন উভয় স্থানেই বিশেষ স্বাদরের পাত্রী ছিলেন। ভাছার অফতি স্বভাবত: এমন মিষ্ট এবং বিনয় পূর্ণ ছিল যে সকলকেই তাহার ব্যবহারে বিশেষ সুখী হইতে হইত। ভাঁহার শিক্ষা অধিক না থাকিলেও পবিত্রস্বভাবই তাহার বিশেব শোভার কারণ ছিল। এরূপ সকলের আদরের পাত্রীকে হারাইরা ভাঁহার আত্মীরগণ বিশেষতঃ ভাঁহার স্বামী বে বিশেষ শোকাকুলিত হইবেন ভাহাতে আর সন্দেহ কি ? আমরা প্রার্থনা করি তাঁহার পরিভ্যক্ত আত্মীরগণের প্রাণে মলন্মর পর্মেশ্র সাভন। प्रमान करून। शुरू कहे आधिन मनगरात निर्मागारामात व्याद्यानगरक वित्यव केनामना रहेवाहिन।

चौमामिन्द्रेयं चौन्नक थक्की मान्नक त्याक मध्यक नाक्रकनत्क क्षानान क्षिएक इंदेन हैं कि क्षेत्रिक इंदेन खेबूक बाव जीनवनि ধর মহাশর বিষয় কর্মোপ্লকে আগ্রানগরে গণরিবারে অবস্থিতি করিভেটিলেন। দেখানে প্রবল কলে: রোগের আক্র-মণে অনেককে ইত্সংসার পরিত্যাগ কবিতে হইয়াছে। এই পরিবারেও উক্ত দারুণ রোগ প্রবেশ করিয়া নীলমনি বাব্র महर्शाक्री बार प्रहेरी भूस महानत्व हेहत्वाक हरेला बहेरा গিরাছে। এক সমরে এরপ ওক্তর শেকে স্থ করা মাস্থ্রের **शरक प्रक्रि कठिन। विरम्प**नः नीवमनि वाव् विरमरम धकाको অবস্থিতি ক্রিতেছেন। এ অবস্থায় সর্বাশোকহরণ, পরমেশ্বর ভিত্র সাত্তনা প্রদান করিতে পারে এমন শক্তি আর কাহার? নাই। আমরা প্রার্থনা করি পরমেশ্বর এই শোকাকুক পরি-বারকে সান্তনা প্রদান করন। 🖳 বং এই পরলোকগত আত্ম 🗟 স্কলকে তাঁহার অমৃত্যর ক্রেছে স্থান প্রদান করিয়া অনন্ত কুশলে রকাককন। আফলা কৃতজার সহিত জানাইতেছি, নীলমনি বাবু তাহার সহধর্মিনীর প্রাক্ষোপলকে সাধারণ ব্রাক্ষ সমাজে > ্টাক। প্রদান করিয়াছেন।

নামকরণ—বিগত ২৫এ ভাজ সোমবার কাঁথিছ বাবু শশি-ভ্ষণ চক্রবর্তীয় তৃতীয়া কলার (চতুর্থ সন্তান) নামকরণ ও অর্নাশন কার্য্য সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। আসিঃ সার্ক্তন বাবু গোপালচক্র বস্থ মহাশয় এই অন্তানে আচার্য্যের কার্য্য করিয়া-ছিলেন। কলার নাম শ্রীমতী বাসতীবালা রাধা হইয়াছে। এই উপলক্ষে হানীয় ব্রাক্ষ ব্রাক্ষিকা ও ব্রাক্ষদর্শান্ত্রাগী অনেকে উপাসনার বোগ দান করিয়াছিলেন।

দীক্ষা—আমরা আনন্দের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে
গত ১লা আমিন একটা বিধবা মহিলা বালেম্বর ব্রাক্ষসমাজে
বিধিমত ব্রাক্ষধর্মে দীক্ষিতা ছইয়াছেন। ইহাঁর নাম সরস্বতী
বাই বংসর ১৭বংসর। খ্রীগুক্ত নন্দ্রগোপাল বন্দ্যোপাধার মহাশর
এই অষ্ট্রানে আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন। এই দীকা উপলক্ষে বালেম্বর ব্রাহ্মসমাজে আনন্দ উংসব হইয়াছিল।
ভগবান তাঁহাকে এই নবত্রত পালনের উপযোগী কর্কন।

नान প্রাপ্তি।

কুভক্ততার সহিত স্বীকার করিতেছি যে সাধারণ ব্রাদ্ধ-

সমাজ উপাসনালয়ের বারেন্দ। নির্দ্ধাণ জন্ত নিম্নলিখিত টাকা शन প্राप्त हरेग्राहि:--প্রীযুক্ত ভোষার্কিন এও সনের ম্যানেজার বাবু **কালীপ্ৰসন্ন বস্থ,** কলিকাতা || • **এছিল স্বর্ণমন্ত্রী দাসগুপ্তা, পু**র্ণিয়া বাবু বিশ্বেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যার, কলিকাত। দান সংগ্ৰহ ¢8ej ⊕ শ্ৰীযুক্তা প্ৰসন্নমন্ত্ৰী ভট্টাচাৰ্যা, কলিকাত। **धीयुक क्षेत्रकृष्ण मूर्शांभाषाय, इ**ननी 4 শীযুক বাবু সম্ভুচন্দ্ৰ মিত্ৰ, কলিকাত। " বারকানাথ সিংহ ঐ >/ ু কেদারনাথ কুলভি, বাঁকুড়া শলীভূষণ চক্ৰবন্তী, কাঁথি >< ু- শিবচন্দ্র দেব, কোরগর 28 প্ৰীযুক্তা অধিকা দেব 🗳

ু সরলা রায়, কলিকাতা ু প্রসন্ধতারা গুপু ঐ বাব্ রাজেজনাথ বজ্যোপাধ্যার ঐ ু দীননাথ দাঁ ঐ ু ত্রিপ্রাচরণ রার, রাচি

Ø

সামচরণ পাল,

जिल्ह्याहरूम द्वास, द्वाहि देवसामाथ जिलाही, के सीममाथ संख, के > 6

110

>/

11 .

" খ্ৰামলাল বোৰ, কলিকাভা	* *	्र, शाविक् ञा नं वक्ती कांकिनीयां ॥
কুদ্র সংগ্রহ	10	ु देकनामठळ जांज के
পরলোকগত ডাক্তার ভোলানাথ বহুর পরিবার	> 00	,, विभिनविशांत्री त्रांत, मानिकत्रह २८
বাবু নারায়ণ চক্র দাস	11•	একটা দরিজ, কোচবিহার
, क्रीकृष्ट मान	2	উপাসক মঙলীর তহবিল হইতে মেরামতের ব্যর দক্ষণ
ুঁ, ব্ৰনীকান্ত বস্থু, কলিকাতা	.0	थां छ ३५५०/०
बीयूका निन्छा तांत्र, वे	30/	(0.10)
আধুকা গাণলার রাজ, শ্রীমতী মৃণালিনীর মাতা		0011/
	3/	٠٤/١٩٥٠
ত্রীযুক্ত বাবু দীননাথ গাসুলী, পুনা	, 4	শ্রীপ্তক্ষরণ মহলানবিশ
ु जमग्रहत्रंग मान, भीनः	Ho.	সম্পাদক বিক্তিংকণ্ড কমিটী,
শ্রীযুক্তা কল্পিণী মহুলানবিশ	٤,	
জেলেটোলার প্রাক্ষিকা সমাজ	*	সাঃ বান্ধ সমান ।
বাৰু কুঞ্লাল নাগ, ঢাকা	٤,	of the annual production of the latter of th
"বছনাপ রায়, রামপুরহাট	२५	ক্বতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করিতেছি যে সাধারণ ব্রাহ্মসমান
,, তারকচন্দ্র ঘোষ, মেদিনীপুর	२	মন্দিরের বেঞ্চ পাথা ও হার্ম্মোণীয়ামের জল্প নিমা লিখিত রূপ
ু মতিলাল হালদার, দারজিলিং	. 9	मान व्यार्थ इरेग्राहि।
, 🎒 हमान 🗳	٩	
,, হেমচক্র চাস, কলিকাতা	२०	
ু কৈলাসচন্দ্ৰ বাগছী, পাবনা	110	প্রীযুক্তা শারদাহন্দরী চৌধুরাণী, ঐ
্লু উমাচরণ দাস, ভবানীপুর	40	একপঞ্চাশৎ মাবোৎসব ও প্রীতিভোজনের উষ্ভ
্লু চ ণ্ডীচরণ দেনের পরিবার	3/	টাকা হইতে ১২া৮/৫
ু গোপালচন্দ্র মলিকের পরিকার	K	রার ধনপংসিং বাহাছর, আজিমগঞ্জ >•্
ু আন্ততোষ ঘোষ, গড়পার		ু, সেতাবর্টাদ বাহাছর ঐ ৭
	3/	বাবু প্রসন্নটাদ ছগর ঐ ৭
ু, অবৈতচরণ মন্লিক, কণিকাতা	4	্, জানসিং বয়েদ ঐ ৫
,, नमनान रमन, क्ष	40	ু ধনভকজি গুরুজি ঐ ৫
" পাঁচকড়ি বন্দ্যোপাধ্যার, কোর্গর	م	্লু কালীচরণ মেমল এ ৪
ু, সাতকড়ি দেব, 👌	>/	ুঁ বিনয়টাদ কিটো ঐ
শ্রীমতী শরৎকুমারী মিত্র, 🙀	' 4	धकी वस् व
" यत्नात्माहिनी वस्र, क्रिका	>0/	वां प्राट्यकीं मनकका थे 8
মেদিনীপুর হইতে তারক বাবু আদায় করিয়া পাঠান	~11 •	, तृक्ष्मिर विनन ां म यूधितत्र। खे
বাৰু বিনোদ বিহারী বস্থ, কালনা	8	, त्रीशानमान চट्डोशीशात्र, मूत्रनिमाताम 8
্ৰ নৰ্কুমার চৌধুরি, কলিকাডা	21	Edward Control of the
ু, সত্যরঞ্জন দাস 🏖	۲۰ ؍	
র্থীমতী শিবমদোমোহিনী সিংহ, মৃঙ্গের	۲,	1 " ·
বাবু গলাগোবিস্দ নন্দী, কলিকাতা	e,	, नत्रकळ त्रांत्र के
्र साहिनीत्माहन मञ्जूमनात, खे	301	একটা ব্রাহ্মকা হার্মোণীয়মের সমস্ত মূল্য দেন ১০০
्र ट्रक्ष्युक्ष रेमख,		वाव् नवीनकृष्ण भानिष्ठ भाँकिना २०
	4	,, নবকুমার চক্রবর্ত্তী লক্ষীপুর ২
,, গোরিন্সচন্দ্র শুহ,	3/	,, शका शांविन ननी कंनिकाल (
ু জাদিনাথ চটোপাধ্যার, ঐ	110/20	্,, উপেক্সচক্র বস্থ ঐ ১০
ু হুৰ্গামোহন দাস, 💩	>00/	,, শশীভূষণ বিশ্বাস ঐ ৫
পণ্ডিত শ্রীশচক্র বিদ্যারত্ব ঐ	٤,	,, ग्रांधामाधव वस्र छाकि >•
वांद् वहविशांती वस्, व	٩,	,, नक्तनान (সম क्लिकांडा c
" ভুবন মোহন ঘোষ, 🗳	>0/	Bretwarter from A
,, मध्यमन रमन, 🔄 👌	4	1 12
,, ভগবানচক্র সুখোপাধ্যায়, কাঁথি	c ,	विश्वभाग्यात्वादम्बद्ध १६॥>•
" ठाँमत्याह्न देगवा, श्किमांवर्षे	•	বাবু কানীকুমার ঘোষ ক্লিকাতা ২
্ল. ঘারকানাথ সেন, কলিকাতা		,, হরিচরণ সেন এ
" देननामञ्च रान, धे	٥,	,, शंकानन त्यांव 🍇
জীমতী কুস্থমকুমারী রায়, বরিলাল	. 21	,, इनीरबाहन मात्र के >••.
	•	,, जूरन त्माहन नान के २०.
बार् जनमेश्वर ७४, कृष्टिया	e,	,, क् नीव्यत्माहम वञ्च क्षे >•
্, চক্রকান্ত সেন, গৌহাটী	201	,, चरेषण्ठत्रन महिक के
ু, গৌরলাল রাম, কাকিনীয়া	8	
" গুগনচন্ত্ৰ ঘোৰ, 🐧	> •	99840/36
" नीनक्षम निःह ध	ર્ડ્	
্ল তারক নাথ নৈত্র ঐ	∵ ર`	(শুক্তরণ মহলানবিদ
,, হরিনাথ ঠাকুর 🗳	110	সম্পাদক সাধারণ ব্রাক্ষসমান্ত্র
্, কালীকুমার খণ্ড ঐ	••	★ 2. ここでは、1. こには、1. こにはは、1. こにはは、1. こにはは、1. こにはは、1. こにはは、1. こにはは、1. こ

তত্ত্ব-কোমুদী

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২**ন ভাগ।** ১৩**ন সংখ্যা।**

১লা কার্ত্তিক বৃহস্পতিবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্স সম্বৎ ৬০

বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২ ৪ । মকস্বলে ° ৩, প্রতি থণ্ডের মূল্য /

षश-नीक।।

রাগিণী কাঞ্চি—তাল একভালা। (बारस मारत उन रमना नाह-नारनत इस) প্রভূহে আনিলে যে কাল করিতে প্রাণ তাতে দিলাম কই ? আমি ভূলেও নারিত্ব আপনা ভূলিতে এ কোर्टित कथा कारत करे ? কোট নরনারী—ভারত আঁধারে হারায়ে তোমারে কাঁলে ওই ; পেন্নে তব জ্যোতি একি হে করিন্থ আপনি তাহারে আবরি' রই। নারিত্ব ভূলিতে মান অভিযান া আলভ জড়তা, গেল কই ? বোর স্বেচ্ছাচারে বাড়ামু আমারে, আমি হে আমারি তোমার নই। नव अधि-मीका (में इंट अमिदिन, সে আগুণে পুড়ে ভোমারি হই; ৰাগাই আগুন ভারত-কাননে, আপনা হারায়ে তোমারে বই।

मुल्लामकीय मुख्या ।

সাধনা ও অধ্যবসায়—রাতারাতি লেখাপড়া শিখা বার
না, রাতারাতি পরিত্রাণও হর না। বিশ্বাদের অনেক বল,
কিন্তু সাধনার কার্য্য বিশ্বাদে হর না। বিশ্বাদের সহিত পর্বতকে
যানান্তরিত হইতে বলিলে, সে স্থানান্তরিত হইবে সত্যা, কিন্তু
নে স্থানে একটা অট্রালিকা প্রস্তুত করিতে হইলে, অনেক পরিশ্রম ও মন্তিক বিলোড়নের প্রয়োজন হর। সাধকদিগের জীবনের ইতিবৃত্ত পাঠে লেখা বার, মে বলিও তাঁহাদিগের কাহারও
কাহারও জীবনের গত্তি "রাতারাতি" পরিবর্ত্তিত হইরাছিল, কিন্তু
কাহারও জীবনের গত্তি "রাতারাতি" পরিবর্ত্তিত হইরাছিল, কিন্তু
কাহারও জীবনের গত্তি "রাতারাতি" পরিবর্ত্তিত হইরাছিল, কিন্তু
ক্রিক্তিকে স্থানরা ইনি স্থান হিতে বলিতেছি না। উত্তান

দিলের বল প্রচুর। এক দিনের প্রতিক্তায় লোককে বিশ বংসরের কু-অভ্যাস দূর করিতে দেখা গিলাছে। কিন্তু উহা-দিজেশর ভারা সাধনের অভাব দূর হয় না। উহারা বে সামরিক বলের উচ্ছাস আনয়ন করে, তাহা রাখিবার ভক্ত সাধনার নিভাস্ত প্রয়োজন। ব্রহ্ম অতি ফুর্নভ বন্ধ, সংসারের প্রগোভন অতি ভীৰণ, চিত্তের চ্বলিতা শোচনীর। পুনঃ পুনঃ অভ্যান ও সাধনা ভিন্ন সে প্রলোভন উত্তীর্ণ হইন্না বল লাভ করত ব্রহ্মধন লাভ করা বার না। শত শত কুমভ্যাস ও শক্র আমাদিগকে বেষ্টন করিয়া আছে, অবসর পাইকানত্ত আমাদিগকে ধর্মপথ-চ্যুত করিবে। কঠিন ও দীর্ঘকাল ব্যাপী সাধনা ভিন্ন সে সকল রিপুদিগের মন্তক কিরুপে কেঁট করিয়া রাখিব ? আমাদিগের মধ্যে সাধনার বড়ই অভাব। যুগে যুগে খবি যোগীরা ষেরূপ माधना कतियां देष्ठेरमवजात माकाश्कात नाख कतियाहिरनन, তাহার দহিত তুলনা করিলে আমাদিগের ক্বত সাধনা সাধনা শব্দেরই বাচা হইতে পারে না। সহিষ্ণুতার সহিত পুনঃ পুনঃ অভ্যাস ও উপলব্ধি ভিন্ন সাধনার কোন অবস্থাকেই চির্নিদের জন্ত জীবনে ধরিয়া রাখিতে পারিব না। মানব জীবনের সকল বিভাগেই অধাবসায়ের জয়। ফোঁটা ফোঁটা মাত্র জল দীর্ঘ-কাল ধরিরা ক্ষরিত হইলে প্রস্তর ক্ষর পার। ধর্মজীবনেও অধ্যবসায় ও সাধনা ভিন্ন পরিত্রাণের আশা নাই।

প্রকৃত সাধনকেত্র—বাহির হইতে অন্তরে, না অন্তর হইতে বাহিরে? তুলদর্শিগণ সকল বিষয়েই বাহির হইতে অন্তরে ঘাইতে কলেন। ধর্ম রাজ্যেও তাঁহারা বাহির হইতে অন্তরে আনা প্রকৃত পথ বিদিয়া নির্দেশ করেন। তাঁহারা কেবল অফুঠানের সংখ্যা গণনা করেন, এবং সংকর্মের সংখ্যার তার-তম্যান্থসারে সাধকের প্রেঠছ বা হীন্তা নির্মাচন করেন। ক্ষমার্শিগণের উপদেশ অন্ত প্রকার। তাঁহারা বলেন স্থারাজ্যা বাহিরে নহে, ভিতরে; ঈশ্বরের রাজ্য প্রতিষ্ঠা আগে ভিতরে, পরে বাহিরে। সেই কল্প ধর্ম জগতে দেখা বার বে যাহারা অন্তর হইতে বাহিরে আনে না তাহারা ধর্মের অন্তঃপ্রের সংবাদ দ্বাহেশ না। বাহিরে পরিত্রাণের কথা বলিয়া বেড়াই, অন্তর্মির পরিত্রাণের মূল মন্ত্র প্রকাশের স্বাহর বাহিরে

অমুঠান ও বাক্যের আদ্ধ করি, অথচ ভিতরে ভিতরে দেখি যে প্রাণ এখনও আন্তিক হয় নাই, ইহা বড় শোচনীয় অবস্থা। এই জন্ত অভিজ্ঞ সাধকেরা বলেন যে সর্কাণ্ডো ঈশ্বরের সহিত আপ-নার সম্বন্ধ স্থির করিয়া লইতে হইবে। ভাল, ভাহাই যেন मानिया नहेनाम, किंख जात भरतहे अन डिटंग, मचक ठिक हरेन কি না হইল, রাঙ কি স্থবর্ণ পাইলাম, কোথার যাচিয়া লইব ? সাধনক্ষেত্রের সেই জন্ম আবিশ্রকতা হয়। সমাজ দূরে, সকল সময়ে সমাজের সঙ্গে মিশিতে হর না; হাতের কাছে কিছ পরিবার। পরিবারকেই স্থভরাং প্রথম প্রথম সাধনক্ষেত্র করা স্থবিধা। ঈশ্বরের প্রতি নির্ভর হইয়াছে মনে হইভেছে, প্রাণসম পুত্রের উৎকট পীড়ায় সে নির্ভর থাকে কি না দেখিলে জানিতে পারিবে যে প্রকৃত কি মর্কট নির্ভর লাভ করিয়াছ। ঈশরের প্রতি প্রেমের উচ্ছাস হইয়াছে মনে হইতেছে, সহল বিরক্তির কারণ পরিবারে উপস্থিত হইলেও তোমার মন যদি বিক্ক, প্রেমহীন বা বিরক্ত না হয়, তাহা হইলে বুঝিব, ঈশ্বরের সহিষ্ণু প্রেমের কণা পাইয়াছ। পরিবারই প্রকৃত ও প্রথম সাধনক্ষেত্র। পরিবারকৈ এই ভাবে দেখিলে বনগমনের আবশ্রকতা হয় না, সংসারের প্রতি মায়াবাদীর বিদ্বেষ উপস্থিত হয় না। সাধনে লদ্ধন ক্সিয়া লইবার এমন স্থন্ধর কৃষ্টি পাথরকে আমরা বিপরীত চক্ষুতে দেখি, ইহাই হু:খের বিষয়।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

ঐশীশক্তি।

(দ্বিতীয় প্রস্তাব)

বাযুর গতি বেমন দর্মদা ও দর্মত দমান নছে, ঐশীশক্তির প্রকাশও তদ্ধপ সর্বাদা ও সর্বতে সমান নহে। বিচিত্তাই প্রকৃতির নিয়ম। ছই জন মান্নবের আকৃতি বা প্রকৃতি ঠিক্ একরূপ দেখিতে পাওয়া যায় না, একই জাতীয় ছইটা বৃক্ষকে পরস্পরের সহিত তুলনা কর, কত বিভিন্নতা দেখিতে পাইবে। ই্হাই প্রকৃতির নিয়ম, ইহাতেই জগতের সৌন্দর্যা ও শৃত্যলা। পৃথিবীর সকল লোকের আকার যদি ঠিকু একরূপ হইত তাহা হইলে যে কি ভয়ানক সামাজিক ও সাংসারিক বিশৃষ্খলা উপ-স্থিত হইত, মহাক্বি সেক্সপীয়র বচিত "ভ্রান্তিবিলাস" (Comedy of Errors) নামক প্রহ্মনে তাহার কথঞিৎ আভাস পাওয়া যায়। সকল মাহুবের প্রকৃতি যদি ঠিক্ একরূপ হইত তাহা হইলে বোধ হয় সেই এক প্রকৃতিক (একছেয়ে) মহুষ্য মণ্ডলী পরস্পরের স্থের কারণ না হইয়া ছ:থেরই কারণ হইয়া উঠিত। यनि একটী সহরের সকল বাড়ী গুলিই স্থন্দর অথচ ঠিক এক আকারের হয় তবে সে সহরের সৌন্দর্য্য থাকে না। আহারের আরম্ভ হইতে শেব পর্যান্ত কেবল মিষ্টার, বোধ হয় কাহারও ভাল লাগে না। বিচিত্রতাই জগতের নির্ম, বিচিত্রতাতেই দৌন্দর্বা, বিচিত্রতাতেই সুখ, বিচিত্রতাতেই শুঝলা। যে জীবনে কোনও রূপ হঃথ নাই, অভাব নাই তাহাতে সুখও নাই। অধিমিশ্র মুখ বাত্তবিক সুথকর কিনা তদ্বিরে গোর गत्नर बाह्य। এই বিচিত্ৰতার बन्छ रुष्टि कर्त्वादक शक्तभाविष

লোবে লোবী মনে করা নিতান্ত মুছের কার্য। সকল মানব ঠিক্ সমান প্রকৃতি বিশিষ্ট অথবা সমান অবস্থার অবস্থিত নহে, বিলিয়া যদি জগদীখনকে পক্ষপাতী বলিতে হয় তবে সকল লোক সমান আকৃতি বিশিষ্ট নহে বলিয়াও ত প্রষ্টাকে পক্ষপাতী বলা যাইতে পারে ?

প্রকৃতির নিয়ম অপরিবর্তনীয় তাহাতে কোনও সন্দেহই নাই; একই প্রকারের অবস্থায় একই প্রকারের কারণ পরস্পরার সমবারে ফল বা কার্য্য যে একই প্রকারের হইবে ভাহাকে না স্বীকার করিবে ? কিন্তু কথা এই বে, ছইটা निर्फिष्टे ऋत्म त्य व्यव हा ७ कांत्रण शवन्त्रतात ममवात्र ठिक् এकः রূপই হইবে তাহার স্থিরতা কি ? বিভিন্ন অবস্থার, বিভিন্ন কারণের সহযোগে যেমন একই অপরিবর্তনীয় নিয়মের বলে ভিন্ন ভিন্ন কার্য্যের উৎপত্তি হইরা থাকে, সেইরূপ বিভিন্ন অব-স্থায় জন্ম, বিভিন্ন ভাবে লালন পালন ও বিভিন্ন প্রকারের শিকা ও সংসর্গ নিবন্ধন ভিন্ন ভিন্ন লোকের প্রাকৃতি ভিন্ন ভিন্ন রূপ হইয়া থাকে; এতত্তির পিতামাতার (ও কাহারও কাহারও মতে তদুৰ্বতন পূৰ্ব্বপুৰুষ্দিগের) প্রকৃতি অহুসারে মানবপ্রকৃ তির বিভিন্নতা হইরা থাকে। ইহা বে কতক পরিমাণে সভা তাহাতে সন্দেহ নাই, এবং তৎপক্ষে অনেক যুক্তিসক্ত প্ৰমাণ্ড আছে। এ প্রবন্ধে তাহার উল্লেখ নিপ্রয়োজন। এরূপ স্থগে যে ব্যক্তি বিশেষের প্রকৃতি ঐশীশক্তির প্রকাশের পক্ষে অথবা কোনও বিশেষ দেশ বা সমাজ কোন উচ্চ সত্য বা ভাবে? প্রকাশের পক্ষে বিশেষ ভাবে অনুকৃল হইবে তাহাতে আর আশ্রুয়া কি ? এবং তাহার জম্ম বিধাতাকেই বা পক্ষপাতী বলিব কেন ? ইহাতে সাম্যের কোনও ব্যাঘাত হয় না नात्मात्र **व्यर्थ कि १ नात्मात्र व्यर्थ हेहा** नटह त्य नकन मान्नत्यः অবস্থা বা প্রকৃতি ঠিক্ একরূপ হইতে হইবে। সাম্যের অং সাধারণ অধিকারের সাম্য, সাম্যের অর্থ স্থােগ ও দায়িত্তে অধিকার ও কর্তব্যের সামলস্য-অর্থাৎ তোমার পক্ষে জান ধর্ম লাভের যে পরিমাণে স্থযোগ আছে, অবস্থার অন্ত্রুতা আছে তোমার দায়িত্বও সেই পরিমাণে গুরুতর, তোমার জাধ-কার যেরূপ উচ্চ, তুমি জ্ঞান ধর্মে যে পরিমাণে উন্নত হইগাছ ভোমার হৃদয়ে যেরূপ উচ্চ সভা ও ভাবের আলোক, বেরুণ উন্নত আদর্শ প্রকাশিত হইয়াছে তোমার কণ্ঠব্যের ভারও সেই রূপ গুরুতর। তোমার শক্তি যতটুকু সেই পরিমাণে কা^{য্য} করিবার জন্ম তুমি দায়ী।

সকলের প্রক্রতিতেই দেবভাব বা এশা শক্তির অহুর
আছে ইহা সত্য; কিন্তু সকলের হৃদদ্ধে তাহা সমান
ভাবে প্রকাশিত হর না, অথবা সকলের তাহা সমান
ভাবে ধরিয়া রাথিবার শক্তি নাই। বীজের মধ্যে তাবী
বৃক্ষ প্রচ্ছরভাবে অবস্থিতি করিতেছে ইহা সত্য, কিন্তু নেই বৃক্ষ
প্রকাশের জন্ত অহুক্ অবস্থা চাই—রস চাই, উত্তাশ চাই,
আলোক চাই, সেই জাতীয় বৃক্ষের পরিশোবক উপাধান বিশিষ্ট
মৃত্তিকা চাই—তবে বীজ অহুরিত ও বৃক্ষ পরিবৃদ্ধিত হুইবে।
শিক্ষক পঞ্চাশ জন ছাত্রকে একটা বিষয় বৃক্ষাইয়া নিশেন, বেই
ভবিল, কেই ভবিল না। মাহারা ভবিল না ভাহাদের ক্যা

ছাজিয়া দিন, কিছ বাহারা ভানিল তাহারা কি সকলেই সমানভাবে উহা বৃষিল ? প্রারই সেরপ দেখা বার না। কেহ একবার
দেখিলেই বৃষো, কেহ চেটা করিয়া বৃষো, আবার কেহ বা অনেক
চেটা করিয়াও ভাল বৃষিতে পারে না। ইহার কারণ কি কেবল
মনোবোগের অভাব—না বৃদ্ধিমন্তা বলিয়া একটা জিনিস
মাছে ? যদি প্রকৃতিগত বৈষম্য না থাকিত ভাহা হইলে মনোবোগী ছাত্রমাতেই সর্কাশান্তে সমান পারদর্শী হইত। এক এক
জনের বৃদ্ধি এক একদিকে ভাল চলে। হই ব্যক্তি একই বিষয়
আরম্ভ করিতে চেটা করিল তাহার মধ্যে এক জন অয় পরিশ্রমে
ও অয়দিনে তাহা শিথিয়া ফেলিল, আর একজনের তাহাতে
প্রবেশ করিতে দিগুণ বা ত্রিগুণ সময় ও পরিশ্রম লাগিল, এরপ
দৃষ্টান্ত বিরল নহে।

চেষ্টা করিলে প্রত্যেক লোকে হয়ত কোন না কোন বিষয়ে डेब्रिक नाड कविएक भारत। किंद्र क्रिडी क्रिल नकल्बेर ए কালিদাস বা সেক্সপীয়রের মত কবি, গালিলিও বা নিউটনের মত গণিতবেন্তা, অথবা হিউম বা কান্টের মত দার্শনিক হইতে পারে একথা আমরা স্বীকার করিতে প্রস্তুত নহি। বদি তাহা পারিত তাহা হইলে এরপ লোকের সংখ্যা জগতে এত বিরল হইত না। যে যে শক্তির বিশেষ বিকাশে ছই এক জন लाक कान ७ विरमध विषय व्यमाधात्रग श्रीधाम्र नाज करत, গাহার বীব্দ দকলের প্রকৃতিতে আছে ইহা স্বীকার করিয়াও একথা বলা যাইতে পারে যে সকলের প্রকৃতি, মানসিক ও বাঞ্কি অবস্থা, শিক্ষা, সংসর্গ ইন্ড্যাদি ঐ সমুদার শক্তির विकारमञ्ज भाम अञ्चल नार । किष्ठी कतिराम आस्तरक কালিদাসের কাব্য, নিউটনের আবিষ্কৃত বৈজ্ঞানিক সত্য অথবা কাণ্টের চিম্ভাপ্রস্থত দার্শনিক মত সকলের মর্ম্মোদ্ঘাটনে সমর্থ হইতে পারে। কিন্তু সকলেই যে চেষ্টা করিলে তাঁহাদের স্থায় মৌলিক (original) ভাবের অবতারণা বা সত্যের আবিষ্কার ক্রিতে পারেন একথা বলিলে প্রকৃত ঘটনা অস্বীকার করা ও নিতান্ত ছ বৈজ্ঞানিক কথা বলা হয়। কারণ, বাঁহারা মনোবিজ্ঞান শাস্ত্র অধ্যয়ন ও মানবপ্রকৃতি পর্যালোচনা করিয়াছেন এরূপ ব্যক্তি মাত্রেই স্বীকার করেন যে সকলের মানসিক শক্তি সমান ও সমভাবে বিক্ষিত নছে। এক একজনের বৃদ্ধি এক এক বিষয়ের বিশেষ উপযোগী; আবার এমন কেহ কেহ আছেন বাহাদের বৃদ্ধি একাধিক বিষয়েও সহজে প্রাধান্ত লাভ করিতে পারে; অপর্নিকে এমন লোকও আছে যাহাদের বৃদ্ধি কোনও বিষয়েই ভালত্বপে প্রবেশ করিতে পারে না। ইংরাজিতে যাহাদিগকে ^{idiot} (অঙ্বুদ্ধি) বলে তাহারা ইহাব উত্তম দৃষ্টাত স্থল। কোনও মতবিশেষ দারা পরিচালিত না হইয়া ধীরভারে সত্যাদেষণে অবৃত্ত হইলে ইহা নিশ্চয়ই স্বীকার করিতে হইবে বে মানসিক मिक नवस्त नकन लोक नभाम मरह। अथे एकथी वनिराहरे ^{(य क्रे}षेत्रक शक्रभाठी तमा इहेन छाहात क्लान **व**र्ष नाहे। নানা কারণ পরস্পরার সমবায়ে ও অবস্থাডেদে একই অপরি-^{বর্ত্তনীর} প্রাকৃতিক নিরনে বিভিন্ন লোকের মানসিক পক্তির বিকাশের বিভিন্নতা হইরা থাকে। ঈশ্বরের শক্ষে পরিবর্তন-भीग रश्या यति छोटात श्रक्तांत्रिक्य रत, सनारकत सम्धनीत

নিমনের পরিবর্তন করা বণি ভাঁহার প্রকৃতিবিক্লব্ধ হয়, তবে এই বৈষম্য দুর করাও তাঁহার প্রকৃতি বিরুদ্ধ। ইহাই প্রকৃতির নিয়ম; ইহাতে পক্ষপাত নাই, অসাম্য নাই। কারণ, বাহার বতটুকু "कि त जाहान्रहे बळ मानी; त्म जाहान्रहे मन्नावहान कतित. তাহারই উন্নতির জন্ত চেষ্টা করিবে, তাহার সাহায্যে জগততর बञ्च যে কিছু কার্য্য করিতে পারে তাহা করিবে। মানব মওলীর আকৃতি ও প্রকৃতিগত বৈব্যা সত্ত্বেও বেমন তাহাদের পরম্পরের মধ্যে একটা সাধারণ সৌসাদৃত্ত আছে, সেইরূপ বিশেষ বিশেষ অধিকার সম্বন্ধে বৈষ্ম্য সম্বেও সকলের সাধারণ व्यक्षिकारतत नामा व्याष्ट्र। , नजूरा रिट्य मक्ति, व्यवसा, नवस প্রভৃতি কারণে বিশেষ অধিকারের বৈষম্য ত গাকিবেই। যে माबाबाब राम जूमि, जामि, बृष्टे, टेठज्ञ, कानिवान, निक्रिन. কাণ্ট, নেপোলিরন সকলেই সমান—ভোমার আমার সহিত हैरामित कामध रेजन विस्मय नार्रे-हैरामित मध्या य मिक প্রকাশিত হইয়াছিল তোমার আমার মধ্যেও সেই শক্তি প্রকা-"শিত রহিয়াছে, ইহাদের সহিত সকল বিষয়ে আমাদের সমান অধিকার—সে সাম্যবাদের মধ্যে কতদুর সত্য আছে তাহা আমরা বলিতে পারি না।

বিভিন্ন লোকের মধ্যে যেরূপ শারীরিক ও মানসিক শক্তির ভিন্নতা আছে, সেইরূপ আধ্যান্মিক শক্তিরও ভিন্নতা দেখিতে পাওয়া যায়। কাহারও আধ্যাত্মিকতা জ্ঞানপ্রধান, কাহারও বা ভাবপ্রধান, কাহারও বা কার্য্যপ্রধান, আবার কাহারও কাহারও জীবনে এই তিনের সামঞ্জও দেখিতে পাওয়া যায়। কেহ কেহ বা বাল্যকাল হইতেই ধর্মনির্চ, অল্পবয়দেই তাঁহারা ধর্ম্মের উচ্চভাব সকল হাদয়ক্ষম করিতে পারেন। অনেকে তাহ। পারে না। জন্মগত কারণেই হউক, বা বাল্যকালীন অবস্থা শিক্ষা ও সংসর্গের জন্তুই হউক, অথবা তংসামরিক সাধারণ আখ্যাত্মিক ও সামাজিক অবস্থার প্রভাবেই হউক তাঁহাদের প্রাণে ধর্মের উচ্চ ভাব ও সত্য সকল বিশেষভাবে ফুর্জিলাভ করে। এরপ প্রকৃতি যে ঐশী শক্তির প্রকাশের পক্ষে—উচ্চ আধ্যাত্মিক আদর্শ প্রকাশের পক্ষে বিশেষ অমুকুল তাহা কথনই অস্বীকার করা যায় না। যথন বিশেষ অবস্থার প্রভাবে কোনও সমাজে ঐশী শক্তির বিশেষ প্রকাশ হয় সেই শক্তি প্রকাশের ক্ষেত্র কোণার ? ঐ সমাজন্তিত নরনারীর আত্মাই তাহার ক্ষেত্র। নতুবা শৃস্থে কিছু আর আধাাত্মিক শক্তির প্রকাশ हहेरव ना। ज्यात यनि नमाजक मानवाचाहे त्नहे क्या हत्र, তবে যে সকল আত্মা বিশেষ আধ্যাত্মিক ভাষসম্পন্ন তাহাতেই সর্বাত্রে ও বিশেষ প্রবশভাবে উহার প্রকাশ দেখা যাইবে না ত কোণার দেখা যাইবে ? ইহার মধ্যে ত অন্তার বা পক্ষপাতিত কিছ **एमि ना । यमि भारीदिक वा मानिमक প্রকৃতির বিভিন্নতা** স্বাভাবিক হয় ও তাঁহাতে পক্ষপাতিত না থাকে তবে আবাা-ত্মিক প্রকৃতির বিভিন্নতাই বা অস্বাভাবিক ও পক্ষপাতদোষ-যুক্ত কেন হইবে ৷ আর তাহা যদিনা হয় ডবে অমুক্ল আধ্যাত্মিকঅবস্থাসম্পন্ন আত্মান ঐশীপক্তির প্রকাশই বা व्यवाक्षांविक ७ भक्रभाज्यनाविभिष्ठे इटेरव (कन १ जाहा আমরা ব্রিডে পারি না। মনোরাজ্যে যেমন কেহ কেহ

ষভাবিক শক্তির প্রভাবে সাধারণ লোক অপেকা সহতে মুক্কর সভ্যের মধ্যে প্রকেশ লাভ করিছে পারেন, নৃতন নৃতন নৃতন করা আবিকার করিতে পারেন, নৃতন নৃতন ও প্রশার স্থানর আবতারণা করিতে পারেন, আধ্যাত্মিক রাজ্যেও তেমনি কেই কেই খাতাবিক শক্তির প্রভাবে অপরের অপেকা সহতে উক্ত ভাব ও সভ্য সকল মারকম করিতে পারেন, উন্নত আদর্শ মারণ করিতে পারেন। অগভেদ ইতিহাসের প্রান্ত হইতেই ইয়ার প্রমাণ দেখিতে পাওরা বাইতেছে। এ কথা অস্থীকার করিলে প্রভাক ও প্রকৃত বটনা অস্থীকার করা হয়।

ইহার বিরুদ্ধে হরত কেই বলিতে পারেল যে তাঁহারা চেঠা করিরাছিলেল, আমরা চেটা করি না বলিরা দেরপ উন্ধত হইতে পারিছেটি না ইহার উত্তরে আমানের বক্ষ্ণয় এই বে শক্তির ভারতমা অকুরারে চেটার ফলের ভারতমা হরীরা থাকে। শক্তি না থাকিলে কেবল চেটার কিছু হর না। স্থাহার মন অত্যন্ত চক্ষ্প, পাঁচমিনিট হির হইরা কোন বিষয় ধরিতে পারে না, ভাহাকে তিন ঘণ্টা বনিরা ধ্যান করিতে বলিলে সে পারিবে কেন ? ভোমার আধ্যণ ভার তুলিবার শক্তি নাই, তুমি এক মণ বহিবে কিরপে ? বে ল্যামিতির একটা সামান্ত সভ্য ব্রিতে পারে না সে গ্রহরণের কক্ষানির গ্রহুতি ব্রিবে কেমন করিরা ? আমরা আগামীবারে এই বিষর আরও বিশ্বন করিতে চেটা করিব।

আস্থাসমর্পণ।

ঈশর মহান্, মানব সন্তান ক্রু, ঈশর ব্রহ্মাণ্ডের প্রস্তা ও সর্কাশক্তিমান্, মানব হর্কাল ও নিরাপ্রায়; ঈশর অসংখ্য বিভূতিবিশিষ্ট, মানব সন্তান দরিদ্র ও নিঃসম্বল। এরূপ বিস্ দৃশভাবাপর ছই আত্মায় যোগ কিরূপে সন্তব, সাধনাধীর মনে সহজেই এই প্রের উঠিতে পারে।

এই প্রশ্নের মীমাংসা ছই প্রকারে ছইতে পারে। এক প্রকার তব-বিদ্যার-দিক্ হইতে, জার এক প্রকার ভক্তির দিক্ হইতে। তব্দ-বিদ্যা বলেন যে (১) জীব ও পরমান্মার পদার্থ-গত প্রভেদ নাই, পরিমাণগত অনন্ত প্রভেদ আছে এবং (২) ঈশ্বর জীবের প্রাণ ও জীব সর্বতোভাবে ব্রজ্ঞের ম্থাপেকী। একথা যদি সত্য হয়, যে ব্রহ্ম প্রতিমূহুর্তে জীবের জীবন রচনা করেন এবং জীবের জীবন অসীম ব্রহ্মের স্পীম ক্রম বিকাশ-মাত্র, তাহা হইলে জীবান্মা ও পরমান্মার যোগ ধারণা করা সহজ্ঞ হইরা পড়ে।

ভক্তিশাত্র বলেন, জীব ও ত্রন্ধে আকাশ পাতাল প্রভেদ থাকিলেও প্রেমে উভরে সাযুজ্য লাভ করে। জীব উথান করে, ত্রন্ধ অবতরণ করেন, উভরে মিলন হব! বর্ধমান অন্ত্ রাগ জীবান্ধার ত্রন্ধের সহিত সাযুজ্য লাভ তৃক্ষা উৎপাদন করে। জীব আত্ম-সংবারে প্রবৃত্ত হবরা উপরের লৌহ সরাইন্ধা দিলে নিম্ন হইতে অন্ত্রণাজ্ঞল ত্রন্ধরূপ স্বর্ণকণা বাছির হর; তথন জীবান্ধা ও পরমান্ধার মিলন হয়। প্রেমরাজ্যে বন্ধন, ধুল, ধন, বিন্যা ও অক্সবিধ অসমাবেশ নিবন্ধন বে মিলনের ক্রেট্র হর না ইহা কে না জানে ? বহির্জগতে দেখিতে পাই, ভালুকরোজের নারি রাশি বুমাকারের পারিণত হইরা আকাবে উথিত হইলে, আকাশ হইতে বারি-বারা বর্ষিত হর, এবং সেই বারিধারার ধরার উর্জরতা সাধন করে। অন্তর্জগতেও ইহার সদৃশ ঘটনা ঘটে। ব্রহ্মবি নিঃস্ত পবিত্রতার রুখি জীব-হদরে পড়িরা অন্তর্জণ ও প্রোর্থনা উথিত হইলে ব্রহ্মকণা অবতীর্ণ হর এবং সেই ফুপাধারা হালম ক্ষেত্রকে প্রেম্ব ও পুঞ্চল প্রসংধ সমর্থ করিরা ভূলে।

নিলনে উতরপক্ষতে যে উতরের নিকে অগ্রসর হইতে হর, এই সর্বাহিসকত সতাই ব্রক্তপা ও জীব চেটার সামকত ভূমি। জীব চেটার মূলে বে ব্রক্তপজি আছে, তাহাতে সন্দেহ কি ? কিছ জীবালার মধন স্বাধীন ইক্তা আছে, তখন জীবলত চেটার জীব কর্তৃত্ব আরোল অপরিহার্যা। ব্রহ্মপজি সাধু অসাধু উত্তরের নিকটেই আনে; সাধু সে শক্তির আভাবিক পথে পরিচালন করিরা স্বর্দে বাল, অসাধু সে শক্তির অপবাবহার করিয়া অধ্যাতি বার। "ব্রহ্ম ক্রপাহি কেবলস্" নিরপ্রেণীর সাধ্যকর মূবে পোজা পার না। বে সাবক আপনার ও ব্রন্থের করে। ইক্তাগত পার্থক্য বিনষ্ট করিতে সমর্থ হন, তিনিই উক্ত মহাবাক্যের মহন্তাহপর্যা স্বন্ধক্য করিছে পারেন। তিনিই ব্রেন, বে একহিল যাহাকে নিকশক্তি বলিয়া জানিতেন, তাহা তাহার নহে, প্রক্ষের ক্রপা-সক্ত।

জীবচেত্রী স্থতরাং ছুই প্রকার; এক প্রকার অহতারশিপ্র ও আর এক প্রকার অহতার শৃষ্ঠ। অহতারশিশ্র চেত্রীর দিলন হর না, অহতারশৃষ্ঠ চেত্রী আত্মসমর্গণে পরিণত হর।

ষ্টবর চরণে আপনাকে সমর্পণ করাই আত্মসমর্পণ ; খডব্রতা-নাশ উহার লক্ষ্য। এ স্বতন্ত্রতা বস্তুগত মহে ইচ্ছাগত। "যাও তোমার বাহা কিছু আছে বিক্রন করিয়া বিতরণ করত আমার অম্বৰ্জী হও" এই মহাবাক্যে মহৰ্ষি ঈশা একটা স্থমহানু সভা প্রচার করিয়াছিলেন। সে সত্য এই বে বিশ্বপতি নিয়ন্তর আমাদিগের নিকট আত্মসমর্পণের দাবী করিতেছেন। আত্ম-বুদ্ধি বা অহতার জীবের বন্ধন কেন না উহার বশবর্তী হইয়া শীবাদ্মা ঈশরের কর্তৃত্ব ও গৌরব আপনাতে আরোপ করে। **এই आञ्चर्कित अर्ता**ठनार्टि कीराचा चलारतक हिरामुहे হারাইয়া ধোরতর মোহের অন্ধকারে আবৃত ও অস্ত্যবন্ধনে এই অন্ধকার নির্দন ও এই বন্ধন হটতে মুক্তি লাভের জন্ম আত্মবৃদ্ধিকে বিসর্জন করিতে হইবে। অহ্বারী লোক আপাতত: দেখিতে নৈতিক জীবন লাভ করিতে পারে, কিন্তু যতদিন না অহতার বিনষ্ট হয়. ওড়িন व्यात्माक निर्साण ना रहेरण देनमञ्जान (माजी काजामसम्ब বিশ্ব ও বিমল আলোক প্রকাশিত হয় না, তেমনই আপনার অহমারের আলোক নির্বাণ না হইলে প্রমান্তার স্তম্ভিত্ত ও পৰিত্র জ্যোতি হৃদরে বিকশিত হয় না। সংসার আহার. সমাজ আমার, আমি কেবল আপন চেষ্টায় উন্নত হই, এ সকল क्षा अव्यक्तित अकाम। यक्तिम এ मक्न कथा शाहक, তত্তিৰ জীবাত্মা আপনার প্রস্তুত নিরাশ্রয়তা জ্বরুস্থ ক্রিতে शास्त्र ना वयः कतिएक शास्त्र ना विनित्राष्ट्र आधादिम्बद्धान वां कृ-नका बरम ना।

শহং বৃদ্ধি বিনাপ করি করিছ। আজানি ও সকলোম বপতাই উক্ত অবছা লাভ করা ছুল্লছ হর। অসিললোকনিগের মধ্যে আহং ভাবের প্রবল রাজত। বিবিধ অন্ধৃতা উহাদিগকে সভ্য হইতে দূরে রাখে। বাহ্ন জগতে ভাহারা কেবল প্রকৃতির শক্তির জীড়া দেখে, ঈখরের লীলা দেখিতে পার না; অন্তর্জগতে ভাহারা জিনী শক্তির বিকাশ না দেখির আলানর শক্তির প্রকাশই দেখে। এই অন্ধৃতা বশতঃ ভাহারা উংক্রইভম সদম্ভানেও আপনার গৌরর ও প্রতিপত্তি ছাপন করিতে চেটা করে এবং ইছরের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত হইতে দের না। প্রকণ লোকনিগের মধ্যে বাস করিরা উহাদিগের দৃষ্ঠান্ত অমুকরণ জিন্ত আছা আর কি শিখিতে পারে ?

🖟 🔭 ভিন্নানী আত্মার অহংভাব দুরীকরণের উপায় বৈরাগ্য সামান। বৈরাগ্য হই প্রকার, মর্কট ও প্রক্রত। মর্কট বৈরাগ্যে अधिमान दृषि वहे द्वान शांद ना। भूठताः मर्केष्ट देवताशा ন্ত্রভোভাবে পরিহার্য। সাধক্ষিগের এবিষয়ে কঠিন শাসনী। বাছিরের বিলাসে ভিতরের বৈরাগ্য গোপন করিবার বিধিও **(कह (कह निज्ञा थाकिन)। रिव्हाशा क्ष**ि कोमन वस्तुः विस्तव यक्ष कतिका बका ना कतिराम शास्त्र ना। मकम धर्माजाय अ সাধনের প্রকৃতি কপুরের ভার; চাপা দিয়া না রাখিলে উড়িয়া য়ার। প্রকৃত বৈরাগ্য ভাষার ছই প্রকার; এক প্রকার বস্তুগত ও আর এক প্রকার আত্মগত। সকল বস্তুই অসার, ঈশর **छिद्र त्यान रखत्र रखप्टे निष्णद्र एत्र मा, प्रेयरत्र पश्चिट रखत्र** আকার ধরিয়া আমাদের অন্তরে বস্তুক্তান উৎপাদন করে। क्लान वस वा वाक्तित महा द्य वाहिएतत महस मः मार्शित छोटा व्यनिका; (कर ७ कि इहे माल यादा ना, जीवान मन्नात अक দীৰ্বই সহায়, সৰল ও আশ্ৰয় ইত্যাকার সাধন ধারণা বস্তুগত বা প্রচলিত বৈরাগ্য। ইহা অপেকা উচ্চতর বৈরাগ্য সাধন না করিলে আত্ম-বিসর্জনে স্পৃহা পূর্ণভাবে জাগ্রত হয় না। সে উচ্চতর বৈরাগ্য আত্মগত অর্থাৎ আপনাকে অসার অকর্মণ্য ও मीन शैन बनिया धार्या। यङ्गिन भर्याख मत्न धारक त्य आमि একটা শক্তিমান্ ৰাক্তি এবং ঈশবকে ছাড়িয়া আমি থাকিতে পারি ততদিন বিনয়ের সঞ্চার ও আত্মা স্বর্গরাজ্যে প্রবেশের উপবোগী হয় না। নিজের অসারও যত বুঝিব ঈশ্বরের সারবন্ধা ততই আমাদের প্রাণে প্রতিভাত হইবে।

উক্ত বিবিধ বৈরাগ্য আত্মসমর্পণ রূপ চিত্রের ভূমি। উহাতে আর্মবিসর্জন চিত্রের ভূমি প্রস্তুত করিয়া ইচ্ছাযোগে রঙ কলাইতে হয়। ইচ্ছাযোগও ছই প্রকার; এক প্রকার কর্ম ফল ভ্যাগ, আর এক প্রকার ঈশ্বর প্রীত্যর্থে ধর্মার্ম্ছান। কর্ম অপরিহার্ম্য স্কুতরাং কর্মের সহিত ইষ্ট দেবভার যোগ সংস্থাপন কর্মিতে হইবে। এই যোগের প্রথম সোপান কর্মফল ভ্যাগ; নিংস্থার্থ কর্ম ভিন্ন কেহ নিশ্চিত্ত হইতে পারে না; আর নিশ্চিত্ত ভাব জির লাস্ত প্রক্ষে চিত্ত সমাধান অসম্ভব। কেবল কর্মফল ভ্যাগ কিন্তু ব্যক্তির নহে। কর্মফল ভ্যাগ শুক্ত ও নীরস হইতে পারে। শুক্ত বা জানমূলক কর্ম ফল ভ্যাগে হার্ম ভূপ্ত হয় না। সর্ম বা অনুরাগ মূলক কর্মজ্যাগ্যই স্থায়ী ও মধুর। বৈক্তব

ছিলি নিজে যে মধুর দাস্য ভাবের কথা ওনা যার প্রেম মৃলক কথাওনা গের করা সে ভাবের উদয় হয়। আমি দাস, আমার নিজের ইচ্ছা নাই, প্রভুর যাহা ইচ্ছা আমার তাহাই ইচ্ছা, প্রভুর ইচ্ছা পাদন অভীব ক্লেলপ্রদ হইলেও আমার সর্বতোভাবে করনীর যাহার মনের ভাব সে ব্যক্তি ভাগ্যবান্। সেই যথার্থ আত্ম-সমর্পণের মর্থ বৃধিয়াছে।

ক্ষণিক আছা-সমর্পণ অল্পাধিক পরিমাণে সকল বিশ্বাসী সাধকের জীবনে ঘটনা থাকে; কিন্তু তাহা সাধন জনিত নতে বিলিয়া ছানী হয় না। পাধা জবহা যত দিন না সহজ্ঞ ও বাতা-বিক হর তত দিন তাহা আরত্ত হয় না। আছা-সমর্পণ পুন: পুন: অত্যাসের ও প্রযন্ত্রাস্থিত বৈরাগ্য ও নিঃস্বার্থ এবং প্রেম-বিশ্র কর্মের ছারা স্বাভাবিক হইলে আছা বে এক অপূর্ক ভাব লাভ করে তাহা প্রেমন্ট্রাস্থ স্কর ভাবে নিম্ন লিখিত সংগীতে ব্যক্ত করিয়াছেন।

"প্রাণ যোগে যোগী হয়ে, থাকিব সদা নির্ভয়ে,
ক্থণে করিব পালন, অনস্ত জীবন ত্রত ;
সংসার তুর্গন পথে, চলিব তোমার সাবে।
ফিরে ফিরে বার্যার, নির্বিব ইচ্ছামত।
কভাব অনুকৃল হবে, সহজে ভোমারে পাবে,
সশরীরে স্বর্গে বাবে হইরে জীবসূক ;
আনন্দ সলীত ধ্বনি, করিবে ভাই ভগিনী
লেবলোকে সেই ধ্বনি হইবে প্রতিধ্বনিত।"

ঈশাদি মহাজনগণ এই উচ্চ অবস্থা লাভ করিতে পারিয়া-ছিলেন বলিয়া ইইদেবতার সহিত ইচ্ছাযোগে সাযুক্তা লাভ করিতে পারিয়াছিলেন।

ত্রাহ্মবিবাহ বিষয়ে কয়েকটা কথা।

(२)

(প্রাপ্ত)

গত বারের তত্তকৌমুদীতে "ব্রাক্ষবিবাহ বিষয়ে কয়ে কটা কথা" নামক প্রস্তাবে সবর্গে বিবৃহে দিবার প্রবৃত্তি প্রবল হইলে যে সকল অনিষ্ট ঘটিতে পারে, সংক্ষেপে তাহার কোন কোনটার উল্লেখ করা গিয়াছে। ব্রাক্ষ বিবাহের পৃদ্ধতি সম্বন্ধেও বিশেষ আলোচনা হওয়া উচিত মনে করিয়া সে সম্বন্ধে এবার কয়েকটা কথা বলা যাইতেছে। আশা করি ব্রাক্ষগণ এবিষয়ে বিশেষ চিস্তা করিবেন।

ব্রাক্ষসমাজে আমরা তিন প্রকার প্রণালীতে বিবাহপদ্ধতি স্থিরীক্ষত হইতে দেখিতেছি। (১ম) অনেকস্থলে পাত্র পাত্রী উভরে উন্নাহ প্রতিজ্ঞা পূর্বক বিবাহ-বন্ধনে আবন্ধ হইয়া থাকেন। (২য়) কোন কোন স্থলে কস্থার পিতা বা অভিভাবক পাত্রীর ভার পাত্রের প্রতি অর্পণ করেন এবং তিনি তাহা গ্রহণ করেন। তৎপর বর কন্থা উন্নাহ প্রতিজ্ঞা পূর্বক তাঁহারা উন্নাহ-ত্রতে ব্রতী হন। ৩য় পিতা প্রথমতঃ কন্থা সম্প্রদান করেন। বব এই দান গ্রহণ পূর্বক পরে উভরে উন্নাহ প্রতিজ্ঞা করিয়া বিবাহ-বন্ধনে আবন্ধ হন।

বর্ত্তমান সমরে এই তিন প্রণালীতেই ব্রাহ্ম সমাজে বিবাহ
ক্রিরা সম্পন্ন হইতেছে। এখন বিবেচ্য এই একই কার্য্যের
পক্ষে এইরপ তিনটা প্রণালী অবলম্বন সম্পন্ত হইতে পারে
কি না। উক্ত প্রণালী তিনটাই যে এক ভাবাপন্ন নর বরং অনেক
পরিমাণে পরস্পার বিরোধী তাহা বুঝা যাইতেছে। কিন্তু ব্রাহ্ম
সমাজে এই তিনটা প্রণালীতেই অবাধে বিবাহ ক্রিরা সম্পন্ন
হইতেছে। বিবাহের প্রণালী নির্দ্ধারণ সম্বন্ধে স্বাধীনতা থাকা
প্রার্থনীয় হইলেও বিশৃত্তাকা কথনই প্রার্থনীয় নহে। অন্ততঃ
প্রকতর বিবন্ধ গুলিতে ঐক্য থাকা উচিত। এজন্ত কোন্প্রণালী
অবলম্বন করা আমাদের পক্ষে প্রার্থনীয় তাহার মীমাংসার
পক্ষে উদাসীন হওয়া কথনই উচিত নহে।

ব্রাহ্ম সমাজ বিবাহ-সম্বন্ধ নির্ণয়ে বর কন্তার সম্বতির শ্রেষ্ঠতা প্রদান করিয়া আসিতেছেন। পরস্পরের অসম্বতিতে কোন বিবাহ হওয়া ব্রাহ্মগণ কথনই উচিত মনে করেন না। স্থতরাং দেখা ৰাইডেছে যে বিবাহ বিষয়ে প্ৰথম কৰ্ত্তব্য যে পাত্ৰ পাত্ৰী নির্বাচন সে বিষয়ে বর কল্লাকে তুল্য অধিকার প্রদান করা হইয়াছে। ইহা দারা ইহাই প্রমাণিত হইতেছে যে আকা উভরেরই সাহায্য বিশেষরূপে প্ররোজনীয় বলিয়া স্বীকার করি-তেছেন। একজন অন্ধের স্থায় অন্সের অনুসরণ করিবে বা একজন অঞ্চের ভার বহন করিবে তাহা নয়; কিন্তু উভয়ে উভ-য়ের জীবনপথের সহায় হইবে, পরস্পার পরস্পারকে সাহা্য্য করিয়া সন্মিলিত ভাবে সংসারে অগ্রসর হইতে থাকিবে, ব্রান্ধ সমাজ এই নীতির পক্ষপাতী। সংসার-যাত্রা-নির্ব্বাছ এবং আধ্যা-ম্মিক উন্নতি সাধনে উভয়ের সহায়তাই প্রয়োজনীয় বলিয়া चौक्रु इंटेर्स रेहा अभिनात्र कतिए इंटेर्स स मःमाद्र नत्र नात्री স্বভাবদত্ব অধিকার সম্বন্ধে কেহ কাহারও অপেক্ষা হীন নয়।

স্থতরাং একজন ভার গ্রহণ করিবে আর অন্ত জন গৃহীত ट्हेर्त, এরূপ প্রথা সমর্থিত হইলে উভয়ের সমান অধিকার, বা উভরেই বিশেষ রূপে উভরের সাহায্য দাতা, উভরের কল্যাণ দাধনে উভয়েই উপযুক্ত; এ সকল কথা আর স্বীকৃত হইতেছে না। একজন যদি ভার গ্রহণ করে, আর অভজন যদি গৃহীত হয়, তবে উভয়ের ভার উভয়ে বহন করিবে, কিম্বা উভয়ে সমভাবে সহায়তা করিবে, এই কথার কোন তাৎপর্য্য থাকে না। অতএব এক্সনে ভার গ্রহণ করিবে অম্বজন গৃহীত হইবে এই প্রথা কথনই বিচার-সংগত হইতেছে না। এজ্ঞ ভার অর্পণ করিতে হইলে উভয়ের ভার উভয়কে দিতে হইবে এবং উভয়েই তাহা গ্রহণ করিবে ইহাই যুক্তিযুক্ত। তৎপর বিবেচনা করিতে হইবে যে এই ভারার্পণ ক্রিয়া কি প্রণালীতে সম্পন্ন হওয়া প্রার্থনীয়। এক হইতে পারে যে বর কল্পা নিজেরাই আপন আপন ভার উভয়ের প্রতি অর্পণ করিতে পারে, আর না হয় উভয়ের পিতা মাতা বা অভিভাবক উভয়ের ভার উভন্নকে অর্পণ করিতে পারেন। কারণ তাঁহাদের উপর শৈলৰ জীবনের শারীরিক মানসিক এবং আধ্যাত্মিক কল্যাণ সাধনের ভার শভাবত: অপিত থাকে। সেই ভার আপন ক্ষম হইছে ভাহাদের (বর ক্সার) উভয়ের মনোনীত

ব্যক্তির উপর অর্পণ করিবার অধিকার অবশ্রই ভাঁহা-मंत्र थाका छेठिछ। अञ्जार छाहाता हैका कतिल विवाह-সমরে এইরপে ভারার্পণ করিতে পারেন। এই ভারার্পণ যদি পাত্র পাত্রীর পিতা মাতা কিছা অভিভাবক সমভাবে সম্পন্ন করেন অর্থাৎ যদি পাত্রীর ভার পাত্রের উপর এবং পাত্রের ভার পাত্রীর উপর উভয় পক্ষ হইতে সমর্পিত হয়, তাহা হইলেই উভরের প্রতি যথোপযুক্ত ব্যবহার করা হর এবং উভরের প্রতি উপযুক্ত সন্মান প্রদর্শিত হয়। বর্তমান সময়ে ব্রাক্ষ नमास्त्र य विवादहरे ভाরার্পণের প্রথা অবলম্বিত হইতেছে, সেই বিবাহেই দেখা যাইতেছে যে পাত্রীর ভারই অপিত হইতেছে, কিন্তু পাত্রের ভার কোথাও অর্পিত হইতেছে না। এইরূপ এক জনের ভার অর্পণ করার উভরের প্রতি সমান ব্যবহার করা হইতেছে না। তথু তাহা নয়, প্রকারান্তরে নারী জাতিকে হীন করা হইতেছে। সংসার-যাত্রা নির্বাহে—স্বাধ্যা: ত্মিক উন্নতিসাধনে চরিত্র-রক্ষণ বিষরে সাহায্য করিতে নারী জাতির ক্ষমতা যে কোন অংশে কম তাহা বলিবার উপার নাই। এদেশে অর্থ উপার্জন পুরুষের কার্য্য বলিয়া নির্দ্ধারিত थाकित्व अहे अथारे त्य हित्रमिन हिनाए थाकित्व वा धाका উচিত তাহা নয়। একজন প্রতিনিয়ত অন্সের উপর নির্ভর করিতে থাকিলে তাহার আত্মসন্মানবোধ ক্রমশ: হ্রাস হইয়া যায়। चारीन विरवहनाभक्ति क्राम मलीज्ञ इहेर्ड थारक। সংসারের অতি প্রয়োজনীয় কার্য্য সাধনেও শক্তি থাকিতেও ক্রমশ: হীন হইয়া পড়িতে হয়। এরূপ ব্যবস্থা থাকাতেই চির্কাল এদেশে নারীগণ অতি হীনভাবে অন্তের অমুসরণ করিয়া স্বাধানতা বৰ্জিত জীবন যাপন করিয়া আসিয়াছেন। কিন্তু আর সেরূপ अंथा প্রবল থাকিতেছে না। ইহারই মধ্যে নারীগণ সংসারের অক্তান্ত প্রয়োজনীয় বিষয়ের সহিত অর্থ সম্বন্ধেও সাহায্য করিতে সমর্থ হইতেছেন। যেখানে সেরূপ সম্ভাবনা নাই সেখানেও নারী যে সংসারের প্রয়োজন সাধনে আর সাহায্য করেন তাহা নয়। সংসার-যাত্রা নির্মাহে নারীর সহায়তা ভিন্ন পুরুষ কোন কর্ম করিতে সমর্থ হন। তিনি বেমন অর্থ উপার্জন বিষয়ে বিশেষ সাহায্য করেন। নারী তেমনি গৃহ-কার্য্যের সাহায্যে বিশেষ ভাবে নিযুক্ত থাকেন। স্থতরাং এরূপ বলিবার উপায় নাই যে সংসারে নারীর শক্তির প্রয়োজন কিছু কম। বাহিরের ব্যাপারে নারীর শক্তি যেমন কম নয়, তেমনি অন্তরের উন্নতি-সাধনে, চরিত্রের উন্নতিসাধনে এবং ধর্মপাধনে নারী যে পুরুষের বিশেষ সহায় তাহাতে কোনই সংশয় নাই।

বিবাহকালে পাত্রীর ভার পাত্রের উপর সমর্পণ ধারা নারীজাতিকে নিচু করা হয়। তাহাদিগকে জানিতে দেওরা হর
ভূমি অক্তর্ক গৃহীত হইলে, তোমার ভার অক্তে বহন করিবে,
ভূমি তাহার অন্থ্যরণ করিবে মাত্র। এইরূপে আত্মর্মগ্রাদাহীন এবং শক্তি থাকিতেও অশক্তের ভার ব্যবহার করাতে
নারীর স্বাভাবিক ক্রি নিট হইয়া যার। এদেশে চিরকাল এই রীতি চলিরা আসিরাছে বে নারীর পৃথক্ কোন ধর্মনসাধন নাই। স্বামীর ধর্মেই নারীর ধর্ম। তিনি কেবল স্বামীর
অন্থ্যতির অপেকা করিবেন। স্থীর বিবেক বা কর্জব্য ক্রিছি

অধ্যারে চলিতে পারিবেল লা। ব্রাক্ষসমাজও প্রকারান্তরে সেই
প্রথারই সমর্থন করিতেছেল। অন্তরঃ এই ব্যবহার হারা
নারীগণকে ভাহাই শিক্ষা দিতেছেল। এই প্রথা হারা
বিশেবভাবে নারীজাতির উর্নাত্রর পথে বিশ্ব উপস্থিত হর
এবং নারীজাতিকে হীনভাবে দেখিতে শিক্ষা দেওরা হর।
ক্ষতরাং ব্রাক্ষগণের বিবেচনা করা উচিত বে এরপভাবে বিবাহ
পদ্ধতি অবলম্বন করা উচিত কি না। যে বিবাহে পাত্র পাত্রী
উভরের হারাই প্রতিক্রা করান হর বে—"স্থাথে, ছংগে, সম্পদে,
বিপদে, ক্ষত্বভার, অন্তর্ভার, ভোমার মঙ্গল সাধনে আমি
যাবজ্ঞাবন যত্ন করিব, সেই বিবাহে পাত্রীর ভার পাত্রের উপর
সমর্থন করার রীতি কথনও শোভা পার না। চিরাগত সংস্কারের
অধীন না হইরা যাহাতে বাস্তবিক উভরের অর্থাৎ পাত্র পাত্রীর
মর্যাদা রক্ষা পার সেইরূপ উপারই অবলম্বন করা উচিত।

ব্রান্ধবিবাহ-পদ্ধতি সম্বন্ধে সকল কথা আলোচনা করিবার স্থবিধা এবারেও হইল না, আগামীতে অস্তান্ত বিবরের আলো-চনাকরিবার ইচ্ছা রহিল।

প্রেরিত পত্র।

(পত্র প্রেরকদিগের মতামতের জক্ত সম্পাদক দারী নছেন।) শ্রদ্ধাম্পাদ শ্রীযুক্ত "তত্ত্বকোমুদী"-সম্পাদক মহাশর-সমীপেষ।

শ্রদ্ধাম্পদ আদিনাথ বাবুও আমার মধ্যে বিধানবাদ সম্বন্ধে আলোচনা আর অধিক দূর চলিতে পারে না, এবং চলিবার প্রেয়েজনও নাই। এই স্মন্ধে এই পত্রই আমার শেষ পত্র। আদিনাথ বাবুইচ্ছা হইলে আর এক পত্র লিখিতে পারেন; শেষ কথা বলার অধিকার তাঁহারই।

আমার আর অধিক লিখিতে অনিচ্ছা হইবার প্রথম কারণ এই,—আমি দেখিতেছি আমার অতি সহজ কথা ও আদিনাথ বাবু ভুল বুঝিতেছেন। আমি আমার প্রথম পত্রে বিধান-প্রকা-শকে অর্থাৎ মানব অন্তরে জ্ঞান, প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশকে মানবের ইচ্ছা-নিরপেক্ষ ও ঈশ্বরের ইচ্ছা-সাপেক ৰলিয়াছিলাম। মানবের ইচ্ছা-সাপেক ঘটনা ও যে কতকগুলি মাছে, এবং দে গুলি কি, তাহা স্পষ্টরূপে বলা আবশাক বোধ कित नारे, रकनना এरे मामाछ विषय ख्य रहेवात मुखावना সামি এক মৃহুর্ত্তের জন্মও ভাবি নাই। কিন্তু আদিনাথ বাবু তাহার দিতীয় পত্রে এই বিষয়ে কিছু ভূল বুঝিতেছেন দেখিয়া আমি আমার দিতীয় পত্তে প্রথমোক্ত সত্ত্যের ব্যাথার পর পত্রের শেষ ভাগে বলিয়াছিলাম—"আমাদের আধ্যাত্মিক कीवरमञ्ज करू के कि वर्षेमारक आमि आमोरमञ्ज हे छहा-निवर शक বলিরাছি, যথা—'জান, প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশ'। नभूनात्र चर्ठेनाटक आभारमत्र हेक्का-नित्रश्यक विन नाहे। **क्रे**श्वत-প্রকাশিত সত্য ও প্ণ্যাদর্শের অমুসরণ পূর্বক উপাসনা ও প্ণ্যকার্যা করা আমাদের ইচ্ছা-সাপেক" ইত্যাদি। এই কথাতেই আদিনাথ বাব্র স্পষ্ট ধারণা জন্মিরাছে যে "সীতানাথ বাবু অনেক দার্শনিক বৃক্তি প্রদর্শন করিয়া যাহা প্রমাণ করিতে চেটা করিরাছিলেন নিকেই ভাহার অস্তথা

क्त्रिएडएक। दिनाम विवयं कामा मधरक मानद्वत्र हेव्हात সাপেকভাকে ভিনি বেরূপ অবোক্তিক এবং স্ববিরোধী প্রভৃতি বলিরা উড়াইয়া দিতে চেষ্টা করিরাছিলেন তাহা স্থার পারিতে-ছেন না। কথাটা তবে নিতান্তই অযৌক্তিক নয়। তাঁহাকে বাধ্য হইয়াই স্বীকার করিতে ইইতেছে বে অন্ততঃ কতক গুলি বিষয় জানা আমাদের ইচ্ছা-সাপেক। যদি কতক গুলি বিষয় काना जामात्मत्र हेव्हा-नारभक्त हत्र, जरव जञ्चश्रीन প্रकारभद পক্ষে আমাদের ইচ্ছার কোন প্রয়োজন থাকার পক্ষেই বা কি বাধা থাকিতে পারে ?" আমি এই কথা গুলি পড়িয়া ।একে-वाद्य व्यवाक् इटेनामः। व्यामि ट्रेंगशाय विननाम, कृत्व विननाम বে "কতক গুলি বিষয় জানা আমাদের ইচ্ছা-সাপেক ?" আমি ত खान माजरकरे आमारमत रेक्टा-नित्राभक विनेता छ। अभन দিকে আমাদের ইচ্ছা-সাপেক বিষয়ের মধ্যে আমি "কতকগুলি ঘটনা" মাত্র উল্লেখ করিরাছি ; সেই "ঘটনা" গুলি কোন্ শ্রেণীর ঘটনা, সেঞ্চলি যে জ্ঞান-শ্রেণীর ঘটনা নহে, তাহাও দৃষ্টান্ত ছারা দেখাইরাছি। "কতকগুলি ঘটনা" বলিলেই কি "কতক গুলি বিষয় জান।" বুঝায় ? ঘটনা মাত্রই কি জ্ঞান-শ্রেণীয় चछेना ? चछेना माजरे खात्नत्र छेशत्र निर्धत करत, खात्नत व्यापका तार्थ वर्षे, किन्द्र यहेना माळहे छान नरह। व्यापिनाध বাবু কি জানেন না যে আমাদের জীবনের ঘটনা সমূহ তিন শ্রেণীতে বিভক্ত—জ্ঞান, ভাব ও কার্যা (বা ইচ্ছা—volition)। আমার মতে কেবল শেষোক্ত শ্রেণীর ঘটনাই আমাদের ইচ্ছা-সাপেক্ষ। আদিনাথ বাবুর আর একটা আশ্চর্য্য ভূলের কথা উল্লেখ করা আবশ্যক। তিনি তাঁহার দিতীয় পত্তে বলিয়াছিলেন, শেষপত্তেও বলিয়াছেন যে আমি ঈশরকে পক্-পাতী বলিয়া একরূপ স্বীকার কবিয়াছি। শেবপত্রে বলিয়া-ছেন- "ঈশ্বরকে পক্ষপাতী বলিয়া সীতানাথ বাবু তাঁহাব পূর্ব্বপত্রে একরপ স্বীকার করিয়াছিলেন, আমি তাহা উদ্কৃত করিয়া দেখাইয়াছিলাম। এবারের পত্রে যাহা লিখিয়াছেন তাহা ছারাও সে আপত্তির কোন মীমাংসা, হয় নাই।" আমি আমার প্রথম পত্র পড়িয়া দেখিলাম আমি একস্থানে মানবের বৈচিত্র ও ভিন্ন ভিন্ন বিষয়ে পার্থকোর উল্লেখ করিয়া বলিয়াছিলাম—"কেহ কেহ মনে করিতে পারেন যে এই পার্থক্য ঈশ্বরের অপক্ষপাতিত্বের বিরোধী। যাহা হউক, পার্থক্যটা নি:সন্দেহ। আমাদের বিবেচনার পার্থক্য না থাকিলে পিতা পুত্র, গুরু শিষ্য, জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠের সম্বন্ধের যে মধুরতা তাহা থাকিত না, জগৎ একটা শ্রীবিহীন সমতল ক্ষেত্রের মত হইত।" জিজ্ঞাসা করি ইহাতে কি "ঈশ্বরকে পক্ষপাতী বলিয়া একরূপ স্বীকার করা" হইল ? আমি যাহা স্বীকার করিয়াছি তাহা ঈশ্বরক্বত জগতের বৈচিত্র, পার্থক্য। একজনের ক্বত পার্থ-কোর কারণ তাহার পক্ষপাতিত্বও হুইতে পারে, তাহার অন্ত ভাব বা অভিপ্রায়ও হইতে পারে। পার্থক্য একটা বাহি-রের ব্যাপার, পক্ষপাতিষ ভিতরের ভাব। বাহিরের ব্যাপার দেখিরা ভিতরের কারণ সকল হলে নিশ্চরক্লপে জানা যার না, অন্ততঃ ঈশবের ভাব নিশ্চিতরূপে জানিবার প্রণালী সম্পূর্ণ অক্তরপ। আমার মতে জগতের পার্থক্য বে ঈশ্বরের

শালার উপরোক্ত কথানাই প্রকাশ পাইতেরে। আনি নাথ বাবু ছই বার বলিবেন বে আমি ঈররের পশ্পাতির অকলপ বীকার করিবনে বে সামর নাথ বাবু বোধ হর বীকার করিবেন বে ঈরর সময়ে সমরে আমারিগকে হংখ জেন। ইহা হইতে যদি কেহ সিদ্ধান্ত করিরা লর বে আদিনাথ বাবু বীকার করিবেন বে ঈরর সময়ে সমরে আমারিগকে হংখ জেন। ইহা হইতে যদি কেহ সিদ্ধান্ত করিরা লর বে আদিনাথ বাবু করিরের নির্দ্ধান্ত। একরপ শীকার করেন, তবে তিনি কি মনে করিবেন ?

আলোচনা না চলিবার বিভীয় কারণ এই যে আমি দেখিতেছি मर्गन ও धर्मिविक्वात्नत कङक छिन मृग विषयि भामिनाथ वात्त्र সহিত আমার অনৈক্য রহিয়াছে। আলোচনার আরন্তে এত পুর ভাবি নাই। মনোতৃত্তির তিন বিভাগ, জ্ঞান ও ভাবের উপর ইচ্ছার নির্ভর, প্রকৃতি ও মানব জীবনে এশী শক্তির मिछा क्रियां नैनिका, — ভাবিয়ाছিলাম এই সকল মৌলিক বিষয়ে তাঁহার ও আমার মধ্যে বিশেষ অনৈক্য হইবে না, বাহা কিছু অনৈক্য থাকে তাহাও অতি সহজেই দূর হইবে। ভাবিরাছিলাম, বিগত ৮।১০ বৎসর ধরিয়া শ্রদ্ধাম্পদ বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় প্রভৃতির প্রয়াসে যে শক্তিতত্ব ও ধর্মের অক্সান্ত দার্শনিক-ভৰ প্ৰচান্নিত ও ব্যাখ্যাত হইয়া আসিতেছে, তাহাতে আমাদের মধ্যে এই সকল বিষয়ে অনেকটা ঐক্য স্থাপিত হইয়াছে। কিন্তু দেখিলাম তাহা নহে,—অন্ততঃ আদিনাথ বাবুর সহিত আমার ও আমার সম-বিশ্বাসীগণের সেরূপ ঐক্য প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। দেখিতেছি তাঁহার সহিত আলোচনা চালাইতে গেলে আমাকে এখন আমার অতি মৌলিক বিশ্বাস সমূহেরও ব্যাখ্যা দিতে হইবে, তাহা না হইলে আলোচনা সম্ভোষকর হয় না। এরপ প্রণালী যে দাময়িক পত্রিকার প্রেরিত স্তম্ভের পক্ষে উপযোগী नरह, हेश वना वाह्ना।

আলোচনা থামিবার ভৃতীয় কারণ এই যে আদিনাথ বাব্
মামার অতি দূরকারি কথারও উত্তর দিতে আদতে প্রায়াই
পান না; এরূপ স্থলে আলোচনা কিরূপে চলিতে পারে ?
আলোচনা চালাইতে গেলে আমাকে বারবার পূর্ব্ব-ক্থিত
কথার পুনরুক্তি করিতে হয়। পাঠক আমার দ্বিতীয় পত্র
(১লা আহিনের.) আর আদিনাপ বাব্র শেষ পত্র থানা
(১৬ই আহিনের.) একত্রে পড়িবেন, পড়িয়া দেখিবেন আদিনাথ বাব্ আমার যুক্তির উত্তর দিয়াছেন কি না—উত্তর দিতে
সম্পূর্ণরূপে প্রয়াসও পাইয়াছেন কি না। তাঁহার শেষ চিঠির
অনেক কথার উত্তর যে আমার দ্বিতীয় পত্রেই আছে, তাহা
আমি এই ছেই চিঠি হইতে উদ্ধৃত কতকগুলি কথা দ্বারা
দেখাইতেছি।

আদিনাথ বাব্— "দর্শন শ্রবণ সম্বন্ধে কি আমার কোন ইচ্ছার আবশুক হয় না ? আলোক প্রকাশ ঈশবের কাজ, কিন্তু চক্ষ্ ধোলা বা বন্ধ করাত আমার ইচ্ছার উপর নির্ভর করে। আমি যদি চক্ষ্ কর্ণ বন্ধ করিয়া রাখি, দর্শন শ্রবণ কথনই সম্পন্ন হয় না।"

আমার উত্তর—"ইচ্ছাপুর্বক চকু মেলিয়া থাকিতে পারি,

আনিতে লালের আন্তর্গিক জানের আনার ইক্রা-বিজ্ঞানী আনের ক্রা-বিজ্ঞানী আনের ক্রা-বিজ্ঞানী আনের ক্রান্তর্গিক আনার ইক্রা-বিজ্ঞানী আনার ক্রান্তর্গিক বিজ্ঞানী আনার আনার ক্রান্তর্গিক আনার আনার ক্রান্তর্গিক আনার করে বাবেল করে, আহাও আনার ইক্রা-লালের একটু শক্তি আহে, তাহাও ইক্রা-লালের একটু শক্তি আহে, তাহাও ইক্রা-লালের প্রান্তর্গিক করে। ইক্রিয় প্রলিকে লালানিকে আনার উল্লেখ সারিত্যালিত করিতে পারিত্যাম লা; কিছে ইক্রিয় আনিকে পরিচালিত করিতে পারিত্যাম লা; কিছে ইক্রিয় আনিকে পরিচালিত করিতে পারিত্যাম লা; কিছে ইক্রিয় আনার ইক্রা-নিরণেক ভাবে আনার আনের ক্যক্তে প্রাণিত হর, ইহাতে আনার ইক্রার হাত কিছুই নাই।"

আদিনাথ বাব্—"২ হাজার নংসর পূর্বেকে কোন ব্যক্তির আত্মায় যাহা নিহিত ছিল, এখন যে আমরা জরিতেছি আমাদের আত্মাতেও অবশু তাহা নিহিত আছে। সেই সমরে তাঁহারা যাহা জানিয়ছিলেন এখন যদি আমরা তাহা জানি তাহা অবশুই আমাদের পকে নৃতন ব্যাপার। কিন্তু তাহা কি ঈশ্বরের পকে নৃতন কার্য্য ? কখনই নর। আমার জানা বা অমুভব করাটা কিছু ঈশ্বরের পকে নৃতন কার্য্য বা নৃতন স্বাষ্টি নহে। কিন্তু তাঁহার শিক্ষার আমি নৃতন জান পাইলাম।"

আমার উত্তর—"এখন জিজ্ঞান্ত এই, যদি বিধি ব্যবস্থা লেখাই রহিল, প্রকাশিতই রহিল, তবে আর মানব ইচ্ছাপূর্বক ব্রিবে কি ? গ্রহণ করিবে কি ? আর যদি বলেন লিখিত থাকার [আদিনাথ বাবু 'নিহিত' ও 'লিখিত' এক অর্থেই ব্যবহার করিয়াছেন] অর্থ প্রকাশিত খাঁকা নহে, ভাত থাকা নহে, লিখিত থাকিলেও পরে জানিতে হয়, ব্রিতে হয়, গ্রহণ করিতে হয়, তবে বলি বাহা পূর্বে আমার জানা ছিল না, যাহা আমার জ্ঞানের বাহিরে ছিল, তাহা আমি কখনো ইচ্ছা করিয়া, চেষ্টা করিয়া, জানিতে পারি না; আমার জ্ঞানের বাহিরে যে বস্তু, তাহার উপর আমার ইচ্ছার, আমার চেষ্টার প্রয়োগ হইতে পারে না। স্থতরাং বে দিকেই যান, স্বীকার করিতে হইতেছে যে মানব অস্তরে যে সজ্যের প্রকাশ হয়, তাহা সম্পূর্ণ রূপেই মানবের ইচ্ছা নিরপেক্ষ, তাহা সম্পূর্ণরূপেই স্বর্থরের কার্য্য।"

জ্ঞানোদর সহকে মানবের ইচ্ছা-সাপেকতাতে আদিনাথ বাব্র এরপ অটল বিশ্বাস যে তিনি এই সহকে কডকগুলি অতি আশ্রহ্য অত্যুক্তি দোষে দোবী হইয়াছেন। এই উক্তিপ্তালি যে অত্যুক্তি তাহা বোধ হর তিনি কিঞ্চিৎ চিন্তা করিবলেই ব্রিতে পারিতেন। অথবা তাহাই বা কি করিয়া বলিব প্রকাণ গুলি এক আধবার নয়, অনেকবার বলিয়াছেন। কথা-গুলি এই;—"বাত্তবিক কোন বিষয় জানা কথনও একের ইচ্ছায় সম্পন্ন হয় না।…কোথাও একের ইচ্ছায় কার্ব্য হয় না।…প্রত্যেক ঘটনাতেই দেখা যাইবে ছই ইচ্ছায় মিলন ভিয় কোন কাজই হয় না।…মানব ইচ্ছা করিলেই জানিতে পারে একথা আমি কোথাও বলি নাই। কিছ ইচ্ছা না করিলেও জানিবার উপায় নাই ইছাই বলিয়াছি। গুলিহার

(क्रेनरबार) महाबंध के बांबरवार केला क्रिक्ट बिनान किंव देन काम नाथ बर्रेट्ड शाद्य किया है है के देन विकि महि कि क्षति निविध क्याक रहेनाँन । विकास क्षति वेचन क्षति मानंद्रित औष्प्रकाम अधिन, छेर्पन स्विद्यत रेव्हा होड़ा जीत कात देखा हिंगे । यथन टायरम ठकू कृष्टिन, छथन कात रेव्हात कृष्टिन, मानदवत्र हेन्द्रा उथन दकाशांत ? यथम धायरम अस अनि-नाम, ज्येन कात्र हेव्हांत्र छनिनाम, ज्येन जामात्र कान चुनिवात, কান বন্ধ করিবার ইচ্ছা কোধার ছিল ? স্বপ্নশৃত্ত গভীর স্ববৃত্তি---বাহাতে নমুদার ব্যক্তিগত জান, ভাব ও ইচ্ছার বিরাম হয়,— এই স্তুষ্প্তি হইতে বে জাগ্ৰত হই-এই জাগ্ৰৎ কাৰ্য্যে আমা-त्वत्र हेव्हा-नारभक्कण द्वाशांत्र शांदक ? व्यथवा धरे मकम বিশেষ দুটান্তেরই বা প্রয়োজন কি ? প্রতিনিয়তই ত আমা-দের সম্পূর্ণ ইচ্ছা-নিরপেকভাবে, সম্পূর্ণ অপ্রত্যাশিত অমাশ্যিত ভাবে নৃতন নৃতন বিষয়, নৃতন নৃতন সত্য আমাদের সমকে প্রকাশিত হইতেছে। এই সহজ সতাটী ও কি আবার ব্যাপ্যা कता चावश्रक एवं हैक्स कार्यात डेशर निर्वत करत, है हैं कान-मार्शक এक है। दिवस ? अर्थरम ना जानित छाहात महस्त ইচ্ছাহওয়াসম্ভব নহে; অথ্যে জ্ঞান, পরে ইচ্ছা। তাচাই যুদি হইল, তবে লার জ্ঞান ইচ্ছা-সাপেক হইবে কিরূপে ? জ্ঞান যথন हेम्हात बर्धावर्खी, जथन हेश निक्तवरे हेम्हा-निवर्णक । याश এक বার দেখিয়াছি বা শুনিয়াছি তাহা পুনরায় দেখিতে বা শুনিতে ইচ্ছা করিতে পারি, অনিচ্ছাও করিতে পারি। যাহা অস্পষ্ট वा जम्मूर्गक्राल कानियाहि, जाहा म्महे वा मम्मूर्गक्राल कानिएड ইচ্ছা করিতে পারি, অনিচ্ছাও করিতে পারি এবং এরূপ ইচ্ছা বা অনিচ্ছাকে উপলক্ষ করিয়া (উপলক্ষ মাত্র) ঈশ্বর আমাদের নিকট কথিত বিষয় প্রকাশ করিতে পারেন, অপ্রকাশিতও রাথিতে পারেন। এরপ স্থলেও সকল সময় ঈশ্বর আমাদের हैक्का व्यनिक्कात व्यापका तारथन ना। किन्तु योहा भूर्त्व कथन ७ (मिथ नाह, छनि नाह, जानि नाह, जाहात महस्त कान थाकात ইচ্ছা করা একবারেই অসম্ভব। এরূপ বিষয়ের প্রকাশ, এরূপ সত্যের জ্ঞান, সম্পূর্ণরূপেই মানবের ইচ্ছানিরপেক্ষ, সম্পূর্ণ-कत्भरे मेचदत्रत रेव्हा-नात्भक । देशांक मानदवव्हा जेभनककत्भव বৰ্ত্তমান থাকে না।

আদিনাথ বাবু তাঁহার প্রথম পত্রে তাঁহার মতের একদিকেই বিশেষ ঝেঁক দিরাছিলেন, অর্থাৎ বিধান যে প্রথম

ইইতেই মানবের আত্মা-নিহিত, মানব যে নিজের চেটায় তাহা
বুঝে, বিধান-প্রকাশ যে ঈশরের নিত্য নৃতন কার্য্য নয়, এই
বিষয়ই বিশেষ করিয়া বলিয়াছিলেন। ঈশর যে শিক্ষাদাতা ও

সাহায্য দাভারূপে মানবের চিরসঙ্গী হইয়া য়হিয়াছেন, এই কথার
উল্লেখমাত্র করিয়াছিলেন; ঈশর কিরুপ সাহায্য করেন,
শিক্ষা দেন, তাহা বিশেষ করিয়া বলেন নাই। পরবর্ত্তী
আলোচনাতে তিনি স্পাই শীকার করিয়াছেন যে প্রত্যেক সত্য
প্রকাশেই ঈশর মানবের সহায়তা করেন। এই কথাটা প্রথমেই পরিছারক্রপে শীকার করিলে অনেক তর্ক বিতর্ক বাচিয়া

যাইত। কিন্তু আশ্চর্যের বিষয় এই যে তিনি এখনো এরপ
কথা বলিভে ছাড়িভেছেন না, বাহাতে বিধান প্রকাশ সহছে

विषयप्र निकारण स्वार । छन्टर च्यानमार संयुद्ध त्मर नज वर्षेट के के विकास सामकी त्राप्त । जिनि बनिएक्टइन "সেই সমরে ভাঁহারা হাহা জানিরাছিলেন এখন যদি জামরা তাহা জানি তাহা অবস্থ জামার পকে নৃতন ব্যাপার। किंद् जारा कि मेचरवंद नरक नृद्यन कार्या ? कथनर नदा आधाद জানা বা অমুভব ক্যাটা কিছু ঈশ্বরের পক্ষে নৃতন কার্ব্য বা নৃতন সৃষ্টি নহে। কিন্তু তাঁহার নিকায় আমি নৃতন জ্ঞান পাইলাম।" প্রত্যেক জ্ঞান ক্রিরায় ঈশরের সহায়তা অর্থাৎ ঈশবের কার্য্য শ্বীকার করিয়াও আদিনাথ বাবু আবার এ কি কথা বলিতেছেন ? বখন "কোন বিষয় জান। কখনো একের ইচ্ছার সম্পন্ন হয় না," বথন "ছই ইচ্ছার মিলন ভিন্ন কোন কাজই হয় লা," আবার যথন "তাঁহার শিকার লামি নৃতন জ্ঞান পাইলাম," তথন আদিনাথ বাবুর নিজের মতেই "আমার জান: বা অহুতব করাট।" কেবল আমার কাজ নয়, ইহা ঈখ-রেরও কাজ,—তিনি জানাইলেন, আমি জানিলাম, তিনি অমুতব ্রাইলেন, আমি অফুডব করিলাম। আমার জান। বা অফু-ভব করাটা যতদুর নুতন, তাঁহার জানান বা অমুভব করানটাও ততদ্র নৃতন। আদিনাথ বাবু প্রথম পত্রেও বিলয়াছিলেন, "বান্তবিক ঈশ্বরের পক্ষে নৃতন কিছুই নয়, কিন্তু মানবের পক্ষে ন্তন অহভব। ... ঈশবের পক্ষে নৃতন কিছুই নাই, তিনি নিত্য বর্ত্তমান। স্কুতরাং তাঁহার বিধানও নিতা নুতন নয়।" এখন यथन म्लंडे चौकांत्र कतिराम रा मानरात প্রত্যেক জ্ঞান-ক্রিয়াই ঈশবের কর্ত্ত-সাপেক, অর্থাৎ ঈশব মানবকে নিত্য নৃতন জ্ঞান শিক্ষা দিতেছেন, নিত্য নৃতন বিধান প্রেরণ করিতেছেন, তথন, দিজাসা করি, ঈশরের নিজিয়তা-বাঞ্চক উপরোক্ত কথাগুলি আর ব্যবহার করেন কেন १

মৃল হত্র ধরিরা যুক্তিপথ অমুদরণ পূর্বক আমি যথা সাধ্য বিধান-তত্ত্বের মূল কথা সপ্রমাণ করিতে চেষ্টা করিলাম। আদি নাথ বাবুর কর্ত্তব্য আমার প্রদর্শিত মূল-স্ত্রে বা যুক্তিতে ভ্রম দেখান। ইহাই সত্য নির্ণয়ের প্রকৃত পথ। আমি এই সোজা পথ ছাড়িয়া আদিনাথ বাবুর অভিপ্রেত বক্র পথ কথনো অব-লম্বন করিব না। আদিনাথ বাবুর মতে "জগতে বৈষম্য কেন ?" এই প্রশ্নের বিচার না হইলে বিধানবাদ প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না। আমি যতনর জানি বিচারের প্রণালী এরপ নয়। আমি বলি, আমার প্রদর্শিত যুক্তিতে ভ্রম প্রদর্শন করুন। যদি ইহাতে ख्य ना शांदक, তবে আমার ব্যাখ্যাত বিধানবাদ সত্য, বিধান-প্রকাশ সম্পূর্ণরূপে ঈশবের ইচ্ছা-সাপেক্ষ, এখন জগতের বৈষ-ম্যের কারণ আমি বুঝাইতে পারি আর নাই পারি। স্থান थाकित जामि देवसमा महत्क जत्नक विन्ठाम, किन्न ज्ञान नारे। चानिनाथ वाव देवरामात अकमाज कात्रन वृक्षित्राष्ट्रन-मञ्जूरमात्र স্বাধীনতা। মাত্র স্বাধীন ইচ্ছাতে জ্ঞান লাভ হইতে বঞ্চিত থাকে, মাতুৰ ইচ্ছা করে না তাই জ্ঞান পার না, যাহারা ইচ্ছা করে তারা পায়,তাই জ্ঞান সম্বদ্ধে এত বৈষম্য। মৌলিক সাক্ষাং काननाच रव मन्पूर्वक्ररथ मासूरवत देव्हा-नित्ररथक वरः स्मेनिक माकार खानरे ता मानत्वत ममुनात रेक्श ७ त्रहीत मृन, छारा चामि मधामा कतिरा (तहा कतिमाहि, च्राज्याः कात्मत देवसमा

नवः स यागात यात्र किंदू मा विनात ७ हत्न । खारमञ्ज देवसमान প্রধান ও মূল কারণ আর যাহা হউক, তাহা মানুবের স্বাধীনতা मत्ह, हेहा ठिक। ज्ञा देवसरमात विवत ज्ञात्नांच्या अञ्चल অপ্রাসঙ্গিক। মাত্রবের স্বাধীনতা যে অনেক বৈষম্যের কারণ তাহাতে আর সন্দেহ কি ? কিন্তু মাহুষের স্বাধীনতা अनीम नट्ट ; তাহার স্বাধীনতা চারিদিকেই সীমাবন্ধ। মাছ-ষের নৈতিক চরিত্র ও আধ্যান্ত্রিক জীবন অনেকাংশে তাহার শারীরিক ও প্রাকৃতিক অবস্থার অধীন। এই সকল শারীরিক ও প্রাক্বতিক বৈষম্যের কারণ কি ? স্বাধীনতা কদাচ ইছাদের কারণ নহে। কেন্দ্র-সন্নিহিত স্থান এমন ভয়ানক শীতল কেন? বিবৃহ রেখা-সরিহিত স্থান এমন ভন্নানক উষ্ণ কেন ? একদেশ मकन कनभानी, जांत একদেশ एक जञ्च्यता रकन ? এक দেশের জলবায়ু স্থমিষ্ট বলকারক, অপর দেশের জলবায়ু ক্লেশকর ও ছর্কলকারী কেন? একদেশ শান্তিপূর্ণ নির্কিন্ন, আর এক দেশ ভূমিকম্প আগ্নেরগিরি প্রভৃতি প্রাক্কৃতিক উৎপাতে উৎ-পীড়িত কেন? এই সমুদায় প্রাকৃতিক বৈষম্যে মানব চরিত্র সহস্র সহস্র প্রকারে পরিবর্ত্তিত হইতেছে, মানবের স্বাধীনতা সহস্র সহস্র প্রকারে সীমাবদ্ধ হইতেছে। ঈশ্বরকে আধ্যাত্মিক বৈষম্যের কর্ত্তা বলিলে যদি তাঁহাকে পক্ষপাতী বলা হয়, তবে তাঁহাকে এই সকল প্রাক্তিক বৈষম্যের কর্ত্তা বলিলেও কি পক্ষ-পাতী বলা হয় না ? অথচ তিনি যে এই সমুদায়ের কর্ত্তা তাহা ञानिनाथ वावू अञ्चीकांत कतिरवन न।। ञानिनाथ वाबूत्र मरख ঈশ্বর প্রথমে সকল মাতুষকে সমান করিয়া স্পষ্ট করেন: মাতুষ यांनीन रेष्टांत अनुमान रहेबाए । आदिनाथ नातू कि क्थरना জন্মগত বৈষম্য দেখেন নাই। , শিশুদের জীবনে ত প্রতি-নিয়তই তাহা দেখা যায়। যদি বলেন সে বৈষম্য পিতা মাতার বৈষম্য-জনিত, তবে জিজাসা করি এই নিয়মই বা কেন ? পিতা মাতার বৈষমা সস্তানে আরোপ করিয়া ঈশ্বর কেন প্রথম **र्टेट्डिंग होत्नत चारीन (ठिट्टोट्ड ग्रीमावस करतन १ टेव्हमा** দর্বত, কিন্তু মানবের বৈষমোর মধ্যে ও গভীর সাম্য আছে। বিশেষত্বের মধ্যেও বিশ্বব্যাপী সাধারণত্ব আছে, এই সাধারণত্বই সমুদায় অধিকারবাদ ও সাম্যবাদের ভিত্তি। বৈষম্যের একমাত্র ব্যাখ্যা মানবের স্বাধীনতা বা ঈশ্বরের পক্ষ-পাতিত্ব নহে। প্রকৃত ও সম্ভোষকর ব্যাখ্যা কি তাহার আলোচনা স্বতন্ত্র চলিতে পারে। এসম্বন্ধে আমার আর কিছু विवात दान नाहै। অমুগত

শ্ৰীশীতানাথ দন্ত। স,ধারণ ত্রাক্ষসমাজের নিয়মসমূহ নিম্নলিখিত

রূপে পরিবভিত ও সংশোধিত হইবার

প্ৰস্তাব হইয়াছে।*

উष्मिगा।

১। এক মাত্র সভ্য স্বরূপ নিরাকার পূর্ণ পরব্রন্ধের প্রতি

* এই সংশোধিত নিয়মাবলী অধ্যক্ষ সভার ১৮৮৯ সালের ২য় তৈৰাসিক অধিবেশনে গৃহীত ছইয়াছে শীঘ্ৰই সাধারণ এক্ষ সমাব্দের বিচারের জন্ম উপস্থিত হইবে। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের

প্রীতি ও প্রির কার্ব্য সাধনবারা তাঁহার উপাসনা করা, বান্ধধর্ম প্রচার করা, প্রাক্ষমগুলীর ও জনসাধারণের আধ্যাত্মিক ও অপরাপর উন্নতি ও হিত্যাধনে সহায়তা করা এবং নিরম্ভন্ত প্রণালী অনুসারে ত্রান্ধ সমাজের কার্য্য সকল সম্পাদন করা সাধারণ ত্রাহ্ম সমাজের উদ্দেশ্র।

खाकाश्यम्बद मूल मङा।

২। যাঁহারা ঈশরের অন্তিথে ও আত্মার অমরত্ব ও অনন্ত উন্নতিতে এবং উপাসনার আবশ্রকভাতে বিশ্বাস করেন এবং অপরদিকে কোন সৃষ্ট বস্তু বা ব্যক্তিকে ঈশ্বর জ্ঞান কিছা ঈশ্বর প্রাপ্তির জন্ম ঈশ্বর ও মানবাত্মার মধ্যবন্তী (mediator) জ্ঞান অথবা কোন ব্যক্তি বা গ্রন্থকে অদ্রান্ত ও মুক্তির একমাত্র উপায় বলিয়া স্বীকার করেন না, ভাঁছারা আন্ধর্দের মূল সভ্যে বিশ্বাস করেন বলিয়া গণ্য করিতে হইবে।

সভা হইবার যোগাতা।

- ৩। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সভ্য হইতে হইলে নিম্নলিখিত যোগ্যতা থাকা আবশ্যক।
- (ক) বান্ধর্মের উলিখিত মূল সত্যে বিশ্বাস এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের উদ্দেশ্যের সহিত সহায়ভূতি থাকা উচিত এবং অষ্টাদশ বর্ষের অধিক বয়স্ক হওয়া আবশ্রক।
- (থ) চরিত্রের উন্নতি সাধনে ও নির্মিত ঈশবরোপাসনা করিতে যদ্বশাল হওয়া আবশ্রক।
- (গ) পৌত্তলিকতা ও জাতিভেদ পরিত্যাগ করিয়া ব্রাহ্ম-ধর্মামুসারে গার্হত্য ও অভাভ সমুদয় অমুচান করিতে প্রস্তুত হওয়া আবগুক।
- (ব) অর্থদান ও অন্তাক্ত উপার দারা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উদ্দেশ্য সাধনে যথাশক্তি সহায়ত। করিতে প্রস্তুত হওয়া আবশ্রক।
- (६) जिन वर्मत काल माधात्र बाक्रममारकत महत्यांनी থাকা আবশ্রক। কিন্তু কোন বিশেষ কারণবশতঃ কার্য্যনির্ব্বাহক সভায় উপস্থিত 🖁 সভ্য অন্যুমোদন করিলে ব্যক্তি বিশেষ সম্বন্ধে এই নিয়মের ব্যতিক্রম হইতে পারিবে।

সভ্য নিৰ্ব্বাচন প্ৰণালী।

৪। সাধারণ আদ্ধ সমাজের কোন সভ্য কার্য্যনির্বাহক সভার কোন অধিবেশনে পূর্ব্বোক্ত নির্মাত্সারে সভ্য হইবার উপযুক্ত কোন ব্যক্তিকে দাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভাশ্রেণীভুক্ত ক্রিয়া লইবার প্রস্তাব উপস্থিত ক্রিলে কার্যানির্বাহক সভা যথায়থ অহসন্ধানান্তর তাঁহাকে সভ্যশ্রেণীভুক্ত করিয়া লইতে পারিবেন।

নির্বাচিত সভাগণ কার্যনির্বাহক সভা কর্তৃক নির্বারিত পত্রে (form) স্বাক্ষর করিবেন এবং স্থবিধা হইলে ভাঁহাদিগকে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উপাসনা গৃহে বা অন্ত কোন স্থানীয় উপাসনালয়ে নিয়মিত বা বিশেষ উপাসনার দিনে সর্ব্ধ স্মক্ষে সাধারণ আক্ষসমাজের সভ্য বলিয়া গ্রহণ করা হইবে।

সহযোগী (Associate)।

৫। বাঁহাদের ব্রাক্ষধর্মের মূল সভ্যে বিশাস আছে ও সভাগণের অবগতিরজভ প্রভাবিত নিরম দম্হ প্রকাশিত হইল। । সাধারণ বান্ধসমাজের উদ্দেশ্যের সহিত সহাত্ত্তি আছে এবং বাছারা এই উদ্দেশ্ত সিন্ধির নিমিত্ত আর্থ দাল এবং আরু প্রাকারে সাহায্য করিতে প্রস্তুত আছেন, বাছাদের বর্গ অন্যুন অষ্টাদশ বংগর, তাঁহাদিগকে উপযুক্ত মনে করিলে কার্য্যনির্বাহক সভা বা অধ্যক্ষ সভা সহবোগী (associate) রূপে মনোনীত করিতে পারিবেন।

সম্মানিত (Honorary) সভা।

৬। ৪র্থ নিয়ম অন্থসরণ না করিরাও জ্ঞান ধর্ম ও চরিত্র বিবরে উন্নত ও খ্যাতাপন্ন ব্রাহ্মকে সম্মানিত সভ্যান্ধণে মনোনীত করা যাইতে পারিবে। সম্মানিত সভাগণ কার্য্য-নির্ব্বাহক সভার প্রস্তাবান্থসারে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের অধি-বেশনে মনোনীত হইবেন।

দাতব্য দেয় হইবার সময়।

৭। সভাদিগের মাসিক দান মাসের প্রার্থমে এবং বার্ষিক দান বর্ষের প্রাথমে দের হইবে। মাঘ মাসে বর্ষারম্ভ গণনা করা হইবে।

সভ্যের অধিকার লোপ।

৮। यनि কোন সভ্যের ৩য় নিয়মোক্ত কোন যোগাতার অভাব হর কিখা অন্ত কোন গুরুতর কারণ বশত: কার্য্য-নির্বাহক সভা আবশ্রক বোধ করিলে তদ্বিয়ে অনুসন্ধান করিবেন ও উক্ত সভ্যকে আত্মপক সমর্থনের জন্য যথোপযুক্ত সময় ও স্থযোগ প্রদান করিবেন। যদি উপযুক্ত অনুসন্ধানের পর তাহাতে সভোর যোগ্যতার অভাব কিম্বা তাঁহার ক্রটি প্রমাণিত হয়, কিম্বা তাঁহার প্রতিশ্রুত দাতব্যের যদি কোন অংশ বা সম্পূর্ণ ছই বৎসরের অধিক কাল অনাদার থাকে, তাহা হইলে কার্যানির্বাহক সভার কোন অধিবেশনে উপস্থিত সভাগণের অন্যুন 🌡 অংশের মতামুসারে যেরূপ উচিত বিবেচিত হইবে সেইরূপ ব্যবস্থা করিতে পারিবেন (অর্থাং এরূপ হলে অবস্থা বিশেষে তাঁহাকে সতর্ক করিতে, অনুযোগ করিতে, বা সভ্যের অধিকার হইতে সামন্নিকরূপে স্থগিত রাথিতে কিম্বা অক্স কোনরূপ বিধান করিতে পারিবেন) অথবা একেবারে সভা পদ হইতে রহিত করিতে পারিবেন। কিন্ত এরপ হলে উক্ত সভোর অধ্যক্ষ সভার নিকট কার্যানির্কাহক সভার বিচারের বিরুদ্ধে পুনব্বিচারের প্রার্থনা করিবার অধি-কার থাকিবে এবং পুনর্বিচার প্রার্থনা করিতে হইলে কার্য্য নির্বাহক সভার বিচার মন্তব্য বা নির্বারণ তাঁহার নিকট জ্ঞাপিত হওয়ার এক মাসের মধ্যে তিনি সম্পাদকের নিকট পত্র ছারা তাহার অভিপ্রায় জানাইবেন।

কার্যানির্কাহক সভা কোন অধিবেশনে উপস্থিত সভ্যের । আংশ মত ছারা উপযুক্ত কারণে কোন সহযোগীকে সামরিক রূপে কিছা একেবারে উক্তপদ হইতে চ্যুত করিতে পারিবেন। কিছা তাঁহার সম্বন্ধে অন্ত কোনও রূপ ব্যবস্থা করিতে পারিবেন। কিছা এইরূপ করিবার পূর্বে তাঁহাকে আত্মপক্ষ সমর্থন করিবার স্থাবিধা দেওরা ছইবে।

এই নির্মোক কার্য্য কার্য্যনির্কাহক সভা কি অধ্যক্ষ সভা অরং কিখা কোন কমিট খারা নির্কাহ করিতে পারিবেন। সভ্য শ্রেণীতে পুনঃ প্রবেশের নিয়ম।

৯। বাঁহার নাম কোন কারণবশতঃ সভ্যশ্রেণী হইতে একবার বক্ষিত হইবে, কার্যানির্কাহক সভা উচিত মনে করি-লেও তাঁহাদের নির্কারিত নিরমাধীন হইরা চলিতে সম্বত হইবে তিনি পুনরার এর নিরমান্ত্র্সারে সভ্য পদে মনোনীত হইতে পারিবেন।

সভাদের অধিকার।

>০। সভাগণ সাধারণ বাদ্ধসমাজের কর্দ্মচারী ও অধ্যক্ষ-সভার সভাগণকে মনোনীত, কার্য্য হইতে স্থগিত বা অবস্থত করিতে পারিবেন, এবং বাদ্ধসমাজ সম্বন্ধীয় কোন বিষয় অধ্যক্ষ-সভার কিংবা সাধারণ বাদ্ধসমাজের বিবেচনার্থ উপস্থিত করিতে পারিবেন এবং সাধারণ বাদ্ধসমাজের অধিবেশনে উপস্থিত থাকিরা সমৃদর আলোচা বিষয়ে ভোট দিতে পারিবেন।

সহবোগীগণ সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অধিবেশনে উপস্থিত থাকিতে পারিবেন এবং ব্রাহ্মসমাজ সম্বন্ধে কোন বিষয় অধ্যক্ষ সভা বা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বিবেচনার্থ উপস্থিত করিতে পারিবেন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সাধারণ অধিবেশন।

় ১১। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সাধারণ অধিবেশন মাঘোংসব উপলক্ষে বর্ষে একবার হইবে। এই অধিবেশনে বার্ষিককার্য্য-বিবরণ পঠিত হইবে এবং আবশুকান্ত্ররূপ পরিবর্জিত, পরিবর্জিত ও সংশোধিত হইয়া গৃহীত হইবে। কর্মচারিগণ এবং
২২ ধারার নির্দ্দিট অধ্যক্ষ সভার ৫০ জন সভ্য নিযুক্ত
হইবেন এবং সভা আহ্বানের বিজ্ঞাপনে লিখিত অপরাপর কার্য্য
সকল সম্পন্ন হইবে। এতদ্বির কোন অবিসম্বাদী অর্থাৎ যে
বিবরে কোন মতদ্বৈধ হইবার সম্ভাবনা নাই এরূপ formal
বিষয় বিচারার্থ উত্থাপিত হইতে পারিবে।"

সাধারণ ব্রাহ্মসমাঙ্কের বিশেষ অধিবেশন।

১২। কোন বিশেষ কারণ উপস্থিত হইলে কার্য্যনির্বাহক সভা বা অধ্যক্ষ সভা সাধারণ বাহ্মসমাজের বিশেষ অধিবেশন আহ্বান করিতে পারিবেন।

এত দ্বির অন্ন বিংশতি জন সভ্য স্থাক্ষর করিয়া অমুরোধ করিলে তাঁহাদের প্রস্তাব বিচারার্থ সম্পাদককে সাধারণ ব্রাদ্ধন্য করিলে তাঁহাদের প্রস্তাব বিচারার্থ সম্পাদককে সাধারণ ব্রাদ্ধন্য করিতে হইবে। যদি সম্পাদক সে অমুরোধ অগ্রাহ্য করেন, তাহাহইলে প্রার্থনাকারিগ কিংবা তাঁহাদের মধ্যে অন্যন ঃ সভ্য সভাপতিকে তহিবয়ে অমুরোধ করিতে পারিবেন এবং সভাপতি এরূপ স্থলে নিজ নামে সভা আহ্বান করিবেন। যদি সভাপতিও অমুরোধ অগ্রাহ্য করেন, তাহা হইলে সাধারণ ব্রাদ্ধসমাজের অন্যন ৩০ জন সভ্য প্রস্তাবিত বিষয় বিচারার্থ স্বীয় নামে সভা আহ্বান করিতে পারিরেন। কিন্তু সম্পাদক বা সভাপতি যে কারণে সভা আহ্বানে বিরত হইলেন, তহিষয়ে মন্তব্য লিপিবদ্ধ করিয়া আহ্বান কারীদিগকে ছই সপাহের মধ্যে তাহার একপণ্ড প্রেরণ করিবেন এবং সেই মন্তব্য অধ্যক্ষ সভার পরবর্তী অধিবেশনে বিচারাধীন হইয়া তৎসম্বন্ধে অমুক্ল বা প্রতিকৃত্ব মতে প্রকাশ হইতে পারিবে।

व्यथिदन्यदम्ब विकासन सिंदान निवस 🗀 🥍

৯৩। সাধারণ ব্রক্তিমাজের সাধারণ কিবা কেন্দ্র বিজেত্ব অধিবেশন কোন্দিবস হইবে, তাহা সম্পাদক কিবা ১২ বার্মার্ক নিম্মাল্লসারে সভাপতি কি সভাপণ প্রকাঞ্চপত্রে অন্যুক্তিন সপ্তাহ পূর্ব্বে বিজ্ঞাপন দিয়া আনাইবেন। বিজ্ঞাপনে অধি-বেশনের অন্তর্ভয় কার্ব্যের উল্লেখ থাকিবে। অন্যুক্ত জন সভা উপস্থিত না হইলে অধিবেশনের কার্য্য হইতে পারিবে না।

অনুপশ্হিত সভাগণের অধিকার।

১৪। কোন সভ্য পীড়া কিলা মকংশবে অবস্থিতির জন্ত সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ বা অধ্যক্ষ সভার কোন অধিবেশনে উপস্থিত হইতে অক্ষম হইলে, সম্পাদকের নিকট পত্র ধারা অধিবেশনের বিবেচ্য বিষয় সুস্বদ্ধে নিজ মত প্রকাশ করিতে পারিবেন। সভার মত নির্দ্ধারণকালে এই সমস্ত মতও গণনীয় হইবে।

কর্মচারী।

১৫। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের একজন সভাপতি, একজন সম্পাদক, একজন সহকারী সম্পাদক এবং একজন ধনাধ্যক্ষ থাকিবেন। আবশুক হইলে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কর্মচারীর সংখ্যা বৃদ্ধি বা হ্রাস করিতে পাবিবেন।

কর্মচারীগণের বর্ষ অন্ন ২৫ বৎসর, ন্নকরে ৫ বৎ-সরকাল তাঁহাদের সাধারণ আক্ষসমাজের সভা থাকা আবশ্রক এবং তৃতীর নির্মোলিধিত সভাের যোগ্যতা থাকা আবশ্রক।

কর্মচারিগণ এক বৎসরের জন্ম মনোনীত হইবেন; বর্মান্তে তাঁহারা পুনরার মনোনীত হইতে পারিবেন। কিন্তু কোন কর্মচারী একাদিক্রমে পাঁচ বৎসরের অধিককাল এক পদে থাকিতে পারিবেন না। তবে কার্য্যনির্বাহক সভার অধিবেশনে উপস্থিত সভ্যগণের ই দারা অন্থমোদিত হইলে সহকারী সম্পাদক সম্বন্ধে উপরোক্ত ৫ বৎসরের নিয়মের ব্যতিক্রম হইতে পারিবে।

কার্যানির্কাহক সভা কর্মচারিদিগের অর্থামুক্ল্য সম্বন্ধে ব্যবস্থা করিতে পারিবেন।

ক্রমশঃ

ব্ৰাশ্বসমাজ।

নামকরণ — জগন্নাথপুর প্রবাসী প্রাযুক্ত বাবু রজনীকান্ত সরকারের দিতীয় পুত্রের নামকরণ গত ১৯এ আখিন মানিকদহ প্রামে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। বালকের নাম প্রীমান্
অরবিন্দ সরকার রাধা হইয়াছে। আমরা ক্বতক্ততার সহিত জানাইতেছি যে এই শুভ কার্য্য উপলক্ষে রজনী বাবু ব্রাহ্মসমাজের প্রচারকত্তে ৩ তিন টাকা দান করিয়াছেন।

বিগত ৭ই আখিন রবিবার শিলংস্থ বাবু এজেজ নাথ সেনের বিতীয় পুত্র ও বিতীয় কন্তার নামকরণ সম্পন্ন হইয়াছে। বালকের নাম সরোজকুমার এবং বালিকার নাম ইন্দ্নিভা রাথা হইয়াছে।

বিবাহ—বিগত ২৩এ আখিন মঙ্গণবার কলিকাতান্থ শ্রীযুক্ত বাবু মধুসদন সেনের জ্যেষ্ঠা কন্তা শ্রীমতী কুমুদিনী নেশের সহিত চাকার বিবৃদ্ধ নার ব্যাধান রাম মহানরের
পুরা জীবান ভানেবর্ত্তন রামের কর্তবিবাহ সম্পন্ন হইনা নিরাছে।
পাত্তের বরন ২০ ও শাজীর বরন ১৫ বংসর। ঢাকার জীযুক্ত বার্
সক্তক্ত রার মহাশর আচার্ব্যের কার্য্য করিয়াছিলেন, এবং বার্ নীজানাথ রার প্রোহিতের কার্য্য সম্পন্ন করিনাহিলেন। কতজ্ঞভার সহিত বীকার করা বাইতেতে বে এই বিবাহ
উপলক্ষে মধ্সনন বার্ সাধারণ আক্রনাজের প্রভারক্ষেও
১০ রশ টাকা প্রধান করিয়াছেন।

বিগত ১৫ই আমিন সেমেবার কলিকাত। নগরে আহুক রাজনারারণ বন্ধ মহাশরের প্রাক্তা প্রাক্ত অভয়নারারণ বন্ধ মহা-শরের মিতীয়া কভার সহিত খুলনাবাসী প্রীমান্রমানাথ রাহার ভভ বিবাহ কার্য্য সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। প্রীযুক্ত নগেজনাথ চট্টো-পাধ্যার ও উমেশচক্র দক্ত মহাশর আচার্য্যের কার্য্য করিয়া-ছিলেন। ক্রতজ্ঞতার সহিত শ্রীকার করা বাইক্তছে বে অভয় বার্ সাধারণ প্রাক্ষসমাজের প্রচারফণ্ডে ৫ টাকা প্রবং দাতব্য বিভাগে ২ টাকা প্রদান করিয়াছেন।

এই ছুইটা বিহাহই ১৮৭২ সালের ৩ আইন অনুসারে রেজি-ষ্টারী করা হইয়াছে।

শ্রাদ্ধ—বিগত ২১এ আধিন রবিবার লক্ষ্ণের শ্রীযুক্ত লছ-মন্ প্রসাদের পরলোকগত পিতার আদ্যশ্রাদ্ধ সম্পন্ন হইয়াছে। শ্রীযুক্ত বাবু বিশ্বনাণ রায় মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন।

পত্র প্রেরকগণের প্রতি

প্রীঈশানচক্র দেব—মুগুরি—পুনর্জন্ম সম্বন্ধে একথানি পত্র 'লিথিয়াছেন। এই পত্রথানি অত্যন্ত দীর্ঘ অথচ তাঁহার সকল কথা এই পত্রে শেব হর নাই। এজস্ত পত্র প্রকাশিত হইল না। সংক্রেপে সমস্ত কথা লিখিত হইলে ছাপান যাইতে পারে।

শ্রীহরকালী সেন—বাবু সীতানাথ দন্ত মহাশয় হরকালী কাবুর পত্রের উত্তরে যে পত্র লিখিয়ছেন, এপত্র সেই বিষয়েই লিখিত হইরাছে। এবার স্থানাভাবে পত্র প্রকাশিত হইল না। ভবিষ্যতে ছাপা হইবে কিনা আমরা ভাহাও নিশ্চর রূপে জানাইতে পারিলাম না।

জনৈক আন্ধ—বোলপুর শান্তিনিকেতন। পত্রের লিখিত বিষয় প্রকাশ যোগ্য হইলেও লেখকের নাম না থাকায় পত্র প্রকাশিত হইল না।

১৬ই আষাঢ়ের প্রাপ্ত প্রবন্ধ লেথক—গত সংখায় বাবু আদি
নাথ চট্টোপাধ্যায় তাঁহার পত্রের উত্তরে যাহা লিখিয়াছেন।
এপত্র সে বিষয়েই লিখিত হইনাছে। এবার স্থানাভাবে পত্র
প্রকাশিত হইল না। আগামীতে তাঁহার পত্রের কোন কোন
অংশ প্রকাশিত হইতে পারে।

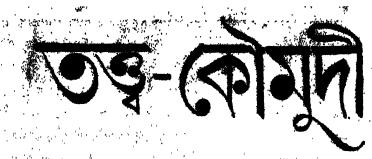
বিজ্ঞাপন।

অধ্যক্ষ সভা গঠন সম্বন্ধীয় অবাস্কর নিয়মাবলীর ২য় নিয়মামুসারে জ্ঞাপন করা ঘাইতেছে যে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বে সকল সভা আগামী বংসরের অধ্যক্ষ সভার্ম সভা হইতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা আগামী ২১এ নবেম্বর তারিখের মধ্যে উাহা-দের নাম, ধাম, আহঠানিক বা অনামুঠানিক প্রভৃতি বিবরণ সকল অহুগ্রহ পূর্বক আমার নিকট প্রেরণ করেন। ঐ তার্মিখর পর কাহারও নাম গৃহীত হইবে না।

সাং ত্রাঃ সমাজ কার্য্যালয়

শ্রীআদিনাথ চট্টোপাধ্যার সহকারী সম্পাদক।

১৮ই অক্টোবর ১৮৮৯



ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিফাক পাক্ষিক পত্তিকা।

>श्रम क्रांचा । >8म मरबाः ।

उथ्हें कार्डिक खडानात, ১৮১১ गक, खाक गुम्र ७०

বাংশরিক অগ্রিম মূল্য ২॥ মক্ষণে ৩ প্রতি থণ্ডের মূল্য ১

श्रार्थना ।

পরজ সংযুক্ত। যং।

প্রভু তব চরণে,

এই প্ৰাৰ্থনা জানাই।

শাগরে নদীর মত,

স্থামি যেন মিশে যাই।

হবে বেন মাধামার্থি চরণে মিশায়ে থাকি সংসার তন্ময় দেখি

त्मरथ এ इःथ चूठा है।

প্রেমসিন্ধু টেনে নাও তোমার তরক্তে মিশাযে দাও আমার আমিত ঘুচাও

তোমাৰ হয়ে প্ৰাণ জুড়াই।

मन्भानकीय मख्या ।

শাস্তিচ্চ । — শাস্ত্র, গুরু, তীর্থ, মন্দির ও সত্য সম্বন্ধে জামরা কোন প্রকার সাম্প্রদায়িকতা স্বীকার করে না। সত্য জামাদের শাস্ত্র, ঈশ্বর আমাদের গুরু, স্থানির্মাণ চিন্তু জামাদের তীর্থ ও বিশাল বিশ্ব জামাদের মন্দির। সত্য জাহরণ সম্বন্ধে স্থান্তরাং জামাদের বিশেষ দায়িত্ব রহিয়াছে। সেই দায়িত্ব জ্ঞান্ত ধর্মাবলম্বী অপেক্ষা জামাদের সনেক অধিক। কেন না তাহাদের মতে শাস্ত্র ও সত্য তাহাদের সম্প্রদায়ানিবদ্ধ। এত গুরু দায়িত্ব সত্যে আহরণ সম্বন্ধে উদাসীন থাকা জামাদের পক্ষে বিশেষ দোবের কথা। ধর্ম্মশান্ত্র সকলের প্রচুর আলোচনা ভিন্ন অন্ত শর্মা সম্প্রদারের সত্য সকল আমরা কিরপে শিক্ষা করিব, আর তাহা শিক্ষা না করিলে বিবেকের নিকট কি বলিয়া জ্বাব দিব। খুইবর্ম বাজকেরা এ বিষয়ে আমাদিগের এক প্রকার দৃষ্টান্ত স্থল। কত ভাবাই ভাঁহারা শিক্ষা করিয়াছেন। মেসেঞ্লার বলিয়াছেন যে বর্জমান শতানীর প্রথম ভাগে পৃথিবীনিবাসীগণের পঞ্চমাংশের একাংশ লোক মাত্র

বাইবেল পড়িতে পারিত। এখন দশ ভাগের নয়-ভাগ লোকের ভাষার উক্ত পৃত্তক অনুবাদিত হইরাছে। আমেরিকা, ইংলও, জর্মণি ও ফালে এখন প্রচুর পরিমাণে প্রাচ্য শাস্ত্র চর্চা হইতেছে। আর আমরা পাশ্চাতা শাস্ত্র অনুশীলন করা দ্রে থাকুক আমাদের আপনাদের দেশের শাস্ত্রও অনুশীলন করিতেছি না। হিন্দু সমাজে পূর্বাপেক্ষা এখন অধিক পরিমাণে শাস্ত্র চর্চা হইতেছে, কিন্তু সে চর্চায় অনেকস্থলে শাস্ত্র সকলের প্রকৃত বা মুগ্য অর্থ আছোদন করিয়া সম্প্রাধেরের অনুরোধে গৌণার্থ প্রতিপাদন করা হইতেছে। যে দেশে ধর্ম প্রচার হয়, প্রচারকগণের সে দেশের ধর্মশাস্ত্র সমূহে অধিকার না থাকিলে বিশেষ কল লাভ হইতে দেখা যায় না। একথা আমাদের স্মরণ থাকা উচিত। যাহার যতটুকু সাধ্য তিনি ততটুকু পরিমাণে এবিষয়ে যদি চেটা করেন, তাহা হইলে সকলের চেটা একব্রিত করিয়া অনেক লুপ্ত রক্ব উদ্ধার করা যাইতে পারে।

অধ্যাত্মরাজ্যে আলোক-বিজ্ঞান।—স্থান পরিচ্ছিত্র বাহ্য জগত ও কাল পরিচ্ছিত্র অন্তর্জগতের ঘটনাবলীর মধ্যে অনেক সাদৃশ্য দেখিতে পাওয়া যায়। জড় জগতে আনর। তিন প্রকার পদার্থ দেখিতে পাই; এক প্রকার বস্তুর মধ্য দিয়া আদবেই আলোক প্রবেশ করিতে পারে না। মার এক প্রকার বস্তুর মধ্য দিয়া আলোক প্রবেশ করিতে পারে বটে কিন্তু সম্পূর্ণরূপে পারে না; তৃতীয় প্রকার বস্তু এরপ পরি <u>কার যে তাহার মধ্য দিয়া আলোক রেখা অব্যাহত ভাবে গমন</u> করিতে পারে। অশ্বচ্ছ, ঈষংশ্বচ্ছ ও শ্বচ্ছ এই তিন প্রকাশ বস্তুর অনুরূপ তিন শ্রেণীর আত্মা অধ্যাত্মরাজ্যে দেখিতে পাই। এক শ্রেণীর লোক এরূপ অস্বচ্ছ যে সাধ্য কি স্বর্গেব বাঈশবের বা সাধুজনের আলোক তাহাদের ভিতর দিয। যায়, তাহারা মনে করে তাহাদের আপনার আলোকই যথেষ্ট। বেখানে এরপ ধারণা সেখানে কোমল ঐশ আলোক কির্রূপে প্রবেশ করিবে। তাহাদের মধ্যে অহংভাব এমন উজ্জল নে ভাহারা স্বণীয় আলোক লইতে মস্তক হেট করিতে সন্মত হয় না। আর এক শ্রেণীর লোক আছে তাহারা একেবারে সম্বন্ধ **নহে অথচ বচ্ছও নহে। ঈশবের আলোক** তাহাদের ভিতর দিয়া কতক পরিমাণে যার কিন্তু সম্পূর্ণ ভাবে যায় না। তাহা-

দের চিত্ত হইতে একেবারে অহলার বার নাই। তবে অহলার
দ্র করিবার চেণ্ডা তাহারা মাঝে মারে করিরা থাকে। লাকে
মাঝে তাহারা তাই ব্রেলর শক্তিকে ইহিমাহিত করে। ভূতির
শেলির লোক একবারে অহমিকা শৃষ্ঠা। সকল বিষরেই করিরের
কর্ত্ব ও আপনাদের নাসত অহতের করে; অর্পের আলোক
বখন আসে তবন তাহা মাথার করিয়া লার। তাহানের আশ্বা
শক্ত ও শ্বনির্বান দর্পণ তুলা। ইশ্বরের প্ণ্য-ক্যোতি তাহানের
ভিতর দিয়া অনারাসে চলিয়া যার। এই সকল স্নান্ধারণ
পবিত্র অধ্যাত্ম-কর্পণে বখন আমরা আপনাদিসের মুধ দেখি
তখন অবাক হই। সাধ্দিগের ভক্তি ব্যাক্লতা বিনর ও
বৈরাগ্যের সহিত বখন আপনাদের ক্রিন ভ্রনা করি, তখন
লক্ষার অধ্যাত্মন হই।

ज्ञाधन-खाजन--- अरमत्य धर्ममध्यमात्रवित्यत्व नव-नाधनात রীতি প্রচলিত আছে। সেই সম্প্রদায়ের সাধকগণ মৃত শরীরের উপর বসিয়া আপন আপন ইইদেবতার আরাধনা করিয়া থাকেন। মৃত শরীরকে সাধনার আসন করিলে সিদ্ধি বিষয়ে কোন সহারতা नाउ रत्र कि ना जामता त्म विषया विद्रमय किहूरे विनाष्ठ रेष्ट्रा कति ना। किन्तु नय-नाधनात जाव हहेए नाधकरण विष्नव শিক্ষা করিতে পারেন। সাধকের সাধনপথের প্রধান অন্ত-রায় বহিবিধয়ের আকর্ষ**া মনের প্রতি বাহ্নিক আ**সন্<mark>তি যে</mark> পরিমাণে বলবান হয় সেই পরিমাণে সাধকের সাধনার বিশেষ विच्न पंछिता थाटक। माधकटक मक्त्रमातात्रथ रहेटक रहेटन, তাহার পকে দকল প্রকার আকর্ষণ ও আদক্তির উপর বয় লাভ कता कांत्रभक। मनम्हांकनार माध्यकत बन्धारावर्त्र भारक বিশেষ বিশ্ব উপস্থিত করে। এ জন্ত সাধক সর্ব্বদাই এমন স্থল সাধনের জন্ম নির্ণয় করেন যেখানে মনের বিক্লিপ্ত হইবার সম্ভাবনা কম। সাধক যদি তাহা করিতে পারেন ভাহা হইলে মন ভিরের পক্ষে বিশেষ স্থবিধা হয়। শব লোকের মনকে আকর্ষণ না করিয়া দূরে সরাইয়া দের। যাহা থাকিলে লোকের মন আরুট হইতে পারে শবে তাহার কিছুই নাই। তাহার যে শোভার এক সমর অন্তে আক্নষ্ট হইত এবং নিকটে বাইয়া কত আদর করিত ? এখন তাহার কিছুই নাই। স্বতরাং তাহা ত্যাগ করিতে পারিলেই যেন লোকে বাঁচিয়। যায়। তেমনি যদি পৃথিবী মানবের পক্ষে শবস্থানীয় হয় অর্থাৎ ইহার যত কিছু আকর্ষণী শক্তি আছে, তাহা যদি সাধককে আরুট্ট क्तिएक अनमर्थ इब्र-शृथितीत धन, मान, मण्यम ध नकन যদি চিত্তকে আক্লষ্ট করিতে সমর্থ না হয়-পৃথিবীর কোলা-হল, যশপুছা এবং শত প্রকার আমোদজনক ক্রিয়া ধদি তাহাকে নিকটে না আনিয়া দুরে নিকিপ্ত করিয়া দেয়, তাহা হটলেই অর্থাৎ পৃথিবীকে শবে পরিণত করিতে পারিদেই मानद जानन मत्नात्रथ मिक विषया निःमः नग्न स्टेटल भारत ।

আমরা যে ব্রন্ধবোগ অস্থতব করিতে পারি না, তাহার প্রধান কারণ আমাদের মন সর্বাদাই চারিদিকে বিকিপ্ত হইতেছে। একটু কাজের মঞ্চাট নিগ্ত করিরা উপাসনার জন্ত বনিলাম, অমমি জনকোলাহল আসিয়া মনকে সেইদিকে টানিয়া লইল।

একটু বির হট্টরা বসিতে না বসিতে পৃথিবীর নানা প্রথম্বজি এবং ভবিষাৎ অগ-লাশা আমিয়া প্রাঞ্জন, বাতিবাত করিয়া ছবিশ্ব शृश्वित त्मारिनी भक्ति प्रकार नहीं। विनि व नकन जाति अक्रिक्य कहिए शास्त्र, क्रीहात दश्च-क्राव्यव्याही र क्रीन क्रेस चात्र त्यान रावारे बादक मा। कांचन केंद्रवन निर्देश केलिय तं राजियक विविद्यां चार्ट जारा सह। सामनी नर्जना क्रिक्रिक আপ্রিত এবং উচ্চায় সলে অতি স্মিষ্ট বেংগে নিক্স বছিনীয়ি 🖟 তিনি কথমও আমানিগকে পরিত্যাপ করেন না। ছানের বাৰধান ত তাহার সহিত রটেই নাঃ কিছু আনাদের আৰ জীহার थि अञ्चलांगी ना हरेवा नामाविध विषद भातक रव-मामा স্থানে প্রাণ বাধা থাকে বলিয়াই ভাঁহার সহিত সংগ্রহ এই বে নিভা বোগ ভাহাও অমুভৰ করিতে পারি হয়। পরমানীয়রূপে বিনি আমাদের নিত্য আশ্রক বার্কা, ভাঁহা-त्कि पृत्त गत्न इव oवः **डीहार्क पृत्त प्राविवादे आमारिका** যত বিপদ উপস্থিত হয়। বহিবিবনে আসজিকণ অভবার অন্তর্হিত হইনেই আমরা তাঁহাকে প্রাণে অমুতব করিতে পারি। ञ्चताः जामात्मत्र माधनव्य पृथिवी यति जामात्मत्र निक्षे नत्व পরিণত হয় অর্থাৎ যেরূপ হইলে মন আর ইহাতে আৰু ই হইবে না, जाहा इहेरनहे **माधनात मिक्कि विवस्त जात स्कान** विश्व थारक ना। কিন্ধ কেমন করিয়া তাহা হইবি পথিবীর যে শোভা দেখিয়া লোকে মুগ্ধ হয়; ইহার যে আকর্ষণীতে জগৎ মন্ত্র-মুগ্ধ দর্পের স্তায় পশ্চাৎ অমুসরণ করে, তাহা কি থাকিবে না ? এথানকার ঘশস্থা, আত্মীয় স্বজনের প্রতি অনুরাগ অন্তপ্রকার শত আকর্ষণ কি অন্তর্হিত হইয়া যাইবে ? ইহা ত যাইবার নয়। এই সকল শোভা সম্পদ সবই থাকিবে, অথচ এ সকলে প্রাণকে ঈশর ছইতে বিচ্যুত করিতে পারিবে ন।। কেমন করিয়া তাহা হইবে ? কিন্তু আমরা দেখিরাছি প্রেমিক যিনি তাঁহার ব্যবহারে দেখিয়াছি এ সকলই সম্ভব। পৃথিবীর সমস্ত সৌন্দর্য্য যশ মান খ্যাতি প্রতি-পত্তির আশা একদিকে পড়িয়া থাকে, আর প্রেমিক অনন্তকর্মা হইয়া প্রেমাম্পদের নিকট বসিয়া দিন যাপন করেন। তাঁহার প্রতি প্রকৃতির শাসনও যেন পরাস্ত হইয়া যায়। প্রেমিক কুধা তৃষ্ণা ভুলিয়া পৃথিবীর আর সকল. প্রয়োজন বর্তমান সত্তেও প্রেমা-ম্পদের নিকটেই বসিয়া থাকিতে ভাল বাসেন। স্বভরাং প্রেমই মানবকে পৃথিবীর সকল আকর্ষণের হাত অভিক্রম করিতে সমর্থ করে। প্রেমের শক্তির নিকট আর কোন শক্তিই কার্যাকর নছে। এখন আমরা কি প্রেমহীন আছি ? না। আমাদের প্রেম প্রচুর পরিমাণেই আছে। কিন্তু তাহা উপযুক্ত পাত্রে নাই। স্বামরা অপাত্তে প্রেম দান করি অথবা বেখানে যে পরিমাণ প্রেম প্রদান क्त्रा श्राद्मालम राशास्त्र रत्र श्रित्रमार्ग रश्रम श्राम ना क्रिया তাহার অক্তথাচরণ করি। প্রকৃত প্রেমাম্পদ, পরম মুম্মর---নিতাসহায় এবং নিতাসহচর যিনি তাঁহাতক ভাল না বানিয়া আমরা হই দিনের যাহা-বাহা আমাদিগকে অটল আঞ্জা-হইতে বিচ্যুত করিয়া সন্থারী বিষয়ের প্রতি নির্ভর করিছে প্রবৃদ্ধি-দের সেই সকল বিবরের প্রতিই অন্থরানী হই। ভাছার পশ্চাডেই ধারিত হই। তাই আমরা এক সহরাদে বাস করিয়াও---ভারার অব্যবহিত আপ্রয়ে থাকিয়াও ভাঁহাকে মুয়ে জাবিকেছি ৷

CHICAL CHICAGO चंडताः बानारिश्वरू व्यक्ति १००० वनमं नीकाराध्यः वस्तु व्यक्ति णांना कालीक वरियाका कार्य कार्य करता होता है जाएक दरवान केन्द्रियों कार्य करवा शास्त्र करवा छारारकरे जांपक-अवस्था निष्ठानि रत। इंडिसीर अब नःनर्ग गराएं दिनक ষ্টো অধিক সময় হয়, বাহাতে সেই প্লেসক অধিক পরি-মাণে হয় ভাষাই করিতে হইবে। ভাষার পরিচর পাইলে এ সক্ষ বছন আৰু কেন্দ্ৰ সময় থাকিতে পাৰে মা। ভবে সে राष्ट्रिके नारकंड कड कार्यना नार्क हरें। कामना रिप अक्योत অন্ত্ৰৈলৈ বোগী হইতে পান্নি ভাহাঁ হইলে প্ৰিণীন শোভা এবন বে ভাবে অন্তরার স্বরূপ হইরা আছে ভাহা আর থাকিবে লা 🖟 এই শোভা সম্পদ তাহার আদত সামগ্রীরূপে তাহার দিকে বাইবার সাহায্য করিবে। আমাদের চকু পরিবর্তিত। ছইয়া ইহার মধ্যে ভাঁহারই সৌন্দর্য্যের আভা দেখিতে পাইবে। ৰভএৰ কিছুকালের জন্য ইহার বাহ্নিক বিক্লত শোভা অন্তহিত হউক। প্রকৃত সৌন্ধর্য্যের আধারের সহিত বোগসাধন পক্ষে এখন বেভাবে অন্তরার শ্বরূপ হইয়া আছে তাহা বিলুপ্ত হউক।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

এশী শক্তি। (তৃতীয় প্ৰস্তাব)

কে না স্বীকার করিবে যে সকলের শারীরিক শক্তি সমান নহে ? অথচ এরপ কেছ মনে করেন না যে চেষ্টা করিলে मकलाहे ममान वनवान् इहेट्ड शादा। কাহারও কাহারও শরীর স্বভাবতঃই এরূপ বলিষ্ঠ যে অপরে সহল ব্যায়াম-চর্চা করিয়াও সেরূপ বলিষ্ঠ হইতে পারে না। এই বিভিন্নতা স্বাভাবিক। কারণ, বিভিন্ন অবস্থা ও বিভিন্ন কারণের বর্ত্তমানতা প্রবৃক্ত স্বাভাবিক নিয়মেই এই বিভিন্নতা হইয়াছে। একজন रव ७ चनावारम इरे मन ভात जूनिए भारत, चात এक बरनत এক মণ ভার তুলিতে কট বোধ হয়—এন্থলে কেবল চেষ্টার তারতম্য ৰশিৰ কিরপে ? শক্তির তারতমাও শীকার করিতে হইবে। মানসিক শক্তি সহদ্ধেও যে এইরপ বিভিন্নতা সচরা-চর দেখিতে পাওরা বায় ভাহা পূর্কেই বলা হইয়াছে। কেহ **क्टि शमन दोन वर्गन वर्गन महस्य धमन यानक विवन** व्बिट्ड भारत, वांश छाहारमत चरभका चिधकवत्रक लारक जारमक रहें। कतियां अ जानकाल वृक्षिए लारत मा। याहात्र স্বাভাবিক শক্তি আছে দে বাল্যকালেই এমন ভাৰপূৰ্ণ কবিতা রচনা ক্রিভে পারে বৈ অনেক ব্রীয়ান্ পণ্ডিভের লেখনী হইতেও সেরপ কবিতা বাহির হওরা ছর্ঘট। জলপূর্ণ পাত্রে উত্তাপ দিলে তাহার জন কি ভাবে বান্স হইরা বহির্নত হর, মাহা ড সকলেই দেখিরাছেন ; কিন্ত জেব্স্ ওরাটের পূর্বে কয় ক্ষিণ লোক ভাষা দেখিয়া জলীয় বাস্পের আশ্চর্য্য শক্তির মর্ম্মো-ৰ্যাটনে সমৰ্থ হইয়া ছিলেন ? এই জেম্স্ ওয়াট সহজে ক্ষিত

কৈ বৈ ইনি মুখ্যৎসায় বহুবে প্রকটী স্থানিতির সমস্যা পূবণ বিশিক্তি কিন্তু হৈছেই বলে স্বাভাবিক শক্তি বা প্রতিভা। কিন্তু কৈটা ক্ষিয়া ইহা লাভ করিতে পারে না। জন্মগত, ক্ষিয়ালত জ শিক্ষাগত নানা কারণে বিভিন্ন বিবরিণী প্রতিভাব বিকাশ হইরা থাকে। যাহার যে বিষয়ে প্রতিভা আছে সে বেরূপ অল সমরে ও অল চেটার তহিবরে প্রতিভা আছে সে বেরূপ অল সমরে ও অল চেটার তহিবরে প্রাথান্য লাভ করিতে পারে, তহিবরক তম্ব সকল আরক্ত করিতে পারে, অপরে অনেক দিল ধরিরা বহু চেটা করিরাও দেরূপ পারে না। ইহা অলীকার করিলে প্রভাক ও প্রকৃত ঘটনা অলীকার করা হল। কিছু ইহা বীকার করিলেই ক্ষুর্যকে প্রকৃপাতী বলা হল না। তাহার কারণ কি ভাহা পূর্বে বলা হইরাছে।

শারীরিক শক্তি দখনে যেমন কেছ কেছ বিশেষ বলবল্লার পরিচয় দেন, মানসিক শক্তি সহকে বেমন কাহারও কাহারও বিশেষ প্রতিভা দৃষ্ট হয়, আধ্যাত্মিক শক্তি সহদ্ধেও সেইরূপ কাহাকেও কাহাকেও বিশেষ প্রতিভাসম্পন্ন দেখিতে পাওয়া ষায়। ঐশরিক ভাব সকলের বীজ প্রত্যেকের হৃদরেই নিহিত আছে ইহা সভ্য। কিন্তু পূৰ্ব্বোক্ত ব্যক্তিদিগ্ৰের জীবনে এ সকল বীজকে যত সহজে ও শীল্ন অঙ্গিত হইতে দেখা যায়, অপরের জীবনে সেক্সপ দেখা যায় না। ইহার কারণ কেবল চেষ্টার তার-তম্য নছে; এন্থলে শক্তির তারতম্যও স্বীকার করিতে হইবে। দকল প্রকার সত্য, ভাব ও আদর্শ দকলে সমানভাবে ও সমান চেষ্টায় বৃঝিতে ও ধরিতে পারে না। জন্ম, অবস্থা ও শিক্ষাগত নানাপ্রকার প্রভেদনিবন্ধন লোকের আধ্যাত্মিক ধারণাশক্তির প্রভেদ হইরা থাকে। একটা দহজ দৃষ্টান্ত লওয়া যাউক ;—গ্রাহ্মমাত্রেই গ্রাহ্মধর্মকে সত্যধর্ম বলিয়া স্বীকার করেন ও ইহার সত্য সকলের বীজ সকলের হৃদয়ে নিহ্তি আছে বলিয়া মনে করেন। এই ত্রাহ্মধর্মের সত্য সকল ভারতের নানাস্থানে এবং ইংলও আমেরিকা প্রভৃতি দ্রদেশেও প্রচারিত হইয়াছে ও হইতেছে। একণে কথা এই যে সকল নর নারী ঐ সকল সত্যের বিষয় শ্রবণ করিয়াও উহা গ্রহণ করিতেছেন না, তাঁহাদের সকলের সম্বন্ধেই কি ইছাবলা ঘায় যে তাঁহারা ইচ্ছা করিয়া উহা এছণ করিতেছেন না? উক্ত নর নারীগণের সম্বন্ধে কি বলিতে ছইবে যে তাঁহাদের মধ্যে কাহারও সত্যের প্রতি অমু-त्रांग नारे ? हेरा विनात जामारनत विस्वहनात्र निजास मनात्र कथा वना इत्र। फाँहारमत मर्था व्यत्नक एकिमान, विचानी, সরল ও সাধুপ্রকৃতির লোক আছেন। তাঁহারা সকলেই ইচ্ছা করিয়া অসত্যের অসুসরণ করিতেছেন, এ কথা যিনি বলিতে চান বলুন, আমরা কিন্তু এরপ কথা বলা যুক্তি ও নাারসঙ্গত বলিয়া স্বীকার করিতে পারি না। আমাদের বিবেচনার ভাঁহাদের কাহারও কাহারও দম্বন্ধে ঐ উক্তি মত্য হইলেও, ভাঁহানের মধ্যে অনেকেই ব্রাশ্বধর্মের সুস্তাসকল প্রকৃতভাবে ব্রিতে ও ধরিতে পারিতেছেন না। তাঁহাদের হৃদয় মন আজিও তাহার জন্য ঠিক্ প্রস্তুত হয় নাই। কোনও বিষয় সভ্য বলিয়া বুঝি-রাও ইচ্ছাপূর্বক ভাছা গ্রহণ না করা এবং বৃদ্ধির দোবে বা অন্য কোন কারণে তাছা ব্ঝিতে না পার। এ ছইটা খতর ব্যাপার। প্রাথনটা কণ্টতা ভিন্ন ভার কিছুই মহে, দ্বিতীরটীর সঙ্গে সরল-

তার কোনও বিরোধ নাই। স্করাং হর বলিতে হইঁবৈ বে গাঁহারা বাল্লধর্মের কথা শুনিরাও তাহা গ্রহণ করিতেছেন না, তাঁহারা সকলেই কপট, নতুবা বলিতে হইবে যে তাঁহাদের মধ্যে অনেকে ইহার সভ্য সকল প্রস্তভাবে ব্ঝিতে পারিতেছেন না। ইহার মধ্যে কোন্ মীমাংসা যুক্তি ও ভারনসভ পাঠকগুণই তাহার বিচার করিবেন।

আসল কথা এই যে, উপযুক্ত শক্তি না থাকিলে, হ্বনন্ন উপযুক্ত রূপে প্রস্তুত ও আধ্যাত্মিক দৃষ্টি পরিষ্কৃত না হইলে আধ্যাত্মিক সত্য সকল ভালরূপে ধরা যার না। যাহার দৃষ্টি-শক্তি অবিকৃত আছে সে চকু খুলিলেই হুৰ্যালোক দেখিতে পায় বটে, কিন্তু যাহার চকু হীনজ্যোতি ও দৃষ্টি কীণ হইয়া পড়িয়াছে, সে ইচ্ছা করিলেও ভাল দেখিতে পায় না। সেইরূপ যাহার আধ্যাত্মিক **इक् अक्टू कि इम्र नार्डे, अथवा दकान ३ काइए० याहाइ आधा-**আ্বিক দৃষ্টি নিজেজ হইয়া পড়িয়াছে সে চেষ্টা করিয়া আধ্যাত্মিক সত্য দেখিবে কিরুপে ? এরূপ অবস্থায় যদি কেছ উচ্চ সত্য, ভাব বা আদর্শ ধরিতে না পারে তবে সে ইচ্ছা করিয়া তাহার দিকে চকু ফিরাইতেছে না এরূপ কথা বলা যায় না। তাছাকে সহজ সত্য হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমে উচ্চতর সত্যে উপনীত হইতে হইবে। সে ইচ্ছা করিলেও উচ্চ সত্য দেখিতে পাইবে না। এন্থলে বয়স বা সভ্যতা প্রভৃতি ধরিয়া হিসাব করিলে চলিবে না। বয়সের হিসাবে শারীরিক শক্তির বিকাশ সম্বন্ধেই যথন ঠিক সমতা দেখা যায় না, তখন মানসিক ও আধ্যাত্মিক শক্তির বিকাশ ত দূরের কথা। দশটী ৪ মাসের শিশুর মধ্যে একটাকে হাঁটতে দেখিলে যিনি ঈশ্বরে পক্ষপাতিত্ব আরোপ করিতে পারেন, তিনি দশটী শিশুর মধ্যে কাহাকেও দশ বা এগার মাদে, কাহাকেও পনর মাদে, কাহাকেও চুই বৎসরে এবং কাহাকেও বা আড়াই বংসরে হাঁটিতে দেখিয়াও ত ঈশ্বরে পক্ষপাতিত্ব আরোপ করিতে পারেন ? অথচ শিশুদিগের হাঁটিবার বয়স সম্বন্ধে এইরূপ ইতর বিশেষ প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায়। এহুলে কি কেহ বলিতে চাহেন যে ইচ্ছা বা চেষ্টার তারতম্য নিবন্ধন এই বিভিন্নতা ঘটিয়া থাকে ? ইহা বলিলে নিতাম্ব অনভিজ্ঞের মত কথা বলা হয়। সেইরূপ মানসিক শক্তি সম্বন্ধে দেখা যায় যে দশ বংসর বয়সে কেছ প্রবীণের ভায় জ্ঞানবান না হইলেও, বার কি চৌদ বৎসরের অন্ত বালক অপেকা জ্ঞানবান হইতে পারে। কেহ বা তের চৌদ্দ বৎসর বয়সে প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইতেছে, কেহ বা যোল সতর বা তদ্ধিক বয়সেও তাহা পারিতেছে না। যাহারা পারিতেছে না, তাহারা সকলেই যে চেষ্টার অভাবে পারিতেছে না তাহা নহে, অনেকে বৃদ্ধির প্রথরতার অভাবেও পারিতেছে না। বাহারা শিক্ষকতা কার্য্যে ব্যাপৃত আছেন, তাঁহারা স্বচক্ষে প্রতিদিন ইহার প্রমাণ দেখিতে পান। এরপ ऋल द्वेचत्रक ७ भक्तभाठी वना याहेट भारत ? आधाञ्चिक শক্তির বিকাশ সম্বন্ধেও সেইরূপ বয়সের কোনও দীমা নির্দ্ধারণ कता योत्र मा । अन्य वा श्रास्त्रात्मत्र मछ लाक वर्षीयानर्तम् मरधा क्यक्रन एषिएक भाषमा यात्र ? यनि वरनन, अन्य अस्त्रान कवि-क्रमा अष्ट , তবে बामता विनव शृष्टे, वृक्ष अञ्चि महाचारित्रत

জীবনে বাল্যকাল হইতে আধ্যাত্মিক শক্তির বেরূপ ক্ষরণ हरेबाहिन, नाशांत्रगृष्ठः कश्कम आश्चेत्रम्य वास्त्रित कीवत्न कारा দেখা যায় ৭ আবে এই বিভিন্নতা কি কেবল চেষ্টা বা ইজ্ঞার তারত্বা হইতেই উংপল্ল "এক সময়ে এক দেশে একই প্রকার সভ্যতার মধ্যে জনিয়া" কেছ কেছ "সম্ধিক জ্ঞানী" হইতেছেন এবং অপর অনেকে ঠিক সেইরূপ চেষ্টা করিয়াও তাঁহাদের সমান জ্ঞানলাভ করিতে পারিতেছে না, ইহা ত প্রতাক্ষ ঘটনা। পাছে ঈশ্বরে প্রক্রপাতিত্ব দোষ পড়ে এই ভয়ে কি একথা অস্বীকার করিতে হইবে ? আর তাহাই বা পড়িবে কেন ৫ এইরূপ শক্তির বিভিন্নতা ত স্বাভাবিক। বিধাতার এক অপরিবর্ত্তনীয় নিয়মেই বিভিন্ন অবস্থা ও কারণ পরস্পরার সমবামে এই বিভিন্নতা ঘটিয়া থাকে। এই বিভিন্নতা, এই বিচি-ত্রতাই জগতের নিয়ম। চেষ্টা ভিন্ন শক্তির পূর্ণ বিকাশ হয় না ইহা যেমন সত্য, আবার শক্তি ডিম্ন চেষ্টা চলিতে পারে না, ইহাও তেমনি সভা। চেষ্টা ব্যতীত শক্তির ক্রণ হয় না, আবার শক্তি ব্যতীত চেষ্টারও ক্ষুরণ হয় না। যাহা সাধ্যায়ত নহে তাহার জন্ম দাধ (desire) হইতে পারে, কিন্তু ইচ্ছা (will) হইতে পারে না। ইহা একটা বৈজ্ঞানিক সত্য। শক্তি থাকিলে ত তাহার ক্রণের জন্ত চেষ্টা হইবে? অন্নশক্তি थांकित्न अब्र (ठष्टे। इटेर्टर, अधिक मंक्ति भाकित्न अधिक (ठष्टे। হইবে। যেন্তলে শক্তির বিভিন্নতা আছে সেন্তলে সমান চেষ্টায় कथनहे मगान कल छैरशां पिछ हहेरव न। ।

ব্যক্তি সম্বন্ধে যেরূপ, জাতি সম্বন্ধেও সেইরূপ। যে সকল জাতি আজিও অসভ্যাবস্থায় আছে, তাহারা যে কেবল আপনা-দের দোবে, ইচ্ছার অভাবে, চেষ্টার মভাবে স্থসভা ভাতিদিগের স্থায় উন্নত হয় নাই তাহা নহে। জাতীয় প্রকৃতি ও বুদ্ধিমন্তার তারতম্য, প্রাকৃতিক অবস্থানিচয়ের অমুকৃণতা বা প্রতিকৃণতা. সামাজিক ও রাজনৈতিক অবস্থা, শারীরিক সামর্থ্য বা তর্মগতা প্রভৃতি কত কারণে যে জাতিগত উন্নতির বিভিন্নতা হইয়া থাকে তাহা কে বলিতে পারে ০ এবং এই বিভিন্নতা সম্পূর্ণরূপে ইচ্ছা-मार्टिक नरह विवादि से क्रियारक श्रेक्शांकी वना हहेन ठाहातहे বা অর্থ কি ? এরপ করিয়া বিচার করিতে চইলে ইছাও বলিতে হইবে যে প্রাক্ষতিক বিভিন্নতা বিধাতার পক্ষপাতিছের পরিচায়ক। তিনি কেন পৃথিবীর সকল স্থানের জলবায় ও শীতো-थ छ। ममान करत्रन नारे ? छिनि (कन कांम ७ एन एक ममजन কোনও দেশকে পর্বতময় করিয়াছেন ? তিনি কেন কোনও (मणरक ममुद्भात निकरि ७ (कान्छ शानरक ममुम्र इहेट्छ प्रदेश অবস্থিত করিয়াছেন ? তিনি কেন কোনও স্থানকে উর্মর কোনও স্থানকে মকুময় করিয়াছেন ? তিনি কোনও স্থান দিয়া নদী প্রবাহিত করিয়াছেন কোনও স্থান দিয়া তাহা করেন নাই কেন ? ইত্যাকার কারণের জন্তও ত বিধাতাকে পক্ষপাতী বলা যায় ? কেন না, এই সকল কারণে যে জাতিগত অবস্থা ও প্রকৃতির প্রভূত পরিমাণে বিভিন্নতা হইয়া থাকে, তাহা চিম্বা-শীল ব্যক্তি মাত্রেই স্বীকার করিয়া থাকেন। কিন্তু এমন নির্কোধ কে আছে, যে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের প্রাকৃতিক দংস্থানের (physical features) বিভিন্নতার জন্য স্টিকর্ডাকে পক্ষপাতী বলিতে প্রস্তুত থাকে প্রাণ্ড কথা এই, পূর্বোক্ত নানসিক বা আধ্যাত্মিক বিভিন্নতা সকল সম্পূর্ণরূপে মান্তবের ইচ্ছা সালেক নহে বলিলেই যে ঈশ্বরের পক্ষণাতী বলা হইল, তাহার কোনও কর্ম নাই। আর ঈশ্বরের অনস্তভাব ও আমাদের লক্ষ্যের অনস্তত্মের তুলনার আমরা এই পৃথিবীতে যে কিছু আধ্যাত্মিক বিভিন্নতা দেখিতে পাই তাহা এত অফিঞ্চিংকর যে তাহা ধর্তবের মধ্যেই আনা উচিত নহে।

কিছু তাই বলিয়া কেছ মনে করিবেন না যে আমরা চেটার আবশ্রকতা একেবারেই স্বীকার করি না। আমরা পূর্বেই বলিয়াছি এবং এখনও বলিতেছি যে চেষ্টা ভিন্ন শক্তির ক্ষুরণ হয় না। সমান শক্তিসম্পন্ন ছুই ব্যক্তির মধ্যে যদি একজন চেষ্টা করে ও আর একজন নিশ্চেষ্ট থাকে, তবে প্রথমোক্ত ব্যক্তি যে উন্নতি লাভ করিবে তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কিছ কেবল চেষ্টার তারতমাই যে সকল প্রকার মানসিক ও আখ্যাত্মিক বিভিন্নতার মূল তাহা আমরা স্বীকার করিতে পারি না। যেমন চেষ্টা ব্যতীত শক্তি নিফল হয়, সেইরূপ শক্তি ব্যতীত চেষ্টাও নিক্ষল হয়। শক্তির মৌলিক (origina!) বিভিন্নতা স্বাভাবিক কারণ সমুদ্রত; কিন্তু শক্তির উপার্জিত (acquired) বিভিন্নতা চেষ্টা দাপেক। এই মৌলিক বিভিন্নতা স্বীকার করিলেই যে ঈশ্বরকে পক্ষপাতীবলা হইল এরপ মনে করা আষৌক্তিক। এই মৌলিক বিভিন্নতার বর্ত্তনানতা মনোবিজ্ঞান-বিং পণ্ডিতগণ স্বীকার করিয়া থাকেন এবং আমরা নিতা ইহার প্রমাণ দেখিতে পাইতেছি। পাছে ঈশ্বরকে পক্ষপাতী বলা হয় এই ভয়ে যে প্রত্যক্ষ ঘটনা অস্বীকার করিতে হইবে তাহার কোনও অর্থ নাই। এই বিভিন্নতাকে যিনি ঈশ্বরের অপক্ষপাতিত্বের অস্তরায় স্বরূপ মনে করেন, তাঁহার দৃষ্টি নিতান্ত कुल नीमात मर्था रक्ष। मृष्टि अमातिष्ठ करून, सगर्छत विखीर्ग কার্য্যকারণ পরম্পরার প্রতি দৃষ্টিপাত করুন, ঈশ্বরের অনস্ত-ভাব ও জীবাম্মার অনন্ত উন্নতির দিকে দৃষ্টিপাত করুন-কোপায় বিভিন্নতা, কোণায় অসামা, কোণায় ঈখরের পক্ষ-পাতিছ--সকলই অন্তৰ্হিত হইয়া, আশ্চৰ্য্য সামঞ্জ ও সৌন্দ-র্যোর জ্যোতিতে চারিদিক আলোকিত হইবে!

বিশেষ বিধান সম্বন্ধে অস্তান্ত যে সকল আপত্তি আছে আমরা ক্রমে ক্রমে তৎসমুদ্ধের আলোচনায় প্রবৃত্ত হইব। স্থানাভাবে এবার এইবানেই প্রবন্ধ শেষ করিতে হইগ।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের নিয়মসমূহ নিম্নলিখিত রূপে পরিবর্ত্তিত ও সংশোধিত হইবার প্রাস্তাব ইইয়াছে।

(পূর্ব্ধ প্রকাশিতের পর।) কর্ম্মচারিদিগের কর্তব্য। রভাপতি।

১৬। সভাপতি সাধার। ব্রাক্ষসমাজের, অধ্যক্ষ সভার এবং কার্য্যনির্কাহক সভার সবাল অধিবেশনে সভাপতির আসন গ্রহণ করিবেন এবং সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের বার্ধিক অধিবেশনে নমাজের কার্য্যাদি সহকে স্থান অভিপ্রায় ব্যক্ত করিবেন। সভাপতির অনুপশ্বিতিতে সধবা সভাপতির বিশক্ষে কোন বিষয়

আলোচনা করা সভার উদ্দেশ্ত হইলে উপস্থিত সভাগপের মধ্যে কোন ব্যক্তি মনোনীত হইয়া সভাপতির আসন গ্রহণ করিবেন।
সভাপতি সাধারণভাবে অক্তাক্ত কর্মচারীগণের কার্য্যের
ত্রবাবধান করিবেন।

সম্পাদক।

· ১৭। সম্পাদক সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কাগজ পত্র ও পুরুকাদি, সভাগণের জালিকা ও দাভবা ইত্যাদির বিবরণ রক্ষা করিবেন; সমাজের প্রাণ্য অর্থাদি সংগ্রহ করিবেন;

সমাজের নির্মীত নির্দ্ধারিত ব্যয় ও কার্যানির্ব্ধাহক সভার আদেশাহ্রারী অপর ব্যয় নির্ব্ধাহ করিবেন এবং সমাজের উদ্দেশ্র ও কার্য্য সংসাধন পক্ষে সবিশেষ যয়বান, থাকিবেন। - এবং আয় ব্যয়ের রীতিমত হিসাব রাখিবেন। সম্পাদক ঝাবশ্রক হলে পত্রাদি লিখিবেন এবং নির্দ্ধিই নিরমান্ত্রসারে সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ বা অব্যক্ষসভা বা কার্যানির্ব্ধাহক সভা আহ্বান করিবেন। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের কার্যালয় সম্বনীর সম্দ্রম্বারিও ভাহার উপরে থাকিবে।

मुल्लामक कार्यानिकाहक मछात्र कई दांधीन थाकितन !

সহকারী সম্পাদক।

১৮। সহকারী সম্পাদক সম্পাদকের অভিপ্রায় মতে তাঁহার কার্য্যের সহায়তা করিবেন এবং সম্পাদকের অমুপ-স্থিতিতে তাঁহার সমস্ত কার্য্য নির্বাহ করিবেন।

১৯। সম্পাদক ও সহকারী সম্পাদক অধ্যক্ষ-সভা ও কার্য, নির্বাহক সভারও সম্পাদক ও সহকারী সম্পাদক বলিয়া প্রিগণিত হইবেন।

धनाधाक ।

২০। সমাজের সংগৃহীত অর্থ ধনাধ্যক্ষের হত্তে থাকিবে তিনি সম্পাদকের, কি সম্পাদকের অমুপন্থিতিতে সহকারী সম্পাদকের স্থাক্ষরিত রসিদ লইয়া টাকা দিবেন।

ধনাধ্যক্ষ তাঁহার নিকট গচ্ছিত অর্থের রীতিমত হিসাব রাথিবেন।

কর্মচারী পরিবর্জন বা নৃতন নিয়োগ।

২১। কোন কারণ বশতঃ বংসরের মধ্যে কোন কর্মচারী পরিবর্ত্তন বা নৃতন নিয়োগ করা আবশুক হইলে সাধারণ আক্সমাজের কোন বিশেষ অধিবেশনে তদ্বিষয় স্থির করিতে হইবে।

অধ্যক্ষ সভা।

২২। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কর্মচারিগণ, বার্ধিক অধিবেশনে নিয়োজিত অনধিক ৫০ জন সভ্য, এবং ২৩ ধারা অনুসারে
মনোনীত প্রতিনিধিগণ লইরা অধ্যক্ষ সভা সংগঠিত হইবেঁ।
উপরোক্ত সভ্যগণ আবশুক্ষ বোধ করিলে এবং উপস্থিত সভ্যগণের টু অনুমোদন করিলে অনধিক পাঁচ জনকে অধ্যক্ষ সভার
সভ্য মনোনীত করিয়া লইতে পারিবেন।

অধ্যক্ষ সভার সভাগণের বয়স অন্যূন ২৫ বংসর এবং তিন বংসরকাল সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভ্য থাকা এবং ৩য় নির্মা-ভূসারে সভ্যের যোগ্যতা থাকা আবশ্রক। কিন্তু কোন বিশেষ কারণ বশতঃ কার্যনির্কাহক সভায় উপস্থিত ই অংশ সভ্য অন্নোদন করিলে ব্যক্তি বিলেষ সহকে এই নিরমের ব্যতিক্রম হইতে পারিবে।

প্রতিনিধিগণের নিরোগকারীসমাজ ও সাধারণ ব্রাশ্ব-সমাজ এই উভর সমাজের অন্যুন তিন বংসর কাল সভ্য থাকা আৰম্ভক এবং তৃতীয় নিরমান্ন্যায়ী সভ্যের যোগ্যতা থাকা আবশ্রক।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সমুদার কার্য্যের ভার অধ্যক্ষসভার উপর অর্পিত থাকিবে এবং তজ্জন্ম উক্ত সভা দায়ী।

অধ্যক্ষ-সভার সভ্যগণ এক বৎসরের জন্ম মনোনীত হইবেন।

প্রতিনিধি নিয়োগ।

২০। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উদ্দেশ্যের সহিত যে সকল ব্রাহ্মসমাজের সহামূভূতি আছে, সেই সকল সমাজ অধ্যক্ষ সভায় এক এক জন প্রতিনিধি নিয়োগ করিতে পারিবেন।

প্রতিনিধি নিয়োগকারী সমাজ সকল সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক কার্য্য বিবরণ বিনা মূল্যে প্রাপ্ত হইবেন এবং তাঁহা-দিগের কার্য্য বিবরণও সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক কার্য্য বিবরণের সহিত মুদ্রিত হইতে পারিবে।

কোন এক ব্যক্তি এক অপেক্ষা অধিক সমাজের প্রতিনিধি হইতে পারিবেন না।

উপাসনা প্রণালী, আচার্য্য ও কর্মচারী নিয়োগ প্রভৃতি স্থানীয় সমস্ত কার্য্য সম্বন্ধে প্রতিনিধি-নিয়োগকারী সমাজ সকলের স্বাধীনতা সম্পূর্ণ অব্যাহত থাকিবে।

প্রতিনিধির নাম প্রেরণ।

২৪। প্রতিনিধি নিয়োগকারী সমাজ সকল বাঁহাদিগকে প্রতিনিধিরপে নিযুক্ত করিবেন, তাঁহাদিগের নাম বার্ষিক অধি-বেশনের পনর দিবস পূর্কে প্রেরণ করিতে হইবে।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদক উক্ত সমাজ সকলের নিকট আগামী বর্ষের প্রতিনিধির নাম বার্ষিক অধিবেশনের অস্ততঃ হুই মাস পূর্ব্বে চাহিন্না পাঠাইবেন।

যদি তাঁহারা প্রতিনিধির নাম না পাঠান, তবে সেই সমা-জের প্রতিনিধির পদ শৃষ্ম থাকিবে। বংসরের মধ্যে প্রতিনিধি নিয়োগ বা পরিবর্ত্তন আবশুক হইলে অধ্যক্ষ সভার কোন অধি-বেশনে সেই নিয়োগ বা পরিবর্ত্তনের সংবাদ জানাইতে হইবে।

প্রতিনিধিবর্জন ও শৃন্তপদপূরণ।

২৫। নিয়োজক সমাজ প্রয়োজনাত্মারে স্থীর প্রতিনিধি
বক্জন বা শৃত্যপদ পূরণ করিতে পারিবেন। এতদ্ভির কোন
প্রতিনিধি কোন কারণে পদস্থ থাকিবার অন্তপ্যক্ত বিবেচিত
হইলে, অধ্যক্ষসভা তাঁহাকে আপাততঃ তৎপদ হইতে স্থণিত
করিয়া তাঁহার পরিবর্ত্তনের জন্ত নিয়োগকারী সমাজকে অন্তরোধ
করিবেন। নিয়োজক সমাজ উপযুক্ত কারণ প্রদর্শন ব্যতীত
তাহাকে পরিবর্ত্তন করিতে অসম্মত হইলে উক্ত সমাজ প্রতিনিধি
নিয়োগেয় ক্ষমতা হইতে বঞ্চিত হইবেন এবং অধ্যক্ষ সভা
তাঁহাদের নিয়োজিত প্রতিনিধিকে অধ্যক্ষ সভার সভ্যপদ হইতে
অপসারিত করিতে পরিবেন।

অতিনিধি নিয়োগের বোগ্যতা।

২৬। বে সমাজে ব্রাহ্মধর্মের মৃলসভ্যে বিশ্বাসী অন্সন ৫ জন সভ্য আছেন ও সপ্তাহে অন্ততঃ একবার নির্মিভরুপে উপাসনা হর, সেই সমাজের প্রতিনিধি নিরোগের অধিকার ধাকিবে।

২৫ শ নিরমে প্রতিনিধি নিরোগের অধিকার ছইতে বর্জিত কোন সমাজ পুনরার প্রতিনিধি নিরোগের প্রার্থনা জ্ঞাপন করিশে এবং অধ্যক্ষ সভার মতে উপযুক্ত বোধ হইলে ভাঁছারা সেই অধিকার পুনঃ প্রদান করিতে পারিবেন।

অধ্যক্ষ সভার সাধারণ অধিবেশন।

২৭। অধ্যক্ষ সভার সাধারণ অধিবেশন বর্ষে চারিবার অর্থাৎ চৈত্র, আবাঢ়, আখিন ও পৌব মাদে হইবে।

অধ্যক্ষ সভার বিশেষ অধিবেশন।

২৮। কার্যনির্কাহক্সভাষারা আদিষ্ট কিয়া অধ্যক্ষ
সভার অন্ততঃ ১০ জন সভ্যাবারা অন্তক্ষ হইলে সম্পাদককে
অধ্যক্ষ সভার বিশেষ অধিবেশন আহ্বান করিতে হইবে।
সম্পাদক পত্রধারা অন্তব্যেধ অগ্রাহ্ম করিলে কিয়া অন্তব্যেধ ব্রুপ্তা
পাইবার পর হই সপ্তাহ মধ্যে বিজ্ঞাপন প্রচার না করিলে তিনি
প্রার্থনা অগ্রাহ্ম করিলেন ইহা হিরীক্ষত হইবে এবং অধ্যক্ষ
সভার অন্যন ১৫ জন সভ্য নিজ নামে শ্রিষ্

অধ্যক্ষ সভার অধিবেশনের বিচ্চাপন।

২৯। অধ্যক্ষ সভার সাধারণ কিম্বা কোন বিলেম অধিবেশন কোন্দিবসে হইবে এবং তাহাতে কি কি কার্য্যের অমুষ্ঠান হইবে, প্রকাশ্য পত্রে বিজ্ঞাপন দারা তাহা অন্ততঃ তিন সপ্তাহ পূর্ব্বে অবগত করিতে হইবে।

অধ্যক্ষ সভার কোন অধিবেশনে উক্ত সভার ১০ জন সভ্য উপস্থিত থাকিলেই কার্য্য হইতে পারিবে।

অধ্যক্ষসভার সভ্যবর্জন ও শৃষ্যপদপ্তরণ।

৩০। প্রতিনিধি ব্যতীত অধ্যক্ষ সভার কোন সভ্য কোন কারণে পদস্থ থাকিবার অন্থপযুক্ত বিবেচিত হইলে উক্ত সভা তাঁহার আত্মসমর্থন পত্র গ্রহণ পূর্বক সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের অন্থমতি অপেকায় তাহাকে আপাততঃ স্থানিত রাখিতে পারি-বেন। সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ উপযুক্ত কারণ দেখিতে পারিকে অধ্যক্ষ সভার অন্থরোধ রকা করিরা, উক্ত সভ্যকে সাময়িক ভাবে স্থানিত অথবা ইচ্ছা করিলে পদচ্যত করিতে পারিবেন। এতিন্তির অন্থ কোন উপযুক্ত কারণে সাধারণ ব্রাক্ষসমাজ অধ্যক্ষ সভার কোন সভাকে স্থানিত বা পদচ্যত করা আবশ্রক বোধ করিলে তাহা করিতে পারিবেন। এই রূপে অথবা মৃত্যু কিন্তু। পদত্যাগ নিবন্ধন অধ্যক্ষ সভার কোন সভ্যের পদশৃশ্য হইলে ঐ শৃশ্পপদ পূরণ করিতে পারিবেন।

অবান্তর নিয়ম (bye-leve) করিবার কমতা।

৩১। সমাজের কার্যা-সোকার্য্যার্থে সাধারণ রাজসমাজের নিরমাবলীর কোন নিরমের অথবা আহার ভাৎপর্য্যের ব্যতিক্রম না করিয়া অধ্যক্ষ স্থান্ত করিছে

পারিবেন। এই অবান্তর নিরম প্রকাপ্ত পজিকার প্রকাশিত हरेंदि । जाथात्रन ज्ञा हेव्हा कंत्रिया त्रहे जमूनाय नियम शति-বর্ত্তর্ন, সংশোধন বা পরিত্যাগ করিতে পারিবেন।

কার্যানির্বাহক সভা।

৩২। অধ্যক্ষ সভা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কর্মচারিগণকৈ ও আপনাদিগের মধ্য হইতে আর ১২ জনকে দইয়া একটা কার্য্য-निर्साहक ग्रंडा नियुक्त कतिरंदन এवर कांन कांत्रण धालाबन ছইলে উক্ত ১২ জনের মধ্যে কোন সভ্য পরিবর্ত্তন ও শূন্যপদে নুতন সভ্য নিয়োগ করিতে পারিবেন।

কার্যা-নির্বাহক সভার সভাগণের মধ্যে কেছ বিশেষ কারণ প্রদর্শন ব্যতীত ক্রমান্বরে ১২টা অধিবেশনে উপস্থিত না হইলে সভ্যপদ হইতে বঞ্চিত হইবেন এবং যে কোন কারণে একাদি-ক্রমে ২৪টা অধিবেশনে উপস্থিত না হইলে সভ্যপদ্চ্যুত হুইবেন। এতহাতীত প্রচারকগণ আপনাদিগের অথবা অধ্যক্ষ্যুসভার मछानिरात मधा इटेरा जनत এक वाक्तिक कार्यानिर्काहक সভার সভ্যরূপে নিযুক্ত করিতে পারিবেন।

কার্য্য-নির্বাহকসভা-সংগঠন।

৩৩। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক অধিবেশনের পর ছই সপ্তাহ মধ্যে অধ্যক্ষ সভার সভ্যগণ একটি বিশেষ অধিবেশনে আপনাদিগের মধ্য হইতে কার্যানির্কাহক সভার উক্ত দ্বাদশজন সভ্য নিযুক্ত করিবেন। উক্ত বার্ষিক অধিবেশনেই এই সভা সংগঠনের বিজ্ঞাপন দেওয়া হইবে।

এই নিয়োগের তিন দিবসের মধ্যে প্রচারকগণ কর্তৃক নিয়োজিত অপর একজন সভ্য নিযুক্ত হইবেন।

পূর্ব্ব বৎসরের কার্যানির্ব্বাহক সভা নৃতন কার্যানির্ব্বাহক-সভাসংগঠন না হওয়া পর্য্যন্ত কার্য্য করিবেন।

কার্যানির্বাহক সভার কন্ত্র বা।

৩৪। কার্যানির্কাহক সভা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উদ্দেশ্য সাধনোপযোগী আধ্যাত্মিক নৈতিক ও বৈষ্মিক সকল প্রকার কার্য্য সম্পন্ন করিবেন ও তাহার উন্নতিসাধনে যত্নবান থাকিবেন এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সর্ব্ধপ্রকারের সম্পত্তি রক্ষণাবেক্ষণ করিবেন। প্রচার কার্য্যের ও সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের মন্দির সম্মীয় উপাসনা, আচার্য্য নিয়োগ প্রভৃতি সমস্ত কার্য্যের ব্যবস্থা ও তত্ত্বাবধান করিবেন। কার্য্যনির্ব্বাহক সভা মাদে অন্ততঃ একবার সমবেত হইবেন এবং সম্পাদিত কার্য্যের বিবরণ অধ্যক্ষ সভায় অর্পণ করিবেন। কার্য্যনির্বাহক সভা সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের বার্ষিক কার্য্য বিবরণ প্রস্তুত করিয়া অধ্যক্ষ সভার धर्थ देवमानिक अधिरवन्यत अथवा नाधात्र वाक्षनमास्कत वार्षिक ष्मिंदिन्यत्मत पूर्व्हरखी कान वित्मय ष्मिंदिन्यत्न मगरवे में मु গণের নিকট উপস্থিত করিবেন এবং অধ্যক্ষ সভার সন্মতি গ্রহণ পূর্বক সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক অধিবেশেন অর্পণ করিবেন এবং অধ্যক সভার অধীন থাকিবেন।

কার্য্যনির্বাহক সভার কোন অধিবেশনে উক্ত সভার অন্যন পাঁচ জন সভ্য উপস্থিত থাকিলে কার্য্য চলিতে পারিবে।

অদীভূত সমাজ।

সংস্থাপনাৰ্থ উপাসনা পৃহ স্থাপন, উপাসক্ষভনী সুংগঠন, আচার্য্য নিয়োগ, এবং উপাদনা প্রভৃতির নিয়মাদি কার্য্যনির্মা-হকসভা আবশ্যকমতে প্রস্তুত করিয়া অধ্যক্ষ সভায় উপস্থিত করিবেন। . অধ্যক্ষ সভার সংশোধনান্তর সাধারণ আহ্মসমাজ সেই সকল বিষয় স্থির করিবেন।

যে যে সমাজ এই সকল নিয়মাধীন হইবেন, তাঁহারা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অঙ্গীভূত বাঁলরা পরিগণিত হইবেন।

প্রচারক নিয়োগ বা বর্জন।

৩৬। কার্য্য নির্বাহক সভা অধ্যক্ষ সভার নির্দিষ্ট নিয়-মামুসারে কোন ব্যক্তিকে প্রচারক পদে বা প্রচার কার্য্যের দাহাযার্থ মনোনীত বা তংপদ হইতে স্থগিত বা অবস্থত করিতে পারিবেন এবং আবশুক মতে অর্থামূকুলা সম্বন্ধে নির্দ্ধা-রণ করিবেন। কিন্তু অধ্যক্ষ সভা আবিশ্রক বিবেচনা করিবে কার্য্য-নির্বাহক সভার ব্যবস্থা পরিবর্ত্তন করিতে পারিবেন।

কোন প্রচারক কার্য্য-নির্ম্বাহক সভা কর্ত্তক প্রচারকপদ হইতে স্থগিত বা অপস্ত হইলে তাঁহার অধ্যক্ষ সভার নিকট কার্য্য নির্ব্বাহক সভার বিচারের বিরুদ্ধে পুনব্বিচারের প্রার্থনা করিবার অধিকার থাকিবে এবং পুনর্বিকার প্রার্থনা করিতে হইলে কার্যানির্বাহক সভার বিচার মন্তব্য বা নির্দ্ধারণ তাঁহার নিকট জ্ঞাপিত হইবার এক মাদের মধ্যে প্রচারক মহাশয় সম্পাদকের নিকট পত্র দারা তাঁহার অভিপ্রায় জানাইবেন।

প্রচারকগণ কার্য্যনির্বাহক সভার নির্দেশামুসারে কার্য্য করিবেন। কিন্তু কার্য্য-নির্ব্বাহক সভা যতদ্র সম্ভব প্রচারক-গণের সহিত পরামর্শ পূর্ব্বক কার্য্য করিবেন।

৩৭। "কর্মচারীগণ, অধ্যক্ষ সভার অস্ততঃ :২০ জন সভ্য সচরাচর কলিকাতা তৎসন্নিহিত স্থানবাসী হওয়া চাই।

অধিবেশনের দিন পরিবর্চন।

৩৮। যদি কোন বিশেষ কারণে পূর্কোল্লিখিত কোন সভার নির্দিষ্ট নিয়মামুসারে বিজ্ঞাপিত অধিবেশনৈর দিবস পরি-বর্ত্তন করিয়া ড'ৎপরবর্ত্তী কোন দিবদে উক্ত অধিবেশন হওরা স্থিরীকৃত হয়, তাহা হইলে তাহা প্রকাশ্র পত্রে বিজ্ঞাপন मिया खानारेट इरेटा। किस পরবর্তী श्रितीक कित कान ক্রমে এক সপ্তাহের অধিক কাল বিলম্বে হইতে পারিবে না।

স্থানিত (Adjourned) অধিবেশন।

৩৯। কোন সভার কোন অধিবেশনে সমুদায় কার্য্য শেষ না হইলে অবশিষ্ট কার্য্য যে দিবস সম্পন্ন হইবে, তাহা সেই স্থলেই স্থিরীক্ষত ও বিজ্ঞাপিত হইবে; এই বিষয়ে তিন সপ্তাহের বিজ্ঞাপন দিবার আবশ্রকতা হইবে না। "উপযুক্ত সংখ্যক সভ্যের (Quorum) অমুপস্থিতিতে যদি কোন সভার অধিবেশন না হয় তাহা হইলে যাঁহারা উপস্থিত থাকিবেন তাঁহারা এই সভার অধিবেশনের জক্ত তৎপরবর্ত্তী যে কোন সমর নির্দারণ করিবেন। উক্ত সমর প্রকাশ্র পত্রে বা অন্ত উপায়ে বিজ্ঞাপিত ছইবে।

উপরোক্ত উভয়ন্থলে শাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অন্যুন ২০ জন, অধ্যক্ষ সভার অন্যুন ৭ জন এবং কার্য্য নির্কাহক সভায় অন্যুন াঞা আক্ষমগুলীর সামাজিক উপাসনার উন্নতি ও একতা। ৩ জন সভ্য উপস্থিত থাকিলেই কার্য্য হইতে পারিবে।

নিয়ম পরিবর্জনাদি করিবার রীতি।

৪০। সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের কোম নিরম পরিবর্ত্তন, বর্জন বা বর্জন করিতে হইলে কার্যানির্বাহক সভা তদ্বিরক প্রস্তাব অধ্যক্ষ সভার যে কোন অধিবেশনে উপস্থিত করিতে পারি-বেন। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কোন সভাও এরপ প্রস্তাব করিবার ইচ্ছা করিলে অধ্যক্ষ সভার বিত্তীয় বৈনাসিক অধিবেশনের পূর্বে জ্যৈষ্ঠ মাসের ১ম সপ্তাহের মধ্যে সম্পাদকের নিক্ট বিজ্ঞাপন দিবেন। সম্পাদক উক্ত অধিবেশনে ঐ প্রস্তাব উপস্থিত কুরিবেন।

যদি কোন প্রস্তাব বা তাহার সংশোধিত প্রস্তাব অধ্যক্ষ সভার উপস্থিত সভাদিগের অন্যন ১ এবং তৎসম্বন্ধে মত প্রকাশ কারী উপস্থিত অমুপস্থিত উভরবিধ সভাদিগেরও অন্যন ১ সভ্য মারা গৃহীত হয় এবং যদি তাহা পুনরায় অধ্যক্ষ সভার পর-বর্ত্তী অধিবেশনে উপরোক্তরূপে অমুমোদিত হয়, তাহা হইলে যদি উক্তরূপে গৃহীত প্রস্তাব সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের কোন অধি-বেশনে অন্যন ১ সভ্যের মারা অপরিবর্ত্তিতরূপে অমুমোদিত হয়, তবে তাহা চৃড়াস্তরূপে গৃহীত হইবে।

কিন্ত যদি অধ্যক্ষ সভার অন্ততঃ ৫ জন সভা ও তথাতিরিক্ত সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের অন্ততঃ ২৫ জন সভা অধ্যক্ষ সভা
কর্ত্বক পরিত্যক্ত কোন প্রস্তাবের প্নর্বিকার আবশ্রক মনে
করিয়া কার্ত্তিক মাসের ১ম সপ্তাহের মধ্যে সম্পাদকের নিকট
বিজ্ঞাপন দেন তাহা হইলে ঐ প্রস্তাব সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের
বার্ষিক অধিবেশনে উপস্থিত হইবে এবং সেথানে উপস্থিত
সভ্যের ঃ অংশ দারা অন্থ্যাদিত হইলে গৃহীত হইবে।

যদি এইরপ সংশোধন প্রস্তাব ২য় নিয়মে উল্লিখিত বাল্ধ ধর্মের মূলসত্য সম্বন্ধে হয়, তাহা হইলে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উপযুগিরে ছই বার্ষিক অধিবেশনে উক্ত প্রস্তাব অপরিবর্তিত-রূপে ই সভ্যের দারা গৃহীত হওয়া আবশ্রক।

প্রস্তাব স্থিরীকরণার্থ মত গ্রহণ।

কোনরপ বিশেষ বিধি না গাকিলে সকল প্রকার সভার অধিবেশনে অধিকাংশ সভ্যের মতাত্মসারে প্রস্তাবাদি ধার্যা হইবে। কোন প্রস্তাবের সপক্ষে এবং বিপক্ষে মত সংখ্যা সমান হইলে সভাপতি যে পক্ষে থাকিবেন, সেই পক্ষের মতই ধার্য্য হইবে।

সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের কার্য্যনির্ব্যাহক সভার ৩য় ত্রৈমাসিক (জুলাই, আগস্তু, সেপ্টেম্বর) কার্য্যবিবরণ।

ントトカ

বিগত তিনমাসে কার্যা নির্কাহক সভার ১৩টা নির্মিত ও ১টা বিশেষ অধিবেশন হইয়াছে—

বাগআঁচড়। ক্লুল—এই ক্লের কার্য্যের জক্স পূর্বে ছই জন পণ্ডিত ছিলেন। কিন্তু তাঁহাদের হারা ভাল কাজ না হওয়ায় এবং ছাত্র সংখ্যা ব্লাস হওয়ায়, ছই জন পণ্ডিতকেই কার্য্য হইতে অবস্থাত করা হইয়াছে। বাবু অবোরনাথ মুখো-পাধ্যায়ই এখন ক্লের স্কল কার্য্য সম্পন্ন ক্রিতেছেন। স্থানীয় লোকের প্রতিবন্ধকতার ছাত্র ছাত্রী সংখ্যা অনেক করিয়া গিরাছে। এখন রান্ধ বালক বালিকাগণই প্রধানতঃ শিক্ষা করিয়া থাকে। বাহিরের বালক অতি অর সংখ্যক উপস্থিত হইতেছে।

তুর্ভিক্ষ—বেহার, উড়িব্যা, ডারমগুহারবার প্রভৃতি হানের ছর্ভিক্ষ-কট নিবারণার্থ মধ্যবঙ্গসন্মিলনী, থিও-সফিক্যাল সোসাইট, সঞ্জীবনী, ভারতসভা, আদি ব্রাক্ষসমাজ, ও সাধারণ ব্রাক্ষসমাজের সম্পাদকগণ স্মিলিত হইয়া যে কমিটি গঠন করিয়াছিলেন, সেই কমিটির সহিত মিলিত হইয়াই ছর্ভিক্ষ নিবারণের জন্ম বাহা কিছু করা হইয়াছে। তত্তির শত্তর ভাবে আর কিছু করা হয় নাই।

প্রচারক ভবন—প্রচারকগণের বাসের জন্ম প্রচারক ভবন নামে পূর্বে হুইটা একতালা গৃহ প্রস্তুত করা হইয়াছিল। কিছুদিন হইল উক্ত গৃহ হুইটাই দোতালা করা হইয়াছে। এই হুইটা বাটা প্রস্তুতের ব্যয় স্থামী প্রচার ফণ্ডের টাকা সম্প্রতি হাওলাত স্বরূপ গ্রহণ পূর্বেক দেওয়া হইডেছে। এই হুইটা বাটাই এখন স্বস্তুত লোককে ভাড়া দেওয়া হইয়াছে। ভাড়া হইতেটের এবং স্বস্তুত্তির বাদে ন্যুনাধিক ৪০০টাকা মাসিক স্বায় হইবার সন্তাবনা। ভাড়ার টাকা প্রচার কার্যের সাহায্যার্থ ব্যয় হইতেছে।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ অর্থাভাবে প্রচার কার্যা এবং ব্রাহ্ম বালক বালিকাদিগের শিক্ষার স্ক্রবন্দাবস্ত, নিরাশ্রয়া বিধবাগণের জন্ত সহপায়—ভাল ভাল গ্রন্থ ও পত্রিকা প্রচার প্রভৃতি কার্য্যের কোন, বিশেষ বাবস্থা করিতে পারিছেন না। এক্ষন্ত ব্রাহ্মগণ আপন আপন আমের কত অংশ বার করিবেন, তাহা নির্দ্ধারণার্থ কার্যা নির্দ্ধাহক সভা বিশেষ চেষ্টা করিয়াছিলেন। এক্ষন্ত কলিকাতান্ত সভাগণের একটা সভাও হইয়াছিল। তাহাতে ভিন্ন ভিন্ন মত প্রকাশ হইয়া থাকিলেও আয়ের উপর নির্দিষ্ট হারে দান করিবার পক্ষে অনেকেই মত প্রকাশ করিয়াছিলেন। কার্য্যনির্দ্ধাহক সভা এবিষয়ের মীমাংসার ক্ষন্ত ভবিষাতে আরও চেঙ্গা করিবেন।

প্রচার—এই তিন মাসের প্রচার কার্যা বিশেষ সম্ভোষকর নহে। পণ্ডিত রামকুমার বিদারিত্ব এবং বাবু শশিভ্বণ
বস্থ মহাশর বিদার লইরা আছেন। বাহারা কার্য্যক্ষেত্রে কার্য্যে
নিয়ক্ত আছেন তাঁহাদেরও সকলে যে আপন আপন কার্য্যক্ষেত্রে
বিশেষরূপে কার্য্য করিয়াছেন এমন মনে হয় না। কার্য্য বিবরণ
ছারাই তাহা প্রমাণিত হইবে। থাসিয়াদিগের মধ্যে ব্রাদ্ধর্ম্ম
প্রচারের কিরপ স্থবিধা আছে তাহা জানিবার জন্ত বাবু
নীলমণি চক্রবর্ত্তী মহাশয়কে পাঠান হইয়াছিল; তিনি শিলংএ
থাকিয়া যাহা জানিয়াছেন এবং থাসিয়া ভাষা শিক্ষার সঙ্গে সংস্থে
মোথার ব্রাদ্ধসমাজে যে ভাবে কার্য্য করিয়াছেন তাহা অবগ্রু
ছইয়া কার্য্য নির্বাহক সভাবিশেষ সম্ভাই ইয়াছেন এবং তাঁহাকে
কিছুকাল তথার রাখিতে ইছে। করিয়াছেন; থাসিয়াদিগের
মধ্যে কার্য্যের স্থবিধার জন্ত কয়েক থানা পুত্তক একটা
ছোমিওপ্যাথি ঔষধের বক্ষ এবং সমাজের প্রিকা সকল
পাঠান হইয়াছে।

तनी हहेर्ड बाबू वहविहाती मान काफा निक्षिहक नछात्र

একথানি পত্র লিখিয়া তথার ব্রাহ্মধর্ম প্রচারার্থ প্রচারক পাঠাই-বার বন্দোবন্ত করিবার জন্ত অন্থরোধ করেন। কার্য্য নির্কাহক সভা ভিন্ন ভিন্ন দেশে প্রচারের বন্দোবন্ত করিতে বিশেষ ইচ্ছাবান হইরাও উপযুক্ত লোকাভাবে কার্য্যতঃ কিছুই করিতে না পারিয়া ছঃখিত হইরাছেন।

শ্রীযুক্ত বাব্ অবোরনাথ মুখোপাধায়ে—রবিবার ভিন্ন
সপ্তাহের অক্স ছর দিন পূর্বাহু ১০ ঘটকা হইতে অপরাহু ৫
পাঁচ ঘটকা পর্যন্ত বাগআঁচড়া কুলের বালক বালিকাদিগকে
পড়াইরাছেন। রাত্রির উপাসনার পর ছাত্রদিগের পাঠ শিক্ষার
সাহায্য করিরাছেন। এতভিন্ন প্রতিদিন প্রাতঃকালে এবং সারংকালে সমাজে উপাসনা করিরাছেন। বাগআঁচড়ার ভিন্ন ভিন্ন
৪টা পল্লিতে যে ৪টা ব্রাহ্মসমাজ ও ব্রাহ্মিকা সমাজ আছে তাহাতে
প্রান্ন নির্মাতরূপে উপাসনায় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছেন;
করেক রবিবার অপরাহে মন্দির হইতে বাজার পর্যন্ত হাইয়া
নগর সংকীর্ত্তন এবং প্রার্থনা ও বক্তৃতা করিয়াছেন।
এতভিন্ন তথাকার ৬টা পারিবারিক অফুর্ছানে আচার্য্যের কার্য্য
করিয়াছেন। ১০ই আগন্ত রবিবার কুগবেড়িয়া সমাজের মাসিক
উৎসব সম্পন্ন করেন এবং ২১এ আগন্ত ভিন্ন ভিন্ন ৪টা পল্লির
ব্রান্ধিকাদিগের সন্মিলিত উৎসবে আচার্য্যের কার্য্য করেন।

শ্ৰীযুক্ত বাবু নবদীপচন্দ্ৰ দাস—তাঁহার কার্যকেত্র বেহারে গমন কালে প্রয়োজন বশতঃ উত্তর বাঙ্গালা হইয়া গমন করেন। পথিমধ্যে ফুলবাড়ী নামক স্থানে একদিন অবস্থিতি করিয়া উপাসনা ও আলোচনা করেন। এখান হইতে রংপুর সমা-জের সম্পাদক কর্ত্তক অনুক্রম হইয়া তথার গমন করেন এবং তথাকার মন্দিরের ভিত্তি সংস্থাপন উপলক্ষে উপাসনা করেন। তথা হইতে দিনাজপুরে যাইয়া ২৷৩ দিন তথায় অবস্থিতি সমাজে এবং ব্রাহ্মগণের গৃহে সামাজিক ও পারিবারিক উপাসন। ও আলোচনা করেন। রায়গঞ্জ নামক স্থানে এক দিন থাকিয়া উপাসনা ও আলোচনা করেন। তথা হইতে কাটিয়ার নামক স্থানে গমন পূর্ব্বক ২৷০ দিন থাকিয়া পারিবারিক উপাসনা এবং नानाविषय जात्नाहना करतन। এथान इटेर्ड भूर्विश गमन করেন। তথায় ২।০ দিন কিছু কিছু কাজ করিবার পরেই উঠাহার অব হয় এবং কিয়ৎ পরিমাণে স্বস্থ হইয়া ৯ই আগষ্ঠ পূর্ণিয়া হইতে পুনরাম্ব কাটিয়ারে গমন করেন। শরীর তুর্বল া বলিয়া তথায় ৪।৫ দিন অবস্থিতি করেন। এথানে আলোচনাদি ভিন্ন আর কিছুই করিতে পারেন নাই। তথা হইতে বারসর নামক ছানে গমন করেন সেধানেও সংপ্রসঙ্গ ভিন্ন আর কিছু কাজ হর নাই। এখান হইতে মুঙ্গেরে গমন করেন। তথার বাবু বন্ধদেব নারায়ণের পীড়া নিবন্ধন ভাঁছার সঙ্গে প্রায় এক শীন অবহিতি করেন। এই সময় মধ্যে মূলের সমাজে নিয়মিত-ब्रॉटन छनानना ७ छनरतम धानान करतन। भरश सरश बाक्तवकु-গণের সঙ্গে আলোচনা এবং পরিবারে ও ব্রাক্ষবন্ধুগণের বাসার উপাসনা করিয়াছেন। সুদের হ'ইতে একবার জানালপুর আজ-नगरिक भगन भूक्तक ज्याकात्र नगरिक जैनानना करहन अतः

বান্ধ বন্ধদের সঙ্গে আলোচনা করেন। এথানে বেশী দিন থাকিতে পারেন নাই। মুন্দের হইতে ভাগলপুরে গমন করেন তথাকার ব্রাহ্মসমাজে এবং ব্রাহ্ম পরিবারে উপাসনা করেন, উপদেশ দেন, এবং আলোচনা করেন।

শ্রীযুক্ত বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়—কষেক দিন বাশবেড়িরায় অবস্থিতি করির। তত্ত্তা বুবক বুঞ্জের সহিত মিলিয়া ধর্মালোচনাদি করেন এবং তথাকাঁর সমাজের সভ্যগণের সৃহিত कर्षां भक्षन, ७ मः अन्त्र करतन। ১৯৩ आवेग निवभूति गमन করেন। উক্ত নিবস শিবপুর ইঞ্জিনিয়ারিং কালেজের ছাত্রগণের र्य व्यार्थना नमाञ्च चार्ट, छाहात এक है विस्नव छ रत्रव हम। কোম্পানির বাগানে উপাসনা উপদেশ ও কীর্ত্তন হইয়াছিল। তৎপরে কালেজের নিকটবর্ত্তী একটি গছে অপরাছু পর্যান্ত অনেক প্রয়েজনীয় বিষয়ে আলোচনা হইয়াছিল। ২১এ প্রাবণ বর্দ্ধমানে গমন করেন। তথার করেক দিন অবস্থিতি করিয়া একটি ছাত্র নিবাসে ছই দিন সভা আহ্বান করিয়া আলোচনা ও সঙ্গীতাদি করিয়াছিলেন। ২৭এ প্রাবণ রবিবার প্রাতে সমাজগ্রহে আচার্য্যের কার্য্য করেন। প্রার্থনা বিষয়ে উপদেশ এবং সঙ্গীত ও কীর্ত্তন হইরাছিল। ঐ দিবস অপরাহে নগর সংকীর্তনে যোগদান করেন। এক থানি ধর্ম বিষয়ক পুস্তক (ধর্ম জিজ্ঞাসা দিতীয় ভাগ) প্রকাশের জন্য কার্য্য করিরাছেন। ৩০এ ভাত্ত তিনি আর একবার বাশবেড়ীয়ায় গমন করেন। তথায় তিন দিন অবহিতি করিয়া তত্ততা ব্রাহ্ম সমাদের কার্য্য (উপাসনাদি) कत्रिशोছित्वन ।

পণ্ডিত শিবনাৰ্থ শাস্ত্ৰী—অধিকাংশ সময় কলিকাতায় অর্বছিতি করিয়া এখানকার উপাসকমগুলীর সামাজিক উপাসনায় আচার্য্যের কাৰ্য্য করিয়াছেন। বুেকার সাহেব কর্তৃক সংস্থাপিত সমাজে প্রতিরবিবার নিয়মিত-রূপে ইংরাজিতে উপাসনা করিয়াছেন এবং উপদেশ প্রদান করিরাছেন। করেকটা পারিবারিক অফুষ্ঠানে উপাসনা করিয়া-ছেন। তবকৌমুদীর সম্পাদকতা করিয়াছেন এবং ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্চার সম্পাদনের সাহায্য করিরাছেন। ঢাকায় গ্মন পূর্বক তথাকার ছাত্র সমাঙ্গের উৎসবে উপাসনা করিয়াছেন এবং বক্তা করিয়াছেন। বরাহনগরে আত্মোন্নতি বিধায়িনী সভায় একটা বক্তৃতা করিয়াছেন। এথানকার ছাত্রসমাজে করেকটা বক্তা করিয়াছেন। তিনি শীঘই পঞ্চাব অঞ্চল গমন করিবেন i

পণ্ডিত রামকুমার বিদ্যারত্ব—নিজের সাধন ভলন জন্ম তিনি পৌষ মাস পর্যান্ত অবকাশ প্রার্থনা করেন। কার্য্য নির্মাহ্নসারে ছই মাসের জন্ম অবকাশ প্রদান করেন। কিন্তু তিনি পৌস মাস পর্যান্ত বিদার পাইবার জন্ম বিশেষ আগ্রহ প্রকাশ করেন এবং বিদার না পাইলে কোন কার্য্য করাই তাঁহার পক্ষে সম্ভব নর বিদার প্রাণন করার কার্য্য নির্মাহক সভা তাঁহাকে উক্ত সমন্ত পর্যান্ত বিদার প্রদান করিতে বাধ্য হইরাছেন। কিন্তু তাঁহাকে অন্থরোধ করা হইরাছে বে তিনি স্থবিধা পাইলে অবভাই বেন উক্ত সময়র পূর্ব্বে তাঁহার কার্য্য প্রত্ত হন।

শ্রীযুক্তবাবু শশীক্ষুবণ বন্ধ-কার্যানির্কাছক কলা এবংলর প্রচারকপণকে তাঁছাদের স্থবিধান্থলারে ২ মালের অবকাশ প্রদান করিবার নিয়ম করিয়াছিলেন। তদর্শারে শশীবাবু আগঠ ও সেপ্টেম্বর এই তুই মালের জন্ম অবকাশ গ্রহণ করিয়াছেলে। তিনি জ্লাই মালে নিয়লিখিতরূপ কাল করিয়াছিলেন। রাজসাহী ব্রাহ্ম সমাজে এবং লোকের বাটীতে ২ সায়ংকালে উপাসনা করেন। দিনাজপুর ব্রাহ্ম সমাজে উপাসনা করেন এবং তথায় একটি নৈতিক বিদ্যালয় সংস্থাপনের সাহাব্য করেন। বদরগঞ্জে—উপাসনাদি করেন এবং ধর্মবন্ধু—পত্রিকার প্রবন্ধ লিখেন।

ৈ কোন কোন প্রচারক কার্য্যনির্কাহক সভাকে না জানাইরা আপন আপন কার্য্য ক্ষেত্রের বাহিরে গং. /পূর্বক কিছু কিছু কার্য্য করিয়াছেন। কিন্তু ভাহার মধ্যে যে গুলি কার্য্যনির্বাহক সভা অনুমোদন করেন না তাহা এই কার্য্য বিবরণে প্রাদত্ত হইল না।

এতত্তির বাবু নীলমণি চক্রবর্তী শিলংএ থাকিরা তথাকার সমাজে নিয়মিতদ্ধপে উপাসনা করিয়াছেন। তথায় একদিন "সঞ্জীব ও নির্জীব ধর্মা" সম্বন্ধে একটা বক্তৃতা করিয়াছেন। তথাকার কোন কোন ভদ্র লোকের বাটাতে মধ্যে মধ্যে উপাসনা করিয়াছেন। মৌথারে থাসিয়াদিপের জন্য যে সমাজ আছে তাহাতে মধ্যে মধ্যে ইংরাজিতে উপদেশ প্রদান করিয়াছেন। মৌথারে একটা রবিবাসরিক বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন তাহাতে মধ্যে মধ্যে তিনি পড়াইয়া থাকেন। অনেকে ধর্ম সম্বন্ধে প্রশ্ন জিজ্ঞাসার্থ তাঁহার নিকট আগমন করিয়া থাকেন। তিনি থাসিয়া ভাষা শিক্ষা করিতেছেন এবং এক থানা উপাসনা প্রণালী ঐ ভাষায় লিথিতেছেন। একজন থাসিয়াবন্ধ্বারা তাহার সংশোধন করিয়া লইতেছেন।—

বাবু চণ্ডীকিশোর কুসারি, লছমন প্রসাদ, বাবু উমেশচক্ত দন্ত বাবু কেদার নাথ রায়, বাবু চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়, বাবু ক্ষ্ণ-কুমার মিত্র প্রভৃতি মহাশ্রগণ নানা প্রকারে প্রচার কার্য্যের সহায়তা করিয়াছেন। বাবু কালীপ্রসন্ন বস্থ মহাশ্যের কার্য্য বিবরণ এখনও পাওয়া যায় নাই।

সঙ্গত সভ।—জুলাই, আগষ্ট ও সেপ্টেম্বর এই তিন মাসে সঙ্গত সভার ১০ টা অধিবেশন হইয়ছিল। ১০।১২ জন সভ্য নিয়মিতরূপে উপস্থিত হইয়াপ্রতি মঙ্গলবার সায়ংকালে উপাসনা, প্রার্থনা, ধর্মালোচনা করিয়াছেন। নিয় লিখিত বিষয় সম্বন্ধে আলোচনা হইয়াছিল। ঈশ্বরোপাসনা ও শ্বরণ, সাধুসঙ্গ, সংগ্রন্থ পাঠ, জীবান্মার সহিত পরমান্মার যোগ, আত্মচিস্তা, ঈশ্বর চিন্তা, দীনতা, এবং মিসন কণ্ড।

উপাসক মণ্ডলী—এই তিন মাস কাল উপাসক মণ্ডলীর নিম্নিত সামাজিক উপাসনা নির্কিন্নে হইয়া আসিয়াছে। এই সময় মধ্যে পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী, বাবু উমেশচক্র দন্ত বাবু সীভানাথ দন্ত মন্দিরের উপাসনার কার্য্য করিয়াছেন। মন্দিরে রবিবার প্রাভঃকালীন উপাসনা ও মকলবার সক্তের কার্য্য পূর্কের স্থায়, সম্পাদিত হইতেছে।

দাতব্য বিভাগ—দাতব্য বিভাগের এই ও মানের আর বার বিবরণ নিয়েলিখিত হইল। একটা পিতৃহীন বালককে মাসিক ৪১ টাকা, একটা বিধবাকে মাসিক ১১, একটা কলেকের ছাত্রকে মাসিক ২১ টাকা, আর ছইটা ছাত্রকে মাসিক ১১ টাকা হিসাবে সাহায্য করা হইতেছে। আর ২টা বিধবাকে মাসিক ১১ টাকা হিসাবে সাহায্য করিবার প্রস্তাব স্থিরীক্বত হইরাছে, এতিন্তির সময় সময় এককালীনও কিছু কিছু সাহায্য করা হইরা থাকে।

অ1য়		ব্যয়	
বাৰ্ষিক চাঁদা আদাৰ	7 >0,	ৰাণ শোধ	>0
এক কালীন চাঁদা আদার ৩৮১		মাসিক দান	રર,
		এককালীন দান	' به
	৫৩৯/ ০	বিবিধ ব্যয়	sile
পূর্বকার স্থিত	90050		·
		•	०७॥ह
	১২৩।/১०	হিত	. تواافح
			>২৩/১০

রবিবাস রক নৈতিক বিদ্যালয়—এই তিন মাসে নীতি विमागनायत व्यवहा शृक्षां (शका किकि । जान इहे या । या या যেমন সকলের উৎসাহ নিবিয়া গিয়াছিল এখন সেরূপ নাই। ছাত্র সংখ্যা দিন দিন বৃদ্ধি পাইতেছে, সম্প্রতি দুর হইতে ও কোন কোন পিতা মাতা আপনাপন সম্ভানদিগকে প্রতিবার নিয়ম পূর্ব্বক পাঠাইয়া থাকেন। একণে ন্যুনাধিক ৩৫ জন বালক বালিকা প্রতি রবিবার সমাজ গৃহে একত্রিত হইয়া থাকে। বর্ত্ত-মান সময়ে প্রীযুক্ত বাবু হরকিশোর বিশ্বাস, কুমারী হেমলতা ভট্টাচার্য্য, কুমারী হেমপ্রভা বন্ধ ও কুমারী যামিনী সেন, কুমারী কুমুদিনী থান্তগির শিক্ষকতার কার্য্য করিতেছেন। <u> প্রীযুক্ত বাবু ব্রজ্ঞলাল গঙ্গোপাধ্যায় বালক বালিকাদিগকে</u> গত কয়েক মাসে সঙ্গীত শিক্ষা দিতেছেন, পূর্বে চারিটা শ্রেণীতে এই বিদ্যালয় বিভক্ত ছিল, একণে তিনটী শ্রেণী হইয়াছে। কারণ প্রথম শ্রেণীর অধিকাংশ ছাত্র নির্দ্ধারিত বয়:ক্রম অতিক্রম করাতে এই বিদ্যালয় পরিত্যাগ করিতে হুই মাসে কয়েকটা নৃতন দঙ্গীত শিক্ষা দেওয়া ছইয়াছে। বালক বালিকারা অতি শীঘ্র এই গান গুলি অভ্যাস করিয়াছে. ইহা বড় সম্ভোষের বিষয়। এই বিদ্যালয়ের বালক বালিক[া] দিগকে পারিতোষিক দিবার জন্ম ২০০ শত টাকা সভার হতে আছে। তথাধা শ্ৰমের শ্রীযুক্ত বাবু গুরুচরণ মহলানবিশ মহাপয় তাঁহার পরলোকগত কল্লা ৮ সরকাবালা মহলানবিশের चत्रगार्थ >०० होका, এवर यानबीमा श्रीयुका मोमायिनी खर অবশিষ্ট ১০০ টাকা দান করিয়াছেন। তাঁহারা উভয়েই এই বিদ্যালরের ধন্যবাদের পাত্র। এই বিদ্যালরের কমিটির সভ্য-গণের উন্যোগে ছাত্র ও ছাত্রীগণক্তে একদিন কোম্পানির वाशात्न नहेशा याख्या हहेशाहिन।

জ্রন্ধবিদ্যালয়—জীমাবকালের পর বিগত ক্লাই মানে। এই বিদ্যালনের কার্য্য প্রয়ারত্ব হয়। ডাঙ্গার প্রদারক্ষার রার্

মহাশরের শিকাধীনে যে উচ্চতর শ্রেণী (Senior Class) ছিল, তাহা তাঁহার অনিহল বশতঃ আর থোলা হর নাই। ভ্লাইর শেষভাগে মধ্যম শ্রেণী (Junior Cluss)এর পরীক্ষা গৃহীত হয়। বাবু উৰেশচজ দত্ত মহাশয় পরীকা গ্রহণ করেন ৷ ৮ জন ছাত্র भरीका हात. जबार्था ७ जन जेखीर्ग इटेग्नाइन । धरे ट्यंगीत কতিপর ছাত্র এবং কতিপর নৃতন ছাত্র লইয়া একটা মুতন উচ্চ-তর শ্রেণী গঠিত হইয়াছে এবং ইহার কার্য্য নিয়মিত ক্লপে চলিতেছে। অধ্যাপনার ভার বাবু সীতানাথ দত্ত মহা-শবের হতে আছে। প্রাথমিক শ্রেণী (Primary Clas) র भरीका देखिभृदर्श गृरीक हरेबाहिन। भाँठ जन हांबी ७ ठाति জন ছাত্র পরীক্ষা দেন, তন্মধ্যে চারি জন ছাত্রী ও তিন জন ছাত্র खेळीर्न इहेबाइन। जुड़े (अने जुशन मध्य (अनीटज (Junizo (lass) এ পরিণত হইরাছে; কিন্ত পূর্বতন মধ্যম শ্রেণীতে বে দকল ইংরেজি বই পড়ান হইত, তৎপরিবর্ত্তে ইহাতে বালালা বই দেওয়া হইয়াছে। এই শ্রেণীর নিমে পূর্ববং একটা প্রাথমিক শ্রেণী আছে। মধ্যম ও প্রাথমিক শ্রেণীয় ছাত্রীদিণের ধর্ম সাধ-নের সাহায্যার্থ যে একটা সঙ্গত আছে. তাহার কার্যাও নিয়মিত রূপে চলিভেছে। এই সঙ্গতের কার্য্য নির্বাহের ভার বাবু ्माहिनीत्माहन त्राय महानात्रत्र हत्छ चाह्न । मच्छाति विमानत्त्रत्र ছাত্র ও ছাত্রী সংখ্যা ;—উচ্চতর শ্রেণীর—১১ ; মধ্য শ্রেণীর— ১৩; প্রাথমিক শ্রেণীর—৪।

ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জার ও তত্ত্বকোমুদী—ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জারের আর্থিক অসচ্ছলতা দূর করিবার জন্ত একটা কমিটি গঠিত হইমাছিল। তাহারা সম্প্রতি আপনাদের কার্য্য বিবরণ প্রদান করিয়াছেন। সব কমিটির চেটার জনেক অনাদারী টাকা আদারের কিয়ৎ পরিমাণে স্থবিধা হইয়াছে। তাঁহারা মেসেঞ্চারের নিয়মিত বায় হ্রাস এবং মুদ্রণ বায় কম করিয়া লইবার জন্ত অনুরোধ করিয়াছেন। তাঁহাদের প্রস্তাব এখন কার্য্যনির্বাহক সভার বিবেচনাধীন আছে। ইণ্ডিয়ান মেসেঞ্জারের ঋণ শোধের জন্য কোন বিশেষ উপার অবলম্বন না করিলে বিশেষ ক্ষতি হইবে। তত্ত্বকৌমুদীর অবস্থা প্রায় পূর্বের স্থায়। উভয় কাগজ্বই নিয়্মিত রূপে প্রকাশিত হইতেছে।

প্রচার কমিটি—বাবু চক্রনাথ চট্টোপাধ্যার মহাশয়
ইতিপ্রিম্ব সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচারকপদে নিযুক্ত হইবার
জন্ম আবেদন করিয়াছিলেন। নিরমান্থারী প্রাথমিক অন্থচানের
পর প্রচার কমিটি তাঁহাকে পরীক্ষাধীন না করিয়া একবারে
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রবেশার্থী প্রচারক পদে নিযুক্ত করিবার
কর্ম কার্য্যনির্ব্বাহক সভাকে অন্থরোধ করিয়াছেন। প্রচার সভার
ক্রেরাধ প্রধানত বিবেচনাধীন আছে। বাবু চণ্ডীকিশোর কুণারি
মহাশয়ও প্রচারক পদে নিযুক্ত হইবার জন্ম আবেদন করিয়াছিলেন। নিয়মান্থসারে তাঁহার স্ক্রের কোনও নির্দ্ধারণ করিতে
আরও কিছুকান গত হইবে।

জাক্ষৰক্ষু সভা-এই সময় মধ্যে জান্ধবন্ধ সভায় আমা-দের মাধ্যান্ত্রিক অবস্থা, বালক বানিকাদিলের শিক্ষা এবং জাতি

ভেদ বিষয়ে আলোচনা হইরাছিল। প্রথম বিষয়ে বাবু ক্লক্ষার দিত্র হাইটিতে পণ্ডিত শিবনাথ শাল্তী, ওরটাতে বাবু আনস্প্রতিক মিত্র বিবরের অবতারণা করেন। তৎপরে অস্তাস্থ সন্ত্যাপ আপনালের মন্তব্য প্রকাশ করেন। বালক বালিকা দিগের শিক্ষার ক্রাবহা করিবার জন্ম করেন জনের উপর ভার দেওয়া ইইরাছিল। তাঁহাদের ক্রাব্যবিবরণ এখনও পাওয়া বার নাই। ত্রাহ্মবন্ধুসভার উদ্যোগে, একটা সায়ং সমিতি হইরাছিল।

প্রচারকণ্ড কমিটি—এই কমিটির কার্য্য এখন স্বতন্ত্র ভাবে না হইরা কার্যানির্কাহক সভার যোগেই চলিয়াছে। এই কমিটির চেষ্টার মাসিক প্রার ১৫ পনর টাকা আর বৃদ্ধি হইরাছে।

পুস্তকালয় কমিটি—পুস্তকালয়ের বন্দোবস্তের ভার রাক্ষ্মান্তের কার্যালয়ের উপর অর্পিত ইইয়াছে। পুস্তকালয়ের সভাগণের মধ্যে কেহ কেহ পুস্তক লইয়া নিয়া পাঠ করিয়া থাকেন। পুস্তকালয়ে বিসিয়া পাঠ করিবার দিকে বিশেষ আগ্রহ দেখা যাইতেছে না। রবিবার মধ্যে মধ্যে এখানে বসিয়া পড়িবার জন্ম অল্প সংখ্যক লোক উপস্থিত হন।

ছাত্রসমাজ্ঞ-গত তিন মাদে ছাত্র সমাজে দর্মগুদ্ধ ১০টা বক্তৃতা হইয়াছিল। পণ্ডিত শিবনাথ শাত্রী, বাব্ কৃষ্ণকুমার মিত্র, বাব্ ছিজদাদ দত্ত, বাব্ দীতানাথ দত্ত ও বাব্ হেরম্বচক্র মৈত্র মহাশরগণ বক্তৃতা করিয়াছিলেন। এই তিন মাদে গুইটা সামাজিক সন্মিলন হইয়াছিল। ছাত্র সমাজের সভ্যদিগের বাহাতে স্কালীন আধ্যাত্মিক উন্নতি সাধিত হয়, তজ্জন্য সভাদিগকে লইয়া একটা সক্ষত সভা সংগঠিত হইয়াছে। ডাক্তার প্রসন্নকুমার রায় মহাশয় ইহার সভাপতি।

ত্রাক্ষমিশন প্রেস—গত বৎসরের সহিত, তুশনার এ বৎসর ব্রাক্ষমিসন প্রেসের আর কিছু কম হইতেছে। প্রেসের নৃতন গৃহ প্রস্তুত্তের জন্ম ৬৩৯৵৫ টাকা ব্যন্ন হইরাছে, এই তিন মাসে ৮৮১ টাকার কাজ হইরাছে। ৬২০।১০ আদার হইরাছে। ৬৭০৮৮/১৫ থরচ হইরাছে।

পুত্তক প্রচার কমিটি, সামাজিক নিরমপ্রণয়ণকারী কমিটির কোন কার্যাবিবরণ পাওয়া যার নাই।

আয় ব্যয়ের বিবরণ। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ।

আয়——	-	ব্যয়-		
প্রচার •	७०१।/०	* প্রচার ব্যয় ৫৩৪ম/১٠		
বাৰ্ষিক চালা	es	* কর্মচারীর বেতন ১১৪॥•		
मानिक होना २७५		ডাক মাণ্ডল ৪০/৫ প্ৰচাৰক প্ৰমান্তিৰ		
এককালীন	>91100	প্রচারক গৃহ হি: ৪১০।৮/৫ পাথেয় হি:		
প্রাপ্ত চাউলের		मुलाकन हिः ३२		
म्ला	સાઇ•	* সেপ্টেম্বর মাস পর্য্যস্ত		
•		প্রচারকদিগের দক্ষণ ১২৮৸০ এবং কর্মচারীদিগের বেতনের :		
	9.91/0	मक्रेग ७८॥ • <i>(मना चाह्य</i> ।		

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ কণ্ড ১৭৯॥ বার্ষিক চাঁদা ১১১।		দরিত্তরাম বালকবিধের কুলের বেডন দান ১৩১	
		विविष हिः	blok
শুভ কর্মোপনক প্রাপ্ত জন্মের রেজিট্রেশ	₹8∖	হাওলাত শোধ	>220/¢
किः • —	• • • • • • • • • •	শ্বিত	3289/e
দরিদ্র ব্রাহ্ম বালক বেতন দিবার জয় কলেজ হইতে প্র প্রচারক গুহের ভা কর্মচারীর বেতন তম্বকোমুদী ও কণ্ড হইতে প্রাথ বিবিধ হি: হাওলাত গ্রহণ দঃ প্রচারক গৃহ ৪: দঃ জেনেরেল ফা	দিটী বিশ্ব ২৩৪১ ভা ২০১ ভা ২০১ প্তক বিশ্ব ক	মোট	>90 Ch/91
পূর্ক ত্রৈমাসিকের স্থিত মোট	22804000 22804000 2240000000000000000000		۴, .
de-andresses and an area-discontinues admissiones and		. (ক্রমশ:)

প্রদেশীয় ব্রাক্ষসমাজ।

কাঁথি হুইতে বাবু ভুবনেশ্বর ভট্টাচার্য্য লিথিয়াছেন—গত ১৪ই আখিন (29th Sep.) রবিবার কাঁথি নিবাসী বাবু ইন্দ্র-নারায়ণ বেরা মহাশরের মৃত শগুরের আদ্যশ্রাদ্ধ ব্রাদ্ধর্যর পদ্ধতি অন্থুসারে সম্পন্ন হট্যা গিয়াছে। ইহার ব্রাদ্ধর্য গ্রহ-ণের পর এই প্রথম অনুষ্ঠান। বাবু শশীভূষণ চক্রবর্ত্তী মহাশন্ন আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন। এই উপলক্ষে ইন্দ্রনারারণ বাবু স্থানীয় ছর্ভিক্ষকণ্ডে, ব্রাদ্ধসমাজে, বালিকা বিদ্যালয়ে এবং গরিবদিগকে অর্থ ও চাউলাদি বিতরণ করিয়াছেন।

নিয়লিখিতরপে তিন দিন কাঁণিতে এক্ষোৎসব হইরাছিল।

১৭ই আখিন বুধবার সন্ধ্যা হইতে রাত্রি ৯টা পর্যান্ত সংকৃতিন
প্রার্থনা ও আলোচনাদি। ১৮ই আখিন বৃহস্পতিবার প্রাতে

৭টার সমর রীতিমত সামাজিক উপাসনা। সন্ধ্যার পর সংকৃতিন
ও প্রোর্থনা। রাজা রামমোহন রার ও ব্রাহ্মসমাজ সম্বন্ধে উপদেশ
ও ক্রোপ্কথন।

> ৯এ আখিন ওক্রবার। সকালে সামাজিক উপাসনা।
আনেকগুলি বন্ধু এবং ছই একটী নৃতন লোকও উপাসনার ধোগ
দিয়াছিলেন।

রাত্রে মুব্দেফ বাধু বোগেজনাথ বোৰ মহালরের বাসার সঙ্গীতাদি ও উপাসনা।—

मर्वाम।

বিবাহ—পত ২৯এ আখিন সোমবার মরমনসিংহে ১৮৭২ সনের তিন আইন অস্নারে একটা বাশ্ববিবাহ হইয়া গিরাছে। পাত্রের নাম শ্রীষ্ক্ত গোলোক চক্ত দাস বরস ২৮३ বৎসর। ইনি মরমনসিংহ ইনষ্টিটিউসনের একজন শিক্ষক। পাত্রীর নাম শ্রীমতী স্পীলা কুমারী মজ্মদার। বরস ১৫ বৎসর। ইনি টাকীনিবাসী শ্রীষ্ক্ত বাবু উমানাধ মজ্মদার মহাপরের কনিষ্ঠা ভগিণী। শ্রীষ্ক্ত বাবু শ্রীনাথ চক্ত মহাপ্র আচার্ব্যের ক্যায়্র করিয়াছিলেন। মঙ্গলমর ঈশ্বর নব দম্পতিকে কুপলে রাধুন।

নামকরণ — গত ৯ই কার্ত্তিক শুক্রবার করিকাতা নগরে প্রীয়ুক্ত কৈলাস চক্র বাগছি মহাশরের কনিষ্ট পুক্রের নামকরণ সম্পন্ন হইরাছে। বালকের নাম প্রীমান জ্যোতিশুক্র বাগছি রাখা হইরাছে। রুতজ্ঞতার সহিত স্বীকার করা যাইতেছে যে কৈলাস বাবু এই উপলক্ষে সাধারণ ব্রাহ্মসমাজে ২ ছই টাকা প্রদান করিবাছেন।

শ্রাদ্ধ — বিগত १ই। ৮ই কার্দ্ধিক বনগা মহকুমার কোর্ট্ সবইন্ম্পেট্টর বাব্ প্রসন্ধ্রুমার চৌধুরী মহাশ্রের পরলোক গতা কন্তা মনোরমার প্রাদ্ধ উপলক্ষে উপাসনা এবং কীর্দ্ধনাদি হইরাছিল। মনোরমার বরস সবে ১২ বৎসর হইরাছিল। সে তাহার সংস্বভাবের জন্তা পিতা মাতার বিশেষ আদরের পাত্রী ছিল। এই প্রাদ্ধ উপলক্ষে বাব্ উমেশচক্র দত্ত এবং আরপ্ত করেকজন বদ্ধ বনগ্রামে গমন করিরাছিলেন। মজলমর পরমেশ্বর এই পর-লোকগত আত্মাকে তাঁহারঃ অমৃতমর ক্রোড়ে স্থান প্রদান করিরা কুশলে রক্ষা কঙ্কন এবং শোকসম্বপ্ত পিতামাতার প্রাণে শান্তি প্রদান কর্মন এই প্রার্থনা।

উদ্যানসন্মিল্লন—গত ৭ই কার্ত্তিক ব্ধবার শিবপুর বোটানিক্যানগার্ডনে সাধারণ ব্রাহ্মসমান্ধ এবং অধ্যক্ষ সন্তার সভাগপের একটা উদ্যানসন্মিলন হইরাছিল। তাহাতে প্রথ-মতঃ উপাসনা হয়। পরে সাধারণ ব্রাহ্মসমান্তের সভ্যগণ ব্রাহ্ম-সমান্তের কার্যা নির্কাহার্থ আপন আপন আরের কত অংশ প্রদান করিবেন সে বিষয়ে আপোচনা হয়। অনেকক্ষণ আলোচনার পর সর্কসন্মতিতে স্থিরীকত হয় যে বাহাদের মাসিক আর ২৫ টাকা তাঁহারা টাকা প্রতি ৫ এক পরসা এবং তাহার অধিক আর-বান সভ্যগণ টাকা প্রতি ৫ এক পরসা এবং তাহার অধিক আর-বান সভ্যগণ টাকা প্রতি ৫ ।। দেড় পরসা হিসাবে দান করি-বেন। বিশেব আনন্দের বিষয় এই যে তথার উপস্থিত সক-লেই এই হারে দান করিতে সন্মত হইরাছেন। আশা করি অস্তান্ত সভ্যগণও এইরূপে সমান্তের সাহায্য করিতে প্রস্তুত হইবেন।

পত্র প্রেরকদিগের প্রতি নিবেদন।

স্থানাভাবে এবার কোন পত্রই প্রকাশিত হইল না। প্রত্ত প্রেরকগণ কমা করিবেন।

বিজ্ঞাপন।

অধ্যক্ষ সভা গঠন সম্বাধীর অবাস্তর নির্মাবলীর ২ব নির্মান্সারে জ্ঞাপন করা বাইতেছে বে সাধারণ প্রাক্ষসমাজের বে লকল সভ্য আগামী বংসরের অধ্যক্ষ সভার সভ্য হইতে ইছে করেন, তাঁহারা আগামী ২১এ নবেম্বর তারিধের মধ্যে তাঁহার দের নাম, ধাম, আন্তর্চানিক বা অনাস্ত্রানিক প্রভৃতি বিবরণ সকল অন্তর্গ্রহ পূর্কক আমার নিকট প্রেরণ করেন। ঐ ভারিখেণ পর কাহারও নাম গৃহীত হইবে না।

না: ত্ৰা: নমাজ কাৰ্য্যালয়

আদিনাথ চট্টোপাধ্যার

३५६ चट्डोवड ३५५३

गरकाती गम्नामक।

তত্ত्व-कोगूनी

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

১২শ ডাগ। ১৫শ সংখ্যা।

১লা অগ্রহায়ণ শুক্রবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্ষ সম্বৎ ৬০

বাৎসরিক অগ্রিম <u>মূল্য</u> ২॥ মুফকুলে ৩

প্রতি খণ্ডের মূল্য 🥠 🛷

व्यार्थना ।

्विषत्राज !

কি জানি ডোমার বিভো! অনস্ত স্বরূপে यं पृत यारे কি যে আছে, কি তা বু তত ভূবি; আরো ভূবি; শেষে কৃত্ত প্রাণ ক্লন্ধানে ক্লকণ্ঠে বলে হে অগাধ! আমি কুন্ত, বিৰপতি! আমার কামনা, আমার কর্মা, চিন্তা, কুত্র যে সকলি ! कि जानाव ? ७८१ (नव ! এই गांक जानि ভয়প্ৰাণে বাস তৰ! তাই ভগ হদে नःनात्र इक्तिन-मारस, राज्या नागरत তাই হে হৃদর বন্ধু। ডাকি বারে বারে। কোটী বিশ্ব ভিক্ষা করে যে কটাক্ষ-তলে সে কটাক্ষে এ ছাসের নয়নের ধারা দেধ ভূমি; এ সাম্বনা পারি কি ভূলিতে ! বেঁচে আছি এই স্থাধ ; তবে করবোড়ে এই চাই, দেখো দেব! দেখো হে আমারে সংসার-যন্ত্রণা-চক্রে দেখো পিতা মোরে।

সম্পাদকীয় মন্তব্য ।

সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের সভ্যগণের প্রতি নিবেদন—
তত্ত্ব কোম্নীর গত ছই সংখ্যার এবং ইণ্ডিরান মেসেঞ্চারে
বিজ্ঞাপন দেওরা হইরাছে যে সাধারণ ত্রাক্ষসমাজের সভ্যগণের
মধ্যে বাহারা আগামী বৎসরের জন্ত অধ্যক্ষ সভার সভ্যপদে
মনোনীত হইতে ইচ্ছা করেন; তাঁহারা বেন অন্ত্রাহপূর্বক ২১এ
নবেলরের পূর্বে আপন আপন নাম সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ কার্যালারে প্রেরণ করেন। কিন্তু আমরা জানিরাছি সভ্যগণ অধ্যক্ষসভার সভ্য হইবার জন্ত এখনও আশাহারণ নাম প্রেরণ
করেম মাই। গভ ছই বৎসরও সভ্যগণ এ বিষয়ে বিশেষ
উদার্শীক্ত প্রদর্শন করিরাছেন। কিন্তু সকলেরই জানা উচিত
সাধারণ ত্রাক্ষসমাজ বে প্রধানীতে অধ্যক্ষসভার সভ্য মনোনরন
করিতে ইচ্ছা করিরাছেন, সেই প্রধানীকে বিশেষ স্কুফগপ্রদ

করিতে হইলে সকলেরই তাহার প্রতি বিশেষ মনোযোগী হওয়া ব্যবিশ্বক। বত অধিক সংখ্যক সভ্যের মধ্য হইতে এই মনোনয়ন জিয়া সম্পন্ন হইবে, ভতই অধিক পরিমাণে কার্য্যক্ষম ও উপযুক্ত **লোক সকল অ**ধ্যক্ষসভায় প্রবিষ্ট হুইতে পারিবেন। কার্য্য-নির্মাহক সভার হাতে এই ক্ষমতা প্রদত্ত হইয়াছে যে উপযুক্ত সংখ্যক নাম না পাওয়া গেলে তাঁহারা সভ্যগণের মধ্য **হই**তে ভাঁহাদের বিবেচনার উপযুক্ত লোক্দিগের সন্মভিগ্রহণপূর্ব্বক পরে অধ্যক্ষসভার সভ্যপদ্র্রার্থীগণের নামের নিষ্ট প্রস্তুত করিতে পারিবেন। কার্যানির্কাহক সভা বাধ্য হইরাই এই কার্য্য করিতে প্রবৃত্ত হন এবং জাঁহাদের বিবেচনার বতদুর সম্ভব ভাঁহারা কার্য্যক্ষম ব্যক্তিগণের নাম সংগ্রহ করিতে চেষ্টা করেন। কিন্তু এমনপ্ত ঘটিতে পারে যে তাঁহাদের ভূলক্রমে বা প্রক্বভরূপে কার্য্য-ক্ষমতার কথা না জানার অনেক উপযুক্ত লোকও সভাপদে নির্বা-চিত হইতে পারেন না। স্থতরাং সভাগণের ঔদাসীক্ত স্থলরেরণে কার্য্য হইবার পক্ষে একটী গুরুতর প্রতিবন্ধক। এই নিমিত অনেক সময় উপযুক্ত লোকের সাহায্য হইতে সমাজ বঞ্চিতও ছইরা থাকেন। সভাগণের নিকট বিশেষ অন্মরোধ -ুওাঁছার। উদাসীভ পরিত্যাগপূর্বক সত্তর অধ্যক্ষসভার সভ্যপদপ্রার্থী হইবার জন্ম আবেদন করুন। অধ্যক্ষসভার সভাগণের মধ্য হইতেই যখন কার্যানির্কাহক সভার সভ্যগণও মনোনীত হইয়া থাকেন তথন প্রকৃতকার্য্যক্ষম এবং কার্য্য করিতে ইচ্চুক এরপ ব্যক্তিগণের এ বিষয়ে উদাসাম্ভ কথনই প্রার্থনীয় নহে।

গত ছই বংসরে দেখা গিরাছে বে অধ্যক্ষসভার সভ্যপদপ্রার্গীগণের নামের লিট (ভোটং পেপার) যখন সভ্যগণের
নিকট মত (ভোট) প্রদানের জন্ম প্রেরিত হয় তথন আশাস্ক্রপ
অধিক সংখ্যক সভ্য আপনাপন অভিপ্রার জ্ঞাপন করিতে
শৈখিল্য প্রদর্শন করিরাছেন। ইছার ফল এই হর যে অতি
অন্ন সংখ্যক সভ্যের মতেই নির্বাচন ক্রিয়া সম্পন্ন হইরা থাকে;
কিন্তু এক্লপ হওয়া কথনই প্রার্থনীর নহে। সকলের মত লইরা
কার্য্য করিবার উদ্দেশ্রেই এক্লপ প্রশালী অবলম্বিত হইরাছে।
ক্রুত্রাং সে বিষরে সকলেরই বিশেষ মনোযোগ প্রদান করা
উচিত। আর কিছুদিন পরেই ভোটং পেপার সকল সভ্যগণের
নিকট প্রেরিত ছইবে। সভ্যগণ যেন আপনাপন অভিপ্রার

জ্ঞাপন করির। আপনাদের কর্ত্তব্য সাধনে বিশেষ মনোবোগী। হন।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের নিয়মসমূহ অধ্যক্ষসভা হারা বিবেচিত হইবারে আকারে পরিণত হইবার প্রস্থাব হইরাছে। তাহা তত্তকোমুদীর গত ছই সংখ্যার প্রকাশিত হইরাছে। সম্ভবতঃ আগ্রামী মাঘোৎসবের সমরে বার্ষিক সভার তাহার বিচার হইবে। এই নিয়মগুলিতে অতি গুরুতর পরিবর্ত্তনের প্রতাব আছে। স্তরাং এখন হইতে সভ্যগণ উক্ত নিয়মাবলী সম্বন্ধে বিবেচনাপূর্বাক আপনাদের মন্তব্য সাধারণ ব্রাহ্ম সমাক্ষ কার্যালরে জ্ঞাপন করিলে কার্য্যের বিশেষ স্থবিধা হইতে পারে।

সামাজিক বিধি-- बाक्तधर्म विधान পूर्वक शैंशात्रा ইহার আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছেন, তাঁহাদের সংখ্যা অধিক না হইলেও ক্রমে ক্রমে তাঁহারা একটা সমাজ রূপে পরিণত হই-তেছেন। স্থতরাং ব্রাহ্মসমাজের কার্য্য সকল কি প্রণালীতে সম্পন্ন इहेर्रें , जाहांत्र मध्यक्ष त्कान विधि अगद्रन कदा आवनाक हहेगा পড়িয়াছে। এতদিন ব্রাহ্মগণ সাধারণ নীতির অহুসরণ পূর্বক আপন আপন সদ্বিবেচনায় যে রীতি অনুসারে চলা আবশ্যক মনে করিরাছেন, তদমুদারেই চলিয়া আদিয়াছেন। কোন একটা পদ্ধতি অনুসারে সকলের চলিবার পক্ষে বিশেষ স্থবিধাও এত দিন হয় নাই। কারণ সমাজের এরপ শৈশব অবস্থাতে कान विधिष्ठे अभीज इटेरज भारत ना। इटेरन जारा मगौगीन ना इट्टेवाव्रहे कथा। अप्तक अवद्या आष्ट्र याहा मिटे প्राथिमिक সময়ে উপন্থিতই হয় না। স্থতরাং সেরূপ সময়ে কোন বিধি প্রচলিত হইলেও অতি অসম্পূর্ণ অবস্থাতেই তাহা বিহিত হয়। ব্রাহ্ম সমাজের এখনই যে সেরূপ অবস্থা উপস্থিত হইয়াছে, যে অবস্থায় কোন একটা বিধির অধীনে সকলে চলিতে পারেন. তাহাও নয়। তবে সাধারণ ভাবে আচার ব্যবহার সম্বন্ধীয় মূল নীতিগুলি নিদ্ধারণ এখনও করা যাইতে পারে। বিশেষতঃ জনসংখ্যা বৃদ্ধির সহিত ইহার মধ্যে নানা শ্রেণীর লোকের সমাবেশ ঘটিতেছে! আবার ব্রাহ্মদিগের গৃহের বালক বালিকা-গণের সংখ্যাও বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইতেছে। এসময় কোন বিশেষ প্রণালী অনুসারে যদি ইহারা চলিবার জন্ম শিক্ষিত না হয়—যদি স্থনিয়মে স্থশাসিত হইতে অভ্যস্ত না হয়, তাহা হইলে সমাজের অনেক অনিষ্ট ঘটবার সম্ভাবনা আছে। কতকগুলি বিশৃথল প্রকৃতির লোকের সমাবেশে সমাজের যাদৃশ পরিণতি হইবার मह्यादना. जाहा कथन है जानका-मुख नरह। এজ ख कि नियस সমাজের নরনারীগণ আপনাদিগকে পরিচালিত করিবেন **(म मचरक जालाइना क**ता এवः एम विषय **अख**ङः निवस्मत সাধারণ মূলস্ত্র গুলি নির্ণয় করাও আবশ্যক হইয়াছে।

সামাজিক প্রশ্নের বিশেষ ভাবে আলোচনার জন্ম কলিকাতার ব্রাহ্মগণ ব্রাহ্মবন্ধু সভা নামে একটা সভা প্রতিষ্ঠিত করিরাছেন। এরূপ সভায় অধিকাংশ চিন্তাশীল ও বিজ্ঞ ব্যক্তিগণ সমবেত হইয়া যদি সাধারণের মত সংগঠনের বিশেষ চেষ্টা
করেন, তবে নিয়ম সকল প্রণয়ন করিবার পক্ষে বিশেষ স্ক্রিধা
হইতে পারে। কিন্তু ব্রাহ্মবন্ধু সভা অনেক সময় আপনার

আলোচ্য বিষয় সকল পরিত্যাগ পূর্মক বিষয়ান্তরের ক্ষালোচনার প্রবৃদ্ধ হইরা থাকেন। তাহা তত কতির কারণ না হইনেও সভা এক একটা বিষয় আলোচনার জন্ত ধেরপ সমর প্রদান করা আবশ্যক তাহা প্রায় ক্ষরিতে সমর্থ হন না এবং ক্প্রণালীতে আলোচনা করিতে হইলে ইহার বেরপ অধিক সংখ্যক অধিবেশন হওরা উচিত তাহাও করিতে সমর্থ হন না। এই নিমিন্ত সামাজিক প্রশ্ন আলোচনার স্ক্রিথা প্রক্লত রূপে প্রাপ্ত হওরা যাইতেছে না।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাঞ্চের কার্য্যনির্ন্ধাহক সভা এবিষয়ে নিতান্ত উদাসীন না হইলেও কার্যতঃ তাঁহারা কিছু করিয়া উঠিতে পারিতেছেন না। তাঁহাদের প্রণালী অনুসারে কোন কার্য্য সম্পন্ন হওয়া বিশেষ সমন্ন সাপেক। আবার অতি অন্ন সংখ্যক ব্যক্তি ছারা এরপ শুরুতর বিষয়ের মীমাংসা হওয়া কঠিন। কিছ কার্য্য নির্ন্ধাহক সভার পক্ষে বে এ বিষয়ে বিশেষ মনোযোগ প্রদান করা কর্ত্ব্য তাহাতে সন্দেহ নাই। আমাদের বিশ্বাস তাঁহারা উদ্যোগী হইলে এসহদ্ধে কৃতকার্য্য হইবার পক্ষে অনেক পরিমাণে সহায়তা করিতে পারেন।

মফশ্বলে যে সকল সমাজের সভ্য-সংখ্যা অধিক ? তাঁহাদের উচিত সামাজিক প্রশ্ন সকল মীমাংসার জন্য প্রাহ্মবন্ধু সভার ন্যায় কোন সভায় সন্মিলিত হইয়া সামাজিক রীতি নীতি সম্বন্ধে সাধারণের মত গঠনের চেষ্টা করেন। সকলের সমবেত চেষ্টা ভিন্ন এরপ শুরুতর কার্য্য কথনই স্থসম্পন্ন হইতে পারে না। আমরা আশা করি এ সম্বন্ধে সকলেই বিশেষ মনোযোগী হইবেন।

কিন্তু সামাজিক প্রশ্নের মীমাংসা এবং সামাজিক বিধি প্রণরন করা সম্বন্ধে বিশেষ একটা প্রতিবন্ধক আছে। তাহা এই-সমাজ मर्सा इरे त्यंगीत लाक मिथिए शाख्या गरेएएह। **ट्याँग मगारकत स्मृद्यांग तका ७ मगाकर लाकरक नौ**िष्यान করিবার জন্ম নিয়মের আবশুকতা বিশেষভাবে অমুভব করেন। তাঁহারা নির্দিষ্ট বিধির একান্ত পক্ষপাতী। অন্ত শ্রেণী নির্দিষ্ট , विधि वावञ्चात अधीन इहेगा हलात्क आर्थनीय मन्न करत्न मा। উভয় পক্ষের যুক্তির বলাবল বিচার করা আমাদের উদ্দেশ্ত নর। किन माधात्रणाद वहे बना शहरा भारत, त्य त्यथात नाना শ্রেণীর বহু লোকের সমাবেশ হয় সেখানেই নিয়মের প্রয়োজন। অনিয়মে একটা সামান্ত সমিতির কার্যাও যথন চলে না, তথন একটা সমাজ নিরমহীন হইরা চলিবে তাহা কথনই সম্ভবপর নহে। কিন্তু একমাত্র নিরমেই কোন কার্য্য হইতে পারে মা। 🧗 যাহারা নিম্নমান্ত্রারে চলিবে, তাহারা যদি কর্ত্তব্যপরায়ণ না হু📆 তাহাহইলে নিয়ম কথনও চালক হইয়া মামুষকে স্থপথে চ' ইতে পারিবে না। নিরমের অধীন হইলেই তাহার কারি ২য় অস্তর্থা তাহা কেবলই বিভ্রনার কারণ। সেরপ নির্ম ক্যান্তের পত्रেই চিরকাল আবদ্ধ থাকিয়া যায়, মানবের কার্ব্যের সৃহ্যু ইচ্ছা ক্রিতে সমর্থ হয় না। নিয়মানুসারে যাহারা চলিবে, ভাছাদিগকে সংযত করা এবং কর্ত্তব্যপরায়ণ করিবার জন্ত যাহা আবন্তক ভাছা অবশ্বই অন্তবিধ উপায়ে সাধন করিতে হইবে। সে আলোচনা अथारन निष्पात्राञ्चन । निषम यांचा दहेरव जांचा रव नर्वाणांचे नमा

ভেদ্ধ অবস্থান্থসারে পরিবর্ত্তনলীল এবং উন্নতির সহার হইবে, সে
বিবরে বর্ত্তমান সময়ে কিছু না বলিলেও চলিতে পারে। আমরা
আশা করি স্থান্থলরূপে বাঁহারা চলিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা
এবং আপনাপন সন্তানদিগকে বাঁহারা স্থান ও উপযুক্ত নীতিমান দেখিতে ইচ্ছা করেন, তাঁহারা কল্যাণকর নিরমগ্রহণে
ক্ষাই বাধা প্রদান করিবেন না। এ বিবরে সমাজস্থ প্রত্যেক
ব্যক্তিরই সাহাব্য পাওরা আবশ্রক। ২০৪ জনের বিবেচনা সর্ব্ব সমরে সমীচীন এবং উপযুক্ত কর্ল্যাণসাধনে উপযুক্ত হইবে তাহার
সন্তাবনা কি ?

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

অকিঞ্চনতা।

হর্মলকে সর্মান্ট অক্টের সাহায্যের উপর নির্ভর করিতে হয়। সে যদি আপন হর্মণতা বিশ্বত হইয়া স্বলের ক্লার कार्या अवुख श्रेष्ठ योष्ठ, छाहार्छ छाहारक रक्षनहे विक्न-मत्नात्रथ हरेराङ इत्र । क्विनारे व्यापन हरेराङ हत्र । এकथानि বাষ্ণীয়ণোত বেমন সতেকে নদীয় প্রবল স্রোতকে অগ্রাহ कतिया व्यवनीनाकारम हिनता यात्र, अक्शानि तोका परि আত্মবিত্মত হইয়া সেইরূপ তেজের সহিত সদর্পে চলিবার বাসনা করে, সে যদি প্রবল ল্রোড-মুখে আপনাকে ভাসাইয়া দের তাহা হইলে তাহার কি দশ। হর ? অতি শীঘ্রই স্রোত-বেগে তাহাকে পশ্চান্দিকে হটিয়া আসিতে হয়। তাহার ভর্দ-শার স্বার সীমা থাকে না। তাহার স্রোতের বিপরীতদিকে यां अत्रा अत्याकन इटेल, अत्यात माहाया न अत्रा आवश्यक। অমুকূল বায়ুর সাহায্য লওয়া আবশ্রক। একজন সম্ভরণপট্ট नवन वाक्तिक नश्य नभी छेड़ीर्ग शहेरठ प्रिथिया, यनि कान ছর্মন ব্যক্তিও সেই সাধ করে, তবে কি সে নদীর পরপারে উত্তীর্ণ হইতে পারে ? সে অতি সম্বর অবশ-দেহে স্রোত-বশে ভাসিয়া যার। তাহার সকল বল সকল সাহস উদ্যম ব্যর্থ হইদ্বা যাদ। এইরূপে হর্বলের পক্ষে যে কার্য্য ভাহার সাধ্যায়ত্ত নয়, তাহা সাধন করিতে হইলে নিজের শক্তিতে কথনও তাহা স্থাসিত্ব করিতে পারে না। তাহাকে পদে পদেই অন্তের সহারতা গ্রহণ করিয়া কার্য্য সাধন করিতে হয়। পৃথিবীর সামাল্য কার্য্য সাধনের সময়েই যথন ছব্বলকে নিয়ত পরের সহায়তার উপর নির্ভর করিতে হয়; তথন মহান ঈশ্বর যিনি. অনম্ভ শ্বরূপ বিনি, তাঁহাকে মান্ত্র্য কি নিজের শক্তিতে প্রাপ্ত হইবে ? তুলনা এখানে সম্ভব নয়। কোন প্রকারে যে ঈশরের সহিত নানবান্থার পরিমাণ বা শক্তি বিষয়ে তুলনা দারা কিছু প্রকাশ করা যাইতে পারে তাহাও নর। বলিতে গেলেই বলিতে হর অনস্ত আর. অন্তবিশিষ্ট। এরপ প্রভেদ যেখানে, এরপ উচ্চতা ও হীনতা বেধানে, সেহানে হীনের পক্ষে কি উপায় অবলম্বন করা সম্ভবে, যে উপারে সে মহানকে লাভ করিতে পারে ৮ रामद्र कथा अथारन अकवारत्रहे व्यामिएक भारत ना। करव

মানবাত্মার পক্ষে এমন একটা প্রয়োজনীয় বিষয় নয় যে যেমন পৃথিবীর আর দশটা প্রয়োজনীয় বস্তু পাইলে ভাল হয়, না পাইলেও চলিতে পারে। কিন্তু ঈশ্বর মানবাত্মার যথাসর্বত্ম— ভাহার সহিত বিচ্ছেদ আর মৃত্যু একই কথা। স্নতরাং মানবা-ত্মার পক্ষে ঈশ্বর লাভ কখন এমন ব্যাপার নয় যে হইলে ভাল হয় না; হইলেও চলে! তবে কোন্প্রণালীতে মানব ঈশ্বর্ত্তি পাইতে সমর্থ হইবে?

আমরা সংসারে বেভাবে শিশুর নিকট মাতাকে পরাস্ত इहेट ए (मिंब, रनहें खानी जिन्न जा अमन रकान खानी रम्था यात्र ना, याङ् कांद्रा सालव अगन प्रस्त ଓ शैन इरेना ए अजून মহিমান্থিত মহানু পরমেশরকে টানিয়া আনিতে পারে বা প্রাপ্ত হইতে পারে ? শিশু মাকে কিরুপে পরান্ত করে ? প্রথমে **टकरनहें हेहा माछ, छेहा माछ—बामाटक मिटलहें हहेटर ना मिटनहें** নর এইরূপে আন্ধার চলিতে থাকে। মাকে নানা প্রকারে ত্যক্ত করিতে থাকে। তাঁহাকে কাজে যাইতে দিবে না, কোন-মতেই ছাড়িবে না। আঁচল ধরিয়া টানাটানি এমন কি প্রহারাদি পর্য্যন্ত চলিতে থাকে। এইরূপে শিশু তাহার শক্তিতে যতদুর কুলায় তাহার অহুঠানের কোনটীরই বাকী রাখেনা। মা কিন্তু তখনও স্থির। তিনি ব্রিতেছেন এ সকল আন্দার কোন কাজের নয় সে যাছার জন্ত এমন করি-তেছে তাহা তত দরকারি নয়। স্থতরাং তিনি ^{*}স্থিরভাবেই আছেন। কিন্তু শিশু প্রথম আবৃদার করিয়া যথন পারিল না उथन पन व्यायाञ्चन कतिएक नाशिन। धत्र भाकक कतिएक করিতে যখন আর তাহার শক্তিতে কুলার না, যখন সে এক-বারেই পরিপ্রান্ত হইয়া পড়িল, তথন সে কি .করে একবারে কাঁদিরা মারের কোলে ঝাঁপাইরা পড়ে। অবসর দেহে মাকে জড়াইয়া ধরে কাঁদিয়া একবারে আকুল হয়। তথন কি আর মা দ্বির থাকিতে পারেন ? তথন তাঁহার সকল প্রতিজ্ঞা সকল জেদ একবারে ভাঙ্গিয়া যায়। তিনিই তথন পরাক্ত হইয়া যান। भवन हरेबा । इर्क्सलात निक्षे हात भारतन । निख्त वरन नव, কিন্তু তাহার হর্মণতাও আত্মসমর্পণ হইতেই মাতা পরাস্ত অমনি মাতা বাছ প্রসারিত করিয়া সম্ভানকে বক্ষে গ্রহণ পূর্বক আদরের উপর আদর করিতে করিতে ক্তরূপেই তাহাকে সাম্বনা প্রদান করিতে থাকেন। সম্ভান তথন মাকে একবারে পাইয়া বদে, কত কি চায়, প্রথম যাহা চাহিয়াছিল তাহার উপর নৃতন নৃতন আরও কত কি চাহিতে থাকে। মায়েরই তথন বিপদ কোন রূপে সম্ভানকে সান্তনা দিতে পারিলে যেন বাঁচিয়া যান। তবে এই প্রণালীতেই আমরা পরম মাতাকে লাভ করিতে পারি। নিজের শক্তিতে নয়, কিন্তু তাঁহার শক্তিতেই তাঁহাকে পাইতে পারি। প্রম মাতা অবসন্ন সম্ভানকে যথন স্নেহের থাতিরে ধরা দেন তথনই আমরা তাঁহাকে পাইতে পারি।

পরম মাতার সহিত স্বভাবত:ই যে আমাদের বিচ্ছেদ ছিল বা বিরোধ ছিল তাহা নয়। কিন্তু আমরা নানা কারণে তাঁহা হইতে যেন সরিয়া আসিয়াছি। এখন বোধ হইতেছে যেন তাঁহার সহিত কত যোজনের ব্যবধানে আসিয়া পড়িয়াছি। এই ব্যবধান কি ? না আত্মবলের অভিমানের ব্যবধান, জ্ঞানের অহলার এবং ধন, জন, মান প্রভৃতির অহলার প্র ব্যবধান। এই সকল অহলার থাকাতে আমাদের তাঁহার নিকট বেরূপ বিনীত থাকা উচিত, বেরূপ তাঁহার বশীভূত থাকা উচিত, তাঁহার উপর যাদৃশ নির্ভর থাকা উচিত এবং তাঁহার সাহায্যও সঙ্গ লাভের জ্ঞা যাদৃশ ব্যাকুলতা থাকা আবশ্রক, এখন তাহার প্রায় কিছুই নাই। আমরা নিজদোধে যে বিরোধ ঘটাইয়াছি। নিত্য সম্বন্ধ যাহার সহিত, তাঁহার সঙ্গে যে বিচ্ছেদ ঘটাইয়াছি, ভাহা অপনোদন করিতে হইলে আমাদিগকে সেই শিশুর মতই কাঁদিতে হইবে। সে বেমন শ্রান্ত দেহে অবসর হইয়া একবারে মারের শরণাপর হয়, আমাদিগকে সেইরূপ একান্ত নির্ভরের সহিত তাঁহার অনুগত হইয়া তাঁহার উপর আপনাকে ছাড়িয়া দিতে হইবে।

কিন্তু মানুষ প্রথমেই ইহা পারে না। তাহার নিজের শক্তির অভিমানের হাত অতিক্রম করিয়া একবারেই আপনাকে অকিঞ্চন ভাবিতে গারে না। আপনাকে এরপ অকিঞ্চনও অক্ষম বলিয়া জ্ঞান জন্মিবার পূর্বে সে তাহার চেষ্টাকে যথাশক্তি নিয়োগ করিতে থাকে। সে নানাবিধ উপায় গ্রহণ করে—পারীরিক মানসিক নিগ্রহ সকল গ্রহণ করিতে থাকে। মন যাহা চায় তাহা হইতেই তাহাকে বঞ্চিত করে। মন চায় লোক-কোলাহলে वांत्र कत्रिएक, त्म शांत्र निर्म्कन वनश्रात्म । यन हांत्र धरेनचर्रशत् সহিত থাকিতে, সে একবারে পথের ফকীরী গ্রহণ করে। এইরূপে প্রবৃত্তিকে দমন করিবার যত্ত উপায় মামুষ জানে তাহার मकन अनिहे शहन करत। এहे तरम প্রচনিত সাধন প্রণালী সকন সবই সে অবলম্বন করিতে থাকে। একটাতে হইল না; সিম্মটা গ্রহণ করে। এই ভাবে উপায়ের পর উপায় গ্রহণ করিয়া করিয়া যথন আর পারে না--যখন আর কিছুতেই কুলায় না--সকল প্রকার বল ও সাধনের অভিমান যথন চুর্ণ হইয়া যায়, যথন সে একবারেই শ্রাপ্ত ও অবসর হইয়া পড়ে। তথন প্রাণের গভীরতম প্রদেশ হইতে যে প্রার্থনা বাহির হয়, যে আকুল ক্রন্দন উপস্থিত *হয়*—তথন তাহার প্রাণে যে একাস্ত নির্ভরের ভাব উপস্থিত হয়, তাহা হইতেই মানবাত্মার সহিত পরমাত্মার প্রকৃত পরিচয় হয়। এরপ ক্রন্দন, এরপ ব্যাকুলতা, এরপ নির্ভর মামুব সহজেই যে লাভ করিতে পারে তাহা নয়। সে যতদিন আপন বলের পরিচয় প্রকৃতরূপে না পায়, আপনার শক্তিতে কতদুর হইতে পারে তাহা বুঝিতে সমর্থ না হয়, ততদিন এই অকিঞ্নতা लाश रग ना।

অতএব প্রকৃত অকিঞ্চনতা লাভ করিতে হইলে অর্থাৎ যে
আকিঞ্চনতা ভিন্ন প্রকৃত ব্যাকুলতা ও প্রার্থনা উপস্থিত হর না
ভাচা পাইতে হইলে সাধন ভজনের বিশ্ব প্রয়েজন। সাধন ভিন্ন
কথনও আপনার হর্জলতার পরিচয় পাওয়া যাইতে পারে না এবং
আপনাকে জানা যায় না। আপনাকে জানিতে না পারিলে
নিজ শক্তির পরিচয় না পাইলে কোনরপেই প্রকৃত আয়ুগত্য বা
নির্ভরশীলতা আসিতে পারে না। এজস্ত আমাদের প্রত্যেকেরই
উচিত প্রাণপণে সাধন ভজন করিয়া দেখা, যে আমরা কতদ্র
করিতে পারি। তাহা না করিয়া হাই ছেলের মত যদি কপট
কেন্দন করি, তাহাতে মহান্ ঈশ্রের সহিত নিত্য-যোগে সংযুক্ত
হইবার আশা অতি অয়।

विटमच विश्वाम ।

বিশেষ বিধান সহকে বে সকল আপত্তি শুনিতে পাঞ্চরা বার আমরা "ঐশাশক্তি" শীর্ষক প্রবন্ধ এবে কতক পরিমাণে তাহার উত্তর দিতে চেষ্টা করিয়াছি। বর্ত্তমান প্রবন্ধ আমরা বিশেষ ভাবে তাহার ছই একটার আলোচনার প্রবৃত্ত হইব এবং বিশেষ বিধান সহজে আমাদের মত আরও বিশদ করিবার চেষ্টা করিব। বিষয়টা যেরূপ শুক্তর তাহাতে আশা করি পাঠকগণ একটু সহিষ্ণুতার সহিত ইহার আদ্যোপাস্ত পাঠ করিবেন।

বিশেষ বিধান সম্বন্ধে একটা গুরুতর আপন্তি এই যে, বিশেষ বিধান মানিতে গেলে ইহাই বলা হয় যে ঈশার সময়ে সময়ে এক একটা বিধান প্রচার করেন, অর্থাৎ একটা বিধান প্রচার করিয়া যথন দেখেন তাহাতে উপযুক্ত ফল উৎপন্ন হইতেছে না তখন আর একটা বিধান প্রচার করেন। কিন্তু তাহা হইলে ঈশারের সর্বাশক্তিমন্তা ও সর্বাজ্ঞবা দোবারোপ করা হয়। "বিধান সম্বন্ধে পরিবর্ত্তনশীলতা খীকার করিলে ঈশারেও পরিবর্ত্তনশীলতা আরোপ করিতে হয়। বিধানকে উপযুক্ত ফলোৎপাদনে অক্ষম বলিলে ঈশারের প্রতিও শক্তিহীনতা ও অক্সতার আরোপ করিতে হয়।"

আমরা "এশীশক্তি" শীর্ষক প্রবন্ধে ইহার কড়ক পরিমাণে উত্তর দিতে চেষ্টা করিয়াছি। এশাশক্তির কার্যা সর্বাদাই সাধা-রণভাবে চলিতেছে। প্রত্যেক নরনারীর হৃদয়ে, প্রত্যেক দেশে ও সমাজে ঈশবের মঙ্গল ইচ্ছা ক্ষ র্ত্তি পাইবার চেষ্টা করিতেছে। কিন্ত স্থান, সময় ও অবস্থা বিশেষে **ঈখরের অপরিবর্তনী**য় নিয়মেই তাঁহার শক্তির বিশেষভাবে ক্রণ বা প্রকাশ হইয়া थाकि। जन मगाक य এইরূপ ঘটনা মধ্যে মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়, তাহা অস্বীকার করিলে (fact) প্রকৃত ঘটনা **অস্বী**-কার করা হয়। এইরূপ ঘটনা সাধারণ নিয়মেই ঘটে; কিন্তু বিশেষ সময়ে, বিশেষ স্থানে ও বিশেষ অবস্থায় ইহা ঘটে বলিয়া ও সেই সময়ে ও সেই স্থানে ইহার ফল বিশেষভাবে অনুভূত হয় विनियारे रेशांक विरमप विशंग वना रहेया थाक । এ कथा विनात अन्नभ वना रम्र ना त्य अक्षी विधान वार्थ रहेन वृतिमा পরমেশ্বর অন্ত বিধান প্রচার করিলেন। সকল বিধার্থ 🗓 🚾 বিশ্বব্যাপী পরিত্রাণ প্রণালীর ভিন্ন ভিন্ন ভাগে মাতে। প্রেমনদী বহিয়া যাইতেছে; বিশেষ বাধা পাইলেট্ট , হৈতেঃ তরঙ্গ উঠে। এক একটা বিধান তাঁহার সেই একই প্রেমনদীর ভিন্ন ভিন্ন তরঙ্গ মাত্র। বিশেষ বিধান তাঁহার সাধারণ অপরি-বর্তনীয় নিয়মের বিশেষ ফল মাত্র। স্থতরাং সময়ে সময়ে এক একটা বিধান প্রকাশিত হয় বলিলেই ঈশ্বরে পরিবর্ত্তনশীলতা আরোপ করা হয় না, এবং একটা বিধানে উপযুক্ত ফল হইতেছেনা বলিয়া ঈশ্বর অন্য বিধান প্রচার করিলেন এরপ কথাও বলা हम ना। य अवद्या ७ य ममस्त्रत जना वाहा छेनवुक छिनि हिक তাহারই বিধান করিতেছেন। তাঁহার একই পরিজাণ প্রণালী সময় ও অবস্থা বিশেষে এক এক রূপে প্রকাশিত হইতেছে 🖟 তাঁহার দিক্ হইতে দেখিলে একভাবে যাহা তাঁহার সাধারণ विशास्त्र अञ्चर् ७--- भाग्नरवत्र निक् हहेर७, जननगरजत्र निक्

হইতে দেখিলে জাহাই আবার বিশেষ বিধান। তিনি মানবাআর বে সত্য ও দেবভারের বীজ নিহিত করিয় দিয়াছেন, বিশেষ
বিধান সকল অবস্থাবিশেবে তাহারই বিশেষ প্রকাশ মাত্র।
তিনি জগতের কল্যাণের জন্য যে বিধান করিয়াছেন তাহা বাল্তবিকই প্রথম হইতে এই প্রকৃতির যে তাহাতে কোন পরিবর্ত্তন
আবশ্রক নাই। বাল্তবিকই উহা এই প্রকারের যে তাহাই একমাত্র কার্য্যসাধনক্ষম। বিশেষ বিধানগুলিকে যদি তাঁহার এক
বিশ্ববাপী পরিত্রাণ প্রণালীর বিকাশ বলিয়া বিশাস করা যায়,
তাহা হইলেই আমাদের কথার যাথার্থ্য পাঠকগণের হৃদয়ঙ্গম
হইবে।

কিন্তু আপন্তিকারী বলিবেন, যে সকল ঘটনাকে "এক একটা বিধান বলিয়া উল্লেখ করা হইলা থাকে" তাহাদের মধ্যে "দামঞ্জন্ত বা মিল নাই।" স্কৃতরাং একই উপায় ভিন্ন ভিন্ন দমনে ব্যক্ত হইয়াছে এরূপ কথা বলা যার না। কিন্তু ঈশ্বর যদি এক বিধানের হারা অন্য বিধানের অন্যথা করিয়া থাকেন তবে "অজ্ঞতা ও শক্তির অভাব ছইই তাঁহাতে বর্ত্তমান।" আর যথন ছইটা বিধানের মধ্যে মৌলিক বিষয়ে বিভিন্নতা দেখা গিয়া থাকে (যেমন যক্তে পশুবধ ও অহিংসা) তথন কিরূপে উহাদিশকে মূলতঃ এক বলিবে ?

ইহার উত্তরে আমাদের বক্তব্য এই যে এইরূপ আপত্তি ষ্মত্যস্ত স্থলদর্শিতার পরিচায়ক। বিধান যাহা তাহা ঈশ্বরের, তাহা কেবল ঈশ্বরের সতাই প্রচার করে। কিন্তু মাহুষের ভিতর দিয়া তাহা প্রকাশিত হয় বলিয়া মাতুবের ভ্রম, অপুর্ণতা তাহার সহিত নিশ্রিত হইয়া যায়। যাহারা জগতের ভিন্ন ভিন ধর্ম বিপ্লবকে বিশেষ বিধান বলেন, তাঁহারা এরূপ মনে করেন না যে ঐ সকল ধর্মের মধ্যে যে কিছু অসত্য, যে কিছু ভ্রম প্রমাদ আছে তাহাও এশবিক। যাহা কিছু সত্য তাহাই ঈশবের। এবং সত্যের মধ্যে অসামঞ্জস্ত বা অমিল থাকিতে পারে না। যদি চুইটা বিষয় যাহা সত্য বলিয়া প্রচারিত হইতেছে, তাহার মধ্যে অসামল্লস্য দেখি এবং তাহার একটাকে ঠিক্ সত্য বলিয়া ব্রিতে পারি তবে নিশ্চয়ই অপর্টী অসত্য বা অসত্যমিশ্রিত সত্য। এইজ্বল এক্সল একপ আপত্তিও উঠিতে পারে না যে বিধান বলিয়া যাহা উক্ত হইবে, তাহার সম্বন্ধে বিচার করা বা তাহার দোষ গুণ অনুসন্ধান করিয়া তদরুসাবে কার্য্য করা বিধানবাদীর পকে শোভা পায় না।" কারণ যাঁহারা বিশেষ विधारनत भक्त ममर्थन करतन छीड़ाता এक्रभ कथा वरनन ना त्य বৌদ্ধ, খুষ্টীয় প্রভৃতি ধর্মে যাহা কিছু আছে সকলই ঈশ্বরের विधि। छौहाता देशदे वरलन एव के नकन धर्मात मर्या गोहा কিছু সত্য আছে তাহাই ঈশবের যাহা কিছু অসত্য আছে তাহা मानत्तत्र व्यपृर्वजामञ्जूष्ठ। व्युज्जाः वित्मय विधान मानित्ज গেলে "মামুষের বিবেক বা কর্ত্তব্য জ্ঞানের কোন মূল্যই থাকে না" এক্লপ আপত্তিও থাটে না। কারণ, যে সকল ব্যাপারকে বিশেষ বিধান বলা হয়, তাহার মধ্য হইতে মানবীয় অপূর্ণতা ও ভ্রম পৃথক্ করিয়া সত্য বাছিয়া লইবার জন্ত বিবেক ও কর্ত্তব্য ज्याद्मित श्रद्धांकन तहिशाहि। विटमंबविधानवानिशन कथनहै शक्तभ कथा तरनम मा त्य त्य प्रकन त्याभाततक तिरमय विधान

বলা হয় তাহা পূর্ণ ভাবে সত্য, তাহাতে অসত্যের লেশ মাত্র নাই। একথা বলিলে তাঁহারা যাহা স্বীকার করেন না এরপ মত তাঁহাদের স্বয়ে স্বারোপ করা হয়।

প্রাপ্ত। *

অনম্ভের মেয়ে আজ অনস্তের মহাকোলে ছুটে গেল পৃথিবীর খেলা ধুলা দূরে ফেলে; অনন্ত আকাঞ্জা লয়ে হেণা কি বাঁচিতে পারে ? না মিটিতে এক ভুয়া শত ভুষা চারিধারে ! বাসনা, পিশাসা, ক্ধা নিভে যেথা অবশেষে, यानवी व्यवदेश इतियाद एतरे एएटन ! কেন তবে হায় হায়, গ্রিয়নাণ হাহাকারে, कि मिरत्र वैधित जात्र, अनत्य टिंग्सह यात्त । শোকাশ্র কেনগো তবে ৪ প্রেমাশ্র বহিয়া যাক অনস্তের কণা গিয়া অনস্তে মিশিরা থাক। উল্লাসে ছুটুক্ সব হৃদয়ের ক্বতজ্ঞতা চারিধারে ফুটে র'ক এ শুভ আশ!-বারতা। मिविमिश शूर्व इ'क जानत्मत जम्र (त्रात्न, মানবী অমরী হয়ে ছুটেছে অনন্ত কোলে; আর কিবা চাই বল আর কিবা সাধ আছে; চেয়ে দেখ মহাছবি ওই স্বর্গের মাঝে। বিস্তারি অনম্ভ কোল, জননী, ভগিনী হয়ে বসিয়া অমনী ওই জ্যোতির্মন দেবালয়ে: অমর ফুটন্ত ফুল, চারিপাশে হাদি তার আভাবে বিকাষে স্বৰ্গ, স্বৰ্গ কোথা আছে আর ।।

একাকী একেশ্বরে।

একাকী একাগ্রচিত্তে একমাত্র ঈশ্বরের ধ্যানে আপনাকে নিযুক্ত করা সম্পূর্ণ প্রাচ্য ভাব। পাশ্চাত্য দেশের লোকে এ ভাবের মর্ম এতকাল পরিগ্রহ করিতে পারেন নাই। এখন তাঁহাদিগের মধ্যে এ ভাব অন্ন পরিমাণে বিকাশ প্রাপ্ত হই-তেছে। Alone to the Alone ইহার গুড় মর্ম এখন তাহার। কতক বুঝিতে পারিতেছেন; কিন্তু তাহাও অতি অল সংখ্যক লোকের মধ্যে আবদ্ধ। সমগ্র ইউরোপ সকর্মক ভাবে বিভোব, তথাকার লোকে সকর্মক আরাধনায় মন্ত: অকর্মক অবস্থা ভাহাদিগের নিকট প্রীতিপ্রদ নহে। নির্জন চিম্তার প্রয়ো-জনীয়তা তাঁহারা বড় অমুভব কবিতে পারেন না। এই হেতু তাঁহাদিগের ঈশ্বরোপাসনা সচরাচর সজনেই সম্পন্ন হইয়া থাকে। ধর্মালয়ে সমগ্র উপাসকমগুলী সমবেত ভাবে উপাসনা করেন। কেবল তাহা নহে, পরিবার মধ্যে প্রবেশ করিলেই পারিবারিক উপাসনায় এই সমবেত পূজা দেখিতে পাওয়া যায। কোন বিশেষ ঘটনা উপলক্ষে এই পূজা হয় তাহা নহে ; যে পরিবারে যে যে সময়ে ঈশরাধনার ব্যবস্থা রহিয়াছে, তাহাব

^{*} কোন একটা মহিলার মৃত্যুর দিনে রচিত।

নকল সময়েই সমবেত উপাসনা হইয়া থাকে, সমবেত উল্লাসন্ত্র ব্যক্তীত একাকী নির্জ্জনে উপাসনা করিবার রীতি সাধারণতঃ কোন পরিবারে প্রচলিত আছে কি না সন্দেহের বিষয়। এই সজন উপাসনা প্রধানতঃ পাশ্চত্যভাব মূলক। প্রাচ্য উপাসনার প্রধান অল নির্জ্জন আরাধনা। বহু পরিবার একারভুক্ত থাকার রীতি এদেশে বহুল পরিমাণে প্রচলিত; কিন্তু উপাসনার সময়ে পরিবারস্থ প্রত্যেক ব্যক্তি স্বতন্ত্র ভাবে নির্জ্জনে উপাসনা করেন। প্রাচ্য সাধকের সাধনা গোপনে সম্পন্ন হইয়া থাকে। এই উভয় প্রকার সাধন প্রণালীর আপেন্দিক ফল্ট্ডন বিচার করা বর্তমান প্রস্তাবের উদ্দেশ্য নহে। রাক্ষসমাজ এই উভয় প্রকার সাধনার রীতি একত্রে সম্মিলিত করিবার চেন্টা করিয়াছেন; এই সমরিত সাধন প্রণালী রাক্ষসমাজে প্রচলিত হইয়াছে; তাঁহার ফল সর্বাংশে শুভজনক হইয়াছে কি না একবার তাহা বিবেচনা করা অসাময়িক নহে।

প্রাচীন ঋষিরা একাকী একেখনে নিমগ্ন ছইবার আশায় জনসমাজ পরিত্যাগ করিয়া নির্জ্জন গিরিগুহার আশ্রেয় গ্রহণ করিতেন। সর্বাকর্ম পরিত্যাগ করিয়া সেই একমেবাদিতীয়ের ধ্যানে নিযুক্ত হইতেন। নানা চি স্তা স্লোতে মন ভাসিতেছে, তাহা হইতে মনকে কোন ক্রমে ফিরাইয়া লইতে পারিতেছেন না; মনের এই প্রাম্যমান্ গতি দূর করিয়া একাঞা ভাবে চিস্তা-শক্তিকে একমুগীন করিবার জন্য সাধক প্রাণপণ যত্ন করিতে-ছেন। এই অবস্থায় দিনের পর দিন, মাদের পর মাস ও বংসরের পর বংসর গত হইয়া যাইতেছে, তথাপি সাধকের চেষ্টার নিগৃত্তি নাই, কঠোর সাধনার পর সাধকের কামনা শ্লিদ্ধ হইণ, তিনি আপনার সমগ্র চিস্তাশক্তিকে একমুখীন করিয়া সেই একমেবাদিতীয়ের ধ্যানে নিযুক্ত হইতে পারিলেন; ভাঁচার জীবন সার্থক হইল। প্রাচীন ঋষির এই অকর্ম্মক জীবনাবস্থা পাশ্চাত্য ভাব বিভোর আধুনিক শিক্ষিত সম্প্রদায়ের বিশেষ মনঃপুত হইবার সম্ভাবনা নাই। অন্ধ্রজীবন মামুষের পক্ষে দশবৎসর নির্জনে নৈমিষারণ্যে অতিবাহিত করা জীবনের অপব্যবহার ব্যতীত আর কিছু নহে অনেকেরই সম্ভবতঃ এরূপ ধারণা জন্মিবে। কিন্তু অনেক সময়েই ইহা দেখিতে পাওয়া বায়, কর্ম্মই যাহার ধর্ম এবং জীবনের সর্ব্বপ্রধান লক্ষ্য। তিনিও সময়ে সময়ে কর্ম্ম-ক্লাস্ত হইয়া পড়েন। কিয়ংকাল অকর্মক অব-তায় নির্জ্জনে বাস করিয়া নববল সঞ্চয় করিতে অভিলাধী হন। মাপ্লবের এই আকাজ্ফার মূলে লক্ষ্য করিলে একটা নিগৃঢ় ভাব **पृष्टे ब्हेर्टिन, ८य ভাব মাত্র্যকে নির্জ্জন পথে চালায়; সংসারের** কোলাহল পরিত্যাগ করিয়া নিস্তরতার মধ্যে প্রবেশ করায়। কর্ম জগতে শক্তির প্রয়োজন ; শক্তি ভিন্ন কর্ম-দাধন হয় না। সঞ্জিত শক্তি যথন ক্ষয় হইয়া যায়, উঁথন নবশক্তি লাভের প্রয়ো-জন হয়। এই শক্তি লাভ হইবে কোথা হইতে? যিনি সর্কা শক্তির মূলাধার তাহা হইতে নববল দঞ্চয় করিতে না পারিলে ক্লান্ত সাম্য পুনরায় কর্ম-কেতে প্রবেশ করিতে সমর্থ হয় না। এই হেতু মাহুৰ ক্লান্তাবস্থায় সর্বক্লান্তিহারী প্রমেশ্বের আশ্রয় লাভ করিতে আকুল হয়; তাঁহার চরণে বিশ্রাম করিয়া নববল সঞ্চয় করে। কেবল নববল সঞ্চয়ের জন্যই কর্মাক্ষেত্র হইতে

भवनत क्षेत्र कतिया क्षेत्राकी क्षेत्रचार निमान सहै तोक अस्ति। করিতে হয়, তাহা নহে। একাপ্রতা ভিন্ন কর্ম সাধনা জনভত্ত 🗜 তুকর কার্য্য সাধন করিতে হইলে সমগ্র চিন্তা সমগ্র শক্তি অনি-" ছিল ভাবে তাহাতে নিবুক্ত করিতে হর। মা**হুবের চিক্তা**প্ত मिक्किरक अक्रमुथीन कृत्रिवात भिक्क अरक्षात निमय**्वहेवात** চেষ্টার স্থার এমন প্রশন্ত সাধনা আর কি আছে। বিনি এ সাধনায় সিদ্ধ হইয়াছেন তাঁহার পক্ষে জগতের সকল কার্যাই সহজ্বসিদ্ধ। এপথে অসিদ্ধ চেষ্টাও মাতুষের পক্ষে পরম মঙ্গল কর; চেষ্টায় যে শিকাটুক লাভ হইয়া থাকে, তাহা ভাহার চির জীবনের সম্বল হয়; কর্মকেত্রে ক্বতার্থতা লাভের পরম সহায় হয়। স্থতরাং যিনি এ সাধনায় জীবনের দশ বৎসর অতিক্রম করেন, তিনি রুখা জীবন নষ্ট করেন না, কর্মক্ষেত্রে সিদ্ধি লাভের মূলমন্ত্র শিক্ষা করেন। আমরা যে কর্মকেত্রেও দিদ্ধি লাভ করিতে পারি না, তাতার প্রধান কারণ এই বে. আমরা প্রকৃত সাধন শিক্ষা করি নাই। আমাদিগের জীব-নের লক্ষ্য ভাব-সমুদ্রে জলবুদ্ধ দের মত ভাসিয়া বেড়াইতেছে, এই আছে, আর এই লয় পাইতেছে। কার্য্যে সিদ্ধি লাভ कतिए इरेल चार्धा এरेक्स कर्कात माधनात श्राह्माजन। কেবল কর্মময় জীবনের পক্ষেও সময়ে সময়ে একাকী একে-খরে নিমগ্ন হওয়া যে প্রয়োজন তাহা দেখা যাইতেছে। কিন্তু মান্তবের জীবন কেবল কর্মময় নয়। অকর্মক শাস্থির অবস্থার জন্ম মাহুষকে লালায়িত হইতে দেখা যায়। শ্রমজীবী সমস্ত দিন কর্মক্ষেত্রে পরিশ্রম করিয়া ক্লাস্ত শরীরে গৃহাভিমুথে কি আশায় প্রত্যাগমন করিতেছে? গৃহে আদিয়া অকর্মক অবস্থায় সে শাস্তি হৃথ উপভোগ করিবে; পরিবারবর্ণের প্রেমপূর্ণ मूथ पर्यन कतिया ममल क्रिम रखना विश्व इहेरव। शृह ७ পরিবার এই কারণে কি এত মধুময় নহে ? কর্মাক্ষেত্র হুইতে অবসর লইয়া বহুদিন অকর্মাক শান্তির অবস্থায় এই পরিবার মধ্যে বাস করিতে পারিলে কেহ মনে করেন না যে তিনি আত্মজীবন বুথা নষ্ট করিতেছেন। ক্ষণভঙ্গুর গৃহ ও পরিবারে শান্তিতে বাদ করা যদি এত মধুময় হয়, তাহা হইলে জীবন-দাতা, দর্বান্থবের আধার প্রমেখবের দহবাদে তাহার চির-প্রেমময় পবিত্র গৃহে অবস্থিতি করিবার জন্ত সাধনার পথে य नमग्र अञ्चिताहिक कतिएक हम, जाहा तथा नहे हहेन हैहा মনে করা গুরুতর ভ্রম। সামাত্ত সাধনায় যদি এই মহাসিদ্ধি লাভ হইত, তাহা হইলে প্রাচীন ঋষিরা কঠোর সাধনায় নিযুক্ত হ'ইতেন না। ঋষিরা যে সাধনায় সিদ্ধ হ'ইবার জন্ত বহু বংসর একাকী নির্জ্জনে তপস্থা করিয়াছেন; অন্ত চিস্তা সংযত করিয়া এক চিন্তায় মনের একাগ্রতা সাধনের **জন্ম** डीशिमिश्तत्र शक्कि वहिम निर्कान वान धाराकन हहेगाहि, সেই সাধনা, সেই এক চিন্তামুসারিতা আমাদিগের স্থায় ত্র্বল-মানস লোকের পক্ষে অনায়াস লভ্য বস্তু হইয়াছে, ইছা অস্তু-চিত চিত্তে চিস্তা করিতে পারিলে স্থথের বিষয় হয় সম্পেহ নাই। কিন্তু ইহা ভাবিয়া দেখা উচিত ব্রাশ্বসমাজ অসভূচিত চিত্তে বলিতে পারেন কি না যে, প্রাচীন ঋষিরা ঈশ্বর ধ্যানে मध इहेरात अछ त्य कर्छात्र नाधना कतिशाहितन, तन नाधनात्र.

প্রাধেশন নাই, অ নহকে সহক উপার আবিহৃত হইরাছে।

রাধেশা আপনাবিগের চিন্তাপজিকে এমনভাবে আত্ম আরজানীর করিতে সমর্থ হইরাছেন যে, তাঁহারা মুহুর্ত্ত মধ্যে থানে,

নিমর্থ হইতে পারেন। এ কথা যে অধিকাংশ ব্রাহ্মই অসম্ভূতিত

চিন্তে বলিতে পারিবেন না, তাহা নিশ্চর। তাহা হইলে জিজ্ঞান্ত

সামাজিক অথবা পারিবারিক উপাসনার থান করিবার ব্যবস্থা
প্রচলিত করা কি সঙ্গত হইরাছে ? প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য উপাসনা প্রণালীর এই বিষম সমন্বর্ম কি শুভকর ফল উৎপর করিতেছে ? এইরূপে একটা অতি গভীর সাধনার বিষরকে কি

মতি লঘু বলিয়া প্রতিপর করা হইতেছে না। যদি তাহা
হয়, তাহা হইলে সামাজিক ও পারিবারিক উপাসনার ধ্যান
করার রীতি পরিত্যাগ করিয়া উহাকে গুল্গ সাধনার সামগ্রীরূপে গ্রহণ করা কর্ত্ব্য কি না প্রত্যেক, রাক্ষের চিন্তা করিয়া

দেখা উচিত।

मगादलाह्ना।

"স্বর্গের চাবি" নামে একখানি ক্ষুদ্র পুস্তক লানা স্বান্ধানি ক্ষুদ্র হাইলেও ব্যক্তর স্থানি ক্ষুদ্র হাইলেও স্থান ক্ষুদ্র হাইলেও স্থান ক্ষুদ্র হাইলেও স্থানি ক্ষুদ্র হাইলেও স্থানি ক্ষুদ্র হাইলেও প্রান্ধান সরল ভাষায় বিশ্বাস ভক্তি প্রভৃতি বিষয়ে উপদেশ প্রদান করা হইয়াছে। ধর্মসাধনে এরপ পুস্তক অনেক সময় সাধকের উপকারে আসিতে পারে। কিন্তু পুস্তকের নাম নির্বাচন সম্বন্ধে যেন কিছু বিবেচনার ক্রুটী হইয়াছে। "স্থাগের চাবি" নামটী হইতে যেন কেমন একটু গর্বের ভাব প্রকাশ পায়।

खगमः (भाषन ।

গত বারের ত রকৌমুদীতে সাধারণ বাহ্মসমাজের যে নিয়মাবলী প্রকাশিত হইয়াছে, তাহাতে ২২শ নিয়মে একটা ভূল হইয়াছে। উক্ত নিয়মে লিখিত হইয়াছে যে "কিন্তু কোন বিশেষ কারণ বশতঃ কার্য্য নির্বাহক সভায় উপস্থিত ঃ অংশ সভ্য অনুমোদন করিলে ব্যক্তি বিশেষ সম্বন্ধে এই নিয়মের ব্যতিক্রম হইতে পারিবে। কিন্তু "এই নিয়মের ব্যতিক্রম" এই কয়েকটা কথার পুর্বে "বয়স ও সভ্য থাকার কাল সম্বন্ধে" এই কয়েকটা কথা বসিবে।

ব্ৰাক্ষমমাজ।

কিন্তু ৯ই কার্ত্তিক বৃহস্পতিবার দিনাজপুর প্রবাদী শ্রীযুক্ত বাবু প্রসন্ধ কুমার বস্থ মহাশরের পুজের জাত কর্ম উপলক্ষে তাঁহার বাসাতে সঙ্গীত সংকীর্ত্তন এবং উপাসনাদি হইয়াছিল। শ্রীযুক্ত বাবু স্থ্বনমোহন কর মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন।

গত সদই কার্ত্তিক রবিবার শিলং প্রবাদী শ্রীযুক্ত বাব্ বৈকুণ্ঠ
নাথ দত্তের প্রথম পুত্র ও প্রথমাকস্থার নাম করণ সম্পন্ন হইয়া
গিরাছে। বৈকুণ্ঠ বাব্র ব্রাক্ষসমাজের সহিত যোগের পর এই
তাঁহার প্রথম অনুষ্ঠান। শ্রীযুক্ত বাব্ নীলমণি চক্রবর্ত্তী মহাশয়
এই অনুষ্ঠানে উপাসনার কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছিলেন। বালকের

নাম^{ৰ্} শ্ৰীমান্ ক্ৰোধ চক্ৰ ও বালিকার নাম শ্ৰীমতী চাকলত। রাখা হট্যাছে।

শ্রীযুক্ত বাধু নীলমণি চক্রবর্ত্তী মহাশর শিলং ছইতে চেরা-পুঞ্জি, মৌসমাই এবং শেলাপুঞ্জি প্রভৃতি স্থান পরিদর্শন করিতে গমন করিয়াছিলেন। তিনি ্ত স্থান সকলের বে কার্য্য বিবরণ জানাইয়াছেন তাহা ছইতে নিয়লিখিত সংবাদগুলি উদ্ভ কুরা গেল।

"চেরাপুঞ্জি—এপানে ছই দিন সভা হয়। অধিক লোক উপস্থিত হন নাই। অনেকে ব্যাক্তিন দ্বাৰ্থৰ হইয়াছে বলিয়া কাৰ্য্যোপলকে স্থানাস্তবে গমন কবিয়াছেন। ১০ জন ব্ৰাহ্ম এখানে আছেন।

মৌসমাই—শেলায় সাহবার সময় ছই দিন এবং ফিরিবার সময় দিন এখানে সভা হয়। আনেক লোক উপস্থিত হইয়া-ছিলেন। আনের স্থালোকও এই সভায় উপস্থিত ছিলেন। এখানে একটা সমাজ সংস্থাপিত হইয়াছে। ৬ জন প্রাক্ষিসমাজে যোগ দিয়াছেন। আরও আনেকে যোগ দিতে ইচ্ছা করিয়াছেন।

শেলাপুঞ্জি—এথানে ৯ দিন ছিলাম। এক প্রান্তে এক থাসিয়ার গৃহে ৫ দিন। অপর প্রান্তে চারি দিন। প্রত্যহ সভা হইয়াছে।
কোন দিন চারি ঘণ্টার অধিক কাল ব্যাপিয়া সভা হইয়াছিল।
কোন কোন দিন ছইবার সভা হয়। এথানে লোক সংখ্যা বিস্তর।
আমার বাসায় সমস্ত দিন,রাত্রি ১১।১১॥ পর্য্যস্ত লোক আসিয়াছে।
এক দিন খ্রীষ্টিয়ানদিগের সঙ্গে বিচার হয়। এই স্থানের ছই প্রান্তে
ছইটী সমাজ স্থাপিত হইয়াছে। তাহাতে ২০ জন যোগ দিয়াছেন।
আরও অনেকে যোগ দিতে ইচ্ছা করিয়াছেন। থাসিয়া ভাল
জানিলে থ্ব কাষ হইত। অতি স্কল্ব কার্যাক্ষেত্র। প্রাহ্মধর্ম্ম
যে স্বাভাবিক ধর্ম (Natural religion) ইছা ব্ঝাইয়া দিতে
পারিলেই লোক অধিক আকৃষ্ট হয়। অনেকে অনেক প্রশ্ন
করিয়াছেন। এক থাসিরা মূবক ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচার করিতে মনস্থ
করিয়াছেন। তাঁহার ভরণ পোষণের কোন উপায় হইলেই হয়।"

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় লাহোর নগরে গমনপূর্বক বেদকল কার্য্য করিয়াছেন.তাহা তাহার পত্র হইতে নিম্নে উদ্ব্ করা গেল। "১২ই অক্টোবর শনিবার—এখানকার সমাজগৃহে আমার ইংরাজীতে একটা বক্তৃতা হয়—বক্তৃতার বিষয়
Rovolution in Modern India, its bearings and its prospects
—"বর্ত্তমান ভারত-ক্ষেত্রে বিপ্লব ইহার গতি ও ইহার নিয়তি"
—উক্ত বক্তৃতাতে আমি এই কথাই বলিবার প্রয়াস পাইয়াছিলাম যে ভারতসমাজে বর্ত্তমান সময়ে যে পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে—ইহাতে কেবলমাত্র আমাদের রাজনৈতিক জীবনকে পরিবর্ত্তিত করিবে না কিন্তু আমাদের সামাজিক ও আধ্যায়্মিক জীবনকেও পরিবৃত্তিত করিবে। ভাবী ভারত স্বাধীনতা ও একতার ভিত্তির উপরে দাঁড়াইবে। পরাধীনতা ও জাতিভেদের ভিত্তি আর থাকিবে না।

১৩ই অক্টোবর—এথানকার সমাজে হিল্লিতে উপাসনা করি ও ইংরাজীতে উপদেশ দি। উপদেশের বিষয় ঈশ্বরে প্রকৃত বিশ্বাস থাকিলে—তাহা অনিবার্য্যরূপে কার্য্যে প্রকাশিত হয়। লোকিক গ্রন্থেনেকের উপর বিশ্বাস ও নির্ভর থাকাতেই সভা, স্মিতি, বিষয় বাণিক্যা, গ্রায়াত নিঃশক্ষে চলিতেছে। আজ যদি

124

কোথাও বিদ্রোহের জনল প্রজ্ঞানত হয়, গবর্গনেন্টের প্রতি
বিশ্বাস ও নির্ভর ভয় হইয়া যায়, অমনি বিষয়, বাণিজ্ঞা, গতায়াতে কত প্রভেদ লক্ষিত হইবে। সেইরূপ ঈশ্বরে যাহার
বিশ্বাস আভাবিক ও দৃঢ়। তাহার বিষয় বাণিজ্ঞা, গতায়াত,অশন
বসন, শয়নে সে বিশ্বাস প্রকাশ পাইবেই পাইবে। একটা
কুকুর অপর কুকুরদিগের হাতে পড়িলে কত ভয় পায়, কিন্তু
তাহার প্রভু আসিলে সেই কুকুরের কত বল আসে, বিশ্বাস ও
নির্ভরের এমনি গুণ। আমাদের প্রভু আমাদের নিক্টস্থ।
আমরা সেইরূপ বল পাই না কেন ?

১৪ই অক্টোবর সোমবার—এথানকার বাঙ্গালি স্কল্ল লোকদিগের জনা বাঙ্গালাতে "পূর্ব্ব পশ্চিমে ধর্মবিপ্লব" এই বিষয়ে
একটা বক্তৃতা করি। তাহাতে প্রায় শতাধিক বাঙ্গালি উপস্থিত ছিলেন। এথানে বাঙ্গালির সংখ্যা অধিক হইবে না,
তাঁহারা আমাদের প্রতি বিশেষ সম্ভাব প্রকাশ করিয়াছেন।
উক্ত বক্তৃতাতে ইংলও ও আমেরিকা প্রভৃতি স্থানে ধর্মভাবের
কিপ্রকার পরিবর্ত্তন ঘটিতেছে তাহাই কিঞ্চিৎ বর্ণন করা হইয়াছিল। ঐ সকল দেশের বর্ত্তমান ধর্মভাবের মধ্যে স্বাধীন চিত্তাপ্রবৃত্তি ও পরোপকার-প্রবৃত্তি বিশেষ প্রবল দৃষ্ট ইইতেছে।
এই হইটী ভাব বাঙ্গধর্মের মধ্যেও প্রবল। বাঙ্গধর্ম অভ্রান্ত
ওক্ত বা শাল্পের ধর্ম নয়, কিস্বা সন্ন্যাসীর ধর্মণ্ড নয়।

তৎপরে হুই এক দিন এখানকার সমাজের হুই এক জন সভোর বাড়ীতে পারিবারিক উপাসনা ও প্রীতি ভোঙ্গন প্রভৃতি হইয়াছিল।

১৯এ অক্টোবর—শনিবাব। এথানকার সমাজ গৃহে সার একটী ইংরাজী বক্তা হয়। বক্তার বিষয়—"The great problem in India"—"ভারত ক্ষেত্রে বর্ত্তমান সময়ে সর্বাপেক্ষা কঠিন সমস্যা কি ?"—এই বক্তৃতাতে নিম্ন লিখিত সত্যটা প্ৰকাশ করিবার চেষ্টা করা যায়। প্রাচীন ও নবীনে যে সংগ্রাম দাঁড়া-ইয়াছে, এই সংগ্রামের সমাধা কিরুপে হইবে, ইহাই সর্বাপেকা কঠিন প্রশ্ন। কেই বলেন প্রাচীন সব পাকুক, নবীন চাই না; সে আশা পূর্ণ হইবে না। কেহ বলেন নবীর সব আস্ক্র,প্রাচীন চাহি না, সে আশাও পূর্ণ হইবে না। জাতীয় জীবনের প্রয়োজনামু-भारत প্রাচীন ও নবীনের দশ্মিলন হইবে। কিন্তু কঠিন ধাতুদ্বয়কে সন্মিলিত করে কে ? অধিরই সে সাধ্য আছে। ভারতক্ষেত্রে এক নব অন্তরাগ্নি জাণিতে হইবে। কিন্তু এই অগ্নি কি প্রাচীন রোমের ন্যায় রাজনৈতিক ও জাতীয়তার অগি হইবে ? অগবা भक्त्यारम्त भर्यत नाग्य नव भर्य जात्वत अधि इहेर्त १ उपमश्कारत বলা যায় ভারতক্ষেত্রের কঠিন ধাতুপুঞ্জ যে অগ্নিতে গলিয়া মিশিবে, প্রাচীন ও নবীন মিলিয়া যাহাতে এক হইবে, তাহা নব আধ্যাত্মিকতার অগ্নি, ত্রাহ্মসমাজ সেই অগ্নি জালিবার চেষ্টা করিতেছেন।

২০এ অক্টোবর—রবিবার। এথানকার সমাজের উৎসব আরম্ভ হয়, সে দিন প্রাতে এথানকার সমাজ মন্দিরে বাঙ্গালা ভাষাতে বাঙ্গালিদের জন্য উপাসনা হয়। তৎপরে রাত্রিকালে ভিন্দীতে উপাসনা করি ও ইংরাজিতে উপদেশ দি।

२> এ অক্টোবর--- সোমবার। সমাজ মন্দিরে ইংরাঞ্জিতে

সংস্কৃত শাস্ত্র হইতে বচন উদ্ধৃত করিয়া ব্যাথ্যা করি, তাছাতে ঈশ্বরের সন্তা, স্বরূপ, উপাসনা, চিত্তগুদ্ধি, স্বর্গ, নরক এবং বৈরাগ্য প্রভৃতি বিষয়ে আন্ধাধর্মের মত কি তাহা ব্যাথ্যা করিয়া-ছিলাম।

২২এ অক্টোবর মঙ্গলবার—অদ্য এখানকার বাঙ্গালি ভজ-লোকগণ বিশেষ ভাবে আমাকে একটা প্রকাশ্ত স্থানে তাঁহাদের সহিত সম্মিলিত হইবার জন্য নিমন্ত্রণ করিয়াছিলেন। তদমুসারে এখানকার শিক্ষা সভা হল Sikha Sabha Hall নামক স্থানে বাঙ্গালি ভললোকদিগের এক সমিতি হয়, সেথানে আমি বঙ্গ দেশের বর্ত্তমান উন্নতির ইতিবৃত্ত বিষয়ে বক্তৃতা করি। তাহাতে গ্রাহ্মসমাজের সংক্ষিপ্ত ইতিবৃত্ত দেওয়া হয় এবং গ্রাহ্মসমাজ বঙ্গ দেশের সামাজিক উন্নতি বিষয়ে কি করিয়াছেন তাহা বলা হয়।

২৩এ অক্টোবর বৃধবার—সমাজমন্দিরে আর একটা বক্তা করি। বিষয়—The spirit giveth life.—ধর্মের বাহির ও ধর্মের ভিতর এই উভরে প্রভেদ কি তাহাই উক্ত বক্তৃতাতে প্রকাশ করা হইরাছিল। গত কল্য আমাদের প্রজেয় বন্ধু শ্রীযুক্ত বাবুনবীনচন্দ্র রায়ের দিতীয়া কন্যা শ্রীমতী ক্ষেত্র কুমারী ও শ্রীমন্ লক্ষীনারায়ণ চট্টোপাধ্যায়ের প্রথমা কন্যার নামকরণ কার্য্য সমাধা হইয়াছে। উপাসনা কার্য্য প্রজেয় প্রতারক শ্রীযুক্ত লক্ষণ প্রসাদ জী করেন। নাম আমি দি। কন্যার নাম কুমারী লতিকা চৌধুরী হইয়াছে।

২৬এ অক্টোবর শনিবার—পাশ্চাত্য দেশের ধর্মভাব ও তাহা হইতে আমরা কি শিক্ষা লাভ করিতে পারি (Religions Life in the West, what does it teach us) এই বিষয়ে লাছোর ব্রহ্মনিদরে ইংরাজিতে এক বক্তৃতা হয়। উক্ত বক্তায় এই বলা হয় যে পাশ্চাত্য ধর্মভাবের মধ্যে বর্ত্তমান সময়ে চারিটী ভাব বিশেষ প্রবল—

(১ম) শাস্ত্র নিরপেক্ষতা (Independence) (২ম) উদারতা (Catholicity) (৩ম) নরহিতেচছা (Philanthropy), ৪র্থ নীতি প্রবণতা (Morality) ভারতের ভাবী কালের জন্য যে ধর্ম আদিতেছে তাহাতে এই চারিটা বিদ্যান থাকা চাই। ব্রাহ্মনমাজ যে ধর্ম প্রচার করিতেছেন, তাহাতে এই চারিটা লক্ষণ বিদ্যান স্কুতরাং ব্রাহ্মধর্ম ভারতের ভাবীধর্ম।

২৭এ অক্টোবর রবিবার—অদ্য লাহোর সমাজের উৎসব দিবদ। এ দিন প্রাতে আমাকে উপাসনা করিতে হইয়াছিল।

মধ্যাহে শাস্ত্র হইতে পাঠ। হিন্দীতে এবং ইংরাজীতে ব্যাখ্যা।"

প্রেরিত পত্র।

পত্ৰ প্ৰেরক্দিগের মতামতের জন্ম সম্পাদক দায়ী নহেন () প্ৰদ্ধাম্পাদ তত্ত্ব-কোমুদী সম্পাদক মহাশয়

ममोर्भम्।

গত >লা কার্ত্তিকের তত্ত্তামূদীতে শ্রন্ধের বাবু সীতানাথ দত্ত মহাশয় কয়েকটা হেতু প্রদর্শন পূর্বক আমার সহিত বিধান বাদ সহকে তাঁহার আর তর্ক চলিতে পারে না; বজিরা তর্ক বন্ধ
করিতে ইচ্ছা করিরাছেন। তাঁহার প্রদর্শিত হেত্ওলি উপবৃক্ত
ছইলেও তাঁহার পক্ষে আরও কিছু বলা উচিত ছিল।
কারণ আমার প্রথম পত্রের উদ্ভারে তিনি যথন পত্র নিথেন,
ভাছাতে তিনি বিথিরাছিলেন যে আমার অনেক উক্তির সহিত
তিনি একমত। কিন্তু পত্রের শেষভাগে বলিরাছিলেন থে,
আমার সকল কথার উত্তর দিতে পারিলেন না, পরে সে সব
কথার উত্তর দিবেন। ২য় পত্রেও লিথিয়াছিলেন যে আমার
উত্তর পাইলে পরে অন্ত কথা বলিবেন। এখন কোন্ কোন্
বিষয়ে তিনি আমার সহিত একমত এবং কোন্ কোন্ বিষয়ে
ভিন্নমত তাহা জানা গেল না এবং সেকল বিষয়ের উত্তরও
পাওয়া গেল না। স্তরাং সীতানাথ বাব্র পক্ষে আরও কিছু
বলা সকত হইতেছে।

সীতানাথ বাবুর সহিত এখন যে বিষয়ে প্রশানতঃ তর্ক চলিতেছে; বাস্তবিক তাছাই আমাদের তর্কের মূল বিষয় নহে। তর্কের বিষয় বিধান কি ? তাহা এক কি বহু ? জাহা প্রময় সময়-ঘটতেছে কিছা নিতাই ঘটতেছে। সীতানাথ বাবুর মৃত এই ধে নি ত্য নৃতন বিধান হইতেছে। এই কণা বে সকলে বিখাস করেন না এবং তাঁহার নিজের পূর্ব্ব বিখাসের সহিত যে ইহার মিল নাই, তাহা প্রদর্শন করিবার জন্ম আমার ২য় পত্রে ভত্তকোমুদীর পূর্ব্ব সংখ্যা হইতে অনেক স্থান উঠাইয়া দেখাইয়াছিলাম। সীতানাথ বাবু অন্সের উক্তিগুলি সমর্থন করা আবশ্রুক মনেকরেন নাই। কিন্তু তাঁহার নিজের কথা বাহা উদ্ভুত হইয়াছিল তাহার সহিত এই নিত্য নৃতন বিধানবাদের সামঞ্জ্য আছে কি না তাহ। প্রদেশন করা কিন্তু উচিত ছিল।

এখন দীতানাথ বাবুর সহিত বিধান প্রকাশের রীতি সম্বন্ধেই তর্ক চলিয়াছে। বিধানের কর্তা যে পর্মেশ্বর এ কথায় তাঁহার সহিত আমার মতদৈধ নাই। বিধানের বীজ যে আত্মা স্টির দক্ষে দক্ষেই তাহাতে থাকে একথার আমি বিশ্বাস করি। সীভানাথ বাবৃও যে একবারে বিশ্বাস করেন না এমন নয়। কারণ তাঁহার লিখিত বিধানতত্ব নামক প্রস্তাবে নৃতন সতোর বাাথ্যায় যাহা বলিয়াছেন, আমি ভাছা আমার ২য় পত্রে উদ্ধৃত করিয়া দেখাইয়াছি। তত্তকীমূদীতে সম্প্রতি 'ঐশীশক্তি' বিষয়ে যে কয়েকটী প্রস্তাব লিথিত হইয়াছে তাহাতেও এ কথা স্বীকৃত হইয়াছে। কারণ ঐ প্রস্তা-বের একস্থানে লিখিত হইয়াছে যে "ঐশব্যক ভাব সকলের বীজ প্রত্যেকের হৃদয়েই নিহিত আছে ইহা সত্য" অন্তত্ত লিখিত হইয়াছে সকলের প্রকৃতিতেই দেবভাব বা ঐশীশক্তির অম্বর আছে ইহা সত্য" তবে এ বিষয়েও মত ভেদ দেখিতেছি না। এই যে বিধান ইহার প্রকাশ কি প্রণালীতে হয় ? সীতানাথ ব্ৰাৰ এই প্ৰকাশকেই বিধান বলিতেছেন এবং প্রেম ও পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশকে মনবের সম্পূর্ণ ইচ্ছা-নিরপেক বলিতেছেন। আমি আমার ২য় পত্রে এসম্বন্ধে কয়েকটা আপত্তি মাত্র করিয়াছিলাম এবং তৃতীয় পত্তেও এসম্বন্ধে কিছু লিখিরাছিলাম। আমার তৃতীয় পত্তের কথাগুলি হয়ত পরি-**ভার হর নাই।** তাই সে विषय এবারেও কিছ

লিখিতে হইল। "জান প্রেম, পবিত্রতার আনর্শের উদয়কে বলিবার কারণ এই **শানবইচ্ছাসাপেক** मिथिए शहि-एथिशन शतिलाग, यद्र किही, राथीरन चार्जास्क ব্যাকুলতা দেখানেই উচ্চ উচ্চ সত্য সকল প্রকাশিত হয়। যে বেখানে চেষ্টা নাই, আকাজ্ঞা নাই, এরূপ অলস, উদাসীন আআয় যে হঠাৎ জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশিত হইল এরূপ ঘটনা কখনও ঘটিতে দেখা বায় না। অহুগত জীবনেই সত্যের विकान हहेशा थाटक। अञ्चलक जीवत्नहे जेचदतत क्रिया कार्याकती. হয়। স্থতরাং দেখা বাইতেছে ইচ্ছুক, বছলীল, অহুগত জীব-নেই সজেব প্রকাশ হইরা থাকে। রীভিই যথন এই এপ যে ব্যাকুল—নিয়ত্যত্নশীল আত্মাতেই সত্যের প্রকাশ হয় তথন ইহা বলাও সঙ্গত যে 'ইচ্ছানিরপেক ভাবে কোন সভাই প্রকাশ হয় না। আমার কথা ২০১টা দুটান্ত षातां व व्याहेवात रहें। कतिरहि । विमानरा निकक ट्यंगीत मकन वानकरकर निका निर्छाहन। कि हु (य वानक छारा मता-যোগ পূর্ব্বক শুনে ভাহারই শিক্ষা লাভ হয়। যে তাহা না শুনিয়া অক্তমনম্ব হইয়া রুখা গল্লানোদে সময় কাটায়, ডাহার শিকা লাভ হয় না। এথানে দেখা যাইতেছে যে শিক্ষক সকলের শিক্ষারজন্তই উপদেশ প্রদান করেন যাহারা তাহাতে মনোযোগ করে তাহারাই শিথিতে পারে অন্যেরা যে শিথিতে পারে না তাহা শিক্ষকের অনিজ্ঞায় নয়, কিন্তু তাহাদের নিজের অনিজ্ঞায়। সূর্য্যোদয়ে দিক সকল প্রকাশিত হইলেও যদি কেত গুতের দ্বার অবরুদ্ধ রাথে তাহার পক্ষে স্মানো লাভ কথনই ঘটে না। এথানেও দেখা यारेटिक पाला (मध्या कर्रात काज। जारा मकलात क्रमुहे আসে। কিন্তু যে ইচ্ছা পূর্ব্বক গৃহের দ্বার অবরুদ্ধ রাখে, সে তাহা পায় না। আলো পাইতে হইলেই গৃহের দার খুলিয়া রাখা আব-শ্যক। আমার পূর্ব্ব পত্রে লিখিয়াছি যে অনেক সময় দেখা যায় যে অনক্রমনা হইয়া যথন কোন বিষয় চিস্তা করা যায়, তথন চক্ষু কর্ণ থোলা থাকিলেও দর্শন শ্রবণ ক্রিয়া সম্পন্ন হয় না। স্থতরাং (मधा याहेटलाइ हेळानिवरभक ভाবে हक् कर्ग (थाना थाकित्न अ দর্শন বা শ্রবণ জ্ঞান লাভ হয় না। আরে দৃষ্টাস্ত না দিলেও চলিতে পারে, আমি যাহা বলিলাম ইছা ছারাই বুঝা যাইবে যে কোন অর্থে জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতার আদর্শের উদয় সম্বন্ধে মানবের ইচ্ছার সাপেকতা আছে।

সীতানাথ বাবু তাঁহার পূর্ব্ব পত্রে লিখিয়াছিলেন যে "ইচ্ছাপূর্ব্বক চকু মেলিয়া থাকিতে পারি, কিন্তু তাহা জ্ঞানের আরু
যঙ্গিক ক্রিয়ামাত্র" অন্তর্ত্র "মনোরন্তি নে চালনাকরি ইহা
আধ্যান্মিক জ্ঞানের আরুষ্পিক ক্রিয়ামাত্র এই ক্রিয়া ঘটলেও
জ্ঞান না আসিতে পারে।" এখন জিজ্ঞাস্য এই চকু পূলিয়া
থাকিলেও এবং মনোরন্তি চালনা করিলেও জ্ঞান না আসিতে
পারে; কিন্তু এই সকল ক্রিয়া যাহাকে সীতানাথ বাবু আরুষ্পিক
ক্রিয়া মাত্র বলিয়া বাক্ত করিয়াছেন। তাহা না ঘটলেও জ্ঞানলাভ
সন্ত্রবপর কি না। দর্শন জ্ঞানলাভের পক্ষে চকু খুলিয়া রাথা
এবং আধ্যান্মিক জ্ঞানলাভের পক্ষে মনোরন্তি চালনা করা প্রতি
নিয়তই আবেশ্যক কি না। যদি আবেশ্যক হয়—যদি চকু না
খুলিলে দর্শন জ্ঞান লাভ না হয় এবং মনোর্তি চালনা ভির

আধ্যাত্মিক জ্ঞানলাভের সস্তাবনা না থাকে এবং এই চক্ষু খোলা ও মনোর্তি চালনা যথন আমাদের ইচ্ছাসাপেক তথন কিল্পপে বলা যায় আমাদের জ্ঞান ক্রিয়াগুলি সম্পূর্ণ রূপে ইচ্ছানিরপেক।

এখন সীতানাথ বাবু বলিবেন লোকে যাহা একবার জানিয়াছে, তাহাই অধিকতররপে জানিবার জ্বন্ত ব্যাকুল হইতে পারে, যাহা কখনও জানে নাই, তাহার সম্বন্ধে কোন हैक्का वा यद्न क्रिटी इ उदा मुख्य नग्न । भानत्वत अथरम स आप জ্ঞান জন্মে তাহা মানবের নিজ ইচ্ছার জন্মে না ইত্যাদি। এইরূপ যে কোন কোন বিষয় আছে তাহাতে সন্দেহ কি ? সহজ জ্ঞান—যাহা আত্মার স্ষ্টির সঙ্গেই জল্মে এইরূপ কোন বিষয় জানিবার পক্ষে অবশ্রই তাহার ইচ্ছার কোন প্রয়োজন ছিল না। কিন্তু দীতানাথ বাবু কি এইরূপ আত্মজ্ঞান লাভের স্থায় জ্ঞান লাভ এবং জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশ উভয়কেই একই শ্রেণীর বলিয়া মনে করেন ? যদি তাঁহার কথার অর্থ এইরূপ হয়, তাহা হইলে আমার আপত্তি করা অবশাই সঙ্গত হয় নাই। আমি প্রাথমিক আত্মজান লাভকে এবং জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশকে কথনই এজন্ত আদর্শ প্রকাশ সম্বন্ধেই একই শ্রেণীর মনে করি না। এবারকার পত্রে তিনি যে মৌলিক আপত্তি করিয়াছি। সাক্ষাৎ জ্ঞান লাভের কথা বলিয়াছেন তাহা কোন্ অর্থে বলিয়াছেন ? তাঁহার প্রথম পত্তে জ্ঞান প্রেম, পবিত্রতার प्यापन व्यकात्मत्र कथारे वित्राहित्तन। त्योनिक त्राकार জ্ঞান লাভের কথার উল্লেখ ছিল না। सोलिक माकार জ্ঞান লাভ আর জ্ঞানের আদর্শ লাভ উভয়কেই যদি একই অর্থে ব্যবহার করা তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল এবং তাহা যদি প্রথমেই প্রকাশ করিতেন, তাহা-হইলে হয়ত আমি এ তর্ক উপস্থিত করি-তাম না।

কোন বিষয়ের পরিকার জ্ঞান লাভের পূর্ব্বেও যে চেষ্টা
যত্ন হইতে পারে, তাহা বিশেষ বিশেষ সত্য যে প্রণালীতে
প্রকাশিত হইরাছে, তাহার আলোচনা করিলে এবং শিশুর
শিক্ষাপ্রণালী আলোচনা করিলেও জানা যাইতে পারে।
শিশু বিদ্যালয়ে যাইতেছে। কেন যাইতেছে? না সে শিক্ষা
করিবে। কি শিক্ষা করিবে সে তাহা জানে না। কিন্তু শিক্ষা করিবার
জন্তই যাইতেছে। এখানে দেখা যাইতেছে যে শিশু কি শিধিবে
তাহা না জানিয়াও শিথিবার জন্ত ইচ্ছা করিতেছে। শিশু অক
শিক্ষা করিবে; কিন্তু অন্ধ কি তাহা সে জানে না। এখন যদি সে
বলে অন্ধ কি আমি, যখন জানি না, তখন কি শিধিব
তাহা না জানিয়া শিথিব না। এরূপ শিশুর পক্ষে বোধহয় অন্ধ
শিক্ষা লাভ কথনই হয় না।

নিউটন দেখিলেন বৃক্ষ হইতে ফল ভূমিতে পতিত হইল।
কেন হইল? উর্দাকে না যাইয়া কেন ফল নিম্নদিকে ভূমিতে
পতিত হইল? তাঁহার প্রাণে এই প্রশ্নের উলয় হইল। তিনি কারণ
জানেন না অথচ কারণ জানিবার জন্ম তাঁহার ইচ্ছা হইল
বছ চিস্তা ও যত্নের পর তিনি ইহার কারণ অবগত
হইলেন এবং মাধ্যাকর্ষণ সম্বন্ধীয় নিয়মেয় আবিকার করিলেন।

বৃদ্ধ দেখিলেন লোকের নানা প্রকারের ছার্থ। রোগ, লোক জরা, যুত্ম এই গ্রুকা দেখিরা তাঁহার প্রাণে প্রস্ন হইল এ গর্কন ইইতে রক্ষা পাইবার কি উপার নাই ? মহম্মর আপ-নার দেখার লোকের ছাথ ছগছি দেখিরা তাহা নিবারণের জন্ত ব্যাকুল হইলেন। তাঁহার প্রাণে প্রকৃত ঈশর তম্ব জানিবার জন্ত ব্যাকুলতা আসিল। মনে এই সকল প্রশ্নের উন্য হওয়া এবং তাহার উত্তর পাইবার জন্ত ব্যস্ত হওয়া হইতেই জগতে জনেক সত্য আবিদ্ধুত হইরাছে। এ সকল স্থানেও দেখা বাইতেছে প্রকৃত বিবর জানিবার পূর্কেই জ্ঞানলাভের আকাক্ষার উল্লেক হইরাছিল।

कान विषय है का कतिया जाति—वा है का कतिया जाति मा। আমার কথা ঠিক এই ভাবের নয়। কিন্তু যেথানে ইচ্ছা নাই, আহু-গত্যও আশা নাই দেখানে যে ঈশ্বর জোর করিয়া তাহার ইচ্ছাকে উপেকা করিয়া কোন সভ্য প্রকাশিত করেন, এমন দৃষ্টান্ত দেখা যায় না.। নির্ভরশীল আত্মাতেই সত্যের প্রকাশ হইয়া থাকে। শিশু বেমন জানে না কি শিখিবে অথচ শিক্ষকের উপর নির্ভর कतिवाहे निधिए हैका करत . (जमनि मानवे क्षेथरमहै सारन না কোনু সত্য সে জানিবে কিন্তু তাহার শিক্ষাদাতা পরমেশরের প্রতি নির্ভর হইতেই তাহার শিক্ষালাভ হয়। সীতানাথ আবশ্রকতা প্রদর্শন জন্ত বাব ধর্মসাধন ও প্রার্থনার বলিয়াছেন "ঈশ্বর সম্প্রতি যাহা দিয়াছেন তাহা অপেক। অধি-কতর প্রাপ্তির আকাজ্ঞা করিয়া তাঁহার নিকট প্রার্থনা করাও আমাদের ইচ্ছাসাপেক" এখন কথা এই ঈুরুর যদি কোন চেষ্টা বা ইচ্ছা ভিন্ন ও কতকটা জানাইয়াছেন, পরে কি ইচ্ছা जिन्न बात कानाहरू পात्रन ना वा कानाहर्यन ना । यहि कानाह-বেন, তবে আর বুণা পরিশ্রম করিয়া সাধন করিবার কি প্রয়োজন আছে? আর সেই সময় মানব যাহা জানিয়াছে সীতানাথ বাবুর মতে ভাধু তাহার সম্বন্ধেই সে ইচ্ছা করিভে পারে। কিন্তু তাহার অধিক যে কি তাহা যথন জানে না: তখন কিন্ধপে সে সেই বিষয়ের জন্ম প্রার্থনা করিবে গ্রীতানাথ বাবর এই মতাত্মসারে প্রার্থনা বাধর্মসাধন পণ্ডশ্রম ভিন্ন আর কিছুই নছে। কোন বিষয় জানিবার জন্মও সাধন করিবার কোন বিশেষ প্রয়োজন দেখি না। কারণ "তিনি বলিয়াছেন কিন্তু বস্কটা একবার জানিলে তাহার সম্বন্ধে আর যাহাই করি, তাহাকে জ্ঞানের वाहित्त ज्यात त्न उत्रा यात्र ना।" यथन विना ८५ ष्टीय विना देख्यात्र যাহা জানিয়াছি, তাহা আমার জ্ঞানে সর্বাদাই থাকিবে, তথন তাহার জন্ম আর সাধন কেন।

আমি লিথিয়ছিলাম "কোথাও একের ইচ্ছায় কার্ব্য হয়
না" এই কথাটা সীতানাথ বাবুর ভাল লাগে নাই। আমি
পূর্ব্বে বে দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিয়াছি, তাহার প্রতি মনোযোগ
করিলেই বুঝা যাইবে কথাটা নিতান্তই অসকত নহে। ঈশ্বর
আলো প্রকাশ করিতেছেন, সকলের জন্তই আলো আসিতেছে।
কিন্তু যে গৃহের ঘার অবরুদ্ধ রাথে সে কি আলো পার ?
এথানে ঈশ্বরের ইচ্ছা আলো প্রদান করা। আমার ইচ্ছা
তাহার সহিত মিলিলে অর্থাৎ আমি হার প্রিয়া দিলেই আলো
পাইতে পারি। অন্তথা আলো পাই না। এথানে কি ছই ইচ্ছার গ
কার্য্য দেখিতেছি না ? তত্তকৌমুনীর গত সংখ্যায় "ঐশীশক্তি"
নামক প্রস্তাবে লিখিত হইয়াছে "চেষ্টা ব্যতীত শক্তির ফ্রণ
হয়্মনা, আবার শক্তি ব্যতীত চেষ্টারও ফ্রণ হয়না।" এখানেও

ছারের মিলমেই কার্য দেখিতেছি। শিশুর শিক্ষার দৃষ্টান্তেও তাহা দেখিতেছি। শিক্ষ শিক্ষা দিতেছেন বালক মন দিরা না ভানিলে সে কিছুই শিথিতে পারে না। স্তরাং শিক্ষ ও বালক উভরের ইচ্ছা মিলিলেই শিক্ষা হয়। অজ্ঞান জড়-পদার্থেরপ্রতিই জ্ঞানবানের ক্রিয়া সম্পূর্ণ একের ইচ্ছার হয়। কিছুই ইচ্ছারান, জ্ঞানবানের প্রতি জ্ঞানবানের ক্রিয়া কথমই সেরপ্রণাবে হইতে পারে না। মানবের স্বতম্র ইচ্ছা আছে ইহা যদি স্বাকার করা যায়, তাহা হইলে বলিতে হইবে সেই ইচ্ছা যথন স্বাকার করা যায়, তাহা হইলে বলিতে হইবে সেই ইচ্ছা যথন স্বাক্রেছার অন্থগত হয় তথনই তাহার ক্রিয়া আত্মার:প্রবল হইতে পারে, অক্সথা হইতে পারেনা। এই ইচ্ছার স্বতম্বতা বদি স্বাক্ষত না হর, তাহা হইলে সকল আপদই চুকিরা যায়। জার তর্কেরই বা কি প্রয়োজন থাকে ৪

দীতানাথ বাবু লিথিয়াছেন "প্রথমে যথন আত্মজান **ক্ষিটি** তথন ঈশবের ইচ্ছা ছাড়া আর কার ইচ্ছা ছিল ? যথন প্রথম **চকু খুলিল ত**থন কার ইচ্ছায় খুলিল ইত্যাদি"। মানবের আত্মজ্ঞান কার ইচ্ছার চুইল সে সম্বন্ধে কিছু ন। বলিলেও চলিতে পারে। কারণ আত্মজান শৃক্ত আয়াত সভাবে না। ্যথন আত্মার সৃষ্টি ঈশ্বর করেন তথন আত্মজ্ঞানও তাঁহা হইতেই আনে। কিন্ত জিজাদ্য এই আত্মার দহিত শরীরের যোগের পূর্ব্বেও কি কোন শরীর চকু থোলে ৭ যদি না থোলে তাবে বলিতে হইবে শরীরে আত্মার সঞ্চার হইলেই চকু থোলা প্রভৃতি আরম্ভ হয়। এখন জিজ্ঞাস্ত এই আত্মার ইচ্ছা ভিন্ন তাহার শরীরের কোন অঙ্গ প্রত্যঙ্গ কি চালিত হইতে পারে ? এন্থলে শরীরের মধ্যে एर मक्न चरेनिष्टिक यञ्ज आहि छोहात कथा वना हहेए हा জড়পদার্থ যেমন অন্ত শক্তিতে চলে শরীরও কি ঠিক তেমনই ঈশার-ইচ্ছাতে চলে ? যদি বলা যার শারীর চালনা সম্বন্ধে আত্মার कान रेष्क्रांत প্রয়োজনই নাই—সেই প্রথম অবস্থাতেও নাই, তবে আর এথানে আত্মা বলিয়া একটা কিছু মানিবার কি প্রয়োজন আছে ? যদি চকু থোলা প্রভৃতি কার্য্যে তাহার क्लान रेष्कारे हिल ना, वला याम्र जारा रहेरल रेहा । वितर हरेरव যে সে সময়ে তাহার চকু খুলিয়াগেলেও তদ্ধারা সে কোন জ্ঞানই লাভ করে নাই। কারণ যে জ্ঞান লাভ করিবে তাহার মনো-যোগ ভিন্ন কোন জ্ঞান জ্বিনার উপায় নাই। শ্রীব অর্থাৎ যদ্ভ মধ্যস্থ আছার মনোযোগ যথন তাহাতে আদে তথনই জ্ঞান লাভ হয়। আমি পূর্বের যে দৃষ্টাস্ত প্রদর্শন করিয়াছি অর্থাৎ অনস্তমনা হইয়া কোন বিষয় গাঢ়ভাবে চিস্তা করিলে চন্দু কর্ণ থোলা থাকিলেও যেমন দর্শন ও শ্রবণ জ্ঞান লাভ হয় না। এথানেও তেমনি বলিতে হয় শিশুর চকু খুলিয়া গেলেও তাহার মনোযোগ ভিন্ন সে কিছুই দেখিতে বা ভনিতে পায় না। মনোযোগ অবশ্যই ইচ্ছার উপর নির্ভর করে।

এখন যদি স্বীকারও করা যায় যে জ্ঞান, প্রেম, পবিত্রতার আদর্শ প্রকাশ সম্বন্ধে মানবের ইচ্ছার কোনই প্রয়োজন নাই। তাহা হইলে স্বভাবত:ই এই কথা উঠিবে যে তবে সকলে তাহা পার না কেন? দীতানাথ বাবু এই কথার উত্তরে বলিয়া-ছেন যে ঈশ্বর তাহাদের নিকট বিধান প্রকাশ করেন নাই তাহাতেই তাহারা জানিতে পারে নাই। ইহার পর যদি আমি বলি যে ইহা সকলের প্রতি সমান ব্যবহার নয়। এবং **অপক্ষপাতিতা ন**য় তবে সে কথার উত্তর দেওয়া সীতানাথ বাবু আবশ্রক বোধ করিবৈন না। কারণ ইহা বিচারের সোজাপথ নম। বক্রপথ। কিন্তু সীতানাথ বাবু এই পথকে বক্র বলিয়াও কিন্তু এই বক্রপথেই চলিয়াছেন—তিনি বলিয়াছেন ইহা যদি পক্ষ-পাতিতা তবে উহাও পক্ষপাতিতা। স্বাধীনতা যে বৈষম্যের কারণ নম তাহা দেখাইবার জন্ম তিনি বলিয়াছেন—পৃথিবীর ভিন্ন ভিন্ন স্থান কেন ভিন্ন ভিন্ন রূপ অর্থাৎ পৃথিবীর মেরু সন্নিহিত স্থান কেন এত শীন্তৰ এবং, বিষ্বরেখার সন্নিহিত স্থান বা কেন এত **উक्। हेरा कि विठा**दित शत्क वक्र श्रेष व्यवनायन नत्र १ छ द-

কৌমুদীতে ঐশীশক্তি সম্বন্ধে যে তিনটা প্রস্তাব প্রকাশিত হইরাছে।
তাহাতে ত কথার কথার এই প্রশালীতে বিচার করা
হইরাছে। তবে কেমন করিরা এই প্রশালীকে বক্রপথ বলিরা
উপেক্ষা করা যাইতে পারে ? তিনি বক্রপথ বলিরা যদি উত্তর
দেওয়া আবশ্রক বোধ না করেন, তাঁহার সে স্বাধীনতা অবশ্রই আছে। কিন্তু কথাটা অমীমাংসিত রহিরা গেল বলিতে
হইবে।

প্রাক্তিক বৈষ্ণ্যের জন্ম ঈশ্বরকে পক্ষপাতী বলিবার হেত নহি। কারণ ইশ্বর মানবকে জড়বৎ কোথাও ফেলিয়া রাখেন নাই বৈ দেঁ চিরকাল একস্থানেই পড়িয়া কাল কাটাইবে। বিষুবরেখার নিউটবঁতী স্থান, মেল পরিহিত স্থান, মরুমর প্রদেশ বা निव्रष्ठ कृषिकच्य विभिन्ने अन यपि मानत्वत्र शत्क এकाखरे । বাসের অনুপযুক্ত হয় এবং তাহা যদি নিতান্তই কষ্টকর হয় 😘 আধ্যাত্মিক উন্নতির পক্ষে বিষম অন্তরায় স্বরূপ হয়, তবে মানব (कन (भरेक्शन पित्रिकाांश कित्रिया माखिश्रर्ग क्यांन यात्र ना १ ঈশ্বর কি মানবকে কোন একস্থানেই চিরকাল বাস করিতে হইবে अन्नभ विवादिक ? वदः हैहा हहेट हैहाई भिका पिटाइन. তোমার বৃদ্ধি আছে আপন কল্যাণ বৃষিবার শক্তি আছে, স্থতরাং रायान रात टामात आचात कना। माधिक इत्र, रमधानहे তুমি যাইতে পার। শান্তিপূর্ণ স্থান বা নিরাপদ স্থানের কি অভাব আছে? তুমি যদি তোমার বৃদ্ধির দোবে কুন্থানকে বাদের জন্ম মনোনীত কর তাহাও কি ঈশবের দোব ? বাস্তবিক শীত গ্রীম প্রভৃতি প্রাকৃতিক বৈষম্যকে মানবের আধ্যাত্মিক উন্নতির বিশেষ অস্তরায় স্বরূপ বলিবার কি স্থবিধা আছে ৭ ধর্মলাভ नकन शास्त्र त्नारकत भरकरे महरत। मकन शासरे धार्त्रिक-গণ দৃষ্ট হইতেছেন। শীতাতপ কাহাকেও আধ্যাত্মিক উন্নতির পক্ষে বাধা দের না। বাহিক ত্রথ গ্র:খ এত অকিঞিৎকর विषय (य जाहारक भगनात मधा ना व्यानित्न । हिन्द भारत । স্থতরাং প্রাকৃতিক ভিন্নতাকে ঈশবের পক্ষপাতিত্ব বলিবার কি স্থবিধা আছে ?

সীতানাথ বাবু তাঁহার শেষপত্রে এমন কোন কোন কথা বিথিয়াছেন যাহা বাস্তবিক বলা সদত হয় নাই। তিনি এক হানে দিখিয়াছেন "আদিনাথবাবুর মতে জগতে বৈষম্য কেন ?" এই প্রশ্নের মীমাংসা না হইলে বিধানবাদ প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না"। আমি এইরূপ কিছু বিনিয়াছি বিলয়া ত মনে হয় না। আমি যাহা বিলয়াছি তাহার ভাব এই যে বিধান প্রকাশের যে রীতি সীতানাথ বাবু প্রদর্শন করিতেছেন, তাহা সত্য হইলে জগতের বৈষম্যের উপযুক্ত ব্যাখ্যা দেওয়া তাঁহার কাজ। যদি তিনি তাহা দিতে না পারেন তাহা হইলে তাঁহার প্রদর্শিত রীতি প্রকৃত নহে। বিধানবাদ প্রতিষ্ঠা হইতে পারে না এমন কি কিছু বিলয়াছি ?

আর একস্থানে বলিতেছেন "আদিনাথ বাবু বৈষম্যের একমাত্র কারণ ব্রিয়াছেন মহুষ্যের স্থাণীনতা।" আমি স্বাধীনতাকে যদিও বৈষ্ম্যের একটা কারণ বলিয়া বিশ্বাস করি। কিন্তু স্বাধীনতাই একমাত্র কারণ এরপ কোথাও বলিয়াছি বলিয়া মনে হয় না। আমার প্রথম পত্রে একস্থানে লিথিয়া-ছিলাম মানব যদি আপন হদমন্থিত সেই অমৃলা উপদেশ ও শাস্ত্র পাঠ করিতে যক্ত্র করে। সে যদি তাহার নিত্য সঙ্গা ও উপদেপ্তার সাহায্য উপযুক্তরূপে প্রার্থনা করে, তাহা হইলে তাহার কোন অভাবই থাকে না ইত্যাদি। মানুষ এই স্বাধীনতাও সেই সর্কাক্তিমান জন্মর হইতেই লাভ করিয়াছে। একমাত্র এই-ছলে ভিন্ন আর কোথাও স্বাধীনতা কথা ব্যবহার করি নাই। এপা-নেও নিজ নিজ উন্ধৃতি সম্বন্ধেই বলা হইয়াছে। স্থতরাং সীতানাথ বাবুর উক্তর্গ উক্তির কোনই হেতু ছিল না। স্বাধীনতাকে বৈষ-ম্যের একটা কারণ বলিয়া অবশ্রুই স্বীকার করি। কিন্তু একমাত্র কারণ বলিয়া কোথাও বলিও নাই এবং স্বীকারও করি না।

मास्यत यारीनजा देवस्मात वक्रमांच कांत्रण ना इट्रांग जारा य अकी कात्रण हेटा अश्वीकांत्र कतिवात छेशात्र नाहे। मानद्वत স্বাধীনতা অসীম নহে তাহাও সত্য। কিন্তু আধ্যাত্মিক বৈৰম্য त्कन हम १ कामता (पिथ (यथारन चांधीनका स्य भिन्नारण) অধিক প্রকৃটিত সেথানেই অধিক বৈষম্য—উদ্ভিজ্ঞগতে স্বাধী-নতা নাই। তাহারা একই নিয়মে বাড়ে একই নিয়মে অবস্থিতি ুকরে। তাহাদের আকার সম্বন্ধে প্রকৃতির বিভিন্নতা হইতে বে কিছু ভিন্নতা ঘটে তাহা ভিন্ন আর কোন বৈষ্ম্য নাই। ইতর প্রাণীজগতে পক্ষীদিগকে ত আমাদের চক্ষে একরপই দেখিতে পাই। তাহাদের স্বাধীনতাও সামায় ভিন্নতাও সামায়। অক্তাক্ত প্রাণী সম্বন্ধেও এইরূপই দেখা যায়। মামুষের সংহ্রাবে ষ্মাসাতে তাহাদের অনেক বৈষম্য ঘটে বটে। কিন্তু বনে স্বান্তা-বিক অবস্থায় তাহাও দেখা যায় না। দেখা গেলেও মানবের মধ্যে যেমন রাতদিনের মত প্রভেদ এমন প্রভেদ ত দেখিতে পাই না। এথানে স্বাধীনতা যে পরিমাণে অধিক বিকশিত বৈষম্যও তেষনি প্রবল। সীতানাথ বাবু তাহার পত্তে প্রদের মগেন্ত-নাথ চট্টোপাধ্যায় প্রভৃতি মহাশয়গণের শিক্ষার কথা উল্লেখ করিয়াছেন। দেখা যাক্ স্বাধীনতা বিষয়ে তিনিই বা কি বলিয়া-ছেন। তিনি তাঁহার ধর্মজিজ্ঞানা নামক গ্রন্থের ২য় ভাগে আত্মার স্বাধীনতা প্রমাণ করিয়াছেন এবং তাহার এই লক্ষণ লিথিয়া-ছেন—"মানবাত্মার নিজের শক্তি আছে, মানুষ আত্মশক্তি ছারা আপনাকে অন্ততঃ আংশিকরপে পরিচালিত করিতে পারে। মাত্র অস্ত কোন শক্তির সম্পূর্ণ অধীন নহে—মহুব্যের স্বতন্ত্র শক্তি আছে" ইত্যাদি। তৎপর পাপ কি ? এই প্রস্তাবে বলিয়াছেন "পাপ তবে কোথায় ? স্বাধীনভাবে ইচ্ছাপুৰ্বক উহাদের ক্রোধাদি ঋপুর অপব্যবহারে পাপ। মাতুষ অপব্যহার করে কেন ? স্বাবীনতা আছে বলিয়া"। আধ্যাত্মিক জগতে পাপ পুণোর বৈষম্যই প্রধান বৈষম্য। তা্হা যখন স্বাধীনতা হইতেই হয় তথন স্বাধীনতা যে আধ্যাত্মিক বৈষম্যের একটী কারণ তাহাতে সন্দেহ কি ৭ মান্ত্র যদি সর্বাং-শেই ঈশবের ইচ্ছাধীন হইয়া চলিত, তাহা হইলে কথনও জগতে পাপ সম্ভব হইত না। কারণ ঈশবের ইচ্ছা বা আফুগত্য হইতে পাপ হয় না। মাতুষ সম্পূর্ণরূপে ঈশ্বরের ইচ্ছাধীন হয় না বলিরাই এত গোলযোগ ও বৈষম্য। তাঁহার ইচ্ছা পাপ সৃষ্টি করে না। তবে মাছুষের স্বাধীনতা যে অসীম নহে। ইহা কেহই অন্বীকার করে না সে কথাটা না বলিলেও চলিত।

সীতানাথ বাবু আর একস্থানে বলিয়াছেন "তথন আদিনাথ বাবুর নিজেব মতেই আমার জানা বা অস্কুভব করা কেবল আমার কাজ নয়, ইহা ঈশ্বরেরও কাজ, তিনি জানাইলেন আমি জানিলাম" ইত্যাদি। এথানে সীতানাথ বাবু "কেবল" কথাটী কেন যে ব্যবহার করিয়াছেন বুঝিতে পারিলাম না। কোন বিষয় জানা কেবল আমার ইচ্ছাতে হয়, আমি কি তাহা বলিয়াছি ? ছই ইচ্ছার নিলনে শিক্ষা বা কাজ হয়, ইহাই বলিয়াছি। স্থতরাং "কেবল আমার কাজ" এই ভাবে কথাটী ব্যবহার করিবার কোনই হেতু দেখি না।

কোন প্রতিন সতা লোকে যথন শিক্ষা করে, তথন তাহা তাহার পক্ষেন্তন জানা হয়। কিন্তু সেই বিষয়টা ঈশ্বরের পক্ষেন্তন সৃষ্টি নয়, বলাতে আমি নিজ্ঞিয়তা ব্যঞ্জক শব্দ ব্যবহার করিয়াছি বলিয়া সীতানাথ বাবু লিথিয়াছেন। আমি যাহা বলিয়াছি তাহার অর্থ এই নয় যে তিনি কথন কথন কার্য্য করেন আবার কথন কথন করেন না। কিন্তু ন্তন ন্তন ব্যক্তিকে শিক্ষা দেন। শিক্ষার বিষয়টা নৃতন নয়। তাহা তাঁহার নৃতন সৃষ্টি নয়। এরূপ বলাতে কি ব্রিতে হইবে যে তিনি নিজ্ঞির। আমার কথাটা আরও পরিক্ষার করিয়া বলিতেছি। বেন জ্যানিতি শাস্ত্র যথন নৃতন প্রকাশিত হইল, তথন সেই প্রপ্ত উভরের সম্বন্ধেই তাহা নৃতন। কিন্তু পরে যথন নৃতন নৃত্ন লোককে তিনি তাহা শিক্ষা দিতে লাগিলেন তথন সেই বিষয়টা

যাহারা শিবিতে লাগিল ভাহাদের শিক্ষাই মৃতন। কিছু 🍴 বে শিকা দিলেন তাহার পক্ষে তথ্য আর বিষয়টা জ্যাতি শান্ত্র)নূতন নয়। তিনি পুরাতন বিষয়ই শিক্ষা দিলেন। সে পরমেশর আত্মার স্টিকালে তাহাতে যে দকল সভ্যের স্থলন করিয়াছিলেন পরে তদতিরিক্ত যদি **আ**র[্] স্টি করিরা থাকেন, তাহা হইলেই বলা ঘাইতে পারে य न्जन विधान रहि कतिलन। किन्ध यहि मिक्र न्जन किन्न স্টি না করিয়াও পূর্বাস্ট বিষয় সকল নৃতন নৃতন লোককে শিকা প্রদান করেন, তাহাকে নৃতন বিধান বলা উচিত ময়। পূর্বস্থ সত্যকে যে নৃতন নৃতন লোকে শিকা করি-फिल्ह मौजानार्थ वांत् यनि हेहारकहे विधान वनिरक हास्हन, অবশু তাহা বলিবার অধিকার জীহার আছে। কিন্তু ইহা কথনই বিধান নামে অভিহিত হয় না। সীতানাথ বাবু যদি দেখাইতে পারিতেন, যে ঈশার নিয়ত যে সকল বিষয় শিক্ষা-প্রদান করিতেছেন, তাহা পূর্বে আর কোন আত্মায় বিহিত ছিল না বা কেছ শিক্ষা করে নাই; নৃতন নৃতন লোকে যাহা কিছু শিথিতেছে তাহার সমস্তই নৃতন—ঈশরের পক্ষেও ন্তন স্টি, তাহা হইলে আমি সীতানাথ বাবুর কথা **যানিতে** অসম্মত হইতাম না। কিন্তু যথন তিনি নৃতন শব্দ ব্যবহার করিয়াও তেমন কিছু দেখাইতে পারিতেছেন না, তথন প্রত্যেক বাক্তির প্রত্যেক শিকাকেই নৃতন বিধান বলিতে যাওয়া কখনই যুক্তিযুক্ত নহে। ঈশরের কার্য্যের বিশ্রাম নাই,তিনি নিয়ত শিক্ষা দিতেছেন স্থতরাং ক্রিয়াশীলতার বিরুদ্ধে আমি কিছুই বলিতেছি

শীতানাথ বাবু তিনটী কারণ প্রদর্শন পূর্ব্বক আমার সহিত বিচার বন্ধ করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন সে বিষয়েও কিছু বলা আবশুক বোধ হইতেছে—তিনি প্রথম যে কারণটা প্রদর্শন করিয়াছেন তাহাতে আমার ক্রটা স্বীকার করিতে তিনি বে স্থলে ঘটনা শব্দ ব্যবহার করিয়াছেন সে স্থলে আমার জানা শব্দ প্রয়োগ করা উচিত হয় নাই। তবে এরপ ভ্রম হইবার পক্ষে যে কোনরূপ সম্ভাবনা আছে, তাহা স্বীনাণ বাবুর এবারের পত্র পাঠ করিলেও বুঝা যাইতে গাটক আমি আমার পূর্ব্বপত্রে এ বিষয়ে যাহা লিধিয়াছিলাম তাহা প্রত্যাহার করিতেছি।

দীতানাথ বাবু আমার একটী ভূল প্রদর্শন করিয়াছেন অর্থাৎ আমি লিথিয়াছিলাম সীতানাপ বাবু তাঁহার পূর্ব্ব পত্তে ঈশ্বরকে একরূপ পক্ষপাতী বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন ইত্যাদি। যে লেখা সম্বন্ধে এই কথা বলা হইয়াছিল সীতানাথ বাবু তাহা উদ্বত করিয়া দেখাইয়াছেন। স্কুতরাং আমি আর তাহা উদ্বুত করিলাম না। সীতানাথ বাবু ঈশবের অপক্ষপাতিতা প্রদর্শন कतिवात जञ्च किছू ना विनया यथन "यादा रुडेक" विनयारे कार्र হইয়াছেন তথন কথাটী একরূপ যে মানিয়া লওয়া চইল তাহাতে আর সন্দেহ কি ? ভাষা দারা ইহাই বুঝা যায় : প্রদর্শন করিয়াছেন তাহার ভাষা; য, তিনি যে দৃষ্টান্ত এরপ হয় যে ঈশ্বর সময়ে সময়ে আমাদিগকে ছঃথ দেন কেই কেহ মনে করিতে পারেন যে ইছা ঈশ্বরের দল্পাশীলভার বিরোধী। যাহা হউক হঃব প্রদর্শনটা নিঃসন্দেহ। এক্সপ লেখা হইতে যদি কেহ বলে যে লেখক ঈশ্বরের নিষ্ঠুরতা এক প্রকার শ্বীকার করিতেছেন; তাহাতে আপত্তি করিবার কি হেতু আছে ? সীতানাথ বাব্র ভাষাতে যাহা ব্ঝা যায় আমি তাহাই ব্যক্ত করিয়াছি। ইহাতে আমার এমন কি ভূল হইয়াছে যে তাহা আশ্চর্য্য ভূল নামে অভিহিত হইল।

নীতানাথ বাব্র সকল কথার উত্তর দিতে হইলে পত্র আরও বড় হইরা বার, এ জস্ত এবার এইথানেই শেব করা গেল, আগামীতে জন্তান্ত কথার অলোচনা করিবার চেষ্টা করিব।

. নিবৈদক আদিনাথ চট্টোপাধ্যার।

তত্ত্ব-কোমুদী

ধর্ম ও সমাজতত্ব বিষয়ক পাকিক পতিকা।

১২শ ভাগ। ১৬শ সংখ্যা।

১৬ই অগ্রহায়ণ শনিবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্ষা সম্বৎ ৬০

বাংসরিক শব্রিম মূল্য ২ৄ৷

মকন্দলে

প্রতি ধণ্ডের মূল্য

প্

কামনা। ওহে দেব, ভেঙ্গে দেও ভীতির শৃত্যল, ছিঁড়ে দাও লাড়েলর বন্ধন, সমুদার আপনারে 'দিই একেবারে-জগতের:পারে বিসর্জন। স্বামিন্ নিদেশ তব হৃদরে ধরিরা তোমারি নির্দিষ্ট করি কাজ---ছোট হোক্, বড় হোক্পরের নয়নে পড়ুক বা না পড়ুক, তাহে কেন লাজ। ভূমি জীবনের প্রভু, কব ভৃত্য হরে বিলাইব বিভব তোমার আমার কি লাজ আমি ততটুকু দিব তুমি দেছ যে টুকুর ভার। ভূলে যাই আপনারে যশঃ অপবাদ কভু যেন শ্বরণে না আসে প্রেমের আলোকে দাও নির্ভরের বল, তোমাতেই ভৃপ্ত কর দাসে।

আলো ও ছায়া

নিবেদন ও প্রার্থনা।—হে প্রাণারাম প্রমেশ্বর!
আমরা কি বৃথা আশার আশার এপথে চলিরাছি? আমাদের
আশা পূর্ণ হইবার কি কোন সম্ভাবনা নাই? এমন কি ঘটিবে
যে উপাদনা প্রার্থনা প্রভৃতি সমস্তই আমাদের কেবল
পশুশ্রমে পরিণত হইবে? মৃগ যেমন তৃষ্ণাকুলচিতে মরীচিকার
পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিয়া শেষে নিরাশ হয়, আমরাও কি
তেমনি বৃথা কারনিক বস্তুর পশ্চাতে যাইতেছি? মরীচিকা
যেমন জলাশা প্রদান করিয়া শেষে নিরাশ করিয়া ফিরাইয়া দেয়,
আমাদের কি দশা তেমনি হইবে? মরীচিকার ন্যায় তৃমিও
কি অবস্তু সরীচিকা য়েমন বস্তুর আকার ধারণ করিয়া থাকে,
কিন্তু বাস্তবিক সে কিছুই নয়, তৃমিও কি সেইরূপ। না, এমন
অবস্তুর পশ্চাতে—এক্নপ ছায়ার পশ্চাতে আমরা যাইতেছি না,
তৃমি বাস্তবিকই আমাদের প্রশাস এবং পরিতৃপ্তি। হে প্রভু, কবে

সেই শুল দিন স্থাসিবে বে দিন আমরা ভোমাকেই বস্তর্গণ কানিরা কৃতার্থ হইতে পারিব ? এখন যে ভাবে ভোমার কথা বলি বা শুনি যেন অবস্থার বিষয়েই বলি বা শুনি। এমন অবস্থাতেই দিন যাইতেছে। হে সারাৎসার, শীঘ্র সেই দিন আনরন কর যে দিনে আমাদের মনের সকল ক্ষোভ দূরে যাইবে। আমরা বাস্তবিক প্রাণারাম ও পরিভৃত্তির হেতু রূপে ভোমাকে লাভ করিয়া কৃতার্থ হইব।

সম্পাদকীয় মম্ভব্য ।

ত্রাক্ষবালক বালিকাদিগের শিক্ষা—কলিকাতাত্ব ব্রাহ্ম-গণের বিক্লকে সচরাচর এই একটী অভিযোগ হইয়া থাকে যে তাঁহার। অস্তান্ত স্থানের ব্রাহ্মগণের সম্বন্ধে উদাসীন। বিশেষতঃ মফ-স্বলস্থ ব্রাহ্মগণের পুত্র ও কস্তাদিগের শিক্ষার কোন সহপায় অব-লম্বন সম্বন্ধে কলিকাতার ব্রাহ্মগণ উদাসীন্ত প্রদর্শন করিতেচেন। মফস্বলস্থ ব্রাহ্মগণ প্রামে বা অন্তান্ত নগরে থাকিয়া আপনাপন বালকবালিকাদিগকে শিক্ষা প্রদান সম্বন্ধে যে সকল অসুবিধা ভোগ করিতেছেন, তাহার প্রতিকারের জন্ম যথন বিশেষ কোন আয়োজন হইতেছে না তথন মদস্বলম্ব ব্রাহ্মগণের এরূপ অভিযোগ করিবার যে কোনই হেতু নাই তাহা নহে। কলিকাতান্থ ব্রাহ্মগণ এসম্বন্ধে নিতাস্ত উদাদীন না হইলেও কার্য্যতঃ তাঁহারা বিশেষ কিছুই করিতে পারিতেছেন না। যে অভাব মদস্থলম্ভ ব্রাহ্মগণ তীত্ররূপে অন্নভব করিতেছেন, সে অভাবের প্রতিকার করা যে ভদ্ধ তাঁহাদের পক্ষেই কঠিন সমস্তা এমন নয়, কিন্তু সমস্ত ত্রাহ্ম-সমাজের পক্ষেই এই প্রশ্নের মীমাংদা করা একটী বিশেষ কঠিন ব্যাপার হইয়া পড়িয়াছে। কলিকাতা এবং অন্তান্ত সহরের স্কুল এবং কলেজে, সাধারণভাবে বালকগণ শিক্ষা করিতে পারিলেও নানা কারণে এই সকল স্থল কলেজে বালকদিগকে পাঠান স্থবিধা-জনক নয়। বালকদিগকে স্থনীতিপরায়ণ করিবার পক্ষে বর্ত্তমান সময়ের নানা প্রকৃতির বালকদিগের সহিত মিলিতে দেওয়া প্রার্থ-নীয় নয়। বিশেষত: যে সময় অনুকরণ প্রবৃত্তি প্রবৃণ থাকে, ष्मथे ऋपर्थ होनाहै यो द्र क्या विरमय दियान छे पात्र था दिन ना, এমন অবস্থার কুসংসর্গ বিষম অনিষ্টের কারণ। শৈশবাবস্থায়

क्नामर्ग हहेरा य विव छाहारमत्र खार्य नक्षाति हहेना बारक, তাহার জালা বহদিন পর্যান্ত ভোগ করিতে হয়; এমন কি व्यानकहरण मःरामाधन व्यमञ्जय इहेन्ना भएए। এই मकन কারণে বালকদিগের শিক্ষার বিশেষ স্থব্যবস্থা করা আবল্পক হইরা পড়িরাছে: এ বিষয়ে কলিকাতা ও মফ**ন্দলবাসীগণের** नकरनतरे व्यवहा नमान। देशत श्रीठकात कतिए रहेरन সকলের সমবেত চেষ্টার বিশেষ প্রয়োজন। উপযুক্ত লোক এবং অর্থসংগ্রহ ভিন্ন এরূপ ১৪কতর বিষয়ের বিশেষ স্থবন্দোবস্ত क्टेगांत जामा नाटे। উপরে বালকদিগের শিক্ষার সম্বন্ধে যাহা বলা হইল,বালিকাদিগের শিক্ষা সম্বন্ধে সেরূপ বিষম কাঠিন্ত না থাকিলেও অক্সবিধ এমন বহু অস্থবিধা আছে, যাহার প্রতি-কার হওয়া একান্ত প্রার্থনীয়। এ বিষয়ে আমরা গত ১৬ই আবাঢ়ের তত্তকোমুদীতে আলোচনা করিয়াছিলাম। স্থতরাং তাহার প্নরুলেথ নিষ্পু য়োজন। আমরা আশা করি আগামী উংসবের সময়ে ব্রাহ্মগণের যে সন্মিলন হইবে, তাহাতে এই বিষয়ে কার্য্যতঃ কোন উপায় অবলম্বনের জন্ম বিশেষ ভাবে আলোচনা হইবে। এরূপ গুরুতর বিষয়ে ব্রাহ্মগণ যদি কোন কারণে উদাসীন হন তাহার বিষম অনিষ্ট ফল প্রতি পরিবারকে বিশেষ ভাবে ভোগ করিতে হইবে। স্থতরাং এমন সাধারণ-প্রব্যেজনীয় বিষয়ের আলোচনায় যেন আমরা উদাসীন না হই।

ত্রান্ধ বালক বালিকাগণের শিক্ষার স্থবন্দোবস্ত করিবার কথা উপস্থিত হইলেই একদিকে যেমন উপযুক্ত লোকের স্বভাব বিশেষ ভাবে অনুভূত হয়, অপর দিকে তেমনি অর্থাভাবের কথা বিশেষ ভাবে অঞ্ভূত হইয়া থাকে। উপযুক্ত লোকের কথা এখানে বিশেষভাবে আলোচনা না করিলেও চলিতে পারে। কারণ এখন বাঁহারা আছেন তাঁহাদের দ্বারাই কার্য্য সাধন করিতে হইবে। ইহাপেকা উপযুক্ত লোক ত হঠাৎ গড়িয়া লইবার সাধ্য নাই। কিন্তু অর্থাভাবমোচন আমাদের যত্ন চেষ্টায় হইতে পারে এবং এরপ যত্ন চেষ্টা না করিলে কথনই আপনা হইতে অর্থ সংগৃহীত হইবে না। এরপ কার্য্যের জন্ম অর্থ সংগ্রহের প্রতিও य जामारनत 'छेनानीना जारक ठाहा वास्त्रविकटे जामारनत হীনতার পরিচায়ক। এমন গুরুতর বিষয়ের জন্তও যদি ব্রাহ্মগণ সাধ্যামুসারে অর্থ সাহায্য করিতে উন্মুক্তহন্ত না হন, যদি এমন সাধারণ-স্বাধ-সিদ্ধির জন্মও তাঁহারা আপনাপন कर्खेरा भानत्न উनामीन शास्त्रन, जाहा हहेत्न अहे खेनामीत्ना প্রত্যেকের ভাষীবংশীয়দিগকে যে কি বিষম বিপদে পড়িতে हरेदा, जारा कि आवात्र विराध कतिया गाथा कतिए हरेदा ? আমরা আশা করি এমন সাধারণ-প্রয়োজন স্থলে অর্থ সাহায্য করিতে সকলেই আপনাপন উপযুক্ত তাতুসারে প্রস্তুত হুইবেন। দাধারণ বাহ্দমাজের কয়েক জন সভ্য ইতিপুর্কে যে ভাবে সমাজের কার্য্যের জন্ম আপনাপন আরের নির্দিষ্ট অংশ প্রদান করিতে অঙ্গীকার-বন্ধ হইয়াছেন, সেদ্ধপ কোন উপায় সকলে त्यक्कार्श्वक व्यवनद्य ना कतिता कथनरे छेशयुक्त व्यर्थ मः हा-নের বিশেষ আশা নাই। সাধারণ আক্ষসমাজ সকল বিষয়েই যদি সাধারণের সাহায্যে কার্য্য সকল সম্পন্ন করিছে পারেম,

जाबाब्हेलाई हेरात्र नात्मत्र टाइन्ड मार्थक्ना रह। नकलात्र মিলিত চেষ্টা কুল্ল হইলেও ভাহা হইতেই মহৎ কাৰ্য্য সাধনের স্ত্রপাত হইরা থাকে। বিশেষতঃ প্রত্যেক প্রয়োজনীর কার্রোই সামান্য হটরাও কিরৎপরিমাণে সহায়তা করিতে সমর্থ হটয়াছি. এরপ চিন্তা প্রত্যেকের পক্ষে আত্ম-সম্ভোষ লাভের কারণ হয়। এজন্য আমরা উক্ত প্রকারে অর্থ দানের বিশেষ উপযোগিতা অমুভব করিতেছি। সকলের প্রদত্ত অর্থ অবশ্যই সাধারণ প্রয়ো-ज्ञात वाविक हरेत्व अवः वानक वानिकामित्रात्र निका अवनाहे একটা সাধারণ-প্রয়োজনীর বিষয়। এজন্য উক্তরূপে সংগৃহীত অর্থের কতক অংশ বাহাতে বালক বালিকাদিগের শিক্ষার জঞ্জ ব্যন্তিত হইতে পারে তাহার ব্যবস্থা করা আবশ্যক। বর্তমান সমরে বাঁহারা নির্দিষ্টহারে আপনাদের আয়ের কোন অংশ সমা-জের কার্যে)র অস্ত্র দান করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন, তাহাতে অতি দামান্য অর্থের দংস্থান হইতে পারিবে। স্কুতরাং আগামী মাংলাৎসবের সময় ব্রাহ্মগশের সন্মিলনে বাছাতে এবিষয়েরও বিশেষ আলোচনা হয় এবং কার্য্যতঃ কল্যাণকর উপায় সকল অবলম্বিত হয় তাহার জন্যও বিশেষ চেষ্টা করা আবশ্যক।

মৃত পরিবর্ত্তন—"লিবারেল" পত্রিকার "বিবিধ চিস্তা" প্রসঙ্গে বাবু কৃষ্ণ বিহারী সেন মহাশন্ত সর্কোৎকৃষ্ট ধর্মসমাজ-শাসন-প্রণালী সম্বন্ধ নিম্নলিধিতরূপ মত ব্যক্ত করিয়াছেন—

"मधावखीँ पथ-- वर्थाः नियम उद्ध श्रानीहे मर्स्कारक है: এই উপারেই আমরা বর্দ্ধিত হইয়াছি। একমাত্র নিয়মতন্ত্র-প্রণালীই আমাদের ধর্মের অনুযায়ী—কারণ এই প্রণালীতেই সামঞ্জ দেখিতে পাই। ইহা সকল লোক, সকল সম্প্রদায় ও সকল শ্রেণীর কল্যাণ লইয়াই গঠিত। বিশেষ আদেশ বিশেষ কার্যাণীলতা, উচ্চতর ক্ষমতা, ব্যক্তিগত বিশেষত্ব প্রভৃতি সম্দায়ই এথানে ক্রি পায়। এথানে সাধারণ ও ব্যক্তিগত বিকাশ দেখিতে পাই। এইরূপ একটি সম্প্রদায়ে ব্যক্তিগত নেতৃত্ব বিশেষ আতঙ্কের কারণ হইতে পারে না, কারণ নিয়মতন্ত্র প্রকৃতিরই বিকাশ মাত্র—বেখানে প্রকৃতি সেইখানেই ঈশবের মঙ্গল হস্ত কার্য্য করিতেছে,—সেইখানেই বিশেষ অভাব মোচনের জন্ম বিশেষ ক্ষমতা প্রাপ্ত ব্যক্তির জন্মগ্রহণ দেখিতে পাই। ঈশরের মঙ্গল অভিপ্রায়কে কি আমরা পরিহার করিতে পারি ? यनि मेचत कर्ज्क निर्मिष्ठ श्रेश (कान क्रुडी आसारमञ्ज মধ্যে দণ্ডারমান হয়েন—আমরা কি যুক্তি তর্ক বারা তাঁহার আবির্ভাবকে তুচ্ছ করিতে পারি? ভগবান করুন ক্ষণজন্মা ব্যক্তিদিগের প্রাচুর্য্য আমাদের নিরমের অন্তর্গত হউক-শ্রেষ্ঠ-তম ব্যক্তিগণ আমাদের সমাজের শোভা বৰ্দ্ধন কক্ষন। আমাদের मार्था (कर निका हरेटि भारतम मा, रेहा लांख ও आयोक्तिक কথা--- যত শীল্প বিশাসী ভাইগণ এই ত্ৰান্তি হইতে মুক্তি লাভ করেন ততই মঙ্গল।"

শ্রীযুবন বাবু ক্লফ বিহারী সেন মহাশয় নববিধান সমাজের
মধ্যে একজন লব্ধ-প্রতিষ্ঠ ও প্রভাবশালী ব্যক্তি। স্বতরাং তাঁহার
মতের যথন উক্তরূপ পরিবর্ত্তন দেখা যাইতেছে, তিনি ধর্ম্মসমাজের
শাসন জম্ম "নিয়ম তন্ত্র প্রণালীকে যথন সর্কোৎক্লই বলিয়া বর্ণনা

क्षान्त्रभाष्ट्री ।

क्षितास्त्र, उथन चाना करा यात्र मध्विधान नवास्त्र चडांड रकुत्रमञ् क्रारम क्रारम निवयण्य धार्यामी प्रकृतास नमारकत कार्या চালাইতে আছত হইবেন। মবৰিধাম লমাজের মধ্যে এখন विकास विमुख्यमा উপস্থিত इटेबाएइ, এ व्यवस्था यनि खाँहां हा নির্মত্ত্র প্রণালী অনুসারে কার্য্য করিতে প্রবৃদ্ধ হন, তাহা হইলে मि:मरभवताल वना वाहेरक शांत **डाँ**हाता नमशिकताल शर्क প্রচার প্রভৃতি কার্য্যে দক্ষতা দাভ করিতে পারিবেন এবং গাধারণ বালসমাজের সহিত এখন তাঁহাদের যে অনৈক্য আছে তাহাও আর থাকিবে না। আমরা ক্লবহারী বাবুর একপ यक श्रीवर्खान विष्ये जामिक इट्योहि । এवः छाटात अक्रश মত পরিবর্ত্তনকে ত্রাক্ষগণের মধ্যে যে অনৈক্য আছে তাহা पृत হইবার পূর্ম্মলক্ষণ বলিয়া মনে করিতেছি। নববিধান সমাজে কৃষ্ণবিহারী বাবুর যে প্রভাব আছে, তাহাতে সহজেই আশা इय, छोडांत धरे भतिवर्जन बाता नवविधान नमाक नएश विश्वय পরিবর্ত্তন ঘটিবে এবং সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের উৎপত্তিকে এত-निम नवविधान नमार्कत्र वकुगन द्व विरवसमूनक वनिका क छिक्छ क्तिएक हिरमन, अथन जात्र (मक्तभ मरम क्तिरवंन ना अर' नित्रम-তত্ত্ৰ প্ৰণালীই যে বৰ্তমান সময়ের সম্পূর্ণ উপযোগী সে বিষয়ে ष्यात छांहारनत्र मत्मर शांकरवना।

একেশ্ববাদীগণের সন্মিলন—আগামীজাতায় মহা-সমিতির অধিবেশনের সময় বোখাই নগরে ভারতীয় একেশ্বর বাদীগণেরও একটা সন্মিলন সমিতি ছইবে। ইতিপূর্বে উক্ত সমিতির সম্পাদক মহাশয় প্রতিনিধি পাঠাইবার জন্ম প্রত্যেক ব্রাহ্মসমান্তে যে পত্র লিথিয়াছিলেন তাহাতে একটা অমুরোধ এই ছিল যে. তাঁহারা সেই সঙ্গে উক্ত সমিতিতে কি কি বিষয়ের সালোচনা হইবে তাহাও যেন নির্বাচন করিয়া পাঠান। বোষাই প্রার্থনা সমাজের সম্পাদক মহাশয় উক্ত সমিতিতে ৫টী বিষয়ে আলোচনার জন্ম প্রস্তাব করিয়া পাঠাইয়াছিলেন। গত ১৬ই আখিনের তত্তকৌমুদীতে তাহা প্রকাশিত হইয়াছে। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্বাহক সভা বর্ত্তমান সময়ে সেই পাঁচটা বিষয়ের মধ্যে ১ম, ২য় এবং ৪র্ঘটার আলোচনা ছওয়া विश्नव स्वविधाननक मरन करतन नाहे। कात्र वेस विषय कर्री সম্বন্ধে একমত হইয়া কাৰ্য্য ক্রিবার অবস্থা এখনও ভারতীয় একেশ্বরবাদীগণের পক্ষে উপস্থিত হয় নাই। এই সমিতিতে এমন क्षकन विषयात्र आत्नाहनाहे रूखना आवश्चक, गाहाटड मकन স্মাক একমত হইরা কার্য্য করিতে পারেন। একতা সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্কাহক সভা বোম্বে প্রার্থনা সমাজের সম্পাদক মহাশয়ের প্রস্তাবিত ৩য় এবং ৫ম বিষয় এবং নিম-विधिত करत्रकी विषद्र जारनाहनात जन्न मरनानी ज कतित्राह्न। আমরা আশা করি অফ্রান্ত সমাজ সকলও এই ঋকতর বিষয়ের প্রতি মনোনিবেশ করিবেন।

>ন--একমেবাদিতীয়ং---স্বিধরের উপাসক এবং বাঁহারা শাস্ত্রের জন্ত্রাস্ক্রান্ধ্রাস করেন না। এমন একেশ্বরাদীগণের একটা তালিকা সংগ্রহ করা। ংর। উক্তরণ একেশ্বরবাদীগণের উপাসনার জন্ত ইংরাজি ভাষাত্র একথানি উপাসনা প্রভির পুরুক প্রণরন করা।

ওর। ভারতবর্ষীর একেখর বাধী সমাজ সকলের মধ্যে সন্মিলন ও সদ্ভাব ভাপনের উপায় সম্বন্ধে আলোচনা করা।

मन्त्रापकोग्न ७ वाश वामा -

মনছৈৰ্য্য অস্বাভাৰিক বা অসম্ভব ব্যাপার নহে।

निভাক চঞ্জান্তি बि । याहाता—याहारमत मन मृहूर्त्क मूहार्ख विषय श्रेरण विषय छात्र ााशृष्ठ श्रेरण ह्न, याशामिशत्क অতি অল্ল সময়ও একটা বিষয়ে আবদ্ধ করিয়া রাখা যায় না: ভাহার:ও যথন দ্ধপকথা প্রবণ করিতে থাকে, ভাহাদের ঠাকুর মা কিম্বা গরিবারস্থ আর কাহারও মুথে যথন গল শুনিতে থাকে তুগন তাহারা কেমন নিবিইচিত্ত। কেমন গুলীর ভাবে সেই রূপকথার প্রত্যেক বাক্য শ্রবণ করিবার জন্ম উৎ-কর্ণ হইয়া বক্তার মূথের দিকে তাকাইয়া থাকে। সেই সময় যদি কোনকপে গল্প শুনিবার পক্ষে বাধা দেওয়া যায় কেমন তাহারা বিরক্ত হইয়া সেই বাধা প্রদানকারীর প্রতি মনের অভুত্রিম বিরক্তি প্রকাশ করিয়া থাকে। তথন কিছুতেই সেই সহজচঞ্চমনা শিশুদিগের মনোযোগের বিম্ন ঘটাইতে পারা যায় না। যত বাধা পায় ভাহারা আরও তত গভীর মনোযোগের সহিত সেই উপকথা শুনিবার জন্ম ব্যাকুল হয়। এমন যে চঞ্চলমতি যাহাদিগকে একটা কাজের কথা বলিয়া অন্তত্ত্র পাঠাইলে পথিমধ্যেই হয় ত কথাটা ভূলিয়া যায়। শিথিবার উপযুক্ত কিছু শিক্ষা দিবার সময় বহু চেষ্টা যত্ন করিয়াও যাহাদিগের মনে একটা কথা প্রবেশ করান যায় সেই সকল শিশুরা একবার মাত্র উপকথাটা প্রবণ করিয়াই কেমন তাহার। আদ্যোপান্ত শ্বরণে রাথিতে সমর্থ হয়। চঞ্চলমতি শিশুদিগের এই আচরণ হইতে বিশেষ ক্লপে জানা गाहेट उद्ध य विवत्री मत्नत बातामनात्री-याहा मिष्टे এवः बारु:-করণকে আকর্ষণ করিতে সমর্থ এমন কোন বিষয়ে মনোনিবেশ করা বা একান্ত মনে সেই বিষয়ের অনুসন্ধানে রত হওয়া কিছু বিশেষ কঠিন ব্যাপার নয়। বরং তাহাতে নিবিষ্টভার সহিত সংলিপ্ত থাকাই সহজ ও স্বাভাবিক।

কারণ শিশু যে রূপকথা শুনিতে এত মনোযোগী হয় তখন যে তাহার সকল অহৈর্য্য বিদ্রিত হইয়া যায়, তাহা স্বাভাবিক ভাবেই হয়। সেই কথা তাহার নিকট বিশেষ মিষ্ট ও আরাম-দায়ক বলিয়াই সে এমন গভীর মনোযোগের সহিত সেই কথা শ্রবণে সমর্থ হয়। স্বতরাং আমরা বে উপাসনার সময় মনস্থির করিতে পারি না এবং যে মনস্থিরের মত করিন কার্য্য আমাদিগের নিকট আর কিছুই মনে হয় না; তাহার কারণ এই নয় যে আমা-দের মন কোন বিষয়ে নিমগ্র হইতে পারে না বা একাস্তমনে কোন বিষয়ের অম্ধ্যানে রত থাকা অসম্ভব ব্যাপার। কিন্তু পরমেশ্বর আমাদের নিকট ভেমন মিষ্ট—তেমন আরামদায়ক নহেন; বেরূপ মিষ্ট ও আরামদায়ক হইলে শিশুর চঞ্চল মনও স্থির হইতে

পারে। আমরা যদি বাস্তবিকই পরমেশ্বরকে সর্বাপেকা মিষ্ট ও উপাদের রূপে অহুভব করিতে পারিতাম, তাহা হইলে উপাসনার সময় মনস্থির করিবার জন্য এমন আরাস করিতে হইত না। এখন উপাসনায় বদিলেই যে সকল প্রকার বিষর চিন্তা আসিরা মনকে অধিকার করিতে থাকে, একটির পর একটা ক্রিয়া সকল প্রকার বৈষয়িক স্থ-চিন্তা, আত্ম-গৌরবাত্মক-চিন্তা আসিয়া মনকে বিচলিত করিতে থাকে ইহার কারণ কি 🤊 মুখে একটা মাছি বদিয়া আছে; তাহাকে না তাড়াইলে দে হয়ত থানিক পরে আপনিই উঠিয়া যাইত, কিন্তু যাই তাহাকে তাড়া-ইয়া দিলাম, অমনি বুরিয়া আসিয়াই আবার মুথের উপর বসিল। যাই আবার তাড়াইলাম অমনি আবার এসে বদিল। এইরূপে মনের উপর জোর করিয়া ক্রমাগত এই যে একটীর পর একটী চিস্তা মাছির মত আসিয়া বসিতে থাকে; তাহার প্রধান কারণ এই যে आमारनत्र निक्छ नाना প্रकात विषय-िष्ठा यामुन आत्रामनायक সে সকল প্রিয় চিস্তাকে মনে স্থান দিতে আমরা যত ভাল বাসি. সেই পরিমাণে ঈশ্বর-চিন্তা আমাদের নিকট আরামদায়ক নয়। মনের স্বভাবই এই যে, সে সর্ব্বদাই প্রিরতর বিষয়ের অমুধ্যানে লিপ্ত থাকিতে চায়। যাহা ভাহার নিকট মিষ্ট লাগে সে বিষয়েই त्र प्रवास नियुक्त इटेटल थाकि। आमत्रा प्रकटन है जानि कान উপন্যাস পাঠে আমরা যাদৃশ মনোযোগী হই, গণিত বা অন্য কোন শাস্ত্র পাঠে আমরা দেরপ গভীর মনোযোগের সহিত নিযুক্ত হইতে পারি না। স্থতরাং ইহা দারা সহজেই জানা বায় মন প্রিয় বিষয়ের চিস্তাতেই সহজে নিমগ হইয়া থাকে। তাহাই আমাদের পক্ষে স্বাভাবিক।

প্রিয় ও স্ক্রুর বস্তুতে মনোনিবেশ করা সহজ, কিন্তু ঈররোপাসনায় কেন মন সহজে নিমগ্র হয় না ?

উপাসনার সময়ও দেখা যায় উপাসনার যে অঙ্গটী মনের যত আকর্ষণের কারণ আমরা ততই তাহাতে অধিকতর্রপে মনোনিবেশ করিতে সমর্থ হই। সরল প্রাণে ব্যাকুলতার সহিত যথন কেহ প্রার্থনা করিতে থাকে তাহাতে মনোযোগ প্রদান অপেকাকৃত সহজ। কারণ প্রাণে সেই ভারটী অনেক পরিমাণে আরামদায়ক, প্রাণের আকর্ষক। সংগীত সম্বন্ধে একণাও আরও বিশেষ ভাবে থাটে। স্থন্দর স্থারে স্থন্দর ভাব-যুক্ত গান যথন বিশুদ্ধ তান লয়ের সহিত গায়ক স্থকঠে গান করিতে থাকেন, তথন নিতান্ত চঞ্চলমতিও আরুষ্ট হইয়া গভীর একাগ্রতার সহিত তাহাতে যোগ প্রদানে সমর্থ হয়। কিন্তু সেই গানের কথাগুলি যদি কেহ অমনি অমনি পড়িয়া যায়, তাহাতে তত মনোযোগ আফুই হয় না। এখানে দেখা যাইতেছে গানের প্রক্কত দৌন্দর্য্য যাহা অর্থাৎ গানের বিষয় যাহা তাহাতেই যে প্রাণ সকল সময় অধিক পরিমাণে আরুষ্ট হয় তাহা নয়। কিন্তু মিষ্ট শ্বর প্রভৃতিতেই চিত্ত আরুষ্ট হইয়া থাকে। অতএব ইহা সহজেই বুঝা যাইতেছে মনের প্রিয় বিষয় যাহা তাহাতে বিশেষ ভাবে নিবিষ্ট থাকা স্বাভাবিক এবং সহজ্ঞসাধ্য। সে জন্ত আর বেশী সাধন করিবার আবশ্যক হয় না। কিন্ত তবে আমাদের প্রাণ উপাসনার সময় পরম স্থন্দর-সর্বাপেকা

অধিকতর আরামদারক ও শান্তির প্রত্রবণ পরমেশরে কেন নিবিষ্ট হয় না ? কেন মন্ন-চিত্তে তাঁহার আরাধনার আমরা নিযুক্ত হইতে পারি না ? এই ঘটনা হইতে অবশ্য এমন প্রমাণিত হইতেছে না যে পরমেশ্বর স্থন্সর নহেন বা তাঁহাতে প্রাণের আকর্ষণোপযোগী কিছু নাই কিম্বা অশান্ত মনের শাস্তি লাভের পক্ষে তিনি একটা বিশেষ কারণ নছেন। যাঁছার শোভার কথা বর্ণনা করিতে যাইয়া চিরদিনই বর্ণনা-কারীকে মনের কোভের সহিত বলিতে হইয়াছে যে, ভাষার এমন শক্তি নাই যদারা তাঁহার বর্ণনা যথাযথন্নপে হইতে পারে $\mathfrak{t}^{\downarrow}$ সে ভাব প্রকাশের জন্ম এমন ভাষা নাই যে সমাকরপে তাহা অপ-রের হৃদয়ঙ্গম করান যাইতে পারে। কবির কবিত্ব সেধানে পরাস্ত হইয়াছে ! চিরদিন সাধু ঈশ্বর ভক্তগণ মধুলুর মধুকরের স্থায় যাহাতে নিমগ্ন হইয়া, বাছিক সকল ত্বৰ হুংথকে অতিক্ৰম করিয়া তাহাতেই মগ্ন হইনা রহিরাছেন। আমরা যদি তাঁহাতে নিমগ্ন ছইতে না পারি, আমাদের মন যদি সে মধুপানে বিমৃত্ধ হইতে না পারে, তাঁহার উপাসনায় স্বস্থির চিত্তে নিযুক্ত হইতে না পারে, তবে ইহাদারা প্রমাণিত হইবে না যে তিনি স্বন্দর নহেন বা তাঁহার মাধুর্য্যের কিছু অভাব আছে! ইহাদারা সহজেই বুঝা যাইবে আমরা তাঁহার প্রকৃত পরিচয় পাই নাই। আমাদের প্রাণ তাহাতে নিমগ্ন হইবার জন্ম ব্যাকৃল নছে।

স্থানর বস্তুতে আরুষ্ট হওয়া—মিষ্ট যাহা তাহার আসাদনের জন্ম লালায়িত হওয়া যথন স্বাভাবিক এবং পর্মেশ্বরও যথন পর্ম সুন্দর ও রদক্ষরপ, অমৃতক্ষরপ, তখন কেন আমাদের মন তাঁহাতে সহজে নিমগ্ল হয় না ? এমন প্রমস্থন্দরের উপাসনা করিবার জন্ম কেন লোককে আবার অমুরোধ উপরোধ করিতে হয়, কেন লোকের পক্ষে উপাসনা করা এত কঠিন কার্য্য হইয়া পড়ে যে বিশেষ সাধন ভিন্ন কেহই প্রক্লতভাবে তাহাতে নিম্ম হইতে পারে না ্ ইহার কারণ অনুসন্ধান করিতে গেলেই একটা कातन नर्सनारे मत्न रहा त्य, जामता त्यतन मुश्मर्त अधिक ममग्र যাপন করি ক্রমে তাহাতেই অধিক পরিমাণে আরুষ্ট হই এবং তাহাই ভাল লাগে। তাহাতেই মন আবদ্ধ থাকে। মন যে সেই সেই বিষয়ে অধিক নিমগ্ন হয়, তাহার প্রধান কারণ সে তাহার অতিরিক্ত আর কিছু স্থন্দর বস্তুর সন্ধান জানে না, বা তাহার সহিত অন্ত কিছুর ঘনিষ্ঠতা হয় নাই। আমরা জন্মাবধি বাঞ্চিক বিষয়ের পরিচয়ই লাভ করিয়া আসিতেছি। যাহা চক্ষে দেখা যার না অণচ স্থন্দর,যাহা স্পর্শেক্তিয় স্পর্শ করিতে পারে না অণচ যাহার সহিত সংযুক্ত হইলে প্রাণ আরাম লাভ করে, যাহা বাহিরের রসনা আস্বাদন করিতে পারে না, অথচ যাহার মত স্থমিষ্ট আর কিছুই নাই, তাহার পরিচয় আমরা কোথায় পাই ? জুলিয়াই দেখি পিতা, মাতা, ভাই ভগিনী প্রভৃতি প্রিয় পরিজন। তাঁহা-রাই রোগে পরিচর্য্যা করেন, শোকে সান্থনা প্রদান করেন. তাঁহারাই দকল সময় কাছে থাকেন। স্থতরাং মন সহজেই এই সকল বাহ্নিক বস্তুতে আকুষ্ট হয়। এসকল বিষয়ের সহিতই ঘনিষ্ঠতা ও স্থাতা হয়। এতদতিরিক্ত কিছু যে আছে তাহার সন্ধান আমরা পাই কই ? তাহার সন্ধান কে জামাদিগকে विनिन्ना (नन्न ? यथन এक हे स्व्युक्ति इन्न-यथन वाञ्चिक विवन छोछ।

আর কিছু আছে বলিরা বৃষিবার ভক্ত মনের একটু গতি হয়, তথনও কি আমরা দে চেঙার অধিক সমর বাপন করি ? দিনের মধ্যে আধ ঘণ্টা বা একঘণ্টা না হন্ন হুই ঘণ্টা সে চিন্তা ও সে চর্চান্ন यांभन कतिनाम। किंख वांकी २२।२७ वर्छ। ८व वाञ्चिक विवस्त्रत অমধ্যানেই বায়, বাছিক স্থথের সেবাতেই যায়। স্থতরাং ष्मामारमत था। এই সকল বাहित्तत्र विवत्त्रहे त्य ष्मिक পति-माल चाक्र हे हहेत्त, अनकन वाक्रिक विषय है निमध थाकित्त তাছাতে আর আশ্চর্য্যের বিষয় কি? এখন আমাদিগকে যদি সেই বিষয়াতীত সৌল্দর্য্যে নিমগ্ন হইতে হয়, যদি তাঁহার উপাদনাও ধ্যান ধারণায় বিশেষভাবে নিমগ্ন হইতে হয়, তাহা হইলে এত কালের যে অভ্যাস,তাহার সহিত বিশেষভাবে সংগ্রাম क्त्रिटिं हरेदि । वहिम्सित्र अन्तारित योहास्त्र महिन् धकान्छ নথ্যতা জিমিরাছে, তাহাদিগের আকর্ষণকে—সেই দকল প্রিয় চিন্তাকে অতিক্রম করিয়া সর্বাপেকা প্রিয়তম যিনি তাঁহার চিন্তা ও তাঁছার প্রদক্ষে অধিক সময় যাপন ক্রিতে হইবে। সংগ্রাম · ৰারা পূর্ব্ব শিক্ষা ও অভ্যাসকে বিধবতা করিয়া ভাধার স্থানে ন্তন বিষয় ও প্রিয়তম বিষয়কে বসাইতে হই 1। এজন্ত যে সাধনের প্রয়োজন তাহা কথনই সামাত নর; এজন্ত যে চেষ্টা তাহা কথনই অভ বিষয়ের চেষ্টার মত হইলে চলিবে না। কারণ নহকাল আমশ্বামন্দ সংদর্গ ও শিক্ষায় বিক্বত ও হীন হইরা পড়িরাছি। বেমন আমাদের পূর্বে অভ্যাস সকল বহু-কালের ও অত্যস্ত বলবান, তেমনি আমাদিপকে দৃঢ়তার সহিত এই ন্তন কার্য্যে প্রবৃত্ত হইকে। প্রাণের টানে কোন কার্য্যে প্রবৃত্ত হওয়া অপেকা কর্ত্তবস্ঞ্জানে সেই কার্য্যে নিযুক্ত হওয়া যে বিশেষ কঠিন তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু প্রথমতঃ এই কঠিন কর্ত্তব্যজ্ঞান হইতেই কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে হইবে এবং মনকে জোর করিয়া বার বার সেই কার্য্যে নিযুক্ত কবিতে হইবে। তাহা হইলেই দেখা যাইবে যে কার্য্য এক সময় আনন্দ কর ছিলনা, তাহা প্রাণের বিশেষ আরামের কারণ হইয়াছে— প্রাণের তৃপ্তিকর বিশ্রামের হেতৃস্বরূপ হইয়ছে। উপাসনা কথনই সামাদের পক্ষে অস্বাভাবিক ব্যাপার নয়। অভ্যাস দোষেই যাহা কিছু কঠিন এবং অপ্রিয় বিষয় বলিয়া মনে হইতেছে। একবার উপাভের সহিত পরিচয় হইলে আর মন সহজে তাঁহার সংস্র্ ছাড়িতে চাহিবে না। তথন সহজ-চঞ্ল মধুকর যেমন মধুর আম্বাদন পাইয়া একবারে আত্ম বিশ্বত হইয়া তাহাতে নিমগ্র হয়, আমাদের প্রাণও পরম মধু-অরপ পরমেশ্বরে মুগ্র হইয়া তাহাতে চির-বিশ্রাম লাভ করিবে।

বিশেষ বিধান।

ছিতীয় প্রস্তাব।

আমরা ইতিপুর্বে বিশেষ বিধান সম্বন্ধ প্রধান আপত্তি শুলির উত্তর দিতে চেষ্টা করিয়াছি; এবারে অবশিষ্ট আপত্তি,শুলির আলোচনার প্রবৃত্ত হইব। তাহার মধ্যে একটা এই — "যে সকল ভিন্ন ভিন্ন ঘটনাকে বিধান বলা হইরা থাকে তাহা
দিগকে ভিন্ন ভাব বিকাশও বলা যার না। কারণ জ্ঞান,
ভক্তি, বিশ্বাস প্রভৃতি এক একটা বিশেষ ভাবের প্রচারকগণ
ঐ সকল ভাব ভিন্ন অন্ত ভাবও প্রচার করিরাছেন। পরস্ত
তাঁহারা অন্ত পথাবলখীদিগের প্রদর্শিত পথ পথই নয়, তদ্ধারা
ফল লাভের সন্ভাবনা নাই বলিয়াও সেই সেই পথাবলখীদিগকে
নিজপথে আনিতে চেষ্টা করিরাছেন।" অপরদিকে স্ক্রিশক্তি

মানের "কার্য্য সর্কাদাই পূর্বতা ও সর্ক্র প্রকারের উপাদান সম্পন্ন

হইবে। যথন জ্ঞানের বিধানে ভক্তি ছিল না বা ভক্তির বিধানে
ক্রান ছিল না, তথন এমন অসম্পূর্ণ কার্য্য কথনই স্ব্যারের

হইতে পারে না।"

ইহার প্রভুত্তের স্বামাদের বক্তব্য এই যে কোনও একটী বিধানকে ভক্তিপ্রধান বা বিশ্বাসপ্রধান বলিলেই তন্ধারা বেবল ঐ একটা বিশেষ ভাব প্রচারিত ইইয়াছে, আর কিছু হয় নাই এরপ ব্ঝায় না। ঐশবিক ভাব সকল এমন প্রস্কৃতির ষে উহারা প্রায়ই একটাকে ছাড়িয়া আর একটা থাকিতে পারে না। বিধানের মধ্য দিয়া নানা ভাব প্রকাশিত হয়, তবে হুল বিশেষে কোনও বিশেষ ভাবের প্রাধান্য নক্ষিত হইতে পারে এই পর্যান্ত। আর মানুর এক পথকে পথই নয় বলিলেই, তদ্বারা কোন ফল লাভের সম্ভাবনা নাই বলিলেই যে ঐশ্বরিক বিধানের বিধানত চলিয়া গেল ইহারও কোন অর্থ নাই। অপূর্ণ মান্থবের মীমাংসা যে একেবারে ভ্রমণ্ঠ হইবে এমন কথা কে বলিল ? তুমি আমি কোনও বিধানকে অকার্য্যকর বলিলাম ব্লিয়াই যে তাহাতে ঈশবের সত্য নাই এমন কথা বলা যায না। আর যদি তাহাতে ঐশ্বরিক সত্যনা থাকে, তবেদেই সত্যের প্রকাশকে বিধান বলিব না কেন ? উহার মধ্য হইতে মানবীয় ভ্ৰম, অপূৰ্ণতা বাদ দিয়া যেটুকু প্ৰক্বত সত্য পাইব তাহাই ঈশ্বরের বিধান বলিয়া গ্রহণ করিব। অপর্নিকে কোনও বিধানের দারা কোনও বিশেষ ভাব প্রচারিত ছইয়াছে বলিলেই বিধানকে, ঈশবের কার্য্যপ্রণালীকে অসম্পূর্ণ বলা হয় না। আমরা গতবারে বলিয়াছি যে পরমেশ্বর যে সময়ের জন্ত যাহা ঠিক্ আবশ্যক, তাহাই বিধান করেন। ইহাতে অপুর্বত। দুরে থাকুক বরং পূর্ণতা ও জ্ঞানই প্রকাশ পায়। সকল সময়ের জন্ম সকল পদার্থের প্রয়োজন হয় না। মহাস্থা চৈতন্তের ধশ্ম প্রচারের অব্যবহিত পূর্বে দেশের যেরূপ শুদ্ধ অবস্থা হইগাছিল, তাহাতে সে সময়ে ভক্তিরই বিশেষ প্রয়োজন হইয়াছিল, এবং তিনি বিশেষ ভাবে ভক্তিই প্রচার করিয়া ছিলেন। অথ্য তিনি যে প্ৰিত্তা প্ৰচার করেন নাই এরপ কথা বলা যায় না; এবং তংকালে ঠাহার ভায় জ্ঞানীও অতি অলই ছিল। যে সময়ে ভক্তির বিশেষ প্রয়োজন সেই সময়েই ভক্তি বিশেষ ভাবে প্রচারিত হইয়াছিল ইহাতে অসম্পৃণতা কোথায় আমরাত বুঝিতে পারি না। কাহারও নিকট একটু পানীয় জল চাহিলে শে যদি সেই দকে আমার আহার ও শরনের আয়োজন পর্যান্ত क्तिया ना त्मय ज्या कि जाहात अल मान अमण्पूर्ग हहेबाइ বলিতে হইবে ?

বিশেষ বিধান সম্বন্ধে আর একটা আপত্তি এই ;—

"নিত্য চৈত্তময় যিনি তাঁহার পক্ষে হই শত পাঁচশত বংসর পরে পরে বিধান প্রেরণ কথনই সম্ভবে না।" "উনাসীন বা সকল অবস্থা যাঁহার জ্ঞান গোচর হয় না, তাঁহার পক্ষে কথন কথন জগতের প্রতি মনোযোগী হওয়ার কথা সাজে।" কিন্তু জ্ঞানময় নিত্যক্রিয়াশীল স্বাধ্বের কার্য্য এরপ হইতে পারে না।

আনরা "এশীশক্তি" শীর্ষক প্রবন্ধে বিশেষ বিধানের যে ব্যাখ্যা দিয়াছি তাহাতে এই বিষয়ের আলোচনা করা হইয়াছে। দেই স্থলে আমরা দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছি, বে **যথন কোন**ও ন্তানে অসতা ও পাপ প্রবন হইয়া উঠে, তথন স্বাভাবিক নিয়মের বলেই জনসমাজে ঘোর প্রতিক্রিয়া উপস্থিত হয়, এবং মানবের প্রকৃতি-নিহিত দেবভাব সকল পাশব শক্তির উপর আধিপত্য সংস্থাপনের জন্ত বিষম সংগ্রাম উপস্থিত করে। তথন আত্মার আধার-ভূত ঐশী শক্তি ধর্ম-বিধান বা সমাজবিপ্লবক্লণে প্রবল ঝটকার ন্যায় আপনার পরাক্রম প্রকাশ করিতে থাকে। এই প্রতিক্রিরার ভাব বাঁহাদের স্কুদ্যে বিশেষ ভাবে প্রবল হইরা উঠে. তাঁহারাই বিধান প্রবর্ত্তক ও প্রচারকরূপে নেতৃত্ব গ্রহণ করেন। এইরূপ ঘটনাকে যদি কেছ বিধান ও বিধান-প্রবর্তক-প্রেরণ বলেন ভাহাতে ক্ষতি নাই। কিন্তু ইহাতে এরপ ব্রায় না যে ঈশ্বর জগৎ সম্বন্ধে উদাসীন বা অজ্ঞ; এবং বহু বৎসর পরে পরে হঠাৎ জগতের দিকে দৃষ্টি পড়াতে জগতের হুঃথ দর্শনে ব্যথিত হইয়া তিনি তাঁহার উপায় বিধান করেন। তাঁহার সকল कार्या है निष्धि निष्ठभाषीन। कात्रभ, उाहात है छ। अश्रतिवर्छनीय এবং তাঁহার ইচ্ছাই নিয়ন। মামুদের বিভিন্ন ইচ্ছা সক্ল त्यमन व्यत्नक नगग्न পরস্পরের বিরোধী হয়, তাঁহার ইচ্ছা দেরূপ নহে এবং তাঁহার ইচ্ছা মামুষের ইচ্ছার ন্যায় অব্যবস্থিত (whinsical) নহে। পাপ বিনাশ সম্বন্ধে দেবভাবের প্রতি-ক্রিয়াই তাঁহার নিয়ন। যে ভাবে মানব চরিতের বিকাশ হয়, তাহার প্র্যালোচনা করিলে এই সিদ্ধাং ও উপনীত হইতে হয় যে পরমেশ্বর মাত্র্যকে যেটুকু স্বাধীনতা দিয়াছেন, তাহার উপর তিনি হস্তকেপ করেন না। মাত্রুষ সেই স্বাধীনতা অনুসারে স্থপপ বা কুপথ অবলম্বন করে। কিন্তু আধ্যান্মিক উন্নতি যেরূপ অনম্ভ, অবনতি সেরূপ নহে। অবনতির একটা সীমা আছে। দেই সীমায় উপনীত হইলে অথবা তৎপুর্ব্বেই তাহার প্রকৃতিত্ব দেবভাবের প্রতিক্রিয়া আরম্ভ হয় এবং তাহার আত্মা পাপের পণ ছাড়িয়া পণ্যের দিকে অগ্রসর হইতে চেষ্টা করে। মান্থ্যের এই স্বাধীনতা টুকু না থাকিলে ধর্মজীবনের কোনও সৌন্দর্যাই থাকিত না। ব্যক্তিগত জীবনে যেমন দেখা যায় যে কেছ কেছ এই স্বাধীনতার স্থবিধা পাইয়া বছদিন পর্যন্ত বোর পাপাচারে রত থাকে, সামাজিক জীবন সম্বন্ধেও যে তাহার অনুরূপ ঘটন। ঘটবে, অর্থাৎ কোনও একটা বিশেষ সমাজের লোকও যে সেইরূপ বছদিন পর্যান্ত পাপ, অন্তার ও অসভ্যের পথ অবলম্বন করিবে ইহাতে আর আশ্চর্যা কি ৭ এবং এরূপ ঘটনা যে জনস্মাজে মধ্যে মধ্যে ঘটিয়া থাকে তাহা অস্বীকার করিবার জো নাই। ইতিহাসে ইহার প্রমাণ প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায়। প্রোটেষ্টাণ্ট ধর্মসংস্থারের

भूटर्स (तामान कााशानिक मच्चनारवत, ১৭৮३ ब्हाटबत कंत्रामि ता है विश्लादत शृत्स काम्मानत्मत वदः महाचा टेड्ड । तामा রানমোহন রারের অভ্যানরের পুর্বে বঙ্গালেশের বে অবস্থা হইয়াছিল তাহা গভীর ভাবে চিস্তা করিয়া দেখিলেই আমাদের উক্তির যাথার্থ্য সপ্রমাণ হইবে। কিন্তু ঈশবের मक्न विशासन এই त्रथ अवस्था अधिक मिन स्थाती हत्र ना । क्राम লোকের আধ্যাত্মিক দৃষ্টি উন্মীলিত হইতে থাকে এবং বধন व्यानत्कत क्षम नगा जव भाग कूमः बादत विकास विद्यारी হইয়া উঠে. তথন তাহাদেরই মধ্য হইতে বিশেষ ক্ষমন্তা-শালী বিশ্বাসী ও সাহসী ব্যক্তিগণ উত্থিত হইয়া বজ্ঞধানিতে ঐ সকল অন্তার অসত্যের প্রতিবাদ করিতে থাকেন। ক্রমে তুই চারিজন করিয়া লোক তাঁহাদের সহিত মিলিত হইতে থাকে। নবপ্রকাশিত সত্যের বলে বলীয়ান্ ও পরস্পরের সহামুভূতি ৰারা উৎসাহিত হইয়া তাঁহারা সিংহবিক্রমে অসত্য ও পাপের বিরুদ্ধে সংগ্রাম করিতে থাকেন। বাঁধ বাঁধিয়া জলস্রোতকে অবরুদ্ধ করিতে চেষ্টা করিলে প্রথমে কিছুদিন সেই বাঁধের নিকট জল সঞ্চিত হইতে থাকে এবং বাঁধের নিকটস্থ জলের স্রোত একেবারে বন্ধ হইয়া গিন্নাছে বলিয়া মনে হয়; কিন্তু যথন ঐ সঞ্চিত জলরাশির ভার বাঁধের প্রতিরোধক শক্তি অপেকা অধিক হইয়া উঠে, তথক প্রথমে উহার ছই এক স্থান ভগ্ন হট্য়া জল নিৰ্গত হইতে আরম্ভ হয় এবং ঐ লোতের বলে বাঁধক্ষয় প্রাপ্ত হইতে থাকে। ক্রমে ঐরপ ছই চারিটী কুল্র স্রোভ একত্রিভ ইইমা বর্দ্ধমান বেগে ছুটিভে আরম্ভ করে, ও অবশেষে ঐ স্রোত এরূপ ভীষণ বেগ ধারণ করে দে, উহা সকল প্রতিবন্ধক চুর্ণ করিয়া আপনার পথ পরিষ্ণার করিয়া লয় এবং যতক্ষণ না বাঁধের উভয় দিকের জলের ভারের সমতা হয় ততক্ষণ জলস্রোত পূর্বের ধীর গতি পুন: প্রাপ্ত হয় না। সেইরূপ জনসমাজে যথন বছদিনের অভায় অত্যাচারের পর আধ্যাত্মিক শক্তির প্রতিক্রিয়া আরম্ভ হয়. তখন প্রথমে হই একজনের চরিত্রে তাহা প্রকাশ পাইতে দেখা যায়; ক্রমে বিশ্বাসিগণের সংখ্যা বৃদ্ধির সহিত উহা এরূপ প্রবল হইয়া উঠে যে সেই সমবেত শক্তির নিকট সকল বাধা विभ পরান্ত इंदेश यात्र এবং यक्तिन ना उँदात कार्या निक হয় ততদিন উহার তেজ সমতা প্রাপ্ত হয় না। এই জন্মই আমরা বলি যে, বিধান প্রকাশের সময় বড় স্থসময় এবং যাঁহারা ঈশ্বরের রূপায় ইহার স্রোতের মধ্যে আদিয়া পড়েন ঠাতাবা অতান্ত ভাগাবান। এই সময়ে প্রতিক্রিয়াণীল দেবভাবের দঞ্চিত তেজঃ প্রভাবে, নবপ্রকাশিত পুণ্যাদর্শের অন্তত শক্তিতে ও পরস্পারের সহাত্মভৃতিজনিত উৎসাহের বলে বিশ্বাসিগণের প্রাণে এমন এক আশ্চর্য্য ও অভিনব শক্তি উদ্ভত হয়, বহুদিনের অন্ধকারের পর সত্য ও পুণ্যের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত দেখিবার জন্ম তাঁহাদের প্রাণে এত ব্যাকুলতা ও উংসাহ জন্মে যে, জন্ম সময় যে কার্য্য সাধন করিতে অনেক দিন नार्श, धरे समगदत्र जांहा ब्यह्मित्नरे मन्भन्न इरेना यात्र। भन्नत्म-শ্বর যেমন ব্যক্তিগত স্বাধীনতায় হস্তক্ষেপ করেন না বলিয়া, কেই কেহ অনেক দিন ধরিয়া পাপের পথে পরিভ্রমণ করে, সামাজিক

জীবনেও সেইরূপ তিনি আমাদের স্বাধীনতার হতকেপ করেন না বলিয়া কোন কোন সমাজ অনেকদিন ধরিরা অসত্য ও পাপেয় মধ্যে পড়িরা থাকে। ব্যক্তিগত জীবনেও বেমন দেবভাবের প্রতিক্রিয়া বারা জীবনের পরিবর্তন সংঘটিত হয়, সামাজিক बीवत्न (महेन्न एवरजारवत्र क्षेणिकियाचात्रा धर्म विश्लव वा ধর্ম-বিধান সকল সংঘটিত হইয়া থাকে। মানবজীবন পর্যা-লোচনা করিলে আধ্যাত্মিক উন্নতি সম্বন্ধে ইহাই বিধাতার कार्या श्रेमाली विनन्ना (वाध हन वादः वादः) विनान विनान वादः বুঝার না বে ঈশ্বর উদাসীন হইয়া বসিয়া আছেন, হঠাৎ জগতের ছুৰ্দশান্ন প্ৰতি দৃষ্টি পড়াতে ব্যথিত হইরা একটা বিধান প্রেরণ করিলেন। তাঁহার ইচ্ছাই নিয়ম। তাঁহার ইচ্ছার বা নিয়মের কার্যা নিয়তই চলিয়াছে। মামুষের স্বাধীনতায় হস্তক্ষেপ করা ठाँहात नियम विक्रम । जिल्लाम कान कान कान कान वा नमाज কিছুদিন পাপ ও অসত্যের মধ্যে পড়িয়া থাকে এবং তাঁহারই নিয়মে দেবভাবের প্রতিক্রিয়াছারা অল বা অধিক দিন পরে সেই সেই লোকের হৃদয়ে বা সেই সেই সমাজে সত্য ও পুণ্য প্রতিষ্ঠিত হয়, এরপ কথা বলিলে ঈশবের সর্বজ্ঞ ও নিত্য ক্রিয়াশীলতার কেন দোষারোপ করা হইতেছে মনে উরা হর তাহা আমরা বৃঝিতে পারি না।

আর এফটা কথা। মানব সমাজের নিয়ম ও ঈশ্বরের নিয়মে একট প্রভেদ আছে। মানব সমাজে ব্যবস্থাপক সভা নিয়ম প্রচার করিলেন, বিশেষ বিশেষ কর্ম্মচায়িগণ তাহা দেশ बार्या अविधिष्ठ कतिरागन, मगार्कत कार्या সুশৃঙ্গলে চলিতে লাগিল। ঈশ্বরের নিয়ম ঠিক এরপ নছে। অনেকের মনে ঈশবের নিরম সম্বন্ধে এরূপ ধারণা আছে যে পরমেশ্বর স্টের প্রথমে কতগুলি নিয়ম বাধিয়া দিয়াছেন তাহাতেই জগতের কার্যা চলিতেছে। কিন্তু বাস্তবিক কথা তাহা নহে। তাঁহার ইজাই নিয়ম, তাঁহাৰ ইচ্ছাশক্তি প্রতিমূহুর্তে কার্য্য করিতেছে বলিয়াই জগতের কার্য্য স্থানিয়মে চলিতেছে। এক নিমেষের জন্ম তাঁহার এই শক্তির বিরাম হইলে জগৎ থাকিতে পারে না। জগতের প্রত্যেক ঘটনার মধ্যে, আমাদের প্রতি নিশ্বাদে. व्यागारमत समरमत व्याजाक म्लान जाहात है है।, जाहात महिन কার্য্য করিতেছে। ভাঁহার ইচ্ছা বাতীত একটা কীটাণুর ও জন্ম বা মৃত্যু হয় না। তাঁহার ইচ্ছার প্রকাশ ব্যতীত আমরা সাধুতার পথে এক পদও অগ্রসর হইতে পারি না। তাঁহার ইচ্ছা বা শক্তির প্রকাশই বিধান। এই অর্থে প্রতিমূহর্তে তিনি জগতের কার্য্যপ্রণালীর বিধান করিতেছেন। কিন্ত আধ্যাত্মিক রাজ্যে মামুষের স্বাধীনতা বলিয়া একটা জিনিস আছে। এই স্বাধীনতার জন্ত তাঁহার শক্তির প্রকাশ হল विरागरय किছू मिरनत अन्य वस शीरक, छेहा निस्त कारत वनमक्ष्य করিতে থাকে ও অবশেষে দেবভাবের প্রতিক্রিয়ারপে উহা উচ্ছল ভাবে প্রকাশিত হয়। কিন্তু এই অপ্রকাশের অবস্থায় फैरांत्र कार्या तक्ष शांदक ना। कांत्रण, श्रेश्वत्तत्र हेक्का वा मक्ति-ব্যতীত আমরা একদণ্ডও বাঁচিতে পারি না। যথন বিশেষ चारन, विरामव मभरत ७ विरामव कात्रण शतकातात मभवारत विरामव ভাবে এই আধ্যান্মিক প্রতিক্রিয়া উপস্থিত হয়, তথনই আমন্ত্রা

আমাদের দিক্ হইতে, জনসমাজের দিক্ হইতে উহাকে বিশেষ বিধান বলি। এই বিশেষ বিধানের মতের সহিত ঈশ্বরের জ্ঞান, শক্তি অপরিবর্ত্তনশীলতা বা নিত্য ক্রিয়াশীলতার কোনও বিরোধ নাই।

প্রদেশীয় ব্রাহ্মসমাজ।

व्योत्रायभूत ।

বিগত ১৭ই কার্তিক শনিবার ও ১৮ই কার্ত্তিক রবিবার থীরামপুর ব্রাহ্মদ্রাক্তর অ**টা**বিংশ সাহুৎসরিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। শনিবার অপরাক ৪॥ ঘটকার সময় শ্রদ্ধাম্পদ শ্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় একটা প্রার্থনা করিলে পর কীর্ন্তনের দল উৎসাহেরসহিত কীর্ত্তন করিতে করিতে ব্রাহ্ম-সমাজ ভবন হইতে বহিৰ্গত হইলেন। শতাধিক লোক কীর্তনের সঙ্গে সঙ্গে চলিলেন। প্রায় ২॥ ঘণ্টা ধরিয়া নগরের পথে পথে বিশেষ উৎসাহের সহিত কীর্ত্তন করিয়া সায়াক ৭ ঘটকার সময় সকলে সমাজ ভবনে প্রত্যাগমন করিলেন। ৭॥ ঘটিকার সময় উপাসনা আরম্ভ হইল। এজা-ম্পদনগেজনাথ চটোপাধ্যায় মহাশয় উপাসনার কার্যা করেন। নগেজ বাবুর অন্ত:তল-স্পর্শী উপদেশ শ্রবণ করিয়া দকলেই মন্ত্রমুর ক্রায় আত্মহার। হইয়া পড়িয়াছিলেন। এ বংসর মন্দিরে মহিলাদিগের বসিবার জন্ম বন্দোবন্ত করা হট্যা-ছিল বলিয়া অনেক সম্ভ্রাস্ত পরিবারস্থ মহিলাগণ আসিয়া উৎসবে যোগ দান করিয়াছিলেন। উৎসবের এই শনিবার রাত্তের ব্যাপারে তাঁহারা সকলে ব্রাহ্মধর্মেরদিকে আরুষ্ট হইয়াছেন।

পরদিন রবিবার প্রাতঃকালে ভারতবর্ষীয় ত্রাশ্ধনমাজস্থ শ্রীযুক্ত নগেল্ডনাথ মিত্র মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। উাহার প্রদত্ত উপদেশ ও বেশ হাদয়গ্রাহী হইয়াছিল। অপরাজে বাবু নগেল্ডনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় "রাজা রামুমোহন রায়ের মহব" সম্বন্ধে একটা অতি স্কুল্র বক্তৃতা করেন।

আদি আক্ষমমাজ ভুক্ত—শ্রদ্ধাপ্পদ শ্রীযুক্ত শস্তুনাথ গড়গড়ী মহাশয় সায়ংকালের উপাসনার কার্যা করেন। তাঁহার উপদেশ উপাসকমগুলীর পক্ষে বিশেষ উপবোগী হইয়াছিল।

অপরাক্তে দরিদ্রদিগকে প্রদা মিষ্টান্ন দেওয়। হয়।
এ বংসর অনেক গ্রীব লোক উপস্থিত হওয়ায়, অস্তাস্ত বংসর
হইতে তাহারা কম পরিমাণে প্রাপ্ত হইয়াছিল।

এবারকার উৎসব উপলক্ষে স্থানীয় প্রধান জ্ঞাদার বাব্ হেমচন্দ্র গোস্বামী ও বাব্ রাজেক্সলাল গোস্বামী এবং বাব্ প্রদারক্ষার মুখোপাধায় প্রভৃতি মহাশ্যগণ নানাভাবে সমাজকে সাহায্য করিয়াছেন। হিন্দু সমাজের নেতা মহাশ্যগণ যে এতদ্র উদারভাবে ব্রাহ্মসমাজের কার্যো সহাস্থভৃতি প্রদর্শন করিবেন তাহা ৪।৫ বংসর পূর্বে কেহ স্বপ্নেও ভাবিতে পাবে নাই।

थान्छ।

নিয়লিথিত প্রকারে খালড় ব্রাহ্মসমাজের দিতীয় বার্ষিক উৎসব সম্পন্ন হইরা গিয়াছে।

১৯এ কার্ত্তিক সোমবার বৈকালে সংকীর্ত্তন ও উৎসবের উলোধন স্কৃতক উপাসনা। ২০এ কার্ত্তিক মঙ্গলবার প্রাত্তে উপাসনা, নধ্যাকে উপাসনা, পাঠ, আলোচনা, ধ্যান, সংকীর্ত্তন ও রাত্রে উপাসনা। উৎসবের দিন ছই বার বাবু প্রিয়নাথ মল্লিক ও একবার বাবু রসিকলাল রায় মহাশয় উপাসনার কার্য্য করেন। অভ্যাক্ত দিন প্রিয় বাবুই উপাসনা করেন।

বৈকালে নগর সংকীর্ত্তন করিতে করিতে নিক চস্ত চন্দ্রপর গ্রামে বাবু লালবিহারী পালের বাড়ীতে যাইরা উপাসনা হয়। উপাসনাস্তে লালবিহারী বাবু উপাসকদিগকে প্রীতিভোজন করান।

ব্রান্মস্মাজ।

দীক্ষ|—বিগত १ই আখিন রবিবার বরিশাল ব্রহ্মানিরে সায়ংকালীন সামাজিক উপাসনাস্তে খুলনা জেলার অন্তর্গত উৎকূল গ্রাম নিবাসী প্রীযুক্ত বাবু অমৃত লাল গুপু মহাশর প্রকাশ্যরূপে ব্রাহ্ম ধর্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। মঙ্গলময় পরমেখরের নিকট প্রার্থনা, ধর্মরাজ্যে নবপ্রবিষ্ট বন্ধুর প্রাণে দিন দিন ধর্ম পিপাসা প্রবল করিয়া তাঁহাকে ধর্ম রাজ্যে প্রতিষ্ঠিত রাথুন।

বিবাহ—বিগত ২৩এ আখিন মঙ্গলবার বরিশাল নগরে একটা বিবাহ সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। এই বিবাহ ১৮৭২ সালের ৩ আইন অনুসারে রেজেষ্টারি করা হইয়াছে। বরের নাম শ্রীযুক্ত বাবু স্থরেক্সনাথ গুপ্ত বয়স অন্যন ২৩ বৎসর। ইনি খুলনা জেলার অন্তর্গত নলধা মাইনর স্কলে প্রধান শিক্ষকতার কার্য্য করেন। কন্তার নাম শ্রীমতী কাদখিনী সেন, বয়স প্রায় ১৬ বৎসর। ইনি বরিশালের অন্তর্গত লাখুটীয়া গ্রাম নিবাসী শ্রীযুক্ত বাবু বৈকুষ্ঠ চক্স সেন মহাশয়ের ২য়া কন্যা। স্থানীয় প্রচারক শ্রীযুক্ত বাবু মনোরঞ্জন গুহু মহাশয় আচার্য্যের কার্য্য করিয়াছিলেন। স্থরেক্স বাবু এই শুভ কার্য্যোপলক্ষে বরিশাল ব্রাক্ষসমাজ প্রকালয়ে ৫ টাকা দান করিয়াছেন।

দান প্রাপ্তি—কলিকাতা চোরবাগান নিবাসী প্রীযুক্ত বাবু কালী প্রসন্ধ বস্থ মহাশয় সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের টুটিগণের হত্তে এককালীন একশত টাকা প্রদান করিয়াছেন। তাঁহার ইচ্ছা এই টাকার স্থদ দারা দরিদ্রদিগের সহায়তা করা হয়। কালীপ্রসন্ধ বাবুর নিকট হইতে এই অ্যাচিত দান প্রাপ্ত হইয়া স্থামরা তাঁহাকে বিশেষভাবে ধ্যুবাদ প্রদান করিতেছি।

প্রচার-পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশয় কাশী, লক্ষ্ণৌ, এলাহাবাদ জব্দলপুর প্রভৃতি স্থানে যেদকল কার্য্য করেন তাহা তাঁহার পত্র হইতে উদ্ধৃত করা গেল।

"৩০এ অক্টোবর বুধবার—অদ্য ত্মপরাকে কাশীর শ্রীযুক্ত বাবু রামচক্র মৌলিক মহাশয়ের ভবনে (যেখানে প্রতি রবিবার প্রাতে ব্রন্ধোপাননা হইরা বাকে) ব্রন্ধোপাননা হর। উপাননাক্লে বড় অধিক সংখ্যক লোক উপন্থিত ছিলেন না। উপদেশে
পরাবিদ্যা ও অপরা বিদ্যা এই উভরের প্রতেদ প্রদর্শন করা
যার। তাহাতে বলা যার বে সত্যস্থরপ পরমেখনের সহিত জানার
সাক্ষাৎ যোগ ভিন্ন ধর্ম সম্বন্ধে আর যাহা কিছু বলা যার বা করা
যার সম্পার বাহিরের যাপার, প্রাণবিহীন ক্রিরামাত্র। সে
রূপ ধর্ম সাধন কেবল মৃতধর্মের শব বহন মাত্র।

৩১এ অস্টোবর বৃংস্পতিবার অপরাক্তে উক্ত মহাশরের ভবনে শাল্প পাঠ ও ব্যাখ্যা করা যায়। তাহাতে গীতা প্রভৃতি গ্রন্থ হইতে কতকগুলি বচন উদ্ভুত করিয়া তাহা অবলম্বন পূর্বক ব্রাহ্মধর্মের কতকগুলি মত বিহৃত করিবার চেষ্টা করিয়াছিলাম।

্লা নবেম্বর শুক্রবার কাশীর বাঙ্গালিটোলাস্থ স্থলে বন্ধ-দেশের বর্ত্তমান সামাজিক উন্নতির ইতিহাস বিষয়ে ইংরাজীতে এক বক্তৃতা করি।

২রা নবেম্বর শনিবার কাশীর কারমাইকেল লাইব্রেরি নামক প্রকাশ্র স্থানে পশ্চিমে ধর্ম বিপ্লব ও তাহা হইতে আমরা কি শিক্ষা করিতে পারি Religious Revolution in the West—what does it teach us এই বিষয়ে লাহোরে যে বক্তৃতা করিয়াছিলাম তাহার পুনকক্তি করি। এই সভাতে বহু লোকের সমাগম হইয়াছিল। কাশীর স্থবিখ্যাত ও সাধারণের শ্রদ্ধাভাজন শ্রীযুক্ত বাবুরামকালী চৌধুরি মহাশয় সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। বক্তৃতার স্থুল মর্ম্ম এই ছিল যে পূর্ব্ব পশ্চম উভয় প্রদেশ এক মহা বিপ্লবের মধ্য দিয়া ভবিষ্যতের এক নবধর্মের জন্য প্রস্তুত হইতেছে, তাহা ব্রাক্ষধর্ম।

তরা নবেম্বর ববিবার—অদ্য মধ্যাক্তে লক্ষো যাত্র। করিবার দিন। কিন্তু Benares Union নামক ছাত্রদিগের সভাদারা অমুকদ্ধ হইয়া প্রাতে উক্ত Carmichael Libraryতে তাহাদের সভাতে Duties and Responsibilities of Educated Indians বিষয়ে একটা বক্তা করিতে হয়। সেই বক্তা করিয়াই লক্ষো যাত্রা করি।

৫ই নবেম্বর মঙ্গলবার—অদ্য লক্ষ্ণোনগরে প্রীযুক্ত বাবু বিপিন বিহারী বস্থ মহাশয়ের বাসাতে ব্রহ্মোপাসনা, শাস্ত্র পাঠ ও ব্যাখ্যা হয়। উপাসনাস্থলে স্থানীয় ভদ্রগোকদিগের অনেকে উপস্থিত ছিলেন। উপদেশের মর্ম এই—যে চরিত্র ব্রহ্মেতে স্থিত নহে অর্থাৎ যাহার মূল ঈশ্বরে প্রতিষ্ঠিত নহে তাহা সত্যে ও সাধুতাতে চিরদিন প্রতিষ্ঠিত থাকে না। ছইটা পদ্ম ফুল সরোবরের জলে ভাসিতেছে, একটার মূল মৃত্তিকাতে আবদ্ধ, আর একটার মূল ছিল্ল। ক্ষণেক পরে হঠাৎ এক প্রোত আসাতে যেটার মূল ছিল্ল সেটা ভাসিয়া গেল। এইরূপ যে সদম্ভানের মূল ঈশ্বরে আবদ্ধ নয় তাহা ঘটনাও প্রলোভনের স্রোতে ভাসিয়া যায়।

৬ই নবেম্বর ব্ধবার—অদ্য লক্ষোএর Refiam Hall এ Religious Revolution in the west—what does it teach us বিণয়ে কাশীতে যে ইংরাজী বক্ত। করিয়াছিলাম, তাহাই প্রকাশ করি। নামক জনের হল জিবার। জন্য নজো এর বিনধে প্রতিতের করে। করি। বজুতাত্বনে বহুলাক তিবিবের বিবরে বালালাতে বজুতা করি। বজুতাত্বনে বহুলাংখাক বালালি ভরলোক উপস্থিত ছিলেন। বজুতার উদ্দেশ্য এই ছিল যে ভারতে প্রাচীন ও নবীনে বে, বিরোধ উপস্থিত হইরাছে এই বিরোধে প্রাচীন পরিবর্তিত হইরা নবীন সেই স্থান অধিকার করিতেছে। এই সমরে ভারতের ধর্মভাবকে নবীন প্রণালীতে পরিবর্তিত করা প্রয়োজন হইরাছে এবং আক্ষসমাল সেই কার্য্যে প্রস্তুর রহিরাছেন।

৮ই নবেম্বর শুক্রবার জান্য প্রাতে লক্ষ্ণে হইতে যাত্রা করিয়া সন্ধানিকালে এলাহাবাদে উপস্থিত হই।

১০ই নবেম্বর রবিবার। অন্য প্রাত্তে এলাহাবাদ সমাজে ব্রেক্ষাণাসনা, শাস্ত্রব্যাথ্যা ও ধর্মালোচনা হয়। সারাক্তে কাটরা ব্রাহ্মসমাজে ব্রেক্ষাণাসনা এলাহাবাদের Students Association এর সভ্যদিগের অন্তর্রোধে এখানকার কামক পাঠশালা নামক স্থানে এক ইংরাজী বক্তৃতা করি। বক্তৃতার বিষয়—
Rammohun Roy, the Pioneer of Indian Reform ইহাকে রাজার জীবন চরিত্র আলোচনা করা হয়।

১২ই নবেম্বর মঙ্গলবার। এলাহাবাদের বালিকাবিদ্যালয়ে ব্রহ্মোপাসনাতত্ত্ব বিষয়ে বাঙ্গালাতে বক্তৃতা হয়। নিরাকার উপাদনা যে সম্ভব ও সাকার উপাসনা অপেকা শ্রেষ্ঠ ও নিরা-কার উপাসনার যে প্রণালী কি তাহা নির্দেশ করা উক্ত বক্তৃ-তার উদ্দেশ্য ছিল।

১৬ই নবেম্বর প্রাতঃকালে জব্বলপুরে উপস্থিত হই। আমার আসিবার পূর্ব্বে শ্রদ্ধের ভাই লছমন প্রসাদ সেথানে আসিয়া আমার অপেকা করিতেছিলেন।

১৬ই নবেম্বর শনিবার ভাই লছমন প্রদাদ জব্দলপুরের চার্চি
মিশন ক্ষুলে হিন্দীতে একটা বক্তৃতা করেন। যুবকগণের কর্ত্তবা
বক্তৃতার বিষয় ছিল। বক্তৃতাস্থলে সেথানকার কলেজের
অনেকগুলি ছাত্র ও কয়েক জন শিক্ষক উপস্থিত ছিলেন।
বক্তৃতা দীর্ঘ হয় নাই। কিন্তু সেই স্বল্পরিসর বক্তৃতাতে যুবক
দলের মনের উপরে অনেক কাজ হইল বলিয়া বোধ হইল।
বক্তান্তে যুবকগণ বিশেষ আনন্দ ও আগ্রহ প্রকাশ করিতে
লাগিলেন।

১৭ই নবেম্বর, রবিবার অপরাক্তে আমরা থাওোয়াতে পৌছি।

১৮ই নবেশ্বর সোমবার এধানকার Morris Memorial Hallএ ভাই লছমন প্রসাদের এক হিন্দী বক্তৃতা হইয়া গিয়াছে। বক্তৃ-, তার বিষয় "জীবনের উদ্দেশ্য"। বক্তৃতাস্থলে এথানকীর ভদ্র লোকদিগের অনেকে উপস্থিত ছিলেন। সচরাচর এথানে এত লোক প্রায় একজিত হন না। ১৯এ নবেশ্বর আমার এক ইংরাজী বক্তৃতা হয় বিষয় The Brahmo Samaj: its History and its Principles

প্রেরিত পত্র।

প্রক্ষাপদি জীবৃক তর্বে মুদী সম্পাদক মহাশয় সমীপে--মহাশয়--

বিগত ১৬ই কার্ত্তিকে: "তম্বকৌমুদীতে" এবং করেক সংখ্যক "মেসেঞ্লারে" "সাধারণ ত্রাদ্ধসমাজের সভ্যগণ ত্রাদ্ধ-স্মাজের কার্য্য নির্কাহার্থ আপন আপন আরের কত প্রদান করিবেন" এসমকে ত লোচনার বিষয় পাঠ করিয়া আমরা ষংপরোনান্তি আনুদ্দিত এবং আশান্তি হইয়াছি। যে ওভ मृहुर्ल्ड खोक्रानमारक धार विषयात नृजन व्यवज्ञातना हरेबारक যে শুভদিনে ব্রাহ্মের হৃদয়ে এই অত্যাবগুকীয় চিস্তার অভ্যুদয় হট্যালে ব্রাহ্মসমাজের ইতিহাসে সেদিনের কথা উজ্জল অকরে निधिक थांकित्र वाकामां य ममछ महर छेत्मश्र नहेशा অবতীর্ণ হইয়াছেন, অর্থাভাবে তাহা অসম্পন্ন রহিয়া যাই-তেছে, ६श भारत कतियां आभारतत अनुनार्थकीवरनत उन्तर তীব্র ধিকার উপস্থিত হয়! এ হতভাগ্য দেশ চির-ছর্দশার রঙ্গভূমি। এই অনন্ত অভাব ও ভীষণ হর্দশাগ্রন্ত রাজ্যে মঞ্চল-ময় বিধাতা পরিত্রাণপ্রদ ব্রাহ্মসমাজের স্বষ্টি করিয়াছেন। নেমন উৎকট রোগ, তেমনি মৃত-সঞ্জীবনী মহৌষধ ! কিন্তু কি পরিতাপের বিষয় এহেন পবিত্র, মহানু দায়িত কলে লইবা ব্রাহ্মগণ আত্মহুথে বিভোর! অশিক্ষিত মানব জীবনের দায়িত্ব-জ্ঞানহীন কোটা কোটা স্বদেশবাসীর জ্ঞানদানের ভার, পুঞ পুঞ্জ कुनःश्वात नाम कतिया विश्वक्र नीिक প্রচারের ভার, স্ত্রীজাতির হরবস্থা দূরীকরণের ভার, বিধবার অঞা মুছাইবাব ভার, অসহায় বালক বালিকার শিক্ষার ভার, অন্ধ থঞ্জ দীনহীনের **সেবার ভার এবং পরিত্রাণপ্রদ ব্রাহ্মধর্মের জীবস্ত স্থানাচার** জগৎময় প্রচারের স্থমহান ত্রত পিতা যে ত্রাহ্মদমাজের স্কব্ধে দয়া করিয়া অর্পণ করিয়াছেন, অর্থাভাবে সেই সমাজের এই সমস্ত গুরুতর কার্য্যের কথা দূরে থাকুক মৃষ্টিমেয় কয়েকজন প্রচা-রকেবও অন্ন জোটে না এ লজ্জা রাথিবার স্থান ব্রান্ধের নাই। দুরে যাইবার দুরকার নাই, এ দেশে অক্তান্ত ধর্মসম্প্রদায়ভুক্ত লোকেরা নিস্বার্থতার জ্বন্ত দন্তান্ত দেখাইতেছেন। একবার গিয়া ক্যামাক দ্বীটের "ভগ্নী সম্প্রদায়ের" Little sister of charity অমুষ্ঠিত অদ্ভূত ব্যাপার দেখিয়া আইস; ভিন্ন দেশীয়েরা এদেশের জন্ত কি করেন আর আমরা এহেন ধর্ম লাভ করিয়া কি করি। একবার মুক্তি ফৌজ দলের (Salvation Army) সং কীত্তির কথা শারণ কর, সহস্র সহস্র সাধুহৃদয় ব্যক্তি যথা সর্বাস্থ সপিরা দিয়া জগতে কি অত্যাশ্চর্য্য স্বার্থত্যাগের দৃষ্টান্ত দেখাই-তেছেন। খুষ্টের শিষ্য দলকে ছাড়িয়া একবার পুরাতন হিন্দু **এवः रिजनामि विविध मध्येमारा**त धर्म मिन्तरत खरवन कत. তাহাদের ধর্ম্মের জন্ত দানের তালিক গ্রিহণ কর ; উন্নত ধর্মাভিমান नज्जात्र मूथ नुकारेरव। जामारमंत्र श्रीठातक शतिवास्तत जन्न জোটেনা; বান্ধ বালক বালিকার স্থশিক্ষার কি ভয়ানক অভাব। আমরা প্রচারককে দেণ্ট পলের দৃষ্টাস্ত অনুসরণ করিতে পরামর্শ দিয়া নিজে বিলাসভরকে ভাসিতেছি। এ স্ব গভীর মনোবেদনার কথা। ত্রাহ্ম সমাজে ধনবান লোকের

অভাব আছে একথা বিস্থাস কৃত্রি না। বাহারা প্রীক্ষরণর প্রহণ করিরাছেন, জাহাদের সংখ্যা কি এক কম বে কোন প্রকার ব্যয়-সাধ্য-কার্ব্য তাহাদের বারা সম্পার হইকে পারে না—একথা আরো অমূলক। তবে এদশা কেন ? আমরা সার্থের অন্ধনারময় নাচতম স্থাপিত প্রকোঠে আবন্ধ। পিতাকৈ প্রাহ্ম করি না, ভালবানি না—ভাই তাহার কার্য্য ভাল করিরা চলিতেছে না।

ভগবানের রূপার শুভ দিন আদিরাহে, ত্রান্ধ জীবনে থ্রীভির আলো পভিত্ত হইরাছে তাই এ শুভ আন্দোলনের অভ্যুদর। ত্রান্ধ বছদিনের বাক্য কার্য্যে পরিণত করিবার জন্ম তাই আজ ছুটিয়াছেন। আমাদের বিশ্বাস প্রত্যেক ত্রান্ধ এবার আনন্দের সঙ্গে প্রিরতম ত্রান্ধ সমাজের জন্ম নিজ আরের প্রস্তাবিত সামান্থ অংশ অকাতরে দান করিয়া তাঁহার সমাজের শুক্তর কর্ত্ব্যুসমূহ সম্পরের সহায়তা করিবেন। ২৫ টাকার অনধিক বাহার আর তাঁহাকে টাকার এক পরসা এবং তদ্ধ আয়সম্পর লোকদিগের প্রতি টাকার দেড় পরসাদান আত্ময় সামান্ধ, অথচ এই সামান্ধ দানের উপর দেশের এবং সমাজের মহোপ্দরের নির্ভর করিভেছে। পিতার রাজ্যে এমন কে আছে, এই শুভ প্রস্তাবে আপত্তি তুলিরা ব্রান্ধসমাজের মলিনমুথে আরো কালী লেপিবে ? শুনিয়া বিশ্বিত হইয়াছি, এমন লোকেরও নাকি অভাব নাই! দরাময় পিতা এই অধঃপতিত জাতির সহায় হও, এ কলঙ্কত জাতির কলঙ্ক দ্র কর।

ব্রাক্ষসমাজময় এ শুভ আন্দোলন উখিত হউক। মাথোৎ-সব নিকটবর্ত্তী। তথন দেশ বিদেশস্থ ব্রাক্ষগণের মহাসন্মিলন হইবে। সেই মহাসন্মিলনে এই সাধুপ্রস্তাব উপস্থিত করা হউক। সেশুভ সন্মিলনে সকলে এক মন হইয়া এ শুভ প্রস্তাবে অবশ্রুই সম্মৃতি দিবেন, ইহাতে কে সন্দেহ করিবে ?

নলহাটী **অনুগত** ব্রাহ্মসমাজ। গরিব।

मिनिय नर्वनन,

মহাশ্য়-

অসবর্ণ বিবাহের বিপক্ষেরা এই একটি মাত্র যুক্তি প্রদর্শন করেন যে, নিম্বরণের সহিত উচ্চবর্ণের বিবাহ হইলে উচ্চবর্ণ সভূত ব্যক্তিদিগের জ্ঞান, নীতি ও ধর্মের অবনতি হইবে। ইহার উত্তরে আমি এই বলি যে, ভারতবর্যে এরপ উচ্চবর্ণ বস্তুতঃ নাই; কারণ উচ্চ বলিতে নীতি, জ্ঞান ও ধর্ম সম্বন্ধে শ্রেষ্ঠতা বুঝায়, কিন্তু এদেশে যথন নীতিমানের কন্যার সহিত ছঃনীতিমান পাত্রের, জ্ঞানীর কন্যার সহিত অজ্ঞানীর বিবাহ হইতেছে,তথন গুণজাত উচ্চতা নিম্নতা আর নাই। তবে যে ব্যাহ্মণ শূর্দাদি ভেদ রহিয়াছে,তাহা কৈবল শব্দের ভেদ, বাস্তবিক নহে। বাস্তবিক সম্বন্ধ কথনই হইতে দেওমা উচ্চতা নিম্নতা থাকে না। আর এরপ ভেদ যে নাই কলেও ভাহাই প্রভিপন্ন হইতেছে। ব্যাহ্মণ বংশে অব্যাহ্মণোচিত পুশ্র ক্ষমিভেছে, এবং অক্সপক্ষে

পূজনালে ও ত্রাজনোদ্ধির আনাবিত পূজ উৎপার হইটেছে।
স্কর্মার একণ আজনকৈ উক্ত বংশভাত বলাল বাহা সোধার
পাধরের বাটা বলাও ভাষা। কোন বৃধ্বে তিক ফল উৎপার
হইতেছে দেখিরাও ভাষাকে বিউক্তন-প্রস্থ বলা বেমন, আধুনিক
বলীর প্রাজনবংশকে উচ্চবংশ বলাও ভজ্জপ। ইয়াতে আজি
ভেলের শৃত্বল বে দৃঢ়রাণে মনকে বাধিরা সাধিরাছে ভাষাই
কেবল প্রতিপার হয়।

অতএৰ আমি এই প্ৰশ্নের বিচার এই করিব যে,এরপ ক্লোম বান্তবিক বৰ্ণভেদ না থাকিলেও বিবাহ সম্বন্ধে বান্তবিক ভণাভৰ বিচার না করিয়া অথবা গুণবান শূক্রণাত্র সত্তেও কেবল শূক্ত-বংশজাত বলিয়া তাহাকে প্রত্যাখ্যান করা ব্রাক্ষের উচিত কিনা 🕈 সামার এই বিবাস যে, এরপ কালনিক প্রভেদাত্মারে কার্য্য কারলে সততার অনাদর করা হয়,শরীরকে আত্মার উপরে চাপা-ইয়া দেওয়া হয়, স্কুডরাং ঈশ্বর ও মানবান্ধার উভরেরই অবমাননা করা হয়। অতএব এরপ ব্যবহার ব্রান্ধের পক্ষে নিতান্ত অকর্ত্তব্য। আর এপ্রকার জন্মগত প্রভেদ বিচার উদার প্রেম ও ভাতৃভাব বিরোধী, স্থতরাং উদার ত্রাক্ষধর্ম বিরোধী। এবং যে ত্রাহ্ম এরূপ বিচার করেন সদগুণের অব্যাননা করাতে তাহার হৃদয়ের ও অবনতি হয়। কোন কোন ব্রাহ্ম হয়ত বলিবেন "আমরা শুদ্রকে নীচ মনে করি না, কেবল ব্রাহ্মণে বাহ্মণে বিবাহটা আমাদের ভাল লাগে বলিয়াই সবর্ণবিবাহ দিয়া থাকি।'' এ কথাটা শুনিতে খুব নির্দোষ বলিয়া বোধ হয়, কিন্তু কথা এই যে, এরূপ ভাল লাগে কেন ? এই প্রশ্নের মীমাংসা করিতে গেলেই দেখা যাইবে যে এই পছ-ন্দের অন্তরালে জাতিভেদের কুদংকার মুথব্যাদান করিয়া রহিয়াছে। নভুবা তোমার এরূপ কৃচি হয় কেন ? এই স্থলে क्टर विनिष्ठ भारतन, "बाञ्चन भारत कनामान कतिरनहें कि मूजरक नीठ मरन कन्ना इहेल ?" आमि विल छाहा हहेल ना বটে, ক্লিন্ত কন্যার বিবাহ দিতে হইলেই যদি তুমি ব্রাহ্মণ জাতির মধ্যে পাত্রের **অনুসন্ধান ক**র, অথবা উৎকৃত্ত শূদ্রপাত্র সত্তেও যদি নিক্নষ্ট ব্ৰাহ্মণ পাজে বিবাহ দাও, তাহা হইলেই তোমার অস্তরে যে অগক্ষিত ভাবে শৃদ্রের প্রতি মুণা রহিয়াছে, তাহা বুঝা গেল।

আমি উপরে বিপক্ষদিগের যুক্তি যথাসাধ্য থণ্ডন করিয়াছি, এখন দেখাইব যে অসবর্ণ বিবাহের দ্বারা আমাদের কি কি শুভ ফল লাভের সন্তাবনা আছে। প্রথমতঃ শুদ্রজাতির প্রতি অযথা দ্বগা না করাতে সমাজের পুণ্য সঞ্চয় ইইবে। দ্বিতীয়তঃ পরস্পারের মধ্যে যে অসভাবের প্রোচীর দণ্ডায়মান ছিল, তাহা ভগ্ন হণ্ডরাতে একতা ও প্রেম বর্দ্ধিত হইবে। তৃতীয়তঃ বিবাহক্ষাত প্রসন্ত হণ্ডরাতে নব নব শোণিতের সমাগমে এই ত্র্বাস্কাতির শারীরিক ও মানসিক বলের বৃদ্ধি হইবে। তৃত্তীয়তঃ ক্রিল লাতির শারীরিক বল বৃদ্ধির পক্ষে অসবর্ণ বিবাহ একটি প্রস্কাই উপায়।

শাস্তি নিকেতন, বোলপুর।

करेनक बाना

প্রার ২ বংগর হইল "নগছাটী রিশন" সংস্থাপিত হুইরাছে।
ইহার অর্থাত একটা বালস্থাক, একটা নৈশ বিদ্যালয় এবং
একটা হোমিওপ্যাথিক ওবধানর আছে। হীনবল ব্যক্তিরপ্রে
হাতে পঞ্জিয়া ভগবানের এই ক্ষরাব্ কার্য্য অভি শীণভাবে
চলিতেহে মার। যে স্প্রিলিভিনাতা মহান্ করে বিগত ২ বংসর
কাল এই কুল্ল অহ্টানকে নানা প্রকার করিন বাধা বিলের
মধ্যে নির্মিন্তে রকা করিরাছেন, তাহারই কুপার এবং বন্ধ্ বান্ধবের ভভাশীর্পাদে ইহা চিরস্থারী হইরা ভগবানের নাম
মুক্তিরাবিত ক্ষক এই প্রার্থনা।

র্ত্তিক্ষেদমাক্তের উপাদনারকার্য্য গৃহের অভাবে সমাজের জনৈ সভ্যের গৃহে প্রতিবৃধ্বার হইতেছে। রবিবার বৈকালে দ্রিছিল পাহাড়ে বাইরা ভগবানের নাম করা হইরা থাকে। আক্ষমাজ ব্র নির্দ্ধাণের কোন আফ্রেমন এ পর্যাক্তও হয় নাই। এই সমাজ সাধারণ আক্ষমাজের অঙ্গীভূত।

ব্রাক্ষদমাজের অন্তর্গত হোমিওপ্যাধিক ঔবধালয় দিন
দিনই উন্নতি লাভ করিতেছে। প্রতিদিন প্রাতেও বৈকালে
দরিজে লোকদিগকে ঔবধ বিতরণ করা হয়। এ বংসর এই
করেক মাদের মধ্যে ৪৭০ জন লোককে ঔবধ দেওরা হইরাছে।
ভগবানের ক্রপায় তাহারা আশাভীত ফল লাভ করিতেছে।
ঔবধ এবং চিকিংসার অভাবে এহানে বংসর বংসর কতলোক
অকালে অশেষ যাতনা পাইয়া জীবন হারায় কে তাহার গণনা
করিবে। ইহারা যে ঔবধ ব্যবহার ক্রিতে শিথিতেছে, ইহাও
মঞ্চলের বিষয়।

বিগত ২ বংদর নৈশ-বিদ্যালয়কে কতই অত্যাচার ভোগ করিতে হইগাছে। আহ্মদমাজের অভ্নিত কার্য্য বশিরা হিংসা পরবর্শ লোকেরা ইহাকে শিশু অবস্থায় বিনাশ করিতে কতই চেষ্টা করিয়াছে, এক গৃহ হইতে গৃহান্তরে তাড়াইয়া দিয়াছে। কিন্তু ভগবানের শিশুকে কে মারে ? বিগত বৎসর শিক্ষকের অভাবে অতিশয় ক্লেশ হইয়াছিল, সে অভাবও সম্পূর্ণ মোচন হউনাছে, বিদ্যালয়ের কার্য্য স্থচারুরূপে সম্পন্ন ইইতেছে। হনীতি ও স্থরাপ্লাবিত দেশে নৈশ-বিদ্যালয় যথাদাধ্য নিজকার্য্য সাধন করিতেছেন। বিগত বৎসর কুলি,আড়কাটীর উপদ্রবের বিক্লছে নৈশ-বিদ্যালয় যথেষ্ট পরিশ্রম করিয়াছিলেন। স্থথের বিষয় যে এখানকার ৩টা কুলি ডিপোর একটারও অন্তিত্ব নাই। विमानित्यत ছाত्वित्र मानिक शक् ००.२, देनिक शक् २० अन গ্ৰত মাদে ছাত্ৰ সংখ্যা ৪৬ জন ছিল। "লোক্যালবোর্ড'' ৫ ্টাকা রাসিক সাহায্য প্রদান ক্রিয়া ধক্তবাদের পাত হইয়াছেন। লাক্যালবোর্ডের ২ জন সভ্য বিদ্যালয়ের সাহায্য বন্ধ করিবার 😻 ব্যানক চেষ্টা করিয়াছলেন। কিন্তু রামপুরহাটস্থ কোন কোন খদর বন্ধুর সাহায্যে এই ছরভিসন্ধি সাধিত হইতে পারে নাই। সম্প্রতি নৈশ-বিদ্যালয়ের জস্ত একখণ্ড জমি লইয়৷ তাহার উপর হ নির্মাণ হইতেছে। ৭০০ টাকা গৃহের বার ধার্যা হইয়াছে! নিধিক ২৫০ টাকা চাঁদা সংগৃহীত হইয়াছে। গৃহ আর মালের মধ্যে সম্পূর্ণ হইবে। কিন্তু অর্থাভাব বড়ই ক্লুত হইতেছে। ভরুসা কেবল "ভগবানের কার্য্যের সহায়

ভিনি নিকেই মহৎ ক্ষম দ্বানীল ধন সাধারণের মুক্তত হইতে নীমই দানেক লোভ আগিবে এ জালা আমাদের জাছে।
এই নগহাটাতেই সাধারণ বাজসমাল কি অভুত উপারে সহল গছর ছর্তিক প্রশীদ্ধিত ব্যক্তির জাবন রক্ষা করিয়া জকর কীর্তি লাভ করিয়াছে। এ হতভাগ্য ছানের অধিবাসীদিগের প্রাণ রক্ষা করিয়া ঘালার সে সমর সাধু হৃদরের পরিচর দিয়াছেন আলা করি ইহাদের নৈতিক ও আধ্যাত্মিক জীবনের উন্নতির জন্ম তাহারা নিক্রট অকাতরে অর্থ সাহাম্য করিয়া আমাদিগকে চিরবাধিত করিবেন। বাঁহারা এপর্যন্ত দ্বা করিয়া দান করিয়াছেন, তাঁহাদের নাম নিমে প্রকাশিত হইল।

"নগহাটী মিশন" যে সমন্ত সহল লইয়া কার্যাক্রে অবতীর্ণ হইয়াছেন উপযুক্ত জীবন এবং অর্থাভাবে তাহার পক্ষে
নিয়তই বাধা উপস্থিত হইতেছে। নিয়ন্তেশীর মধ্যে শিক্ষা ও
নী, এবিস্তার করিয়া পবিত্র ব্রাহ্মধর্মকে স্থল্ল ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত এবং প্রচার ইহার চরম লক্ষ্য। বর্ত্তমান সময়ে নিম্প্রেণীর মধ্যে প্রচুররূপে শিক্ষা প্রচার এবং তাহাদিগের সঙ্গে মিশিয়া তাহাদের নৈতিক উরতি করা ব্যতীত;দেশের কল্যাণ নাই। যতদিন এই উপারে প্রচার আরম্ভ না হইবে, ততদিন ব্রাহ্মধর্মা "সাধারণ লোকদিগের জন্ত নহে" এ কলঙ্ক দ্র হইবে না—এ পরিত্রাণপ্রদ সার্বভৌমিক ধর্মা জাতীয় জীবনের স্থলে প্রতিষ্ঠিত হইবে না। "নলহাটী মিশন" যণাসাধ্য এই মহান্ সহল্প সাধনে সচেই আছেন। সর্বাসিদ্ধিদাত। দল্লাময় মহান্ ঈশ্বর তাহার পবিত্র কার্য্যের সহায় হউন।

চাঁদাদাতাগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু ব্রজেক্সনাথ শীল বছরমপুর ১৫ রাধাকিশোর भूरथाशांशांत्र के > A friend के > निवात नहता नांत्र के > জানকীনাথ ভট্টাচার্য্য ঐ ১ খামাপ্রসন্ন মজুমদার ঐ ১ 🔥 🗚 Friend ঐ ॥॰ মহম্মদ নবী লালবাগ ২৲ ব্রজেক্সকুমার গুহ ঐ ॥॰ রামচক্র মুখোপাধ্যায় ঐ ১ সাহানগর নিবাদী ঐ ১ গৌর-মোহন দাস ঐ ২ A Friend ঐ ১ কালীকুমার বৰ্দ্ধন ঐ ১ कांनीमान मूर्थानामात्र के > तामरनाना तात्र के > नरीनहत्त গুপ্ত ঐ ১ ্ যহনাথ রায় রামপুরহাট ৪ ্ গিরীশচক্র সোম ঐ ১ ্ রামদন্তাল রায় ঐ ১১ A friend ঐ॥• অনস্কদেব বন্দ্যোপাধ্যায় ঐ ২্রাজেজচেক চটোপাধ্যায়-ঐ॥৹ চক্রকুমার রায় ঐ ১৲ যুগলক্কফ সরকার ঐ ১ নীলকান্ত সিদ্ধান্ত নলহাটী ২ বিধিনাথ ভট্টাচার্য্য के > जनमञ्जूमात वत्नागाधाम के > (वारमञ्जूमाथ वत्नाभाधाम ঐ ৫ অক্ষক্শার মিতা ঐ ১ নিবারণচক্ত ম্থোপাধ্যায় ভাগলপুর २ (शांशांतरक निःक् के ऽ N. C. Banerjee के २ * * * के ऽ N. C, Chakravarty ঐ > পার্সভীচরণ দাস পুরীয়া ১৩ নন্দলাল পাল ধুলীয়ান ১ শরদিন্দু যোষ ঐ ৪ A Friend ঐ ৫ অমৃতলাল কর আঞ্জীমগঞ্জ >ুরাজেজ্মোহন বহু ঐ ॥০ পাঁচকড়ি দত্ত ঐ॥০ মহেক্রনাথ মুখোপাধ্যায় ঐ ৬০ মহেক্রনাথ মিক্ত ঐ ১ রায় মেঘরাজ বাহাছর ঐ ৪ গোলাবচাদ ঐ ৫ N. D. chatterji ঐ ১ গৌরচক্র সেন গোরাবাজার ১ A Friend ঐ ১ Dwarka Nath dass के > श्र्विख मक्मनांत्र मूर्जीनांवान २ जक्तप्रदक्ष

দাস ঐ ২ * * * * * — ঐ ২ জগরাথ প্রসাদ গুপ্ত নশীপুর ২ প্রতাপচন্দ্র দন্ত রামপুরহাট ১ প্রতাপচন্দ্র চক্রবর্তী ঐ ২ শ্রীশীনতী মহারাণী স্বর্গরী কাশিমবাজার ৫০ শ্রীমতী কিশোরবালা চট্টোপাধ্যায় কলিকাতা ৫ শীযুক্ত বাবু নীমটাদ দে নলহাটা ১০ অবোরনাধ চট্টোপাধ্যায় বোলপুর ১ হরিদাস বস্থ ঐ ১ নবীনচন্দ্র মিত্র ও ॥ ০ পূর্ণচন্দ্র চৌধুরী ঐ ১ বন্ধিমচন্দ্র মিত্র ও ১ উমাচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় বর্জমান ১ নৃসিংহমুরারী পাঁজা ঐ ১ ট. মি. Singha রাইপুর ১ পৌরাকস্কলর সিংহ ঐ ১ দেবেক্তনাথ সেন নসীপুর ১ বিজয়কৃষ্ণ বস্ত্র কলিকাতা ১ ।

নলহাটী। নবেম্বর ১৮৮৯ খৃঃ। ৬০ বাঃ সং

একান্ত বশম্বদ একান্ত বশম্বদ প্রমথনাথ সরকার, সম্পাদক। নলহাটী ব্রাহ্মসমাজ।

মহাশয়---

বাকুড়া ব্রাহ্মসমাজের উপাসনালয় নির্দ্মাণার্থ এ পর্যান্ত যে সকল দাতাগণ আমাদিগকে অর্থ সাহায্য করিরাছেন ক্বতজ্ঞ হৃদরে তাঁহাদের দান প্রপ্তি স্থীকার করিতেছি। গৃহ নির্দ্মাণ কার্য্য প্রায় সমাধা হইরাছে, যাহা বাকি আছে তাহার জন্ম আর ৩০০ তিনশত টাকার প্রয়োজন, এজন্ম ব্রাহ্ম সাধারণের নিকট প্রার্থনা যে তাঁহারা আমাদের এই অভাব পূর্ণ করেন। যাহার যাহা দিতে ইচ্ছা হয় তিনি অনুগ্রহ করিয়। আমাদের ধনাধ্যক্ষ শ্রীযুক্ত বাবু ব্রজেক্রকুমার গুহ বাকুড়া ক্ল সমুহের ডেপ্টী ইন-স্পেক্টরের নিকট পাঠাইবেন। নিবেদন ইতি

দাভাগণের নাম ও দানের টাকা।

শ্রীমন্মহর্ষি দেবেজ্রনাথ ঠাকুর ১০০ শ্রীযুত বাবু শিবচক্র দেব ৫১ শ্ৰীমতী অম্বিকা দেব ২ বাবু শিবচন্দ্ৰ কুলভি ১ মৌলুবি ञावकृतमारमत ६ वात् उरक्ककृमात नीत २६ उरझक्कृमात গুহু ৫০১ মনমোহন রায় ৪০১ কেদারনাথ কুলভি ৪৫১ কেত্র-মোহন সেন ১৫১ রাজেক্রকুমার বস্থ ১০১ গতিক্লঞ্চ নিয়োগী ২৫১ কুঞ্জবিহারী পাল ১০১ শ্রীকণ্ঠ দত্ত ১০১ হরিহর মৃথোপাধ্যায় ২১ क्लमाञ्जनाम म्र्थाभाषाम २ मर्गिठक वत्नाभाषाम २ वित्नापविद्याती मञ्जल २ वनखक्मात नित्यांगी २ ताकनातायण রায় >্উপেক্রচক্র মিত্র ৪্ননীলাল ঘোষ ৫্বাব্ গোরাচাঁদ গোসামী ১০্ একমোহন মলিক ২৫্ বেণীমাধৰ দে ১০্ আনন্দমোহন বস্থ >্ ছুৰ্গামোহন দাস ১০্ কানাইলাল পাইন ৻্রসিকখাল পাইন ৻্বৈকুগ্নাথ সেন ৻্নরেক্রনাথ সেন ৫ দেবে প্রমাথ ঠাকুর ২ কোন বন্ধু ৫ ভভাকান্থী ২ রামেশ্র সেন ৫ রামতারক মুখোপাধ্যায় ৫ রমানাথ চট্টো-পাধ্যায় ৫ অক্ষরকুমার দত্ত ৫ জগবন্ধ্ বিশ্বাস ৫ রামানন্দ চট্টো-পাধ্যায় ৫ উমেশচক্ত মুখোপাধ্যায় ৫ নবগোপল বন্দ্যোপাধ্যায় ए मनी ज्या मत्रकात ६ जिश्राती एम २॥० काना हैनान ननी ১্গৌরীপদ চক্রবর্তী ২্রাসবিহারী বন্দ্যোপাধ্যায় ৫্বাবু প্রতাপনারায়ণ সিংহ ১০্ডাক্ডার পি কে রায় ৭্বাবুরজনীনাথ রায় ১০ অনস্তরাম মাড়য়ারী ২ স্থময় সাওেল ১ গোবিন্দচন্দ্র মুখোপাধ্যায় ২্কোন বন্ধু ১ ভামাচরণ বটব্যাল ॥০ বাবু হর-মোহন রায় ৪্ মাধবচক্র মহাপাত >্ কাশিশ্র মলিক >্ পরাণচক্রার ১ মাণিকচক্র ভট্টাচার্যা ২ শশীভূষণ মণ্ডল ১ গিরিশচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় ১্রাধানাথ রায় ১্রামচরণ দে ১০্ বিপিনবিহারী দে ৩ নবকুমার দে ৫ রসিকলাল ঘোষাল ২ चात्रिकनाथ भाग) (नज्राभाग व्यक्ताभाषात्र २ (कनात्रनाथ কুঞু ৪্মুনদী আলিজামিন ২্ আমহ আহমদ ১ ফকিউদিন ১৮০ সায়েদ রহমন ৫্মউপুরের মহম্মদ চৌধুরী ৫্কুদ্রদান ২॥১১০ বাবু জনমনাথ দত্ত ২ ভামাকান্ত নাগ ৫ নগেল্ননাথ মজুমদার ২্রঅুরাম হাজরা ৫ ক্র্যানারায়ণ রার ১ পরেশনাথ রার ১॥। त्राथान हस्त विष्ठे ॥ • त्राथान हस्त हर्ष्डो भाषात्र ॥ • कानि श्रमान स्मन

১ ধর্মদাস গোষামী ১ কালিকুমার দাস ১ নবীনচক্র চক্রবর্তী ৪ বিধুভূবণ চক্রবর্তী ৫ তারাপ্রসর ঘোষ ৫ ভূবনমোহন রাহা ১০ শশধর রার ৫ স্বলচক্র সেন ২ শ্রীনাথ চটোপাধ্যার ১ অঘোধ্যানাথ মুখো ॥০ হারাধন ঘোষ ১ কুঞ্জবিহারী নন্দী ৩ ইশানচক্র দন্ত ১ হরিদাস চটোপাধ্যার ১ শশীলেধর মুখোপাধ্যার ৫ শিবনারারণ বন্দ্যোপাধ্যার ২ হার্দাস চটোপাধ্যার ॥০ ইদারনাথ কুঞ্ ॥০ আশুতোষ বন্দ্যোপাধ্যার ॥০ কুলান ৩০।

কেদারনাথ কুলভি গৃহনির্মাণ কমিটির অহুমত্যাহুসারে।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের ক	াৰ্য্যনিৰ্ম্বাহক সভ	iর স্বার্য্যবিবরণ <mark>পূর্ব্ব প্রকাশি</mark> ত	তর পর			
পুস্তক বিক্রয়ের হিসাব।						
বাৰী পা আদায়	عد/ااده	অপরের পুস্তকের				

বাৰী পূচ্য অ	ोनोय २०॥/১¢	অপরের পুস্তকের	
ন াবক্রয়	२०६॥२०६	মূল্য শোধ	>9011/0
সমাজের ৯	5he	কমিশন	ه الم
অপরের ৩	rhels o	পুস্তকের ডাক মাধ	ল ৭০/১০
	-	কাগজ	8หญ∕•
3	عدالع	কর্মচারীর বেতন	२५
কমিশন	940/211	ডাক মাণ্ডল	n/30
পুস্তকের ডাক মান্তল ৬৮১১৫		পুস্তক বাঁধাই হি	· «,
স্থদ	२ के \	विविध हिः	<i>ો</i> > •
	29>1>91		२२२॥/७०
পূৰ্কস্থিত	२५७२८५०	স্থিত	२२००॥४५१॥
মোট	२ ८२०।/१॥	শোট	२८२०/१॥
	তত্ত্বৰ	गेमूनो ।	
মূল্যপ্রাপ্তি	২৩৮৵	ডাক মাস্থল	৩৩৷১৫
নগদ বিক্রয়	20-1		

ম্ল্যপ্রাপ্তি ২০৮০/ ডাক মাস্থল ৩০।১৫ নগদ বিক্রয় ৮০/ কর্মচারীর বেতন ৩৩, বিবিধ হি: ১ কাগজ ৩৭॥ মুদ্রান্ধণ হি: ৮১,

.
২৪৽ কমিশন ১!৵
পূর্বস্থিত ১২৩৯৸৵১৽ বিবিধ হিঃ ৭৸৽

১৪৭৯৸৵/১०

ce20/20

ইণ্ডিয়ান মেদেশ্বার

মূল্য প্রাপ্তি 2991/€ ডাক্মাভ ল >२७८**५**€ বিবিধ বিবিধ 2920 39/0 নগদ বিক্রয় 401 1000 মুদ্রান্ধণ বিজ্ঞাপন কাগজ >>/ @9110 কর্মচারীর বেতন ezun/o কমিশন 240CE পূৰ্ব হিত २१२०/६ ७०८ १८७ স্থিত **८८२**% ३० २১१५७/১ ৫

মেদেখারের দেনা প্রায় ২২০০ টাকা।

তত্ত্ব-কোমুদী

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাকিক পত্তিকুলা

১২**শ ভাগ।** ১৭<mark>শ সংখ্যা।</mark>

১লা পোষ রবিবার, ১৮১১ শক, ত্রাক্ষ সৃষৎ ৬০

বাৎসরিক অগ্রিমমূল্য ২॥ •

মকস্বলে ৩১
প্রতি থণ্ডের মূল্য প

मीरनद वामना।

वाका वाक्यांनी मात्व वर्ग निःहानत्न দীন প্রজা সাম্রাজ্যের দূর প্রান্ত হ'তে 🦈 वर्ष वर्ष ताखकत करत निर्वानन, দৈবাৎ কখন যদি করে আগমন রাজ পূবে, লোকারণ্যে দূরে দাঁড়াইয়া একবার রাজ মৃত্তি হেরে কি লা হেরে। রাজার নিদেশ মানে, স্থশাসনে তাঁর রহে স্থে; কথনও বা হুই হাত তুলে আশীর্কাদ করে তাঁরে। ওছে বিশ্বরাজ চিরদিন দীন প্রজা দূর হ'তে আমি নিবেদিব রাজ পূজা, উদ্দেশে তোমারে করিব প্রণাম প্রাতঃ সন্ধ্যা ? সিংহাসনে জুমি নৃপ, কুদ্র আমি পড়ে আছি দুরে প্রভাময়ী মূর্ত্তি তব পাবনা দেখিতে আঁথি ভরি ? রাজ্পথে জনতার মাঝে "অই রাজা" বলি যবে অঙ্গুলি নির্দেশি অপরে দেথায়, নাহি পাই দেখিবারে, চলে যাও জ্যোতির্ময় নিমেষের মাঝে, দ্রে পরিচ্ছদ শোভা দেখি যদি কভু ভাবি মনে পাইয়াছি রাজ দরশন অতৃপ্ত-পরাণ ফিরি গৃহে। ওছে দেব তুমি নাকি জগতের পিতা ? ভুমি নাকি সেহ করণার খনি জীবের জননী 🤊 তবে কেন দূরে রাথ সম্ভানে তোমার ? কাছে ডাক হে জননী, অথবা আপনি নিভৃত কুটীরে থাকি দাও দর্শন, ভনাও বচন তব, মস্তকে আমার আশীর্কাদ হস্ত তব রাথ ক্ষেহ ভরে ; তব রূপ তব স্থর স্পর্শ মধুময়, জানাইবে কাছে তুমি জননী আমার।

নিবেদন ও প্রার্থন।— আমাদিগের পথ প্রদর্শক অনস্ত জীবনের আদর্শস্বরূপ প্রমেশ্বর! আমরা যে কিছুতেই আর এ পথের অন্ত পাইনা ? আমরা যেমন একটু অগ্রসর हरेब्राष्टि, अप्रति प्रिये जूमि राग आंत्र अस्टान्त्ररणं वर्खमान ति ब्रोह। पृष्टिवाि शिका (ब्रथा (व्ययन जंग्राम) व्यवन हो । यात्र, দর্শক ষতই অগ্রসর হইতে থাকে, দৃষ্টির শেষ সীমান্থ রেখা যেমন ততই অগ্রসর হইয়া যায়, কিছুতেই আর ্ফাহার শেষ পাওয়া যায় না, আমাদের দশাও যে তেমনই হইয়া পড়িল। কোন ক্রমেই আর আমরা তোমার সহিত পারিয়া উঠিতেছিনা। যে স্বার্থ পর ছিল সে যদি একটুকু পরার্থে জীবন প্রদান করিতে ইচ্ছুক হইল; তুমি অমনিই তাহার নিকট আরও কত কি দাওয়া করিরা বসিতেছ। যে দিনের মধ্যে একবার তোমাকে ডাকিয়াই সম্ভষ্ট ছিল, যাই সে একটু অধিক পরিমাণে ডাকিতে ইচ্ছুক হইল, অমনি তুমি আরও অধিক সময় তোমার উপাসনাতে এবং প্রার্থনার ব্যাপত হইবার জন্ম জেদ করিতে থাক। এইকপে আমাদের আদর্শ কেবলই অগ্রসর হইয়া যাইতেছে। এই কুদ্র প্রাণ কতকটা বাইয়া মনে করিতেছিল এইবার একটু বিশ্রাম করি। বোধহয় আর অধিক যাইতে হইবে না। ভূমি কিনা বলিলে সে কি সন্তান! তোমার পথের যে শেষ নাই। আরও অনেক দুর চলিতে হইবে। বহু পথ তোমার জন্ম অপেকা করিতেছে। অবসন্ন দেহে বিশ্রাম করিবার জ্বন্ত তোমার স্বষ্ট হয় নাই। তোমার জীবন যেমন ক্ষুদ্র বা কোন নির্দিষ্ট সময়ের জক্ত নয়, তোমার পথ এবং আদর্শ ও তেমনি সামাভ বা সীমাবদ্ধ নয়। অবসন্ন হওরা তোমার পক্ষে সাজে না। "পারিনা" একথা তোমার মুণ হইতে বাহির হওয়া সাজে না। নিয়ত থাটবে নিয়ত অগ্রসর হইবে। যদি একবার এ পথে চলিতে ष्यज्ञास रुप जोहा हरेल रहारक चात कठिन मरन हरेरव ना। কিন্তু বহু দিন বিদেশ-বাসের পরে প্রিয় জনের সহিত মিলিত ছইবার উদ্দেশে গমন যেমন তৃপ্তিকর ও উৎসাহজনক। তেমনি এপথে চলাও জারাম ও জানন্দের হেভুজনক হইবে। প্রভূ পরমেশ্বর! যদি অনস্ত কালই আমাদিগকে চলিতে হয়, তাহা ছইলে প্রাণকেও তেমনি চির-উৎসাহশীল ও উদামপূর্ণকর। চলিতে চলিতে যেন অবসন্ন হইনা পড়িতে না হয়। মধ্যে মধ্যে

বেন তোমার স্নমধুর আহ্বান এবং আখাস ধ্বনি শ্রবণ করিতে পাই। বেন তোমার আরামদায়ক সাখনা ও সমিলনানন্দ লাভ করিয়া কুতার্থ হই। অন্তথা আমাদের ছুর্বল প্রাণ কোন ভরদার এত দীর্ঘ পথ চলিতে সমর্থ হইবে। আমাদিগকে আশা দেও এবং পথের চালক হইয়া ভোমার অমৃত-নিকেতনে লইয়া যাও।

সম্পাদকীয় মন্তব্য ।

পর-ছিতৈষণঃ--- মাহুষের অবস্থা যথন সচ্চল থাকে---যথন শরীর সবল ও স্থ থাকে, প্রয়োজনাতি রিক্ত আয় হইতে থাকে, পৃথিবীর অন্যান্য অবস্থা সকল অমুকৃল থাকে, চারি দিক হইতে সাহায্য সহামুভূতি বিনা প্রার্থনাতেও আসিয়া উপ-স্থিত হয়; তথন সে যদি অন্যের সাহায্যের জস্তু কিছু চেষ্টা করে, সে ব্যক্তির পক্ষে তাহা প্রশংসার বিষয় ছইলেও বিশেষ প্রশংস-নীর নয়। করিণ সক্তল অবস্থায়, সক্ষম অবস্থায় অন্যের সহায়তা না করা অমাহুষোচিত কার্য্য, বিষম নিন্দার কারণ। মাহুষ হইরা মাত্রবের সাহায্য করিবে, তাহার জন্য আপন শরীরের শোণিতের বিন্দু বিন্দু ব্যয় করিবে, ইহাই স্বাভাবিক। স্তরাং সচ্ছণ অবস্থায় অন্যের সাহায্য করিবার প্রবৃত্তির বিশেষ প্রশংসা না করিলেও চলিতে পারে! কিন্তু তাহাই প্রশংসনীয় যে পর হিতৈষণা লোককে আপন স্থবিধার প্রতি উদাদীন করিতে সমর্থ হয়। যে পরহিতৈষণা নিজের প্রাপ্য আয়ের আর্দ্ধাংশ অপরকে প্রদানের জন্য উত্তেজিত করে তাহাই প্রশংসনীয়। কোন বিষয়ে অন্থবিধা হইবে না, আমার ত্রথ স্বাস্থ্য বোল আনা বজায় থাকিবে, কোনরূপে ক্তিগ্রস্ত হইতে প্রস্তুত হইব না, অণচ পর্হিটেথী বলিয়া পরিচিত হইব এরূপ আকাজ্জা ত্রাকাজ্ঞ। ভিন্ন আর কিছুই নয়। ব্রাহ্মগণের মধ্যে এইরূপ আত্মত্বথ বিষৰ্জন দিয়া আত্ম-ক্ষতি সাধন করিয়া, একটু নিজ স্থ্য স্থবিধা পরিত্যাগ করিয়া যে অন্যের হিত করিবার ইচ্ছা প্রবল হইতেছেনা, ইহা বাস্তবিকই পরিতাপের বিষয়। দিন দিন আত্ম-স্থেচ্ছা যদি প্রবল হইতে থাকে, সন্যের প্রতি যদি উদাসীনতা বৰ্দ্ধিত হইতে থাকে, তাহা হইলে ব্ৰাহ্মগণ কথনও লোক স্মাজে আপনাদের আশ্রিত ধর্মকে প্রশংসিত করিতে সমর্থ হইবেন না। এ ধন্মের প্রতি লোকের কোন আকর্ষণ হইবে না। ধর্মের উচ্চ মত সকল প্রচার করা বিশেষ কিছুই কঠিন নয়। উচ্চ আদর্শের কথা জগতে ঘোষণা করা বর্ত্তমান সময়ে বিশেষ কিছুই किंठिन कार्या नरह। भूकी भूकी धमाञ्चलातकन्न रव नकन डेक्ट डेक्ट আদর্শের কথা প্রচার করিয়া গিয়াছেন। তাহা সংগ্রহ পূর্বক তাহাতে নৃতন নৃতন রং দিয়া আরও উচ্চ হইতে উচ্চতম আদর্শ ও উন্নতভাব সকল বাক্যবা লেখনীর সাহায্যে জন-সমাজে প্রচার করা বিশেষ কিছু কঠিন ব্যাপার নহে। কিন্তু তদ্মূরপ আচরণ করাই প্রয়োজনীয় এবং প্রার্থনীয়। ব্রাহ্মণণ উচ্চ ধর্মমতের প্রচারের যেন চরমগীমায় উপস্থিত হইয়াছেন। িত্ত তদমূরপ আচরণ কোথায় ? "আত্মবৎ জগংকে ভাল বাদ"

বা "জগংবং আপনাকে ভাল বাস" ইত্যাকার কথা বলিতে বা লিখিতে অনেক সময়ের বা পরিশ্রমের প্রয়োজন হয় না। কিন্তু বিন্দু বিন্দু পরিমাণে নিজ্প রক্ত অপরের সেবায় প্রদান করিতে হইলে বিশেষ ত্যাগ স্বীকারের প্রয়োজন। অপরের স্থণ স্বাস্থ্যের জক্ত নিজের স্থণের কিয়ং গরিমাণে হানি করিতে প্রস্তুত হওয়া এবং নিজ স্বার্থের কিছু ক্ষতি করিয়া, আপনাকে অস্তুত্ত হওয়া এবং নিজ স্বার্থের কিছু ক্ষতি করিয়া, আপনাকে অস্তুত্ত হওয়া এবং নিজ স্বার্থের কল্যাণ সাধনে নিযুক্ত হওয়াই আবেশক। ইহা শুধু মুখের বাক্য নিঃস্বরণের বা লেখনী চালাইবার মত সহজ বা অনায়াসসাধ্য ব্যাপার নহে। প্রাহ্মগণের পক্ষেক্তর্যা এ বিষয়ে তাঁহাদের যে ক্রটা আছে, তাহা হইতে মুক্ত হইবার জন্ত প্রাণপণে যত্নশীল হওয়া। এ চেটায় তাঁহাদের শরীর মন এবং স্থণ, স্বাস্থ্য নিযুক্ত না হইলে তাঁহারা কথনই এ ধর্ম্ম জগতে প্রচার করিতে সমর্থ হইবেন না।

ভাল পরের জন্ম নিজের কিছু অস্থবিধা করা কি এতই কঠিন ব্যাপার ? যে ব্যক্তি নিজের তিনটী সম্ভানের পরিচর্য্যা করিতেছে সে অপর একটা হঃখী বালক বা বালিকাকে আপ-নার সম্ভান বলিয়া কি ভাবিতে পারে না ? যে ব্যক্তি আপন ভাই ভগিনীদিগের পাঁচটীর ভার গ্রহণ করিয়াছে, সে কি অপর j_{eq} একটী নিঃসহায় বালক বা বালিকাকে আপনার ভাই বা ভগিনী বলিয়া মনে করিতে পারে না? ইহাতে এমন কি কাঠিন্ত আছে ? তিনটী সম্ভান আছে, মনে করিলেই হয় যেন আরও একটা সন্তান **জনিয়াছিল। ৫টা ভাই, ভাগনী**র *জগ্ন* পাটিতেছে, মনে করিলেই হয় তাঁহার যেন আর একটা ভাই বা ভগিনী জন্মিয়াছিল। রক্তের সম্পর্ক ছাড়া কি অন্ত সম্পর্ক থাকা সম্ভবপর নয় ? এবং তাহা কি সময়ে সময়ে রক্তের সম্প-ককে অতিক্রম করে না ? আমরা এরূপ দৃষ্টাস্ত প্রায়ই দেখিতে পাই য়াঁহাদের মধ্যে রক্তের সম্পর্কের লেশও নাই অথচ তাঁহারাও কেমন ঘনিষ্ঠভাবে আবদ্ধ হইয়া রহিয়াছেন। কেমন আত্মপরের প্রভেদ তাহাদের মন হইতে চলিয়া গিয়াছে। তবে ইহা ভাবিয়া লওয়া কিছুই বিচিত্র বা অসম্ভব ব্যাপার নহে। মনেব ধাঁধাঁ, পর পর ভাব একবার দূর করিয়া দিলেই দেখা যায় পর আর পর থাকে না; সে আপন জনের স্থান অধিকার করে। ব্রাহ্মগণের যদি পরকে আপনার ভাবিবার মত অবস্থা না হইয়া থাকে, তবে তাঁহারা যে উচ্চ ধর্ম পাইয়াছেন বলিয়া মনে করেন তাহার আর সার্থকতা কি ৷ তাঁহাদের সেরূপ মনে করিবারই বা অধিকার কি? আমরা আশা করি ত্রাহ্মগণ পরার্থে আত্ম-ত্যাগের জন্ম দিন দিন প্রস্তুত হইতে যতুনীণ হইয়া তাঁহাদের এ সম্বর্ধার ক্রটা অপনোদনের চেষ্টা করিবেন।

.প্রচার প্রণালী—বে ধর্মসমাজ আপনাদিগের কার্ক্যের পরিচালক ও শাসকরপে কোন অল্রান্ত শাস্ত্র বা মহ্যাকে গ্রহণ করে না, বাহাদের আদর্শ কোন নির্দিষ্ট সীমার আবদ্ধ বা অহদার নতে, তাহাদের ধর্ম প্রচারার্থ কোন্ প্রণালী অবলম্বন করা হৃত্তিসম্মত তাহানিদ্ধারণ করা অতীব কঠিন ব্যাপার। ব্রাহ্মসমাল কোন অল্যান্ত শাস্ত্র বা মহ্যার আবশ্রতা স্বীকার

करतम ना এवः এই সমাজের মতগুলি এখন। এমন আকার প্রাপ্ত হয় নাই, যাহা ছারা কোন ব্যক্তির মতকে নিয়মিত করা বাইতে পারে। বর্ত্তমান সময়ে আক্ষদমান্তের মত বলিয়া যাহা সর্বসন্মতিক্রামে গৃহীত হয়, ভাহাও এমন সাধারণ ও বিস্তৃত্বর্থ-ব্যঞ্জক বে তাহাছারা কোন ব্যক্তিকেই নিয়মিত করিবার পক্ষে বিশেষ স্থাবিধা হয় না। এজন্ত ত্রাহ্মসমাজের কোন প্রচারকের যদি বিশেষ মতের পরিবর্ত্তন ও ঘটে, তথাপি তাঁহাদিগকে এমন বিশেষ কিছু প্রদর্শন করা যায় না, যাহাছারা সেই পরিবর্ত্তিত মত যে আন্ধ-ধর্ম্মের বিরোধী তাহা বৃঝিবার পক্ষে স্থবিধা হয়। এই উদারতা হইলেও কোন সমাজের পক্ষে কার্য্য করা বিশেষ কঠিন ও অসম্ভব ব্যাপার হইয়া পড়ে। राशात अपन रकान निर्मिष्ठ जानर्ग नाहे, याहा बाता नकरन নিয়মিত হইবেন, সেখানে কোন ব্যক্তি বিশেষের মতের প্রতি-বাদ করিতে গেলেই সহজেই এই উত্তর প্রদত্ত হয়,যে আমার মত যে ত্রাহ্মধর্মের মত নয়, তাহার কি প্রমাণ আছে ? এই সকল কারণে ত্রাহ্মধর্মের প্রচারকগণের মধ্যে মত-বৈৰ্ম্য জনিত বিচ্ছেদ প্রায়ই দেখা যায়। ভারতবর্ষীয় ব্রাহ্মসমটিলর প্রচারক-গণের মধ্যে এই দৃষ্টান্ত কম প্রবল নছে। যতদিন বাবু কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় জীবিত ছিলেন, ততদিন তাঁহাদের পরস্পর মতের ष्यरेनरकात कथा महत्व जाना यात्र नाहे। उाँहारा रव मकन পরিবর্ত্তন ঘটত, অপরেরা তাহারই প্রতিধানি করিতেন। তাঁহার পরলোক গমনের পর হইতেই দেখা যাইতেছে, ভারত-বর্ষীয় ব্রাহ্মসমাজের প্রচারকগণ আর এক্য হইয়া কার্য্য করিতে পারিতেছেন না।

সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের স্ষ্টিও অনেকটা এই কারণেই হই-ষাছে বলিতে হইবে। কোন এমন এক বন্ধনস্ত্ৰ ছিল না যে স্ত্ৰ-দারা সকলে একত্রে আবদ্ধ থাকিতে পারা যাইত বা এমন কোন শাসক ছিল না যাহা সকলকে এক শাসনে বা এক নিয়মে শাসিত ও নিয়মিত করিতে পারিত। স্বতরাং ভিন্ন ভিন্ন কৃচি ও শিক্ষাসম্পন্ন লোকগণ আপন আপন মনোনীত দলে বিভক্ত হইয়া পড়িলেন। এথানেও দেখা যাইতেছে যে কয়েকজন প্রচারক ত্রাহ্মধর্ম প্রচারার্থ আপনাদিগের জীবন সমর্পণ করিয়াছিলেন তাঁহাদের মধ্যে চুই জনের সহিত এখন ব্রাদ্ধ-সমাজের দঙ্গে দাক্ষাৎ যোগ আর নাই। এই চুই জনেরই বিশ্বাস তাঁহারা যে ব্রাক্ষধর্ম পরিত্যাগ করিয়াছেন তাহা নয়, কিন্তু অন্ত ভাবে এ ধর্মের প্রচার করা তাঁহাদের উদ্দেশ্য। তাঁহাদের জীবন যে ধর্ম সম্বন্ধে পূর্ব্বাপেকা কোনও অংশে হীন হইয়াছে, এরপ বলিবারও উপায় নাই। অথচ তাঁহা-দের সহিত সাধারণ বাহ্মসমাজের আর সাক্ষাৎভাবে যোগ নাই। এরূপ বিচ্ছেদ প্রার্থনীয় না হইলেও, বর্ত্তমান সময়ে ইহা ঘটিবেই। স্বাধীন বিচার প্রবৃত্তি প্রবল হইলে এরূপ ঘটনা নিবারণ করা কথনই সম্ভবপর নহে। সাধারণ ব্রাহ্ম-সমাজের প্রচারকগণের মধ্যে ছই জনের সহিত যেমন বিচ্ছেদ ঘটিয়াছে, ভবিষ্যতে যে আর সেরূপ ব্যাপার ঘটবে না, তাহারই বা নিশ্চয়তা কি ? এরপ ঘটনা ঘটিবে এবং ইহার প্রতিকার করা সম্ভব্পর নহে। সাধারণ ব্রক্ষিন্মান্ধ প্রচারকগণের সহিত এরূপ বিচ্ছেদজনিত অনিষ্ঠ নিবারণের আশার
বর্ত্তমান সমরে যে নিরম প্রণয়ন করিয়াছেন, তাদারা কতক
পরিমাণে অনিষ্ট নিবারিত হইলেও হইতে পারে। কিন্তু এক
বারেই অনিষ্টের হালু এড়াইবার সম্ভাবনা নাই। বর্ত্তমান সমরে
যে নিরম হইয়াছে তদমুসারে নিয়মিতরূপে পরীক্ষাধীন ইইয়া
চলিলে, কোন ব্যক্তিই ছয় বৎসরের পুর্ব্বে সাধারণ আক্ষসমাজের
প্রচারক পদে অভিবিক্ত হইতে পরিবেন না। এইরূপ প্রথা
অবলম্বনেই যে মতের অনৈক্য ঘটিবে না, এমন কোনই ভরসা
নাই।কারণ আমরা মত পরিবর্ত্তনের যে দৃষ্টান্ত দেখিয়াছি,তাহার
তুলনার ছয় বস্থরের পরীক্ষা কেন তাহার দিগুণ সমরের পরীকার উপরও আছা হাপন করিতে ভরসা হয় না।

যথন দেখা গাইতেছে যে বছদিনের পরীক্ষিত ব্যক্তিগণেরও ধর্মজীবনের পরিবর্ত্তনের সহিত ধর্মলাভের সাধন প্রণালী গ্রহণ সম্বন্ধেও পরিবর্ত্তন ঘটে এবং বিশেষ ভাবে মতেরও পরিবর্ত্তন चंग्रिंट थात्क, उथन ध्वांत्रधानी किन्नभ स्टेर्ट त्म मदस महत्वहे श्रम উथिত इत्र। गिनि जाज जामात्वत श्रातक আছেন, পাঁচবৎসর পরে যে তিনি প্রচারক থাকিবেন, তাঁহার মতের যে স্থিরতা থাকিবে, সে সম্বন্ধে যথন কোন নিশ্চয়াত্মক ভরসা নাই, তথন এরপে ব্যক্তিগত অন্থিরতার উপর প্রচার কার্য্য কিরূপে সমর্পণ করা যাইতে পারে এবং কিরূপেই বা তাহাতে আমরা নিঃশঙ্ক হইতে পারি ? এজন্ত ইহারই মধ্যে এমন কথা উপস্থিত হইয়াছে যে, বর্ত্তমান প্রণালী অনুসাবে প্রচারক নিযুক্ত না করিলে চলিতে পারে কি না, অর্থাৎ সাধা-রণব্রাহ্মসমাজ কিম্বা কোন বিশেষ সমাজের নামে কেছ প্রচারক থাকিবেন না। যাঁহাদিগের ব্রাহ্মধর্ম প্রচার জীবনের বিশেষ লক্ষ্য হইবে, ভাঁছারা স্বাধীন ভাবে কার্য্য করিবেন। যে সকল স্থানে তাঁহারা কার্য্য করিয়া বেড়াইবেন, তত্তৎ স্থানের লোকেরা তাঁহার বায়ভার বহন করিবেন, অথবা তাঁহারা স্ব স্ব জীবিকা নির্বাহের জন্ম অর্থ সংগ্রহ পূর্বক স্বতঃপ্রবৃত্ত হ**ই**য়া **প্রচার** কার্য্যে নিযুক্ত থাকিবেন, অথবা বিশেষ বিশেষ স্থানের উপাসকমণ্ডলী সামন্বিকরূপে এক এক জনকে আপনাদিগের আচার্যারূপে নিযুক্ত করিয়া, তাঁহাদিগকে আবশাক্ষত প্রচার কার্য্যে নিযুক্ত করিবেন। এই রূপে কার্য্য হইলে প্রচারক বিশেষের মত পরিবর্ত্তন দারা সমাজকে যে ক্ষতিগ্রস্ত হইতে হয়, তাহার मञ्जावना थाकिरव ना এवः এक वाङ्कित कान् कथात्र लाक বিশ্বাস স্থাপন করিবে, কোন্ কথায় করিবে না, এখন যে তাহাই স্থির করিতে পারা যায় না, এ সকল অস্থবিধা আর থাকেনা। প্রচারের এমন উপায়ও অবলম্বিত হইতে পারে যে কোন কোন সমাজ উপযুক্ত ধর্মগ্রন্থ সকল, বিশেষ উপযুক্ত ব্যক্তিৰারা লেখাইয়া লইয়া প্রচার করিতে পারেন এবং লেখককে উপযুক্তরূপ পারি-अभिक अमान कतिए भारतन। ইराषाता रमरे मकन अहा-त्रार्थीत जीविका निर्सारहत जन्न विराण जीविर्ज हम ना. হয়, তাহাতে একটা অথচ কোন সমাজের নামে যাহা প্রর্থ. সামঞ্জদ্য থাকিতে পরে। প্রচারকের

পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে সমাজের নামে বাছা প্রচারিত হয়, যাহার মধ্যে পূর্বাপর সামঞ্জন্য থাকে না, তাহা বারা বিশেষ ক্ষতি হইবার সম্ভাবনা এবং সেরপ ক্ষতি যথেষ্ট হইতেছে। আমরা এই বিষয়টা আক্ষসাধারণের বিচারের জম্ভ উপস্থিত করিলাম মাত্র। এ বিষয়ে যে কোন একটা মত বিশেষের প্রতি আমাদের বিশেষ কিছু পক্ষপাতিতা আছে এখন তাহা বলিবার মত অবস্থা উপস্থিত হয় নাই। আশা করি আক্ষগণ বিশেষ ভাবে এই বিষয়ে চিস্তা ক্ষরিবেন এবং প্রচার প্রণালী সম্বন্ধে কোন স্থমীমাংরায় উপস্থিত হইতে যম্ব ক্ষরিবেন।

সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্কাহক সভা ২৩ বৎসর হইতে প্রচারকগণের কার্য্য-ক্ষেত্র নির্দিষ্ট করিয়া দিবার প্রণালী স্মবলম্বন করিয়াছেন। ব্রাহ্ম সাধারণ এই প্রণালীকে সমুমো-দন করেন কি না এবং এই প্রণালীতে কার্য্য হইলে অধিকতর কার্য্য হইবার সম্ভাবনা আছে বলিয়া মনে করেন কি না, তাহা বিশেষ ভাবে জানিতে না পারিলেও একথা বলা যাইতে পারে. যে যে সকল প্রচারক এই প্রণালীতে কার্য্য করিতে বিশেষ যত্ন-শীল হইয়াছেন, তাঁহারা অন্ত প্রণালীতে যাহা করিতে পারিয়া ছিলেন, তদপেক্ষা অধিকতর কার্য্য করিতে সমর্থ হইরাছেন। এই প্রণালীতে কার্য্য করিবার পক্ষে বিশেষ একটা স্থবিধা এই যে তাঁহাদের কলিকাতা হইতে কোন একটা স্থানে গমন এবং প্রত্যাগমন প্রভৃতিতে যে সময় ও অর্থ অকারণ রুখা ব্যয় হয় তাহা আর হইতে পারে না। অথচ নিকটে প্রচারক থাকায় সকল স্থানের ব্রাহ্মগণই তাঁহাদিগকে বার বার পাইতে পারেন। পূর্বে এমনও ঘটিত যে কোন সমাজের হয়ত আর্থিক অবস্থা সচ্চল না থাকায় তাঁহারা সকল সময় প্রচারককে আহ্বান ক্রিতে স্থবিধা পাইতেন না এবং অনেক সমন্ত্র সে সকল স্থানে প্রচারকের গমনও ঘটিয়া উঠিত না। আর একটী স্থবিধা এই যে যদি প্রচারকগণ আপনাপন নির্দিষ্ট ক্ষেত্রের সমস্ত ব্রাহ্মসমাজের সহিত রীতিমত বন্দোবন্ত করিয়া রাথেন যে কথন কোন সমাজে গমন করিলে প্রচারের স্থবিধা হইতে পারে, তাহা হইলে সকল সমাজেই প্রচারকগণ অধিক অবস্থিতি করিতে সমর্থ হইতে পারেন। বিশেষতঃ কোন এক স্থানের ভার গ্রহণে সেই স্থানের সম্বন্ধে প্রচারকের বিশেষ কিছু দায়িত্ব উপস্থিত হয় এবং তথায় ভালরূপে কার্য্য করিবার জন্ম বিশেষ আগ্রহ হইয়া থাকে। কোন স্থানের প্রতি বিশেষ কোন কর্ত্তব্য নাই, যথন যেস্থান হইতে আহ্বান আসিতেছে, তথন তথায় যাইতেছি; এরূপ উদাসীন ভাবে কার্য্য না করিয়া বিশেষ বিশেষ স্থানের ভার লইলে যে অধিকতরক্রপে কার্য্য করিবার প্রবৃত্তি জন্মিবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি ? কিন্ত এই প্রশালীতে কার্য্য করিবার বিক্লম্বে প্রধান একটা আপত্তি এই শুনা গিয়াছে,একজন প্রচারককে যদি কোন এক স্থানের লোকেরা বিশেষ ভাবে পছন্দ করে এবং কার্যানির্কাছক সভা যদি তাহার कार्या-क्लिक त्म ऋत्न निर्मिष्ठ ना कत्रिया अञ्चल निर्मिण करत्रन তাহা হইলে প্রচারকের পক্ষে কার্য্য করা কঠিন হইরা পড়ে।

त्य चारन थांग बांहेरक ठांब, तम चारन वाहेरक ना निवा व्यक्तवा ঘাইতে বাধ্য করিলে প্রচারকের কার্য্যের অস্থবিধা হয়। প্রচার कार्या (कांत्र क्वतमित्र कार्या नहि। कार्यानिकारक मछा, এরপ কিছু জানিতে পারিয়াও ইচ্ছাপূর্মক যে অন্তরূপ বন্দো-বস্ত করেন আমাদের এরূপ জানা নাই। কিন্তু এখন একটী কথা এই উঠিতেছে যে কোন এক স্থানের লোকেরা এক জনকে বিশেষ ভাবে পছন্দ করিতে পারেন তাহাতে দলেহ কি ? কিছ ভাঁছারা এই যে পছন্দ করেন, তাহা কি তথাকার সর্বসাধারণ লোকের অভিপ্রায় জ্ঞাত হইয়া করিয়া থাকেন ? বাস্তবিক কাৰ্য্যত: তাহা হয় না। তত্ত্বংহানের ব্রাহ্মগণ্ট বাঁহাকে ভাল মনে করেন: তাঁহাকেই চাহিয়া পাঠান। কিন্তু প্রচারকের কার্য্য किছু একমাত্র ত্রাহ্মগণের মধ্যেই আবদ্ধ থাকা উচ্ছিত নয়। ভাঁহারা নিত্য নৃতন লোকের মধ্যে কার্য্য করিবেন, নিত্য নৃতন লোককে ব্রাহ্মধর্মের সত্যজ্ঞাপন করিবেন, ইহাই তাঁহাদের প্রধান লক্ষ্য হওয়া উচিত। বক্তুতা প্রভৃতি ছারা তাঁহারা এই कार्यामाधन कतिया थाटकन। यनि वना योत्र शहन्त ना कतिटन সেখানে कार्या कता यात्र नां, তবে किक्राप नृजन नृजन লোকের নিকট বক্তৃতা করা সম্ভবে? বক্তৃতাম্বলে যত লোক উপস্থিত হয় কথনই তাহারা একজনলোককে জানে না। বিশেষতঃ যে সকল লোক এই সকল সত্য জানে না বা জানিতে ইচ্ছা করে না,তাহাদিগের মধ্যে কার্য্য করাই বিশেষ প্রয়োজন। প্রচারক যদি কোন স্থানের লোকের পছন্দ অপছন্দের প্রতি নির্ভর করিয়া কার্য্য করিতে ইচ্ছুক হন, তাঁহার কার্য্য করা একরূপ অসম্ভব হইয়া পড়িবে। ব্রাহ্মগণের সম্বন্ধে পছন অপ-ছন্দের কথাটা কতক পরিমাণে খাটে বটে, কিন্তু কার্য্যক্ষম লোকের প্রতি কোথাও একটা চিরবদ্ধসংস্থার থাকার কথনই সম্ভাবনা নাই। ঈশ্বরের সত্য লোককে জানান এবং তাঁহার মহিমা প্রচারই প্রচারকের কার্য্য। তাহা সকলের জন্মই প্রয়োজনীয় এবং উপযুক্তভাবে প্রচার করিতে পারিলে সকলেই তাহা গ্রহণ করিবে। অতএব প্রচারকের নিত্য নতন লোকের নিকট যাইয়া সত্য প্রতার করাই কর্ত্তব্য। লোকে যদি না শুনে তিনি তাহার জন্ত দায়ী নহেন। কোন এক স্থানের লোকে চিরদিন একজন লোককেই পছন্দ করিতেছে এমন দৃষ্টাস্তও প্রায় দেখা যায় না,স্থতরাং এই স্বাপত্তিকে বিশেষ যুক্তিযুক্ত বলিবার কোন প্রবল হেতু দেখা যায় না। সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভাগণ তাঁহাদের বার্ষিক সভায় এরূপ বিষয়ের মীমাংসার জন্ম यिन किছू ममग्र यालन करतन, जाहा हहेरल ममास्त्रत विरम्भ कला। হইতে পারে এবং তাঁহারা যাঁহাদিগকে কার্য্যের ভার প্রদান করেন, তাঁহাদের পক্ষেও কার্য্য করিবার পক্ষে স্থবিধা হয়।

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

মহিমা জ্ঞান ও সন্তান্থতৰ হইলে সহজেই মনছৈৰ্য্য হয়।

আমরা গত বারে লিখিয়াছি যে মানবের মন সহজেই প্রিন্ন
পদার্থে আকৃষ্ট হয় ও যাহা সর্বাপেকা আরামদায়ক ও পরিভৃত্তির
কারণ তাহাতে সংলিপ্ত হওয়া—তাহাতে মনোনিবেশ করা

আমাদের পক্ষে স্বাভাবিক ও সহজ্যাধ্য ব্যাপার। এরপ বিষয়ের অফুধ্যানে নিযুক্ত হইতে আর কোন অফুরোধ উপরোধের প্রয়োজন হয় না। প্রাণ আপনা হইতেই তাহাতে মগ্ন হইতে वाकिन इत्र ज्वर छोहार्टि नःयुक्त हरेगा जातान नास करत। केवत यथन व्यामारमञ्ज श्रिष्ठ व्याज्ञाममाष्ठक इन, यथन व्यक्त প্রকার আসক্তি ও আকর্ষণ হীন হইয়া ঈশ্বরামূরাগ প্রবল হইতে থাকে—অক্ত সকলের সংস্রব অপেকা ঈর্বরের সহিত মিলন আরামের কারণ হয়, অন্ত প্রাসক অপেক্ষা তাঁহার প্রাসক অধিক তৃত্তিকর হয়, তথনই মানবের পক্ষে স্বাভাবিকভাবে নিমগ্রচিত্তে উপাসনায় রত হওয়া সহজ্ঞ ও সভ্তবপর হয়। তথন তাঁহা ছইতে অন্তরে থাকাই কটের কারণ হয়—তাঁহার আরাধনার বিদ্ন উপস্থিত হইলেই আত্মার অস্থার হেতৃ হয়।

এক দিকে যেমন দেখা যার,মানব মন প্রির ও আরামদার-কের সহিত একত্রে থাকাকে প্রার্থনীয় মনে করে,সেরপ কিছুতে মনোনিবেশ করা তাহার পক্ষে অতি অনারাসসাধ্য ব্যাপার। भारत विषय मानित्व कता कथन क किन वा कहे कत माधन নয়, তেমনি অন্ত দিকে দেখা যায়, যাঁহা সম্মানাই, যাঁহার প্রতি প্রাণের সর্বা ও অক্তিম শ্রদ্ধা আছে, তাঁহার সহবাদে থাকা বা ঠাহার প্রদক্ষেরত থা কাও স্বাভাবিক এবং সহজ্যাধ্য ব্যাপার। পুর্বেক্তি স্থলে মন আবামের আশায় আপনা হইতেই সে দিকে 🖢 🗓 हो यात्र। याहेबा असन सध इस त्य ङाहा इहेटङ निकिश्व হ ওণাই কঠের কারণ হয়, এ স্থলে সেরূপ আকর্ষণে আকুষ্ঠ হইয়া না গেলেও অণ্ফিত ভাবে অন্ত শক্তির প্রভাব আসিষা তাহার মনকে বণীভূত করিয়া তাহাতে নিযুক্ত রাথে। সেই মহং ব্যক্তি হইতে এমন কিছু শক্তি সঞ্চারিত হইতে পাকে, যাহার বলে চঞ্চল ও দলাবিকিপ্ত মনও শাস্তভাবে-স্থিরপ্রাণে তাহার নিকট বদিব। থাকিতে বাধ্যহয়। এক প্রাণের টানে ছুটির। যাইয়া মুগ্ধ হয়। অসর অন্ত শক্তির প্রাবল্যে পরাজিত হইয়া মন্ত্রমার ভাগে তাহার সহবাসে থাকিতে বাধ্য হয়।

আমরা প্রায় সর্বাদাই এরূপ দেখিতে পাই, যথন অপরসাধা-রণ সকলের শ্রদ্ধেয় কোন ব্যক্তির নিকট গমন করি, তথন আর অভ্যনত্ত হইয়া অন্তিরতার দহিত বাচালতা করিতে পারা যায় না। তথন সমনোযোগে তাঁহার কাছে বসিয়া তাঁহার প্রত্যেক বাক্য শ্রবণ জন্ম প্রাণ আপনা হইতেই ব্যস্ত হয়। তাঁহার প্রত্যেক দৃষ্টান্ত গ্রহণ করিবার জন্ম প্রাণ ব্যগ্রহয়। সাধারণ শ্রদ্ধেয় ব্যক্তির আশ্চর্য্য প্রভাবে চঞ্চলত। পরাস্ত হুইয়া যায়। মর্যাদা সম্পন্নের নিকট ঘাইয়া তাঁহার মর্য্যাদা রক্ষার জন্ম আমাদিগকে বাধ্য হইয়া আমাদের পূর্ব্ব অভ্যাস পরিত্যাগ করিয়া শাস্তচিত্ত হইতে হয়। পৃথিবীর রাজার নিকট যথন দরিদ্র প্রজা গমন করে, তথন তাহার পক্ষে কি রাজ-গৌরবের হানিকর কোন কার্য্যে প্রবৃত্ত হওয়া সম্ভব ? তথন সে বাধ্য হইয়াই রাজার দিকে গভীর মনোযোগের দহিত তাকাইয়া থাকে। সেথানে রাঙ্গকীয় প্রভাব অবক্ষা ভাবে দীন প্রজাকে শাস্ত ও ধীর-প্রকৃতি-সম্পন্ন হইতে বাধা করে। বাচালতা বাচঞ্চলতা অথবা যে কোন আচরণ রাজ-গৌরবের লঘুতা-ব্যঞ্চক এমন কোন অফুষ্ঠান শে করিতে পারে না এবং করিবার স্থবিধা বা ভরদা পায় না। | হইয়া, তাঁহাকে ডাকিতে যাইয়াও কেন তবে এমন চঞ্চল ও

এইরূপ সূর্ব্বত্রই সন্মানিত বনের প্রতি লোককে বাধ্য হইরা শ্রদ্ধার স্হিত ভাহাতে মনোযোগী হইতে হয়। তাহাতে অভিনিবেশ চিত্তে মগ্ন হইরা বাইতে হয়।

পৃথিবীর সন্মানিত জনের প্রতি যথন আমাদিগকে বাগ্য হইয়া মনোনিধেশ করিতে হয়, রাজার রাজগোর্ব রক্ষার জন্ম বখন অলক্ষিত ভাবে তাহার শাসনে আমাদিগকে শাস্ত ও স্থৃতির চিত্ত করিয়া থাকে, তথন রাজরাজেখর মহান্ ঈখরের স্ত্রিধানে যথন আমরা যাই, তথন কেন আমাদের মন তাঁহার প্রভাবে বশীভূত হইয়া তাঁহাতেই নিমগ্ন ভাবে অবস্থিতি করে নাং কেন তাঁহাৰ উপযুক্ত মৰ্য্যাদা রক্ষা করিতে আমরা সমর্থ হই না 📍 পুথিবীর সন্মানিত ব্যক্তি বা রাজার সহিত তাঁহার कि दकान क्रभ जूनन। मखरव ? खान वा ठिति व रयशारन अक्षात কারণ সেখানে সহজেই উভয়ের মধ্যে উৎক্টতা ও নিক্টতার তারত্তমার একটা পরিমাণ করা যাইতে পারে। সেই পরিমাণের মধ্যে বতই অধিক ব্যবধান থাকুক না কেন-কথনই এমন তার-তম্য হয় না যে তাহা কোন প্রকারে প্রকাশ করিবার মত ভাষা পাওয়া যায় না। রাজার সহিত প্রজার যে ভারতমা তাহার সম্বন্ধেও উক্ত কথা থাটে। এথানেও ন্যুনাধিক্য ঘতই অধিক হউক না কেন তাহার পরিমাণ করা সম্ভবে। কিন্তু ভাষার কি এমন শক্তি আছে যে, মানবাত্মা হইতে প্রমাত্মা কত গুণে শ্রেষ্ঠ তাহা বাক্ত করে। অনম্ভ ও সীমাবিশিষ্টের তারতম্যের পরিমাণ করিবার ক্ষমতা ভাষার নাই। যে কোন বিষয় ধরা যাউক সে বিষয়েই বলিতে হয় অনম্ভ ও অন্তবিশিষ্ট। প্রনামা-জ্ঞানে অনস্ত, প্রেমে অনস্ত, শক্তিতে অনস্ত। সকল বিষয়েই তিনি অনস্ত আর আমরা সকল বিষয়েই ক্ষুদ্র-দীমাবদ্ধ। স্থতরাং তিনি কত বড়, কত সম্মানের পাত্র তাহার পরিমাণ করা সম্ভবে না। ভাষায় এমন শব্দ নাই, যাহা দালা এই পবিমাণগত তারতম্যের একটা ভাব প্রকাশ করা যাইতে পাবে। স্কুতরাং তাঁহার নিকটে যাইয়া কি পরিমাণে আমাদের শাস্ত ও ধীর চিত্তে তাঁছাতে মনোযোগী হওয়া—তাঁহার ধ্যান ও আবাধনায় নিযুক্ত হওয়া উচিত তাহা আমরা ভাবিয়াস্থির করিতে পারি না। কিন্তু আমাদের ব্যবহার কিরূপ হইতেছে ? আমরা কি উপাদনার সময় প্রমদেবের উপাসকের যে ভাবে অবস্থিতি করা উচিত তাহা করিয়া থাকি ? আমরা কি তাঁহার উপযুক্ত মর্যাদা রক্ষা করিতে অন্ততঃ যত্নশীল হইলেও যে সকল লক্ষণাক্রান্ত হওয়া আবশ্রক তাহা হইতে পারিতেছি ৪

উপযুক্ত সন্মান প্রদর্শন করিতে ত পারিই না, বরং তাহার পরিবর্ত্তে অসম্মানজনক ব্যবহাবই বিশেষ ভাবে করিয়া থাকি। আমরা যথাবিধি ভাঁহার মর্য্যাদা হানি করিতেই রত থাকি। পৃথিবীর রাজার বা সম্মানিত ব্যক্তিয় ভায় যদি তিনি সহজে ক্ষ্ট হইতেন বা অসমান প্রদর্শনের জন্ম দণ্ডবিধান করিতেন, তাহা हरेल आमानिशदक आति मूथ शृनिशा त्नाक नमारक त्वज़ाहर ठ হইত না। অপরাধির গুরুতর দণ্ড ভোগ করিতে করিতেই শেন मना প্রাপ্ত হইতে হইত।

আমরা সেই রাজার রাজা মহান্ পরমেখনের পূজায় প্রবৃত্ত

তাঁহার প্রতি উদাসীন হইয়া বিষয়ান্তরের অম্ধানে নিযুক্ত इहै। ইছার কারণ অত্নসন্ধান করিলে দেখিতে পাই, আমরা পৃথিবীর সন্মানিত ব্যক্তি বা রাজার নিকট ঘাইয়া তাঁহাকে যেমন ভাবে উপলব্ধি করি, তাঁহাদের সত্তা যেমন প্রত্যক্ষ দর্শন করি, প্রমেখনের সত্তা সেইরূপ অন্তব ত দূরের কথা তাঁহার ভুলনায় অতি সামান্ত পরিমাণেও আমরা উপলব্ধি করিতে সমর্থ হই मা। তাঁহার বর্ত্তমান হা-ভিনি যে ব্যক্তিরপে মহান্ পুরুষরপে সর্বাদা আমার দকে আছেন, তিনি যে দর্কানময়ে উজ্জন ও মহতোমহান্ হইয়া আমার কথা ওনেন, আমাদের আচরণ প্রত্যক্ষ করেন, দে জ্ঞান উক্ষল ভাবেত আমাদের থাকেই না, **তাঁ**হার বিদ্যমানতা অতি সামান্য ভাবেও প্রাণে অমুক্তব হয় নান আমরা কথাবার্ত্তায় যে ভাব সচরাচর প্রকাশ করি, আলোচনার সময় তাঁহার বর্ত্তমানতার কথা যেমন ব্যক্ত করি, বাস্তবিক প্রাণে কার্যাতঃ সেইরূপ উপলব্ধি কিছুই করিতে সমর্থ হই না। আমাদের কুত প্রাণ সেই মহতোমহানু বিষয়াতীত প্রম পুরুষকে ধারণা করিয়া উঠিতে পারে না। তাই মন উপাসনায় ঘাইরাও অভ্যমনক হইরা পড়ে। বিকিপ্তচিত হইয়া বিষয় হইতে বিষয়াস্তবের অনুধ্যানে রত হইতে থাকে।

আমরা তাঁহার বিদ্যমানতা তাঁহার বাক্তিত্ব সুস্পষ্ট অমুভব করিতে পারি না। তাই তাঁহার মহিমা-জ্ঞানের ও অভাব ঘটে। তাই মহতের প্রভাব কুদ্রের প্রতি যাদৃশ কার্য্যকর হওয়া উচিত তাহাও আমাদিগের উপর হয় না। মহৎ হইতে বে শক্তি অনুক্রত ভাবে আসিয়া কুল্র ও হীনকে পরাজিত করে—বশীভূত করে, তাহা আমাদের পক্ষে ঘটে না। আমরা জীবনে তাঁহার কোন প্রভাব অমুভব করিবার স্থবিধা পাই না। সাধারণতঃ সাধক মাত্রেই স্বর্গত আছেন,যে মুহুর্তে তাঁহার আবির্ভাব সামীন্ত রমেণিও অমুভূত হয় সেই মুহুর্তেই প্রাণ বেন অজ্ঞাতসারে শাস্ত ও সমাহিত হইয়া বায়। বাচালতা তথন কোথায় লুকায়িত হয়। অন্তমনা হইয়া বিষয়ান্তরে নিযুক্ত হওয়া একবারে অসম্ভব হইয়া পড়ে।তবেই দেখা যাইতেছে,তাঁহার পূজায় মনস্থিরের পক্ষে সন্তা অমুভবেরই বিশেষ প্রয়োজন। তাহার অভাবেই চিত্রচাঞ্চ্যা আদিয়া আমাদিগকে পূজা হইতে দুরে লইয়া যায়।

এগানেও দেখা যাইবে আমরা আমাদের নিত্য-সহায় এবং
নিত্য আশ্রয় সার সত্যস্তরপের বিদ্যানতা, তাঁহার জাগ্রত সন্তা যে অঞ্ভব করিতে পারি না, তাহার কারণ—আমাদের চেষ্টা এজন্ত অতি সামান্ত। আমরা দিবদের অধিকাংশ সময় বহিবিষ-রের চর্চায় যাপন করি। ছুল বিষয়ে যত সহজে আমরা নিমগ্ন হই সেই আলোচনার যত অধিক সমর বায় করি, অস্থুল কিছুর চিন্তা বা আলোচনার জন্ত আমরা সেরূপ সময় প্রদান করি না। এই ছুলবিষয়ের চিন্তারূপ প্রবল অভ্যাদের সহিত যেরূপ সংগ্রাম করা আশ্রেশুক আমরা যে তাহাও করিতেছি না, ইহা ঘারাই আমাদের প্রাকাজ্ঞাও আশ্য বৃহ্বা যায়। ইহা ঘারাই

ভূমা মহান্ পরমেশ্বরের উপাসনার বাহারা মগ্ন হইতে ইচ্ছা করেন, ভাহাদের চেটা চরিত্র কথনই এমন হয় না। তাঁহারা কথনও এত বহিবিষরশ্রিষ হন না। স্থতরাং যদি আমাদের সেই অতীক্রির পরমান্ত্রার সহবাস লাভ করা একমাত্র আবশ্রক ও উদ্দেশ্র হয়, তাঁহাতে নিময়চিত্ত হইরা বদি অপার আনন্দপ্ত লাজিলাভ করা প্রাণের একান্ত প্রার্থনীয় হয়, তবে এরপ উদাসীন ও বহিবিষয়াসক্ত হইলে চলিবে না। অধিক সময় এই কার্য্যে য়াপন করিতে হইবে। আমাদের বহিবিবরে আসক্ত থাকিবার অভ্যাস বেমন বহুদিনের এবং প্রবেশ পরাক্রান্ত, আমাদিগকেও তেমনি হর্জের প্রতিজ্ঞার সহিত তাহার বিক্রজে চলিবার অভ্যাপণে লাগিতে হইবে। ভাহা হইলে দেখিভে গাইব, আমাদের পশ্চাতে এমন একজন বর্তমান আছেন, বাহার অভ্য হক্ত আমাদিগকে নিরস্তর সাহায্য করিতে প্রস্তুত এবং বাহার প্রভাব আশ্রুয়্য ভাবে আমাদিগকে সেই বিষয়াতীত রাজ্যে লইয়া যাইবার জন্য নিয়ত ব্যগ্র।

বিশেষ বিধান। (তৃতীয় প্রস্তাব)

ভাক্তার মার্টিনো একস্থলে বলিরাছেন,—"তোমরা বলিতেছ ঈশ্বর অনস্ত ও পরিবর্ত্তনশীল। যদি ইছার অর্থ এই হয় যে এমন সময় ও স্থান নাই, যথন এবং যেথানে তাঁহার ইচ্ছা কার্য্য করি-তেছে না, তবে এ কথা নিতান্ত সতা। কিছু যদি ইছার অর্থ এই হয় যে তাঁহার ইচ্ছা সর্ব্য ও সমান ভাবে প্রকাশিত হই-তেছে—এই প্রকাশের আধিকা বা অল্পতা নাই—সাধুলোকের জীবনে ও একথও প্রস্তরের ভূপতনে তাঁহার ইচ্ছার প্রকাশ একই প্রকারের—আমাদের পক্ষে তাঁহার নৈকটা বা তাঁহা হইতে দূরত্ব ইত্যাকার অবস্থান্তর নাই—তবে আমার বিবেচনার ইহা অপেক্ষা শুক্তর ভ্রান্তি আর হইতে পারে না।"

তিনি আর একছলে বলিয়াছেন, "গৃহে বসিয়া নিজেব প্রকৃতির গঠন প্রণালীই পর্যালোচনা কর, আর বাছিরে গিয়া জগতের ঈশ্বরের কার্য্য প্রণালীর বিষয়ই চিস্তা কর, সর্ব্বত্র এই নিয়মটা দেখিতে পাইবে;—বে, তাঁহার কার্য্যের, তাঁহার ইচ্ছার প্রকাশের মধ্যে যাহা সর্ব্ব নিয়সনীয় তাহাতেই পরিবর্ত্তনের ভাব সর্বাপেকা অর, সেই গুলিই প্রথম হইতে শেষ পর্যান্ত ঠিক্ এক ভাবে চলে; কিন্তু তাঁহার স্ব্বাপেকা উচ্চভাবের কার্যা ও ইচ্ছার প্রকাশ সকলের প্রকৃতি জোয়াব ভাঁটার স্থায়; তাহারা তরঙ্গের স্থার সময়ের সময়ের উদ্ধানত হইয়া লুকায়িত গহ্বর স্কল প্রাবিত করিয়া দেয়।"

এই কথাগুলি বলিয়া তিনি দৃষ্টান্ত দারা বিশদ করিয়া দেথাইয়াছেন যে আমাদের শারীরিক ক্রিয়ার মধ্যে হৃংপিগ্রের স্পন্দন, শাস গ্রহণ,পাকযদ্বের কার্য্য প্রাভৃতি যাহা কিছু শুদ্ধ জীবন রক্ষার জন্ত নিতান্ত প্রয়োজনীয়,তাহার কার্য্য কি নিজা কি জাগরণ সকল অবস্থাতেই সমভাবে চলিয়াছে; কিন্তু দর্শন প্রবণ প্রভৃতি প্রেচতর ইন্তিয়ের কার্য্য সেরপ নহে; উহাদের কার্য্য থাকিয়া থাকিয়া হয়, উহারা কথনও কার্য্য করে, কথনও নিশ্চেষ্ট ভাবে নিজা যার। আবার বানসিক শক্তি সকলের কার্য্য এক দিকে শারীরিক শক্তির কার্য্য অপেক্ষা আরও বিরামশীল; মানসিক অপেকা শারীরিক পরিপ্রমের কার্য্য অধিকক্ষণ ধরিয়া করা যায়। অপরদিকে মনের যে সকল শক্তি যত উন্নত ভাহাদের কার্য্য

তত্তই অধিকক্ষণ অন্তর প্রকাশ পার,এবং তাহারা সেই পরিমাণে আমাদের ইচ্ছার অনধীন: অপরের আবিষ্কৃত জ্ঞান শিকা कत्रा, नमारनाहना कत्रा, विहात कत्रा, खाखविषद ट्यापीवस कत्रा প্রভৃতি নিম্পেণীর মানসিক কার্য্য, সাধারণতঃ আমাদের ইচ্ছা-ধীন: কিন্তু নৃত্তনতত্ত্ব আবিদার, নৃতনভাব বা আদর্শের অব-তারণা প্রভৃতি উচ্চতর মানসিক শক্তির প্রকাশ সামাদের ইচ্ছাধীন নহে; আমরা ইচ্ছা করিরা নুজন সত্য, ভাব, বা আদর্শ मान चानित्व वा चिक्किन धतिया द्वाधित्व भाति ना; मानित অবস্থা বিশেষে উহারা আপনাপনি আদে, আবার আপনাপমি ठालका यात्र। मः शाहक वा महननकातीत्र कार्या हेव्हाधीन: পরিশ্রম করিতে পারিলেই কার্যা সিদ্ধি হইবে। কিন্তু কবি বা উদ্ভাবকের মনের ভাব ঠিক যেন অন্ত কাহারও ইচ্ছাসাপেক-কথনও আলোক কখনও অন্ধকার, কখনও উচ্ছান কখনও অবসাদ তাঁহাদের প্রাণকে পর্যায়ক্তমে অধিকার করিয়া থাকে। আবার মানসিক শক্তি অপেকা আধ্যাত্মিক শক্তির প্রকাশ আরও বিরামশীল। সর্বাপেকা বিখাসী ও সাধু গাঁহারা তাঁহা-দিগকেও জিজানা কর, শুনিতে পাইবে বে আহত ঈশারদর্শন বহুকাল অন্তর অন্তর ঘটিয়া থাকে; অন্ধকার বা মৃত্তালোকের অবস্থার তুলনায় উজ্জন আলোকের অবস্থা অতি অল্লই সজ্যোগ কবা যায়: যাঁহাদের প্রাণ বাস্তবিক প্রমেখরের জন্ম ব্যাকুল, তাঁহাদিগকেও কত সময় অন্ধকারময় পথে চলিতে হয়; তথন অর্গের আলোক কোথায় অদৃশু হইয়া যায়, কেবল পূর্কাত্ত্ত ভভ মূহুর্তের বিখাস এবং ঈখরের অদুভ হন্ত ভিন্ন অক্ত কোন পথ প্রদর্শকের সাহায্য পাওয়া যায় না। এই স্থলে সাধু মার্টিনো বলিয়াছেন, "যদি বল আত্মার এই অবসাদ, কেবল উৎসাহের তারতমা ও ত্র্বলতার ফল, তবে সে কথায় আমি বিখাদ করিতে পারি না। অগষ্টাইন, টলার লুথার প্রভৃতি উন্নত ও গভীর ভাবসম্পন্ন মহাত্মাদের জীবনেও কি এই প্রকার পর্যায়ক্রমিক উচ্ছাস ও অবসাদের অবস্থা বিশেষভাবে লক্ষিত হয় না ১'' পরে তিনি দৃষ্টান্ত ঘারা দেথাইয়াছেন যে খুষ্টের জীবনেও এই অবসাদের অবস্থা বিরল নহে। যাঁহারা মহাত্মা চৈত্ত্ত দেবের জীবনচরিত পাঠ করিয়াছেন তাঁহারাও জানেন যে তিনি এইরূপ অবসাদ নিবন্ধন মধ্যে মধ্যে উত্তন্মপ্রায় হইয়া উঠিতেন। গভীরভাবে চিস্তা করিয়া দেখিলে ইছাই বরং দেখা যায় যে যাঁহাদের প্রাণ পরমেশ্বরের জন্ত অবিক ব্যাকুল ভাঁহাদের জাবনেই এই অবসাদের ভাব যেন অধিক প্রবল। তবেই দেখা বাইতেছে যে উচ্চতর সত্যের ভাব ও আদর্শ লাভ কেবল আমা-দের চেষ্টা সাপেক্ষ নছে। তবে চেষ্টা ভিন্ন, ব্যাকুরতা ভিন্ন কিছুই হয় না এ কথাও ঠিক।

তাহার পর মহাত্মা মার্টিনো দেখাইয়াছেন যে মানব প্রকৃতি
ছাড়িয়া যথন বিশ্বব্যাপারে ও ইতিহাসে ঈশ্বরের কার্য্যপ্রণালী
পর্যালোচনা করা যায় তথনও ইতিপূর্ব্ধে যে নিয়মের কথা
বলা হইয়াছে ভাহার যাখার্থ্যের প্রমাণ দেখিতে পাওয়া যায়।
এখানেও তাঁহার ইচ্ছার যে সকল প্রকাশ উচ্চতর ভাবাপয়
তাহা অধিকতর বিরামশীল, তাহা পাকিয়া থাকিয়া প্রকাশিত
হয়। গ্রহ নক্ষ্মাদির গতির বিরাম নাই, উহারা প্রতিনিরতই

চলিরাছে, কিন্তু পুশা ফলাদির উৎপত্তি, জীব জন্তর জন্ম প্রভৃতি উচ্চতার দৈহিক কার্য্য লকল বিরামনীল। উহা সুমরে সমরে ঘটে। আধ্যাত্মিক ভাব সম্বন্ধেও সেইরপ দেখা যার যে সকলের জীবনে, সমস্ত মানবজাতির ইতিহাসে ঐ সকল ভাবের প্রকাশ সমান নহে। যদিও পরমেশ্বর প্রতিহাসের বাস করিতেছেন, কেহই তাহার জ্ঞানের অগোচর নহে, তথাপি সকলের জীবনেই যে তাহার প্রকাশ সমান এমন কথা বলা যার না। যাহার জীবন যত উন্নত আমরা তাহার জীবনে সেই. পরিমাণে পরমেশ্বরের প্রকাশ স্বীকার করি। আবার জনসমাজের বিশেব সম্বান্ধের প্রকাশ স্বীকার করি। আবার জনসমাজের বিশেব সম্বান্ধের প্রকাশ স্বীকার করি। আবার জনসমাজের বিশেব সম্বান্ধের অবহার সাধু মহাত্মা ও ধর্ম প্রবর্তকদিগের প্রাণে তাহার যে বিশেষ প্রকাশ দেখিতে পাওয়া যার তাহ। বহুদিন অন্তর অন্তর দৃষ্ট হইয়া থাকে। গ্রহু নক্ষত্রাদির গাতি অবক্ষার কার্য্য প্রণালী অধিকতর স্বাধীন ভাবাপার। উচ্চতার আধ্যাত্মিক ভাব সকল থাকিয়া থাকিয়া প্রকাশ দিত্তহন্ধ—ইহাই এ রাজ্যের নিরম।

অতএব নিরম বলিলেই যে প্রতিমুহুর্তে ও সর্বান্থলে সম-ভাবে তাহার কার্য্য হইতে হইবে তাহার কোনও অর্থ নাই। মানব সমাজের .নিয়ম হইতে একটা দৃষ্টান্ত লওয়া যাউক— মনে করুন ব্যবস্থাপক সভা চৌর্যাপরাধের শান্তি নির্দ্ধারণ করিবেন। এন্থলে তাঁহাদিগের শুদ্ধ সাধারণভাবে একটা নিয়ম করিলে চলিবে না; অপরাধের গুরুত্ব, অপরাধীর পূর্ব্ব চরিত্র প্রভৃতির প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া ভিন্ন ভিন্ন ভ্রেল ভিন্ন ভিন্ন নিশ্বম করিতে হইবে। প্রথম অব্সরাধ অপেকা দ্বিতীয়বারের অপরাধের জন্ম গুরুতর শান্তি নির্দেশ করিতে হইবে ; দ্বিতীয় অপেকা তৃতীয়বারের অপরাধে আরও গুরুদণ্ড দিতে হইবে ইত্যাদি। আবার এইরূপ বাঁধাবাঁধি নিয়ম সভেও বিচারককে প্রায়ই আহ্বলিক অবস্থা বিচার করিয়া আপনার বিবেচনা অমুসারে দণ্ডের ইতর বিশেষ করিতে হইবে। স্কার্যাং দেখা যাইতেছে যে অবস্থা অমুসারে নিয়মের কার্যা। ভিন্নরূপ হইয়া থাকে। নিয়ম এক অর্থে সকল স্থলেই সমান; কিন্তু নিয়মের কার্য্য বা প্রকাশ সকল অবস্থায় সমান নছে। প্রমেশ্বর যে অবস্থার জন্ম যাহা প্রয়োজনীয় ঠিক তাহারই বিধান কবি-তেছেন। অবস্থার ভিন্নতা অমুসারে তাঁহার ইচ্ছার প্রকাশেব বিভিন্নতা হইয়া থাকে। একদিকে যেমন তিনি নিত্য ক্রিয়া-শীল, অপরদিকে তেমনি তাঁহার সহিষ্ণুতা অনস্ত। তাঁহাকে আমরা পাপের দণ্ডদাতা বলিয়া স্বীকার করি। অণ্চ পাপ করিবামাত্র তথনই কি তিনি পাপীকে দণ্ড দেন ১ যতদিন না পাপী নিজের জঘগুতা হৃদয়ক্ষম করিয়া অনুতপ্ত হয় তত্দিন পাপের প্রকৃত শান্তি আরম্ভ হইয়াছে বলা যায় না। কিন্তু এই জ্বস্তা বুঝিতে সকলের কি স্মান স্মর লাগে ? বিভিন্ন লোকের অবস্থা ও প্রকৃতির ভিন্নতা অনুসারে অল বা অধিক-কাল পরে প্রাণে অমুতাপের সঞ্চার হয়। পরমেশ্বর সকলের প্রাণেই আছেন। অথচ সকলের জীবনে দেব ভাবের প্রকাশ সমান সময়ে হয় না। তিনি সহিষ্ণু ভাবে উপযুক্ত সময়ের জন্ম প্রতীক। করেন। জনদমাজের আধ্যাত্মিক অবনতি সম্বন্ধেও এইরূপ। এ मक्न इत्न शिकिशा शिकिश उँक्षित केन्द्रात अकामरे निव्रम।

জড় জগৎ বেমন নিয়মাধীন, আধ্যাত্মিক জগৎ তেমনি
নিয়মাধীন। কিন্তু জড় জগংও আধ্যাত্মিক জগতের নিয়ম ঠিক্
এক ছাঁচে ঢালা নহে। মানবাত্মা গ্রহনক্ষত্রাদির স্থায় জড়পিও
নহে যে উহাদের সম্বন্ধে যে প্রকৃতির নিয়ম উপযোগী মানবাত্মার
পক্ষেও সেই প্রকৃতির নিয়ম উপযোগী হইবে। মানব প্রকৃতিকে
পর্যােশ্বর স্বাধীন করিয়া স্পষ্ট করিয়াছেন, এই স্বাধীনতাই আধ্যাত্মিক তার ভিত্তিভূমি। কাজেই আধ্যাত্মিক রাজ্যের নিয়ম জড়ঞ্চগতের নিয়ম হইতে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র প্রকৃতির। প্রত্যেক আত্মার প্রকৃতি
অপর আত্মা হইতে পৃথক্; অধ্য সকল আত্মার মধ্যে সাধারণ
সৌসাদৃশ্য আছে। সেই জন্ম যদিও সকল আত্মার মধ্যে সাধারণ
প্রণালী সাধারণতঃ একভাবের, তথাপি প্রত্যেক আত্মার অবস্থা
ও প্রকৃতির বিশেষত্ব অনুসারে উহার বিভিন্নতা ঘটিয়া থাকে।
জনসমাজসম্বন্ধেও সেইরূপ। স্বত্রাং ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তি বা
জাতির আধ্যাত্মিক উন্নতি ভিন্নভাবে হইল বলিয়া প্রমেশ্বরকে
পরিবর্ত্তনশীল বা পক্ষপাতী বলা যায় না।

অপরদিকে তিনি প্রতিহৃদয়ে থাকিয়া তাহার দেবভাব রক্ষা করিতেছেন। নতুবা উহা সমূলে বিনপ্ত হইয়া যাইত। किन्छ जिनि मानरवत श्राधीन जाग्र इन्डरक्ष्म करतन ना विविद्या, নিজের প্রতিষ্ঠিত নিয়মের ব্যতিক্রম করিয়া বল্পুর্বাক কাহাকেও কিছু করান না বলিয়া, আমবা সর্বস্থেল তাঁহার সমভাবে প্রকাশ দেখিতে পাই না। তিনি দেবভাবের দ্বারা আধ্যাত্মিক বিপ্লব সংসাধন করেন। কিন্তু প্রতিক্রিরার क्य त्वनभग चानश्रक अनः त्वनभ्य नगरनारभक्त कार्यहर মানবল্লমে ও জনসমাজে তাঁহার ইচ্ছার প্রকাশ সর্কাণ ও সমভাবে দেখিতে পাওয়া যায় না। কিন্তু তিনি প্রাণরূপে প্রতি-মুহুর্ত্তে ও প্রত্যেক অবস্থায় আনাদের আধ্যাত্মিক ভাব সকলকে জীবিত না রাখিলে এই প্রতিক্রিয়া কথনই সংঘটিত হইতে এই অর্থে আধ্যাত্মিক রাজ্যেও তিনি নিত্য পারে না। ক্রিয়াশীল।

ব্ৰাক্সবিবাহ বিষয়ে কয়েকটী কথা

প্রাপ্ত।

(0)

আন্না ইতিপ্রের প্রদর্শন করিয়াছি রান্ধবিবাহে যে কন্তার ভারাপণের রীতি আছে, তদ্বারা নারীলাতিকে কিয়ৎপরিনাণে হাঁন করা হয়। উভরের সমান অধিকার স্বীকার করিলে একজনের প্রতি অন্তের ভার অর্পণের রীতি অবলম্বন করা কথনও যুক্তিযুক্ত হয় না; রান্ধবিবাহের প্রণালী আলোচনা করিলে দেখা যাইবে আরও এমন কোন কোন ক্রোরা এই বিব্রহান্ত্রানে অনুষ্ঠিত হইয়া পাকে যদ্বারা নারী জ্বাতিকে যে হীন চক্ষে দেখা হর ভিন্নির সন্দেহ থাকে না। প্রায় অধিকাংশ বিবাহেই কন্তাকর্ত্তা বরকে অর্য্য প্রভৃতি প্রদান করিয়া থাকেন। অর্য্য একটী পূজার উপকরণ বিশেষ। দেবতা কিম্বা পূজনীয় ব্যক্তিকে অর্য্য প্রদন্ত হইয়া থাকে। যদি এমন মনে করা যায় যে কন্তাক্তা বরের প্রতি সন্ধান প্রকাশর্য এই অর্যপ্রধান করিয়া

থাকেন তাহা হইলে বলিতে হইবে যে কারণে বর ক্যাকর্তার সন্মানের পাত্র সেই কারণেই কন্তাও বর কর্ত্তার সন্মানের পাত্রী। সন্মান প্রদর্শন করা যদি ভাবী স্থামাতার প্রতি সন্ধত হয় তাহা হইলে ভাবী পুত্রবধুর প্রতি কেন সে সন্মান প্রদর্শিত হইবে না ? এস্থলে যে ইতর বিশেষ করা হয় তাহাদারা সহজেই প্রতিপন্ন হয় যে কন্যাকর্তা বরকে সম্মান করা যেমন আবিশ্রক মনে করেন. কন্যাকে বরকর্তা তেমন সন্মান প্রানর্শন করা আবশুক মনে করেন না ; কারণ সে তাহা পাইবার উপযুক্ত নর। আর যদি বলা হয় বে অর্থ্যভূতি সন্মান প্রদর্শনের জন্ম প্রদত্ত হয় না. কিছু লেছ. ও আশীর্কাদের চিহুত্বরূপে বা আন্তরিক সম্মতির প্রকাশকরূপে কন্যাকর্তা বরকে তাহা প্রদান করিয়া থাকেন, তাহা হুইলে সহজেই এই প্রশ্ন উপন্থিত হয়, কন্যাকে কেন বরকর্তা ভাঁহার স্বেহ ও আশীর্কাদ প্রভৃতির চিহুস্বরূপে কিছু প্রদান করেন না ? তিনি যে কিছু দেন না এমন নহে, কিছু দেই সভাস্থলে কন্যা-কর্তা যে ভাবে বরকে প্রদান করেন, তিনিও কেন সেইভাবে थाना करतन ना ? वाखिक **आ**यारनत रमर्भन य ती जि आह कना। कर्छ। वतरक कार्छनाशृर्त्तक कना। मुख्यमान कतिशा थाटकन, তাহাই প্রকারান্তরে ত্রাহ্মদমান্তেও চলিয়া আসিয়াছে। কিন্ত কোন প্রথা একবার চলিয়া স্মাসিয়াছে বলিয়াই যে তাহা চির-দিনই চলিতে থাকিবে, এমন কোন হেতু নাই। ব্ৰাহ্ম অনিচাবে কোন একটা পদ্ধতিকে যদি গ্রহণ কবেন,তবে তাহা কোন মতেই প্রশংসনীয় হইবে না। বিবাহ পদ্ধতিতে যেমন কলাকর্ত্তার বিশেষ কিছু করিবার থাকে, তিনি যেমন তাহার অনুষ্ঠানের একটা অংশ গ্রহণ করেন তেমনি বরকর্তারও বিশেষ কিছু করা আব-শ্রক। অমুষ্ঠানের কোন অংশ তাঁহাদারাও অমুষ্ঠিত হওয় াআবশ্রক। বর্তমান সময়ে বরক্তা যেন বিবাহসভায় আরু দশজন দশকের ন্তায় উপস্থিত থাকেন। এরপ সাক্ষীগোপালের মত উপস্থিত থাকা তাঁহার পক্ষেও শোভার কারণ নয়; উভয়ের প্রতিও তুলা বাবহারের পবিচায়ক নয়।

ব্রাহ্মবিবাহে আর একটা পদ্ধতি স্থানে স্থানে অবলম্বিত হইতে দেখা গিয়া পাকে। তাহা এই যে ক্যাক্তা বরকে ক্যা সম্প্রদান করিয়া থাকেন। এই প্রথাটী যে আনাদের প্রাচীন সমাজ হইতেই গৃহীত হইয়াছে, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কারণ মনুসংহিতাতে যে আট প্রকার বিবাহের ব্যবস্থা আছে. তাহাতে দেখা যায়,শ্ৰেষ্ঠ বিবাহ কয়েকটীতেই কক্সাকৰ্ত্তা কৰ্ত্তক কন্তাকে উপযুক্তরূপে সজ্জিত করিয়া দক্ষিণা সহকাবে বরকে সম্প্র-দান করিবার বিধান আছে। দক্ষিণা ভিন্ন যেমন যজ্ঞ হয় না, তেমনি हिन्तु नमारक निकला जिन्न कछा मच्छानानं इत्र ना। वतरक যথাবিহিতরপে অর্চনা করিয়া ক্ঞাদানের দক্ষিণাস্থরপ কিছু প্রদান করিয়া হিন্দু কন্তাকর্তা কন্তা সম্প্রদান করিয়া থাকেন। এই ক্সাদানের বহু ফলের কথাও শাস্ত্রে বর্ণিত আছে। স্বতরাং ক্সা সম্প্রদান শব্দের অন্ত অর্থ করা সম্ভবে না। হিন্দুসমাজ মনে করেন পুত্র কল্পা পিতা মাতার সম্পত্তি। স্বতরাং তাঁহারা পুত্র ক্সাকে দান বিক্রয় করিতে পারেন। এই জন্মই হিন্দুসমাজে অন্তের পুত্রকে দত্তকরূপে গ্রহণ করিবার রীতি আছে। তাঁহারা পুত্রকে অপরের বংশ রক্ষার জন্ম দান করিছে পারেন। বান্ত-

বিক নিজের যে বন্ধর প্রতি সম্ব আছে, তাহাই অপরকে দান वा विक्रम कता घाँटेए भारत। डाम्नाग कथर्ने स्थाननारमत পুঁত্র কক্তাদিগকে আপনাপন সম্পত্তি বিশেষের মত মনে করেন না। কোন আত্মাকে দান বিক্রেয় করিবার উপযুক্ত অধিকারী বলিয়াও নিজ্পিগকে মনে করেন না। স্তরাং বিবাহের সময় কল্ঞা সম্প্রদান প্রথা ব্রাহ্মগণ যে কিরূপে অবলম্বন করেন আমরা বুঝিতে পারি না। হিন্দুগণ কন্তা সম্প্রদান করিয়া নিজের ও পূর্ব-পুরুষগণের সৎগতি হইল বলিয়া যেরূপ আশ্বন্ত হন ত্রাহ্মগণের **নেরপ বিখাস নাই যে কলা সম্প্রদান ছারা কিছু পুণ্য সঞ্চ**য় হইতে পারে। তবে এমন একটা অর্থহীন কার্য্যকে কেন বিবাছরূপ পবিত্র অনুষ্ঠানের অঙ্গরূপে গ্রাহণ করা হয় ? এরূপ অতুষ্ঠান হারা নারীজাতি সহত্তে এখনও যে ব্রাহ্মগণ পূর্ব-সংস্কার পরিত্যাগ করিতে পারেন নাই। তাঁহাদিগকেও যে সম্মান প্রদর্শন করা আবিশ্রক, সংসাবের আর দশটী বস্তুর ত্যায় তাঁহাদিগকে মনে না করিয়া অক্ষয় অমর আয়ারূপে তাঁহাদিগকে দেখিবার পক্ষে এ সকল অনুষ্ঠান বিশেষ বাধা ষ্মানয়ন করে। নারিগণ শ্রদ্ধা ও প্রীতি পাইবাব উপযুক্ত মান্য জীবনের সর্বভ্রেষ্ঠ ঘটনাতেও যদি ব্রাহ্মগণ তাহা প্রকাশ করিতে না পারেন বা অকারণে একমাত্র পূর্ববসংস্কারের অধীন হইয়া যদি এমন গুরুতর বৈষম্যের পোষ্কতা করেন, যাহা করা কোনওক্রমেই উচিত নয়, তাহা হইলে সে পরিতাপ রাখিবার স্থান কোথায় ? আমরা আশা করি অর্থহীন জাতীয়-তার অন্থরোধে বা কোন একটী প্রথা অন্থপারে চলিতে ভাললাগে বলিয়া আহ্মগণ কোন কুদংস্কারের পোষকতা कतिरवन ना।

সাধারণ ব্রাহ্মসমাজ আপনাদিগের জন্ত কোন অনুষ্ঠান পদ্ধতি প্রাণয়ন করিবার জন্ত যদ্ধবান আছেন। তাঁহারা অনুষ্ঠান পদ্ধতি প্রাণয়নকালে এই সকল কথার প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া কার্য্য করেন ইহাই বিনীত অনুরোধ।

আমি কার ? (প্রাপ্ত)

ব্যক্তিমাতেই যথন এই বিষয় চিস্তা করিতে থাকেন, তথন তাঁহার মনে এক মহা সমস্তার উদয় হয়,—আমি কার ? সংসারি ব্যক্তি বলিবেন, এত স্পষ্ট দেখা যাইতেছে যে, আমি এই সংসারের, অর্থাৎ পিতা মাতার, ভাই ভগ্নীর, স্ত্রী পুলের ;— কিন্তু যথার্থই কি তাই ? ভূমি মনে করিতে পার, আমি যথার্থই তাহাদের নইত আবার কার ? আমার জর হইল, শ্যাশারী হইলাম, উঠিবার শক্তি নাই,—অমনি আমার যেখানে যে ছিল দৌজিরা আসিল। মা বড়ই উদ্বিগ্ন হইলেন, নাই নিজা নাই, কেবল ভাবিতেছেন "বাবা আমার ভাল হইবেন।" পিতা ভাল ভাল ডাক্তার খুঁজিয়া বেড়াইতেছেন। যে যাহা বলিতেছেন, তিনি, ভাহাই করিতেছেন। তাঁহার মনে কেবল উদয় হইতেছে,—কবে আমার পুত্র আরোগ্য লাভ করিবে। ভাতা ছঃথিত হইয়া চিস্তা করিতেছেন। ভ্রী ক্রমাগত থাটিতেছেন। দেখ দেখি আমার

জক্ত এত কাণ্ড হইরা গেল, আমার জক্ত ইহারা প্রাণপণ থাটিয়া মরিলেন, আর আমি কিনা তাঁহাদের হইলাম না ?

তুমি আমি, মা বাপ এবং ভাই ভগ্নীকে আপনার বলিয়া জানি। কিন্তু চিন্তাশীল ব্যক্তি কথনই বলিবেন না যে, 'সংসার আমার, আমি সংসারের'। যিনি একবার তলাইয়া ভাবিয়া ছেন, তিনিই বলিয়াছেন, "আমি সংসারের নহি, সংসার আমার নহে"। কেহ কেহ এ কথা শুনিয়া বড়ই আশ্চর্য্য হইবেন, এবং বলিবেন, 'এমন একটা প্রত্যক্ষ সংসার, আমি সেই সংসারের কর্ত্তা, আমার উপর ভাহাদের সমস্ত ভার ক্যন্ত, আমারে কিনা বল, ''ডুমি এ সংস্বরের নহ?" এই আমার স্ত্রী, এই জানার পুত্র;—আবার আমি কার?

হায় ! সংসারে এসে মাতুষ কি ভয়ানক হয় ! মাতুষকে যথন ছয়টা ভূতে ধরে, তথন সেই ভূত গুলা ছাড়ানই বড় দায় হইরা উঠে। ভূতে ধরা যত মাহ্ব আছে, তাহারা সকণেই বলিবে 'সংসার আমার, আমি সংসারের।' কিন্তু যিনি প্রকৃত মাত্র্য, অর্থাৎ যিনি ঐ ছয়টা ভূতকে বশ করিয়াছেন, তিনি বলিবেন ''সংসার অসার"। বিনি 'সংসার অসার' এই কথা হৃদয়ের সহিত অমুভব করিয়াছেন, তিনিই বুঝিয়াছেন আরো কিছু অমূল্য জিনিষ মাছে, আরো কিছু স্থাকর পদার্থ আছে ;— তবে তুমি আমি ইহার কি বুঝিব ? যিনি বুঝিয়াছেন তিনি মনীধী;—-তাঁহার পদাভাগুম্মরণ করিলে, আমরা পবিত হই। আমাদের এখন দে চকু ফুটে নাই। আমরা তাই দেখিতেছি 'সংসার সার'। আমাদের চিন্তাশক্তি থাকিতে চিন্তা করি না। একবার ভাবি না এ সংসার কি ? আমরা কে ? আমরা মাতৃগভ হইতে বাহির হইলাম, স্তনের ত্থ্য থাইয়া জীবন ধারণ করিলাম। স্তনের ছগ্ধ কোথা হইতে আদিল ? কে উহাতে তেমন স্থমিষ্ট, পুষ্টিকর থাদ্য দিল ও উহা কি আপনা আপনি আনিল ও চলে দেখিতেছি মাত্র। জিনিষ থাকিলে স্রষ্টা থাকে, এ কথা স্বীকার করিতে হইবে। এই দোয়াত ও কলম দিয়া লিথিতেছি;— ইহাকি আপনা আপনি হইয়াছে ? সামান্ত একটা দোয়াত দেখিয়া কি মনে হয় ? আমরা কি একটা সামান্ত কলম দেখিয়া প্রতিপন্ন করিতে পারি না যে এই দোয়াত এই কলমের কেহ নিৰ্মাতা আছেন ? এই যে মদী দিয়া এত কথা লিখিতেছি, ইহা দেখিরা কি বোধ হইতেছে না যে, এই মদীর কেহ প্রস্তুত কর্ত্ত। আছে ? জানিয়া শুনিরা কেন আমরা পশুর ভারে কেবল আহার বিহার করিয়া বেড়াই ? চিন্তাশক্তি থাকিতে কেন আমরা উহার চর্চা করি না ?

হুদিন পুর্বেদেখিলান স্নেহময়ী মার ন্তনে আদৌ ছুল্প নাই।
মা যাই পুল্ল প্রস্ব করিলেন অমনি ন্তনে ছুল্প আসিল ? পুর্বে
বলিয়াছি যে জিনিষ থাকিলে, তাহার নিশ্মাতা থাকে। মাতৃ
স্তনে ছুল্প দেখিয়া কি আময়া ইহাই প্রতিপন্ন করিতে পাবি না?
এই ছুল্প কে আনিয়া দিল ? যিনি ছুল্প আনিলেন তিনি কি
আমাদের মত একজন মানুষ ? মানুষের ত কই ওরূপ ক্ষমতা
নাই! তবে তিনি কে ? তিনি আমাদের সকলের মা। স্বধু মা
কেন, তিনি ভাই বন্ধু তিনি, মা বাপ, তিনি আমাদের সব!
আমাদের পিতা মাতা ও তাহাকে মা বলিয়া ডাকেন! মা

নইলে কি ছেলেকে কেছ যত্ন করিতে পারে ? মা নইলে ছেলেকে কি বুকে ক'রে থরে থাক্তে পারে ? মা নইলে কি এমন ক'রে স্থমিন্ত পৃষ্টিকর তথা দিতে পারে ? তিনি আমাদের বিশ্বজননী মা! সেই মাকে একবার প্রাণ ভ'রে, এক ম'নে, মা ব'লে ডাক নেথি! অমনি তিনি তোমার প্রাণের ভিতরে এসে বলিবেন, "কেন বাবা ডাক্ছ, এই যে আমি এসেছি ?" আহা! কি মধুর স্থর। কি শান্তি জনক! আমাদের এমন সেহমন্ত্রী মা, বিশ্বজননী মা থাকিতে কেন আমরা তাঁহাকে ডাকি না? কেন আমরা এত দিন তাঁহাকে ডাকি নাই ? আমাদের অস্তরের ভিতরে এমন সোণার জিনিব থাকিতে, বাহিরের মাটার জিনিব নিয়ে,কেন ভূলে থাকি ? এমন মার কেন আমরা আপনার হই না ? এবং এমন মাকে কেন আমরা আপনার বলি না?

এ সংসার কি ? মামুষ এখন তুমি কি বুঝিতে পারিতেছ যে এসংসার কি ? আমি কার ? আপনাদের চক্ষু সকলি অন্ধ। অন্তরে এক জ্যোতির্ময় আছেন! আমরা সে আলো দেখিতে পাই না! তিনি না থাকিলে আমরা কি জীবনধারণ করিতে পারি ৷ তিনি না থাইতে দিলে আমরা কি থাইতে পাই ? তিনি না স্থথে রাখিলে, আমরা কি স্থথে থাকিতে পারি ? তিনিই সকল স্থাবে মুল! আহা! ঐ যে, স্থমিষ্ট ও পুষ্টিকর আহার, উহা কে আনিয়া আমাদের মুথে দিতেছে ? উহা আহার করিয়া কুধা নিবারণ করিলাম! এযে পাত্রে জল রহিয়াছে উহা কোণা হইতে আসিল ৭ উহা কে আনিয়া দিল ৭ আমরা পান করিয়া পিপাদা নিবারণ করিলাম। স্লেহময়ী মা আনাদের জন্ম দর্মনা চিত্তিত। কিনে আনরা স্থথে স্বচ্ছনের থাকিব, তাহার জন্ম তিনি প্রাণপণে যত্ন করিতেছেন। আহা। কি নিঃস্বার্থ ভালবাসা! কি চমৎকার প্রেম! নির্মাম কোন পাষও তাঁহাকে দিনাস্তে একবার ম্মরণ না করিয়া থাকিতে পারে ?

মাত্র তুমি এখন কি বুঝিতে পারিলে যে, এ সংসার কিছুই
নয় ? এসংসারে তুমি আমি এবং সকলেই তাঁহার;—সেই
স্নেহ্মরী বিশ্ব জননা মার! আরও কি বুঝিতে চাও? এত
এত বুঝিয়া স্থাঝিয়া, তবু কি তুমি প্রকৃত মন্ত্রায় হারাইয়া
পশুব ভাষে আহোর বিহারে মত্ত থাকিয়া তাঁহাকে ভুলিয়া
যাইবে ? আর ক্তকণ নিজা যাইবে?

মানুষ যথন প্রকৃত মানুষ হয়, তথন দে ব্ঝিতে পারে যে এ সংসার যথার্থটি মায়া; প্রমেশ্বর এম্নি কৌশলে স্ভান করি-ग्राष्ट्रन (य मकरलाई मरन करत "এई जामात, & जामात, उहे আমাৰ মা, ঐ আমাৰ ৰাপ।" কিন্তু যাই পশুবৃত্তি গুলি অসির দ্বারা থও বিথও করিয়া ফেলা হয়, অমনি মনে হয় "সংসার माशामग्र ;- जात (मर्के माताएमात शतरमधत।" প্রথমেই মনে इस, " शामि कात ? (काशा इटेट आप्रिनाम ? कि कतित ? কেন আদিলাম ?" এই সকল প্রান্ত কনাগত মনোম্লিরে आत्मानिक इहेटक थारक। उथनहे जिनि छाविरक शास्त्रन, "আমি আর একটা কে ? এই যে সংসার, এটাইবা কি ? আমি কোণা হইতে সাসিলাম ? আমি কি আকাশ হইতে व्यामिनाम ? ना व्याभारक कि ८०१ ध्यारन भारतिहार्हन र" প্রকৃত ভাবুক যিনি, তিনি হৃদয় মন্দিরে এই সকল চিন্তা করিয়া অঙ্গল্ল রোদন করিবেন। তিনি চিস্তায় আকুল হইয়া অর্জনাদ করিতে বসিবেন, "হায়! আমি জালে পড়া পাণির স্থায় পড়ে আছি, একবারও জাল কাটীবার চেষ্টা করিলাম না! মায়ায় পড়ে প্রাণের স্থাকে ভূলিয়া রহিয়াছি! আমার প্রকৃত মা বাপকে ভূলিয়া রহিয়াছি! আসি কে ? আমি ত আমার নহি! আমি ত তাঁহার অংশ! স্বইত তাঁহার! মা বাপ, ভাই বন্ধু যে যেথানে আছেন, সে সবই ত তাঁহার। তবে পৃথিবীতে आगात विनवात ७ किছू नाहे! आंगि निटल आगात नहे,

আমার আবার কে ? এত দিন মারার পড়ে আমার আমার করিলাম, সে সকলইও ভব্মে ঘৃতাছতি দেওরা হইরাছে ! কেন্দ্র আমি সেই পবিত্র জ্যোতি স্বরূপকে আমার বলি নাই ;—তিনি আমাব, আমি তাঁর। মানুষ তুমি এখানে কদিনের জন্ত ? তুমি ত তাঁহার নিকটে বাইবে! সংসার ত জল বিশ্ব স্বরূপ! এই আছে, এই নাই। আজ তুমি হয় ত ধনে মানে একটা মন্ত লোক! আজ তুমি হয় ত পৃথিবীকে সরাঁ থানা জ্ঞান করি—তেছ! আজ তুমি এজলাসে বসিরা ফাসির ছকুম জারি করি-তেছ! কিন্তু বলি, ওভাই, কাল তুমি কোন্ এজলাসে ? কাল যে তোমার ফাঁসির ছকুম হইল।

যে মান্ত্র এক মুহূর্ত্ত সময় কি তাহা নির্ণয় করিতে পারে না, সে কাল, পরক্ত, এক মাস এক বৎসর কি করিয়া বলে? তবে তুমি মিছে 'আমার' 'আমার' কেন কর ?

তাই বলিতেছিলাম মান্ন্য তুমি কার? সেই আদি, অনস্ত অপার, অগন্যকে শ্বরণ করিয়া স্থা হও। পার্থিব কোন স্থানাই। এ সংসার আশা মরীচিকার স্থায়। মান্ন্য তুমি দ্বিরর; তুমি এ পৃথিবীর কাছারও নহ; এই কথা বেশ ব্রিয়া সংসারে পেকো! সংসারের কুতকে কদাচ পড়িও না। সংসার তগাগ করিবার প্রয়োজন নাই; কারণ ইছা ঘোর পরী-কার স্থা। তুমি যদি এই পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইতে পার, তাছা হইলে অনায়াসে তাঁছার চরণ কমল দেখিতে পাইবে, তাঁছাতে লীন হইবে। মনে যদি বিশ্বাস থাকে তাছা হইলে কিসের ভয় ? নির্ভন্ন হও। বীরের নাায় কার্য্য কর। তাঁছাকে প্রাণের সহিত ডাকিতে শিখ। আন্ত্রক সংসায়ের আলা যম্বশা আন্ত্রক, প্রের মৃত্যু শোক, পিতা মাতা, বন্ধু পরিজনের মৃত্যু শোক আন্ত্রক, কিছুতেই তোমাকে টলাইতে পারিবে না; সমভাবে সকল অবস্থাতেই তোমারে চিত্ত প্রসন্ম থাকিবে। *

জিতেক্সিয় হও। রিপুণরবশ হইও না। কিন্তু এটা যেন বেশ মনে থাকে, "আমি তাঁর, তিনি আমার" ভয় কি তাহা হইলেই তুমি তাঁহাকে পাইবে। সংসারেরদিকে নামমাত্র মন রাথিবে; এবং মনে করিবে আমি তাঁহাবই সংসারে থাটিতেছি। পরোপকারের জন্ম আপনাকে বলি দিবে। ধ্যান্ধদিগকে চকু কুটাইরা দিবে। সকল কাজ করিবে; কিন্তু সেই মহাত্মা বোগী বীঙ্থীটের বাণী হৃদয়ের অভ্যন্তরে মাথিয়া সকল কাজ করিবে;—" Not my will, but thine be done O Father!"

প্রেরিত পত্র।

(পরপ্রেরক্দিগের মতামত্ত্রের জন্ম সম্পাদক দায়ী নহেন।) শ্রদ্ধাস্থ্যক তত্ত্বকোমুদী সম্পাদক

মহাশয় সমীপেযু---

পণ্ডিত শিবনাথ শাসীমহাশয় কানীতে আগমন পূর্বক যে সকল কার্য্য করিয়া গিয়াছেন তাহার বিবরণ সংক্ষেপে তত্ত্ব-কৌমুদীতে প্রকাশিত হইয়াছে। কিন্তু তাঁহার একদিনের কার্য্য সম্বন্ধে কিছু বিশেষভাবে লিখিত হওয়া আবশ্রত বোধে নিম্নালখিত প্রথানি লিখিলাম।

১৭ই কার্ত্তিক শনিবার অপরাহ্ন ৬॥ ঘটিকার সময় ইজর নগং রের মহারাজা কর্ত্তক প্রতিষ্ঠিত কারমাইকেল লাইত্রেরীতে

From the Spectator.

^{*} মি: Addison উছার চিত্ত প্রসন্থতা নামক প্রবন্ধ লিখিয়াছেন;— Pain and sickness, shame and reproach, poverty and old age, death itself, considering the shortness of their duration, and the advantage we may reap for them, do not deserve the name of evils. A good mind may bear up under them with fortitude, with indolence, and with cheerfulness of heart. The tossing of a tempest does not discompose him, which he is sure will bring him to a joyful harbour."

্ৰী শান্ত্ৰীমহাপন্ন ইংরাজীতে একটা স্থণীর্ঘ বক্তৃতা করেন। বক্তৃ-তার বিষয় Religious Revolution in the West what does it teach us. অত্তা খাতনামা অবসরপ্রাপ্ত সবজজ বাবু রামকালী চৌধুরীমহাশন্ন সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। বক্তান্তলে হিন্দু, আব্যা, মুদ্দমান, খুীষ্টান প্রভৃতি সর্বা-শ্রেণীত প্রার ৩।৪ শতলোকে হল পরিপূর্ণ হইরাছিল। বস্কৃতার শাস্ত্রীমহাশরের বাগ্মীতা ও প্রাণের আবেগ একতা মিজিত হইয়া, উপস্থিত লোত্বর্গের এমনি মনোযোগ আকর্ষণ করিরাছিল যে সকলেই মুগ্ধ হইয়া গিয়াছিলেন। বক্তৃতান্তে वक्क भीन भू नक्ष पान का ती हिन्दू मा खित का न का न वा कि যে সকল আপত্তি করিয়াছিলেন, বক্তা পুনরায় দভায়মান ছইয়া তাহার সম্ভর এমন দক্ষতার সহিত প্রদান করিলেন, যে मकनारक है त्रीनावनचन कतिए इहेग। म्हाउटन कार्यक्रम ধীষ্টান মিশনারিও উপস্থিত ছিলেন, তাঁহারাও শাল্লীমহাশয়ের বক্ত তার সহায়ভূতি প্রকাশ পূর্বক এই স্থযোগে হিন্দু-সমাজ ও ধর্মকে লক্ষ্য করিয়া আপনাদের স্বাধীন ভাষায় অনেক কথা বলিরাছিলেন। পরে সভাপতি মহাশয় পরিকাররূপে বুঝাইয়া দিলেন যে এরাপ ব ক্তার বিরুদ্ধে অ ভ্যুখান করায়,বস্তার সচুক্তির কিছুমাত্র খণ্ডন হইবে না, অধিক হ বিরুদ্ধবাদীর অব্যথা বাক্রব্রেরে আমাদের কেবল সময় নষ্ট ইটবে। ফলত: উপসংহারে ইহাই বলা যার যে কাশীতে ধর্মসম্বন্ধে এরপ বক্তৃতা লোকস্মাগ্ম, শুনিবার জন্ম একাগ্রহা, সর্বশ্রেণীস্থ লোকের স্বাধীনভাবে বক্তার সপক্ষে ও বিপক্ষে স্বীয় স্বীয় মত প্রাকাশ. এবং সভাভঙ্গ কালে সভাপতি মহঃশরের উদারভাবে সকলকে বুঝান, এই গুলির একত্র সমাবেশ এথানে কথনই হয় নাই। এই জ্বস্তুই কাশীনগর, বক্তাও শ্রোভা সকলেরই পক্ষে এই দিনটা একটী স্মরণীয় দিন।

> বেনারস } অন্থগত শ্রীনীলমণি পাল।

মহাশর ৷

শ্রীকুপণ্ডিত শিবনা। শাস্ত্রী মহাশয় এলাহাবাদ ছাত্রসমাজ সমিতি হারা আহুত হইয়া ১০ই নবেম্বর লক্ষ্ণী হইতে
এলাহাবাদে আগমন করেন। রবিবারে তিনি অত্রন্থ
রাক্ষসমাঙ্গে প্রাত্তংকালে ও সদ্ধানিকালে উপাসনা কার্যা সমাধা
করেন। তাঁহার ধর্মব্যাখ্যা, নীতি ও প্রেমপূর্ণকথা, উপস্থিত
সকলে গুনিয়া বিশেষ প্রাত্ত ও প্রদন্ধ হইয়াছিলেন; এনন
কি উপাসনা শেষ হইলেও কেহ সমাজগৃহ ত্যাগ করিতে
ইক্ষা করেন নাই। তিনি ১১ই তারিখে "রাজা রামনোহন রায়
প্রথম ভারতবর্ষীয় সমাজ সংস্কাবক" এই বিষয়ে একটী স্থলর
বক্তা করেন, তাহাতে পাদরী জনসন্ সাহেব সভাপতি
ছিলেন।

তিনি ১২ই তারিথে সন্ধ্যা ৫॥ টার সময় বালিকা বিদ্যালয়ে "আধ্যাত্মিক উপাসনা" সম্বন্ধ বাঙ্গালাভাষায় একটা বক্তাকরেন। অতি স্থলর সরলভাষায় এরূপে ব্যাথ্যা করিয়াছিলেন যে অনেক মৃত্তিউপাসকের অনেকদিনের প্রাণ্যের ধাঁধা দ্ব হইয়াছে। অনেকে বলিতেছেন, ঈশ্বর উপাসনার এমন স্থলর—উপায় আমরা কথন শুনি-নাই বা মনে ধারণা করিনাই।

একাস্থ বশম্বদ এলাহাবাদ জ্ঞীকেদারনাথ মণ্ডল।

মহাশর !

ফরিদপুর ত্রশ্বমন্দির নির্মাণার্থ যে সকল সদাশয় ব্যক্তিগণ

অমুগ্রহ পূর্বক অর্থ সাহায্য করিরাছেন। ক্লতজ্ঞতার সহিত তাঁহাদের দান প্রাপ্তি স্বীকার করা যাইতেছে।

শ্রীঘুক্ত পারীমোহন রাহা ২০, ডাক্তার ডি: বহু ১০০, ভুবনমোহন সেন ২০, শ্রীনাথ দাস ৫, উমাচরণ আচার্যা ১০, শ্রীনাথ গুহ ৫, আনন্দমোহন দাস ১০০ কৃষ্ণকুমার দত্ত ২, গগনচক্র সেন ৪, তারকনাথ সেন ১০, শশীকুমার গুপ্ত ৫, ফুর্গাদাস দাস ১, কেশারনাথ রায়২১, শিবচক্র দেব ৫, শশিভূষণ চক্রবর্তী ২॥০ সতীশচক্র দাস ৫, মহেক্সচক্র মিত্ত ১০, রাধামাধব বহু ১০, গিরীক্রনাথ চক্রবর্তী১০, কৃষ্ণনাথ রায়১০, রাসবিহারী ঘোষ ৫০ ফুর্গাচরণ ঘোর ১০, কামিনীকুমার মুথোপাধ্যার ১০,

৩৩৮५• ক্রমশ: শ্রীরাক্ষ্মার চন্দ

সহকারী সম্পাদক।

कतिनभूत बाक्तमभाक

ব্ৰাক্ষসমাজ।

প্রচ।র —পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী এবং শ্রীযুক্ত লছমন-প্রসাদ শ্রী মধ্যভারতবর্ষে প্রচারকরিয়া বেড়াইতেছেন, তাঁহাদের কার্য্যবিবরণ শিবনাথ বাবুর পত্র হইতে উদ্ধৃত করা গেল।

"২০এ নবেশ্ব থাণ্ডোয়াতে বাঙ্গালিদের জন্ত বাঙ্গালাতে উপা-সনাও উপদেশ হয়। ২২এ নবেম্বর Mhow (মৌ) নামক নগরে পৌছি। এথানে ২৩এ নবেম্বর শনিবার লছমন প্রদাদ জী "সভাধর্মের লক্ষণ কি" এই বিষয়ে এক বক্তৃতা करत्रन -- वक्त ठारस आभि ३ देशासीर ठ थे विषय किছू विन। সকলে বিশেষ সম্ভোষ প্রকাশ করিলেন ও সকলেই আমাদের প্রতি অতিশয় সম্ভাব প্রকাশ করিয়াছেন। ২৪এ নবেম্বর রবি-वात-अमा आमता हेल्मारत (शैष्टि এवः State guestace আশ্রর প্রাপ্ত হই। সেইদিন সায়ংকালেই আমাদের বাস-এথানকাব প্রার্থনাসমাজের সভাদিগকে লইয়া উপাসনা হয়। বছমন প্রসাদ জী হিন্দীতে উপাসনা করেন। २८ नत्वच्य (सामगात। यमा सायः कात्व এथानकात প্ৰবিক লাইত্ৰেরি হলে, লছমন প্ৰসাদ জী "ঈশ্বর-ভক্তি ও মানব-প্রেম" বিষয়ে হিন্দীতে বক্তৃতা করেন। বক্ত তাম্বলে বহুসংখ্যক লোক সমাগত হুইরাছিলেন। এই দিন প্রাতে আনিরা উভয়ে এখানকার মহারাজার Secretary ও Prime Minister মহাশয়ভয়ের সহিত সাক্ষাৎ করি। ২৬এ নবেম্বর মঙ্গলবার অদ্য সায়ংকালে লাইত্রেরি হলে আমার এক ইংরাজী বক্তাহয়। বক্তার বিষয় "মুক্তি ও তৎসাধনের উপায়" বক্তৃতাস্থলে এথানকার প্রধান রাজমন্ত্রী প্রভৃতি অনেকে উপস্থিত ছিলেন। ২৭এ নবেম্বর—এথানকার সমাজের সাপ্তাহিক উপাসনা। লছ্যন প্রবাদলী হিন্দীতে উপাসনা কবেন। আমি পাঠ ও হিন্দীতে ব্যাখ্যা ও হিন্দীতে প্রার্থনা করি। লছমন প্রসাদজী "মানব জীবনের প্রকৃত মহত্ত ও তংসাধনের উপায়" বিষয়ে উপদেশ দেন। ২৮এ নবেম্বর বুহস্পতিবার। অদ্য প্রাতে মহারাজা হোলকারের সহিত সাক্ষাৎ করিতে যাই। তিনি ব্রাহ্মসমাজের প্রতি যথেষ্ট সন্থান প্রদর্শন করিয়াছেন। তাঁহার কথাগুলি লিথিতেছি—"আনি চাই তোমরা এই বিক্বত ও কুসংস্কারাপন্ন হিন্দু ধর্মকে পরাজয় কর "but my HEART BROKE when I heard there were dissensions amongst you: yours is an infant movement, internal dissensions will greatly weaken it" কতক হিন্দী কতক ইংরাজীতে বলিয়াছিলেন। অন্য দায়ং কালে এথানকার ছাত্রদের অহরেবি লাইবেরি হলে, Culture and Higher

যে আছে তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু বাস্তবিকই মাৰোৎসবের আগমন বার্তা ব্রান্ধের পকে যেমন উৎসাহ, যেমন আশা
ও আনন্দের ব্যাপার,তেমন আর কোন দিন থাকিতে পারে না,
যাহার আগমন প্রতীকা করিয়া ব্রাক্ষগণ এমন প্রকৃত্র হইতে
পারেন।

আমাদের প্রাণ যে উৎসাহিত হইতেছে, ভাহার কারণ ইহা নয় যে বিষয়ী বিষয় লাভ করিবার আশায় যেমন আহলাদিত হর, আমরা তেমন কিছু পাইব বলিয়া উৎসাহিত হইতেছি। অথবা সংসারে সম্ভানের মুখ দর্শন করিয়া বা তৎসম্বন্ধীয় কোন পারি-বারিক উৎসবে পিতা মাতা যাদৃশ আনন্দ লাভ করিম: থাকেন আমরা সেরূপ কিছুর লাভাকাজ্ঞায় আশাবিত হইতেছি। আমাদের আশা অন্ত কিছু পাইবার আশা। যে দিনে লোকে नवजीवन পाইবার আকাজ্জা পাইয়াছে, যে দিনে বছকালের পাপতাপাক্রান্ত নরনারী অমৃতাপের প্রবল অনলে নিরম্ভর-দগ্ধ-क्षम विश्व कतिवात मक्तान পाইशाष्ट्र ;— यिमन भाभीत अल-মোচনের উপায়রূপে ত্রাহ্মধর্ম প্রচারের আরম্ভ হইয়াছে। সে দিন কি পারিবারিক কোন উৎসবের দিন অপেকা মহত্তর নহে ? সে দিন কি পাপীর পক্ষে আশাও আনন্দের দিন नरह ? वद्यमित्नत घन-घठाष्ट्र आकाम यथन প्रतिकात इहेगा यात्र. যথন সেই মেঘমালা ভেদ করিয়া সূর্য্য হইতে সমাগত রশ্মিজাল মানবনয়নের সহিত প্রথম সাক্ষাং করে, তাহা যদি আনন্দ ও উৎসাহের কারণ হয়,তাহা হইলে বছকালের অজ্ঞানান্ধকার ভেদ করিয়া আধ্যাত্মিক জগতের আকাশ মণ্ডল যাহা বহুদিন কুসংস্কার ও অজ্ঞানতার গভীর আবরণে আছেন্ন ছিল, সে আবরণ ভিন্ন করিয়া, যে দিনে উদার সত্যালোক প্রকাশের স্ত্রপতি হইয়াছে, যে সত্যালোক পাইয়া বহু নর নারী প্রাচীন কুসংস্থারাপন্ন জীবন পরিত্যাগ করিয়া নবীন জীবন পাইতে আরম্ভ করিয়াছে. সে দিনের স্থৃতি কি বিষয়ীর বিষয় স্থুখলাভের দিন অপেকা অধিক আনন্দের ও উৎসাহের হেতৃ স্বরূপ নয়। ব্রাহ্মসমান্ত বহুদিনের নিরাশ প্রাণে আশার সঞ্চার করিয়া বলিতেছেন, এপথে বাহারা চলিতে প্রবৃত্ত হ্য, তাহাদের নিরাশার হেতু নাই। যাহারা নানাপ্রকার বাহ্যিক উৎকট ক্রিয়াকাণ্ডের বা শঙ্কটপূর্ণ সাধনাড়ম্বরের বিভীষিকায় ভীত হইয়া নিরাশ মনে এপথ হইতে প্রত্যার্ভ হইতেছিলেন, ব্রাহ্মধর্ম তাঁহাদিগকে অভয় দিরা বলিতেছেন, নিরাশ হইবার হেতু নাই। এপথের যিনি চালক তিনি দর্ল পিপাস্থর পিপাদা কথনই অতৃপ্ত রাথেন না। নিরাশ মনে আত্ম-কল্যাণ সাধনে বিমুথ হইবার প্রয়োজন কাহারও নাই। নবজীবনের আশা আমরা আমাদের এই পরমাত্মায়ের নিকট হইতে পাইয়াছি। স্বতরাং আমরা ব্রাক্ষ-সমাজের মহোৎসবের আগমন বার্তায় যে উৎসাহিত হইব তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

জীবন্ম তের জীবন লাভ, অন্ধের চকু লাভ, পঙ্গু ও চলংশক্তিহীনের চলিবার শক্তি লাভ এবং পাপের গভীরকৃপে ময়
হইয়া যাহার প্রাণ নিরস্তর দগ্ধ হইতেছিল, আশার একটি কণাও
যাহার প্রাণে জাগে নাই, তাহার পক্ষে পুণ্যের কিবণ মালার
দর্শন কি আনক্ষের ব্যাপার নহে, যদি এসকল ব্যাপারে উৎসাহিত

হওয়া, আনন্দিত হওয়া খাডাবিক হয়, তাহা হইলে খানাবের পক্ষেও মাঘোৎসবের দিনের স্বভিতে বে খানল ও উৎসাহের উৎস খুলিয়া যাইবে তাহাতে আর সন্দেহ কি ?

किन्द आमता (व छेश्नव कतिव आमास्त्रत कि छेश्नव कति-বার মত কোন আয়োজন আছে ? আমরা কি ধনী বে উৎসব করিবার সাধ করিতেছি ? পৃথিবীতে দেখিতে পাই, ধনী यांशाता-यांशाता अवधातान जांशाता छे छ पन कतिना भारकन। দীন দরিত্র যাহারা তাহারা উৎসব করিবার বাসনা করিতে পারে না। তাহারা উৎসবের কোন আয়োজন করে না বটে কিন্তু তাহারা धनीत উৎসবের আনন্দের অংশী हटेट চার এবং দান আগু চইয়া লাভবান হইতে চায়। বান্তবিক ধনী অপেকা দরিদ্রেরই উৎসবে লাভ বেশী। ধনী দান করেন, দরিদ্র লাভ করে। আমরা যে উৎসবের বার্ডা গুনিয়া আনন্দিত ও উৎসাহিত হইতেছি তাহাও এজন্ত যে আমরা লাভবান হইব। পুণা-ধনের কালাল আমরা—প্রেম ভক্তির কালাল আমরা, উৎসবে যাইরা পুণা ও প্রেম লাভ করিয়া কুতার্থ হইব। নিরাশ-প্রাণে আশা লাভ করিয়া, মৃতপ্রাণে জীবন সঞ্চার দেখিয়া ধন্ত হইব। এই আমাদের আশা এবং তাই আমাদের উৎসবের বার্তায় অদিকতর আনন্দ হইতেছে। সংসারের উৎসব কর্তা ধনী। আমাদের উৎসবের कर्छा (कान मासूय नहरन। कि इ अग्रः अग्रज्जननी। उँ। दात्र मीन-হীন সন্তানের তঃথ মোচন উদ্দেশে এই উৎসব আনয়ন করিছে-ছেন। তাঁহার সদাত্রত অন্নছত্রে সকলকে ডাকিতেছেন, কুধিত ত্বিত কে আছ সত্র করিয়া এস, তোমাদের ছঃপ দারিদ্র্য স্থার शांकिरव नां, जांत्र नितांग मरन मिलन मूर्ण পर्ण अपण जमन করিতে হইবে না; একবার এই অন্নছত্রে আগমন পূর্বক প্রেমার গ্রহণ কর, চিরদিনের তংথ সম্ভাপ দূর হইয়া যাইবে। তিনি নিজেই দানত্রত গ্রহণ করিয়াছেন। কাহারও প্রতি এ ভার তিনি প্রদান করেন না। কেহ বা নিরাশ হইয়া উৎবের দার হইতে ফিরিয়া যায়, মাফুদের দোগে অমনোযোগে তাঁহার কোন সম্ভান বা বিফমলনোরণ হয় এই নিমিত্ত তিনি নিজেই উৎসবের প্রধান কার্য্য দান-ত্রত গ্রহণ করিয়াছেন। তাঁহার উৎসবের যাত্রীগণকে, তাঁহার মধুব আহ্বান ধ্বনি শ্রবণ করিতে হইবে। তাঁহার নিমন্ত্রণ পত্র সকলের জন্মই বাহির হয়, কিন্তু উদাসীন ও আত্ম-কল্যাণ-বিষ্থ অলস দরিদ্রের নিকট তাহা পৌছে না। এ জন্য আমাদিগকে আশাধিত অন্তরে জাগ্রত ও উৎকর্ণ হইয়া থাকিতে হইবে, যেন তাঁহার মধুর আহ্বান ধ্বনি শ্রবণ হইতে বঞ্চিত না হই।

আমরা যথন দীন হংখী তথন আমাদিগকে দীনতার ভূষণ
মন্তকে ধারণ করিয়াই উৎসবে গমন করিতে হইবে। দীনহীন
যে সে যদি আত্ম-বিশ্বত হইরা পরের নিকট হইতে ধার করিয়া
স্থলর সাজে সজিত হইরা দান গ্রহণ করিতে যায়, সে কি দান
প্রাপ্ত হয় ? সেরপ লোকের কিছুই পাওরার প্রেরোজন নাই
বিলয়া, শঠও প্রবঞ্চক জ্ঞানে দানকর্তা তাহাকে নিরাশ করিয়া
ফিরাইয়া দেন। স্থতরাং আমরা যেন আত্ম-প্রতারিত না হই,
নিজ নিজ অবস্থা বিশ্বত হইয়া যেন অহ্মারী না হই। দীন যে
সে দীনবেশে যাইবে, তাহাতে আর লক্ষা কি ? স্থতরাং প্রবল

थाना, मीनजा ७ विमन्नक ननी कतिन्नाहे त्वन भावना छे १ नत्व গমন করি। সদা ভাগ্রত প্রাণে সচ্বিত মনে উৎসবের প্রত্যেক ব্যাপারে বোগ দান করিতে হইবে। কোন্ সময় কোন্ হ্যোগে জগন্মাতা আমাদের দীনতা দূর করিবেন, তাহা বথন আমরা कांनि ना अथेह आमारनद रथेन शांखदा धारदाकन. उथेन आमा-দিগকে সর্বাদাই ব্যাকুল প্রাণে দানকেত্রে হাজির থাকিতে হইবে। অক্তথা দানের সমর বহিয়া গেলে আমাদিগকে নিরাশ হইয়া **উৎमवत्क्व इरेल्ड विभाव महेल्ड इरेल्व । वार्जामब धार्माक**न বাহার, তাহার পকে উচিত, সর্বকণ বার জানালা খুলিয়া রাখা। कांत्रण वाजान नांहे विनन्ना यनि त्कृह बात्र व्यवकृत त्रार्थ, ভাহা হইলে যথন বাভাস বহিতে থাকিবে তথন ত ভাহার গ্রহ বাতাস প্রবেশ করিবে না। এজন্ত সদা সচকিত মনে আকুল-প্রাণে আশা এবং উৎসাহের সহিত উৎসবে গমন করিতে **बहैरत । यथन भगत आंगिरत, উপयुक्त अवद्या आ। त. उथन** मोठा मान किंदि कथनहै विभूष हहैरवन ना । ए त मकरन আশান্তিত হই, বিশেষ প্রার্থনার সৃষ্টিত সেই শুভ সময়ের জন্ম অপেকা করি। উৎসবের ছারে হরা করিয়া যাইয়া উপস্থিত हरे। मौननमू आमारमत आकाष्का भूर्ग कतिरान।

উৎসবের পূর্ব্বাহ্নিক আয়োজন।

উংসব আগত প্রায়। উৎসবের পূর্ণে আনরা প্রতি বৎসর উপাসকদিগকে উৎসবের জন্ম প্রস্তুত হততে অন্থরোধ করি, এবারও সেই কার্যো প্রস্তুত হততেছি। আনাদিগের আশা, প্রত্যেক তাই ভগিনী উৎসব গ্রহণের জন্ম আপনাদিগের আত্মাকে প্রাণপণে প্রস্তুত রাধিবেন।

তিনটী কারণে উৎসবের ফল স্থায়ী হয় না। ১ম - উৎসবের পূর্ব্বে উপযুক্ত পরিমাণে প্রস্তুত না হওয়া, ২য়—উৎসবের সময় উপযুক্তরূপে উহা গ্রহণ না করা ও ৩য়—উৎসবের পরে যত্ন ও অধাবসায় সহকারে উৎসবের ফল না রক্ষা করা। মুক্তি-লাভার্থী উৎসব পিপাস্থ নর নারী এই ত্রিবিধ কারণ পরিহার করিতে সচেষ্ট হইবেন।

বাহিরের আড়ম্বরে মাতিলে যে আত্মার অনিষ্ট বই ইপ্ট হয় না,
ইহা সকলেই অবগত আছেন। যদি ভিতরে কিছু না পাকে, তবে
বাহিরের ধুমধানে যোগ দেওয়ায় বা না দেওয়ায় যে সমান ফল,
ইহা ব্যাইয়া বলিবার আবশুক নাই। যাহারা অন্তর্ম্প্রী, তাঁহারা
বিনীত ও গন্তীরভাবে যত টুকু বাহিরের করা উচিত, ততটুকু
কক্ষন,বহিষ্থী আত্মাসকল আপনা আপনি আক্রপ্ট হইবে। মধু সৃষ্টি
হউক, মক্ষিকাকুল আপনা হইতে ছুটিয়া আসিবে, আলোক
প্রেজ্ঞানত হউক, পতঙ্গর্ক আপনা হইতে উড়িয়া পাড়িবে। বার
মধু নাই, সে যেন মধু আছে বলিয়া না দেখায়। বিনীত ও অমুতপ্ত-ছাদয়ে সে মধুচজের শরণাপর হউক।

পর্কদিন স্কল জীড়া বা আমোদের বস্তু নছে। যে সকল পর্কদিনে ইতিহাস ও মানবজাতির ভবিষ্যৎ পরিবর্ত্তিত হয়, সে রূপ দিন অতি অরই আছে। স্থতরাং অতি গঞ্জীর ভাবে এই সকল দিন গ্রহণ করিতে হইবে। অমুষ্ঠান বিশেষে প্রবৃত্ত হইবার

পুর্বে সংযমের বিধি প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য উভর ধর্মশাল্লেই আছে।
ব্রাহ্মধর্ম পুরাতন অবিধি লোপ করিতে আদেন নাই। সংযমের
নিরম আমাদের মধ্যেও বহুল পরিমাণে প্রচারিত ছওয়া আবশ্রক। আমাদের সংযমে ও অন্তর্শাল্লের সংযমে কিন্তু একটা
প্রভেদ থাকিবে। অন্তর্শাল্লের সংযমে অনেক বাছিরের ব্যাপার
আছে, আমাদের সংযম শাঁট আধ্যাত্মিক ব্যাপার।

"ত্মি বলিদানের এরাস কর না, নতুবা আমি তাহা দিতাম, হোমেতেও তৃমি তৃষ্ট নহ। তর আস্থারূপ বলিই ঈশ্বরের গ্রাহ্ন; ভর ও অন্নতাপিত ফালেক, হে ঈশ্বর! তৃমি তৃচ্ছ করিবে না" (দারুদের নসীত ৫১—১৬, ১৭) ইহাই আমাদের সংযম।

সংখ্যের আরম্ভে মণ্তাপ, মধ্যে দীনতা ও শেষে নির্ভর। আপনাকে প্র না করিলে, আপনার ভিতর যে একজন মহান পরুষ আছেন, তাঁহাকে কিরুপে বাড়াইবে ? দিবদের আলোক কমিয়া না আদিলে আকাশের তারা কি রূপে নয়ন-গোচর হইবে ? উপাদক মাত্রেই সাক্ষা দিবেন, যে উপাদক ষথনই আপনার অসারতা বোধ করেন, তথনই উপাস্ত দেবতার সারবন্তা তাঁহার হৃদয়সম হয়। অমৃতাপ ও অসারতা বোধের সঙ্গে সঙ্গে আপনা আপনি মন্তক অবনত হইয়া পড়ে। বারি বিন্দু যথন সাগরে পড়িয়া আপনাকে হারায়, তথনই শুক্তিগর্ভে দেই বিন্দু রাজমুকুট-ভূষণ-মুকুতা-আকার ধারণ করে। অমুতাপে নিরাশের নাম গন্ধ থাকে না। আপনার উপর যতক্ষণ আশা অর্পিত থাকে, ততক্ষণ যে নিরাশা থাকিবে তাহাতে আশ্চর্যা হইবার কথা কি ? আপনার বিদ্যা বৃদ্ধি ও অক্ষমতা কার অবিদিত আছে? দীন ও অত্তপ্ত সাধকের আশা কিন্ত সাধা দেবতার উপর স্থাপিত: নিরাশা কথনও তাঁচার হৃদয় অধিকার করিতে পারে না। আপনাকে অসার ও রুপা লাভের অনুপযুক্ত জানিয়া উৎসবের দারে যিনি আপনাকে-লইয়া যাইবেন, উৎসবের দেবতা নিশ্চয়ই তাঁহার হৃদয় পূর্ণ ক্রিবেন।

মহদমুঠানে প্রবৃত্ত হইবার পূর্ব্বে অমুঠাতাগণের মানদ বা সক্ষর করিবার বিধি আছে। নিঃসঙ্কর হইয়া "যেথানে ইচ্ছা স্রোত লইয়া যাউক" ভাবে যোগ দিয়া অনেক বার দেখা গিয়াছে কোন ফল হয় নাই। কোন বিশেষ সংক্রর বা উদ্দেশ্ত লইয়া উৎসবে প্রবেশ করিতে হয়, একথা অক্যান্ত বৎসর অনেক বলা হইয়াছে, স্মরণার্থ এবার উহা কেবল উল্লেখ করা গেল। উদ্দেশ্ত স্থির করিবার সময় কিন্তু স্মরণ করা উচিত, যে

> "তিনি হে উপায়, তিনিই উদ্দেশ্য তিনি স্বষ্টা পাতা, তিনি হে উপাস্ত"

শ্রীচৈতন্ত গরাধাম হইতে নবদীপে ফিরিয়া আদিয়া ছাত্রদিগকে বলিতেন, "ভাই সকল সর্মদা হরিনাম শ্ররণ কর, আদি অন্ত মধ্যে শ্রীহরি ভন্তনা কর।" আমাদেরও সেই কথা, উৎসবই কর আর যাহাই কর, আসল কথা ভূলিবে না। উৎসবের আদি অন্ত মধ্য যিনি, তাঁহার সহিত যোগ সংস্থাপিত করিবার চেটার যেন ক্রটি না হয়। অনেক সময় এমন হইন্যাছে, আমরা বাহিরের আড়ম্বর, জনসমাগম ও কার্য্য বাহুল্যে ব্যক্ত হইয়া পড়িয়াছি, ভিতরে কিছু ধরিতে পারি নাই। মাহ

দিবল সকলের এতদপেকা অধিকতর অসন্থাবহার আর কি
হইতে পারে? সকল উদ্দেশ্যের মধ্যে এই প্রধান উদ্দেশ্য থাকা
চাই, যে একবার ভাল করিয়া উৎসবের দেবতার সাক্ষাৎকার
লাভ করিতে হইবে। সাধু মহাজনগণ বলিয়াছেন, যে দর্শন
অমূল্য এক একবারের দর্শনের বলে জীবন দশ পনর
বৎসরের পথ অগ্রসর হয়। "দেখিলে তোমারে, হালয়
জ্ডায় হে" বাস্তবিক কথা, ইহাতে জন্মাত্র অত্যুক্তি বা প্রচলিত
ধর্মের ভাষা প্রেয়াগ নাই। যে সকল মৃহর্তে পরমান্মার
সহিত জীবান্মার মিলন বা পরিচয় হয়, সেই দক্ল মুহ্র্তেই
জীবনের চিরম্মরণীয়। সহস্র প্রতিজ্ঞার বল অপেকা অধিক
বল একবারের দর্শনাভাসে পাওষা যায়। সম্বৎসর যে সংসার
রূপ বিদেশে প্রবাসীর কই ভোগ করি, একবারের দর্শনাভাসে
তাহা বিশ্বত হওয়া যায়। উৎসবের জলোচছাস আমার উপর
দিয়া চলিয়া গেল, অণচ দেবতার সঙ্গে পরিচয় হইল না, একি
রূপ উৎসবে যোগ দেওয়া ।

আনন্দের দিনে আপনার লোককে মনে পতে না, এমন স্বার্থপর লোক বিরল। সাধু মহাজনগণ অপেক্ষা আমাদের অধিক আপনার লোক খুঁজিয়া পাওয়া হছ ভ। তাঁহারা মৃত হইয়াও জীবিত, কেননা তাঁহাদের জীবন আদর্শরপে এখনও আমাদের জীবন পরিচালিত করিতেছে। তাঁহারা যে সত্য প্রচার করিয়া ও যে দৃষ্টান্ত দেখাইয়া গিয়াছেন, তাহা পৃথিবীর উন্নতির ইতিহাসের অক্ষয় সম্পত্তি। তাঁহাদের উক্তি, ক্রিয়াও জীবন যথার্থই আমাদের অধ্যায় জীবনেব অন্ধপান। উৎসবে তাঁহাদিগকে শ্বরণ, তাঁহাদের জীবন বিশেষ ভাবে আলোচনা,ও তাঁহাদের জীবনের শিক্ষার তাংপর্যা হৃদয়ক্ষম না করা থোর অক্বতক্ষতা। তাঁহাদের মহত্ব যে পরিমাণে বৃঝি, উৎসবের মহত্ব সেই পরিমাণে আমাদের হৃদয়ক্ষম হয়। মৃত্যুও জীবিত সাধু মহাজনদিগের প্রতি তাই শ্রদ্ধা ও প্রীতি লইয়া উৎসব ক্ষেত্রে প্রবেশ করিতে সকল সাধ্বকই অনুরোধ করেন। গত বৎসর আমরা এই বিষয়ের আলোচনা করিয়াছি, এবার সংক্ষেপে উল্লেখ করা গেল।

মানব ও ঈখর-প্রেম তুলনা করিলে দেখিতে পাই, যে মানব ্রপ্রন সন্ধীর্ণ, ঈথর-ত্রেম বিশ্বজনীন। মানব-ত্রেম যথন আপনার দক্ষীৰ্ণ বৃত্ত ছাড়াইয়া বিশ্বে ছড়াইয়া পড়ে, তথন উহা ঈশ্বর প্রেমের নিকটবর্ত্তী হয়। প্রকৃত সাধকগণ সেই জন্ম আপ-নার অপরাধ ও ক্লেশের ভারে প্রপীড়িত হইয়াও অন্তের জস্তু না ভাবিয়া থাকিতে পারেন না। আরধ্যে দেবতাকে তাঁহারা কেবল নিজ-ত্রাতা বলিয়া দেখেন না, জগতের ত্রাতা বলিয়া তৃপ্ত रुरमन, जैयन विवास स्थी रून ना, भिछा विवास छाकिया रूपना। দেবতাকে পিতা বলিলে সাধক কেবল আপনার কথা ভাবিয়া নিশ্চিন্ত থাকিতে পারেন না, আপনা হইতেই ভাই ভগিনীর জন্ম চিন্তা আদিয়া পড়ে। আমরা যে কেবল একাই উৎসবে যাইব তাহা নহে, শত শত প্রাস্ত পিপাস্থ ও মৃক্তি-ভিথারী নরনারী পিতার নুদাত্রতে অতিথি হইবে। স্থৎসরের **হা**দয় বেদনা বহিয়া স্বাই পিতার ছারে আসিবে, জামি কোন্ লজ্জায় কেবল আমার নিজের কথা ভাবিব, নিজের জয় দান ভিকাকরিব। আপনার জন্ম যদি এক ফোটা অঞাকেলি,

ভাই ভন্নীর জন্ত দশ কোটা কেলিব, আপনার জন্ত বদি একবার কাদি, ভাই ভন্নীর জন্ত বিশ্বার কাদিব, আপনার জন্ত বদি একটা প্রার্থনা করি, ভাই ভন্নীর জন্ত শত প্রার্থনা ক্ষরিব, এই ভাবে উৎসবে প্রবেশ করিলে উৎসব "আমার"না হইরা প্রক্রতপক্ষে "আমাদের" উৎসব হইবে। ব্যক্তিগত উৎসবই প্রায় ঘটয়া থাকে, যদি পরস্পারের ভাব ও ভাবনা লইরা আমরা বাই, তবে উৎসব ''সাধার্ল' উৎসব হইবে।

পুনরার বলিতেছি, যে সাবধান! বাছিরের মন্ততা ও আড়ম্বরের স্রোতে আত্মাকে ভাসিয়া যাইতে দিওনা। যদি ভিতর না নাচে, তবে বাহিরের নৃত্য শোচনীয়, যদি ভিতর না মাতে, তবে বাহিরের মন্ততা জনিটের কারণ হইবে। মন না নাচিলে কোন্ স্বৃদ্ধি সাধক চরণকে নাচাইয়া তৃপ্ত হইবেন। মন প্রাণ যদি দেবতার প্রেমে মাতে, তবে তাহাকে কিছু বলিতে হইবে না, আপনা আপনি সে প্রকৃত মন্তের বেশ পরিধান করিবে। সেই মন্ততাই প্রকৃত মন্ততা যাহা আত্মাকে ভববন্ধন হইতে মুক্তিদান করে, সেই নৃত্যই প্রকৃত নৃত্য, যাহাতে মন্ততার অবসান না হইয়া বৃদ্ধি হইয়া থাকে। যদি ঈশ্বর-প্রেম আমাকে কীর্ত্তন করায় তবেই আমি কীর্ত্তন করিব, নৃত্বা কীর্ত্তন ফল কি ?

আগামী উৎসবে যোগ দিতে আমরা সকলকে বিনীত ভাবে এবং প্রদা ও সমাদরের সহিত নিমন্ত্রণ করিতেছি। তংশী-কালালী যিনি যেখানে যে অবস্থায় আছেন, তিনি সেই অবস্থায় আহ্ন। পিতা আমাদের পরম দয়াল, তিনি আমাদের অস্পন্ত্রতা ও উৎক্ত চেটার বিফলতা জানেন, তিনি কাহাকেও শৃত্ত হত্তে থিরাইয়া দিবেন না। সরল ও ব্যাকুল ভাবে বে তাঁহাকে ডাকিবে, সেই তাঁহাকে পাইবে, সন্দেহ নাই। ত্বংখী কালালী মুক্তি-পিপান্থ আয়াগণের জন্তুই তাঁহার এই আয়োজন, অবশ্ত তিনি আপনার অঙ্গীকার রক্ষা করিবেন।

যাহার রূপায় আমরা বংসর বংসর এই পরন পর্বে সম্ভোগ করি, তাঁহাকে নমস্বার ও তাঁহার প্রেম শ্বরণ পূর্বক আমরা এই প্রস্তাবের উপসংহার করিতেছি। আমরা যে তাঁহার জন্ম ব্যন্ত হইব, ইহাতে কিছুই আশ্চর্যা নাই; তিনি রাজা আমরা ভিথারী, তিনি পরিত্রাতা আমরা পতিত; তিনি যে आमारित अस दास, हेटा हितकालहे विश्वरम्य विषय शांकिरव। যিনি কটাকে কোটী ব্ৰহ্মাণ্ডও অসংখ্য জীব স্জন করিতে পারেন, তিনি এই কুদ্র নগণ্য কীটাণুদিগকে আপন হৃদয়ে স্থান দিতে সক্ষোচ বোধ করেন না, একথা শ্বরণ করিয়া যে অঞ সম্বরণ করিতে পারে, সে নিতান্তই পাষাণে নির্মিত। জন্মাবধি य त्थाम मण्लेम विश्वन मक्त ममदब आमारमन मनी इरेबारइ, ঘোরতম অন্ধকার ও হঃথ ছদিনে যাহা আমাদিগকে পরিত্যাগ করে নাই, আর কিছু করি আর না করি, এমন প্রেমের আধা-রের প্রতি যথেষ্ট কৃতজ্ঞত। জানাইতে যেন আমাদের কথনও ক্রটা না হয়। তাঁহার প্রেমের জয় জয়কার হউক। পাপী তাপী সকলে ভাঁহারই প্রেমারে চিরদিন প্রতিপালিত, তিনি বিনা ভাহা-দের আর গতি কোথার ?

প্রভুর কার্য্য 🗯

ধর্ম সাধনের সময় সম্বন্ধে কি প্রাচীনকালে কি বর্ত্তমান সমবে ছইটা বিপরীজ মত দেখিতে পাওয়া বার। এক শ্রেণীর লোক বলিতেছেম,—

> "विनाम्भाक्तित्वत् वांता धनः नात्रांक योवता । ट्योर्ड धर्मानि कर्मानि कर्ट्स थ्रवस्थिः॥"

বাল্যকালে বিদ্যা উপার্জন করিবে; যৌবনকালে ধনোশার্জন করিবে ও বিবাহ করিয়া সংসারী ছইবে; প্রৌঢ় বর্ষসে
ধর্ম কর্ম করিবে এবং বৃদ্ধাবন্ধার দেশ অমণ করিয়া বেড়াইবে।
কেহ কেহ আবার বার্দ্ধকেয় ধর্মাচরণ করিতে পরামর্শ দিয়া
থাকেন। এখনকার লোকের মুখেও এইরূপ উপদেশ শুনিতে
পাওয়া যায়। সাংসারিক লোকেরা সর্বাদাই বলিতেছে, ধন মান
স্থামের সেবা কর, ধর্ম-চর্চার সময় যখন আসিবে তখন দেখা
যাইবে। অপর দিকে এক শ্রেণীর লোক বলিতেছেন,—

"গৃহীত ইব ়কশেষু মৃত্যুনা ধর্ম্মাচরেং ॥"

মৃত্যু তোমার কেশ ধরিয়া আছে এইক্লপ ভাব হৃদ্রে লইয়া ধর্মাচরণ করিনে। ইহার তাৎপর্যা এই যে মৃত্যু কথন আসিবে তাহার দিরতা নাই। জীবন অনিশ্চিত, কিন্তু মরিতে যে হইবে তাহাতে সন্দেহ নাই। স্বতরাং প্রতি মুহুর্তে আমাদিগকে মৃত্যুর জন্ম প্রস্তুত থাকিতে হইবে। এই ছই বিপরীত মতের মধ্যে শেষোক্ত মতটা যে অধিকতর সক্তিসকত তাহাতে আর সন্দেহ কি ? কিন্তু কেবল মৃত্যুভয় হইতে যে ধর্ম্মাধন, তাহা শ্রেষ্ঠতম আদর্শ নছে। প্রেমই আমাদিগকে ধর্ম্মাধনের শ্রেষ্ঠতম আদর্শ দেখাইয়া দের। প্রেমের উপদেশ এই যে তোমার জীবনের যাহা কিছু ভাল তাহা সেই প্রেমাম্পদের সেবায় নিয়োজিত কর। যথার্থ প্রেমিক যিনি তিনি কেবল বার্দ্ধকাকে ধর্ম্মাচরণের প্রশস্ত সময় মনে করিতে পারেন না। দেহ মন প্রাণ সকলই বাঁহার প্রেমের দান, জীবনের সারাংশ সংসারের সেবার অতি-বাহিত করিয়া জরাজীর্থ অক্ষ দেহ মন তাঁহার কার্যোর জন্ত যথেষ্ট মনে করা ঈশ্বর-প্রেমিকের পক্ষে অসম্ভব। 'কি জানি কবে মৃত্যু আসিয়া আমাকে পৃথিবী হইতে লইয়া যাইবে, তাহা হইলে প্রভুষে কার্য্যের জন্ত আমাকে সংসারে পাঠাইয়াছেন, তাহা আমা ছারা সাধিত হইবে না, এই ভাবিয়া তিনি সকল সময়ে ও সকল অবস্থাতেই প্রভুর ইচ্ছা পালনে যত্নবান্ থাকেন। कि मः मारतत, मकन कार्या ছाड़िया क्वित धान धात्रा ७ धर्म-প্রচারে জীবন কাটাইতে হইবে ? সকলের পক্ষে তাহা কথনই সম্ভবপর হইতে পারে না। তবে আজীবন ধর্ম সাধনের অৰ্থ কি P

এ সম্বন্ধে ব্রাহ্মধর্মের আদর্শ কি ? ব্রাহ্মধর্ম্ম বলিতেছেন বিদ্যাউপার্জন ও ধ্যানধারণা, ধনোপার্জন ও ধর্মোপদেশদান সকলই
সেই মঙ্গলমর প্রভুর কার্যা। ধর্ম প্রচার হইতে আরম্ভ করিয়া
গৃহ পরিষ্কার করা পর্যান্ত সকল কার্যাই তাঁহার। কিন্তু যে ভাব
লইরা কার্যা করা যায়, তাহাতেই স্বর্গ ও নরকের প্রভেদ হয়।

এই জন্তই দেখা যাত্র-যে একজন প্রচারকের বক্তৃতার বাহা না হয়, একজন নগণ্য লোকের জীবনের দৃষ্টান্ত ছারা তাহা সাধিত হইয়া যায়। কার্য্যের মূলে প্রেম ও বিশ্বাস চাই। অনস্ত জ্ঞানমন্ত্র প্রমেশ্বর কাহাকেও অনর্থক এখানে আনেন নাই। প্রত্যেক লোকেরই প্রকৃতি ও ক্ষমতার অনুযারী কার্যা নির্দিষ্ট আছে। নিজের কার্য্য চিনিয়া লইয়া বিখাস ও প্রেমের সৃহিত ভাহা করিতে পারিলে সে কাণ্য যতই যৎসামান্ত ছউক না কেন তাহাতেই পরিজাণ হইবে। আমরা তাহা করি না, তাই আমরা আশালুরূপ উল্লিল্ড করিতে পারিতেছি না। আমরা যদি মান অভিমান সার্থ হব প্রভৃতি নীচ ভাব ছাড়িয়া প্রকৃত বিখাদের সহিত আমাদের জীবনের কার্য্য করিতে পারিতাম, তাহা হইলে ব্রাক্ষানাজ এত দিনে দেশ মধ্যে মহাশক্তিরূপে. উজ্জাল অধিন্দন্তরূপে প্রকাশিত হইরা প্রভুর করণা ও মহিমার দক্ষা দিতে পারিত-কত অন্ধ ও চুর্বল লোক সেই শক্তি ও আলোকের সাহায্যে পরিত্রাণের পথে চলিয়া যাইত। কিন্তু আজ আমাদের দোবে ত্রাহ্মসমাজের মুথ মলিন হইরা রহিরাছে। ইহা কি অল পরিতাপের বিষয় গ

আবার প্রভুর প্রেমোৎসব আসিতেছে। আমুন, আশা ও বিখাসের সহিত আবার প্রতিজ্ঞা করিয়া লাগি। আমরা যতই কেন অপরাধী হই না, তাঁহার প্রেম অপেকা আমাদের অপরাধের পরিমাণ কথনই অধিক হইতে পারে না ৷ আস্তুন এখন হইতে প্রস্তুত হই, আপনাদের অসারতা দ্বদয়ক্ষম করিয়া তাঁহার চরণে আত্মসমর্পণ করিতে চেষ্টা করি। আমরা বেন সর্কদা তাঁহার জন্ম প্রস্তুত পাকিতে পারি। কে জানে কখন তাঁহার শক্তি আসিয়া অবসর আত্মাকে উন্মন্ত ও মৃত প্রাণকে পুনত্ন-জ্জীবিত করিয়া তুলিবে ? কে বলিতে পারে আগামী উৎসবে তিনি কি আশ্র্যা ব্যাপার সংঘটত করিবেন ? তাঁহার ক্লপায় অসম্ভব সম্ভব হয়। তিনি মনে করিলে অতি হীন সামান্য লোকের হারাও তাঁহার মহৎ উদ্দেশ্র সংসাধিত করিয়া লইতে পারেন। তাঁহার শক্তি পাইয়া একজন সামাক্ত স্ত্র-ধরের সম্ভান ও তাঁহার অশিক্ষিত সহচরগণ পৃথিবীতে কি আশ্র্যা ব্যাপার সংঘটিত করিয়া গিয়াছেন তাহা একবার ভাবিয়া দেখিলে শুম্ভিত হইতে হয়। প্রেমময় প্রভু সর্কাদা আমাদের মঙ্গলের জন্ম ব্যস্ত রহিয়াছেন, তাঁহার রূপালোত প্রতিনিয়ত প্রবাহিত হইতেছে, তিনি প্রেমভরে সর্ম্নাই আমা-দিগকে ডাকিতেছেন। আমরা যেন নিজের দোবে তাঁহার कुशानाए विकास सहै। आमता त्यन आमारतत्र कीवरनत কার্য্য চিনিয়া লইয়া বিশ্বাস ও প্রেমের সহিত তাহা সাধন করিতে পারি। বিশ্বাস ও প্রেমের সহিত করিতে পারিলে ধর্ম প্রচার যেমন মহৎকার্য্য পাছকানির্ম্মাণও সেইরূপ মহৎকার্য্য। মহাত্মা পল তাঁব দেলাই করিয়া নিজের জীবিকা অর্জন করি-তেন। বিদ্যা উপার্জন, ধনোপার্জন, পরিবার প্রতিপালন, পরোপকার, ধর্মপ্রচার সকলই প্রভুর অভিপ্রেড কার্য্য। নিজের প্রকৃতি ও শক্তি অনুসারে বাঁহার যে কার্যা ভাঁহাকে তাহা চিনিয়া বইয়া বিশ্বাস ও প্রেমের সহিত তাহা সাধন করিতে इहेरद । প্রভূ আশীর্কাদ করুন, আমরা যেন সকল প্রকার নীচ-

শ্রীরুক্ত আদিত্যকুমার চটোপাধ্যায় মহাশর কর্তৃক গত ১লা পৌব রবিবার সারকোলে সাধারণ আক্রসমাজ মন্দিরে যে উপদেশ প্রাণম্ভ হয় তাহার ভাব সাইয়া লিখিত।

ভাব ত্যাগ করিরা কেবল তাঁহার ইচ্ছা পালনের জস্ত উৎস্থক হই এবং তাঁহার শক্তি ও রূপা লাভের জন্ত আমাদের হদর্বার সর্বাদা উন্মুক্ত রাধিতে পারি।

বাৰ্ষিক লিপি।

প্রাপ্ত।

উৎসব সমাগত। জীবনের পাতা উণ্টাইরা একবার প্রাতন হিসাব দেখিতে ইচ্ছা হইতেছে। প্রাণে ততটা ব্যাকুলতা নাই যে প্র্রেখিত জাগ্রত করিয়া অস্তরের সমুদর মিলনতা তর তর করিয়া দেখি এবং প্রিয়তমের চরণে পড়িয়া হাহাকার করি! তবে সাধকদিগের ব্যাকুলতা দেখিয়া, তাঁহাদের উৎস্বের আয়োজন দেখিয়া, মনে যেন কেমন একটা ইচ্ছা হইতেছে একবার আজ্ব-পরীকা করিয়া দেখি।

উৎসব ত আসিল। আমার প্রাণকে ত উৎসবানন্দ ভোগের জন্ম একটুমাত্রও ব্যস্ত দেখিতেছি না। যাহারা অপরাধী তাहात्रा विठातरकत्र शीत ७ शखीत मूथऋवि मिथिया विठातामत्नत्र, সমীপবর্ত্তী ছইতে ভীত হয়। সেও ত ভাল। যাহারা নিজ-অপরাধ শ্বরণ করিয়া এতটা ভীত অথবা লক্ষিত হয়, তাহাদের ভবিষাৎ ত আশাজনক। তাহারা কি যেন একটু কারণে একবার অপরাধ করিয়াছিল, এখন অপরাধ বোধ হইরা তাহা-(मत्र वतः कन्तार्गत शथ अतिकात इहेन। किन्न ए भूनः भूनः অপরাধ করিতেছে, পুনঃ পুনঃ অপরাধ শ্বরণ করিয়া ক্রন্সন করিতেছে, ক্রন্দন করিয়াই আবার পাপপঙ্গে নিপতিত হই-তেছে, পাপের মধ্যে বাস করিয়া স্থাী হইতেছে—যে বিচারকের সমুখে দ্বণিত ভাবে বলপূর্বক আরুষ্ট হইতেছে এবং ক্লত-অপরাধের জন্ম শান্তি ভোগ করিতেছে; শান্তি ভোগ করিয়াও ভীত অথবা লজ্জিত হইতেছে না, তাহার দশা कি হইবে? বিন্দু বিন্দু করিয়া যাহার শক্তি কয় হইতেছে, ঘোর পাপে ও অপরাধে গিপ্ত থাকিয়া যাহার অন্তরাত্মা দিন দিন মৃত্যমুখে পতিত হইতেছে, তাহার যদি এপনও চৈতক্ত নাহয়: যদি এখনও সে বিচারকের সমীপবর্ত্তী হইতে ভীত না হয় তবে ভাহার কি আর গতি আছে গ

সংসার সাগরে ভাসিয়া বেড়াইতেছিলাম। ক্লেশ বা ছ্:থ
কাহাকে বলে জানিতাম না। প্রিয়তমকে কথনও চিনিতে
পারি নাই; তথনও চিনিতাম না। তবে কথনও কথনও
তাঁহার নিকট কোন কোন সামগ্রী চাহিতাম; তিনি আমার
অভিলবিত সামগ্রী দিতেন কি না অত দেখিবারও আমার অবসর
অথবা আকাজ্ঞা হইত না; কেন না তথন সংসারের স্থাী লোক
ছিলাম। আনন্দে ভাসিয়া বেড়াইতাম। সংসারের কোন
অভাবই ছিল না। পিতা, মাতা, ল্রাতার আদরের বস্তু ছিলাম।
কিন্তু হায়! সে স্থেথ বিষম ব্যাঘাত পড়িল। শোকের প্রবল বাত্যা বেগে প্রবাহিত হইল। সংসারের সেই ভুকানে আমার
লাধের তরণী লইয়া আমি আকুল প্রাণে ক্রন্দন করিতে লাগিভাম। কোথার ঘাই, কি করি কিছুই বৃঝিতে পারিলাম না।
কে বেন ধীরে ধীরে আমাকে সান্ধনা দিতে দিতে ব্রান্ধ সমাজের
দিকে আনিয়া ফেলিল। ক্রমে আবার আকাশ পরিকাম

হইল। আকাশ পরিকার হইল ঘটে; কিন্তু আর পূর্বের মত অথ-সাগরে ভাসিতে ইচ্ছা হইন না। দেখিলাম এথানে সকলেই বেন একজন প্রিরতম পাইরাছে। মনে হইতে লাগিল ইহাদের বোধ হয় কোন গুপ্ত কৌশল আছে বন্ধারা ইহারা সেই প্রিয়তমকে বাভ করিয়াছেন। এই বিখাস বশতঃ এক দিন কোন এক অতি শ্ৰন্ধের সাধককে আমার মনের ভাব জ্ঞাপন कत्रिनाम। जिनि वनितनम, मा, त्जमम किছू मारे गाकून ভाবে চাও, প্রিরতমকে লাভ করিতে পারিবে। সেই অবধি প্রাণ বেন ব কেমন করিতে লাগিল। প্রিয়তমকে পাইবার **জন্ত** বাসনা বেন একটু একটু করিয়া কাগ্রত হইতে লাগিল। কিন্তু প্রিরতহন্তের পাইলাম কি না জানি না। তবে তাঁহাকে লাভ করিবার জন্ত সকলে ও নির্ক্তনে অনেক সময় ক্রমান করিয়াছি, ভাষা আমার একটু একটু মনে আছে। আর বে কি করিরাছি তাহা মনে নাই। জীবনের পাতা উন্টাইয়া দেখি তাহার কোন কথা ইহাতে লেখা নাই। ক্রন্সনের কথাও ভাল রক্ম লেখা নাই. ভবে একটু একটু ঈষৎ দাগ যেন এখন ও আছে, তাহা কেবল আমিই পড়িতে পারি। অপরে পারিবেন কি না জানি না। বোধ হর পারিবেন না। সেই সময় আমার মনের অবস্থা যে কিরূপ হইয়াছিল তাহা আমি যদি মদিবারা কোন পুত্তকে निধিয়া রাথিতাম তাহা হইলে ভাল হইত। কিন্তু ভাবিয়াছিলাম যদি জীবনের পাতার পাতার দৈনন্দিন ঘটনা লিপিবন্ধ না থাকে: তাছা হইলে পুস্তকের লেখায় কি হইবে ? আর বদি জীবনের পাতায় পাতায় সমন্ত ব্যাপাবেব বিস্তৃত বৰ্ণনা পাইভান তালা হইলে অপর কোন স্তি-পুরকের ত প্রয়োজন ২ইত না। কিছ কি আৰু যাঁ এত কালা কাটা এত গোল মাল, এব একটাও জীবনে ভাল করিয়া মুদ্রিত রহিল না। मकन्हे तुथा इहेग्राष्ट्र । स्त्रीयत्न यथन देशांत किहून्नहे हिमाय পাইতেছি না। তথন সমস্তই রথা হইয়াছে তাহাতে সম্ভেহ नारे। वतः आमात्र छत्र इहेटहरू, वृक्षि द्वा छत्रवात्नत्र नाम लहेयां नामां भद्रात्य व्यभदां भी बहे या हि।

উপাদনা ত অনেক দিন করিতে বদিয়াছিলাম। कि উপাসনা করিয়া ত আমার কিছুই হর নাই। আমার ত এখন উপাদনায় বদিতে ইচ্ছা হয় না। শরীর আমার উপাদনার স্থানে ব্দিরা থাকে বটে, কীর্ন্তনের সময় আমার হাত করতাল 🖟 বাজায় বটে, জামার মুখ ও জিহবা ও আমার সেই না জানা প্রিয়তমের নাম গান করে বটে। কিন্ত স্থামার প্রাণ ভাহাতে যোগ (मग्र नां। এ छः रथत्र कथा कोहारक विनयः। ञ्राङ्याः आयात्र এমন নাম সংকীর্তনেরই বা কি প্রয়োজন, আর এমন উপাসনার कारन विश्वविद्ध वा कि धाराजन। त्रकन माधुवाहे बरनन, যে প্রিয়তম কথনই আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া থাকেন না। আমাকে সাধুরা একথা বলিলে আমার তাহাতে আশা হয় বটে, কিন্তু আশার মাতুষকে প্রার্থনীয় বস্তু হইতে বছকাল দুরে রাখিয়া नित्न, প্রাপ্তির আশা দিন দিন কীণ হইতে কীণতর হইছা যায়। ভূমি বলিবে বিশ্বাদের সহিত আশা কর। তাঁহার উপর नर्काञ्चः कत्र । निर्कत कत्र । यनि एक मन कतिया निर्कत कतिएक অথবা বিশাস করিতে পারিতাম তাহা হইলে কি আর ভারনা

ছিল ? না আছে বিখানের একবিশুর বিশু; না আছে নির্ভরের এক কণার কণা। আশা আমাকে আর ধরিরা রাখিতে পারি-তেছে না। চিন্ত নিতান্ত বিকিপ্ত হইরাছে।

ষ্মাবার একবার ফিরিয়া চাই। দেখি কথনও কথনও মন বেন সেই প্রিয়তমের একটু আভাবের আভাব প্রাপ্ত হয়। বহুদুর হইতে প্রন বেমন স্থানি পুল্পের আত্মাণ লইরা গিরা রাজনতে দভিত বন্দীর সমীপে উপস্থিত হয়: সেইরূপ সমরে. সময়ে কুপা-প্ৰন যেন সেই প্ৰিয়ত্ত্যের নিক্ট হইতেপ্ৰেম ও পবিত্রতার স্থমাণ লইয়া আমার মোহ-বন্দী চিত্তের নিকট আসিয়া ুউপস্থিত হয়। কিন্তু বন্দীবেমন কারাগারের উচ্চ প্রাচীর উল্লন্তন করিরা স্থগদ্ধি পুলোর উদ্দেশে গমন করিতে পারে না ; সেইরূপ আমার চিত্তও সংসার এবং বিষয় স্থাপের প্রতেদ্য অপরীরী প্রাচীর অভিক্রম করিরা সেই দেবাদিদেবের স্মীপে উপস্থিত हरेएक क्थन । नमर्थ हत्र ना। व्यवकात, नीहरा, चार्थभवका । ইজিব-সুথের প্রাচীর ভতিক্রন করে কাছার সাধ্য। বরং কারাগারের প্রাচীর মতিক্রম করা সংজ, কিন্ধু এই বে ক্রশরীরী প্রাচীর চতুষ্টর, আমি ইত্রাদিগকে অতিক্রম করিতে পারিলাম না। আমার শক্তি বাধা বমন্তই নিতেজ হইতেছে। যিনি মুক্তিদাতা তিনিই নাকি এরাজ্যের সহায়। কিন্তু তাঁহাকে **उपन क**तिया ना डाकिटन ना कि डिनि मुक्ति (नन ना) ষ্মামার ত তেমন:করিয়া ডাকিবার শক্তিও নাই; স্বণ্চ মুক্তিও চাই। এমন সমভার কেচ কগনও পডিয়াছেন কি প আমি অমরধামে ঘাইতে চাই অপচ মরণের রাজ্য ছাড়িতে আমার छात नार्श ना। हेळा इब दक्ट यनि वनश्रक्ति भागारक धहे বন্ধন ও মরণের রাজ্য হটতে মুক্ত কবে। আমি বন্ধন ও মরণকে দৃঢ় আলিম্বন করিলেও যদি দেই মৃতিদাতা আমার আসক্তি ও বন্ধনকে উপেকা করিয়া প্রবল্দেণে আমাকে আকর্ষণ ক্রিতে ক্রিতে অমর্রাজ্যে লইরা যান, ভাষা হইলে আনি ভাঁহাকে আছদান কবিয়া বিশেষরূপে পুরস্কৃত করি। কেন না এমন প্রিয়তম বিনি. এমন মঙ্গলাকাক্ষী বিনি, উচ্চাকে পুরস্কার ক্রিব নাত আর কাহাকে করিব। আর আমার তথন এই আহা ছাড়। ত প্ৰস্কাৰ দিবাৰ কিছুই পাকিবে না। অথচ যিনি আমার জীবনদাতা তাঁচাকে কি আমি পুরস্কারের কথা বলিতে পারি। ভাঁছার আমি ক্রীতদাস হইরা থাকিব।

আমি এত হীন হইয়াছি যে তাহার ইয়তা করিতে পারি
না। আরু কাপুরুর। অপচ আমার বর্গণ আমাকে ভাল লোক
বিলালানেন। এ আর এক চংধ। জগতের লোকে এমনই
ভাত যে তাহার। মাথুর না চিনিয়াও মাথুর চিনে। সংসারের
এমন পাগলামি দেখিয়া এই ছংগের মধ্যেও হাসা সম্বরণ করা
যার না। আমি আসল জিনিস যাহা তাহা যদি লোকে আমাকে
লানাইয়া দিত তাহা হইলে আমার একটু কল্যাণ হইত;
চাহা না হইয়া বাহা আমি নই তাহা বলিয়া লোকে আমার
প্রশংসা করাতে অনেক সময় আমাকে ভ্রমে পাতিত করে। আমি
হাহা নই তাহা ভাবিয়া আমি ভ্রমে পতিত হই।

আদি মহা বিপদে পড়িয়াছি। আনে ব অন্তরে মৃত্যুর শান্তি।
বিরাল করিতেছে। আমি শীবিত হইরাও মৃত হইয়া আছি।

উৎসবে যদি এই মৃত প্রাণ সঞ্জীবিত না হর, তাহা হইলে কবে কি প্রকারে ভাহা জীবিত হইবে তাহা আমি কি করিয়া জানিব। আর আমার মত মৃতজীবন বাঁহারা আছেন, তাঁহারা যদি প্রার্থনা করিতে পারেন,তাহা হইলে আমিও হর ত বাঁচিতে পারি কেন না আমার নিজের প্রার্থনা করিবার শক্তি নাই।

কে আমার অকিঞ্চন করিবে? আমি এখনও আহার পাইতেছি ও আমবাসা পাইতেছি। আমাকে সর্কৃত্রহীন না করিবে হইবে না। বে শক্তি জগংমর ম্লাধাররূপে নিত্য বিদ্যমান সেই শক্তি আমাকে সবলে আকর্ষণ করিতে থাকুন। কবে আমি রাহিব। "ভূবেছি ভূবেছি অকুল পাথারে, ধরিবার মাহি ভূপ খান।" কেননা আমাকে বেন কোন এক অক্সরের শক্তি কর্ত্তলগভ করিরা খুরাইরা লইরা বেড়াইতেছে। সে আমাকৈ পরিত্যাগ করিয়াও করিতে চার না। কেবল মাত্র ভাহারই অন্ত আমি সনাথ হইরা আছি। আর আমার কেফ নাই। সে আমাকে অনাথ হইরা আছি। আর আমার একটু একটু ইচ্ছা হর আমি অনাথ হইরা পড়ি; আর সেই প্রিরত্ম আমাকে সনাথ করেন।

ব্রহাণামের যাত্রী।

প্রাপ্ত।

একদিন বেহার প্রদেশীর কোন রেইলওয়ে টেশনে উপবেশন করিয়া আছি, এমন সময় ঘণ্টা বাজিয়া উঠিল। পুলিষম্যান চীংকার করিয়া বলিল গাড়ী ছাড়িরাছে। কৌতৃ-হলাবিট হইরা প্লাটফরমে আসিয়া উপনীত হটলাম। কিছু কালপর গাড়ী বিভাংবেগে আসিয়া ষ্টেশনে পৌছিল। গাড়ী দাডাইলে দেখিলাম, অনেক যাত্ৰী কোলাহল ক'বয়া গাড়ী হইতে নামিষা পড়িল। আবাব অনেক যাতী ভাড়াভাডি গাড়ীতে আরোহণ করিল। ইতিপুর্বে এরূপ ছটনা অনেকবাব প্রত্যক্ষ করিয়াছিলাম, কিন্তু তাহাতে মনে কোন এক বিশেষ চিম্বার স্রোভ থেলে নাই। কিন্তু এদিন হঠাৎ নবভাবে চিম্বার লহরী উথলিয়া উঠিল। মনে হইল ঠিক এইরপ ঘটনা আধ্যাত্মিক রাজে। ও ঘটতেছে। সমরের অসীম গাড়ীতে কোটা কোটা বাত্রী পবিভ্রমণ করিতেছে। গাড়ী জ্রত-বেগে অবিশ্রান্ত ব্রহ্মধানের দিকে চলিয়া বাইতেছে। বালক, उक् युवा, नकत्न भक्षार्त्वाहन कतियां हनियाहि। किन्ह उन्न-धांमहे कि नकरनत शखरा खन ? नां, मिथिए हि नठ नठ राजी कालाइन भूक्तक रागेवरनत (हेन्सन नाभित्रा भिष्ट्न। शाकी रा जन्मधारमत्रमिरक कृषिवारक, जाहारमत धरे कान भर्या इव विमुध ছইয়া গিয়াছে যৌবনের নয়নানক্কারী স্থর্মা ষ্টেশন তাহাদের মনকে আবদ্ধ করিয়া রাধিল, আর তাহারা অগ্রসর হইল ना। इहेरांत अन पिक योशांत्री हेलिपूर्व्स के द्वेगत अवसान ক্রিয়া তাহার অসারতা উপল্কি ক্রিতে পারিয়াছিল, ভাহারা তাভাতাতি গাড়ীতে আরোহণ করিল। গাড়ী যৌবনের ষ্টেশন ছাড়িয়া ধনের ষ্টেশনে যাইয়া উপস্থিত হইল। 🦟 'নে বাহিরের সৌন্দর্য্য কি মনোমুগ্ধকর। চারিদিক কেমন অপূর্ব্ব ভূষণে

ভবিত। দেখিলে বোধছর যেন মানবের জীবনের আশাভৃত্তি সাধন জন্ত বাহা কিছু প্রয়োজন, তাহা সমস্তই সেধানে ভরে ত্তরে সাজান রহিয়াছে। যাহারা চিত্ত প্রফুলকর সৌক্র্যারাশির উপরিস্থিত ন্তর বিদীর্ণ করিয়া অন্তরালের দুখা দেখিতে অসমর্থ इहेबाছिन, তाहां वा नकता जानत्म विख्वन हरेबा धरे चारन নাবিয়া পড়িল। অতি অল সংখ্যক পথিক এম্বানে গাড়ীতে আরোহণ করিল। গাড়ী বায়বেগে মানের ষ্টেশনে উপনীত इहेन। এ (हेमनो पित्राणि। यानक खरीन खरीन लाक (हेमरन অবতরণ করিলেন। তাহারা বাহিরের চাকচিকাের দিকে তত চাহিলেন না। কেবল আনন্দভোগের আশার অবতরণ করিলেন। ইহাদিগকে পশ্চাৎ ফেলিয়া গাড়ী যশোধামে পঁহুছিল। এখানে প্রায় সমস্ত গাড়ী শৃত্ত প্রায় হইল। যাহারা প্রাণপণে ধর্ম সাধনের জন্ম উৎস্থক ছিলেন। ব্রহ্মধাম কি অপূর্ব্ব আনন্দ স্থল, থাহার। ইহা জ্ঞান চক্ষে অবলোকন করিয়া ছিলেন। এমনকি যাঁহারা এক্ষধামে যাইবার অভ্যু টিকেট ক্রম করিয়া-ছিলেন। তাহারাও এই ষ্টেশনে আসিয়া স্থির থাকিতে পারি-লেন না। এই ষ্টেশনের কি আকর্ষণী শক্তি। সকলে গাড়ী মধ্যে কোলাহল করিয়া উঠিল। কেবল ছই চারি জন সৌম্যমূর্ত্তি বিশিষ্ট সাধু প্রেমিক স্থির ও গছীরভাবে স্ব স্থ স্থানে উপবেশন করিয়া রহিলেন। তাঁহাদের চিত্তের চঞ্চলতা না ঘটিয়াছিল এমত নহে। কিন্তু তাঁহারা ত্রন্ধনাম স্বরণে সে চাঞ্চলা বিদ্রিত করিয়া দিলেন। যাঁহারা পরিমিতের প্রলো-ভন সতিক্রম করিতে পারেন নাই, তাঁহারা মধ্যবর্তী ষ্টেশন সকলে নামিয়া পড়িয়াছেন, কিন্তু প্রেমিকদিগকে পরিমিত পদার্থ আবদ্ধ করিতে পারে না। সংসারের চাক্চিক্য ধনের রপরাশি সমন্বিত নম্বন মুগ্ধকর মুর্ত্তিমানের মনোমুগ্ধকর আহ্বান, যশের চিত্ত চাঞ্চলা-উৎপাদিকা শক্তি আর তাহাদিগকে অন্তির করিতে পারে না। তাঁহারা ত্রন্ধানের যাত্রী, ত্রন্ধানের জন্ম अर्थका कतिया बहित्तन। शाड़ी अन्तर्भार वक्षभारम अंहिल। এথানকার পবিত্র বায়ুসেবনে তাঁছাদের প্রাণে নৃতন ভাবের সঞ্চার হইতে লাগিল। ভ্রমণকালে পণে যে সকল দৃশ্য দেখিয়া আদিয়াছিলেন, ইহার সহিত তাহার কাহারও তুলনা হয় না। শ্বরং ভগবান তাঁহার কুপার হস্ত প্রসারিত ক্রিয়া, তাঁহাদিগের অঙ্গ প্রান্তি অপসারিত করিতে আরম্ভ করিলেন। পিতার প্রেম্মর সংস্পর্লে, তাঁহাদের সমন্ত প্রান্তি কোথায় চলিয়া গেল। যাহা কথনও প্রত্যক্ষ করেন নাই, যাহা কথন কল্পনার চক্ষেত্র অব-লোকন করেন নাই, এইরূপ বিমল শান্তি স্থা ভোগ করিতে আরম্ভ করিলেন। আর তাঁহাদের দৃষ্টি পশ্চাৎদিকে ফিরিল না। আর কোনরপ কৃচিস্তা তাঁহাদিগের মনের আগমন করিতে পারিল না। তাঁহারা ভয় ভাবনার অতীত হইয়া ব্ৰহ্মধানে ব্ৰহ্মসহবাসে প্রম আনন্দে দিন কাটাইতে नांशितन। हात्र स्थामात्तत्र तम निन करत हत्त ? श्रास्त्र सानी-র্কাদ করুন। বেন আমরা অচিরে তাঁহার ব্রন্ধানে উপনীত रहे।

ব্রাম্মমাজ।

মা চোৎসব।—সাধারণ প্রাশ্বসমাজের কার্যনির্বাহক
সভা নিয়লিখিত প্রণালী অন্থসারে আগামী মাঘোৎসব সম্পন্ন
করিতে ইচ্ছা করিয়াছেন। বিশেব কোন শুরুতর কারণে এই
প্রণালীর পরিবর্ত্তন করা আবশুক হইলে কার্যপ্রধালীর
সামান্তরূপ পরিবর্ত্তন হইতে পারিবে। আমরা আমাদের পাঠক
এবং প্রাশ্বসমাজের অন্থরাগী ও সহায়ভূতিকারী প্রভ্যোককে বিনীত ভাবে এই উৎসবে যোগ দান করিবার স্বন্ধ নিমন্ত্রণ করিতেছি। সফলের সমবেত চেষ্টা এবং ঐকান্তিক ব্যাকুল
প্রার্থনাই উৎসব স্থসম্পন্ন হইবার পক্ষে প্রধান আরোজন।
আশা করি সকলে সদন্ন হইরা এই উৎসব স্থসম্পন্ন হইবার
পক্ষে সাহায্য করিতে যত্নশীল হইবেন।

যষ্টিতম মাঘোৎসবের কার্যপ্রেণালী।

>লা মাব (১৩ই জাত্মারি) সোমবার—ব্রাহ্মপরিবার এবং ছাত্তা-বাদ দকলে উপাদনা ও ব্রাহ্মদমাজের কল্যাণার্থ প্রার্থনা।

२ता " >8हे " मजनवात-मात्रःकात्न छे०मत्वत छेट्या-

০রা ৣ ১৫ই ৣ ব্ধবার—প্রাতঃকালে উপাসনা। সায়ং-কালে বাঙ্গালা বক্তুড়া।

৪ঠা ,, ১৬ই , বৃহস্পতিবার—প্রাত:কালে উপাসনা। * সারংকালে ব্রন্ধবিদ্যালয়ের উৎসব।

৫ই , ১৭ই , শুক্রবার—প্রাত্তংকালে উপাসনা। সারংকালে ছিন্দি বক্তৃতা।

» ৬ই ু ১৮ই ু শনিবার—প্রাত:কালে উপাসনা।

সায়ংকালে ইংরেজিতে **উ**পাসনা।

ই ু ১৯এ ু রবিবার—প্রাতঃকালে হিন্দিতে উপা-

সনা। মধ্যাকে বাহিরে প্রচার। সায়ংকালে উপাসনা (শ্রমজীবীদিগের জন্ম উপ-

-ই ু ২০এ ু সোমবার—ছাত্রসমাজের **উৎস**ৰ।

०२ , २>७ , मक्रवात्र—जाक्षिकानगांक ७ वक्र-

মহিলাসমাজের উৎসব। সারংকালে
সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের বার্ষিক সভা।

এ ... বুধবার—প্রাতঃকালে উপাসমা। অপ-

भव।

ু, ২৪এ ু, শুক্রবার—প্রতি:কালে উপাসনা।
মধ্যাকে আলোচনা। অপরাকে বালফ
বালিকা-সন্মিলন। সায়ংকালে বালালা
বস্তুতা।

, एक इंडर

শনিবার—প্রাতঃকালে সঙ্গত সভার উৎসব। মধ্যাহে আলোচনা সারং-কালে ইংরেজিতে বস্তৃতা। তৎপর ব্রাহ্মবন্ধুসভার উৎসব।

>8हे , २७० , উन्ताननिक्ता

বিবাহ—গত ৭ই পৌৰ কুমারখালী নিবাসী প্রীষ্ক বাব্ হরিনাথ দাসের কক্সা প্রীমতী হেমন্তকুমারীর সহিত বাগলাচড়া নিবাসী প্রীমান্ জ্ঞানেকে নাথ হালদারের শুভ বিবাহ সম্পন্ন ইয়াছে। পাত্রের বর্ষ ২৮ বংসর পাত্রীর বর্ষ ১৬ বংসর। প্রীযুক্ত বাব্ উমেশচক্র দত্ত মহাশর এই বিবাহে আচার্য্যের কার্য্য করিরাছিলেন। বিবাহ ১৮৭২ সালের ও আইন অমুসারে রেজিটারি করা হইরাছে।

শ্রাদ্ধ-গত ১৭ই অগ্রহারণ বাগেরহাট প্রবাদী প্রীযুক্ত বাবু হরিনাথ দাস মহালরের মাতা পরলোক গমন করেন। গত ১লাপৌর রবিবারে বাগেরহাটে তাঁহার আব্যু প্রাদ্ধার এই অগ্নতানে হাইয়াছে। প্রীযুক্ত বাবু স্থামাচরণ ধর মহালয় এই অগ্নতানে আচার্য্যের কার্য্য করিরাছিলেন। আমরা ক্লজ্জভার সহিতে জানাইতেছি যে হরিনাথ বাবু এই প্রাদ্ধ উপলক্ষে সাধারণ প্রাদ্ধ সমাজে এক কালীন ২ চুই টাকা এবং বরিশাল প্রাদ্ধ সমাজে ২ চুই টাকা প্রধান করিরাছেন।

প্রচার—পণ্ডিত শিবনাথ শাল্পী এবং লছমন প্রসাদজী মহাশর আজমীর, আমেদাবাদ প্রভৃতি হানে বে কোন কার্য্য করিয়াছেন তালা শিবনাথ বাবর পত্র হইতে উদ্ধৃত করা গেল।

"আমরা ১১ই ডিসেম্বর সায়ংকালে আজমীর হইতে আমেদা-বাদে পৌছিয়াছি। আজমীরের সংক্ষিপ্ত কার্য্যবিবরণ নিম্নে প্রেরণ করিতেছি। আজমীরে বালানীদিগের আক্ষসমাল নাই কেবল মাত্র ছই জন বালানী আক্ষ আছেন তক্মধ্যে এক জন আফুঠা-নিক। তিনি সাধারণ আক্ষমান্তের সভ্য। তাঁহারই অফ্-রোগে ও আগ্রহে আমরা আজমীরে গিয়াছিলাম।

"৭ই ভিদেশর শনিবার। অদ্য সায়ংকালে আমাদের বাসভবনে স্থানীয় ভদ্রলোকদিগকে আমাদের সহিত আলপে পরিচয় করিকরিবার জন্ত নিমন্থণ কবা হয়। ষ্টেশনের অধিকাংশ ভদ্রলোক উপস্থিত হইয়াছিলেন। এদিন কেবল আলাপ পরিচয় গল্পাদি ভিন্ন অন্ত কেন কাজ হয় নাই। প্রাতে চন্দ্র-শেথর বাবুর পরিবারে উপাসনা হয়।

"৮ই ডিসেম্বর রবিবার। অদ্য প্রাত্তে এপানকার Pay master Lala Mulchand নামক একজন হিন্দুস্থানী ভদ্র লোকের বাড়ীতে উপাসনা হয়। ইহার বাড়ীতে একটা হিন্দুস্থানী সমাজ আছে; সপ্তাহে ছইবার উপাসনা হইরা থাকে। লছমন প্রসাদজী হিন্দীতে উপাসনা করেন। আমি হিন্দী ও ইংরাজীতে পালীয় বচন অবলম্বনে ব্রাহ্মধর্ম ব্যাথ্যা করি। সেই দিন সায়ংকালে এথানকার একজন মুসলমান বড়লোকের বাড়ীর দালানে ইংরাজীতে এক বক্তৃতা হয়। বক্তৃতার বিষয়—Religious Revolution in the East and the West—and the lesson to be derived therefrom । ইহা পূর্ব্ধ বক্তৃতার প্রকৃত্তির প্রকৃতিয়র পালীয় মাত্র। স্থল উদ্দেশ্য এই মাত্র ছিল বে, ভারতের প্রাচীন ধর্ম-জীবন ভয় হইতেছে, সেই ধর্ম-জীবনকে এক নৃত্তন

প্রণালীতে পরিচালিত করিবার চেটা করা কর্ত্বয় এবং ব্রাহ্ম সমাল তাহাই করিতেছেন।

"৯ই ডিসেছর সোমবার। অন্য সারংকালে লালা মূলচন্দ্রের বাড়ীতে লছমনপ্রসাদজী হিন্দীতে এক বক্তৃতা করেন এবং আমিও ইংরাজীতে কিছু বলি। "মানবের ধর্ম" বক্তার বিষয় ছিল। তাহাতে তিনি সংক্ষেপে ব্রাহ্মধর্মের লক্ষণ সকল নির্দেশ করেন, আমি ইংরাজিতে সেই সকলকে আরও বিশদ করিবার চেটা করি।

">•ই ডিসেশ্বর মকলবার সারংকালে একজন বাঙ্গালী ভদ্র লোকের বাঙ্গালত বাঙ্গালাতে এক বক্তা হয়। তাঁহাতে স্থানীর বাঙ্গালি ভদ্রলোক ও মহিলাগণ অনেকে উপস্থিত ছিলেন। ঐ বক্তাতে ঈশ্বর মানবের একমাত্র উপাস্য কেন, নিরাকারের উপাসনা সম্ভবে কিনা ? ঈশ্বরোপাসনা কর্ত্তব্য কেন ? পরি-বারে ধর্ম শিক্ষার প্রয়োজনীয়তা কি ? এই সকল প্রদেশন আলোচনা করা হয়। সেই রাত্রেই আমরা আমেদাবাদ যাত্রা করি।

"১১ই ডিদেশ্বর বুধবার আমরা সারংকালে আঞ্চমীর হইতে আমেদাবাদে পৌছি।

">২ই ডিসেম্বর বৃহস্পতিবার সারংকালে এথানকার সমাজ মন্দিরে আমাদের সহিত আলাপ পরিচর করিবার জন্ত ছানীর সমাজের সভাগণকে আহ্বান কর। হয়।

">৩ই ডিনেম্বর শুক্রবার অদ্য অপবাছে লছমন প্রসাদজী সমাজ মন্দিরে থিন্দীতে "প্রেমই ধর্মের মৃন্" এই বিবরে বক্তৃত। করেন। বক্তৃতাতে মানব-প্রীতি ও ঈশ্বর-প্রীতির সাধারণ লক্ষণ সকল নির্দেশ করা হয়।

">৪ই ডিবেশ্বর শনিবার। সারংকালে সমাজ মন্দিরে ইংরা-জীতে আমার এক বক্তা হয়। বক্তার বিবর Theism— Message of deliverence

"> ৫ই ডিসেম্বর রবিব।র। প্রাতে নগর কীর্ত্তন; বাজারে লছ-মন প্রসাদজী ও আমি হিন্দীতে সাধারণ লোকদিগকে কিছু কিছু বলি।

"১৬ই ডিদেম্বর সোমবার সারংকালে। সমাজ মন্দিরে আমার দিতীয় ইংরাজী বক্ত। হয়। বিষয় The Social reconstruction of Modern India

"১৭ই ডিসেম্বর মঙ্গলবার, অদ্য সাধ্যক্তের অ'মরা বোছাই
বাত্রা করিতেছি। বোধ হইতেছে আমানের এখানে আগমনে সাধারণ ব্রাহ্ম সমাজের প্রতি অনেকের পূর্বাপেকা অন্থ
রাগ বাড়িয়াছে। ঈশ্বর কর্মন সাধারণ প্রাহ্ম সমাজ স্থচারুরূপে
ভাঁহার নাম প্রচার করিতে সমর্থ হউক।"

উৎসব—শতাতি পূর্কবাদলা ব্রাহ্মসমাজ, দিরাজগঞ্জ ব্রাহ্মসমাজ, বোয়ালিয়া ব্রাহ্মসমাজ এবং গিরিধি ব্রাহ্মসমাজর দাছৎসরিক ব্রহ্মাৎসব হইয়া গিয়াছে। ঢাকা ও দিরাজগঞ্জে ত্রীমুক্ত বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয় গমন করিয়ছেন। বোয়ালিয়ায় ত্রীয়ুক্ত বাবু শশীভ্ষণ বস্থ মহাশয় উৎসবের সময় উপঞ্জিত ছিলেন। ত্রীয়ুক্ত বাবু নবছীপচক্র দাস মহাশয় গিরিধিবাহ্মসমাজের উৎসবে ছিলেন। নবছীপ বাবু তথা হইতে স্ত্রাভি

কলিকাতার সমাগত হইয়াছেন। আমাদের প্রচারক্পণ এই
সমাগত-প্রার মাবোৎসবের পূর্বে সকলে এখানে আগমন পূর্বক
উৎসবের পূর্বাহ্নিক আয়োজন করিতে যত্নশীল হইলে বিশেষ
উপকারের সম্ভাবনা। আমরা প্রচারক মহাশয়দিগকে এসময়
এক্ত্রিত হইবার জন্ম বিশেষ ভাবে অমুরোধ করিতেছি।

নামকরণ—গত ২১এ আখিন কালীকছ প্রামে প্রীযুক্ত বাবু গুরুদরাল সিংহমহাশরের ধ্যা কল্পা ও প্রথম পুত্রের এবং প্রীযুক্ত বাবু মহেন্দ্রনাথ নন্দীর ৪৩ পুত্রের নামকরণ সম্পান হইরাছে। আমরা কতজ্ঞতার সহিত জানাইতেছি যে এই অমুষ্ঠান উপলক্ষে গুরুদয়াল বাবু সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের প্রচারফণ্ডে ধ্ পাঁচ টাকা প্রদান করিরাছেন।

নূতন সমাজ প্রতিষ্ঠা—আমাদের কোন বন্ধকে বাবু বোণেজনাথ রায় (আড়া ক্লাসক্তাল ক্লের হেডমান্টার) মহালয় লিখিরাছেন শ্রীযুক্ত বাবু নবছীপচক্র লাস মহালয় এখানে আসাতে একটা স্বতন্ত্র ব্রাহ্ম সমাজ স্থাপিত হইয়াছে। পূর্বে এখানে একটা সমাজ ছিল সেটা বিশেষরূপ নববিধান সমাজভুক্ত। এজন্ত ব্রাহ্মধর্মামুরাগী ঘাঁহার। তাঁহারাই এসমাজ স্থাপন করিয়াছেন। ইম্বর এই নৃতন সমাজকে দীর্ঘজীবী করুন, এসমাজের কার্যা এখন একটা বন্ধুর গৃহে হইতেছে। ইহার সঙ্গে একটা নৈতিক বিদ্যালয়ও খোলা হইয়াছে। সর্ব্বেই বাহারা ব্রাহ্মধর্মামুরাগী তাঁহারা এইরূপ সমাজ স্থাপনও সংকার্য্যের অমুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হউন এই আমাদের অমুরোধ।

তি। টিং পেপার—আগানী বর্ষের জন্ত সাধারণ আক্ষম
নাজের অধ্যক্ষসভার সভ্য ননোনন্তনের ভোটং পেপার সকল
সাধারণ আক্ষসমাজের সভ্যগণের নিকট প্রেরিত হইয়াছে।
আগানী ৬ই জালুয়ারির মধ্যে তাহা প্রতিপ্রেরণ করিতে হইবে।
ভাহার পরে আদিলে কোন কাগজই গ্রহণকরা হইবে না।
স্থভরাং সভ্যগণ শীঘ্র আপনাদের ভোটিং পেপার পাঠাইয়াদিবেন।
অধ্যক্ষসভার সভাগণ অধিক সংখ্যক সভ্যের দ্বারা নির্কাচিত
হইলেই অধিক পরিমাণে সমাজের প্রতিনিধিত্ব করিবার উপযুক্ত
লোক নিযুক্ত হইবেন বলিয়া আশা করা যায়। স্ক্রতাং সকলে
এবিষয়ে মনোবোগী হইবেন এই আনাদের অমুরোধ।

বিজ্ঞাপন

আগামী ২১এ জানুয়ারি (১ই মাব) মঙ্গলবার অপরাষ্ট্র ,৬
ই ঘটিকার সময় সাধারণ আন্ধ্রসমাজ-উপাসনালয়ে সাধারণ আক্ষসমাজের ১২শ বাৎসরিক অধিবেশন হইবে।

विदवहा विषय।

- ১। বার্ষিক কার্য্য বিবরণ ও আয় ব্যয়ের হিসাব।
- ২। সভাপতির বক্তা।
- ত। কর্মচারী নিয়োগ।
- ৪। অধ্যক্ষ সভার সভ্য নির্বাচন।
- ৫। সভ্য মনোনয়ন।
- গাধারণ ত্রাক্ষসমাজের নিরমাবলী সংশোধন ও পরি-বর্ত্তন সম্বাদ্ধ বিচার।
- १। विविध।

দানপ্রান্তি খীকার।

আমরা কৃতজ্ঞার দহিত নিয়লিখিত দান প্রাথ্যি শীকার ক্রিতেছি;—

-সাধারণ ত্রাক্সমাজ বার্ষিক চাঁদা--১৮৮৯ বাবু মধুরামোছন মৈতা রাজসাহী ২ তাজার ধর্মদাস বস্থ মরমনসিংহ ২০ বাবু কৃষ্ণকুমার মিত্র কলিকাতা ২ বাবু পরেশনাথ সেন কলিকাতা >্ বাবু কালীপ্রসর দাস কলি-কাতা ৩ বাবু রামোত্তম বোব বশোর ২ বাবু জগৎচক্স দাস শিবসাগর 🔊 বাবু মণুরানাথ ঘোষ ধরসিয়াং ২১ বারু 🌭 মনমোহন রায় বাঁকুড়া ৬১ বাবু ছুর্গানারারণ ব**হু বাঁকুড়া** ॥ • वाव् ऋत्वक्षनाथ वस् वाक्षा ॥ • वाव् नत्वक्षनाथ वस् वाक्षा বাবু গোপালচক্র নন্দী শিবপুর ১ বাবু হারাণচক্র বয় শিমলাহীল 🔪 বাবু নক্তুমার মল্লিক বাগ্মাচড়। ॥• বাবু গোবৰ্দ্ধন মল্লিক বাগৰাঁচড়া ॥• বাবু মৃত্যুগ্ধর মল্লিক বাগৰাঁচড়া ॥ • বাবু অমৃতলাল মলিক বাগ্যাঁচড়া॥ • বাবু নবীনচক্র রায় রতলাম 🛰 জি, ভে ছাটা স্বামী নাইড় ভিলোর 📐 বাবু রাধাকান্ত বল্লোপাধাার মানভূম ৪১ বাবু নিশিকুমার খোর গৌহাটা ॥ বাবু বোগেশচক্র সেন ধুবড়ী २ अभिकी सहायात्र। चाय तक्रभूत > धीम डी याशमाया तम तक्रभूत > वाव् ख्रम মোহন কর দিনাজপুর ॥

বাবু পার্কতীনাথ সেন দিনাজপুর ২১ বাবু রাথালচক্র দত্ত কলিকাতা ১১ বাবু নৰ্ণাণ দাস কুমিল। ১॥• অভয়চরণ বহু মেদিনীপুর ১ ডাক্তার অবোরনাথ চট্টো-পাধাায় কলিকাতা 🛰 বাবু প্রকাশচন্দ্র দেব সিলং ১১ বাবু সদয় চরণ দাস সিলং ॥ ০ বাবু অভয়চরণ ভড় হুগলি ১১ বাবু শিবচক্স ভট্টাচার্য্য কোন্নগর ১১ বাবু গিরিশচন্দ্র দে কলিকাতা ১১ বাবু লালনাধৰ বন্ধ সিলং ॥০ বাৰু ক্ষেত্ৰমোহন দেন বাকুড়া ১১ বাৰু কেদারনাথ কুলভী বাকুড়া ১॥ বাবু হরগোবি**ল চৌধুরী জনাই-**় বাক্সা ২ রাধানাথ মলিক বাগফাঁচড়া ॥ বাবু কালীনাথ দত্ত मिक्नि १ ७ वाव विराम विष्टाती वस कानना ८ वाव नवीन ह स মিত্র বোলপুর ১ বাবু অধিনীকুনার গুহ ফরিদপুর ১ জীনতী কাদলিনী সান্যাল আলিপুর 🔍 বাবু গোবিলচক্র দত্ত ফরিদপুর 🖎 বাবু বৈক্ষবচক্স মল্লিক হুগলি ১১ বাবু পুর্ণচক্স तांत रोकारेल > तांत् भतकक मङ्गमांत न अगै। > ० निमठी অধিকা দেব কোন্নগর 🌭 বাবু সাতকড়ি দেব কোন্নগর ১১ বাৰু পাঁচকড়ি বন্দ্যোপাধ্যায় কোন্নগর ১ বাবু বিপিনচক্ষ পাল পাবনা ২ বাবু কালীনারায়ণ রায় চাঁচল 🛰 বাবু লক্ষণ সিংছ দাজিলিক ॥॰ বাবু বৈকুঠচজ মলিক বাগমাঁচড়া ১ বাবু শশি-भम वत्नाभाशात्र वत्राह्मशत् ॥ वाव् **ञाम्सरमाहन मञ्ज व**वि-শাল ॥॰ বাব্রামচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় লাহোর ২ বাব্ অপ্রাচরণ রায় রাঁচি ॥ • বাবু ভগতীচরণ মলিক বগুড়া 🔍 বাবু হেরখচক্স মৈত্র কলিকাতা ৪_২ বাবু অবিনাশচন্ত্র খোব কলিকাতা ১_২ শ্ৰীমতী কামিনী দেন ক্লিকাতা 🔍 বাবু কৈলাসচন্ত্ৰ দেন শিলং ॥• কুমারী হেমলতা ভট্টাচার্য্য কলিকাতা ১১ বাবু বোগেজ নাথ থান্তগীর কলিকাভা ॥• বাবু বছুবিহারী বস্থ কলিকতা ২ বাবু ঐচরণ চক্রবর্তী কলিকাতা ১॥• বাবু ঐীশচন্ত বন্ধ কলি-কাতা ১॥• বাবু র্জনীকান্ত তপাদার মেদিনীপুর ১॥• বাবু ছর**রু**-মার গুহ কলিকাতা 📐 কুমারী রাধারাণী লাহিড়ী কলিকাড়া 🍑

118 24 2 1 1

নাগাঁচকৰ (বৰ বৰ্জা) (নিছৰ বিদ্যান বাছী ক'ছ । পৰীক্ষা কৰাৰ নিছিৰ পৰা) বাছী ক'ছ । পৰীক্ষা কৰাৰ নিছৰ	शः व्यक्ति । यहारा ।	・ 単単便の内で、(2) フール・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・・		1	Service		
শ্বীমন লাখ্য (পথিক লিখনাৰ নামী ভ আছ স্থানী প্ৰান্ধ কৰিব সাধান্ধ কৰিব	» জাতিভেদ (২র প্রবন্ধ)	(পণ্ডিভ শিবসাথ শাস্ত্রী ব	দত)	/50 }			
ক্ৰমন্ত্ৰণ কৰেৰে নিষ্টিক গাঁৱন হ'ব নাৰ্যন্ত্ৰণ কৰিব কৰেৰে নিষ্টিক কৰিব নাৰ্যন্ত্ৰণ কৰিব কৰিব কৰিব নাৰ্যন্ত্ৰণ কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব	अ ^क बीवन कारा (शक्षिष	শিবনাথ শালী ও শন্ত	e de la companya de La companya de la co			•	
ক্ৰমণান্ধনৰ নাগা। শ্বেৰ পাৰি নাগী নাগী নাগী নাগী নাগি নাগ			•••	10 7	হান্মা রাজা রামনোহন (পদ্য)	_	_
নাই বছিল হল । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	 অংকাপাসনা গ্রশালী 		•••		হুমুমহার		}. •
ত্ৰভাগ (পিত শিৰনাথ সালি ক'ত) ত্ৰভাগ (পিত শিৰনাথ সালি ক'ত) কীৰনাগোপ (ভাগবেনৰ বলাট) কীৰনাগোৰ কাৰণে কাৰণে কাৰণে নালাগী ক'ত) কীৰনাগোৰ প্ৰতিহন্দ পৰ্যাপ্ৰকাল কাৰণে কাৰণে নালাগী ক'ত) কাৰনাগোৰ কৰিবানৰ প্ৰতিহন্দ পৰ্যাপ্ৰকাল কাৰণে কাৰণে নালাগী ক'ত) কাৰনাগোৰ কৰিবানৰ প্ৰতিহন্দ পৰ্যাপ্ৰকাল কাৰণে কাৰণে নালাগী ক'ত) কাৰনাগোৰ কাৰণে কাৰণি কিবানে পাৰী ক'ত) কাৰনাগোৰ কাৰণক কাৰণি কিবানে কাৰণি কাৰণে কাৰণি কাৰণি কাৰণে কাৰণি কাৰণি কাৰণি কাৰণে কাৰণি কাৰণি কাৰণি কাৰণে কাৰণি কাৰণি কাৰণে কাৰণি কাৰণি কাৰণি কাৰণি কাৰণে কাৰণি	* ক্মে আছি ?	M. 400 Pr.	•••	40 3	হোলা থিয়োডোর পার্কারের জীবন চরিত (বারু নং		
্থান্থান কৰিব নিৰ্দান পাৰী কৰা । ৮০ কিনামনান্দৰ (পাৰ্যক ৰাচি) কিনামনান্দৰ (পাৰ্যক বিষয়ক পাৰ্যক কৰা । কিনামনান্দৰ পাৰ্যক কৰা । কিনামনান্দৰ (পাৰ্যক বিষয়ক পাৰ্যক পাৰ্যক পাৰ্যক কৰা । কাৰ্যক কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা নামনান্দৰ পাৰ্যক কৰা । কাৰ্যক কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰা কৰ	🛊 সাথী	,	•••	40			-
জীবনাগোৰ (কান্যকের বাচা) জীবনাগোৰ (কান্যকের বাচা) জীবনাগোৰ (কান্যকের বাচা) জীবনাগোৰ (কান্যকের বাচা) জীবনাগোৰ (কান্যকের নাচা) জীবনাগোৰ কান্যকের (কান্যকের নাচা) জীবনাগোৰ কান্যকের কান্যকির নাচা কান্যকের কান্যকির কান্যকির কান্যকির কান্যকির কান্যকির কান্যকের কান্যকির কান্যকের কান্যকির কান্যকের কান্যকির কান্যকর	• চরিত রহস্ত	•••	•••			ণাড) …	•
ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নীভানাৰ হ'ব কচ) ভাৰ নিৰ্দেশ্যনিৰ (বাহ নীভানাৰ হ'ব কচ) ভাৰ নিৰ্দেশ্যনিৰ (বাহ নীভানাৰ হ'ব কচ) ভাৰ নিৰ্দেশ্যনিৰ (বাহ নীভানাৰ হ'ব কচ) ভাৰ হ'ব নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ হ'ব বাহি নুকুল বাহানিৰ হ'ব ভাৰ হ'ব নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ হ'ব (ভাৰ নিৰ্দেশ্যনি হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নিৰ্দেশ্যনিৰ হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নিৰ্দেশ্যনি হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নিৰ্দেশ্যনিৰ হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ (বাহ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ হ'ব) ভাৰ হৈ নাৰ্ভ্ৰমণ্ডনিৰ হ'ব। ভাৰ হৈ নাৰ্ভ	🌞 '' গৃহধৰ্ম (পণ্ডিত শিবনা	াথ শাল্পী ক্বত)	•••	1/0 3	কারাকু ত্রমিকা (<u>এ</u>		· .
ন্ধীৰ্মন নিশ্ব - ব্ৰহ্মণনীত ১ৰ ভাগ বৰ্থ নং (কাণ্যাছৰ নদাই) - ঠি ৰৰ সংবৰণ (কাণ্যাছৰ নদাই) - ঠি ৰৰ সংবৰণ (কাণ্যাছৰ নদাই) - ঠি ৰৰ সংবৰণ (কাণ্যাছৰ নদাই) - ঠি ৰা সংবৰণ (কাণ্যাছৰ নদাই) - ঠি ৰা সংবৰণ (কাণ্যাছৰ নদাই) - কাণ্যাছৰ নদাই - কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ - কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ কাণ্যাছৰ - কাণ্যাছৰ নদাই - কাণ্যাছৰ নদা	• জীবনালোক (কাপড়ে	র মলাট)	•••	1/0	. 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	,	-
ত্ব আনানাৰ কৰা কৰা সং (কাগনেৰ নানাই) এ নান নাহলৰ কৰা নাম নাহলী এ নাম নাহলৰ কৰা নাম নাহলী নাহলৰ কৰা নাম নাহলী এ নাম নাহলৰ কৰা নাম নাহলী এ নাহলনাহল নাহলী এ নাহল	 চিন্তাকণিকা (বাবুসীত্র 	চানাথ দত্ত কৃত)	•••				
ন্ত্ৰ কৰিবলৈ চাৰ ভাৰ ৰ বাং ৰাণান্তৰ বলাচ) খুল এপালিচ নি বা বা বাংলাৰ বলাচৰ ৰাচ) খুল এপালিচ নি বা	 कीवन विल् 	•••	•••			• ***	-
ক্ৰ প্ৰ (বিভাগত্বৰ নাটে) ক্ৰ	* বন্দসংগীত ১ম ভাগ ৪থ	সিং (কাগজের মলাট)	***				-
ত্ৰ বি প্ৰপান্ধয়ৰ বিশিল্প বিশ্বনাৰ স্বাধান্ধ কৰি কৰিব প্ৰধান্ধ কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব কৰিব প্ৰধান্ধ কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব			প্রকাশিত				
ন্ধীন্ত্ৰপুৰ্ব ৰাজনাব কৰিব নাম কৰিব ন			-		* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *		
থানি ক্লিয়াৰ বিষয় কৰিব নাৰ		(পণ্ডিত বিজয়ক্কক গোসা	মী ক্বত)	' 1	ठाकमण्डत ७ ८४न्।।वसात (<i>ध</i>)		•
ব্ৰাহ্মন্যন্তিৰ বৰ্ষমান কৰাৰ এবং স্বাহাৰ সীবনে ব্ৰাহ্মন্ত্ৰ স্বাহ্মন পৰীক্ষিক বিষৰ (পৰিত বিষয়ক্ত্ৰ স্থান কৰিছ নিয়ন্ত্ৰ কৰিছে পৰীক্ষিক বিষৰ (পৰিত বিষয়ক্ত্ৰ স্থান কৰিছে পৰীক্ষিক বিষয় (পৰিত বিষয়ক্ত্ৰ স্থান কৰিছে পৰীক্ষিক বিষয় (পৰিত বিষয়ক্ত্ৰ স্থান কৰিছে পৰিক্ষান পৰিত বিষয়ক্ত্ৰ স্থান কৰিছে পৰিত বিষয়াক্ত্ৰ স্থান কৰিছে কৰিছে পৰিত বিষয়াক্ত্ৰ স্থান কৰিছে কৰিছে পৰিত বিষয়াক্ত্ৰ স্থান কৰিছে		•••	•••	`	স্বিধ্যা (বাব্রাজনারায়ণ বহু ৪৩)	***	
স্বান্ধন্তিৰ বিশ্বন্ত প্ৰত্যা কৰিব আৰু স্বান্ধন্ত বিশ্বন্ত কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব সংগ্ৰামীক বিশ্বন্ত কৰিব প্ৰত্যা কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব সংগ্ৰামীক বিশ্বন্ত কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰিব কৰিব নিৰ্দেশ্য কৰ	• •		:	630		.গ শংক্ষণ	••
পাৰিবলী কণ্ঠা — ।					4 4 4 4	•••	-
্বাছনাৰ ও নৰ্বিদ্যান (পতিত বিৰুদ্ধক (পাৰ্যাই ক্ষত্ৰ) - স্বাছনাৰ ও নৰ্বিদ্যান (পতিত বিৰুদ্ধক (পাৰ্যাই ক্ষত্ৰ) - প্ৰচাছতিকেদ ১ন প্ৰথক (পতিত বিৰুদ্ধক পাই ক্ষত্ৰ) - প্ৰচাছতিকেদ ১ন প্ৰথক (পতিত বিৰুদ্ধক পাই ক্ষত্ৰ) - প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰত্যা প্ৰত্যা - প্ৰচাছন প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰত্যা প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰত্যা - সংবাছন প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰত্যা প্ৰচাছন প্ৰত্যা প্ৰত্যা - সংবাছন বিৰুদ্ধ কৰিব হোৱা - সংবাছন বিৰুদ্ধ কৰিব হাল - সংবাছন		ত বিষয় (পথ্যিত বিষ	यक् स्व	4		•••	
ভ্ৰম্য ভাতিকে সন প্ৰবন্ধ (পতিত পিৰনাথ পান্ত্ৰী কৃত্ৰ) (১) পান্ধৰ লগত প্ৰচল্পক্ৰ (১) নাধু বুঠান্ত (ভীনাক্ৰল) (১) নাধু বুঠান্ত (ডীনাক্লল) (১) নাধু বুঠান্ত (ডিনাক্লল) (১)			•		* * *		
প্ৰকাষণ (এ) প্ৰাণ্ডিৰাৰ আবন্ধক ভা ও ছিল্মুকতা (ঐ) সাধু হুটান্ত (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) সংগ্ৰাহ্ম কৰিব (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) সংগ্ৰাহম কৰিব (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) সংগ্ৰাহম কৰিব (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) সংগ্ৰাহম কৰিব (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) সংগ্ৰাহম কৰিব (জীবনাবোদ্ধ প্ৰধ্যতান্ধক) অন্তৰ্গাপান্ধ প্ৰহম কৰিব (জিত প্ৰভাৱনাবাধ প্ৰভাৱনাবাধ কৰিব কৰিব নাম প্ৰভাৱনাব্ধ কৰিব কৰিব নাম প্ৰভাৱনাবাধ কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব কৰিব						•	•
ব্যাধান্ত্ৰ আৰ্ত্ৰক ভা ও গৃতিপুক্ত ভা (ঐ) সাধ্যু দুৱান্ত (খীনানোক প্ৰাণেভা কৃত্ৰত) প্ৰক্ষান্ত (খীনানোক প্ৰাণেভা কৃত্ৰত) প্ৰক্ষান্ত (খানানাক কৰা) প্ৰক্ষান্ত (খানাক কৰা) প্ৰন্ত (খানাক কৰা) প্ৰন্ত (খানাক কৰা) প্ৰক্ষান্ত (খানাক কৰা) প্ৰন্ত (খানাক কৰা) প্ৰন্			ত) •••	× 1	10%119m	•	-
নাধু দুঠান্ত (জীবনালোক প্রথেছ) হুছত । সংক্রমন্ত বিষয় কোনে প্রথেছ হুছত । সংক্রমন্ত বিষয় কোনে প্রতিভ বিশ্বনাথ শাস্ত্রী হুছত । ভাষাক করিন কেন (প্রতিভ বিশ্বনাথ শাস্ত্রী হুছত) ভাষাক বিষয় করিন কেন (প্রতিভ বিশ্বনাথ শাস্ত্রী হুছত) ভাষাক বিষয় করিন কেন (প্রতিভ বিশ্বনাথ শাস্ত্রী হুছত) ভাষাক বিষয় করিন কেন (প্রতিভ বিশ্বনাথ শাস্ত্রী হুছত) ভাষাক বিষয় বিষয় করিন করিন করিন করিন করিন করিন করিন করিন			•••		বাবিব শক্ষাত (বাবু প্রেল্ডার চড়োরাব) র স্কুড় স্থানি		
ন পাৰ্য বুলাৰ (জাবনালোক প্ৰপেতা কত) ন সংবাসনী (জীবনালোক প্ৰপেতা কত) ন বংসনী কৰা বেলা প্ৰস্তিত বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীয় কত কটা হৈ তুলা লৈ সংগ্ৰাম কৰা বিশ্ব প্ৰস্তা কৰা কৰা বিশ্ব কৰা বিশ			•••	' '			
ক্ষর প্রসাধ বিষয়ের বিষয়ের প্রসাধ বিষয়ের বিষয়ে		শাক প্রণেতা ক্ত)	•••		•		
ন বিংসাল (জাবনালেক অনেত্ৰ) হ'ত । জীবন হৈছে হৈছিল অহেছাপাসনা কৰিব্য কেন (পতিত নিবনাথ শাস্ত্ৰী কৃত্ৰ) জাবনাৰ কিন্তু বাব নীচানাথ পত্ৰ কৃত্ৰ) সাধনা বিজ্ঞু (বাব নীচানাথ পত্ৰ কৃত্ৰ) স্কুলি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বৈক্ত্ৰ) স্কুলি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বৈক্ত্ৰ) স্কুলি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা) স্কুলি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা) সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা) সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা) সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ শাস্ত্ৰীর করেকটা বক্ত্ৰা সুক্লি বিজ্ঞু বিশ্বনাথ করেকটা ব		***	•••	1	•	•••	
ত্রছোগানানা কর্ত্তন কেন (পণ্ডিত নিরনাথ শাহী কৃত্ত) ত্রছকাসুনী একতে বঁথা প্রতি থক্ত সাধান বিশ্ব (বার নীচানাথ মত্ত কৃত্ত) পণ্ডীর নকরিবন নাভ নক্তরতা অবক (পণ্ডিত নিরনাথ শাহীর করেকটী বক্ত্রা) নক্তরতা অবক (পণ্ডিত নিরনাথ শাহীর করেকটী বক্ত্রা) নক্তরতা অবক (পণ্ডিত নিরনাথ শাহীর করেকটী বক্ত্রা) নুম্পাহার নুম্মাহার নুম্মাহা		প্ৰেণেড (ক্ত)	•••	0.	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		-
ত্ৰহকীয়ী একত্ৰে বাঁধা প্ৰতি খণ্ড সাধন বিন্দু (বাৰু সীচানাথ দন্ত কৃত) পালীর নৰবীৰন লাভ প্লালীর নৰবীৰন লাভ কল্ডতা জনক (পণ্ডিত নিননাথ পান্ধীর কচেকটা বক্তৃতা) ১০ ব্লুলারনী বুজুলার প্রত্তা প্রত্তা বুজুলার প্রত্তা বুজুলার প্রত্তা বুজুলার কিন্তু বিনাধ পান্ধীর কচেকটা বক্তৃতা) ১০ বুজুলার কিন্তু বুজুলার কিন্তু বুজুলার কিন্তু বুজুলার কিন্তু বুজুলার কিন্তু বুজুলার কুটার ০য় তাগ বুজুলার কিন্তু বুজুলার কুটার ০য় তাগ বুজুলার কুটার ০য় তাগ বুজুলার কুটার ০য় তাগ বুজুলার কিন্তু বুজুলার কিন্তু		***		10		•••	•
স্থান বিন্দু (বাবু নীচনাথ দত্ত কৃত) শাদীর নবভীবন নাত ভাতীয় সংগতি সংগতিয় সং			दी इंड)	۰٤)		•••	-
ন্ধান্ধন বিশ্ব (বাধু সাহান্ধাৰ পৰ্ক ক) নালীৰ নৰ্বাহন নাভ নালীৰ নালীৰ নালীৰ নালীৰ কৰেন্বাই কৰেন্বাই কৰেন্ত্ৰাই কৰ্মান্ধ নিত্ৰ কৰেন্ত্ৰাই ক্ষান্ধ নিত্ৰ কৰিন্ত্ৰাই কৰেন্ত্ৰাই ক্ষান্ধ নিত্ৰ কৰিন্ত্ৰাই কৰিন	•		•••	2			
			•••	0.		•••	
বজুতা তাৰক (পত্তিত বিবনাথ শাস্ত্রীর করেকটা বক্তৃতা) /-		·	•••	- 1	পোরাণক আখ্যায়ক।	* * * * · · · · · · · · · · · · · · · ·	-
ত পুলারনী (ঐ পনা) ১০ ত নিশারনী আন্ধর্মী			•••			***	**
জন্মনী			`	1/•		ণিক কলে \	•
জ্ঞানাত জীবন জ্ঞান্ত জীবন ক্ষেপ্ত কিনে চিক্ৰাকার কুটার ৩য় ভাগ মুক্রাকার স্থান্ত বিরুক্ত আছোরতি প্রান্ধান বিরুক্ত আছারতি স্বান্ধান বিরুক্ত স্বান্ধানীর ব্রুক্ত স্বান্ধান বিরুক্ত স্বান্ধান বিরুক্	• পুস্পাঞ্দী (ঐ	शमा) & •			*
ৰাব্যত জীবন হণ কিনে ? ইণ্ কিনে ? ইণ্ কিনে ? ইণ্ কিনে ? ইণ্ডাহার ব্ৰুদ্ৰেন চিরিত্ত আছোমিডি আল্লামিডি		•••	•••				
জ্বার জ্বাবন স্কুল্প কর্মান বিবিদ্ধ ক্ষান্ত কর্মান ক্ষামান ক্ষাম	म्ब श्री	•••	***	100			-
ইম্বালার কূটার ০য় ভাগ মুক্তাহার বুছদেব চরিত আছোলতি আছোলতি আল্লাই কুল ব্রুল্ব চরিত আল্লাই কুল ব্রুল্ব চরিত আল্লাই কুল ব্রুল্ব কর্মান বর্মান		•••	•••	10	ì		•
চৰ্কাকার পুনার তথ্য ভাগ স্থান বিহন কর্মান			•••	10	A Company of the Comp	•••	•
বুছনেৰ চরিত্র স্থানি বির্দান কর্মান		1	•••	3/	•	•••	-
প্রান্থারিতি প্রান্থানিতি প্রান্থারিতি প্রান্থানিতি প্রান্থানিত প্রান্থানিতি প্রান্থানিতি প্রান্থানিতি প্রান্থানিতি প্রান্থানিত প্রান্থানিতি প্রান্থানিত প্রান্থানিতি প্রান্থানিত প্রান্		•••	•••	1•			,**
প্রাপানি কুল প্রাপানি কুল প্রাপানি কুল প্রাপানি কুল প্রাপানি কুল প্রাপানি বাথা প্রাপ্ত ব্যাধার বাথা প্রাপ্ত ব্যাধার বাথা প্রাপানি বাহাৰ (বাবু নগেজনাণ চট্টোপাধ্যাঘের বক্তৃতা) প্রাপানি বাহাৰ (বাবু নগেজনাণ চট্টোপাধ্যাঘের বক্তৃতা) প্রাপানি বাহাৰ (বাবু নগেজনাণ চট্টোপাধ্যাঘের বক্তৃতা) প্রাপানি বাহাৰ বাগ্ বৃদ্ধ প্রাপ্ত বিবেলীর বাগ্ প্রাপ্ত বিবেলীর বাগ্ প্রাপ্ত বিবেলীর বাগ্ প্রাপ্ত বিবেলীর বাগ্ প্রাপ্ত বিবেলীর বাগ বিবেলীর বাগ্ বিবেলীর বাগ বি		***	•••				15.
ত্রাধ্বর্ণত ব ব্যবার বাথা তির্দাশীল ব্রন্ধ বালা বিবাহ (বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধ্যারের বক্তা) ত্রীবন্ধ ও মৃত ধর্ম বালা বিবাহ (বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধ্যারের বক্তা) ত্রীবন্ধ ও মৃত ধর্ম বালা বিবাহ (বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধ্যারের বক্তা) ত্রান্ধর্মের মত ও উপাসনা পদ্ধতি পার্বি কল বাল্য কীবন ত্রান্ধর্মের মত ও উপাসনা পদ্ধতি পার্বি কল বাল্য কীবন ত্রান্ধর্মের মান ভ বাল্য কীবন ত্রি কাপড় বিধা ত্র্যার্ম্ব বাল্য কীবন ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বাল্য কীবন ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বাল্য কিলা ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরার্ম্ব ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরার্ম্ব ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরার্ম্ব ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরার্ম্ব ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্মের মান ত্র্যার্ম্ব বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্মের মান ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বর্ধন্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বর্ধন্ম বিশ্বর্ধন্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বর্ধন্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য বিশ্বরাধ্য বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য ত্রান্ধর্ম বিশ্বরাধ্য বিশ		•••	•••	-		,	
ব্যক্ষণমতত্ব ব্যবার ব্যথা ক্রিমাণীল প্রস্ক ক্রিমাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যথা ক্রিমাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যথা ক্রিমাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যথা ক্রিমাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যথা ক্রিমাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যবার ব্যব্র নগেক্রনাথ চট্টোপাধ্যায়ের বক্তৃতা) ক্রিম্মাণীল প্রস্ক ব্যবার ব্যব্র ক্রিমাণ্টার ব্যব্র ক্রমাণ ক্রিমাণ্টার কর্ত ব্যবার ব্যব্র ক্রমাণ ক্রমাণ্টার কর্ত্ব ব্যবার ব্যব্র ক্রমাণ ক্রমাণ্টার কর্ত্ব ব্যবার ব্যব্র ক্রমাণ ক্রমাণ্টার কর্ত্ব ব্যবার কর্তর কর্ত্ব ব্যবার কর কর্ত্ব ব্যবার কর্ত্ব ব্যবার কর্ত্ব ব্যবার কর্ত্ব ব্যবার কর্ত্ব ব্যবার কর্ত্ব ব্যবার	•	•••		e o	1		
জিয়াশীল অন্ধ বালা বিবাহ (বাবু নগেন্দ্রনাণ চট্টোপাধ্যায়ের বক্তা) ভীবন্ধ ও মৃত ধর্ম শালা বিবাহ (বাবু নগেন্দ্রনাণ চট্টোপাধ্যায়ের বক্তা) ভাবিন্ধ ও মৃত ধর্ম শালা ভাব শালা শালা শালা শালা শালা শালা শালা শা		***	•••				_
বাল্য বিবাহ (বাবু নগেন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়ের বক্তৃতা) ভীবস্ত ও মৃত ধর্ম থর্গের চাব সংসারীও বিবেকীর বাগ্ যুদ্ধ ভাল্য প্রতিব্যালির বাগ প্রত্তি ভাল্য প্রতিব্যালির বাগ ভাল্য প্রতিভাল্য প্রতিব্যালির বাগ প্রতিভাল্য প্রতিভাল্		•••	•••	√°		•••	•
জীবন্ধ ও মৃত ধর্ম ত্বৰ্গের চাবি সংসারীও বিবেকীর বাগ্ যুদ্ধ ভালি জল ত্বাল্লখন্দের মত ও উপাসনা পদ্ধতি শান্ধি জল ত্বাল্লখন্দির মত ও উপাসনা পদ্ধতি শান্ধি জল ত্বাল্লখন্দির মত ও উপাসনা পদ্ধতি শান্ধি জল ত্বাল্লখন্দির মতার কাল্লখন্দির প্রাণ্লভাবি মহান্দ্রা লরানন্দ সমন্মতীর জীবন চরিতে আহ্বান ত্বাল্লখন্দির বিবেক বাণ ভালি কাল্লখন্দির প্রাণ্ ভালি কাল্লখন্দির প্রাণ্ড পারিবারিক সমান্দ্র ভালি প্রাণ্ড বান্ধান্দির প্রাণ্ড বান্ধান্দির কাল্লখন্দির কাল্লখনাব্ব				•		•••	•
খাগর ভ বু ব বর্ম । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।		प्तनोथ हाड्डोभाशास्त्रत वक्	ভা)				**
সংসামীও বিবেকীর বাগ্ যুদ্ধ রান্ধধর্মের মত ও উপাসনা পদ্ধতি শান্তি কল বাল্য কীবন মহান্মা দরানক্ষ সরস্বতীর জীবন চরিত আহ্বান মাও ছেলে (প্রথম ভাগ) উপাসনাই থর্মের প্রাণ ভালাকীর প্রমন্টির ক্রম্নান্দির ক্রম্নাণ্টি পারিবারিক স্থাক্ষ ভালাকীর প্রমন্টির প্রতি ব্রান্ধস্বাক্ষর কর্মন্ত্র (বাধু মনেগজনাথ ভালাকীর প্রতি ব্রান্ধস্বাক্ষর কর্মন্তর (বাধু মনেগজনাথ		•••	•••			,	•
রাজধর্ম্যের মত ও উপাসনা পদ্ধতি শাস্তি কল বালা জীবন তাল কালা মহান্মা দরানক্ষ সমন্ত্রীর জীবন চরিতে আহ্লান মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) ভালান মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) ভালান বিশ্ব ভালান ভালান তালা ভালান ভালান তালা ভালান ভালান ভালান ভালান তালান ভালান ভা		•••	•••	•	1	***	-
প্রান্ধবন্দের মত ও ওণাননা পর্যাত পারি কল বাল্য জীবন মহান্ধা দরানন্দ সরস্বতীর জীবন চরিত আহ্বান মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) মা ও ছামাম্মী পরিওম মা কারেরাপাননা ও ব্রন্ধ জ্ঞান মা ভালি কালা মা ভালি কালা মা ভালি কালা মারিবারিক জীবরোপাননা প্রণালী মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবরোপাননা প্রণালী মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবরেলা মারিবারিক জীবনেলা মার্বান্ধ জাম্ম বিশ্ব স্বান্ধ স্বা			•••	-	i -	***	• •
বাল্য জীবন মহাদ্ধা দরানন্দ সরস্বতীর দীবন চরিত আহ্বান মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) উপাসনাই ধর্মের প্রাণ ভাল হাউরার্ড ত্বাল্য প্রমন্ত্র কলাট ত্বাল্য প্রমন্তর কলাট ত্বাল্য ক্রমন্তর কলাট ত্বাল্য কর্মন্তর কলাট ত্বাল্য কর্মন্তর কলাট ত্বাল্য কর্মন্তর ক্রমন্তর কর্মন্তর ক্রমন্তর কর্মন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর কর্মন্তর কর্মন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর ক্রমন্তর কর্মন্তর ক্রমন্তর ক্রমন		না পদ্ধতি	•••	-	\$	•••	
মহাস্থা দরানন্দ সরস্বতীর জীবন চরিত আহ্বান মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) উপাসনাই ধর্মের প্রাণ জন হাউরার্ড ক্রম্পানী চরিত ছামান্মী পরিণম সাকারোপাসনা ও ব্রন্ধ জ্ঞান ক্রম্পানী পরিণম সাকারোপাসনা ও ব্রন্ধ জ্ঞান ক্রম্পানী ভাতিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিয়াপটি পারিবারিক সমাজ হাতিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিয়াপটি পারিবারিক সমাজ হাতিকা প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিয়াপটি পারিবারিক সমাজ হাতিকা প্রথম খণ্ড) (ব্যন্ধ মর্গের কর্মেরা (ব্যন্ধ মর্গেরনাথ ক্রম্পানী ব্রন্ধ ব্রন্ধ ব্রাভি ব্রাজ্বসমান্তের কর্মেরা (ব্যন্ধ মর্গেরনাথ		***	•••	100		•••	-
মহান্ত্ৰ প্ৰথম ভাগ । মা ও ছেলে (প্ৰথম ভাগ) ভাগ ক্ৰম্পিনী চরিত ভামান্ত্ৰী পরিণম লাভ বৈশ্ব প্ৰথম লাভ) ভাগ কৰা চাত্ৰী ভাগ কৰা কৰা কৰা ত লাভ			•••	•		***	-
মা ও ছেলে (প্রথম ভাগ) ত উপাসনাই থর্নের প্রাণ জন হাউরার্ড ত ক্মানির প্রমানির ক্রান ত ক্মানির প্রমানির ক্রান ত ক্মানির ক্রানির		র জীবন চরিত	• • •			•••	
ভাগাননাই থর্মের প্রাণ ভাগাননাই পরিণ্ম ভাগাননাই কলি না ভাগাননাই পরিণ্ম ভাগাননাই কলি না ভাগাননাই	• •		•••		क्यांत्रिकी इतिक	•••	-
জন হাউয়ার্ড কাণাজের মলাট) ক্রি (কাণডের মলাট) স্কীত লভিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দুরিয়াপটি পারিবারিক সমান্ন ক্রিতে প্রকাশিত) জারীপানীর প্রান্তি প্রান্তনাধ্য জারীপানীর প্রান্তি প্রান্তনাধ্য সাকারোপাসনা ও বন্ধ জান প্রকল্ম আছে কি না শহরাচার্য্য জারিবারিক ঈশরোপাসনা প্রাণালী সংগীত মুকুল সংগীত মুকুল সংগীত মুকুল		গ) …	•••		क्रांगांच्यी शतिका	•••	
শ্বন হাড্যাড় শ্বনীয় প্রমনাচরণ সেন (কাগজের মলাট) শ্বন (কাপড়ের মলাট) শ্বন (কাপড়ের মলাট) শ্বন বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের সমাজ শ্বন বিষয়ের বিষয়ে		•••	•••	-		414	
স্থানীর প্রমন্তরণ সেন (কাগজের মলাট) ক্রি (কাগড়ের মনাট) স্কুলীত লভিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দুরিয়াগটি পারিবারিক সমাজ হুইতে প্রকাশিত) স্কুলীর প্রতি গ্রাম্বসাজের কর্মব্য (বাধু মগেজনাধ		_	***		প্রক্রা আক্র কি লা	•••	-
ঐ (কাপড়ের মণাট) নিজীত লতিকা (প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিরাপটি পারিবারিক সমান্দ হইতে প্রকাশিত) সংগীত মুকুল সংগীত মুকুল সংগীত মুকুল সংগীত মুকুল			•••	1100	•	•••	•
স্থাতিক তিক (প্রথম খণ্ড) (সিন্দ্রিরাপটি পারিবারিক সমান্দ্র হুইতে প্রকাশিত) সংগীত মুক্ল সংগীত মুক্ল					1.	•••	-
ক্টতে প্রকাশিত) ।।॰ সংগীত মুক্ল ।১৯ সংগীত মুক্ল ১৯	া সন্ধীত গতিকা (প্ৰথম	খও) (দিক্রিয়াপটি পা রি	वातिक नमा		विषयात्रात्रात्राम् विश्वाचा	•••	1.
कर्षामानात् व्याच जामग्राद्यम रुख्य (वर्ष् मध्यवनाय			•		· ·	•••	
	ছাৰীপাণীৰ প্ৰতি আৰ	गमास्त्रत कर्डवा (कांचू मार		şec .	• 1	***	69.4
The state of the s				ic / 25•		•••	***
		the Branch of the Branch	167 31. 15	دُد	<mark>ी. आर विका आंश्रह्म</mark> कर्मा करा कर्मा कर करा कर्मा कर्मा कर क्रा क्रा कर कर्मा कर कर	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	- 1

১৬ই পোষের তত্তকোমুদীর ক্রোড়পত।

বাবু সীতানাথ দত্ত কলিফাতা >্ বাবু হরিমোহন খোবাল कनिकाजा > वाव देकनामहन्त मक्समात्र मिनारेसर शा॰ শ্রীমতী দলোরমা মজুমদার ঢাকা ত বাবু কেদারদাথ চৌধুরী সিমলাহীল ৩ বাবু নীলমনি ধর কলিকাতা ২ বাবু কেদারনাথ মিত্র নিবাধই ১॥০ বাবু কামাখ্যাচরণ ঘোষ কলিকাতা ১১ বাবু ক্লপটাদ মল্লিক বাগ্জাঁচড়া ১১ বাবু হিরালাল হালদার কলিকাতা ২১ শ্রীমতী প্রেমলতা রায় কলিকাতা ১১ বাবু অনস্কলেব বন্দ্যো-পাধ্যায় রামপুরহাট ২ বাবু মহেশচক্র ঘোষ কলিকাত। ২ 🕮 মত্রী মোক্ষদায়িনী ঘোষ নলহাটী ১্বাবু ক্লফচক্র বন্দ্যোপা-ধ্যার বদিরহাট 🔍 বাবু রজনীকান্ত ঘোষ ঢাকা ২১ বাবু উপেক্র-নাথ চট্টোপাধ্যায় সোদপুর ১১ বাবু শশিভূষণ বহু কলিকাতা ॥० বাবু আনন্দচক্র মিত্র কলিকাত৷ ৩০ শ্রীমতী বিনোদিনী মুখোপাধ্যায় কলিকাতা ৬ বাবু আনন্দমোহন বৰ্জন কুমিলা ১ কুঞ্লাল নাগ ঢাকা ২ বাবু পাৰ্কতীনাথ দত্ত কলিকাতা ৬ ভাক্তার এম, এম, বহু কলিকাতা ১ বাবু যোগেল্ডনাথ মিত্র কলিকাতা ২্বাবু অমৃতলাল মজুমদার শিরাজগঞ্১২্বাবু রাধানাথ রায় শিলিগুড়ী ১ বাবুহেমচক্র হর কলিকাতা ২ বাবু অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায় সিলং ॥০ বাবু গুরুনাথ দত্ত নগাঁ॥ • ত্রীমতী স্বৰ্ণতা দত্তে ঐ ২ বাবু প্রবোধ চক্র ঘোষ মজফরপুর ১॥। বাবু বৈকৃষ্ঠ চক্র বহু বরিশাল ॥। বাবু মনমোহন চক্রবর্তী ঐ ॥০ বাবু শশধর ভাছড়ী পাবনা ত্বাবু কৈলাস চন্দ্ৰ বাগছী ঐ ৩ শ্ৰীমতী জগদম্বা বাগছা ঐ ॥• বাবু জন্মশঙ্কর রায় কুমিলা ১ বাবু অক্ষরকুমার সেন ঐ ২ বাবু অবিনাশ চক্র গলোপাধ্যায় দৈয়দপুর >্বাব্ যত্নাথ রায় রামপুরহাট ৮্ বাবু ব্ৰজললে দাস রাজসাহী ১্বাবু অক্ষ কুমার মৈতা ঐ ২্ বাবুনহিন চন্দ্রায় নাটোর ২্বাবু কেদার নাথ মুখে৷ কলি-কাতা ॥• বাবু ছুৰ্গাদাস বস্থ ঐ ১্ বাবু সত্যরঞ্জন দাস ঐ ১ৃ বাবু व्यक्लाम ठक्क भाग के २॥० वार् इतकाली तमन के २५ वार् निकृ পদ দেন ঐ ১্বাবু প্রমণনাথ সরকার নললাটী ১্বাবু শশিভূবণ সেন কলিকাতা ॥০ বাবু বৈকুণ্ঠনারায়ণ দাস ঐ ॥০ বাবু প্রসাদ मान मिक्क के Jue बांबू शाविन्म हक्क मजूममात्र के ue बांबू विशिन विदाती ठळवर्डी थे > वाव मरहक्षनाथ ठ छोशाधात्र थे २ শ্ৰীমতী শৈলবালা রায় ঐ ১ ্বাবু নীলকান্ত সিদ্ধান্ত নলহাটী ১ বাবুরাথাল চন্দ্র চট্টোপাধ্যায় বহরমপুর ত্বাবু প্রসন্ধ কুমার চক্রবর্তী বনগাঁ ১॥০ বাবু তারাপ্রসন্ন বন্ন বদরগঞ্জ ১ বাবু উপেক্স नाथ (म रिममन्यूत > ्रांतू कमनकुक (मन कन्याहे खड़ी > मूकी জালাল উদ্দিন ঐ ॥০ খ্রীমতী প্যারী বিবি ঐ ১ বাবু নবছীপ চক্ত সরকার ঐ ॥ • বাবু রজনী কান্ত বহু দিনাজপুর ১ বাবু ললিত।

মোহন দাস কলিকাতা ১ বাবু কালীচক্র ঘোষাল ঐ ১ ্জীমতী क्मन कामिनी ताब (bla्बी के 10 वान् शिवीमठळ पावान পূৰ্বপাড়া ১ জীমতা বিধুমুখী রার চৌধুরী কলিকাতা হ वावू है। मरमाहन देमज हिक्नांवि > ्वावू अमृजनान हरहे। नायांव কলিকাতা ১ বাবু নবদীপচন্দ্ৰ দাস কলিকাতা ॥• বাবু ঞ্ৰী**শচন্ত** দে ভবানীপুর ১ বাবু শরচ্জ বোৰ ভবানীপুর ১॥• বাবু প্রভূল-চক্র সোম কলিকাতা। বাবুরজনীকান্ত গুরু কলিকাতা ১ বাবু পার্কতীচরণ দাস গুল পূর্ণিরা ১২ বাবু দেবেজনাথ পাল কলিকাতা ১ মি: টি, আর, স্ব্রাম পিলে, মার্রাক্র ১ বাবু অবৈতচরণ মলিক কলিকাতা ৫ বাবু ভূবনমোহন বোৰ কলিকাতা ৩্ শ্ৰীমতী জগংশন্ধী বোষ কলিকাতা ১্ বাবু প্ৰসন্ধ-কুমার বন্থ কলিকাতা ১ু বাবু দেবেন্দ্রনাথ চৌধুরী কৰিকাতা ১ু বাবু গঙ্গাগোবিল গুপ্ত কলিকাতা ৩ প্ৰীমতী কেত্ৰময়ী বন্দ্যো-পাধ্যায় কলিকাতা ॥০ বাবু পরেশনাথ বিশ্বাস কলিকাতা ১ু বাবু त्रामहत्र शांण दाँहि ।।। वावू ऋ दत्र ऋ नाथ खर नगंधा २ वावू देवकूर्श्वनाथ मिन कविकाला ॥• वांतू भव्रक्रक्क बस्मााशांश्वा कनि-কাতা >্বাবুপ্যারীমোহন দাস কলিকাতা >্বাবুভগ্ৰতীচরণ দে কলিকাতা ১্বাবু বেনীমাধৰ পাল ঐ ১ু ৰাবু গোৰিশ-চক্র ভাওয়াল ঐ ॥০ বাবু অক্ষকুমার মুখোপাধ্যায় ঐ ১ **खक्र**ार्गातिम ठक्रवर्डी मग्रमनिराह॥• इत्रकि**रमात्र** विचान कनि-কাতা ২্চপ্তিরণ দিংহ,মুক্তের ৯্রাম লাল সাহা পাৰনা ১ লিঃ বুচিয়া প্যশ্টালু মাজাজ ৬্বাবু বছনাথ চক্রবর্তী সিমলা ১০ षांत्रकानाथ शात्रूनी कनिकाछ। २ अभिको कामविनी शात्रूनी के २ वार् विकारक का वस् वे ० व्यानक का कार्वा वे २ अक्नाम দেন নাটোর ২্ গিরিশচক্র দেব, কোলগর ১্ হরিপদ চট্টো-পাধ্যার লাহোর ৩, হারকানাথ বস্বওড়া ২, উনেশচক্র ঘোৰ ভালানোড়া॥। যজেবর রায় ভবানীপুর ১১ মহেজনাথ সরকার সীতাপুর ১_১ নিবারণচন্দ্র দাস কলিকাতা ১_১ উপেদ্র-किटनात तांत्र हो धूरी के २ विहाती कुक एन ।। श्रीनाथ मिळ २ কৈবাসচন্দ্র,সেন ঐ ১ হারাণচন্দ্র মিত্র হরিনাভি ৩ উপেক্সনার্থ রায়চৌধুরী কলিকাতা ১ বিদ্ধেশ্বর ধোব কোঁচবেহার ১ নন্দ-লাল মদক ঐ ॥০ ছকড়ি বোষ কলিকাতা ৩ শ্রীমতী রমাত্রনারী एवाय की ॥ वार् अविनामठक नवकाव मानिकपर > हावायन বন্দ্যোপাধ্যায় কলিকাতা ২॥০ চণ্ডিচরণ সেন সাভন্দিরা ৪ শ্ৰীমতী বামাস্বলারী সেন ঐ ৩্বাবুচক্রমোহন বিশাস মন্মন-বিংহ ৪ জগদীশচক্স ৰম্ফ লিকাতা ৫ জগদীশ্ব ওপ্ত কুটিয়া ১২, চক্রকান্ত সেন, গৌহাটী২ হারাণচক্র চট্টোপাধ্যার বাউটান ১८।

আগামী ষ্টিত্য মাঘোৎসবোপলকে ১লা হইতে ১৪ই মাখ প্রয়ন্ত সাধারণ ব্রাহ্মসমান্ত কার্যালয়ের পুস্তক সকল নিম্নলিখিত নির্দ্দিন্ত মূল্যে বিক্রয় হইবে। মকঃস্বলস্থ গ্রাহকগণ উক্ত সময় মধ্যে মূল্য ও ডাক্মাশুল পাঠাইলে নির্দ্দিন্ত নুমন মূল্যে পুস্তক পাইতে পারিবেন।

विकास ७०। * Brahmo Year Book 1876 12 1877 1878 Re. ... 1879 " 1880 ... 1881 1.8 ... ,, 1882 ••• 1 * The Gleams of the New Light Trust Deed of the Sadharan Brahmo Samaj Prayer Hall

Whispers from the Inner Life

Roots of Faith
British Rule in Iudia
* Thirsting after God
Principles of Brahmo Dharma
Practical Theism
Speculative Atheism

ব্ৰহ্ম (ভগিনী ভোৱা) (জীবনানোক প্ৰণেডা কৰ্ম প্ৰাৰ্থিত)
 ব্ৰহ্ম সালা

डिगरतम माना (बाहाबागरनत डिगरतम)

्र की (क क्षेत्र को की

তত্ত্ব-কোমূদী

ধর্ম ও সমাজতত্ত্ব বিষয়ক পাক্ষিক পত্রিকা।

>२म कांग। >२म मरबाां।

১লা যাঘ সোমবার ১৮১১ শক, **ভাক্ষ নর্শ্ব**্লেড০

'বাৎসরিক অগ্রিম মূল্য ২৯০' সক্তব্যে ৩ প্রতি ধড়ের মূল্য ৮০

কোৰায় সে জন ?

লগৎ দুমার, আকাশ অন্তরে, व्याचाविस् तत्र शतांव मांगदतः, ভাবের ভরন্ধ, সমীত প্রকাশে, ভাঁহার প্রাশন্ত এ বিশ্ব উল্লাসে; নর্নমতীত বাহু আর মন, भरनत्र जकां छ जंगर कांत्रण ; কুন্ত্মের কান্তি, নহে একস্থানে, পরমান্ধা নাই বন্ধ কোন থানে ; পুল্পের সৌরভ, পাই সবহানে, তাহার আকাশ সকলেরি আবে; **ट्यामत काश्मी, छनात्र नदन,** প্রেমণীতি তার গাইছে ভূবন ; भारतत नयन, ছोड़ां कड़ नहे, যথা যাই তথা তীব্ন কোনে রই, ट्रितिरन डांशात्त्र, मास्त्रि-धन मिरन, সকলি পাইবে তাঁছারে পাইলে।

নিবেদন ও প্রার্থনা —উৎসবপতি জীবনদাতা পরমেশর!
আমরা তোমার উৎসবের ঘারে সমাগত দীনছংথী সন্তান,তোমারই প্রশাদ লাভার্থী ছইয়া উপস্থিত ছইয়াছি। তোমার অফ্
কল্পা না ছইলে—তোমার অফ্মতি না ছইলে উৎসবের ঘার
আমাদিগের জন্ত উত্তক হর না। আমাদের সাধ্য নাই যে এ
আরার জাতিক্রম করিয়া ভিতরে প্রবেশ করি। আমরা মৃষ্টি-ভিগারী
ভালাল, আমাদের কি সাধ্য আছে, দানকর্ত্তা ভূমি, তোমার দানভাঙারের দরজা না খুলিলে তাহার ভিতরে ঘাই। আমাদের সে
সাধ্য নাই, কালাল যে সে দানকর্তার মুখাপেক্ষী ছইয়াই ঘারে
আবস্থিতি করিতে থাকে, আমরাও ভোমার অফ্রাহাপেক্ষার
ঘারে সমাগত ছইয়াছি। বছয়ান বছদেশ দেশান্তর ছইতে আমরা
ভোমার ঘারে সমবেত ছইয়াছি। আমাদের নানা জনের নানাঅবস্থা; কিন্ত সকলেরই অন্তর্থানী পিতা ভূমি, ভোমার নিকট
ছইতে আমাদের সকলেরই হুংথ হুর্গতি ও অভাব মোচন ছইবে।
ভাই আমন্ত্রা অনজোপার দীনছংখী সন্তানগণ ভোমার ছারে

আসিয়া উপছিত হইরাছি। তোমার গৃহের ভিতর হইছে আনন্দের গভীর ধানির আভাস আমাদের কর্ণে আসিতেছে, পুহাগত উন্নাস ধ্বনিতে আমাদের প্রাণের উন্নাস ও ওংস্থক্য ক্রমেই বাড়িয়া বাইভেছে। ভোমার গৃহে স্থানপ্রাপ্ত সম্ভানপণ উৎস্বানন্দে বিভার হইরা যেরপ উল্লাস্থানি করিভেছেন. তাঁহাদের আনন্দসংগীতথ্বনির মিণিতখর মাত্র বাছা আমাদের কর্ণে আসিতেছে, তাহাতেই যে আমানিগকে উৎসাহিত 👈 আকুলিত করিতেছে। আসরা কি সেই আনন্দধ্বনির সুম্ভারী হইরা তোমার গৃহের অভুল ঐবর্যা ভোগে সমর্থ হইব না ? প্রভু পরমেখর, শীঘ বার খুলিরা দেও তোমার বারে বিষম জনভাগ হইতেছে, লোকের আগ্রহও আকুলতা ক্রমেই বাড়িয়া চলিয়াছে. ইহারা আর কডকণ চিৎকার করিয়া গুরুক্র ছইবে। আর: কতক্ষণ আশার আশার দারদেশে অবস্থিতি করিবে ? আমাদের দলালু পিতা, তুমি কি আমাদের অবস্থা জাননা ? আমাদের সহিষ্তার দীমা কতনূর তাহা কি জান না 📍 আমরা যে অভি সহজেই নিরাশ ও নিরুদাম হইরা পড়ি, আমাদের সহিষ্ণুতা যে ষ্পতি সামান্ত। তবে আর কেন বিলম্ব কর। শীঘু দার উন্মুক্ত করিয়া দেও, আমরা কালাল সম্ভানেরা ভোমার গৃহে প্রবিট হইয়া যথেচ্ছা তোমার ঐশ্বর্যা লাভ করিয়া জীবন পাই। জীবনহীনদিগের গতি তুমি তোমার কুপাভিন্ন আমাদের আর গতাস্কর নাই। তাই তোমার দারে পড়িয়া থাকিলাম। উৎ-সবের দিন আসিয়াছে, কিন্তু ভোমার রূপা ভিন্ন আমাদের উৎসব করিবার সাধ্য নাই। তোমার স্পর্শলাভ ভিন্ন হে পর্শন্দি! আমা-**मित्र और लोहरमह स्वर्श পরিণত হইবে না। कान्नानमिश्यत** পিতা। শীঘ্র এদ আমাদের প্রত্যেকের নাম ধরিয়া ডাকিয়া লও। আমরা তোমার অমৃতবাণী শ্রবণ করিয়া ক্লতার্থ হই। উৎসবে চিরমর্থ ছইয়া, চিরমন্ততা লাভ করি। প্রাণ প্রাপ্ত ছইয়া **ভী**বি-তের স্থায় সংসারক্ষেত্রে বিচরণ করি।

আন্ধাদের বেহুমরী জননি! তুমি ত আমাদের উদাসীন মাতা নও যে আমরা ডাকিরা ডাকিয়া পরিপ্রান্ত না হইলে আর তোমার দরা হইবে না। তোমাতে উদাসীনতা নাই, তুমি নিরস্তর আমা-দিগকে পরিছার করিবার জন্ত অমৃতজ্বল লইরা প্রস্তুত রহিরাছ। আমাদিগকে ছোর করিয়া ধরিরা বার বার পরিছার করিয়াও 'দিতেছ, ছ্**ট ছেলেকে মা যেমন জোর করিরা ধরিরা ভাঁছার**ী শরীরের ধূলা মাটী পরিকার করিয়া অক্ষর বস্ত্র পরাইরা দেন, ভূমিও আমাদিগকে বার ২ ধরিয়া আনিয়া আমাদের প্রাণ মনের মালিন্ত দুর করিয়া দিতেছ। কিন্তু কি ছংথ আমরা বাই একটু অবসর পাই অমনি যে মলিন সেই মলিন ছইয়া যাই। আবার সংসারের তুর্গন্ধমর কর্দমরাশি তুই হাতে মুখে লেপিয়া দেই। হস্তীকে তাহার মাছত কত যদ্ধে মান করাইয়া দের,কত পরিশ্রম করিয়া তাহার শরীরের মাটা ধূলা সব ধুইয়া দেয়, কিন্তু সে এমনি মুর্থ, বেমন তাহাকে তাহার মাহত একটু অবকাশ প্রদান করিয়াছে, অমনি সে আবার মাটী ধূলা প্রভৃতি যত লঞ্চাল শরীরে নিক্ষেপ করিতে থাকে। সে আবার বে মলিন সে মলিন হইরা থাকে,এ ভাবে কুঞ্জর-মানের মত কি আমরা একবার ভোমার নিকট হইতে পরিষ্কৃত হইব, আবার মলিনতার কুৎসিৎ মূর্ত্তি পরিগ্রাহ করিব ? এরপে যদি দিন যার ভবে আর আমাদের আশা ভরদা কি ? হে জননি! ভূমি এবার আমাদিগকে এমন করিয়া দেও বেন আমাদের আর মতিচ্ছন না হর। তোমার স্থসন্তানেরা যে বেশ—যে মনোরম ছবি পাইয়া থাকেন, আমরাও যেন সেই বেশ ও স্থন্দর ছবি প্রাপ্ত হইরা ক্বতার্থ হইতে পারি। উৎসবে যাইরা যদি আমাদের এমন স্থমতি লাভ না হয়, যদি আমরা নবলীবন লাভ করিয়া বিভদ্ধ-প্রকৃতি ও তোমার স্থসন্তানের স্বভাব প্রাপ্ত না হই, তাহা **इहेरन উৎসবের সমস্ত আয়োজনই যে পণ্ড হইরা যাইবে। প্রাভূ** আমাদিগকে স্থমতি দাও। তুমি যাহা প্রদান করিবে, যেন তাহার সমাদর ও মর্য্যাদা করিতে পারি। স্যত্নে তাহা রক্ষা করিয়া আমরা যেন ধন্ত ও কুতার্থ হইতে পারি।

উৎসব-সঙ্গীত।

রাগিণী ভৈরবী—তাল ঝাঁপতাল। নবীন কিরণ পুনঃ হের এ বিশ্বের ঘরে, আসিছে স্থ-উৎসব হরষে বরষ পরে। ৰগতে ফুটছে প্ৰাণ, নীলিমা গাহিছে গান, গাহিছে অমরকুল বিমল আনন্দভরে। यारमञ्ज नवन शांता. ঝরিছে বরষ সারা, নিরাশ মোহের ঘোরে মুমুর্ বাহারা হায়; এদ সবে এস ভাই, সে মহাযজ্ঞেতে যাই, মিটিবে জলস্ত তৃষা স্থামৃত পান ক'রে। कि मन मनीनात्नात्क, छत्तव छेठित्व त्यत्न. 🛪 🌞 नित्रथि প্রাণেশে প্রাণে প্রেমাক্র বহিবে আহা ; विवान याहेरन चूरह, भनिनछ। याद भूरह, ফুটিবে স্বরগ-জ্যোতি সবার আনন পরে। महा विश्व-त्कारण क'रत्र, नित्रचिव विरश्चरत्र, ইছ পর কাল নাঝে ভেদাভেদ নাহি রবে: সম্মূথে জ্যোতির দেশে, উল্লাসে যাইণ ভেগে, লভিব বিরাম শেষে অনস্ত কালের তরে।

मन्भावकीय गस्त्रा।

"উৎস যত উৎসারিত মরুভূমি প্রস্তারে"—ভবতার দৃষ্টাস্ত দিতে হইলেই লোকে মক্তুমির সহিত দৃষ্টাস্ত প্রদান कतिशा थात्क, वरन लाकियात चलत रवन मक्कृमि मनुन, निःका-ইলেও বারিবিন্দু নিংস্ত হর না। কঠোরতা ও কাঠিছের দুটান্ত मिट्ड हहेरनहे लाटक श्रन्थतत्रत्र महिन्न जूनना निवा शास्क, बरन লোকটার প্রাণ যেন প্রস্তরের মত কঠিন। বাস্তবিক মক্ট্রমি ও প্রের ইহাদের বাহ্নিক দুখাও বেমন কর্কণ ভিতরকার দৃশ্রও ভক্রপ। দেখিতে যাইয়া চকু কেবলই বিরক্ত হয়। কিন্তু আশ্চর্য্যের ব্যাপার এই যে এই ওক মঙ্গভূমি এবং প্রস্তরদেহ ভেদ করিয়া বাদুশ বাদরাশি নির্গত হইরাছে এবং হইতেছে আর কোথারও হইতে সেরপ হইতেছে না। পৃথিবীর প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ নদী যাহাদিগের পরাক্রম সমতল ভূমিতে বিশেষ व्यवन । याहामिरशंत डेक्ट्रिंगड बनतानि शृथिवीत व्यत्रःश व्यानि-পুঞ্জের আহারীয় প্রস্তুতের সাহায্য করিতেছে, যাহাদিগের প্রভূত হলরাশি অসংখ্য প্রাণিপুঞ্জের পিপাদার শাস্তি করিছেছে, সেই সকল নদীর জল কোথা হইতে আসিতেছে ? প্রায় সমন্ত নদীরই উৎপত্তি স্থান কি উন্নত পর্বতে নহে ? সমভূমি হইতে কর্মটা নদী নির্গত হইয়াছে? পৃথিবীর যাবভীর উৎস-পুঞ্জ কি পর্বতের কঠিন দেহ ও মরুভূমির ওক বালুকারাশি ভেদ করিয়া নির্গত হইতেছে না ? স্থতরাং আমাদের মধ্যে যে কেহ ওম্ব অন্তর থাকি না কেন, তাহাদের নিরাশ হইবার কোন হেতু নাই। পার্থিব জগতে বেমন ওম্ব মকুভূমি ও কঠিন প্রস্তর জেদ করিয়া উৎস সকল নির্গত হইতেছে, আধ্যাত্মিক ব্লগতে কি দে দুষ্টাস্ক আমরা দেখি নাই বা দেখিতেছি না অথবা দেখিবার আশা নাই ৷ অন্তক্ষা প্রমেশ্বর প্রতিনিয়ত এই অনুত কর্ম করিতেছেন। মানুষ যাহা অসম্ভব মনে করিতেছে তিনি তাহাই সম্ভব করিতেছেন। মামুষ নিজের ওছতা ও কঠোর-তার দিকে তাকাইয়া ভাবিতেছে আমার আর আশা ভরসা कि ? आगात्र मिन असिन छारवहे वाहरव। माश्य आरन मा যে পরমেশ্বর চিরদিন এই ক্রিয়া ক্রিডেছেন। ডিনি কবির মুণ দ্বিয়া বাহির করিতেছেন "উৎস যত উৎসারিত मक्किम প্রস্তরে"। युधु वनाইতেছেন না, कि वश्चिश्राफ কি অন্তর্জগতে প্রতিনিয়ত এই কাও ঘটাইতেছেন। মাছব মনে করে মরুভূমি ওছ, তাহাতে আবার জল কোণা হইতে আসিবে। মানুষ মনে করে প্রস্তর যেরূপ কঠিন ও কর্কণ তাহার ভিতর হইতে আবার কি করিয়া ক্লবিন্দু নিঃস্ত হইবে; किस ताथ हकूत मनारथ कि चिटिएए। क्छ नहीं, क्छ छैरम, কত ললপ্রোত নিরম্ভর উচ্চ পর্বাতদেহ বিদীর্ণ করিয়া বাহিলে আসিতেছে। অন্তর্জগতে কি এ দৃষ্টান্ত নাই ? যে ছই দিন পুর্বে পাষাপ্রৎ কঠোর জ্বয়ে নরনারীর উপর দার্যণ অভ্যাচার করিয়া বেড়াইতেছিল, সে कि ছই দিন পরে কোথায়ও সভ্দয়ভার সহিত নরনারীর সেবায় নিযুক্ত হইতেছে না ? নিঠুরতা যাহার देवनिक्त वावशाय दिन ति क्यांकीनकात्र फेक्टिनिश्दत गाहेत्करह

লা 🕈 এরণ দুৱাক্ত ভ বিষ্ণুক্ত বেখা গিরাছে এবং চির্বিদ বেখা ধাইবে। ভবে আর কেন লান-মুখে বলিয়া আছ ? কেন প্রাণে সরস ভাবের অভাব দেখিয়া আশার মূল ছিল 🐃 ছিলা ফেণিতেছ ? নিরাশা এ লাজের জনা নর। আশাই सायात्त्र व्यवनयन। हिन्नमिन मनिन शक्तियात सञ्च त्कर वधारन बन्नश्रहन करत्र नारे। वित्रिमिन नित्रांभव्यार्ग এ পথ হইতে দীৰ্ঘধান পরিত্যাগের সহিত কাহাকেও প্রত্যাবৃত্ত হইছে হয় নাই, হইবেও না। আশার সহিত অপেক। ক্ষিতে হইবে। আমরা বেন সর্ক্রাই মনে রাখিতে পারি "উৎস বত উৎসারিত মরুভূমি প্রস্তরে।" কতই বা আমাদের প্রাণের কাঠিত ? অসীম প্রতাপাধিত অত্তকর্মা পরমেধরের পক্ষে আহাদের মত কঠোর ও শুক্রদরকে বিগলিত করা কিছুই ক্টিন বা আশ্চর্য্যের কার্য্য নহে। আমাদের কাল তাঁহার बादा इछ। पित्रा পफ़िता थाका, जामारमत काव छाहात मुधा-শেকী হইরা অপেকা করা। কোন খভ মৃহুর্তে তাঁহার দরা আমাদিগকে উদ্ধার করিতে আসিবে, তার্ছা কি আনি ? তাহা यथन बानि ना এवर यथन निक्तत्र कानि किनि आधारिशटक উদ্ধার করিবেনই, তখন আর নির্ভরসা হইব কেন ? আমাণের কর্ত্তব্য ডাকা, ভাছা ক্রিভে থাকি। দুঢ়সম্ম হট্যা ভাঁছার बाद्य याहे. जामादम्ब मदनायांका भून इहेदवहे इहेदव।

ঈশ্বরের সর্ব্যক্তত্ব, এবং মানবের স্বাধীনভার মধ্যে কোনরূপ সামঞ্জ আছে কি না, এসছদ্ধে বার বার লোকের মনে প্রশ্ন উপস্থিত হইরা থাকে। সম্রাতি এই প্রানের মীমাংসা করিবার ক্স আমরা একথানি পত্র পাইয়াছি। মানবের খাধীনতা অস্ত্রীকৃত হইলে সে তাহার কোন কার্য্যের জন্তই দায়ী হয় না। পাপপুণোর প্রভেদ বেশী কিছু থাকে না। আবার অফুদিকে ঈশ্বরের সর্ব্বজ্ঞত্ব অস্থীকার করিবার উপায় নাই। তিনি नक्नरे अवगंत आह्मन, आमात सीवतन कथन कि पंटित जारा ভিনি পূর্ব হইভেই জানিরা রাধিরাছেন। তিনি যাহা জানিয়া রাধিরাছেন, ভাহা ঘটিবেই আমার শত চেটাও দে বিষয়ের অভ্যথা করিতে পারিবে না। স্কুতরাং মানবের স্বাধীনতার কোন মূল্য माई विनात किहूरे (मांव रुव मा। अरे आत्रे उउत पिवाब জন্ত অনেকে প্রয়াস পাইয়াছেন এবং নানাপ্রকারে এই কথা বুঝাইবার জল্প চেষ্টা করিরাছেন। কিন্তু লোকের সন্দেহ কিছুতেই খুচিতেছে না। খুরিয়া ফিরিয়া সেই একই প্রশ্ন বার উপন্থিত। হুইভেছে। স্থভরাং এই প্রশ্নের উত্তর দিতে চেষ্টা করা একরূপ পশুসন বলিলেও অভাক্তি হর না। কিন্তু এই প্রশ্নের মীমাংশা না হইলে কি মানৰজীবনের কর্ত্তব্যসাধনে কোনরূপ ব্যাঘাত ঘটিরা থাকে ? ঈশব যে সর্বজ্ঞ তিনি আমার জীবনে কথন কি ঘটাবে, তিনি যে তাহা নিশ্চয়ই জানেন তাহাতে কোন সলেহ নাই। কিন্তু তাহাতে আমার কার্য্যের অক্স দায়িছের পরিমাণ किह्रहे क्यित्छाह ना। कातन मेचत आभात नहत्क यांका जातन, তাহা যদি আমিও স্থামিতাম এবং তাহার অস্থপা করিবার শক্তি আबात ना थाकिए, उत्रहे धकथा वना मख्य हहेछ (य आयात কার্য্যের জন্ত আমি দারী নই। আমার শক্তি ও সদস্ব

বিবেচনাত্মপারে ধর্মন কার্য্য করিবার উপার নাই, তথন আমি সে নিমিত্ত লালী হটৰ কেন ? কিছ বখনট আমরা কোন কার্য্য করি সে সহজে ঈশ্বর কি কানিয়া রাখিয়াছেন, ভাহা আমরা বেমন জানি না,তেমনই কার্য্য করিবার সমর এইরূপ ভাবিও না যে দ্বীর বধন এক্কপ জানিয়া রাখিয়াছেন, তখন জার কিরুপে তাহার অক্তথা করিব। কিন্তু কার্য্য করিবার সময় সম্পূর্ণরূপে আমার কর্ত্তব্যজ্ঞান ও সদসৎ বিবেচনা ছারা চালিত হইরাই কার্য্য করি। ছত্রাং আমার কার্য্যাকার্য্যের জন্ধ আমি সম্পূর্ণরূপে षाती। **सेषत्र मर्सस्य इटेब्राफ यथन जा**मापिशस्य **जस्य क**तिया वाशिगारहन, व्यामारमय ভবিষ্যৎ সম্বন্ধ আমরা যথন কিছুই জানি ना अरः कार्य कतिनात नमत्र जामारमत निक विरवक बाढाहे চালিত হই, তথন ঈখরের দর্মজন্ব হইতে আমার কার্য্যের দারিত কিছুই হাস হইতেছে না। এই নিমিত্তই আমারের **অকার্য্যের জন্ত আমাদের প্রাণে আত্ময়ানি আসিরা গাকে এবং সৎ-**কার্য্যের জন্ত প্রাণে আত্মপ্রসাদ উপন্থিত হইরা থাকে। স্বভরাং উক্ত প্রশ্নের পরিষ্কার মীমাংসা না হইলেও মানবের কার্ব্য করিবার কোন ব্যাঘাত ঘটেনা এবং তাহার স্বাধীনতারও ব্যাঘাত হয়

সম্পাদকীয় ও প্রাপ্ত প্রবন্ধ।

বাাকুলতা।

"আর চলেনা, চলেনা, চলেনা, জননি ! ভোমা বিনা দিন আর চলেনা।"

উপরে যে সংগীতাংশ উদ্ধৃত করাগেল, এরপ উল্কি করা কাহার পক্ষে সম্ভবে ? সংসারে ত এমন ঘটনার দৃষ্টান্ত দেখা যায় নাবে অবস্থায় এমন উক্তি সম্ভবে ? একমাত্র পুত্র যাহার উপর মাতা পিতার সমস্ত আশা ভর্মা সংস্থাপিত ছিল, বাহার জীবনের উপর তাঁহাদের পাথিব সকল প্রকার স্থুখ শান্তি নির্ভর করিতেছিল, অন্ধের ষ্টির স্থায় একমাত্র অবলয়ন এমন পুত্র ধনকে ইহ সংসার হইতে বিদার দিরা পিতা মাতার অসহ যাতনা হইলেও তাঁহাদের পক্ষে দিন চলেমা এমন অবস্থা হয় না। তাঁহাদের দিন কটের সহিত হইলেও চলিয়া যায়, অন্তর্ত্তিম প্রেমজাত বিমল স্থাধের মধ্যে যে দম্পতির বাস. পরস্পরের বিচ্ছেদ যাহাদের বিষম যাতনার কারণ, এমন যে मन्निक जाहारमञ्ज मर्थाश्व यमि अक खनरक हाताहरू हम, त्या-वसन दिश्र क्रिया यनि এक जन आत्र এक जन्तर निक्छे हित-বিলায় প্রহণ করে, দে বাতনা বডই তার হউক না কেন, এমন হয় নাবে তাহাদের দিন আরে চলে না। বছুর সভিভা বছুর विष्कृष প্रकृष्ठि मःमात्त्रत्र यक व्यकात पनिष्ठे मन्मर्क चाह्,काहात क्लान ऋलाई धमन घडना घडिटा एमधा यात्र मा, त्य जात्र मिन हरनना । दिन हरनेना अक्था दक वित्रिक शास्त्र १ अश्मारत एक মুমিষ্ট ও প্রিরতম সম্বন্ধ আছে তাহার এক একটা করিয়া পুজি-**रमंख अपन मुद्देशिक भी अग्रा गोहेर्द मा या आरक्त्र विस्कृत्म अ**भरव त দিন চলিল না। কিন্তু বাস্তবিক্ট দিন চলেনা, এমন অবহা ঈখর বিরহে ব্যাকুল আত্মায় উপস্থিত হয়। বেখানে অক্তরিম প্রেম

ও অনুরাগ সঞ্চারিত হইরাছে। বে আত্মার সরলও ঐকাত্তিক ব্যাকুলতার আবির্ভাব আছে, সেই স্থলেই আমরা দেখিতে পাই, অতি সহজ্ব ও স্বাভাবিক ভাবে একথা উপস্থিত হয় যে "চলেনা চলেনা চলেনা জননি ! তোমা বিনা দিন আর চলেনা"। বিখাসীও ব্যাকুলাত্মাদিপের অগ্রগণ্য মহম্মদের জীবনচরিতে তাঁহার ব্যাকু-লতা সম্বন্ধে এই রূপ বর্ণনা আছে ''যথন তাঁহার বয়স ৩৩ বংসর भ्ये त्रमग्र इटेर्ड विस्थव क्षेत्र भाग खित्र इटेग्रा পिड़ ब्रिक्टिन ; সাত বংসর অতীত হইয়া গেল, পূর্ব্বে ছই এক ঘণ্টা ধ্যান করি-তেন এখন দিবা ন্নাত্রি ধ্যান করিয়াও আর তৃপ্তি হর না। ধ্যান ছাড়িয়া আহারে ফুচি হয় না, নিজার সময় পান না—অনাহারে অনিজায় তিনি হুর্জন ও ক্লশ হইয়া গেলেন, নিরাশ হইয়া কত বার আত্মহত্যা করিতে গিরাছেন, কিন্তু থাদিজার সতর্কতার বাসনা পূর্ণ করিতে পারেন নাই। * * * পরমেশ্বরকে না পাইয়া তিনি পাগলের মত হইয়া গেলেন। লোকে তাঁহাকে দিশাহারা উন্মাদ মনে করিয়া গাত্তে ধূলি দিত, শত শত লোক তাঁহার পশ্চাতে জড় হইয়া বিজ্ঞাপ করিত, কি বিষম জালার মহন্দ-দের প্রাণ পাগল তাহা না জানিয়া তাঁহার উপর কত অত্যাচার করিত। মহম্মদের সংসারাতীত প্রাণে মামুষের ঠাট্টা উপহাস ক্থনও কোন ক্লেশ দিতে পারিত না। কিন্তু যার জন্ত পাগল এসংসারে তাহা না পাইয়া খূন্য-প্রাণ পূর্ণ করিবার উপায় না দেথিয়া প্রাণের ক্লেশ ও নিরাশার দংশন আর সহিতে না পারিয়া এক্দিন নিশীধকালে আত্ম-প্রাণ বিসর্জনের জন্ম উত্তুদ পর্বত नुक्र इहेटक नक्क अनाम कतिरलम, अमन नमन शकार इहेटक থাদিজা তাঁহাকে বাছদারা পরিবেষ্টন করিয়া ধরিয়া ফেলিলেন। খজাাঘাতে বিচ্যুত-মুগু ছাগ শিশুর স্তান্ত মহম্মদ যাতনাম ধড় ফড় করিতে লাগিলেন এই যাতনায় কতদিন কত **ধামিনী অ**তি বাহিত হইল''। ভক্তগণের অগ্রগণ্য চৈতন্যের জীবনেও দেখা যায় তিনি কথনও ঈশ্বর বিরহে আকুল হইয়া হাহাকার করিতেছেন, কখন ও রোদন করিতেছেন, কথন অসহ যন্ত্রণায় অন্থির হইয়া গুহের দেওয়ালে মুথ ঘর্ষণ করিতেছেন, কখন ধ্লায় গড়াগড়ি দিতেছেন, তাঁহার ব্যাকুলতার পরিমাণ ক্রমে এমন হইল যে আর এ জীবন রাখা আবশ্রক বোধ করেলেন না, প্রাণ ত্যাগের জন্য সমুদ্র জলে ঝাঁপ দিয়া পড়িলেন। শিষ্যগণ অনেক যত্ত্বে তাহাকে সেবার রক্ষা করিল। এই ছই ব্যাকুলাম্বার আচরণ দারা ইছাই প্রমাণিত হইতেছে যে, তাঁহাদের দিন আর চলিতেছিল না। একবারে অচল অবস্থা হওয়াতে উভয়েই প্রাণত্যাগের জন্য উদ্যত হইরাছিলেন। এরপ ব্যাকুগতা সংসারের নশ্বর পরিবর্ত্তনশীল অকিঞ্চিৎকর বস্তুর জন্য হওয়া সম্ভবে না। প্রিয়তম পরমেশবের বিরহে তাঁছার ভক্তের প্রাণে যে যাতনা উপস্থিত হয়, তাহার তুলনা নাই। একমাত্র সেই জীবনেই একথা উপস্থিত হয় এবং তাঁহার পক্ষেই এরপ উক্তিকরা সাজে যে "আর চলেনা চলেনা চলেনা জননি! टामा विना निन आंत्र हरन ना।" उँशिए त निन हरन ना বলিয়াই পাগলের মত ছাহাকার করিয়া বেড়ান, লোক-নিন্দা বা সংসারের কোন অপমান কিয়া কতি তাহাদের প্রাণে গণনার স্থলে আনে না। তাঁহারা ঈশ্বর বিরহিত প্রাণ রাখা

প্রার্থনীয় মনে করেন না। বাস্তবিক এরণ ব্যাকুলভা যাহাদের প্রাণে উপস্থিত হয় তাঁহাদেরই পক্ষে ঈশ্বর লাভ ষ্ট্ররা উঠে। অন্যের পক্ষে তাঁহাকে পাওয়া কভদূর সম্ভবপর (क कारन। योशांपात थीन अक्रम वाक्न स्क्र मा, य छोशांत्र অভাবে প্রাণের মারা পরিত্যাগ করিতে পারে না, ভাহাদের পক্ষে উক্তরূপ গান করা কি উচিত 🎙 ভবে আমরা কেন এরপ গান করি ? আমাদের প্রাণ সেই প্রীণেশবের कना कि त्मक्रभ गाकून ? त्महे गाकूनजोत्र क्या वनिष्डिह नी যে ব্যাকুলতা হুই ফোটা চক্ষের জল পড়িলেই নির্বাণ প্রাপ্ত হয়, সেই ব্যাকুলতার কথা বলিতেছি না যাহা একটা প্রার্থনা বা ২৷১ ঘণ্টার উপাসনাতেই শেষ হয়, অথবা ২৷১ **ঘণ্টা সংগ্রাস** বা मःकीर्डरनरे रमय रम, এরপ ব্যাকৃষতা আমাদের মধ্যে অনেকের থাকিতে পারে। কিন্তু সেই ব্যাকুলতার কথা বলিভেছি, যাহা উপস্থিত হইলে প্রাণের মায়া কাটাইতে প্রবৃদ্ধি হয়, বাহা উপ-স্থিত হইলে সংসারে ঈশর বিরহিত দেহ ধারণ করিয়া থাকাকে অসার মাংস্পিণ্ড বহনের হেতু ও কটের কারণ বলিয়া মনে হয় এবং সেরূপ ভার বহন করিতে আর প্রবৃত্তি হয় না। এরূপ ব্যাকুগতা আমাদের নাই স্থতরাং আমাদের মুথ হইতে উক্তরণ সংগীত বাহির হওয়া কি শোভা পায় ?

ভক্ত ওপ্রেমিকের প্রাণে যে ব্যাকুলতা উপস্থিত হয়, আমা-দের ত তাহার অভাব আছেই, তাহার পরিবর্ত্তে বরং আমা-দের প্রাণে বিপরীত ভাবই প্রবল আছে। ভক্তগণ ধ্যানধারণা পরিত্যাগ করিয়া নিজিত হওয়াকে কটের হেডু বলিয়ামনে করেন, আমরা উপাদনা বা সংগ্রাদকের অনুরোধে একটু নিল্লার ব্যাঘাত হইলে কণ্টাত্মভব করি। তাঁহারা সংসারের বিলাস ও হুখদেব্য বন্তু সমৃহে পরিবেষ্টিত থাকাকে কটের কারণ বলিয়া। মনে করেন, আমরা তাহার অভাবে বিষম অস্থ্য অস্থবিধা হইল বলিয়া মনে করি। ভক্তগণ পৃথিবীর প্রশংসা ও সম্মান লাভকে আপনার বিষম অনিষ্টকর জানিয়া তাহা হইতে দূরে থাকিবার জন্ম বাাকুল হন, অতি নিৰ্জনে নিভৃত প্ৰদেশে আপন অভীট দেবতার ধ্যান ধারণায় সময় যাপন করিতে ব্যাকুল ছন, আর আমরা সামান্যরূপ সংকার্য্য করিয়া অন্যে তাহা জানিবার পূর্বেই নিজে ঢকানিনাদে তাহা জগতে ঘোষণা করিতে থাকি। ৰান্তবিক ঈৰ্যনের জন্ম ব্যাকুগলামার প্রাণে স্বভাবত: যে সক্ষ লকণ আপনা হইতে উপস্থিত হয়, আমাদের প্রাণে ভাহার সমা-বেশ ত দেখিতেই পাই না, তাহার পরিবর্দ্তে অক্ত ভাবই দেখিতে পাই। কিন্তু সেই ব্যাকুলভাই আমাদের পাইতে হইবে, যাহা পাইলে ঈचत्र-वित्रहरक अत्रहा याखनात कात्रग मन्न हहेरत। যাহা পাইলে তাহার বিচ্ছেদযুক্ত প্রাণ ধারণে অপ্রবৃত্তি জয়িবে, প্রাণের প্রতি আপনাপনি ধিভার উপস্থিত হইবে, বিষয় ভোগেয় সহিত থাকাকে কটের ও অভৃত্তির হেড়ু বলিয়া মনে হইবে। কারণ এরপ ব্যাকুল না হইলে, ভাঁহাকে পাওয়া সম্ভপর নছে। व्ययन मृहोस्त काथान नाहे त्य धर्मनीयन मास वा नेचत मास ঘটিন অথচ তাঁহার জন্ত তেমন আকুনতা তেমন আগ্রহ ছিল ন।। ধর্ম জীবন পাইতে হইলেই এক্ষপ ব্যাকুলতা থাক। আবস্তক। বাাকুল প্রাণের প্রার্থনাই আত্মাকে সেই প্রাণারাঃ

भत्रत्यश्चित्र गरिक विभिक्त कवित्रा त्या। यति अदे ध्यकात्र ব্যাকুণতা ভিন্ন ধর্মজীবন লাভ করা অসম্ভব ব্যাপার হয়, বদি क्रेबंब मास्क्रिय भरक चाना ना शास्क्र, छाहा हहेरम चामास्त्र केशानीनका वा बक्धा क क्थनरे अभिक्रमीत्र नत्र ? कांत्र धर्न-জীবন লাভ কিছু এব্ধপ একটা লাভের ব্যাপার নর—ঈশর লাভ কিছু এমন ব্যাপার নয় বে তাহা সংসারের আর দশটী তুথসেব্য वश्व नार्छत्र भारेरन छान इत्र ना भारेरन ३ हरन। स्थेत লাক ও ধর্মজীবন লাভ বদি পৃথিবীর আরাম ও বিপ্রামের জভ व्यक्त प्रभेति शार्थिव वक्त नाएउव स्नाव ना इव उदव धविवदव जामा-দের এত ওদাসীয় কেন ? আমরা পৃথিবীর হুখ-সেব্য বস্তু যাহা পাইলে ভাল হয়, না পাইলেও চলে, ভাহায় প্রতিও ড এমন উদাসীন হই না। দিন রাত মাথার বাম পারে কেলিরা जायहा ज्ञातह ज्यावीशार्कन वा ज्ञाहरू मधान ज्ञाहरून वना বে পরিশ্রম করি, তাহার ভূলনার বদি অতি সামান্য পরিমাণেও धर्माबीयन नारसद बना वाक्न रहेलाम, खादा रहेरन ९ अमन অবস্থার আরু দিন কাটাইতে হুইত না। তাই। হুইলে ধর্মাচরণ कतिवाद सना, सेचरवत नाम कीर्तन अवराग्य सना, छाशांत शृका অর্কনার জন্য আর এত অজুরোধও করিতে হইত না। উপ-দেশের পর উপদেশের ত্রোত আমাদের উপর দিয়া বছির। বাইতেছে, প্রস্তর-দেহের উপর প্রচুর বারিধারা বর্ষিত হইলেও বেমন ভাহার গাত্র বহিরাই নিয়ে চলিরা যার, কিন্তু অন্তরে প্রবৃষ্ট হয় না, তেমনি এই উপদেশের প্রোত বেন আমাদের উপর দিয়াই বহিয়া যাইতেছে, ভিতরে প্রবিট হইয়া আমাদের অসাড় প্রাণের অড়তা কিছুতেই নিবৃত্ত করিতে সক্ষম ছইতেছে না। অথচ আমরা ধর্মরাজ্যে বিচরণ করিতেছি বলিয়া মনে করি-তেছি। এক্লপ মনে করিয়া আয়ু-সাম্বনা লাভ করিতে আমাদের মনে কোন সংখাচ নাই। এভাবে জীবন চলা আর না চলায় প্রভেষ কি ? আমাদের যে জীবন তাহার সহিত নিজীবতার প্রভেদ অতি দামান্য। এরপ জীবন লইরা আমরা যে সম্ভষ্ট আছি, **जाहा हहेट उहाहे अ**मानिङ हय, त्य आगता बीवटनत चान পाहे नाहै। धर्मजीवन नाज कता अकिंग कथात कथात मर्था हहेगा পড়িয়াছে। বাস্তবিক সেরপ জীবন লাভ যে সম্ভব বা লাভ করা বে আবশ্যক আমাদের বর্ত্তমান জীবন দেখিরা ভাহাও বৃঝি-বার স্থবিধা হয় না। আমরা উৎসব করিবার জন্য আয়োজন ক্রিতেভি, কিন্তু স্ক্রাণেকা এই আরোজনই গুরুতরও অতি প্রাঞ্নীর। এই ব্যাকুলতার আবোলন ঘাহার আছে, সে ব্যক্তিই উৎসব ক্ষেত্রে ঘাইরা প্রাণেখরের সহিত সাক্ষাৎ লাভ ক্রিয়া কুতার্থ হইবে। সেই জীবনই চরিতার্থতা লাভ করিয়া ধন্য ও সুধী হইতে সমর্থ। অন্যের পক্ষে উৎসবে গমন আমোদ প্রমোদ সম্ভোগ ভিন্ন আর কিছুই নহে। তাহাদের শরীর উৎসব ক্ষেত্রে পজিয়া থাকিবে। কিন্ত প্রাণ উৎসবের সেই মাধুর্যা লাভ ক্রিতে পারে না,বাাকুলাত্মাগণ প্রাণারামের সহিত সংবোগে যাহা প্রাপ্ত হন। স্বতরাং আমরা বাহাতে ব্যাকুণ প্রাণে উংসবে बाइएक भाति, छोहात्र, सना छेलाांगी रहे।

প্রকৃত বৈরাগী কে ?

যাহার সংসারাসক্তি সম্পূর্ণরূপে নির্বাণিত হইবাছে, সেই थङ्ग देवतानी। अथन अहे थान्न विकामा कता बहिएक भारतन সংসার বাহিরে কি ভিতরে ? জগতের অধিকাংশ লোক মনে 🔭 करत्र मश्मात्र वाहिरत्र। पिया च्यानिका, मत्नात्रम छेगान, यनि मूका थिछ बालभारे, असूत कूक्म महन वांतक वांतिका नन्दर সুশোভিত সুস্তুর পরিবার, কার্ব্যক্ষেত্রের ঝঝাট বছবাপী বাণিজ্যের কোলাহল, ধর্মাধিকরণের চাকচিকা, বিদ্যালয়ের গন্তীর কুল্রব, ভাহাদের মতে সংগারের উপাদান। সংগারত্বপ ষহাক্ষেত্রের বিরাট দেহ এই সমস্ত উপাদানে গঠিত। এই সংকারের বশবর্ত্তী হইরা ভারতীর এবিগণ খনবাসী হইরা তপ জপ ক্রিভেন। পর্বতের জনমানব শূন্য গহররে প্রবেশ ক্রিয়া ভগ্ৰচিতাৰ নিমন্ন হইতেন, আজিও অনেক ভগ্ৰভক নিরাশার গভীর কুপে নিমগ্র হইরা নির্জন বনভূভাগ অবেবণ করিরা বেড়াইতেছেন। কিন্তু এই সংস্থার নিতান্ত ভ্রান্ত বিদয়া বোধ হর। প্রক্লত সংসার বাহিরে নর। একবার বহির্দুধীন দৃষ্টি শক্তির গতির দিক পরিবর্ত্তন করিরা বদি অন্তরের দিকে প্রবা-হিত করা যায়, তাহা হইলে দেখা যার অস্তরেই বিরাট সংসার। সেই খানেই ভোগ্য বন্ধর প্রকাণ্ড বাজার, বিলাসিচার রমা वस्त नम्ट्र नमिक स्थाममानि । এই सन्त नर्स जाती सहा जिन-ধারী বনবাসী সন্যাদীরও অনিত্যাসক্তি দৃটিগোচর হইয়া থাকে। সন্যাসী বাহিরের সংসার পরিত্যাগ করিয়াছেন। সর্বসাধারণ লোক যাহাকে সংসার আখ্যায়িকা প্রদান করিরা সাধন পথের অন্তরায় মনে করিতেছে, তিনি তাহার হস্ত হইতে নিছতি পাইয়াছেন, কিন্ত তাঁহার অস্তরের সংসার ভाক्त नारे। अथारन वानित्कात कनत्रव स्थारन धर्माधिकवरनत्र नीना (भना, मिथारन दिवरव्रत श्रका । मूर्वि, मिथारन दिन कृषात চকমকি সকলই রহিরাছে। তাহার প্রেম দেশাধারে অবস্থিত পদার্থ সমূহ ছাড়িয়া এখন মানসিক রাজ্যের ভাব রাশির উপর পড়িয়াছে। সাকার ছাড়িয়া এখন নিরাকারে মগ্প হইয়াছে। অন্তরে সংসার বন্ধার রাথিয়া কে বৈরাগী হইবে ? এখানকার সংসার বিশ্বতির অতল জলে ডুবাইতেনা পারিলে প্রকৃত देवतांशी र अग्रा यांच मां। आमता मानव मखनीत निक्छे देवतांशी সাজিয়া ভাহাদিগকে প্রবঞ্চিত করিতে পারি। কিন্ত সর্বদশী অন্তর্যামী পরম ব্রহ্মের নিকট আমরা বৈরাগী হইতে পারিব ना। সর্বাদশী পরম ত্রজের নিকট বৈরাগী হইতে হইলে আমা-দের অন্তরকে সংসার বিবর্জিত করিতে হইবে। আপনাকে পরীকা করিয়া দেখিয়াছি, সংসার এখনও সম্পূর্ণ নিরাক্ত হর নাই। পরিমিত কোন কোন পদার্থ প্রাণের পুতুলি হইরা তথার বিরাজ করিতেছে। কবে এই মোহ নিজা ভাঙ্গিবে জ্বানি না। কবে আমাদের জ্বর ধর সংসার শ্ন্য হইরা একে পরিপূর্ণ হইবে জানি না। পর্কোপলকে ভারতবর্ষীয় জনক জননী সস্তান দিগকে কুন্দর কুন্দর নব নব পরিচছদে সচ্চিত कतिता एनन । जामाएनत उरमव जामिएउए, जामता कि छार्थमा করিব। বলিব পিতালো আমরা বেশ ভূষা চাই না। আমা-

দিগকে প্রকৃত বৈরাগী সাক্ষাইরাদাও। আমরা মনিন বসন পরিত্যাগ করিরা কটাক্ট্রারা মন্তক পরিবৃত করিরা, শান্তিপ্রদ তব দত্ত পরিবার পরিত্যাগ করিরা বৈরাগী সাজিতে চাহি না। আমাদিগকে স্বার্থতাগী বৈরাগী করিরা দেও, আমাদের অন্তর হইতে আসক্তির প্রতৃত চূর্ণ বিচূর্ণ করিরা আমাদিগকে প্রকৃত বৈরাগ্যের মন্ত্রে দীকিত কর। আমরা আত্মন্থ অবেরণ করিরা অকর্মণ্য হইরা পড়িরাছি। আমাদের রক্ত শীতণ এবং মাংস-পেশী শিথিল এবং সায়ু-স্ত্র অবসর হইরা পড়িরাছে। আমরা কঠোর বৈরাগ্য শান্ত অধ্যয়ন করিতে পারিতেছি না। প্রেডু! আশীর্কাদ কর উৎসবে যেন আমরা বৈরাগ্যের নবজীজন লাভ করিতে পারি।

সাধারণ ত্রাহ্মসমাজের কার্য্যনির্বাহক সভার ৪র্থ তৈরুমাসিক ১৮৮৯ কার্য্যবিবরণ।

বিগত তিন মাস নিম্নলিখিতভাবে কার্য্যনির্বাহক সভা কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন। এই তিন মাসে উক্ত সভার ১০টা সাধা-রণ ও ৩টা বিশেষ অধিবেশন হইয়াছিল।

বাগে আঁচিড়া স্কুল—এই ক্লের কাল নির্মিতভাবে চলিতেছে। বাবু অংগারনাথ মুখোপাধ্যার বহাশর এখন নিজেই সমস্ত অধ্যাপনার ভার গ্রহণ করিবাছেন। এই কুলটা এখন আৰু বালক বালিকাদের জন্তই চালিত হইতেছে। নানা কারণে এইরূপ ভাবে কার্য্য চালান বাঞ্নীর বোধ হইতেছে।

খাসিয়া মিশন—বাবু নীলমণি চক্রবর্ত্তী এই মিশনের সমস্ত ভার লইয়া কার্য্য করিতেছেন। থাসিয়া পাহাড়ের নানা হানে ভ্রমণ করিয়া,তিনি প্রচার করিতেছেন। প্রথমে এই পার্ব্যত্তর প্রদেশে মৌথারে একটা রাজসমান্ত ছিল। ইতিমধ্যে আর তিনটি নুতন সমান্ত নংছাণিত হইয়াছে। পূর্ব্য হইতে খ্টান মিশনারিয়াও এখানে অনেক কান্ত করিতেছেন। এ কন্ত সমরে সমরে তাহালের সহিত বিচার করিতে হয়। অনেক খাসিয়া পূর্বেই খ্টগর্মে দীক্ষিত হইয়াছেন। এখন তাহাদের মধ্যে অনেকের মন ব্যাক্ষধর্মের দিকে আরুই হইয়াছে। এক ক্ষম খাসিয়া ব্রক ব্যাক্ষণমান্ত প্রচার করিতে মন্ত করিয়াছেন। সাধারণ ব্যাক্ষসমান্ত সম্প্রতি থাসিয়া ভাষায় হইখানি পৃত্তক বাহির করিয়াছেন।

বাবু অঘোরনাথ মুখে।পাধ্যার—এই তিন মাস বাগকাঁচড়ার থাকিয়া কার্যা করিতেছেন। একভাবেই তাঁহার কার্যা চলিতেছে। তজ্জ্ঞ তাহার বিশেষ বিবরণ দিবার আবশুক্তা নাই। তাঁহার নির্মিত কার্যোর বিবরণ এইরূপ—

রবিবার ব্যতীত প্রতিদিন প্রান্তে উপাসনালরে করেকটি ব্রাহ্ম, জান্মিকা ও বালক বালিকা লইয়া উপাসনা করিরাছেন। তৎপর অন্ধ গ্রামত্ব সমাজে উপাসনা করিয়াছেন (অর্থাৎ শহরপুর, কুল-বেড়িয়া ও বাগুড়ী) রবিরার ব্যতীত উক্তরূপ উপাসনাত্তে সন্ধ্যা পর্যাপ্ত বিদ্যালয়ে শিক্কতা করিরাছেন। অন্ধ গ্রামের উপাসনা দিনে পদ্যার সময় তথাকার জান্মিকাসমাকে উপাসনা করিবাছেন। সন্ধ্যার উপাসনাত্তে ছাত্র ছাত্রীদিগের পাঠান্ডাবের সন্থারতা করিয়াছেন। বাগুড়ী ব্রাহ্মসমাকে কিছুদিন হুইড়ে

আতে উপাসনা না করিরা অপরাহে ব্রাক্ষিকালণ ও ছাত্র ছাত্রীপশ সইরা বাইরা উপাসনা করিরাছেন। রবিবার প্রাচ্চে প্রাক্ষ্
ব্রাক্ষিকা ও বালক বালিকারণকৈ লইরা সমাজের উপাসনা
করিরাছেন। সংকীর্ত্তন করিতে করিতে বাজারে বাইরা ভ্রথার
বজ্তা ও প্রার্থনা করিরাছেন। তৎপর প্রবার নাম সংকীর্ত্তন
করিতে করিতে উপাসনালয়ে আসিরা উপাসনা এবং পুরুক
পাঠ করিরাছেন। পরীর অভ্রন্থ থাকার এবং অভ্রান্ত কোন
কারণ বশতঃ শহরপুর, কুলবেডিরা ও বাঙ্টী প্রামত্তরের মধ্যে
কোন প্রামে একদিন কোন প্রামে ছই দিন সামাজিক উপাসনা
তিনি করিতে পারেন নাই। উলিধিত নির্মিত কার্য্য ব্যক্তীত
ক্রেক্টী প্রান্ধ ও দীকার উপাসনার কাল করিরাছেন।

বাবু নবধীপচক্ৰ দাস-গত তিন মাগে ভিনি বে দাৰ করিরাছেন তাহার শংকিপ্ত বিবরণ এই। ভাগলপুর সমাজে এবং বছুদের গৃহে উপাসনাদি করেন। তৎপরে তথা হইতে মুক্লেরে যান। এবারে ২।৩ দিন মুঙ্গেরে ছিলেন। ভাষাতে সমাজে উপদেশ হর এবং একটা বন্ধুর পরিবারেও উপাসনালি ছইয়াছিল। মুলের হইতে গন্না যান। এখানে প্রান্ন ৩ সপ্তাহের অধিক ছিলেন এ সময়ে এখানকার সমাজে উপাসনা উপদেশাদি হর, বভুদের পরি-বারে পরিবারে উপদেশাদি হয়, প্রায় প্রতিদিনই কোন না কোন পরিবারে উপাসনাদি হইরাছে। একদিন বিশেষরূপে একটা মহিলার যত্নে ওাঁহার গৃহে সমস্ত প্রাদ্ধ পরিবার এবং ব্রাদ্ধ বৃদ্ধ-গণ একত্রিত হইয়া সমস্ত দিন উপাসনা উপদেশ পাঠ কীর্ক্তরাদিতে যাপিত হইরাছিল। এইবার পদা থাকাকালীন একবার বৃদ্ধগরা नामक शास्त करवक्षी वसूत्र महत्र डेशामना डेशरहन ७ सारता-চনাতে কাটান হইয়াছিল। গয়া হইতে বাকিপুরে যান। এখানে ২।১ দিন থাকিয়া আর যান। বাঁকাপুরে কথাবার্তা ভিন্ন আঞ कांक इत्र मा। आताएक एवं कत्रविन हित्तन ध्वात्र ध्वकिविनहें উপাসনা উপদেশ আলোচনাদি ছইয়াছিল। আরা ছইতে পুনরার বাকীপুরে আসেন। এবার এখানে প্রায় ১৫ দিন ছিলেন। পারি-বারিক উপাসনা এবং আলোচনা ও দেখাসাকাৎ ভিন্ন অন্ত কাল हव नारे। এ**शान हरेट** उपाकामात्र शयन करतन अशास नकी उ এবং প্রার্থনাদি হয়। মোকামা হইতে বৈদ্যনাথে আসেন। এখানে একদিন থাকিরা বুড়াই পাহাড়ে বন্ধদের সঙ্গে যান। এवः यसुरमञ्ज नात्र छेनानमानि इत्र । छश्यत्र भूनदात्र देवसंज्ञारः আসেন। এখানে উপাসনাদি হয়। একদিন কুলের ছেলেদিগকে কিছু বলা হয়। প্রক্ষের শ্রীণুত রাজনারারণ বল্প মহাশরের **গুড়ে** বে সামাজিক উপাসনা হয় তাহাতে প্রার্থনাদি হইয়াছিল। टेवलामांग इटेटड नवाकत्व मध्भूतत्र याम अधारम श्रामीत क्छ लाकितिशतक नहेता छेशानमा ७ छेशानमानि इत। क्रवात তিনি ৪।৫ দিন গাকেন। প্রতিদিনই পারিবারিক উপাসনা এবং সন্ধাকালে আলোচনা ও কথাবার্ত্তাদি হইত। পরে গিরিধি গমন করেন এবং গিরিধি ত্রাহ্মসমালের উৎসবে উপাসনা ও উপদেশ হয়। এথান হইতে এক দিন পচৰা গিরাছিলেন। তথার উপাসনা ও উপদেশাণি হয়। আম 🌬 দিন এখানে ছিলেন 🕆 ২৩এ ডিসেম্বর উৎসবের কার্য্য শেব হইলে কলিকাতার কিরিয়া আসিয়াছেন।

বাবু নগেক্সনাথ চট্টোপাধ্যার – ১৭ই কার্ডিক—

বীরামপ্র প্রাক্ত সমাজের উৎসব উপলক্ষে উপাসনা করেন ও
উপলেশ দেন। ১৮ই কার্ডিক—বীরামপুরে 'রাজা রামবোহন
বারের মহন্ত' বিষরে প্রকান্ত বক্তৃতা হয়। ইহা ব্যতীত তাঁহার
ক্রিনিটি কার্যাক্ষেত্রের বাহিরেও কিছু কিছু কাল করিরাছিলেন।
ক্রিন্ত কর্মক সভার নির্দেশ অনুসারে তাহার উরেশ করা হইল
না। এতারের বান্ধ ও অভাভ লোকের সহিত ধর্ম ও সামাজিক
বিশ্বে আলেচনা করিরাছেন। রাজা রামমোহন রাবের জীবন
চরিত পরিবর্জিত ও পরিবর্জিত আকারে প্রকাশ করিবার অভ
বিশেষ-পরিশ্রম করিতে হইরাছে ও হইতেছে। প্রাণ প্রনা
ন্যালেরিরা ক্র ভোগ করাতে প্রচার কার্যের আনেক ব্যাব্যাত
নুইরাছে ও হইতেছে।

পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী-অক্টোবর মাদের প্রারম্ভেই खिनि ध्यान हरेए जारहात यार्जा करतन । " ১২ই आहोतन ভারিবে ভবাকার সমালগতে 'Revolution in Modern India, its bearings and its prospects' বিবন্ধে এক বস্তা করেন। ১৩ই ভারিখে হিন্দিতে উপাসনা করেন এবং ইংরাজীতে উপ-দেশ দেন। ১৪ই ভারিখে বালালাতে "পুর্ব্ব ও পশ্চিমে ধর্ম विश्वन विवास वक्तु का करतन । शास हरे अक मिन शासिवातिक উপাদনা করেন। ১৯ শে অক্টোবর তারিখে ইংরাজীতে 'The great problem in India' বিষয়ে বক্তা করিয়াছিলেন। ২-শে ভারিবে পাঞ্জাব ত্রান্ধ সমাজ্যের উৎসব উপলব্দে প্রাতে বাঙ্গালার देशानना करवन व वाजिएक विस्तिएक देशानना करवन ख উপদেশ দেন। ইংরাজিতে ২১শে তারিথে সংস্কৃত শাস্ত্র ইতত बहम छेक् क क्षित्रा देश्त्रामीएक ग्राथा करतन। २२ ८ कात्रिर्थ Sikha Sabha Hall এ বাখালী ভদ্র লোকদিগের সহিত মিলিত इहेन्नी এক সমিভিতে ব্ৰাহ্মসমাল বিষয়ে আলাপ করেন। ২৩শে তারিবে "The Spirit giveth life" বিবরে বক্তা করেন। ঐ विम श्री अञ्चर्धातः जाहार्यतः कार्याः करतन। २५८न जातिरथ "Religious Life in the West, what does it teach us" বিষয়ে বক্তা করেন। ২৭শে তারিখে প্রাতে উপাসনা করেন, মধ্যাকে শাল্পাঠ এবং ছিলিতে ও ইংরাজিতে ব্যাখ্যা করেন। পরে কাশী গমন করেন ৩০শে তারিথে কাশীতে वाव वामठज भोगिक महानात्वत छवत्न उत्कालामना कात्रन। ত>শে ভারিবে শাস্ত্র পাঠ ও ব্যাখা। করেন। ১লা নভেছর कांतिय वाकानियोगां कृत्व "वक्तान्त वर्तमान गांमाकिक উন্নভিয় ইতিহান" বিবৰে ইংরাজীতে বক্তৃতা করেন। श्रका ভातित्व Carmichael नाहरखतीरक धक्ती हैश्तांकि ৰক্তা করেন। তরা ভারিবে উক্ত স্থানে "Duties and Beaponsibilities of Educated Indians" বিষয়ে বস্তুতা करबम । পরে करकोमগরে গমন করেন । এই ভারিখে বাব विलिल विशामी यस महानदात वाफ़ीट डिलामना, नास भाठ छ बार्गिका करत्रम् । अहे जातित्व Raffian Hall a अवनी देश्ताकी वक्क का करवन । १६ क्रांबिट्य Queen's school o "कांबरड खाठीम ७ परीम" विषय रक्कुका करतम । ५ई कांत्रिए धना-शान राजा करतम । > हे जातित्व अनाहावादन मनारक छैनामना,

भाख बााथा ७ धर्यात्नाहमा हव । नाबात्क क्षिता बोक्रनमाटक 'Ram Mohun Roy, the Pioneer of Indian Reform' fasts है:बाबीट वक्कुण करबन। ३२ई छातित्य वानिका विमानित वात्रानात्र वरकुषा करतन। ১५१ छातिरथ अवस्नभूदत भगन करतन এই স্থানে লছমন প্রসাদ লি তাঁহার সহিত মিলিত হন প্রদিন থাঙোয়াতে গমন করেন। তথার ১৯এ তারিখে"The Brahmo Samaj, its History and its Principles' विवाद ইংরাজীতে একটা বক্ত তা করেন। ২০শে ভারিথে বাঙ্গালাতে উপাসনা ও উপদেশ হর। ২৩শে তারিখে Mhow নামক নগরে প্ৰনাক্ষেন এবং প্ৰীযুক্ত লছমন প্ৰসাদকী হিন্দিতে একটা বক্তৃতা क्तिरा र्जिन राष्ट्रे नगरत है दाजिए कि कू वर्णन। २८८न ভারিশে ইন্যোরে গমন করিয়া State guest রূপে আতার প্রাপ্ত इन । २६८न जातित्व महात्राचात्र Secretary 'S Prime Minister महानवदात गरन गाकार करतन। २५८न छातिर Library Hall a "मुक्ति ও তংসাধনের উপার" বিবরে ইংরাজীতে এক বক্তৃতা হর। ২৮শে তারিখে মহারাজা হোলকারের महिक माकार करतन अवः श्वातःकारण Library Hall अ "Culture and Higher Life" বিষয়ে একটা ইংরাজী বক্তা করেন। ২৯শে ভারিখে ইংরাজীতে একটা বক্তৃতা করেন। ৩-শে উজ্জারনীতে একটা নৃত্য সমাজ প্রতিষ্টিত হয়। ১গা ডিনেশ্বর তারিখে জীবুক লচমন প্রদাদ একটা বক্তা করিলে ভিনিও সেই সম্বন্ধে ইংবাজীতে কিছু বলেন।

8के काञ्चित्व बक्रमास्य गमन सहबम এवर (मधारन Stateguest ज़र्ल अविष्ठि करतन। वानु तकनीमाथ मनीत वाज़ीट উপাদৰা করেন। 🖎 তারিবে তীমুক্ত বছমনপ্রদাদ হিন্দিতে রক্তা করিবে তিনিও ইংরাজীতে কিছু বলেন। ৬ই তারিখে আজ্মীর প্রমন করেন। ৭ই তারিখে স্থানীয বালানী ভদ্রলোকদিপের সহিত জালাপ পরিচয় করেন এবং প্রাতে বাবু চল্লশেখর ঘোষাল মহাশরের বাড়ীতে উপাসন। करतन। ৮ই त्रिवांत आरङ Lala Mulchaud नामक अकडन हिमूबानी फल्रातात्वत्र वाड़ीएड हेश्ताबी । इत्विरूट माञ्च मार्ड ও ব্যাখ্যা করেন। সায়াছে একজন সুসলমান ভদ্রনোকের वाङ्गीरक अक्री देश्ताकी वक्कुका करवन। ३६ काविर्ध वीयुक লছ্মনপ্রসাদ হিলিতে বক্তা করিলে, তিনিও ইংরাদ্রীতে किছু বলেন। ১०ই ভারিখে বালালাতে বক্তৃতা করেন। क्षे मिन ब्रांकिएठ चारुरममावीम शमन करवन। >२हे छातिएथ श्वानीय সমাজের সভাদিগের সহিত আলাপ পরিচর হর। >8ই ভারিখে সমাজ মন্দিরে "A Message of deliverance" বিবয়ে একটা ইংরাজী বক্তৃতা করেন। ১৫ই তারিখে নগরকীর্ত্তন হয় এবং বাজারে হিন্দিতে বক্তৃতা করেন। ১৬ই তারিথে त्रमास सन्मिरत "The Social reconstruction of Modern India" বিষয়ে এক বক্ষুভা করেন। ১৭ই তারিতে বোধাই ধাত্র। क व्रिवाट्स ।

বাবু শশীভূষণ বস্ত্ৰ-কুমারগানী সমাজের উৎসবোপ-লক্ষে করেকদিন সমাজে উপাধনা করেন ও উপদের প্রদান করেন এবং "আছার উর্তি ও অবন্তি" সম্ভে স্মাজ গৃহত একটি বক্তৃতা করেন। তথা হইতে পাবনা গমন করেন। কোন এক পরিবারে, উপাসনাদি করেন ও উপাসক দিগের জন্ত এক দিন বিশেষ উপাসনাদি করেন ও উপাসক দিগের জন্ত এক দিন বিশেষ উপাসনা ও একটি উপদেশ প্রদান করেন ও "স্বর্গীয় শক্তি" সম্বন্ধে সমাজ গৃহত্ একটি বক্তৃতা করেন। রাজসাহী সমাজে উৎস্বোপলকে করেকদিন কোন কোন পরিবারে উপাসনা ও উপদেশ দান করেন। ইংরাজী কুল গৃহত্ "রাজা রামমোহন রায়ের জীবন ও ধর্মাত" সম্বন্ধে ও সমাজ গৃহত্ "সমাজ ও জীবন" সম্বন্ধে একটি বক্তৃতা করেন। সামাজিক উপাসনা করেন ও উপদেশ দান করেন। ও সাধারণ লোকদিগের জন্ত বক্তৃতা করেন। প্রটিরার গমন করেন। তথার কীর্ত্রন ও ভন্ত লোকদিগের জন্ত একটি উপদেশ দান করেন। ইহা ব্যতীত লোকদিগের সহিত আলোচনাদি করেন। "ধর্মবন্ধু"—পত্রিকা সম্পাদনের সাহায্য করেন শ্বাধীর গিরীক্রমোহন গুপ্তের জীবনী প্রকাশ করেন।

কালীপ্রসন্ন বস্তু—ঢাকায় গিয়া অক্টোবর ও নবেম্বর স্থাদে বে ভাবে কার্য্য করিয়াছেন,তাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ। তিনি এইরূপ নিয়ম করিয়াছেন যে প্রত্যেক দিবস ছাত্র, ত্রাহ্ম ও অন্তান্তের জন্ত ঢাকা প্রচারক নিবাসের নিমতলে ৫ টার সমরে व्यर्थिना मनीज ७ किছू किছू मर्थमन स्टेर्स । करत्रक मियम ইহা ভালই চলিরাছিল। স্কুলও আফিসাদি খোলার পর হুইতে নবেৰর মাস পর্যান্ত এই কার্যা মন্দ্র চলে নাই। সপ্তাহে विटनेव व्यक्तिवस्क ना हरेला व निवयं कार्या हरेबाइ ७। इ. चित्रां क्रिक्त क्रिक्त अभाव मिल्रां उपामना । সোমবার কোন বন্ধুর আলয়ে কুদ্রমগুলীর মধ্যে উপা-कना, এই মঞ্জীতে কেবল এক দিন কাৰ্য্য হইরাছিল। মঙ্গলবার ছাত্র সঙ্গতে উপাসনা ও আলোচনা। অনেক দিবস হইতে সমগ্র উপাসনা সম্বন্ধে আলোচনা চলিয়া আসিতে हिन उर्भत्र উপাসনার একটা অঙ্গ প্রার্থনা সহকে আলোচনা হয়। **আরও চুই সক্তে** কার্য্য করিরাছেন। বুধবার বন্ধু-দিগের সহিত উপাসনা আলোচনাদি হইয়া থাকে। বৃহস্পতিবার এक वन्नुत्र जानारत्र छेशांत्रना इहेत्रा शांत्क, अशांत जातात्क উপস্থিত হন। শুক্রবারও এই রপ কার্য্য হয় কিন্তু তিনি সকল मिन छेलिक इंटेरक लारतन नारे। ছांज नमारक अक मिन "কোন পথে জ্ঞান পাইব" এই বিষ2র বব্দৃতা করেন। রবিবার দিবৃদ্ অপরাকে সামাজিক উপাসনা হর।

বাবু নীলমণি চক্রবন্তী—প্রথমাংশে চেরাপ্রী ও
শেলার গমন করেন। পথে মৌকাডক নামক স্থানে এক
ধাসিরার গৃহে সঙ্গীত এবং ব্রাহ্মধর্ম ও প্রীষ্টরান ধর্মে প্রভেদ
কি তংসক্তরে কথাবার্তা হর। চেরাপ্রিলতে হই দিন সভা হয়।
একদিন ইংরাজীতে কিছু বলেন। তথাকার রাজার এবং অভ্যন্ত
করেক বাড়ীতে ঘাইরা আলাপাদি করা হয়। এক পরিবারে
একদিন সঙ্গীত ও ধর্মালোচনা হয়। এতত্তির অনেক সমর
ধর্ম স্থানে কথা বার্তা হয়। মৌসমাইএ হই দিন সভা হয়।
এক দিন ইংরাজীতে উপদেশ প্রান্তাক করেন। শেলার ৮ দিন
সভা হয়। প্রক্রানি ইংরাজীতে এবং অভ্যন্ত দিন বালালাতে
উপদেশ দেওরা হয়। প্রক্রানি প্রীক্রানিদিগের সঙ্গে বিচার

হর। জেসির ও মৌলাংখং নামক ভালে ছইটা আজননাক্ষ খাপিত হয়। নৃত্য ৮ কর লোক বোগদান করেন; পুর্কের >२ जन जारहरा। नर्जनस्य २० जन। शनिशास्त्र अक मिन প্রার্থনা করেন। ফিরিবার সময় মৌসমাইএ আর ছই निन गर्छ। एक निन न्त्रयोज द्वांभरनत **बर्ख दे**शांत्रयांदि হয় এবং লিখিয়া খাসিরা ভাসার উপদেশ প্রাদান করেন। নৃতন ৫ জন যোগ দেন। চেরাপুঞ্জীর এক বাঙ্গালী ভদ্রলোকের বাদারও এক খাদিরার গৃহে দলীজানি হর। পাসিয়ার গৃহে সঙ্গীত ও থাসিয়াতে প্রার্থনা করেন। চেরাপুদীর এক যুবক ব্রাহ্মধর্ম প্রচার করিছে, ইচ্ছা করিয়াছেন। সম্ভবত: তিনি উৎসব **উপলক্ষে ক্লিকাভায়** আগমন করিবেন। निनः व शंकिएक निनः नमास्कत উপাসনা अधिकाःभ नमद्र करत्रन। সমরে মৌধার সমাজের উপাসনা কার্য্য করেন। শেষে করেক দিন থাসিরাতেই উপাসনা করিয়াছেন। মৌথারের त्रवियोगतिक विष्णाणात्त्र करत्रक षिन भिका होन करत्रन। "ব্ৰাহ্ম ধৰ্ম্মের মত ও বিশ্বাস" সম্বন্ধে থাসিয়া ভাষায় একথানি পুত্তিকা বিধিরাছিলেন। শিলং ত্রাদ্ধ সমাদ্ধের উৎসব উপলক্ষে ছই দিন উপাসনা করেন। সমাজে "অস্তাপ ও নবজীবন" এই বিষয়ে এবং এক দিন মৌথার সমাজে "ধর্ম্মের স্বাভাবিক ও ক্লুত্রিম দিক্" এই বিষয়ে বক্তা করেন। শেবের বক্তা থাসিরা ভাষার হইবা ছিল। চারিটী নামকরণ অনুষ্ঠানে উপাসনা করেন। পারি-বারিক উপাসনাও করিয়াছেন। করেক জনকে হোমি**ও**-প্যাথিক ঔষধ মধ্যে মধ্যে প্রদান করিরাছেন; নিকটছ পল্লী-গ্রামে গিরা থাসিরাদের গৃহে আলাপাদি করেন। **প্রা**রই মধ্যে মধ্যে মৌথারের কোন কোন খাসি রার গৃছে গিরা माका९ ७ धर्मानाथ कविद्योदहर्न।

এতত্তির ত্রীবৃক্ত শছ্মনপ্রানাল, বাবু উমেশ্চন্ত লব্ত, বাবু মনরশ্ধন গুহ প্রভৃতি মহাশরগণও বিশেষ উৎসাহের সহিত প্রচার
কার্য্যের সাহায্য করিয়াছেন। ত্রীযুক্ত শছ্মন প্রসাদ শিবনাথ বাবুর
সহিত মিলিত হইয়া অনেকগুলি বক্তৃতা করিয়াছেন এবং
অনেক স্থানে উপাসনা করিয়াছেন ও উপদেশ দিয়াছেন।

প্রচার কণ্ড — বিগত অটোবর মানের শেবে কার্য্য নির্বাহক সভা ও অধ্যক্ষ সভার সভ্যদিগের অনেকে Botanical Garden গমন করেন। তথার উপাসনাদি হর। উপাসনার পর সাধারণ ব্রাহ্মসমাজের সভ্যগণ ব্রাহ্মসমাজের কার্য্য নির্বাহ্যর্থ আপন আপন আরের কন্ত অংশ প্রদান করিবেল সে বিষয়ে আলোচনা হর। পরে সর্বাস্থতিক্রমে হিরীকৃত হয় বে হাছাদের মাসিক আর অনধিক ২৫ টাকা ভাছারা টাকাপ্রক্রিক্রে এক পরসা এবং তাছার অধিক আরবান সভ্যগণ টাকার হন্ত দেড় পরসা হিসাবে দান করিবেন। বিশেষ আমাজের বিষয় এই বে তথার উপন্থিত সকলেই এই হারে দান করিভেছেন। আশা করা বার অভ্যন্ত সভ্যগণও এইরূপে সমাজকে সাহাব্য করিছে প্রায় অভ্যন্ত সভ্যগণও এইরূপে সমাজকে সাহাব্য করিছে প্রভাষ হুইবেন।

সম্ভূত সভা—এই সভার ১২টা অধিবেশন হর। সভ্য-গণ উপত্বিত হইরা উপাসনাত্তর ধর্মালোচনা করিরাছিলেন। আলোচ্য বিবৃর—"জীবনের বন্ধভাব কিরূপে মোচন হর" "সংসার বন্ধন কিরূপে বোচে" ও "রিপুল্মন" পবিত্রতা ও ব্যাকুলতা।

রবিবাসরীর নৈতিক বিদ্যালয়—একমাস ছুটার পরে নৈতিক বিদ্যালরের কার্য্য নির্মিত রূপে চলিরাছে। এই মাসে ছাত্র ছাত্রীর সংখ্যা প্রার ৪৭।৪৮ হলন হইরাছে, এবং প্রার প্রতি রবিবারেই হুই একটা করিয়া বালক বালিকা বাড়িতেছে। বালক বালিকাগণ সংগীতশিকা করিতেছে। সকল প্রকারেই পূর্ন্ধাপেকা হুবহু। এখন কিছু আশা জনক।—

উপাসক্মগুলী—এই সমন্ন মধ্যে বাবু নগেজনাথ চট্টোপাধ্যান, বাবু উমেশচজ দত্ত, বাবু দীতানাথ দত্ত এবং বাবু আদিত্যকুমান চট্টোপাধ্যান মহাশন সাপ্তাহিক উপাসনান আচার্য্যের কার্য্য করিবাছেন। রবিবারের প্রাতঃকালীন উপাসনা নিম্মিতরূপে হইতেছে:

স্মৃতি কার্যানির্কাহক সভার আদেশাস্থসারে মণ্ডলী উপা-সনালবের জীর্ণ সংকারে নিযুক্ত আছেন। সংকার কার্যোর অধিকাংশই সমাধা হইরাছে। যাহা কিছু অবশিষ্ট আছে আশা করা বার্যান্তাহা শীঘ্রই শেষ হইবে

দাতব্য বিভাগ---গঙ তিন মাদে দাতব্য বিভাগের কার্য্য নির্মিত্রণে চলিরাছে। দাতব্য বিভাগের আর ব্যবের হিসাব নিয়ে প্রদত্ত হইল।

कम	,,	थ द्र 5	
वार्षिक ठीमा क	ांनाम	মাসিক চীদা দান	
৩ মাদে	۶.	৩ মাদে মোট	૭ર્
यांत्रिक हीना व	मित्र	এককালীন চাঁদা দান	•
৩ মাসের মোট এককালীন আ	`	विविध	<i>ن></i> د
৩ মাসে মোট	8 \$40/0		७२। ऽ६
		শ্বিত	٥٠٩٠٥٠
	ezho/•		
পুর্মকার স্থিত	४ %।। ४ ६		からなって
•	*************		

আমিরা বিশেষ আনক ও ক্লভক্রতার সহিত ক্লাপন করি-তেছি বে চোরবাগানের বাবু কালীপ্রসম বহু মহাশয় দাত্রা বিভাগের কল্প ১০০ টাকা একথানি দানপত্র সহিত দান করিয়া-বেল দান ক্লিয়ানির্বাহক সভা তাঁহার দান পত্রের লিখিত প্রভারান্ত্রার এই টাকা বার করিতে সম্মত হইয়াছেন। এই টাকার ক্লুক হইতে দরিত্রদিগকে সাহাব্য করা হইবে। আমরা এই দানের কল্প ভাঁহাকে বিশেষ ভাবে ধল্পবাদ দিতেছি।

311606

দান প্রাপ্তি—আমরা আহ্লাদ ও রুতজ্ঞতার সহিত জ্ঞাপন করিতেছি বে মহারাজা হোলকার বিল্ডিংকণ্ডের সাহা-যার্থ ৪০০ টাকা দান করিরাছেন। পণ্ডিত শিবনাথ শালী দ্বশ্বিকে ১২৫ টাকা এবং জীযুক্ত সহমন প্রসাদকেও ৭৫ টাকা দান করিরাছেন। এই দান প্রাপ্ত, হইরা কার্যা-নির্মাছক সভা ভাঁছাকে বিশেষ ভাবে যক্তবাদ দিভেছেন।

ই তিয়ান মেসেঞ্জার—ইহার আর্থিক অবহা ভাল নর দেখিরা ইতিরা মেসেঞ্জার কমিট প্রভাব করেন যে ইতিরান মেসেঞ্জার ও প্রেসের ছই কন শ্বতর ম্যানেজার না রাখিরা এক জন ম্যানেজারের বারা কার্য্য চালাইলে মেসেঞ্জারের অনেক টাকা বাঁচিরা বার। কার্য্য নির্কাহক সভা এই প্রভাব গ্রাহ্য করিরা, বাহাতে আগমিী কেব্রুরারী মাস হইতে এইরূপ বন্দোবত করিরাছেন। আমরা বিশেষ ক্তেজ্জভার সহিত জাপন করিতেছি যে লালোরছ শ্রীবৃক্ত সরদার দরাল সিংহ মহাশর মেসেঞ্জারের জন্ত এক কালীন ২০০ ছই শত টাকা জান করিরাছেন। আমরা এই দান প্রাপ্ত হইরা তাঁহাকে বিশেষ ভাবে ধন্তবাদ প্রদান করিতেছি।

তত্ত্বকৌমুদী—পণ্ডিত শিবনাথ শালী মহাশর প্রচারার্থ বাহিরে গলন করাতে, বাব্ আদিনাথ চট্টোপাধার মহাশর এই ০ মাসের জন্ত সম্পাদকের কার্যা করিরাছেন। ইহার আর্থিক অবস্থা মন্দ্রনর।

পুস্তক প্রচার—আমরা আনন্দের সহিত আনাইতেছি বে সম্রতি ছই থানি থাসিরা প্রক ছাপান হইতেছে ১ম থানি— উপাসনা প্রতি এবং ২র থানি আরুধর্মের মত বিখাস সম্বরীয়।

তুর্ভিক্ষ **ফও**—নগহাটী ব্রাশ্বসমাজ তথার নৈশ বিদ্যা-লবের গৃহনির্মাণার্থ বীরভূম চর্ভিক্ষ ফণ্ডের উদ্ব টাকা হইতে ২৫০ টাকা সাহায্য প্রার্থনা করিয়াছিলেন। কিন্তু কার্যানির্মাহক সভা এই নিমিত্ত টাকা দিতে পারেন নাই।

রাজা রামমোহন রায়ের সারণার্থ সভ;—বিগত ২৭শে সেপ্টেম্বর তারিপে রাজা রামমোহন রায়ের স্বরণার্থ সিটি কলেজ গৃহে এক বৃহৎ সভা হয়। এই সভার মাননীর জাইস ডাঃ গুরুদাস বক্ষ্যোপাধ্যার মহাশর সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। বাবু সভাক্তা নাথ ঠাকুর, বাবু কালীচরণ বক্ষ্যোপাধ্যার, মিঃকে, এস মাাকডভালত ও পণ্ডিত শিবনার্থ শাস্ত্রী মহাশরণণ বক্তৃতা করিরাছিলেন।

Theistic Conference—ডিসেম্ম মাসে বােম্বে সহরে একটা Theistic Conference ছইবে। কার্যা নির্বাহক সভার এই Conference এ কিকি বিষয়ের আলোচনা হওরা উচিত,তাহার বিচার হয় এবং উক্ত Conference এ আনাদের মতামত জ্ঞাপন করিবার জন্য বার্ আনন্দ মোহন বস্তু, হেরম্বচক্র মৈত্রেয়, ক্ষাকুমাব মিত্র, মারকানাথ গাস্থান, উমেশ চক্র দত্ত, কালীশহর স্তুক্ত, বিপিন চক্র পাল, উপেক্র কিশোর রায় চোধুরী, তুর্গামোহন দাস ও পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী মহাশ্র প্রতিনিধি নিয়োজিত ইইয়াছেন।

ত্রাক্স-বন্ধু সভা—এই তিন মাসের মধ্যে রাদ্ধবন্ধ সভার কেবল একটা অধিবেশন হইয়।ছিল। এই অধিবেশনে ডাঃ প্রাফ্রনজ্ রার মহাশর "নর নারীর সামাজিক সম্বর্ধ" বিষয়ে আলোচনার অবভারণা করেন।

मृजन मगाज-এই जिन मारतत मरश शानियां नर्सरक